संसार का इतिहास

लेखक

एलिस मैंजेनिस पोर्टलैंड, ओरेगन

और

जौन कौनरेड ऐपल

प्राध्यापक, सामाजिक विद्या, स्टेट टीचर्स कालिज
ईस्ट स्ट्राउड्सवर्ग, पेनसिलवेनिया

अनुवादक

बी० आर० जोवार

यूरेशिया पब्लिशिंग हाउस (प्रा०) लिमिटेड
रामनगर—नई दिल्ली

मुख्य वितरक

एस० चन्द एण्ड कम्पनी

फव्वारा	दिल्ली
रामनगर	नई दिल्ली
माई हीरां गेट	जालन्धर
अमीनाबाद पार्क	लखनऊ
१६७, लैमिंगटन रोड	बम्बई
३२, गणेशचन्द्र एवेन्यू	कलकत्ता
३५, माउण्ट रोड	मद्रास

मूल्य : रु० १२·५०

प्रथम संस्करण : १९६[illegible]

यूरेशिया पब्लिशिंग हाऊस (प्रा०) लिमिटेड रामनगर, नई दिल्ली-१ द्वारा प्रकाशित तथा राजेन्द्र प्रिंटर्स, रामनगर, नई दिल्ली में मुद्रित।

विषय-सूची

नक्शे

व्यापार-नक्शे

इस पुस्तक के पाठकों से

अंग्रेजी के महान् नाटककार विलियम शेक्सपियर ने लिखा है : "सारा संसार एक रंगमंच है।" कवि ने यह भी लिखा है कि हम सब इस मंच पर अभिनय करने वाले पात्र हैं। सचमुच ही हम इतिहास नामक महानाटक के अभिनेता हैं जिसकी रचना मनुष्य जाति के कार्यों से होती है।

कल्पना कीजिए कि आप एक आदमी या औरत द्वारा लिखे गये किसी बहुत मामूली नाटक में अभिनेता हैं, और आप मंच पर पहली बार दूसरे अंक के मध्य या तीसरे के आरम्भ में आते हैं। इस अवस्था में आप अच्छा अभिनय तभी कर सकते हैं जब आपको यह पता हो कि दूसरे अभिनेता, जो आपसे पहले मंच पर आए थे, क्या कुछ कर चुके हैं। दूसरे शब्दों में, आपको अपने मंचप्रवेश से पहले की कहानी पता होनी चाहिए।

यही बात इस सबसे महत्त्वपूर्ण नाटक के बारे में सही है जिसे मानवजाति खेल रही है। आपका जन्म इस अभिनय के बीच में हुआ है। वर्तमान दृश्य में आपके आविर्भाव से पहले बहुत कुछ हो गुजरा है। इसलिए अपना पार्ट समझदारी और कुशलता से करने के लिए आपको यह पता होना आवश्यक है कि आपसे पहले लोग क्या कुछ कर चुके हैं।

जैसे कोई अभिनेता अकेला अभिनय नहीं करता—वह दूसरे अभिनेताओं के साथ मिल कर अभिनय करता है, वैसे ही आप भी शेष मानव जाति के साथ मिल कर वर्तमान दृश्य में अभिनय कर रहे हैं। इस कारण आपको न केवल यह पता होना चाहिए कि अतीत में क्या हो चुका है, अपितु यह भी पता होना चाहिए कि आज आपके अभिनय करते समय संसार के मंच पर क्या-क्या हो रहा है।

बस, यही कारण है कि इतिहास—वह नाटक जिसके एक अभिनेता आप हैं—पढ़ना आवश्यक है।

यह पुस्तक, संसार का इतिहास, उस नाटक की एक पाण्डुलिपि है। किसी भी एक पुस्तक में मानवजाति की सारी कहानी शामिल करना संभव नहीं है। अनेक मनोरंजक घटनाएं छोड़ देना आवश्यक हो जाता है। पर मुख्य कथानक इसमें मौजूद है और इसके बाद अन्य पुस्तकों से तुम अपनी जानकारी बढ़ा सकते हो।

इस पुस्तक में बारह खंड हैं और प्रत्येक खंड में कुछ **अध्याय** हैं। ये मानवजाति के सशक्त नाटक के अंक और दृश्य हैं। पहले खंड में **प्राचीन मानव** का परिचय दिया गया है जो आज के युग से पहले लाखों वर्ष रहा और हमारा आदि-पूर्वज था। उसने कोई बड़े उल्लेखनीय कार्य नहीं किये, पर बहुत धीरे-धीरे आगे बढ़ते हुए उसने इस नाटक के कथानक की रूपरेखा बना दी—**अधिक स्पष्ट आध्यात्मिक दृष्टि, उच्चतर संस्कृति और अधिक लोकतन्त्रीय रहन-सहन की दिशा में बढ़ने के लिए मानवजाति का संघर्ष**। अभिनय के लिए यह बड़ी ही रोमांचकारी कहानी है।

बाद के अंकों (खंडों) में आए मनुष्यों ने भी अपने-अपने पार्ट का अभिनय किया है। उन्होंने सदा समझदारी से ही अभिनय नहीं किया, पर उन्होंने नाटक में सदा मनोरंजक और महत्त्वपूर्ण दृश्यों की योजना में योग दिया है। मिस्री, बेबिलोनियन, ग्रीक, रोमन, मध्ययुग और पुनर्जागरणकाल के तथा आधुनिक जगत् के लोग मंच पर आए और उन्होंने अपना-अपना अभिनय प्रस्तुत किया। वे विविध मूलवंशों और जातियों के लोग थे। कभी-कभी किसी ऐसी जाति या राष्ट्र का भी उदय हुआ जिसने आध्यात्मिक, सांस्कृतिक और लोकतान्त्रिक प्रगति के कथानक को आगे नहीं बढ़ाया। परन्तु कुल मिलाकर, बाद वाले अंकों ने कथानक को एक से दूसरी सफलता पर पहुँचाया है।

मानव जाति के पूरे नाटक में एक बड़े कथानक के अन्दर बहुत से छोटे कथानक हैं, और यह बड़ी उलझन-

दार कहानी है। पर इस पुस्तक में आप मुख्य विषयवस्तु को पकड़े रहकर ही आगे बढ़ेंगे। इस पुस्तक का लक्ष्य इस मुख्य विषयवस्तु को समझने में आपका पथप्रदर्शन करना है।

आप इतिहास से सर्वथा अपरिचित नहीं हैं। आपने अनेक ऐतिहासिक फिल्में भी देखी होंगी। रेडियो और टेलीविजन द्वारा भी इतिहास से आपका परिचय हुआ होगा और इतिहास की अन्य पुस्तकें भी आपने पढ़ी होंगी। आपने ऐतिहासिक महत्त्व के स्थानों की यात्रा भी की होगी। आज आप ऐसे स्थान पर रह रहे हैं जहाँ इतिहास का, कभी-कभी बड़े महत्त्वपूर्ण इतिहास का, निर्माण हो रहा है। दूसरे शब्दों में, इतिहास कोई अपरिचित या नयी वस्तु नहीं है; इसके साथ आपका प्रतिदिन सम्पर्क होता है। यह पुस्तक पढ़ने में केवल यह अन्तर है कि इसमें आपको नाटक के किसी-किसी अंश के स्थान पर इसके सारे सुदीर्घ रूप का—मानवजाति के प्रथम मंच-प्रवेश से लेकर आज तक, उसके सम्पूर्ण गौरव और प्रताप का—दर्शन होगा।
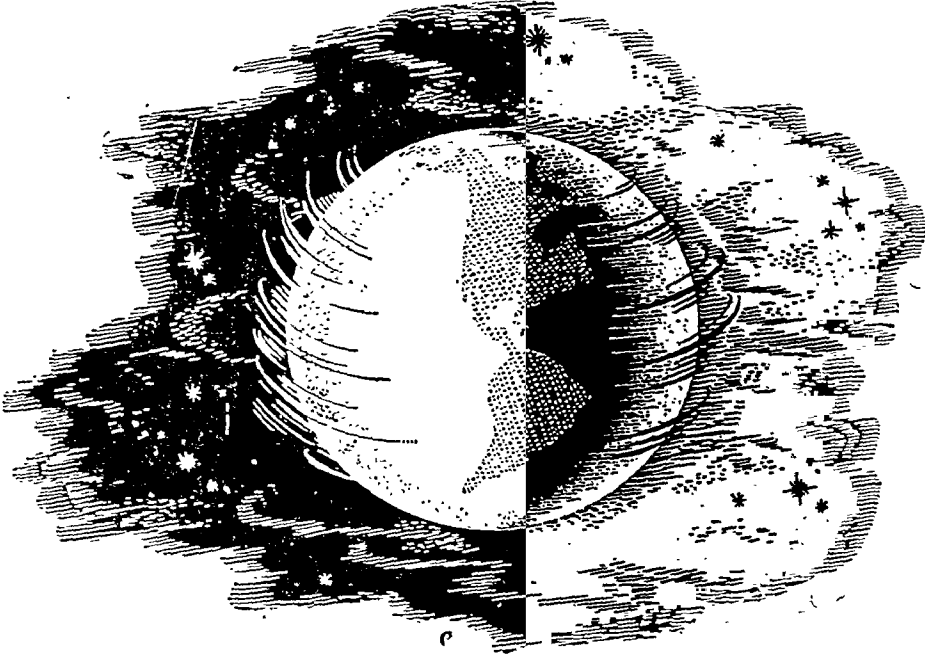
आरम्भ में . . .
सभ्यता के उदय से पहले
मनुष्य कुछ प्रगति कर चुका था
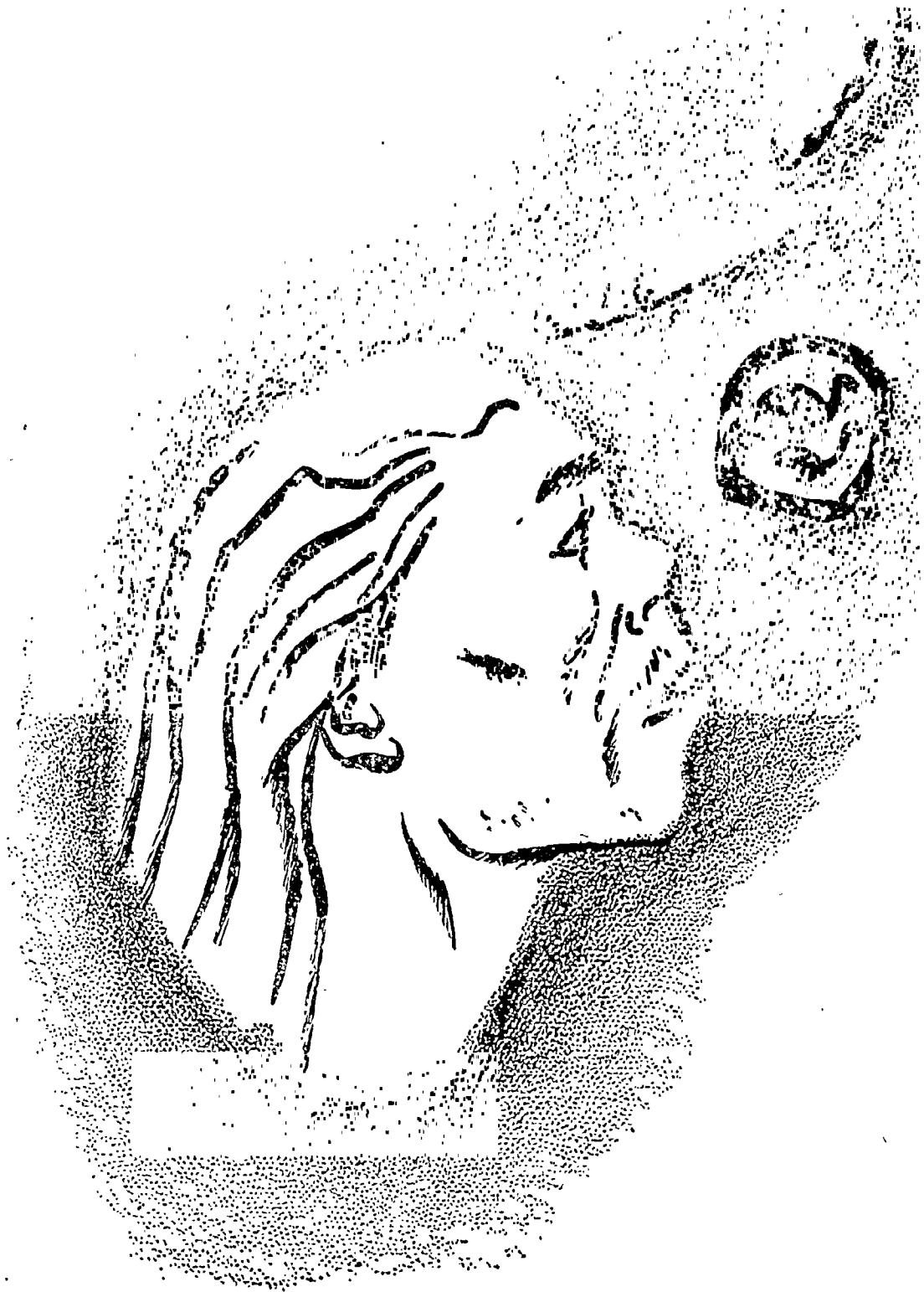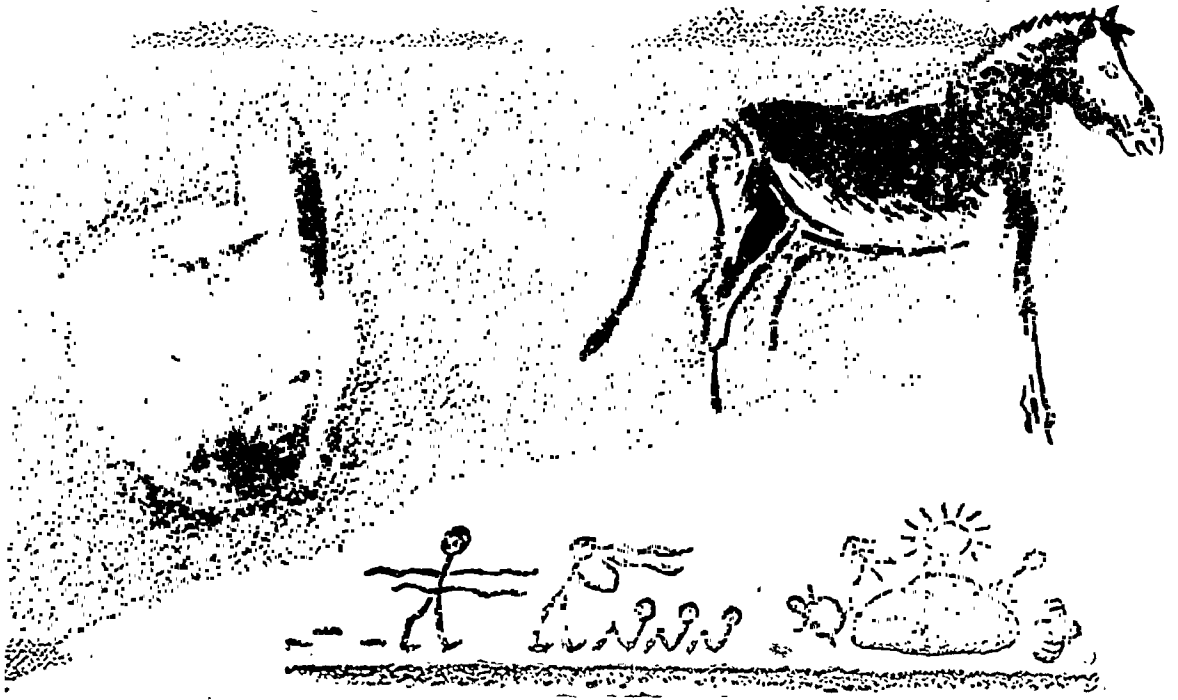
हमारे संसार की कहानी का आरंभ

क्या आपने अपनी घड़ी पर घूमती सकंड की सुई को कभी ध्यान से देखा है ? उसे पूरा चक्कर लगाने में दिन का केवल एक मिनट लगता है। जब मनुष्य का धरती पर जन्म हुआ, तब से आज तक के समय को यदि एक 'दिन' मानें तो वह समय केवल एक मिनट होगा जबसे मनुष्य ने पढ़ना और लिखना सीखा। और मानव-जीवन का यह 'दिन' इस ग्रह अर्थात् पृथ्वी, के, जिस पर हम रहते हैं, लम्बे जीवन के सामने एक मिनट से भी कम होगा। हम यह समझने की केवल कोशिश कर सकते हैं कि जब धरती पर मनुष्य का जन्म हुआ, तब यह बहुत अधिक पुरानी हो चुकी थी। और मनुष्य को पढ़ना और लिखना सीखने से पहले, जो उसकी दो सबसे बड़ी उपलब्धियाँ हैं, लाखों वर्षों तक कठोर संघर्ष करना पड़ा। मनुष्य को पढ़ना-लिखना सीखे छह हजार वर्ष हो गये जो मानव प्रगति के सुदीर्घ काल में बहुत ही थोड़ा-सा समय है।

यह पुस्तक मनुष्य जाति का एक इतिहास है। परन्तु इतिहास तब तक आरम्भ नहीं हो सकता था जब तक मनुष्य अभिलेख रखना न सीख लेता। वह हजारों वर्ष से धरती पर था और लिखना सीखने से पहले उसने अनेक दूसरे उपयोगी कौशल सीखे थे। इस खंड में आपको कुछ ऐसी बातें बतायी जाएँगी जो पृथ्वी की रचना से लेकर मनुष्य के लिखना सीखने तक के काल में हुई थीं।

यदि आप सफल गायक, डाक्टर या बढ़ई बनना चाहते हैं तो आपको कुछ कौशल सीखने होंगे और उस पेशे में प्रयुक्त पारिभाषिक शब्द जानने होंगे। यही बात इतिहास के अध्ययन में भी लागू होती है। इस प्रथम अध्याय से आपको इतिहास के कुछ उपकरणों का, उन तथ्यों और बातों का पता लगेगा जिनकी सहायता से इतिहासज्ञ लोग मनुष्य और उसकी दुनिया का अध्ययन करते हैं।

आप एक महान् प्रयास आरंभ कर रहे हैं— यह है इस ग्रह और इस पर रहने वाले लोगों के बारे में जानकारी प्राप्त करना।

हमारे संसार की कहानी का आरंभ चित्रित करने वाला यह चित्र एक भावचित्र (आइडियोग्राफ) है। प्रागैतिहासिक काल के लोग संभवतः ऐसे चित्र बना सकते थे। अपने भाव प्रकट करने की यह पद्धति बाद में विकसित होकर आधुनिक ढंग के रूप में आई।

१ इतिहास आपका निजी अनुभव है

आपके बड़े पुराने पूर्वजों ने पहिए का आविष्कार करके, खेती करके, पशुओं को पालतू बनाकर और अग्नि का प्रयोग सीख कर अपनी कुछ बहुत बड़ी समस्याओं का समाधान किया था। उन्होंने मोटे-झोटे कपड़े भी बनाए तथा अस्थायी घर भी बनाए। पर वे अपनी तात्कालिक समस्याएँ हल करके ही चुप न बैठ गये। वे केवल जीवन-धारण से ही सन्तुष्ट न थे। सौभाग्यवश, भूतकाल की हर पीढ़ी में ऐसे लोग हुए, जिन्होंने जीवन की दिलचस्पी के अनेक विषय खोज निकाले और इस प्रकार जीवन को अधिक विकसित तथा सुन्दर बना दिया। परिणामस्वरूप, शताब्दियों बाद, महान् संगीत का जन्म हुआ, सुन्दर चित्रों का निर्माण किया गया, वास्तुकला और मूर्तिकला की शानदार कृतियाँ बनाई गईं, शिक्षा-केन्द्र स्थापित किए गए, मनोरंजन और आमोद-प्रमोद के विशिष्ट साधनों का आविष्कार किया गया, कपड़ा पहनने के अनेक तरीके सोचे गये, तथा अधिक सुविधाजनक और आरामदेह घर बनाये जाने लगे। इसलिए मानव की कहानी **आपकी** कहानी है, क्योंकि वह आपके **पूर्वजों की कहानी** है।

पूर्वजों की देन

मानव इस पृथ्वी पर लगभग दस लाख वर्षो से रहता है। और इन वर्षों में बहुत सारे मनुष्य इस पृथ्वी पर रहे हैं तथा मेहनत कर गये हैं। उनमें से कुछ ने अपने नए विचार लोगों को दिये, कुछ ने महत्त्वपूर्ण आविष्कार किए तथा कुछ दूसरे लोगों ने मानव-प्रगति के मार्ग का निर्देशन किया। उन्होंने अपने प्रयत्नों से ऐसी विलक्षण वस्तुएँ प्राप्त कीं जिनके कारण आज भी उनका नाम आदर से लिया जाता है। लेकिन हमारे पूर्वजों में से अधिकतर लोग अज्ञात और अपरिचित ही हैं। उन्होंने सहयोग से दूसरों की योजनाओं को कार्यान्वित किया। आज का हमारा जीवन (जो इतना सुन्दर तथा सुखद प्रतीत होता है) कठिन, रूखा और अनगढ़ महसूस होता यदि लोगों की वे पीढ़ियाँ इकट्ठी मिलकर थोड़े-से लोगों के आदर्शों और स्वप्नों को साकार न करतीं।

आप बहुत धनी हैं, क्योंकि युग-युग की उपलब्धियाँ लाभ उठाने और भोगने के लिए आपके आगे मौजूद हैं। यह एक महान् विरासत है, जिससे आपको ज्ञान, पथ-प्रदर्शन तथा आनन्द प्राप्त हो सकते हैं। हमारा भूतकाल पूर्णतः नष्ट भी नहीं हुआ है। इसका बहुत-सा भाग अभी सुरक्षित है, क्योंकि इतिहास एक धारा-प्रवाह चलती कहानी का नाम है। आपकी पीढ़ी मानव की प्रगति के उल्लासकारी विवरण में एक नया अध्याय मात्र लिख रही है।

जब आप यह पुस्तक पकड़े हुए हैं, तब प्राचीन युगों के पदार्थ तथा विज्ञान सम्बन्धी देन में हिस्सा बटा रहे हैं। मिस्र की नील नदी के किनारे कागज का खुरदरा, भद्दा रूप प्रारम्भ हुआ था। और जिस वर्णमाला के द्वारा इस पुस्तक का निर्माण हुआ है, वह फिनीशियन लोगों के द्वारा ३,५०० वर्ष पहले निर्मित तथा बाद में ग्रीक लोगों द्वारा सुधारी गई थी। जो संख्याएँ इन पृष्ठों पर पड़ी हुई हैं, इनका

आविष्कार प्राचीन भारत में हुआ था। अनेक प्रकार की पुस्तकें बड़ी मात्रा में छापने के लिए चल टाइप बनाने का विचार ६,००० वर्ष पहले चीन में उत्पन्न हुआ था। और जो चित्र इस पुस्तक में हैं, उन्हें छापने की विधि भी लगभग एक सौ वर्ष पहले शुरू हुई थी। इस पुस्तक की छपाई लोहे तथा इस्पात की बनी मशीनों से हुई है। लोहे के प्रथम प्रयोग का श्रेय ३,००० वर्ष पहले एशिया में रहने वाली एक जाति को है। आप के प्रतिदिन के जीवन के कई दूसरे क्षेत्रों में भी भूतकाल की देनें विद्यमान हैं।

इतिहास आपकी कहानी न केवल उन आविष्कृत वस्तुओं तथा कौशलों की वजह से है जो आपको विरासत में मिले हैं, बल्कि इसका कारण यह भी है कि प्राचीन युग के विचारवान् लोगों के कुछ आदर्श भी आज हमारे पास हैं। इन शताब्दियों में विचारक लोग विश्व के हित के लिए महान् योजनाएँ बनाते रहे। उनमें से कुछ योजनाएँ अब तक पूरी नहीं की जा सकी हैं। लेकिन हमारा विश्वास है कि उनके उन महान् आदर्शों में से बहुत सारे उस संघर्ष के योग्य हैं, जो मानवजाति उनकी प्राप्ति के लिए करती आई है।

उदाहरण के लिए, आज अमरीका में हम जिस लोकतन्त्र का आनन्द उठाते हैं, वह प्राचीन काल में ही प्रारम्भ हुआ आदर्श है जिसे हम आज तक सुधारते रहे हैं। पच्चीस सौ साल पहले एथेन्स के यूनानी (ग्रीक) लोगों ने लोकतन्त्र के बारे में कुछ सोचा था, चाहे उन्होंने उस समय अपनी शासन-प्रणाली को यह नाम नहीं दिया था। फिर भी उनकी प्रणाली को यह नाम नहीं दिया था। फिर उनकी प्रणाली सीमित लोकतन्त्र थी और केवल थोड़े-से लोगों पर असर डालती थी। रोम निवासियों ने इस प्रणाली को अधिक बड़े क्षेत्र पर लागू किया और इसके लिए सरकार बनाई जिसमें लोग देश का कानून बनाने के लिए स्वयं अपने प्रतिनिधि चुनते थे। बहुत वर्षों बाद, इंगलैंड ने प्रत्येक को व्यक्तिगत स्वतन्त्रता की गारंटी देने में नेतृत्व किया। जूरी के मुकद्दमे की, एक व्यक्ति के बजाय पूरी प्रतिनिधि सभा द्वारा शासन, कर लगाने का अधिकार केवल जनता के प्रतिनिधियों

भौतिक वस्तुएँ, कौशल, कल्पना, विचार और सामूहिक सहयोग—ये सब चीजें हमें प्रागैतिहासिक मानव से सांस्कृतिक विरासत में प्राप्त हुई हैं। स्कूल के आर्केस्ट्रा में, तथा अन्य बहुत सारे कार्यों में ये सब चीजें इकट्ठी दिखाई देती हैं।

ब्लैक स्टार

व्यक्तियों का बड़ा महत्त्व है, क्योंकि वे समझदार नेता या मेधावी और सहयोग करने वाले अनुयायी बनते हैं।

को—ये सब चीजें, जो हमारे अपने लोकतन्त्र के रक्षक अधिकार हैं, हमें प्राचीन इंगलैंड से मिली हैं ।

लोकतन्त्र उन महान् आदर्शों में से केवल एक चीज़ है जो हमें प्राचीन युग ने दिये हैं । अमरीकियों के अच्छे और बुरे के मानदण्डों का विकास मुख्यतः यहूदी तथा ईसाई आदर्शों से हुआ है । यहूदियों के 'ओल्ड टैस्टामैन्ट' के दस आदेश उन कानूनों में समाविष्ट किये गये हैं, जिनके आधीन अमरीकी रहते हैं । और यह प्राचीन ईसाई शिक्षा कि "अपने पड़ोसियों को भी अपने समान प्यार करो" उस आदर्श को प्रस्तुत करती है जो आपकी दुनिया में जीवित-जाग्रत है ।

निष्कर्षतः, इतिहास आपकी कहानी है, क्योंकि यह **मानवीय अनुभवों** का विवरण है। मानव होने के नाते आपके जीवन में कठिनाइयाँ, आकांक्षाएँ, आशाएँ, निराशाएँ, सफलताएँ और असफलताएँ आती रहती हैं। लड़के-लड़कियाँ, पुरुष-स्त्रियाँ सभी को जीवन में इस प्रकार के अनुभव सदा होते रहे हैं। अपके पास आज जो भी उपकरण हैं जिनसे आपका जीवन अधिक आसान बनता है, अथवा आदर्श हैं जो जीवन को अधिक उपयोगी बनाते हैं, वे सब आपकी ही भाँति के मनुष्यों से प्राप्त हैं। चूंकि आप अपने अतिप्राचीन पूर्वजों की अपेक्षा अधिक सुख-सुविधा से रहते हैं, और उन वस्तुओं से आनन्द उठाते हैं जिन्हें कभी आपके पूर्वजों ने बहुत परिश्रम करके प्राप्त किया था, इसलिए आपसे यह आशा की जा सकती है कि जो कुछ आपके पूर्वज आपके लिए छोड़ गए, आप उसे सुधारेंगे ।

१. किस-किस बात में आपका रहन-सहन आपके अतिप्राचीन पूर्वजों पर निर्भर है ?
२. वे चार तरीके बताओ, जिनसे इतिहास वर्तमान काल में बना रहता है।
३. हम यह क्यों कहते हैं कि "इतिहास आपकी ही कहानी है" ?

जीवित अतीत के तत्त्व आपके हैं

लोग : इतिहास **लोगों** के बारे में होता है । वे जीवित अतीत के **प्रथम तत्त्व** हैं। आप एक व्यक्ति हैं, तथा अन्य हर व्यक्ति से भिन्न हैं, जो अब तक जी चुका है। इन हजारों वर्षों में, जिनमें मानव जीवन पृथ्वी पर रहा है, प्रत्येक मानव दूसरे प्रत्येक मानव से कुछ अंश में भिन्न था। चूंकि आप भिन्न हैं, इसलिए आपसे भिन्नता पैदा होती है। इस महत्त्वपूर्ण तथ्य की कभी उपेक्षा नहीं करनी चाहिए। शारीरिक, बौद्धिक तथा आध्यात्मिक रूप से मानव के पास वह शक्ति है जो किसी अन्य प्राणी के पास नहीं है। जब हम अपनी शक्तियों का प्रयोग करते हैं, तब हमारा एक अलग **व्यष्टि अस्तित्व** होता है ।

समय घटनाओं से नापा जाता है, चाहे वे व्यक्तियों के में हों, छोटे जनसमूहों के बारे में हों या समूचे राष्ट्रों बारे में हों।

समय : जीवित अतीत का **दूसरा तत्त्व है समय**। हम समय के 'गुजर जाने' की बात कहा करते हैं। असल में समय कभी नहीं गुजरता। यह सदा मौजूद रहता है। लोग तथा घटनाएँ ही गुजरती हैं। इसलिए समय के गुजर जाने का मापदण्ड केवल वे घटनाएँ हैं, जिनसे हम प्रभावित हुए हैं। उच्चतर माध्यमिक स्कूलों के विद्यार्थी प्रायः अपने विद्यार्थी-जीवन के किसी निजी अनुभव को इस रूप में याद रखते हैं कि वह उनके स्कूल-जीवन के अमुक वर्ष में, अथवा स्कूल में प्रवेश के पहले या बाद में हुआ था।

सारा समय दो भागों में विभाजित किया जा सकता है: पहला **प्रागैतिहासिक** (वह समय जब लिखित अभिलेख नहीं रखे जाते थे); दूसरा, **ऐतिहासिक** (लिखने के आविष्कारों के बाद का समय)। मानव को पृथ्वी पर जितना समय हुआ, उसकी तुलना में मानव-जाति के परिवर्तन का ऐतिहासिक समय एक क्षण के समान है। जब मनुष्य ने लिखना सीखा, तब से उसकी उन्नति बहुत हुई है, लेकिन इस उन्नति की नींव प्रागैतिहासिक काल के मन्द परन्तु महत्त्वपूर्ण कदमों से ही पड़ी थी।

प्रारम्भिक जातियाँ प्राकृतिक संसार की असाधारण घटनाओं के द्वारा समय की पहचान किया करती थीं। बाढ़ें, आग, बर्फीले तूफान, अनावृष्टि और ग्रहण विशेष घटनाएँ थीं। प्रकृति की ओर से मनुष्य को **यह जानने की** इकाई मिल गई थी कि कितना समय गुजर चुका था। मिश्रवासियों ने सूर्य के नियमित रूप से होने वाले उदय और अस्त को देखा; उन्होंने प्रकाशमय तथा अन्धकारमय अवधियों का लेखा किया। आज हम जानते हैं कि ये क्रमिक अन्धकार और प्रकाश पृथ्वी के अपने अक्ष पर परिक्रमा करने से होते हैं। अमरीकन आदिवासी प्रत्येक अट्ठाईस दिनों के बाद पूर्णिमा का उत्सव मनाया करते थे। अब इन्होंने समय मापने की एक अधिक बड़ी इकाई को प्राप्त कर लिया, वह इकाई थी 'मून' या महीना। कुछ भिन्न तरीके से, हम आज भी प्रकृति के आधार पर किया गया समय का विभाजन ही प्रयोग में लाते हैं, जिसे दिन, महीना और वर्ष कहते हैं।

प्राचीन रोम में घटनाओं का समय **रोम शहर की स्थापना** के समय से नापा जाता था। इस माप को ही **लैटिन** भाषा में **एब उरबे कौन्डिटा** (ए० यू० सी०) कहते हैं। यहूदी लोग घटित बातों की तिथि का अंकन शासन-कर्त्ता के नाम तथा वर्ष से करते थे। मुसलमान अपने धर्म के प्रारम्भ होने के बाद या पहले के हिसाब से समय नापते हैं। फिर भी, आज करीब-करीब संपूर्ण विश्व ने अपनी घटनाओं का लेखा रखने के लिए पश्चिमी जगत् के तरीके को अपनाया हुआ है। यह तरीका ईसा के जन्म के समय का विभाजन करता है। ईसा के जन्म से पहले के समय को लैटिन के शब्दों ए० डी० (ई० प०
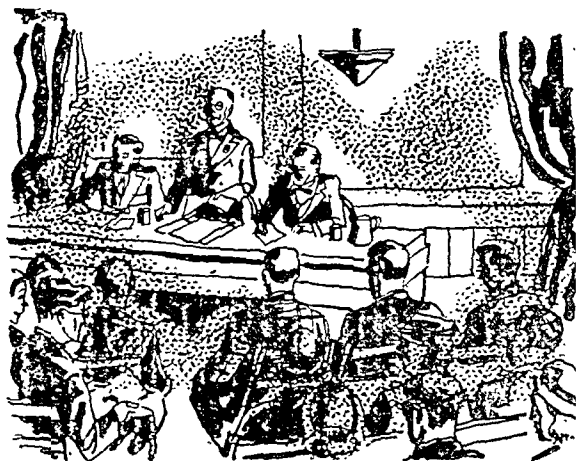
लोग, स्थान, समय तथा विचार और आदर्श अमरीकी संस्कृति के महत्त्वपूर्ण अवयव हैं।

या ईसा पश्चात्) लिखते हैं। जो घटनाएँ ईसा के जन्म से पहले की हैं उन्हें 'बी० सी०' (ईस्वी पूर्व) लगा कर सूचित किया जाता है। उदाहरणार्थ, जूलियस सीज़र की मृत्यु ४४ ई० पूर्व में हुई थी। संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना १९४५ ई० प० में हुई।

समय-निर्धारण की पद्धति को **काल-क्रम-पद्धति** (क्रौनोलौजी) कहते हैं। ईसाई कालक्रम-पद्धति जैसी व्यापक क्षेत्र में स्वीकृत प्रणाली से, जो घटनाओं को ईसा पूर्व और ईसा पश्चात् के कालों में रखती है, इतिहासकारों के लिए अतीत के अभिलेखों को व्यवस्थित करना आसान हो जाता है।

चूँकि मनुष्य की जीवन-कहानी लम्बी तथा घटनाओं से परिपूर्ण है, इसलिए मानव-प्रगति को जानने के लिए तिथियों का होना बड़ा उपयोगी है। इस पुस्तक में जो तिथियाँ लिखी गई हैं, वे सब-की-सब याद करने के लिए नहीं हैं। ये केवल 'घटनाओं और समय का सम्बन्ध' बताने के लिए हैं, ताकि आप इतिहास के घटना-क्रम को ठीक प्रकार से जान सकें। **समय-सूचक-चार्ट** तथा **समय-सूचक रेखाएँ** उपयुक्त स्थानों पर इस प्रकार रखी गई हैं, जिससे महत्त्वपूर्ण घटनाओं तथा समय के सम्बन्ध का एक अधिक स्पष्ट चित्र आपके समक्ष प्रस्तुत हो सके।

स्थान : जीवित अतीत का तीसरा तत्त्व है—**स्थान**। लोगों ने विशेष स्थान पर रहकर ही कुछ कार्य किया है, जो शायद वे किसी और स्थान पर रहकर न करते या न कर सकते। यद्यपि सम्पूर्ण धरती मानव-कार्य-कलाप की रंग-मंच थी, पर सारी भूमि एक मंच नहीं थी—यह कई मंचों में बँटी हुई थी। भौगोलिक अवस्थाओं के कारण मनुष्यों को संसार के भिन्न-भिन्न भागों में भिन्न-भिन्न रीति से रहना तथा कार्य करना पड़ता है। मानव के पेशे का निश्चय करने में पृथ्वी की सतह के स्वरूप (तल विज्ञान) का, इसकी **टोपोग्राफी** का, जिसमें पर्वत, घाटियाँ, पहाड़ियाँ तथा मैदान सम्मिलित हैं, बड़ा महत्त्व रहा है।

मानव ने जल्दी ही यह सीख लिया कि पर्वतीय प्रदेश की ढलानदार कम मिट्टी वाली भूमि की अपेक्षा नदी-घाटियों की उपजाऊ तथा समतल भूमि खेती के लिए अधिक अनुकूल है। तो भी, ढलानदार स्थान चरागाह के लिए प्रयोग हो सकते थे और पृथ्वी-तल के निकट की चट्टानों को खोद कर उनसे खनिज निकाले जा सकते थे। मैदानों की अधिक सीधी सड़कों पर यात्रा पर्वतों की अपेक्षा शीघ्र तथा आसान थी। इस प्रकार प्राकृतिक साधनों का अनुसरण करते हुए पहली बड़ी स्थलीय बस्तियों का संगठन नदी-घाटियों में किया गया, जिनमें लोग आसानी से नाव द्वारा पहुँच सकते थे।

महासागर के निकट रहने से भी जातियों में अन्तर हुआ। कुछ राष्ट्रों में तो बहुत अच्छे बन्दरगाह हैं, जिनसे वे दूरवर्त्ती देशों के साथ व्यापार करते हैं। इन राष्ट्रों के पास बड़ी-बड़ी जल-सेनाएँ भी हैं। दूसरी तरफ वे राष्ट्र हैं जो पृथ्वी से चारों तरफ से घिरे हुए हैं—ये बहुधा महासागर तक पहुँचने का मार्ग प्राप्त करने के लिए बहुत से तरीकों से प्रयत्न करते हैं।

जलवायु : किसी स्थान के इतिहास का रूप निश्चित करने वाला एक और तत्त्व जलवायु है। पृथ्वी के अपेक्षया हलके जलवायु वाले भागों में, जहाँ का औसत ताप अधिक है, फसल बढ़ने की ऋतु लंबी होती है; एक वर्ष में दो या तीन फसलें पैदा की जा सकती हैं और ये फसलें ठंडे प्रदेशों की फसलों से भिन्न होती हैं। वर्षा की मात्रा से भी फर्क पड़ता है। जहाँ वर्षा कम होती है, वहाँ खेती के तरीके अधिक वर्षा वाले स्थानों से भिन्न होते हैं, और ऐसे स्थानों पर कभी-कभी सिंचाई का भी प्रयोग करना पड़ता है।

प्राकृतिक सम्पदा भी विश्व की जातियों का जीवन निर्धारित करने में एक महत्त्वपूर्ण भौगोलिक तत्त्व है, जो उनके इतिहास पर प्रभाव डालता है। विश्व में खनिज-सम्पदा, प्राणि-सम्पदा तथा वनस्पति-सम्पदा का वितरण इस विषमता से हुआ है कि कोई भी राष्ट्र आत्म-निर्भर नहीं है। प्रत्येक राष्ट्र को अपनी भौगोलिक स्थिति से जहाँ कुछ लाभ है, वहाँ कुछ हानियाँ भी हैं। उदाहरणार्थ, संयुक्त राज्य अमरीका की धरती में, जहाँ कोयला, तेल तथा लोहा प्रचुर मात्रा में पाया जाता है, कलई का नामो-निशान भी नहीं मिलता। इटली के एक बहुत बड़ा औद्योगिक देश न बनने का कारण है वहाँ की भूमि में कोयला तथा तेल जैसे बुनियादी खनिजों का अभाव।

विश्व की नदियों ने भी अपने समीपवर्ती क्षेत्रों को भिन्न-भिन्न तरीकों से प्रभावित किया है। कुछ नदियाँ नौकानयन के योग्य हैं और इस प्रकार वे व्यापार तथा यात्रा का राजपथ बन गई। जो नदियाँ उथली तथा असंयत होती हैं, उनका बिजली तथा जल-शक्ति उत्पन्न करने में उपयोग किया जाता है। मिस्र की नील तथा अमरीका की कोलोरेडो जैसी नदियाँ, जो रेतीले प्रदेशों में से गुजरती हैं, ऊसर भूमि को उपजाऊ बना देती हैं।

विश्व-समुदाय

पृथ्वी पर मानवीय जीवन के प्रारम्भिक वर्षों में कोई भी मनुष्य पृथ्वी के एक छोटे-से भाग को छोड़

कर और किसी जगह से परिचित न था। यात्रा की गति अत्यन्त धीमी थी और मार्ग में अनेक कठिनाइयों का भी सामना करना पड़ता था, और यात्रा की आवश्यकता भी जीवन में बहुत कम थी। जैसे-जैसे यात्रा की सुविधाओं का विस्तार हुआ और लोगों की आवश्यकताएँ और कामनाएँ बढ़ती गई, वैसे-वैसे लोग अधिकाधिक यात्रा करने लगे। इस प्रकार समूहों में देशान्तर-गमन का प्रारम्भ हुआ। परिणामस्वरूप एक से विचार तथा वस्तुएँ विस्तृत क्षेत्र में मिलने लगीं। विश्व अधिकाधिक परस्पराश्रित हो गया। आवागमन तथा संचार के तीव्र गति से चलने वाले आधुनिक साधनों के कारण संसार के प्रायः सब देश एक-दूसरे के निकट-सम्पर्क में आ गए हैं। जहाँ प्रारम्भिक आदमी केवल एक छोटी स्थानीय बस्ती से परिचित होता था, वहाँ आप आज विश्व-समुदाय के सदस्य हैं। अब तो यह भी सम्भव है कि आप में से कुछ अपने जीवन-काल में संसार के प्रत्येक महाद्वीप की यात्रा कर सकें। यदि न भी कर सकें तो भी आपका जीवन इस पृथ्वी के बहुत दूर स्थित तथा बहुत प्राचीन देशों की घटनाओं से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता। आज की परिस्थितियों में तो अर्जेण्टीना से अलास्का तक, मेक्सिको से मंचूरिया तक सर्वत्र **आपका संसार** है।

मानव जाति में सहयोग उत्पन्न करने के लिए आवश्यक है कि लोग आपस में एक-दूसरे को अच्छी तरह समझें। इस पुस्तक में आप मानव जातियों की प्राचीनतम यात्राओं में उनका साथ देकर उनसे परिचित होंगे। आप उनके घरों को अपने मानचित्रों पर अंकित करेंगे। आप उनकी कठिनाइयों को समझने का प्रयत्न करेंगे तथा उनके आदर्शों की एक झलक पाएँगे। इन जातियों का बहुत महत्त्व है क्योंकि उन्होंने आपकी संस्कृति की नींव डालने तथा सभ्यता का निर्माण करने में सहायता दी है।

१. कौन-से तीन महत्त्वपूर्ण तत्त्व इतिहास का निर्माण करते हैं?
२. मानव दूसरे प्राणियों से किस प्रकार भिन्न है?
३. मनुष्य समय कैसे मापता है? इतिहास में तिथियों का प्रयोग क्यों होता है?
४. हम यह क्यों कहते हैं कि संसार परस्पराश्रित है?

आपकी संस्कृति अनेक वस्तुओं से बनी है

मानव-जीवन की कुछ सामान्य आवश्यकताएँ हमेशा से बनी हुई हैं। उन आवश्यकताओं को मिला कर हम 'संस्कृति' शब्द से पुकारते हैं।

आप अपनी दैनिक आवश्यकता की वस्तुओं, जैसे, भोजन, कपड़ा, मकान, सवारी आदि के बारे में तो जानते ही हैं। लेकिन बहुत पहले मानव उन अन्य अनेक वस्तुओं के बारे में जान गया था जो उसके जीवन को आनन्दपूर्ण तथा खुशहाल बनाने के लिए आवश्यक थीं। उदाहरण के लिए, उसने स्नेह पाने तथा किसी समूह द्वारा अपनाए जाने की आवश्यकता को महसूस किया।

आप अनेक प्रकार के संगठित और असंगठित **समूहों** के बारे में जानते होंगे। उनके विविध उद्देश्य होते हैं परन्तु सामान्य उद्देश्य यह होता है कि जो काम मनुष्य अलग-अलग नहीं कर सकते, उसे इकट्ठे, मिल कर किया जाए। संगठन की सदस्यता व्यष्टि के प्रभाव तथा शक्ति को बढ़ा देती है और उसकी संस्कृति के निर्माण में सहायक होती है।

जब लोग परस्पर मिलते हैं, तब **आत्माभिव्यक्ति** आवश्यक हो जाती है। व्यक्ति बोलकर, लिखकर तथा कलात्मक प्रयास द्वारा अपना अस्तित्व दूसरों के समक्ष प्रकट करता है। साहित्य, नाटक, संगीत तथा कला आत्माभिव्यक्ति के साधन हैं और संस्कृति के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण हैं।

शिक्षा के द्वारा मानव अपना रहन-सहन सुधार सकता है तथा ज्ञान प्राप्त कर सकता है। आपके प्रतिदिन के जीवन को अच्छी रीति से चलाने के लिए लिखने-पढ़ने और हिसाब करने का साधारण पर महत्त्वपूर्ण ज्ञान आवश्यक है। शिक्षा हमारे जीवन को आनन्दमय बनाने में भी सहायक होती है।

मानव होने के नाते, मनुष्य का मस्तिष्क तथा शरीर हमेशा ही कार्य करने के बाद थक जाता है। हम जिन वस्तुओं से अपना **मनोरंजन** करते हैं उनमें से अधिकतर साधन आधुनिक ही हैं। शताब्दियों तक कोई चलचित्र, रेडियो, टेलीविजन, फुटबाल, बास्केट बाल, बेसबाल और टेनिस के बारे में कुछ भी न

टैंडर्ड आयल कम्पनी (न्यू ज०)
जब से मनुष्य का पृथ्वी पर आविर्भाव हुआ है तब से ही अपने चारों ओर के भौतिक संसार का अध्ययन करने में उसकी दिलचस्पी रही है।

जानता था। लेकिन आपसे पहले की नवयुवक पीढ़ियाँ आज की ही तरह के ताजगी देने वाले और उत्तेजक मनोरंजन किया करती थीं।

धर्म हमेशा पूर्ण जीवन के लिए परम आवश्यक रहा है और इसका मानव-संस्कृति पर बहुत प्रभाव पड़ा है। हजारों साल से मनुष्य इस संसार के रचयिता, अर्थात् ईश्वर को जानने और उससे संपर्क करने का यत्न करता रहा है। अधिकतर प्राचीन जातियाँ बहुत सारे देवताओं के अस्तित्व में विश्वास रखती थीं; इनमें से प्रत्येक देवता प्रकृति के किसी एक रूप का अधिष्ठाता होता था। उदाहरण के लिए, सूर्यदेवता, चन्द्रदेवता, कृषिदेवता और अन्य बहुत-से देवता थे। पर यहूदियों का यह विश्वास था कि सारे विश्व में केवल एक ही ईश्वर है और वह विश्वास अमरीकी संस्कृति का एक अंग बन गया है।

भोजन, कपड़ा, आश्रय (मकान इत्यादि), यातायात-साधन, समूह की सदस्यता, आत्माभिव्यक्ति, शिक्षा, मनोरंजन तथा धर्म हमेशा ही मानव की बुनियादी दिलचस्पी की वस्तुएँ रही हैं। इन वस्तुओं में आपकी भी दिलचस्पी है। इन्हीं वस्तुओं पर मानव अपनी शक्ति तथा समय लगाता है। ये ही उसकी संस्कृति हैं।

प्राकृतावस्था से बर्बर अवस्था और फिर सभ्यता की ओर

जैसे-जैसे मानव अपनी संस्कृति के प्रत्येक तत्त्व में सुधार करता गया, वैसे-वैसे उसकी प्रगति होती गई। सबसे आदिम सभ्यता प्राकृतावस्था या वहशीपन थी। वहशी मानव घुमक्कड़ समूहों में रहता था तथा अपनी आजीविका के लिए पशुओं का शिकार करता और मछलियाँ पकड़ता था। कुछ समय के बाद, जब उस वहशी मानव ने कुछ प्रगति की, जिसमें बर्तन का आविष्कार सबसे महत्त्वपूर्ण था, तब वह जिस अवस्था में पहुँचा, उसे **बर्बरावस्था** कहा जाता है। बर्बर मानव अनगढ़ झोंपड़ियों में रहता था। अपने भोजन के लिए शिकार व मछली मारने के साथ-साथ उन्होंने अब पशुओं के रेवड़ों को अपने साथ रखना प्रारम्भ कर दिया था जिनसे वे मांस, दूध और कपड़ा प्राप्त करने लगे थे। संसार के कुछ भागों में अब भी वहशी और बर्बर मिल सकते हैं।

आप संस्कृति के अधिक ऊँचे स्तर पर रह रहे हैं, जिसे **सभ्यता** का नाम दिया जाता है। जब संस्कृति के प्रत्येक क्षेत्र में कुछ विशेष खोजें और आविष्कार हुए, तब संस्कृति को 'सभ्यता' का दर्जा मिल गया। उदाहरण के लिए, जब तक मानव ने बोलने और लिखने के लिए किसी भाषा का आविष्कार नहीं किया था, तब तक वह आत्माभिव्यक्ति के क्षेत्र में सभ्य नहीं था। अधिकतर सभ्य मनुष्य बर्बरों की अपेक्षा अधिक टिककर रहने लगते हैं। साधारणतया उनके पास स्थायी घर होते हैं। आदिम लोगों में परिवार तथा कबीला ही मुख्य समूह थे। इनकी सदस्यता रक्त-संबंध से होती थी। परन्तु सभ्य समुदाय में किसी एक क्षेत्र के सब निवासी होते हैं, चाहे उनका दूसरों से रक्त-संबंध हो या न हो। बहुधा सभ्य समुदायों का निर्माण उनकी धन, धर्म या समाज सम्बन्धी साँझी रुचियों से होता है।

सभ्य मानव कार्य करने के अधिक अच्छे ढंगों की खोज करता रहा है। मानव ने खोज करते-करते इतने अधिक आविष्कार कर डाले हैं कि उन सबका उल्लेख इस पुस्तक में सम्भव नहीं, लेकिन जैसे-जैसे आप पढ़ते जाएँगे, आपको मानव के उन विस्मय-पूर्ण आविष्कारों पर बहुत अचम्भा होगा जो मानव अपने जीवन के हर क्षेत्र में शताब्दियों से करता रहा है। आपकी सभ्यता का विकास बहुत वर्षों में हुआ है।

उस दिन की कल्पना करके रोमांच हो जाता है जब मानव प्रगति के पथ पर बढ़ता हुआ मंगल अथवा ऐसे ही किसी दूसरे ग्रह में जा पहुँचेगा। दूसरे ग्रहों के निवासियों के जीवन के बारे में सोचना बहुत आकर्षक लगता है। परन्तु जितनी मानव-सभ्यता से आप परिचित हैं वह इतनी आश्चर्यजनक तथा रहस्य-पूर्ण है कि इसके बारे में विचार करना उतना ही आकर्षक प्रतीत होता है जितना दूसरे ग्रह के निवा-सियों के जीवन के बारे में सोचना। धरती पर मिलने वाली वस्तुओं के उपयोग के द्वारा मनुष्य ने जो चमत्कार किये हैं, उन सब का ज्ञान या कल्पना कर पाना किसी भी मनुष्य के लिए संभव नहीं। यद्यपि पर्वत और समुद्र कभी-कभी मानव-प्रगति के मार्ग में बाधक सिद्ध हुए, लेकिन वे बहुमूल्य वस्तुओं के भंडार भी सिद्ध हुए हैं। जिन पशुओं को मानव कभी जंगली तथा भयानक समझा करता था, वे ही पालतू बना लिये जाने पर उपयोगी सिद्ध होने लगे। बेकार प्रतीत होने वाले पौधे अपने महत्त्वपूर्ण रहस्यों को प्रकाशित करने के लिए मानव के परीक्षणों की ही प्रतीक्षा कर रहे थे। पवन-चक्कियाँ तथा हवा से चलने वाले समुद्री जहाज मानव के आदेशों का पालन कर रहे हैं। बहुत विस्तृत क्षेत्र में फैले हुए ऊसर रेगिस्तानी क्षेत्रों को उत्पादक बना लिया गया है। पृथ्वी पहले कैसे थी, तथा हमारे पूर्वजों ने जब बहुत पहले इस पर अपना अभियान आरम्भ किया, तब वे कैसे जीवन बिताते थे ?

१. 'संस्कृति' के मुख्य तत्त्व कौन से हैं ?
२. प्राकृतावस्था, बर्बरावस्था तथा सभ्यता का क्या अर्थ है ?
३. आपके समुदाय में संस्कृति को बढ़ाने वाली कौन-कौन सी चीजें हैं ?

विचार-विमर्श के लिए प्रश्न

१. क्या इस तथ्य से कि आपको अतीत से बहुत कुछ मिला है, आप पर अपने परिवार के लिए, अपने स्कूल के लिए, अपने गाँव या बस्ती के लिए, अन्य देशों के लोगों के लिए, और भविष्य की पीढ़ियों के लिए कोई दायित्व आ जाता है ?

२. किस अर्थ में आदर्शवादी लोग संसार के असली नेता हैं ?

३. आपके विचार से आपकी पीढ़ी को सभ्यता में सुधार के लिए क्या कोशिश करनी चाहिए ? अपने प्रस्तावों पर सावधानी से विचार कीजिए तथा अपने प्रस्ताव के समर्थन में दृष्टान्त दीजिए।

४. आपने पढ़ा है कि अधिकतर सभ्य लोगों के पास स्थायी घर होते हैं। यह बात क्यों महत्त्व की है कि मनुष्य का घर कैसा है ? क्या अच्छा घर पाने के लिए अमीर होना आवश्यक है ? आपके विचार में, अच्छे घर के लिए क्या-क्या वस्तु आवश्यक है ?

५. "शिक्षित व्यक्ति को अशिक्षित व्यक्ति की अपेक्षा अधिक सुखी तथा आनन्दमय जीवन व्यतीत कर सकना चाहिए, चाहे अशिक्षित व्यक्ति की आमदनी अधिक भी हो।" क्या आप इस कथन से सहमत हैं ? यदि हैं, तो वे तरीके बताइए जिनसे शिक्षा असली सुख प्राप्त करने में सहायक होती है।

६. किसी ने कहा है कि "लोकतंत्र शासन-प्रणाली नहीं, एक **जीवन मार्ग** है।" इस कथन का क्या तात्पर्य है ?

७. आपका अपना देश किस प्रकार अपनी प्राकृ-तिक सम्पदा तथा अपनी भौगोलिक स्थिति से लाभ उठाता है ?

८. लोकतन्त्रीय शासन के वासी नागरिक की जिम्मेदारियाँ तानाशाही या निरंकुश राजतन्त्र में रहने वाले नागरिक की अपेक्षा क्यों अधिक होती हैं ?

इतिहास के उपकरणों का प्रयोग

एक. नाम, तिथियाँ तथा स्थान

१. क्या आप इन शब्दों की व्याख्या कर सकते हैं ?

एब उरबे कौन्डिटा, एन्नो डौमिनी (ए० डी०) अब्द, बी० सी०, बर्बरावस्था, कालक्रम, सभ्यता, संस्कृति, परिवेश, विरासत, समय-गत संबंध।

दो. क्या आप अपनी बात अच्छी तरह प्रकट कर सकते हैं ?

१. विश्वकोश का प्रयोग कर पता लगाइए कि कितने प्रकार के तिथिक्रमों का निर्माण हुआ है। चित्रों द्वारा या ब्लैक बोर्ड पर चित्र बनाकर कक्षा में बताइए।

२. अपने स्कूल के अथवा सार्वजनिक पुस्तकालय के अध्यक्ष से वे पुस्तकें पूछिए जिनमें प्राचीन काल के नक्शे मिल सकते हैं। प्राचीन तथा नवीन मानचित्रों की तुलना करके देखिए कि तब तथा अब के चित्र बनाने वाले पृथ्वी के प्रत्येक हिस्से का अंकन कैसे करते हैं। जो भिन्नताएँ आपको प्रतीत हों, वे कक्षा में बताइए।

तीन. सामूहिक कार्य

१. कक्षा को चार या अधिक दलों में बांटकर, प्रत्येक दल को उन वस्तुओं की सूची बनाने के लिए कहिए जिनकी आवश्यकता हर मानव को हर स्थान पर होती है। कक्षा में अपनी सूचियों की तुलना करिए तथा भिन्नताओं पर विचार करिए। एक बुनियादी सूची का निर्णय कीजिए, जिससे सब सहमत हों।

२. अपनी कक्षा के एक या अधिक लड़कों को किसी दूसरे देश में उत्पन्न मित्र का इण्टरव्यू लेने के लिए प्रतिनिधि बनाइए। यह पता लगाइए कि उसकी राय में मनुष्य-जाति को उसके देश या जाति का मुख्य योगदान क्या है ? इस इण्टरव्यू का विवरण कक्षा को बताइए।

चार. "इतिहास तथा नागरिक-शासन का संबन्ध।

१. उन पाँच विशेषताओं की एक सूची बनाइए, जिनसे आप समझते हैं कि कोई लड़का या लड़की किसी समुदाय में आदर प्राप्त कर सकते हैं।

२. उन तरीकों की सूची बनाइए, जिनसे आप अपनी कक्षा को न केवल अपने लिए बल्कि अपने सहपाठियों के लिए भी मनोरंजन और आनन्ददायक बना सकते हैं।

३. भोजन के उन विभिन्न पदार्थों की एक सूची बनाइए जो आप साधारणतया प्रतिदिन खाते हैं, और यह भी लिखिए कि प्रत्येक पदार्थ कौन-कौन से देश से आया होगा। विश्व के बड़े मानचित्र में टैग लगाकर उन देशों का निर्देश करिए जिनसे प्रत्येक पदार्थ आया है। उदाहरण के लिए, कौफी ब्राजील से आती है, चीनी प्योर्टो रिको से, इत्यादि।

४. कक्षा का प्रत्येक छात्र पृथ्वी का कोई एक देश या क्षेत्र चुन ले। तब उस क्षेत्र के जलवायु का वहाँ के पौधों पर जो प्रभाव पड़ता है, उसका अध्ययन करके उसके परिणाम कक्षा में बताइए। लोगों के पेशों, वस्त्र, भोजन तथा घरों के बारे में बताइए। आप इन देशों तथा क्षेत्रों में से चुनाव कर सकते हैं : ब्रिटेन, सहारा का रेगिस्तान, न्यूज़ीलैण्ड, आइसलैण्ड, अमेजन नदी की घाटी, तिब्बत, मिसीसिपी नदी की घाटी, पुर्तगाल, मलयेशिया, दक्षिण अफ्रीका, कांगो और मिस्र। और भी बहुत से देश हैं, जिनमें आपकी रुचि हो सकती है।
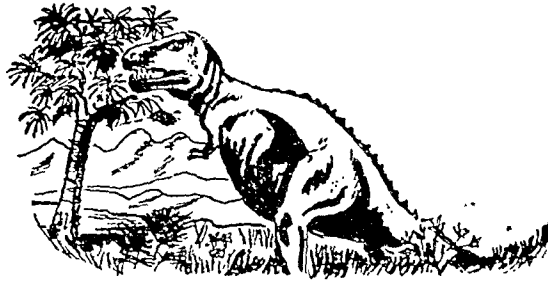
सभ्यता के लम्बे मार्ग पर मनुष्य की यात्रा

२

जिस समय पृथ्वी पर सबसे पहली प्राणवान् वस्तु दिखाई दी, उस समय तक पृथ्वी का निर्माण हुए बहुत वर्ष व्यतीत हो चुके थे। तब तक यह लाखों-करोड़ों वर्षों की विपत्तियों को झेल चुकी थी। आँधी, वर्षा, भयंकर ज्वालामुखी और हिमनदों ने पृथ्वी का एक रूप बनाया था।

हमारा विश्व बहुत प्राचीन है

संभाव्यतः एक अरब वर्ष पहले पृथ्वी पर प्रथम जीवित वस्तु का आविर्भाव हुआ। जीवन के ये प्रारम्भिक रूप बहुत सरल थे, परन्तु जैसे-जैसे समय व्यतीत होता गया, वनस्पतियों और प्राणियों के अधिक जटिल और ऊँचे रूपों का जन्म होने लगा। इनमें से बहुत से जीवन-रूपों ने स्थल पर रहना सीख लिया था, जबकि अन्य जीवन-रूप अभी झीलों, नदियों तथा सागर में ही रह रहे थे, जहाँ उनका जन्म हुआ था। तरह-तरह के पौधे परिवर्धित हुए। गरम मौसम और अधिक वर्षा के कारण समुद्री झाड़ियों, काइयों, पर्णांगों, सरकंडों तथा ऊँचे-ऊँचे झाड़ों से सघन जंगल बन गए थे।

मांसभक्षी दुष्ट डाइनोसार सींगों वाले शाकाहारी डाइनोसार पर हमला करने बढ़ रहा है। विशालकाय पर्णांगों पर घोंसले बनाने वाले पक्षियों के कुछ हिस्से पर पपड़ी होती थी जिससे पता चलता है कि उनका सम्बंध निम्नतर प्राणियों से था।

बफैलो म्यूजियम आफ साइन्स
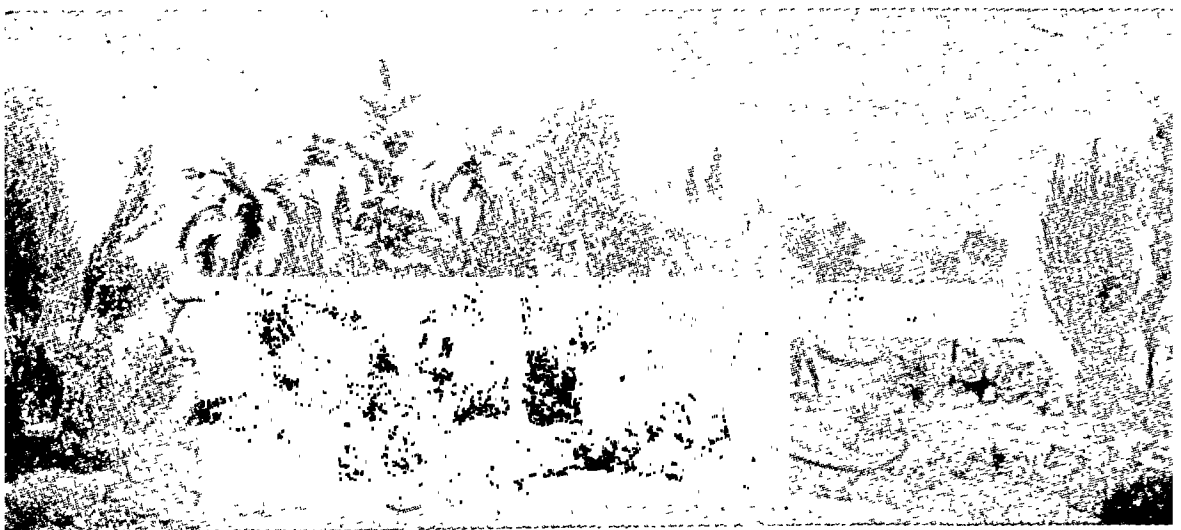
डाइनोसारों का युग : जिस समय बहुत विशाल पौधों का जन्म हुआ, उसी समय बड़े-बड़े रेंगने वाले प्राणी (सरीसृप) भी इस सृष्टि में आए। इनमें से कुछ प्राणी मांस-भक्षी थे तथा वे छोटे पशुओं का और एक-दूसरे का शिकार किया करते थे। पर उनमें से अधिकतर वनस्पति-भक्षी थे। वे समुद्र के किनारे की रेत में अपने अंडे देते थे, जो सूर्य की धूप से सेये जाते थे। चालीस से पचास फुट तक की लम्बाई वाले इन विशाल जन्तुओं की प्रज्ञा बहुत थोड़ी तथा मस्तिष्क बहुत छोटा था। वे कुछ अंशों में एक-दूसरे से विल्कुल अलग थे, परन्तु कुरूपता में वे एक-से थे। ये बड़े-बड़े विशाल जन्तु डाइनोसार कहलाते हैं।

उस बहुत पहले की दुनिया में विचित्र पक्षी इधर-उधर उड़ते रहते थे और उस समय की विशाल काइयों तथा पर्णांगों में घोंसले बनाते थे। वे हमारे आधुनिक पक्षियों के पूर्वज थे, पर उनके जबड़ों में तीखे दाँत होते थे और उनके पंखों पर पंजे होते थे। उनमें से कुछ पक्षी इतने बड़े होते थे कि वे उड़ न पाते थे, पर वे स्थल पर तेजी से दौड़ते थे।

स्तनधारी प्राणी : धीरे-धीरे गर्म मौसम ठंडा होने लगा। विशाल सरीसृप, जिन्हें अब नरम हरियाली बड़ी मात्रा में मिलनी कम हो गई थी, अब पृथ्वी से लुप्त हो रहे थे। इस बीच, गर्म रक्त वाले प्राणी, जिनके शरीर रोमों से ढके थे तथा जिनके सिर तथा मस्तिष्क अपेक्षया बड़े थे, अब पृथ्वी पर दीखने लगे थे। ये स्तनधारी प्राणी थे। मैस्टोडोन तथा बड़े-बड़े मैमोथ, जो आज के हाथी से भी बहुत बड़े थे, पृथ्वी पर घूमते थे। उनमें से बहुत से मांस-भक्षक थे जो दूसरे पशुओं का शिकार करते थे। उस युग में बहुत छोटा घोड़ा, तलवार जैसे दाँत वाला बाघ, कुत्ता, ऊँट और बहुत तरह के बन्दर भी विद्यमान थे।

पुरातत्त्ववेत्ता न्यू मेक्सिको में मिले रेड इंडियनों के बनाए मिट्टी के बर्तन को सँभाल कर उठा रहा है।

शिकागो नेचुरल हिस्ट्री म्यूजियम

इस प्रकार लाखों वर्षों में धरती बदल गई और वह एक विशाल बंजर मात्र न रही। उस पर अनेक सुन्दर दृश्य दिखाई देने लगे और फूलों से भरी घाटियाँ, अनाज, घास और पहाड़ियाँ नजर आने लगीं। पर्वत तरह-तरह के वृक्षों से ढके हुए थे, और बहुत ऊँचे पर्वत बर्फ से ढके हुए थे। अब झीलों के किनारे उजाड़ न रहे, उनके चारों ओर बड़े-बड़े सघन जंगल पैदा हो गए। तरह-तरह के कितने ही प्राणियों ने इस अधिक गर्म पृथ्वी तथा पानी को अपना निवास स्थान बना लिया था। विश्व के मुख्य अभिनेता मानव के लिए मंच तैयार हो गया था।

१. लगभग कितने समय पहले पृथ्वी पर प्रथम जीवित वस्तु पैदा हुई ?
२. डाइनोसार के युग के पौधे तथा प्राणी किस प्रकार के थे ?
३. पृथ्वी पर सर्वप्रथम स्तनधारी प्राणी कौन से थे ?

प्राचीनतम मानव के बारे में हमें कैसे जानकारी मिलती है ?

किसी लिखित प्रमाण के अभाव में, प्रागतिहासिक समय की जानकारी के लिए हमें पुरातत्त्ववेत्ताओं के कार्य पर भरोसा कर लेना पड़ेगा। पुरातत्त्ववेत्ता उन पुरुषों को कहते हैं, जो बहुत पहले के लोगों की कला, हथियारों, औजारों और अन्य वस्तुओं के बारे में अध्ययन करते हैं। इस प्रकार के अवशेष पृथ्वी की सतह के खोदे जाने पर कब्रों, गुफाओं तथा पुराने शहरों में पाए गए हैं। इन पुरातत्त्ववेत्ताओं ने वहाँ से प्राप्त साक्ष्य को सिलसिले में

जोड़कर हमारे लिए मनुष्य के प्रारम्भिक जीवन का पुनः निर्माण किया है। जहाँ पुरातत्त्ववेत्ताओं ने अपने अध्ययन के द्वारा प्राचीन मानव के रहन-सहन के तरीकों पर प्रकाश डाला है, वहाँ मानव-शरीर का अध्ययन करने वाले वैज्ञानिकों ने प्राचीन मानव के शारीरिक रूप का चित्र स्पष्ट किया है। ठठरियों या ठठरियों के प्राप्त अंशों से उन्हें हमारे आदिम पूर्वजों के शरीरों के आकार तथा स्वरूप का कुछ अनुमान हुआ है।

प्राचीन पाषाण युग : मानव के परिवर्धन की सबसे प्रारम्भिक अवस्था को पाषाण युग (पैलियोलिथिक युग) कहते हैं। यह युग इतने अधिक समय तक रहा, कि इसकी समयावधि को ठीक-ठीक समझना कठिन है। यह युग सम्भवतः दस लाख वर्ष तक रहा। इस पृथ्वी पर अब तक मानव ने जितना जीवन व्यतीत किया है, उसके लगभग निन्यानवे प्रतिशत समय में पाषाण युग रहा। इस युग में मानव का परिवर्धन अत्यन्त धीमा रहा।

हिम युग : शायद मानव में शीघ्र परिवर्धन के लिए आवश्यक बुद्धि न थी, परन्तु इस धीमेपन का कारण चार हिम युगों की शृंखला भी थी, जिसमें अधिकतर यूरोप, एशिया तथा उत्तरी अमरीका बर्फ की मोटी तह से ढका हुआ था। वैज्ञानिकों की यह धारणा है कि प्रथम हिम युग का प्रारम्भ दस लाख वर्ष पहले हुआ। जब हिम की सैकड़ों, बल्कि हजारों फुट मोटी तहें दक्षिण की तरफ को फैलने लगीं, तब मौसम अधिक ठंडा हो गया। ऐसे जलवायु के कारण पौधे तथा बहुत से प्राणी नष्ट हो गए, और कुछ प्राणियों को आगे बढ़ते हुए हिमनदों से दूर भागने के लिए मजबूर होना पड़ा।

इन चारों हिम युगों में से प्रत्येक युग हजारों साल तक रहा, और इन युगों की, बीच में, न मालूम किस कारण, बर्फ पिघलने लगती थी तथा मौसम हलका हो जाता था। बर्फ हट जाने पर प्राणी फिर उत्तर की ओर चले जाते थे और वनस्पति-जीवन फिर लहलहाने लगता था। हिमनदों के बीच के ये काल भी हजारों वर्ष रहते थे।

सब से प्रथम मानव : सबसे पहला मनुष्य, जो संभवतः प्रथम हिम युग में हुआ था, आधुनिक किसान, मैकेनिक या व्यापारी से बहुत भिन्न दिखाई देता था। उसका सिर आँखों के ऊपर से पीछे की ओर को ढालदार था, जिसमें सोचने का काम करने वाले मस्तिष्क के लिए कुछ जगह नहीं छूटी हुई थी। यद्यपि हिम मानव सीधा खड़ा होकर चलता था, पर फिर भी उसका सिर और कंधे कुछ झुके से रहते थे। हिम-मानव अपने सिर को अपनी मोटी, छोटी-सी गर्दन पर से आगे को बढ़ाये रखता था, जैसे कि वह अपने शरीर को संतुलन में रख रहा हो। उसका गिट्टा शरीर संभवतः बालों से ढका होता था और उसकी वाणी मुख्यतः हुंकारने और गुर्राने तक सीमित थी।

चौथा और अन्तिम हिमकाल लगभग ४,००० वर्ष रहा। इसके बाद विशालकाय हिमनद पिघल कर सुदूर उत्तर की ओर लौट गया।
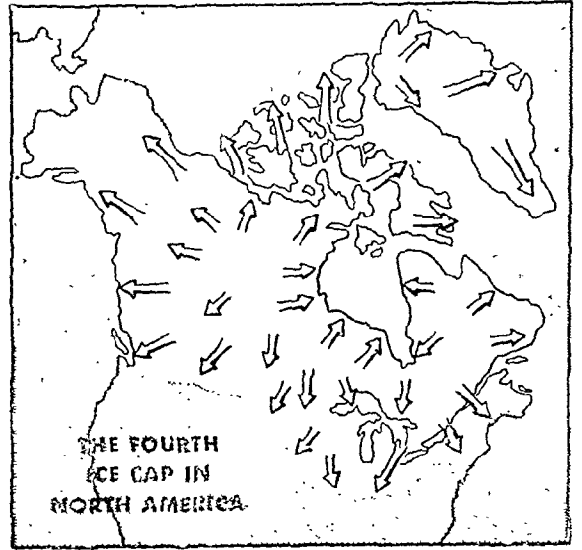
प्रारम्भिक मानव के बहुत सारे शत्रु थे, और उनसे बचाव का उसके पास वैसा कोई साधन न था, जैसे उसके शत्रुओं के पास थे। वह हिरण की तरह दौड़ने में तेज नहीं था। उसके पास, लड़ने के लिए पंजे, खुर, चोंच या विषैले दाँत न थे। न उसके पास अपनी रक्षा के लिए पशुओं की तरह तीव्र दृष्टि, श्रवण-शक्ति या घ्राण-शक्ति थी। इस

प्रकार, शारीरिक दृष्टि से उसके पास पशुओं से मोर्चा लेने के लिए मुकाबले के साधन न थे और इस प्रकार उसे हमेशा उनसे खतरा रहता था। इस अनमेल लड़ाई में, उसके पास एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण वस्तु थी, उसका उनसे तेज मस्तिष्क।

अपने इस तीव्र मस्तिष्क के कारण वह न केवल उन प्राणियों से लोहा ले सका था, बल्कि अपना सुधार तथा उन्नति भी कर सका। उसने पत्थरों को छील कर इस प्रकार के हथियार बना लिए जिनका वह आसानी से हाथ से प्रयोग कर सकता था, और इसी को मुठिया-बसूला या कुल्हाड़ी कहते हैं। कोई भी निम्नतर प्राणी यह काम, अर्थात् पत्थरों के द्वारा किसी प्रकार का हथियार बनाने का काम, नहीं कर सकता था, और यह शस्त्र, जो आज हमें बहुत ही सादा-सा लगता है, प्रागैतिहासिक मानव का एक बहुत आश्चर्यजनक आविष्कार था।

ऐसे प्रागैतिहासिक मानव के अवशेष हमें इण्डोनेशिया के जावा द्वीप में १८९१ में मिले थे लेकिन वहाँ भी खोपड़ी के एक हिस्से, कुछ दाँतों, और

आस्ट्रेलिया के बुशमैन आदिवासी आज भी परिवर्धन की आदिम अवस्था में हैं। उनके वस्त्र तथा हथियार ध्यान से देखिए।

आस्ट्रेलियन न्यूज़ एंड इन्फार्मेशन ब्यूरो

बाईं जाँघ की हड्डी के अतिरिक्त कुछ नहीं मिला, पर इन्हीं वस्तुओं के प्रयोग से मानवशास्त्रवेत्ताओं ने जावा-मानव के ढाँचे का पुनः निर्माण किया, जो हमारी दृष्टि में सबसे प्राचीन मानव है।

नीनडरताल मानव : जावा-मानव के हजारों साल बाद के कई पुरुषों, स्त्रियों तथा बच्चों की ठठरियाँ संसार के भिन्न-भिन्न भागों में मिली हैं। ये लोग उस जाति के सदस्य थे जिसे प्रायः इस कारण नीनडरताल मूलवंश कहा जाता है कि उनका परिवर्धन जर्मनी की नीनडर घाटी में मिले एक ठठरी के अंश के परिवर्धन के समान था। ये लोग अन्तिम अन्तर्हिमकालीन अवस्था में मौजूद थे और अन्तिम हिमकाल में भी रहे।

नीनडरताल मानव जावा-मानव से कहीं अधिक उन्नत था। सम्भवतः वह जावा-मानव की अपेक्षा अधिक सीधा खड़ा हो सकता था और इसकी खोपड़ी भी उससे बड़ी थी। नीनडरताल मानव के उपकरण तथा शस्त्र भी अधिक उन्नत थे। किसी चतुर शिकारी ने अपनी मुठिया कुल्हाड़ी को एक तरफ से खूब छीलकर धार को बहुत पतला तथा तेज़ बनाकर अधिक उपयोगी बना लिया था। लगभग १,००,००० वर्ष तक लोग तथा लड़के अधिक अच्छी मुठिया कुल्हाड़ियों पर गर्व करते रहे। सम्भवतः पिता अपने बच्चों को समझाते थे कि यह सब उद्देश्यों की पूर्ति करनेवाला अद्भुत उपकरण है। यह हथौड़े, चाकू, कुल्हाड़ी, खुरचने के औजार, सुए तथा कटार सब का काम पूरा कर सकता था। और तब, एक दिन किसी अधिक तीव्र-मस्तिष्क आदमी ने एक तेज नोकीले पत्थर को एक डंडे के साथ चमड़े की डोरियों से बाँध दिया। अब उसके पास एक भाला, या हत्थीदार कुल्हाड़ी थी और निःसन्देह उसके सब पड़ोसियों ने तुरन्त उसकी नकल कर ली।

नीनडरताल मानव ने अग्नि का भी प्रयोग प्रारम्भ किया, ताकि वह गरम रह सके, अपना भोजन पका सके तथा उन प्राणियों को डरा कर अपनी गुफा से दूर रख सके जो उसका शिकार करते थे। इस प्रकार भोजन सुरक्षित रखने और

अपनी रक्षा करने के प्रयत्न करते-करते मानव एक आविष्कारक बन गया। उसने प्रकृति की वस्तुओं को अपनाया और उन्हें सुधारा।

क्रोमग्नन मानव—नीनडरताल मानव लुप्त हो गया—संभाव्यतः हिम-नदों ने या अधिक उन्नत तथा चतुर मनुष्यों ने उन्हें दबा लिया। कुछ भी हो, अन्तिम हिम युग के आखिरी दिनों में तथा प्राचीन पाषाण युग के अन्तिम वर्षों में एक अधिक उच्चतर मानवप्राणी क्रोमग्नन मौजूद था, जिसकी ठठरियाँ फ्रांस में पाई गई हैं। इस मानव की ठोडी तथा माथा उभरे हुए थे और यह नीनडरताल मानव से अधिक ऊँचा था तथा इसकी टाँगें भी उससे अधिक लम्बी थीं।

गुफाओं में, ठठरियों के साथ **शिल्पतथ्य**, या औज़ार मिले हैं जिनसे क्रोमग्नन मानव के बारे में हमें बहुत-कुछ पता चलता है। मछली पकड़ने तथा शिकार करने के लिए उसके पास एक प्रकार के हार्पून या भाले थे। उसने अपने पत्थर के हथियारों को इतना सुधारा कि वे हड्डी, सींग, तथा हाथी-दांत काटने योग्य हो गए, उसने सुई का निर्माण किया जिससे वह अपने लिए पशुओं की खाल के वस्त्र सीता था। उसकी उपलब्धियाँ इन उपयोगी कामों तक ही सीमित न थीं। यूरोप की कुछ गुफाओं में इस प्राचीन क्रोमग्नन मानव के बनाये चित्र तथा नक्काशी पाई गई हैं। उनमें से कुछ तो इतनी अच्छी कृतियाँ हैं कि आज भी उनसे अच्छी कृति बनाने के लिए बहुत उत्कृष्ट कलाकार की आवश्यकता होती। मानव ने अपनी आस-पास की वस्तुओं को अधिक सुन्दर बनाने की कोशिश प्रारम्भ कर दी थी।

प्रारम्भिक मानव का धर्म—प्रारम्भिक जातियों के जीवन में अतिप्राकृतिक या आध्यात्मिक सत्ताओं की पूजा का बड़ा महत्त्व था। प्रकृति के ऐसे आश्चर्य जैसे बदलती ऋतुएं, उपजाऊ भूमि, सूर्य-चन्द्र आदि आकाशीय पिंड और बाढ़ें उनको भयभीत कर देती थीं। उनके चारों ओर हर जगह ऐसी अद्भुत शक्तियाँ थीं, जिन्हें न तो वे देख सकते थे और न उनके बारे में कुछ विचार कर सकते थे। इन अलौकिक शक्तियों की, जो प्रकृति के बलों का संचालन करती थीं, कृपा पाने के लिए प्रारम्भिक मानव अपने सब कार्यों में धार्मिक अनुष्ठान सम्पन्न करते थे। मृत्यु के समय भी, वे आशाभरी निगाहों से अपने ईश्वर की आश्चर्यजनक शक्ति को देखते थे; और इस प्रकार धार्मिक प्रवृत्ति वाले क्रोमग्नन मानव सुरक्षित कब्रों में मृत शरीर को सावधानी से गाड़ देते थे तथा उसके साथ ऐसे हथियार और वस्त्र रख देते थे, जिन्हें वे परलोक में उसके लिए आवश्यक समझते थे।

यूरोप तथा भूमध्यसागर के क्षेत्र में प्राचीन पाषाण युग की समाप्ति दस हजार वर्ष पहले हो गई थी। लेकिन संसार के अन्य भागों में यह युग इसके बाद भी जारी रहा। उदाहरण के लिए, बहुत से रैड इण्डियन (अमरीकी आदिवासी) अब तक पाषाण युग में थे, जबकि कोलम्बस ने १४९२ में अमरीका को ढूंढा। लेकिन यूरोप में, पाषाण युग के बाद एक नया और अधिक प्रबुद्ध युग आया। मानव अब अधिक उन्नति के पथ पर अग्रसर होने वाला था।

१. इतिहास के ज्ञान के लिए हमारे पास कौन से तीन स्रोत हैं? प्रागैतिहासिक काल के ज्ञान के लिए हम उनमें से किस स्रोत पर भरोसा कर सकते हैं?
२. परिभाषा दो: पुरातत्त्व-वेत्ता, मानव-विज्ञानवेत्ता।
३. हिम-युगों का वर्णन करो।
४. जावा मानव, नीनडरताल मानव तथा क्रोमग्नन मानव के भेद स्पष्ट कीजिए।
५. प्राचीन पाषाण युग में मानव ने क्या-क्या महत्त्व-पूर्ण काम करना सीखा?

नवपाषाण युग के अधिक महान् कार्य

नवपाषाण युग (या नियोलिथिक युग) का अर्थ है नया पाषाण युग। लगभग दस हजार वर्ष पहले क्रोमग्नन मानव लुप्त हो गया। यूरोप में अब एशिया या अफ्रीका या शायद दोनों ही स्थानों से नयी जातियाँ आने लगीं। इन जातियों का युगों से परि-वर्धन होता रहा था और शारीरिक दृष्टि से वे बहुत कुछ आधुनिक मानव से मिलती-जुलती थीं। उन्होंने कार्य करने के नए तथा अधिक अच्छे तरीके निकाले और प्राचीन पाषाण युग के लोगों के मुकाबले ज्यादा तेज़ी से उन्नति की।

शिकागो नेचुरल हिस्ट्री म्यूजियम
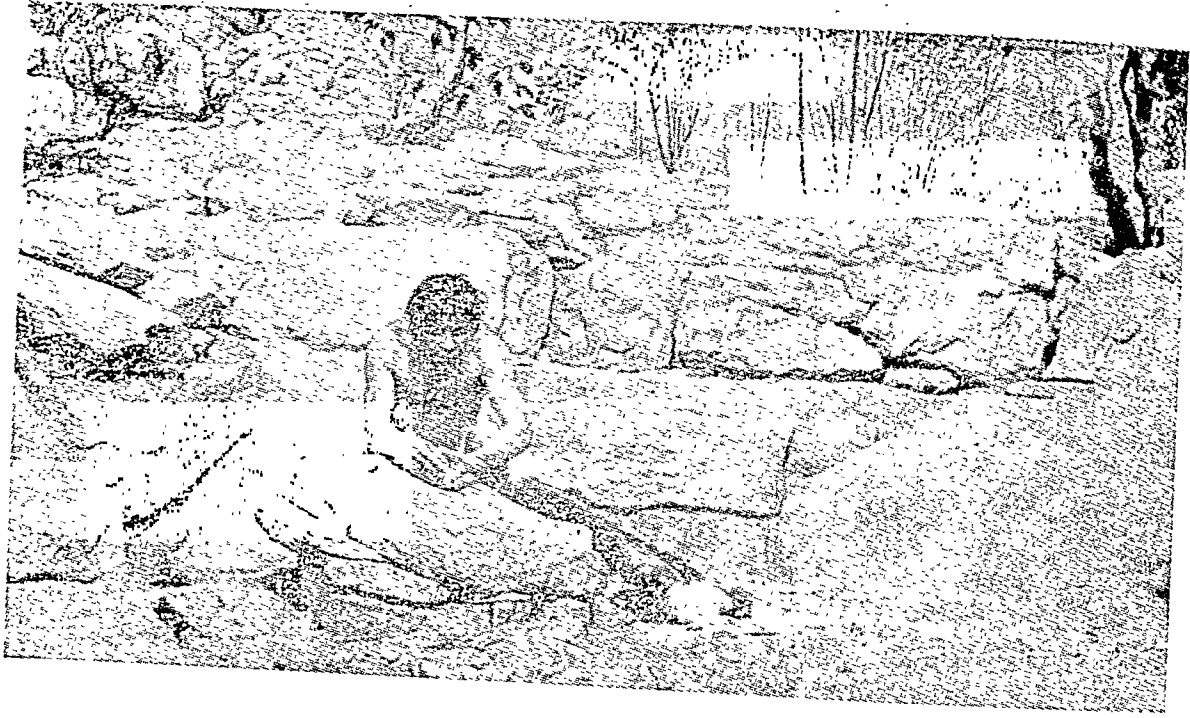
बारीकी से देखिए तो आपको नवपाषाण युग के इस मानव की गुफा के घर के पत्थरों पर खुदी हुई बारीक नक्काशी दिखाई देगी। क्या आप, आधुनिक उपकरणों द्वारा भी, प्रागैतिहासिक कलाकार की नक्काशी से अच्छी नक्काशी कर सकते हैं?

नव-पाषाण युग का मानव—यद्यपि पाषाण युग के मानव ने अपने कुछ भोजन के लिए शिकार जारी रखा पर उसने अपना बहुत सा भोजन स्वयं पैदा करना सीख लिया। इस कार्य में सहायता के लिए मानव ने पशुओं को घरेलू या पालतू बनाया। सांड को एक बोझा ढोने वाले पशु के रूप में प्रयोग किया गया। मवेशियों के रेवड़ दूध के लिए पाले गये। इन रेवड़ों की देखभाल भी उन मनुष्यों की एक अतिरिक्त जिम्मेदारी हो गई और उनके मालिक, जो घुमक्कड़ जीवन व्यतीत करते थे, अब इतने स्वतन्त्र न रहे जितने वे पहले थे। अब उन्हें अपने रेवड़ों के साथ रहना पड़ता था या उनके साथ घूमना पड़ता था। कुत्ता, जो सबसे पहले पालतू बनाया गया था, शिकार में ही मददगार नहीं था, बल्कि परिवार तथा पशुओं का रक्षक तथा साथी था।

नवपाषाण मानव ने जंगली भोजन के साथ-साथ कुछ खेती-बाड़ी भी सीख ली थी। और इस प्रकार वे धीरे-धीरे किसान बन गए। जब पुरुष शिकार करते तथा अपने परिवार की रक्षा में रत रहते, उस समय घर की स्त्रियाँ सन, जौ और गेहूँ बोतीं तथा उसकी देखभाल करतीं। अनाज को सुरक्षित रखने तथा फसल काटने के लिए यह आवश्यक था कि परिवार एक अधिक लम्बे समय के लिए एक स्थान पर रहे, और इस प्रकार लोग अधिक स्थायी रूप से रहने लगे और इकट्ठा काम करना सीखने लगे। मानव की संस्कृति के विकास में यह बहुत महत्वपूर्ण कदम था।

शताब्दियों में नव-पाषाण मानव ने दूसरी कलाएँ सीखीं। उसने यह पता लगाया कि सन के तन्तु कात कर धागा बनाया जा सकता है और उससे वस्त्र बुना जा सकता है। औरतें सादी पोशाक सीने के लिए हड्डी की सुइयों का प्रयोग करती थीं। पुरुषों ने अपने अनाज रखने के लिए मिट्टी से बर्तन बनाना आरम्भ कर दिया। उन्होंने यह खोज निकाला कि आग पर पकाने से मिट्टी के

वर्तन अधिक सख्त हो जाते हैं। देर तक मेहनत तथा धैर्य से प्रयत्न करने के बाद में, कुछ हथियार बनाने वालों ने अपने पत्थरों के हथियारों को और अधिक सुधारना सीखा। उनके किनारे रगड़ कर तथा चमका कर हथियारों को और भी तेज कर लिया। इस प्रकार चमकाए हुए पत्थर के हथियार इतने सुन्दर थे कि नव-पाषाण युग को प्रायः **चमकाया-हुआ-पाषाण युग** भी कहते हैं।

इस समय के लोगों ने लम्बे-लम्बे लट्ठों का बीच का अंश कुछ जला कर नावें बनाईं। इस प्रकार की नावें संसार की सबसे पहली नावों में से थीं, और इनसे मनुष्य इस योग्य हो गये कि वे नदियों का एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने में भी उपयोग कर सकते थे। इस प्रकार प्रकृति पर मानव की इस विजय से मनुष्य की एक और आवश्यकता पूरी हुई।
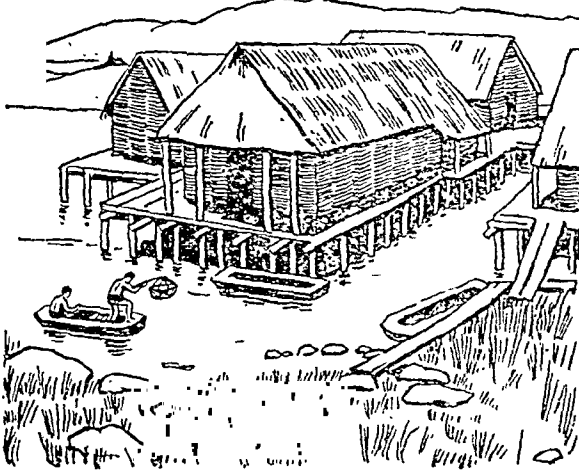
झीलों में रहने वालों की झोंपड़ियाँ तरह-तरह के नमूनों की होती थीं। यह झोंपड़ी स्विटजरलैंड में हाल में की गई खुदाई में मिली है।

बहुत से स्थानों पर लकड़ी की या डालियों से गुंथी हुई झोंपड़ियाँ बनाई गईं। वृक्षों की शाखाएं एक दूसरे से उलझा कर, ऊपर से पशुओं की खालें लगा कर या बीच में मिट्टी भर कर ये झोंपड़ियाँ बनाई जाती थीं। स्विटजरलैण्ड की झीलों में इस प्रकार की लकड़ियों की झोंपड़ियों के अवशेष पाए गए हैं, जो पानी में ऊँची लकड़ी का थड़ा बना कर उनके ऊपर बनाई जाती थीं ताकि वैरियों या जंगली पशुओं से रक्षा हो सके। लकड़ी तथा टहनियों की बनी हुई इन झोंपड़ियों में लकड़ी के गुटकों की बनी हुई अनगढ़ मेजें तथा बैंचें होती थीं।

मूलवंश—इस समय तक मानव पृथ्वी के अधिकतर स्थलीय भाग पर फैल चुका था। तीन मूलवंश इस समय तक परिवर्धित हो चुके थे। काला या नेग्रोयड, पीला या मंगोलोयड तथा श्वेत या काकेशियन। काला मूलवंश मध्य तथा दक्षिणी अफ्रीका और प्रशान्त महासागर के कुछ द्वीपों में पाया जाता था। पीला मूलवंश एशिया के चीनी, जापानी, और मंगोलियन, उत्तर-पश्चिमी यूरोप के *लैप, उत्तरी ध्रुव प्रदेश के एस्कीमो* और रैड इण्डियनों में पाया जाता है। रैड इंडियनों को लाल मूलवंश भी कहा जाता है, परन्तु मूलतः ये पीले मूलवंश से ही थे। वे अमरीका में सम्भाव्यतः उस समय आए जब एशिया तथा उत्तरी अमरीका उस जगह मिले हुए थे जहाँ आज बेअरिंग जलसंधि है। श्वेत मूलवंश यूरोप, उत्तरी अफ्रीका तथा दक्षिण एशिया के कुछ भागों में रहता था। पीले तथा काले मूलवंश मलाया प्रायद्वीप और प्रशान्त महासागर के कुछ द्वीपों में रहते थे।

१. नव-पाषाण युग कितने समय पहले शुरू हुआ?
२. नव-पाषाण युग का अर्थ क्या है?
३. उन मुख्य कार्यों की सूची बनाओ जिन्हें नव-पाषाण मानव ने करना सीखा।
४. मानव जाति के कौन से तीन मूलवंश हैं? नव-पाषाण युग में प्रत्येक मूलवंश कहाँ रहता था?

कांस्ययुग में धातुओं का उपयोग आरम्भ हुआ

तांबे के औजार—पांच या छह हजार वर्ष पहले मानव के लिए एक नया युग प्रारम्भ हुआ। भूमध्य सागर के पूर्वी सिरे पर मनुष्यों ने देखा कि तांबे से, पत्थर के हथियारों और औजारों की अपेक्षा अच्छे हथियार और औजार बनाए जा सकते थे। तांबे को पीट कर चाकू, कुल्हाड़ी, हथौड़े और भाले, कटार और दूसरे सादे औजार बनाए जा सकते थे। पर इन हथियारों की धार जल्दी खुंडी हो जाती थी, क्योंकि तांबा मुलायम धातु है। तब कुछ चतुर मनुष्यों ने पता लगाया

१. लोकतंत्र की दिशा में बढ़ते कदम

जो कहानी विश्व इतिहास कहलाती है, वह मानव के अपनी और अपने पड़ोसियों की आजादी की दिशा में धीरे-धीरे बढ़ने की कहानी है।

पाषाण युगों के परिवार में पिता ही पूर्णरूपेण स्वामी था। परिवार में उसकी स्थिति उसके पशुबल द्वारा तब तक कायम रहती थी जब तक वह बूढ़ा और कमजोर न हो जाता। सहयोग की भावना से अभी लोग परिचित न थे।

जब मानव ने खेती करना सीख लिया तब परिवार के कुछ लोग उसकी देखभाल के लिए घर रहते थे। इस प्रकार परिवार अधिक स्थिर हो गए।
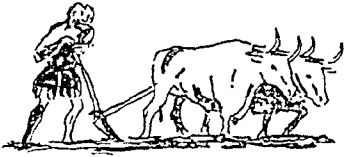
जब खैलों या कुलों की संख्या बढ़ गई और उनका एक कबीला बन गया जिसका मुखिया चुना जाता था, तब प्रारम्भिक मानव लोकतन्त्रीय जीवन के कठिन और लम्बे मार्ग की पहली मंजिल पर पहुंच गया—पर पूर्ण लोकतंत्रीय लक्ष्य पर वह हजारों वर्षों तक न पहुँच सका। यद्यपि मुखिया की प्रमुख स्थिति का कारण उसका शारीरिक बल था, पर वह पूरे कबीले द्वारा चुना जाता था।

कि पिघले हुए तांबे में पिघली हुई कलई मिलाने से एक अधिक सख्त पदार्थ प्राप्त किया जा सकता था। इसी नए पदार्थ को कांस्य या कांसे का नाम दिया गया।

कांस्य के औजार—लगभग चार हजार वर्ष पहले ताम्र युग का उदय धीरे-धीरे हुआ। ऐसा नहीं हुआ कि लोगों ने अपने पत्थर के हथियारों को एकदम फैंक दिया और कांसे के हथियारों का प्रयोग करने लगे। इसके अलावा, कांस्य युग संसार के सब भागों में झटपट नहीं फैल गया। जिस समय कोलम्बस ने अमरीका का पता लगाया था, उस समय तक बहुत सारे लोग पाषाण युग में थे, और विश्व के कुछ भागों में पूरे के पूरे कबीले २०वीं शताब्दी के आरम्भ में भी पाषाण युग में थे। लेकिन जब संसार के किसी एक भाग

१· जीवन-निर्वाह की प्रगति के चरण

प्रथम बार पृथ्वी पर आने के बाद के हजारों वर्षों में मानव न केवल जीने के लिए मेहनत और संघर्ष करता रहा बल्कि अपने जीवन को अधिक आसान, सुखद और आनन्दपूर्ण बनाने के लिए भी यत्न करता रहा। हर युग में कुछ आशावादी लोगों ने आती हुई संस्कृति को अत्यन्त कठिनाइयों के बावजूद एक उच्चतर स्तर पर पहुंचाने का हर सम्भव प्रयत्न किया। ऊपर की ओर चढ़ने के लिए किए गए मानव के विशिष्ट कार्यों को ही हम उसके जीवन मार्ग की मंजिलें कहेंगे। ये मंजिलें जीवन के बहुत से क्षेत्रों जैसे, विज्ञान, आविष्कार, शिक्षा तथा कला में दिखाई देती हैं।

विज्ञान तथा आविष्कारों में उन्नति

हमारे बहुत पुराने पूर्वज, जो इतिहास लिखे जाने की परम्परा से पहले हुए थे, वास्तव में विलक्षण पुरुष थे। उन्होंने काम करने के लिए जिन औजारों का निर्माण किया, उन्हीं से हमारे आज के जीवन की नींव बनी है। यदि आज हम उनके नाम जानते होते तो हम उन्हें बड़ी प्रसन्नता के साथ इज्जत देते, उदाहरण के लिए उसे जिसने सबसे पहले पत्थर से हथौड़ा बनाया

या धागे से कपड़ा बुना

या लीवर (उत्तोलक) से पत्थर उठाया

या दूसरे बुनियादी औजारों का आविष्कार किया।

में कांसे का प्रयोग बड़े विस्तृत क्षेत्र में हो गया, तब हम कहते हैं कि वे लोग उस समय कांस्य युग में थे।

संस्कृति के उच्चतर स्तर की तरफ बढ़ने की दिशा में धातुओं का प्रयोग एक महत्त्वपूर्ण कदम था। इन नए उपकरणों के द्वारा उसके सम्मुख बहुत सारी नई सम्भावनाओं का मार्ग खुल गया। धातु के हथियारों में पत्थर के हथियारों से जो भेद है उस पर ध्यान दें तो आप समझ जाएंगे कि मनुष्य को उसके कांसे के हथियारों ने कितना कार्यदक्ष बना दिया होगा। इन्होंने मानव को सभ्यता की देहली पर पहुँचने में सहायता दी।

सभ्यता का आरम्भ होने तक मानव जाति बहुत कुछ सीख चुकी थी। मनुष्य के पास रक्षा करने के वे साधन न थे जो निम्नतर प्राणियों के पास थे पर उसने अपनी उत्कृष्ट बुद्धि का विकास किया और वह सच्चे अर्थों में अपने परिवेश, अर्थात्

शिक्षा की प्रगति

जब लोगों ने परिवार बना कर रहना शुरू किया, तब माता-पिता के लिए अपने बच्चों को उपकरण और हथियार बनाने की शिक्षा देना आवश्यक हो गया। वे उन्हें तीर-कमान से शिकार करना, हारपून (भाले) से मछली मारना, बीच से खोद कर बनाई गई नावें संभालना और भोजन प्राप्त करने और अपनी देखभाल करने के अन्य आवश्यक तरीकों की शिक्षा देते थे। इस प्रकार शिक्षा का प्रारम्भिक रूप परिवार में ही आरम्भ हुआ जहाँ बच्चे अपने माता-पिता से सीखते थे।

कला की प्रगति

चूँकि प्रागैतिहासिक लोगों को लिखना नहीं आता था, इसलिए मानव ने अपने विचारों को चित्र तथा वस्तुएँ बना कर प्रकट करना शुरू कर दिया। वे अपनी गुफाओं की दीवारों पर चित्र बनाते थे और अपने हथियारों की हत्थियों पर नक्काशी करते थे तथा मिट्टी से सुन्दर बर्तन बनाते थे।

आस-पास की परिस्थिति का स्वामी बन गया। वह अब तक भाषा का, अग्नि का और कांस्य हथियारों का प्रयोग सीख चुका था। वह यह भी सीख चुका था कि अपनी रक्षा के लिए परिवार और कबीले बना कर रहना चाहिए। वह बोना तथा काटना, भोजन पकाना, कपड़े सीना, गिनना, रहने के लिए घर बनाना और लट्ठे को बीच में से गहरा करके इसका नाव की तरह उपयोग करना भी सीख चुका था।

इन प्रारम्भिक मानवों में बड़े प्रतिभाशाली आविष्कारक हुए। यद्यपि इन आविष्कारकों के नाम धुंधले भूत में मिट चुके हैं, तो भी वे महत्ता में उन लोगों के बराबर थे जिनके नाम आज हम जानते हैं। उदाहरण के लिए जिन व्यक्तियों ने सबसे पहले भाले, धनुष और बाण तथा धातु को गलाने का आविष्कार किया, वे प्रतिभाशाली मनुष्य थे। जिन तीन मूल सिद्धान्तों पर आज के यंत्र निर्भर हैं, वे भी प्राचीन मानव के द्वारा

खोजे तथा प्रयोग किए गए थे। उन्होंने इन सिद्धान्तों का प्रयोग पहिए, नत समतल (इन्क्लाइंड प्लेन) और उत्तोलक (लीवर) में किया था।

हाँ, मानव जाति लम्बा रास्ता तय कर चुकी थी। पाषाण तथा प्रारम्भिक धातु युग के लाखों वर्षों में उसने जो कठिन संघर्ष किया, उस पर विचार करें तो मनुष्य अपनी प्रगति पर गर्व कर सकता है।

१. मानवजाति के विकास में कांसे का प्रयोग एक महान् कदम क्यों था?
२. पूर्वी भूमध्यसागर के क्षेत्र में कांस्य युग का प्रारम्भ कब हुआ?
३. पृथ्वी पर मनुष्य के जन्म से इतिहास लिखा जाना शुरू होने तक मानव क्या कुछ करना सीख चुका था?

विचार-विमर्श के लिए प्रश्न

१. अति-प्राकृतिक या आध्यात्मिक से आप क्या समझते हैं?

२. मानव को उच्च कोटि की बुद्धि मिली थी जिससे उसने अपने आस-पास की परिस्थितियों को बदल लिया है। दूसरी तरफ, डाइनोसारों में बुद्धि नहीं थी और उनके परिवेश (आसपास की परिस्थितियों) ने उन्हें नष्ट कर दिया। आपकी राय में किस सीमा तक मानव आज भी अपनी परिस्थितियों पर विजय प्राप्त कर सकता है। कुछ नई वैज्ञानिक घटनाओं से इसके उदाहरण दीजिए।

३. आप जिस गांव-बस्ती के परिवेश में रहते हैं, उसे कैसे सुधार सकते हैं?

४. उन प्राचीन तथा नवीन उपायों की तुलना कीजिए, जिनसे मानवजाति प्रकृति को अपना सेवक बनाती है।

इतिहास के उपकरणों का प्रयोग

एक—नाम, तिथियाँ तथा स्थान

१. क्या आप इन शब्दों की व्याख्या कर सकते हैं?

पुरातत्त्ववेत्ता, मानवविज्ञानवेत्ता, शिल्पतथ्य या कलाकृति, युग, मैमथ, मैस्टोडोन, नव-पाषाण युग, यायावर (घुमक्कड़), प्राचीन पाषाण युग, तलविज्ञान (टोपोग्राफी)

२. विश्व के मानचित्र में छह महाद्वीप तथा पांच महासागर दिखाओ।

दो—बुलेटिन बोर्ड के लिए

कक्षा में से एक कमेटी बनाकर एक सप्ताह या अधिक के लिए बुलेटिन बोर्ड का कार्यभार उसे सौंप दो। कमेटी को सारी सामग्री को आकर्षक तरीके से बोर्ड पर लगाना चाहिए और प्रदर्शित वस्तुएं देखने के लिए कक्षा से कहना चाहिए।

सरीसृपों (रेंगने वाले जीवों) के युग के प्राणियों तथा पौधों के चित्र समाचार-बोर्ड के लिए इकट्ठे कीजिए।

तीन—इतिहास तथा विज्ञान का संबंध

१. क्या आपकी बस्ती में कोई ऐसे स्थान हैं जिन्हें देखने से यह पता चले कि आंधी, वर्षा, नदियों के कटाव, हिम की क्रिया या ज्वालामुखी की क्रिया से यहाँ पृथ्वी का रूप कुछ बदल गया है?

२. किसी विज्ञान अध्यापक को कक्षा में बुला कर पचास लाख वर्ष पहले के संसार के प्राकृतिक रूप के बारे में जानकारी प्राप्त कीजिए।

३. यदि आप किसी नदी या झील के किनारे रहते हैं तो सरकंडे, रश, और काई कक्षा में लाइए और यह दिखाइए कि एल्म तथा फलों के वृक्षों या गुलाब और दूसरे साधारण फूलों से लाखों वर्ष पहले वनस्पति जीवन का यह रूप था।

४. कई चित्रों की सहायता से यह दिखाइए कि आधुनिक हथियार का प्राचीन पत्थर के हथियार से संभवतः किस प्रकार विकास हुआ होगा।

चार—चित्राध्ययन

इस खंड में जो चित्र हैं, उनके बारे में बातचीत करिए, विशेष रूप से उनके बारे में जिनमें प्रारम्भिक मानव का जीवन दिखाया गया है। प्राचीन मानव के कपड़ों, उपकरणों, घरों तथा दूसरी विशेष वस्तुओं पर टिप्पणी कीजिए।
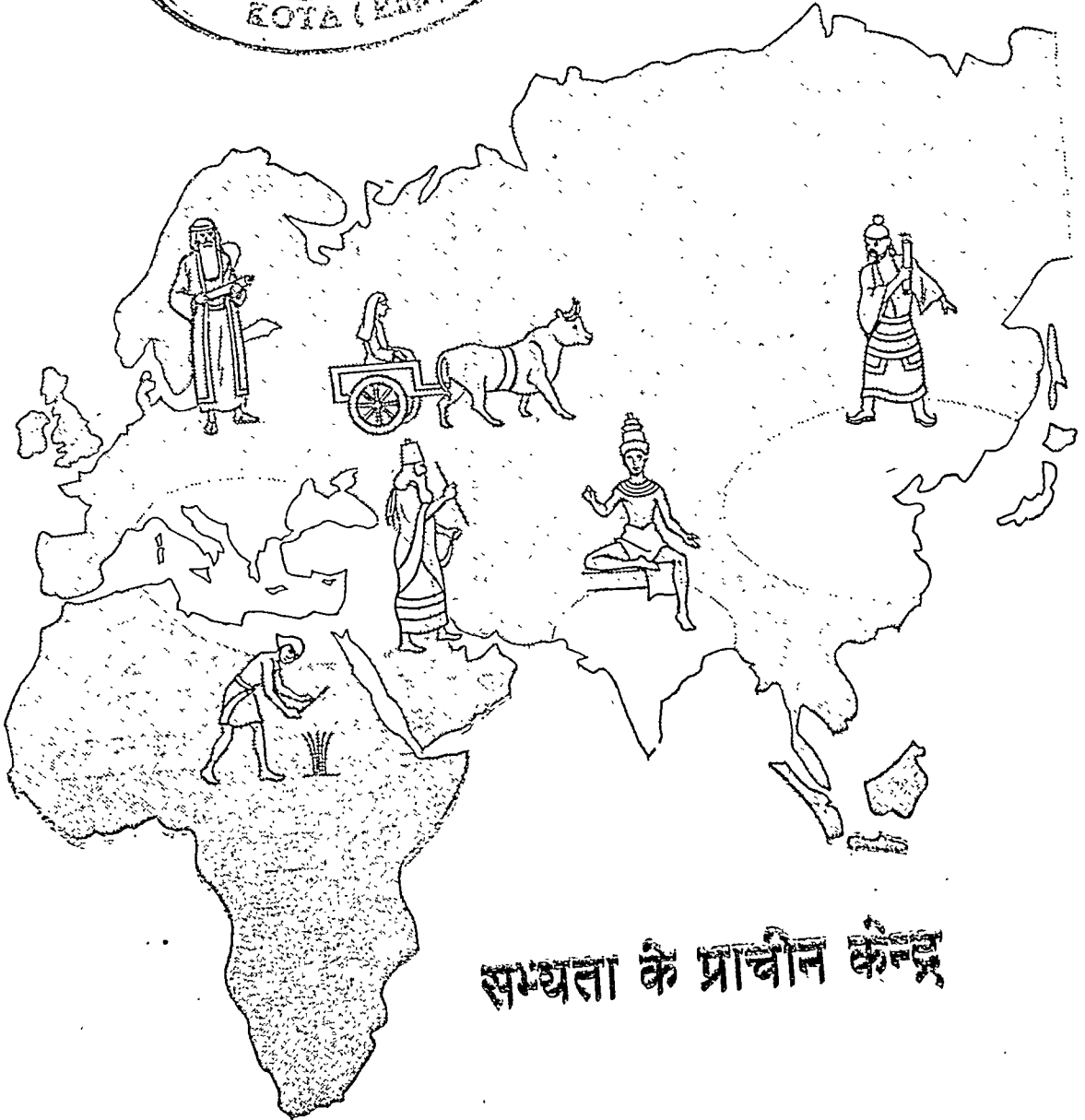
सभ्यता के प्राचीन केन्द्र

सबसे पहली सभ्यताएँ

क्या कभी आपके मन में यह बात आई है कि जो हजारों चीजें आज आपको अत्यन्त साधारण-सी लगती हैं, वे कभी उत्तेजनापूर्ण नये आविष्कार थे। पैन, जिसका आप प्रयोग करते हैं, आपके स्कूल की ईंट, वह कागज़ जिस पर चिट्ठी लिख कर आप अपने विचार दूसरों पर प्रकट करते हैं, गिलास जिससे आप पानी पीते हैं, कुर्सी जिस पर आप बैठते हैं, आपकी मोटर के पहिए, आदि इतनी साधारण-सी वस्तुएं हैं कि आपको इनमें कोई नवीनता नहीं दीखती। यद्यपि वे अतीत वर्षों में बहुत सुधर गई हैं, लेकिन इनके बारे में प्रथम विचार तथा इनका आविष्कार हजारों वर्ष पहले एशिया तथा अफ्रीका में हुआ था।

यही बात हमारे आदर्शों तथा विश्वासों पर भी लागू होती है। आज लोगों को पता है कि विश्व में एक ईश्वर का अस्तित्व है, मानव के सुख के लिए सम्मान और ईमानदारी आवश्यक हैं। पर ये विश्वास तथा आदर्श मानवजाति में बहुत धीरे-धीरे आए और उनका मूल भी एशिया तथा अफ्रीका के प्राचीन इतिहास में है।

इस खंड में हम यह देखेंगे कि कैसे 'प्राचीन पूर्वी देशों' भारत और चीन ने प्रथम सभ्यताओं का विकास किया, कैसे उनके मनोविचार बने और कैसे-कैसे उपकरणों और प्रक्रमों का उन्होंने आविष्कार किया।

'प्राचीन पूर्वी देशों' में मिस्र तथा वह क्षेत्र था जिसे 'उपजाऊ चन्द्रार्ध' कहते हैं। जैसा कि आप पिछले पृष्ठ पर बने नक्शे में देख सकते हैं, मिस्र नील नदी के मुहाने से दक्षिण की ओर सात सौ मील तक फैला हुआ है। 'उपजाऊ चन्द्रार्ध' दक्षिण-पश्चिमी एशिया में, अरब के रेगिस्तान के उत्तर में भूमि की एक लम्बी पट्टी है। (पृष्ठ ४५ का मानचित्र देखिये)। बालचन्द्र की तरह टेढ़ा यह क्षेत्र ईरान की खाड़ी पर दजला-फरात नदियों के मुहाने से प्रारम्भ होकर उत्तर-पश्चिम में सीरिया तथा एशिया कोचक तक फैला हुआ है। भूमध्य सागर के पूर्वी तट के साथ-साथ आगे बढ़ता हुआ यह सिनाई प्रायद्वीप तक पहुँचता है। यह क्षेत्र विश्व के इतिहास के लिए बड़ा महत्त्वपूर्ण था। उपजाऊ भूमि तथा सुहावनी जलवायु ने लोगों को इस क्षेत्र में बसने तथा रहन-सहन को सुधारने की प्रेरणा दी। नदियों तथा समतल धरती के कारण यात्रा करना आसान था जिससे व्यापार भी आसानी से किया जा सकता था।

इस अध्याय का शीर्षक ऊपर मिस्री चित्रलिपि में दिया गया है।
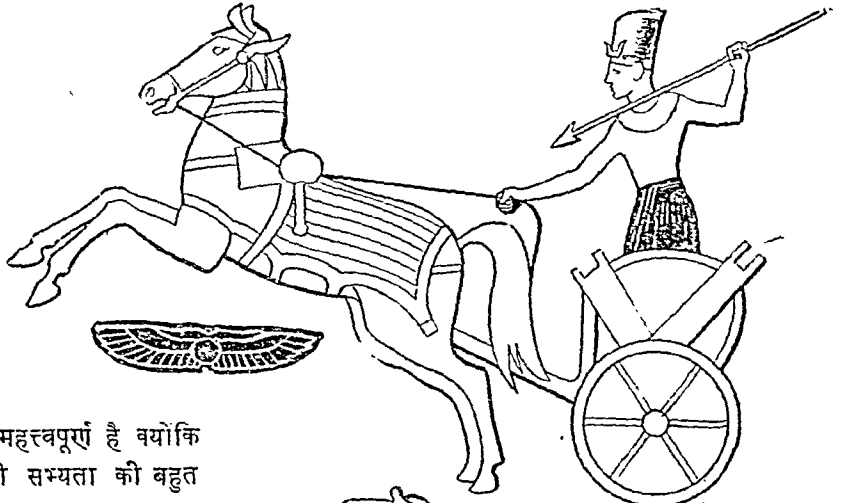
'प्राचीन पूर्वी' प्रदेश बहुत महत्त्वपूर्ण है क्योंकि उन दूरवर्ती स्थानों में ही आपकी सभ्यता की बहुत सी नींवें पड़ीं।

यदि मनुष्य अपनी संस्कृति को विकसित तथा नियंत्रित रखने में हाथ बंटाने के लिए स्वतंत्र न हो तो उसका जीवन सुखी तथा उपयोगी नहीं हो सकता। इसलिए जीवन को स्वतंत्र मार्ग पर, जिसे हम लोकतंत्रीय मार्ग कहते हैं, चलाने का संघर्ष मानव के परिष्कृत संस्कृति पर पहुँचने के प्रयत्नों का एक हिस्सा है। इस पुस्तक में आप देखेंगे कि मानवजाति ने अपनी दो बड़ी कठिनाइयों को कैसे झेला? रहन-सहन के तरीकों और संस्कृति को सुधारा तथा उस जीवन-पद्धति को किस प्रकार अधिक-से-अधिक लोकतंत्रीय बनाया। कभी मानव ने बहुत उन्नति की और कभी वह पीछे चला गया। उसकी असफलताओं, प्रयत्नों और उपलब्धियों को ही संसार का इतिहास कहते हैं।

हमारी अपनी संस्कृति के दृष्टिकोण से देखें तो जिन जातियों के बारे में आप इस खंड में पढ़ेंगे, वे बहुत महत्त्वपूर्ण हैं, क्योंकि उन्होंने औजारों का आविष्कार किया, सुन्दर वस्तुओं का निर्माण किया, कानून तथा व्यवस्था के प्रति कुछ आदर की भावना पैदा की और शायद सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह कि उनके पास लेखन-पद्धति का आविष्कार करने के लिए आवश्यक कल्पनाशक्ति तथा अध्यवसाय था—इस लेखन-पद्धति के द्वारा ही अभिलेख रखे गये।

इन प्राचीनतम सभ्यताओं की बहुत-सी बातें आपको बिल्कुल आधुनिक लगेंगी।

5000 BC
4500 BC
4000 BC
3500 BC
3000 BC
2500 BC
2000 BC
1500 BC
1000 BC
500 BC
Birth of Christ
500 AD
1000 AD
1500 AD
2000 AD
Ancient Egypt
Valley of Two Rivers
Aegean World
Palestine
Ancient Persia
Ancient China
Ancient India
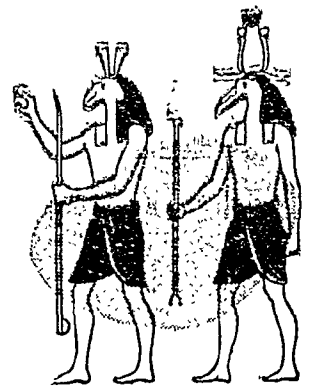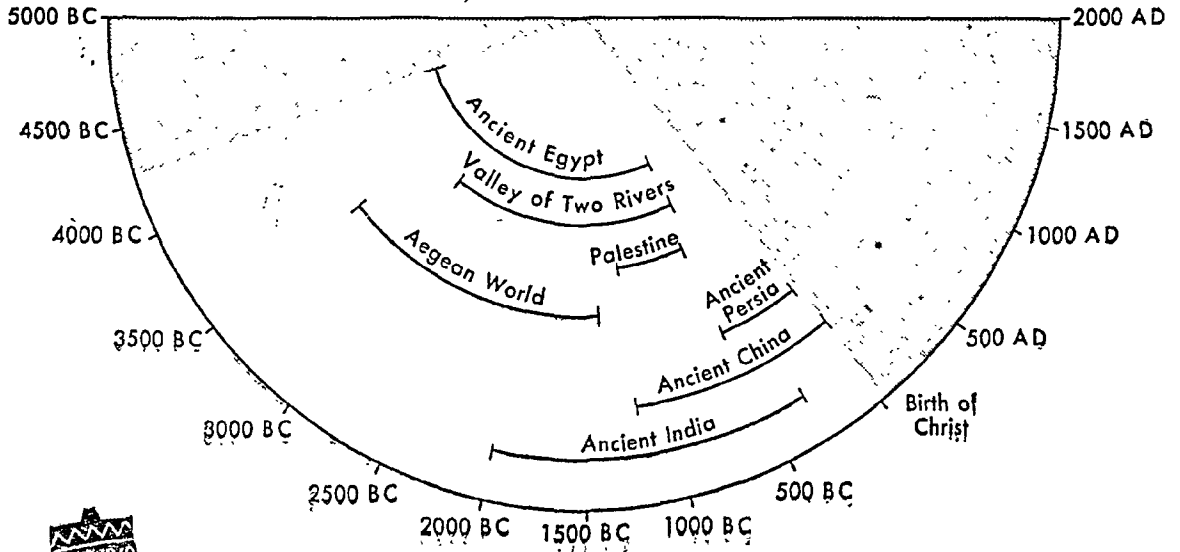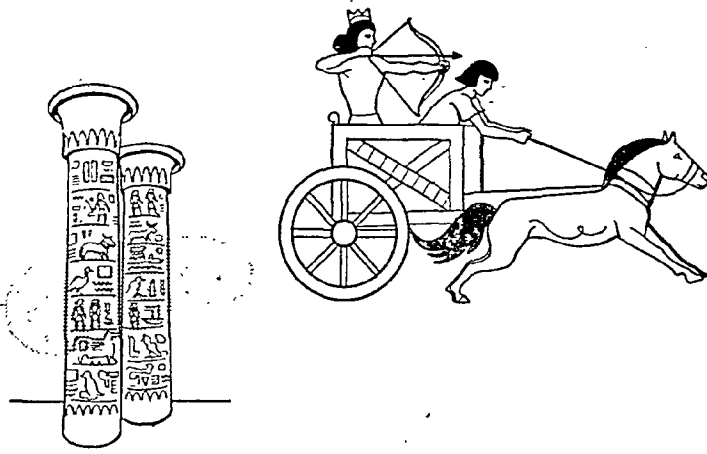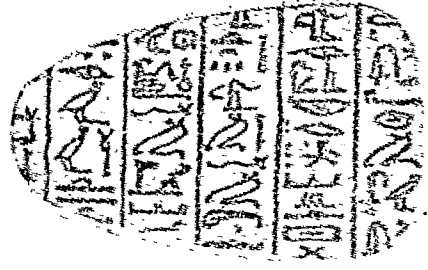
३ मिस्रियों द्वारा एक सभ्यता का निर्माण

अगर तुमने एक शताब्दी पूर्व इतिहास का अध्ययन किया होता तो तुम्हें प्राचीन मिस्र के बारे में बहुत कम जानकारी होती क्योंकि प्राचीन मिस्री अपने पीछे जो कुछ छोड़ गये थे, इतिहासकारों को उनके बारे में बहुत-कम ज्ञात था क्योंकि वे उस लिखावट को नहीं पढ़ सकते थे। तुम्हें बहुत-कुछ जानकारी से वंचित रहना पड़ता क्योंकि मिस्र बहुत ही मनोरंजक देश रहा है। उसके विशाल पिरामिड, नरसिंह की कल्पित मूर्तियां (स्फिंक्स) और मिस्री जन-जीवन के आश्चर्य में डाल देने वाले प्राचीन अवशेषों के पीछे उनकी कहानियां छिपी हुई हैं। अब तुम उस कहानी को जान सकते हो क्योंकि प्राचीन मिस्री गूढ़ लेखों का अर्थ लगाया जा चुका है और इतिहासकारों ने उस देश की समाधियों में पाये गये हजारों वर्ति-लेखों को पढ़ा है। प्राचीन मिस्रियों के रहस्य अब रहस्य नहीं रह गये।

प्राचीन मिस्रियों ने एक विस्मित करने वाली सभ्यता का निर्माण किया, खासकर इसलिए कि तीन बातें उन्होंने सीख ली थीं। प्रथम, उन्होने एक प्रकार की सरकार बनाई ताकि साथ-साथ रहें और मिलजुल कर काम करें। द्वितीय, उन्होंने लिखने की एक प्रणाली का आविष्कार किया ताकि उनके द्वारा उपार्जित ज्ञान का लेखा-जोखा रखा जा सके। और उसे आगे आने वाली पीढ़ियों को सौंपा जा सके। तृतीय, उन्होंने धातुओं का पता लगाया और यह सीखा कि उनका उपयोग कैसे किया जाय। मानव की प्रगति की दिशा में ये तीनों ही अत्यन्त महत्त्व-पूर्ण चरण, सरकार की एक प्रणाली, लिखित अभिलेख, और धातुओं का प्रयोग, संभवतः सर्व-प्रथम मिस्र की ही उपलब्धियाँ थीं।

भौगोलिक परिस्थितियों से मिस्र का विकास

प्रागैतिहासिक काल के लोगों ने, जो भोजन की तलाश में उत्तरी अफ्रीका के चारों ओर घूमते थे, आजकल मिस्र कहलाने वाले स्थान की भौगोलिक स्थिति को स्थायी और अधिक आराम की ज़िन्दगी बसर करने के लिए अनुकूल पाया। यद्यपि मिस्र का उत्तरी छोर उत्तर में लगभग उतनी ही दूरी

यह भित्तिचित्र एक फरून के मकबरे में उभरा हुआ मिला है। इसमें मिस्री किसान बीज बोते हुए (बाईं ओर का चित्र) और मवेशियों द्वारा खींचे जा रहे हल तथा भेड़ों के पैरों से उसे मिट्टी के अन्दर करते दिखाए गये हैं।
मेट्रोपोलिटन म्यूज़ियम आफ आर्ट
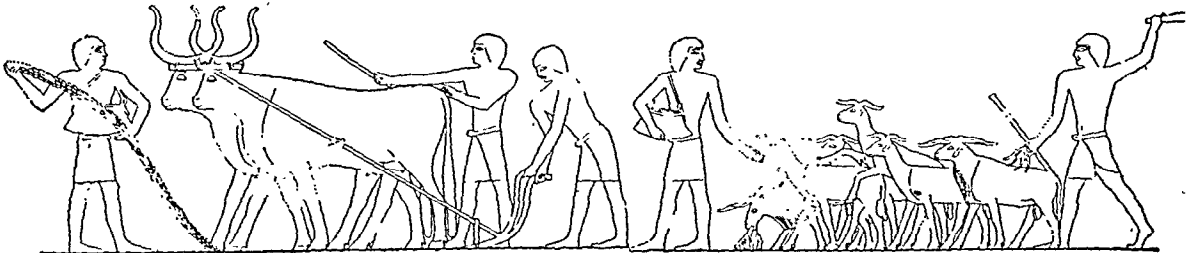
तक चला गया है जितनी फ्लोरिडा का उत्तरी छोर, फिर भी इसका जलवायु कहीं अधिक हलका है। अरब के मरुस्थल की गरम रेत और पूर्वी भूमध्य सागर से गुजरने वाली उत्तर-पूर्वी व्यापारिक हवाएँ मिस्र को एक गरम मुल्क बनाती हैं। उत्तरी अफ्रीकी मरुस्थलों की गरम और सूखी वालू भी तापमान को ऊँचा बनाये रखने में सहायक होती है। सहारा के रेगिस्तान या मिस्र में वस्तुत: वर्षा नहीं होती। भूमध्य सागर के किनारे की संकरी पट्टी को छोड़ कर शेष प्रदेश में, सौ वर्षों में दो या तीन वार वर्षा होती है। फिर भी खेती के लिए वहाँ पर्याप्त नमी रहती है क्योंकि नील नदी अफ्रीका के मध्य से निकल कर मिस्र से गुजरती हुई उत्तर की ओर बहती है।

नील के बिना मिस्र अस्तित्वहीन

इथिओपिया के पहाड़ों में भारी वर्षा से नील में बाढ़ आ जाती है और वह भूमध्य सागर की ओर जाते हुए मिस्र से गुजरने के समय अपने दोनों किनारों को बाढ़ के पानी से भर देती है। नदी के दोनों किनारों पर पाँच से लेकर पन्द्रह मील तक बाढ़ का पानी बड़े पैमाने पर वढ़िया उपजाऊ मिट्टी छोड़कर जमीन को उर्वर बना जाता है। बाढ़ का मौसम गर्मी के अन्त में और शरद् ऋतु के प्रारम्भ में रहता है। तो भी, उपजाऊ मिट्टी और गरम जलवायु के कारण, किसानों के लिए यह संभव हो जाता है कि वे नम मौसम से पहले प्रति वर्ष दो या तीन फसलें पैदा कर लें। प्राचीन ग्रीक यात्री और लेखक हैरोडोटस ने मिस्र को 'नील का वरदान' सही ही कहा है, क्योंकि नील के न होने से मिस्र वह न होता जो अब है या कभी था।
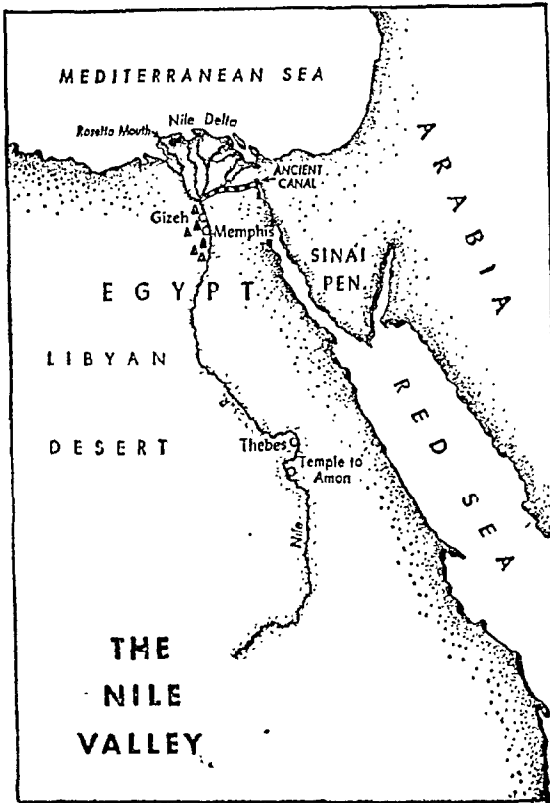
नील नदी की घाटी

उपजाऊ मिट्टी का कुछ अंश नदी अपने मुहाने तक बहा ले जाती है, जहाँ नदी का प्रवाह, भूमध्य सागर के शान्त जल में मिलने के कारण, शिथिल पड़ जाता है। यहाँ नदी सैकड़ों शताब्दियों से अपना बोझ हल्का करती और डेल्टा बनाती रही है, जिसके बीच से वह समुद्र में मिलने के लिए अपना मार्ग बनाती है। यहाँ तिकोनी आकृति की जो जमीन बन गयी है वह डेल्टा कहलाती है क्योंकि यह आकृति यूनानी वर्णमाला के चौथे वर्णाक्षर 'डेल्टा' की सी है।

प्राचीन मिस्रियों की सभ्यता का उत्कर्ष

कृषि—नील नदी के किनारे की उपजाऊ मिट्टी वाली लम्बी पट्टी पर एक ओर से दूसरी ओर तक उत्तरी अफ्रीका के घुमक्कड़ खानाबदोश प्रागैतिहासिक लोग अपने मवेशी और कुत्ते लेकर आये। यहाँ वे पारिवारिक समूहों (कबीलों) के रूप में बस गये और खेत जोतने लगे। चूंकि मिस्र में, बाढ़ घट जाने के बाद, सूखे मौसम में धरती की सिंचाई अनिवार्य है, लोगों ने उसमें सिंचाई करना सीखा। और इस प्रकार प्रकृति ने जो उन्हें प्रदान किया था, उससे वे और अधिक लाभ उठाने लगे। उन्होंने पानी जमा रखने के लिए थाले खोदे और उसे खेतों तक पहुँचाने के लिए खाइयाँ निकालीं। नदी से थालों तक पानी उठाने के लिए उन्होंने शादूफ या ढेंकली की प्रणाली ईजाद की।

मिस्र के दीर्घकालीन इतिहास में कृषि लोगों का मुख्य पेशा रहा है। प्रथम महत्त्वपूर्ण आवि-

ष्कारों के बाद उसके ढंग में परिवर्तन नहीं हुए लेकिन ये आविष्कार महत्त्वपूर्ण थे। मिस्री अपनी काली मिट्टी वाली धरती की गहरी जुताई के लिए अपना लकड़ी का हल प्रयोग में लाते थे। गेहूँ हाथ से बोया जाता था लेकिन वे इसकी कटाई के लिए हँसिये का प्रयोग करते थे। कटी हुई फसल की भूसी साफ़ करने के लिए उसे बैलों के पांवों तले रौंदा जाता था। गेहूँ, प्याज, मटर, लहसुन, ककड़ी और अन्य तरकारियाँ बड़े पैमाने पर तब तक पैदा की जाती थीं जब तक सिंचाई के लिए खाइयों में पानी रहता था। शनैः शनैः मिस्रियों ने किस्म-किस्म के फल भी, जिनमें तरबूज, नीबू, खजूर और अंजीर भी थे, पैदा करना सीख लिया था। इस प्रकार हजारों वर्ष पहले मिस्र में हमारी आधुनिक, व्यापक कृषि प्रणाली की बुनियाद डाली जा चुकी थी।

सरकार—मिस्री लोग बड़े बुद्धिमान् थे। कबीलों के मेल-मिलाप से रहने और काम करने के लिए उन्होंने एक प्रकार की सरकार कायम कर ली थी। प्रत्येक कबीले का एक सरदार या राजा होता था। पहले-पहल इस प्रकार का एक कबीला एक ही गोत्र के परिवारों का होता था; लेकिन शनैः-शनैः ऐसे समूह में वे सभी लोग शामिल होने लगे जो एक खास क्षेत्र में रहते थे, चाहे उनमें खून का रिश्ता हो या न हो। इस प्रकार के समुदायों में से प्रत्येक का केन्द्र एक छोटा नगर या कस्बा था। यह नगर-राज्य किस्म की सरकार के विकास में मिस्रियों का सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण योगदान है। सगोत्री (परिवार) राज्य के स्थान पर नागरिकमात्र के इस राज्य की स्थापना से एक शासक बहुत बड़े क्षेत्र पर नियंत्रण रख सकता था। जो कोई भी एक नगर-राज्य के क्षेत्र के भीतर रहता या सम्पत्ति रखता था, वह समुदाय का सदस्य और राजा की प्रजा था। चूँकि मिस्री नगर-राज्य के राजा के नियंत्रण में पानी का वितरण था, इसलिए वह बड़ा शक्तिशाली था। वह अपने शत्रुओं को पानी देना बन्द कर सकता था और उन्हें उस क्षेत्र से चले जाने को बाध्य कर सकता था।

शैडूफ या ढेंकली पानी को नदी से उठाती और उसे किनारे पर सिंचाई की नालियों में गिराती थी।

शनैःशनैः ज्यों-ज्यों वे नदी में ऊपर-नीचे आने-जाने लगे, सशक्त शासकों ने अपने पड़ोसी कमज़ोर राज्यों को जीत लिया। अन्य राज्य एक दूसरे के साथ व्यापार और अपनी सिंचाई प्रणालियों का लाभ उठाने के लिए स्वेच्छा से एक सूत्र में बंध गये। अन्ततोगत्वा, सभी छोटे-छोटे समुदाय एक सूत्र में बंध कर दो बड़े राज्यों के रूप में आ गये। ये राज्य नील डेल्टा के इर्द-गिर्द का निचला मिस्र और नील की घाटी के ऊपर की ओर का ऊपरला मिस्र थे। लगभग ३४०० ई० पू०, ऊपरले मिस्र का एक शक्तिशाली शासक ऊपरले और निचले मिस्र को मिला कर एक स्थायी संघ (यूनियन) बनाने में सफल हुआ। वह संभवतः सम्राट् मेनीज़ था। इतिहास में यह पहला व्यक्ति था जिसका नाम हमें मिला है। उसने एक आलीशान शहर बनवाया, विश्व का पहला शहर, जो बाद में मेम्फीस नाम से पुकारा जाने लगा। यहाँ उसकी राजधानी थी। मेम्फीस १५०० वर्षों तक मिस्र की राजधानी रहा।

लिखित भाषा—अधिकांश आदिम मानवों की तरह मिस्रियों ने पहले-पहल चित्रों का लेखन के

लिए प्रयोग किया। बाद में वे वर्णात्मक लिपि का प्रयोग करने लगे जिसमें प्रत्येक लिपिचिह्न उनकी भाषा की एक ध्वनि का सूचक था। उदाहरणार्थ मुँह के लिए 'रो' शब्द था। इसलिए, जहाँ कहीं ऐसी आवाज निकलती, चाहे उसका मतलब मुँह हो या न हो, उसे लिखित रूप में व्यक्त करने के लिए मुँह का चित्र बनाया जाता था। जैसे-जैसे समय बीतता गया, ये प्रतीक अधिकाधिक सरल होते गये। मिस्रियों ने एक लिपिमाला का भी आविष्कार किया, जिससे लिखने में सरलता आई। लेकिन पुरातन मिस्री उस सीमा तक नहीं पहुंच पाये थे जहाँ कि वे सिर्फ एक वर्णचिह्न का प्रयोग करते, जैसे कि हम करते हैं। प्राचीन संकेत-लेखन का आम प्रयोग बना रहा।

मिस्री अभिलेख उनके मन्दिरों और मकबरों की दीवारों पर मिलते हैं जहाँ उन्हें पत्थर पर खोदा जाता था। यूनानी, जिन्होंने इन शिलालेखों का पता चलाया, उनकी इबारत पढ़ने में असमर्थ रहे। वे

रोजेटा पत्थर पर मिस्र के राजा टालेमी पंचम (२०० ई० पू०) का एक आदेश खुदा हुआ है। इस पत्थर का कुछ अंश नहीं मिला, पर इसने एक प्राचीन पहेली को हल कर दिया।

ब्रिटिश सूचना विभाग
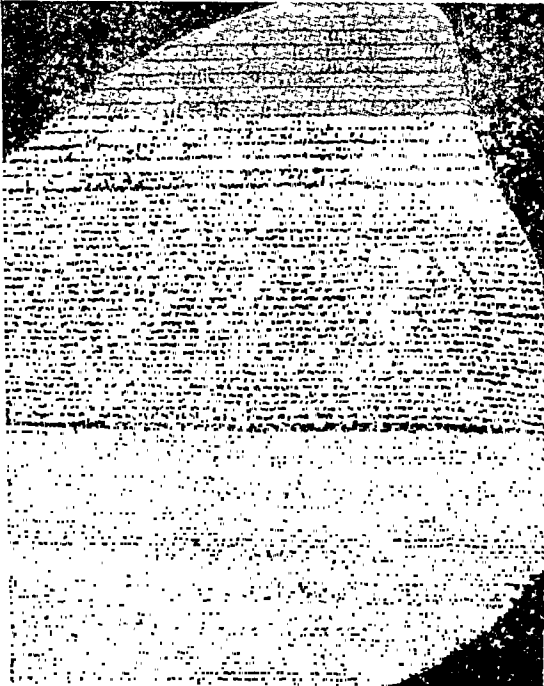
इस लिपि को "हाइरोग्लिफिक्स" यानी "पवित्र खुदे हुए चिह्न" कहते थे क्योंकि ये चिह्न विद्वान पुरोहितों द्वारा लिखे गये थे।

गुलाबी पत्थर—कई शताब्दियों बाद, सन् १८०० के आसपास मिस्र के एक सैनिक अभियान में एक फ्रांसीसी सैनिक को एक बड़ा काला पत्थर मिला जिस पर तीन विभिन्न लिपियों में लिखावट थी। एक यूनानी लिपि थी, जिसे विद्वान पढ़ सकते थे; एक मिस्र के इतिहास के एक काल के लोगों की बोल चाल की भाषा थी; और तीसरी "हाइरोग्लिफिक्स" थी। विद्वानों ने हाइरोग्लिफिक्स का अर्थ निकालने का वर्षों प्रयत्न किया, अंत में एक विद्वान शानतपोलियन ने इस रहस्य को हल किया। इस तरह, बीस वर्षों के कार्य के बाद, विद्वानों को प्राचीन हाइरोग्लिफिक्स की कुंजी मिली।

कागज और स्याही—मिस्रियों को कोई ऐसा तरीका चाहिए था जिससे वे अपने प्रतिदिन के कामकाज और करों का ब्यौरा रख सकें। उन्होंने पेपिरस कहलाने वाले सरकंडों से एक प्रकार का कागज बनाया। ये सरकंडे नील के किनारे की दलदली भूमि में स्वतः उग आते थे। चूंकि सरकण्डे बीच से पोले होते है, इसलिए उन्हें काट-खोल कर और दबा कर चौरस पट्टी बनाई जा सकती है। यही मिस्रियों ने किया और उन्हें इच्छित लम्बाई-चौड़ाई का बनाने के लिए वे उनके छोरों को, एक के ऊपर दूसरे का छोर रखकर बाँध देते थे। इन बने हुए तावों को कूटने और रगड़ने से चिकना और कड़ा कागज बन जाता था। इन तावों पर लिख दिये जाने के बाद उन्हें गोलाई में लपेट लिया जाता था। ऐसे लिपटे हुए लेखों (वर्ति-लेखों) की चौड़ाई पांच से बारह इंच और लम्बाई २० फुट से ४० फुट या इससे भी अधिक होती थी। स्याही के लिए मिस्री वानस्पतिक गोंद और काजल का पानी के साथ गाढ़ा घोल बना लेते थे। एक सरकंडे को छील-काट कर उसकी नोक बना कर इतनी संतोषजनक कलम बना ली जाती थी कि हजारों वर्ष बाद, इस्पात के आधुनिक पेन बनने से पहले तक, वे कलमें ही प्रचलित थीं।

कलैण्डर (पंचांग)—किसी भी चीज का लेखा-प्रमाण रखने के लिए समय की गणना का कोई
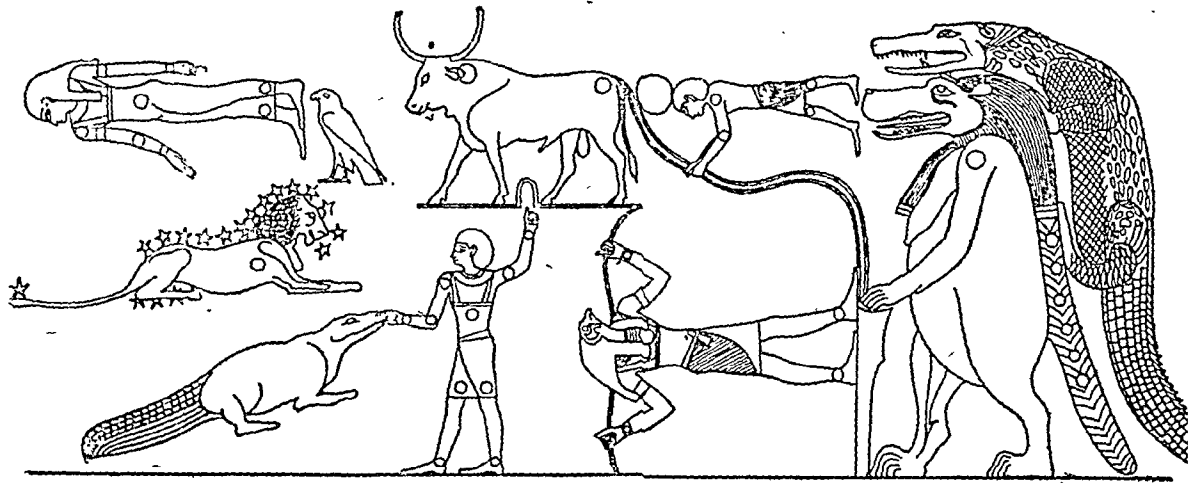
मेट्रोपोलिटन म्यूजियम आफ़ आर्ट के सौजन्य से

मिस्रवासियों का विश्वास था कि उनके देवता आकाश में रहते हैं। यह चित्र लगभग ३००० वर्ष पुराना है और एक मकबरे पर बना हुआ है। इसमें दिखाई गई कुछ आकृतियों की आज भी ज्योतिषी लोग आकाश में कल्पना करते हैं।

तरीका होना जरूरी था। आदिम मनुष्यों में काल-क्रम का हिसाब नये चाँद से नये चाँद तक आंका जाता था। यही चान्द्र-कालगणना का आधार है। इस प्रकार के पंचांग को ऋतुओं में बांटना आसान नहीं पड़ता। इसलिए चतुर मिस्री किसानों ने सौर वर्ष पर आधारित दूसरे किस्म का पंचांग, सौर पंचांग, बनाया। प्राचीन लोगों में सिर्फ मिस्रियों के पास ऐसा पंचांग था। उनका वर्ष तीन ऋतुओं में विभाजित था। प्लावन, जब बाढ़ें आती थीं; उद्गम जब पेड़-पौधे पनपते थे, और कटाई, जब फसल की कटाई होती थी। प्रत्येक ऋतु चार-चार महीनों में बंटी थी और प्रत्येक महीने में तीस दिन होते थे। ३६० दिनों का एक वर्ष होता था। वर्ष के अन्तिम पांच दिन उत्सवों और भोजों के लिए अलग छोड़ दिये जाते थे। मिस्री पंचांग वह पंचांग था जिससे मौजूदा ईस्वी पंचांग बना है और उसका आविष्कार इतिहास की सबसे प्राचीन तिथि, ४२३६ ई० पू० का सूचक है।

धातुएँ—पुरातन मिस्रियों का, मानव जाति के विकास में दूसरा महत्त्वपूर्ण योगदान धातुओं का प्रयोग था। इसका कोई प्रमाण नहीं मिलता कि इसका प्रयोग कैसे प्रचलित हुआ। लेकिन प्राचीन मिस्रियों ने एक बंद भट्टी में धातुओं को गला कर अलगाना सीख लिया था। उन्हें सिनाई प्रायद्वीप से तांबा मिल जाता था और मेनीज़ द्वारा निचले और ऊपरले मिस्र को संयुक्त किये जाने से पूर्व भी, कुशल कारीगरों ने तांबे और कांसे की छेनियां, कुल्हाड़ियां और आरियाँ बनाना आरम्भ कर दिया था। इन नये औजारों से शासक नील की चट्टानों से बड़े-बड़े पत्थरों के शिलाखंड कटवाया करते थे और बड़े-बड़े स्मारक और इमारत उनसे बनवाई जाती थीं। मिस्री व्यापारी नील की घाटी में बहुत ऊपर रहने वाले लोगों से सोना भी प्राप्त करते थे।

यद्यपि उस काल के मिस्री यह नहीं जानते थे, परन्तु जब हजारों वर्ष पूर्व उनके प्राचीनतम बुजुर्गों ने आग का प्रयोग सीखा था, उसके बाद से उनकी धातुओं के प्रयोग की यह खोज सबसे अधिक महत्त्व-पूर्ण थी। उनके धातुओं के प्रयोग की खोज से शनैः शनैः पाषाण युग का अन्त होने लगा और मनुष्य, अनजाने में ही, धातु के नये और विलक्षण युग में प्रविष्ट हुआ।

१. 'प्राचीन पूर्वी देश' और 'उपजाऊ चन्द्रार्ध' से क्या अभिप्राय है ?

२. प्राचीन पूर्वी देश की जलवायु इतनी गरम क्यों है ?
३. डेल्टा किसे कहते हैं ?
४. मिस्र को 'नील का वरदान' क्यों कहते हैं ?
५. मिस्री किसान जिन तरीकों और औजारों से अपना काम करते थे उनमें से कुछ का वर्णन करो।
६. मिस्री लेखन-कला कैसे विकसित हुई ? वह किस नाम से पुकारी जाती थी ? आधुनिक संसार ने मिस्री अभिलेखों को पढ़ना कैसे सीखा ?
७. नगर-राज्य किसे कहते थे ?
८. किस प्रकार मिस्र की बिखरी बस्तियां संयुक्त होकर एक देश बन गयीं ?
९. संयुक्त मिस्र का पहला शासक कौन था ? उसने कब शासन किया ?
१०. सौर और चांद्र पंचांग में क्या अन्तर है ? मिस्री पंचांग के विभाजनों की व्याख्या करो।
११. मिस्रियों को तांबा और सोना कहां मिला ?

पिरामिड युग (३०००-२५०० ई० पू०)

फरूनों की सत्ता—मिस्र के सम्राट् इतने आदर से देखे जाते थे कि उनका उल्लेख कभी भी नाम से नहीं होता था। वे फरून कहलाते थे, जिसका मतलब 'विशालगृह' या फरून का महल था। ज्यों-ज्यों समय बीतता गया, फरूनों का अपनी प्रजा पर पूर्ण निरंकुश अधिकार हो गया। मिस्रियों का विश्वास था कि किसी काल में स्वयं देवतागण मिस्र पर लम्बे अर्से तक शासन करते रहे और अन्त में, उनमें से एक ने अपने पुत्र को यहाँ शासन करने के लिए छोड़ा, जिसकी माँ एक मिस्री स्त्री थी। इस प्रकार, फरून देवताओं के वंशज होने से आंशिक रूप से देवता माने जाते थे। यहाँ तक कि सबसे कुलीन लोग भी उनके सामने दण्डवत् करते और जहाँ से वे गुजरते, उस धरती को चूमते थे। फरून के लिए सैंडिलें या कुर्सियाँ ले जाना बड़ा भारी सम्मान माना जाता था। 'राजाओं के दैवीय अधिकार' वाला यह विचार बहुत काल तक दुनिया में चला।

फरून का जीवन बहुत व्यस्त होता था। वह कानून बनाता था और उनका पालन कराता था। जब विवादों की अपील उससे की जाती थी तब वह सर्वोच्च न्यायाधिपति का काम करता था। सेना का नेतृत्व करना, सिंचाई प्रणाली की व्यवस्था, धार्मिक कर्मकांड तथा पूजा-अर्चना के दिनों की घोषणा, तथा मवेशी, अन्न, कपड़ा तथा
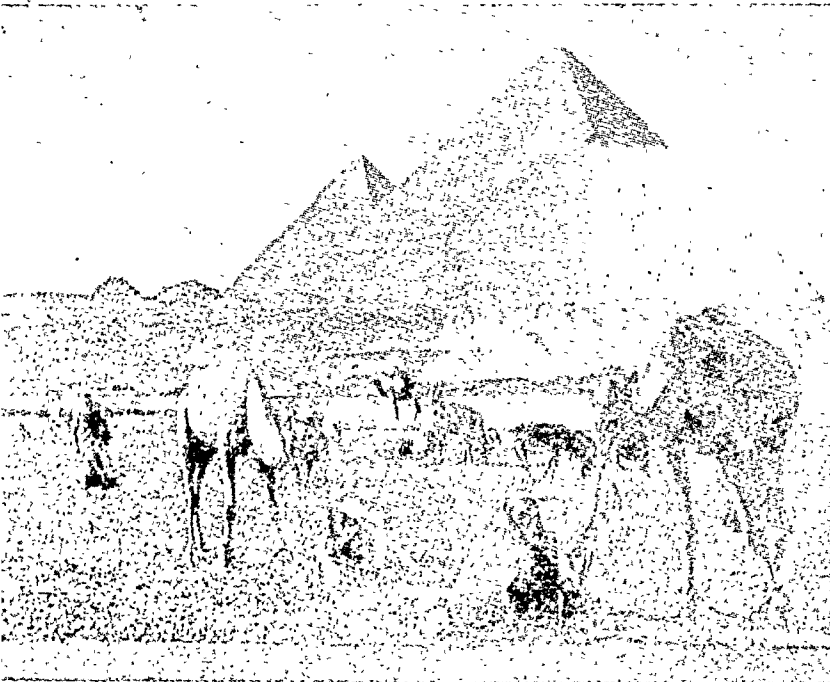
फरूनों के मकबरे कीमती वस्तुओं के भंडार हैं। जो पुरातत्त्ववेत्ता उन्हें खोलते हैं वे अपनी खोजों के आधार पर मिस्री सभ्यता की कल्पना प्रस्तुत करते हैं।

सोने के टुकड़ों की स्थानीय अफसरों द्वारा करों के रूप में वसूली कराना उसका कार्य होता था, जिसे उसके पास मेम्फीस में भेजा जाता था।

पिरामिड—मनुष्य द्वारा निर्मित सबसे पुराने स्मारक फरूनों के मकबरे हैं जो प्राचीन मिस्र के रेगिस्तान में बनाये गये थे। समय बीतने के साथ-साथ, ज्यों-ज्यों फरून अधिक धनसम्पन्न और प्रभावशाली होते गये, त्यों-त्यों बड़े मकबरे बनाये गये। ३००० ई० पू० तक, मृत फरूनों के शवों को रखने के लिए विशाल पिरामिड निर्मित किये गये। मरुस्थल के छोर पर, जो काहिरा से ज्यादा दूर नहीं है, एक शानदार सभ्यता के ये स्मारक आज भी मौजूद हैं। इनमें सबसे बड़ा स्मारक, जिसे 'महान् पिरामिड' कहा जाता है, फरून कूफू ने, जिसे यूनानी कियोप्स पुकारते हैं, बनवाया था। खानों से तांबे के औजारों से पत्थरों को काट-काट कर रेगिस्तान की परली ओर से, इस कार्य के लिए विशेष रूप से निर्मित सड़क द्वारा, ढोया गया था। यह अनुमान लगाया गया है कि सड़क बनाने में १० वर्ष लगे थे और ४० लाख मनुष्यों ने इस पर काम किया। पिरामिड को बनाने में २० वर्ष लगे थे। इसमें २३,००,००० ग्रेनाइट पत्थर के टुकड़े जुड़े हैं जिनमें से प्रत्येक का वजन औसत ढाई टन (५८ मन) है। इसके अन्दर सम्राट् कूफू और उसके परिवार वालों को दफनाने के लिए बनाये गये कक्षों के अलावा यह सारा पिरामिड पत्थर का ठोस पहाड़ है। पिरामिड का सारा काम १,००,००० गुलामों ने किया और उनके जीवन का उनके शाही मालिक की नज़रों में कोई मूल्य नहीं था। उन्हें जी-तोड़ मेहनत के लिए मजबूर किया जाता था क्योंकि उनके पास इस तरह के काम को आसान बनाने वाली आधुनिक मशीनरी नहीं थी। फिर भी, उस विशाल निर्माण-योजना के इंजीनियर बुद्धिमान थे। वे अपने मजदूरों को सभी प्रकार की ढुलाई में सहायक सामग्री, जैसे रोलर, घिरनियां, उत्तोलक और रस्से प्रदान करते थे। उनकी माप इतनी सटीक थी कि समूचे ढांचे में पत्थरों की जुड़ाई में कहीं भी साँस नहीं है।

इस विशाल मकबरे के पास एक मन्दिर बनवाया गया था जहाँ पुरोहित लोग कुरबानियाँ देते थे और मृत फरूनों की आत्मा की शांति के लिए धार्मिक विधि सम्पन्न करते थे।

धर्म—पिरामिड इसलिए बनाये गये थे कि फरूनों के मृतोत्थान (रिसरेक्शन) तक उनके शव सुरक्षित रखे जा सकें। प्राचीन मिस्रियों का विश्वास था कि अगर अगले जीवन में आत्मा को सुरक्षित और सुखी रखना है तो शरीर को हिफाजत के साथ सुरक्षित रखना होगा। इसलिए उसे पत्थर के एक बड़े बक्से में, जिसे "सार कोफेगुस" कहते थे, रखा जाता था। सुरक्षित शव ममी कहलाता है। भोजन, वस्त्र, फर्नीचर और गुलामों के शव मकबरे में "सार कोफेगुस" के साथ रखे जाते थे ताकि दूसरी दुनिया में फरूनों की ज़रूरतों की पूर्ति हो सके। चूँकि यह विश्वास किया जाता था कि दूसरी दुनिया की यात्रा लम्बी और कष्टकर है, इसलिए मिस्रियों की मान्यता थी कि पूजा-पाठ और जादू-टोने द्वारा देवताओं को संतुष्ट कर उसे सुगम बनाया जा सकता है। इस प्रकार के जादू और प्रार्थना पूजा के संग्रहों को पुस्तकों के रूप में इकट्ठा किया गया था जिन्हें हम 'मृत आत्माओं के ग्रंथ' कहते हैं। इन्हें मकबरों में रखा जाता था ताकि आत्मा जान सके कि उसके रास्ते में संभाव्य प्रत्येक खतरे को सफलतापूर्वक पार करने के लिए क्या कहना और करना होगा।

मिस्री शिल्पविदों ने जो मन्दिर बनाये, वे विभिन्न देवताओं की अर्चना को अर्पित थे। प्रत्येक देवता के अपने मन्दिरों और पुजारियों के अलावा उसकी पूजा से सम्बन्धित विधियां भी अलग थीं: शनैः-शनैः कुछ देवता अन्यों की अपेक्षा लोगों द्वारा ज्यादा पूजे जाने लगे। रे सूर्य-देवता था, जो अपनी सुवर्ण नौका में आकाश मार्ग से गुजरता था। ओसिरिस, रे का पुत्र, वह देवता था जो नील में बाढ़ें लाता और अन्न उपजाता था। मृतकों के राजा के रूप में वह मनुष्यों की आत्माओं का न्याय करता था। मिस्री अपने फरूनों को ओसिरिस के वंशजों के रूप में मानते थे।

कला और दस्तकारी—धातुओं के प्रयोग की खोज ने कुशल कारीगरों के सामने, जिनकी पैनी आंखें और सुघड़ अंगुलियाँ, जीवन में सुन्दरता

और आकर्षण भर देती थीं, अवसरों का नया संसार खोल दिया था। औजार बनाने के लिए, जो अब बहुत प्रचलित हो रहे थे, धातु का काम करने वाले कारीगरों की भी जरूरत थी। जौहरी और ताम्रकार सुन्दर आभूषण गढ़ते थे जिन्हें धनी ही खरीद सकते थे। कुछ मिस्री लड़के अन्य बहुत से धंधों में

मेट्रोपोलिटन म्यूजियम आफ आर्ट

मिस्र की स्त्रियाँ लम्बे फैले करघों पर कपड़ा बुनती थीं। वे ताने और बाने को आज की मशीनों की तरह ही चलाती थीं।

से किसी एक को सीखना पसंद करते थे। मिट्टी के बर्तन, लकड़ी और पत्थर के काम, कपड़ा बुनने, फर्नीचर और नावें बनाने तथा शीशे का सामान बनाने के लिए कुशल शिल्पियों की आवश्यकता थी। मिस्री शीशे के काम की कुछ विशिष्ट चीजें आज भी हमारे संग्रहालयों में देखी जा सकती हैं।

मिस्री चित्रकारों की चित्रकारी आम तौर पर उनके मन्दिरों की दीवारों और मकबरों में होती थी। इनमें हमें प्राचीन मिस्र के दैनिक जीवन की बहुमूल्य झलकियाँ मिलती हैं। परन्तु चित्रकारों ने अपने चित्रों में गहराई दिखाने के लिए तृतीय आयाम का प्रयोग नहीं सीखा था। वे पार्श्व दृष्टि से मनुष्यों और जानवरों को चित्रित करते थे जिससे वे सपाट और अवास्तविक दीखते थे।

मिस्री कारीगरों की दस्तकारी के बहुत से नमूने मरुस्थल के छोर पर दफनाये गए शासकों के मकबरों में मिले हैं। इनसे हम देख सकते हैं कि वे किस तरह का कपड़ा बुनते थे और किस तरह के मिट्टी के बर्तन, खिलौने, वाद्ययंत्र, जेवरात तथा अन्य उपयोगी और सुन्दर वस्तुएँ बनाते थे।

सामन्तवाद का प्रसार (२००० ई० पू० के आसपास)

सामन्तशाही—यद्यपि जिस ढर्रे से मिस्री लोग जीवन व्यतीत करते थे, उसमें सदियों तक तेज़ी से बदलाव नहीं आया; तो भी सरकारों ने ज्यों-ज्यों राष्ट्र की समस्याओं को सुलझाने का प्रयास किया, वैसे ही वे बदलीं। उदाहरण के लिए २००० ई० पू० तक फरून नाममात्र का अधिष्ठाता रह गया था। ऊँचे ओहदों पर आसीन कुलीन लोगों ने, जो फरूनों के सहायक होते थे, शासन में अपनी स्थिति आनुवंशिक बना ली थी, यानी वे अपने पदों को पिता से पुत्र के क्रम में सौंप जाते थे और इस प्रकार, चूँकि वे बहुत स्वतंत्र रूप से काम-काज देखते थे, इसलिए फरून पर हावी होने की शक्ति उनके पास हो गई थी।

सामन्तों का यह काल मिस्री इतिहास में सामन्तकाल कहलाता है। सामन्तशाही में जमीन बड़ी-बड़ी जागीरों में बंटी थी और एक जागीर के सभी लोगों और कार्यों का निर्देशन एक सरदार द्वारा होता था। सरदार फरून की बहुत कम परवाह करते थे।

सामन्तकाल में भी मम्फीस का प्रभाव घटा और नदी के और ऊपर की ओर बसा थेबीज नगर मिस्र का प्रमुख नगर बना।

व्यापार—मिस्री इतना अधिक गेहूँ पैदा करते थे कि मिस्र भूमध्यसागरीय क्षेत्र का अन्न-भण्डार कहलाने लगा था। उपजाऊ मिट्टी में उनकी आवश्यकताओं से अधिक पैदावार होती थी इसलिए मिस्रियों ने व्यापक व्यापार क्षेत्र विकसित किया। गेहूँ, फलों और अन्य अन्नों के बदले में पूर्वी भूमध्य सागर से उन वस्तुओं का आयात होता था जिनकी नील घाटी में कमी थी। दूर-दूर स्थानों तक पहुँचने की इच्छा से फरूनों ने एक नहर खुदवाई थी जो नील की सुदूरपूर्वी शाखा को लाल सागर से जोड़ती थी। अब उनकी गेहूँ लदी नावें नील में खेई जा सकती थीं और वे नहर से लाल सागर और स्वेज

कनाडियन पैसिफिक स्टीमशिप्स के सौजन्य से

संभाव्यतः मिस्रियों ने सबसे पहले नावों में पालों का प्रयोग किया। उनकी छोटी-छोटी नावें नील नदी में घूमती थीं।

की खाड़ी को पार करके सिनाई प्रायद्वीप तक दौड़ती थीं। अन्य नावें भूमध्य सागर में उतरतीं और इसके पूर्वी तट के स्थानों में घूमती थीं। इनमें से सीरिया तथा एशिया माइनर से मवेशी, मछली और शराबें लाई जाती थीं।

स्थलीय व्यापार मार्गों का भी विकास किया गया था। गधों के काफ़िले अफ्रीका के दूरस्थ अन्दरूनी क्षेत्रों तक जाते जहाँ से उन्हें बेशकीमती लकड़ी, सोना, हाथीदांत और शुतुरमुर्ग के पंख प्राप्त होते थे।

चट्टानी मकबरे—सामन्ती युग में मिस्रियों ने पिरामिड बनवाना बंद कर दिया था। इसके बदले नील घाटी के किनारे के रेगिस्तान के साथ-साथ, वे चट्टानों के किनारों को खोद कर मकबरे बनाने लगे थे। वे चट्टान के भीतर बहुत दूर तक गलियारे खोद लेते थे और वहाँ दफनाने के लिए चट्टान में से कक्ष काट लिये जाते थे। मकबरों के आरम्भ में विशाल मूर्तियाँ और प्रभाव डालने वाले प्रवेश-द्वार निर्मित किये गए। दीवारों पर वहाँ दफनाये गए लोगों के नाम और अक्सर उनके जीवन की कहानियाँ लिखी जाती थीं। इन मकबरों के निर्माण में उतनी जानें नहीं जाती थीं और न उतनी शक्ति ही खर्च होती थी जितनी कि पिरामिडों के निर्माण में। न उन्हें बनाने में उतने इंजीनियरिंग कौशल की ही जरूरत थी जितनी पिरामिडों के निर्माण के लिए आवश्यक थी लेकिन ये मिस्री सभ्यता के हमारे अध्ययन के खज़ाने हैं क्योंकि कीमती फर्नीचर जवाहरात और कलात्मक वस्तुएँ भी कुलीन सरदारों के साथ ज़मींदोज़ हैं।

हिक्सो—लगभग १८०० ई० पू०, एशिया की एक लड़ाकू जाति के लोगों ने, जो हिक्सो कहलाते थे, मिस्र को जीत लिया। उन्होंने लगभग २०० वर्ष यहाँ शासन किया। भयावह हिक्सों ने मिस्र में रथों और घोड़ों का चलन चलाया जिन्हें स्थानीय किसानों ने, जो शांतिप्रिय लोग थे, युद्ध के साधनों के रूप में प्रयुक्त करना सीखा।

देश को हमलावरों से मुक्त करने के लम्बे संघर्ष के दौरान, मिस्री स्वयं लड़ाकू किस्म के लोग

एक मकबरे पर उभरे इस सजावटी चित्र में एक प्राची फरून को अपने दो घोड़ों वाले फौजी रथ से तीर चला दिखाया गया है।

मेट्रोपोलिटन म्यूज़ियम आफ आर्ट के सौजन्य स

विश्वव्यापार का विकास दिखाने वाले जो अनेक नक्शे यहां दिये गये हैं, उनमें से यह पहला है। यह व्यापार तब आरम्भ हुआ जब प्राचीन मिस्री नाविक अपनी आवश्यकता की वस्तुएँ प्राप्त करने के लिए, पहली बार क्रीट पहुँचे।
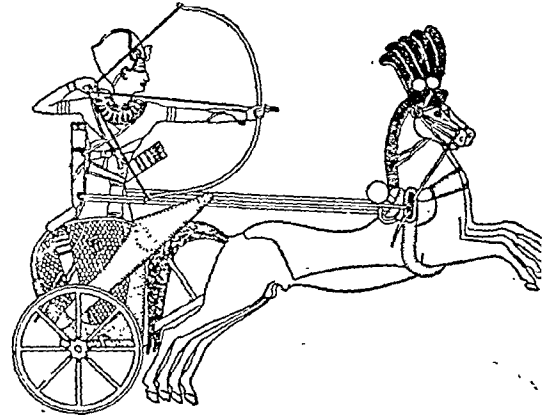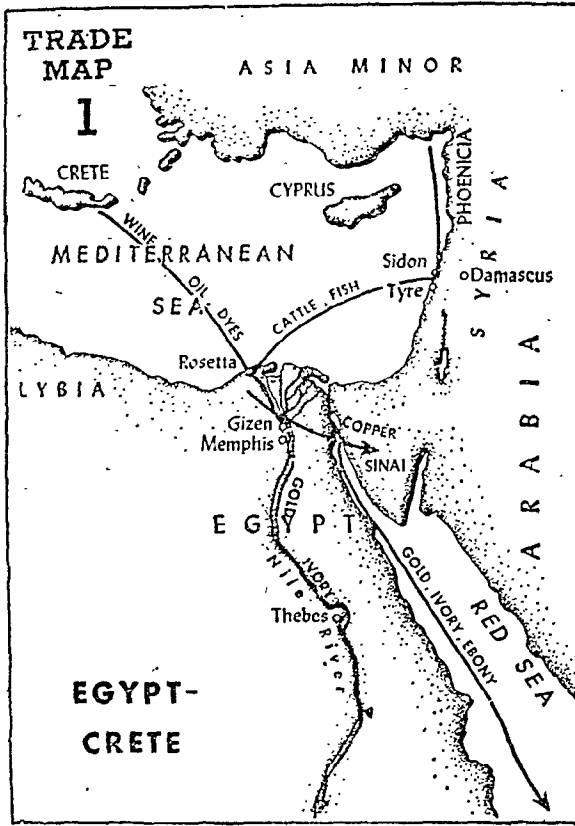
हो गये। अपने मुल्क को पुनः फतह कर लेने के बाद युद्धप्रिय फरूनों के एक राजकुल ने मिस्र में शासन किया। (एक राजवंश उन राजाओं का एक परिवार होता है जो एक के बाद एक राज्य करते हैं)। उन्होंने दक्षिण-पश्चिमी एशिया के कुछ हिस्सों को जीता और मिस्र की बादशाहत को एक साम्राज्य में बदल डाला।

१. मिस्री फरूनों के क्या-क्या अधिकार थे?
२. महान् पिरामिड का वर्णन करो। सामन्त युग के सरदारों ने पिरामिडों के स्थान पर चट्टानी मकबरे क्यों बनवाये? इन मकबरों से हमें मिस्र के बारे में क्या जानकारी मिलती है?
३. मिस्री धर्म मृतकों की देखभाल पर क्या प्रभाव डालता था? बहुदेववाद क्या है?
४. मिस्री कारीगर किन-किन कामों में कुशल थे?
५. मिस्रियों ने व्यापार क्यों अपनाया और कहां किया?
६. मिस्र में सामन्तकाल कौन-सा था?
७. हिक्सो कौन थे और मिस्र में उनके आने से क्या परिवर्तन हुए?

मिस्र की प्रभुता का चरमोत्कर्ष
(१५८०-११५० ई० पू०)

फरूनों का साम्राज्य—साम्राज्य का अर्थ है किसी एक मुल्क का अपने क्षेत्र के अलावा अपने देश के बाहर के मुल्कों पर शासन। मिस्री साम्राज्य मुख्यतः १८वें राजकुल के समय बना। मिस्री साम्राज्य-काल में कई शासक प्रख्यात हुए। इनमें से एक महिला, सम्राज्ञी हेतशेपसूत, थी जो कई सम्राटों से अधिक योग्य सिद्ध हुई। सम्राज्ञी हेतशेपसूत इतिहास में प्रथम प्रसिद्धि-प्राप्त महिला थी। राजसी परिवार की सदस्याओं की ही नहीं, अपितु गुलामों को छोड़ कर, मिस्र की सभी महिलाओं की विशिष्ट स्थिति थी क्योंकि महिलाओं को सम्पत्ति के मालिकाना अधिकार और उत्तराधिकार प्राप्त थे।

मिस्री साम्राज्य में, सबसे अधिक शक्तिशाली और संभवतः सबसे महत्त्वपूर्ण शासक, थुतमोस तृतीय था। १५ वीं शताब्दी ई० पू० के मध्य में उसने अपनी सेनाएँ लेकर सीरिया पर चढ़ाई कर दी

और उससे भी परे 'उपजाऊ चन्द्रार्ध' तक चला गया। उसने बहुत बड़े क्षेत्र को जीत लिया। वे लोग, जिन्हें थुतमोस तृतीय ने जीता था, मिस्र को राज़कर तो देते थे लेकिन कभी भी अपने विजेता के प्रति वफ़ादार नहीं थे।

राम्सेस द्वितीय का शासन कई कारणों से प्रसिद्ध है। उसका शासनकाल (१२९२-१२२५ ई० पू०) मिस्र के इतिहास में सबसे लम्बी अवधि तक रहा और उसके साथ ही साम्राज्य काल का सितारा अस्त हो गया।

वह संभवत: राम्सेस द्वितीय ही था जिसने हिब्रुओं को गुलाम बनाये रखा और अन्त में उसी के क्रूर शासन की वजह से वे दूसरे देश को भाग गये। राम्सेस की मृत्यु के बाद एक शताब्दी से भी कम समय में नील घाटी के बाहर का समस्त क्षेत्र मिस्रियों के हाथों से निकल गया।

कारनेक का मन्दिर—साम्राज्य काल में भी भवन-निर्माताओं के रूप में मिस्रियों ने पुन: अपनी दक्षता का परिचय दिया और कई भव्य मन्दिरों का निर्माण किया। आमन देवता का मंदिर इन सब में बड़ा था। यह प्राचीन नगर थेबीज में बनाया गया था, जिसका अस्तित्व बहुत पहले मिट चुका है। लेकिन उस जगह पर कारनेक का वर्तमान गांव है। इसलिए मन्दिर आम तौर पर कारनेक का मन्दिर कहलाता है। इस भव्य विशाल मन्दिर में अनेक आंगन और हाल हैं। इसका बड़ा हाल किसी भी मिस्री मन्दिर के हाल से अधिक प्रभावोत्पादक था। मध्य भाग में पत्थर के बारह विशाल खम्भे दो कतारों में थे। प्रत्येक खम्भा ७६ फुट ऊँचा था, और उनका शीर्षफलक इतना चौड़ा था कि एक सौ व्यक्ति उस पर खड़े हो सकते थे। उनका थूम इतना मोटा था कि छह व्यक्ति हाथ फैलाये हुए हों तो तब उसका घेरा बाँध सकते थे। हाल की दोनों बगलों में छोटे खम्भों की कतारें थीं। यह विशाल हाल ३३८ फुट चौड़ा और १७८ फुट गहरा था। खम्भों और भित्तियों पर लाल, हरे, नीले रंगों वाले चमकीले और बृहदाकार भित्तिचित्र खुदे हुए थे। ये चित्र साम्राज्य के विजय-संग्राम, उसके धर्मों और उन सभी फरूनों के शासनकाल में हुए सामाजिक विकास के थे जिन्होंने मन्दिर के निर्माण काल में मिस्र पर राज्य किया था। मिस्र की चमकीली धूप में खड़ा यह मन्दिर आंखों को चौंधिया देने वाला रहा होगा।

इस मन्दिर का निर्माण एक शासक ने नहीं अपितु बारी-बारी से बहुत से फरूनों ने करवाया और १८०० वर्षों तक राज्य करनेवालों में से प्रत्येक का इसके निर्माण में हाथ रहा। यद्यपि इसका निर्माण कार्य साम्राज्य-कालीन सम्राटों ने पूरा करवाया लेकिन मन्दिर का निर्माण साम्राज्य की स्थापना के बहुत पहले आरम्भ हो गया था।

साम्राज्य का धर्म—देवताओं की अपार धन-दौलत (जो नि:सन्देह मंदिरों के पुरोहितों की सम्पत्ति थी) और जनता के अंध-विश्वास के कारण, पुरोहितों की शक्ति अत्यधिक बढ़ चली थी, जिसका वे अधिकतर दुरुपयोग करते थे। सरदार और फरून भी उनसे भयभीत रहते थे। अन्त में, एक युवा

कारनेक मन्दिर के खम्भे के आकार का इसके निकट खड़े आदमी की ऊंचाई से मुकाबला कीजिए।

यूइंग गैलोवे
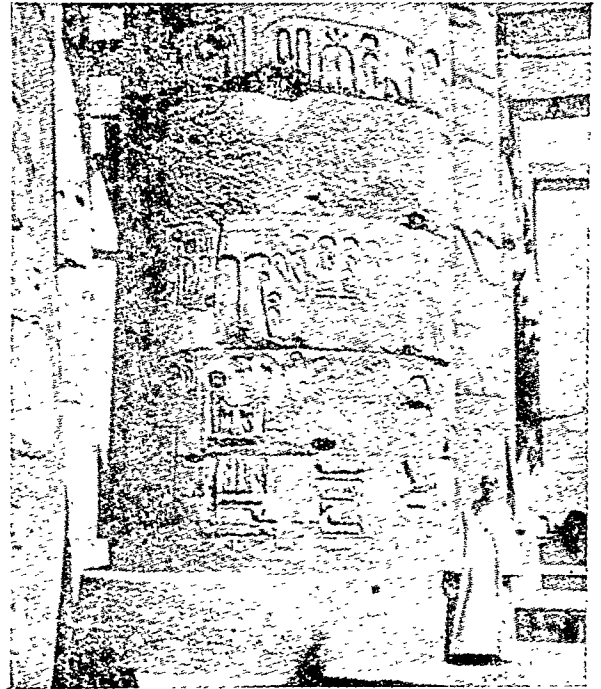
फरहन, जिसने १३७५ से १३५८ ई० पू० तक राज्य किया, इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि नील घाटी के स्थानीय देवताओं से भी बड़ा कोई सर्वोच्च देवता होना चाहिए। उसने सोचा कि ऐसा सूर्य देवता ही है, जिसे उसने 'आतन' नाम से पुकारा। सम्राट् ने आदेश दिया कि सभी पुराने मन्दिर बंद कर दिये जायें और पुरोहितों को बाहर कर दिया जाय। यहाँ तक कि उसने स्वयं अपना नाम बदल कर इख़नातन रख लिया जिसका मतलब था कि "आतन संतुष्ट है।" लेकिन जो अंधविश्वास आदमियों के दिलो-दिमाग़ में घर कर गये थे, उनके कारण इस परिवर्तन से वे भयभीत हुए। पुरोहितों ने जिन्हें उनकी अच्छी-खासी आमदनी और आरामतलब जिन्दगी से वंचित कर दिया गया था, इस नये सुधारक के विरुद्ध विद्रोह भड़काया। उसकी मृत्यु होने के साथ ही पुरोहितों ने अपनी पुरानी शक्ति पुनः प्राप्त कर ली और आतन को भुला दिया गया।

सामाजिक वर्ग—शताब्दियों तक मिस्र में सिर्फ दो सामाजिक वर्ग थे, एक ओर कुलीन और सामन्ती-वर्ग, दूसरी ओर स्वतन्त्र नागरिक और गुलाम। जनता में सर्वाधिक संख्या गुलामों की थी। स्वतन्त्र नागरिक हाथ का काम करते थे। उद्योग बढ़ने पर एक धनी मध्यमवर्ग पैदा हुआ। मध्यमवर्गी लोग दस्तकारी और व्यापार में लगे रहे, या चूँकि उन्होंने लिखना पढ़ना सीख लिया था, सरकारी ओहदों पर हो गये।

किसी प्राचीन मिस्री ने परलोक के देवता और न्यायाधीश ओसिरिस की कहानी पेपिरस पर लिखी है और उसका चित्र भी बनाया है।

मेट्रोपोलिटन म्यूजियम आफ आर्ट

गुलामों और किसानों के रहने के लिये छोटे मिट्टी के झोंपड़े थे, जिनमें फूस की छत होती थी, और फर्नीचर रहित मिट्टी वाले फर्श होते थे। शहरों में झोंपड़े कतारों में, बहुत कुछ सैनिक बारकों से मिलते-जुलते, बनाये जाते थे। बच्चों के तन पर कपड़ा नहीं रहता था। भोजन के रूप में मोटी रोटी और तरकारियाँ, जैसे ककड़ी, मटर, प्याज और सोयाबीन, थीं। गुलामों और किसानों को लम्बे घंटों तक कड़ी मेहनत करनी पड़ती थी। कुपोषण और कार्याधिक्य के कारण वे युवावस्था में ही मर जाते थे।

इसके ठीक विपरीत, कुलीनों के उच्च वर्ग और धनी मध्यमवर्ग अपने धूप में सुखाई गयीं ईंटों के हवादार और रोशनीवाले मकानों में जीवन का सुख भोगते थे। अक्सर उन मकानों की दीवारों और फर्शों पर पेड़ों, बगीचों और ठंडे दलदलों के चित्र बने होते थे और छतें इस तरह चित्रित होती थीं जैसे तारों भरा आसमान हो। नक्काशीदार, जड़ाऊ, आरामदेह कुर्सियाँ, कोच और मेजें सुविधा और सुन्दरता की अभिवृद्धि करती थीं। सन्दूकों और पिटारियों में उनके बढ़िया कपड़े और जवाहरात रहते थे। हर घर के साथ फूलों का बगीचा और पेड़ होते थे। देहातों में इनकी जागीरें बड़ी होती थीं जिनके चारों ओर खेत बने होते थे जहाँ से खाने की चीजें आती थीं। शहरों में ही या देहात में सम्पन्न लोग पौष्टिक भोजन करते थे। उनकी मेजों पर मांस, पनीर, अंजीर, खरबूजा, अंगूर, खजूर, दूध, बियर और शराब रहती थी।

पोशाक—धनी वर्गों की महिला और पुरुष, दोनों ही अपने व्यक्तिगत बनाव-ठनाव में विशेष अभिरुचि रखते थे। वे सफेद कपड़े पहनते थे जो कभी-कभी खूबसूरत रंगों में कढ़े हुए होते थे। उनके कपड़े इतने बढ़िया सूत से बने होते थे कि अक्सर

यह बतलाना कठिन हो जाता है कि मकबरों में पाये गये वस्त्र सूती हैं या रेशमी। मिस्र की हवा बहुत खुश्क थी और त्वचा की रक्षा के लिए तेल का अधिक प्रयोग होता था। महिलाएँ चमकाए हुए तांबे के आइनों में अपना चेहरा देखती थीं। गुलाम अपनी मालकिनों की भौंहों पर लेप और गालों पर रूज़ लगाते थे।

शिक्षा—किसानों के बच्चे कभी स्कूल नहीं भेजे जाते थे, लेकिन वहाँ ऐसे स्कूल थे जहाँ कुलीन घरानों के लड़के हाइरोग्लीफिक्स लिपि (चित्र लिपि) में लिखने की कला और कुछ सामान्य गणित, जिसमें भाग, गुणा और भिन्न भी शामिल थे, सीखते थे। इनमें से कुछ लड़के उच्च कक्षाओं वाले स्कूल में जाते थे, जहाँ उन्हें पुरोहितों द्वारा ज्योतिष शास्त्र और धर्म की शिक्षा दी जाती थी। मिस्री ज्योतिष में बहुत ज्यादा दिलचस्पी रखते थे क्योंकि वे सोचते थे कि सितारों द्वारा उनके जीवन का मार्ग प्रभावित होता है। १४०० ई० पू० तक उन्होंने पांच ग्रहों का पता लगा लिया था।

लड़कियों को स्कूल नहीं भेजा जाता था लेकिन उनकी माताएँ उन्हें घर-गृहस्थी संभालने और घरेलू दासों से काम लेने की ट्रेनिंग देती थीं।

मनोरंजन—उन्नीसवीं शताब्दी में मशीनी खिलौने प्रचलित होने से पहले तक बच्चों के खिलौने प्राचीन समय से सब जगह लगभग जैसे के तैसे ही रहे हैं। मिस्री बच्चों की गेंदें चमड़े की या पेपिरस घास की और गुड़ियाँ मिट्टी और लकड़ी की बनती थीं। मिस्री लड़के और लड़कियाँ अपने प्रिय जानवरों के साथ खेलने का आनंद भी लेते थे। पुरुष कुछ उसी तरह के खेल खेलते थे जो आजकल लोगों के लिए आनंददायक हैं। शिकार इनमें से एक प्रधान मनोरंजन था। कभी-कभी हल्की नावों में वे नदी के किनारे-किनारे दलदली हिस्सों में चिड़ियों और जानवरों का शिकार भी करते थे। अन्य अवसरों पर वे टोलियों में शेर का शिकार करने सुदूर दक्षिण की ओर जाते थे। नील में तैरना और नाव खेना मनोरंजन के प्रिय साधन थे।

लगभग १४०० ईस्वी पूर्व में किसी प्राचीन मिस्री चित्रकार ने अपने देशवासियों को मछली और मुर्गी का शिकार करते दिखाया है। पुरुष शिकार कर रहे हैं और स्त्रियां कमल के फूल चुन रही हैं।

मेट्रोपोलिटन म्यूज़ियम आफ़ आर्ट
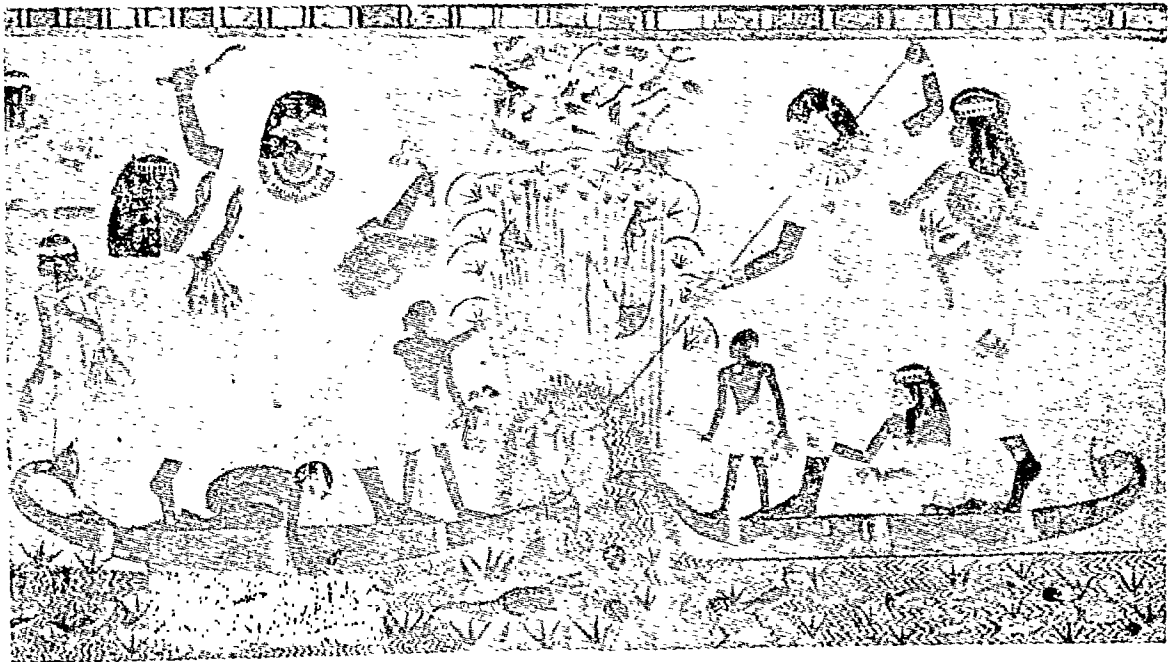
मिस्री साम्राज्य का अधःपतन—राम्सेस द्वितीय के बाद कई कारणों से मिस्र की शक्ति और महत्ता क्षीण होने लगी। इक्कीसवें राजकुल के शासक, जिन्होंने १०९० ई० पू० में मिस्र की बागडोर संभाली, निर्बल और निकम्मे थे। धर्म के मामले में होने वाले झगड़ों ने गृह-युद्ध और फूट की स्थिति ला दी थी। हमलावरों के लगातार हमलों ने मिस्र की स्वाधीनता नष्ट कर दी। सन् ६७१ ई० पू० में असुरिया वालों ने 'उपजाऊ चन्द्रार्ध' पर हमला किया। कुछ समय के लिए मिस्र फिर आजाद हो गया, लेकिन ५२५ ई० पू० में ईरानी साम्राज्य की बढ़ती हुई हुकूमत नील की घाटी में आ गयी। दो सौ वर्ष बाद जब मकदूनियाँ के सिकन्दर महान् ने ईरानी साम्राज्य को फतह किया, तब वह मिस्र को अपनी हुकूमत के मातहत ले आया। अन्त में, सन् ३० ई० पू० में, रोमन साम्राज्य ने मिस्र को अपने में मिला लिया।

मिस्र में मिट्टी के बर्तन निपुणता से बनाए और सजाए जाते थे और धनी लोग इनसे अपने घरों की शोभा बढ़ाते थे।

विश्व में इतना लम्बा इतिहास किसी अन्य का नहीं है जितना मिस्र का। पंचांग के आविष्कार से लेकर रोम के मिस्र पर हमले तक ४२ से अधिक शताब्दियाँ गुजर जाती हैं। इस काल के अधिकांश भाग में मिस्र अपना शानदार इतिहास निर्माण कर रहा था, जिसके लिए हम उसके कृतज्ञ हैं। बहुत सी चीजों में, जो प्राचीन मिस्र ने दुनिया को दीं, बहुत तरक्की हो गयी है, लेकिन उनके बारे में सोचने वाले पहले व्यक्ति मिस्री ही थे। शायद, सर्वाधिक महत्त्व की बात यह है कि मिस्री ही संसार में सर्वप्रथम लोग थे जो एक संयुक्त राष्ट्र के रूप में उस मार्ग पर आगे बढ़े जिसे हम सभ्यता कहते हैं।

१. मिस्र के प्रसिद्ध सम्राटों के नाम बताओ और यह भी बताओ कि प्रत्येक क्यों प्रसिद्ध हुआ?
२. कारनेक मंदिर का वर्णन करो और बताओ कि वह इतना स्मरणीय क्यों है?
३. मिस्र में सामाजिक रूप से कितने वर्ग थे और उनके रहन-सहन में क्या अन्तर था?
४. मिस्री युवकों की शिक्षा तुमसे किस प्रकार भिन्न थी?
५. मिस्रियों के मनोरंजन के क्या-क्या तरीके थे?
६. प्राचीनकाल में किन-किन साम्राज्यों की मिस्र पर हुकूमत रही?

विचार-विमर्श के लिए प्रश्न

१. एक शासक के लिए यह अपेक्षाकृत क्यों सुगम था कि वह समूची नील घाटी पर नियंत्रण रख सके?

२. तुम इतिहास का अध्ययन करते हुए यह पाओगे कि बहुत से मुल्कों के लोगों का विश्वास था कि उनके शासक देवताओं के वंशज थे। शासक अपनी प्रजाओं के बीच इस प्रकार के विचारों को बढ़ावा देने की कोशिश क्यों करते हैं?

३. मिस्र में तीन ही ऋतुएँ क्यों होती हैं जबकि अमेरिका में चार होती हैं?

४. क्या तुम बता सकते हो कि मिस्रियों ने ऐसे मैदानी इलाके में रहते हुए जहाँ कि जितनी दूर तक निगाह डालो मरुस्थल ही फैला दिखाई देता है, क्यों इतनी विशाल इमारतें और मूर्तियाँ बनवाईं?

५. ईस्वी पंचांग (कलैण्डर) मिस्री पंचांग से कैसे भिन्न है? हमारा कलैण्डर किस रूप में बदलने का सुझाव दिया गया है?

६. किस रूप में एक मिस्री किसान का काम आज के अमेरिकी किसान के कार्य से भिन्न था?

७. पहनावे का ढंग जलवायु और लोगों के कार्य के अनुसार होता है। मिस्रियों के पहनावे के ढंग से यह किस तरह परिलक्षित होता है?

८. धातुओं के प्रयोग की खोज मानव समाज के लिए क्यों महत्त्वपूर्ण थी?

९. इतने अधिक मिस्री गरीब क्यों थे?

१०. मिस्रियों ने यह कैसे जाना होगा कि ३६० दिनों का पूरा वर्ष नहीं बनता?

११. नील की बाढ़ प्राचीन मिस्रियों के लिए इतनी ज्यादा लाभदायक क्यों थी, जब कि मिसिसिपी नदी की बाढ़ विपत्ति लाती है?

१२. सौर-पंचांग चान्द्र-पंचांग से क्यों उत्तम माना जाता है?

१३. मिस्री सभ्यता में सबसे बड़ी खराबी तुम किसे समझते हो?

१४. एक दूसरे से बहुत दूर रहनेवाले लोग विचारों का आदान-प्रदान कैसे करते हैं? प्राचीन लोगों ने दूसरे मुल्कों से कैसे सीखा?

इतिहास के उपकरणों का प्रयोग

एक. नाम, तिथियाँ और स्थान।

१. क्या तुम इन नामों का मतलब समझा सकते हो?

मृतकों की पुस्तक, नगर-राज्य, चट्टानी मकबरे, डेल्टा, राज-कुल, साम्राज्य, साम्राज्यवाद, नील का वरदान, आनुवंशिक, हाइरोग्लीफिक्स, हिक्सो, कारनेक, राजा-राज्य, चान्द्र पंचांग, मर्मी, पेपिरस, फरून, बहुदेव-वाद, पिरामिड, सैकरोफेगुस, वर्तिलेख, लिपि, सौर पंचांग, स्फिक्स, तृतीय आयाम।

२. इन तिथियों के बारे में तुम क्या जानते हो?

४२०० ई० पू०, ३००० ई० पू०, ३०००-२५०० ई० पू०, १८०० ई० पू०, १५८०-११५० ई० पू०, ३० ई० पू०।

३. निम्नलिखित स्थान नक्शे में दिखाओ।

अफ्रीका, मिस्र, मिस्री नहर, भूमध्य सागर, मम्फीस, नील डेल्टा, नील नदी, लाल सागर, सिनाई प्रायद्वीप।

४. क्या तुम इन व्यक्तियों और देवताओं के बारे में बता सकते हो?

आमन, आतन, शेम्पोलियन, किओप्स, हेतशेपसूत, कूफू, मेनीज, ओसीरिस, राम्सेस द्वितीय, रे, थुतमोस तृतीय।

दो. इतिहास बनाम नागरिक शास्त्र

(१) प्राचीन मिस्री कुलीन व्यक्ति का पुत्र अपनी शिक्षा के द्वारा अपने को सरकारी पद के योग्य बनाता था। आमने-सामने कालमों में उन तरीकों का वर्णन करो जिनमें उसकी शिक्षा उसकी आवश्यकताओं की पूर्ति करती थी और वह तरीके बताओ जिनसे तुम्हारी शिक्षा तुम्हें वयस्क जीवन बिताने को तैयार कर रही है।

(२) समानान्तर कालमों में बताओ कि फरून की एक प्रजा के नाते एक प्राचीन मिस्री की क्या जिम्मे-दारियाँ थीं और अमेरिका के एक नागरिक के नाते तुम्हारी क्या जिम्मेदारियाँ हैं।

(३) समानान्तर कालमों में स्वतंत्र व्यक्ति को प्राचीन मिस्र में उपलब्ध रोजगार की सुविधाओं की चर्चा करो।

तीन. क्या तुम स्पष्ट रूप से अपने को अभि-व्यक्त कर सकते हो?

(क) निम्नलिखित में से किसी एक मिट्टी का ढांचा तैयार कर प्रदर्शन के लिए अपनी कक्षा में रखो:

पिरामिड, स्फिक्स, चट्टानी मकबरा, कारनेक मंदिर का मध्य हाल।

(ख) निम्नलिखित विषयों में से किसी एक कक्षा में सुनाने के लिए एक मौखिक रिपोर्ट तैयार करो:

मिस्री कला, हाइरोग्लीफिक्स, मिस्री कृषि, तूतन-खामेन का मकबरा, शैम्पोलियन ने कैसे हाइरोग्लीफिक्स भाषा को पढ़कर अर्थ लगाया, सम्राज्ञी हेतशेपसूत, मिस्री कलैण्डर, शैदूफ, किस तरह मिस्री आविष्कारों से आज हमें मदद मिलती है, कियोप्स का मकबरा।

(ग) हाइरोग्लीफिक्स लिपि के कुछ अक्षरों को हमारी वर्णमाला में बताओ।

(घ) माडल बनाने की मिट्टी लेकर मिस्र का एक उभरा मानचित्र बनाओ जिसमें नील का बहाव, उसका डेल्टा तथा नील में मिलने वाली उसकी सहायक नदियाँ हों। छोटे-छोटे माडल बनाकर पिरामिडों का निर्माण स्थल दिखाओ। तुम्हारा नक्शा कम से कम तीन फुट लम्बा होना चाहिए।

चार. चित्र अध्ययन:

पृष्ठ ४० में दिखलाये गये ताज की तरह एक दुहरे ताज से यह प्रदर्शित होता है कि फरून ऊपरले और निचले मिस्र दोनों में शासन करता था। मिस्र का वह पहला शासक कौन था जो दुहरा ताज पहनने का अधिकारी था?
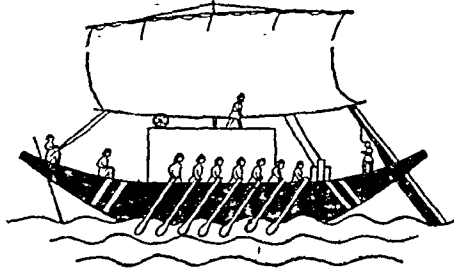
४ दक्षिण-पश्चिम एशिया में उच्च संस्कृति का विकास

मिस्री, जिन्होंने सुसभ्य जीवन व्यतीत करने के लिए, उसे हासिल करने से पूर्व सैकड़ों वर्षों तक सख्त मेहनत की, अकेले ही लोग नहीं थे जो अपने जीवन-यापन का मापदण्ड ऊँचा उठाना चाहते थे। सम्राट् मेनीज शायद यह बात नहीं जानता था, लेकिन उस समय तक, जब कि उसने नील की धारा के साथ-साथ लगे ऊपरले और निचले मिस्र को एक सूत्र में पिरोकर एक बड़ा साम्राज्य कायम किया, दूर उत्तर-पूर्व में, एक दूसरी नदी घाटी में ऐसे लोग रह रहे थे जो लगभग उतने ही उन्नत थे जितने कि मिस्री।

कुशल असीरियनों ने यह मानव के सिर वाला पंखदार बैल चालीस टन के एक अटूट पत्थर से बनाया है।

ओरियंटल इंस्टीट्यूट, शिकागो विश्वविद्यालय

दो नदियों के बीच में मानव-सभ्यता का अभ्युदय

उपजाऊ भूमि, नौका-वहन के लिए नदियों और नम आबोहवा की उन्हीं सुविधाओं ने जिनसे मिस्र में जीवन-यापन आसान था, दक्षिण-पश्चिम एशिया के लोगों को भी सभ्यता के विकास में मदद पहुँचाई। उनका आकर्षक देश, जो 'उपजाऊ अर्ध-चन्द्र' कहलाता था, दजला और फरात नदियों की बीच की भूमि में बसा था। परन्तु अन्य रूप में यह क्षेत्र मिस्र से भिन्न था। पूर्व की दजला नदी और पश्चिम की फरात नदी दक्षिण की ओर बहती हैं, न कि उत्तर की ओर, जैसे नील बहती है। ये दोनों नदियाँ फारस की खाड़ी में गिरती हैं, जैसा कि तुम नक्शे में देखोगे। इन नदियों से पानी की सप्लाई उतनी निश्चयात्मक और नियमित नहीं थी जितनी नील से थी। न इन नदी-घाटियों के लोगों को उतनी आसानी से इमारती पत्थर ही प्राप्त था जितनी आसानी से मिस्रियों को उपलब्ध था। मिस्री नील के मार्ग से भूमध्यसागर में पहुँच सकते थे और उस सागर के इर्द-गिर्द रहने वाले लोगों से व्यापार का लाभ उठाते थे। फारस की खाड़ी दोनों नदियों के लोगों के लिए अच्छा व्यापार-क्षेत्र नहीं थी।

'अदन का बाग'—दो नदियों के बीच का क्षेत्र, जिसे ग्रीक मेसोपोटामिया कहते थे, हिब्रुओं के पुराने

टेस्टामेंट के अनुसार "अदन का बाग" कहलाता था। आज यह भूखण्ड उजाड़ और निर्धन है, लेकिन प्राचीन काल में यह भरा-पूरा और सुन्दर इलाका था। ग्रीक यात्री और इतिहासकार हैरोडोटस ने लिखा है, "जब मैंने लोगों को बताया कि उस सुरम्य भूमि में अन्न की कितनी लम्बी बालियाँ उगती हैं तो उन्हें मुझ पर विश्वास नहीं हुआ।"

चूंकि मेसोपोटामिया की इस गरम और उपजाऊ घाटी का जीवन सुखी था, काला सागर और कैस्पियन सागर के पास उत्तर के पहाड़ों में रहने वाले लोगों ने और दक्षिण-पश्चिम में अरब के रेगिस्तान में रहने वाले लोगों ने वर्षों तक इस घाटी पर हमले किये और यहाँ के निवासियों से कई लड़ाइयाँ लड़ीं। घाटी की सुरक्षा आसान नहीं थी, खास कर उत्तर की ओर से। हमलावरों ने स्थानीय लोगों को बहुत बार पराजित किया, और उन्हें वहाँ जो सभ्यता मिली उसका लाभ उठाने के लिए वे वहीं बसते चले गये।

सुमेरियन या सुमेरी—यह संभवतः भारत-यूरोपीय कहा जाने वाला एक समूह था जो दक्षिण की ओर मेसोपोटामिया के पूर्वी सिरे को स्थानान्तरित हुआ और उसकी ही प्रथम सभ्यता वहाँ आरम्भ हुई। भारत-यूरोपीय उस श्वेत मूलवंश की एक शाखा थे जो काला सागर और कैस्पियन सागर के आसपास रहता था। हम उन्हें भारत-यूरोपीय कहते हैं क्योंकि उनके वंशज, अन्त में, मेसोपोटामिया से पूर्व की ओर भारत को और पश्चिम की ओर यूरोप को स्थानान्तरित हुए। ये भारत-यूरोपीय, जिन्होंने दजला-फरात नदियों के आदिवासियों को विजय किया, सुमेरियन कहलाये क्योंकि उनकी राजधानी सुमेर में थी जो कि घाटी के निचले हिस्से में है।

कुछ बातों में, सुमेरियों के रहन-सहन का ढंग उस समय की मिस्री संस्कृति से मिलता-जुलता था। सुमेरियों ने नगर-राज्य किस्म की सरकार-प्रणाली अपनाई थी। वे प्रकृति के विभिन्न तत्त्वों के प्रतीकरूप बहुत से देवताओं को पूजते थे और
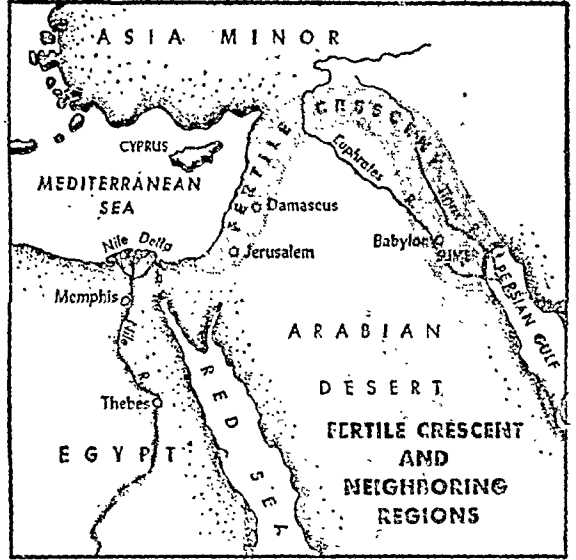
नक्शा—उपजाऊ चन्द्रार्ध और पड़ोसी प्रदेश

उनके बुर्ज-मन्दिर स्थापत्य कला की उत्कृष्ट कृतियाँ हैं। खेती-बाड़ी के लिए पानी जमा रखने को उन्होंने सिंचाई प्रणाली निर्मित की थी। दजला-फरात घाटी की उपजाऊ मिट्टी, नील घाटी की ही तरह सुमेरियों की भूमि में अनेकों का भरण-पोषण करती थी।

लेकिन सुमेरियों ने सभ्यता को कुछ ऐसी महत्त्वपूर्ण वस्तुएँ दीं जिन्हें मिस्री नहीं जान पाये थे। उदाहरणार्थ, उनके विशेषज्ञों ने सर्वप्रथम मेहराब बनाये जो भवन-निर्माण के विकास में एक बहुत महत्त्वपूर्ण कदम है। उन्होंने चक्र (पहिया) में सुधार किया जिससे उन्होंने बैलगाड़ियाँ और रथ बनाये, जिसके बगैर हमारी आधुनिक सभ्यता असंभव सी होती। सड़कों पर दौड़ने वाली लाखों कारें, मीलों पटरियों पर दौड़ने वाली लम्बी ट्रेनें, आसमान को चीरते हुए गुजरने वाले विशाल विमान, सर्वत्र फैक्टरियों में घूमने वाली मशीनें, इन सब की शुरुआत कुछ बुद्धिमान सुमेरियों के दिमाग की उपज थी, जो वस्तुओं को ढोने के लिए कोई आसान तरीका निकालना चाहते थे।

फुटबाल के खेल में जब प्रत्येक बार तुम अन्तिम सीटी सुनते हो या अपनी घड़ी देखते हो तो सुमेरियों का पुराना जीवन तुम्हें स्मरण हो आता है, क्योंकि सुमेरियों ने ही समय के अंकन के लिए
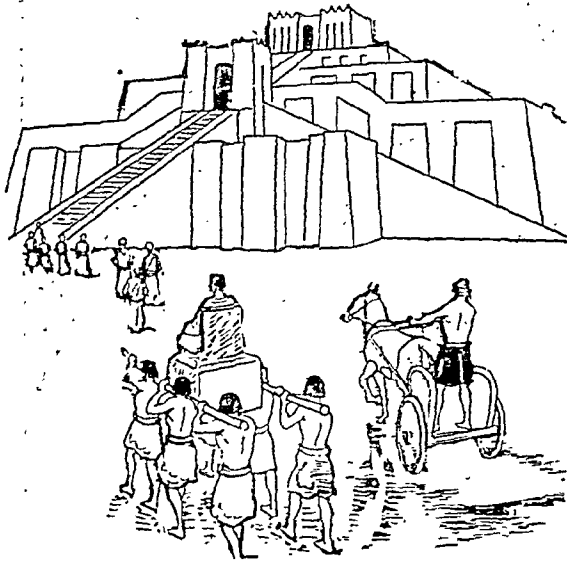
सबसे पहले सुमेरियनों ने बेबिलोनिया के 'उपजाऊ अर्धचन्द्र' में सभ्यता का विकास किया।

साठ इकाइयों को शुरू किया था, एक मिनट में साठ सेकेण्ड और एक घण्टे में साठ मिनट। उन्होंने अन्तरिक्ष की माप के लिए भी ६० को एक अंश के रूप में प्रयुक्त किया। रेखागणित के अध्ययन में तुम सीखते हो कि एक वृत्त में ३६० अंश होते हैं। यह माप इन्हीं प्राचीन लोगों की देन हैं।

सुमेरियन व्यापारियों ने अपना लेखा-जोखा रखने के लिए एक किस्म की लिखावट विकसित की थी जो मिस्रियों की लिपि से बिल्कुल भिन्न थी। इसे "कूनीफार्म" या कीलाकार लेखन कहते हैं। लिपिकार सरकंडे की नुकीली कलम का प्रयोग करते थे जिससे वे ये शब्दखंड मिट्टी की पट्टियों पर अंकित करते थे। फिर ये पट्टियाँ पका ली जाती थीं। कूनीफार्म के सैकड़ों अभिलेख, जो पुरातत्त्ववेत्ताओं को मिले हैं, विभिन्न किस्म के हैं। इनमें राजा के अपने गवर्नरों के नाम आदेश, रसीदें और शाही फरमान हैं।

बेबीलोनियन—लगभग २९०० ई० पू० में सुयोग्य सुमेरियों को मरुस्थल से आये हुए एक सेमेटिक कबीले ने जीत लिया। ये सेमेटिक कबीले वाले चरवाहे थे जो नये चरागाहों और पानी के लिए अपने मवेशियों को लिए हुए एक नखलिस्तान से दूसरे नखलिस्तान में घूमते रहते थे। अन्य सेमेटिक कबीलों ने बाद में सुमेर और उसके उत्तर पड़ोसी, अक्कद पर कब्जा कर लिया। वे बेबीलोनियन कहलाये क्योंकि इनके राजा पुराने नगर बेबीलोन से राज्य करते थे। इनका सबसे प्रतापी राजा हम्मूराबी (लगभग १००० ई० पू०) हुआ। हम्मूराबी और उसके सचिवों के, उसके गवर्नरों और अधिकारियों के नाम लिखे गये बहुत से पत्र तथा फरमान महल के मलबे से खोद कर निकाले गये हैं। लेकिन सबसे बड़ी चीज, जो हम्मूराबी छोड़ गया, उसका न्याय-विधान था। इसे उसने एक ८ फुट ऊँची पत्थर की शिला पर खुदवाया था। न्यायविधान के ऊपर एक खुदाई और है जिसमें दर्शाया गया है कि सूर्यदेव राजा को न्याय-विधान सौंप रहे हैं। हम्मूराबी के कानूनों में गरीबों के लिए उससे भी ज्यादा चिन्ता व्यक्त की गई है

बेबीलोन में सबसे आकर्षक भवन बुर्जों वाले मन्दिर थे जिनके 'ब्लाक' भिन्न-भिन्न रंगों के थे।

—ओरियंटल इंस्टीट्यूट, शिकागो विश्वविद्यालय
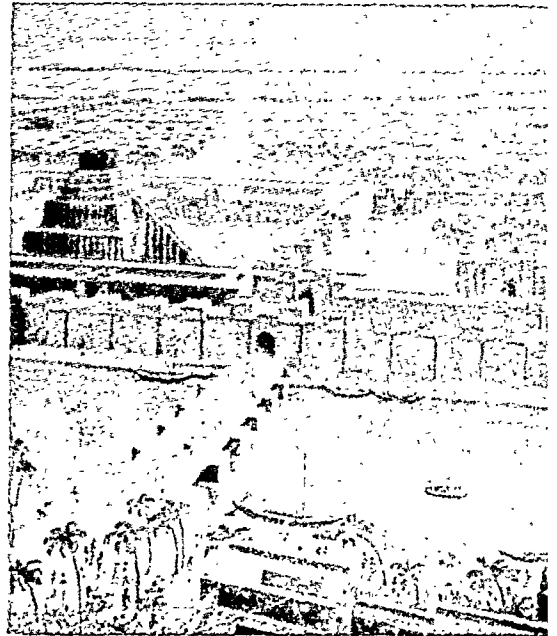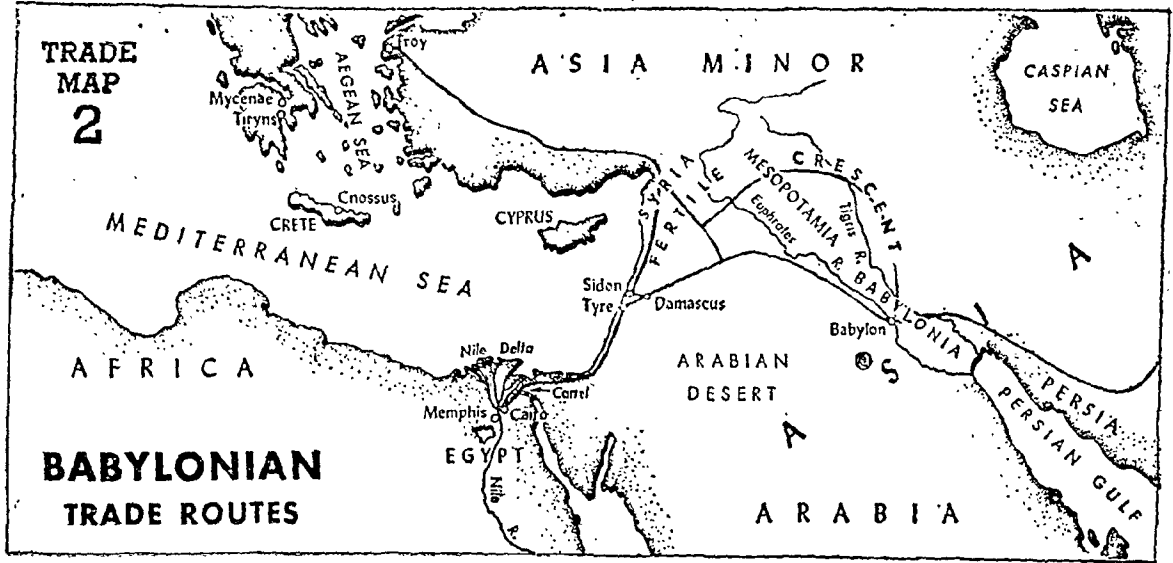
बेबिलोनियन व्यापार मार्ग

जितनी कि हम उम्मीद कर सकते हैं। लेकिन कानूनों का आम सिद्धान्त यह था कि, "जैसे को तैसा और खून का बदला खून।" हम्मूराबी का विधान सबसे पुराना विधान है।

असीरियाई—दूसरी सेमेटिक जाति असीरियाई थी जिन्होंने अन्ततोगत्वा समूचे मेसोपोटामिया को जीत लिया और अफ्रीका तक पहुंच गये तथा विनष्ट होने वाले मिस्री साम्राज्य का बहुत बड़ा हिस्सा इन्होंने अपने अधिकार में कर लिया (६७२ ई० पू०)। असीरियाई लड़ाकू किस्म के लोग थे। उन्होंने हिट्टियों से, जोकि मेसोपोटामिया के उत्तर में रहते थे, यह सीख लिया था कि शस्त्र बनाने के लिए लोहे का प्रयोग किस तरह किया जाता है, जो तांबे और कांसे के शस्त्रों से ज्यादा घातक होते थे। उनकी युद्ध-योजना हमले से पूर्व बहुत सोच-समझकर बनाई जाती थी। सेना की एक टुकड़ी रथों पर चढ़ी हुई युद्ध-भूमि में उतरती थी। उसके पीछे घुड़सवार और पैदल सैनिक लोहे की नोकों वाले भाले और धनुष-बाण लिये होते थे। दीवारों से घिरे नगरों पर हमले के लिए उन्होंने भीत गिराने वाले लोहे के यंत्र (रैम) का आविष्कार किया था। वे आसानी से ईंटों से घिरी चहारदीवारी को ढहा देते थे। असीरियाई राजाओं को अपनी निर्दयता पर घमंड था और उनकी सेनाएँ जहाँ कहीं जातीं, आतंक फैलाती थीं।

असुर, जिससे असीरियों का नामकरण हुआ, उन की प्रथम राजधानी बनाया गया क्योंकि वह दजला नदी के किनारे सुविधाजनक स्थान में बसा हुआ था। बाद में उनके प्रतापी राजा सेनेकेरिब ने राजधानी को ऊपर की ओर हटा कर निनेवेह में बसाया।

उस समय तक विश्व का कोई भी नगर शानो-शौकत और शक्ति में निनेवेह के समकक्ष नहीं था। महलों में ऐशो आराम की वस्तुएँ थीं, विशाल सिलखड़ी (ऐलेबैस्टर) की मूर्तियाँ थीं, चिकनी ईंटों की दीवारें थीं और सर्वत्र विविध रंगीन वस्तुएँ थीं। राजा अपने महलों के अन्दरूनी भागों को अपनी शक्ति के परिचायक बड़े-बड़े भित्ति-चित्रों से सजवाते थे। नगर को घेरनेवाली दुहरी दीवारें थीं जिनमें से प्रत्येक ८ मील लम्बी, १०० फुट चौड़ी और ५० फुट मोटी थी। नगर में अन्य आकर्षण भी थे। जलपूर्ति की सुन्दर व्यवस्था, जिसका अब तक प्राचीन नगरों में अभाव था, असीरियाई राजाओं की दूसरी उपलब्धि थी। एक बड़े जलाशय से, जिसमें पहाड़ी झरनों से आने वाला शुद्ध जल भरा जाता था, नगर में पानी पहुँचाने के लिए जल-प्रणाली-व्यवस्था का निर्माण किया गया था।
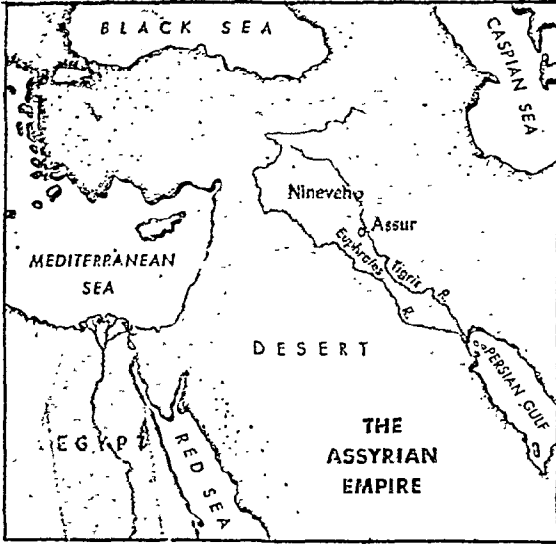
असीरियनों के पतन पर एक हिब्रू भविष्यवक्ता ने लिखा था: 'तुम्हारी दुर्गति का समाचार सुन कर सब लोग खुशी से मुस्करा रहे हैं।'

जब पुरातत्व-वेत्ताओं ने निनेवेह के मलवे की खुदाई की तो उन्हें राजा के महल में एक ३०,००० मिट्टी की पट्टियों वाला वेशकीमती पुस्तकालय मिला। इनमें से अधिकांश पट्टियों का आकार एक सामान्य पाठ्य पुस्तक जितना था, लेकिन कुछ

कीलाक्षर का प्रत्येक रूप छेनों की शक्ल का था। इनके मिलने से अलग-अलग वर्ण बनते थे।
यूनीवर्सिटी म्यूज़ियम फिलाडेल्फिया

बहुत छोटी हैं। ये 'पुस्तकें' स्तोत्रों, प्रार्थनाओं, दवाओं, पत्रों, व्याकरण और लोगों के अन्धविश्वासों वाले वक्तव्यों की हैं। इन पट्टियों के जरिये आधुनिक इतिहासकार प्राचीन असीरियों के विचारों को पढ़ पाये हैं।

असीरियाई साम्राज्य वह पहला शासन था जिसने संसार को दिखाया कि घोड़ों और लोहे के हथियारों से, कोई देश दूरस्थ क्षेत्रों में भी राज्य कर सकता है और इस तरह साम्राज्य स्थापित कर सकता है। परन्तु वह साम्राज्य, जो इस हद तक अपनी सैन्य-सफलताओं पर निर्भर हो और विजित लोगों के साथ ऐसा क्रूर निर्मम व्यवहार करता हो जैसा कि असीरियाई करते थे, किसी भी हालत में ज्यादा समय तक नहीं टिक सकता था। लगभग दो सौ वर्ष वाद दक्षिण के कैल्डियन इस विशाल सैनिक व्यवस्था को पलटने के लिए उत्तर के मीडों से मिल गये। निनेवेह का भव्य नगर घेर लिया गया और सन् ६१२ ई० पू० में उसकी दीवारें ढहा दी गयीं। क्रूर और अहंकारी विजेता नष्ट हो गये लेकिन अपने विजेताओं के लिए वे उन दक्ष साधनों को छोड़ गये जिनका आविष्कार उन्होंने अन्य लोगों की वरवादी के लिए किया था।

कैल्डियन—निनेवेह की वरवादी के वाद कैल्डियनों के योग्य राजा नेवुकेडनज़र ने वेबीलोन को पुनः अपनी राजधानी के रूप में वसाया। उसने पुराने नगर में भव्य मंदिरों और आलीशान महलों का नवनिर्माण किया और शहर को विशाल चहारदीवारी से घेरा, जो इतनी चौड़ी थी कि चार घोड़ों का रथ उसके सिरे पर आसानी से घूम सकता था। उसके आलीशान महल के झूलने वाले वगीचे को ग्रीकों ने प्राचीन विश्व के सात आश्चर्यों में गिना था। ये ऊँचे चवूतरों की चढ़ती पंक्तियों में वनाये गये थे। इनमें झाड़ीदार पौधे, खूवसूरत फूल और अंगूर की वेलें लगाई गयी थीं; कहा जाता है कि ये झूलने वाले वगीचे नेवुकेडनज़र ने अपनी पहाड़ी रानी की सुविधा के लिए वनवाये थे जो पहाड़ियों को छोड़ कर आई थी।

नेबुकेडनज़र ने भयंकर लड़ाइयाँ लड़ीं। इनमें से एक में उसने जेरुसलम को जीत लिया और शहर को बरबाद कर दिया। नागरिक मिस्रियों से मदद मिलने का विश्वास रखकर मूर्ख बने। मिस्र स्वयं अपनी ही रक्षा करने में असमर्थ था। इस प्रकार यहूदियों की राजधानी नष्ट कर दी गयी और वहाँ के निवासी बेबीलोन में गुलाम बनाये गये।

कैल्डियनों ने अपनी राजधानी में लड़कों के लिए स्कूल स्थापित किये थे। स्कूल के आंगन में विद्यार्थी मिट्टी खोद कर पट्टियाँ बनाते थे जिन पर दुरूह क्यूनीफार्म (कीलाकार) लिपि का अभ्यास करते थे। लिखने के अलावा उन्हें पढ़ना, हिज्जे, नक्शा बनाना, ज्योतिष और धार्मिक आस्थाओं के बारे में भी बताया जाता था। शारीरिक शिक्षा की भी उपेक्षा नहीं की जाती थी और खुले में व्यायाम को प्रोत्साहन दिया जाता था। सन् ३००० ई० पू० में ही बेबीलोन एक प्रसिद्ध विश्व-बाजार बन गया था। यद्यपि इस नगर पर कई भिन्न-भिन्न शासकों ने राज्य किया लेकिन यह व्यापार का बड़ा केन्द्र बना रहा। काफ़िले अरब से मसाले और लोबान, लेबनान के पर्वतों से इमारती लकड़ी और भारत से हाथीदांत, मसाले, जवाहरात और रेशम लाते थे। चटकीले रंगों के चन्दोवों से ढकी दूकानों पर दूकानदार गुजरती हुई भीड़ से अपने माल का भाव-ताव करते थे। बेबीलोनिया के कारीगर भी अपनी दस्तकारी की चीजें, गलीचे, चांदी, सोने और हाथीदांत के गहने और शीशे, कांसे और तांबे का सामान बेचने के लिए दूकानें सजाते थे। लिपिकार, मिट्टी की पट्टियाँ लिए हुए, जिस किसी को उनकी सेवाओं की जरूरत हो, उसके लिए लिखने को तैयार घूमते रहते थे। मुद्रा बदलने वाले हाथों में तराजू लिए उन लोगों के लिए सोने और चांदी के टुकड़े तोलने को तैयार रहते थे जो खरीदारी करते थे। बेबीलोन बड़ा कामकाजी शहर था, बहुत-सी भाषा बोलने वाले और बहुत-से देशों से आये सौदागरों की चहल-पहल और कोलाहल से शहर गूंजा करता था।

यद्यपि कैल्डियन बहादुर और मेहनती लोग थे लेकिन उनका साम्राज्य एक शताब्दी से पेश्तर ही समाप्त हो गया। उनकी प्रजाओं ने उनके क्रूर शासन को मानने से इन्कार कर दिया। शक्ति-सम्पन्न पूर्वी पड़ोसियों ने उन पर बार-बार हमले किये और अन्त में मीडों तथा फारस वालों ने कैल्डियनों के साम्राज्य का अन्त कर दिया। (५३९ ई० पू०)

आज के देशों में प्रचलित अनेक सब्जियों का जन्म दजलाफरात घाटी में हुआ था, जैसे मटर, पालक, चुकन्दर।
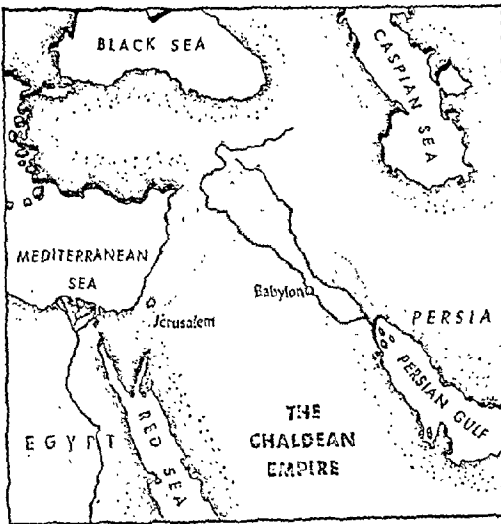
वास्तुशिल्प—मेसोपोटामिया में रहने वाले विभिन्न लोगों के धर्मों ने उनके वास्तु-शिल्प पर प्रभाव डाला। पूर्ववर्ती सुमेर लोगों का विश्वास था कि उनके देवता पर्वतों की चोटियों पर रहते हैं। जब वे मैदानी क्षेत्र में चले आये तो वे अपने देवताओं को पीछे छोड़ना नहीं चाहते थे, इसलिए उन्होंने मंदिरों के गुम्बद बनाये जिनमें उनके देवता रह सकें। असीरियों और कैल्डियनों ने इनकी नकल की और नये बेबीलोन के विशाल मंदिर गुम्बदों के आकार के बनाये गये।

बेबीलोन शहर के मकान मिट्टी की ईंटों के बने थे। उनके इर्द-गिर्द एक अहाता होता था जिसके बीच में एक कुआँ रहता था। छोटे-छोटे झाड़ वाले पेड़-पौधे घरेलू जीवन में आकर्षण पैदा करते थे। कमरों की दीवारें भित्तिचित्रों से सुशोभित रहती थीं। फर्शों पर चटाइयाँ या कालीन बिछे होते थे

और गद्दे, कुछ कुर्सियाँ तथा मेजें फर्नीचर के रूप में होती थीं। मिट्टी या कांसे के सुराहीदार बर्तन शराब पीने और पानी रखने या सिर्फ सजावट के लिए प्रयुक्त होते थे।

१. दक्षिण-पश्चिम एशिया की किन दो नदियों के बीच की घाटी में सभ्यता का प्रथम विकास हुआ?
   यह क्षेत्र नीलघाटी से किस रूप में मिलता जुलता है?
२. मेसोपोटामिया शब्द का क्या अर्थ है?
३. श्वेत मूलवंश की किन दो शाखाओं ने दो नदियों के बीच की घाटी (दोआब) को जीता?
४. सुमेरियों ने तुम्हारी सभ्यता को क्या-क्या चीजें दीं? उनमें से कुछ का विवरण दो।
५. सुमेरियाई, बेबीलोनियाई और असीरियाई इन नामों से क्यों पुकारे जाते हैं?
६. बेबीलोनियाइयों, असीरियाइयों और कैल्डियनों में से प्रत्येक के एक-एक प्रतापी राजा का नाम बताओ। प्रत्येक किस लिए प्रसिद्ध हुआ?
७. किन उपलब्धियों के लिए असीरियाई मशहूर हुए?
८. किन लोगों ने कैल्डियनों के साम्राज्य को विनष्ट किया?

छोटे से फिलस्तीन देश में दो धर्मों—यहूदी धर्म और ईसाई धर्म का जन्म हुआ।

बैटीमैन आर्काईव

एक कलाकार ने अपनी कल्पना से मूसा का चित्र बनाया है जो अपने हाथ में धर्मनियमों की पुस्तक लिये हुए है। वह प्रार्थना का उत्तरीय ओढ़े हुए है।

हिब्रुओं और फीनीशियनों का भूमध्यसागर के पूर्वी तट पर बसना

हिब्रू—मेसोपोटामिया में रहने वाले एक और प्राचीन सेमेटिक कबीले के लोग हिब्रू थे जो उस इलाके को छोड़ने को उत्सुक थे। उनकी बढ़ती हुई जन-संख्या और मवेशियों की तेज वृद्धि के कारण उन्हें उपयुक्त चरागाह मिलने की कठिनाई उत्पन्न हो गयी थी। क्रमशः हिब्रुओं के गिरोह पश्चिम की ओर निष्क्रमण करने लगे और अन्त में, लगभग २००० ई० पू० में, हिब्रुओं के कुलपिताओं में से एक, अब्राहम, अपने कबीले के लोगों को, उर नामक प्रमुख नगर के आसपास से, भूमध्यसागर के तटवर्ती कम आबादी वाले क्षेत्र में ले गया।

हिब्रुओं का यह नया घर फिलस्तीन नाम से पुकारा जाने लगा। यह मशहूर मेसोपोटामिया के दक्षिण-पश्चिमी छोर पर बसा था। इसकी उपजाऊ पट्टी १० से ३० मील तक चौड़ी थी। जमीन पहाड़ी थी, पश्चिम में यह ढालवाँ होते-होते तटवर्ती मैदान

तक और पूर्व में जोर्डन नदी की संकरी घाटियों और मृत सागर तक चली गयी थी। फिलस्तीन के उत्तर में फीनीशिया पड़ता है जो आजकल सीरिया कहलाता है। यहाँ लेबनान की पहाड़ियाँ थीं जिनसे हिब्रू इमारतें बनाने के लिए देवदारु के लट्ठों का आयात करते थे। फिलस्तीन और फीनीशिया ने मिलकर, सभ्यता के दो प्राचीन केन्द्रों—मिस्र और मेसोपोटामिया—के बीच, एक प्रकार के स्थलीय पुल का काम किया। यह भूमध्यसागरीय तटवर्ती क्षेत्र शनैः-शनैः सभ्यता के एक महत्त्वपूर्ण केन्द्र के रूप में विकसित हुआ।

हिब्रू अपने पड़ोसी लोगों से एक महत्त्वपूर्ण दृष्टि से भिन्न थे। शताब्दियों से वे यह विश्वास करते आये थे कि प्रकृति के देवता झूठे देवता हैं और वस्तुतः सिर्फ एक ही ईश्वर है जिसे वे "यावी" के नाम से पुकारते थे। उनकी एकेश्वरवाद के प्रति यह निष्ठा उनके सम्पूर्ण इतिहास में बनी रही और इस के कारण, वे अपने समय के अन्य लोगों से भिन्न थे।

लगभग १३०० ई० पू० में फिलस्तीन में एक बार सूखा पड़ा। हिब्रुओं में से एक ने, जो मिस्र सरकार में एक प्रभावशाली राज्याधिकारी हो गया था, अपने जातिभाइयों को मिस्र के उत्तर हिस्से में निष्क्रमण के लिए आमंत्रित किया और उनसे कहा कि उन्हें वहाँ पर्याप्त अनाज और अनुकूल जलवायु मिलेगी। लेकिन धीरे-धीरे मिस्र के फरूनों ने हिब्रुओं को दासत्व की स्थिति में ला दिया। पुराने टेस्टामेंट में, निष्क्रमण-पुस्तक में, मूसा नामक एक हिब्रू नेता का जिक्र आता है जो अपने लोगों को इस बंधन से मुक्त करने के लिए कृतसंकल्प था। अपने लोगों को स्वतंत्र कर फिलस्तीन के केनान क्षेत्र में ले जाकर उनके निर्देशन के लिए उसने मिस्री राज्य-परिवार में अपने सम्मानित ओहदे को छोड़ दिया।

अन्त में हिब्रू अपने सर्वप्रथम राजा साल के नेतृत्व में संयुक्त हुए, जिसने उनके राष्ट्र की आधारशिला रखी। डेविड नामक दूसरे प्रतापी शासक ने (१०००-९५५ ई० पू०) कनानियों से जेरुसलम जीत लिया और उसे अपनी राजधानी बनाया। तब उसने और भी हमले किये और अपने देश की सीमाओं का विस्तार किया। डेविड ने दक्षिण में लाल सागर की ओर निकास मार्ग प्राप्त किया और पश्चिमी कैनान में फिलस्तीनियों के अन्तिम प्रमुख शहरों को भी जीत लिया। यह जानते हुए कि शांतिपूर्ण कामों से देश समृद्धिशाली
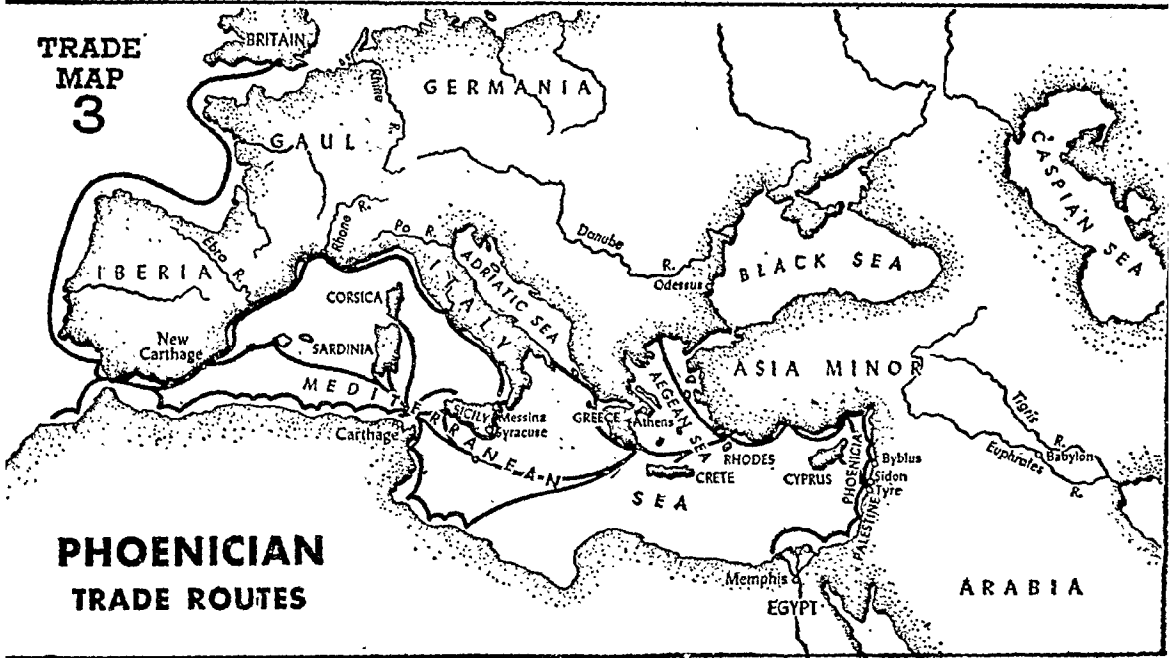
व्यापार नक्शा ३—फिनीशियन व्यापार-मार्ग
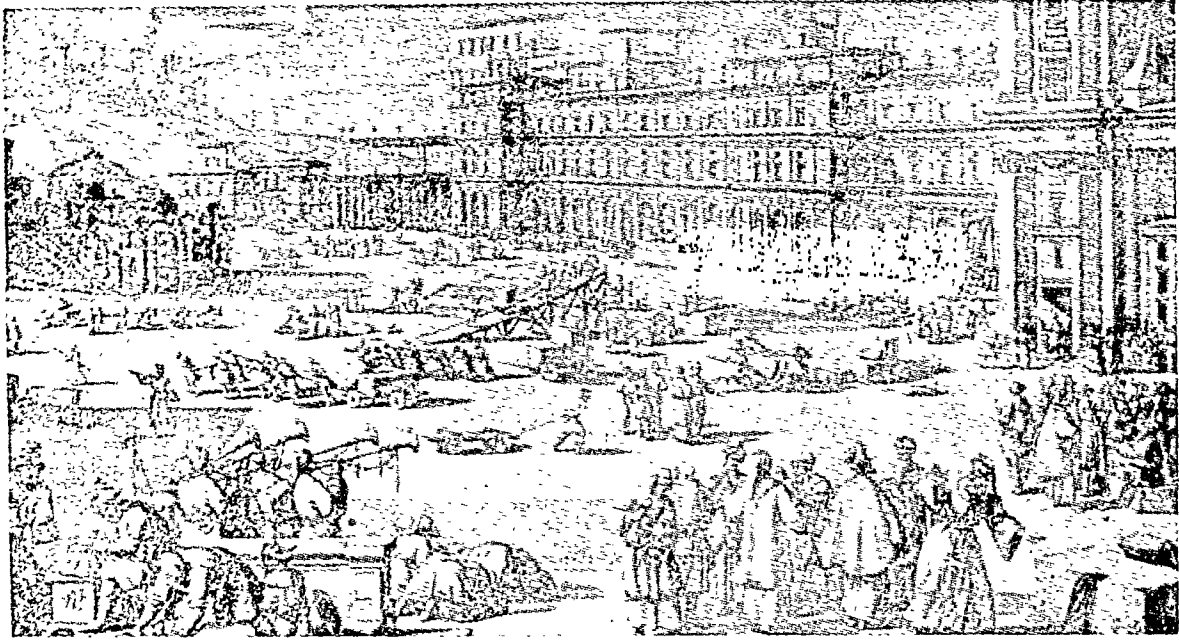
कलवर सर्विस

लगभग १६८ ईस्वीपूर्व में सीरियनों ने जेरुसलम को नष्ट कर दिया था। एक हिब्रू नेता जूडास मकाबियस के नेतृत्व में इस पर फिर अधिकार कर लिया गया। किसी कल्पनाप्रवण कलाकार ने दिखाया है कि हिब्रू लोग मन्दिर की वेदी का निर्माण कर रहे हैं।

बनता है, डेविड ने पड़ोसी क्षेत्रों से व्यापार को प्रोत्साहन दिया।

डेविड का पुत्र सोलोमन उसके बाद गद्दी पर बैठा। इस समय तक हिब्रू बादशाहत सुदृढ़ और समृद्ध हो चली थी। नये शासक ने साल और डेविड की सादगी को छोड़ दिया। महत्त्वाकांक्षी सोलोमन ने अपने लिए एक आलीशान महल और एक बड़ा मंदिर बनवाया। इनमें और अन्य भवन-निर्माण योजनाओं में बहुत-सा धन व्यय हुआ जिसके लिए सोलोमन ने अपनी प्रजा पर भारी कर लगाये और इस कारण उसने प्रजा की सहानुभूति खो दी। जब तक सोलोमन जीवित था, वह अपनी प्रजा को एक साथ मिलाये रखने में समर्थ रहा लेकिन उसकी मृत्यु के बाद ही उसके राज्य का उत्तरी हिस्सा, इसराइल, बगावत कर अलग हो गया और उसमें एक नया राज्य स्थापित हो गया। दक्षिणी राज्य जूडा कहलाया। सोलोमन अपने पीछे हिब्रुओं के लिए एक महत्त्वपूर्ण वस्तु छोड़ गया। वह विशाल देवालय, जो उसने जेरुसलम में बनवाया था, उनके धर्म और उनकी एकता का प्रतीक बना रहा।

हिब्रुओं के इसराइल और जूडा, दो राज्यों में बंट जाने से उनकी प्रतिरक्षा कठिन हो गयी। जब वे युद्ध में उलझे तब और भी कमज़ोर पड़ गये। असीरियों के लिए, उत्तर में, इसराइल को जीत लेना सहज हो गया और कुछ वर्षो बाद (५८६ ई० पू०) नेबुकेडनज़र ने शेष फिलस्तीन को जीत कर अधिकांश हिब्रुओं को निर्वासित कर दिया।

हिब्रू (यहूदी) उस पैमाने पर समुद्री व्यापार नहीं करते थे जिस पैमाने पर उनके पड़ोसी फीनीशियन; न वे उतने बड़े निर्माता ही बने। फिर भी, उन्होंने संसार को एकेश्वरवाद का सिद्धान्त प्रदान किया।

हिब्रुओं का हमारी सभ्यता को दूसरा योगदान साहित्यिक और ऐतिहासिक कार्यो का एक क्रमबद्ध

संचयन है, जो बाद में लिखित सामग्री मिलकर एक पुस्तक के रूप में, जिसे "बाइबिल" कहते हैं, सामने आया। यह वास्तव में अनेक लोगों द्वारा लिखी गई पुस्तकों की एक लाइब्रेरी है। पुराने टेस्टामेंट की ३९ पुस्तकें हमारी बाइबिल के वे अंश हैं, जो हिब्रुओं ने संसार को दिये। साहित्य के अलावा, इन पुस्तकों में हमें हिब्रू लोगों का इतिहास मिलता है और ये हिब्रू तथा ईसाई धर्मों के लोगों के लिए प्रेरणा और मार्ग-दर्शन के स्रोत हैं।

हिब्रुओं का विश्वास था कि ईश्वर ने समस्त संसार के लिए एक सर्वव्यापी नैतिक नियम बनाया है। सही और गलत के कुछ नियम हैं और ईश्वर उम्मीद करता है कि उनका हर व्यक्ति पालन करेगा। उनकी मान्यता थी कि ईश्वर पैगम्बरों के माध्यम से उनसे बातचीत करता है। ये पैगम्बर लोगों को चेतावनी देते हैं कि वे बुरे रास्ते पर चलना छोड़ें और ईश्वरेच्छा को मानें। हिब्रुओं के इन विचारों का लोगों के, व्यक्तिगत और सामुदायिक रूप में, नैतिक स्तर को उठाने की दिशा में बड़ा व्यापक प्रभाव पड़ा और वे आज भी संसार को प्रभावित करते चले आ रहे हैं।

फीनीशियन—फिलस्तीन के ठीक उत्तर में ज़मीन की एक लम्बी पट्टी समुद्रतट के किनारे-किनारे चली गयी है जिसके पीछे लेबनान पर्वतमाला है। यहीं फीनीशियनों के टाइर और साइडन नगर विकसित हुए। चूँकि वहां की ज़मीन चट्टानी थी और पर्वतों के कारण स्थल पर आसानी से विस्तार नहीं हो पाता था, इसलिए फीनीशियन समुद्र की ओर झुके और उन्होंने व्यापार को जीवन-निर्वाह का साधन बनाया। जहाज बनाने के लिए लेबनान की पहाड़ियों से उन्हें देवदारु की लकड़ी इफ़रात से मिल जाती थी।

ई० पू० १००० के बाद कई शताब्दियों तक साहसिक फीनीशियन मल्लाह सिर्फ लाल सागर में ही नहीं, अपितु भूमध्यसागर के सुदूर पश्चिमी हिस्सों और उससे भी दूर अतलांतक में निकल कर उसके किनारे-किनारे उत्तर में इंगलैण्ड तक पहुँचे। उनके काफ़िले स्थल मार्ग से भी दजला-फरात घाटी के लोगों से व्यापार करते थे। उन्होंने भूमध्यसागर में बस्तियाँ स्थापित कर ली थीं जिनमें सबसे बड़ी बस्ती उनकी अफ्रीका स्थित बस्ती कार्थेज थी।

Phoenician	Greek	Roman	English
𐤀	A	A	A
𐤁	B	B	B
Y	F	F	F
𐤍	N	N	N
W	Σ	S	S
X	T	T	T

पहली पश्चिमी वर्णमाला में २२ चिह्न या वर्ण थे जो सबके सब व्यंजन थे। यूनानियों ने इनमें स्वर जोड़े।

फीनीशियनों द्वारा निर्मित मिट्टी के बर्तन, कांच का सामान, कढ़े हुए सुन्दर रंगीन वस्त्र और गुलाबी रंग उनके जहाज और काफिले सुदूर क्षेत्रों तक ले जाते थे। उनके बनाये रंग की राजाओं में इतनी अधिक माँग थी कि इसका नाम ही रौयल-पर्पल (शाही गुलाबी) पड़ गया, यद्यपि यह 'टाइरिन गुलाबी' भी कहलाता था क्योंकि टाइर का शहर ही इसके निर्माण का मुख्य केन्द्र था।

लौटते हुए फीनीशियन व्यापारी ब्रिटेन से कलई, स्पेन से चांदी, उत्तरी अफ्रीका से हाथी दाँत, आबनूस, शुतुरमुर्ग के पर, चमड़ा और सोना, अरेबिया से मसाले और तलवारें तथा आर्मीनिया से घोड़े लाते थे।

फीनीशियाई व्यापारियों ने माल की आमद-रफ्त के अलावा भी बहुत कुछ किया। उनके व्यापार के तौर-तरीके पश्चिमी भूमध्यसागरीय जगत् में व्यवहृत किये गये। उन्होंने पुरानी लेखन-पद्धति में सुधार किया और संकेत-चिह्नों की संख्या घटा कर बाईस कर दी। इस प्रकार उन्होंने आधुनिक (रोमन) लिपिमाला की नींव डाली। उनकी इस नयी लेखन-पद्धति को ग्रीकों ने भी अपनाया जो पहले-पहल विचित्र छोटे-छोटे चिह्नों के अर्थ से घबराते थे। पर अन्त में, ग्रीकों ने उन्हें ग्रहण किया और नयी सुबोध लिपिमाला को यूरोप में प्रचारित किया। फीनीशियाई जहाँ कहीं

भी व्यापार के लिये गए, अपने बढ़िया माल के साथ-साथ लिपिमाला भी लेते गये। इस प्रकार वे जिन लोगों के सम्पर्क में आये, उन पर उन्होंने सभ्यता का प्रसार करने वाला प्रभाव डाला। इसी कारण फीनीशियाई लोगों को सभ्यता का प्रचारक कहा गया है।

१. हिब्रू लोगों ने मेसोपोटामिया क्यों छोड़ा?
२. फ़िलस्तीन नक्शे में दिखाओ और मिस्र तथा मेसोपोटामिया भी बताओ।
३. पुराने टेस्टामेंट की निष्क्रमण की पुस्तक (बुक आफ एक्सोडस) में हिब्रुओं के किस महत्त्वपूर्ण अनुभव का ज़िक्र है?
४. हिब्रू राष्ट्र के तीन प्रारंभिक राजाओं के नाम बताओ और यह भी बताओ कि उनमें से प्रत्येक क्यों महत्त्वपूर्ण है।
५. हिब्रुओं द्वारा संसार को दिये गये तीन महत्त्वपूर्ण विचारों का ज़िक्र करो।
६. यहूदी राष्ट्र का नाम आजकल क्या है?
७. पैगम्बरों का क्या कर्त्तव्य था?
८. फीनीशियनों का मुख्य धंधा क्या था?
९. फीनीशियनों के किन सांस्कृतिक योगदानों का आज हम उपयोग करते हैं?

पूर्वी भूमध्य-सागर

मिस्र और मेसोपोटामिया का जगत् पर प्रभाव

क्रीटवासी—साथ दिये गये पूर्वी भूमध्य सागर के नक्शे में तुम देखोगे कि ऐजिअन सागर क्रीट नामक एक लम्बे और छोटे से द्वीप से भूमध्यसागर से अलग हो गया है। ऐजिअन सागर में कई छोटे-छोटे द्वीप हैं जो एशिया माइनर से ग्रीस जाने वाले व्यापारियों के लिए पड़ावों का काम करते थे। तब, यह स्वाभाविक था कि ऐजिअन सागर के इर्द-गिर्द सभ्यता के प्राचीन केन्द्र विकसित हुए।

क्रीट और उसके आसपास के द्वीपों में रहने वाले लोग संभवतः लगभग ८००० ई० पू० वहाँ स्थानान्तरित हुए थे। उस समय वे लोग सांस्कृतिक प्रगति के नव-पाषाण युग तक पहुँच चुके थे। बाद में वे मिस्र से व्यापार करने लगे। वे मिस्रियों के हाथों शराबें, तेल और गुलाबी रंग बेचते थे। मिस्रियों के साथ उनके सम्पर्क ने उनकी संस्कृति पर गहरा प्रभाव डाला। क्रीटवासी इतने कुशल मल्लाह हो गये थे कि उनका उल्लेख "क्रीट के समुद्री राजा" के रूप में किया जाता था।

क्रीट के नगरों के ध्वंसावशेषों से, विशेषकर नोसस के महलों से, पुरातत्ववेत्ताओं ने खोज की है कि क्रीट की सभ्यता २००० और १४०० ई० पू० के बीच फली-फूली। लेकिन उस समय जब कि सम्राट् मेनीज़ मिस्र में शासन कर रहा था, क्रीट निवासियों ने कांसे का प्रयोग शुरू कर दिया था। वे इस धातु का सामान तैयार करने वाले कुशल कारीगर बन गये थे और बढ़िया तलवारें तथा छुरे बनाते थे। वस्तुतः कुछ विद्वानों का मत है कि कांसे का प्रयोग सबसे पहले क्रीटवासियों ने किया था। उनकी मिट्टी की नाजुक सुराहियाँ, जिन पर सुन्दर रंगों से नक्काशी की रहती थी, पूर्वी भूमध्य सागरीय जगत् में प्रसिद्ध थीं। क्रीटवासियों में कलात्मक मौलिकता थी और वे मिस्रियों से अधिक चमकीले रंगों का प्रयोग करते और अधिक सुघड़ रेखाएँ खींचते थे।

यूनान प्रायद्वीप की मुख्यभूमि में क्रीट के व्यापारियों ने कोठियाँ या व्यापार-केन्द्र स्थापित किये थे। इनमें से दो केन्द्र माइसेनी और टाइरेंज नामक नगरों में विकसित हुए। आज इन शहरों के
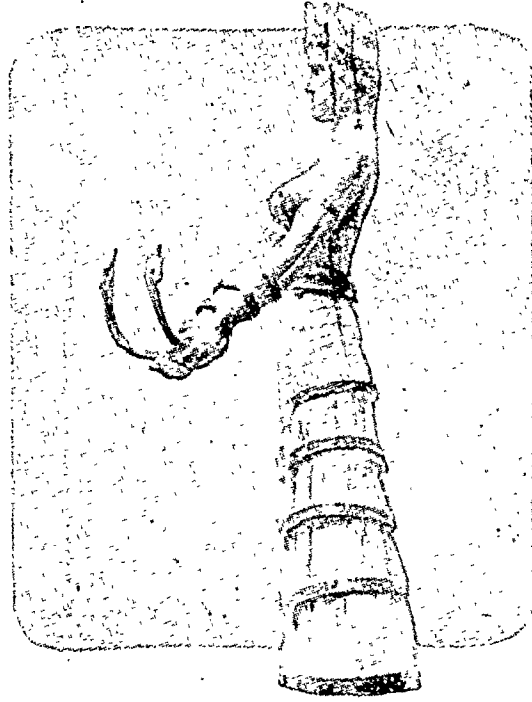
बोस्टन म्यूजियम आफ फाइन आर्ट्स

तीन हजार वर्ष पहले क्रीट के प्रतिभाशाली कलाकार ऐसी सुन्दर आकृतियां बना रहे थे। यह उनकी नाग-रानी की आकृति है।

सिर्फ ध्वंसावशेष हैं लेकिन ये अवशेष गवाही देते हैं कि कभी यहाँ आलीशान इमारतें थीं जिनमें ऐसी "आधुनिक" सुविधाएँ, जैसे, तांबे की नालियाँ और स्नानागार, खूबसूरत सीढ़ियाँ और कलात्मक ढंग से चित्रित दीवारें मौजूद थीं।

क्रीट के द्वीप में होने से उसके नगर सुरक्षित थे लेकिन माइसेनी तथा टाइरेंज यूनान की मुख्य-भूमि पर होने के कारण (नक्शा देखो) यह आवश्यक था कि उन्हें किले की किस्म की दीवारों से घेरा जाय। क्रीट के नगरों की ही तरह इन दोनों शहरों का अस्तित्व भी फलते-फूलते व्यापार पर निर्भर था। उनके जहाज पूर्वी भूमध्यसागर के तट से लगे सभी देशों में जाते थे और वे उत्तरी यूरोप तथा दूरस्थ चीन देश तक से सामान आयात करते थे।

ईसा की १४वीं शताब्दी में जिअन क्षेत्र में यूनान प्रायद्वीप से हमला करने वाले कबीलों ने क्रीट की आर्थिक सर्वोच्चता नष्ट करके क्रीट को रौंद डाला। क्रीट वासियों को अपने द्वीप में होने की स्थिति पर ज़रूरत से ज्यादा भरोसा था और इस तरह के व्यापक हमलों से बचाव के पर्याप्त साधन उनके पास नहीं थे।

ट्रोजन—ऐजिअन समुद्र की परली ओर एशिया माइनर में ट्राय नामक शहर था। शताब्दियों के बीच इसी एक स्थान पर कई शहर बसे और मिटे। सुप्रसिद्ध जर्मन पुरातत्ववेत्ता हेनरिक श्लीमान द्वारा सन् १८७० के बाद के वर्षों में की गयी खुदाई में पता चला कि एक ही स्थान पर नौ नगर बसे और मिटे। एक नगर, जिसमें संसार सबसे ज्यादा दिलचस्पी रखता है, सातवाँ नगर है। यह ईसा से १६०० वर्ष पूर्व यहाँ बसा था और यहाँ विकसित हुई सभ्यता के बारे में बहुत कम ज्ञात है लेकिन सोने के जेवर, महत्त्व के कीमती सामान के अवशेष और जो चीजें श्लीमान ने खोद निकालीं, उनसे जाहिर होता है कि ट्रोजनों के पास अपार दौलत के साधन थे। चूंकि ट्राय में कोई अच्छा बन्दरगाह नहीं था और चूंकि शहर के आसपास का मैदान भी उपजाऊ नहीं था, इसलिए वे निश्चित ही हेलेस्पाण्ट से गुजरने वाले जहाजों से कर वसूल करके आजीविका कमाते होंगे—हेलेस्पाण्ट ऐजियन सागर को मारमोरा सागर और काला सागर से जोड़ता है। इससे ग्रीक व्यापारियों को बहुत बुरा लगता होगा और अन्त में ग्रीस ने ट्राय पर हमला कर दिया। ग्रीस के सुप्रसिद्ध महाकवि होमर ने ट्राय के वीरतापूर्ण घेरे का वर्णन अपने महाकाव्य "इलियड" में किया है।
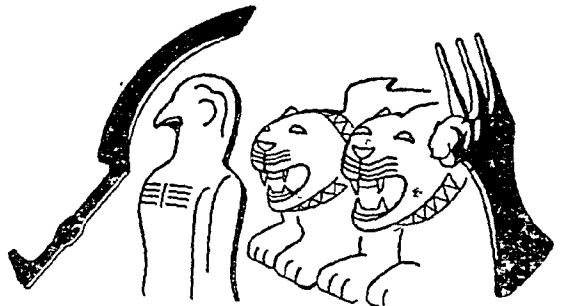
हिट्टी लोगों ने लौह युग का सूत्रपात किया। आज भी हम इसी युग में रह रहे हैं।

लोहे का सर्वप्रथम प्रयोग करने वाले एशिया माइनर के हिट्टी

लगभग २५०० ई० पू०, वर्वर भारत-यूरोपियनों का एक दल एशिया माइनर में घुसा। उन्होंने वहाँ के कवीलों को विजित किया, जिनसे उन्होंने वहुत से कौशल सीखे, और प्रथम हिट्टी साम्राज्य का विकास किया जो लगभग २००० ई० पू० में अपने उत्कर्ष पर था। यह प्रथम साम्राज्य ज्यादा दिन नहीं रहा और लगभग १५०० ई० पू० में दूसरा हिट्टी साम्राज्य स्थापित हुआ। कई छोटे-छोटे राज्यों को एक सशक्त और योग्य सेना द्वारा एक में मिला कर यह साम्राज्य वनाया गया। लम्वे अर्से तक यह इतना शक्तिशाली वना रहा कि मिस्रियों के लिए एक गंभीर खतरा था। मिस्र के राम्सेस द्वितीय ने हिट्टी के राजा की एक लड़की से इसलिए शादी की कि दोनों साम्राज्यों के वीच सम्वन्ध जुड़ जाय और हिट्टी मिस्र पर हमला न कर सकें।

हिट्टियों की लिखने की शैलियों से पता चलता है कि मेसोपोटामिया की क्यूनीफार्म या कीलाक्षर शैली और मिस्र की हाइरोग्लीफिक शैली दोनों का ही इस पर प्रभाव था। उनकी कानून प्रणाली बुद्धिमत्तापूर्ण थी। पत्थर का काम करने में वे प्रवीण थे।

हिट्टी व्यापारी और किसान दोनों ही थे, लेकिन उनका संसार को मुख्य योगदान लोहे के व्यावहारिक प्रयोग की उनकी जानकारी थी। उत्तरी एशिया माइनर में लोहे की खानें थीं। हिट्टियों ने उन्हें खोद कर निकाला और अन्य लोगों को भी सिखलाया कि इस महत्वपूर्ण धातु का प्रयोग कैसे किया जाय। इस प्रकार उन्होंने संसार को लौह युग से परिचित कराया जिसमें हम अव भी रह रहे हैं।

लगभग १२०० ई० पू० में यूरोप से लड़ाकू कवीले एशिया माइनर में आये और उन्होंने हिट्टियों को पराजित कर दिया। एक स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में उनका इतिहास, वहीं समाप्त हो गया।

१. क्रीट द्वीप नक्शे में दिखाओ।
२. किस रूप में क्रीटवासियों ने अपनी संस्कृति वाहर वालों की नकल पर वनाई और किस रूप में वे मौलिक थे?
३. क्रीट के प्रमुख नगर का नाम वताओ।
४. क्रीट वासियों की सभ्यता का अंत क्यों हुआ?
५. ट्राय का नगर कहाँ वसा हुआ था?
६. ट्राय के समृद्धिशाली होने के क्या कारण थे?
७. "इलियड" का लेखक कौन था? उसमें किस वात का वर्णन है?
८. प्रथम हिट्टी साम्राज्य काल में मिस्र की क्या स्थिति थी? द्वितीय हिट्टी साम्राज्य काल के आरंभ में मिस्र का शासक कौन था?
९. मिस्र के राम्सेस के किस कार्य से हिट्टियों की शक्ति का पता लगता है?
१०. हिट्टियों की आधुनिक विश्व को क्या देन है?

ईरान का 'प्राचीन पूर्वी देशों' में प्रभुत्व

कभी-कभी इतिहास में कोई वड़ा राष्ट्र या साम्राज्य ऐसा भी होता है जिसका मानव प्रगति में प्रमुख योगदान उसमें कुछ नयी चीजें जोड़ने के वजाय तत्कालीन संस्कृतियों का समन्वय और प्रसार करने के रूप में होता है। ईरान ऐसा ही राष्ट्र था।

ईरानी कैस्पियन सागर और काला सागर के आस-पास के घास-मैदानों से आये थे। जव वे दक्षिण की ओर स्थानान्तरित हुए तव फारस की खाड़ी के उत्तरी पठार पर वस गये। इसे वे ईरान कहने लगे। यह प्राचीन देश आज हमारे लिए वहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि यहाँ खनिज तेल का अटूट भण्डार है। लेकिन प्राचीन ईरानी इस सम्वन्ध में कुछ भी नहीं जानते थे।

ईरानी शिक्षा का उद्देश्य यह था कि 'नवयुवक घुड़सवारी करें, तीर चला सकें और सत्य वोलें।'
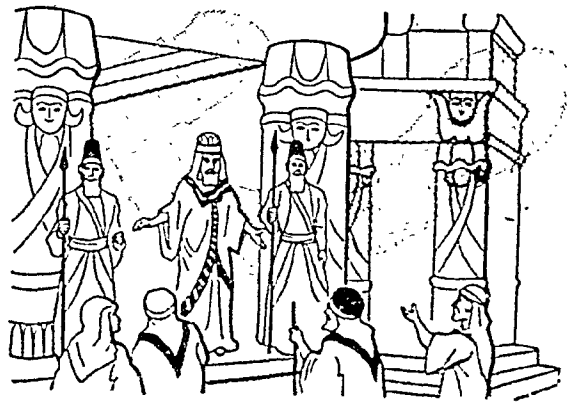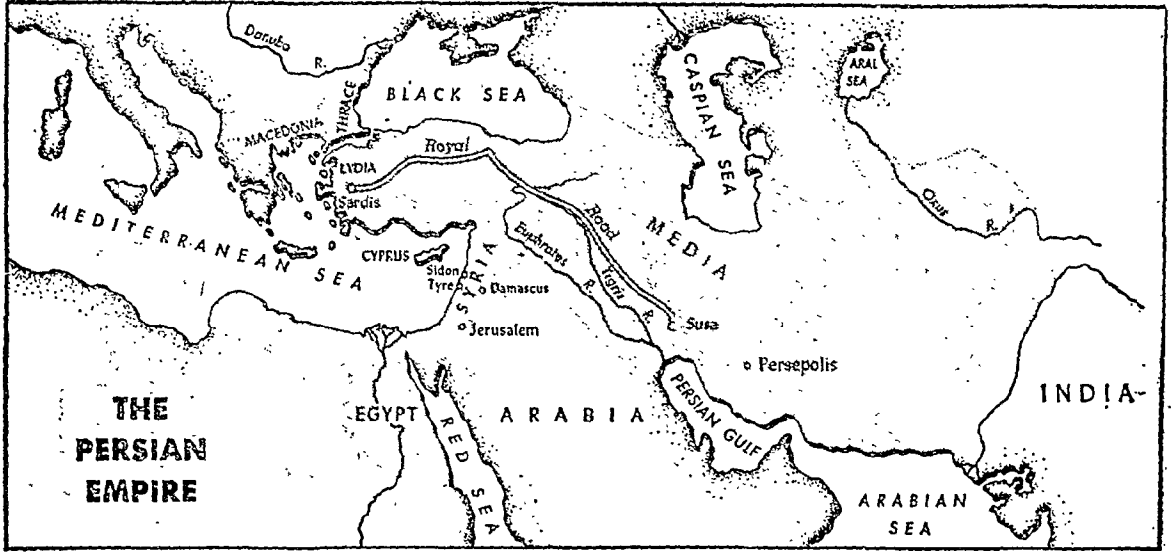
डेरियस का फारस-साम्राज्य उस समय तक का सबसे बड़ा साम्राज्य था। पर फारस ग्रीस को कभी जीत न सका यद्यपि उसने डेरियस की मृत्यु के कुछ वर्ष बाद कोशिश की।

साइरस—लगभग ५५० ई० पू० में ईरानियों का एक महान् नेता साइरस (कुरुष्) हुआ। उसकी पहली सफलता अपने मातहत सभी कबीलों को एक सूत्र में बाँधना थी। ५३८ ई० पू० में उसने ईरान का नाम बदल कर फारस रखा। जब साइरस ने एक पड़ोसी राज्य मीडिया पर अधिकार कर लिया तब उसके अन्य पड़ोसी उसकी शक्ति से डरने लगे। उत्तर-पश्चिम की ओर लीडिया नामक राज्य ने, जो पुराने हिट्टी साम्राज्य के अवशेषों पर उठा था, साइरस के विरुद्ध एक संयुक्त मोर्चा बनाने की कोशिश की। मिस्र और कैल्डिया ने उसका साथ देने से इन्कार कर दिया। इसलिए तीनों ही देश खत्म हो गये।

पहले लीडिया का पतन हुआ। वह अपनी दौलत के लिए प्रसिद्ध था और उसका राजा क्रीसस संसार का सबसे धनी व्यक्ति माना जाता था। विश्वास किया जाता है कि लीडिया वालों ने ही सिक्के के रूप में मुद्रा का आविष्कार किया ताकि वस्तुओं का आदान-प्रदान वस्तुविनिमय प्रणाली की अपेक्षा अधिक सुगमता से हो सके। ईरानियों ने यह मुद्रा प्रणाली अपने सारे साम्राज्य में प्रचलित कर दी थी।

लीडिया की विजय के बाद साइरस ने कैल्डिया को परास्त किया। साइरस अपने शत्रुओं पर एक-एक कर हमला कर उन्हें परास्त करने में सफल हुआ।

उसके लड़के और उत्तराधिकारी कम्बीसस द्वारा ५२५ ई० पू० में मिस्र को अपने साम्राज्य में मिलाये जाने के उपरान्त ईरान का प्रभुत्व सिन्धु नदी के पश्चिम की ओर के तमाम क्षेत्र से मिस्र होते हुए यूरोप में थ्रेस प्रायद्वीप तक हो गया था। 'तमाम प्राचीन पूर्वी देश' अब एक व्यक्ति के शासन में था।

साइरस जैसा पराक्रमी विजेता था, वैसा ही उदार भी था। उसने विजित राष्ट्रों के साथ इस प्रकार का उदारतापूर्ण व्यवहार किया जैसा उससे पूर्व किसी भी विजेता ने नहीं किया था। इसी कारण से वह प्राचीन युग के महान् नेताओं में से एक गिना जाता है। यहूदी उसके प्रशंसक थे क्योंकि उसने उन्हें मुक्त कर जेरुसलम लौटने तथा अपने नगर और प्रिय देवालय को फिर से बनाने की अनुमति दे दी थी।

प्रतापी दारा—साइरस के काम को पूरा करने का दायित्व बाद के शासक पर था और वह प्रतापी
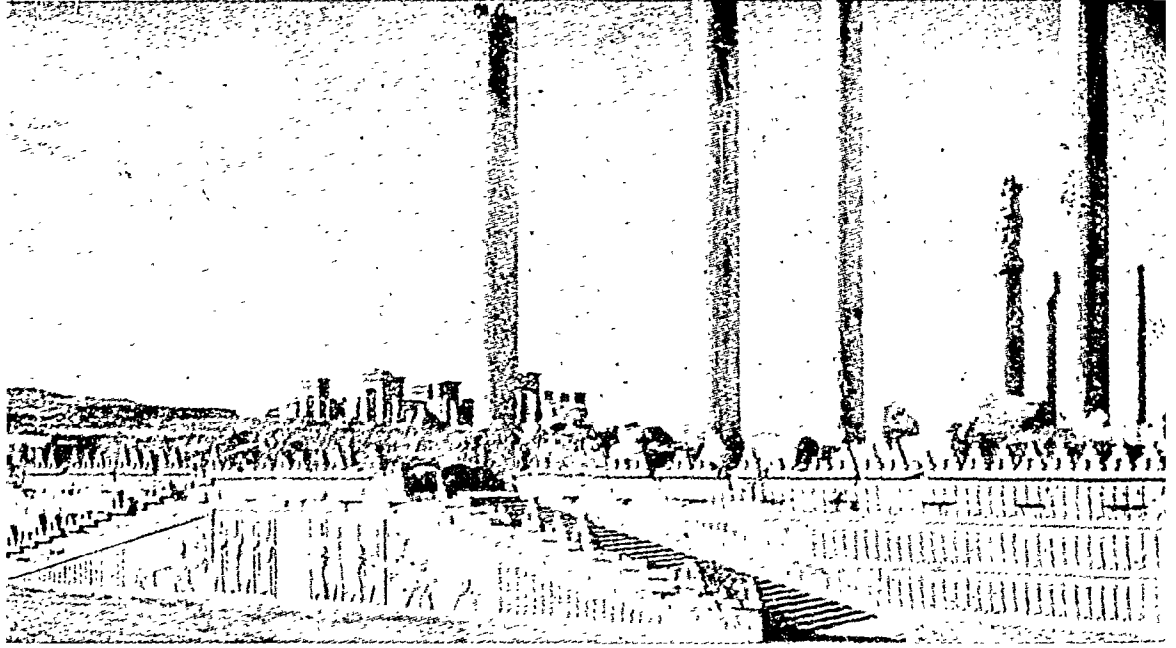
आरियंटल इन्स्टीट्यूट, शिकागो विश्वविद्यालय

जब पुरातत्त्ववेत्ताओं ने फारस की राजधानी पर्सिपोलिस की खुदाई की, तब महल के इस शाही दरबार हाल की ओर जाने के लिए काट कर बनाई गई सीढ़ियों की सुन्दरता संसार के सामने आई। पत्थर पर की गई नक़्क़ाशी ध्यान से देखने योग्य है।

दारा ने पूरा किया (५२१-४८५ ई० पू०)। इस प्रतापी राजा के सामने प्रमुख समस्या यह थी कि अपने साम्राज्य के सब हिस्सों को निष्ठावान् रखा जाय। एक व्यक्ति की हुकूमत के लिए वह बहुत बड़ा था। पर दारा एक अच्छा संगठक था और वह एक दक्ष सरकार स्थापित करने में सफल रहा। उसने मिस्र तथा मेसोपोटामिया को छोड़ कर, जिसका शासन-प्रबन्ध वह स्वयं देखता था, अपने समूचे साम्राज्य को बीस प्रान्तों में बांट दिया था। प्रत्येक प्रान्त में एक गवर्नर होता था। चूंकि दारा को अपने गवर्नरों की राजभक्ति पर पूर्ण विश्वास नहीं हो सकता था, इसलिए उसने अपनी राजधानी सूसा से उन पर निगाह रखने के लिए आदमी भेजे हुए थे कि अगर वे उन्हें किसी प्रकार की गद्दारी का कार्य करते हुए देखें तो उसकी रिपोर्ट उसे भेजें। ऐसे लोग "सम्राट् की आंखें और सम्राट् के कान" कहे जाते थे।

यद्यपि साइरस के शाही प्रशासन ने साम्राज्य को एक शक्तिशाली यूनियन में बांध दिया था, तो भी इसमें प्रान्तों को भाषा, धर्म और व्यापार की बहुत काफी स्वतन्त्रता प्रदान की गयी थी।

दारा ने जो अन्य बहुत से कदम उठाये, उनसे उसकी बुद्धिमत्ता और राज्यमर्मज्ञता परिलक्षित होती है। उसने एक नौसेना का निर्माण किया और उसमें प्रवीण फीनीशियन मल्लाह भरती किये। उसने पुरानी मिस्री नहर को फिर से खुदवाया ताकि उसका जहाजी बेड़ा भूमध्य सागर से लाल सागर में उतर सके और इस प्रकार लम्बे तट की रक्षा अधिक सुगमता से की जा सके। उसने डाक-सड़कें बनवाई और डाक-व्यवस्था कायम की ताकि सेनाएँ और संदेशवाहक एक स्थान से दूसरे स्थान को जल्दी-जल्दी प्रयाण कर सकें। एक राजकीय सड़क राजधानी सूसा को एशिया माइनर के सार्डिस स्थान से जोड़ती थी। घुड़सवार, समय-समय पर घोड़े बदलते हुए १६०० मील की यात्रा आठ दिनों में तय कर सकते थे। इन उपायों से दारा उस समय तक जगत् के सबसे बड़े साम्राज्य का संचालन योग्यता से कर सका।

जरथुष्ट्रवाद—ईरानियों का धार्मिक शिक्षक जरथुष्ट्र था। उसकी शिक्षा यह थी कि शुभ कर्मों का एक देवता है और पाप कर्मों का भी एक देवता है। शुभ आत्मा, अपने सहायकों या देवदूतों के साथ पूर्व में रहती है, जहाँ अरुणोदय होता है और पापात्मा पश्चिम में रहती है, जहाँ सूर्य अस्त होता प्रतीत होता है। अहुर-मजदा का, जो सभी अच्छाइयों और प्रकाश का स्रोत है, बुराइयों और अंधकार के नेता से निरंतर संघर्ष चलता रहता है। जरथुष्ट्र के अनुयायियों से उनके शुभ कर्मों द्वारा उच्च आदर्शों वाले व्यवहार की आशा की जाती थी। इस प्रकार जरथुष्ट्रवाद उन अनेक धर्मों से अच्छा था जिन्हें तब तक दुनिया जान पायी थी। साइरस और दारा ने इस धर्म को साम्राज्य भर में फैलाया।

ईरान का भी शक्तिशाली राष्ट्र के समक्ष पतन

यद्यपि आम तौर पर दारा अपने साम्राज्य से संतुष्ट था और उसके प्रसार के बजाय उसे शक्तिशाली बनाना पसंद करता था लेकिन वह अपने एशिया माइनर की सीमा पर बसे हुए ग्रीक शहरों पर आक्रमण के लोभ को नहीं रोक सका। ग्रीक संख्या में अधिक नहीं थे लेकिन वे साहसी और अपने शहरों के प्रति वफादार थे। दारा उनसे पराजित हुआ और उसका उत्तराधिकारी जुर्कसीज़ भी। इससे ईरानी इतने कमज़ोर पड़ गये कि वे अपनी खोई हुई शक्ति पुनः प्राप्त नहीं कर सके। अन्त में, दूसरा विश्व-विजेता सिकन्दर महान्, ईसा से पूर्व चौथी शताब्दी में समूचे साम्राज्य को जीतने में सफल हुआ।

पूर्वदेशीय साम्राज्यों में से सब से बड़े का पतन हो चुका था। सुमेरियन, बेबीलोनियन, असीरियन, और कैल्डियन क्रमशः मेसोपोटामिया को केन्द्र बनाकर साम्राज्य खड़े कर चुके थे। इस के पश्चिमी छोर पर हिब्रू और फीनीशियाई सभ्यताएँ अपना वैभव दिखला चुकी थीं। क्रीट, ट्रोजन और हिट्टी ऐजियन सागर के इर्द-गिर्द राज कर चुके थे। ईरानी उन सब की संस्कृतियों के उत्तराधिकारी थे और अब उनके साम्राज्य का भी पतन हो गया था।

भूमध्य सागर के पूर्वी छोर पर रहने वाले लोग आगे और अधिक उज्ज्वल भविष्य की ओर देखने के बजाय पीछे शानदार अतीत की ओर देखते थे। संस्कृति और प्रगति के लिए संसार पश्चिम की ओर, यूरोप की तरफ, देखने लगा था। ग्रीक लोगों ने मिस्र और एशिया की विद्या सीखकर दक्षिण-पूर्वी यूरोप में जीवन-निर्वाह के सभ्य तरीकों को प्रतिष्ठापित किया था।

१. ईरानी साम्राज्य की प्रमुख विशेषता क्या थी?
२. ईरानी साम्राज्य के तीन शासकों के नाम बताओ और यह भी बताओ कि उनमें से प्रत्येक क्यों प्रसिद्ध हुआ।
३. ईरान और लीडिया नक्शे में दिखाओ।
४. सभ्यता के विकास की दिशा में लीडिया वालों ने कौन से अति महत्त्वपूर्ण आविष्कार किये?
५. ईरान नाम से क्या ज़ाहिर होता है?
६. जरथुष्ट्र कौन था?
७. कौन लोग ईरानी साम्राज्य के पतन के लिए उत्तरदायी थे? वे कौन दो ईरानी सम्राट् थे जो उनसे पराजित हुए?

विचार-विमर्श के लिए प्रश्न

(१) सभी प्राचीन देशों में, जैसा कि आज अमेरिका में है, परिवार का एक प्रमुख स्थान था। एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को रीति-रिवाजों की जानकारी और ज्ञान प्रदान करने में परिवार का क्या महत्त्व था? क्या आज भी परिवार का यह एक महत्त्वपूर्ण कार्य है?

(२) जिन लोगों ने मेसोपोटामिया को जीता उन्होंने उसे मुख्यतः इस कारण जीता कि यह देश उस देश से अच्छा था जिसमें वे तब तक रह रहे थे। क्या अब भी विश्व में बेहतरीन भूमि प्राप्त करने के लिए संघर्ष होता है? क्या आधुनिक राष्ट्र जिस क्षेत्र को जीतने की कोशिश करते हैं उसमें उपजाऊ भूमि देखते हैं या अन्य साधनों को ज्यादा महत्त्वपूर्ण माना जाता है?

(३) रेगिस्तानों में रहने वाले खानाबदोश लोग आम तौर पर आसमान के अध्ययन में बहुत दिलचस्पी क्यों लेते हैं?

(४) मानवता को असीरियनों की अपेक्षा हिब्रू लोगों का योगदान क्यों अधिक महत्त्वपूर्ण माना जाता है ?

(५) लीडिया वालों द्वारा सिक्के का चलन किये जाने से पूर्व सिक्का नहीं था और व्यापार आम तौर पर चीजों के आदान-प्रदान या वस्तुविनिमय प्रणाली से चलता था। इस प्रणाली से व्यापार में क्या असुविधाएँ हैं ? क्या यह प्रणाली आज भी राष्ट्रों के बीच व्यापार में चलती है ?

(६) हाल में ईरान के नाम में क्या परिवर्तन हुआ ? क्या तुम सुझा सकते हो कि ईरानियों ने ऐसा परिवर्तन क्यों चाहा ?

फारस के साम्राज्य की एकता का महत्त्वपूर्ण आधार वहां की सड़कें थीं जिनपर घुड़सवार सन्देश पहुंचाने के लिए दौड़ते चले जाते थे।

इतिहास के उपकरणों का प्रयोग

एक. नाम, तिथियाँ और स्थान

(क) क्या तुम इन पारिभाषिक शब्दों का मतलब बता सकते हो ?

"जैसे को तैसा, खून का बदला खून।" जल-प्रणाली, पुरातत्त्वज्ञ, ज्योतिषशास्त्र, खगोल विद्या, भीत गिराने वाला यंत्र, मिट्टी की पट्टिकाएँ, कानूनों की संहिता, कीलाक्षर, भारत-यूरोपीय, "राजा की आँखें और कान," "सभ्यता के प्रचारक", एकेश्वरवाद, पुराना टेस्टामेंट, पठार, पैगम्बर, फ़िलस्तीनी, "क्रीसस के समान धनी", "क्रीट के समुद्री राजा", सेमेटिक, "दो नदियाँ," "टायरन गुलाबी", जरथुष्ट्रवाद।

(ख) क्या तुम इन तिथियों के बारे में जानते हो ? अगर जानते हो तो बाईं ओर के किन पाँच सौ वर्षों के काल में दाईं ओर दी हुई कौन सी घटनाएँ घटीं।

३५००—३००० ई० पू०	क्रीट की सभ्यता फैली।
३०००—२५०० ई० पू०	सुमेरियन सभ्यता फैली
२५००—२००० ई० पू०	साइरस ने ईरानी साम्राज्य कायम किया।
२०००—१५०० ई० पू०	हम्मूराबी की कानून-संहिता।
१५००—१००० ई० पू०	असीरियन साम्राज्य फला-फूला।
१५००—५०० ई० पू०	दारा ग्रीकों द्वारा पराजित हुआ।
५०० ई०पू० से ईसा के जन्म तक	सोलोमन के मंदिर का निर्माण, मैनीज़ द्वारा मिस्र का शासन, सिकन्दर महान् की 'प्राचीन पूर्वी देशों' पर विजय, फीनिशियन नाविकों का पूर्वी भूमध्य-सागर में प्रभुत्व।

(ग) नक्शे में निम्नलिखित स्थान दिखाओ :

ऐजियन सागर, अरबिस्तान, एशिया माइनर, असीरिया, बेबीलोनिया, काला सागर, कैनान, कैस्पियन सागर, कैल्डिया, नोसस, क्रीट, मृतसागर, फरात नदी, 'उपजाऊ अर्धचन्द्र', ग्रीस, हिट्टी साम्राज्य, इसरायल, जेरुसलम, जोर्डन नदी, जूडा, लेबनान पर्वतमाला, लीडिया, मीडिया, मेसोपोटामिया, माउण्ट सिनाई, माइसेनी, निनेवेह, फिलस्तीन, ईरान, फारस की खाड़ी, फीनीशिया, सार्डिस, सुमेरिया, सूसा, दजला नदी, टाइग्रेज, ट्राय।

(घ) क्या तुम इन व्यक्तियों के बारे में बता सकते हो ?

अब्राहम, सिकन्दर महान्, कैम्बिसस द्वितीय, क्रीसस, साइरस, दारा महान्, डेविड, हम्मूराबी, होमर, मूसा, नेबुकेडनजर, साल, डा० हेनरिक श्लीमान, सेनाकेरिब, सोलोमन, ज़ुर्कसीज़, जरथुष्ट्र।

दो. इतिहास बनाम नागरिक शस्त्र

(क) चूंकि फीनीशियन अपने माल के साथ लिपि-

माला और अपने व्यापार के तौर-तरीके भी भूमध्यसागर के चारों ओर विभिन्न स्थानों में ले जाते थे, इसलिए वे "सभ्यता के प्रचारक" कहलाते थे। अमेरिका की वह विचारधारा, वे वस्तुएं और सिद्धान्त बताओ जिन्हें तुम्हें दूसरे लोगों तक पहुंचाने में गौरव होगा। अपनी तालिकाएं कक्षा में मिलाओ।

(ख) कई शासकों ने, जिनका उल्लेख तुमने इस अध्याय में पढ़ा है, ऐसे सुधार किये जिनसे उनके देशवासियों को लाभ पहुंचा। वे कौन-कौन से सुधार थे? ऐसे सुधारों की सूची बनाओ जिन्हें तुम अपनी बस्ती में लागू करना चाहोगे। कक्षा में उन तौर-तरीकों पर आपस में विचार-विनिमय करो जिनसे उन सुधारों को कार्यान्वित किया जा सके।

तीन. क्या तुम अपने विचार स्पष्ट रूप से प्रकट कर सकते हो ?

(क) निम्नलिखित विषयों में से किसी एक पर कक्षा में एक वार्ता प्रस्तुत करो :

सोलोमन का मंदिर, फोनीशियन लिपिमाला, नोसस का महल, हिब्रू धर्म, जरथुष्ट्रवाद, सर हैनरी रौलिंसन ने ईरानी लिपि को कैसे पढ़ा, डा० श्लीमान को ट्राय में क्या मिला, साइरस महान्, दारा महान्, ट्रोजन घोड़े की कहानी, औडीसस की यात्राएँ, कोई हिब्रू पैगम्बर, आमोस, इसाया, या जैरेमिया।

चार. चित्र अध्ययन

१. दजला-फरात घाटी के लोग अपने नगरों को दीवारों से क्यों घेरते थे जैसा कि पृष्ठ ४६ में दिखाया गया है जबकि मिस्री ऐसा नहीं करते थे?

२. पृष्ठ ४८ पर तसवीर में वे विशेषताएं ढूंढो जो समान हैं और इसलिए उसी विचार की पुनरावृत्ति करती हैं।

५ चीन और भारत का उत्कर्ष

चीन के नाम से रेशम के कीड़ों, अजदाहों और दरियाई भैंसों, पंखों, कागज की लालटेनों, और संगयशव (जेड) और चीन की विशाल दीवारवाले देश का, नदी में ऊपर-नीचे घूमने वाली असंख्य छोटी-छोटी नावों, लकड़ी के तीलों से चावल खानेवाले लोगों का, खूबसूरत राजकुमारियों और लम्बे गाउन पहने, अकड़ कर बैठे हुए सम्राटों का चित्र आँखों के आगे नाचने लगता है। चीन अमरीकी कल्पना को उत्तजित करता है क्योंकि वह इतना रंगीन और पश्चिमी देशों से इतना भिन्न है।

चीन एक प्राचीन राष्ट्र है

चीन का भूगोल—चीन मिस्र और मेसोपोटामिया से इतनी दूर था कि इसके लोगों ने उन सभ्यताओं से अलग ही स्वतन्त्र रूप से अपनी संस्कृति का विकास किया। एशिया के पूर्वी तटवर्ती क्षेत्र में अवस्थित चीन, तिब्बत और मंगोलिया के ऊंचे प्राकृतिक पठारों और दक्षिण के जंगलों के कारण पश्चिम से अलग ही रहा। चीन के उत्तर और दक्षिण में बसी वर्बर जातियों ने चीनियों के दूरस्थ देशों के साथ अधिक व्यापार करने में रुकावट डाली।

चीनी पूर्व की ओर देखते थे क्योंकि वे पूर्व की ओर बहने वाली दो नदियों की चौड़ी घाटियों में रहते थे। उत्तर में पीत नदी चौड़े मैदान से गुजरती हुई अपनी मर्जी के अनुसार धारा बदलती हुई बहती है। याँग-टी-सी, जिसका अर्थ सागर का पुत्र है, चीन के मध्य से पूर्व की ओर बहती है। ऐसे देश में जहाँ सड़कें कम हों, नदियों का महत्त्वपूर्ण स्थान रहता है। गहरी उपजाऊ मिट्टी और समशीतोष्ण आबो-हवा से ये घाटियाँ एक स्थायी और खुशहाल जीवन बिताने के लिए आदर्श स्थान थीं।

मेसोपोटामिया की दो नदियों की घाटी की कहानी की तरह, प्राचीन चीन का इतिहास भी पड़ोसी पठारों पर रहनेवाले कबाइलियों के लगातार हमलों की कहानी है।

प्रारम्भिक प्रगति—चीन का प्रारम्भिक इतिहास मुख्यतः किंवदन्तियों पर आधारित है। ईसा से पूर्व बारहवीं शताब्दी तक हमें इसकी कोई निश्चित जान-कारी नहीं मिलती। उस समय तक चीनी जनता

चीनी व्यापारियों के काफिले कीमती रेशमी वस्त्र लेकर फारस के व्यापारियों को बेचने के लिए रेशम मार्ग से जाते थे।
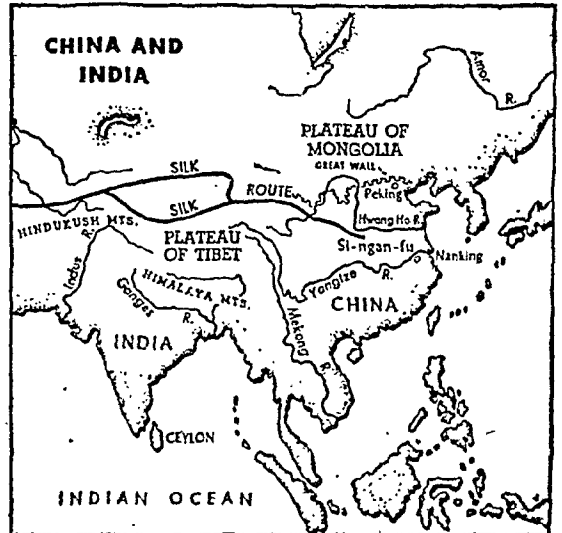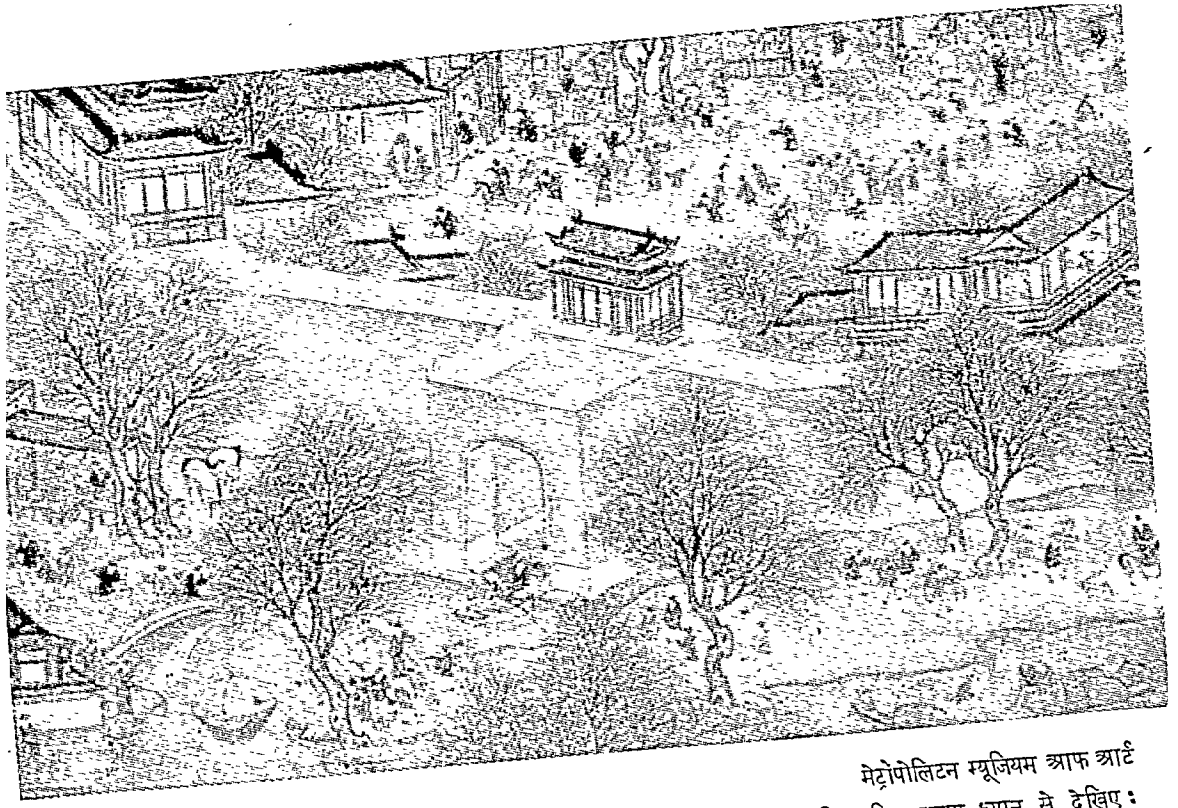
मेट्रोपोलिटन म्यूजियम आफ आर्ट

चीनी कलाकार रेशम पर सुन्दर रंगों में बढ़िया चित्र बनाते थे। इस उत्सव के दृश्य में चित्रित क्रियाकलाप ध्यान से देखिए: (मध्य बाएँ) भोजन की दूकान, (ऊपर बाएँ) मांस की दूकान; (नीचे दाएँ) मछली का शिकार।

कई साँस्कृतिक उपलब्धियाँ प्राप्त कर चुकी थी। वे घोड़ों और अन्य जानवरों को पालतू बना चुके थे। उन्होंने रेशम के कीड़े पालना, रेशम और रूई के कपड़े बुनना तथा कपड़े को रंगना सीख लिया था। वे जान चुके थे कि टोकरियाँ कैसे बनती हैं। उनके पास सीसे, तांबे और सोने के बर्तन तथा जेवरात थे। अपने इतिहास के आरंभ से ही चीनियों ने एक लिखित भाषा विकसित कर ली थी। वे लड़के, जिन्हें सरकारी पदाधिकारी बनने की उम्मीद होती थी, इस कार्य के लिए स्थापित स्कूलों में शिक्षा पाते थे।

चीनी धर्म ने एक देवाधिदेव, शांगती, की पूजा को प्रोत्साहन दिया। पृथ्वी और आकाश के अधिदेवताओं की भी पूजा की जाती थी। उनकी प्रार्थना-पूजा अधिकतर नृत्य और संगीत के रूप में होती थी। इस उद्देश्य से चीनियों ने आठ वाद्ययंत्रों का आविष्कार किया। इनमें ढोल, झांझ, घंटियाँ और तांत वाले वाद्ययंत्र थे।

परन्तु चीनियों ने मृत्यु के बाद के जीवन के बारे में गहराई से नहीं सोचा था। वे ज्यादातर इस बात में दिलचस्पी रखते थे कि किस तरह सुखी और पूर्ण जीवन इस संसार में बिताया जाय। इस कारण वे शिक्षा पर जोर देते थे। दार्शनिकों और विद्वानों का उनके लिए धार्मिक नेताओं से अधिक महत्त्व था।

सरकार—ईसा पूर्व ग्यारहवीं शताब्दी के मध्य से पूर्व, जबकि चाऊ वंश ने शासनतंत्र अपने हाथ में लिया, कम-से-कम दो राजवंश चीन में शासन कर चुके थे। चीनियों की समस्याओं को सुलझाने के लिए कुछ सरकारी कार्यालय स्थापित किए जा चुके थे। शिक्षा, धर्म, न्याय, संचार और सार्वजनिक निर्माण-कार्यों के सचिव नियुक्त थे। ठेठ चीन ज्यादा विस्तृत नहीं था। इसका शासक एक सम्राट् था, लेकिन उसने इर्द-गिर्द के क्षेत्रों को सामन्तों और राजपुत्रों में बांट रखा था। इसके एवज में वे ठेठ चीन की पड़ोसी बर्बरों से रक्षा करते थे। चूंकि सामन्त हमेशा

युद्ध के लिए तैयार रहते थे, इसलिए वे व्यवहारतः स्वतन्त्र हो गये थे। सम्राट् को 'स्वर्गपुत्र' का खिताब मिला हुआ था और उसका बहुत सम्मान किया जाता था लेकिन उसकी शक्ति बहुत कम थी। विभिन्न राज्यों में आपस में युद्ध चला करते थे। शक्तिशाली कमजोर को जीत लेता था और अन्त में राज्यों की संख्या १५०० से घटकर ५२ हो गयी।

चाऊ वंश के काल में चीनी संस्कृति

चाऊवंश (१०२७ ई० पू० से २४९ ई० पू०) संभवतः चीन के सारे इतिहास में सर्वाधिक महत्त्व-पूर्ण रहा है। इसी काल में चीनी संस्थाओं की स्थापना हुई और संस्कृति में बहुत-से सुधार हुए। चिकनी बलुई मिट्टी की उर्वरता से खेती मुख्य पेशा बना। यह मिट्टी उनके लिए इतना महत्त्व रखती थी कि चीनी 'पीली धरती के बच्चे' कहलाते थे। लेकिन जनता का बड़ा वर्ग इस धरती से वह लाभ न पा सका जो उसे मिलना चाहिए था, क्योंकि जमीन सरकार की थी और सामन्तों का उस पर राज्य था। किसान उन्हें दिये गये जमीन के छोटे-छोटे टुकड़ों पर काम करते थे लेकिन सामन्त फसल का अधिकांश हिस्सा पाते थे। लोगों पर भारी कर लगाये गये थे जिससे उनके लिए धन संचय करना दुष्कर था।

उद्योग—शहरों में उद्योग और व्यापार पनपा और एक बहुत आधुनिक संस्था बनायी गयी। प्रत्येक हुनर जाननेवाले कारीगरों के संगठन होते थे जिन्हें "गिल्ड" कहते थे। यह सबसे प्राचीन किस्म की मजदूर यूनियन थी। स्वर्णकारों, बूचड़ों, नानबा-इयों और अन्य कारीगरों के गिल्ड उनके कार्य की श्रेष्ठता पर नियंत्रण रखते और नये कारीगरों को अपने हुनर में शामिल करते थे। धातु का काम करने-वाले लोहे और कांसे के खाना बनाने के बर्तन बनाते थे। मिट्टी की प्लेटें, बांस का सामान और जेवरात अन्यान्य कारीगर बनाते थे। महीन फर बेचनेवाले चमड़े का काम करने वाले और दर्जी कपड़ों में फैशन बनाने में व्यस्त रहते थे। बूचड़ सूअर और मुर्गियां, जिन्हें किसान बाजार में लाते थे, खरीदते थे। दूकान-दार शहर वालों के लिए गोदामों में पर्याप्त चावल रखते थे।

लेखन-प्रणाली—चीन ने लेखन-प्रणाली कितने पहले अपनायी, यह ज्ञात नहीं है। लेकिन प्रारम्भ में ही चीनियों ने एक जटिल प्रणाली अपनायी जो चित्रों तथा ध्वनि-प्रतीकों का मिश्रित रूप थी। ये प्रतीक इतने अधिक थे कि पढ़ना और लिखना बड़ा कठिन काम था—सिर्फ लिखने के प्रतीकों को सीखने में ही वर्षों लग जाते थे। चूंकि चीनियों और दूरस्थ देशों के बीच कोई सम्पर्क नहीं था, इसलिए चीनियों ने फीनीशियनों द्वारा प्रचारित सरल लिपिमाला को नहीं सीखा और वे अपनी जटिल प्रणाली पर ही चलते रहे। इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि चीनी लोग विद्वानों का सर्वोच्च नागरिक के रूप में सम्मान करते थे।

जो लोग लिखना या पढ़ना सीखना चाहते थे, उन सब को वे जटिल प्रतीक याद करने पड़ते थे, पर बोलचाल की भाषा एक सौ बोलियों में बंटी हुई थी और वे एक-दूसरे से इतनी भिन्न होती थीं कि एक प्रान्त का चीनी दूसरे प्रान्त के चीनी की बोली नहीं समझ पाता था।

कन्फूशियस की शिक्षाओं ने चीनी लोगों को एक विशाल ठोस इकाई के रूप में संगठित करने में मदद दी। यह इकाई शताब्दियों तक बनी रही।

धर्म—धर्म के मामले में चीनियों को प्रगति की कई मंजिलों से गुजरना पड़ा। किसी काल में वे नरबलि देते थे, जादू पर आस्था रखते थे और प्रकृति के अनेक देवों को पूजते थे। आठवीं शताब्दी ईसा-पूर्व तक एकेश्वरवाद अच्छी तरह स्थापित हो गया था। ईसा-पूर्व छठी शताब्दी के एक लेखक लाऊ-जू ने अपने देशवासियों को विश्व के निर्माता के नज़दीकी सम्पर्क में लाने की कोशिश की। इस शाश्वत आत्मा को उसने "ताओ" कहा। ताओवाद

ने सिखाया कि मेहनत और अध्ययन की अपेक्षा "ताओ" की प्रार्थना और चिन्तन से अधिक जाना जा सकता है। आनन्द सादा जीवन और ईमानदारी से रहने में ही पाया जा सकता है। इसलिए लोगों को अपनी सांसारिक आवश्यकताएँ बहुत कम रखनी चाहिएँ।

चीन का सबसे बड़ा शिक्षक (उपदेशक) कन्फ्यूसिअस था, जो लगभग ५५१ से ४७८ ई० पू० तक रहा। उसके पूर्वज पीढ़ियों से उच्चकुलीन रहे थे। एक सामन्त द्वारा सरकारी पदाधिकारी नियुक्त किये जाने पर कन्फ्यूसिअस ने तत्काल कई सुधार आरम्भ कर दिये। पर सामन्त ने उसके अधिकतर सुधारों को पसन्द नहीं किया। कन्फ्यूसिअस ने इस्तीफा दे दिया। तब उसने चीन के इतिहास, जनश्रुतियों और कविता को संकलन करके साहित्य का विश्वकोश-सा बनाया। यह चीनी साहित्य की महान् कृति है। कन्फ्यूसिअस के खुद के ग्रंथों में अच्छे आचरण और अपने पूर्वजों के सम्मान पर जोर दिया गया है। उसका दर्शन रूढ़िप्रिय था और सिखाता था कि पुत्रों को अपने पिताओं की मृत्यु के बाद परिवर्तन नहीं लाने चाहिएँ, अपितु वैसे ही रहना चाहिए जैसे उनके पूर्वज रहते आये थे। तो भी, कन्फ्यूसिअस ने कई उच्च नैतिक सिद्धान्त सिखाये। यद्यपि वह एकेश्वरवादी था लेकिन उसने मनुष्य के ईश्वर के साथ सम्बन्धों पर जोर नहीं दिया। इसलिए, कन्फ्यूसिअसवाद धर्म की अपेक्षा नैतिकता और आचरण की संहिता ही अधिक है। कन्फ्यूसिअस की शिक्षाएँ बहुत पवित्र लेख माने जाने लगे और उनका चीनियों के चरित्र पर व्यापक असर पड़ा। कन्फ्यूसिअस ७३ वर्ष की आयु में मरा। उसकी कुछ बुद्धिमत्तापूर्ण शिक्षाएँ ये हैं :

ज्ञानी मनुष्य की पहचान यह है कि वह यह जानता है कि क्या चीज वह जानता है और क्या वह नहीं जानता।

जो व्यक्ति गलती करता है और उसे सुधारता नहीं वह दूसरी गलती कर रहा है।

जो व्यक्ति बेहया होकर शेखी मारता है, उसे अपनी शेखी के अनुरूप काम करने में बहुत कठिनाई प्रतीत होगी।

कोई भला आदमी न तो उन बातों के आधार पर किसी व्यक्ति की प्रशंसा करता है (या उसे पद पर नियुक्त करता है) जो वह व्यक्ति कहता है, और (यदि वे बातें अच्छी हैं तो) न केवल इस कारण ही उनकी सत्यता का खंडन करता है कि वे बातें कहने वाला व्यक्ति उसे नापसंद है।

घरेलू जीवन—चाऊ वंश के अन्त तक चीन के कुलीनों और किसानों के बीच एक गहरी खाई पैदा हो गयी थी। कुलीन लोग सख्ती से एक निश्चित आचरणपद्धति अपनाते थे, जिसे सीखना मुश्किल था। उनका लोगों के स्वागत का तरीका, उनके खाने का तरीका और उनकी पोशाक, आदि सब सख्त नियमों से बंधे हुए थे। वे इस रूप में जीवन को औपचारिक किन्तु भव्य बनाने की कोशिश करते थे। उनके घर भी उतने ही सुन्दर थे जितने उनके तौर-तरीके। घरों के इर्द-गिर्द खूबसूरत बगीचे और आंगन बने थे। अन्दर का फर्श आम तौर से ईंटों का होता था जो सरकंडे, घास या बांस की सींकों की चटाइयों से ढंका होता था। वहाँ कुर्सियाँ नहीं होती थीं क्योंकि लोग फर्श पर बैठते थे, या सख्त गाव-तकियोंवाले कौचों पर आराम करते। कमरे छोटी काठ-कोयले की अंगीठियों से गरम रखे जाते थे। भोजन बांस, कांसे या मिट्टी की तश्तरियों पर परसा जाता था और लकड़ी या हाथीदांत की तीलियों से खाया जाता था। कहने का तात्पर्य यह कि प्राचीन चीन के लोग सुसभ्य जीवन की बहुत-सी सुविधाओं का उपयोग करते थे।

धनिकों के सुख-सुविधावाले घरों के विपरीत, ग़रीब लोग मिट्टी की बनी और फूस से छाई झोंपड़ियों में रहते थे। उनके घर एकदम खाली-खाली होते थे और उनमें नाममात्र को ही फर्नीचर होता था। उन्हें जई, चावल और घरेलू मुर्गी या सूअर के गोश्त-जैसे सादे भोजन पर संतोष करना पड़ता था। चूंकि उनके फार्म बहुत छोटे थे, इसलिए किसानों के पास गोश्त के लिए मवेशियों की संख्या बहुत कम होती थी।
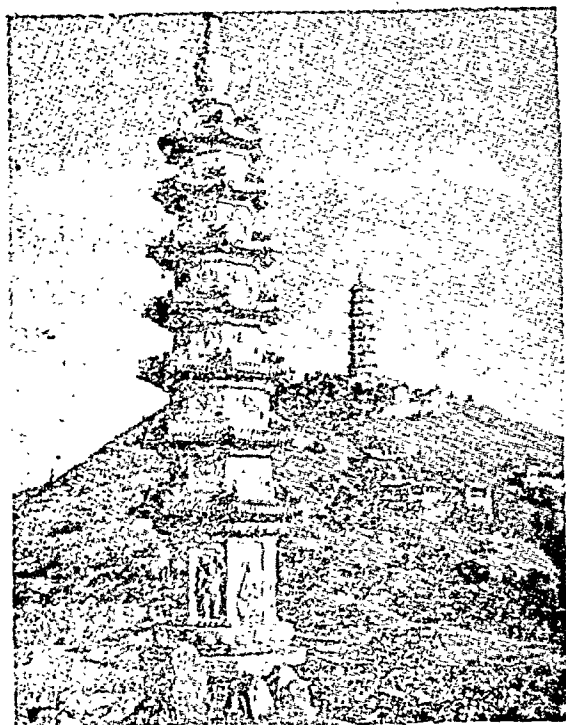
मौंकमेयर
पगोडा मन्दिरों के रूप में काम आते थे। मंजिलों की संख्या सदा विषम होती थी। इनमें बहुत अधिक सजावट की जाती थी।

कुलीनों के पास शतरंज खेलने, शिकार पर जाने, घोड़ों को ट्रेनिंग देने, जुआ खेलने, मुर्गों की लड़ाई देखने और मनमौजी खेल-कूदों में भाग लेने के लिए पर्याप्त समय रहता था। दूसरी ओर, गरीब लोगों को अपनी आजीविका के उपार्जन के लिए अपनी जाग्रत अवस्था के सभी घंटे खर्च करने पड़ते थे।

चिन वंश द्वारा एक शक्तिशाली केन्द्रीय सरकार की स्थापना का प्रयास

शिह ह्वांग—ईसापूर्व तीसरी शताब्दी में चीन के सम्राट् ने सामन्तों के प्रान्तों को छीन लिया और उन्हें ठेठ चीन से संयुक्त कर उनकी शक्ति समाप्त कर दी। शिह ह्वांग (२४६ से २१० ई० पू०) ने, जो चिन वंश का था, राजनैतिक नियंत्रण अपने हाथ में ले लिया और चीनी साम्राज्य की स्थापना की। उसके परिवार ने चिन प्रान्तों से शासन आरम्भ किया था जिससे "चीन" नाम का चलन हुआ।

शिह ह्वांग ने समस्त चीन में एक कानून-व्यवस्था लागू की और उन सब परस्पर-विरोधी कानूनों को समाप्त कर दिया जो विभिन्न प्रान्तों के लिए बनाये गये थे। उसने समूचे देश के व्यापारियों के लिए मानक (स्टैण्डर्ड) नाप-तोल की घोषणा की। उसने सब युद्धास्त्र इकट्ठे करवा कर उन्हें नष्ट करवा दिया जिससे विद्रोह का भय न रहे। उत्तरी सीमा पर एक भारी दीवार बनवाकर उसने देश को मजबूत बनाया। उत्तराधिकारी सम्राटों ने इस दीवार को बराबर बढ़ाया जिससे १५वीं शताब्दी तक वह १५०० मील लम्बी और कहीं-कहीं २५ फुट चौड़ी हो गई थी। यह दीवार पर्वतों और घाटियों के बीच से गुजरी है और इसके निर्माण में इतनी सख्त मेहनत लगी कि कहा जाता है कि इसके प्रत्येक पत्थर की कीमत एक जान है।

शिह ह्वांग ने कई चीनी रिवाजों को बदलने की कोशिश की। लेकिन कन्फ्यूसिअस के अनुयायियों ने इस परिवर्तन का जोरदार विरोध किया। शिह ह्वांग ने उन्हें मार डालने और पुस्तकों को जला डालने का आदेश दिया लेकिन जन-असंतोष इतना प्रबल हो उठा कि चिन वंश को एक नये शासक-परिवार के हाथों सत्ता सौंपने को विवश होना पड़ा।

महान् दीवार ईंट की दो दीवारों के बीच मिट्टी भर कर बनाई गई थी। कुछ-कुछ सौ गज पर पहरे के लिए बुर्जियाँ थीं।

मौंकमेयर
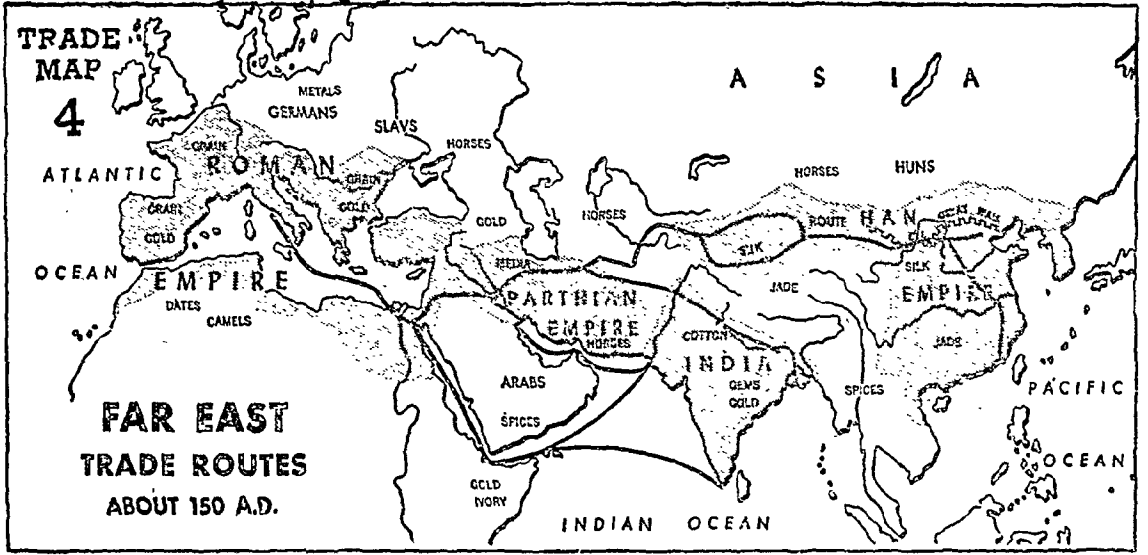
व्यापार नक्शा ४—पूर्वी एशिया के व्यापार-मार्ग, लगभग १५० ईस्वी में

हान वंश, उच्च संस्कृति का काल

हानवंश ने ईसा पूर्व २०२ में चीन की वागडोर सम्भाली। उस शासन के अगले चार सौ वर्षों में चीनी संस्कृति में सुधार आया और वह संसार के अन्य हिस्सों में फैली। इसी काल में कन्फ्यूसिअस का नाम पवित्र माना जाने लगा १५८९ में भी सम्राट् ने आदेश दिया था कि सभी सरकारी स्कूलों में कन्फ्यूसिअस के नाम पर चढ़ावा चढ़ाया जाए। हानवंश का सबसे बड़ा शासक वूती (१४०-८७ ई० पू०) था। उसने सिर्फ आक्रमणकारी हूणों को ही नहीं भगाया, अपितु चीन की सीमा में मंचूरिया और सिंकियांग को भी शामिल किया। चीन की इस सुदृढ़ता और सीमाविस्तार से उसके व्यापार में वृद्धि हुई। इसी काल में चीन ने मेसोपोटामिया, मिस्र और रोम के लिए भी व्यापार-मार्ग खोजे। एक मार्ग रेशम सड़क का था। यह लम्बा स्थल-मार्ग मध्य एशिया के आरपार गुजरता हुआ दजला-फरात घाटी के पश्चिम तक चला गया था। दूसरी सड़क पहाड़ी दर्रों से होती हुई सिन्धु नदी तक चली गयी थी और फिर अफ्रीका और यूरोप के लिए समुद्री मार्ग था। चीनी व्यापारी अपने देशवासियों द्वारा निर्मित माल लेकर ही नहीं चलते थे अपितु चीनियों के विचार और रहने-सहने के तौर-तरीके भी लेकर चलते थे और उनके एवज में उन लोगों के नये विचार लेकर आते थे जिनसे वे मिलते थे। इन विचारधाराओं में सर्वाधिक प्रभावशाली बौद्धधर्म था जो ईसा की मृत्यु के बाद प्रथम शताब्दी में भारत से चीन में गया। करोड़ों चीनी बौद्ध हो गये।

कला—चीनी कलाप्रिय लोग थे और वे कई कलारूपों में अपने को व्यक्त करते थे। वास्तुशिल्पियों ने सार्वजनिक इमारतों की छतें एकदम ढालवां बनाकर और उनके कोनों को उलट कर एक भिन्न प्रकार की शैली दी। इनमें से अधिकांश इमारतें लकड़ी की बनी होती थीं।

लगभग २०० ई० पू० से पहले मूर्तिनिर्माण एक प्रमुख कला नहीं बना था और बौद्धधर्म चीन में आ जाने के बाद पत्थर, मिट्टी, काँसे की बनाई गयी बुद्ध की मूर्तियाँ बहुत प्रचलित हुई। चीनियों में कला-प्रवीण चित्रकार भी थे। मन्दिरों की दीवारें इन कलाकारों द्वारा चित्रित की जाती थीं, कागज और बाँस की चटाइयों को भी ये चित्रित करते थे। चीनी मिट्टी के पात्र बनाने की कला चीनियों का कला के क्षेत्र में बेहतरीन योगदान है। सर्वप्रथम ईसा पूर्व ३००० में खूबसूरत चीजें बनाई गई थीं। चूंकि वे खूबसूरत और उपयोगी दोनों ही थीं; इसलिए चीनी मिट्टी के बर्तन, जो इसी नाम से पुकारे जाने लगे थे, प्रसिद्ध हुए। धातु के कारीगर काँसे को ढाल

कर पात्र, सुराहियाँ, प्यालियाँ और सजावट का सुन्दर सामान तैयार करते थे। अन्य कलाकार जेड या संगयशव की मूर्तियाँ बनाते थे जो एक खूबसूरत और सख्त पत्थर होता है। इस पत्थर से व्यक्तिगत उपयोग के लिए जेवरात और धार्मिक प्रतीक सख्त मेहनत और महीन कारीगरी से बनाये जाते थे। चीनी औरतें कपड़े पर खूबसूरत कशीदा काढ़ती थीं।

आविष्कार—कला, साहित्य और दर्शन के अलावा, प्राचीन चीन ने संसार को अन्य चीजें भी दीं। उन्होंने रेशम बुनना और उसे सजाने के लिए खूबसूरत डिजाइनें बनाना सीखा था। वे चाय की खेती करते थे और बाद में उपयोग के लिए उसे सुखाते थे। स्याही, कागज, पेंसिलों और छपाई का भी चीनियों को ज्ञान था। उन्होंने पनचक्की का भी आविष्कार किया। बाद के वर्षों में चीनियों ने खोज निकाला कि कोयला या काला पत्थर जलता है और अपने घरों को गरम रखने के लिए ईंधन के रूप में उसे जलाना सीखा। चीनियों द्वारा आविष्कृत पटाखे उस बारूद का प्रारूप थे जिसका हमारी दुनिया में कई निर्माण और ध्वंसकार्यों के लिए प्रयोग हुआ है। आठवीं शती ईस्वी में चीनियों ने हाथ से छपाई को ब्लाक की छपाई में परिवर्तित किया। वे चित्रों का एक समूचा पृष्ठ एक लकड़ी के ब्लाक में चित्रित कर लेते थे और उसकी जितनी उन्हें कापियाँ जरूरत होतीं, छाप लेते थे। हमारे आधुनिक प्रेसों की दिशा में यह एक सराहनीय बुनियाद थी। कुछ समय बाद चीनियों ने चल टाइप का निर्माण किया जिससे इतने ज्यादा अलग-अलग ब्लाक खोदने की आवश्यकता जाती रही।

बौद्ध धर्म ने छपाई में दिलचस्पी को प्रोत्साहन दिया क्योंकि बौद्ध भिक्षु सोचते थे कि अगर वे पवित्र ग्रन्थों की प्रतियाँ बना कर अन्य लोगों के पढ़ने को उन्हें वितरित करेंगे तो उन्हें विशेष पुण्य प्राप्त होगा। छपाई से चीनियों ने ताश और नोट सबसे पहले, दसवीं शती में बनाये। कुछ चीजों और विचारों के अतिरिक्त अन्य वस्तुएँ भी पश्चिमी एशिया और यूरोप के लम्बे व्यापार-मार्गों से ले जायी गईं और इसके लिए हमें प्राचीन चीन को श्रेय देना चाहिए।
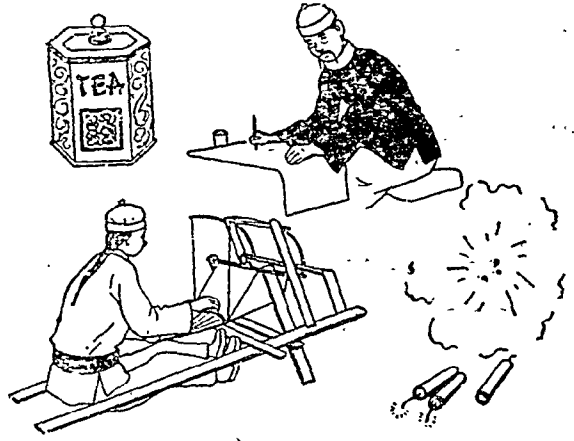
आप जिन चीजों का रोज प्रयोग करते हैं, उनमें से बहुत सी प्राचीन की देन हैं।

१. किन नदी घाटियों में चीनी सभ्यता विकसित हुई?
२. किन रुकावटों ने चीन को शेष विश्व से अलग रखा?
३. ईसापूर्व बारहवीं शताब्दी में चाऊ वंश द्वारा चीन का नियंत्रण हाथ में लिए जाने से पूर्व चीनियों की क्या उपलब्धियाँ थीं?
४. कितनी सख्ती से चाऊ वंश ने चीन में शासन किया?
५. चीन नाम कहाँ से पड़ा?
६. चीन की प्रगति में शिहह्वांग का क्या महत्त्व है?
७. हान वंश के शासन-काल में प्रगति के कौन से कदम उठाये गये?
८. ताओ धर्म का प्रवर्तक कौन था? उसके दो सिद्धान्त बताओ।
९. कन्फ्यूसिअस कब से कब तक रहा? उसने जिन उपायों से चीनी सभ्यता को एक स्वरूप प्रदान किया, उनमें से दो का उल्लेख करो।
१०. चीनियों के कुछ आविष्कार बताओ।

कठिनाइयों के मध्य भारतीय सभ्यता का अभ्युदय

एशिया के दक्षिण भाग में समुद्र के अन्दर गया हुआ भारत प्रायद्वीप है। यह आकार में अमेरिका से लगभग आधा है। इसके उत्तर में हिमालय है, जो संसार की सबसे ऊँची पर्वत-श्रेणी है। इन पर्वत-श्रेणियों की एक शाखा, जो दक्षिण-पश्चिम की ओर घेरा बनाती है, हिन्दुकुश पर्वतमाला कहलाती है, इन पर्वत मालाओं के बीच से कई दर्रे हैं जिनसे होकर हमलावरों के जत्थे समय-समय पर भारत आये। पर हमलों के बावजूद, ये पर्वतमालाएँ बाहरी दुनिया के साथ सम्पर्क और व्यापार के लिए एक रुकावट थीं, इसलिए भारत और मेसोपोटामिया के बीच बहुत कम सम्बन्ध स्थापित हो पाया। उत्तर भारत की उपजाऊ गंगा और सिन्धु नदी की घाटियाँ बहुसंख्यक लोगों का भरण-पोषण करने में सक्षम हैं, यद्यपि सिन्धु घाटी में सिंचाई आवश्यक है। इन घाटियों के दक्षिण में बड़ा-सा त्रिकोण मुख्यतः पठार है जहाँ कई प्रकार की फसलें पैदा की जाती हैं। इस प्रकार भारत ने, चीन की भाँति अलग-थलग होने और कुछ प्राकृतिक सुविधाओं से पूरित होने के कारण, ऐसी संस्कृति का विकास किया, जो उसकी अपनी ही थी।

आरम्भिक प्रगति—सभ्यता के अन्य केन्द्रों के लोगों की ही भाँति भारतीयों ने भी क्रमिक उन्नति की। उन्होंने भी लगभग वही चीजें करनी सीखीं, जो अन्य लोगों ने पूर्व-पाषाण और नव-पाषाण युग की सभ्यताओं में सीखीं। समूचे इतिहास में, हमारी आधुनिक दुनिया में भी, जब एक देश किसी नयी चीज का विकास या आविष्कार कर रहा होता है, तब अन्य देशों के बुद्धिमान् दिमाग भी उन्हीं दिशाओं में सोचते होते हैं।

सिन्धु घाटी में सभ्यता का विकास पहले-पहल लगभग ४००० ईसा पूर्व हुआ। यह लगभग वही काल था जब दजला-फरात घाटी में सभ्यता पनपी। पर भारत में वर्षा और उपजाऊ धरती इतने विस्तृत क्षेत्र में थी कि नदीघाटियों में बसने का मुख्य कारण पानी और उपजाऊ जमीन की खोज नहीं था, यातायात के मार्गों के समीपस्थ होना था।

हिमालय के इन हिमाच्छादित दर्रों में से होकर ही पहले आर्य और बाद में दूसरे आक्रान्ता भारत में आए। १९५३ में हिमालय की सबसे ऊंची चोटी माउंट एवरेस्ट पर चढ़ने में सफलता मिली। नीचा प्रदेश तिब्बत में है।

यूइंग गैलोवे
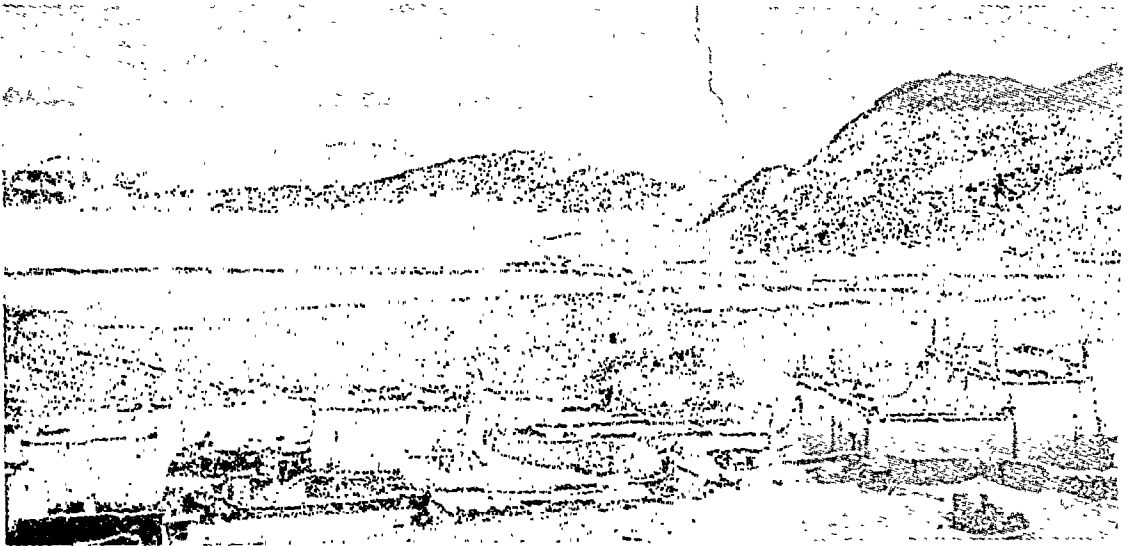
सिन्धु घाटी की सभ्यता बहुत ज्यादा बढ़ी-चढ़ी थी। उदाहरण के लिए, एक प्राचीन नगर की चौड़ी सड़कें और पकायी हुई मिट्टी की नालियाँ, हाल के वर्षों में, पुरातत्व-विभाग द्वारा खुदाई के समय भी पुख्ता थीं। नगर के ईंटों के मकान कई मंजिल ऊँचे थे। इनमें से कुछ में स्नानागार बने हुए थे। ये भारतीय कई प्रकार के हस्तकौशल जानते थे। वे पत्थर से गहने बनाते, मिट्टी से छोटी मूर्तियाँ गढ़ते, मिट्टी के खूबसूरत बर्तन पकाते और धातु के उस्तरे, छेनियाँ और चाकू निर्मित करते थे।

इस सभ्यता का किसी अज्ञात कारण से, ईसा से लगभग २५०० वर्ष पूर्व, अन्त हो गया।

आर्य—भारत के मूल निवासी, ठिगने, काले और घुँघराले बालों वाले लोग थे, जो समूचे प्राय-द्वीप में फैले थे। ये द्रविड़ कहलाते थे और नीग्रो मूलवंश से सम्बन्धित थे। ईसा पूर्व २००० में भारत-यूरोपियनों का एक झुण्ड दक्षिण-पूर्व की ओर आया और पर्वतों से होकर भारत में आ गया। ये श्वेत जाति के आर्य थे। पहले-पहल इन्होंने आदिम निवासियों से विवाह किये लेकिन बाद में उस पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया। हमलावरों ने, जो बाद में हिन्दू कहलाये, अन्त में सिन्धु घाटी पर अधिकार कर लिया और पूर्व की ओर बढ़े। उन्होंने मवेशीपालन और कृषि का स्थायी जीवन बिताना शुरू किया। वे गेहूँ, जौ और जई की खेती करते थे। गाड़ियों को खींचने और हल चलाने के लिए बैल प्रयोग में लाये जाते थे और भोजन के लिए मवेशी गोश्त प्रदान करते थे। जो गाँव बसते थे वे कामकाजी स्थान होते थे। लोग खेतों से उत्पन्न वस्तुओं से दस्तकारी करते थे। वे चमड़े के लिए कच्ची खालें साफ करते, ऊनी तागा कातते, कपड़ा बुनते और दूध की वस्तुएँ तैयार करते थे। धातु का काम करने वाले लोग किसानों के बीज बोने और उनको फसलों की निराई में प्रयोग के लिए, कुदाली, फावड़े और हलों के फाले बनाते थे।

भारत का वीर काल—इसे वीर काल इसलिए कहा जाता है कि यह युद्धों का युग था। इस काल (१०००-५०० ई० पू०) में आर्य पूर्व की ओर गंगा-

बोस्टन म्यूजियम आफ फाइन आर्ट्स

इस प्राचीन और प्रसिद्ध चित्र में कृष्ण को संध्या के समय गाएँ गाँव की ओर हांकते दिखाया गया है।

घाटी में स्थानान्तरित हुए। उन्होंने नगर-राज्यों का संगठन किया, जो बहुत कुछ प्राचीन मिस्र की ही भाँति थे। रक्षा के लिए नगरों को दीवारों से और पानी से भरी गहरी खाइयों से घेरा जाता था। नगरों की सड़कें योजना के अनुसार बनाई जाती थीं और उनमें नियमित रूप से रोशनी और सफाई होती थी। नदियों के माध्यम से व्यापार तेजी से बढ़ा और समुद्र तक पहुँचा। जहाज मेसोपोटामिया और मिस्र भेजे जाते थे। धनी लोगों के पास शिकार, जुआ, दंगल और नाच-तमाशे देखने के लिए समय था लेकिन गरीबों को जीवन-संघर्ष में व्यस्त रहना पड़ता था।

करोड़ों आदिम-निवासियों पर नियन्त्रण रखने के लिए आक्रामक आर्यों के सम्भ्रान्त लोगों और योद्धाओं ने सभी लोगों को स्थिर वर्णों में विभाजित कर दिया। यह वर्ण-प्रणाली भारतीय जीवन के साथ स्थायी रूप से बंध गयी। उच्च वर्ण के लोग ब्राह्मण कहलाते थे क्योंकि

वे अपना जीवन ब्रह्मा या सृष्टि के रचयिता, की पूजा अर्चना में बिताते थे। ब्राह्मण विद्वान् लोग थे। वे भारत के उन थोड़े-से लोगों में थे, जो लिख-पढ़ सकते थे। अपने पाण्डित्य का प्रयोग कर ब्राह्मणों ने धार्मिक शिक्षाओं को ऋग्वेद में लिख डाला। यह सूक्तों का एक संग्रह था, जो मौखिक रूप से पीढ़ी-दर-पीढ़ी चला आता था। अब वे भारतीय लिपि में, जिसे संस्कृत कहते थे, लिख लिए गये थे। चूंकि वे शिक्षा पर नियन्त्रण रखते थे और यज्ञों के लिए विस्तृत नियम बनाते थे, इसलिए ब्राह्मण एक विशेष शक्ति-सम्पन्न वर्ग बन गया।

कुलीन और योद्धा, जो आक्रामक आर्यों के वंशज थे, वर्ण-प्रणाली में द्वितीय वर्ग में आते थे। उनके बाद, निचले वर्ग में कुशल कारीगर और व्यापारी थे। चौथा वर्ण बहुसंख्यक सर्वसाधारण लोगों का था, जिनमें से अधिकांश कमिया (किसान) थे।

कोई भी उच्च वर्ण का व्यक्ति निचले वर्ण से विवाह नहीं कर सकता था। न वह उसके लिए काम ही कर सकता था और न उसकी मदद ही कर सकता था। चार वर्णों के नीचे अछूत या अस्पृश्य थे, जिनकी छाया भी यदि एक ब्राह्मण के भोजन पर पड़ जाय तो वह उच्च वर्ण के खाने योग्य नहीं रह जाता था। अछूतों को नगर के अपने ही मुहल्ले में गरीबी से रहना पड़ता था।

बेटमैन आर्काइव

ऋग्वेद के इस पृष्ठ पर ब्रह्मा को विद्या, संगीत और साहित्य की देवी सरस्वती के साथ दिखाया गया है।

बौद्ध धर्म—लगभग ५०० ई० पू० में, भारतीय ग्राम जनता ढाढ़स और आशा की आवाज सुनने लगी। यह गौतम की आवाज थी जो एक हिन्दू राजकुमार था और जिसने एक तपस्वी का जीवन व्यतीत करने के लिए राजगद्दी का परित्याग कर दिया था। उन्हें बुद्ध इसलिए कहा गया कि उन्हें ज्ञान प्राप्त हो गया था। उन्हीं की शिक्षाओं से बौद्ध धर्म का विकास हुआ। गौतम ने सिखाया कि सभी लोग, चाहे वे किसी भी वर्ण के हों, सत्य को जान सकते हैं और उस परम आत्मा, ब्रह्म की पूजा के अधिकारी हैं। जीवन में सुख सच्चरित्र और ज्ञान से प्राप्त होता है। बुद्ध ने बताया कि मनुष्य का सांसारिक जीवन दुःखों से भरा है लेकिन यह जीवन बहुत अल्प है। मनुष्य की आत्मा मृत्यु के बाद कई योनियों—पशुयोनि, पेड़-पौधों की योनि और मानवयोनि में पैदा होने के बाद धीरे-धीरे परिशुद्ध होती है और फिर लौट कर परम आत्मा में पहुँच जाती है।

मौर्य वंश—उत्तर-पश्चिमी भारत ईसा पूर्व छठी शताब्दी में ईरान के राजा साइरस द्वारा विजित किया गया था। लगभग ३२५ ई० पू० में सिकन्दर महान् ने ईरान पर विजय प्राप्त कर ग्रीक साम्राज्य का भारत तक विस्तार किया। उसकी मृत्यु के बाद चन्द्रगुप्त नामक स्थानीय योद्धा ने सिकन्दर के साम्राज्य के भारतीय हिस्से पर नियन्त्रण जमा लिया। चन्द्रगुप्त उत्तर भारत के अन्य राजाओं को पराजित कर भारत का प्रथम सम्राट् बना। उसने मौर्यवंश की नींव डाली जिसने अनेक वर्षों तक भारत के बहुत बड़े भाग पर शासन किया। २७३ ई० पू० में चन्द्रगुप्त का पोता अशोक सम्राट् बना। उत्तराधिकार में प्राप्त अपनी विशाल सेना से उसने अपने साम्राज्य का विस्तार कर समूचे भारतवर्ष को अपने आधीन कर लिया। बहुत ज्यादा खून-खराबी, निर्दयता और युद्ध के उत्पीड़न से उसे आत्मग्लानि हुई। वह बुद्ध के शांति और दया के तौर-तरीकों का अनुयायी बन गया और सैन्यवाद तथा शक्तिप्रयोग का उसने परित्याग कर दिया। अशोक ने बन्दियों को मुक्त कर दिया और अनेक अपराधियों को क्षमा प्रदान की। उसने बीमारों के लिए अस्पताल बनवाये और पशुबलि बन्द कर दी।

अशोक कालीन भारतीय साम्राज्य

उसने सभी भागों में और यहाँ तक कि भारत से बाहर भी धर्म-प्रचारक भेज कर बौद्ध धर्म का प्रसार किया। अशोक की मृत्यु के बाद दुर्भाग्य से उसकी क्षमा की उदार नीति का मौर्यवंश के ही एक सदस्य, उसके उत्तराधिकारी, ने परित्याग कर दिया जो साम्राज्य को कम प्रबुद्ध जीवन-पद्धति की ओर ले गया।

हम विभिन्न लोगों के उत्तराधिकारी हैं

विश्व इतिहास के इस अंश के अध्ययन से हमने देखा कि सभ्यता का उदय लगभग एक ही काल में विभिन्न स्थानों में हुआ। श्वेत लोग ही अकेले प्राचीन काल में सभ्यता का जीवन शुरू करने वाले नहीं थे। अलग-अलग दूर बसे हुए लोगों ने, जैसे मिस्र, मेसोपोटामिया, चीन और भारत, ४००० ई० पू० से ३०० ई० पू० तक, बर्बरावस्था से सभ्यता की ओर प्रगति की। उन्होंने सीखा कि किस प्रकार बहुसंख्यक लोगों पर शासन किया जाय, खूबसूरत और प्रभावशाली इमारतें बनाई जाएँ, महान् साहित्य की रचना की जाय और धार्मिक प्रणालियों का विकास किया जाय तथा आचरण के नियम बनाये जाएँ। उस पुरातन अतीत में मानव ने प्रगति के मार्ग पर दूर तक यात्रा की।

जिन लोगों ने ये सफलताएँ प्राप्त की थीं, वे बहुत वर्ष पहले संसार से उठ गये; यहाँ तक कि उनकी सभ्यता भी मिट गई; लेकिन उन्होंने उत्तराधिकारियों को अनेक अच्छी वस्तुएँ, जो उन्होंने सीखी थीं, प्रदान कीं। परिणामस्वरूप, आज हम उनके श्रम के फलों का उपभोग करते चले आ रहे हैं।

१. भारतीय सभ्यता किस नदी घाटी में विकसित हुई ?
२. द्रविड़, हिन्दू और ब्राह्मण कौन थे ?
३. ईसापूर्व २५०० से पहले प्रथम सभ्य भारतीयों ने क्या प्रगति की थी ?
४. ईसापूर्व ५०० में आक्रामक आर्यों के आने के बाद क्या-क्या प्रगति हुई ?
५. भारतीय वर्ण-प्रणाली की कौन-कौन सी मुख्य जातियाँ हैं ?
६. ब्राह्मणों की पवित्र पुस्तक क्या थी ?
७. गौतम को बुद्ध क्यों कहने लगे ? बौद्ध धर्म को लोगों ने कहाँ बड़े पैमाने पर ग्रहण किया ?
८. भारतीय साम्राज्य का संस्थापक कौन था ? वह किस राजवंश का था ?
९. अशोक की क्या महत्ता थी ?
१०. प्राचीनतम भारतीय साहित्य ग्रन्थ को किस नाम से पुकारा जाता है ?

विचार-विमर्श के लिए प्रश्न

(१) चीन की बड़ी दीवार सदियों तक सफलतापूर्वक हमलावरों को चीन पर हमले से बचाये रही। आज ऐसा क्यों संभव नहीं है ?

(२) बीसवीं शताब्दी में चीनियों ने अपनी लेखन-शैली को क्यों संशोधित किया ?

(३) यह कैसे हुआ कि संस्कृत का ग्रीक और लैटिन से बहुत-कुछ सम्बन्ध है ?

(४) चीन में जमीन इतनी महत्त्वपूर्ण क्यों है ?

(५) चीन की नदियां वहां के लोगों के लिए इतनी महत्त्वपूर्ण क्यों हैं ?

(६) संस्कृत में जो वर्ण शब्द जात के लिए प्रयुक्त है, वही शब्द 'रंग' के लिए भी है। "रंग" शब्द का "जात" के लिए प्रयोग क्यों हुआ है ?

(७) क्या तुम बता सकते हो कि सिन्धुघाटी की सभ्यता का एकाएक अन्त क्यों हो गया ?

वैटीमैन आर्काइव

इस चीनी काष्ठकृति में यह दिखाया गया है कि लोट्से अपने कुछ अनुयायियों के सामने स्वर्गारोहण कर रहा है।

(८) यह कहा जाता है कि पूर्वी देशों के लोग विचारक रहे हैं जबकि पाश्चात्य लोग कर्त्ता। इस प्रकार की सभी लोकोक्तियों की तरह यह भी अतिरंजना है। फिर भी भारत और चीन की धार्मिक और दार्शनिक शिक्षाओं में कौन सी ऐसी बात थी जिससे उनके विद्वान पाश्चात्य विद्वानों से कम व्यावहारिक रहे।

इतिहास के उपकरणों का प्रयोग

एक· नाम, तिथियाँ और स्थान :

(क) क्या तुम इन शब्दों का अर्थ बता सकते हो?

ब्राह्मणवाद, बौद्ध धर्म, वर्ण प्रथा, राजवंश, श्रेणी; वीरकाल, ऋग्वेद, संस्कृत, स्वर्गपुत्र, ताओवाद।

(ख) "अ" कालम में दी हुई तिथियों में से "ब" कालम में दी हुई घटनाओं का मिलान करो और बताओ कि कौन सी घटना किन तिथियों में हुई?

अ	ब
१. २००० ई० पू०	१. चाऊ वंश।
२. १०००-२५६ ई० पू०	२. भारत में भारत-यूरोपीय लोगों के आगमन का श्रीगणेश।
३. १०००-५०० ई० पू०	३. सिकन्दर महान् ने भारत में अपनी सत्ता का विस्तार किया।
४. ५५१-४७८ ई० पू०	४. चन्द्रगुप्त भारत का सम्राट् बना।
५. ३२५ ई० पू०	५. कन्फ्यूसियस का जीवन-काल।
६. ३२३ ई० पू०	६. अशोक भारत का सम्राट् हुआ।
७. २७३ ई० पू०	७. हानवंश।
८. २०६ ई० पू० से सन् २२० तक	८. भारत का वीरकाल।

(ग) **टाइम टेबल**—एक बड़े कागज के पन्ने को इस प्रकार मोड़ो कि प्रत्येक देश के लिए, जिसका अब तक तुमने इस खण्ड में अध्ययन किया है, एक कालम बन जाय। कागज के बायें हाशिये में ४००० ई० पू० से ईसा के पैदा होने तक प्रत्येक ५०० वर्षों के खण्ड बनाओ। प्रत्येक ५०० वर्ष के बीच एक इंच जगह छोड़ो। उन तिथियों के सामने जो तुमने लिखी हैं, उस देश की मुख्य-मुख्य घटनाओं का उल्लेख करो। प्रत्येक खण्ड के अन्त में ऐसा ही टाइम-टेबल बनाओ। इसे ब्लैक-बोर्ड या बुलैटिन-बोर्ड पर अधिक बड़े पैमाने पर लगाया जा सकता है।

२. लोकतंत्र की दिशा में बढ़ते कदम

हजारों वर्ष वीत जाने पर, और मानव के जंगलीपन से वर्वरावस्था और फिर सभ्यता तक प्रगति कर जाने पर, उन लोगों ने जो मिस्र में बस गये थे, सरकार को एक निश्चित रूप दिया यद्यपि वह लोकतंत्र से वहुत दूर था।
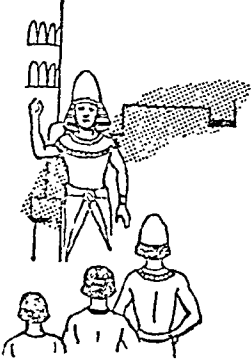
प्रारम्भिक फरून सर्वशक्तिमान थे लेकिन कुलीनों की कानूनों के सम्बन्ध में आवाज सशक्त थी। वे शनैः शनैः फरूनों से भी ज्यादा शक्तिवाले वन गये। इस तरह सरकार एक के हाथ से कई व्यक्तियों के हाथों में चली गयी और स्वतंत्रता को थोड़ा-सा लाभ पहुंचा।

मिस्रियों ने लोकतंत्र प्रणाली के जीवन की दिशा में दूसरा कदम रखा: स्त्रियाँ अपने नाम पर सम्पत्ति रख सकती थीं और उत्तराधिकार में भी प्राप्त कर सकती थीं।
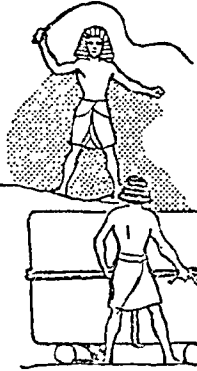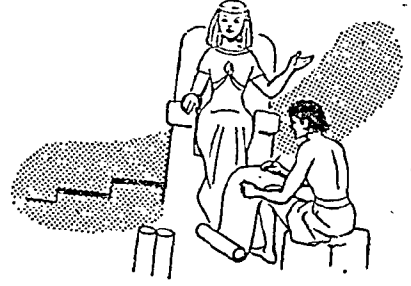
हजारों दास सारा शारीरिक श्रम का कार्य करते थे और उनके साथ क्रूरता का व्यवहार होता था। उन्हें कोई नागरिक अधिकार प्राप्त नहीं था और वहुत थोड़े व्यक्तिगत अधिकार थे। ये वहुसंख्यक लोग नहीं जानते थे कि आजादी क्या होती है।
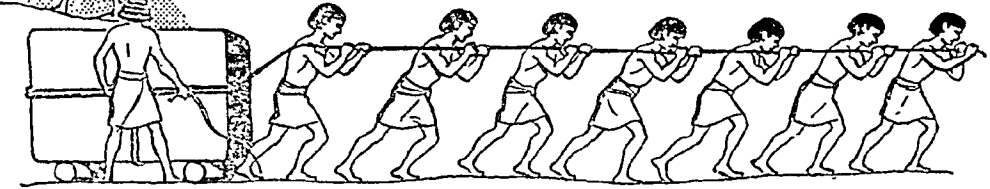
वेवीलोन में मानव ने स्वतन्त्रता की ओर वास्तविक प्रगति की। हम्मूरवी ने, यद्यपि वह सर्वशक्तिमान शासक था, एक कानून संहिता वनाई जिसमें कई मानवीय अधिकार प्रदान किये गये थे और घोषणा की गई थी कि "वलवान कमजोर को नहीं सता सकेगा।"

समस्त इतिहास में मानव पीछे भी लौटा है और आगे भी वढ़ा है। प्राचीन भारत में जाति-प्रणाली ने लोगों को कठोर वर्णभेद में वांट दिया। सवसे नीची जाति वालों को कोई नागरिक अधिकार नहीं थे और वे सामाजिक रूप से जाति-वहिष्कृत थे। पर वहुत धीरे-धीरे लोकतंत्र की दिशा में प्रगति जारी रही।

२. जीवन-निर्वाह की प्रगति के चरण
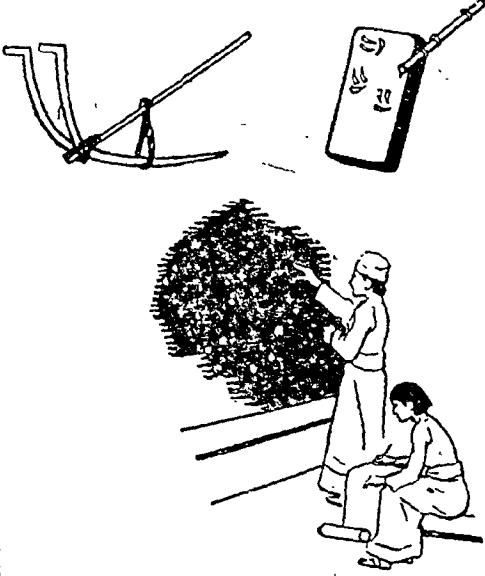
मिस्र, बेबीलोनिया, चीन और भारत की आश्चर्यजनक प्राचीन सभ्यताओं ने नये औजारों और नयी विचार-धारा को ही जन्म नहीं दिया, अन्य लोगों से प्राप्त हुई वस्तुओं और व्यवहार की विधियों में सुधार भी किया। लिखने की विधि सीखने तक मानव ने अपने रहन-सहन के तौर-तरीकों में भी काफ़ी प्रगति कर ली थी जैसा कि इन चारों सभ्यताओं की कहानियों में प्रदर्शित किया जा चुका है। उसने जीवन-निर्वाह के कई अन्य और महत्त्वपूर्ण तरीके अपना लिये थे।

विज्ञान और आविष्कारों में प्रगति
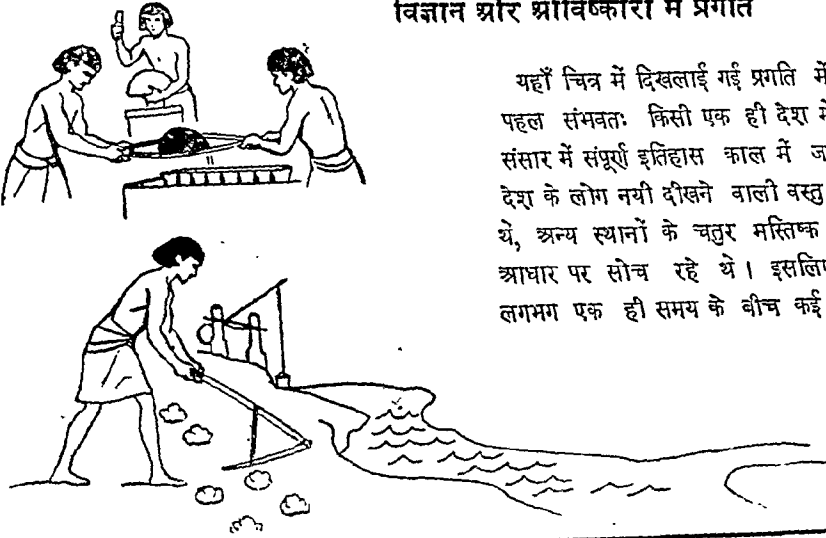
यहाँ चित्र में दिखलाई गई प्रगति में से कुछ पहले पहल संभवतः किसी एक ही देश में नहीं हुई थी। संसार में संपूर्ण इतिहास काल में जबकि किसी एक देश के लोग नयी दीखने वाली वस्तु विकसित कर रहे थे, अन्य स्थानों के चतुर मस्तिष्क भी अक्सर उसी आधार पर सोच रहे थे। इसलिए कुछ आविष्कार लगभग एक ही समय के बीच कई स्थानों में हुए।

(३) निम्नलिखित स्थान नक्शे में दिखाओ :

चीन···गंगा नदी···हिमालय पर्वतमाला···हिन्दुकुश पर्वतमाला···भारत···सिन्धु नदी···मंगोलिया का पठार···तिब्बत का पठार···शान्तुंग प्रायद्वीप···रेशम मार्ग···यांगत्से नदी···पीत नदी।

(४) क्या तुम इन व्यक्तियों का परिचय दे सकते हो ?

अशोक···चन्द्रगुप्त··· कन्फ्यूसियस···गौतम···लोट्से···शिह ह्वांग।

(५) क्या तुम इन देवताओं के बारे में कुछ बता सकते हो ?

ब्रह्मा···बुद्ध···शांग-ती···ताओ।

दो. ग्रुप के रूप में कार्य :

(क) कक्षा के अपने साथियों में से कुछ का एक ग्रुप बनाओ जो भारत या चीन और उनके

शिक्षा में प्रगति

जब मानव ने लिखना सीख लिया तब थोड़ी सी बाकायदा शिक्षा का प्रारंभ हुआ। कुलीन घरों में पैदा हुए बालकों को कक्षाओं में इस कार्य के लिए नियुक्त शिक्षक पढ़ाने लगे। विचार तब तेजी से फैलने लगे और मानव का विकास अधिक तेजी से होना शुरू हुआ।
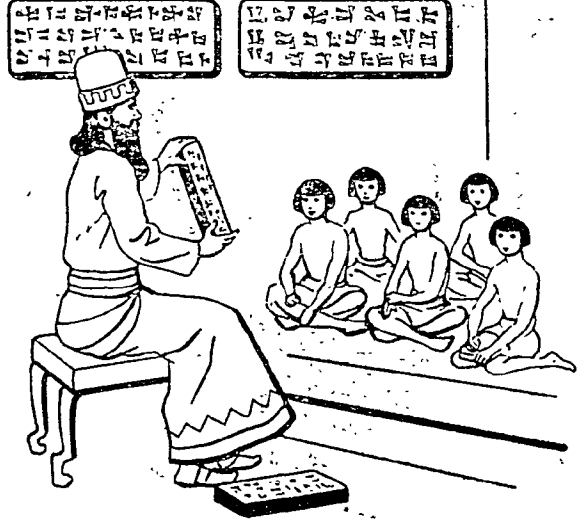
कला में प्रगति

मानव ने उपादेयता को सुन्दरता से संयुक्त किया। कुशल कारीगरों ने नाजुक चीनी मिट्टी के बर्तन, सजावट वाला फर्नीचर, खूबसूरत डिजाइन वाले धातु के बर्तन, तथा रंग-बिरंगी पोशाकें बनाईं। उन्होंने सजावट के लिए सुन्दर वस्तुएं और गहने भी घड़े। उनके धार्मिक जीवन में भी सुन्दरता का एक निश्चित स्थान था और उन्होंने आलीशान विशाल मंदिर बनाये।
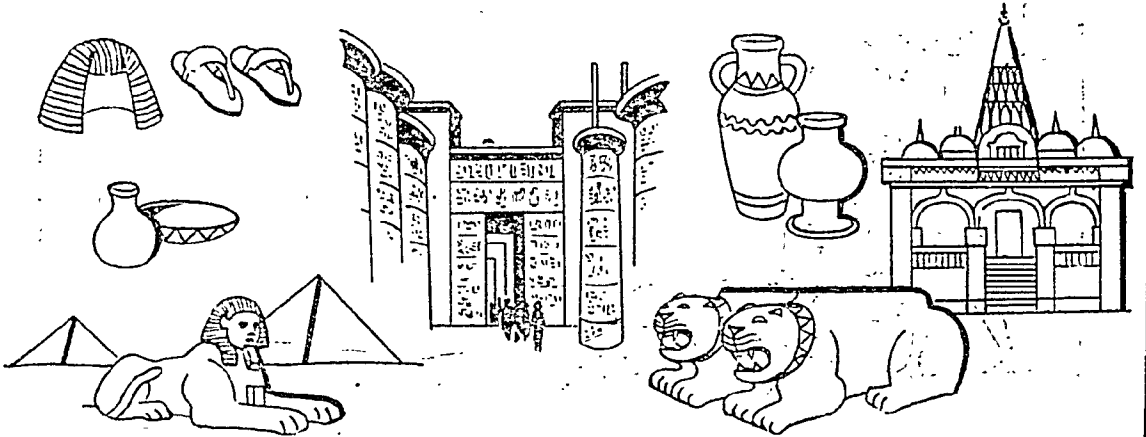
पड़ोसी देशों की आज की घटनाओं की रिपोर्ट इकट्ठी करें। क्या हमारा देश इनमें से किन्हीं घटनाओं में दिलचस्पी रखता है ?

(ख) कक्षा को छात्रों की अभिरुचि के अनुसार तीन वर्गों में बांट लो। प्रत्येक ग्रुप को चीन की भवननिर्माण कला, चीनी मिट्टी के वर्तन या पेंटिंग बुलेटिन बोर्ड के लिए इकट्ठा करने दो।

प्रत्येक ग्रुप के एक सदस्य को अपने ग्रुप की तस्वीरों का व्यौरा समझाने के लिए नियुक्त करो।

तीन. क्या तुम अच्छी तरह अपनी बात समझा सकते हो ?

(क) कक्षा में एक भाषण दो कि चीन या भारत में इतनी गरीबी क्यों है ? इस विषय में

जानकारी पाने के लिए कोई आर्थिक भूगोल देखो।

(ख) भारतीय जनता में गरीबी के बावजूद देश में काफी दौलत है। भारत में इस सम्पत्ति को पैदा करना किस प्रकार सम्भव हो पाया है, इसके कारण बताओ।

(ग) विश्व एलमैनैक की सहायता से या अन्य साधनों से ठेठ चीन और अमेरिका का क्षेत्रफल तथा जनसंख्या मालूम करो। इन आँकड़ों से प्रत्येक देश की जनसंख्या का घनत्व निकालो। कक्षा में जनसंख्या के इस घनत्व के फर्क से उत्पन्न समस्याओं पर विचार-विनिमय करो।

(घ) अगर कोई चीनवासी या भारतीय तुम्हारे पड़ोस में हो तो उससे मालूम करो कि उसके देश में कौन से रिवाज उनके लिए महत्त्वपूर्ण और दिलचस्प हैं। कक्षा को बताओ कि तुमने क्या सीखा। अगर सम्भव हो तो अपना कथन चित्रों सहित प्रस्तुत करने के लिए चित्र या अन्य वस्तुएँ प्राप्त करो।

(ङ) निम्नलिखित विषयों में से एक का विवरण दो :

कन्फ्यूसियस…गौतम…चीन में धान की खेती…बौद्ध धर्म…चीन के प्राचीन काल में दरबारी जीवन।

चार. इतिहास बनाम ललित-कलाएँ

(१) अगर तुम कला के छात्र हो तो कुछ चीनी, भारतीय और आधुनिक अमेरिकी डिजाइन कक्षा में ले आओ और बताओ कि प्रत्येक में तुमने क्या सुन्दरता पाई ?

(२) अगर तुम संगीत सीखते हो तो प्राचीन चीनियों या भारतीयों द्वारा प्रयोग किये जाने वाले वाद्ययंत्रों की किस्मों को देखो। उनके चित्र कक्षा में दिखाओ। बताओ कि उनका प्रयोग किस तरह किया जाता था और कैसी ध्वनि उनसे निकलती थी।

(३) अगर तुम्हारे करीब में कोई म्यूजियम हो जिसमें भारतीय या चीनी कला की वस्तुएँ संग्रहीत हों तो उसके संचालक से उन्हें कक्षा को दिखलाने की व्यवस्था करो।

पाँच. चित्र-अध्ययन :

(१) पृष्ठ ६३ पर पीत नदी पर एक चीनी उत्सव का दृश्य है। ऐसे उत्सव क्यों मनाये जाते थे ?

(२) हिमालय से निकलने वाली नदियाँ, जैसा कि पृष्ठ ६९ पर दिखाया गया है, क्यों कभी भी नहीं सूखतीं।

ग्रीस की
गौरव गाथा
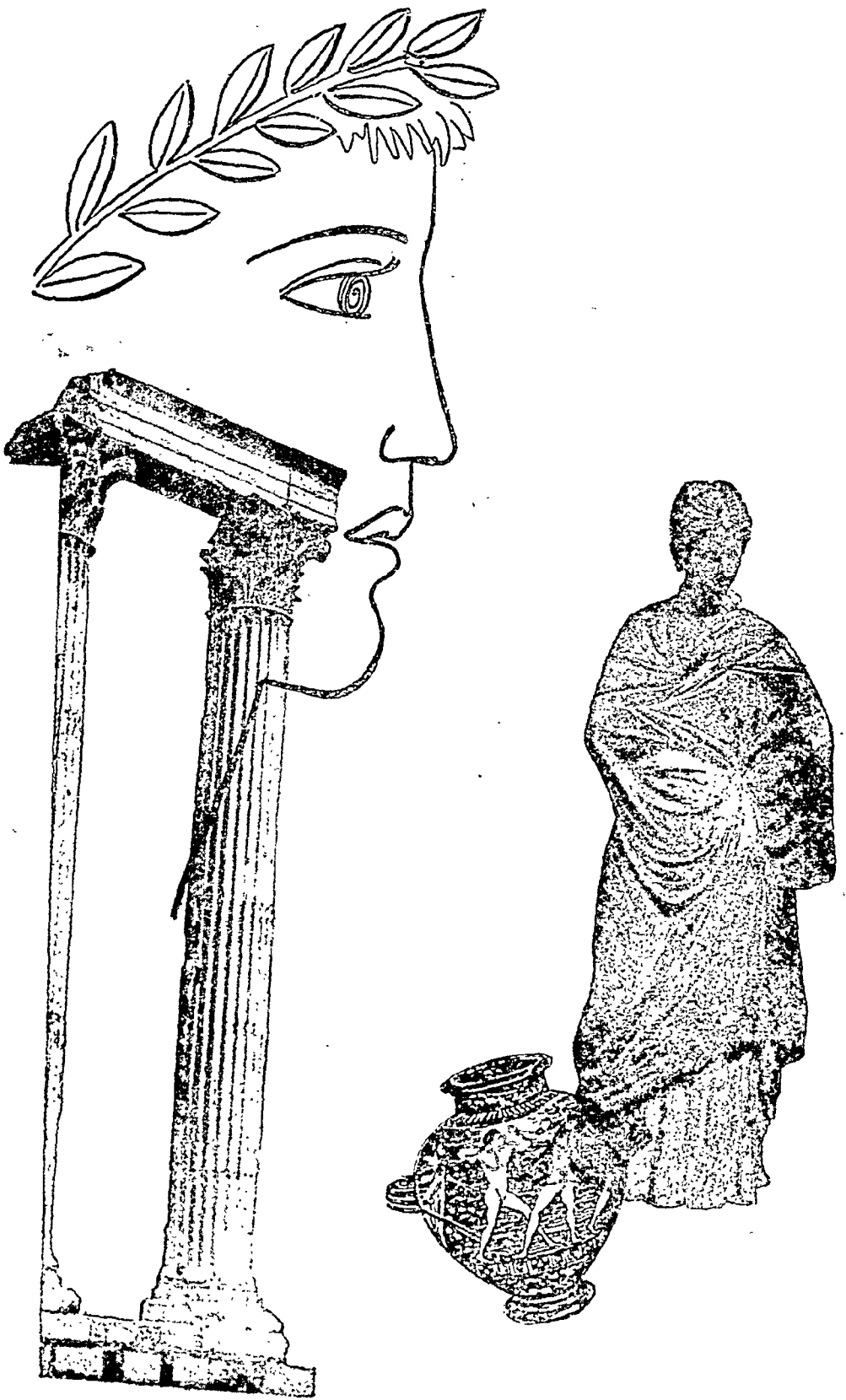
ΟΙ ΕΛΛΗΝΕΣ

ग्रीक लोग

आधुनिक दुनिया में आकार और शक्ति पर अधिक जोर दिया जाता है। आज की दुनिया में वे चीजें महत्त्वपूर्ण हैं। कला और विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में प्राप्त उपलब्धियों और दुनिया को सभी के रहने का एक अच्छा स्थान बनाने के विचारों का भी महत्त्व है। इन सभी बातों में कोई भी देश प्राचीन ग्रीस-वासियों के मुकाबले में नहीं रहा। वे संख्या में कम थे, उनका मुल्क छोटा था और साधन भी अधिक नहीं थे। फिर भी हम आज ग्रीक सभ्यता की कीर्ति का गुणानुवाद करते हैं। इस खण्ड में भी उनकी यशोगाथा के बारे में, जो आज भी हमारे जीवन को प्रभावित करती है, पढ़ेंगे।

सभ्यता के चरमोत्कर्ष पर पहुँचनेवाला पहला यूरोप का देश ग्रीस था। ग्रीक लोग उसी भारत-यूरोपीय शाखा के थे जिसके ईरानी। ग्रीस प्रायद्वीप पर उनकी विजय उनके इतिहास का प्रथम अध्याय थी। इसके बाद ५०० वर्षों के अर्से में, उन्होंने एक ऐसी संस्कृति का निर्माण किया जिसे कई बातों में कभी भी लांघा नहीं जा सका है।

इस अध्याय को पढ़ते हुए तुम कुछ अद्वितीय लेखकों, वास्तुशिल्पियों, मूर्तिकारों, विचारकों और राजनीतिज्ञों के बारे में जानोगे। उनकी कृतियाँ और कार्य आज भी उतने ही महत्त्व के हैं। ये अमेरिकी संस्कृति का भी एक अंग हैं। अगर तुम मूर्तिकार बनना चाहते हो तो तुम्हें ग्रीकों की श्रेष्ठ कृतियों का अध्ययन करना होगा, अगर तुम दार्शनिक बनना चाहो तो तुम्हें ग्रीक विचारकों के विचारों का मनन करना पड़ेगा और अगर तुम वास्तुशिल्पी बनना चाहते हो तो ग्रीस की इमारतों का अध्ययन तुम्हारी तकनी-की शिक्षा और अध्ययन का एक अंग होगा। अगर तुम बड़े कलाकार बन-ना चाहो तो तुम्हें ग्रीक नाटक से सुप-रिचित होना पड़ेगा, अगर तुम चाहते हो कि लेखक बनो तो तुम ग्रीक लेखकों की शैली का अध्ययन किये बगैर अच्छा न लिख सकोगे, अगर तुम्हारी महत्त्वाकांक्षा विज्ञान में है तो तुम्हें प्राचीन ग्रीक वैज्ञानिकों की सफलताओं के बारे में जानना होगा। यद्यपि वे ग्रीकवासी हम से लगभग २५०० वर्ष पहले हुए थे लेकिन वे वास्तव में हमारे बहुत नज़दीकी हैं। हमारे आधुनिक युग का निर्माण प्राचीन ग्रीक सभ्यता के बहुत से विचारों की बुनियाद पर हुआ है। यह भी एक कारण है कि यह ग्रीस सम्बन्धी अध्ययन दिलचस्प रहेगा।

शीर्षक प्राचीन ग्रीक में लिखा है। इसका उच्चारण है हौय हैलाकोस।

5000 BC
4500 BC
4000 BC
3500 BC
3000 BC
2500 BC
2000 BC
1500 BC
1000 BC
500 BC
Birth of Christ
500 AD
1000 AD
1500 AD
2000 AD
Greeks
Hellenistic Age
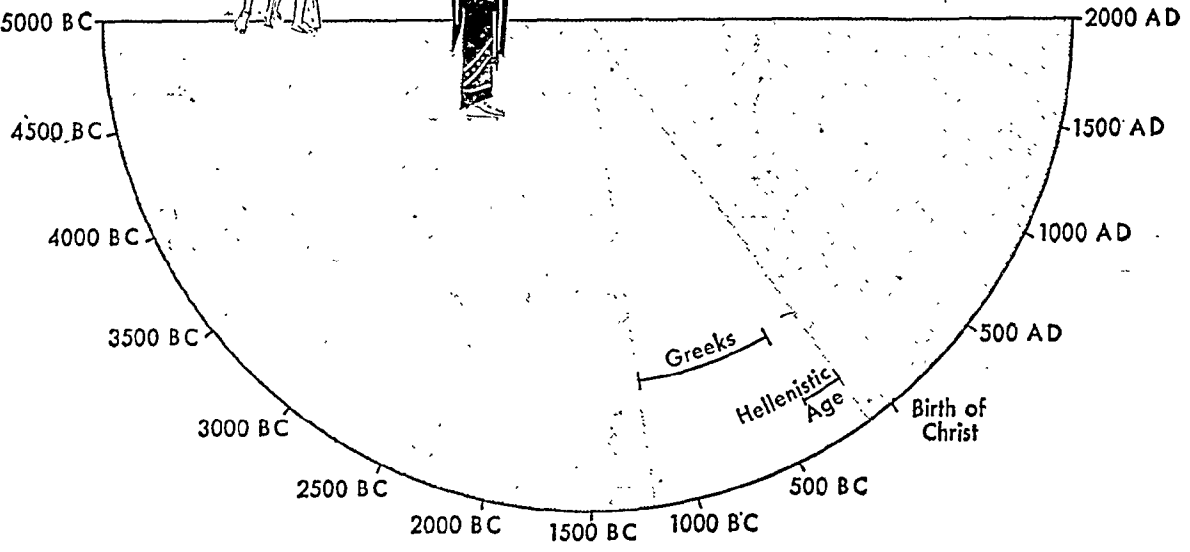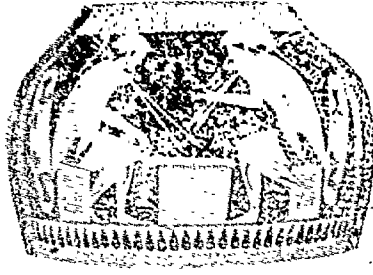
६ ग्रीसवासी : राजनैतिक पथ-परिष्कारक

यूरोप के दक्षिण-पूर्वी कोने पर एक छोटा-सा प्रायद्वीप, जो भूमध्यसागर में चला गया है, ग्रीस का देश है। यह विशुद्ध यूरोपीय सभ्यता का प्रथम घर रहा है। कई छोटे-छोटे टापू ऐजियन सागर में पूर्व की ओर स्थित हैं। कटे-फटे समुद्रतट के किनारे-किनारे गहरी खाड़ियाँ अच्छे बन्दरगाह बनाती हैं, जबकि कोरिन्थ की खाड़ी प्रायद्वीप को लगभग दो हिस्सों में विभक्त कर देती है। वहाँ ग्रीस के आरपार फैली हुई कई पर्वतमालाएँ हैं जो एक हिस्से को दूसरे से जुदा करती हैं। पर्वतों के बीच की छोटी-छोटी घाटियों की जमीन उपजाऊ है और अन्न पैदा करने के लिए अच्छी है। घाटी को घेरे हुए पर्वतों के ढलानों में अंगूर, सन्तरे और जैतून होते हैं जबकि और ऊंचाई पर, पर्वतों की ढलानों पर मवेशियों और भेड़ों के रेवड़ों के लिए चरागाह हैं।

भारत-यूरोपीय कबाइली ग्रीस में बसे

प्रव्रजन—इस भूभाग में लगभग २००० ई०पू० में अर्ध-बर्बर चरवाहों का एक कबीला आया। ये पश्चिम की ओर बढ़नेवाली भारत-यूरोपीय शाखा के थे। वे एका एक और नाटकीय ढंग से नहीं आये अपितु कई पीढ़ियों के क्रम से धीरे-धीरे उत्तर की ओर से स्थानान्तरित हुए। हमलावरों की पहली लहर एकिअनों की थी (१८००-१४०० ई० पू०) जो समूचे प्रायद्वीप पर छा गये और समुद्र पार कर क्रीट तक पहुँचे। लगभग तीन सौ वर्ष बाद डोरियन कबीले वालों की दूसरी लहर आई। उन्होंने एकियनों को परास्त कर ग्रीस के पेलोपोनेसस नामक हिस्से पर, जोकि कोरिन्थ की खाड़ी के दक्षिण में है, अधिकार कर लिया। ये लोग भी क्रीट तक पहुँचे। चार हमलावर कबीलों में सबसे महत्त्वपूर्ण तीसरा कबीला आयोनियनों का था, जो ऐटिका प्रायद्वीप में ऐजियन सागर के मध्य स्थित यूबेआ द्वीप पर और एशिया माइनर के तटों पर जाकर बस गये। हमलावरों का एक और समूह ईटोलिअनों का था जिन्होंने प्रायद्वीप के उत्तरी हिस्से पर अधिकार जमाया। चूँकि इन कबीले वालों में कोई भी लिखना नहीं जानता था,

हैरोडोटस पांचवीं शताब्दी ईसापूर्व का एक इतिहासकार था। उसकी रचनाएं मनोरंजक थीं, पर कहीं-कहीं कल्पनाप्रसूत थीं।
शोनफैल्ड कलेक्शन फ्राम थ्री लायन्स।

इसलिए उन्होंने अपना कोई विवरण नहीं छोड़ा। हम उनके बारे में बहुत-थोड़ा जानते हैं, लेकिन अन्त में उन्होंने समूचे ऐजियन जगत् पर अधिकार कर लिया।

ये घुमक्कड़, लड़ाकू कबीलेवाले चरवाहे थे जो मवेशी और भेड़ें पालते थे, लेकिन ज्यों-ज्यों वे ग्रीस में बसते गये, उन्होंने शनैः-शनैः कई वर्षों के दौरान, कृषि को आजीविका के साधन के रूप में अपनाया। किसान गाँवों में रहते थे और गाँवों के चारों ओर स्थित अपने खेतों में काम करते थे। कृषि के तरीके वही थे जो मिस्र में थुटमोस तृतीय के जमाने मे थे। ग्रीक अनाज को हाथ से बोते और काटते थे। हवा में भूसी उड़ा ली जाती थी और गेहूँ तथा जौ के दाने बटोरकर टोकरियों में रख लिए जाते थे। ग्रीस की अधिकांश भूमि जोतने योग्य नहीं थी और ज्यों-ज्यों जनसंख्या बढ़ती गयी, ग्रीकों के लिए यह जरूरी हो गया कि वे अपने प्रयोग के लिए कुछ अन्न आयात करें।

नगर-राज्य का विकास—ज्यों-ज्यों असभ्य ग्रीक कबाइली (१२००-१००० ई० पू०) शताब्दियों के बीच यहाँ बसे, उन्होंने वहाँ पायी जाने वाली ऐजियन सभ्यता को उखाड़ फेंका, लेकिन उस संस्कृति की कुछ बातें उन्होंने अपनाई। विजित लोग प्रजा बना दिये गये लेकिन अन्त में जातियों में अन्तर्जातीय विवाह होने लगे और ग्रीकों का इतिहास एक मिली-जुली जाति का इतिहास बना।

ग्रीक छोटी उपजाऊ घाटियों में बसे थे और इसलिए, वे पर्वतमालाओं से एक-दूसरे से जुदा थे। इन बस्तियों का छोटे नगर-राज्यों के रूप मे विकास हुआ। प्रत्येक नगर-राज्य अपने चारों ओर के गाँवों को मिलाकर एक स्वतन्त्र राष्ट्र के रूप में था, जिसमें एक राजा और प्रमुख नागरिकों की एक परिषद् होती थी। ग्रीस में ऐसे अनेक नगर-राज्य थे लेकिन इनमें से चार इतिहास में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण बने। ये थे। व्यापारिक शहर कोरिन्थ, पेलोपोनसस का प्रधान नगर स्पार्टा, थेबीज, जो ग्रीस के बियोशिया प्रदेश का नेता था, और ऐटिका प्रायद्वीप स्थित एथेन्स।

फूट की ओर ले जाने वाले तत्त्व—जब तक यात्रा के साधन सुधरे और पर्वतों से होकर एक शहर से दूसरे में जाना सुगम हुआ, उनके छोटे-से राष्ट्रों के बीच इतनी गहरी राज्यभक्ति पैदा हो गई थी और इस तरह की विभिन्न सरकारें कायम हो गयी थीं कि नगर-राज्यों के बीच गहरी प्रतिद्वन्द्विता थी। ग्रीक इन प्रतिद्वन्द्विताओं और आपसी मनमुटावों से कभी उबर नहीं पाये। इस आपसी फूट में प्राचीन ग्रीकवासियों के, एक स्वतन्त्र राष्ट्र के रूप में, पतन के बीज मौजूद थे।

एकता की ओर ले जाने वाले तत्त्व—इस ईर्ष्या के बावजूद ग्रीकों में एक-दूसरे के प्रति भाईचारे की भावना थी। जो ग्रीसवासी नहीं होते थे, उन्हें वे बाहरी लोग या बर्बर कहते थे। चूँकि उनका विश्वास था कि उनका पूर्वज हेलेन नाम का व्यक्ति था, इसलिए वे अपने को हेलेनीज, अपने देश को हेलास और अपनी सभ्यता को हेलेनिक सभ्यता कहते थे। वे कई बोलियाँ बोलते थे, लेकिन समस्त ग्रीस की भाषा एक-दूसरे के बहुत करीब थी इसलिए विभिन्न नगर-राज्यों के नागरिकों को एक-दूसरे की बात समझने में ज्यादा दिक्कत नहीं होती थी। समस्त ग्रीस मे उनके महाकवि होमर की कहानियाँ सुनी जाती थीं और उनकी सराहना की जाती थी क्योंकि उसने उन्हें उनका पिछला इतिहास बताया था। यह

सारे भूमध्यसागरीय जगत् में ग्रीक नगर-राज्य थे। उनके देवताओं का निवास ओलिम्पस पर्वत पर माना जाता था।
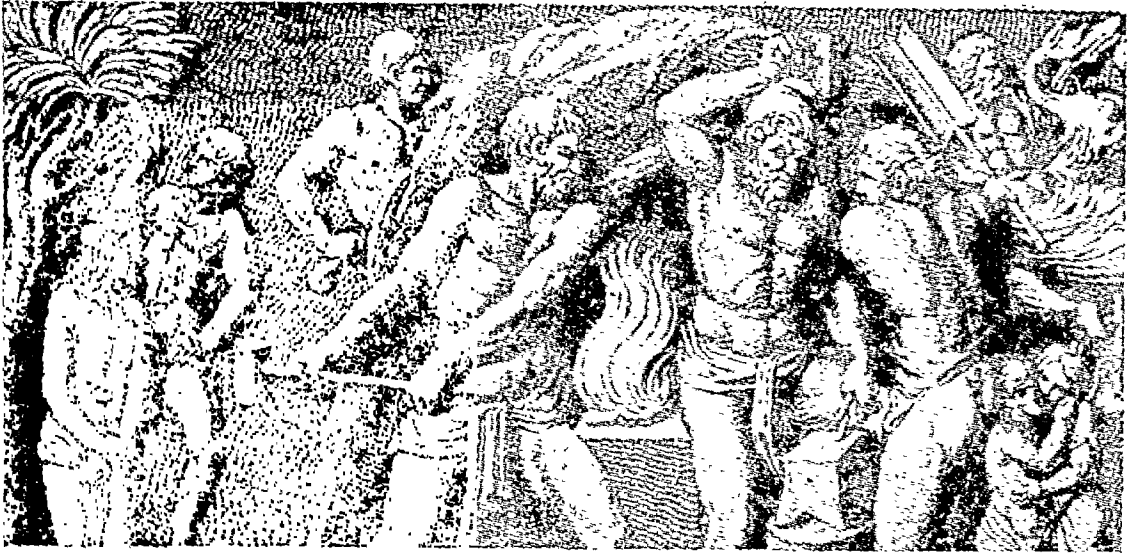
बैटमैन आर्काइव

ग्रीक पुराणसाहित्य में मानवजाति को अग्नि देने वाले व्यक्ति प्रोमेथियस ने यह जीअस के यहाँ से चुराई थी। इस पुराने काष्ठचित्र में यह चोरी अंकित की गई है। इस चोरी के अपराध में प्रोमेथियस को काकेशस में जंजीर से बांधकर डाल दिया गया था।

इतिहास सभी ग्रीकों का था, चाहे वे किसी भी नगर-राज्य के हों। सभी ग्रीसवासी एक ही तरह के देवताओं की पूजा करते थे और उनके सम्मान में होनेवाले उत्सवों में शामिल होते थे। कभी-कभी ये एकत्व पैदा करनेवाले तत्त्व विजयी होते थे और ग्रीक के नगर-राज्य सहयोग से काम करते थे। लेकिन अधिकांश समय, वे एक-दूसरे से सहयोग नहीं करते थे।

ग्रीक धर्म—होमर ने हमारे समक्ष देवताओं के विविध रूप और उनके रहन-सहन के ढंग प्रस्तुत किये हैं। बड़े देवी-देवता ओलिम्पस पर्वत पर निवास करते थे। ज्योस आकाश का राजा और मुख्य देवता था। एथेना युद्ध की देवी थी और एथेन्स की विशेष संरक्षिका थी। अन्य देवियाँ जीवन के अन्य पहलुओं की अधिष्ठात्री थीं। ग्रीक लोगों को विश्वास था कि उनके देवता उनके बहुत करीब थे। इसके अतिरिक्त देवताओं के आचरण मानवों के-से थे, जैसा कि होमर ने उन्हें चित्रित किया है। वे विवाह करते थे, एक-दूसरे से ईर्ष्या रखते थे, उन्हें क्रोध भी आता था और उनका आचरण अक्सर प्रशंसनीय नहीं रहता था। ऐसे देवी-देवता ग्रीकों को अच्छे कार्यों या ठीक आचरण की प्रेरणा नहीं देते थे।

१. ग्रीस में कबायलियों के प्रव्रजन की कहानी लिखो।
२. चार मुख्य ग्रीक नगर-राज्यों के नाम और स्थिति बताओ।
३. ग्रीस के भूगोल का उसकी राजनीति पर क्या प्रभाव पड़ा ?
४. ग्रीक नगर-राज्यों में एकता पैदा करने वाले प्रभाव कौन से थे ?
५. प्रमुख ग्रीक देवताओं में से दो के नाम बताओ।
६. आरम्भिक ग्रीक धर्म के बारे में सबसे अधिक जानकारी हमें किस लेख से मिलती है।

ग्रीकों का अल्पतन्त्र और लोकतन्त्र का परीक्षण

राजतन्त्र के दिन—ग्रीस के शहरों का जितना सम्पर्क आपस में रहता था, उससे अधिक बाहरी दुनिया से रहता था। इसलिए प्रत्येक नगर-राज्य में अपने किस्म की सरकार और अपने किस्म का रहन-सहन विकसित हुआ।
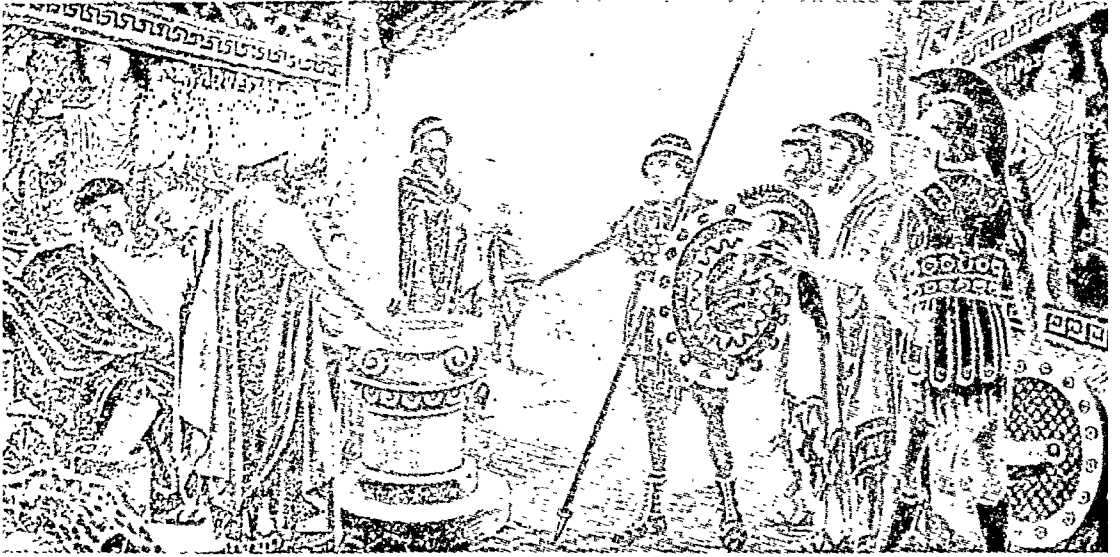
बैटीमैन आर्काइव

इस चित्र में एक युवक ग्रीक सैनिक को सेना की शपथ दिलाई जा रही है। इसकी सजावदार ढाल, किरीट और दोनों तरफ नोकों वाला लम्बा भाला देखिए। दीवारों पर बहुधा ऐसे चित्र बने रहते हैं।

ग्रीस के सभी नगर-राज्यों की शुरूआत राजतन्त्र से हुई। इनके शासक राजा हुआ करते थे जिनको सलाह देने के लिए बुजुर्ग सरदारों के दल हुआ करते थे। इन सरदारों से परिषद् (कौंसिल) बनी होती थी। अस्त्र-धारी नागरिकों का, जो शहर के महत्त्व-पूर्ण मामलों को तय करने के लिए इकट्ठे होते थे, असेम्बली का रूप बन जाता था। जैसे-जैसे समय बीतता गया, विभिन्न राज्यों की सरकारों का विकास अलग-अलग रूप से हुआ। सरकार में इस प्रकार की विभिन्नताओं का होना उनके मिल-जुल कर रहने में एक दूसरी बड़ी रुकावट थी। यह एथेन्स और स्पार्टा के बारे में, जिनका ग्रीस के इतिहास में इतना महत्त्वपूर्ण हिस्सा रहा, विशेष रूप से सच निकला।

स्पार्टा का कुलीन-तन्त्र—परम्परा के अनुसार स्पार्टा के विधान की रचना एक बुद्धिमान स्पार्टा-निवासी कुलीन व्यक्ति लाइकर्गस ने की। उसने स्पार्टा के लिए एक सरकार बनाई जो अल्पतन्त्री या थोड़े-से कुलीन सदस्यों द्वारा संचालित सरकार थी। इनमें से दो राजा प्रधान थे जिनका प्रमुख कार्य सैन्य-संचालन था। स्पार्टा में तीन वर्गों के लोग थे: कुलीन, स्वतन्त्र व्यक्ति और हेलोट (गुलाम)।

स्पार्टा की पूर्ण नागरिकता कुलीनों तक ही सीमित थी। प्रत्येक कुलीन व्यक्ति की एक बड़ी जागीर होती थी लेकिन चूंकि उसकी सैन्य-सेवाएँ ६० वर्ष की उम्र तक चलती थीं, इसलिए वह घर पर बहुत कम समय बिताता था। कुलीनों को तीन शर्तें पूरी करनी होती थी। उनके लिए कुलीनों का पुत्र होना अनिवार्य था। उनके लिए सैन्य शिक्षा का प्रशिक्षण लेना परमावश्यक था और ३० वर्ष की उम्र तक उन्हें सैनिक बैरकों में रहना पड़ता था। सुशिक्षित लोगों का यह दल अपने जमाने की सर्व-श्रेष्ठ सेना बनाता था।

स्वतन्त्र नागरिकों को व्यापार और दस्तकारी के काम करने की अनुमति थी।

जागीरों में मेहनत-मजदूरी का काम हेलोट कहलानेवाले गरीब किसान करते थे जो अपनी फसलों का आधा मालिकों को देते थे। हेलोटों को खेत छोड़ने की अनुमति नहीं थी और उनके साथ निर्दयता का व्यवहार किया जाता था।

स्पार्टा के कानूनों, सरकार और रहन-सहन ने

शहर को एक सैनिक छावनी का रूप दे दिया था और वहाँ सांस्कृतिक या राजनैतिक सुधारों के लिए कोई गुंजायश नहीं थी। परिणामस्वरूप, स्पार्टा ने अल्पतन्त्र से आगे, राजनैतिक रूप में, कभी भी प्रगति नहीं की। यह सब होते हुए भी पूर्वीय देशों के पुराने साम्राज्यों से, जहाँ एक व्यक्ति का शासन होता था, वह कहीं अधिक लोकतन्त्रात्मक था। स्पार्टा में, सरकार में, सेना के सदस्य भी हुआ करते थे।

एथेन्स का कुलीनतन्त्र—एथेन्स में भी, एक काल में अल्पतन्त्र रहा। इससे एथेन्सवासियों को संतोष नहीं हुआ। अन्त में उन्होंने सुधारों की मांग की। एक जबरदस्त और लम्बे संघर्ष के बाद, लगभग ६२१ ई० पू० में, ड्रैको नामक एक नेता ने एथेन्स के लिए लिपिबद्ध कानून बनाये। गोकि ये कानून बड़े सख्त थे, फिर भी जनता खुश थी क्योंकि कम-से-कम अब वे जान सकते थे कि कानून क्या हैं। इससे पूर्व, कानून लिखित नहीं थे और बेईमान न्यायाधीशों द्वारा आसानी से बदले जा सकते थे।

जब ग्रीकों का इटली और कालासागर के क्षेत्र में फैलाव हुआ, तब एथेन्स वालों ने व्यापार से खूब धन कमाया और शिल्पकर्म के लिए नया धनी वर्ग शहर में बसा। उन्होंने जमीनें खरीद लीं और बड़ी-बड़ी जागीरें बना लीं। गरीब किसान उनकी प्रतियोगिता में नहीं ठहर पाते थे। मन्दी के वर्षों में किसानों को कर्ज लेना पड़ जाता था और वे अपने-आप तथा अपने बच्चों तक को बंधक रख देते थे। जब वे अपना कर्ज चुकाने में असमर्थ रहते उन्हें गुलाम बना लिया जाता था।

एथेन्स में लोकतन्त्र का विकास—ऐसे समय में सोलन नामक एक महापुरुष एथेन्स में एक सुधारक के रूप में आगे आया। यद्यपि वह स्वयं कुलीन वंश का था लेकिन वह गरीबों से सहानुभूति रखता था और चाहता था कि उनके बोझों से उन्हें छुटकारा दिया जाय। उसने एथेन्स को नया विधान दिया। उसमें व्यवस्था थी कि (१) वे सभी लोग जो कर्ज के कारण गुलाम बनाये गये हैं, स्वतन्त्र किये जायं और भविष्य में कोई भी व्यक्ति कर्ज के लिए गुलाम नहीं बनाया जायगा। (२) प्रत्येक नागरिक, चाहे वह जितना भी गरीब हो, असेम्बली में भाग लेने का हकदार होगा। (३) सब एथेन्सवासी अपनी दौलत के हिसाब से वर्गों में बांट दिये गये और सिर्फ उच्च वर्ग ही उच्च पदों के लिए चुना जा सकता था। (४) जूरी प्रथा चलाई गयी, जिसके पास सभी नागरिक अपील कर सकते थे।

सोलन लोकतांत्रिक नहीं था। वह कुलीनों के शासन में आस्था रखता था, जनता के स्वशासन में नहीं, लेकिन उसने सर्वसाधारण की स्वतन्त्रता को सुरक्षित कर दिया था और इस प्रकार एथेन्स के लिए अधिक उदार सरकार की दिशा में कदम उठाया।

सोलन के सुधारों से सर्वसाधारण जनता को सहायता मिली लेकिन सरकार की बागडोर दृढ़तापूर्वक कुलीनों के ही हाथ में रही। बाद में एक अन्य सुधारक हुआ जिसने एथेन्स को अधिक लोकतन्त्रात्मक

ग्रीकों के लिए कानून और नियम बना कर सोलन दस वर्ष के लिए वहाँ से चला गया जिससे वे लोग स्वयं उन कानूनों को चला सकें।

बैटीमैन आर्काइव

बनाया। यह व्यक्ति क्लीस्थनीज़ था। उसके सुधारों में नागरिकता का अधिकार सभी स्वतन्त्र लोगों तक बढ़ाया गया। उसने मतदान के लिए पुराने कुलीन वर्ग के विभेद को, जिसे सोलन ने आरंभ किया था, खत्म कर दिया। क्लीस्थनीज़ ने नागरिकों में से चुने गये ५०० सदस्यों की एक परिषद् बनाई जो एक वर्ष तक शासन करती थी। चूंकि कोई भी व्यक्ति दो कार्य-कालों से अधिक परिषद् का सदस्य नहीं रह सकता था, इसलिए नागरिकों में बहुसंख्यक लोगों को इस संस्था के कार्य में भाग लेने और अधिक राजनीतिक अनुभव प्राप्त करने का अवसर मिलता था। एथेन्स विश्व में प्रथम राज्य बन गया था जहाँ कि सभी पुरुष नागरिकों को सरकार पर प्रभाव डालने की सुविधा प्राप्त थी। यह एक अग्रिम कदम था, यद्यपि एथेन्स के बहुत-से लोग नागरिक नहीं थे।

औपनिवेशिक प्रसार का ग्रीकों पर प्रभाव

औपनिवेशिक प्रसार—१२०० से १००० ई०पू० के बीच का समय ग्रीकों के समूची ऐजियन दुनिया में प्रसार का काल रहा है। बाद में प्रसार का एक और काल ७५०-५०० ई०पू० आया जब कुछ ग्रीक अपने शहरों से स्थानान्तरित हुए और उन्होंने काला सागर के तटवर्ती क्षेत्रों में, ग्रीस के दूसरी ओर उत्तरी अफ्रीकी तट पर, इटली में और सुदूर पश्चिम तक, जो आजकल दक्षिण फ्रांस कहलाता है, उपनिवेश बसाये। छोटी छोटी बस्तियों से उन्होंने काला सागर के प्रवेशद्वार पर बाईजेन्टियम, सिसली में सिराक्यूस, दक्षिण गॉल में मारसेलीज और उत्तरी अफ्रीका में साइरीनी नामक प्रमुख शहरों का विकास किया।

अधिकांश लोगों ने ग्रीस इसलिए छोड़ा कि वहाँ आबादी घनी हो गयी थी और आराम की जिन्दगी बिताने की सुविधाएँ नाकाफी थीं। उन्हें आशा थी कि पश्चिम की ओर के क्षेत्र में ज्यादा जमीन होगी। जहाँ कहीं भी ये बस्तियाँ बसायीं गईं स्वतन्त्र ग्रीक नगर-राज्यों का अभ्युदय हुआ। वे अपनी मातृभूमि के नगर-राज्य से व्यापार करते थे और उसके प्रति वफादारी की भावना उनमें थी, लेकिन उनका राजनीतिक गठबंधन उसके साथ नहीं था। यह निःसंदेह उस नगर-राज्य के विचार का प्रतिपादन था जिससे उपनिवेश बसाने वाले ग्रीस में परिचित हुए। जहाँ-कहीं भी ग्रीक गये, वे अपनी संस्कृति, अपनी भाषा, अपने लिखने का ज्ञान, जिसे उन्होंने फीनीशियन व्यापारियों से सीखा था, होमर की कविताएँ, ग्रीक धर्म, विचार और उत्पादन की जानेवाली वस्तुएं
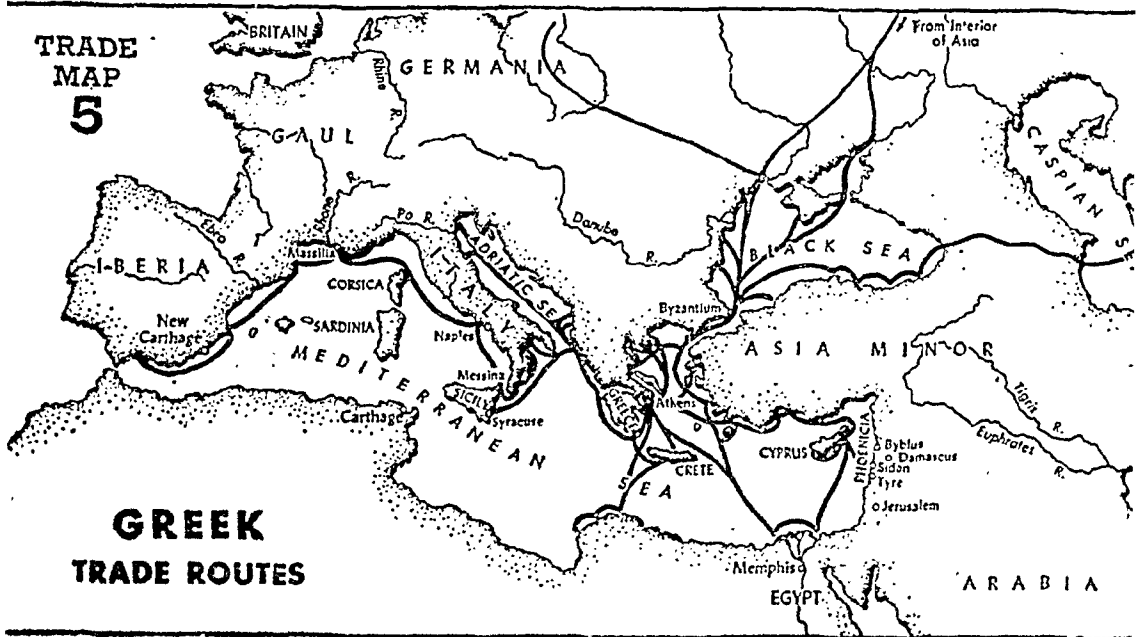
व्यापार नक्शा ५—ग्रीक व्यापार मार्ग।

साथ ले गये। संक्षेप में, प्रत्येक ग्रीक-उपनिवेश ग्रीक-संस्कृति का एक केन्द्र था।

ग्रीस का वाणिज्य—ईसापूर्व आठवीं और सातवीं शताब्दियों में ग्रीसवालों ने बड़े पैमाने पर विदेशों से व्यापार बढ़ाया। चूँकि ग्रीस का कोई भी स्थान समुद्र से एक सौ मील से अधिक दूर नहीं है, अतः स्वभावतः समुद्र से वाणिज्य और व्यापार चमका। जो मार्ग उन्होंने अपनाये, वे अधिकांशतः समुद्रों के किनारे-किनारे थे क्योंकि नावें अभी छोटी थीं और उन्हें खेने के लिए पालों और नौका खेने-वालों की शक्ति पर निर्भर रहना पड़ता था। ग्रीक पश्चिम में और काला सागर के इर्द-गिर्द अपने उपनिवेशों से और मिस्रियों, ईरानियों तथा फीनी-शियनों से व्यापार करते थे।

शिल्पकला—चूँकि एथेन्स अधिक गेहूँ, जौ और अन्य खाद्यान्न आयात करता था, इसलिए उसने अपना ध्यान निर्माण की ओर अधिक और कृषि की ओर कम लगाया। हम यह नहीं सोच सकते कि एथेन्स में बड़े कल-कारखाने रहे होंगे। दूकानें छोटी-छोटी थीं। उनके मालिक शिल्पी थे, जिन पर शहर को गर्व था क्योंकि वे बेहतरीन चीजों का निर्माण करते थे। उनमें से अधिकांश स्वतन्त्र थे जो दूसरों के लिए काम करने के बजाय अपनी चीजें स्वयं निर्मित करते और बेचते थे, यद्यपि कुछ दूकानों पर कुछ मजदूरी करने वाले कारीगर भी थे। वहाँ रजतकार, स्वर्णकार और ताम्रकार थे, लेकिन मुख्य धंधा मिट्टी के बर्तन, सुराहियाँ, तेल के पीपे और शराब के पीपे बनाना था, जिन्हें सुन्दरतम आकृतियों में बनाया जाता था। कुम्हार की कृति की सुन्दरता की जितनी प्रशंसा की जाए, थोड़ी है। कुम्हार के चाक पर कलश बना लिये जाने के बाद एक आर्टिस्ट उसे मनमोहक डिजायनों से संवारता था। नजदीकी खान से लाई गई मिट्टी पीली-लाल होती थी और आर्टिस्ट उसे काले रंग से रंगता था। मिट्टी के बर्तन बनाने की कला से एथेन्स को धन और प्रसिद्धि दोनों ही प्राप्त हुए और शीघ्र ही उसने विश्व की शिल्पकला का नेतृत्व संभाला।

आर्ट इन्स्टीट्यूट आफ शिकागो

एथेन्स के लोगों का अपने दस्तकारों, विशेषतः बर्तन बनाने वालों की निपुणता और कला पर गर्व करना उचित ही है।

१. ग्रीकों द्वारा प्रयुक्त तीनों विभिन्न किस्म की सरकारों के नाम बताओ।
२. स्पार्टा किन वर्गों में बँटा हुआ था?
३. किस प्रकार नेताओं—ड्रेको, सोलन और क्लीस्थनीज ने एथेन्स के राजनीतिक और आर्थिक जीवन को अधिक लोकतंत्रात्मक बनाने की कोशिश की?
४. ग्रीकों ने कब और क्यों उपनिवेश बसाये? चार शहरों के नाम बताओ जहाँ पहले ग्रीक बस्तियों की शुरुआत हुई?

एथेन्स को नेतृत्व मिला

फारस (ईरान) से युद्ध—जब ग्रीक, जो अपनी मातृभूमि में रह गये थे, महत्ता और शक्ति में बढ़ गये तब उनका दारा महान् द्वारा शासित ईरानी साम्राज्य से संघर्ष हो गया। तुम्हें स्मरण होगा कि एशिया माइनर के आयोनियन शहर फारस ने जीत लिये थे और वे ईरानी हुकूमत के अन्तर्गत थे। ईरानी निर्दयी मालिक सिद्ध हुए और कुछ ग्रीकों ने उनके खिलाफ विद्रोह किया। उस महान् राजा के मुकाबले अकेले जीत पाने में असमर्थ होने के कारण
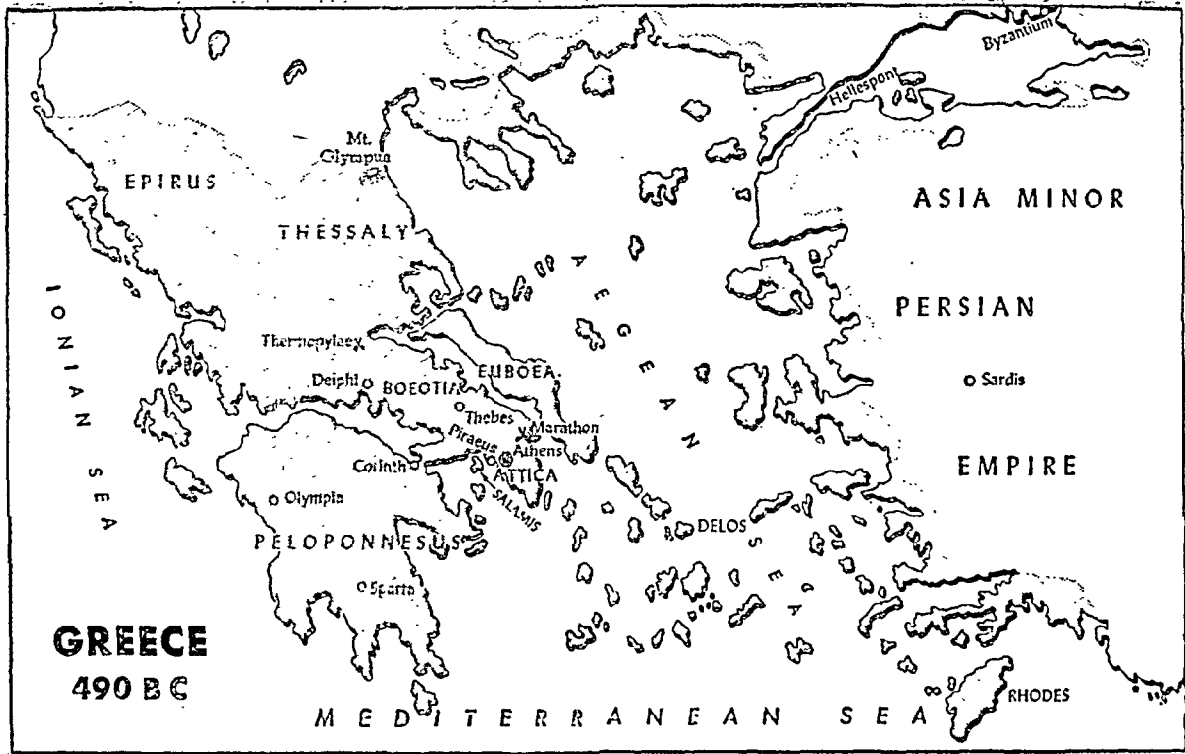
ग्रीस और फारस में संघर्ष लगभग अनिवार्य था। एशिया माइनर के ग्रीक राज्य फारस की सीमा पर थे और उसे प्रायः तंग करते रहते थे।

उन्होंने एन्थेस से सहायता मांगी। इससे दारा इतना अधिक रुष्ट हुआ कि उसने इस प्रकार से हस्तक्षेप को सदा-सर्वदा के लिए खत्म करने का निश्चय किया। उसने एथेन्स के खिलाफ बहुत बड़ी स्थल और जल सेना भेजी, लेकिन तूफान ने उसके नाविक बेड़े को समुद्री चट्टानों से टकरा दिया और उसकी स्थल सेना को थ्रेस के बीच के लम्बे मार्ग से गुजरने पर अनेक कठिनाइयाँ झेलनी पड़ीं। दारा को कुछ समय के लिए हमले का परित्याग करने को बाध्य होना पड़ा। बहरहाल, उसने दूसरी सेना तैयार की और ४६० ई० पू० में उसे एथेन्स के विरुद्ध भेजा। एथेन्स के सैनिक, अपने सुयोग्य कमाण्डर मिल्टीएडीज़ के नेतृत्व में ईरानियों से लोहा लेने निकले। एथेन्स के उत्तर-पूर्व स्थित मेराथोन के मैदान में दोनों सेनाओं में युद्ध हुआ और दारा की शक्तिशाली सेना की करारी हार हुई। ईरानियों के ६,४०० सैनिक युद्ध के मैदान में मारे गये जबकि एथेन्स की ओर से सिर्फ २०० मरे। बचे हुए ईरानी अपनी नावों में भाग गये और कुछ समय के लिए एथेन्स बच गया।

दस वर्ष बाद ज़ेरेक्सीज़ ने, जो ४८६ ई० पू० में ईरान का शासक बना, हार का बदला लेने का दृढ़ संकल्प किया। उसने ग्रीक शहरों में दूत भेजकर उनसे पानी और जमीन मांगी, जो ईरानियों के लिए आधीनता स्वीकार करने के प्रतीक थे। अधिकांश शहरों ने इसे स्वीकार कर लिया क्योंकि उन्हें डर था कि अगर उन्होंने इंकार किया और वे हार गये तो उनका भविष्य बहुत बुरा होगा। पर एथेन्स ने दूतों को खड्ड में धकेल दिया और स्पार्टा ने उसे भेजे गये दूतों को एक कुएँ में यह कहते हुए डाल दिया कि वे अपना पानी और मिट्टी ले लें। तब एथेन्स और स्पार्टा शक्तिशाली ईरान के खिलाफ संयुक्त रूप से प्रयास करने लगे। स्पार्टा का राजा लियानिडस स्थल सेनाओं का कमाण्डर बनाया गया। उस समय के सबसे बड़े योद्धा एथेन्सवासी थेमिस्टाक्लीज़ ने दो सौ जंगी जहाजों के बेड़े का नेतृत्व सम्भाला, जिन्हें बनाने के लिए उसने एथेन्स को तैयार किया था।

इस तरह ग्रीक लोग हमले के मुकाबले को तैयार हो गये।

ईरानी सेना इतनी विशाल थी कि उसे ऐजियन सागर के पार जहाज से नहीं ढोया जा सकता था, इसलिए उसे स्थल मार्ग से एशिया और यूरोप के बीच हेलिसपोण्ट जलडमरूमध्य को भेजा गया था। ईरानी सेना ने नावों के पुल से हेलिसपोण्ट पार किया। वहाँ से वे ऐजियन सागर का चक्कर काट कर दक्षिण में एथेन्स की ओर बढ़े। उनकी नौसेना तट के किनारे-किनारे उनके साथ-साथ चली।

ग्रीक उनके मुकाबले को बढ़े। उनकी सेना ने थर्मोपली पहाड़ियों में एक दर्रे पर मोर्चा बांधा, जो एथेन्स से १२० मील उत्तर की ओर था। और अनुभव-रहित ऐथेनियन जहाजी बेड़े ने ईरान की नौसेना से मुकाबला किया। एक तूफान की मदद से जिसने फारस की नौसेना के बड़े हिस्से को नष्ट कर दिया था, ग्रीकों ने समुद्री लड़ाई में विजय प्राप्त कर ली। स्थल की ओर ईरानियों को एक ग्रीक गद्दार की मदद मिल गयी। उसने ज़ेरेक्सीज़ को बताया कि किस तरह वह पीछे से हमला करने अपनी सेनाएँ भेज सकता है। ईरानियों की सेनाओं के दो पाटों के बीच में पड़कर स्पार्टा के तीन सौ चुने हुए योद्धाओं ने जो दर्रे पर नियुक्त थे, बहादुरी से शत्रुओं का मुकाबला किया लेकिन एक भी सैनिक जीवित नहीं बचा। ईरानी अब दर्रे से तेजी से आगे बढ़ सकते थे और समूचा ऐटिका उनके लिए खुला हुआ था।

इस संकटकाल में थेमिस्टाक्लीज़ ने सभी एथेन्सवासियों को मुख्यभूमि से दूर, दो द्वीपों में, ले जाने का प्रस्ताव रखा। यह हो जाने पर, उनकी सुरक्षा के लिए बेड़ा सेलेमिस की खाड़ी में लाया गया। थेमिस्टाक्लीज़ ने तब दुश्मनों तक एक झूठी खबर भेजी कि ग्रीक जंगी बेड़ा बन्दरगाह से बाहर खिसकने वाला है। यह चाल काम कर गयी। जब ईरानियों ने हमला किया तब उनकी बड़ी नावें खाड़ी में जमकर नहीं लड़ सकीं। वे आपस में टकराई और उन्होंने एक-दूसरे को डुबो दिया।

ज़ेरेक्सीज़ बच कर स्वदेश की ओर भागा। वह अपने पीछे अपनी स्थल-सेना की कुछ टुकड़ियाँ छोड़ गया लेकिन वे अगले बसन्त में (४७९ ई०पू०) पराजित हुई और ग्रीक उस खतरे से मुक्त हो गये, जो उन्हें आतंकित किये था।

युद्धों से एथेन्स की बहुत बड़ी क्षति हुई थी, उसका नगर जला दिया गया था, उसकी दीवारें ढहा दी गयीं थीं और ऐटिका ध्वस्त कर दिया गया था। फिर भी, एथेन्सवासी घर लौटे और नगर तथा उसकी दीवारों के पुनर्निर्माण के कार्य में जुट गये।

एथेन्स का नेतृत्व—ईरानियों से युद्ध में भारी सफलता प्राप्त करने के बाद एथेन्स की ग्रीस में प्रमुख स्थिति हो चली थी। उसके अकेले ही मेराथौन के मैदान में ईरानियों को पराजित करने और सेलेमिस में उसकी नौसेना की विजय ने उसके लिए प्रतिष्ठा और कभी-कभी ग्रीस के अन्य नगरों की ईर्ष्या अर्जित की। ईरानी युद्ध, वास्तव में, एथेन्स के इतिहास का एक महत्त्वपूर्ण मोड़ था। उनकी भारी विजय से एथेन्स के लोगों में अभूतपूर्व स्फूर्ति पैदा हुई और उन्होंने अपने आपको महान् कला और साहित्य के रूप में व्यक्त किया। सर्वसाधारण व्यक्ति को अपने नगर पर गर्व था और वह राजनीति में हिस्सा लेने को उत्सुक था। वह नगर के पुनर्निर्माण और उसकी बेहतरी के लिए धन के रूप में अपनी सेवाएँ भी अर्पित करने का इच्छुक था।

युद्धों से एथेन्स का ऐजियन सागर पर नियंत्रण हो गया इसलिए उसके व्यापारी अन्य कालों से अधिक व्यापक रूप में व्यापार करने लगे। एथेन्स, जो ईरानियों से युद्ध से पूर्व छोटा, और कई अन्य ग्रीक नगरों से बहुत पीछे था, अब बहुत ऊँचा चढ़ गया था और सभी ग्रीस नगरों से बड़ा तथा ऐजियन सागर का मालिक बन गया था।

१. एथेन्स का फारस से युद्ध क्यों ठना? उस समय फारस का राजा कौन था?
२. मेराथौन का युद्ध क्यों प्रसिद्ध है?
३. थर्मोपली की क्या कहानी है?
४. युद्धों में थेमिस्टाक्लीज़ का क्या काम था?
५. युद्धों का एथेंस पर क्या प्रभाव पड़ा?

विचार-विमर्श के लिए प्रश्न

(१) ग्रीकवासी समुद्री व्यापार करने वाले लोग क्यों बने?

(२) क्या राष्ट्रों के बीच प्रतिद्वन्द्विता और ईर्ष्या आज भी वही प्रतिक्रिया पैदा करती है जो

उसने ग्रीक नगर-राज्यों के बीच पैदा कर दी थी ?

(३) किस रूप में ग्रीस की भौगोलिक स्थिति ने उसके विकास पर प्रभाव डाला ?

(४) किस प्रकार भाषा ग्रीकों के बीच एकता लाने वाला तत्त्व थी ? क्या कोई ऐसा प्रमाण है कि आज की दुनिया में भी वह ऐसी शक्ति है ? स्पष्टीकरण करो ।

(५) लोग अमेरिका के नागरिक किस तरह बनते हैं ? यह पद्धति एथेन्स और स्पार्टा की नागरिकता की योग्यताओं से किस तरह भिन्न है ?

(६) स्पार्टा वालों की सरकार प्रणाली में तुम्हें क्या बुराइयां नजर आईं ?

(७) क्या आज भी दुनिया में ऐसी सरकारें हैं जहां जनता राज्य के लाभ के लिए जीती है जैसा कि वे प्राचीन स्पार्टा में जीते थे ?

(८) युद्ध का महत्त्व उसके आकार-प्रकार पर नहीं, अपितु इस बात पर है कि उसका राष्ट्रों के इतिहास पर क्या प्रभाव पड़ा । मेराथौन का युद्ध इतिहास में बहुत महत्वपूर्ण क्यों माना जाता है ?

(९) जार्ज विलियम कर्टिस का तब क्या अभिप्राय था जब उसने "ए काल आफ फ्रीडम" में लिखा कि "मानव इतिहास में हर बड़ा संकट थर्मोपली का दर्रा है और वहां हमेशा लियानिडस और उसके ३०० वीर योद्धा मौजूद रहते हैं. जो अगर विजयी नहीं हो सकते तो अपनी आहुति दे देते हैं ।"

इतिहास के उपकरणों का प्रयोग

एक. नाम, तिथियां और स्थान :

(क) क्या तुम इन शब्दों का अर्थ बता सकते हो ?

असेम्बली···बर्बर···५०० की परिषद्··· हेलास···हेलेनी····हेलोट····एकतंत्र·····कुलीनतंत्र कुलीन (पीयर)

(ख) क्या निम्नलिखित तिथियों के बारे में तुम बता सकते हो ?

२००० ई० पू०···७५०-५०० ई० पू०··· ४९० ई० पू०···१२००-१००० ई० पू०···६२१ ई० पू०···४७९ ई० पू० ।

(ग) नक्शे में स्थान दिखाओ :

ऐजियन सागर···एथेन्स···ऐटिका···सेलेमिस की खाड़ी···कोरिन्थ की खाड़ी····हेलिसपोण्ट··· मेराथौन···मार्सेलीज़····भूमध्यसागर·····माउण्ट ओलम्पस···पेलोपोनिसस···सेलेमिस···· सिसली··· स्पार्टा···सिराकस···थर्मोपली ।

(घ) क्या तुम इन व्यक्तियों के बारे में बता सकते हो ?

क्लीस्थनीज़, ड्रेको, लियानिडस, लायकरगस, मिल्टीएडीज़, सोलन, थिमिस्टाक्लीज़, ज़ेरेक्सीज़ ।

(ङ) क्या तुम इन देवताओं का परिचय दे सकते हो ?

अथेना, ज्यूस

दो. क्या तुम अपने विचार स्पष्ट रीति से प्रकट कर सकते हो ?

(क) निम्नलिखित विषयों में से एक पर विस्तारपूर्वक बताओ :

ग्रीक भाट (कवि), ग्रीक देवता, डेल्फी का भविष्यवक्ता, होमर, ग्रीक मेराथौन के युद्ध में क्यों विजयी हुए ।

(ख) यह मान कर एक संपादकीय लेख लिखो कि अगर उस जमाने में समाचारपत्र होते तो वे सोलन के सुधारों को कार्यरूप दिये जाने के बाद पहले दिन क्या लिखते ?

(ग) प्रत्येक शब्द की, जो अधोलिखित हैं, व्युत्पत्ति और आधुनिक सन्दर्भ में उसका अर्थ स्पष्ट करो । सहायता के लिए कोश देख सकते हो :

वाशिंगटन में "सोलन" एक नये कर प्रस्ताव पर बहस कर रहे हैं ।

उसके खराब आचरण के लिए उसके साथी छात्रों ने उसे **औस्ट्रेसाइज** किया ।

वह अपने समुदाय में **भविष्यवक्ता** माना जाता है । उसके कार्य **बर्बरों** जैसे हैं ।

खिलाड़ियों ने **मेराथौन** दौड़ में भाग लिया ।

तीन. ब्लैक बोर्ड पर :

ब्लैक बोर्ड पर खाने की उन वस्तुओं के नाम गिनाओ जो ५०० ई० पू० में एक ग्रीक किसान के घर पर खाने की मेज पर परोसी गयी होतीं । उसके साथ ही स्कूल कैफेटेरिया की दोपहर के भोजन की लिस्ट लिखो जो इस पाठ को पढ़ने के दिन वहां बना था । अपने गृह-विज्ञान के अध्यापक

की सहायता से उन दोनों भोजनों में विटामिनों और अन्य पौष्टिक तत्वों की जानकारी प्राप्त करके उस सूचना को भी ब्लैक बोर्ड पर लिखो।

चार. क्लास कमेटी कार्य

निम्नलिखित के लिए समितियाँ बनाओ :

(क) एक डायलॉग लिखो :

सोलन और उसके समय के एक कुलीन व्यक्ति के बीच जो उसके सुधारों से भयभीत है।

ड्रेको और एक किसान के बीच, जो सोचता है कि उसके कानून बड़े सख्त हैं।

थिमिस्टाक्लीज और फारस के राजा के बीच जिसके यहाँ उसने सेलेमिस के युद्ध के कई वर्षों बाद नौकरी कर ली है।

दो एथेनियनों के बीच, जो मेराथौन के युद्ध के दूसरे दिन सड़क पर मिले हों।

ज़ेरेक्सीज और उसकी पत्नी के बीच, जो ग्रीस से लौट कर आया हो।

क्लीस्थनीज़ और एक ग्रीक दास के बीच, जो कर्ज़दारी की गुलामी से मुक्त कर दिया गया हो।

(ख) दो लड़कियाँ मिल कर एक ग्रीक पोशाक का माडल बनाएँ।

(ग) वैसे ग्रीक जहाज का एक माडल बनाओ जैसा एथेनियन नौसेना प्रयोग करती थी।
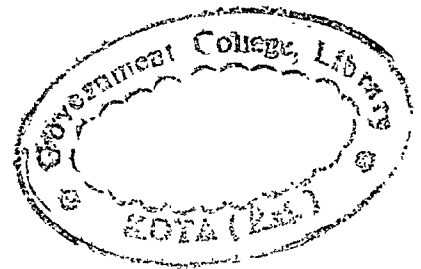
७ संसार ग्रीकों का ऋणी

ईरानियों से युद्धों के कुछ वर्षों बाद पेरीक्लीज़ एथेन्स का नेता या राजनीतिक अधिष्ठाता बना। पेरीक्लीज़ के काल तक (४६०-४२९ ई० पू०) एथेन्स ने शनैः शनैः राजतंत्र से कुलीनतंत्र, और फिर लोकतंत्र की ओर प्रगति की थी। फिर भी एथेन्स की सरकार किसी भी आधुनिक लोकतंत्र की किस्म से बहुत भिन्न थी।

एथेन्स का विशुद्ध लोकतत्र

एथेन्स एक छोटा-सा राष्ट्र था और उसके सभी निवासी, जो वहाँ के नागरिक थे, अपने चुने हुए प्रतिनिधियों के माध्यम से सरकार में भाग लेने के बजाय, जैसा कि लोग भारत या अमेरिका में करते हैं, प्रत्यक्ष रूप से हिस्सा ले सकते थे। इसलिए, एथेन्स की असेम्बली सभी नागरिकों की बनी थी, जो उसे विशुद्ध लोकतंत्र बनाती थी, यद्यपि वे उसे इस नाम से नहीं पुकारते थे। संधियों, शांति और युद्ध में असेम्बली का निर्णय अन्तिम होता था। उसमें पांच सौ सदस्यों की परिषद् (कौंसिल) द्वारा प्रस्तुत किये गये विधेयकों पर बहसें और मतदान होता था। परिषद विधेयक तैयार करती थी जिन्हें असेम्बली को भेजा जाता था और इस बात का ध्यान रखा जाता था कि कानूनों पर अमल हो।

लेकिन एथेन्स के लोकतंत्र की खामी यह थी कि सिर्फ वहाँ पैदा हुए लोग ही नागरिक बन सकते थे। ऐटिका में लगभग ३१५,००० लोगों की आबादी थी। इनमें से लगभग १७२,००० स्वतंत्र नागरिक थे। इनमें वे महिलाएँ और बच्चे भी शामिल थ जो वोट नहीं दे सकते थे। वहाँ लगभग ११५,००० गुलाम और २८,००० विदेशी भी थे जो वोट देने के अधिकारी नहीं थे। इसलिए वोट देने वाले नागरिकों की संख्या थोड़ी थी। तो भी एथेन्स ने मानवसमाज को स्वतंत्रता की ओर बढ़ने की दिशा में बड़ी शक्ति प्रदान की। एथेन्स का लोकतंत्र विश्व में स्वशासन का पहला परीक्षण था। अब तक कभी भी ऐसा लोकतंत्र कायम नहीं हुआ-था जिसमें कि इतने नागरिक राज्य के मामलों में इतने सक्रिय रहे हों।

ग्रीस का स्वर्ण युग—उस काल में, जो पेरीक्लीज़ का युग कहलाता है, एथेन्स अपनी उन्नति की चरम सीमा पर था। बड़े अंश में इसका श्रेय एक व्यक्ति की नीतिज्ञता और बुद्धिमत्ता को था और वह व्यक्ति पेरीक्लीज़ था। सर्वप्रथम, इस बुद्धिमान नेता ने देखा कि एथेन्स की सम्भावित शत्रुओं से रक्षा होनी चाहिए। इसलिए उसने एथेन्स से उसके बन्दरगाह पाईरियस तक, पाँच मील की लम्बाई में समानान्तर दीवारें खड़ी करवा कर उसकी किलेबंदी की। ये लम्बी दीवारें नगर के अपने चारों ओर की दीवार से सम्बद्ध थीं। इस तरह एथेन्स हमेशा इस गलियारे से तब तक अपनी आबादी के लिए आवश्यक अन्न ला सकता था जब तक कि नौसेना उसके बन्दरगाह की रक्षा करती रहे। पाईरियस की गोदियाँ व्यस्त स्थान थीं। यहाँ लगभग हर देश के व्यापारी अपना माल लाते थे और यहाँ से एथेन्स अपने व्यापारियों को भूमध्य-सागरीय जगत् के चारों ओर भेजता था।
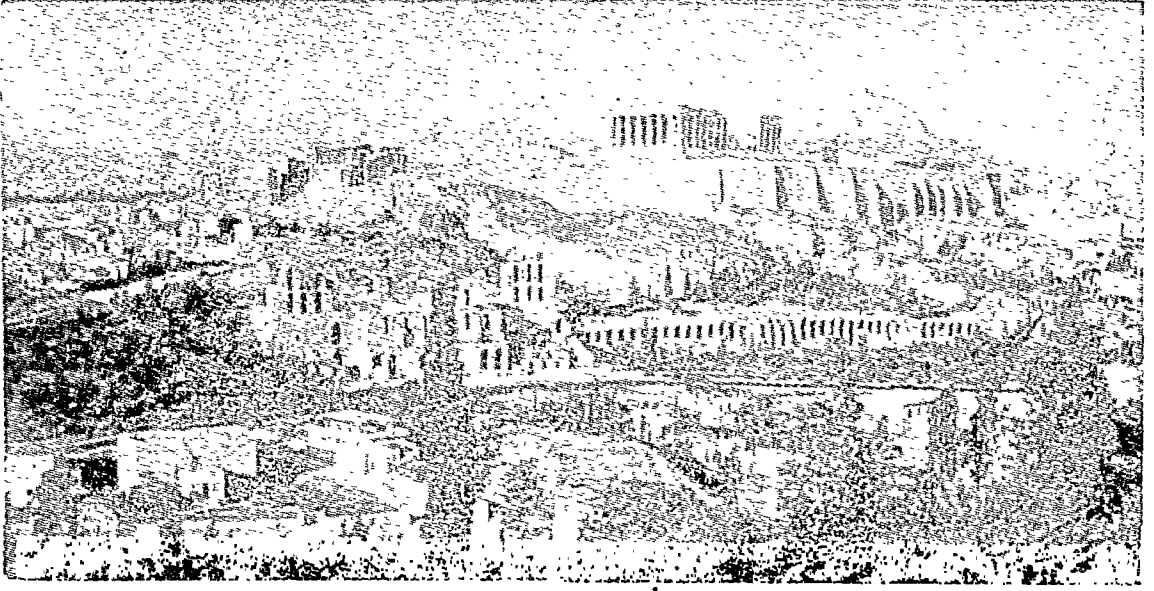
पिक्स

एक्रोपोलिस के अवशेषों से उसके प्रारंभिक सौन्दर्य और भव्यता का कुछ अन्दाजा होता है। सबसे बड़ा भवन पार्थेनन है। यह यूनानी संगमरमर का बना हुआ था जो महीन नक्काशी के लिए बड़ी उपयुक्त वस्तु है।

ईरानी युद्धों ने एथेन्स खण्डहर बना दिया था। पेरीक्लीज़ ने सार्वजनिक इमारतों का, एथेन्स की नयी शक्ति और प्रभाव को ध्यान में रखते हुए, पुनर्निर्माण कराया। एक्रोपोलिस में, जो नगर के मध्य में उठी हुई दो सौ फुट ऊँची पहाड़ी थी, नये और राजकीय मंदिर बनाये गये। इन भव्य मंदिरों में ईरानियों से नगर की रक्षा करने वाली देवी एथेन्स की ही प्रतिष्ठापना नहीं हुई अपितु इन्होंने नगर की सुन्दरता को इतना बढ़ाया कि ग्रीक जगत् में वह अन्यत्र देखने में नहीं आई।

अगोरा या एथेन्स का बाजार भी बड़ा व्यस्त स्थान था। यहाँ एथेन्सवासियों के घरों के लिए विविध चीजें लाई जाती थीं। यहाँ लोग प्लेन वृक्ष और पोपलर वृक्षों की सुन्दर छाया में घूमने और मिलने-जुलने को इकट्ठे होते थे। व्यापारी प्रतिदिन सुबह खड़े किये गये अपने स्टालों में अपना माल सजाते थे। वहाँ मछलियों के दूकानदार, रोटी और शाक-भाजी बेचने वाली औरतें, बकरियों का दूध और शराब बेचने वाले किसान, और फूल बेचने वाली लड़कियाँ होती थीं। लोग अपने परिवार की आवश्यकता की चीजें खरीदने यहाँ आते थे लेकिन वे यहाँ ठहर कर बनने वाले नवीनतम मंदिर या आने वाले खेल या राजनीतिक मामलों के नये मोड़ की बातें करने लगते थे। नगर की और बाहरी दुनिया की खबरें मौखिक रूप से एक से दूसरे व्यक्ति तक पहुँचती थीं।

पेरीक्लीज़ चाहता था कि एथेन्स एक मालदार व्यापारी शहर के अलावा भी कुछ और बने। सबसे कुशल वास्तुशिल्पी और मूर्तिकार शहर की नयी इमारतें बनाने के लिए नौकर रखे गये। एक थियेटर बनाया गया था जहाँ नाटककार अपने नाटक का अभिनय देख सकते थे। पेरीक्लीज़ चाहता था कि एथेन्स विद्वानों का नगर भी बने। वह अपने ज़माने के विचारकों का मित्र था। एथेन्स के सबसे बड़े राजनेता के निर्देशन में वह नगर 'हेलास का स्कूल' बन गया था। अपने भाषणों में पेरीक्लीज़ ने एथेन्स-वासियों के लिए नागरिकता के उच्च सिद्धान्तों को दर्शाते हुए कहा था कि "वह व्यक्ति बेकार है जो सार्वजनिक मामलों में कोई दिलचस्पी नहीं लेता।" पेरीक्लीज़ ने एथेन्स वासियों के लिए बहुत कुछ

किया लेकिन अपने जीवन के अन्त में उसने कहा कि उसे इस बात का सबसे अधिक अभिमान है कि उसके लिए किसी को शोक नहीं मनाना पड़ेगा।

१. पेरीक्लीज़ के काल की लोकतंत्र प्रणाली की सरकार का वर्णन करो।
२. एथेन्स में रहने वाले विदेशियों की क्या स्थिति थी ?
३. एथेन्स कितना बड़ा था ? उसकी जनसंख्या किन-किन वर्गों में बँटी थी ?
४. जूरी प्रणाली का विवरण दो।
५. पेरीक्लीज ने लम्बी दीवारें क्यों बनवाईं ?
६. अगोरा के एक दृश्य का वर्णन करो।
७. पेरीक्लीज़ का काल "एथेस का स्वर्ण युग" क्यों कहलाता है ?

स्पार्टा और एथेन्स की शिक्षण प्रणाली में बड़ा अन्तर था

स्पार्टा की शिक्षा—स्पार्टा और एथेन्स की राजनीतिक प्रणालियों में मौलिक अन्तर था। उसी प्रकार दोनों राज्यों के बच्चों को उनके शहरों के मामलों में भाग लेने के लिए प्रशिक्षित करने की पद्धतियाँ भी भिन्न थीं। स्पार्टा में समस्त प्रशिक्षण ऐसे व्यक्ति का निर्माण करता था जिसका जीवन राज्य द्वारा नियंत्रित था और जो एक समूह में रहकर काम करेगा। इसके विपरीत, एथेन्स में व्यक्तित्व पर जोर दिया जाता था।

स्पार्टा में जब बच्चे का जन्म होता था, तब उसे शारीरिक रूप से स्वस्थ होने पर ही जीवित रहने दिया जाता था। अस्वस्थ बच्चों को पर्वत पर छोड़ दिया जाता था, जहाँ उन्हें जंगली जानवर खा जायें या गुलाम के रूप में पालन-पोषण के लिए उठा लिया जाय। स्वस्थ बालक सात वर्ष तक अपनी मां की देख-रेख में पलता था। स्पार्टा की महिलाएँ शक्तिशाली और साहसी होती थीं और अपने बच्चों को भी वैसी ही ट्रेनिंग देती थीं। युद्ध में जाते हुए अपने पुत्रों को उनकी सलाह होती थी कि "अपनी ढाल खुद लेकर वापस आना या उसी के साथ रह जाना।"

सात वर्ष की उम्र में लड़का राज्य को सौंप दिया जाता था जहाँ वह एक समूह के रूप में अन्य बच्चों के साथ शिक्षा पाता था। उनका किताबी अध्ययन बहुत थोड़ा होता था यद्यपि इनमें से कुछ लोग पढ़-लिख सकते थे और होमर की कविताओं के अंश सुना सकते थे। उनका प्रशिक्षण मुख्यतः शारीरिक था ताकि वे अच्छे सैनिक बनें। वे कवायद करते, खेल-कूद में भाग लेते और खोज करना सीखते थे ताकि अगर आवश्यकता पड़े तो वे चुरा कर अपना भोजन प्राप्त कर सकें। वे बहुत कम कपड़े पहनते, बहुत साधारण भोजन करते और खुले में, सरकंडों पर सोते थे। प्रत्येक रूप में उन्हें कठोर जीवन बिताने की ट्रेनिंग दी जाती थी। वर्ष में एक बार उन्हें बुरी तरह कोड़े मारे जाते थे ताकि वे दर्द सहन करना सीखें। इधर लड़के सख्त ट्रेनिंग प्राप्त करते होते थे और उधर लड़कियाँ घरों में अपनी माताओं द्वारा प्रशिक्षित की जाती थीं, लेकिन उन्हें भी सशक्त रखने के लिए शारीरिक ट्रेनिंग दी जाती थी।

बीस वर्ष की उम्र में लड़के की शिक्षा पूरी हो जाती थी और वह लगभग पन्द्रह अन्य साथियों के साथ मेस-क्लब में भेजा जाता था। वे एक साथ बैरकों में रहते थे और ६० वर्ष की उम्र तक सैनिक बने रहते थे।

एथेन्स की शिक्षा—एथेन्स वासियों की शिक्षा का उद्देश्य भिन्न था। उसका लक्ष्य "स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क" का निर्माण था। सात वर्ष की उम्र में एक एथेनियन लड़का, एक गुलाम के साथ जो पेडागोग कहलाता था, स्कूल भेजा जाता था। यह गुलाम लड़के की किताबें ले जाता था और उसके आचरण पर नजर रखता था। स्कूल प्राइवेट थे, जो कि गरीब नागरिकों द्वारा चलाये जाते थे, जिनकी एथेनियन बहुत कम इज्जत करते थे। पढ़ाई की फीस बहुत थोड़ी थी, लेकिन फिर भी, शिक्षकों को अभिभावकों से उसे इकट्ठा करने में अक्सर कठिनाई होती थी।

प्राथमिक स्कूलों में, लड़के को पढ़ना, मोम की तख्ती पर धातु की पेंसिल से लिखना और एक भौड़े ढंग की गणित, जिसमें अंकों के स्थान पर अक्षर होते थे, सिखाये जाते थे। संगीत एक महत्त्व-

बैटीमैन आर्काइव

इस प्राचीन ग्रीक स्कूल में शिक्षक कविता गा रहा है और वीणा बजा रहा है।

पूर्ण विषय था और वीणा बहुत जनप्रिय वाद्ययंत्र था। परन्तु सबसे महत्त्वपूर्ण विषय सार्वजनिक स्थानों में बोलना था। एक शिक्षित एथेनियन अपनी स्मृति से "इलियड" और "ओडेसी" के, जो उनके महान् कवि होमर के महाकाव्य थे, लम्बे उद्धरण दुहरा सकता था। इसके अलावा, बाद के लेखकों का साहित्य भी वह जानता था। शारीरिक शिक्षा में बाक्सिंग, कुश्ती और अन्य खेल भी शामिल थे।

चौदह वर्ष की उम्र में गरीब लड़के कोई दस्तकारी सीखने के लिए अपरेन्टिस बन जाते थे जबकि धनी लड़के पढ़ाई के स्कूल में जाते थे। एन्थेस में ज्ञान की एक बड़ी पिपासा थी; और यात्री शिक्षकों का एक दल, जिसका दावा था कि वे इस पिपासा को शांत कर सकते हैं, एथेन्स में बढ़ गया था। वे सोफिस्ट (ग्रीक भाषा में इसका अर्थ बुद्धिमान है) कहलाते थे। वे युवकों में बड़े लोकप्रिय थे। जो विषय वे पढ़ाते थे, उनमें गणित, ज्योतिष, व्याकरण और साहित्य भी शामिल थे। लेकिन मुख्य विषय भाषण-कला था। चूंकि एथेन्स का राजनीतिक जीवन सार्वजनिक स्थानों में बोलने का अवसर प्रदान करता था, इसलिए लड़के उसके लिए प्रशिक्षण को उत्सुक रहते थे। सोफिस्टों ने ग्रीक जीवन की एक आवश्यकता की पूर्ति की। यह उन्हीं की शिक्षा थी जिसने प्रथम सफल ग्रीक गद्य काव्य को प्रोत्साहन दिया। लेकिन बाद के सोफिस्टों ने अपने शिक्षण में ऐसी प्रथाएँ चलाईं जिन्हें ईमानदारी नहीं कहा जा सकता। इसके अलावा वे पुराने ग्रीक देवी-देवताओं के अस्तित्व पर संदेह करने लगे थे और अभिभावक महसूस करने लगे थे कि उनकी शिक्षाओं से उनके लड़कों का नैतिक पतन हो रहा है। पुराने बुजुर्ग लोग, सामान्यतया, सोफिस्टों को पसंद नहीं करते थे।

लगभग १८ वर्ष की उम्र में एथेनियन लड़कों का स्कूल समाप्त हो जाता था क्योंकि उन्हें अपनी सैनिक शिक्षा प्राप्त करनी होती थी। जब वह शुरू

प्राचीन यूनानियों में कुछ विशेषताएँ वही थीं जो आज के अमरीकियों में हैं। वे हर्ष के अवसरों पर अपने मित्रों से मिल कर प्रसन्न होते थे। वे व्यक्ति को अपने गुणों का पूरा विकास करने का अवसर भी देते थे। बैटीमैन आर्काइव
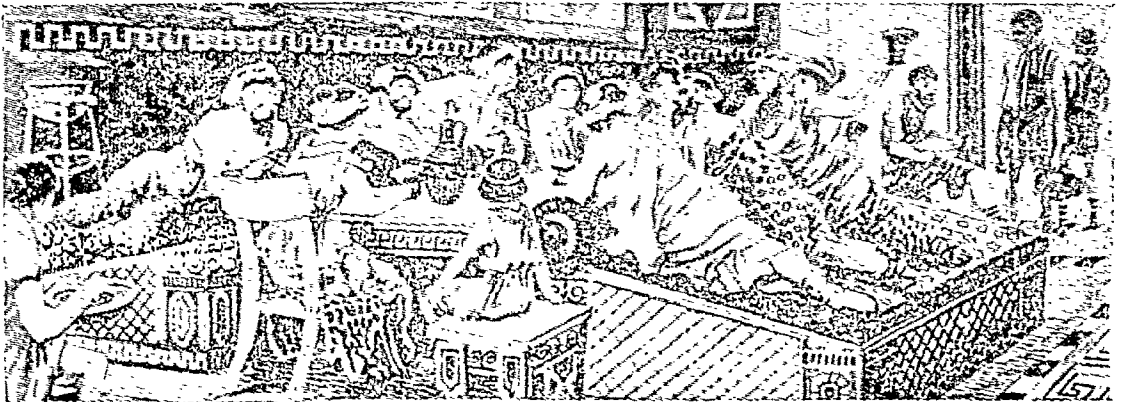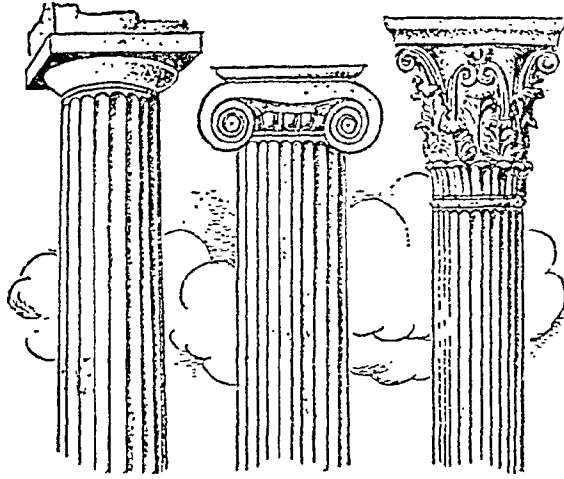
ग्रीक वास्तुकला में प्रयुक्त तीन स्तम्भ : डोरिक, आयोनिक और कोरिन्थियन। इन्हें रोमनों ने थोड़े हेर-फेर से अपना लिया था।

होते थे और उनके शीर्ष के आजू-बाजू दो खूबसूरत घुमाव रहते थे; और कोरिन्थियन का स्तम्भ पतला रहता था तथा शीर्ष भाग पत्तियों के नमूनों से अलंकृत रहता था। ग्रीकवासी ठोस, दीर्घकाय और भव्य डोरिक कला को सर्वाधिक पसन्द करते थे। उनका सबसे बड़ा मन्दिर, पार्थेनान इसी प्रकार का था।

एक्रोपोलिस—एथेन्स के एक्रोपोलिस में भव्यतम ग्रीक इमारतें थीं, जो सभी देवी एथेना की स्मृति में निर्मित हैं। इनमें से एक, पार्थेनान, शायद विश्व की सबसे प्रसिद्ध इमारत है। यह चिकने सफेद संगमरमर की बनी है, जो एथेनियनों को समीप ही उपलब्ध था। द्वार-मण्डप के नीचे बाहरी दीवार के चारों ओर नक्काशी से उसे और भी सुन्दर बनाया गया था। स्तम्भों पर मूर्तिकारों ने एथेनियनों को धार्मिक जुलूसों में पैदल या घोड़ों पर चलते हुए प्रदर्शित किया है। खम्भों के तिकोने छोरों के ऊपर देवताओं और देवियों की प्रस्तर-मूर्तियां बनी हुई थीं। सभी मूर्तियों पर सुनहरे, नीले और लाल रंग खूबसूरती से चढ़ाये हुए थे। ग्रीस के नीले आसमान की पृष्ठभूमि में उठा हुआ पार्थेनान का यह विशाल मन्दिर दर्शक पर अपना अमिट प्रभाव डालता था।

ग्रीक मूर्तिकला

माइरन—स्थापत्य कला के साथ-साथ ग्रीस मूर्तिकला में भी पारंगत थे। यहां से श्रेष्ठ मूर्तियां कहीं भी नहीं बनी हैं। यहां के तीन मूर्तिकारों के नाम सर्वाधिक प्रसिद्ध हैं। पहला व्यक्ति माइरन था, जिसने विश्व को 'डिसकोबोलुस' (भाला फेंकने वाला) की प्रसिद्ध मूर्ति प्रदान की।

फिडिग्रस—दूसरा फिडिग्रस था, जो तीनों में सबसे बड़ा कलाकार माना जाता है। पार्थेनान में प्राप्त उसकी कारीगरी ने, यद्यपि अब वह बुरी तरह विकृत हो चली है, तमाम सभ्य संसार को आश्चर्यचकित किया है। गोकि शताब्दियों का अर्सा बीत जाने के कारण फिडिग्रस की अधिकांश कृतियां नष्ट हो चली हैं, फिर भी उनकी प्रेरणादायिनी शक्ति अभी मौजूद है।

प्राक्सीटीलिज—ईसापूर्व चौथी शताब्दी का सबसे बड़ा मूर्तिकार प्राक्सीटीलिज था। फिडिग्रस द्वारा निर्मित देवमूर्तियों में जो पुरानी गरिमा और दुर्नम्यता पाई जाती थी वह चली गई थी। प्राक्सीटीलिज की कलाकृतियों में उसके पहले के मूर्तिकारों की अपेक्षा अधिक शोभा और जीवन की निकटता थी।

१. एक्रोपोलिस का वर्णन करो।
२. ग्रीकों की किसी सामान्य इमारत का विवरण दो।
३. ग्रीकों के तीन प्रकार के खम्भे कौन-कौनसे थे ? वे एक-दूसरे से किस रूप में भिन्न थे ?
४. पार्थेनान का वर्णन करो।
५. ग्रीस के तीन मूर्तिकार कौन-कौन थे ? प्रत्येक की एक कृति का नाम बताओ।

ग्रीक साहित्य में ग्रीक जीवन का चित्रण

इतिहास—ग्रीकवासियों ने उत्कृष्ट साहित्य का भी निर्माण किया। हम देख चुके हैं कि राजाओं के काल में होमर के 'इलियड' और 'ओडेसी' ने लेखन कला का एक उच्च स्तर स्थापित कर दिया था।

यद्यपि होमर इतिहासकार नहीं था, पर उसकी पुस्तकों से ही हमें प्राचीन ग्रीस के बारे में बहुत-कुछ ज.नकारी मिलती है।

प्रथम ग्रीक इतिहासकार हेरोडौटस था, जो अक्सर 'इतिहास-साहित्य का जन्मदाता' कहलाता है। उसने दूर-दूर देशों की यात्राएँ कीं और यात्राओं में अर्जित अपने ज्ञान के आधार पर लिखा। ईरानी युद्धों के अपने इतिहास में उसने दर्शाया कि घटनाएँ जिस तरह हुईं, वे उसी तरह इसलिए हुई क्योंकि देवताओं की मर्जी यही थी कि ऐसा हो। बाद के एक इतिहासकार थ्यूसीडायडीज़ (४७१-४०० ई० पू०) ने अधिक वैज्ञानिक ढंग से इतिहास लिखा। पेलोपोनेसियन युद्धों का उसका विवरण हमारे लिए महत्त्वपूर्ण है।

प्रथम कवयित्री—प्रथम कवयित्री, जिसका हमें कुछ विवरण मिलता है, सेफो नामक एक ग्रीक महिला थी। दुर्भाग्य से उसकी कविताओं के कुछ ही अंश हमें मिलते हैं लेकिन उनसे जाहिर होता है कि उसमें कवित्व की बहुत बड़ी प्रतिभा थी। प्राचीन ग्रीस में उसकी प्रतिष्ठा होमर के ही तुल्य थी और वह 'कवयित्री' के नाम से पुकारी जाती थी जब कि होमर 'कवि' नाम से।

रंगमंच—महत्तम कवि ट्रजडियों के लेखक थे। उनके नाटक प्रतिवर्ष दियोनिसस देवता के धार्मिक उत्सवों के एक अंग के रूप में खेले जाते थे। खेलों के प्रारम्भ में एक गायकवृन्द कहानी गाता था और एक अभिनेता मंच पर उसके कुछ अंश का अभिनय करता था। फिर दो अभिनेता आने लगे और अन्त में तीन अभिनेता होने लगे। ज्यों-ज्यों अभिनेताओं की संख्या बढ़ी, वे कथानक बोलने लगे और खेल की भावना की सुन्दर गीतों और भजनों द्वारा स्थापना का कार्य ही गायक वृन्द (कोरस) के लिए छोड़ा जाने लगा। नाटककार अपने नाटक को बारी-बारी प्रस्तुत करते थे। सुबह ट्रेजडी और तीसरे पहर कामेडी खेली जाती थी। तीन दिनों के उत्सव के अन्त में सबसे अच्छे नाटकों को पुरस्कार दिये जाते थे। दर्शक आलोचक भी थे और वे अपनी पसन्दगी तथा नापसन्दगी अपनी बुलन्द चिल्लाहट से जाहिर करते थे, जिससे लेखक के मस्तिष्क

आधुनिक अमरीका ने प्राचीन ग्रीक वास्तुकला की कौन सी बातें अपनाई हैं? इस नाट्यशाला का आकल्पन मूर्तिकार और वास्तुकला पोलीक्लिटस ने किया था। यहां एकत्र होकर यूनानी लोग महान् नाटकों का अभिनय देखते थे।

बैटमैन आर्काइव

में सन्देह नहीं रह जाता था कि वे उसके खेल के बारे में क्या राय रखते हैं।

ट्रेजडियों के लेखक—तीन सबसे बड़े नाटककार एस्काइलस, सोफोक्लीज़ और युरिपिडिज़ थे। एस्काइलस (५२५-४५६ ई० पू०) के, जोकि ग्रीक ड्रामा का संस्थापक माना जाता है, नाटकों में दो पात्र और गायक-वृन्द (कोरस) रहता था। उसने देवताओं और पौराणिक कथाओं का चित्रण प्रस्तुत किया है। सोफोक्लीज (४९६-४०६ ई० पू०) ने तीसरे अभिनेता को मंच पर उतारा और उसकी ट्रेजिक कविताएँ अति सुन्दर भाषा में प्रस्तुत की गई हैं। इन दोनों ही साहित्यकारों ने अपनी लेखनी द्वारा यह दर्शाया कि देवता उनके भाग्य-निर्माता हैं, ऐसा वे विश्वास करते हैं। बाद में युरिपिडिज़ ने (४८०-४०६ ई० पू०) देवताओं की शक्ति में सन्देह को प्रस्तुत किया, यह सन्देह समस्त ग्रीस में फैल चुका था। उनके नाटकों को निर्णायकों ने बहुत कम पुरस्कृत किया। जो वृद्ध एथेनियन पुरस्कार देते थे, वे यह देखना पसन्द नहीं करते थे कि जिस धार्मिक आधार पर उन्होंने निर्माण किया, उसे ध्वस्त कर दिया जाय। पर उसके नाटक युवा पीढ़ी में अधिक लोकप्रिय थे।

कामेडी के लेखक—महान् ग्रीक नाटककारों में सबसे युवक नाटककार आरिस्टोफनीज़ (४४८-३८० ई० पू०) कामेडी (सुखान्त नाटक) लिखता था। वह अपने समय के राजनीतिज्ञों और अन्य प्रमुख व्यक्तियों का मज़ाक उड़ाता था। यहां तक कि पेरीक्लीज़ और दार्शनिक सुकरात को भी उसने अछूता नहीं छोड़ा। सुखान्त नाटकों में सरकार की कमजोरियों की चर्चा की जाती थी, जिससे बहुत से नागरिकों की उन चीज़ों के बारे में आंखें खुलती थीं। वह अपने ज़माने के ग्रीकों की उन ग्रीकों से तुलना करता था जो ईरानी युद्धों में लड़ रहे थे और यह दिखलाता था कि कुछ पुराने गुण समाप्त हो गये हैं।

ग्रीक विचारकों द्वारा महान् सत्यों का उद्घाटन

सुकरात (सोक्रेटीज)—पेरीक्लीज के काल में एथेन्स में संसार का सबसे असाधारण प्रतिभावान् व्यक्ति सुकरात रहता था। वह वेतनभोगी उपदेशक नहीं था अपितु सड़कों पर या बाजार में खड़ा होकर ऐसे प्रश्न पूछता था जिसके बारे में लोग हमेशा यही सोचते चले आये थे कि ऐसा ही होता है। वह अपने को सोफिस्ट, अर्थात् विद्वान् पुरुष की अपेक्षा दार्शनिक या सत्य की खोज करने वाला कहलाना पसन्द करता था। वह ऐसे प्रश्न पूछा करता था था कि प्रेम क्या है? सुन्दरता क्या है? सत्य क्या है? वह हर ऐसी चीज़ के बारे में, जिसमें लोगों का धर्म भी शामिल था, और जिसे लोग यथारूप स्वीकार करते थे, सवाल पूछा करता था, यद्यपि वह स्वयं देवताओं की पूजा करता था। एथेन्स के लोग उसके खिलाफ़ हो गये और उस पर अभियोग चलाया कि वह युवकों को उन सिद्धान्तों की शिक्षा देता है जिन्हें वे झूठे समझते थे। उसे हेमलाक पौधे का घातक विष पीने का दण्ड दिया गया। उसके मित्रों और शिष्यों ने उसे मनाने की कोशिश की कि वह एथेन्स से भाग जाय और दण्ड से बच निकले,

प्लेटो ने अपनी सम्पत्ति एकेडेमी के नाम लिख दी थी। यह शिक्षा संस्था ८०० वर्ष तक चलती रही।

वैटीमैन आर्काइव

जो वह आसानी से कर सकता था। उसने यह कहते हुए इन्कार कर दिया, "मैंने लोगों को सिखाया है कि कैसे जीवित रहना चाहिए और अब मैं उन्हें यह सिखा रहा हूं कि कैसे मरा जाय।"

प्लेटो—सुकरात के छात्रों में सबसे प्रसिद्ध प्लेटो हुआ (४२७-३४७ ई० पू०)। मुख्यत: हमें प्लेटो की ही पुस्तकों से सुकरात के बारे में पता चलता है, क्योंकि सुकरात ने कोई चीज़ लिखी नहीं थी। दूसरी ओर प्लेटो ने बहुत से ग्रंथ लिखे। उनमें से सबसे अधिक प्रसिद्ध 'रिपब्लिक' है। प्लेटो एथेनियन जनतंत्र से उकता गया था क्योंकि एथेन्स ने सुकरात को अपराधी ठहरा कर मृत्युदण्ड दिया था। 'रिपब्लिक' में उसने एक आदर्श राज्य का चित्र खींचा है जिसमें सरकार का संचालन उच्च शिक्षित दार्शनिकों द्वारा होगा। एथेन्स के छोर पर अपने में घर में उसने 'अकादमी' नामक स्कूल स्थापित किया। समस्त यूनान से उसके शिष्य उसके लेक्चर सुनने आते थे और उसकी शिक्षाओं की श्रेष्ठता का प्रचार करते थे।

अरिस्टाटल (अरस्तू)—प्लेटो का सर्वाधिक प्रसिद्ध शिष्य अरस्तू (३८४-३२२ ई० पू०) था। उसने कई क्षेत्रों में ज्ञान हासिल किया और उसे क्रमानुसार लिख डाला। वह विशेष रूप से प्रकृति के अध्ययन में अभिरुचि रखता था। प्लेटो की ही भाँति, अरस्तू ने भी 'लाइसिया' नामक एक स्कूल खोला जिसमें बहुत बड़ी संख्या में छात्र आते थे। यद्यपि अरस्तू की वैज्ञानिक जानकारी की बारीकियों पर आज हम सहमत नहीं होंगे, लेकिन अब भी उसके ग्रंथों का उसके स्पष्ट चिन्तन के कारण अध्ययन किया जाता है।

चिकित्सा-विज्ञान—यूनान के विद्वान पुरुषों में एक चिकित्सा शास्त्र का ज्ञाता हिपोक्रेटस (४६०-३५७ ई० पू०) था। उसका विश्वास था कि रोग देवताओं के रुष्ट होने के कारण नहीं, अपितु प्राकृतिक कारणों से होते हैं। हिपोक्रेटस ने खोज निकाला कि मस्तिष्क विचारों को पैदा करने वाला अंग है और अपनी खोज के दौरान ही उसने कई बीमारियों का निदान सीखा। हिपोक्रेटस ने स्वास्थ्य के नियमों और सफाई के तौर-तरीकों की सिफारिश कर बीमारियों को दूर करने का प्रयास किया। उसका विश्वास था कि प्रकृति ने, सूर्य का प्रकाश स्वच्छ हवा, और विश्राम के रूप में आरोग्य लाभ की व्यवस्था प्रदान की है। हिपोक्रेटस ने डाक्टरों के लिए शपथ लेने का नियम बनाया कि वे अपने पेशे के प्रति ईमानदार और सच्चे रहेंगे। यह शपथ आज भी डाक्टरी लेने वाले स्नातकों द्वारा दुहरायी जाती है।

यूनान की उपलब्धियाँ—ग्रीकों ने विश्व-इतिहास मे एक नया अध्याय जोड़ा। कुछ चीजे तो, प्राचीन काल से विरासत के रूप में मिली थीं। पाषाण युगों से उन्होंने अग्नि, कृषि, भाषा, बुनाई, चित्रकारी और नक्काशी का उपयोग सीखा था। वे धनुष-बाण चलाना, पशुपालन और मिट्टी के बर्तन बनाना भी सीख चुके थे। बाद के लोगों ने शासन-व्यवस्था के अनुभव, कांसे, तांबे, सोने और लोहे का उपयोग, सिक्के, पंचांग और जहाजों का निर्माण तथा भवन निर्माण कला का प्रयोग उन्हें सिखाया था। प्रारम्भिक ग्रीकों के जमाने की पुरानी सभ्यताएँ अतीत के प्रति आस्थावान् थीं। उन्हें यह मुश्किल लगता था कि अतीत से सम्बन्ध तोड़ कर नये और अपरिचित मार्ग पर चलें। पर ग्रीकों के बारे में यह बात नहीं थी। उन्हें पहले की उपलब्धियों के प्रति इस प्रकार की कोई भक्ति नहीं थी। वे उपलब्धियाँ उनकी अपनी नहीं थीं। वे जो पसन्द होता उसे स्वीकार करते और शेष छोड़ देते थे। उन्होंने अतीत की बुनियाद पर निर्माण किया था लेकिन वे उससे बंधे हुए नहीं थे। उनकी आँखें भविष्य की ओर थीं और एक नया युग विश्व के इतिहास में प्रस्फुटित हुआ। यह नया युग 'प्राचीन पूर्वी देशों' में नहीं, अपितु यूरोपमें आया।

अतीत की बुनियाद पर निर्माण करते हुए ग्रीकों ने कई दिशाओं में आगे की ओर लम्बे-लम्बे डग रखे। ग्रीक, विशेपकर एथेन्सवासी, विश्व के लिए भवन-निर्माण, कविता, नाटक, और मूर्तिकला के ऐसे श्रेष्ठ नमूने छोड़ गये जिन्हें विश्व ने पहले कभी नहीं देखा था। उनका दर्शन-शास्त्र और उनका
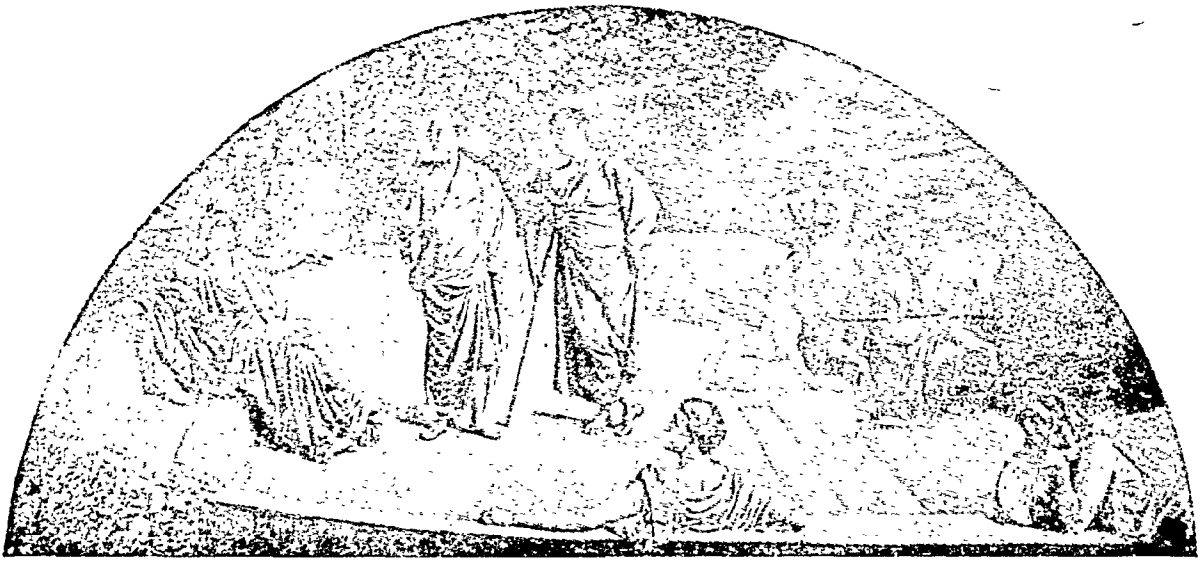
ग्रामस्टोर्फ ब्रदर्स

जब यूनान में ज्योतिषियों से यह पूछा गया कि यूनान में सबसे बुद्धिमान पुरुष कौन था तो उत्तर मिला कि सुकरात। आज संसार इस बात पर सहमत है, पर सुकरात को इस कारण मरने को मजबूर किया गया कि वह लोगों से सोचने-विचारने को कहता था।

विज्ञान वह आधारशिला बना जिस पर उसके बाद दूसरे लोगों ने निर्माण किया। सांस्कृतिक प्रगति में किसी भी अन्य राष्ट्र ने उतने प्रगतिशील कदम नहीं उठाये थे जितने ग्रीकवासियों ने उठाये। जब हम उनकी आबादी की अल्पता की तुलना में आज सबसे बड़े-बड़े आधुनिक देशों को देखते हैं तो हमें उस छोटे से राष्ट्र के कलात्मक कार्यों की मात्रा तथा श्रेष्ठता और उनके विचारकों की विद्वत्ता पर और भी अधिक आश्चर्य होता है।

१. दो महत्तम ग्रीक इतिहासकार कौन थे और उनमें से प्रत्येक ने क्या लिखा ?
२. ग्रीक नाटक का जन्म कैसे हुआ ?
३. ग्रीक नाटक किस तरह प्रस्तुत किये जाते थे ?
४. ग्रीक रंगमंच का वर्णन करो।
५. सबसे बड़े ग्रीक नाटककार कौन से हुए और उनमें से प्रत्येक ने किस प्रकार का नाटक लिखा ?
६. विश्व के इतिहास में सुकरात सबसे महान् शिक्षकों में क्यों माना जाता है ?
७. प्लेटो कौन था ?
८. हिपोक्रेटस चिकित्सा-विज्ञान के इतिहास में इतना महत्त्व क्यों रखता है ?

विचार-विमर्श के लिए प्रश्न

१. एथेन्स का लोकतन्त्र आज के भारत या अमेरिका के लोकतन्त्र से किस रूप में भिन्न था ? किस रूप में वह भारतीय या अमेरिकी लोकतन्त्र के समान था ?

२. सिर्फ नगर में पैदा हुए लोगों को ही नागरिकता का अधिकार देकर एथेनियनों को लाभ हुआ या हानि ?

३. क्या तुम समझते हो कि एथेन्स और स्पार्टा की शिक्षा-प्रणाली उनके-उनके राज्यों की नागरिकता के लिए प्रशिक्षित करती थी ? क्या तुम्हारी शिक्षा तुम्हें अमेरिकी नागरिकता की ट्रेनिंग देती है ?

४. एथेनियन लड़का १८ वर्ष की उम्र में अपने नागरिकता के कर्तव्य ग्रहण कर लेता था। अमेरिका के एक राज्य को छोड़कर बाकी सभी राज्यों में

मतदान की उम्र २१ वर्ष है। तुम्हारी राय में किस उम्र में अमेरिका में मतदान का अधिकार दिया जाना चाहिए ?

५. इस तथ्य के बावजूद कि एथेनियन महिलाएँ कभी घर से बाहर नहीं निकलती थीं उनका इतना प्रभाव क्यों था ?

६. पेरीक्लीज में कौन-कौन सी विशेषताएँ थीं कि तुम उसे महान् राजनेता समझते हो ?

७. आज अन्तर्राष्ट्रीय सद्भाव बढ़ाने में ओलम्पिक खेलकूद किस प्रकार साधन हो सकते हैं ?

८. इतनी अधिक वाद-विवाद की सोसायटियाँ अपने को 'अगोरा' क्यों कहती हैं ?

९. एथेन्स की इतनी छोटी आबादी में इतने अधिक बड़े कलाकार और दार्शनिक कैसे हो गए ?

१०. नाटक का किस रूप में शैक्षणिक महत्व था ?

इतिहास के उपकरणों का प्रयोग

एक. नाम, तिथियाँ और स्थान

(क) क्या तुम इन शब्दों का अर्थ बता सकते हो ?

एक्रोपोलिस, अगोरा, कोरिन्थियन, खम्भा, लोकतन्त्र, डोरिक स्तम्भ, 'लम्बी दीवारें', मैस-क्लब, इतिहास का पितामह, आयोनिक स्तम्भ, ओडेसी, पेडागौग, दार्शनिक, विशुद्ध लोकतन्त्र, सोफिस्ट, सिम्पोजियम।

(ख) इस तिथि के बारे में तुम क्या जानते हो ?

४६०-४२९ ई० पू०

(ग) क्या तुम इन व्यक्तियों के बारे में बता सकते हो ?

एस्किलस, एरिस्टोफेनस, अरस्तू, यूरिपिडिज़, हेरोडोटस, हिपोक्रेटस, होमर, माइरन, पेरीक्लज़, फिडिअस, प्लेटो, प्राक्सीटीलिज़, सैफो, सुकरात, सोफोक्लीज, थ्यूसीडायडीज़।

दो. इतिहास बनाम नागरिक शास्त्र

१. अपनी कक्षा में, अपने घर में या स्कूल में यह ज्ञात करो कि तुम्हारे राज्य में मताधिकार की उम्र के बारे में उनका क्या खयाल है ?

२. ब्लैक बोर्ड पर अच्छे नागरिक के दस गुण गिनाओ।

३. प्राचीन ग्रीस में कोई कर नहीं थे। हमारी कर-प्रणाली के समर्थन में और प्राचीन ग्रीक प्रणाली के विरोध में जितने भी कारण बता सकते हो, लिखो।

४. कागज के एक पन्ने को दो हिस्सों में बांटो और एक कालम में विशुद्ध लोकतन्त्र के लाभ और दूसरे कालम में प्रतिनिधिमूलक लोकतन्त्र के लाभ गिनाओ।

तीन. क्या तुम स्पष्ट रूप से अपने को व्यक्त कर सकते हो ?

(क) इस अध्याय में कई प्रसंगों की चर्चा है जिनमें तुम्हारी दिलचस्पी हो सकती है। एक चुन कर कक्षा में सुनाओ। निम्नलिखित प्रसंग सुझाव रूप में प्रस्तुत हैं : स्पार्टा की शिक्षण-प्रणाली, एथेन्स की शिक्षण-प्रणाली, आधुनिक ओलम्पिक, एथेनियनों का घरेलू जीवन, हिपोक्रेटिक शपथ, प्राचीन एथेन्स का भोजन।

(ख) निम्नलिखित विषय पर एक वादविवाद आयोजित करो : संकल्पित किया कि अमेरिकी लोकतन्त्र एथेनियन लोकतन्त्र से उच्च कोटि का है।

(ग) ग्रीक मिट्टी के बर्तनों या ग्रीक डिजाइन की एक साफ तसवीर प्राप्त कर कक्षा में उसकी व्याख्या करो।

(घ) ओलम्पिक खेलों में भाग लेने वाले एक ग्रीक लड़के की तीन दिन की डायरी लिखो। प्राचीन ग्रीकों के बारे में किताबों से तुम्हें मालूम पड़ेगा।

चार. साहित्य में इतिहास

एक आधुनिक कवि एडविन मार्कहम ने फिडिअस के प्रति एक कविता लिखी है। उसकी एक प्रति प्राप्त कर कक्षा को पढ़कर सुनाओ।

पांच. बस्ती में कार्य :

अपनी बस्ती की ऐसी इमारतों का चित्र लो जिनमें ग्रीकों की विशेषताएँ हों। ग्रीकों से

और अन्त में ४३१ ई० पू० में दोनों नगर-राज्यों में युद्ध छिड़ गया।

पेरीक्लीज़ ने आक्रमण की एक योजना बनाई। उसके प्रस्ताव पर एथेनियन, रक्षार्थ, शहर के भीतर या लम्बी दीवारों के बीच में हट आये और शत्रुओं को एटिका में निर्बाध प्रवेश करने दिया। जब तक एथेनियन नौसेना पिराकस बन्दरगाह की रक्षा करती रही, एथेन्स को भोजन मिलता रहा। एथेनियन नौसेना पेलोपोनेसस तट पर भी परेशानी पैदा करती रही।

लेकिन यह योजना असल में सफल नहीं रही। भीड़-भाड़ तथा गन्दगी से व्याप्त शहर में प्लेग फैल गया। सैकड़ों की संख्या में लोग मरने लगे और महान् पेरीक्लीज स्वयं भी मौत का शिकार हुआ। उसके समान योग्यता वाला कोई अन्य व्यक्ति एथेन्स का नेतृत्व करने को नहीं था। उस समय किसानों का मुँह बाये देखते रह जाना कठिन था जब शत्रु ऐटिका में उनके खेतों को नष्ट कर रहे थे और उनकी रक्षा के लिए कुछ भी नहीं किया जा रहा था। घमासान युद्ध में दोनों पक्षों के सैकड़ों होनहार युवक योद्धा मारे गये। अन्त में एक सन्धि पर हस्ताक्षर हुए लेकिन यह सन्धि अस्थायी सिद्ध हुई और फिर युद्ध शुरू हो गया। पेलोपोनेसियन युद्धों के, जैसा कि उन्हें कहा जाता था, समाप्त होने तक एथेन्स पराजित और अपमानित हो चुका था। उस पर लादी गयी सन्धि की शर्तों के अनुसार उसे अपनी लम्बी दीवारों को ढा देना पड़ा, सिर्फ बारह जंगी जहाजों को छोड़कर अपना जंगी बेडा समाप्त कर देना पड़ा और एक लीग में शामिल होना पड़ा जिसका नेतृत्व इस बार स्पार्टा कर रहा था। एथेन्स के प्रभुत्व का यह कारुणिक अन्त ४०४ ई० पू० में हुआ, लेकिन तब भी नगर-राज्यों के बीच युद्ध समाप्त नहीं हुए। स्पार्टा ने कुलीनों के छोटे-छोटे दलों को प्रत्येक शहर में शासन के लिए नियुक्त किया था। उनका शासन अत्याचारों से भरा था। वे लोगों की सम्पत्ति तक जब्त कर लेते थे और किसी को भी, जिनपर उनका अविश्वास होता, देश-निष्कासित कर देते थे। ग्रीकों ने निश्चय किया कि स्पार्टा का अत्याचारी शासन एथेनियनों की नीति से भी बदतर है।

थेबीज़ नगर के नेतृत्व में हुए विद्रोहों ने ३७१ ई० पू० में स्पार्टा का प्रभुत्व समाप्त कर दिया। थेबीज़ ने, तब, प्रभुत्वहीन स्पार्टा साम्राज्य पर अपना शासन किया। लेकिन दस वर्षों से भी कम समय में (३६२ ई० पू०) थेबीज़ का प्रभुत्व भी समाप्त कर दिया गया। इसके बाद कोई नगर राज्य इतनी शक्ति संचित न कर सका कि शेष ग्रीस को एक कर सके या उस पर आधिपत्य जमा सके।

लगातार युद्धों से ग्रीकों की शक्ति क्षीण हो

सिकंदर का साम्राज्य। ग्रीक लोग समझते थे कि सिकंदर एक युवक राजा है जिसे योग्यता दिखाने का अवसर नहीं मिला। पर इस युवक ने पश्चिमी एशिया और भारत के कुछ अंश को विजय किया।
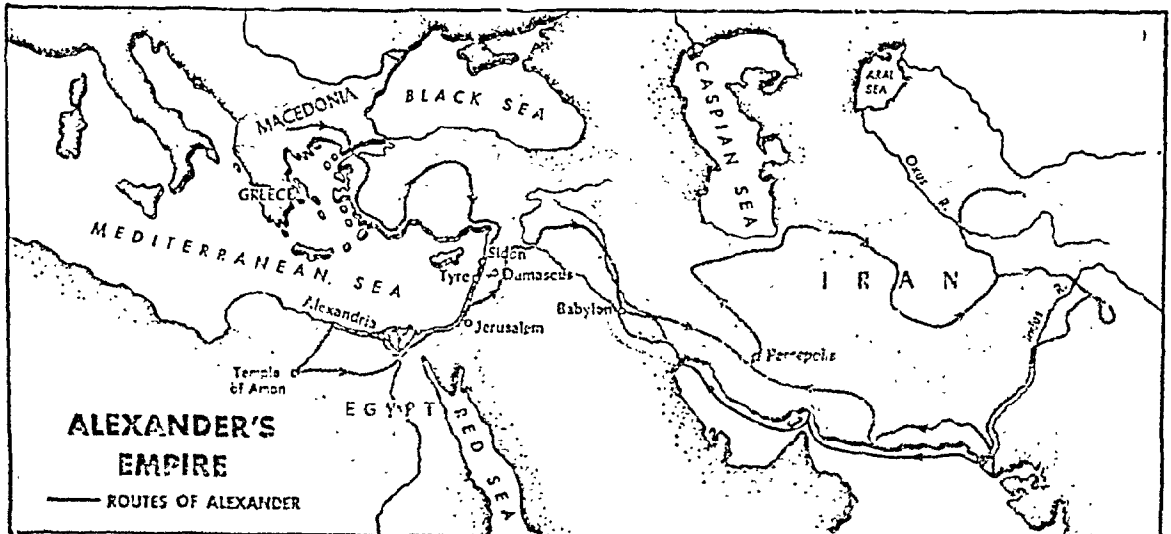
चली थी और उनकी जनशक्ति का ह्रास हो गया था। ३३८ ई० पू० में ग्रीस के उत्तर में बसे हुए, तब तक असभ्य मेसीडोनिया (मकदूनिया) के राजा फिलिप ने ग्रीस पर हमला किया और आसानी से उसे जीत लिया। आपस की दुश्मनी से ग्रीकों का पतन हुआ।

१. एथेन्स ने किस तरह अपना साम्राज्य स्थापित किया ? उसमें कौन से प्रदेश थे ?
२. पेरीक्लीज ने एथेन्स की रक्षा और स्पार्टावालों से युद्ध करने के लिए कैसी योजना बनाई थी ?
३. पेलोपोनेसियन युद्धों का स्पार्टा और एथेन्स पर क्या प्रभाव पड़ा ?
४. पेलोपोनेसियन युद्धों के बाद गृहयुद्ध में थेबीज़ का क्या हिस्सा रहा ?
५. दीर्घकालीन गृह-युद्धों का ग्रीस पर क्या प्रभाव पड़ा ?

एक विदेशी ग्रीकों का नेता बना

मेसीडोनिया (मकदूनिया) का फिलिप—ग्रीस के नगर-राज्यों के आपसी युद्धों ने उन्हें कमज़ोर तो बना ही दिया था लेकिन वे ग्रीस में प्रवेश करने वाली एक नयी भावना से भी कमज़ोर हो चले थे। अधिकांश ग्रीक महसूस करने लगे थे कि नगरों के बीच युद्ध निरर्थक हैं। वे ग्रीकों के बीच की आपसी फूट को मिटाने की इतनी प्रबल इच्छा रखते थे कि जब एक नेता सामने आया, चाहे वह मकदूनियन ही था, तो ग्रीकों ने उसका स्वागत किया।

मकदूनिया का फिलिप तीन वर्ष थेबीज़ में रह कर अठारह वर्ष की उम्र में अपने पिछड़े देश पर शासन करने अपने घर गया। अल्प काल में ही उसने एक बेहतरीन सेना बना ली और कबाइलियों को एकताबद्ध किया। उसकी योजना थी कि ग्रीस को अपने साम्राज्य में मिला लिया जाय। उसे आशा थी कि, कम से कम, एथेन्स उसके नेतृत्व का स्वागत करेगा क्योंकि वह उसकी महत्ता का कायल था और उससे लड़ना नहीं चाहता था। एथेन्स में सुप्रसिद्ध व्याख्यान-वाचस्पति डेमास्थिनीज़ ने जनमत को फिलिप के विरुद्ध उभाड़ा, यद्यपि वहाँ एक सशक्त दल था जो मकदूनिया का नेतृत्व चाहता था। डेमास्थिनीज में अद्भुत वाक्-पटुता थी और अपने प्रसिद्ध भाषणों 'फिलिपिक्स' में ओजस्वी शब्दों में वह फिलिप के आक्रमणों के विरुद्ध बोला और उसने एथेन्सवासियों को खतरे से सचेत करने की कोशिश की।

जब एथेन्स ने स्वेच्छा से उसका नेतृत्व स्वीकार नहीं किया, तब फिलिप ने उस पर चढ़ाई कर दी। एथेन्स एक ग्रीक फेडेरेशन (संघ) का अगुवा बना लेकिन उसकी सेना फिलिप के शिक्षित सैनिकों के आगे नहीं टिक पाई। ३३८ ई० पू० में, ग्रीक संघ 'केरोनीआ' पराजित हो गया और उसे एक हेलेनिक लीग बनाने को विवश किया गया जिसका मुख्य सेनापति फिलिप को बनाया गया। तब वह राज्य फारस के विरुद्ध चढ़ाई की तैयारी करने मकदूनिया चला आया। हत्यारे के हाथों उसकी मृत्यु हो जाने से उसकी योजनाएँ पूरी न हो पायीं।

सिकन्दर महान्—फिलिप का पुत्र सिकन्दर तब गद्दी पर बैठा। उसकी उम्र उस समय बीस वर्ष की थी। उसकी शिक्षा-दीक्षा महान् दार्शनिक अरिस्टाटल (अरस्तू) के हाथों हुई थी। उसकी शिक्षाओं की युवा सिकन्दर के मस्तिष्क पर गहरी छाप थी क्योंकि सिकन्दर ग्रीक संस्कृति की प्रशस्ति करता था और ग्रीक नेता होने का दम भरता था। लेकिन चूँकि सिकन्दर युवक था, इसलिए ग्रीकों ने सोचा कि मकदूनिया के शासन को अपने ऊपर से उलट फेंकने का अभी मौका है। इसके जवाब में सिकन्दर ने थेबीज़ की ओर अप्रत्याशित तेज़ी से प्रयाण किया। दो ही दिनों में नगर ध्वस्त कर ज़मीन में मिला दिया गया। इतना होने पर भी ग्रीक संस्कृति के प्रति सिकन्दर के हृदय में आदर होने के कारण उसने आदेश दिया कि कवि पिण्डर का घर अछूता छोड़ दिया जाय। अन्य नगरों ने भी इसी प्रकार के विध्वंस के डर से आधीनता स्वीकार कर ली। सिकन्दर अपने पिता की ही भाँति, फारस पर चढ़ाई की तैयारी करने मकदूनिया लौट आया।

यह आक्रमण इतिहास में एक बड़ा और साहसिक सैनिक अभियान रहा है जिसमें ३० या ४० हज़ार सैनिक थे। सिकन्दर ने ईरानी साम्राज्य पर धावा बोला, एशिया माइनर और सीरिया
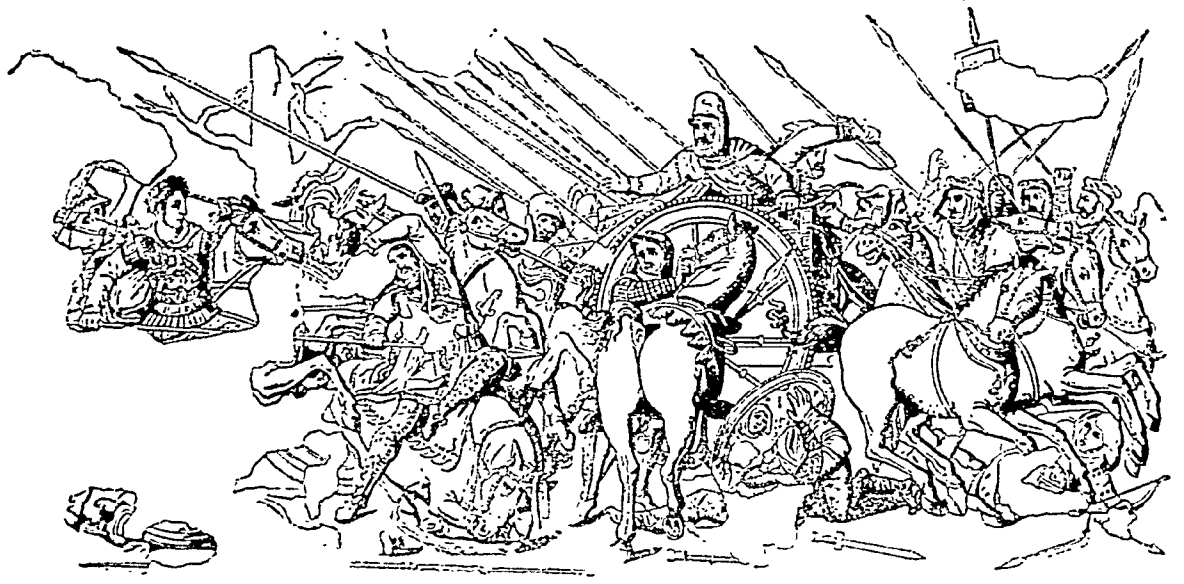
हिस्टोरिकल पिक्चर सर्विस

इसस में तीन इतिहास-प्रसिद्ध लड़ाइयाँ लड़ी गईं। सिकन्दर ने यहाँ ३३३ ईस्वीपूर्व में डेरियस को हराया था।

होता हुआ वह मिस्र पहुँचा, जहाँ ईरानी शासन के खिलाफ काफ़ी असन्तोष था। उसने फारस के सम्राट् के साथ हुई सभी लड़ाइयाँ जीतीं और फीनीशियन जंगी बेड़े के, जो फारस के नियन्त्रण में था, अड्डे काट दिये। उसने अपने को एक देवता का पुत्र घोषित किया और नील नदी के मुहाने पर अलेक्जेण्ड्रिया नामक नगर का निर्माण किया जो हेलेनिक व्यापार और संस्कृति का केन्द्र बना। सीरिया लौटकर उसने पुनः विशाल ईरानी सेना को परास्त किया और विशाल साम्राज्य को अपने आधीन कर लिया। इस पर सन्तुष्ट न होकर वह पूर्व की ओर भारत तक बढ़ आया और उसका उत्तर-पश्चिमी हिस्सा जीत लिया। उसके मकदूनियाई और ग्रीक सैनिकों को यहां की आबोहवा माफिक नहीं आई और वे इतनी अधिक शिकायत करने लगे कि सिकन्दर को भारत की अपार दौलत को हस्तगत करने के अपने स्वप्न को त्यागने के लिए विवश होना पड़ा। अपनी सेना के एक हिस्से को समुद्री मार्ग से घर की ओर भेज कर वह दक्षिण-फारस से सूसा लौटा, जहां उसने अगली विजयों की योजना बनाई। इन योजनाओं के कार्यान्वित होने से पहले ही वह मर गया। तेरह वर्षों में सिकन्दर ने ग्रीस को मकदूनिया के शासनान्तर्गत किया और दो शताब्दी पुराने ईरानी साम्राज्य को जीता, जो उस समय तक विश्व में सबसे बड़ा साम्राज्य था।

सिकन्दर की मृत्यु के शीघ्र बाद ही उसका साम्राज्य तीन हिस्सों में बंट गया। प्रत्येक हिस्से का शासन सिकन्दर के सेनापतियों के उत्तराधिकारियों के हाथों में रहा। उसके तीन हिस्से थे—यूरोपीय हिस्सा, एशियाई हिस्सा और मिस्री हिस्सा। इनमें विशेष उल्लेखनीय मिस्र में स्थापित टालेमी वंश था।

यद्यपि सैनिक अभियानों द्वारा निर्मित सिकन्दर का साम्राज्य जल्दी ही समाप्त हो गया, लेकिन उसके कार्यों के अन्य परिणाम भी हुए जो अधिक स्थायी थे। इनमें सबसे महत्त्वपूर्ण ग्रीक और ईरानी संस्कृतियों का सम्मिश्रण था। जहां कहीं भी सिकन्दर गया, उसने ग्रीक सभ्यता की स्थापना की। उसकी विजय-यात्रा के समूचे मार्ग में लगभग सत्तर शहर बसाये गये जिनमें ग्रीक उपनिवेशवादी रहते थे। ज्यों-ज्यों वे आगे बढ़ते गये, सिकन्दर और उसके सैनिकों ने, ईरानी सभ्यता की कुछ बातें स्वयं ग्रहण कर ली थीं। ग्रीक और पूर्व-देशीय

लोगों तथा उनकी संस्कृतियों के सम्मिश्रण से एक नया युग आया, हेलेनिक संस्कृति का नया युग जो सिकन्दर की मृत्यु के बाद लगभग ३०० वर्षों तक रहा। ग्रीक सभ्यता नगर-राज्यों की संकीर्ण सीमाओं से बाहर आ गयी और समूचे सभ्य संसार की संस्कृति का एक अंग बन गयी।

१. ग्रीस की किन स्थितियों ने उसकी पराजय को अधिक सुगम बना दिया ?
२. फिलिप शान्तिपूर्ण उपायों से ग्रीस को अपने राज्य में शामिल क्यों नहीं कर पाया ?
३. ग्रीस के प्रति सिकन्दर का दृष्टिकोण क्या था ? उसका ऐसा दृष्टिकोण क्यों बना ?
४. सिकन्दर के कूच का रास्ता नक्शे पर खींचो।
५. सिकन्दर के साम्राज्य का उसकी मृत्यु के बाद क्या हुआ ?
६. सिकन्दर की विजयों का मुख्य प्रभाव क्या पड़ा ?

हेलेनिक युग : वैषम्यों का काल

भाषा—एथेन्स, स्पार्टा और थेबीज़ के आलीशान नगरों की राज-शक्ति चली गयी थी; फिर भी इन ग्रीक नगर-राज्यों का प्रभाव समस्त पूर्वी भूमध्यसागरीय जगत् में महसूस किया जाता था। सभी शासक ग्रीक भाषा बोलते थे और सिसली से लेकर एशिया माइनर, सीरिया और मिस्र तक बन्दरगाहों में व्यापार की भाषा यही थी। शिक्षित लोग एथेन्स के महान् व्यक्तियों के नाटक, कविताएँ, दर्शन और इतिहास पढ़ते थे। इस प्रकार ग्रीक भाषा पूर्वी भूमध्य सागर को संगठित करने वाली शक्ति थी।

अलेक्जेंड्रिया—ज्यों-ज्यों ग्रीक नगरों की आर्थिक और राजनीतिक महत्ता घटी, अन्य नगरों ने तरक्की की। मिस्र में अलेक्जेंड्रिया और सीरिया में अन्तिओक व्यापारिक प्रतिद्वन्द्वी तथा विद्या के केन्द्र बने। टोलमियों के मातहत मिस्र की शक्ति बढ़ी और अलेक्जेंड्रिया उसकी राजधानी रहा। फरूनों की नयी वंश-परम्परा ने, जो अपने को ग्रीक मानती थी, ग्रीक व्यापारियों को प्रोत्साहन
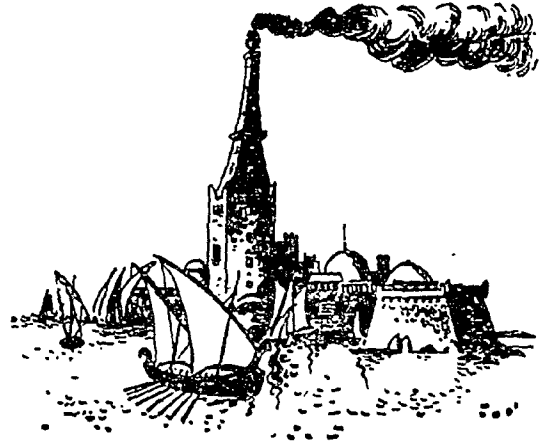
सिकन्दरिया का प्रकाशस्तम्भ, फारोस, प्राचीन जगत् के सात आश्चर्यों में था।

दिया और उन्होंने बैंकों, व्यापार और उत्पादन पर नियन्त्रण प्राप्त कर लिया, यहाँ तक कि मिस्र में उनकी बड़ी-बड़ी जमींदारियाँ बन गईं। उन्होंने देश की सम्पदा को बढ़ाया और अलेक्जेंड्रिया को समस्त हेलेनिक जगत् का प्रमुख वित्तीय केन्द्र बनाया।

एक स्थान से उखड़ कर दूसरे स्थान पर भी ग्रीक संस्कृति का, जिसमें पूर्वी देशों की संस्कृति का मिश्रण था, नया और जबरदस्त विकास हुआ। टोलमियों ने मिस्र में उसके प्रसार को बढ़ावा दिया। एक बहुत ही बेहतरीन स्कूल, म्यूजियम नाम से, अलेक्जेंड्रिया में राजा के महल में स्थापित हुआ। यहां तमाम सभ्य जगत् से छात्र ज्योतिष, शरीर-रचना शास्त्र, व्याकरण, अलंकार-शास्त्र, गणित-शास्त्र, भौतिक शास्त्र और साहित्य पर व्याख्यान सुनने आते थे। टोलमी इससे सम्बद्ध एक पुस्तकालय को भी सहायता देते थे जहाँ लिपिकारों की एक पूरी फौज प्राचीन साहित्य की, विशेषकर ग्रीक साहित्य की, प्रतिलिपियाँ बनाने में व्यस्त रहती थी।

म्यूजियम में प्राकृतिक विज्ञानों की ओर विशेष ध्यान दिया जाता था। विद्वान् लोग विभिन्न क्षेत्रों में परीक्षण किया करते थे। भूगोल के विद्वान् अक्षांश और देशान्तर का प्रयोग कर नक्शे बनाते थे। इन भौगोलिकों में सबसे प्रसिद्ध एरातोस्थिनीज था, जिसे

पता था कि जमीन गोल है और उसने इसकी परिधि का अनुमान २५,००० मील लगाया था। उसके इस अनुमान में सिर्फ लगभग ५० मील की गलती रह गयी थी। यूक्लिड ने ग्रीकों के रेखागणित के ज्ञान को आधार मान कर विश्व को रेखागणित की ऐसी पूर्ण प्रणाली प्रदान की कि तब से उसमें बहुत कम परिवर्तन हुए हैं। ईसा पूर्व तीसरी शताब्दी में अरिस्तारकुस ने अन्य विद्वानों को यह बतलाने की चेष्टा की कि इस विश्व का केन्द्र पृथ्वी नहीं, सूर्य है, और सब ग्रह उसके चारों ओर घूमते हैं।

आर्किमीडिस—उस समय का एक धुरन्धर वैज्ञानिक सिसली के साइराक्यूस नामक स्थान पर रहता था। वह आर्किमीडिस था (२८७-२१२ ई० पू०)। वह गणितज्ञ और पदार्थ-विज्ञान का पण्डित था। उसने पेंच, उत्तोलक (लिवर) और दाँतों वाले पहियों का अध्ययन किया। उसने इनका प्रयोग एक मशीन के आविष्कार में किया, जिसमें कई घिरनियाँ लगी होती थीं और जिससे सिर्फ क्रैंक घुमा कर एक बड़े जहाज को पानी में उतारा जा सकता था। आर्किमीडिस का दावा था कि अगर साइराक्यूस का शासन उसे कहीं खड़े होने का स्थान दे दे तो वह धरती को

आर्कीमीडिस विज्ञान या गणित का कुछ चिन्तन कर रहा था कि एक रोमन सैनिक ने उसे मार डाला।

न्यूयार्क पब्लिक लाइब्रेरी

चला सकता है। आर्किमीडिस प्राचीन काल का सबसे बड़ा गणितज्ञ था लेकिन उसके सिद्धांत नष्ट हो गये।

घर—इस सब वैज्ञानिक ज्ञान के होने पर यह आश्चर्य की बात नहीं कि धनी लोगों ने अपने घरों को इतना शोभायुक्त और आरामदेह बनवाया कि पेरीक्लीज के काल में एथेनियनों ने उसकी कल्पना तक नहीं की थी। वे अधिक बड़े और आरामदेह थे। उनमें स्नानागार बने हुए थे और ठण्डे स्थानों में गरमी पहुँचाने का प्रबन्ध था। मिट्टी का स्थान टाइल के खूबसूरत डिज़ाइन के फर्शों ने ले लिया था। कुछ घरों में जुगतें भी लगाई होती थीं, जैसे द्वार खोलने के हत्थे। व्यापार में वृद्धि और बन्दरगाहों के बीच जहाजों के लिए नियमित यात्रा-व्यवस्था के स्थापन से अन्य स्थानों से आयात की गई नायाब चीजें अमीरों की मेजों पर दिखाई देती थीं।

असमानताएँ—तब भी हेलेनिक जगत् में भारी असमानताएँ थीं। ग़रीब और पददलित थे। जनता को महज़ जीवन-धारण की चीजें प्राप्त थीं। वे गन्दगी और ग़रीबी में दिन काटते थे। इसलिए हेलेनिक युग एक बहुत बड़े वैषम्यों का काल था। एक ओर वहाँ दौलत, ऐश-आराम, शौक-मौज और विद्या-ज्ञान था तथा दूसरी ओर ग़रीबी, दीर्घकालीन परिश्रम, गुलामी और अज्ञान था।

जब पूर्वी भूमध्यसागरीय जगत् में ये भारी परिवर्तन चल रहे थे, तब इटली में टाइबर नदी के किनारे बसा हुआ छोटा-सा नगर रोम सिकन्दर से भी बड़ा साम्राज्य स्थापित करने की दिशा में बढ़ रहा था। यह देखने से पहले कि वह कैसे हेलेनिक संस्कृति का उत्तराधिकारी बना, हमें कुछ पीछे मुड़ कर उसके विकास के उस स्थल की ओर देखना है जहाँ वह हेलेनिक जगत् की कला, साहित्य, दर्शन, वाणिज्य-व्यापार और विलासपूर्ण जीवन को अपनाने के लिए तैयार था।

१. हेलेनिक जगत् के मुख्य-मुख्य नगर कौन-कौन थे ? हर एक किसलिए मशहूर था ?
२. हेलेनिक काल में मिस्र में किस वंश के राजा राज्य करते थे ?

३. लोकतन्त्र की दिशा में नये चरण

ग्रीक लोग विचारों में दिलचस्पी रखते थे। वे नये प्रकार की सरकार और जीवन के नये तौर-तरीकों के परीक्षण से घबराते नहीं थे और वे राजतन्त्र से कुलीनतन्त्र और फिर विशुद्ध लोकतन्त्र की ओर बढ़े।

स्पार्टा में कुलीन-तन्त्र था। उनके नगर-राज्य में नागरिकता 'पीयरों' या कुलीनों तक ही सीमित थी। स्वतन्त्र व्यक्ति व्यापार-धन्धा करते थे लेकिन वे नागरिक नहीं थे। हेलेटों के साथ, यद्यपि वे अपने मालिकों के जरखरीद गुलाम नहीं थे, क्रूरता का व्यवहार होता था और उन्हें फार्मों को छोड़ने की अनुमति नहीं थी। स्पार्टा ने कुलीन-तन्त्र प्रणाली की सरकार के आगे कभी प्रगति नहीं की।

एथनियनों ने एक ऐसे समाज के निर्माण का प्रयास किया जिसमें बहु-संख्यक लोग स्वतन्त्रता और समानता का उपयोग कर सकें। यह उनका मानवता को बहुत बड़ा योगदान रहा।

ड्रेको के कानूनों ने एथेनियनों के जीवन के ढंग में सुधार लाने की दिशा में कोई बड़ा काम नहीं किया लेकिन उनका कम से कम, लिखित रूप मौजूद था जिससे लोग उन्हें पढ़ सकते थे।

सोलोन ने एथेनियन कुलीनों को ऐसे कानून बनाने को प्रेरित किया जिनसे सभी नागरिकों को मतदान का अधिकार मिले, उन कर्जों को माफ कर दिया जिनके लिए स्वतन्त्र व्यक्ति गुलाम बनाये जाते थे और अन्य रीतियों से भी लोगों को स्वतन्त्रता प्रदानकी।

क्लीस्थनीज के मातहत एथेनियनों ने अपने संविधान को अधिक लोक-तन्त्रात्मक बनाया। ५०० की कौंसिल जनता का प्रतिनिधित्व करती थी। असेम्बली में नागरिक लोग कानून बनाते थे।
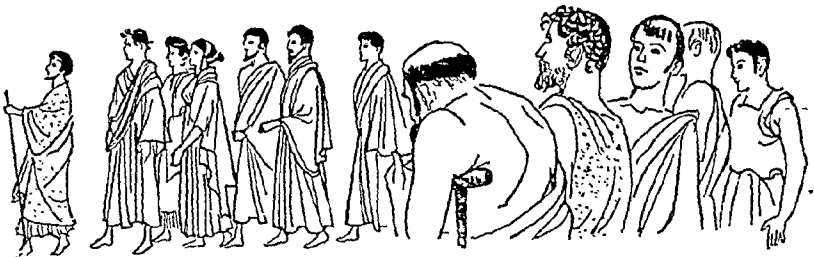
परन्तु सिर्फ एथेन्स के नगर में पैदा हुए लोग ही नागरिक बनाये जाते थे। हजारों लोगों की, जिनमें गुलाम भी शामिल थे, सरकार में कोई आवाज नहीं थी।

अगर ग्रीकों ने प्रतिनिधि सरकार के अपने विचार को आगे बढ़ाया होता और नागरिकता की सुविधाएँ बढ़ाई होतीं, तो लोकतन्त्र जितना पनपा उससे भी ज्यादा फैला होता। लेकिन कम से कम प्राचीन एथेन्स के लोगों ने रास्ता तो दिखाया था।

३ जीवन-निर्वाह की प्रगति के चरण

लगभग ३००० वर्ष पूर्व ग्रीकों का दुनिया के मंच पर आविर्भाव हुआ। उनकी सभ्यता के चरमोत्कर्ष काल में उन्होंने मानव के जीवन-यापान के तौर-तरीकों के विकास में ऐसा असाधारण योगदान किया कि मानव की संस्कृति नये और उच्च स्तरों तक पहुंच गई। उनके बहुत से विचारों और कौशलों की उत्कृष्टता को आज तक भी नहीं लांघा जा सका है। जो तौर-तरीके उन्होंने स्थापित किये, उनसे ही हमारे आधुनिक तौर-तरीकों का विकास हुआ है।

विज्ञान और आविष्कारों में प्रगति

ग्रीक, उस समय तक जो कुछ मानव ने सीखा था, उस सब के उत्तराधिकारी थे और उसी ज्ञान के आधार पर उन्होंने निर्माण किया। महान् वैज्ञानिक, हिपोक्रेटस, आर्किमिडिस, यूक्लिड, और अन्य लोग वर्तमान वैज्ञानिक युग के अग्रदूत थे।

शिक्षा में प्रगति

ग्रीक नये विचारों में दिलचस्पी रखते थे। और जो कुछ दुनिया में चल रहा है उसे जानने को उत्सुक रहते थे। एथेन्स के युवक, अमीर और गरीब, दोनों प्राथमिक स्कूलों में जाते थे। ग्रीक लेखकों की रचनाओं का अध्ययन आज भी किया जाता है।

३. यह हेलेनिक युग क्यों कहलाता है ?

४. म्यूजियम क्या था ?

५. हेलेनिक युग के विशिष्ट वैज्ञानिकों के नाम बताओ।

६. हेलेनिक युग में विज्ञान और गणित में क्या विशेष नया ज्ञान हासिल किया गया ?

७. घरों में किस रूप में सुधार हुआ ? क्या सभी लोग इस तरक्की का लाभ प्राप्त करते थे ?

विचार-विमर्श के लिए प्रश्न

१. किस रूप में डिलियन लीग संयुक्त राष्ट्र संघ की अग्रदूत कही जा सकती है ?

कला में प्रगति
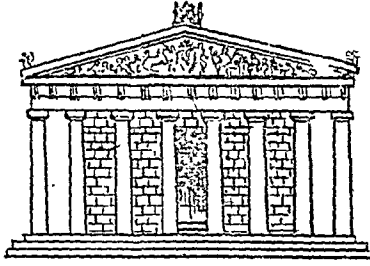
ग्रीस का स्वर्ण युग पेरीक्लीज का काल था जिसने एथेन्स नगर के लिए कला के हर पहलू को समुन्नत किया। सौभाग्य से, वहाँ बहुत से कुशल और कल्पनाशील ग्रीक थे जो उसकी योजनाओं को कार्यान्वित कर सकते थे। परिणाम यह हुआ कि बेहतरीन इमारतों, खास कर पार्थेनन, और अन्य सार्वजनिक भवनों के निर्माण से स्थापत्य कला के नये मापदण्ड स्थापित हुए; ऐसी प्रस्तर-मूर्तियां बनीं, जैसी मनुष्य ने पहले कभी नहीं बनाई थीं और अत्यन्त खूबसूरत डिजायनों और रंगों से युक्त मिट्टी के बर्तन बने।
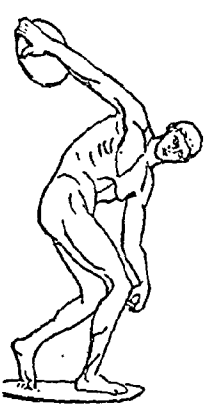
ग्रीकों ने, उस समय तक जो कुछ भी मानव ने सीखा था, वह सीख लिया और फिर उसे रूप और सुन्दरता प्रदान की। मानव अब अपनी संस्कृति के एक ऊँचे स्तर तक पहुंच गया था।

२. एथेन्स की रक्षा के लिए पेरीक्लीज की योजना में क्या खामी थी ?
३. एथेन्स विचारों को और स्पार्टा शक्ति को प्रधानता देता था। अन्ततः कौन ज्यादा प्रबल सिद्ध हुआ ?
४. ग्रीक के नगर-राज्यों के बीच हुए युद्धों से मानव समाज को क्या शिक्षा सीखनी चाहिए ?
५. यह कहा गया है कि हेलेनिक युग बहुत-कुछ ऐसा ही युग था जिसमें हम रह रहे हैं। किस रूप में यह बात सच है ?
६. फिलिप के ग्रीकों के खिलाफ अभियान से पूर्व उसने पक्का पता कर लिया था कि प्रत्येक नगर में ऐसे दल स्थापित करने में वह कैसे सफल हुआ ?
७. जब हम 'श्रमिक वर्ग' जैसी शब्दावलि का प्रयोग करते हैं तो 'वर्ग' से हमारा अभिप्राय

क्या उसी प्रकार के और उसी अंश तक विभेद से रहता है जो हेलेनिक युग में था ?

८. वर्ग-विभेदों और आर्थिक असमानताओं के कारण सर्वसाधारण लोग हेलेनिक युग के आविष्कारों का लाभ नहीं उठा सकते थे। आज अमेरिका में यह सब क्यों नहीं है ? क्या विश्व में ऐसे हिस्से हैं जहाँ यह बात आज भी सच है ?

९. तुम्हारी राय में, हेलेनिक युग में गुलामी ज्यादा होने की वजह से श्रम बचाने के तौर-तरीकों में प्रगति हुई या रुकावट पड़ी।

इतिहास के उपकरणों का प्रयोग

एक. नाम, तिथि और स्थान

(क) क्या तुम इन शब्दों के बारे में बता सकते हो ? डिलियन लीग, कुलीन तन्त्र, म्यूज़ियम, फिलीपिक्स, टोलमीवंश।

(ख) क्या तुम इन तिथियों के बारे में जानते हो ?
४०४ ई० पू०, ३३८ ई० पू०, ३३६-३२३ ई० पू०।

(ग) नक्शे में ये स्थान दिखाओ :
सिकन्दर के अभियान का मार्ग, अलेक्जेण्ड्रिया, मिस्र, अन्तियोक, सीरिया, कैरोनिया, मकदूनिया, सूसा, थेबीज़।

(घ) क्या इन व्यक्तियों के बारे में तुम बता सकते हो ?

सिकन्दर महान्, एरातोस्थिनीज, आर्किमिडिस, अरिस्टार्कस, यूक्लिड, मकदूनिया का फिलिप, पिण्डर, टोलेमी प्रथम।

दो. इतिहास बनाम नागरिक शास्त्र

(क) हेलेनिक जगत् ऐसा स्थान नहीं था जहाँ एक सामान्य व्यक्ति सुख से जीवन बिता सकता था; इसके कारण बताओ।

(ख) गुलामी की खराबियाँ बताओ (१) गुलामों के लिए, (२) गरीब स्वतन्त्र व्यक्ति के लिए, और (३) गुलामों के मालिकों के लिए।

तीन. **क्या तुम अपने विचार स्पष्ट रूप से प्रकट कर सकते हो ?**

(क) निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर कक्षा में अनौपचारिक वाद-विवाद करो :

१. पेरीक्लीज़ उतना बड़ा सेनापति नहीं था जितना बड़ा राजनेता था।

२. एथेन्स ने डिलियन लीग में अपने साथियों को धोखा दिया।

३. फिलिप और सिकन्दर ने ग्रीकों को एक संयुक्त साम्राज्य में मिलने के लिए विवश कर उनका हित किया।

४. सिकन्दर संस्कृति की अपेक्षा अभियानों में ज्यादा दिलचस्पी रखता था।

(ख) निम्नलिखित विषयों में से किसी एक पर कार्टून खींचो :

एथेन्स ने डिलियन लीग से एक साम्राज्य बनाया।...डेमास्थनीज ने वक्तृत्व कौशल से फिलिप का मुकाबला करना चाहा... ग्रीक एकता चाहते थे लेकिन आपस में लड़ते थे...हेलेनिक युग वैपम्यों का काल था।

(ग) प्रश्न एक (घ) के अन्तर्गत 'क्या तुम इन व्यक्तियों में बता सकते हो ?' शीर्षक के नीचे दिये गये व्यक्तियों में से किसी एक के बारे में कक्षा के लिए उसके जीवन औरकार्यों पर एक वार्ता तैयार करो।

चार. चित्र-अध्ययन

१. पृष्ठ १०७ पर दर्शायी गयी 'पंखों से युक्त विजय' शीर्षक मूर्ति नौसेना की विजय का उत्सव मनाने के लिए बनायी गयी थी। इसमें हथियारों से तुरही होठों पर लगाई गई है। मूर्तिकार ने विजय की भावना दिखाने के लिए कौनसे साधन अपनाए हैं ?

२. अगर पृष्ठ ११२ का चित्र किसी आधुनिक वैज्ञानिक का होता, तो उसमें क्या अन्तर होता ?
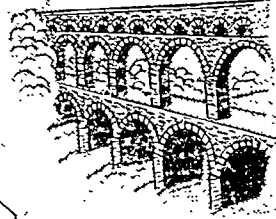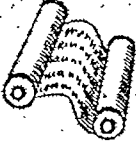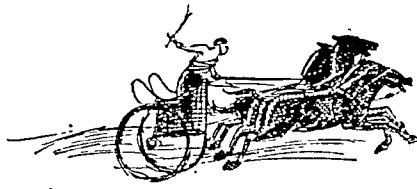
रोम
का
वैभव
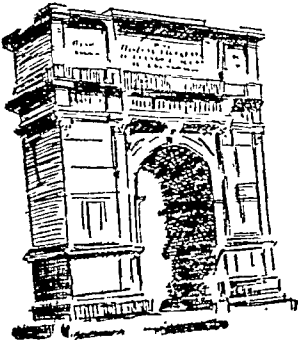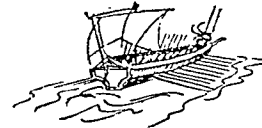
रोमन लोग

ग्रीकों ने मुख्यत: अपने कलात्मक और साहित्यिक कार्यों द्वारा विश्व पर अपनी छाप छोड़ी। दूसरी ओर, रोमनों ने निर्माण और बड़े साम्राज्य पर शासन की अपनी असाधारण योग्यता से दुनिया को प्रभावित किया। जब से रोम का नगर स्वतन्त्र हुआ और उसने अपनी सरकार स्थापित की, तब से लेकर उसके बड़े साम्राज्य के पतन तक लगभग एक हज़ार वर्षों का समय गुज़रा होगा। इस काल में रोम अपने अन्तर्गत, तब तक उसे ज्ञात, सभी देशों को ले आया था और उसने उन पर बड़ी योग्यता से शासन किया।

रोमनों ने अपने विशाल साम्राज्य को कई सूत्रों से एकता में बांधा था। रोम दूर-दूर तक फैले अच्छी और चलती सड़कों के जाल का केन्द्र बन गया था। यह केवल लोकोक्ति नहीं थी 'सभी सड़कें रोम को जाती हैं,' क्योंकि सड़कें ही रोमन साम्राज्य को बाँधे हुए थीं। साम्राज्य के विभिन्न बन्दरगाहों के बीच जहाज चला करते थे और इनसे बड़े पैमाने पर व्यापार चलता था। सैनिक, जिनके घर किसी एक प्रान्त में थे, आम तौर पर, उससे भिन्न प्रान्त में नियुक्त होते थे। इन विभिन्न तरीकों से ग्रीक, मिस्री, स्पेनिश, गाल और ब्रिटिश समूचे साम्राज्य में पाये जाते थे और वे विचारों तथा अपने माल का आदान-प्रदान करते थे। कानूनों की एकरूपता साम्राज्य के सभी क्षेत्रों तथा वर्गों के लिए एक-सा न्याय करती थी। ब्रिटेन से लेकर फिलस्तीन तक और जर्मनी से लेकर सहारा के मरुस्थल तक का जगत् इस शाही नगर के निर्देशन में एक 'राष्ट्र' बन गया था।
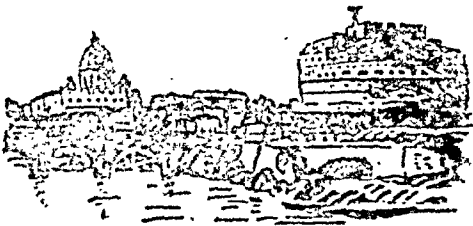
जो लोग रोम के आश्रित थे, वे नेतृत्व के लिए उसकी ओर देखने के आदी हो गये थे। वे ऐसे विश्व की कल्पना तक नहीं कर सकते थे जिसमें रोमन राज्य का निर्देशक हाथ, उसकी सुयोग्य सरकार और उसके न्याय कानून न हों। लेकिन साम्राज्य का पतन हो गया और एक हजार वर्षों तक लोग उस समय की प्रतीक्षा करते रहे जब एक विश्व-शक्ति उसका स्थान लेगी। रोम के शासन का इतना अधिक प्रभाव था !

4500 BC
4000 BC
3500 BC
3000 BC
2500 BC
2000 BC
1500 BC
1000 BC
500 BC
Birth of Christ
The Romans
500 AD
1000 AD
1500 AD
2000 AD
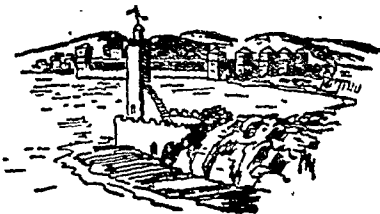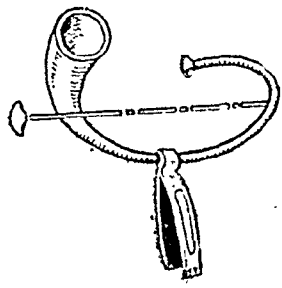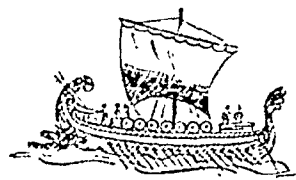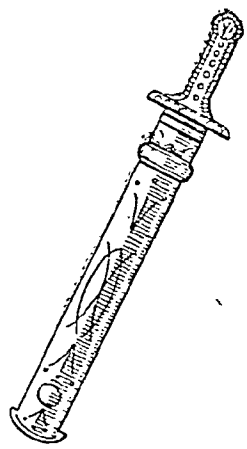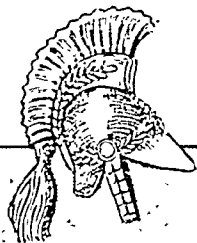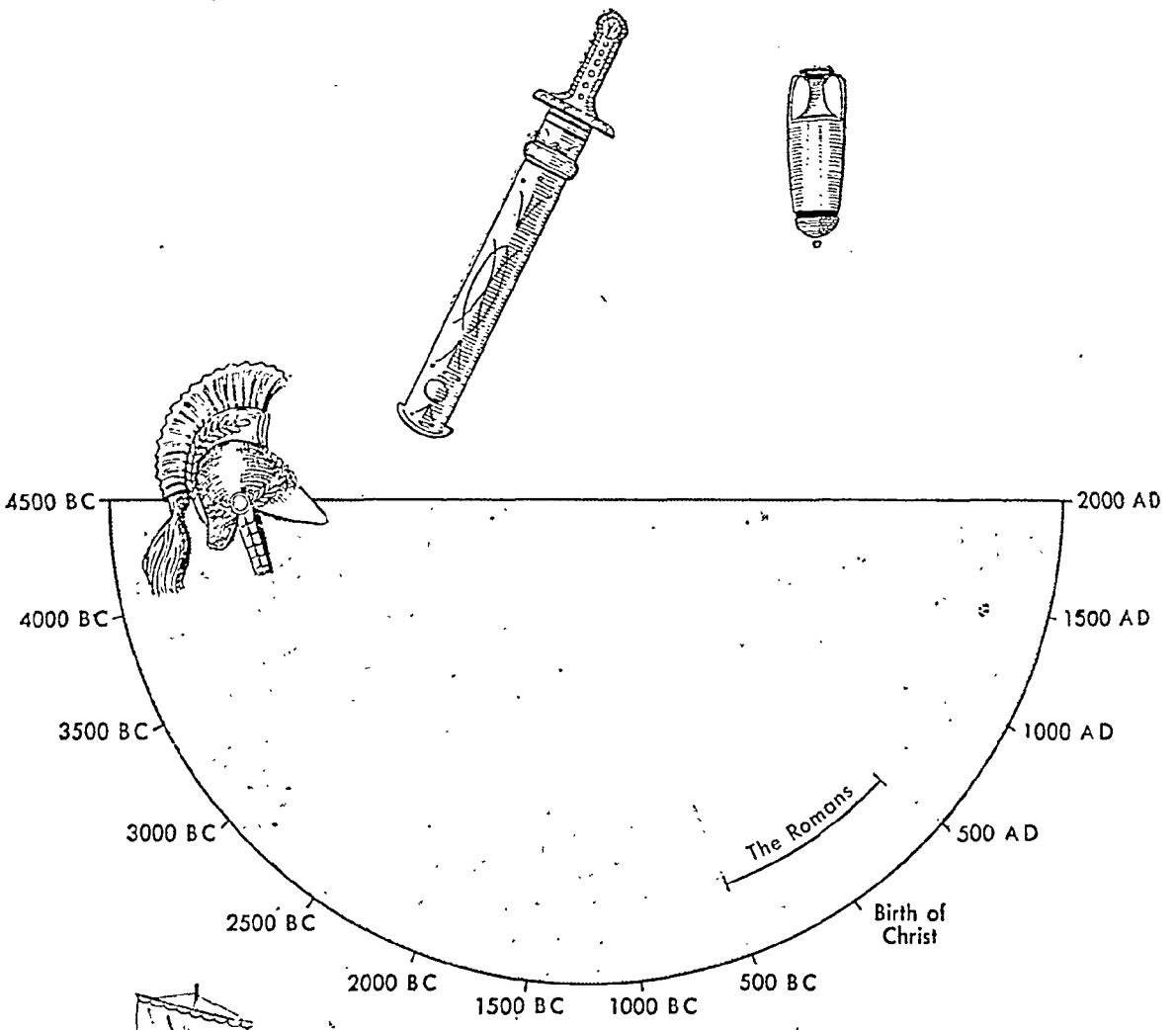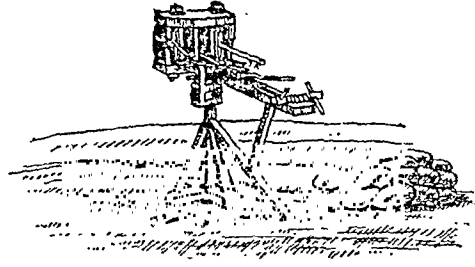
९ रोम इटली का शासक बना

हम कहते हैं कि इटली प्रायद्वीप का मुँह पश्चिम की ओर है। यह इसलिए कि प्रायद्वीप की लम्बान में चली गयी एपीनिन पर्वतश्रेणियाँ पूर्वी समुद्र-तट के निकट हैं। इसके अलावा, इन पर्वतमालाओं के पूर्वी ढलान पश्चिमी ढलानों की अपेक्षा अधिक तीखे चले गये हैं, इस कारण पूर्व की ओर से इटली के मध्य तक पहुँचना दुष्कर हो जाता है। पूर्वी समुद्र तट पर बहुत-से अच्छे बन्दरगाह भी नहीं हैं। इन सब कारणों से प्रायद्वीप का पूर्वी हिस्सा पश्चिम की अपेक्षा कम आकर्षक है, जब कि पश्चिम में चौड़ा तटवर्ती मैदान है, अच्छे बन्दरगाह हैं और एपीनिन पर्वतमालाओं की चढ़ाई हलकी है। पश्चिमी मैदान से होकर प्रायद्वीप की एक प्रमुख नौका-परिवहन-योग्य नदी टायबर भी बहती है। यह स्वाभाविक था कि ऐसी स्थिति में बस्तियाँ इटली की उस दिशा में विकसित हुई जिसका मुँह पश्चिम की ओर था।

प्रायद्वीप के उत्तर में समृद्ध और उपजाऊ पो नदी की घाटी है जो एपीनिन पर्वतमाला के इटली के उत्तरी छोर पर पहुंचने के साथ ही एकाएक मुड़ जाने के कारण अन्य हिस्सों से अलग हो गयी है। पो नदी के परली ओर आल्प्स पर्वत-श्रेणियाँ हैं जो दक्षिण की ओर से यूरोप के लिए रुकावट हैं। इटली से उत्तर की ओर आल्प्स को पार करना कठिन है क्योंकि अपने दक्षिणी ढालों पर पर्वत सीधे चले गये हैं। दक्षिण की ओर चल कर इटली में आना आसान है, क्योंकि उत्तरी ढलान पर चढ़ाई हलकी है। इस वजह से बीसियों कबीलों के लोग आल्प्स के ऊपर से, इटली के इतिहास के विभिन्न कालों में, इटली में आये और उस देश पर अपना प्रभाव छोड़ गये।

इटली के इतिहास पर भूगोल का प्रभाव

इन सब भौगोलिक स्थितियों का भूमध्य सागरीय जगत् के विकास पर प्रभाव पड़ा। सर्वप्रथम, भूमध्य सागर के मध्य में होने के कारण इटली के लिए समुद्र पर प्रभुत्व प्राप्त करना सरल था। दूसरे, इटली का मुँह पश्चिम की ओर होने के कारण उसे ऐसे समय में पश्चिमी भूमध्य सागर का नियन्त्रण

पो घाटी में बोझ ढोने के लिए अब भी बैलों का प्रयोग होता है। इस धरती का मालिक पास की एक गढ़ी में रहता है।

राफो गिलुमेट
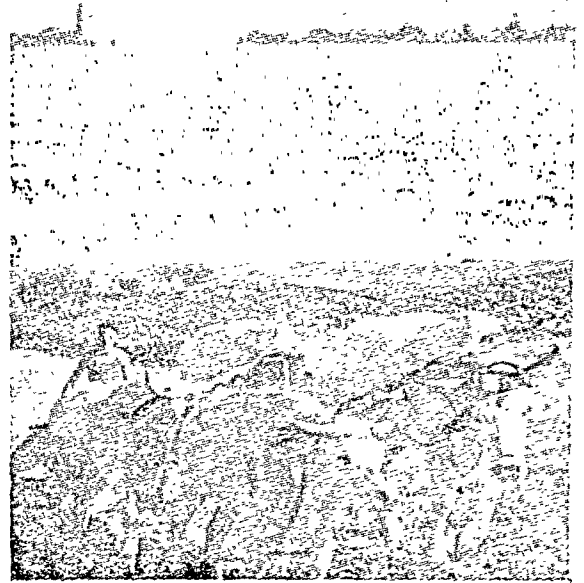
प्राप्त करने का मौका मिल गया जब कि उस क्षेत्र की अपनी कोई सभ्यता विकसित नहीं हुई थी। इस प्रकार रोमन संस्कृति समूचे पश्चिमी भूमध्यसागरीय क्षेत्र में फैल गई।

इटली ग्रीस की तरह छोटी-छोटी घाटियों में बँटा हुआ नहीं था। पश्चिमी मैदान काफ़ी विस्तृत था, इसलिए प्रमुख नगर रोम, समूचे क्षेत्र पर नियन्त्रण रख सकता था। इस ठोस आधार पर रोम ने समस्त प्रायद्वीप पर और फिर धीरे-धीरे समूचे भूमध्य-सागरीय जगत् पर आधिपत्य स्थापित कर लिया।

इटली आल्प्स से लेकर प्रायद्वीप के सुदूर दक्षिणी छोर तक लगभग सात सौ मील फैला हुआ है। समूचा देश छोटा है। इसकी उत्तर से दक्षिण तक अधिक लम्बाई होने के कारण इटली की आबो-हवा भिन्न-भिन्न है—उत्तर में मौतदिल जलवायु और दक्षिण में हमेशा ग्रीष्म ऋतु। अधिकांश इटली में वर्ष में दो फसलें पैदा करना सम्भव है। इस प्रकार की विविधतापूर्ण जलवायु में कई किस्म की फसलें उगाना सम्भव है। पर ग्रीस की ही भाँति, आम फसलें गेहूँ, जौ, जैतून और अंगूर हैं।

लैटिन लोग—इस सुरम्य और फल-फूलों वाले क्षेत्र में लगभग १८०० ई० पू० में भारत-यूरोपीय कबीलेवालों का एक हमलावर दल आल्प्स पर्वत पार करता हुआ आया और पो नदी तथा एपीनिन पर्वतश्रेणियों को लांघ कर उपजाऊ पश्चिमी मैदान तक पहुंचा। इन इटालियन कबीलों में सबसे महत्त्व-पूर्ण, लैटिन कबीला टायबर नदी के ठीक दक्षिण में एपीनिन और समुद्र के बीच, लैशियम में बस गया। जो भाषा वे बोलते थे, वह लैटिन थी, लेकिन वे लिख-पढ़ नहीं सकते थे। उन्होंने कांसे का प्रयोग सीखा था और उनकी कांसे की तलवारों ने उन्हें उन लोगों को मातहत बनाने में मदद की जिन्हें उन्होंने यहाँ पहुँचने पर पाया था।

अन्य कबीलों का इटली में आगमन—लैटिनों के अलावा तीन और जातियां इटली में आईं। टायबर नदी के उत्तरी भाग में पूर्व की ओर से, समुद्र से आजीविका चलाने वाले लोग आये। ये एट्रस्कन थे, जो सम्भवतः ग्रीक हमलावरों द्वारा क्रीट पर कब्जा किये जाने के वक्त भागे थे। उनका अपने दक्षिणी पड़ोसियों पर बड़ा प्रभाव पड़ा जिन्हें उन्होंने जीत लिया और दो शताब्दियों से अधिक अपने शासन में रखा।

दक्षिण इटली, जैसा कि हम देख चुके हैं, बहुत से ग्रीकों का घर बन गया था, जो बिखरे हुए नगर-राज्यों में रहते थे। सिसली का द्वीप भी, पूर्वी भाग में रहने वाले ग्रीकों का घर था। लेकिन पश्चिम में उत्तरी अफ्रीका से भूमध्य सागर पारकर आने वाले फीनीसियनों और कार्थेजियनों ने अपने उपनिवेश बना लिये थे। गाल आल्प्स से होकर पो नदी की घाटी में आये, जहाँ, वे बस गये।

१. इटली की मुख्य भौगोलिक स्थितियों का वर्णन करो और नक्शे में दिखाओ।
२. अपने भूमध्यसागर में स्थित होने का इटली पर क्या प्रभाव पड़ा?
३. किन-किन बातों में रोम की स्थिति इटली में अच्छी थी?
४. इटली और सिसली में आने वाले विभिन्न लोगों के नाम बताओ और यह बताओ कि उनमें से प्रत्येक कहां बसा।

एट्रस्कन लोग संस्कृति में अपने पड़ोसियों से बहुत आगे थे। उनकी काँसे की कारीगरी बड़ी सुन्दर और विविध प्रकार की थी।
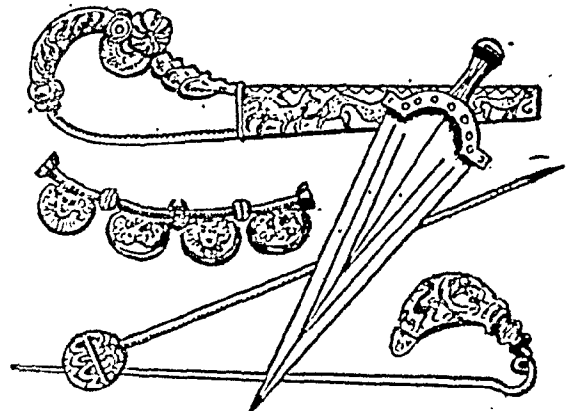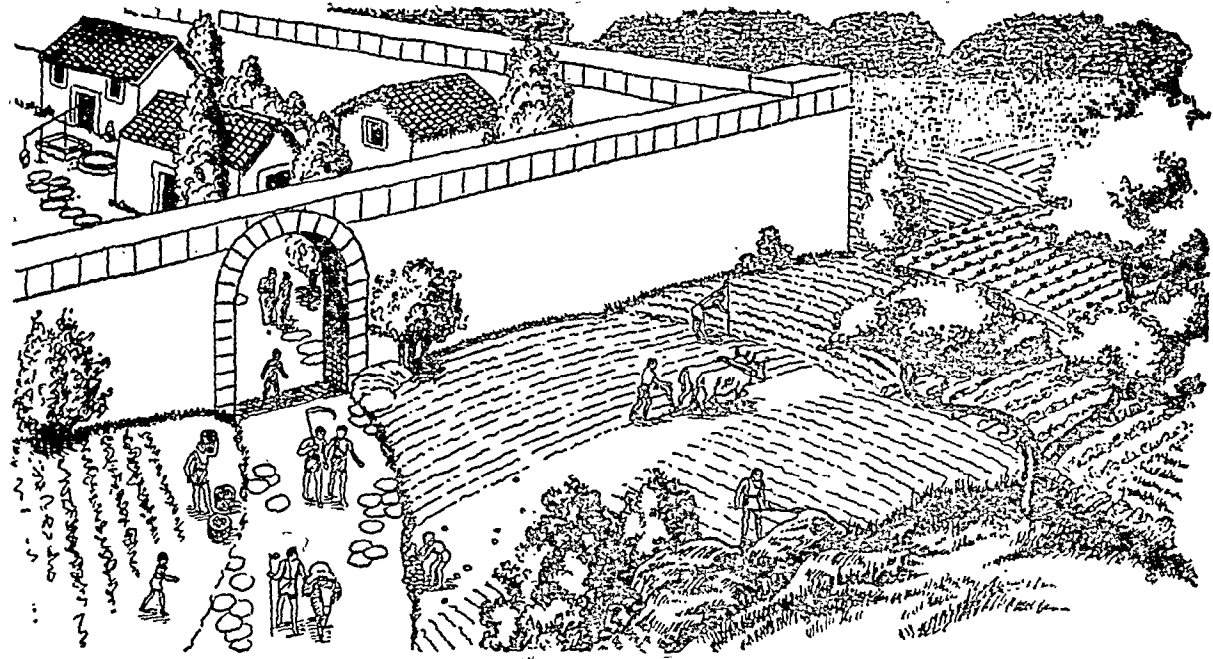
तटवर्ती खेत अधिक उपजाऊ होने के कारण वहां के लैटिन लोग पर्वतों पर रहने वाले लोगों की अपेक्षा अधिक धनी और सुसंस्कृत हो गये। अनेक शताब्दियों तक ये दो समूह एक दूसरे से लड़ते रहे।

रोम में गणराज्य की स्थापना

रोम और प्राचीन रोमन लोग—घुमक्कड़ लैटिन, प्राचीन ग्रीकों की ही भाँति, गड़रिये थे। लेकिन जब वे टायबर नदी के दक्षिण तट पर लेशियम में बस गये तो उनमें से अधिकांश किसान बन गये। वे चहारदीवारी से घिरे छोटे कस्बों में रहते थे, लेकिन उनके खेत कस्बों के बाहर होते थे। प्रतिदिन सुबह किसान अपने खेतों की देखभाल को निकल जाते थे और रात में कस्बे की चहारदीवारी के भीतर सुरक्षा के लिए लौट आते थे। सभी व्यक्ति, धनी और गरीब, मुख्यत: आजीविका के लिए कृषि पर ही निर्भर थे।

रोम के आरम्भिक इतिहास के बारे में निश्चित रूप से कुछ ज्ञात नहीं है। इसका सम्भावित स्पष्टीकरण यह है कि इसकी बुनियाद समुद्रतट से १४ मील दूरी पर टायबर के किनारे लैटिनों द्वारा स्थापित एक व्यापार-चौकी से पड़ी। उन्होंने शीघ्र ही पेलेटिन पहाड़ी में, जो इस क्षेत्र में मैदानी क्षेत्र के सामने पड़ने वाली सात पहाड़ियों में से एक है, एक किला बनवाया। अन्य बस्तियाँ अन्य पहाड़ियों पर बनाई गईं और जब जनसंख्या बढ़ी तब ये सब मिल कर एक नगर बन गया।

बहुत से दृष्टिकोणों से रोम की स्थिति बहुत अनुकूल थी। वह नदी-किनारे काफी ऊपर बसा था जिससे विदेशी नौसेनाएँ आसानी से उस पर हमला नहीं कर सकती थीं। जब पहाड़ियों में किलेबन्दी हो गई, तब वे स्थल की ओर से हमलावरों के विरुद्ध सुदृढ़ मोर्चे बन गईं। उसकी पश्चिमी मैदानों में मध्यवर्ती स्थिति से उसे उस मैदान को जीतने और शासन करने में बड़ी सुविधा हुई।

एट्रुस्कन शासन—आठवीं शताब्दी ई० पू० में रोम अपनी भौगोलिक स्थिति के बावजूद, कमज़ोर था। वह टायबर नदी के पार अपने सुसंस्कृत और आक्रामक पड़ोसियों को भय की निगाह से देखता था। उसका डर सही भी था क्योंकि लगभग ७५० ई० पू० में एक एट्रुस्कन राजा ने रोम और समस्त लेशियम को जीत लिया।

एट्रुस्कन कब्रों की खुदाई से ऐसी चीजें प्राप्त हुई हैं जिनसे जाहिर होता है कि एट्रुस्कन अत्यन्त

मेट्रोपोलिटन म्यूजियम आफ आर्ट

एट्रस्कन कांसे की कारीगरी में बड़े कुशल थे। उनके कांसे के कवचों पर सुन्दर नक्काशी होती थी।

कुशल लोग थे। वे खूबसूरत धातु का काम और मिट्टी के वर्तनों का काम करते थे। उनका ग्रीकों से व्यापार चलता था जिनसे उन्होंने व्यापार करने के नये तरीके तथा मिट्टी के वर्तनों और जेवरात की कलात्मक डिज़ाइनों का काम सीखा।

एट्रस्कनों ने रोम में भी सुधार किये। उन्होंने सात पहाड़ियों के इर्द-गिर्द की निचली जमीन से पानी निकालने को नालियाँ बनाईं। उन्होंने नगर के चारों ओर एक दीवार बनाई और उसके भीतर अच्छी इमारतें बनाईं। रोमनों ने अपनी भाषा, लैटिन ही वरकरार रखी लेकिन वे अपने विजेताओं से अन्य चीजें सीखने में ढीले नहीं रहे। वे शीघ्र ही खूबसूरत मिट्टी के वर्तन और धातु की चीजें बनाने लगे। वे ग्रीकों से व्यापार भी करने लगे। उन्होंने एट्रस्कनों से युद्धकला सीखी और इसमें इतने प्रवीण हो गये कि लगभग ५०० ई० पू० में वे अपने शासकों को भगाने और अपनी खुद की सरकार स्थापित करने में सफल हुए।

गणराज्य की स्थापना—यह नयी सरकार गणतन्त्रात्मक थी। अधिकारियों का चुनाव होता था। यह एक अभिजातवर्गीय गणतन्त्र था, क्योंकि सिर्फ पेट्रीशियन या अभिजातवर्गीय ही पदाधिकारी हो सकते थे। गरीब कारीगरों और किसानों की, जो प्लीब्स या प्लीबियन वर्ग के कहाते थे, सरकार में कोई आवाज़ नहीं थी। प्रति वर्ष दो पेट्रीशियन चीफ मजिस्ट्रेट पदों के लिए, जिन्हें कान्सल कहते थे, चुने जाते थे। वे सेना के नेता होते थे, वे असेम्बली में कानूनों का प्रस्ताव रख सकते थे। यह असेम्बली शस्त्रधारी योद्धाओं की होती थी। कुछ मामलों में कान्सल न्यायाधीशों का काम करते थे और उन्हें कानूनों को कार्यान्वित कराने का अधिकार था। चूंकि दोनों कान्सलों को एक दूसरे के कार्यो की जांच करने का अधिकार था, इसलिए उनमें से कोई भी सर्वशक्तिमान् नहीं हो सकता था। संकट-काल में, जैसे युद्ध की स्थिति, उनके स्थान पर सेनेट एक डिक्टेटर नियुक्त करती थी।

सरकार में सबसे महत्त्वपूर्ण संस्था सेनेट थी। यह पेट्रीशियनों की बनी थी जो इसके जीवन पर्यन्त पदाधिकारी होते थे। सेनेट को कानूनों की स्वीकृति और कार्यालय के लिए पदाधिकारी नियुक्त करने होते थे। उसके हाथ में कर तथा अन्य कई मामले रहते थे, जिनमें रोम की विदेश नीति भी शामिल थी। दूसरी ओर, असेम्बली को बहुत थोड़े से अधिकार थे। सभी नागरिक, जो अस्त्रधारण कर सकते थे, इसके सदस्य थे, लेकिन असेम्बली में पेट्रीशियनों के वोटों को प्लीबनों के वोटों की अपेक्षा ज्यादा महत्त्व का समझा जाता था।

प्लीब बनाम पेट्रीशियन—प्लीबन सरकार से इसलिए असन्तुष्ट थे कि राजकाज में सरकार उनकी बात पर बहुत कम ध्यान देती थी और उन्हें पेट्रिशियन वर्ग से विवाह की अनुमति देना नामंजूर कर दिया गया था। गणतन्त्र की स्थापना के शीघ्र बाद ही प्लीबनों ने रोम छोड़ देने और टायबर पार कर अपने लिए एक नया शहर बसा लेने की धमकी दी। पेट्रीशियनों को अपनी सेना में

उनकी आवश्यकता थी इसलिए वे उन्हें ज्यादा अधिकार प्रदान करने को मजबूर हुए। उन्हें अनुमति दी गई कि वे अपने मजिस्ट्रेट चुन सकते हैं जो 'ट्रिब्यून' कहलाते थे। ट्रिब्यूनों को निषेधाधिकार प्राप्त था, जिसका मतलब यह कि 'मैं किसी भी अन्य मजिस्ट्रेट के फैसले को अमान्य करता हूँ अगर इस तरह के कार्यों से प्लीवनों के अधिकार खतरे में पड़ते हैं।'

निषेधाधिकार के प्रयोग से ट्रिब्यून पेट्रीशियनों और प्लीवनों के बीच की रुकावटों को दूर करने में सफल हुए। पर प्लीवनों को समानाधिकार प्राप्त करने के लिए डेढ़ शताब्दी बाद तक लड़ना पड़ा। आखिर में, एक-एक करके शनैः-शनैः उन्हें सफलता मिली। लगभग ४५० ई० पू० मे उन्हें "बारह पट्टिका" नामक लिखित कानूनों के सभी अधिकार प्राप्त हुए। ये "बारह पट्टिका' इसलिए कहलाते थे कि ये कानून कांसे की बारह पट्टिकाओं पर खोद

रोम ने लगभग ४०० ईस्वी पूर्व में सारे इटली को जीतना शुरु कर दिया। लगभग १०० वर्ष बाद उसका सारे प्रायद्वीप पः अधिकार हो गया।

कर लिखे गये थे। बाद में प्लीबों को पेट्रीशियनों से विवाह की अनुमति मिल गयी। तब उन्हें सार्वजनिक भूमि के वितरण में उनका उचित भाग भी मिल गया। अन्त में, उन्हें गणतन्त्र में किसी भी पद को सम्भालने का अधिकार मिला और कार्यालय की अवधि समाप्ति के बाद वे सेनेट में भी प्रवेश कर सकते थे। तीसरी शताब्दी ई० पू० के प्रारम्भ में असेम्बली को कानून बनाने के अधिकार मिले। इससे पेट्रीशियनों और प्लीवनों के बीच विभेद समाप्त हो गया। पुराने अभिजात-वर्गीय गणतन्त्र का स्थान लोकतन्त्रात्मक गणतन्त्र ने ग्रहण कर लिया।

रोमनों का गणतन्त्र एथेनियनों से भिन्न था। तुम्हें याद होगा कि एथेन्स में लोकतन्त्र का विशुद्ध रूप था जिसमें सभी नागरिकों का कानूनों के निर्माण में हिस्सा रहता था। दूसरी ओर, रोम में, जनता के प्रतिनिधि महत्त्वपूर्ण निर्णय लेते थे। इस किस्म का लोकतन्त्र बड़ी जनसंख्या के लिए ज्यादा उपयुक्त था। वर्तमान लोकतन्त्र भी इसी रूप का अनुसरण करते हैं।

रोमन सैनिक की पत्नी उसकी छाती का कवच ठीक कर रही है और उसका लड़का गर्व से उसकी ढाल और भाला थामे खड़ा है।
बैटीमैन आर्काइव

रोम की इटली पर विजय

जब रोम की शक्ति बढ़ी तो उसके पड़ोसी उस पर सन्देह की दृष्टि रखने लगे, और अपनी रक्षा के लिए उसने कृषक-सैनिकों की एक सशक्त सेना संगठित की। वे कष्ट-सहिष्णु और अनुशासित थे। इसके अलावा, वे अपने घरों और परिवारों की रक्षा या अधिक भूमि प्राप्ति के लिए युद्ध करते थे, जो नागरिकों में बाँटी जाती। इसलिए वे और भी उत्साह से लड़ते थे।

दो शताब्दियों से भी अधिक लम्बी युद्धों की शृंखला में रोम ने सफलतापूर्वक अपने दुश्मनों को हराया और हमलावरों को मार भगाया तथा एक के बाद एक क्षेत्र जीता। उसने अपने पड़ोसी लैटिनों, पूर्व की ओर के इटालिक कबीलों, तथा उत्तर के एट्रेस्कनों को हराया और अन्त में दक्षिण इटली के ग्रीकों को परास्त किया। विजित लोगों के साथ रोम का सद्व्यवहार था। वे उन्हें अपनी प्रजा नहीं बनाते थे अपितु 'इटालियन मित्र राष्ट्र' बनाते थे और सिर्फ सैनिकों तथा वित्तीय सहायता की माँग करते थे। एवज में वे उनकी हिफाजत करते थे और उन्हें बहुत बड़े अंश तक स्थानीय स्वशासनाधिकार प्राप्त थे। इस मधुर व्यवहार से विजित राष्ट्रों के उनके प्रति वफादार रहने में मदद मिली।

इटली में रोम की शक्ति का अभ्युदय तेजी से नहीं हुआ, लेकिन अब उसका शासन समूचे प्रायद्वीप में था।

१. रोम नगर की स्थापना किस प्रकार हुई ?
२, ५०० ई० पू० से पहले कौन लोग रोम में शासन करते थे ?
३. गणतन्त्र किसे कहते हैं ?
४. प्राचीन गणतन्त्र में असेम्बली और सेनेट के क्या अधिकार थे ?
५. समय बीतने के साथ-साथ रोम किस तरह अधिक लोकतान्त्रिक बना ?
६. रोमन सेना के संगठन का वर्णन करो।
७. बताओ कि रोम ने कैसे इटली प्रायद्वीप पर नियन्त्रण हासिल किया ?
८. रोम इटली में विजित लोगों के साथ कैसा वर्ताव करता था।

विचार-विमर्श के लिए प्रश्न

१. इटली की भौगोलिक स्थिति ने किस तरह रोमन साम्राज्य के विकास में मदद पहुंचाई ?

२. इटली का मुंह पश्चिम को है। इसका पश्चिमी यूरोप के इतिहास और संस्कृति पर क्या प्रभाव पड़ा ?

३. किस रूप में रोमन गणतन्त्र की सरकार अमेरिका के समान थी ? किस रूप में वह भिन्न थी ?

४. रोमन सेनेट की अमेरिकी सेनेट से तुलना करो—उसकी सदस्यता, कार्यकाल की अवधि और अधिकारों की चर्चा करो।

५. क्यों बहुत-सी मौजूदा सरकारें ग्रीकों के विशुद्ध प्रजातन्त्र के बजाय रोमनों की प्रतिनिधि प्रणाली का अनुसरण करती हैं ?

इतिहास के उपकरणों का प्रयोग

एक. **नाम, तिथियाँ और स्थान।**

(क) क्या तुम इन शब्दों का अर्थ बता सकते हो।

"सभी सड़कें रोम को जाती हैं"···असेम्बली ···"सात पहाड़ियों का नगर"···"इटली के मित्र देश"···पेट्रीशियन, प्लीब···गणतन्त्र···सेनेट··· ट्रिब्यून···बारह पट्टिकाएँ···कान्सल।

(ख) क्या तुम इन तिथियों को जानते हो ?

१८०० ई० पू०···४५० ई० पू०···७४०-५०० ई० पू०।

(ग) ये स्थान नक्शे में दिखाओ :

आल्प्स पर्वतमाला, एपीनिन पर्वत श्रेणियाँ··· टायबर नदी···इटली···पो नदी···रोम···एट्रेस्कनों, लैटिनों, ग्रीकों और गालों द्वारा अधिकृत क्षेत्र।

दो. **क्या तुम अपने विचार अच्छी तरह प्रकट कर सकते हो ?**

(क) एट्रेस्कन कांसे और तांबे की चीजें बनाने में कुशल थे। धातु के काम में दिलचस्पी रखने वाले एक लड़के को उस विषय पर अपने शिक्षक या किताबों से यह जानकारी प्राप्त करने के लिए नियुक्त

करो कि एट्रस्कन किस तरह काम करते थे। वह लड़का आकर कक्षा को बताये।

(ख) टामस बी० मैकाले की 'प्राचीन रोम के गीत' में एक कविता है जिसका शीर्षक है "होरेशस पुलसर" (होरेशियस एट द ब्रिज) एक छात्र को उसके अंश कक्षा को पढ़ कर सुनाने को कहो।

(ग) कक्षा में सुनाने के लिए निम्नलिखित विषयों में से एक को चुनो—

रोम के बसने के बारे में प्रचलित जनश्रुति की कहानी...एट्रस्कन कला...प्राचीन गणतन्त्र की सेनेट।

तीन: ब्लैक बोर्ड पर

इटली में व्यापार के विकास के कारण ब्लैकबोर्ड पर लिखो। अपनी बात की पुष्टि के लिए प्रमाण दो।

चार. वाद-विवाद

कक्षा के चार सदस्यों में से दो को एक ओर और दो को एक ओर रख कर इस विषय पर वाद-विवाद करो कि रोमन गणतन्त्र में एथेनियन नगर-राज्य की अपेक्षा अच्छी सरकार थी।

पांच. चित्र अध्ययन

क्या तुम बता सकते हो कि पृष्ठ १२१ पर दिये चित्र में पोग्राटी में बैलों का प्रयोग क्यों किया जाता था। दो कारण बताओ।
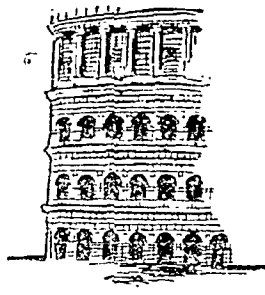
१० भूमध्यसागरीय जगत् पर रोम का शासन

रोम के गणतन्त्र बन जाने के बाद दो शताब्दी से अधिक समय तक वह अपने घरेलू मामलों में ही इतना व्यस्त रहा कि उसे इटली से बाहर हो रही घटनाओं को देखने की फुरसत नहीं थी। पर दक्षिण इटली के ग्रीकों पर विजय के बाद, उसे राहत की सांस लेने का अवसर मिला और उसने विदेशों की ओर अपना ध्यान घुमाया। नवोदित शक्तिसम्पन्न रोम नगर ने समुद्र की ओर नज़र डाली। उसके सामने उत्तरी अफ्रीका का कार्थेज नगर था, जिसकी स्थापना समुद्री व्यापार करने वाले फीनीशियनों ने की थी और जो अब एक व्यापारिक साम्राज्य का केन्द्र बना हुआ था।

रोम और कार्थेज में संघर्ष

कार्थेज—कार्थेज पश्चिमी भूमध्यसागरीय समुद्री भागों पर शासन करता था और उस समुद्र के इर्द-गिर्द उसके उपनिवेश थे। स्पेन की चांदी की खानें उसकी सम्पत्ति बढ़ाती थीं। उसके पास एक नौसेना थी और एक स्थल सेना थी जिसमें मुख्यतः भाड़े के सैनिक थे। कार्थेज एक धनी हेलेनिक शहर था। उसके पास एक शानदार बन्दरगाह, खूबसूरत इमारतें, सुनियोजित सड़कें, दौलत की चमक-दमक और शानो-शौकत थी।

रोम—कार्थेज वाले रोम के गरीब शहर को उसकी तंग गलियों, मिट्टी की ईंटों और एकमंजिले मकानों के कारण घृणा की दृष्टि से देखते थे। फिर भी रोम के पास वह सम्पत्ति थी जिसके लिए कोई भी शहर उससे ईर्ष्या कर सकता था। उसकी नागरिक सेना इतनी कष्ट-सहिष्णु और देशभक्त थी जिसे दौलत से नहीं खरीदा जा सकता था। रोमन सेनेट में देशाभिमानी लोग थे, जो सादा जीवन व्यतीत करते और रोम में सुशासन के प्रयास में सख्त मेहनत करते थे। इसमें सन्देह है कि किसी भी राष्ट्र में, कभी भी, इतने शुद्धचेतन और सुयोग्य व्यक्तियों का दल शासन में रहा हो जितना कि प्राचीन गणतन्त्र में रोम के सेनेटरों का था।

प्यूनिक युद्ध—शक्तिशाली और धनी कार्थेज और टायबर तट पर बसे गरीब लेकिन महत्त्वाकांक्षी नगर के बीच ईर्ष्या थी। कार्थेज वाले उन बन्दरगाहों में अन्य नगरों को व्यापार करने का अधिकार नहीं देते थे जिनका नियन्त्रण उनके हाथ में था। इससे रोमनों को क्रोध आया क्योंकि उनके व्यापार को बढ़ाने की महत्त्वाकांक्षा में इससे बाधा पड़ती

प्यूनिक युद्धों में कार्थेजिनियनों के नेता हनीबाल को "इतिहास का सबसे शानदार असफल व्यक्ति" कहा गया है। क्यों?

CARTHAGE AND ROME BEFORE THE PUNIC WARS
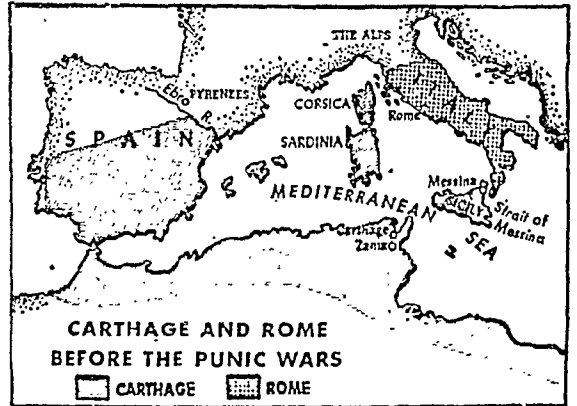
थी। जब कार्थेज ने उत्तर-पूर्वी सिसली में मेसीना बन्दरगाह पर अधिकार किया तो युद्ध छिड़ गया (२४६ ई० पू०)। यह प्यूनिक युद्ध कही जाने वाली तीन लड़ाइयों के क्रम की शुरुआत थी, जो १४६ ई० पू० तक चला।

पहला प्यूनिक युद्ध २३ वर्षों तक चला। लड़ाई के दौरान कई बार ऐसा प्रतीत होता था कि रोम अब कार्थेज की शक्ति के आगे अधिक ठहर नहीं पायेगा क्योंकि रोमन समुद्र में पहली ही मर्तबा लड़ रहे थे। तो भी, उन्होंने निर्णयात्मक समुद्री लड़ाई जीती और कार्थेज वालों को सन्धि के लिए विवश होना पड़ा। सिसली द्वीप रोमनों के हाथ में रहा जिससे मेसेना जलडमरूमध्य पर उसका अधिकार पक्का हो गया।

दूसरा प्यूनिक युद्ध स्पेन पर अधिकार के लिए लड़ा गया। कार्थेज की ओर उसका योग्य सेनापति जनरल हनीबाल था। वह साहस के साथ ६०,००० सैनिकों को लेकर स्पेन, गाल (वर्तमान फ्राँस) और आल्प्स पर्वत को लांघ कर इटली में घुस गया। भयंकर चढ़ाई में बहुत कष्ट उठाने और बहुत

३०० हाथियों पर सामान बांधकर हनीबाल आल्प्स पर्वत के पार फौज ले गया। यह कार्य इतिहास का एक करिश्मा था।
ब्राउन ब्रदर्स

सैनिकों की मृत्यु के बावजूद उसने प्रायद्वीप के उत्तरी हिस्से में अपना शिविर स्थापित किया और रोमनों का मनोबल समाप्त करने के लिए उनके बीच गुप्तचरों को भेजा।

हनीबाल ने महत्त्वपूर्ण लड़ाइयाँ जीतीं और एक भी लड़ाई हारे बिना इटली की भूमि में १५ वर्षों तक अपनी सेना को बनाये रखा। अन्त में रोमनों ने सुयोग्य जनरल सीपियो अफ्रिकेनस के नेतृत्व में कार्थेज के अपने क्षेत्र में सेना भेजी। तब कार्थेज को हनीबाल के नेतृत्व की जरूरत अपने घर में ही पड़ी, इसलिए वह लौट पड़ा। उसकी रोमन सेना से मुठभेड़ हुई और २०२ ई० पू० में कार्थेज के समीप, ज़ामा के मैदान में उसकी पराजय हो गयी।

जो अपमानजनक शर्तें रोमनों ने उन पर लादीं, उनसे कार्थेज के अधिकाँश क्षेत्र और उसकी नौसेना जाती रही। उस पर प्रतिबन्ध लग गया कि वह रोम की अनुमति के बगैर किसी से युद्ध नहीं कर सकेगा।

हनीबाल ने, जो भागकर पूर्व में चला गया था, पूर्वी भूमध्यसागर में मित्रों को खोजने का प्रयास किया, जो रोम से लड़ने में उसे मदद दे सकें। पर वे देश, जिन्होंने उसका प्रस्ताव स्वीकार किया, रोम की शक्ति के आगे ठहर पाने में बड़े कमजोर थे और वे एक-एक करके जीत लिये गये। पहले मकदूनिया और ग्रीस का पतन हुआ और फिर पश्चिमी एशिया माइनर का।

बहुत से रोमन ऐसे भी थे जिन्होंने द्वितीय प्यूनिक युद्ध में कार्थेज के साथ किये गये अपमान के व्यवहार को नाकाफी समझा। रोम भर में नारा लगा कि कार्थेज को विनष्ट किया जाय। कार्थेज ने अफ्रीका में अपने झगड़ालू पड़ोसियों से अपनी हिफ़ाजत का प्रयास किया। रोम को तीसरा युद्ध छेड़ने का यह एक बहाना मिल गया। कार्थेज साहस के साथ तीन वर्षों तक डटा रहा पर अन्त में उन्हें हथियार डाल देने पड़े। रोम ने कार्थेज को जलाकर भूमिसात् कर दिया और उसके नागरिकों को या तो मार डाला या गुलाम बनाकर बेच दिया। रोम अब भूमध्य-सागरीय जगत् का एकमात्र स्वामी हो गया। थोड़े

से स्थान अब भी अविजित थे लेकिन वे भी धीरे-धीरे जीत लिये गये।

प्यूनिक युद्धों के परिणाम—प्यूनिक युद्धों और पूर्वी भूमध्य सागर विजय का रोम पर बहुत बड़ा प्रभाव पड़ा। उसने पूर्व में अलेक्जेण्ड्रिया, अन्तिओक और एथेन्स का तथा पश्चिम में कार्थेज से नेतृत्व छीन लिया था, इससे रोम भूमध्यसागरीय जगत् का केन्द्रबिन्दु बन गया। इस प्रकार उसके नागरिक हेलेनिक संस्कृति के सम्पर्क में आये जिसने उसकी संस्कृति की समूची धारा को ही बदल डाला। पश्चिमी भूमध्यसागर पर जिसमें अधिकतर आदिम लोग रहते थे, रोम के आधिपत्य से उसे इन लोगों को लैटिन संस्कृति में ढालने का मौका मिला। रोमन व्यापारी, जो नये क्षेत्रों के साथ व्यापार करके समृद्ध हो गये थे, सम्पत्ति लेकर घर लौटे और उन्होंने उन गरीब किसानों की जमीनें खरीद लीं जो युद्धों में लड़े थे। धनिकों ने बड़े पैमाने पर मवेशी पालन शुरू कर दिया, और छोटे किसानों से कम मूल्य पर माल बेचने लगे थे। किसानों को अपने करों की अदायगी के लिए कर्जदार होना पड़ता था। अन्ततोगत्वा छोटे किसान, जो रोमन गणतंत्र की रीढ़ रहे थे, अपनी जमीनें खो बैठे। इस प्रकार धनी अधिक धनी और गरीब अधिक गरीब बनते जा रहे थे और दोनों वर्गों के बीच संघर्ष शुरू हुआ। आखिरकार, रोम के हाथ में अब विजित लोगों पर शासन का काम रह गया, जिनमें कुछ पिछड़े हुए और कुछ सुसभ्य थे।

१. कार्थेज नक्शे में बताओ। इसको किसने बसाया ?
२. कार्थेज को रोम के साथ युद्ध करते हुए क्या सुविधाएं प्राप्त थीं ? रोम को क्या सुविधाएँ प्राप्त थीं ?
३. रोम और कार्थेज के बीच युद्ध क्यों हुआ ?
४. प्रथम प्यूनिक युद्ध में रोम ने क्या पाया ?
५. द्वितीय प्यूनिक युद्ध का वर्णन करो।
६. द्वितीय प्यूनिक युद्ध की समाप्ति पर हुई संधि की मुख्य शर्तें क्या थीं ?
७. द्वितीय प्यूनिक युद्ध के बाद हनीबाल की कार्रवाइयों के बारे में बताओ।
८. कार्थेज का अन्त में क्या हुआ ?
९. प्यूनिक युद्धों का रोम पर क्या प्रभाव पड़ा ?

प्यूनिक युद्धों के बाद घरेलू संघर्षों की एक शताब्दी

अभी प्यूनिक युद्धों को समाप्त हुए अधिक अर्सा नहीं गुजरा था कि १३३ ई० पू० में रोम में गृहयुद्ध शुरू हो गया। यह संघर्ष रुक-रुक कर एक शताब्दी तक चलता रहा। यह वस्तुतः सेनेटर वर्ग और गरीब वर्ग के बीच संघर्ष था। ये दो वर्ग धीरे-धीरे दो पक्ष हो गये जिन्हें हम सेनेटर पार्टी और जनता पार्टी कहेंगे।

सेनेटर वर्ग—प्यूनिक युद्धों के दिनों में विदेशी मामलों में सेनेट का अधिकार था। इससे सरकार पर उसका नियंत्रण बढ़ा। सेनेट की सदस्यता का स्वरूप भी बदल चुका था। सेनेटर उस तरह के विनम्र और आत्मत्यागी व्यक्ति नहीं रहे थे, जैसे प्यूनिक युद्धों के प्रारम्भ में सेनेट में थे। अब भी जब कि युद्ध समाप्त हो गये थे, सेनेट सर्वोच्च अधिकारों वाली बनी रही लेकिन अब उसके सदस्य निजी स्वार्थों के लिए उसके अधिकारों का दुरुपयोग करने लगे थे।

सर्व-साधारण वर्ग—रोमनों का बहुसंख्यक वर्ग सेनेटर वर्ग का नहीं था, और उनके भी अपने हित थे। भूमिहीन किसान मजदूरों के रूप में काम खोजने शहर में जाते थे और बहुसंख्यक बेरोजगार पड़े हुए लोगों में शामिल हो जाते थे। शहर के बाहर रहने वाले बहुत कम रोमन असेम्बली में भाग लेने आ पाते थे और इस तरह वह संस्था अब मुख्यतः निम्न वेतन-भोगी मजदूरों और बेरोजगारों की रह गई थी। यह बड़ा दल जनतापार्टी का बहुमत बनाता था। उन्होंने मांग की कि सरकारी कोष से सस्ती रोटी या मुफ्त रोटी की व्यवस्था की जाय।

तानाशाह—इस प्रकार की स्थिति से महत्त्वाकांक्षी राजनीतिज्ञों के लिए गरीबों को मुफ्त अनाज और अन्य सुविधाओं के रूप में घूस देकर पदों पर आसीन हो जाना संभव हुआ। इस प्रकार राजनीतिक स्थिति बड़ी गंभीर हो चली। जनता का

दि रोब नामक चित्रपट के इस दृश्य में साम्राज्यकालीन धनी रोमनों के जीवन की बारीकियां दिखाई गई हैं—उनकी वेश-भूषा, मकान की सजावट आदि। दाईं और बाईं ओर गुलाम खड़े हैं।

समर्थन प्राप्त कर एक राजनीतिज्ञ तानाशाह के समकक्ष बन सकता था। प्रतीत होता था गणतन्त्र प्रणाली की सरकार स्थिति को संभालने में असमर्थ है। भ्रष्टाचार और घूसखोरी चरम सीमा पर थी और भीतरी तनाव लगभग वैसे ही बना हुआ था।

राजनीतिक शक्ति प्राप्त करने के आकांक्षी व्यक्तियों ने दूसरे तरीके का भी प्रयोग किया। उस समय सैनिक नेता, जो रोम के लिए जमीन जीत सकते थे और दौलत लूट कर ला सकते थे, सेनेट पार्टी के या जनता पार्टी के मनचाहे नायक बन गये। जब ऐसे दो नेताओं में अधिकारों के लिए स्पर्धा हुई तब वहां संकट खड़ा हो गया। हत्याकांड, दंगे और गृह-युद्ध शुरू हो गया।

जूलिअस सीज़र—एक शताब्दी संघर्ष चलने के बाद एक बड़ा सेनापति और चतुर राजनीतिक नेता जूलिअस सीज़र सामने आया। गाल का गवर्नर बनाये जाने पर सीज़र ने भूमध्यसागर से उत्तरी समुद्र और राइन नदी से अतलांतक सागर तक का समूचा क्षेत्र उस प्रान्त में शामिल कर उसका विस्तार किया। उसने इंगलिश चैनल पार कर ब्रिटेन पर भी हमला किया। गाल से सीज़र ने अपने कार्यों का विवरण भेजा जिससे लोग उसके रोम लौटने पर उसका विजयी का सा शानदार स्वागत करें। जब वह लौटने को तैयार था, तब पौम्पी ने, जो सेनेटर पार्टी का नेता बन गया था, सीज़र को अपनी सेना भंग कर बिना समर्थकों के लौटने का आदेश दिया। रुबिकन नदी के किनारे, जो उसके प्रान्त गाल को इटली से अलग करती थी, सीज़र ने अपना निर्णय लिया। सेना के साथ नदी पार करने का मतलब था गृहयुद्ध, क्योंकि वह सत्ता-सम्पन्न सेनेट की अवज्ञा कर रहा था। बगैर सेना के उसे पार करने का मतलब था उसकी महत्त्वाकांक्षाओं की बलि और संभवतः उसकी मृत्यु। उसने सेना को नदी पार करने का आदेश दिया और तेजी से रोम में दाखिल हुआ। पौम्पी सीज़र के प्रति सेना की भक्ति और कमाण्डर के रूप में सीजर की योग्यता को जानता था। वह इटली से भाग कर ग्रीस चला गया। सीज़र ने, एक के बाद एक, तेज़ी से हमले किये। पहले उसने रोम पर कूच किया। जहां उसका कोई प्रतिरोध नहीं हुआ। फिर उसने स्पेन को लिया, जिस पर पौम्पी के प्रतिनिधि का अधिकार था। सार्डीनिया और कौर्सिका भी ले लिये गये। और पौम्पी अपनी पूर्वी सेना को संगठित करके अभी इटली लौट भी न

सका था, कि सीज़र ग्रीस में दाखिल हो गया। दोनों की सेनाएँ युद्ध के लिए फारसालिया के मैदान में जुटीं और सीज़र की जीत हुई। पौम्पी भाग कर मिस्र चला गया।

जब सीज़र मिस्र पहुँचा, उसने अपने शत्रुओं को क्षमा कर दिया और पौम्पी की मृत्यु पर रोया। गृहयुद्धों में यह पहला अवसर था जब एक विजेता ने अपने विरोधियों के साथ उदारता का व्यवहार किया।

सीज़र कान्सल के बजाय एक सम्राट् की तरह शासन करने रोम लौट आया। यद्यपि सीज़र को काफी अधिकार प्राप्त थे, फिर भी उसने गणतंत्र के वाह्य रूप को कायम रखा। सेनेट और असेम्बली की बैठकें हमेशा की तरह हुआ करती थीं। जब सीज़र को ताज पहनने के लिए कहा गया तब उसने इसे पहनने से इन्कार कर दिया। फिर भी बहुत-से लोगों को आशंका थी कि वह राज्य के हित में काम नहीं कर रहा है अपितु अपने को राजा बनाने के लिए अधिक उपयुक्त मौके की इन्तज़ार में है। तदनुसार, सेनेटरों के एक दल ने उसकी हत्या का षड्यंत्र रचा। ईसा पूर्व सन् ४४ में, १५ मार्च को, उन व्यक्तियों के नेतृत्व में, जिन्हें सीज़र अपना मित्र कहता था, उसकी हत्या कर दी गयी।

गणतंत्र का अन्त

शताब्दी भर के गृहयुद्धों का भार मरणासन्न गणतंत्र पर इतना अधिक पड़ा कि उसके लिए खड़ा रहना असंभव हो गया। यद्यपि सीज़र अपने को राजा नहीं कहता था, पर यह स्पष्ट था कि गणतंत्र प्रणाली की सरकार खत्म हो गयी है और किसी किस्म का एक व्यक्ति का शासन, रोमन साम्राज्य में होने वाला है। सीजर ने गणतन्त्र और नयी सरकार को जोड़ दिया था।

किसी भी रोमन ने अपने साथी देशवासियों पर उतना प्रभाव नहीं डाला जितना सीज़र ने। वह एक चतुर राजनीतिज्ञ और एक महान् नेता था। उसकी महत्ता को मान्यता देने के लिए उसे कई उपाधियों से विभूषित किया गया था। वह जीवन-पर्यन्त डिक्टेटर बनाया गया। वर्ष के सातवें महीने, जुलाई, का नाम उसके नाम पर रखा गया। सेनेट ने उसे इतने पद दे रखे थे कि उसका राज्य पर नियंत्रण था। इस प्रकार, जो अधिकार पहले कई अधिकारियों में बंटे थे, वे अब एक व्यक्ति के हाथों में सीमित हो गये थे।

सीज़र ने राज्य का प्रधान होने के काल में, अपने सैनिक अभियानों के अलावा, सुधारों के लिए
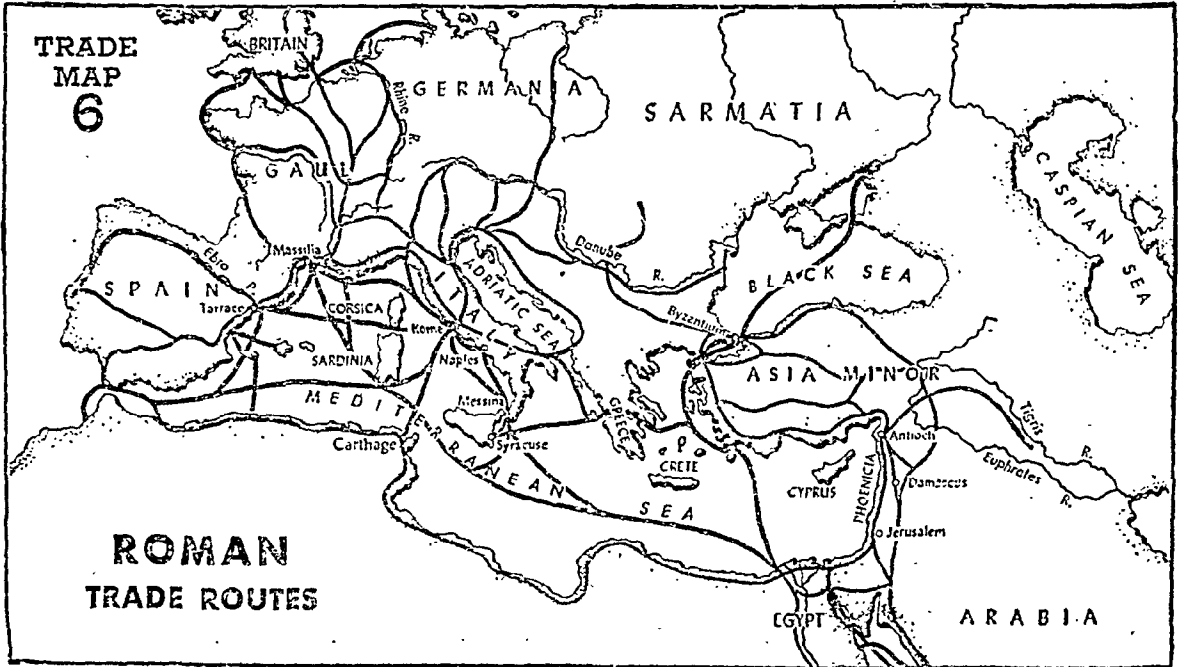
व्यापार-नकशा ६—रोमन व्यापार मार्ग।

संमय निकाला। उसने इटली के शहरों की सरकार में सुधार किये। उसने साम्राज्य के विभिन्न भागों में रोमन बस्तियाँ स्थापित कीं। इस प्रकार उसकी एकता को मजबूत किया और इसके साथ ही साथ हजारों असंतुष्ट गरीबों को रोम से बाहर भेजा। उसने कई विजित शहरों के लोगों को नागरिकता के अधिकार प्रदान किये। उसने लम्बे चौड़े रोमन कलैण्डर (पंचांग) के स्थान पर मिस्री कलैण्डर चलाया, जिसे उसने अधिक सही बनाने के लिए संशोधित किया। इन सब और अन्य कई सुधारों से प्रकट होता है कि वह सिर्फ तीक्ष्ण बुद्धिवाला राजनीतिज्ञ ही नहीं अपितु एक दूरदर्शी राष्ट्रनिर्माता भी था।

ओक्टावियन—सीज़र अपनी बड़ी सम्पत्ति का अधिकांश अपने पोते ओक्टावियन के लिए छोड़ गया था, जो उस समय सिर्फ १८ वर्ष का था। अपने मित्रों की सलाह के विपरीत, ओक्टावियन उत्तराधिकार प्राप्त करने और अपने दादा के स्थान को ग्रहण करने तेजी से रोम गया। पूर्व में एक सफल अभियान के बाद उसने मिस्र को अपने साम्राज्य में शामिल कर लिया। उसके शत्रु नष्ट कर दिये गये थे और वह रोम लौट आया। अन्ततोगत्वा गृहयुद्ध समाप्त हो गया था और दो शताब्दियों तक साम्राज्य में घरेलू शान्ति और समृद्धि रही।

अब भूमध्यसागरीय जगत् का अधिकांश हिस्सा रोम की मुट्ठी में था पर सबसे कठिन काम करने को पड़ा था। वह था इतने विशाल क्षेत्र के लिए योग्य शासन। अच्छी सरकार वह है जो अपनी जनता को शांति, समृद्धि, संतोष और सांस्कृतिक विकास के लिए सुअवसर प्रदान करे। सवाल यह था कि क्या रोम इतना समझदार था? क्या इतनी जातियों के लोगों को एक वास्तविक राष्ट्र के साँचे में ढाला जा सकता था? क्या रोम गालों और ब्राइटनों जैसे लोगों की कठिन समस्याओं को सुलझा सकेगा। २३ वर्षीय ओक्टावियन के समक्ष, उसके सफल अभियान से लौटने के बाद, ये समस्याएँ थीं। उसने ईसापूर्व ३१ से सन् १४ तक राज्य किया।

१. गृहयुद्ध की शताब्दी कब थी?
२. उस काल में रोम में कौन-सी दो पार्टियाँ थीं? प्रत्येक पार्टी में कौन-कौन लोग थे?
३. रोमन लोगों ने रोमन सरकार पर नियंत्रण रखने के लिए कौन से तरीके अपनाए?
४. सीजर और पौम्पी के संघर्ष की कहानी लिखो।
५. जूलियस सीज़र की कुछ ऐसी महत्त्वपूर्ण उपलब्धियों का वर्णन करो जिनके कारण रोमन इतिहास में उसका इतना ऊँचा स्थान है।
६. रोमन सरकार पर गृहयुद्ध का मुख्य प्रभाव क्या पड़ा?
७. ओक्टावियन कौन था?
८. संघर्ष की शताब्दी समाप्त होने के बाद रोम की बड़ी समस्याएं कौनसी थीं?

साम्राज्य की सरकार में तब्दीलियाँ

आगस्टस—ओक्टावियन रोम का योग्य और बुद्धिमान नायक था। वह जानता था कि रोमन राजाओं से घृणा करते हैं, इसलिए उसने कभी भी यह पदवी ग्रहण करने की चेष्टा नहीं की। जूलिअस सीजर की ही भाँति, उसे बहुत से पद देकर, शासक के अधिकार दिये गये थे। वह कान्सल, ट्रिब्यून, पॉन्टिफेक्स मैक्सिमस (राज्य के धर्म का प्रधान पुरोहित) था। इसके अलावा वह इम्परेटर (सेना का प्रधान सेनापति) था। प्रिंसेप अर्थात् प्रथम नागरिक, की सम्मानित उपाधि उसे मिली थी। उसे "आगस्टस" की उपाधि भी मिली थी जिसका मतलब है 'गुणवान व्यक्ति' और इसी उपाधि से वह तबसे पुकारा जाता है। गणतंत्र के इन सब पदों से सुशोभित, आगस्टस तथ्यतः रोमन साम्राज्य का सम्राट् बन गया था।

जूलिअस सीजर की भाँति आगस्टस ने भी कई सुधार किये। उसने प्रान्तों में ईमानदारी, उचित कर, और योग्य सरकारों की स्थापना की क्योंकि प्रान्त गवर्नरों और कर वसूल करने वालों के लालच से बरबाद हो रहे थे। उसने सड़कें बनवाईं, दलदली स्थानों को नालियाँ बनाकर सुधारा और साम्राज्य में व्यापार-वाणिज्य को प्रोत्साहन दिया। उसने रोमनगर में इतनी सार्वजनिक इमारतें बनवाईं कि वह ईमानदारी से कह सकता था कि "मैंने रोम को

बेटीमैन आर्काइव

युद्ध में विजय पाने पर रोमन खुशी मनाते थे। विजेता अपनी सेना और कैदियों के साथ, जो गुलामों के रूप में बेचे जाते थे, शानदार जलूस में निकलता था।

ईंटों से भरा पाया और संगमरमर से परिपूर्ण छोड़ा।" रोम के लिए आगस्टस का सबसे बड़ा कार्य साम्राज्य में शांति की स्थापना था ताकि व्यवहार और कलाएँ उन्नति कर सकें।

बाद के सम्राट्—ज्ञात संसार की बहुत थोड़ी जगहें ऐसी थीं जिन पर रोम का अधिकार नहीं हुआ था। एक शताब्दी बाद एक रोमन सम्राट् ने ब्रिटेन को जीत लिया। उसके कुछ ही समय बाद एक दूसरे शासक ने डेन्यूब पार कर डेसिया को रोमन प्रान्त बना लिया। भूमध्यसागर का घेरा पूरा करने के लिए यहाँ-वहाँ एक दो टुकड़े और जोड़े गये। इस प्रकार टायबर तट का यह छोटा-सा नगर भूमध्य-सागरीय जगत् का एकमात्र मालिक बन बैठा।

आगस्टस ने तो गणतंत्र की बाह्य रूपरेखा कायम रखी थी, पर उसके उत्तराधिकारियों ने ऐसा नहीं किया। उन्होंने सरकार के रूप में परिवर्तन किये, लेकिन ये परिवर्तन शनैः-शनैः शताब्दियों के बीच हुए। परिवर्तनों के दो मुख्य रूप थे: (१) साम्राज्य का एकीकरण और (२) सम्राट् के अधिकारों में वृद्धि।

आगस्टस के उत्तराधिकारी टाइबेरिअस (सन् १४ से सन् ३७ तक) ने रोमन असेम्बली को समाप्त कर दिया। यह मुख्यतः रोम के बेरोजगार लोगों का एक अड्डा बन गई थी जो वही कानून पास करने के लिए वोट देते थे जिन पर सम्राट् और सेनेट पहले ही सहमति दे चुके होते थे। क्लोडिअस ने प्रथम शताब्दी के मध्य में शासन किया। उसने प्रान्तों के प्रतिनिधियों को सेनेट में भेजने की प्रथा चलाई। यह प्रणाली अन्य सम्राटों द्वारा और आगे बढ़ाई गयी। इससे साम्राज्य को एकता के सूत्र में बाँध कर उसे वास्तविक राष्ट्र का रूप देने में मदद मिली। प्रारंभिक गणतंत्र काल में सिर्फ रोमवासी ही नागरिक थे, लेकिन सन् २१२ तक, सभी स्वतंत्र लोग जो साम्राज्य में रहते थे, नागरिक बन गये थे। इसका यह मतलब नहीं कि रोम की सरकार में उनकी कोई आवाज थी, लेकिन कानून की नजर में उनके और रोमनों के अधिकार समान थे।

डायोक्लेशियन—गृह-युद्धों की एक और शताब्दी के बाद एक शक्तिशाली, (सन् २८४ से ३०५ तक) अपने शत्रुओं को पराजित कर और सत्ता

छीन कर सम्राट् बना। वह एक भूतपूर्व व दासपुत्र था और इससे पहली शताब्दी के सम्राटों की तरह सेना से ही सत्तारूढ़ हुआ था। सम्राट् बन कर उसने शान्ति स्थापित की और सरकार को पुनर्गठित किया। ऐसा करते हुए उसने रोमन सरकार की सारी भावना में आमूल परिवर्तन ला दिया।

उसका पहला परिवर्तन सत्ता का पूर्णरूप से केन्द्रीकरण करना था। यह मानकर कि एक व्यक्ति के शासन के लिए साम्राज्य बहुत बड़ा है, उसने उसे चार भागों में विभाजित कर दिया और प्रत्येक का शासन एक व्यक्ति को सौंप दिया, जो उसके लिए उत्तरदायी था। वह स्वयं पूर्वी हिस्से का, जिसमें एशिया, थ्रेस और मिस्र थे, कार्यभार संभाले हुए था। ये चार भाग पुनः डायोसिसों में और डायोसिस प्रान्तों में बँटे थे, जिनके शासक गवर्नर होते थे। गवर्नरों को वफादार और ईमानदार बनाये रखने के वास्ते, डायोक्लेशियन ने खुफिया पुलिस की एक पेचीदा गुप्तचर प्रणाली कायम की थी। इसके अलावा, सम्राट् पूर्वी देशों के निरंकुश राजाओं के सभी राजसी चिह्न, जवाहरात जड़ा हुआ मुकुट, बहुमूल्य मणियों से जटित गुलाबी रंग का जामा पहनता था और सिंहासन पर बैठता था।

डायोक्लेशियन की सरकार ने लोगों की व्यक्तिगत स्वतन्त्रता भी छीन ली थी। वेतन और कीमतें कानून द्वारा निर्धारित की जाती थीं। लड़कों को अपने पिता के पेशे को अपनाना पड़ता था। कर इस कदर ज्यादा थे कि लोग उन्हें अदा करने को मुश्किल से धन जुटा पाते थे। इन तरीकों से लोगों का जीवन सरकार द्वारा विनियमित था। यह सब आगस्टस के शासन से सर्वथा भिन्न था। रोम एक सीमित एकतंत्र से जिसमें गणतंत्र का बाहरी कलेवर था, एक पूर्वदेशीय निरंकुश तंत्र में बदल गया था, जिसमें राज्य ही सब कुछ था और
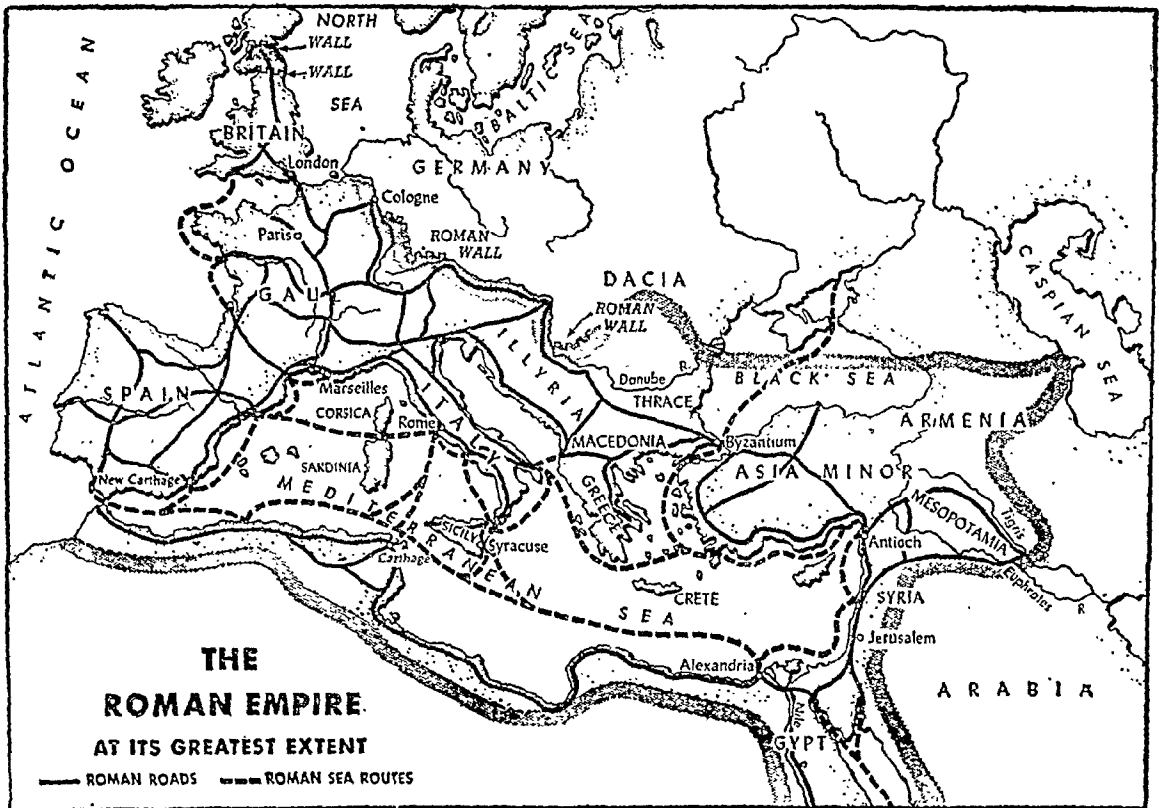
रोमन साम्राज्य—अपने सबसे अधिक विस्तार काल में

लोगों की स्वतन्त्रता खत्म हो चली थी। युद्ध के कारण अक्सर सम्राट् पूर्व में, एशिया माइनर में चला जाता था। उसने पश्चिम की देखभाल के लिए, अपने स्थान पर दूसरा सम्राट् नियुक्त किया था। इस तरह ऐसी स्थिति ला दी गयी थी कि धीरे-धीरे साम्राज्य बिखर जाय।

कान्स्टेण्टाइन—उत्तराधिकारी सम्राट् कान्स्टेण्टाइन (सन् ३२४-३३७) ने डायोक्लेशियन द्वारा स्थापित सरकार प्रणाली को बरकरार रखा। सन् ३३० में कान्स्टेण्टाइन राजधानी रोम से हटाकर बासफोरस में बाइजेण्टियम ले गया। नगर का नया नाम शासक के नाम पर कान्स्टेण्टिनोपल रखा गया और उसके पुनर्निर्माण पर बड़ा भारी व्यय किया गया जो अत्यधिक कर-भार से लदे हुए करदाताओं के कंधों पर पड़ा। यद्यपि कान्स्टेण्टाइन का इरादा साम्राज्य को बाँटने का नहीं था, लेकिन ज्यों-ज्यों समय बीतता गया, पूर्व और पश्चिम के बीच विभाजन बढ़ा। अन्त में वहाँ दो साम्राज्य बन गये, पूर्वी साम्राज्य और पश्चिमी साम्राज्य।

१. आगस्टस को क्या-क्या उपाधियाँ दी गयी थीं और प्रत्येक उपाधि का क्या मतलब था?
२. आगस्टस ने रोम के लिए किस किस्म की सरकार बनाई थी?
३. आगस्टस ने प्रान्तों की सरकारों में किस प्रकार सुधार किये?
४. आगस्टस के उत्तराधिकारियों ने रोमन साम्राज्य की सरकार में किन दो दिशाओं में परिवर्तन किये?
५. निम्नलिखित सम्राटों को उनके शासन के क्रमानुसार रखो और बताओ कि प्रत्येक किसलिए प्रसिद्ध हुआ? डायोक्लेशियन, आगस्टस, टाइबेरिअस, कान्स्टेण्टाइन और क्लोडिअस।
६. साम्राज्य के एकीकरण के लिए समय-समय पर क्या-क्या उपाय किये गये?
७. विभिन्न सम्राटों ने सम्राटों को अधिक शक्ति दिलाने के लिए क्या-क्या कदम उठाये?
८. किन तरीकों से लोगों की व्यक्तिगत स्वतंत्रता खत्म हुई?
९. साम्राज्य किस तरह दो साम्राज्यों में बँटा?

विचार-विमर्श के लिए प्रश्न

१. कार्थेज इतना ज्यादा दौलतमंद होते हुए भी रोम के छोटे और गरीब नगर से क्यों हारा?

२. हनीबाल इतना महान् सेनापति क्यों माना जाता है?

३. क्या तुम्हारी राय में हेलेनिक सभ्यता के साथ रोम के सम्पर्क के अच्छे परिणाम उतने ही थे जितने बुरे परिणाम?

४. क्या लोग अब भी वे हथकंडे इस्तेमाल करते हैं जो रोमन अपने को डिक्टेटर बनाने के लिए काम में लाते थे?

५. आज के संदर्भ में "रुबिकन पार करने" के मुहावरे का क्या अर्थ है।

६. जूलिअस सीजर को इतिहास में एक महान् व्यक्ति क्यों माना जाता है?

७. क्या आज भी यह खतरा है कि किसी गणतंत्र में स्वशासन का बाह्य रूप तो हो लेकिन, आगस्टस के समय के रोम की भांति सरकार में जनता की कोई आवाज न हो? स्पष्ट करो।

८. कहा जाता है कि आगस्टस की सबसे बड़ी सफलता रोमन साम्राज्य में शांति की स्थापना थी। यह किस रूप में सच है?

९. रोम के प्रशासन में क्या खूबी थी जिससे वह भूमध्यसागरीय जगत् को एक साम्राज्य के रूप में बाँधने में समर्थ हुआ और लम्बे अर्से तक हर हिस्से के लोगों में संतोष रहा।

१०. डायोक्लेशियन का यह विचार कैसे हुआ कि रोमन साम्राज्य एक इकाई के रूप में शासन के लिए बहुत बड़ा है, जबकि आज उससे भी बड़े साम्राज्यों पर शासन होता है?

इतिहास के उपकरणों का प्रयोग

एक. नाम, तिथियाँ और स्थान

(क) क्या तुम इन शब्दों को स्पष्ट कर सकते हो?

इम्परेटर···भाड़ैत सैनिक···पोन्टिफेक्स मैक्सिमस···प्रिन्सिप्स।

(ख) इन तिथियों के बारे में तुम क्या जानते हो?

२६४ ई० पू०···१४६ ई० पू०···४४ ई० पू०

सन् २१२ ई०...१३३-३० ई० पू०...३१ ई० पू० से सन् १४ तक...३३० ई० ।

(ग) ये स्थान नक्शे में दिखाओ ।

एशिया माइनर, ब्रिटेन, कार्थेज, कोर्सिका, डेसिया, डेन्यूब नदी, गाल, रुबिकन नदी, सार्डीनिया, स्पेन, मेसीना जलडमरूमध्य, ज़ामा, कान्स्टेण्टाइन द्वारा साम्राज्य का विभाजन ।

(घ) इन व्यक्तियों के बारे में तुम क्या जानते हो ?

आगस्टस, जूलिअस सीजर, क्लोडिअस, कान्स्टेण्टाइन, डायोक्लेशियन, हनीबाल, पौम्पी, आक्टोविअन, सिपियो अफ्रीकनस, टाइबेरिअस ।

(ङ) शेफर्ड्स का ऐतिहासिक एटलस या कोई अन्य एटलस लेकर मोटे अन्दाजे से हनीबाल के इटली में अभियान के मार्ग की लम्बाई बताओ । नक्शे में मीलों के स्केल से सहायता लो ।

दो. क्या तुम अपने विचार स्पष्ट प्रकट कर सकते हो ?

(क) अगर तुम मिट्टी से माडल बनाना पसंद करो तो रोमन जहाज का एक माडल क्लास में दिखाने के लिए बनाओ ।

रोम पर चढ़ाई करते समय कौंस्टेंटाइन ने आकाश में एक क्रास चिह्न और ये शब्द लिखे देखे : "इस चिह्न के द्वारा तेरी विजय होगी ।"

यूइंग गैलोवे

(ख) यहाँ कुछ लोगों के नाम दिये गये हैं जिन्होंने रोमन इतिहास में महत्त्वपूर्ण पार्ट अदा किया । एक के बारे में पढ़कर कक्षा में सुनाओ ।

सिनसिनेटस...ग्राची भ्राता...क्लीओपाट्रा...मार्कस एन्टोनिअस...मार्कस ओरेलिअस ।

(ग) यहाँ रोमन इतिहास की कुछ मनोरंजक झलकियाँ दिखाई गयी हैं । निम्नलिखित में से एक की कक्षा में बताने के लिए विस्तृत जानकारी प्राप्त करो :

हनीबाल का आल्प्स पर कूच...पुराना रोमन कैलेण्डर...कोई रोमन विजय समारोह...कार्थेज नगर...ब्रिटेन पर विजय...गाल में सीजर...रोमन सेना ।

(ङ.) समझ लो कि तुम एक ग्राची हो । एक पाँच मिनट का भाषण कक्षा में सुनाने के लिए यह सोच कर तैयार करो कि तुम रोम में सुधारों की आवश्यकताओं पर उसे रोमन सेनेट में दे रहे हो ।

तीन. रेडियो ब्राडकास्ट

पाँच मिनट के ब्राडकास्ट के लिए एक स्क्रिप्ट यह सोचकर लिखो कि यदि सीजर के रुबिकन पार करने के समय रेडियो होता तो वह ब्राडकास्ट किया जाता । वह क्लास में सुनाओ ।

चार. बुलेटिन बोर्ड के लिए

(क) रोम के व्यक्तियों का परिचय, सबसे ऊपर लिख कर उसके नीचे प्रसिद्ध रोमनों की संग्रह की हुई तसवीरें रखो । प्रत्येक छात्र एक चित्र की परिचय-पंक्ति लिखे ।

(ख) डायोक्लेशियन के मातहत रोमन सरकार का एक चार्ट तैयार करो ।

पांच. चित्र-अध्याय

(क) पृष्ठ १२६ पर दिखाये गये हाथी हनीबाल के लिए क्या महत्त्व रखते थे ?

(ख) रोमन लोग ऐसे जुलूस निकालना क्यों पसंद करते थे जैसा कि पृष्ठ १३४ पर दिखाया गया है ।

११ रोमन सभ्यता अपनी शक्ति के समकक्ष रही

जिन वर्षों का इतिहास हमने अब तक पढ़ा है उनमें रोमनों ने अपना पूर्ण समय सिर्फ सरकार के मामलों में और युद्धों में ही नहीं बिताया। वे अपने घरों में भी बहुत दिलचस्पी रखते थे, अपने बच्चों की शिक्षा-दीक्षा में, धर्म में, खेलकूद में, नाटक में तथा अन्य दैनिक मामलों में उनकी गहरी अभिरुचि रहती थी जैसी कि मनुष्य को सदा रही है।

रोमन पारिवारिक जीवन उसकी संस्कृति की बुनियाद था

सभी रोमन संस्थाओं में परिवार सबसे महत्त्वपूर्ण था और उसका रोमन चरित्र पर स्थायी प्रभाव था। रोमन परिवार में पिता, माता, उसके पुत्र तथा पुत्रों की पत्नियाँ और बच्चे और पिता की अविवाहित पुत्रियाँ हुआ करती थीं। ज्यादातर वे साथ ही रहते थे। घर के मुखिया की, प्रत्येक परिवार में पूर्ण हुकूमत चलती थी और उसे अधिकार था कि अगर वह चाहे तो किसी भी सदस्य को गुलाम बनाकर बेच दे या उसे निर्दयतापूर्वक सज़ा दे। वस्तुत: निर्दयता बहुत कम बरती जाती थी क्योंकि माता-पिता अपने बच्चों से प्यार करते थे। पर कठोर अनुशासन बरता जाता था और परिवार के मुखिया के प्रति बहुत आदर की भावना रहती थी। रोमन साम्राज्य के ज़माने में पारिवारिक जीवन अधिकाधिक शिथिल पड़ गया। तलाक़ आम प्रचलित हो गया और परिवार का बंधन पहले से कम दृढ़ रह गया।

स्त्रियों का स्थान—प्राचीन जगत् में कहीं भी स्त्रियों की वह उच्च स्थिति नहीं थी जो रोमन स्त्रियों की थी। वे अपने घर की मालकिन हुआ करती थीं, यद्यपि परिवार के मुखिया के अधिकार ज्यादा थे। वे परिवार के पुरुषों के साथ मिल-जुल कर रहती थीं। वे सार्वजनिक खेलों और उत्सवों में शामिल होतीं और जब इच्छा होती, घूमने सड़कों पर या बाजारों में निकल जाया करती थीं, यद्यपि आम तौर पर उनके साथ कोई पुरुष होता था। उनकी सरकारी मामलों में कोई प्रत्यक्ष आवाज़ तो नहीं थी, पर वे अपने पतियों और पुत्रों के साथ सार्वजनिक प्रश्नों पर विचार-विमर्श करती थीं।

घर—रोम के प्रारंभिक काल में रोमन घर बहुत सादा हुआ करते थे। एकमात्र एक कमरा खाना पकाने, भोजन करने और सोने के काम में लाया जाता था। उसमें खिड़कियाँ नहीं रहती थीं सिर्फ एक दरवाजा होता था। प्रकाश छत में बनाये गये एक छेद से आता था जो धुआं बाहर निकालने का काम भी करता था। बाद में अन्य कमरे इस बीच के कमरे के आजू-बाजू बनाये जाने लगे। जब रोम हैलेनिक संस्कृति के सम्पर्क में आया, तब मकान बड़े बनने लगे और उन्हें मकान मालिक की सम्पत्ति के अनुरूप सुन्दर बनाया जाने लगा।

आधुनिक घरों के विपरीत, रोमन घरों का फर्नीचर आवश्यक छिटपुट सामग्री तक ही सीमित था, जैसे कोच, कुर्सियाँ, मेजें और कपड़े तथा

बहुमूल्य सामान रखने के सन्दूक। दीवारों पर लेपचित्र बने होते थे, जिनमें इमारतों डिजाइन और घर के बाहर के दृश्य होते थे ताकि कमरे में पेड़ों की कतारों के बीच का दृश्य रहे और वह बड़ा दिखलाई दे। जब रोमनों ने पूर्व को जीता. तब लूट के रूप में वैगन भर-भरकर प्रस्तर मूर्तियाँ रोम लाई गई रोमन आर्टिस्टों ने मूर्तियों की नकलें कीं और ये मूर्तियां उन रोमनों के घरों में, जो उन्हें खरीद सकते थे, बहुत प्रचलित हुईं। वे आम तौर पर दालान में रखी रहती थीं और घर की शोभा बढ़ाती थीं।

प्यूनिक युद्धों के बाद धनी लोगों में देहाती घर, जिन्हें विला कहा जाता था, बनाने का अधिकाधिक फैशन हो गया। वे अक्सर नगर के घरों से ज्यादा लम्बे-चौड़े होते थे।

धनी लोग नगर और देहात दोनों में ऐश और आराम से रहते थे पर गरीबों के घरों में घिचपिच ज्यादा रहती थी। वे गंदे और अनाकर्षक होते थे। खेतिहर गाँवों में गरीब लोग तंग एक कमरे के मकानों में पुराने रोमवालों की तरह रहते थे। रोम में गरीब किराये के घरों में रहते थे। ज्यों-ज्यों रोम में जनसंख्या बढ़ी किराये के मकान, जो तीन या चार मंजिलों तक होते थे, अधिक हो गये और कम निवास-योग्य हो गये। अधिकाँश परिवार एक या दो कमरों में ठुसे हुए रहते थे और चूंकि कमरे खुली अंगीठियों से गरम रखे जाते थे इसलिए आग लगने का खतरा बहुत अधिक रहा करता था।

१. एक रोमन परिवार का वर्णन करो।

२. किस रूप में रोमन स्त्रियों का जीवन एथेनियन स्त्रियों से भिन्न था ?

३. आरंभिक गणतंत्र काल के एक रोमन घर का विवरण दो।

४. हेलेनिक संस्कृति के सम्पर्क में आने का रोमन घरों पर क्या प्रभाव पड़ा ?

५. 'विला' क्या होता था ?

रोमन मकानों की छतें बीच में छोड़े गये छोटे से आंगन की ओर झुकी रहती थीं जिससे वर्षा का पानी आंगन के बीच में बनी एक नाली के द्वारा बाहर जाता था।

बैटमैन आर्काइव
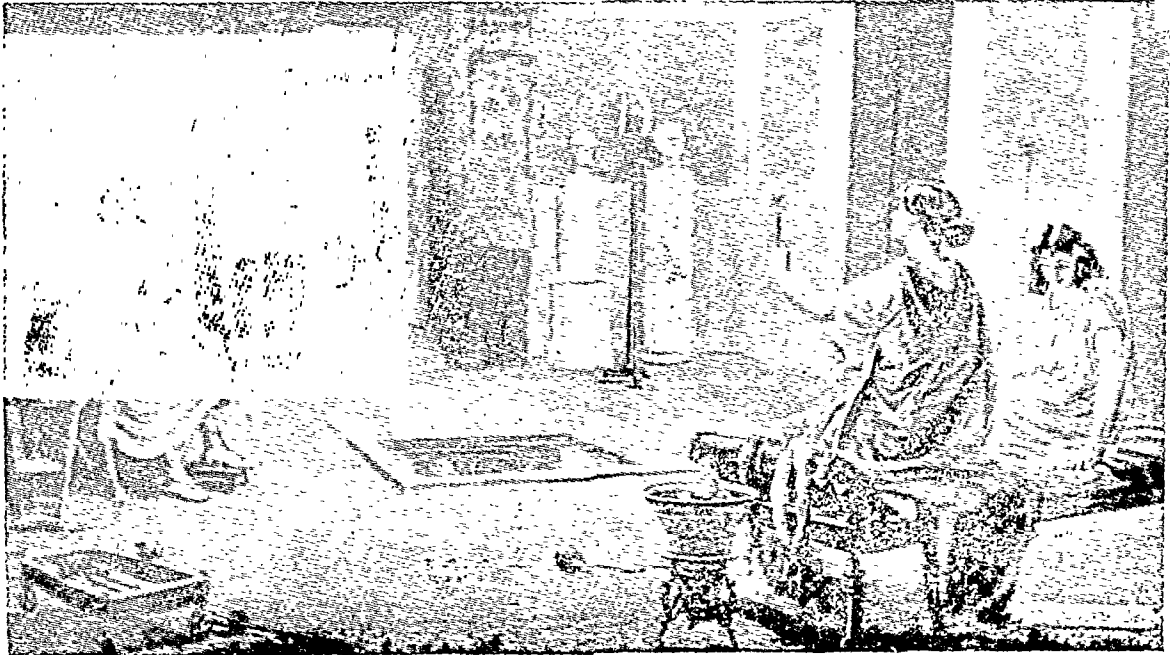
६. बताओ कि रोम नगर में रहने वाले गरीब लोग किस तरह रहते थे ?

बच्चे का भविष्य पिता के चुनाव पर

स्पार्टा की तरह, रोम में भी जब कोई बच्चा पैदा होता था तब उसके पिता को अधिकार था कि उसे रखे अथवा उसका परित्याग कर दे। रोम में जन-भावना के कारण बहुत से बच्चे परित्यक्त होने से बच जाते थे, सिर्फ अंगहीन ही त्यागे जाते थे। अगर बच्चा पिता को स्वीकार हुआ तो उसका नामकरण किया जाता था और एक तावीज वाला छोटा लाकेट, उसे दुष्टात्माओं की नज़र से बचाने के लिए उसके गले में डाल दिया जाता था।

शिक्षा—रोमन लड़कों का पालन-पोषण तब तक उनकी माताएँ करती थीं जब तक वे अपने पिताओं द्वारा पढ़ाये जाने या स्कूल में भेजे जाने योग्य नहीं हो जाते थे। दूसरी ओर, लड़कियों को उनकी माताएँ जो सिखा-पढ़ा देती थीं उसके अलावा कोई शिक्षा नहीं दी जाती थी। उन्हें लिखना पढ़ना सिखाया जाता था लेकिन चूँकि उनका विवाह आम-तौर पर पन्द्रह या सोलह वर्ष की उम्र में कर दिया जाता था, इसलिए उनकी अधिकांश ट्रेनिंग घरों को सजाने, कातने, बुनने, खाना बनाने और दासों का निरीक्षण करने की होती थी। लड़कों और लड़कियों को समान रूप से उचित आचरण की शिक्षा दी जाती थी और उनके माता-पिता को आदर्श के रूप में उपस्थित किया जाता था।

लड़के की शिक्षा का दायित्व पिता पर रहता था और रोमन गणतन्त्र के प्रारम्भिक काल में वे स्वयं उन्हें अक्षर सिखलाते थे। लड़के लिखना, पढ़ना, सामान्य अंकगणित और बारह पट्टियों में अंकित कानूनों को कंठस्थ करना सीखते थे। बहुत कम लड़के साहित्य-शिक्षा के स्कूलों में जाते थे। कुछ लड़के उच्च स्कूल तक पहुँचते थे, जहाँ वक्तृत्व कला सिखाई जाती थी। रोमनों के हेलेनिक संस्कृति के सम्पर्क में आने के ब द, जो लोग समर्थ थे, वे ग्रीक-दासों को अपने बच्चों को पढ़ाने के लिए खरीद लेते थे। अक्सर गरीब नागरिकों ने स्कूल खोल रखे थे, जहाँ बच्चे थोड़ी फ़ीस देकर जा सकते थे।

लड़के स्कूल जाने के लिए सूय दय से पहले उठ जाते थे। अगर लड़के के अभिभावक समर्थ होते तो उसके साथ एक गुलाम भेजा जाता था, जिसका काम उसे सुरक्षित स्कूल पहुँचाना; उसके चाल-चलन पर नज़र रखना, और उसके पाठ में मदद पहुँचाना होता था और वह उसका हमेशा साथ रहने वाला साथी था। जिस इमारत में वह पढ़ता था, वह आधुनिक अमेरिकी स्कूल से सर्वथा भिन्न होती थी। वह आम तौर पर एक ओसारा या दूसरी इमारत से लगा हुआ बरामदा होता था। न उसमें खूबसूरती होती थी, न पढ़ने-लिखने की सुविधा। स्कूल तड़के शुरू हो जाता था और दिन भर चलता था। अनु-शासन कड़ा था। और बच्चों को पाठ याद कराने के लिए कोड़े का प्रयोग खूब किया जाता था।
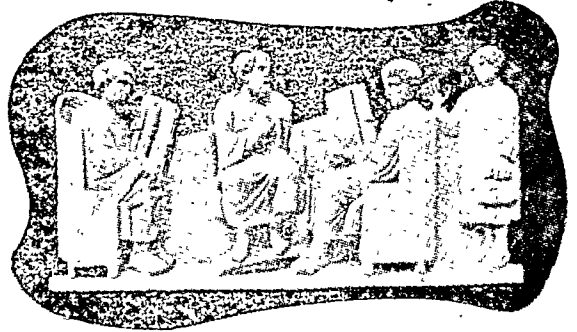
एक रोमन स्कूल का यह नक्काशी का चित्र इटली में प्राप्त हुआ था। उस समय की पाठ्य पुस्तकें आपकी पाठ्य पुस्तकों से किस प्रकार भिन्न होती थीं ?

जब लड़का लगभग १७ वर्ष का होता तब वह नागरिक बन जाता था। तब वह अपना लड़कों वाला छोटा कोट उतारता और पुरुषों द्वारा पहना जाने वाला ढीला लबादा धारण करता था। तब गर्व के साथ वह अपना नाम नागरिकों की लिखित सूची में शामिल देखता था।

१. रोमन पिता को अपने नवजात बच्चे के ऊपर क्या अधिकार थे ?
२. रोमन लड़के की शिक्षा का वर्णन करो। रोमन लड़की की शिक्षा का वर्णन करो। रोमन लड़की की शिक्षा का ब्यौरा दो।
३. कितने वर्ष की उम्र में रोमन लड़का नागरिक बनता था ?

बैटीमैन आर्काइव

रोमन पुरोहित अपने देवताओं को ठीक प्रकार और रंग के पशु की ही बलि चढ़ाते थे। आम तौर से बैल, भेड़ और सूअर की बलि चढ़ाई जाती थी।

रोमनों का मनोरंजन

रोमन छुट्टियाँ—रोम के प्रारम्भिक दिनों में कुछ उत्सव धार्मिक त्योहारों के रूप में मनाये जाते थे। जैसे-जैसे समय बीतता गया, उत्सवों की संख्या बढ़ी, लेकिन जनता के सामने उनका धार्मिक महत्त्व समाप्त हो गया, और वह आनन्द और मनोरंजन के लिए उनमें भाग लेती थी। जिस समय गणतंत्र की समाप्ति हुई, उस समय साल भर में ६६ दिन ऐसे होते थे जब कारोबार बंद रहता था और रोमन छुट्टी की घोषणा होती थी। दो सौ वर्ष बाद यह संख्या बढ़कर १३५ दिन हो गई थी। स्पष्ट है कि रोमन मनोरंजन-पसंद थे।

रोमन छुट्टी की घोषणा करने के कई कारण और बहाने होते थे। यह एक विजेता का युद्ध से लौटना हो सकता था या कभी-कभी राजनीतिक नेता जनता में लोकप्रियता प्राप्त करने के लिए, पद सम्भालने के उपलक्ष्य में, छुट्टी की घोषणा करते थे। तलवार से लड़ाई, जिसमें लोग एक-दूसरे से या जंगली जानवरों से लोगों के मनोरंजन के लिए लड़ते थे, धार्मिक समारोहों की तरह, छुट्टी का दिन होती थी। अन्य दिनों में एक सर्कस, जिसमें साहसी और बेतहाशा रथ भगाने वाले लोग रथों की दौड़ वाले विशाल मैदान के इर्द-गिर्द अपने रथ दौड़ाते थे, रोमवासियों को आकर्षित करता था जो अपना काम छोड़कर हमेशा मनोरंजन को तैयार रहते थे। चाहे कोई भी अवसर हो, रोमन छुट्टियाँ सभी वर्गों में लोकप्रिय थीं।

स्नानागार—रोमन स्नानघर मनोरंजन और सामाजिक जीवन के केन्द्र थे। नगर में ऐसे बहुत से स्नानघर थे। छोटे कस्बों में भी ये होते थे। अपने ढंग के अनूठे इन स्नानघरों में तैरने का तालाब, विभिन्न प्रकार के स्नानागार—गरम, ठंडे, भाप और फुहारे—बने होते थे। इनके अलावा, ऐसे स्नानघरों में पुस्तकालय, आराम करने के कमरे, व्यायामशाला और क्लबरूम होते थे, जहाँ लोग अपने मित्रों से बातचीत करते थे। स्नानघर, रोम के ऊँचे तबके के लोगों के, प्रतिदिन मिलने-जुलने के स्थान थे।

भोजन—रोमनों का भोजन विविध प्रकार के व्यंजनों का हो चला था। 'नये धनी' अपने मित्रों को दी गयी दावतों में धन व्यय करने में अन्य लोगों से अपने को ज्यादा समृद्ध दिखाने की कोशिश करते

थे। बहुत किस्म की असामान्य भोज्य वस्तुएँ भोजन में सम्मिलित कर ली गयी थीं और जो तीन प्रकार की वस्तुएं सामान्य तौर पर परोसी जाती थीं, उनके स्थान पर परोसने के कई दौर चलते थे और खाना-पीना घण्टों चलता रहता था। एक प्राइवेट दावत में एक रेकार्ड स्थापित हो गया था जिसमें निम्नलिखित भोजन परोसे गये थे। घोंघे, समुद्री जैतून फल, जंगली सूअर की पसलियाँ, मुर्गे, बैंगनी रंग की मछली, सूअरी के ऐन, सूअर का सिर, बतखें, उबली हुई जंगली बतखें, खरगोश, विभिन्न प्रकार की पेस्ट्री। इस प्रकार का भोजन इस बात का एक सबूत था कि रोमन समाज में अभिरुचि और नैतिक आचरण में कितनी गिरावट आ गयी थी।

यात्राएँ—गणतंत्र के प्रारम्भ में रोमन घर पर ही रहते थे और उनका बाहरी दुनिया से बहुत कम सम्बन्ध था। पूर्व की विजय के बाद जो लोग यात्रा कर सकते थे, वे यात्राएँ करने लगे। जीवन में प्रवेश से पूर्व नवयुवकों के लिए भ्रमण, उनकी शिक्षा का एक अंग समझा जाने लगा था। पर्यटक प्राचीन अवशेषों को देखने जाते थे और व्यापारी तथा सौदागर साम्राज्य के विभिन्न हिस्सों में अपना व्यापार देखते थे।

इस पुरानी नक्काशी में एक छुरीवाले की दुकान है। दाईं ओर छुरीवाला ट्यूनिक पहने खड़ा है और ग्राहक ने टोगा पहन रखा है।
बैटीमैन आर्काइव

यात्रा उतनी आसान और सुरक्षित नहीं थी। रोमन सेना ने सुन्दर और पक्की सड़कें बनाकर रोम के समूचे साम्राज्य में जाल बिछा दिया था। बहुत-सी सड़कों के साथ-साथ पैदल यात्रियों के लिए फुटपाथ बने थे। वे सबसे छोटे फासले वाले भागों पर बने थे। उसके अलावा इन मार्गों पर लुटेरे और डाकू नहीं थे और लोग सुरक्षित यात्रा कर सकते थे।

गरीब लोग अपनी पीठ पर अपना सामान लादे सड़कों से आते-जाते थे। अमीर बग्घी पर या घोड़ों की पीठ पर चलते थे या उन्हें डांडियों पर भी ले जाया जाता था। जहाज भी अच्छे बनते थे और ज्यादा यात्राएँ समुद्र से की जाती थीं। भूमध्य-सागर के प्रमुख बंदरगाहों के बीच नियमित रूप से जहाज आते-जाते थे। इस सब के बावजूद, हमें यह नहीं सोचना चाहिए कि यात्राएँ प्रथम शताब्दी में उतनी ही आसान और आरामदेह थीं जितनी कि बीसवीं शताब्दी में हैं। प्राचीन रोम में यात्राएँ करना औपनिवेशिक काल के अमेरिका की अपेक्षा अधिक आसान और सुरक्षित था।

यात्रा रोमनों के लिए सिर्फ़ एक प्रकार की मनोरंजनात्मक और शिक्षणात्मक किस्म नहीं थी। इससे सम्पूर्ण साम्राज्य की कड़ियाँ जुड़ती थीं जो अन्य किसी तरह भी संभव नहीं था और इससे रोमनों और प्रान्तवालों का सामान्य दृष्टिकोण अधिक व्यापक होता था। रोमन प्रान्तों में बहुत सी चीजें देखते और उनकी प्रशंसा करते थे और प्रान्तों के लोग उस राजधानी वाले शहर की शानो-शौकत से प्रभावित होते थे।

१. अधिकांश रोमन उत्सवों की बुनियाद क्या थी ?
२. रोमन स्नानघर क्या थे और वे रोमन जीवन में इतने महत्त्वपूर्ण क्यों थे ?
३. किसी रोमन घर में अतिथियों का सत्कार किस प्रकार होता था ?
४. रोमन इतना अधिक भ्रमण क्यों करते थे ?
५. यात्रा के उनके पास क्या साधन थे ?
६. यात्राओं का रोमनों पर क्या प्रभाव पड़ा ?

रोमन लोग बहुत से देवताओं की पूजा करते थे

रोमन देवता—प्राचीन रोमन प्रकृति के पूजक थे लेकिन अन्य लोगों के सम्पर्क मे आने पर शीघ्र उन्होने अपना धर्म बदल दिया। वे मन्दिर बनवा कर देवताओं की मूर्तियाँ बनाने लगे थे। जब वे ग्रीक व्यापारियों के सम्पर्क में आये, तब ग्रीक धर्म ने उनके विश्वासों पर गहरा असर डाला। इसलिए रोमनों के बड़े देवता ग्रीकों के बड़े देवताओं से मिलते-जुलते थे, सिर्फ़ उनके नाम अलग थे। जूटिर आकाश का देवता था और सब रोमन देवताओं का राजा था। सेरेस धरती की देवी थी, नेप्च्यून समुद्र का देवता और मार्स युद्ध का देवता था। इनके तथा कुछ अन्य प्रमुख देवताओं के अलावा और अनेक छोटे-मोटे देवी-देवता थे।

रोमन परिवार घरेलू देवताओं की प्रार्थना के बाद दिन का काम आरम्भ करता था। रोमन अपने मृत पितरों को भी नहीं भूलते थे। उनका विश्वास था कि आत्मा कब्र के चारों ओर भटकती रहती है और उसे भोजन और पेय की जरूरत रहती है। इस कारण परिवार का होना महत्त्वपूर्ण था। अगर किसी व्यक्ति के उत्तराधिकारी नहीं होंगे जिनसे कि उसका निकट सम्बन्ध हो तो मृत्यु के बाद उसकी आवश्यकताओं को कौन देखेगा। इन धार्मिक कर्तव्यों का पालन रोमन चरित्र को ढालने में सहायक होता था।

बाद के धर्म—गणतंत्र की समाप्ति तक पुराने देवताओं की पूजा का रोमनों के लिए विशेष महत्त्व नहीं रह गया था। बहुत से लोग किसी धर्म के प्रचारक के स्थान पर प्रसिद्ध दार्शनिकों की शिक्षाओं का अनुसरण करने लगे थे। साम्राज्य के अन्तर्गत नये प्रकार के धर्मों का समावेश हो रहा था। बहुत से सम्राट् उनकी मृत्यु के बाद देवता बना दिये गये थे और उनके लिये मन्दिर बनवाये गये थे। फिर वहाँ राज्य, रोमा, की पूजा चल पड़ी थी। इसके अतिरिक्त, रोमन सैनिकों ने जो पूर्व में सेवाएँ करते थे, पूर्वी देशों के कई धर्म रोम में प्रारम्भ किये थे। धार्मिक विचारधारा में उस समय इस प्रकार की उथल-पुथल मची हुई थी जबकि ईसा की मृत्यु के बाद प्रथम शताब्दी में ईसाई धर्म रोम में आया।

१. किन लोगों का रोमन धर्म पर भारी प्रभाव पड़ा ?
२. प्रमुख रोमन देवताओं के नाम बताओ और बताओ कि वे किन-किन का प्रतिनिधित्व करते हैं।
३. रोमन धर्म का लोगों के घरेलू जीवन पर क्या प्रभाव पड़ा ?
४. ई० पू० शताब्दी में कौन से नये धर्म प्रचलित थे ?

ईसाई मत का समस्त रोमन साम्राज्य में प्रसार

भूमध्यसागर के पूर्वी छोर पर एक छोटा सा प्रान्त जूडिया है, जो प्राचीन फिलस्तीन का एक हिस्सा था। आगस्टस के शासन काल में जूडिया की, राजा हेरोड के आधीन अपनी स्वायत्त सी सरकार थी और यहूदियों की सानहेड्रिन नामक परिषद् थी। वहाँ एक रोमन गवर्नर भी था जिसके साथ रोमन सैनिक रहते थे। इस छोटे से प्रान्त में एक यहूदी बालक पैदा हुआ जिसका तमाम संसार पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ा।

यह बालक, जीसस, बेथेलहम नामक छोटे से कस्बे के पास पैदा हुआ था। उसके तीस वर्ष का होने तक उसके बारे में बहुत कम बातें ज्ञात हैं। तीस वर्ष बाद वह सार्वजनिक रूप से धार्मिक उपदेश और शिक्षाएं देने लगा। एक यहूदी के नाते उसे पुराने टेस्टामेंट की शिक्षा-दीक्षा दी गयी। अपने धार्मिक उपदेशों में उसने मनुष्य के, अन्य मनुष्य के साथ तथा ईश्वर के साथ सम्बन्धों पर बल दिया। उसने अपनी शिक्षाओं के सार को धर्मादेश के रूप में रखा: "तू अपने मसीहा, अपने ईश्वर को अपने हृदय से, अपनी आत्मा से और अपने मस्तिष्क से प्यार करना।"

"यह प्रथम और महान् धर्मादेश है।

"और दूसरा भी इसी तरह का है। तू अपने पड़ोसी को अपने जैसा ही प्यार करना।"

अपने सब अनुयायियों में से जीसस ने १२ को चुन लिया था, जिन्हें हम उसके दूत कहते हैं, जो

कलवर सर्विस

किसी चित्रकार ने पाल को उत्तरी ग्रीस में थेसालोनिका के लोगों के आगे प्रचार करते चित्रित किया है। यहाँ पाल ने एक गिरजा स्थापित किया था।

उसके निकटतम साथी रहे और वह उन्हें अपने कार्य के प्रचार की ट्रेनिंग दे सके। प्रारम्भिक धर्म-प्रचारकों में सबसे बड़ा प्रचारक उसके दूतों में नहीं था। वह एशिया माइनर के टारसस नगर का एक निवासी पाल था। वह एक यहूदी तम्बू बनाने वाले का पुत्र था और उसे सिर्फ हिब्रू लोगों के मत की ही नहीं, अपितु ग्रीक साहित्य की भी शिक्षा मिली थी। पाल ने दूर-दूर स्थानों का व्यापक दौरा किया और लगभग ६७ ई० तक, जब उसे मार दिया गया, अपने समय के प्रमुख शहरों में धर्मोपदेश देकर क्रिश्चियन गिरजों की स्थापना की। उसने और अन्य ईसा भक्तों ने इतने धर्मोपदेशकों को प्रशिक्षित किया कि १०० ईस्वी तक रोमन साम्राज्य के बहुत से नगरों में सुसंस्थापित क्रिश्चियन गिरजे थे। धर्मोपदेशक के अलावा, पाल ने चर्चों के नाम, जिनकी उसने स्थापना की थी, बहुत से पत्र (एपिसल्स) भी लिखे। ये नये टेस्टामेंट के एक अंग हैं और क्रिश्चियन धर्म के प्रथम लिखित अभिलेखों में हैं।

ईसाई धर्म के अनुयायी

नयी आस्थाओं को अपनाने वाले प्रथम मतानुयायी अधिकांश गरीब लोग या दास थे। मनुष्य में भाईचारे की और ईश्वर में पिता के समान विश्वास की शिक्षा उन्हें बहुत पसंद आई। यह विश्वास भी कि जो इस जीवन में अच्छे काम करेगा, अगले जीवन में आत्मिक खुशी प्राप्त करेगा, पददलितों को बहुत भाया।

रोम और ईसाई धर्म—रोम का अधिकारी वर्ग किसी भी व्यक्ति के धर्म के प्रति तब तक कोई ध्यान नहीं देता था जब तक कि वह सम्राट् की पूजा कर, राज्य के प्रति अपने धार्मिक कर्तव्यों का पालन करता रहे। क्रिश्चियनों ने ऐसा करने से इन्कार किया, इसलिए वे राज्य के प्रति गद्दार घोषित किये गये। रोम में उत्पीड़न का बड़े पैमाने पर पहला दौर नीरो के शासनकाल (५४-६० ईस्वी) में शुरू हुआ। आगजनी से नगर का एक बड़ा हिस्सा जल गया। आग कैसे लगी, यह ज्ञात नहीं है। मकान बहुत घटिया बने होने के कारण आग की घटनाएँ घटित होती ही रहती थीं लेकिन यह अफवाह थी कि नीरो ने नगर में आग लगवा दी ताकि वह अपनी इच्छा के मुताबिक उसे फिर से बनवा सके। जब ये अफवाहें नीरो के कानों तक पहुँचीं तब उसने आग लगाने का अपराध क्रिश्चियनों पर थोपा, जो रोमन अधिकारियों की नज़रों में गिरे हुए थे। उनमें से बहुत से पकड़ लिये गये और उन्हें सूली पर चढ़ाया गया।

उत्पीड़न जारी रहा। उनसे बचने के लिए क्रिश्चियनों ने प्रार्थना के लिए रोम के पुराने भूमि के अन्दर बने कब्रिस्तानों की शरण ली। ये केटाकोमस कहलाते थे। इसके बावजूद, इन उत्पीड़नों में
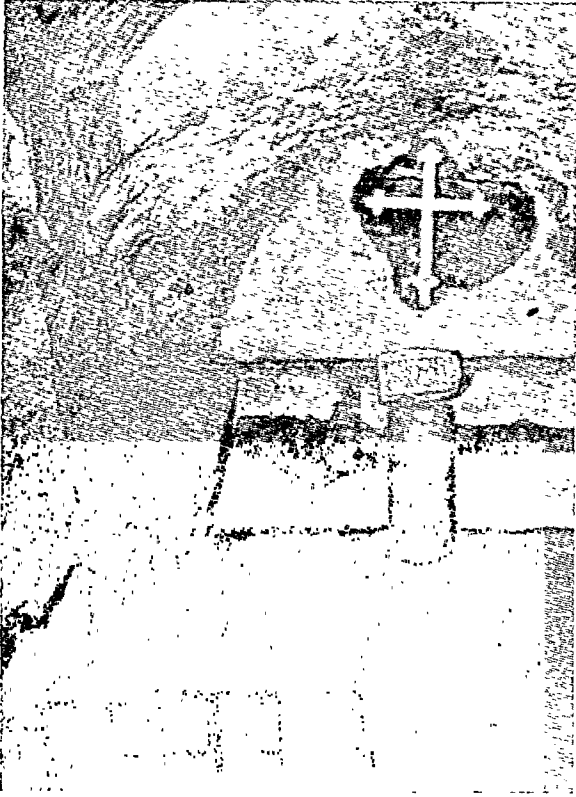
ब्राउन ब्रदर्स
अनेक कैटाकोम्बों में आरंभिक ईसाइयों द्वारा, जो वहां पूजा करते थे, बनाए गये चिन्ह अब भी देखे जा सकते हैं।

कुछ पकड़े गये और मार डाले गये। फिर भी क्रिश्चियनों की संख्या निरन्तर और तेजी से बढ़ती चली गयी। उच्च वर्गों के बहुत से लोग, वकील, व्यापारी और अधिकारी, इस धर्म के अनुयायी बन गये। अन्त में, ३१३ ई० में, कान्स्टेण्टाइन ने संसार के सब धर्मों के प्रति सहिष्णुता की प्रथम घोषणा जारी की। मिलान की राजाज्ञा में, जैसे कि उसे पुकारा जाता है, उसने कहा कि साम्राज्य में सभी धर्मों को सहन किया जायगा। तब से भविष्य में कुछ अपवादों को छोड़कर, क्रिश्चियनों को अपनी इच्छानुसार प्रार्थना का अधिकार मिला।

थियोडोसिअस के शासन-काल में (सन् ३७९-३९५ ई०) ईसाई धर्म राज्य का धर्म बना दिया गया। उसके बाद के शासकों ने पादरियों पर कृपा कायम रखी। उन्होंने पादरी को सैनिक सेवा से और चर्च को कर देने से छूट दे रखी थी। बड़े पादरियों को लगभग गवर्नरों के बराबर ही अधिकार प्रदान किये गये थे। कुछ मामलों में राज्य ने उन लोगों पर मुकद्दमे भी चलाये जिन्होंने क्रिश्चियन चर्च की सदस्यता से इन्कार कर दिया था।

क्रिश्चियन चर्च का संगठन—चर्च का संगठन बड़ा दृढ़ हो गया। प्रथम पादरी एपोसल हुआ करते थे जिनके पदभार ग्रहण करने वाले उत्तराधिकारी बिशप कहलाते थे। प्रत्येक बिशप एक जिले में जिसे डायोसीज कहा जाता था, रहता था और उसके ऊपर उसका नियंत्रण रहता था। बिशप के मातहत प्रीस्ट (पुजारी) होते थे जिन्हें कुछ धार्मिक कृत्य करने का अधिकार बिशप द्वारा प्रदत्त होता था। कोई आदमी एक समारोह के बिना पादरी वर्ग में नहीं आ सकता था—इस समारोह में इस आदमी को एपोसल को प्राप्त अधिकार पीढ़ी दर पीढ़ी के लिए क्लर्जी व्यक्तिगत रूप से प्रदान करते थे। पहले पहल सभी बिशप पोप कहलाते थे। बाद में यह नाम सिर्फ रोम के बिशप के लिए प्रयुक्त होने लगा, और उसे सभी क्रिश्चियनों के ऊपर सर्वोच्च अधिकारी की मान्यता दी गयी। उसका कार्यालय पेपेसी कहलाता था।

ईसाई धर्म का प्रभाव—ईसाई धर्म का रोम पर गहरा प्रभाव पड़ा। एपोसलों की शिक्षाओं (उपदेशों) से विदित होता है कि उनका विश्वास था कि चर्च एक विशाल संगठन होना चाहिए। मतलब यह कि उसका विस्तार कैथोलिक (विश्वव्यापी) होना चाहिए। इस प्रकार का संगठन उच्च नैतिक आचरण की भी माँग करेगा। रोम में शारीरिक श्रम हमेशा निम्न दृष्टि से देखा गया था, लेकिन ईसाई धर्म ने मानवीय श्रम को प्रतिष्ठित बनाया क्योंकि जीसस एक बढ़ई था और चर्च गरीब और अमीर को भाइयों की तरह देखता था। इससे गुलामों और गरीबों के प्रति व्यवहार में एक मानवीयता आई। इसका कला और साहित्य पर अच्छा प्रभाव पड़ा, पुरानी शिक्षाएँ मिटने लगीं और क्रिश्चियन शिक्षाओं ने उनका स्थान ग्रहण किया। यद्यपि लोग ईसाई

धर्म के आदर्शों के अनुरूप नहीं चले, फिर भी इसने पुरानी मूर्तिपूजक दुनिया को नवीनतम ऊंचाइयों तक उठाया।

१. जीसस के जन्म के समय जूडिया की सरकार का वर्णन करो।
२. क्रिश्चियन धर्म की शिक्षाओं के अनुसार बारह एपोसल किस तरह ईसा के अन्य मतानुयायियों से भिन्न हैं?
३. टारसस का पाल कौन था?
४. क्रिश्चियनों ने पहले पहल गरीबों को अपना धर्मावलम्बी क्यों बनाया?
५. रोमन साम्राज्य का अपने साम्राज्य के लोगों के धर्म के प्रति क्या रुख था?
६. नीरो ने क्रिश्चियनों को दण्ड क्यों दिया?
७. किस प्रकार साम्राज्य का क्रिश्चियनों के प्रति रुख बदला?
८. क्रिश्चियन चर्च के संगठन का वर्णन करो।
९. किस रूप में क्रिश्चियन चर्च ने रोमन जगत् के जीवन पर प्रभाव डाला?

विचार-विमर्श के लिए प्रश्न

१. क्या परिवार अब भी हमारे समाज के निर्माण में एक महत्त्वपूर्ण संस्था है?

२. तुम एक एथेनियन महिला होना पसन्द करते या रोमन? क्यों?

३. क्या कारण है कि धनी रोमन धनी एथेनियनों की अपेक्षा ज्यादा बड़े और सुसज्जित मकान बनवाते थे।

४. क्या वर्ष में २३५ रोमन छुट्टियाँ बहुत ज्यादा थीं? इसकी तुलना तुम अपने राज्य की छुट्टियों से किस रूप में कर सकते हो? (रविवार को गिनना न भूलो)।

५. ग्रीकों और रोमनों में किसका मनोरंजन अच्छे किस्म का था और क्यों?

६. भ्रमण हर धनी रोमन की शिक्षा का अंग क्यों समझा जाता था? क्या भ्रमण शिक्षात्मक होता है?

७. यह एक पुरानी कहावत है कि शहीदों का रक्त क्रिश्चियन चर्च का बीज रूप है। इसका क्या मतलब है? क्या तुम्हारी राय में यह सही है?

८. जेरुसलम के बजाय रोम क्यों क्रिश्चियन जगत् का प्रधान केन्द्र बना?

इतिहास के उपकरणों का प्रयोग

एक. नाम, तिथियाँ और स्थान

(क) क्या तुम इन शब्दों का अर्थ बता सकते हो?–एपोसल…विशप…कैटाकोम्ब्स…कैथोलिक…क्लर्जी… डायोसीज़… एपिसल… ग्लेडिएटर… गौस्पल…मिलान का घोषणापत्र…ई० पू०, न्यू टेस्टामेंट, पेपेसी…पोप…सानहेड्रिन…टोगा… विला।

(ख) इस तिथि के बारे में तुम क्या जानते हो? सन् ३१३ ई०

(ग) नक्शे में ये स्थान दिखलाओ।
बेथेलहम, जूडिया, मिलान, टारसस।

(घ) क्या तुम इन व्यक्तियों के बारे में बता सकते हो।
कान्स्टेण्टाइन…हेरोद…जीसस…नीरो… पाल… पिलेटे…थियोडोसियस।

(ङ) इन देवताओं के बारे में बताओ।
सेरेस…जुपिटर…मार्स…नेपच्यून।

दो. क्या तुम अपने विचार स्पष्ट रूप से प्रकट कर सकते हो?

(क) यहाँ रोम के प्रमुख देवताओं की सूची दी हुई है। मालूम करो कि प्रत्येक देवता किसका प्रतिनिधित्व करता था और ग्रीक इन्हें किस नाम से पुकारते थे? जुपिटर…जूनो…मिनर्वा… मार्स…अपोलो…वीनस…नेपच्यून।

(ख) एक रोमन घर का माडल बनाकर उसमें सामान दिखाओ। कक्षा में उसे समझाओ।

(ग) निम्नलिखित विषयों में से किसी एक पर भाषण तैयार करो: सर्कस मैक्सिमस…रोमन स्नानघर में एक दिन…एक रोमन छुट्टी का दिन…रोम में गुलामी…एक रोमन विला का घर…रोम का सबसे अधिक घृणा से देखा जाने वाला सम्राट् नीरो।

तीन. नाटकीकरण :

छात्रों का एक दल निम्नलिखित दृश्यों में से किसी एक पर कक्षा के लिए नाटक तैयार कर सकता है : बालक के नागरिक बनने का एक समारोह...एक रोमन लड़का और उसका पेडागौग स्कूल जाते हुए रास्ते में...एक रोमन लड़का तारों में लट्टू वाले गिनती सीखने के यंत्र की मदद से किसी चीज की कीमत निकालता हुआ...दो यात्री जो रोम की एक सड़क पर मिले हैं और एक दूसरे को बताते हैं कि वे क्या करते रहे और क्या देखते रहे।

चार. गुड्डा प्रदर्शनी :

रोमन रीति-रिवाजों और लिबास में लिपटा एक खिलौना खिलौना प्रदर्शनी के लिए तयार करो।

पांच. चित्र-अध्ययन :

(क) अगर रोम का एक व्यापारी जैसा कि पृष्ठ १४२ पर चित्र में दिखाया गया है, चित्र में दिखलाई गई वस्तुओं से अपनी आजीविका चलाता है तो रोमन लोगों में से बहुसंख्यक लोग गरीब क्यों थे ?

(ख) पृष्ठ १४५ पर चित्र का बारीकी से अध्ययन करो और बताओ कि यह कैटाकोम्ब्स रोमन किस प्रयोग में लाते थे और क्रिश्चियनों ने इनका क्या उपयोग किया ?

१२ रोम की शक्ति : सरकार

रोमन कानून

रोमन ग्रीकों की अपेक्षा कम कलात्मक थे, लेकिन वे व्यावहारिक अधिक थे। उनकी योग्यता संगठन, सरकार और निर्माण में थी। हम देख चुके हैं कि वे दीर्घकाल तक एक बड़े साम्राज्य के संचालन में अत्यन्त सफल रहे। अपने चतुर तरीकों से वे स्पेनवालों, ब्रिटेन निवासियों, गाल, यहूदी, ग्रीक, आर्मेनियनों और मिस्रियों तथा अन्य कइयों को अपने महान् साम्राज्य में मिलाने और रोम के प्रति उन्हें वफ़ादार बनाने में सफल रहे। अमीर और गरीब, सभ्य और बर्बर, सभी, समान रूप से, संरक्षण और नेतृत्व के लिए रोम की ओर देखते थे। इस सफलता में रोम ने योग्यता के गुण दिखाये।

यह मोज़ेइक चमकीले रंगों में है। इसमें दिखाया गया है कि जस्टिनियन अपनी परिषद् के साथ किसी समारोह में जा रहा है।

ब्राउन ब्रदर्स

रोमन कानून की न्यायप्रियता, रोम के व्यापक नेतृत्व का मुख्य कारण थी। कानून की रोमन प्रणाली धीरे-धीरे और लम्बे अर्से में विकसित हुई। गणतंत्र से पहले के समय में कानूनों का निर्माण और कार्यान्वियन राजाओं और पुराने धर्मों के पुरोहितों द्वारा किया जाता था। पुरोहितों की अदालतों में आम जनता को न्याय नहीं मिल पाता था। अंशतः इसलिए सर्वसाधारण जनता ने सुधार की माँग की।

लगभग ४५० ई० पू० में, प्लीबों की पेट्रीशियनों पर लगातार कई सैनिक विजयों के बाद, बारह पट्टिकाएं बनाई गई थीं और वे ऐसे सार्वजनिक स्थान पर रखी गयी थीं जहाँ सभी उन्हें देख सकें। ये बारह पट्टिकाएँ छोटे कृषक समुदाय के लिए बनाई गयी थीं, लेकिन ज्यों-ज्यों रोम का विकास हुआ और जीवन बदला, नयी परिस्थितियों के अनुकूल कानून संशोधित किये गये। रोमन सेनेट समय-समय पर नये कानून पास करती थी। बाद में सम्राट् घोषणाएँ जारी करते थे, जो कानूनों के ही समान थीं। रोमन न्यायाधीश ऐसे फैसले करते थे जिनमें सामान्य ज्ञान और कानूनी न्याय रहता

था और जैसे-जैसे समय गुजरता गया, रोमन कानून की उल्लेखनीय पद्धति विकसित होती चली गयी।

रोमन कानून किसी एक लिखित दस्तावेज़ में नहीं था। यह अनेक बिखरे हुए और बहुत वर्षों के अदालती रिकार्डों में था। अन्त में, जस्टिनियन ने (सन् ५२७-५६५) इन कानूनों को संग्रहीत किया। यह संहिता, हजारों वर्षों के कानूनों का संग्रह था जो बारह पट्टिकाओं से आरंभ होता था और व्यवस्थित रूप में लिख दिया गया था। परन्तु रोमन कानून की महत्ता स्वयं जस्टिनियन के कारण नहीं थी, अपितु उन हजारों व्यक्तियों के योगदान का फल थी, जिससे जस्टिनियन संहिता के कानून बने थे। ये कानून प्राचीन जगत् के सिर्फ़ सबसे अधिक पाण्डित्यपूर्ण और मानवीय कानून ही नहीं थे अपितु ये वे सबसे बहुमूल्य पैतृक सम्पत्ति भी हैं जिसे आधुनिक जगत् ने रोम से पाया है।

राफो गिलुमेट

रोमन जल-प्रणालियां (एक्वीडक्ट) इतनी मजबूत बनाई गई थीं कि उनमें से कुछ आज भी बहुत अच्छी हालत में मौजूद हैं।

सेनाओं का निर्माणकार्य

रोमन इंजीनियर—निर्माताओं के रूप में भी रोमनों ने श्रेष्ठता दिखलाई। आधुनिक युग से पहले रोमन सड़कें संसार में सबसे बेहतरीन समझी जाती थीं। उत्तरी अफ्रीका और यूरोप के उस हिस्से की बहुत सी सड़कें, जो कि साम्राज्य का अंग था, रोमन निर्माण-कर्ताओं द्वारा डाली गयी नींव पर ही बनाई गयी हैं। यह सत्य है क्योंकि अंशतः यह बुनियाद पुख्ता पड़ी थी और अंशतः इसलिए कि सड़कें उपयुक्त स्थलों से गुजरती हैं। नदियों के ऊपर चौड़े पुल बनाये गये थे और शहरों में शुद्ध जल लाने के लिए कुल्याएँ (एक्वीडक्ट) निकाली गयी थीं। इंजीनियरिंग का दूसरा शानदार काम रोमनों ने उत्तरी सीमान्त पर दीवारें बनाने का किया जिससे बर्बर जर्मनों को बाहर ही रखा जा सके और ब्रिटेन को हमलावरों से बचाया जा सके।

रोमनों की भवन निर्माण कला—प्रारम्भिक काल के रोम नगर में धूप में सुखाई ईंटों के एक कमरे वाले घर बनते थे। रोमनों के ग्रीक संस्कृति के सम्पर्क में आने से पूर्व शैली के बारे में बहुत कम ध्यान दिया जाता था। तब उन्होंने निर्माण की ग्रीक शैली अपनाई। स्नानघर, सरकारी इमारतें, फोरम (बाजार) और महल ग्रीक ढाँचे पर निर्मित हुए। शहर की सुन्दरता में निखार आना जूलिअस सीज़र के जमाने में शुरू हुआ। आगस्टस ने भी उसे जारी रखा। बाद के सम्राटों ने फोरमों, मन्दिरों, महलों, सर्कसों, स्नानघरों और रंग-शालाओं का निर्माण करवा कर उसकी भव्यता को बढ़ाया।

एक सुप्रसिद्ध रोमन इमारत पैन्थियन थी। इसका मुख्य भाग गुम्बदाकार था, जिसमें ड्योढ़ी ग्रीक ढंग की और खम्भे कोरिन्थों के ढंग के बने थे। एक विशाल गुम्बद को सहारा देने के लिए, जो कंकरीट का बना था और छत से १४० फुट ऊँचा उठा हुआ था, २० फुट मोटी दीवारें बनी हुई थीं। गुम्मद के मध्य में २० फुट व्यास का एक खुला स्थान रोशनी आने के लिए बना था। "पैन्थियन"

शब्द का मतलब "सर्वदेवों" से है, क्योंकि यह मंदिर सभी रोमन देवी-देवताओं की स्मृति में बना था। बाद में, जब क्रिश्चियन युग शुरू हुआ, यह एक ईसाई धर्म के चर्च में बदल दिया गया और तब से अब तक उसी रूप में प्रयुक्त होता आया है।

(१) कौन-कौन जातियाँ रोमन साम्राज्य में थीं ?
(२) विजित लोगों का रोम के प्रति दृष्टिकोण क्या था ?
(३) बारह पट्टिकाएँ क्या थीं ?
(४) जस्टिनियन ने रोमन कानूनों के लिए क्या किया ?
(५) रोमन कानूनों की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण विशेषता क्या थी ?
(६) रोमन सड़कें इतनी टिकाऊ क्यों थीं ?
(७) एक कुल्या क्या होती थी ?
(८) रोमनों ने किससे वास्तविक कलात्मक इमारतें बनाना सीखा ?
(९) किन शासकों ने रोम के शहर का पुनर्निर्माण किया ?
(१०) पैन्थियन का वर्णन करो।

रोमनों ने ग्रीकों से विज्ञान सीखा

अवैज्ञानिक तरीके—रोमनों ने वैज्ञानिक ज्ञान में कोई उल्लेखनीय योगदान नहीं किया। ग्रीकों द्वारा दिये गये विचारों को उन्होंने ग्रहण किया और अपने प्रथम पूर्वजों के ही ढर्रे पर रहते चले गये। बीमारियों को दूर करने के लिए वे अपने पूर्वजों की ही तरह काला जादू, देवताओं की मनौती और जड़ी-बूटियों का प्रयोग करते थे। इसी तरह अपने चारों ओर की भूमि का अध्ययन करने में रोमन भौतिक और रासायनिक परिवर्तन, सुनिरीक्षित तथ्यों और परीक्षणों को इकट्ठा करने के बजाय, जादू से करना चाहते थे। उदाहरणार्थ, चूँकि सोना बहुत कम था, इसलिए कुछ लोगों ने अपना समय सीसे को सोने में परिवर्तन करने की कोशिश में व्यय किया। ऐसे लोग कीमियागर कहलाते थे। ये लोग आधुनिक रसायनशास्त्र के छात्रों के पूर्वरूप हैं।

दवाइयाँ—व्यावहारिक लोग होने के कारण रोमनों ने जो कुछ दवाओं का ज्ञान उन्हें था, उसका व्यावहारिक प्रयोग किया। उन्होंने अस्पताल

ग्लैडियेटर लड़ाई में जाने से पहले कालोसियम में अपने कमरे में बैठे सम्राट् के सामने खड़े हैं। "हम जो मरने वाले हैं, आपको सलामी देते हैं" उनका नारा था, और जनसमुदाय इस क्रूरतापूर्ण दृश्य को देखने के लिए उत्सुक हो रहा था।
हिस्टारिकल पिक्चर्स सर्विस
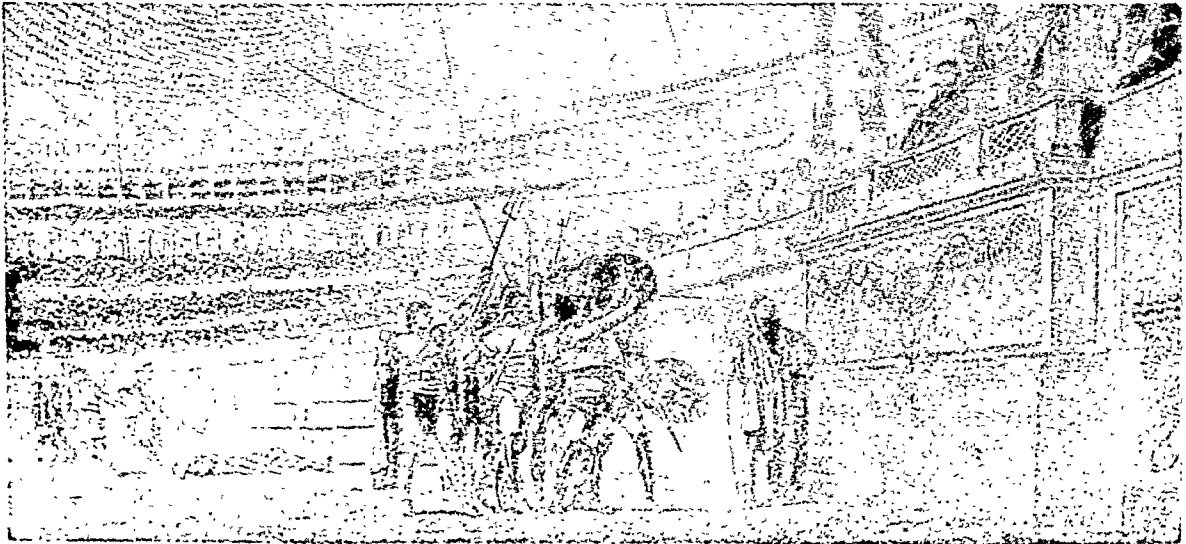
बनवाये और चिकित्साशास्त्र के स्कूल चलाये। प्रत्येक बड़े रोमन कस्बे में ग़रीबों के इलाज के लिए एक सरकारी डाक्टर होता था। बड़े सैनिक अस्पताल राज्य के सुदूर कोनों पर भी बनाये गये थे।

रोमन काल का सबसे प्रभावशाली चिकित्सक गालेन था। (सन् १२९-१९९)। उसने चिकित्सा शास्त्र पर १५० से अधिक पुस्तकें लिखीं। अपनी सामग्री का अधिकांश उसने ग्रीकों से या पुरानी परम्परा से नकल किया। फिर भी, गालेन इस बात में अपने जमाने का अद्वितीय व्यक्ति था कि उसने मानव शरीर पर भी कुछ परीक्षण किये। उसने प्रदर्शित किया कि धमनियाँ खून ले जाती हैं, हवा नहीं। बहुत वर्षों तक गालेन के कार्य प्रामाणिक माने जाते रहे।

लैटिन साहित्य का चरमोत्कर्ष

गद्य-लेखक—कलाओं के क्षेत्र में रोम का सबसे बड़ा योगदान साहित्य में था। लैटिन साहित्य का 'स्वर्ण युग' ईसा पूर्व प्रथम शताब्दी का उत्तरार्द्ध और प्रथम शताब्दी ईसवी माना जाता है। गाल में किये युद्धों पर सीजर के विवरण युद्ध-साहित्य के रूप में लिखे गये थे, लेकिन वे शताब्दियों तक उत्कृष्ट लैटिन गद्य के उदाहरण बने रहे। गृह-युद्ध कालीन रोम के एक राजनीतिज्ञ विद्वान सिसरो ने रोमन सेनेट में महत्त्वपूर्ण भाषण किये। इसके अलावा, उसने पत्र लिखे जो स्थाई रूप से हृदय को छू लेने वाले और ओज-पूर्ण लेखों के रूप में हमें मिले हैं। लिवी ने "रोम का इतिहास" लिखा। चाहे वह पूरी तरह सही न हो, फिर भी यह रोम की शक्ति की तसवीर हमारे सामने खोलता है। लिवी का विश्वास था कि आत्म-बलिदान और कर्तव्य के प्रति वफादारी की भावना से ही रोम अपनी महत्ता बनाये रख सकेगा। घटनाओं ने यह सिद्ध किया कि उसका कहना सच था।

होरेस—उस काल का एक बेहतरीन लेखक कवि होरेस था। उसने भी देखा कि पुरानी निष्ठा, पवित्रता और कर्तव्य के प्रति ईमानदारी उस आमोद-प्रमोद और ऐश-आराम के आगे जो रोमन दौलत और हेलेनिक जगत् के साथ सम्पर्क से चले आये थे, समाप्त होती चली जा रही हैं। होरेस ने लोगों को पुराने सामान्य और शांत जीवन की ओर लौटाने की चेष्टा की। उसने लिखा कि गृह-युद्धों का संताप राज्य के भीतरी लोगों की लापरवाही से आया है। रोम सिर्फ एक व्यक्ति के शासन से शक्तिशाली हो सकता है और वह है आगस्टस।

वर्जिल—स्वर्ण युग के लेखकों में सर्वोच्च स्थान एक शर्मीले, एकाकी और अमहत्त्वपूर्ण जीवन बिताने वाले व्यक्ति का है लेकिन उसने अपना समय ऐसी कविताएं लिखने मे बिताया जो विश्व के काव्य में सबसे उच्च कृतियों में गिनी जाती हैं। उसका नाम वर्जिल था। "जोर्जिक्स" में वर्जिल ने धरती के प्रति प्रेम और प्रकृति की सुन्दरता का वर्णन किया हैं। उसका महाकाव्य "एनीड" था। एनियास को सीज़रों के एक पूर्वज के रूप में चित्रित किया गया है।

"देवताओं ने हमेशा रोम का पथप्रदर्शन किया है", वर्जिल ने कहा और जिन कष्टों और यातनाओं से मनुष्य गुजर रहे हैं वे व्यर्थ नहीं जाएंगी, क्योंकि आगस्टस के शासनान्तर्गत रोम ने विश्व में शान्ति और व्यवस्था स्थापित की। हजार वर्षों से कवियों ने वर्जिल से प्रेरणा प्राप्त की है और वह विश्व के महत्तम कवियों में गिना जाता है।

१. रोमनों का विज्ञान आज की तुलना में कैसा ठहरता है? उदाहरण दो।
२. गालेन कौन था?
३. रोमन साहित्य किस रूप में विश्व के महान् साहित्य की श्रेणी में आता है?
४. निम्नलिखित में से प्रत्येक के साहित्यिक कार्य का संक्षिप्त विवरण दो: जूलिअस सीजर, सिसरो, लिवी, होरेस और वर्जिल।

रोमन साम्राज्य का अन्त

साम्राज्य का ह्रास—प्रारम्भिक रोम कृषि-प्रधान रहा, लेकिन, जैसा कि हम देख चुके हैं, प्यूनिक युद्धों ने रोमन जीवन में बहुत बड़े परिवर्तन ला दिये थे। व्यापार उन्नतिशील हो गया था और रोम में दौलत चली आ रही थी। लेकिन ज्यों-ज्यों अमीर और

अमीर होते गये, और कीमतें चढ़ीं, त्यों-त्यों गरीब और भी गरीब होते चले गये। रिपब्लिक (गणतन्त्र) स्वत: गम्भीर आर्थिक समस्याओं या नगर के दो वर्गों के बीच गृह-युद्धों को नियन्त्रित करने में असफल रहा। आगस्टस ने शान्ति और व्यवस्था कायम की, जो दो शताब्दियों तक रही। लेकिन गरीबी की समस्या हल नहीं हो पाई। बाद के शासकों ने वेतनों और मूल्यों के नियन्त्रण का प्रयास किया लेकिन इससे भी समस्या का कोई हल नहीं निकल पाया।

दूसरी कमज़ोरी सम्राट् पद के उत्तराधिकार के लिए किसी कानून का अभाव थी। दो शताब्दियों की शान्ति के बाद, प्रतिद्वन्द्वी सम्राटों ने गृह-युद्धों को बढ़ावा दिया, जिससे साम्राज्य लगातार संकट में रहा। इन युद्धों ने प्रान्तों को विध्वस्त कर दिया और जनसंख्या के ह्रास का कारण बने।

सेना भी कमज़ोर हो चली। सिक्के बनाने के लिए सोने और चाँदी की कमी से सरकार को अपने सैनिकों को धन के एवज में भूमि देने को विवश होना पड़ा। इसलिए सैनिक विवाह करके भूमि पर बस गये। वे सिर्फ़ कुछ ही समय के लिए सैन्य प्रशिक्षण के हेतु मिलते थे। दर असल, सेना एक प्रकार से ट्रेनिंग प्राप्त असैनिकों की फौज बन गयी थी, और उसकी युद्ध-शक्ति प्राचीन रोमन सेनाओं की सी नहीं रही थी।

गुलामों की बहुत बड़ी जनसंख्या होने से भी रोम कमज़ोर पड़ गया था। युद्धबन्दी गुलाम बना लिये जाते थे और दासों के व्यापारी युवा-पुरुषों और युवतियों को रोम में दासों के रूप में बेचने के लिए प्रान्तों से पकड़ लाते थे। चूंकि गुलाम सस्ते थे, इसलिए उनका हर काम में इस्तेमाल होता था जिससे उन गरीबों की रोजी भी जाती रही जो गरीबी में किसी तरह, रोम में दिन बिताते थे। इसके अलावा, गुलामी ने एक आरामतलब, ऐश-परस्त धनी वर्ग पैदा कर दिया था जिसमें साधारण और कठोर जीवन बिताने वाले उन रोमनों के बहुत कम गुण थे, जिन्होंने रोम को इतना महान् बनाया था।

जर्मनों के हमले—रोम की अन्दरूनी शक्ति धीरे-धीरे क्षीण होती जा रही थी और उसमें से सडाँध आने लगी थी। उसे अपनी उत्तरी सीमा पर बर्बर जर्मन कबीलों के आक्रमणों का सामना करना पड़ा। वे मजबूत और क्रूर थे और पतनोन्मुख साम्राज्य को अपनी सीमाओं की रुकावट शनैः शनैः हटानी पड़ी और उन्हें अन्दर प्रवेश करने देने को विवश होना पड़ा। पहले हमलावार लुटेरे थे जो सीमान्त रक्षकों को पराजित कर, जो कुछ उनके हाथ लगा, लूट-खसोट कर भाग गये। तब वे फिर उत्तर की ओर पीछे लौटे। जब उनका दबाव बहुत ज्यादा पड़ा, तब सम्राट् मार्कस आरेलियस (सन् १६१-१८०) ने उनके एक दल को साम्राज्य के भीतर बसने की अनुमति दे दी। चूंकि वे हट्टे-कट्टे होते थे और अच्छे सिपाही बनते थे, इसलिए वे अधिकाधिक संख्या में सेना में लिये जाने लगे और अन्त में वे संख्या में रोमन सैनिकों से भी अधिक हो गये। रोमनों के साथ रह कर उन्होंने रोमनों के तौर-तरीके और उनका रहन-सहन अपना लिया था और सेना तथा सरकार तक में उच्च पदों पर आसीन हो गये थे।

चौथी शताब्दी के उत्तरार्द्ध में व्यापक निष्क्रमण आरम्भ हुए। एशिया के भयानक हूणों के कबीलों ने गाथों पर हमला किया जो साम्राज्य की सीमा के पार डेन्यूब के उत्तर में बस गये थे। हूण ठिगने

संसार के इतिहास के हर काल में एक देश पर दूसरे देश के निवासियों का हमला होता रहा है। क्या आजकल भी ऐसा कम होता है?
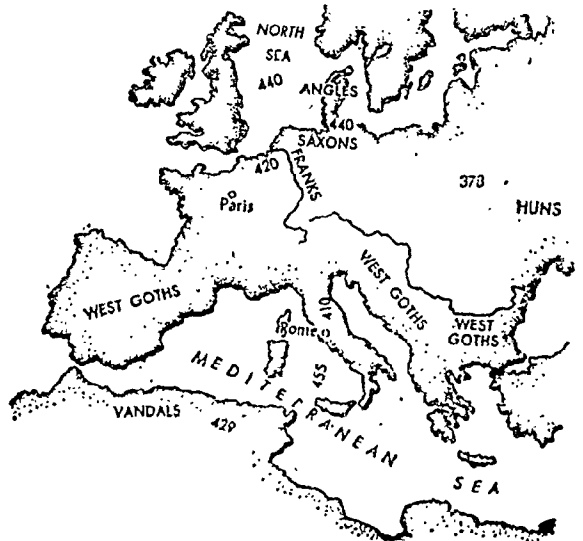
कलचर सर्विस

अटीला तलवार लिए अपने काले घोड़े पर चढ़ा अपने सैनिकों का नेतृत्व कर रहा है। यह तलवार युद्ध के देवता की तलवार मानी जाती थी। रोमनों ने अटीला को "भगवान् का कलंक" और "संसार का आतंक" कहा था।

कद के, छोटी अन्दर को धंसी आंखों वाले और गहरे पीले चमड़े वाले लोग थे। वे बहुत तेजतर्रार और कुशल घुड़सवार थे तथा जिसके भी सम्पर्क में आते, उसके लिए आतंक थे। भयभीत गाथ हजारों की संख्या में डेन्यूब के इस पार भागे और रोमन क्षेत्र को पार करने के अधिकार की प्रार्थना करने लगे। हजारों लोग नावों से इस पार लाये गये। जब साम्राज्य अधिक लोगों को अपने क्षेत्र में लेने को तैयार न हुआ तब गाथों ने हमला बोल दिया और वे बलकान प्रायद्वीप में घुसे। उनका नेता अलारिक उन्हें इटली में ले गया। अन्त में, सन् ४१० में उसके सैनिक रोम में ही आ गये। अलारिक के निदशों के विरुद्ध, सैनिकों ने शहर को रौंदा, सैकड़ों को मौत के घाट उतारा, लूट-पाट मचाई और विध्वंस किया।

हूणों का दबाव पड़ने पर समस्त जर्मन कबीले साम्राज्य में घुस आये। वाण्डल लोग स्पेन और उत्तरी अफ्रीका में बस गये, ऐंगल और सैक्सन ब्रिटेन में बसे, जबकि फ्राँकों ने गाल पर अधिकार कर लिया। साम्राज्य में उनका बढ़ाव रोकने की शक्ति नहीं रही थी। एशियाई हूण अटीला के नेतृत्व में, सन् ४५२ में उत्तरी इटली में प्रवेश कर गये और रोम की ओर बढ़े। रोम के विशप, लियो प्रथम, ने अटीला से मुलाकात कर उसे रोम पर हमला न करने को प्रेरित किया। अटीला हंगरी के मैदानों को वापस चला गया और अगले वर्ष वहीं उसकी मृत्यु हो गयी। उसके अनुयायियों ने वहाँ के निवासियों से शादी-व्याह कर लिया और शनैः शनैः इतिहास से विलुप्त हो गये।

हमलों का प्रभाव—सम्राट् के पद को छोड़कर रोमन सरकार के सभी पदों पर बर्बर आसीन हुए। ये क्रूर लोग अल्प समय ही साम्राज्य में रहे थे और कानून तथा व्यवस्था का उन्हें बहुत कम ज्ञान था। सरकार की कार्यक्षमता का एकाएक बहुत ह्रास हो गया। अन्त में, सन् ४७६ में, अन्तिम रोमन सम्राट् को गद्दी छोड़नी पड़ी। एक जर्मन सरदार इटली के राजा के रूप में गद्दी पर बैठा। अन्य सरदारों ने पश्चिमी साम्राज्य के अन्य हिस्से हथिया लिये और इस तरह किसी समय का महान् पश्चिमी रोमन साम्राज्य टुकड़ों में बिखर गया।

कुछ वर्षों बाद, कान्स्टेण्टिनोपल से पूर्वी हिस्से

का शासन करने वाला जस्टिनियन पश्चिम के कुछ हिस्से को पुनः जीतने में सफल हुआ लेकिन उसका अधिकार सिर्फ थोड़े काल के लिए रहा। उसकी मृत्यु के बाद पूर्व और पश्चिम पुनः अलग-अलग हो गये। पश्चिम विभिन्न जर्मन कबीलों में बँटा हुआ था। बर्बरों ने पश्चिम के लोगों का रहन-सहन और भाषा शीघ्र बदल डाली। सीज़र, सिसरो और वर्जिल किसी काल के महान् रोमन बाजार में इन रूखे लोगों द्वारा किये जाने वाले भाव-ताव को नहीं समझ सकते थे।

बहुत से लोग भय और आतंक से उस रोमन साम्राज्य का अन्त देख रहे थे, जिसके वे नागरिक थे। अब तक वह सभ्यता का रक्षक बना इस प्रकार खड़ा था कि लोग उसके बिखर जाने की कल्पना भी नहीं करते थे। एक हजार वर्षों तक विश्व ने इस साम्राज्य के पतन पर दुःख अनुभव किया और यह आशा लगाये रखी कि किसी रूप में इसकी पुनः स्थापना होगी जिससे फिर शांति और स्थायित्व आयेगा। लेकिन साम्राज्य का अन्त हो चुका था। उसका इतिहास महान् और शानदार रहा था और संसार उसकी सफलताओं से तब भी लाभान्वित होता रहा जब बहुत समय बाद उसकी महत्ता एक स्मृति मात्र रह गयी थी। रोम ने प्राचीन जातियों की संस्कृति को अपने स्वयं के प्रयोग के लिए स्वीकार किया और अपने ढाँचे में ढाला और आधुनिक संसार ने अपनी संस्कृति का बहुत सारा अंश रोम से प्राप्त किया है।

राइन की घाटी में बसे हुए रोमन सैनिक अपना लगान चुका रहे हैं। लगभग ३०० ईस्वी की एक नक्काशी।

वैटीमैन आर्काइव

रोमनों की देन—अपनी खामियों और कमजोरियों के बावजूद रोमन साम्राज्य ने विश्व को सभ्यता की दिशा में बहुत आगे तक बढ़ाया। लोकतंत्र की ग्रीक विचारधारा में, जो थोड़ी सी जनसंख्या के लिए उपयुक्त बैठती थी, तब सुधार हुआ जब रोमनों ने प्रतिनिधित्वपूर्ण लोकतंत्र का निर्माण किया जो बहुत बड़ी जनसंख्या वाले समाज में प्रयुक्त किया जा सकता था। रोमन लेखकों ने स्थायी साहित्य लिखा। उन्होंने समूचे साम्राज्य में एक समान संस्कृति फैला कर भूमध्यसागरीय जगत् को एक इकाई में बाँधा। रोमन कानून इतना न्याय्य और मानवीय था कि पाश्चात्य जगत् ने उसे अपना आदर्श बनाया।

यद्यपि साम्राज्य नष्ट हो चला था और रोमन जगत् में एक "अंधकार का युग" आ गया था, फिर भी रोम की महान् सफलताएँ जीवित रहीं। बाद की कुछ शताब्दियों में कुछ समय तक वे छिपी रहीं, परन्तु उनका विनाश नहीं हुआ।

१. ऐसी किन समस्याओं ने रोमन गणतंत्र को घेर रखा था जिन्हें रोमन सम्राट् स्थायी रूप से मिटाने में असमर्थ रहे?
२. रोमन साम्राज्य के पतन के कारण बताओ।
३. जर्मनों के हमलों की कहानी सुनाओ।
४. हूण कौन थे, गाथ कौन थे, वाण्डल कौन थे और ऐंगल और सैक्सन कौन थे?
५. जस्टिनियन ने पश्चिम का पुनः नियंत्रण किस प्रकार प्राप्त किया?
६. पश्चिमी जगत् रोमन कानून को किस रूप में देखता था?
७. रोमन साम्राज्य के पतन के बाद जो लोग वहाँ थे, वे उसके बारे में क्या सोचते थे?
८. रोमन लोग संस्कृति और लोकतंत्र की दिशा में किस तरह आगे बढ़े?

४. लोकतंत्र की दिशा में नये चरण

रोमन योग्य और व्यावहारिक व्यक्ति थे। वे इस बात में दिलचस्पी रखते थे कि उनका साम्राज्य सुचारु रूप से और न्याय के साथ संचालित हो। रोमन कानून बुद्धिमत्ता और मानवीयता का परिचायक था। यह रोम सभ्यता से हमें प्राप्त हुई विरासत है।
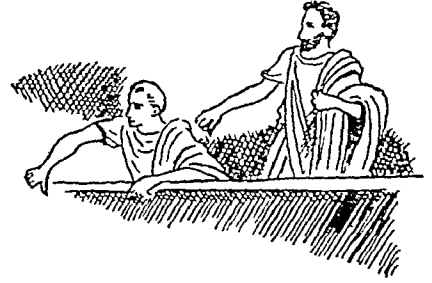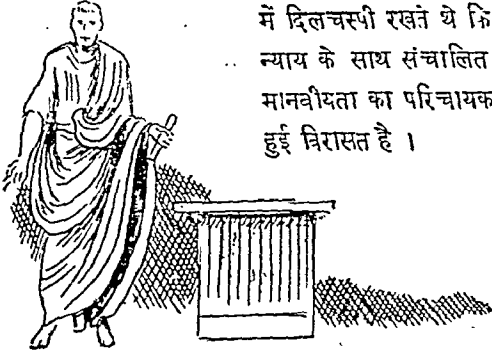
प्रारम्भिक गणतंत्र का संचालन जनता द्वारा चुने हुए लोगों की असेम्बली और एक सेनेट, जिसके सदस्य जीवन-पर्यन्त पदारूढ़ रहते थे, करती थी। पर पदों पर सिर्फ पेट्रीशियन नियुक्त हो सकते थे।

बाद में प्लीवों को कुछ अधिकार मिले। उन्हें ट्रिब्यूनों को चुनने की अनुमति मिली, जो कि निषेधाधिकार द्वारा ऐसे कार्यों को रोकते थे जिन्हें वे प्लीवों के हित की दृष्टि से अनुपयुक्त समझते थे।

लगभग ४५० ई० पू० में रोमन कानून बारह पट्टिकाओं पर लिख दिया गया।
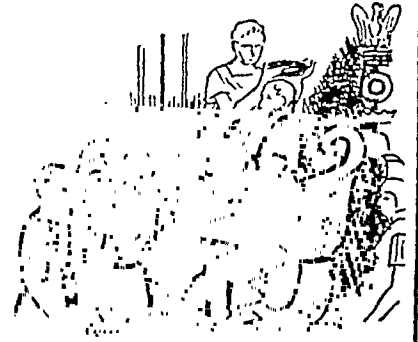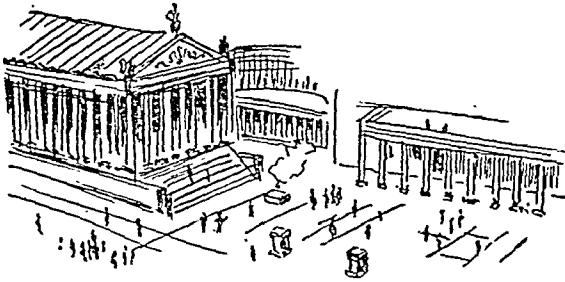
शनैः शनैः गणतंत्र एक प्रतिनिधित्वपूर्ण लोकतंत्र बन गया, जिसमें सभी नागरिक सरकार के प्रतिनिधि चुनने को वोट देते थे। इस प्रकार की सरकार आज हमारे देश में है।

अन्त में, गणतंत्र लुप्त हो गया। सम्राटों ने असेम्बली खत्म कर दी, सेनेट का शासनाधिकार समाप्त हो गया और रोमन सम्राट् निरंकुश शासक बन गया।

विचार-विमर्श के लिए प्रश्न

१. रोमन कानून की बारह पट्टिकाएँ इतनी महत्त्वपूर्ण क्यों थीं ?

२. रोमन कानून क्यों रोमनों का आधुनिक विश्व को सबसे बड़ा योगदान समझा जाता है ?

३. तुम ग्रीक स्थापत्य कला को अच्छा मानते हो या रोमन गृह निर्माण कला को और क्यों ?

४. क्या तुम समझते हो कि चूँकि गालेन ने चिकित्सा-विज्ञान के अपने ज्ञान को लेखबद्ध कर दिया था, इसलिए बहुत वर्षों तक उसे चिकित्सा-विज्ञान के सम्बन्ध में अन्तिम प्रमाण माना जाता रहा ?

४. जीवन-निर्वाह की प्रगति के चरण

रोम लेटियम में टाइवर के किनारे एक छोटी सी वस्ती थी, जो आकार और शक्ति में इतनी बढ़ी कि उसने इटली को जीत लिया और अन्त में वह ज्ञात जगत् के अधिकांश भाग की शासक बन गयी। रोमनों ने विजित लोगों की संस्कृति को अपनाया, विशेषकर ग्रीकों की। विश्व को इससे लाभ हुआ, क्योंकि रोमनों ने अपनी संस्कृति को समूचे साम्राज्य में फैलाया।

विज्ञान का अध्ययन रोमनों ने अधिक नहीं बढ़ाया क्योंकि वे वैज्ञानिक परीक्षणों की अपेक्षा जादू में ज्यादा दिलचस्पी रखते थे। तो भी, चिकित्सा-विज्ञान के ग्रीक छात्र गालेन ने, जो रोम में डाक्टर था, सर्वप्रथम यह प्रदर्शित किया कि मानव-शरीर की धमनियां शरीर के भीतर से खून ले जाती हैं, न कि हवा। उसने मस्तिष्क विषयक ज्ञान में भी वृद्धि की।

रोम के इंजीनियर और भवन-निर्माता कुशल लोग थे। रोमन सड़कों को, जो साम्राज्य के महत्त्व-पूर्ण भागों को जोड़ती थीं, यूरोपियनों ने फिर से बनवाया जिनके ऊपर वे अब तक यात्रा करते आ रहे हैं। रोमन सड़कें इतनी अच्छी बनी थीं कि उनमें से कुछ अब भी वैसी ही हैं। रोमन पुल नदियों के ऊपर मेहराबदार बने थे और बड़ी कुल्याएँ ऊंचे स्थानों से नगरों में पानी लाती थीं।
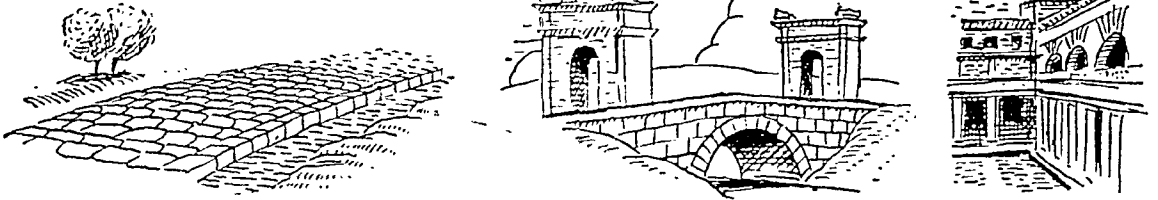
५. "फोरम" शब्द सार्वजनिक बहसों के लिए अच्छा क्यों है?

६. निम्नलिखित वाक्यों में से प्रत्येक पर विचार करो और बताओ कि कौन सा सच है, और कौन सा राय मात्र है:—

(क) रोमनों ने प्राचीन जगत् में सबसे अच्छी सड़कों का निर्माण किया।

(ख) मौजूदा पीढ़ी के लिए, रोमनों की सरकार और कानून सम्बन्धी योगदान ग्रीकों की कलात्मक देन की अपेक्षा ज्यादा मूल्यवान् है।

(ग) रोम ने, ईरान की ही भांति, अन्य लोगों की संस्कृतियों को अपना कर उन्हें अपनी आवश्यकताओं के अनुरूप ढाला।

(घ) आगस्टस रोम का सबसे बड़ा सम्राट् था।

७. रोमन साम्राज्य के पतन का कारण अन्दरूनी गड़बड़ी थी, या बाहरी दबाव?

८. रोमन सम्राटों के लिए गद्दी का वारिस होने का कोई कानून न होना रोम के लिए क्यों बुरा था?

९. रोम के पतन के लगभग एक हजार वर्ष बाद भी लोग पीछे मुड़कर उस एकता की ओर चाहभरी दृष्टि से देखते थे जो उसने भूमध्यसागरीय जगत् में कायम की थी, क्यों? क्या आज भी लोगों में प्रभावशाली विश्व संगठन के लिए उसी प्रकार की प्रबल इच्छा है?

शिक्षा में प्रगति
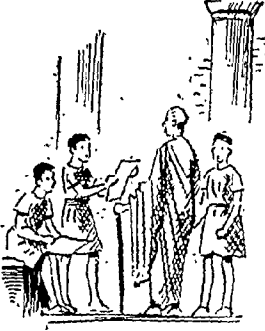
धनी परिवारों के रोमन लड़कों को लिखना, पढ़ना और गणित सिखाया जाता था। कुछ छात्र ऊँची कक्षाओं तक जाते थे जहां वे साहित्य और वक्तृत्व-कला सीखते थे। कभी-कभी गरीब नागरिक अपने लड़कों के लिए स्कूल खोलते थे। पर बहुसंख्यक रोमन युवकों के लिए शिक्षा के अवसर बहुत सीमित थे। लड़कियां सिर्फ घर का कामकाज सीखती थीं।
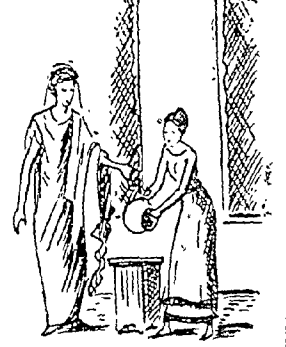
मानव शिक्षा के लिए रोमनों का योगदान उनके गद्य और पद्य थे: सीजर, लिवी, होरेस, वर्जिल और अन्य लोगों ने अपने साहित्य से विश्व साहित्य को समृद्ध बनाया।

कला में प्रगति
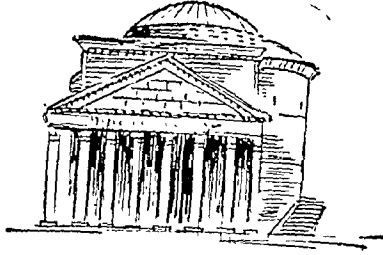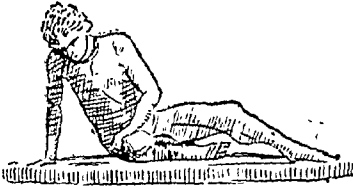
सुन्दर वस्तुओं के निर्माण की रोमनों में कमी नहीं थी। उन्होंने रोम को भव्य मंदिरों और सरकारी इमारतों, पैन्थियन तथा देवताओं की मूर्तियों से सुन्दर बनाया।

रोमन भवन-निर्माता अपने निर्माण कार्यों में मेहराब और गुबन्द बनाते थे। उन्होंने धनी लोगों के देहातों में रहने के लिए विला बनाये। इस विचार की आधुनिक विश्व ने नकल की है।

इतिहास के उपकरणों का प्रयोग

एक. नाम. तिथियाँ और स्थान

(क) क्या तुम इन शब्दों का अर्थ बता सकते हो?

एम्फीथियेटर, कुल्या, सर्कस, बेसीलिका, फोरम, गाथ, हूण, पैन्थियन, ट्यूटन, वाण्डल।

(ख) क्या तुम इन तिथियों के बारे में बता सकते हो? सन् ४१० ई०···सन् ४७६ ई० ···सन् ५२७-५६५ई०···१४५३ ई०

(ग) नक्शे में ये स्थान दिखाओ: बलकान प्रायद्वीप···डेन्यूब नदी, हंगरी···उत्तरी अफ्रीका

(घ) तुम इन व्यक्तियों के बारे में क्या जानते हो

अटीला···मार्कस···आरेलियस······जूलियस सीजर···सिसरो···गालेन··· जस्टिनियन··· लियो (प्रथम)···लिवी···वर्जिल।

दो. क्या तुम अपने विचार स्पष्ट प्रकट कर सकते हो।

१. पैन्थियन···कालोसियम··· सर्कस-मैक्सिमस, बेसिलिका या रोमन स्नानघर के छोटे-छोटे मिट्टी के माडल बनाओ।

२. कक्षा में मौखिक रूप से बताने के लिए ये विशेष दिलचस्प प्रसंग हैं :

रोमन फोरम, रोमन पुल, गालेन के परीक्षण। गणतंत्र को नष्ट करने वालों के खिलाफ सिसरो के कलापूर्ण भाषण।

३. अपने को एक प्रान्त में भ्रमण करने वाला रोमन छात्र या व्यापारी मान कर अपने घर एक पत्र लिखो कि तुमने क्या देखा और तुम्हारे अनुभव क्या रहे।

४. रोमन फोरम में लोग खड़े होकर सभी विषयों पर बातचीत करते थे। अपने को एक देशभक्त रोमन मानकर जो जर्मनों के हमलों के पहले रोम की कमजोरियाँ देख रहा हो, तुम्हारी बात सुनने के लिए वहाँ खड़ी भीड़ के समक्ष भाषण करो।

तीन. रेडियो ब्राडकास्ट

पाँच मिनट का रेडियो ब्राडकास्ट निम्नलिखित घटनाओं के बाद के दिन समाचार के रूप में सुनाने को तैयार करो : नयी और बहुत आवश्यक कुल्या चालू कर दी गयी···पैन्थियन सभी देवताओं की स्मृति में अर्पित किया गया है···मार्कस आरेलियस ने जर्मनों को साम्राज्य के भीतर बसने की अनुमति देते हुए घोषणा जारी की है···यह निश्चित प्रतीत होता है कि अलारिक कल रोम में प्रवेश करेगा···लिओ (प्रथम) अटीला को मना रहा है कि वह रोम में प्रवेश न करे···सीज़र की गालों पर एक विजय का समाचार रोम पहुँचा है।

चार. चित्र-अध्ययन

पृष्ठ १४८ पर दिये गये चित्र में चित्रकार ने जस्टिनियन के सिर के चारों ओर प्रकाशवृत्त क्यों दिखाया है।

पांच. बुलेटिन बोर्ड के लिए

रोमन निर्माण कला के चित्र एकत्र करो और उन्हें बुलेटिन-बोर्ड पर लगाने योग्य बनाकर प्रत्येक पर ठीक लेबल लगाओ।
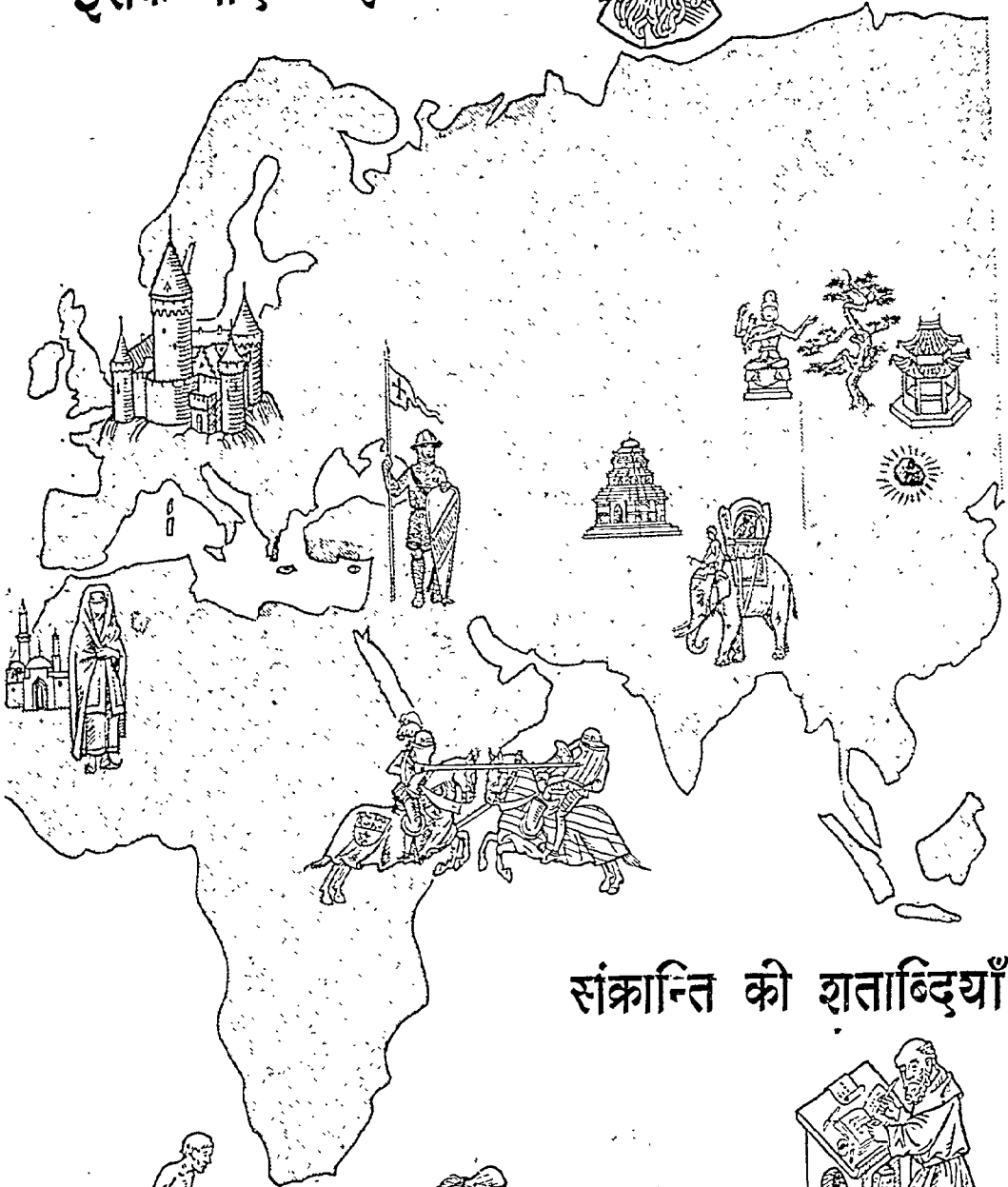
इसके बाद आईं
संक्रान्ति की शताब्दियाँ

मध्य-युग का संसार
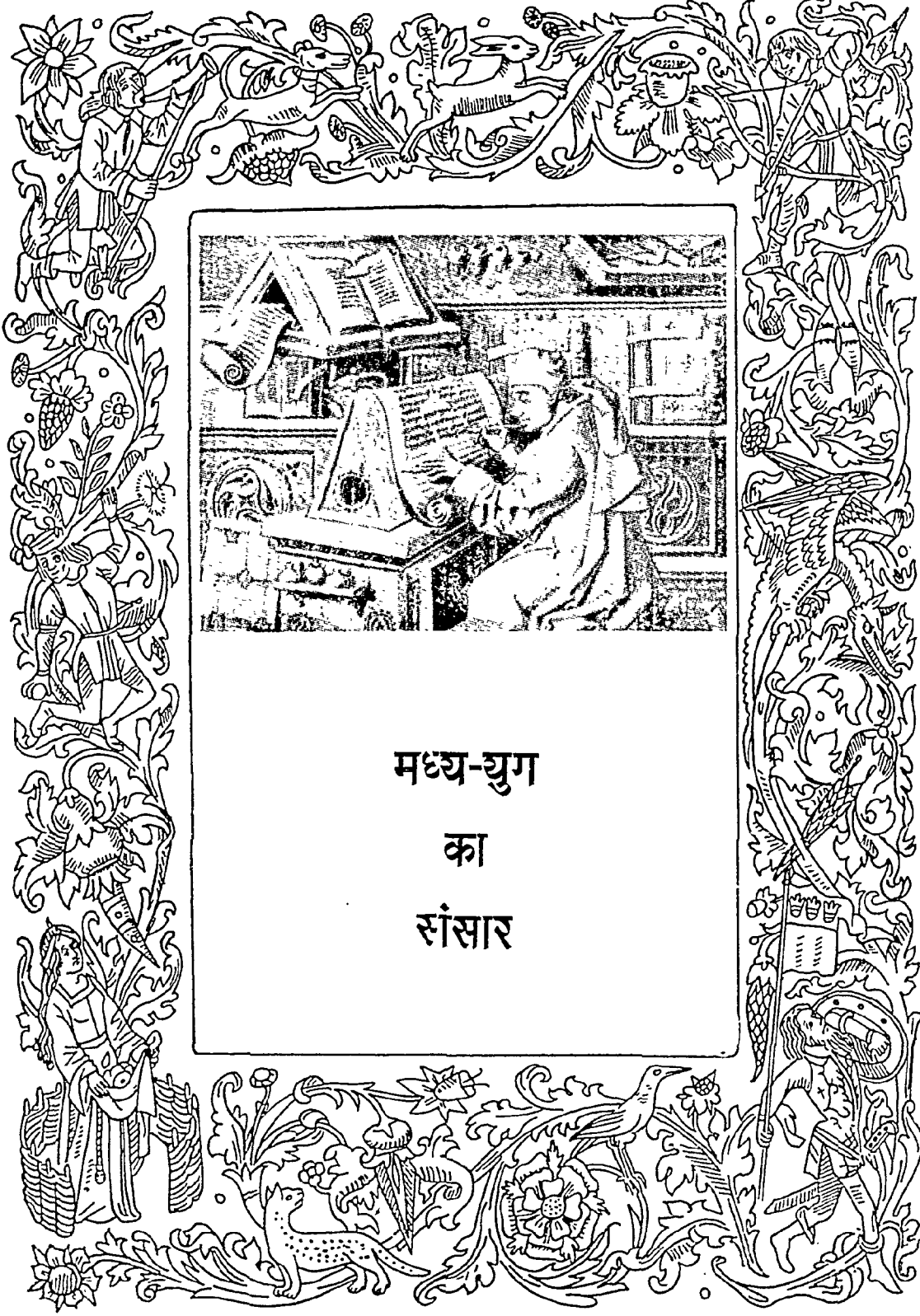
पश्चिमी यूरोप के इतिहास में रोमन साम्राज्य के पतन से लेकर अमरीका की खोज होने तक के काल को 'मध्ययुग' कहा जाता है। पश्चिमी यूरोप में मध्ययुग के तुरन्त बाद रहने वाले लोगों के विचारानुसार, रोमन साम्राज्य के वैभव और उनके द्वारा उस समय निर्मित हो रही सभ्यता के वैभव के बीच का काल अंधकार का समय था। इसलिए उन्होंने इस काल को 'मध्ययुग' कहा। उनका विश्वास था कि इस अवधि में कोई महत्त्व-पूर्ण बात नहीं हुई। वैसे अब हम जानते हैं कि मध्ययुग पश्चिमी यूरोप के इतिहास में अपने आप में महत्त्वपूर्ण युग था। लगभग हजार सालों की इस अवधि में ही बहुत सी मूल्यवान् संस्थाओं का सूत्रपात हुआ था।

मध्ययुग को प्रायः पूर्व-मध्ययुग और उत्तर-मध्ययुग में विभाजित किया जाता है। रोमन साम्राज्य के पतन से लेकर १००० ई० तक के काल को पूर्व-मध्ययुग और १००० ई० से अमरीका की खोज होने तक के काल को उत्तर-मध्ययुग कहते हैं। इन दोनों भागों के अपने-अपने भिन्न लक्षण थे। प्रथम भाग में सभ्यता अत्यन्त प्रारम्भिक अवस्था में थी। पाँच सौ वर्षों तक शिक्षा, नागरिक जीवन, वाणिज्य और अच्छे शासन का लगभग अभाव ही था। लातीनी साहित्य के पाठक नहीं थे और नये साहित्य की रचना नहीं हो रही थी। रोमन कानून छोटे छोटे रजवाड़ों की समझ के बाहर थे और वे अपने-अपने नियम-कायदे चलाते थे। शहरों का आकार छोटा होता जा रहा था। हर परिवार को जीवन की दैनन्दिन आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए स्वयं पर निर्भर रहना पड़ता था क्योंकि व्यापार का अधिक प्रचलन नहीं था। पड़ोसी राज्यों में अक्सर युद्ध छिड़े रहते थे। यह युग आक्रमण, लूट और रक्तपात का था क्योंकि क्रूर लोगों के झुण्ड के झुण्ड धन की तलाश में पड़ोस के देशों में बेरोक घुस जाया करते थे। किसी के लिए भी शारीरिक सुरक्षा लगभग नहीं ही थी। दूसरे लोग इहलोक की दशा सुधारने के बजाय पारलौकिक जीवन के लिए तैयारी करने में अधिक रुचि रखते थे। उनके धर्म में कर्मकाण्ड पर अधिक बल रहता था।

ग्यारहवीं शताब्दी से पश्चिमी यूरोप में जीवन अधिक तीव्र गति से आगे बढ़ने लगा और वैविध्यपूर्ण होने लगा। यह सिलसिला उत्तर-मध्ययुग के उत्तरकाल में और अधिक तीव्र हो गया। शिक्षा का ढंग बदल गया और विकसित हुआ। नगर विशाल होने लगे। सुन्दर गिरजाघरों और सुदृढ़ गढ़ियों का निर्माण हुआ। व्यापार बढ़ गया। राष्ट्र प्रगति करते गये और संसदों का उदय हुआ। इस काल मे जिन सस्थाओं का सूत्रपात हुआ, उन्हीं के आधार पर बाद के लोगों ने सस्थाओं का निर्माण किया।

जहाँ एक ओर पश्चिमी यूरोप में यह स्थिति थी वहाँ दूसरी ओर पुराने पूर्वीय रोमन साम्राज्य का अस्तित्व भी बना रहा। वैसे इसकी सीमाएँ एशियायी आक्रामकों के कारण निरन्तर संकुचित होती जा रही थीं। इस साम्राज्य का अस्तित्व १४५३ में समाप्त हुआ।

यद्यपि पश्चिमी यूरोपवासियों को मध्ययुग के अन्तिम भाग में कहीं जाकर इसका पता चला पर सन् ३०० और १५०० ई० के बीच इस अवधि में भारत, चीन, जापान और पश्चिमी गोलार्द्ध म सभ्यताएँ विकसित हो रही थीं। इस खण्ड में हम यह पढ़ेंगे कि किस तरह मनुष्य स्वतन्त्रता और बेहतर जीवन-पद्धति की ओर प्रगति करता रहा।

Birth of Christ
250 AD
500 AD
750 AD
1000 AD
1250 AD
1500 AD
1850 AD
2000 AD
The Middle Ages
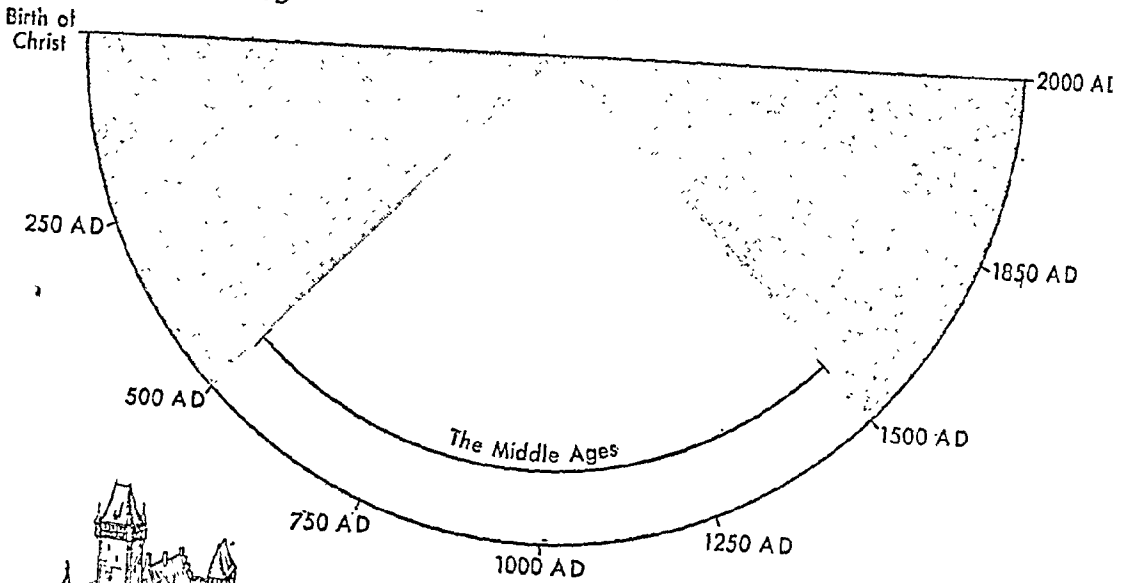
३ पश्चिमी सभ्यता की प्रगति धीमी हुई

रोमन साम्राज्य पर आक्रमण करने वाले और उसको विनष्ट करने वाले जर्मनों के सम्बन्ध में जानकारी हमें प्रधानतः रोमन इतिहासकार टैसिटस से प्राप्त होती है। उसने राइन, विस्टुला और ओडर नदियों के तटवर्ती जर्मनदेश को "भीषण जंगलों और पंकिल दलदलों" से भरा हुआ बतलाया है। ऐसे कठिन भौतिक वातावरण में बंजारे जर्मनों ने ठंढक का सामना करना और पशु और सूअर पालकर भोजन प्राप्त करना सीखा। टैसिटस के अनुसार, ये लोग कठिन परिश्रमी और बहादुर थे और कायरता को पाप समझते थे। अपने सेनापति के मारे जाने के बाद जीवित बचे रहना और रणक्षेत्र से वापस आना बुज़दिली समझी जाती थी। इसके लिए आदमी को जिन्दगी भर भर्त्सना सहनी पड़ती थी।

पुरुषों का समय शिकार करने, मछली मारने और लड़ने में बीतता था। वे स्वयं अपने लोहे के हथियार और स्वर्ण तथा अम्बर के आभूषण बनाते थे। शेष अधिकांश कार्य औरतें करती थीं। वे सन के कपड़े बुनने, मिट्टी के बर्तन पकाने और जूते बनाने के लिए चमड़ा कमाने का कार्य भी करती थीं।

आक्रमणकारी जर्मनों द्वारा यूरोपीय सभ्यता का रूपान्तरण

जर्मन लोग कई कबीलों में बँटे हुए थे। उनकी भाषाएँ समान थीं और उन सभी को ट्यूटन कहा जाता था। हर कबीले का शासक एक प्रधान होता था जिसका चुनाव युद्ध-योग्य आयु के सभी स्वतन्त्र पुरुषों की परिषद् द्वारा किया जाता था। युद्धकाल को छोड़कर, कबीले के सदस्यों पर प्रधान का अधिक अधिकार नहीं होता था। युद्ध, शान्ति और स्थानान्तरण के महत्त्वपूर्ण मसले परिषद् द्वारा तय किये जाते थे। नेता के व्यक्तिगत अनुयायी शान्ति और युद्धकाल में उसके अंगरक्षक होते थे। युद्धकाल में नेताओं का चुनाव उनके साहस को देखकर होता था और यदि वे नेतृत्वकार्य में असफल होते थे तो उनके स्थान पर दूसरा नेता चुना जाता था। सेना का प्रधान कबीले का वीरतम योद्धा और सर्वोत्तम लड़ाका हुआ करता था। जब वह इतना वृद्ध हो जाता था कि नेतृत्व में अक्षम हो तो उसका स्थान कोई दूसरा ले लेता था।

जर्मनों के कारण हुए परिवर्तन—जर्मन कबीलों ने रोमन साम्राज्य पर विजय प्राप्त करने के पश्चात् उस सभ्यता को अपनी सामर्थ्य भर अपनाया। बर्बरों जैसा स्थूल जीवन बिताने के बाद वे तुरन्त ही सुसंस्कृत रोमनों की जीवन-पद्धति नहीं अपना सकते थे। वैसे उनमें से बहुत से लोगों के मन में रोमन संस्कृति के प्रति लालसा थी और उन्होंने उसका अनुकरण करने की कोशिश की। रोमन लोग सुनहले बालों वाले जर्मनों के सौन्दर्य के प्रशंसक थे और धनी रोमन महिलाओं में अधिक से अधिक जर्मनों की तरह दिखने के लिए अपने बालों का रंग उड़ाने का फैशन चल गया था।

लेकिन रोमन और जर्मन जीवन-पद्धतियों में

बड़ी भिन्नताएँ थीं और जर्मन रोमन संस्कृति के जितने भी अधिक प्रशंसक रहे हों, वे अधिक महत्त्वपूर्ण रोमन पद्धतियों को अपनाने में असमर्थ रहे। एक तो. हर जर्मन कबीला किसी छोटे क्षेत्र पर ही अपना अधिकार मानने और रखने का अभ्यस्त रहा था। साम्राज्य में आने के बाद भी वे ऐसा ही करते रहे। दूसरी ओर, रोमन लोग सारे भूमध्यसागरीय जगत् को रोमन मानते चले आये थे। किसी भी जर्मन नेता ने सारे साम्राज्य की अखण्डता बनाये रखने का कभी प्रयास नहीं किया। अत: पश्चिम छोटे-छोटे खण्डों में बंट गया जिनमें से हर खण्ड का शासक कोई सरदार या राजा था।

दूसरे, जर्मन क्षेत्र में नगरों का उद्भव अभी नहीं हुआ था। उस समय तक यूनान और रोम के नगर-राज्य वे इकाइयाँ थे जिनके चारों ओर सभ्यताओं का जन्म हुआ था। जर्मन देहाती जीवन पसन्द करते थे और साम्राज्य के महान् नगरों का आकार घटने लगा। किसानों की झोपड़ियों से घिरा हुआ शक्तिशाली सरदार का गढ़ उसकी शक्ति और ज़िन्दगी का केन्द्र बन गया। इस महत्त्वपूर्ण परिवर्तन को याद रखना चाहिए।

तीसरे, जर्मन योद्धा जाति थी। योद्धा ही हमेशा अपने कबीलों के नेता हुआ करते थे। प्रतिद्वंद्वी सरदारों के बीच अक्सर लड़ाइयाँ हुआ करती थीं जिससे व्यापार और उत्पादन जैसे शांति के कामों के लिए बहुत कम समय बचता था। सुसंस्कृत रोमनों की विद्वत्ता और शिक्षा का योद्धा जर्मनों के लिए बहुत कम महत्त्व था, इसलिए उन्होंने उधर ध्यान नहीं दिया। जैसे-जैसे रोमन जीवन में जर्मन लोग अधिक प्रमुख भाग लेने लगे, प्राचीन रोमन संस्कृति का पतन होने लगा। दुनिया की प्रगति के लिए यह बात दु:खजनक थी।

चौथे, रोमनों द्वारा सावधानीपूर्वक बनाये गये कानून और न्यायालय जर्मनों की न्याय की परिकल्पना से बिलकुल मेल नहीं खाते थे। इस तरह रोमन न्याय-पद्धति का स्थान भोंडे कानूनों और शक्ति तथा अंधविश्वास पर आधारित न्याय-विधियों ने ले लिया। जर्मन नेताओं द्वारा निर्मित इन कानूनों को प्रयोग में लाने के लिए विभिन्न क्षेत्रों में तीन तरह से न्याय होता था। ये प्रकार थे—परीक्षा, शपथमुक्ति ("काम्पर्गेशन") और लड़ाई। इनमें से प्रथम में अभियुक्त को गरम पानी में बाँह डालने जैसी कोई कष्टदायक परीक्षा देनी पड़ती थी। यदि एक निश्चित समय, प्राय: तीन दिनों, के भीतर उसके हाथ पर फफोले नहीं पड़ते थे तो उसे निर्दोष समझा जाता था। फफोले पड़ जाने पर उसे अपराधी करार दिया जाता था। न्याय के दूसरे तरीके शपथमुक्ति में अभियुक्त को लगाये गये अभियोग के अपराध से निर्दोष होने की शपथ लेनी पड़ती थी। फिर उसे बहुत कुछ आज के चरित्र-साक्षियों जैसे ऐसे लोग लाने पड़ते थे जो शपथ लेकर यह कहते थे कि वह ऐसा आदमी नहीं है कि यह अपराध करे। यदि वह अपनी सच्चरित्रता प्रमाणित करनेवाले ऐसे साक्षी जुटा सकता था तो वह निरपराध था, अन्यथा उसे अपराधी करार दिया जाता था। लड़ाई द्वारा निर्णय में अभियुक्त और अभियोक्ता के बीच द्वंद्व होता था और जो जीत जाता था, वह सही होता था।

इन भोंडे मुकदमों में अपराधी करार दिये जाने के बाद दिया जाने वाला दण्ड बहुत ही शीघ्र कार्यान्वित, क्रूर और बीभत्स होता था। सबसे अधिक प्रचलित दण्ड था फाँसी द्वारा मृत्यु। हाथ या पाँव काट डालना दूसरा दण्ड था। इस कठोरता से अपराधों की संख्या में कमी आयी नहीं प्रतीत होती क्योंकि अराजकता और अपराध आम बात थी। सशस्त्र अंगरक्षकों के बिना एक गढ़ी से दूसरी गढ़ी को जाना सुरक्षित नहीं था और अंधेरे के बाद बाहर निकलने का मतलब था अपनी जान हथेली पर लेना। ये परिस्थितियाँ रोमन कानून के अन्तर्गत प्राप्त सुरक्षा से बिलकुल भिन्न थीं।

इन परिस्थितियों में जीवन कठिन और असुरक्षित था। पड़ोसियों के बीच अक्सर लड़ाइयाँ छिड़ जाया करती थीं। अज्ञान और अंधविश्वास की प्रचुरता थी। सड़कें बिना मरम्मत पड़ी थीं और पुल टूटे पड़े थे। नगर ध्वस्त पड़े थे। जिस भूमि पर रोमन खेती करते थे, उसकी ओर ध्यान नहीं दिया गया और वहाँ जंगल और झाड़ खड़े थे। पश्चिम यूरोपीय दुनिया की सभ्यता पतन की ओर थी।

१. ट्यूटन लोग कौन थे ? हमें उनके बारे में इतना अधिक कैसे ज्ञात है ?
२. जर्मनों के अपने मूल निवासस्थान में उनके जीवन का वर्णन करिए।
३. जर्मनों के लिए रोमन संस्कृति को अपनाना कठिन क्यों था ?
४. पश्चिमी यूरोप में मध्ययुग के प्रारम्भ में प्रचलित न्याय के तीन प्रकारों का वर्णन करिए।

फ्रैंकों द्वारा बड़े साम्राज्य का निर्माण

प्रारम्भिक फ्रैंक शासक—रोमन साम्राज्य में आने वाली सभी जर्मन जातियों में सबसे अधिक प्रगतिशील फ्रैंक लोग थे जिनका पाँचवीं और छठी शताब्दियों में गाल पर आधिपत्य था। उनका नेता क्लोविस (४६५?- ५११) सम्पूर्ण गाल, अर्थात् आज के फ्राँस, बेल्जियम, नीदरलैंड्स और पश्चिमी जर्मनी के अधिकांश भाग पर अधिकार जमाने में सफल हो गया। उसने ईसाई धर्म अपना लिया था और ईसाई धर्म फ्रैंकों के देश का, जिसे फ्राँस कहा जाने लगा, धर्म हो गया। पेरिस क्लोविस की राजधानी थी।

क्लोविस के उत्तराधिकारी इतने निर्बल थे कि उन्हें "कुछ-न-कर-राजे" कहा जाता था। राजभवन के प्रधान अधिकारी ने, जिसे राजभवन का मेयर कहा जाता था, इस स्थिति का लाभ उठा कर राजा की सत्ता हथिया ली और मेयर पद को कुलागत बना दिया। राजभवन के बाद के एक मेयर

बेटीमैन आर्काइव

क्लोविस के ईसाई बनने के साथ चर्च ने पहली बार इस साम्राज्य के ट्यूटन आक्रमणकारियों में से बहुत सारे ईसाई बनाए।

पेपिन द शार्ट (नाटे पेपिन) ने सोचा कि उसे सत्ता की दृष्टि से ही नहीं, नाम से भी राजा होना चाहिए। उसने पोप से इसके लिए समर्थन माँगा।

रोम के पतन के बाद उठने वाली सभ्यताओं में पैदा होने वाला पहला महान् शासक था शार्लमेन।

बेटीमैन आर्काइव

पोप इस बात से सहमत हो गया कि पेपिन राजा कहे जाने योग्य है। पोप के समर्थन के बदले में पेपिन ने पोप को मध्य इटली में एक क्षेत्र दिया जिस पर वह स्वयं शासन कर सकता था। इस भूमि को पोप की जागीर कहा जाता था। यह सैकड़ों सालों तक पोप के अधिकार में रही।

शार्लमेन—पेपिन का पुत्र शार्ले (अंग्रेजी में चार्ल्स) (७६८-८१४) फ्रैंकों का राजा हुआ। तमाम युद्धों में विजयों के फलस्वरूप उसने उत्तरी सागर से इटली के मध्य तक और अंध महासागर से एल्बे नदी तक का क्षेत्र अपने अधिकार में कर लिया। चूँकि उसने फ्रैंक साम्राज्य को विस्तृत और सुदृढ़ किया और अपनी प्रजा के जीवन में उन्नति की, इसलिए उसे चार्ल्स महान् कहा जाने लगा। चार्ल्स महान् के लिए लातीनी शब्द "शार्लमेन" था। उन दिनों शिक्षित लोग कागज-पत्रों में लातीनी भाषा का प्रयोग करते थे। इसलिए राजा का आधिकारिक नाम शार्लमेन था।

पूरे प्रारम्भिक मध्ययुग में शार्लमेन यूरोप का शायद सबसे अधिक असाधारण राजा था। उसने रोमन साम्राज्य के पतन और सोलहवीं शताब्दी के बीच सबसे बड़े साम्राज्य का निर्माण ही नहीं किया, इस पर शासन करने के उसके आदर्श भी उन्नत थे। उसकी महत्त्वाकांक्षा एक महान् ईसाई साम्राज्य की रचना करने की थी। वह धार्मिक आदमी था और चाहता था कि उसकी प्रजा भी धार्मिक हो। इस आदर्श को पूरा करने के लिए उपयोग में लाये गये उसके तरीके की हम प्रशंसा नहीं कर सकते, क्योंकि कहा जाता है कि उसने अपनी प्रजा को ईसाई होने, अन्यथा मृत्यु स्वीकार करने के लिए विवश किया। उसने बहुत से गिरजाघर बनवाये जिनमें से सबसे प्रसिद्ध गिरजाघर उसकी राजधानी आकेन में था।

शार्लमेन ने पोप से बहुत ही मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध रखा। आठवीं शती के उत्तरार्द्ध में पोप को, रोमन, जो उसे नापसन्द करते थे, बहुत कष्ट दे रहे थे। शार्लमेन उसकी सहायता के लिए रोम गया। पोप के शत्रु परास्त हुए और पोप ने उनके देश का कुछ भाग शार्लमेन को शासन करने के लिए दिया। अपने रक्षक का कार्य करने के पुरस्कार के निमित्त जब सन् ८०० में क्रिसमस के दिन शार्लमेन पोप के सामने झुका तो पोप ने उसके सिर पर मुकुट रख कर उसे चकित कर दिया। तुरन्त ही चर्च ने उसे रोमनों का सम्राट् घोषित कर दिया। वैसे शार्लमेन के साम्राज्य में बहुत से ऐसे देश थे जो

यदि शार्लमेन का साम्राज्य उसकी मृत्यु के बाद अखंडित बना रहता तो सम्भवतः पश्चिमी यूरोप ने संस्कृति और ज्ञान की ओर जितनी तेजी से प्रगति की उससे अधिक तेजी से प्रगति की होती। खंडित होने के साथ अव्यवस्था आयी।
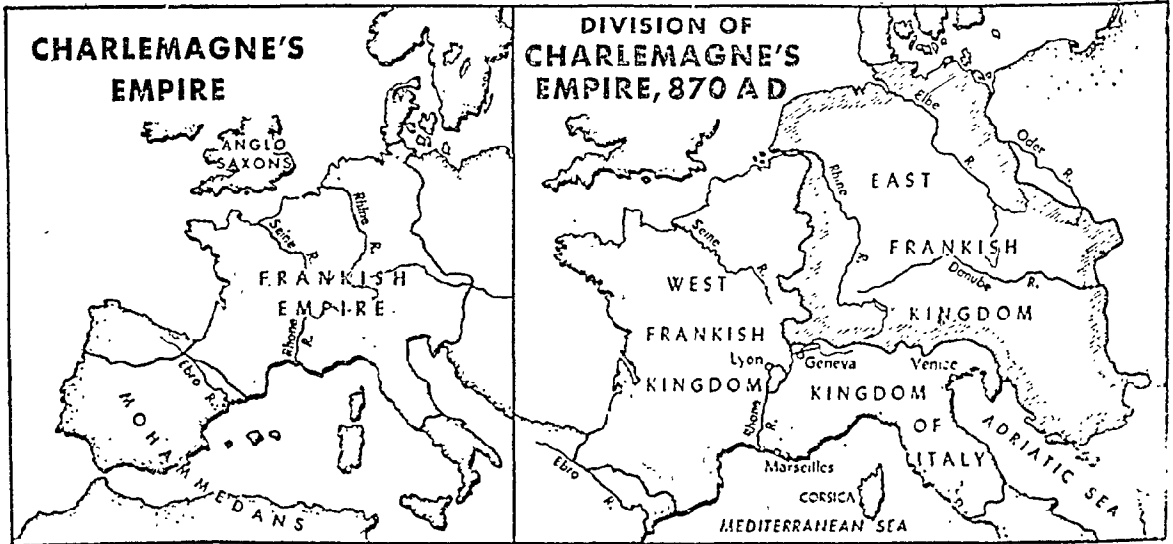
प्राचीन रोमन साम्राज्य में कभी नहीं रहे और प्राचीन रोमन साम्राज्य का सबसे बड़ा भाग उसके क्षेत्र के बाहर था लेकिन अंततः रोमन साम्राज्य का आदर्श, जो अभी भी लोगों के मन में प्रबल था, स्वरूप ग्रहण कर चुका था।

कुलीनवर्ग की उपाधियाँ—शार्लमेन का साम्राज्य इतना बड़ा था कि उस पर एक व्यक्ति अकेले शासन नहीं कर सकता था। इसके अतिरिक्त उसके समय में धन का अभाव था क्योंकि सोने और चाँदी के स्रोत बहुत कम थे। इसलिए शार्लमेन ने अपने युद्ध-अभियानों में सहायता देने वालों को बड़े-बड़े भूमिखण्ड दिये। इस पर उन्हें शासन करना था। इन भूमिखण्डों को काउंटी, डची और मार्च कहते थे और इनके शासक काउंट, ड्यूक और मार्क्विस कहलाते थे। इस तरह इन उपाधियों की उत्पत्ति हुई जो यूरोप में शताब्दियों से चली आ रही हैं। इस प्रथा के कारण लोगों के पास बड़ी-बड़ी भूसम्पत्तियाँ बन गयीं और किसान अपने भूमि-स्वामित्व से वंचित रह गये। इटली-जैसे यूरोप के कुछ देशों में छोटे किसानों के लिए भूमि की कमी आज तक समस्या बनी हुई है।

शिक्षा—शार्लमेन के शासनकाल में शिक्षा का पुनरुत्थान हुआ। वह स्वयं पढ़ना-लिखना सीखने का इच्छुक था। उसके समय के बहुत थोड़े से राजा लिखना-पढ़ना जानते थे। उसने बहुत देर में सीखना शुरू किया जब कि अपने विशाल साम्राज्य की देखभाल में ही उसका बहुत समय लगता था। वह केवल हस्ताक्षर करना सीख सका। लेकिन उसकी इच्छा थी कि उसकी प्रजा भी कुछ शिक्षा प्राप्त करे। अपने राजभवन में उसने अपने और अपने सामंतों के बच्चों के लिए स्कूल शुरू किया। उसने पादरियों के लिए स्वतन्त्र व्यक्तियों के सम्बन्ध में यह आदेश निकाला—"हर मठ और हर विहार में अपने स्कूल हों जहाँ बालकों को धार्मिक गीत, संगीतपद्धति, गायन, अंकगणित और व्याकरण की शिक्षा दी जाए, और उन्हें दी जाने वाली पुस्तकें त्रुटिरहित हों। शार्लमेन की शिक्षा-योजना

शोनफेल्ड कलेक्शन फ्राम थ्री लायन्स

शार्लमेन अपने महल के स्कूल का मुआयना कर रहा है। अध्यापक उसके पीछे खड़ा है और बच्चे अपने को काम में व्यस्त दिखाने की कोशिश कर रहे हैं।

इतनी सफल रही कि बाद में फ्रैंक लोग दूसरी जातियों के लिए अध्यापक भेज सके।

शार्लमेन के साम्राज्य का विभाजन—वैसे शार्लमेन की मृत्यु के बाद सभ्यता के उत्थान का यह क्रम रुक गया। उसके साम्राज्य के विस्तृत क्षेत्र के ऊपर उसके उत्तराधिकारियों में झगड़ा हो गया और सामंत शक्तिशाली हो गये। ८७० ई० तक उसका साम्राज्य पूर्व फ्रैंक राज्य, पश्चिमी फ्रैंक राज्य और इटली के राज्य में बँट गया। इस प्रकार आधुनिक जर्मनी, फ्रांस और इटली की नींव पड़ी।

पुनः अव्यवस्था—वैसे शार्लमेन के साम्राज्य के विभाजन से एकता-विरोधी शक्तियाँ रुकीं नहीं। इन तीनों में से हर भाग एक संयुक्त राष्ट्र नहीं था क्योंकि हर भाग में सामंतों के पास इतनी अधिक
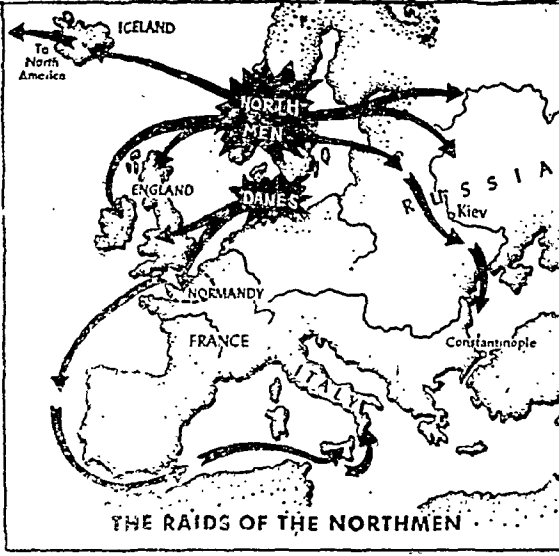
उत्तर के निवासियों (नार्थमैनों) के हमले।

सैनिक और राजनैतिक शक्ति थी कि वास्तविक एकता सम्भव नहीं थी। इसके अतिरिक्त राज्यों पर नये-नये आक्रमण हो रहे थे। हंगरी के मैदानों से वंजारे स्लाव लोगों ने पूर्वी फ्रैंक राज्य पर अनेक आक्रमण किये। स्पेन से मूर लोग जहाजों में दक्षिणी फ्रांस और इटली पर आक्रमण करते हुए आये। लेकिन सबसे सफल आक्रामक उत्तरवासी थे जो सबसे क्रूर और सबसे विनाशकारी थे।

उत्तरवासी (नौर्थमैन)—उत्तरवासी लोग स्कैंडिनेविया और डेनमार्क में रहते थे। वे लोग सुयोग्य नाविक थे और अपनी लम्बी नावों में दूर तक नदियों में जाते थे और नगरों और मठों को लूटते हुए, कभी-कभी उन्हें जलाते हुए, अपनी लूट का माल लेकर वापस घर लौट आते थे। अगाध समुद्र में नौकानयन करने में भी वे समान रूप से कुशल थे। उनमें से कुछ लोग आइसलैंड और ग्रीनलैंड में जाकर वसे और उनमें से कुछ लोग सौभाग्यवान लीफ ("लीफ द लकी") के नेतृत्व में उत्तरी अमरीका के किनारे तक गये। यह घटना कोलम्बस से पाँच सौ वर्ष पहले की है किन्तु उस समय तक दुनिया एक नये महाद्वीप के अन्वेषण का लाभ उठाने के लिए तत्पर नहीं थी। कुछ उत्तरवासी यूरोप के किनारे-किनारे चक्कर लगाते हुए भूमध्यसागर में पहुँचे और इटली के दक्षिणी भाग पर अधिकार कर लिया। एक दूसरे दल ने स्थल-मार्ग से जाकर रूस में राज्य की स्थापना की। एक दल ने इंगलैंड पर आक्रमण किया और अंत में वहाँ की गद्दी पर एक डेन को राजा बनाकर बिठाया। एक और दूसरे दल ने पश्चिमी फ्रैंक राज्य पर आक्रमण किया। आक्रमण का प्रतिरोध करने में असमर्थ होकर राजा ने उनके नेता को पश्चिमोत्तर फ्रांस में भूमि दी। इसे नार्मण्डी की डची कहा गया और इसके शासक को ड्यूक की उपाधि दी गयी।

आश्चर्य नहीं कि राजाओं को अपने राज्यों पर नियंत्रण रखना कठिन लगा। राज्यों के बीच यात्रा के लिए न तो उनके पास सड़कें थीं और न ही धन था जिससे उन्हें सेवाओं का मूल्य भूमि देकर चुकाना पड़ता था। सामन्तों के बीच प्रतिद्वन्द्विता की लड़ाइयों और बाहरी आक्रमणों से राजाओं की परेशानी बढ़ती गयी। इस तरह पूरे यूरोप में नवीं शताब्दी में विभ्रम फैला हुआ था।

१. रोमन साम्राज्य में फ्रैंक लोग कब और कहाँ बसे?
२. फ्रैंक इतिहास में क्लोविस का और पेपिन का क्या महत्त्व था?
३. उनके महत्तम शासक ने ईसाई चर्च के प्रति अपना पक्षपात किस तरह प्रदर्शित किया?
४. शार्लमेन के सिंहासनारोहण की कथा बतलाइए।
५. शार्लमेन ने अपने साम्राज्य की शासन-व्यवस्था किस प्रकार की थी? स्पष्ट करिए।
६. शार्लमेन ने शिक्षा की उन्नति के लिए क्या प्रयत्न किए?
७. शार्लमेन की मृत्यु के पश्चात् उसका साम्राज्य किस प्रकार विभाजित हुआ?
८. शार्लमेन के उत्तराधिकारियों को बर्बरों के साथ कौन-कौन से संघर्ष करने पड़े?
९. नार्मण्डी का उद्भव किस प्रकार हुआ?
१०. उत्तरवासी और किन-किन देशों में जाकर बसे?

विचार-विमर्श के लिए प्रश्न

१. जर्मनों में ऐसे कौन से गुण थे जिनसे वे सरलता से पश्चिमी रोमन साम्राज्य को विनष्ट कर सके।

२. जर्मन सरकार और मध्यकालीन राजा योद्धा थे। अमरीका में सेना का प्रधान सेनापति भी सैनिक नहीं, असैनिक होता है? इसको स्पष्ट करिए।

३. मध्यकालीन न्याय के तीन प्रकारों में से किससे अधिक न्याय की गुंजाइश थी? क्यों?

४. आपके देश की सरकार प्रतिवर्ष सुधार-गृहों और जेलों पर बड़ी धनराशि खर्च करती है। मध्ययुग में अपराधियों से किये जाने वाले व्यवहार से यह क्यों अच्छा है?

५. हमारे संविधान में धर्म और राज्य के बीच किसी सम्बन्ध को स्थान नहीं मिला। मध्ययुग में चर्च और राज्य क्यों एक दूसरे का सीमातिक्रमण करते थे।

६. पोप ने शार्लमेन को "रोमनों के सम्राट्" पद से अभिषिक्त किया। मध्ययुग की जनता के लिए रोमन साम्राज्य में किस बात की कमी थी कि पोप के मन में रोमन साम्राज्य की पुनःस्थापना की लालसा उठी।

७. शार्लमेन के समय में स्कूलों में पढ़ाये जाने वाले विषय आज के जीवन के लिए क्यों पर्याप्त नहीं होते? आज पढ़ाये जाने वाले कौन से विषय मध्यकालीन समाज में बिलकुल अनुपयोगी हुए होते?

८. आपके विचार में शार्लमेन की किन उपलब्धियों के लिए उसे "महान्" कहा जाना चाहिए।

इतिहास के उपकरणों का प्रयोग

एक. नाम, तिथियाँ और स्थान :

१. निम्नलिखित की व्याख्या करिए।

शपथमुक्ति; काउंट; कुछ-न-कर-राजे; ड्यूक; मार्क्विस; अग्नि-परीक्षा; स्लाव; पोपों के लौकिक अधिकार; ट्यूटन जातियाँ; लड़ाई द्वारा निर्णय।

२. ये तिथियाँ, किस लिए उल्लेखनीय हैं? ८००; ८७०।

३. मानचित्र में इन स्थानों को ढूँढिए :—

आकेन; डेनमार्क; पूर्वी फ्रैंक राज्य; एलबे नदी; फ्रैंक साम्राज्य; गाल; हंगरी; इटली; नार्मण्डी; आडर नदी; पोप की जागीरें; राइन नदी; रूस; स्कैंडिनेविया; विस्टुला नदी।

यूरोप के मानचित्र पर उत्तरवासियों द्वारा नवीं और ग्यारहवीं शताब्दी के बीच अपने साम्राज्य-विस्तार में अधिकार किया गया क्षेत्र दिखलाइए।

४. ये लोग कौन थे :—

शार्लमेन; क्लोविस; पेपिन द शार्ट; द लकी: टैसिटस।

दो. क्या आप अपने विचार स्पष्ट प्रकट कर सकते हैं?

१. जर्मन औरतों के समान दिखने के लिए औरतों से बालों को रंग रहित करवाने का आग्रह करते हुए ४०० ई० के लगभग के एक रोमन नारी सौंदर्य प्रसाधनगृह का विज्ञापन लिखिए। यदि आप चाहें तो विज्ञापन को चित्र से सुसज्जित कर सकते हैं।

२. टामस कोस्ता की पुस्तक "द कंकरर्स" में पृष्ठ १०५-१०६ पर परीक्षा द्वारा न्याय करने का एक काल्पनिक वृत्तान्त दिया हुआ है। इसे पढ़कर किसी दूसरे प्रकार के मध्ययुगीन न्याय का विवरण लिखिए।

तीन. इतिहास और कलाएं

१. क्या कक्षा का कोई बालक वाइकिंग नाव का नमूना बना सकता है?

२. जर्मनों की पोशाक रोमन लोगों से बिलकुल अलग थी। क्या कोई लड़की गुड़िया को जर्मन पोशाक पहनाकर कक्षा में प्रदर्शित करेगी?

३. जर्मनों की दंतकथाएँ रोचक थीं। शताब्दियों बाद महान् जर्मन संगीतकार वैगनर ने उनके आधार पर आपेरों की रचना की। डोलेरेस वेकन की पुस्तक "आपेराज एवरी चाइल्ड शुड नो" में राइनगोल्ड, वाल्किरीज या सिगफ्रीड की कहानी

ढूंढ़िए। कक्षा में वह कहानी सुनाकर रिकार्ड पर ओपेरा का कुछ भाग उन्हें सुनाइए।

चार. रुचिकर शोध

१. मध्ययुग की जनता प्रायः अपने राजाओं के लिए विशेष नामों का प्रयोग करती थी। उदाहरण के लिए, पेपिन द शार्ट (या नाटा पेपिन)। मध्यकालीन इतिहास की किसी पुस्तक से कुछ विशेष नामों के कुछ और उदाहरण ढूँढिए। अपनी सूची को ब्लैकबोर्ड पर लिखिए।

२. अंग्रेजी में सप्ताह के दिनों के नाम जर्मन देवताओं के नामों पर आधारित हैं। सप्ताह के हर दिन के नाम की उत्पत्ति का पता लगाइए।

पाँच. चित्र अध्ययन

पृष्ठ १६७ पर चित्र में प्रदर्शित शार्लमेन का स्कूल किन-किन बातों में आपके स्कूल से भिन्न था?

१४ पूर्व की घटनाओं का पश्चिमी यूरोप पर प्रभाव

अब हम यह देखें कि जिन दिनों पश्चिमी यूरोप पर नयी शक्तियों का प्रभाव पड़ रहा था, उन दिनों पूर्वी रोमन साम्राज्य में क्या घटनाएँ घट रही थीं। पूर्वी साम्राज्य आक्रमणों के बावजूद बचा हुआ था और रोम के पतन के हजार साल बाद, अर्थात् १४५३ ई०, तक बचा रहा।

पूर्व पर जस्टिनियन का शासन

इस लम्बी अवधि में जस्टिनियन पूर्वी रोमन साम्राज्य का योग्यतम शासक रहा। हम यह देख चुके हैं कि वह कुछ समय के लिए पश्चिम के कुछ हिस्सों को पूर्वी साम्राज्य के साथ पुनः संयुक्त करने में सफल हुआ और उसी के निर्देशन में रोमन कानून को संहिता का रूप दिया गया। जस्टिनियन को व्यवस्था से प्रेम था और उसका दिमाग किसी भी बात के विस्तृत पहलुओं को ग्रहण कर सकता था। वह ईसाई-धर्म का प्रचारक-रक्षक भी था। ५२७ ई० में उसने महान् शासक बनने का निश्चय किया और इसमें सफल हुआ।

अपना कार्यक्रम बनाने में जस्टिनियन ने पश्चिमी रोमन सम्राटों की परम्परा का अनुसरण किया। साम्राज्य की सीमाओं पर किलेबन्दियाँ की गयीं। अत्यंत महिमामय शैली में नगरों का निर्माण हुआ। इन्हीं नगरों में उसकी राजधानी कुस्तुन्तुनिया भी थी। निर्माणों में सम्भवतः सबसे अधिक प्रभावप्रद भवन था संत सोफिया का गिरजाघर, जिसके केन्द्रीय गुम्बद का घेरा १०७ फुट था और यह फर्श से १७९ फुट ऊँचा था। इसकी दीवालों पर नाना रंगों के पत्थर के टुकड़ों को जोड़ बैठा कर बनाये गये चमकदार मोजाइक थे।

संत सोफिया के गिरजाघर से वास्तुकला में एक शैली की शुरूआत हुई जिसे अब बाइजैंटाइन शैली कहा जाता है। यह शैली इटली में भी शुरू की गयी और वहाँ प्रायः इसका प्रयोग हुआ। जस्टिनियन की विधिसंहिता और उसके द्वारा निर्मित गौरवशाली भवन उसकी मृत्यु के शताब्दियों बाद तक पूर्वी और पश्चिमी भूमध्यसागरीय देशों को प्रभावित करते रहे।

जस्टिनियन के उत्तराधिकारी—जस्टिनियन के उत्तराधिकारी उच्च कोटि के सम्राट् नहीं हुए। वे कुस्तुन्तुनिया में बैठकर, जो बास्फोरस की खाड़ी के यूरोपीय भाग पर है, निरन्तर घटते हुए साम्राज्य पर शासन करते रहे। सातवीं शताब्दी में अरबों ने साम्राज्य के एक बहुत बड़े भाग पर, जो एशिया में था, अधिकार कर लिया। स्लाव लोग साम्राज्य के यूरोपीय भाग में आगे बढ़ आये और बालकन प्रायद्वीप में बस गये। ग्यारहवीं शताब्दी में मध्य एशिया की एक बर्बर जाति सेलजुक तुर्क, दक्षिण-पश्चिमी एशिया में बढ़ आयी और उसने साम्राज्य के अवशिष्ट सारे एशियायी भाग पर अधिकार जमा लिया।

दुर्बल होने के बावजूद पूर्वीय साम्राज्य का पश्चिमी यूरोप के विकास में महत्त्वपूर्ण भाग रहा। एशियायी आक्रमणकारियों और पश्चिम के बीच यह रक्षक की भूमिका अदा करता रहा जिससे पश्चिम को अपनी सभ्यता का विकास करने का अवसर मिल गया। पूर्वीय साम्राज्य की भाषा यूनानी थी। अतः प्राचीन यूनान का साहित्य और ज्ञान जो अन्यथा खत्म हो गया होता, वहाँ बचा रहा। जस्टिनियन के द्वारा संहिता का रूप पाने वाले रोमन कानून भी वहाँ चलते रहे। बाद में बर्बर जर्मनों के आधिपत्य में पतनग्रस्त पश्चिम को यह सम्पूर्ण संस्कृति प्राप्त हो गयी।

अरब में एक नये धर्म का अभ्युदय

जिस समय पूर्वीय साम्राज्य पूर्वी भूमध्यसागरीय क्षेत्र में आक्रमणों से अपनी रक्षा करने में लगा हुआ था, उन्हीं दिनों विशाल अरब प्रायद्वीप के मक्का नगर में एक नये धर्म का प्रादुर्भाव हो रहा था। यह नया धर्म था इस्लाम मत। पैगम्बर मुहम्मद के अरब अनुयायियों के बीच इसका उद्भव हुआ।

अरब प्रायद्वीप लाल सागर और फारस की खाड़ी के बीच पड़ता है। वह संयुक्त राज्य अमरीका के एक-तिहाई भाग के बराबर है। इसका अधिकांश क्षेत्र रेगिस्तानी और बंजर है। आज की ही तरह मुहम्मद के समय में भी यह वद्दू जाति के बंजारे लोगों द्वारा विरल रूप से बसा हुआ था। ये लोग अपने पशु लिये पानी वाले स्थानों की तलाश में एक जगह से दूसरी जगह घूमा करते थे। लाल सागर के तट पर कुछ उपजाऊ नखलिस्तान थे। उसी किनारे पर व्यापार भी चलता था। इस तट के निकट ही मक्का और मदीना के नगर विकसित हुए। मुहम्मद के समय अरब में कोई केन्द्रीय शासन नहीं था। शान्तिकाल में हर परिवार पूर्णतः स्वायत्त होता था पर युद्धकाल में हर कबीले का सरदार नेता हो जाता था।

मुहम्मद गरीब घर में पैदा हुए थे और बचपन में ही मातृ-पितृ-विहीन हो गये थे। बड़े होकर वे एक धनी विधवा के यहाँ काम करने लगे जिससे उन्होंने बाद में विवाह कर लिया। उन्हें लगता था कि उन्हें अपने जातिबन्धुओं को शिक्षा देने के लिए ईश्वर के सन्देश सुनाई देते हैं—

"अपने परमात्मा का नाम स्मरण करो जिसने खून से मनुष्य की रचना की।"

इन संदेशों से मार्गदर्शन पाकर मुहम्मद के मन में एक नये धर्म का प्रवर्त्तन करने की प्रेरणा हुई। वैसे यह धर्म पूरी तरह नया नहीं था। रेगिस्तान पार कर वे ईसाइयों, यहूदियों और बंजारे मूर्ति-पूजकों के सम्पर्क में आये। इन सभी जातियों से उन्हें अपने नये धर्म के लिए विचार मिले। पहले उन्होंने मक्का के निवासियों में अपने धर्म का प्रचार शुरू किया पर मक्कावासियों ने उनकी शिक्षाओं पर विश्वास करना अस्वीकार कर दिया और उन्हें मार डालने का षड्यंत्र करने लगे। मुहम्मद को षड्यंत्र के बारे में ज्ञात हो गया और वे मक्का छोड़ कर मदीना चले गये। ६२२ ई० में हुई इस यात्रा

हज़रत मुहम्मद पढ़ना-लिखना नहीं जानते थे, लेकिन आज उनके अनुयायी करोड़ों की संख्या में हैं।

शोनफेल्ड कलेक्शन फ्राम थ्री लायन्स

को ही हिज्र कहते हैं और तब से ही इस नये धर्म की शुरुआत मानी जाती है। सन् ६२२ से ही मुसलमानी पंचांग का हिजरी सन् शुरू होता है। बाद में मुहम्मद ने अपने अनुयायियों के साथ लौट कर मक्का नगर पर विजय प्राप्त की और उसे अपने धर्म का पवित्र तीर्थ बनाया। उनके अनुयायियों ने कुरान नामक पुस्तक में उनके वचनों
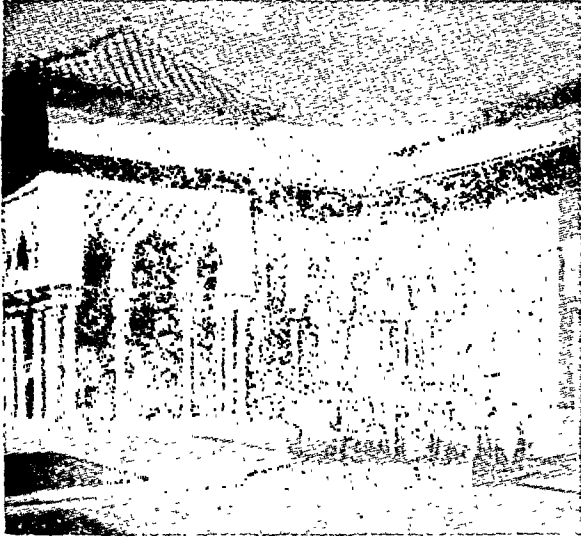
टी० डब्ल्यू० ए०
स्पेन के ग्रैनैडा का अलहम्ब्रा महल, यूरोप में मूर स्थापत्य का सबसे सुन्दर नमूना है।

और शिक्षाओं का संग्रह किया। यह पुस्तक ही मुसलमानों की बाइबिल है।

मुहम्मद की शिक्षाओं के अनुसार ईश्वर एक है और मुहम्मद उसके सबसे बड़े पैगम्बर हैं। उनके अनुसार कभी कयामत का दिन आयेगा, सब मुर्दे जीवित होंगे और उनका न्याय होगा। हर वफादार मुसलमान को रोज पाँच बार नमाज पढ़नी चाहिए, और गरीबों को दान देना चाहिए। जीवन में कम से कम एक बार मक्का की तीर्थयात्रा (हज) करनी चाहिए। और अपनी देह स्वच्छ रखनी चाहिए।

इस्लाम मत का प्रसार—नये धर्म का प्रसार अरब में बड़ी तेजी से हुआ। फिर अरबों ने एक होकर अपने धर्म के और आगे प्रसार के लिए विजय अभियान करना और धन लूटना शुरू किया। इन्होंने पूर्वी भूमध्यसागरीय देशों, सीरिया, फिलिस्तीन, क्रीट, साइप्रस और मिस्र को कमजोर पूर्वीय रोमन साम्राज्य से बलपूर्वक छीन लिया। मुहम्मद की शिक्षा थी—"रण-ताप का डर क्या? नरक और अधिक उत्तप्त है। इसके बाद स्वर्ग मिलेगा।" इसलिए मुसलमान उत्तरी अफ्रीका पार करते हुए स्पेन पहुँचे और वहाँ से पिरेनीज पार कर फ्रांस में घुस गये जहाँ मुकाबला होने पर ये आगे नहीं बढ़ पाये। ७३२ में चार्ल्स मार्टेल के नेतृत्व में फ्रैंकों ने मध्य फ्रांस में तूर्स की लड़ाई में अरबों का मुँह मोड़ दिया और उन्हें स्पेन में धकेल दिया।

अरब पूर्व की ओर भी बढ़े। उन्होंने फारस पर अधिकार किया और बोखारा तथा समरकंद के प्राचीन नगरों पर कब्जा जमा लिया। उन्होंने सिंधु नदी की घाटी पर विजय प्राप्त की और चीन की सीमा तक पहुँच गये। अपनी विजयों के फलस्वरूप चीन के काफिला मार्गों पर उनका नियंत्रण हो गया। ७५० ई० में वे अपनी राजधानी बगदाद में ले आये। तब तक अरब साम्राज्य में पश्चिम में स्पेन से लेकर उत्तरी अफ्रीका होते हुए चीन तक और भारत तक का कुछ क्षेत्र आ चुका था।

मूर संस्कृति—स्पेन में बस जानेवाले अरब मूर कहलाते थे। पूर्व में अरबों ने अपने द्वारा पराजित सुसंस्कृत जातियों से बहुत कुछ सीखा। पर वे नकलची ही नहीं थे। उन्होंने अपनी निजी संस्कृति का विकास किया। यह सभ्यता पश्चिम की ओर उत्तरी अफ्रीका भर में और स्पेन में फैली हुई थी। अतएव स्पेनी या मूर सभ्यता जर्मन जाति की, जिसका शेष पश्चिमी यूरोप पर अधिकार था, सभ्यता से बहुत अधिक उन्नत थी। अरबों ने स्पेन में ० सहित १, २, ३, ४, ५, ६ आदि अंकों की शुरूआत की। पढ़ने-लिखने की दृष्टि से रोमन अंकों की तुलना में ये अधिक सरल थे। अरब गणितज्ञों ने यह पद्धति भारत से सीखी थी। अरब लोग अपने साथ नयी वस्तुएँ भी लाये जिनके नाम यूरोपीय भाषाओं में आ गये। उदाहरण के लिए काटन (कपास), सिरप (शर्बत), अलकोहल (मदिरा), सोफा, काफी और मसलिन (मलमल) आदि शब्द

अरबी शब्दों से बने हैं। वे आड़ू, खुबानी, नींबू, संतरे आदि नये फल भी लाये। स्पेन में सुन्दर कालीन, टैपेस्ट्रियाँ और कपड़े बनाये जाते थे। मूर बीजगणित का भी उपयोग करते थे और उन्हें औषधि शास्त्र, भूगोल, तथा ज्योतिर्विज्ञान का बहुत अधिक और थोड़ा सा रसायनशास्त्र का भी ज्ञान था। उनके द्वारा स्थापित विश्वविद्यालयों की प्रतिष्ठा ऐसी थी कि कुछ ईसाइयों ने भी शिक्षा प्राप्त करने के लिये अपने बच्चों को वहाँ भेजा। मूरों के शासन में स्पेन ज्ञान में सारे यूरोप से आगे बढ़ा हुआ था।

मूरों की वास्तुकला पर पूर्व की बाइजैण्टाइन वास्तुकला का प्रभाव था। उनके पूजागृह मस्जिद कहलाते थे। मस्जिद एक बड़े आँगन को घेरे बनी होती थी और इसकी मीनारों से मोअज्जिन मुसलमानों को नमाज़ के लिए अज़ान देता था। मनुष्यों या पशुओं की मूर्तियाँ या प्रतिकृतियाँ मस्जिद में निषिद्ध थीं। सज्जा के लिए ज्यामितीय आकारों में बहुरंगे पत्थरों का मोज़ेइक प्रयोग किया जाता था। भीतर खम्भे और गोलाकार मेहराबें होती थीं। कार्दोना और सेविले की मस्जिदों जैसी सुन्दर मस्जिदों और अलहम्ब्रा जैसे महलों से बाद की शताब्दियों में वास्तुशिल्पियों ने बहुत प्रेरणा प्राप्त की।

व्यापार—इस्लाम का प्रसार करने के साथ-साथ अरबों ने मुस्लिम जगत् के विभिन्न भागों के बीच निकट व्यापारिक सम्बन्ध भी स्थापित किया। पूर्वी भूमध्यसागर से जहाज इटली और स्पेन के बन्दरगाहों में आते थे। नील नदी के मुहाने से व्यापारिक कारवाँ लकड़ी, फल और अन्य सामान लेने के लिए मध्य अफ्रीका तक जाते थे। अरबों ने भारत के पश्चिमी तट पर व्यापारिक केन्द्र स्थापित
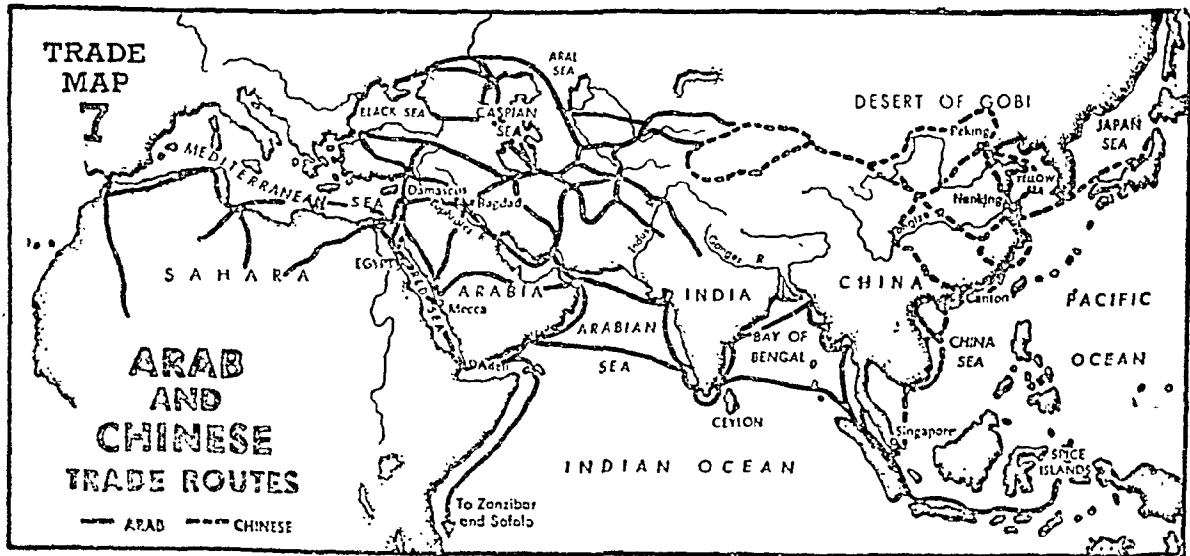
व्यापार नक्शा ७—अरब और चीन के व्यापारिक मार्ग

किये और वे चीन और जापान तक माल ले जाते थे। अफ्रीका के पूर्वी तट पर अरब जहाज चला करते थे। भारत और पूर्वी भूमध्यसागर का पश्चिम के साथ लाभदायक व्यापार बारहवीं शताब्दी तक अरबों के हाथ में रहा।

बगदाद—मुस्लिम सभ्यता का दूसरा केन्द्र था बगदाद जो प्राचीन बैबिलोनिया के ध्वंसावशेषों से कुछ ही दूरी पर दजला नदी के किनारे बसा हुआ था। बगदाद में विविध प्रकार के व्यवसाय होते थे और दुनिया के बहुत से देशों के लोग वहाँ रहते थे। यहूदियों, फारसियों, ईसाइयों, तुर्कों और अरबों, इन सब की बस्तियाँ यहाँ थीं। भीड़-भरी सड़कों के दोनों ओर सुगन्धित द्रव्य, रेशम, कपास, टोकरियाँ, चमड़े के सामान और बहुत सी दूसरी वस्तुएँ बेचने वाली सजी-धजी दूकानें थीं। गुलामों और घोड़ों का भी व्यापार होता था। विश्व-व्यापार के केन्द्र के रूप में बगदाद कुस्तुन्तुनिया का प्रतिद्वंद्वी था।

वैसे यह नहीं सोचना चाहिए कि सारा का सारा मुसलमान जगत् समृद्ध और अत्यंत उन्नत था। बगदाद, स्पेन, सीरिया और मिस्र के दूर-दूर स्थित सभ्यता केन्द्रों के बीच आक्रमणकारी अरबों की सेनाओं द्वारा विनष्ट कर दिये गये विशाल क्षेत्र थे। संस्कृति के उज्ज्वल केन्द्र आसपास के अवसादग्रस्त देहातों के बिलकुल विपरीत थे। फिर भी इन केन्द्रों की संस्कृति आस-पास के लोगों में धीरे-धीरे प्रसारित होती रही।

१. अरब की स्थिति देखिए और उसके भूगोल का वर्णन करिए।
२. मुहम्मद की जीवन-कथा बतलाइए।
३. मुसलमानों के लिए हिज्र का क्या महत्त्व है?
४. मुहम्मद की प्राचीन शिक्षाएँ क्या थीं?
५. चार्ल्स मार्टेल कौन था?
६. अरब के मुसलमानों ने किन-किन देशों पर विजय प्राप्त की?
७. स्पेन की संस्कृति को मुसलमानों की देनों की एक सूची बनाइए।
८. एक मस्जिद का वर्णन करिए।
९. मध्ययुग में अरबों के व्यापार का वर्णन करिए।
१०. बगदाद नगर का वर्णन करिए।

पुराने मास्को के रेडस्क्वायर के दाहिनी ओर क्रेमलिन का निर्माण ईवान तृतीय ने कराया था। यह ज़ारों का निवास था। सेण्ट बैसिल का मध्यकालीन कैथेड्रल अपने गोलाकार के कारण शैली की दृष्टि से बाइज़ैण्टाइन और पूर्वी दोनों का मिश्रण है।

सोवफोटो
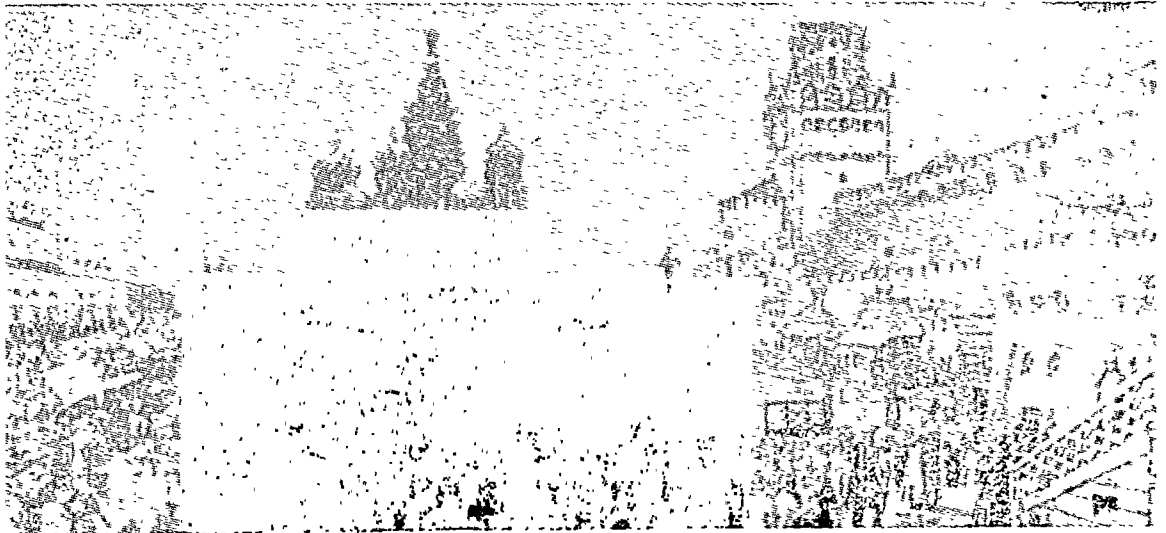
उत्तर मध्ययुग में रूस का अभ्युदय

अपने विस्तृत व्यापार के दौरान मुसलमान सौदागर उत्तर में स्लाव लोगों के सम्पर्क में आये। आज का रूस उस समय उत्तरी ध्रुव महासागर से लेकर दक्षिण की तरफ उपजाऊ घास के मैदानों और कैस्पियन तथा कालासागर तक फैला हुआ विशाल दलदली मैदान था। पूर्व की तरफ भी मैदान फैले हुए थे जिनके बीच यूराल की छोटी पहाड़ियाँ थीं। रूस में नौकानयन के उपयुक्त बहुत सी नदियाँ थीं जिनमें से कुछ उत्तर की ओर जाकर आर्कटिक सागर में और कुछ दक्षिण में कैस्पियन और काला सागर में गिरती थीं। मैदानों में चरवाहों और कृषिकों की विरल बस्तियाँ थीं।

उत्तरवासी (नौर्थमैन)—नवीं शताब्दी में उत्तरवासियों की स्वीड नामक जाति, नदियों के किनारे-किनारे मैदान में चली आयी। वहाँ राज्य की स्थापना करने वाला पहला उत्तरवासी रुरिक था जिसने अपने को उत्तर का राजा घोषित किया। ८५० ई० तक और आगे दक्षिण में एक ऐसा ही राज्य कीफ़ में स्थापित हो चुका था। बाद में दोनों राज्य संयुक्त हुए और उनका क्षेत्र मास्को सहित और आगे पूर्व तक विस्तृत हो गया। रूस के मूलनिवासियों के साथ इनके विवाह के अत्यन्त घनिष्ठ सम्बन्ध होते रहे जिससे अंत में उत्तरवासियों की अलग संज्ञा समाप्त हो गयी।

पूर्वी साम्राज्य का प्रभाव—९८४ ई० में पूर्वीय रोमन सम्राट् की पुत्री से रूस के राजा ने विवाह किया। साम्राज्य के साथ कुछ दिनों से व्यापारिक सम्बन्ध चल रहे थे। ९११ ई० में ही एक व्यापारिक संधि हो चुकी थी। साम्राज्य का धर्म "ग्रीक आर्थोडाक्स" (यूनानी प्राचीन ईसाइयत) भी रूस में प्रवेश पा चुका था। तब से रूस पर धर्म, व्यापार और सभ्यता के मसलों में पूर्वी साम्राज्य का बहुत असर रहा और पश्चिमी यूरोप से इसका बहुत कम सम्बन्ध रहा।

तातार—दो शताब्दियों तक रूस इसी दिशा में प्रगति करता रहा। तेरहवीं शती के प्रारम्भ में मंगोलिया से बंजारे घुड़सवारों का एक विशाल दल देश पर टूट पड़ा। ये लोग तातार या मंगोल कहे जाते थे और एशिया से पहले आये हूणों से सम्बन्धित थे। तातारों ने बहुत दूर तक फैले हुए विशाल साम्राज्य की स्थापना की। निर्दय तरीकों से उन्होंने चीन और मंगोलिया पर अधिकार कर लिया था और अब रूस के बिखरे हुए राज्यों और पश्चिम में पोलैंड तक उनका अधिकार हो गया था। वहाँ से वे दक्षिण की ओर बढ़ने लगे। अंत में मिस्र के मुसलमान शासक ने सीरिया में इनका सफलतापूर्वक प्रतिरोध किया। इनका विशाल साम्राज्य नोवोगोरोद से लेकर फारस की खाड़ी तक, डान नदी से लेकर पूर्व में प्रशान्त महासागर तक फैला हुआ था। तातार साम्राज्य के विस्तार में चंगेज़ खाँ का प्रधान हाथ था।

मंगोल आक्रमण का रूस पर बड़ा असर पड़ा। पूर्वीय पोशाक, भोजन और प्रथाएँ चलने लगीं। मंगोलों ने रूसियों के धर्म में दखल न दिया, पर उन्हें चंगेजखाँ की फौज में काम करने के लिए मजबूर किया। मंगोलों ने रूसियों पर भारी कर भी लगाए। अधिकतर रूस बहुत वर्षों तक पूर्वीय प्रभाव में रहा।

लट्ठों का मकान, अपनी पटरियों पर खड़ी गाड़ी और एक देहाती कुआँ, ये किसी मध्यकालीन रूसी बस्ती की अपनी विशेषताएं थीं।

बैटमैन आर्काइव
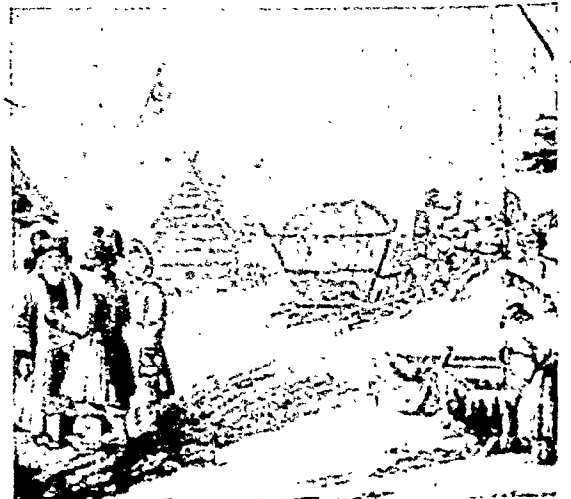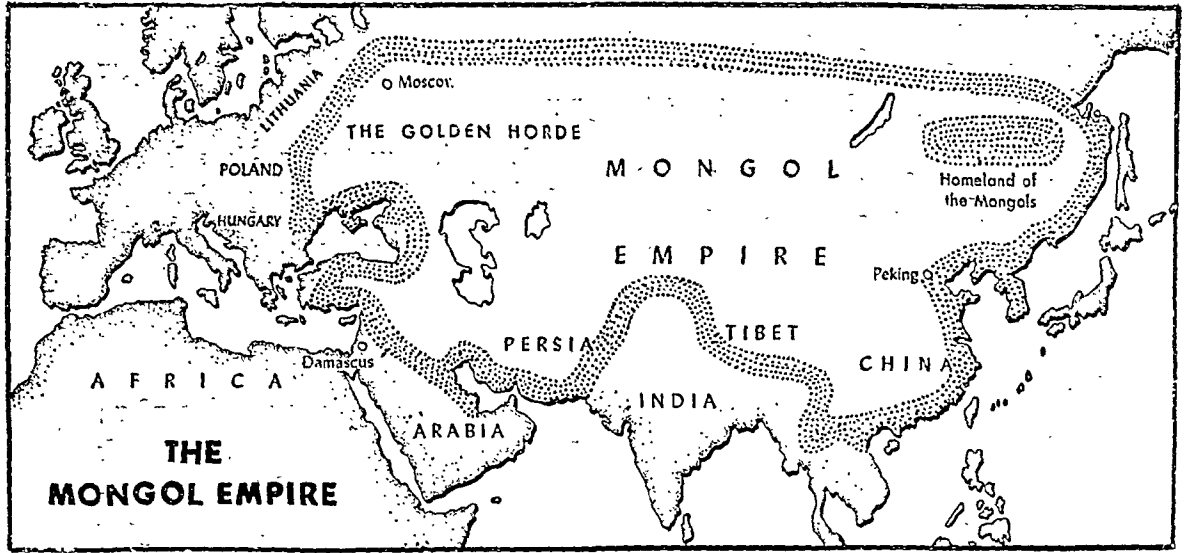
ईवान की मृत्यु के कुछ वर्ष बाद मंगोलों ने अपना आधिपत्य भारत तक फैला लिया। एक महान् मंगोल शासक अकबर ने भारत पर ५० वर्ष से अधिक राज्य किया। कोलम्बस द्वारा अमरीका की खोज के थोड़े अरसे बाद यह घटना घटी।

ईवान तृतीय—खाँ लोगों की ताकत धीरे-धीरे कम हुई और रूसी रजवाड़े अधिक से अधिक शक्ति अपने हाथों में संचित करते रहे। इधर-उधर स्वतन्त्र डचियाँ बनने लगीं। अंत में मास्को की डची के शासक ईवान तृतीय (१४६२-१५०५) ने कई छोटी डचियों को संयुक्त किया और 'सभी रूसियों का नरेश' की उपाधि धारण कर अपने को राजा घोषित किया। उसने क्रेमलिन नामक मास्को के राजभवन को पुनर्निमित करवाया।

ईवान महत्त्वाकांक्षी था। वह कुस्तुंतुनिया का, जो एक तरह से "दूसरा रोम" था और इटली के प्रथम रोम की शक्ति और संस्कृति का उत्तराधिकारी था, स्थान ग्रहण करने के लिए मास्को को "तीसरा रोम" बनाना चाहता था। ईवान आर्थोडाक्स चर्च का प्रबल समर्थक और रोम के पोप का सशक्त विरोधी था। उसके शासनकाल के अन्त तक रूस पर तीन शताब्दियों के अनुन्नत मंगोल शासन का दुष्प्रभाव बना रहा, पर उसे पूर्वी यूरोप का प्रधान ईसाई राज्य माना जाने लगा था, चूँकि १४५३ ई० में कुस्तुंतुनिया मुसलमानों के हाथों में चला गया था। इसलिए पूर्वीय रोमन साम्राज्य के बाद रूस ही ईसाई धर्म का केन्द्र हुआ।

१. रूस के भूगोल का वर्णन करिए।
२. नवीं शताब्दी में किस जाति ने रूस पर अधिकार किया? उनका नेता कौन था?
३. नवीं और दसवीं शताब्दियों में रूस के प्रधान नगर कौन से थे?
४. पूर्वीय रोमन साम्राज्य ने रूस को कैसे और कब प्रभावित किया?
५. तातार लोग कौन थे? उन्होंने किस तरह रूस पर प्रभाव डाला?
६. मंगोल साम्राज्य का विस्तार कहाँ-कहाँ तक था?
७. ईवान तृतीय कौन था? उसका रूस पर क्या प्रभाव पड़ा?

विचार-विमर्श के लिए प्रश्न

१. जस्टिनियन की विधि-संहिता का आज की दुनिया के लिए क्या मूल्य है?

२. पूर्वीय साम्राज्य पश्चिम के पतन के बाद क्यों हजार सालों तक बना रहा?

३. मूरों के पास यूरोप को देने के लिए इतनी श्रेष्ठ संस्कृति थी तो क्या तूर्स की लड़ाई में फ्रैंकों द्वारा उन्हें पीछे हटा दिया जाना अच्छा हुआ?

४. फारस की खाड़ी और भूमध्यसागर के बीच के क्षेत्र को जहाँ मुहम्मद का कार्यक्षेत्र था, प्रायः "सभ्यता का चौराहा" क्यों कहा गया है ?

५. इस्लामी पंचांग के अनुसार यह कौन सा वर्ष है ?

६. क्या ईसा की यह शिक्षा थी कि उनके धर्म का प्रसार उन तरीकों से करना चाहिए जिन तरीकों का प्रतिपादन बाद में मुहम्मद ने किया ?

इतिहास के उपकरणों का प्रयोग

एक. नाम, तिथियाँ और स्थान

१. इन शब्दों की व्याख्या करिए।

अलहम्ब्रा, अल्लाह, अरबी अंक; बद्दू; हिज्र, कुरान, क्रेमलिन, मंगोल, मोज़इक, मस्जिद, आर्थोडाक्स चर्च; सेलजूक तुर्क, तातार, तीसरा रोम, बाइज़ैन्टाइन।

२. ये तिथियाँ क्यों स्मरणीय हैं ?

५२७, ६२२, ७३२, ८५०, १४५३, १४६२-१५०५

३. मानचित्र में इन स्थानों को ढूँढ़िए :

अरब रेगिस्तान, उत्तरी ध्रुव महासागर, बगदाद, बाल्कन प्रायद्वीप, कालासागर, बोखारा, कैस्पियन सागर, चीन, कुस्तुन्तुनिया, कार्दोवा, साइप्रस, डान नदी, जापान, कीफ, मक्का, मदीना, मंगोलिया, मास्को, नोवगौरोद, समरकन्द, सेविले, बास्फोरस की खाड़ी, सीरिया, तूर्स, यूराल पर्वत।

४. ये लोग कौन थे ?

अब्राहम, चंगेज़ खाँ, ईवान तृतीय, जस्टिनियन; चार्ल्स मार्टेल; मुहम्मद; मूसा; रूरिक।

दो. क्या आप अपने विचार स्पष्ट प्रकट कर सकते हैं ?

१. इस अध्याय में हमने तीन ऐसे रोचक व्यक्तियों के बारे में पढ़ा जिनके बारे में आप और अधिक जानना चाहेंगे। जस्टिनियन, मुहम्मद और ईवान तृतीय के बारे में और अधिक अध्ययन करिए और कक्षा को बताइए।

२. यदि आप इन स्थानों में घूमने वाले यात्री होते तो घर को पत्र लिखते हुए किस तरह इनका वर्णन करते।

कार्दोवा की मस्जिद, मक्का की मस्जिद जिसमें काबा है, सेविले की मीनार, ईवान तृतीय के समय में क्रेमलिन, संत सोफ़िया का गिरजाघर, बग़दाद नगर।

३. जनसंख्या का विवरण देने वाले किसी ज्ञान-कोश में से दुनिया में मुसलमानों और ईसाइयों की संख्या बताइए। किन देशों में किनकी आबादी अधिक है।

तीन. सूचना-पट्ट के लिए

मूर वास्तुशिल्प के कुछ चित्र एकत्रित करिए। उन्हें पढ़ कर उनके नीचे उनमें पाये जाने वाले मूर वास्तुशिल्प के लक्षण लिखिए। इन्हें सूचना-पट्ट पर लगा दीजिए। गार्डनर की पुस्तक 'आर्ट थ्रू द एजेज़' से आपको सहायता मिल सकती है।

चार. कला से सम्बन्धित इतिहास

१. बद्दुओं, रूस के तातार आक्रमणकारियों और नोर्स लोगों की वेशभूषा के चित्र एकत्रित करिए या बनाइए। कक्षा में उनकी व्याख्या करिए और बताइए कि किस तरह वह वेशभूषा उसे पहनने वाले लोगों की आवश्यकताओं के लिए उपयुक्त थी।

२. पत्थरों के बजाय रंगीन कागज के टुकड़ों से एक मोज़इक बनाकर सूचानापट्ट पर प्रदर्शित करिए।

पाँच. ब्लैक बोर्ड पर

समानान्तर स्तम्भों में फ्रैंक साम्राज्य, मुसलमान साम्राज्य और पूर्वीय रोमन साम्राज्य के महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों और घटनाओं को जो अध्याय १३ और १४ में बतलायी गयी हैं, लिखिए। कागज में बायीं तरफ लिखी गयी तिथियों से घटनाओं को उचित क्रम से रखने में सहायता मिलेगी। इस तरीके से आप यह देख सकेंगे कि कौन-सी घटनाएँ विश्व के विभिन्न भागों में एक ही साथ घटित हुईं।

	फ्रैंक साम्राज्य	मुसलमान साम्राज्य	पूर्वीय रोमन साम्राज्य
४०० ई० ५०० ई० ६०० ई० आदि			

छह. **चित्र अध्ययन**

१. अलहम्ब्रा में, जिसका चित्र पीछे पृष्ठ १७३ पर दिया गया है, मूरों ने वास्तुकला की किन विशेषताओं को पहले की सभ्यताओं से ग्रहण किया है।

२. पीछे पृष्ठ १७५ पर दिये चित्र में क्रेमलिन के सामने के मैदान का आजकल क्या नाम है? इस चित्र में इसका जो उपयोग प्रदर्शित है और जिस उपयोग में इसे आजकल लाया जाता है, उनकी तुलना कीजिए।

१५ पश्चिमी यूरोप पर ईसाई चर्च का प्रभुत्व

मध्यकालीन यूरोप का वास्तविक ज्ञान ईसाई चर्च का अध्ययन किये बिना सम्भव नहीं है क्योंकि चर्च उस समय का सबसे अधिक प्रभावपूर्ण संगठन था। चर्च बीते समय की संस्कृति का रक्षण करता था और उसे बाद में आने वाली पीढ़ियों को सौंप देता था। इसका सम्पर्क हर व्यक्ति के जीवन से कई प्रकार से रहता था और इसने बहुत-सी संस्थाओं का स्वरूप बदल दिया। एक तरह से दुःशील और क्रूर समाज के लिए इसका प्रभाव अच्छा [illegible]। इसने युद्धों को रोकने का प्रयत्न किया। [illegible] ने गरीबों, कृषक दासों (सर्फों) और सभी दुर्भाग्यपीडित लोगों के प्रति बेहतर बर्ताव करने के लिए प्रेरित किया। चर्च के लोगों ने रोगियों की चिकित्सा के लिए अस्पताल खोले और युवकों की शिक्षा के लिए स्कूल और विश्वविद्यालय चलाये। यद्यपि पादरीवर्ग प्रायः स्वयं चर्च की शिक्षाओं के अनुरूप आचरण नहीं करता था परन्तु चर्च निरन्तर और अधिक करुणामय और सत्याचरणशील जीवन के लिए प्रेरित किया करता था।

चर्च के अधिकार

चर्च के इतना अधिक प्रभावपूर्ण होने के कई कारण थे। एक तो चर्च हर तरह के लोगों की सहायता का प्रयत्न कर रहा था। इससे लोगों में इसके प्रति विश्वास जगता था। लोग धर्मेतर मामलों में भी इससे मार्गदर्शन प्राप्त करते थे।

दूसरे, चर्च वैभवशाली था। इसके पास धन आने के कई स्रोत थे। राजे और सरदार इसे भूमिदान देते थे, गिरजाघर और मठ बनवाते थे और इन्हें बहुमूल्य साज-सज्जा से अलंकृत करते थे। चर्च के प्रधान दान में प्राप्त भूमि पर काउंट या ड्यूक की तरह शासन करते थे। कई किस्मों के भूमिदलों के अतिरिक्त चर्च अपने सदस्यों से एक कर भी वसूलता था जिसे "टाइद" (दशमांश) कहते थे।

तीसरे, पादरीवर्ग उस समय का एकमात्र शिक्षित वर्ग था। राजाओं को शासन के कार्यों में जहाँ पढ़ने, लिखने या हिसाब-किताब रखने की जरूरत पड़ती थी, वहाँ पादरियों की सेवा लेनी पड़ती थी। इस प्रकार शासन पर पादरियों का बहुत प्रभाव था। बच्चों की शिक्षा का भार भी उन्हीं पर था। इस तरह वे आगे आने वाली पीढ़ियों को भी प्रभावित करते थे।

चौथे, ईसाई चर्च के पास कार्यक्षम संगठन था जिसके जरिये वह जनता के सभी वर्गों तक पहुँच सकता और उनके सम्पर्क में आ सकता था। कोई कहीं जाये, हमेशा वह चर्च के सम्पर्क में रहता था। यह सभी राजनैतिक सीमाओं और सभी वर्गभेदों को लांघ गया था और हर जगह प्रभाव डालता था।

चर्च की शिक्षा भी उसकी शक्ति बढ़ाने में

सहायक थी। शिशुवय में ही हर बच्चा चर्च में बपतिस्मा के बाद दीक्षित हो जाता था। विवाह, अपने बच्चों का बपतिस्मा, वसीयतों की रजिस्ट्री और मृतकों का दफनाया जाना, जीवन की ये सभी महत्त्वपूर्ण घटनाएँ चर्च के निर्देशन में सम्पन्न होती थीं। चर्च के विरुद्ध हो जाना या इसकी शिक्षाओं में अविश्वास करना और उनका पालन न करना गम्भीर बात समझी जाती थी। ऐसे लोगों को नास्तिक या धर्मविरोधी कहा जाता था और धर्मविरोध अपराध था।

मठपद्धति का प्रादुर्भाव—चर्च के उद्देश्य की पूर्ति और अज्ञान से संघर्ष में मठपद्धति से अधिक बड़ा योगदान सम्भवतः किसी और बात का नहीं था। यहाँ तक कि जिस समय बर्बरों का अज्ञान रोमन संस्कृति को विजित कर रहा था, उस समय यह नयी संस्था जो सभ्यता का उद्धार करने वाली थी, पश्चिमी यूरोप में फैल रही थी। मठवाद ईसाई धर्म के आरम्भ होने के बाद ही पूर्वी भूमध्यसागर के तटवर्ती देशों में प्रारम्भ हुआ।

शुरू में संन्यासी बनवासी होते थे। वे अरब और मिस्र के रेगिस्तानों में रहते थे और शेष जगत् के साथ कोई सम्बन्ध नहीं रखते थे। वे जंगली बेरियों, नखलिस्तानों में मिलने वाले फलों या आसपास रहने वाले धार्मिक लोगों द्वारा लाये गये भोजन को खाकर जीवित रहते थे। इनका ज्यादातर जीवन प्रार्थना करने, सरल जीवन के माध्यम से जगत् और उसके लोगों से बचने में और परलोक के लिए तैयारी करने में व्यतीत होता था।

बेनेडिक्टीय शासन—इस तरह का एकान्तवास पश्चिमी यूरोप के अधिकतर लोगों को नहीं भाता था, फिर भी कुछ ऐसे लोग थे जो युद्ध और उथल-पुथल की दुनिया से अपने को अलग रखना चाहते थे। उन्होंने एक दूसरे के निकट अपनी अनगढ़ झोपड़ियाँ बनायीं और इस तरह पश्चिम में संन्यासियों के समूह बनने लगे। फिर समूहों में रहने वाले सभी लोगों के मार्गदर्शन के लिए नियम बनाने की आवश्यकता पड़ी जिससे उनका समुदाय निर्बाध रूप से चलता रहे। इस तरह ऐसे समुदायों में रहने वाले लोगों के जीवन को नियमित करने के लिए कई नियमावलियाँ बनायी गयीं। इनमें से एक नियमावली को सामान्यतया मान्यता मिली। इसे ही बेनेडिक्टीय शासन कहते थे।

संत बेनेडिक्ट स्वयं बनवासी रहे थे। धीरे-धीरे दूसरे संन्यासी उनके पास राय और सहायता लेने के लिए आये और वे अंत में संन्यासियों के एक समुदाय के प्रधान हो गये। उनका शासन तीन शपथों पर आधारित था जिन्हें हर संन्यासी लेता था। ये थे : इन्द्रिय-निग्रह, दैन्य और आज्ञापालन। इन शपथों को अक्षरशः ग्रहण करना पड़ता था। इन्द्रियनिग्रह की शपथ का मतलब था कि संन्यासी विवाह नहीं कर सकता था। दैन्य का मतलब था कि वह व्यक्तिगत रूप से अपने पास कुछ भी सम्पत्ति नहीं रख सकता था, यहाँ तक कि अपने कपड़े भी उ के नहीं होते थे। और उसे मठ के प्रधान की आज्ञाओं का, जिसे मठाधीश (या महंत) कहते थे, पूर्णतया परिपालन करना होता था।

बेनेडिक्टीय शासन में इन तीन व्यापक रूप से प्रचलित शपथों के अतिरिक्त कुछ और भी नियम थे। इसमें व्यवस्था थी कि मठाधीश संन्यासियों द्वारा चुना जाएगा। हर संन्यासी को अपने हाथों काम करना पड़ता था और रोज़ अध्ययन करना पड़ता था। संन्यासी बनने से पहले लोगों को एक परीक्षा की अवधि से गुजरना पड़ता था

ये उत्साही संन्यासी शायद तर्कशास्त्र के या धर्मशास्त्र के सिद्धान्तों को लेकर बहस कर रहे हैं।

बेटीमैन आर्काइव

जिससे यह निश्चित हो सके कि वह इस प्रकार के जीवन के लिए उपयुक्त है या नहीं। संत बेनेडिक्ट के शासन ने पूरे पश्चिमी यूरोप में मठीय जीवन के लिए मानक का कार्य किया।

संन्यासियों का कार्य—बेनेडिक्टीय शासन के फलस्वरूप दुनिया में मठों का महत्त्व बढ़ गया। सबसे बड़ी बात, और यह बात बहुत महत्त्वपूर्ण थी, यह हुई कि संन्यासियों ने अपने हाथ से काम करने को गरिमा प्रदान की। अब तक हाथ का काम केवल गुलाम किया करते थे। लेकिन संन्यासी होने के पहले वह चाहे जिस वर्ग का रहा हो, धार्मिक आश्रम के किसी सदस्य के लिए अपने हाथों काम करना उसके गौरव के प्रतिकूल नहीं था। इस काम के फलस्वरूप दुनियाँ को बदलने में सहायता मिली। संन्यासियों ने अपनी निपुण विधियों और पौधों की वृद्धि तथा पशु-जीवन के अध्ययन से कृषि-पद्धति की बहुत उन्नति की। उन्होंने सुन्दर भवन, विशेषतः गिरजाघर निर्मित किये। उन्होंने यात्रियों को आश्रय दिया जिन्हें अन्यथा रुकने को जगह न मिलती। जब और कहीं अस्पताल थे ही नहीं, उस समय उन्होंने अस्पताल चलाये। इन सब तरीकों से संन्यासियों के श्रम से जीवन समृद्ध हुआ।

ज्ञान की सुरक्षा—उस समय जो भी स्कूल थे, वे संन्यासियों द्वारा ही चलाये जाते थे। इस प्रकार उन्होंने हर पीढ़ी के कुछ व्यक्तियों में ज्ञान की ज्योति जलाये रखी। मठों में शिक्षित लोग लातीनी साहित्य और बाइबिल के विभिन्न खण्डों की प्रतिलिपियाँ करते थे। ऐसे समय में जब कि और सभी लोग रोमन लेखकों की महान् कृतियों को या तो नष्ट कर रहे थे या भुला रहे थे, संन्यासियों ने उस साहित्य को आगे की पीढ़ियों के लिए सुरक्षित किया। ये प्रतिकृतियाँ कला-कृतियाँ थीं।

कुछ संन्यासी मौलिक लेखन भी करते थे। उत्तरी अफ्रीका स्थित हिप्पो के बिशप संत आगस्तीन ने ईसाई धर्म के पक्ष में अपनी प्रसिद्ध पुस्तक "ईश्वर का नगर" लिखी। बहुत से मठों के वृत्तान्तों से ज्ञात होता है कि इनके लेखक अपने समय की महत्त्वपूर्ण घटनाओं के बारे में सोचते-विचारते थे। इनमें से सबसे प्रसिद्ध "एंग्लो-सैक्सन वृत्तान्त" है जिनमें मध्ययुग के इंग्लैंड के इतिहास की महान् घटनाएँ वर्णित हैं। इन्हीं वृत्तों से हमें मध्ययुग के बारे में हमारी जानकारी का अधिकांश भाग प्राप्त होता है।

धर्मप्रसार कार्य—ईसाई धर्म का प्रसार भी बहुत कुछ सन्यासियों का ही कार्य था। संत आगस्तीन नामक एक दूसरा सन्यासी पोप द्वारा इंग्लैंड में ईसाई धर्म का संदेश पहुँचाने के लिए भेजा गया। वहाँ पर उसे एक ईसाई रानी और एक अशक्त चर्च पहले से ही स्थापित मिले। ईसाई धर्म के दो जरा भिन्न रूपों के बीच वाद में हुए संघर्ष में रोमन चर्च की विजय हुई। इस तरह इंग्लैंड का चर्च पोप के अधीन हो गया।

कुछ और संन्यासी बहुत प्रसिद्ध धर्मप्रसारक हुए। संत पैट्रिक ने आयरलैंड में ईसा ईधर्म का प्रसार किया और संत बोनिफेस ने जर्मनी और उत्तर फ्रांस के जंगलों में लोगों को धर्म पुस्तक के संदेश का उपदेश किया।

१. लोग संन्यासी क्यों होना चाहते थे।
२. पश्चिम के वनवासी साधु और संन्यासियों में क्या भेद था?

ईसाई धर्म का प्रसार।
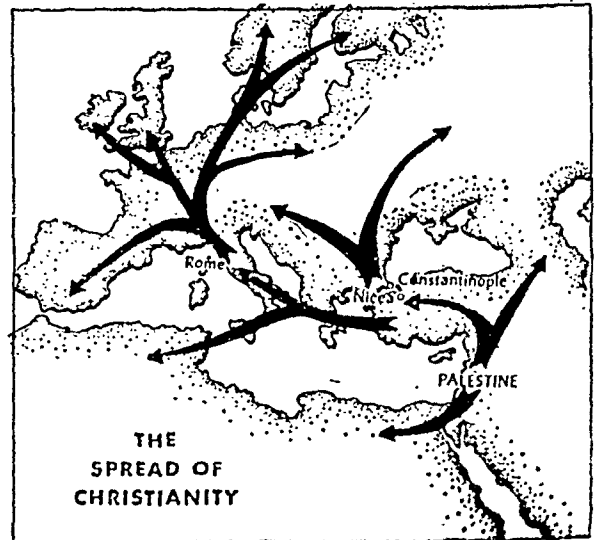
३. संत बेनेडिक्ट कौन थे? मठवाद को उनकी क्या देन थी?
४. बेनडिक्टीय शासन क्या था?
५. अपने और अपने बाद के समय के लोगों की संन्यासियों ने क्या सेवा की?
६. इस समय के कुछ महत्त्वपूर्ण संन्यासियों का उल्लेख करिए और बताइए कि वे किस बात के लिए प्रसिद्ध हैं।

असाधारण पोपों द्वारा चर्च की शक्ति में वृद्धि

लियो प्रथम—पोपों की शक्ति में वृद्धि के साथ-साथ चर्च की शक्ति भी बढ़ी। मध्ययुग के कुछ पोप बहुत ही शक्तिशाली हुए और उनके पद का प्रभाव चर्च के भीतर ही नहीं, बाहर भी पड़ा। इनमें प्रथम था लियो प्रथम। उसे हूणों के भयानक कबीले को इटली छोड़ने के लिए सहमत करने का श्रेय दिया जाता है।

ग्रेगरी प्रथम महान्—ग्रेगरी महान् (५९०-६०४) का चर्च पर और भी अधिक प्रभाव रहा। उसका जन्म रोम के एक समृद्ध परिवार में हुआ था पर संन्यासी होने के लिए उसने अपने वैभव का परित्याग कर दिया। अधिष्ठित पोप के मरने के बाद रोम की जनता और पादरीवर्ग ने ग्रेगरी को ही उस पद के लिए चुना। उसने अपने कर्तव्यों को समझ और शक्ति के साथ संभाला। लोम्बार्ड जाति के लोग इटली पर अधिकार कर चुके थे और रोम और अन्य नगरों पर धावे बोल रहे थे। रोम में कानून और व्यवस्था टूट चुकी थी। नगर में सबसे सम्मानित पद पोप का था और ग्रेगरी ने अपने पद का उपयोग व्यवस्था कायम करने के लिए किया। रोम का शासन अपने हाथ में लेकर उसने पोपों की लौकिक सत्ता अर्थात् देशों के शासकों की तरह शासन करने की सत्ता की नींव रखी। ग्रेगरी के पोप रहते समय जर्मनी और ब्रिटेन में धर्मप्रचारक भी भेजे गये थे।

इन्नोसेंट तृतीय—पोप की सर्वोच्च सत्ता इन्नोसेंट तृतीय के समय में प्राप्त हुई। वह

बैटीमैन आर्काइव

पुनर्जागरण काल का चित्रकार गिओटो लोगों को प्राकृतिक वातावरण में दिखाने की कोशिश करता था जैसे यहां सन्त फ्रान्सिस को दिखाया गया है।

सबलतम शासकों की भी भर्त्सना करने में हिचकता नहीं था। उसकी शक्ति का सर्वोत्तम उदाहरण इंग्लैंड के राजा जान के साथ उसके सम्बन्धों से प्रकट है।

इंगलैंड में चर्च के सबसे प्रधान पद कंटरबरी के आर्कबिशप का स्थान रिक्त था। कैन्टरबरी संन्यासियों ने प्रथा के अनुसार अपनी इच्छा के अनुकूल एक आदमी को चुना और उसे रोम में पोप के पास भेजा। जब राजा जान ने इस चुनाव की बात सुनी तो वह बहुत क्रुद्ध हुआ क्योंकि इस पद पर वह अपनी रुचि के एक आदमी का चुनाव कराना चाहता था। इन्नोसेंट तृतीय ने इन दोनों नामांकनों को अस्वीकार कर एक तीसरे व्यक्ति को मनोनीत किया जिसे जान ने स्वीकार करने से इनकार किया। पोप ने जान से अपनी बात मनवाने के लिए इंग्लैंड पर निषेधाज्ञा (इंटर-डिक्ट) लागू कर दिया अर्थात् उसकी आज्ञा पर वहाँ के सारे चर्च बन्द कर दिये गये और प्रार्थना पूजा आदि बन्द हो गयी। मध्ययुगीन जनता के लिए यह बहुत भयानक बात थी। विवाह संस्कार नहीं हो सकता था, मृतकों को दफनाया नहीं जा सकता था, बच्चों का बपतिस्मा नहीं हो सकता था।

परन्तु जान ने पोप की बात मानने के बजाय पोप का पक्ष ग्रहण करने वाले बिशपों की भूमि

जब्त कर ली। उनमें से कई इंगलैंड छोड़कर चले गये। जब जान पर निषेधाज्ञा का भी कोई प्रभाव नहीं पड़ा तो पोप ने उसे चर्च से वहिष्कृत (एक्सकम्युनिकेट) कर दिया। इस तरह वह चर्च के किसी भी धार्मिक संस्कार या कर्म में भाग नहीं ले सकता था। शायद इससे भी जान पोप के आगे नहीं झुकता परन्तु देश में सामन्तों से झगड़ा चलने के कारण उसे अन्ततः पोप की इच्छा को स्वीकार करना पड़ा।

यूरोप में चर्च के मत को प्रतिष्ठित करने और इसका प्रसार करने में सहायक दो शक्तिशाली धार्मिक संघ इन्नोसैंट तृतीय के समय में ही शुरू हुए। ये संघ डोमिनिकन और फ्रांसिस्कन संघ कहलाते हैं। इनमें से प्रथम संघ के संस्थापक एक स्पेनवासी संत डोमिनीक थे। इस संघ के सदस्य धर्म का प्रसार-कार्य और अध्यापनकार्य करते थे। विश्वविद्यालयों के अधिकांश अध्यापक इस संघ के सदस्य थे।

फ्रांसिस्कन संघ के संस्थापक असीसी के संत फ्रांसिस थे। इनके माता-पिता धनी व्यक्ति थे। पर इन्होंने अपने उत्तम वस्त्रों और अपने उत्तराधिकार का परित्याग कर भिक्षु का जीवन विताना शुरू किया। धीरे-धीरे इनके साथ कुछ अनुयायी हो गये और इन्नोसैंट तृतीय ने इन्हें साधकों का एक संघ बनाने की अनुमति दी। संन्यासियों के संघ से इनका संघ इस बात में भिन्न था कि इनके संघ में रहने के लिये मठ नहीं थे। ये लोग दीनों को उपदेश देते हुए, बीमारों की शुश्रूषा करते हुए और सत्कार्य करते हुए घूमा करते थे।

बाद के निर्बल पोप—इन्नोसैंट के उत्तराधिकारी उसकी तरह सशक्त नहीं थे। चौदहवीं शताब्दी में पोप फ्रांस के राजाओं के प्रभाव में आ गये और सत्तर वर्षों तक फ्रांस के एवेन्यान नामक स्थान पर रहे जहाँ फ्रांस के राजा उन पर और चर्च के कार्यों पर प्रभुत्व जमाये रहे। इंगलैंड में फ्रांसीसियों के प्रति घृणाभाव था, अतः वहाँ इस अवधि में चर्च और पादरीवर्ग की बहुत आलोचना होती रही। इसके अतिरिक्त, इसके बाद इंगलैंड ने पोप को राजा के ऊपर स्थान देना अस्वीकार कर दिया। जान ने पोप से इंगलैंड का राज्य स्वीकार करते समय जो कर देना स्वीकार किया था, वह भी उसने पोप को देना बन्द कर दिया।

१. चर्च इस समय की सबसे शक्तिशाली और महत्त्वपूर्ण संस्था क्यों था?
२. मध्यकालीन चर्च की आय के स्रोत क्या थे?
३. निम्नलिखित पोपों में से हर एक किस लिए महत्त्वपूर्ण था: लियो प्रथम, ग्रेगरी प्रथम, इन्नोसैंट तृतीय।
४. इन्नोसैंट तृतीय और इंगलैंड के राजा जान के बीच कैंटरबरी के आर्कबिशप पद पर हुए संघर्ष की कथा लिखिए। यह संघर्ष किस तरह सुलझा?
५. 'निषेधाज्ञा' (इंटरडिक्ट), और धर्म से 'वहिष्कार (एक्सकम्युनिकेशन) शब्दों की व्याख्या करिए।
६. डोमिनिकन और फ्रांसिस्कन लोग कौन थे?

शिक्षा पर चर्च का नियन्त्रण

मध्ययुग में अधिकांश लोग स्कूल नहीं जा पाते थे। किसान खेत जोतना, बीज बोना, पशु पालना, और अपने तथा अपने मालिकों के लिए भोजन, वस्त्र की व्यवस्था करना सीख लेते थे। सामंतों के पुत्र केवल हथियार चलाने और योद्धा होने के लिए उपयोगी बातें सीखते थे। शिक्षा के प्रचलित प्रकार यही थे। 'पुस्तक-शिक्षा' अधिक प्रचलित नहीं थी और बहुत कम लोग पढ़ना तथा लिखना जानते थे। शार्लमेन ने अपने राजभवन में सामन्तों के पुत्रों के लिए एक स्कूल खोला और मठों को अदास व्यक्तियों के पुत्रों के लिए स्कूल खोलने को प्रोत्साहित किया। लेकिन उस समय अदास व्यक्तियों की संख्या बहुत कम थी। एक शताब्दी बाद राजा अल्फ्रेड महान् ने इंगलैंड में यही कार्य किया। लेकिन ये कार्य अपवादमात्र थे और स्कूली शिक्षा का लाभ बहुत कम लोग उठा सकते थे।

चर्च के स्कूल—जितने भी स्कूल थे, करीब

सभी चर्च के हाथ में थे और वहाँ पढ़ने-बोलने की भाषा लैटिन थी। बहुत से मठों में लड़कों के लिए स्कूल थे। कुछ बड़े गिरजाघरों और यहाँ तक कि स्थानीय गिरजाघरों द्वारा भी मध्ययुग में स्कूल चलाये जाते थे। इनका पाठ्यक्रम व्याकरण, अलंकारशास्त्र, तर्कशास्त्र, अंकगणित, ज्यामिति, ज्योतिर्विज्ञान और संगीत इन सात लिबरल आर्ट कही जाने वाली विद्याओं से बना था। लेकिन विषयों के समान रहते हुए भी अध्यापकों की योग्यता के अनुसार शिक्षा का स्तर स्थान-स्थान पर अलग-अलग था। चूँकि पुस्तकों की लिखाई और प्रतिकृति हाथों से होती थी, इसलिए पाठ्य-पुस्तकों का अभाव था और अधिकांश शिक्षा मौखिक रूप से दी जाती थी। विद्यार्थी-जीवन बहुत कठोर होता था क्योंकि पढ़ाई का समय बहुत देर-देर तक चलता था और विद्यार्थियों को ठंडे कमरों में सादे फर्श पर बैठा रहना पड़ता था।

विश्वविद्यालय—जैसे-जैसे शिक्षा की माँग बढ़ने लगी, तेरहवीं शताब्दी में विश्वविद्यालयों का विकास होना शुरू हुआ। प्रारम्भिक पाठशालाओं में पढ़ने के बाद विद्यार्थी विश्वविद्यालयों में प्रवेश पा सकते थे। प्राचीनतम विश्वविद्यालय इटली के बोलोना, फ्रांस के पेरिस और इंगलैंड के आक्सफोर्ड तथा कैम्ब्रिज नगरों में थे। सारे पश्चिमी यूरोप से विद्यार्थी इन विद्यालयों में पढ़ने के लिए आते थे। पहले इनके भवन नहीं थे। अध्यापक व्यवसाय-श्रेणियों में संगठित होकर किराये के कमरों में कक्षाएँ खोलते थे। पेरिस में अधिक स्कूल "स्ट्रा स्ट्रीट" पर स्थित थे। इसका यह नाम इसलिए पड़ा क्योंकि इन स्कूलों के कमरों में फर्श पर फूस (अंग्रेजी शब्द 'स्ट्रा') होता था जिससे विद्यार्थियों को ठण्ढ न लगे। बाद में इन स्कूलों के लिए भवन बने लेकिन जोर हमेशा भवन या साज-सज्जा पर नहीं, बल्कि अध्यापक और उसकी योग्यता पर दिया जाता था। साज-सज्जा के नाम पर कुछ किताबों के अतिरिक्त और कुछ नहीं था।

आधुनिक स्कूलों की तरह ही इन स्कूलों में भी कुछ विद्यार्थी बुद्धिमान् होते थे और कुछ मूर्ख होते थे; कुछ अध्ययनशील होते थे और कुछ आलसी होते थे, कुछ अपने विकास में रुचि रखते थे और कुछ कलहप्रिय होते थे। ये कलहप्रिय विद्यार्थी कभी-कभी नगरवासियों से लड़ाई कर बैठते थे। पेरिस में १२०० ई० में ऐसी एक लड़ाई में पाँच विद्यार्थी मारे गये। दूसरी ओर, नगरवासी लोग विद्यार्थियों का नाजायज फायदा उठाते थे और उनसे चीजों का अधिक दाम लेते थे तथा उनसे अन्य दुर्व्यवहार करते थे। इस भय से कि पेरिस में अपने साथ धन लाने वाले विद्यार्थी कहीं पेरिस छोड़कर विश्वविद्यालय किसी दूसरे स्थान पर न ले जायें, राजा फिलिप आगस्तस ने निम्नलिखित आदेश जारी किया जिससे तेरहवीं शताब्दी में विश्वविद्यालयों के विद्यार्थी जीवन पर बहुत प्रकाश पड़ता है: "जो ज्ञान के प्रति प्रेम के कारण अपना देश छोड़ते हैं, जो समृद्धि के बजाय गरीबी में रह कर अपने को सुखाते हैं, जो अपनी जिन्दगी में हर जोखिम उठाते हैं और अक्सर कमीन-लोगों द्वारा की गयी शारीरिक चोटों को सहते हैं, उन पर कौन दया नहीं करता है? इसे कठिनता से सहन किया जायेगा। इसलिए हम इस सामान्य और

आक्सफोर्ड में सदा से अण्डरग्रैजुएट छात्रों के लिए छोटे लबादे और ग्रैजुएट छात्रों के लिए लम्बे लबादे प्रचलित रहे हैं।

कम्बाइन फोटोज़

निरन्तर कानून के जरिये यह घोषणा करते हैं कि कोई भी विद्यार्थियों पर चोट करने का साहस न करे या कोई भी किसी विद्यार्थी को उसके प्रान्त के किसी विद्यार्थी पर चढ़े ऋण के कारण हानि पहुँचाने की अबुद्धिमत्ता न करे, जैसा कि हमें पता चला है कि एक कुप्रथा के कारण किया जाता है।"

इन्हीं मध्यकालीन विश्वविद्यालयों में उपाधि-दान की प्रथा शुरू हुई। पहले ए० वी० (बैचलर आफ आर्ट्स) की उपाधि पाने के लिए और आगे अध्ययन करना पड़ता था। इस उपाधि से यह प्रकट होता था कि वह आदमी शिक्षा देने के योग्य था। कुछ विश्वविद्यालयों में पी-एच० डी० (डाक्टर आफ फ़िलासफी) की उपाधि भी दी जाती थी।

असाधारण विद्वान—मध्ययुग के श्रेष्ठतम विद्वान तेरहवीं शताब्दी में हुए। ये लोग विश्वविद्यालयों से सम्बद्ध और चर्च के सदस्य थे। टामस एक्विनास भी इन्हीं में था। सन् १२०० के लगभग प्राचीन यूनानी दार्शनिक अरस्तू की रचनाएँ लैटिन में अनूदित हुईं और विद्यार्थी उनका अध्ययन करने लगे। चर्च के लोगों को भय हुआ कि इन पुस्तकों में ईसाई मत के विरुद्ध बातें हैं। चर्च ने ऐसे सिद्धान्तों की शिक्षा देना रोकने की बहुत कोशिश की। टामस एक्विनास ने ही देवविद्या (धर्म का अध्ययन) पर एक ग्रंथ लिखा जिसमें यह स्पष्ट किया कि अरस्तू की मान्यताएँ चर्च की शिक्षा के विपरीत नहीं हैं।

लड़कियों की शिक्षा—लड़कियों को लड़कों से बहुत कम शिक्षा के अवसर थे। गढ़ियों में लड़कियों को शिष्टाचार, थोड़ा संगीत, सिलाई-कढ़ाई और कभी-कभी पढ़ने की शिक्षा दी जाती थी। जो महिलाएँ कान्वेंट (स्त्रियों के मठ) में प्रवेश करती थीं, वे पढ़ना-लिखना भी सीखती थीं, जिससे वे चर्च का पूजा-पाठ कर सकें। कभी-कभी वे अनुकृतिकार का काम भी करती थीं और प्रायः पुस्तकों को सचित्र करती थीं। मध्ययुगीन
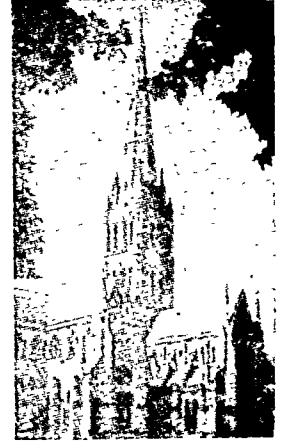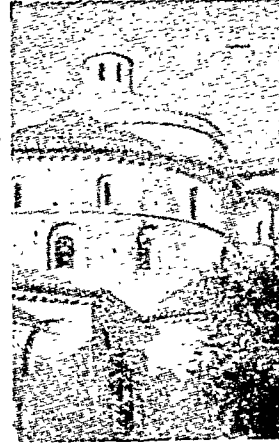
राफ़ो गुलुमेट टी० डब्ल्यू० ए०

रोमन और गोथिक शैली के भवन देखने में एक दूसरे से बिल्कुल भिन्न लगते हैं। तुम किस तरह के गिरजाघरों को पसन्द करते हो?

संन्यासिनियों ने जितना बढ़िया सूई का काम किया वैसा काम और कभी नहीं हुआ। किसान लड़कियों को अपनी माताओं के साथ काम करना सिखाया जाता था। वे जल्दी विवाह कर लेती थीं और अपनी माताओं की ही तरह काम-काज करती थीं।

यदि आप आजकल हर ओर प्राप्त शिक्षा की सुविधाओं से पश्चिमी यूरोप में मध्ययुग में प्राप्त सुविधाओं की तुलना करेंगे तो यह ज्ञात हो जाएगा कि उस समय जीवन की गति इतनी धीमी क्यों थी। शताब्दियों तक संस्कृति अविकसित दशा में रही।

१. मध्ययुग के किन दो राजाओं ने सामंतों और अदास व्यक्तियों के पुत्रों के लिए स्कूल खोले?
२. किसानों को क्या सिखलाया जाता था?
३. मध्यकालीन स्कूलों को कौन चलाता था?
४. मध्यकालीन स्कूलों में किन विषयों की शिक्षा दी जाती थी?
५. मध्यकालीन स्कूल का वर्णन करिए।
६. टामस एक्विनास कौन था?
७. मध्यकालीन लड़कियों की शिक्षा में क्या-क्या होता था?

मध्ययुग में गिरजाघरों के भवन

मध्ययुगीन वास्तुकला के सर्वोत्तम उदाहरण तत्कालीन गिरजाघर हैं। इसका कुछ कारण यह है कि गढ़ियों के अतिरिक्त गिरजाघर उस समय के सर्वोत्तम-निर्मित भवन हैं। लकड़ियों के बने हुए मकान आग लगने से, सड़ने से या नगरों के आधुनिकीकरण में नष्ट होते रहे हैं। लेकिन दूसरी ओर, बहुत से गिरजाघर आज तक बचे हुए हैं और अपने निर्माताओं की कुशलता और प्रतिभा के साक्षी हैं। इस अवधि की वास्तुकला की दो शैलियाँ हैं : पहले की रोमन-समान (रोमानस्क) और बाद की गोथिक।

रोमन-समान वास्तुकला—रोमन-समान शैली, जैसा कि इसके नाम से पता चलता है, रोमन वास्तुकला की तरह थी। यह शैली रोमन राजभवनों के नमूनों पर आधारित थी। रोमन-समान शैली के गिरजाघर क्रास की शकल के होते थे और इनमें दीवालें मोटी और खिड़कियाँ कम होती थीं। भक्त-समुदाय बीच के बड़े कमरे में झुकता और खड़ा रहता था क्योंकि बैठने के लिए कुर्सियां या बेंचें नहीं होती थीं। किनारे के गलियारों और बीच के कमरे के बीच लम्बे, गोलाकार खम्भे होते थे, जिनसे छत को दीवालों के अलावा भी सहारा मिलता था। लोग पढ़ना नहीं जानते थे इसलिए ईसाई धर्म की कहानियाँ दीवालों पर लटक रहे चित्रों या मूर्तियों में चित्रित रहती थीं। रोमन-समान वास्तुशैली इटली और फ्रांस में प्रचलित थी और ग्यारहवीं शताब्दी में फ्रांस से इंगलैंड में शुरू हुई।

गोथिक वास्तुकला—भवन बनाने वाले जैसे-जैसे अधिक कुशल होते गये, भवन अधिक ऊँचे, अधिक हल्के, अधिक सुन्दर और अधिक श्रमसाध्य होने लगे। इस तरह गोथिक नामक वास्तुकला की नयी शैली का विकास हुआ। रोमन-समान शैली की तुलना में इसमें दीवालें अधिक पतली, खिड़कियाँ अधिक बड़ी, तथा खिड़कियों और दरवाजों पर नुकीली मेहरावें होती हैं। बड़ी खिड़कियों में रंगीन शीशे के दरवाजे होते थे जिससे उनसे होकर आने वाला प्रकाश बहुत तेज न होकर कुछ हलका हो जाय। बाहर की तरफ शिखर और मूर्तियाँ होती थीं। भीतरी भाग प्रस्तर और काष्ठ-कार्य से अत्यधिक सुसज्जित रहता था। मूर्ति चाहे किसी और कोने मे हो या किसी प्रमुख स्थान पर कलाकार उसकी रचना में समान साधना करता था और सर्वोत्तम कृति निर्मित करने की चेष्टा करता था। गिरजाघर मनुष्यों को खुश करने के लिए नहीं, ईश्वर का सम्मान करने के लिए निर्मित होते थे।

गोथिक वास्तुशैली फ्रांस में उत्पन्न हुई थी, जहाँ के हर गिरजाघर का बनाना तेरहवीं शती में शुरू हुआ था और जहाँ कोई भी दो गिरजाघर एक तरह के नहीं हैं। आजकल की तरह उनका विस्तृत नक्शा नहीं बनाया जाता था, शिल्पी उन्हें बनाने में अधिक स्वतन्त्रता से काम करते थे। ये भवन बहुत लम्बे समय तक बनते रहे। अक्सर एक गिरजे के बनने में दो शताब्दियाँ लग जाती थीं और कुछ अधिकारी विद्वानों का कहना है कि इन महान् गिरजाघरों में से कोई भी बिलकुल पूरा नहीं है।

१. रोमन-समान शैली में बने एक भवन का वर्णन करिए।
२. गोथिक शैली में बने किसी भवन का वर्णन करिए।
३. बीच का कमरा, मेहरावें, मूर्ति और गिरजाघर से क्या तात्पर्य है ?
४. गोथिक वास्तुकला कब और किस देश में विकसित हुई ?
५. गिरजाघरों की निर्माण-योजना किस तरह बनती थी ?

ईसाई चर्च में फूट

पश्चिम में पोप के नेतृत्व में चर्च ने इतनी अधिक सत्ता, अधिकार और एकीकरण की शक्ति प्राप्त कर ली थी जितनी पहले रोमन साम्राज्य में थी। पूर्वीय रोमन साम्राज्य का चर्च पोप का ईसाई चर्च में सर्वोच्च स्थान होना गम्भीरता से स्वीकार नहीं करता था। उनके सिद्धांतों में कुछ और भी मतभेद थे। उदाहरण के लिए, वे क्रिसमस और ईस्टर के त्योहार अलग-अलग तिथियों पर मनाते थे। अंत में गिरजाघरों में मूर्तियों के प्रयोग के प्रश्न पर उनका झगड़ा चरम सीमा पर पहुँच गया।
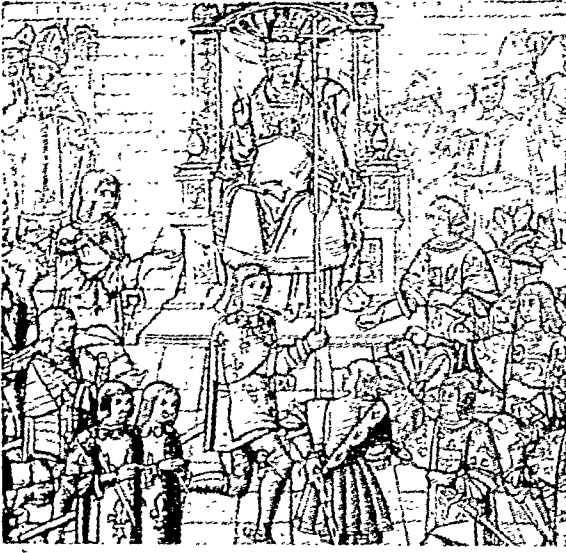
कलवर सर्विस

जब क्लेरमोंट में नागरिकों की सभा हुई थी, उस समय उसमें जर्मनी और फ्रान्स के बिशप और राजा भी उपस्थित थे।

पूर्वीय चर्च ने मूर्तियों के प्रयोग का निषेध किया जबकि पश्चिम में उनका प्रयोग बहुत प्रचलित था। अंततः ग्यारहवीं शती के मध्य में इस तथाकथित "मूर्तिभंजक" विवाद के फलस्वरूप पूर्वीय या "आर्थोडाक्स" चर्च और पश्चिमी या रोमन कैथोलिक चर्च अलग-अलग हो गये। वे तबसे अलग ही हैं।

पूर्वीय चर्च के अधिकारी हमेशा सम्राट् के नियंत्रण में रहे थे। इस कारण से पश्चिम की तुलना में, जहाँ पोप अक्सर राजाओं को दबाये रहते थे, यहाँ चर्च का राज्य के मामलों पर कम प्रभाव था। अरबों और बाद में तुर्कों की जीतों के फलस्वरूप पूर्वीय साम्राज्य धीरे-धीरे कमजोर होता गया। अन्ततः सम्राट् को यह भय हो गया कि कहीं उनकी राजधानी कुस्तुन्तुनिया पर भी एशियायी तुर्कों का अधिकार न हो जाय। धर्म में मतभेदों के बावजूद उसने पश्चिम के सर्वाधिक शक्तिशाली व्यक्ति, पोप, से सहायता की प्रार्थना की। धर्मयुद्धों के जरिए ही पश्चिम पूर्वीय साम्राज्य में सुरक्षित सभ्यता के सम्पर्क में आया।

चर्च द्वारा धर्मयुद्ध का आह्वान

क्लेरमांट में आह्वान—पूर्वीय साम्राज्य के सम्राट् से सहायता की प्रार्थना पाकर पोप अर्बन द्वितीय ने प्रसन्नतापूर्वक सहायता का वचन दिया। उसे आशा थी कि इस सहायता के फलस्वरूप उसे आर्थोडाक्स और रोमन कैथोलिक चर्चों में एकता स्थापित करने का अवसर मिल जाएगा। उसे यह भी आशा थी कि इस अभियान के फलस्वरूप पश्चिमी सामंतों का ध्यान एक-दूसरे से लड़ाइयाँ लड़ने से हट जाएगा। कुछ और भी कारण थे। ईसाई धर्म के प्रारम्भिक काम से बहुत लोग ईसा के जीवन से सम्बद्ध स्थानों, विशेषकर यरूशलम की तीर्थयात्रा करने जाया करते थे। जब तक यरूशलम पर अरबों का अधिकार था, उन्होंने ईसाइयों को वहाँ आकर पूजा करने से नहीं रोका था। परन्तु सेल्जुक तुर्कों ने उनसे निर्दयता से व्यवहार किया। फलस्वरूप ईसाई पवित्र देश की तीर्थयात्रा करने में असमर्थ हो गये। फ्रांस में क्लेरमांट नामक स्थान पर पोप ने लोगों से धर्मयुद्ध शुरू करने और पवित्र देश से विधर्मी तुर्कों को बाहर करने का आह्वान किया। उसके आह्वान के उत्तर में "ईश्वर की यह इच्छा है" यह एक ऐसे आन्दोलन का नारा बन गयी जो दो सौ वर्षों तक चलता रहा।

धर्मयोद्धाओं के प्रयोजन—पोप के आह्वान का आश्चर्यजनक प्रभाव हुआ। हर वर्ग के सहस्रों लोग अपने सामान बेचकर या दूसरों के सुपुर्द कर कुछ महीने बाद पवित्र देश के लिए रवाना हुए जन-समाज के साथ चल पड़े। रंक और राजा सभी इसमें शामिल हुए। राजा और सामंत भूमिमार्ग और जलमार्ग से जानेवाले दलों के नेता बने। उनके प्रयोजन भी भिन्न-भिन्न थे। कुछ तो पवित्र देश को तुर्कों के हाथ से वापस लेने के लिए गये और दूसरे लोग दायित्वों से पीछा छुड़ाने के लिए, धन और भूमि पाने के लिए गये। कुछ और लोग पापों का प्रायश्चित्त करने के लिए गए, कुछ लोग मात्र साहसिक अभियान के लिए गये। लेकिन सामंत और शासक अपने आपसी झगड़े भूल गये और

पश्चिम यूरोप समान उद्देश्य के लिए एक हो गया।

धर्मयोद्धा—धर्मयोद्धाओं को उनकी सुरक्षा के लिए सिर पर सरकाए जा सकने वाले टोपे जुड़े हुए भूरे चोगे की पोशाक से पहचाना जा सकता था। प्रत्येक धर्मयोद्धा यरूशलम जाते हुए अपने सीने पर और वहाँ से लौटते हुए अपनी पीठ पर एक लाल क्रास पहने रहता था। उनकी कमर में एक चौड़ी पेटी से पानी की बोतल या तुम्बी और कभी-कभी घंटी लटकती रहती थी।

जो लोग पैदल गये, उनके पाँवों में छाले पड़ जाते थे और वे थक जाते थे। भरे हुए जहाजों पर जाने वालों को भी आराम नहीं था। चूंकि जहाजों के मालिक अधिक से अधिक पैसा बनाना चाहते थे, इसलिए हर यात्री को सोने के लिए उन्होंने डेक पर छह फुट लम्बी और दो फुट चौड़ी जगह दे रखी थी। पर मजबूत लोग कमजोर पड़ोसियों को धक्का देकर उनके लिए और कम जगह छोड़ते थे। कुछ यात्री निरन्तर अंडे और दूध मिलते रहने के लिए अपने साथ मुर्गियाँ तथा बकरियाँ और जहाज छोड़ने के बाद की यात्रा के लिए घोड़े ले गये थे। सफाई की दशा बहुत बुरी थी और बहुत से लोग बीमार पड़ गये और बहुत से अत्यधिक कष्ट में रहे। शक्ति-क्षय, गंदे जहाजों, या लग गये छूत के रोगों और यरूशलम पहुंचने के लिए मुसलमानों से लड़ी गयी लड़ाइयों के कारण धर्मयुद्ध के दौरान मरने वालों की संख्या बहुत अधिक थी।

जोखिमों के बावजूद हजारों आदमी धर्मयोद्धा की पोशाक धारण करते और पवित्र देश की ओर जाते रहे। वे एक शताब्दी से अधिक समय तक तो लगभग समान, निरन्तर प्रवाह से, फिर बाद में लगभग एक शताब्दी तक कुछ कम संख्या में, जाते ही रहे। पश्चिमी यूरोप के भूमध्यसागर तट पर स्थित बन्दरगाहों से इन उत्साही यात्रियों को ले जाने वाले जहाज प्रतिवर्ष छूटते रहे।

प्रथम धर्मयुद्ध—प्रथम धर्मयुद्ध १०९६ ई० में शुरू हुआ। जब सेनाएँ कुस्तुन्तुनिया के निकट पहुँच गयीं, तब पूर्वी साम्राज्य के सम्राट् ने, जिसने सेनाओं के अपने झंडे के नीचे लड़ने की आशा की थी, विश्वासघात कर उन्हें रोकने की कोशिश की। थोड़ी लड़ाई के बाद सम्राट् से सुलह हो गयी। फिर धर्मयोद्धाओं ने एशिया माइनर में प्रवेश किया जहाँ उन्हें तुर्कों के हाथों हानि उठानी पड़ी। अंततः तीन वर्ष तक चलने और लड़ते रहने के बाद वे यरूशलम पहुँचे। पहले उन्होंने आशा की थी कि उनके वहां नंगे पाँव कवायद करते पहुंचते ही नगर की दीवाल ध्वस्त हो जाएगी। पर जब वह चमत्कार नहीं घटित हुआ तो उन्होंने दीवाल को ध्वस्त कर दिया और नगर पर बलपूर्वक अधिकार कर लिया। उसके बाद उन्होंने यरूशलम-वासियों का विकट हत्याकांड शुरू कर किया। एक नेता ने पोप को पत्र लिखा कि उसके आदमी "मुसलमानों के रक्त में घुटनों तक डूबे घोड़ों पर सवार आगे बढ़े।" पवित्र देश में पूजा करने के बाद बहुत से धर्मयोद्धा अपने देश वापस लौट आए। बारहवीं शताब्दी के मध्य तक मुसलमान पुनः उस भूमि पर अधिकार करने लगे और सन् ११८७ में उन्होंने यरूशलम पर भी पुनः कब्जा कर लिया।

बाद के धर्मयुद्ध—सबसे महत्त्वपूर्ण धर्मयुद्धों में एक तीसरा धर्मयुद्ध था। इसका नेतृत्व अपने समय

धर्मयुद्धों से इस बात का पता चलता है कि मध्यकाल में पश्चिमी यूरोप के लोगों पर चर्च का कितना प्रभाव था।
बेटमैन आर्काइव
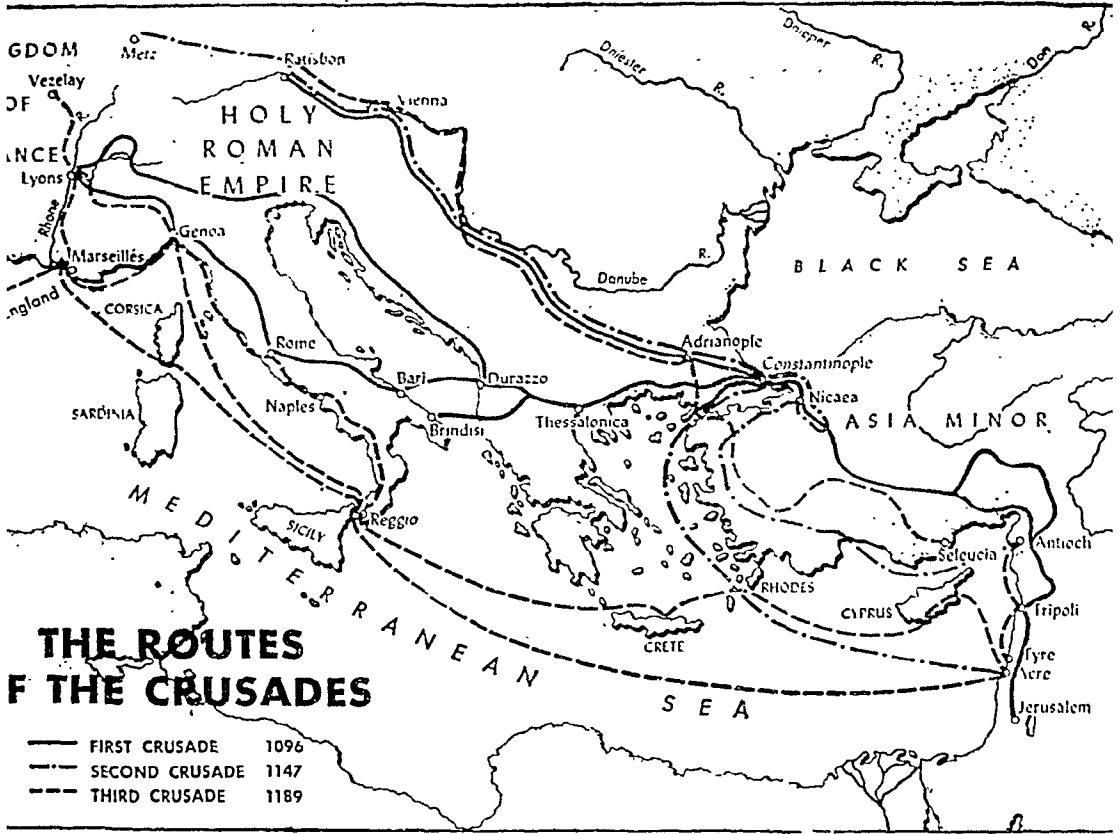
धर्म-युद्धों के मार्ग।

में यूरोप के तीन सर्वाधिक शक्तिशाली राजाओं, इंगलैंड के रिचर्ड द लायनहार्टेड, फ्रांस के फिलिप आगस्तस और जर्मनी के फ्रेडरिक बारबरोसा ने किया था। ये लोग मुसलमानों से जितनी घृणा करते थे, उतने ही आपस में एक दूसरे से डरते थे और अविश्वास करते थे। फ्रेडरिक बारबरोसा फिलस्तीन पहुँचने के पहले ही डूब गया और शेष दो राजाओं में झगड़ा हो गया। अन्ततः फिलिप आगस्तस वापस लौट गया और रिचर्ड अकेला लड़ता रहा। यरूशलम पर पुनः अधिकार न कर पाने के कारण उसने मुसलमान नेता सलादीन से संधि कर ली। संधि में यह व्यवस्था थी कि यरूशलम पर तुर्क अधिकार रहेगा परन्तु ईसाई पवित्र समाधि—ईसा की कब्र—पर पूजा करने आ सकते हैं।

यद्यपि धर्मयुद्ध जारी रहे पर उनका बल और व्यापक जन-समर्थन कम हो गया। धीरे-धीरे पश्चिमी यूरोप की जनता दूसरी अभिरुचियों की ओर मुड़ गयी और १२९१ ई० तक पवित्र देश में उनकी रही-सही राजनैतिक शक्ति भी खत्म हो गयी।

धर्मयुद्धों के परिणाम

धर्मयुद्धों के पहले से ही पश्चिमी यूरोप का जीवन परिवर्तित हो रहा था। धर्मयुद्धों का होना ही यह प्रमाणित करता है कि जनता के लिए परिवर्तन किसी भी दशा में होने ही वाले थे लेकिन धर्मयुद्धों के कारण वे शीघ्र आ गये। पूर्व जाने वाले लोग वापस आये तो उनका दृष्टिकोण पहले से अधिक व्यापक हो चुका था। देश वापस आने पर उनके कारण पूर्व में प्रचलित वस्तुओं, मसालों, सुगंधित द्रव्यों, महीन वस्त्रों, रेशम, पूर्वी कालीनों और टैपेस्ट्रियों की मांग बढ़ गयी। इन्हें लाने के लिए पूर्व और पश्चिम के बीच व्यापार में में अभिवृद्धि हुई। पूर्व से उन्होंने युद्ध के नये तरीके

सीखे और दीवार गिराने का यन्त्र तथा गोफण (कैटेपुल्ट) जैसे नये हथियार ले आये । इन नये हथियारों की क्षमता के कारण सामंतों को लकड़ी की गढ़ियों से अधिक सुदृढ़ गढ़ियाँ बनवानी पड़ीं। इसलिए पत्थर की गढ़ियाँ और गोलाकार मीनारें बनने लगीं । पूर्वीय साम्राज्य से धर्मयोद्धाओं को प्राचीन यूनानियों के भौगोलिक सिद्धान्तों का पता चला । परन्तु सबसे अधिक, उन्होंने एक व्यापक दृष्टिकोण और दूसरी जाति के बारे में बेहतर ज्ञान अर्जित किया। यात्रा में उनकी अभिरुचि बढ़ी, वे अधिक जागरूक और अधिक जिज्ञासु हो गये । ये सारी बातें शायद धर्मयुद्धों के बिना भी धीरे-धीरे आतीं पर धर्मयुद्धों के कारण इनके आने में निःसंदेह शीघ्रता हुई ।

१. बतलाइए कि किस तरह आर्थोडाक्स चर्च रोमन कैथोलिक चर्च से अलग हो गया ?
२. इनमे से किस चर्च का शासन पर अधिक प्रभाव था ? क्यों ?
३. धर्मयुद्ध कब और किस तरह शुरू हुए ? वे कब तक चलते रहे ?
४. लोगों के धर्मयुद्धों में सम्मिलित होने के प्रधान कारण क्या थे ?
५. अर्बन द्वितीय, रिचर्ड द लायनहार्टेड, फिलिफ आगस्तस, फ्रेडरिक बारबरोसा और सलादीन कौन थे ?
६. पहले और तीसरे धर्मयुद्ध की कहानी बतलाइए ।
७. धर्मयुद्धों के प्रमुख परिणामों की सूची लिखिए ।

विचार-विमर्श के लिए प्रश्न

१. किस अर्थ में रोमन साम्राज्य का स्थान शार्लमेन के साम्राज्य ने नहीं, मध्ययुगीन चर्च ने लिया था ?

२. संत बेनेडिक्ट के शासन के अनुसार संन्यासियों को हाथ का काम और अध्ययन करना चाहिए । दुनिया के लिए इन व्यवस्थाओं का क्या महत्त्व था ?

३. संन्यासी लोग किस अर्थ में धर्म के ही नहीं संस्कृति के भी प्रसारक थे ?

४. ग्रेगरी महान् को रोम का शासन ग्रहण करने के पूर्व ही क्यों रोम में सबसे अधिक आदर का स्थान प्राप्त था ?

५. आप की पुस्तक किस तरह मध्य युग की पुस्तकों से अधिक श्रेष्ठ है ?

६. मध्ययुग में कोई प्रज्ञावान् व्यक्ति अपने समय का सार-ज्ञान अर्जित कर सकता था । क्या यह आज सम्भव है ?

७. यदि आप अचानक किसी मध्यकालीन स्कूल में पहुँच जाएँ तो आपको अपने आज के स्कूल की किन बातों का वहाँ न होना अखरेगा ।

८. मध्यकालीन गिरजाघर किस तरह मध्य युग के मूलभाव की अभिव्यक्ति हैं ?

९. पूर्वीय आर्थोडाक्स चर्च और रोमन कैथोलिक चर्च के अलग-अलग हो जाने का क्या आज की पश्चिमी यूरोप और पूर्वी यूरोप की संस्कृतियों की भिन्नता पर कोई असर है ?

१०. पूर्वी सम्राट् ने सहायता के लिए किसी राजा से प्रार्थना करने के बजाय पोप से क्यों प्रार्थना की ?

११. धनुष-बाण या बन्दूक तथा वायुयान के बिना लड़े गये किन आन्दोलनों को सही-सही धर्म-युद्ध कहा जा सकता है ?

इतिहास के उपकरणों का प्रयोग

एक. नाम, तिथियाँ और स्थान

१. इनकी व्याख्या करिए ।

ए० बी० उपाधि; कैंटरबरी के आर्कबिशप; बेनेडिक्टीय शासन; गिरजाघर; वृत्तांत; ईश्वर की यही इच्छा है ।···संन्यासी, गोथिक वास्तुशैली; वनवासी; धर्मद्रोही; धर्मद्रोह; पवित्र देश; पवित्र समाधि; मूर्तिभंजक विवाद; सचित्र पांडुलिपियाँ; एम० ए० उपाधि; मठ, संन्यासी; पोप··· पी-एच० डी० उपाधि; रोमन-समान वास्तु-शैली, इंद्रियनिग्रह, दैन्य और आज्ञापालन का नियम; सात लिबरल आर्ट विद्याएँ ।

२. यह तिथि क्यों स्मरणीय है ?

४५०

३. मानचित्र में इन स्थानों को देखिए ।

एशिया माइनर, एविन्यान; बोलोना;

कैम्ब्रिज; कैन्टरबरी चार्ट्रेस; चेस्टर; क्लेरमांट; कोलोन; एली; हिप्पो; पवित्र देश; यरूशलम; लातीनी साम्राज्य; आक्सफोर्ड; पेरिस; रीम्स; विन्चेस्टर; यार्क।

४. ये लोग कौन थे।

टामस एक्विनास; संत आगस्तीन, फ्रेडरिक बारबरोसा; संत बोनिफेस; ग्रैगरी प्रथम; इन्नोसेंट तृतीय; जान; लिओ प्रथम; फिलिप आगस्तस; रिचर्ड द लायनहार्टेड; सलादीन; केन्टरबरी का संत आगस्तीन; हिप्पो का संत आगस्तीन; संत बेनेडिक्ट; संत पैट्रिक; अर्बन द्वितीय।

दो. क्या आप अपने विचार स्पष्ट प्रकार सकते हैं।

१. कक्षा का कोई विद्यार्थी यह पता लगाये कि बी० ए०, एम०ए० और पी-एच० डी० की उपाधि पाने के लिए आजकल कितनी शिक्षा की जरूरत पड़ती है ?

२. मान लीजिए कि राबिंसन कृत "रीडिंग्स इन यूरोपियन हिस्ट्री" में पृ० ३१२-३१६ पर क्लेरमांट में दिये गये पोप अर्बन के भाषण दिये जाते समय आप वहाँ उपस्थित थे। विभिन्न प्रकार के लोगों की प्रतिक्रिया वर्णित करते हुए दृश्य का वर्णन लिखिए।

३. धर्मयुद्धों पर लिखी गयी किसी पुस्तक या विश्वकोश में 'बच्चों के धर्मयुद्ध' के बारे में पढ़िए और उसका विवरण कक्षा में बताइए।

४. यदि आपके पड़ोस में कोई आधुनिक गोथिक या रोमन-समान शैली का गिरजाघर हो तो उसके पादरी से कक्षा के कुछ लोग उसकी संरचना के बारे में पूछें और कक्षा में आकर बताएँ।

५. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक पर अनौपचारिक वाद-विवाद का आयोजन करिए।

संकल्पित : कि धर्मयुद्ध निरर्थक थे। संकल्पित: कि संन्यासियों ने दुनियाँ की संस्कृति में योग दिया। संकल्पित : कि पश्चिमी संन्यासी पूर्वी आश्रमवासी साधुओं की अपेक्षा विश्व के लिए अधिक लाभकर थे। संकल्पित : कि मध्ययुगीन गिरजाघरों को बनाने वाले कारीगरों में आधुनिक कारीगरों की अपेक्षा अधिक कलाबुद्धि थी।

तीन. ब्लैकबोर्ड पर

दो विद्यार्थी मिलकर मध्ययुग में चर्च के कार्यों की सूची बनाकर कक्षा के विद्यार्थियों के लिए ब्लैक बोर्ड पर लिखें। इसके समानान्तर यह बताया जाए कि वे कार्य आजकल अमरीका में कौन-सी संस्थाएँ करती हैं।

चार. सूचनापट्ट के लिए

१. अ. प्रथम, तृतीय या बच्चों के धर्मयुद्ध में शामिल होने को लोगों को प्रेरित करने के लिए पोस्टर बनाइए।

ब. एक मध्ययुगीन विश्वविद्यालय के विज्ञापन के लिए एक पोस्टर बनाइए।

स. किसी संन्यासी, साधुनी या धर्मयोद्धा का चित्र बनाइए।

२. न्यूयार्क नगर के मेट्रापालिटन संग्रहालय से आप सचित्र पांडुलिपियों के कुछ पोस्ट कार्ड-चित्र खरीद सकते हैं। विषय के किसी पहलू को चित्रित करने के लिए या सूचनापट्ट के लिए कुछ ऐसे पोस्टकार्ड-चित्र प्राप्त करिए।

पाँच. कला और इतिहास

१. रोमन-समान और गोथिक शैली के कुछ गिरजाघरों के चित्र संग्रहीत करिए। उन्हें एक पुस्तिका में चिपकाइए और हर चित्र की बगल में उसकी वास्तुशैली, गिरजाघर का स्थान और शिखरों, मेहराबों और मूर्तियों आदि उसके कुछ अंगों की ओर संकेत करिए। मुखपृष्ठ पर यूरोप का एक मानचित्र बनाइए जिसमें हर गिरजाघर का स्थान दिखलाया गया हो।

२. यूरोप की यात्रा किये हुए अध्यापक या किसी अन्य आदमी को कक्षा में किसी या कई मध्ययुगीन गिरजाघरों के चित्र दिखलाने और इनके बारे में बतलाने के लिए बुलाइए।

३. यदि आपके शहर में कोई संग्रहालय हो जिसमें मध्ययुगीन मूर्तिशिल्प, अभिरंजित शीशे या काष्ठशिल्प के नमूने हों तो संग्रहालय के अधिकारी द्वारा कक्षा के सामने उनकी व्याख्या कराने की व्यवस्था करिए।

४. पारदर्शी कागज पर अभिरंजित शीशे की

खिड़की का एक छोटा नमूना बनाइए। जोड़ों और किनारे के लिए गहरा-भूरा कागज लगाइए। उपयुक्त प्रभाव के लिए उसे खिड़की पर लगाइए। आपके कला अध्यापक इसके लिए उपयोगी सुझाव दे सकते हैं या आप पुस्तकों से सहायता ले सकते हैं।

छह. **कक्षा समिति का कार्य :**

१. एक मठ का नमूना बनाने के लिए तीन या चार विद्यार्थियों की एक समिति बनाइए। इमारतें मोटे कागज की बनी हों। स्पंज को काटकर हरे रंग में रंग कर उन्हें दियासलाई की तीलियों पर चिपकाकर पेड़ बनाइए। भूमि, उपवनों और इमारतों पर नाम की चिप्पियाँ लगाइए।

२. सूचना-पट्ट पर यूरोप का बड़ा मानचित्र बनाने के लिए दो या तीन विद्यार्थियों की एक समिति बनाइए। उस पर प्रमुख रोमन-समान इमारतों वाले स्थान दिखलाने के लिए एक रंग की चिप्पियाँ लगाइए। दूसरे रंग की चिप्पियों से महत्त्वपूर्ण गोथिक इमारतों के स्थान दिखलाइए।

सात. **चित्र अध्ययन**

इस अध्याय में पृष्ठ १८८ पर दिये गये चित्र में सेवकों, बिशपों, पोप और योद्धा सामंतों को पहचानिए। फ्राँसीसी वस्त्रभूषा पर वहाँ के राजकीय चिह्नों को देखिए।

१६ सामंतवाद और नागरिक जीवन से महान् परिवर्तन हो गये

शार्लमेन के साम्राज्य के छिन्न-भिन्न होने के बाद पश्चिमी यूरोप में कानून और व्यवस्था बहुत कम रह गयी। राजाओं ने नाममात्र को अपनी स्थिति बनाये रखी पर उनके हाथों में बहुत कम शक्ति थी। शासन छोटी इकाइयों में बँट गया। हर इकाई एक स्थानीय लार्ड या जमींदार के अधीन होती थी जो भूमि का मालिक होता था और उसे व्यवस्था बनाये रखने का अधिकार होता था। कमजोर आदमी, जिनके पास सुरक्षा के साधन नहीं होते थे, अपने को सशक्त आदमियों की सेवा में अर्पित कर देते थे और अपनी सैनिक सेवाओं के बदले में भूमि पाते थे।

सामंतवाद द्वारा भूमि का विभाजन

वास्तविक सत्ता हाथ से निकल जाने के बावजूद राजा की स्थिति बनी रही। उसे देश की सारी भूमि का मालिक समझा जाता था। स्थानीय लार्डो को जमीन उसके द्वारा प्रदत्त होती थी और इस तरह वह उनका 'स्वामी' (लार्ड) होता था और वे उसके सामंत ('वासल') होते थे। सामंत अपने को मिली भूमि के कुछ भाग ऐसे लोगों को दे सकता था जिन्हें उसके आश्रय की जरूरत होती थी। इस तरह वह इनका 'लार्ड' हो जाता था और वे उसके 'आश्रित' या सामंत हो जाते थे। इस तरह प्रदत्त भूमि को 'फीफ' या 'फ्यूड' और इस पद्धति को 'फ्यूडलिज्म' या सामंतवाद कहते थे। इस पद्धति में लोग सुरक्षा या आश्रय के लिए राजा के नहीं, स्थानीय लार्डो के मुखापेक्षी होते थे और उसी के प्रति वफादार होते थे।

सामंतवाद का उद्भव फ्रांस में हुआ था और वहीं यह अपनी पराकाष्ठा पर पहुँचा। यह हर देश में अलग तरह से विकसित होता हुआ पश्चिमी यूरोप के दूसरे देशों में भी फैल गया। वैसे सामंतवाद के कुछ पहलू हर जगह पाये जा सकते हैं।

सामंत होने का समारोह—सामंत बनने का समारोह प्रायः बहुत ही तड़क-भड़क से होता था। सामंत बनने वाला आदमी लार्ड की गढ़ी में आता था जहाँ इस अवसर के लिए और भी लोग एकत्रित होते थे। लार्ड अपनी गढ़ी के बड़े कमरे में बैठता था और यह आदमी उसके सामने घुटनों के बल झुकता था, अपने हाथ लार्ड के हाथ में देता था और अपने को कुछ 'फीफ' अर्थात् 'क्षेत्र' के लिए "लार्ड का आदमी" घोषित करता था। इस क्रिया को होमेज या लार्ड का आदमी बनना कहते थे। तब लार्ड उस आदमी को उठाकर खड़ा करता था और उसे शान्ति का चुम्बन देता था जिसके बाद सामंत बाइबिल या किसी पवित्र चिह्न पर हाथ रख कर "स्वामिभक्ति" की शपथ लेता था। अंत में लार्ड उस आदमी का 'फीफ' के साथ 'विनियोग' कर देता था, अर्थात् उसे भूमि दे देता था। मध्ययुग के प्रारम्भ में जब बहुत से लोग लिखना नहीं जानते

थे, समारोह के इस भाग में उन्हें फीफ का स्वामित्व कागज पर लिखकर नहीं दिया जाता था, बल्कि भूमि का प्रतिनिधित्व करने वाली कोई शाखा, मिट्टी का डला, दस्ताना, तलवार या कोई दूसरी वस्तु दी जाती थी। बाद में जब अधिक लोग लिखना सीख गये तो संविदा पत्र लिख कर हस्ताक्षर होने लगे। इस तरह होमेज, 'स्वामिभक्ति' और 'विनियोग' के पश्चात् वह आदमी लार्ड का सामन्त (आश्रित, 'वासल') हो जाता था।

सामंत के कर्त्तव्य—सामंतों के कर्त्तव्य बहुत सुनिश्चित होते थे पर स्थान-स्थान पर वे कुछ अलग-अलग होते थे। वैसे निम्नलिखित तीन कर्त्तव्य लगभग सभी जगहों में पालनीय माने जाते थे। (१) सामंत को आवश्यकता पड़ने पर प्रतिवर्ष कुछ दिन, प्रायः चालीस दिन, अपने लार्ड की ओर से लड़ाई में भाग लेना पड़ता था। (२) कहा जाने पर उसे लार्ड के दरबार में अवश्य हाजिर होना पड़ता था। (३) अवसर पड़ने पर उसे तीन मौकों पर नजराना (एड) देना जरूरी होता था। लार्ड के बड़े लड़के के 'नाइट' होने के अवसर पर, बड़ी लड़की के विवाह के अवसर पर या लार्ड किसी का बन्दी बन जाए तो उसके उद्धार के लिए धन माँगे जाने पर। लार्ड को सामंत द्वारा दिया गया धन 'एड' अर्थात् नजराना कहलाता था। इसके बदले में लार्ड पर सामंत की जान-माल की सुरक्षा की जिम्मेदारी होती थी।

सामंतवाद और राजा की शक्ति—सामंत को क्षेत्र (फीफ) उसके जीवन भर के लिए ही प्रदत्त होता था। धीरे-धीरे इसके पिता से ज्येष्ठ पुत्र के अधिकार में जाने का रिवाज चल पड़ा। परन्तु हर पीढ़ी में सामंत होने के समारोह की प्रक्रिया होती थी, आज की तरह जमीन के स्वामित्व या तबादले का नियम तब नहीं था। तिस पर भी जीवन भर के लिए क्षेत्र अधिकार में रहने की निश्चितता के कारण बड़े सामंत अपने को राजा से स्वतंत्र अनुभव करने लगे। छोटे सामंत भी, जो किसी बड़े सामंत के आश्रित होते थे, राजा के प्रति कोई वफादारी नहीं महसूस करते थे। इस तरह सामंत पद्धति में कुछ सामंतों के हाथ में राजा से भी अधिक शक्ति होती थी।

सामन्तवाद का रूप हर देश में अलग-अलग था, लेकिन इसकी मूल प्रवृत्तियां सर्वत्र एक जैसी थीं। सामन्तवाद एक शासन-प्रणाली, एक वर्ग-व्यवस्था और शक्तिशाली लोगों द्वारा जमीन को कब्जे में रखने की एक प्रणाली था।
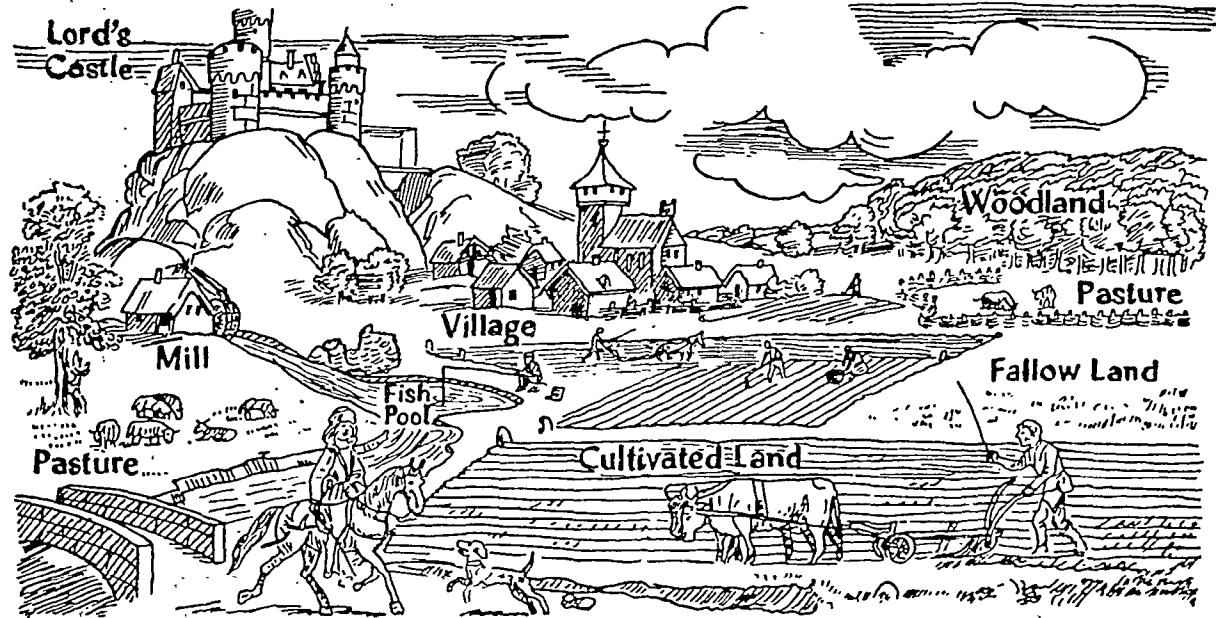
धर्म सन्धि—छोटे अमीरों के बीच निरन्तर युद्ध चलते रहते थे जबकि राजा के सामन्त अक्सर आपस में लड़ते रहते थे और कभी-कभी राजा से भी लड़ पड़ते थे। ये युद्ध किसानों द्वारा काम में लाई जाने वाली जमीन पर होते रहते थे और इसमें बर्बाद होने वाली सम्पत्ति या फसल की कोई परवाह नहीं करता था। चर्च ने अमीरों के साथ ही साथ किसानों पर पड़ने वाले युद्ध के बुरे प्रभावों को देख कर इतनी अधिक लड़ाइयाँ होने पर रोक लगाने की कोशिश की। उसके अनुसार छुट्टियों के दिन, ईस्टर के पहले चालीस दिनों पर, और हर हफ्ते के बृहस्पतिवार, शुक्रवार, शनिवार और रविवार के दिनों पर युद्ध की वर्जना करने के लिए धर्म-संधि को घोषणा की गई। युद्ध के दौरान किसानों, व्यापारियों और स्त्रियों को सताने की मनाही की गई। पर धर्म संधि को लागू करने में चर्च को कठिनाई अनुभव हुई।

गढ़ियाँ— बड़े-बड़े अमीर अपनी जागीरों में बनी गढ़ियों में रहते थे। गढ़ियों का प्रमुख उद्देश्य आराम नहीं था बल्कि सुरक्षा थी। इनके चारों ओर मजबूत दीवारें घिरी रहती थीं और दीवारों के कोनों पर पहरे की चौकियाँ बनी रहती थीं। दीवारों के चारों ओर एक खाई खुदी रहती थी जिसमें कीचड़ और पानी भरा रहता था ताकि किसी शत्रु को इन्हें पार करके सीढ़ियाँ लगाने में और दीवार पर चढ़ने में कठिनाई हो। इसके फाटक पर एक उठाऊ पुल बना रहता था जिसे जरूरत के समय लोगों को भीतर करने के लिए गिराया और दुश्मनों को रोक रखने के लिए उठाया जा सकता था। लोहे की एक अतिरिक्त जाली जिसे "पोर्टकुलिस" कहा जाता था, फाटक की रक्षा के लिए लगी रहती थी। दीवारों के भीतर आँगन होता था। गढ़ी का सबसे मजबूत और सर्वाधिक सुरक्षित स्थान अन्तर्कोट या "डंजन" हुआ करता था। यही एक ऐसा कक्ष था, जहाँ उनके परिवार के अधिकांश क्रिया-कलाप होते थे। यहीं वे खाते थे, यहीं मनोरंजन करते थे, और यदि किसी हमले में कोई बाहरी दीवार गिर पड़ी

बेटमैन आर्काइव

जो आदमी हाथ में कोड़ा लिए हुए है, वह बत्तखों को हवा में उड़ा रहा है ताकि बाज उनके ऊपर झपट्टा मार सकें। हाल्वीन का एक चित्र।

तो गढ़ी के सभी लोग रक्षा के लिए अन्तर्कोट में चले जाते थे।

गढ़ियों का नाम सुनने पर ऐसा लगता है जैसे वे बहुत रोमानी और दिलचस्प जगहें हुआ करती थीं, लेकिन असल में वे सीलनदार, ठंडी और अंधेरी हुआ करती थीं, उनमें एक मात्र गर्मी अंगीठियों से प्राप्त होती थी, जो होती तो काफी बड़ी थीं, लेकिन वे पूरे कक्ष को गर्म नहीं रख सकती थीं। खिड़कियों और दरवाजों के बेतुके पल्लों के कारण हवा खिंचकर भीतर आती रहती थी। गढ़ियों में धुंधलका सा छाया रहता था क्योंकि उनमें जो खिड़कियाँ होती भी थीं वे बहुत ऊंचाई पर हुआ करती थीं और वे दीवारों में बने मोखे जैसी होती थी, जिनसे बाहर के किसी दुश्मन को भीतर तीर मार पाना बहुत मुश्किल पड़ता था। फर्शों पर नरकुल या सरकंडे और फूल बिछे रहते थे। जब खाना खाने का समय आता था, तब खम्भों के ऊपर तख्ते बिछा दिये जाते थे जो मेज का काम करते थे। मेजों का जूठन कुत्तों के खाने के लिए फर्श पर फेंक दिया जाता था। अमीर लोग कई गढ़ियाँ रखना पसन्द करते थे। इससे जब एक गढ़ी को, जिसमें वे रहते थे, हवादार बनाने के लिए कुछ दिन खुला रखने की या उसमें नए सरकण्डे बिछवाने की जरूरत पड़ती थी, तब वे उनमें से किसी दूसरी गढ़ी में जा सकते थे।

गढ़ी में रहने वाले परिवार का प्रिय खेल शत-

ज था, साथ ही चौसर, चैकर्स और ताश भी खेले जाते थे। इंग्लैंड में बड़े दिनों पर बच्चे और वयस्क सभी आँखमिचौनी खेलते थे। घर के भीतर और बाहर खेला जाने वाला टैनिस, और लोमड़ी का शिकार करने जाना लोकप्रिय मनोरंजन थे। लेकिन इन मनोरंजनों के बावजूद भी मध्य युग के अमीरों और उनकी महिलाओं को बहुतेरे दिन निष्क्रियता और मनहूसियत में बिताने होते थे।

१. सामन्तवाद अस्तित्व में क्यों आया ?
२. कोई आदमी सामन्त कैसे बनता था ?
३. किसी सामन्त के क्या कर्त्तव्य होते थे ? लार्डों के क्या कर्त्तव्य थे ?
४. धर्म-संधि जारी करने के क्या कारण थे और इसमें किन बातों की व्यवस्था की गई थी ?
५. मध्ययुगीन गढ़ियों का वर्णन करो।
६. उन खेलों और दूसरे मनोरंजनों का नाम गिनाओ जो मध्ययुग में काफी प्रचलित थे।

नाइट की उपाधि—शायद सबसे पहले नाइट जर्मनी के तरुण योद्धा हुआ करते थे, जो अपने साथ अपने हथियार लिए चलते थे और समूचे कबीले के समक्ष प्रस्तुत किये जाते थे। एक सादा से समारोह द्वारा नाइटों को कबीले का समुचित रूप से सदस्य बना लिया जाता था। ये प्रारम्भिक नाइट बहुत भयानक योद्धा होते थे। वे अच्छे तैराक होते थे और फरसे तथा तलवार चलाने में सिद्धहस्त होते थे।

बाद में मध्ययुग में शौर्य (शिवैलरी) का मानक आचार विकसित हो गया जो फ्रांसीसी भाषा के एक शब्द से लिया गया था जिसका अर्थ होता है "अश्वारोही"। शौर्य के आदर्श ईसाइयत के अनुकूल होते थे और इसलिए दूसरी दृष्टियों से उस निर्मम समाज में, जिसमें जिसकी लाठी उसकी भैंस का नियम ही लागू था, इनका मानवोचित प्रभाव पड़ता था। नाइटों से उदारता, भद्रता, दुर्बलों की रक्षा और सम्मानित जीविका और सत्य के लिए लड़ने में निर्भीकता की प्रतिज्ञा कराई जाती थी। वे हमेशा अपने प्रतिष्ठित मान के अनुरूप ही जीवन नहीं बिताते थे, लेकिन शौर्य उनको इसके लिए प्रयत्नशील होने का एक आदर्श प्रदान करता था।

नाइट बनने की इस 'परम्परा' में कोई अफसर नहीं हुआ करता था, इनका कोई प्रत्यक्ष गठन नहीं था, और कोई जन्म से नाइट नहीं होता था लेकिन नाइट होना इतना सम्मानित समझा जाता था कि राजे भी नाइट की उपाधि पाने को लालायित रहते थे। कोई आदमी सिर्फ किसी दूसरे नाइट से ही नाइट की उपाधि पा सकता था, और उसे यह उपाधि कोई ऐसा बहादुरी का काम करने पर ही दी जाती थी जो इस विशिष्ट उपाधि के उपयुक्त होता था।

नाइट की उपाधि के लिये शिक्षा—अमीरों के लड़कों को अक्सर इस सम्मान को प्राप्त करने के लिए शिक्षा दी जाती थी। जब कोई लड़का सात साल का हो जाता था, तब उसे किसी अमीर की गढ़ी में भेजा जाता था। जहाँ जाकर वह भृत्य बन जाता था। भृत्य के रूप में वह गढ़ी की महिलाओं की परिचर्या करता था और दूसरी चीजों के साथ ही साथ तराशने और खाना परोसने का काम सीखता था, लेकिन सबसे बड़ी बात थी शिष्टता और दूसरों का लिहाज करने की शिक्षा। उसे उन सन्तों की कहानियाँ सुनाई जाती थीं, जिन्होंने ईसाइयत की उन्नति के लिए राक्षसों और दैत्यों से युद्ध किया था। पादरी आम तौर से नाइटों को पढ़ना लिखना सिखाते थे। वह शिकार करना, नाचना और संगीत-वाद्यों को बजाना सीखता था।

चौदह या पन्द्रह साल की उम्र होने पर भृत्य की शिक्षा का प्राथमिक रूप समाप्त हो जाता था और वह स्क्वायर बन जाता था। इस रूप में उसे घुड़सवारी, हथियार चलाने और युद्ध का प्रशिक्षण दिया जाता था। उसका प्रमुख कर्त्तव्य था अपने स्वामी के जिरह-बख्तर को लक-दक बनाए रखना। जब उसके स्वामी किसी युद्ध में भाग लेने को जाते थे या टूर्नामेण्ट में भाग लेते जाते थे तो वह उनके साथ जाता था। मालिक के घायल हो जाने पर यह आशा की जाती थी कि स्क्वायर उसे युद्धस्थल से दूर किसी सुरक्षित स्थान पर उठा ले जाएगा।

नाइट को उपाधिदान—किसी स्क्वायर को नाइट की उपाधि देने का समारोह काफी गंभीर और प्रभावशाली हुआ करता था। वह युवक अपने जिरह-बख्तर को लेकर चर्च में जाता था जहाँ वह सारी रात सिजदे में झुका रहता था। दूसरे दिन सुबह को स्नान करने और वस्त्र पहनने के बाद वह चर्च की प्रार्थना में सम्मिलित होता था। चर्च से लौटने के बाद उसे जिरह-बख्तर पहनाया जाता था और फिर वह सामन्त के सम्मुख सत्यनिष्ठा-पूर्वक झुकता था, और फिर उसे नाइट की उपाधि मिलती थी। पुराना नाइट उसके कंधे पर तलवार के फलक वाले भाग से तीन बार यह कहते हुए हल्की चोट करता था, "ईश्वर के सन्त माइकेल और सन्त जार्ज के नाम पर मैं तुम्हें नाइट की उपाधि प्रदान करता हूँ; बहादुर बनो, शिष्ट बनो, वफादार बनो।"

जागीर—मध्य काल के अधिकांश लोग अमीर नहीं हुआ करते थे। समाज के पांच में से चार आदमी सामन्त-व्यवस्था को अपने श्रम के बल पर चलाते थे, क्योंकि अमीर लोग सिवाय सेना में जाने के दूसरा कोई काम नहीं करते थे। जनसंख्या का यह बड़ा भाग मुख्यत: किसानों का होता था। हर अमीर परिवार एक जागीर के बल पर जीवित रहता था। जागीर ज़मीन का एक बहुत बड़ा हिस्सा होता था और एक-एक सामन्त के पास ऐसी कई जागीरें हुआ करती थीं। हर जागीर में एक गढ़ी या जागीरदार का भवन हुआ करता था जिसमें सामन्त निवास करता था, एक गाँव होता था जिसमें नौकर-चाकर रहते थे, एक चर्च होता था, खेत होते थे, फलों के बगीचे होते थे, चरागाह होते थे और वाटिकाएँ होती थीं। हर जागीर में एक दरबार हुआ करता था जिसका सभापति सामन्त होता था। चूंकि जागीर प्राय: दूर-दराज में होती थी, इसलिए यह अपने आप में ही हर दृष्टि से पूर्ण हुआ करती थी।

किसान—जागीर के किसान दो वर्गों में बँटे रहते थे। स्वतन्त्र जन और सर्फ या चाकर। चाकर उस जमीन पर ही रहने को बाध्य थे जिस पर वे बसर करते थे। वे बिना सामन्त की अनुमति के जागीर छोड़कर जा नहीं सकते थे, न ही बिना उसकी अनुमति के शादी कर सकते थे। यदि कोई नौकर भाग जाये और एक साल और एक दिन बाहर ही रह जाए तो वह स्वतन्त्र कर दिया जाता था, लेकिन ऐसे स्थान बहुत कम ही थे जहाँ वह भाग कर जा सकता था। आस-पास की जागीरों में उसे प्रवेश नहीं मिल सकता था और नगरों में उसे जीविका चलाने के लिए बहुत कम ही काम मिल पाते थे। जब-तब सामन्त अपने किसी चाकर को किसी असाधारण सेवा के उपलक्ष्य में स्वतन्त्र बना दिया करता था। स्वतन्त्र हो जाने पर वह मजदूरी पर काम कर सकता था या यदि उसे कोई नया मालिक मिल जाए तो उसके यहाँ जा सकता था।

काश्तकार हाथ से बीज बोता था। उसका सहायक चिड़ियों को तीर मार रहा है ताकि वे बीजों को खा न जाएं।

बैटमैन आर्काइव

किसानों के गांव—जागीर का वह छोटा सा गाँव, जिसमें चाकर रहते थे, एक कमरे की झोंपड़ियों से बना होता था जिनमें कोई खिड़की नहीं होती थी। इसकी दीवारें आस-पास से जुटाए हुए पत्थरों को चुनकर बनाई जाती थीं और छाजन छप्पर की हुआ करती थी। नौकर अक्सर अच्छी जमीन के फर्श पर ही आग जलाया करते थे और उसका धुंआं दीवारों में बनी बहुतेरी दरारों से होकर निकलता रहता था। मौसम खराब होने पर उनकी मुर्गियाँ और सूअर भी अक्सर शरण लेने के लिए झोंपड़ी में ही आ जाते थे। मकान में सामान बहुत कम और बेढंगे हुआ करते थे। परिवार एक कोने में या एक मचान पर सो रहता था।

किसानों का जीवन—इन मकानों में रहने वाले परिवारों का जीवन बड़ा रद्दी हुआ करता था। बहुतेरे बच्चे पैदा होते थे, लेकिन चूँकि सफाई बहुत कम होती थी और दवा-दारू के बारे में भी अच्छा ज्ञान नहीं था, इसलिए मृत्यु का अनुपात काफी ऊँचा होता था। किसानों के पास एक ही पहनावा होता था जो कन्धे से लेकर घुटने तक चला जाता था, कमर पर इसे एक रस्सी द्वारा बाँध रखा जाता था। खाने-पीने का भी उनके लिए उतना ही अभाव था जितना कपड़े का। आम तौर से वे बिना खमीर डाली हुई रूखी सी जौ की रोटी, फली, प्याज और बंदगोभी खाते थे। हालांकि किसानों को जागीर में पड़ने वाले नदियों-नालों में मछलियाँ पकड़ने की अनुमति थी, लेकिन फिर भी माँस उनको छठे-छमासे ही मिल पाता था। यदि जागीर में कहीं थोड़ा-बहुत नमक मिलता भी था तो उसका उपयोग बहुत किफायत से करना पड़ता था। मीठे के नाम पर मध्ययुग के लोगों को केवल शहद मिल पाता था। जब कभी सूखा पड़ता था, या जब लड़ाई में या शिकारियों के दल द्वारा फसलें रौंद दी जाती थीं, तब किसानों को बहुत कष्ट उठाना पड़ता
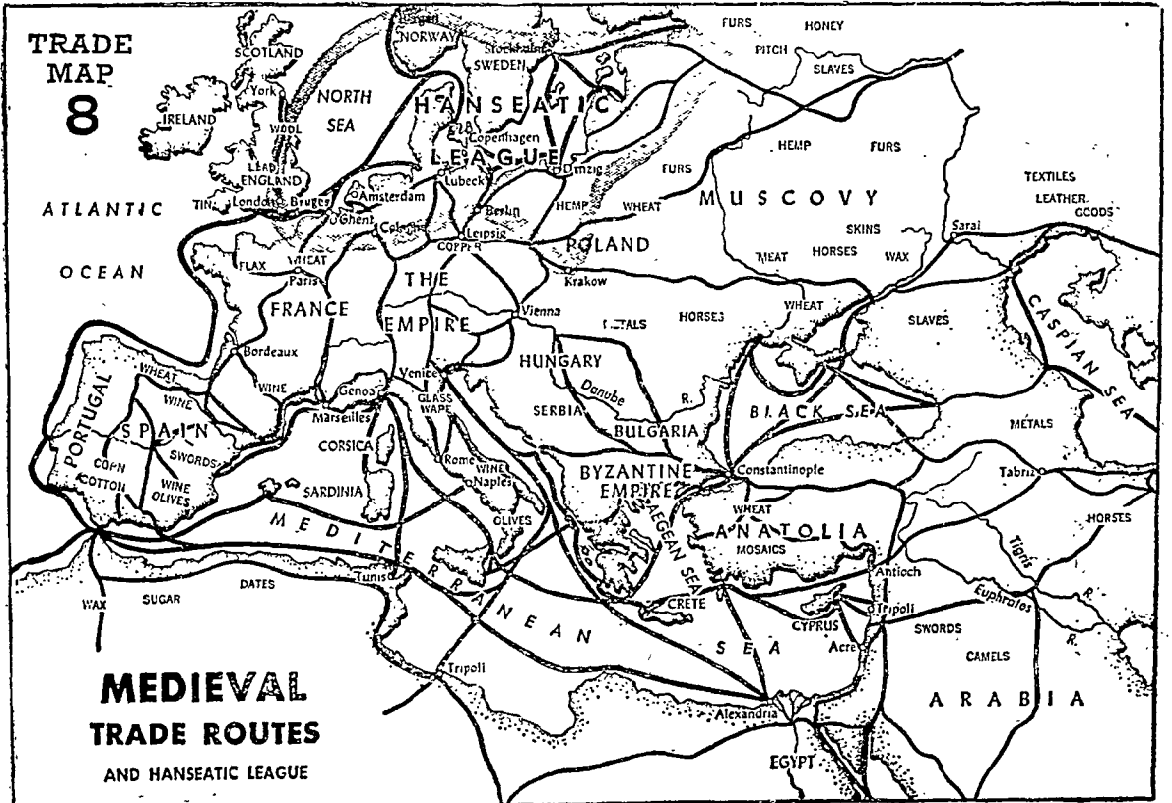
व्यापार नक्शा ८—मध्ययुगीन व्यापारिक मार्ग।

था। उनमें से बहुतेरे तो भूखों मर जाते थे।

चाकरों का काम—जिन खेतों में चाकर फसलें बोते थे, वे अक्सर गाँव से बहुत दूर हुआ करते थे। खेतीबारी के योग्य जमीन तीन भागों में बंटी रहती थी, जिसमें हर साल दो खेतों में बोआई होती थी। तीसरे खेत को यह मान कर छोड़ दिया जाता था कि इससे खेत की उर्वरता बढ़ती है। हर चाकर को जमीन की कुछ पट्टियां दी जाती थीं, हर पट्टी खेत के उन दोनों भागों के विभिन्न हिस्सों में पड़ती थी ताकि किसी एक ही चाकर को सारी की सारी अच्छी जमीन न मिल जाए। चाकर अपनी पट्टियों में जो अनाज पैदा करता था, उसका एक निश्चित हिस्सा उसे सामन्त को देना पड़ता था और कुछ निश्चित दिनों पर वह सामन्त की बेगार करता था। इस दिनों पर वह सामन्त की भेड़ों, सूअरों, बत्तखों आदि की देखभाल करता था और इसके साथ वे सारे काम भी करने होते थे जिनको खेत पर करना जरूरी होता था। अधिकांश लोगों का जीवन बड़ा निराशाभरा और कठोर था।

चाकरों की स्थिति में परिवर्तन—सभी किसान अपने मालिकों के प्रति विनम्र बने रहते थे और इस तीखे वर्गभेद को एक नितान्त स्वाभाविक बात मानते थे। फिर भी, यह बात उनमें से सभी के साथ इतनी स्वाभाविक नहीं बनी रही। उत्तर-मध्य-युग में ज्यों-ज्यों पैसा अधिक प्रचलित होता गया, त्यों-त्यों खेती के मजदूर इस बात की माँग करने लगे कि उन्हें मजदूरी के रूप में पैसे दिये जायें। फिर सन् १३४८-१३४९ में एक महामारी, जो 'काली मौत' के नाम से मशहूर है, समूचे यूरोप में फैल गई। इसने यूरोप में बहुत अधिक संहार किया। इसकी भयंकरता समाप्त होने तक पश्चिमी यूरोप की जनसंख्या का एक-तिहाई भाग मृत्यु का शिकार हो चुका था। इससे मजदूरों का मिलना मुश्किल हो गया, और स्वतन्त्र मजदूरों के वेतन बढ़ा दिए गए और चाकर अब अपने काम के एवज में पैसे की माँग करने के लिए पहले से अच्छी स्थिति में आ गए। जब उनकी मांग पूरी नहीं हुई तब पश्चिमी यूरोप के अनेक भागों में क्रान्ति फैल गई। सबसे गंभीर क्रान्ति, जिसे किसानों की क्रान्ति कहा जाता है, इंग्लैंड में सन् १३८१ में हुई। अपने बीच उत्तेजना फैलाने वाले लोगों के नेतृत्व में, जो इधर-उधर घूम रहे थे, उस देश के किसान एकत्र हुए और राजा से अपने अधिकारों की माँग करने के लिए लन्दन पहुँचे।

राजा तथा अमीरों ने मिलकर इस विद्रोह को दबा दिया। जो भी हो, अंग्रेज शासक इस रक्त-पात से बहुत अधिक भयभीत हो उठे और बहुतेरे चाकरों को सुविधाएँ प्रदान करने लगे। एक शताब्दी के भीतर इंग्लैंड में चाकरों का नामोनिशान मिट गया लेकिन दूसरे देशों का यह हाल नहीं था जहाँ गुलामी कई शताब्दियों तक बनी रही।

१. नाइटों से किन आदेशों का पालन करने की प्रतिज्ञा कराई जाती थी?
२. कौन आदमी नाइट बन सकता था?
३. कुलीन वंशों में पैदा होने वाले बालकों को क्या प्रशिक्षण दिया जाता था?
४. उस रीति का वर्णन करो जिससे कोई आदमी आम तौर से नाइट बनता था।
५. आज दुनिया में शौर्य के कौन से चिह्न शेष रह गए हैं?
६. मध्यकालीन जागीर का वर्णन करो।
७. चाकरों पर कौन सी पाबन्दियाँ रहती थीं? वे स्वतन्त्र कैसे हो सकते थे?
८. किसानों के किसी गाँव या घर की विशेषताओं का वर्णन करो।
९. किसी चाकर का जीवन और कार्य कैसा होता था?
१०. इंग्लैंड में किसानों की क्रान्ति का क्या प्रभाव पड़ा?

नागरिक जीवन का पुनरुत्थान—रोम साम्राज्य के ह्रास और पतन के दौरान आक्रमणों, अग्निकांडों और युद्धों के बावजूद कुछ नगर बच रहे थे। ये वे ही नगर थे जो नदियों या समुद्र या दलदल की प्राकृतिक रक्षा के स्थानों पर बसे हुए थे। इनमें से अधिकांश नगर प्राचीन रोमन सड़कों के किनारों पर बसे हुए थे जिनके द्वारा पुराने जमाने में वाणिज्य हुआ करता था। फ्लोरेंस, नेपल्स, पेरिस,

मार्सेलीज़, तूर्स, लन्दन और विन्चेस्टर जैसे नगर रोमन साम्राज्य के दिनों में वाणिज्य के केन्द्र रहे थे। हालांकि वर्षों के दौरान उनकी आबादी बहुत घट गई थी, फिर भी वे बचे रह गए थे।

ग्यारहवीं शताब्दी में नगरों का आकार और महत्त्व फिर बढ़ना शुरू हो गया। धर्मयुद्धों के कारण नगर जल्दी-जल्दी व्यापार के केन्द्रों के रूप में बढ़ने लगे। पूर्वी देशों के सामान लादे हुए लोग इन नगरों में अपने सामान बेचने जाने लगे और पूर्वी देशों के बहुमूल्य माल असबाब लादे हुए जहाज लन्दन के बन्दरगाह और दूसरे समुद्रों और बन्दरगाहों पर आने लगे। युद्ध काल में नगरों के द्वारा जो सुरक्षा प्राप्त होती थी, उससे खिंचकर दूसरे लोग नगरों में आकर बसने लगे। स्विटज़रलैंड में बर्न, इंग्लैंड में वारविक, फ्रान्स में एक्सला-शेपल, जर्मनी में फ्रैंकफोर्ट मजबूत गढ़ियों के चारों ओर विकसित हुए। दूसरे नगर, जैसे इंग्लैंड में पीटर्सबरो, मठों के चारों ओर विकसित हुए। लोग यह कहने में विश्वास रखते थे कि "सलीब की छत्र-छाया में रहना अधिक अच्छा है" और इसलिए मठ उन्हें आकर्षित करते थे। बहरहाल अधिकांश नगर व्यापार-व्यवसाय के साथ बढ़े।

मध्यकालीन नगर—उन दिनों लगातार चलने वाले युद्धों के समय में सुरक्षा के अतीव आवश्यक होने के कारण, नगरों के चारों ओर दीवारें बनी रहती थीं। दीवारें पत्थर की बनी होती थीं और उनमें बीच-बीच में पहरे के बुर्ज बने रहते थे जहाँ जिरह बख्तर-धारी पहरेदार उपद्रव के समय तैनात रहते थे। दीवारों के बाहर अतिरिक्त सुरक्षा के लिए प्रायः एक खाई बनी होती थी और दीवारों के भीतर की ओर एक सड़क बनी रहती थी, जिससे एक बुर्ज से दूसरे बुर्ज तक पहुँच सकते थे। आम तौर से नगर की हर दिशा में दीवारों में फाटक बने होते थे, जिन्हें रात के समय बन्द कर दिया जाता था ताकि जंगली जानवर तथा लुटेरों के दल भीतर न आ सकें। फाटकों तक सड़कें बनी होती थीं ताकि गल्ला लेकर आने वाली गाड़ियाँ नगर से गुजर सकें। ये मुख्य सड़कें आम तौर से पन्द्रह या अठारह फुट तक चौड़ी होती थीं। लेकिन दूसरी सड़कें महज गलियाँ होती थीं। सब सड़कें कच्ची होती थीं और वर्षा से उनपर गहरी दलदल हो जाती थी। नालियाँ नहीं होती थीं और कूड़ा गलियों में फेंक दिया जाता था। इतनी भीड़भाड़ और सफाई के अभाव के कारण आगजनी और महामारी बहुत आम बातें थीं।

मकान—मकान लकड़ी के बने होते थे और इन पर छप्पर का छाजन होता था, जिससे आग लगने का बराबर अन्देशा बना रहता था। ये मकान तीन चार मंजिल ऊँचे होते थे और जगह की किफायत करने के लिए दूसरे तल्ले बाहर को बढ़े होते थे, क्योंकि आबादी बढ़ जाने के बाद नगर की चहारदीवारी से बाहर बसना खतरे से खाली नहीं था। मकान एक दूसरे से बिल्कुल नज़दीक-नज़दीक बने रहते थे, और जहाँ भी थोड़ी सी जगह निकल सकती थी, वहीं बनाकर खड़े कर दिए जाते थे; यहाँ तक कि लन्दन और पेरिस जैसे कुछ नगरों में नगर की दीवारों और पुलों पर भी मकान बने हुए थे। हर नगर में अनेक गिरजे हुआ करते थे और बड़े महत्त्वपूर्ण नगरों में विशाल गिरजे (केथेड्रल) हुआ करते थे। कुछ नगरों में टाउन हाल हुआ करते थे जिनमें नगर के सार्वजनिक काम-काज चलते थे। इमारतें अक्सर बहुत खूबसूरत होती थीं और उनका ढांचा भी बहुत प्रभावशाली हुआ करता था, लेकिन किसी नगर के करीब पहुँचने पर किसी को जो चीज सबसे पहले दिखाई देती थी वह थी गिरजों का शिखर और गढ़ियों का कंगूरा।

नगरों का राजनीतिक महत्त्व—तेरहवीं शताब्दी तक नगर राजनैतिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण हो गए थे। इंग्लैंड और फ्रान्स दोनों देशों में नगर निवासियों को पार्लमेण्ट (संसद्) में बैठने की अनुमति थी। उनके पास पैसा होता था और राजा यह जानते थे कि अगर उन्हें राष्ट्र के मामलों पर होने वाली बहस में भाग लेने का अवसर दिया जाएगा तो वे कर चुकाने के लिए अधिक तत्पर रहेंगे। इटली के नगरों ने शार्लमेन के उत्तराधिकारियों से काफी अंशों में स्वतन्त्रता अर्जित कर ली

और वे ऐसे गणतन्त्रों की स्थापना में सफल हुए जिनमें कुछ अमीर परिवारों का बोलबाला था। फ्रान्सीसी और अंग्रेजी नगर इतने स्वतन्त्र नहीं हुए लेकिन इनमें से कुछ ने राजा या अमीरों से अधिकार-पत्र प्राप्त कर लिए, जैसे राजा रिचार्ड शेरदिल (लायन-हार्टेड) ने लन्दन के नागरिकों से वसूल किए गए धन के एवज़ में उन्हें स्वशासन का अधिकारपत्र प्रदान किया, जिससे उसे तीसरे धर्मयुद्ध के लिए पोतों को सज्जित करना था। कभी-कभी नगर के लोग एक साथ मिलकर अपने अधिकारों के लिए लड़ते थे जिससे उन्हें आम तौर से सामन्तों के करों की चुनौती से छूट मिल जाती थी, और अपने कुछ अधिकारियों का चुनाव करने का अधिकार मिल जाता था।

१. कब और कैसे नगरों का आकार बढ़ना शुरू हुआ ?
२. एक मध्यकालीन नगर की विशेषताओं का वर्णन करो।
३. मध्यकालीन नगरों में बने मकानों का वर्णन करो।
४. नगरों को किस तरह आँशिक स्वशासन प्राप्त हो जाता था ?

मध्यकालीन व्यापार में कई बाधाएँ थीं

मध्यकाल के आरंभ में व्यापार का अभाव—यूरोप में मध्य युग के आरम्भ में बहुत कम व्यापार होता था। इसके अनेक कारण थे। स्थल पर खराब सड़कें एक तरह की बाधा थी। पुरानी रोमन सड़कों की मरम्मत नहीं की गई थी और न नई सड़कें बनी थीं। इसके अतिरिक्त, जागीरों में बसने वाले लोग अपनी जरूरतें आप पूरी कर लेते थे और अपने लिए किसी अतिरिक्त पदार्थ की आवश्यकता बहुत कम ही महसूस करते थे। हर व्यापारी को, जो किसी जागीर की सड़क या नदी या पुल का प्रयोग करता था, अपने सामान का कुछ हिस्सा सामंत को चुंगी के रूप में देना पड़ता था। सिक्कों का अभाव भी एक बाधा था, क्योंकि सामान की अदला-बदली से व्यापार को प्रोत्साहन नहीं मिलता। मध्ययुगीन ईसाई सम्प्रदाय में सूद पर पैसा देना धार्मिक रूप से वर्जित था। इससे रुपया उधार लेना बहुत कठिन था।

व्यापार की वृद्धि—इन बाधाओं के होते हुए भी बारहवीं शताब्दी में वाणिज्य और व्यापार बढ़ा। चूँकि अधिकांश माल पूर्वी देशों से आता था, इसलिए व्यापारिक केन्द्र भूमध्य सागर के चारों ओर बने हुए थे। भूमध्य सागर के पूर्वी छोर से माल जहाज पर लादकर वेनिस और गेनोआ भेजा जाता था। ये दोनों नगर व्यापार में सारी दुनिया में शिरोमणि थे और व्यापार में एक दूसरे से स्पर्द्धा करते थे।

हैन्सियाटिक संघ—लगभग साठ जर्मन नगरों ने एक संगठन की स्थापना की जो हैन्सियाटिक संघ के नाम से मशहूर है ताकि उत्तरी और बाल्टिक सागर के लुटेरों से अपने जहाजों की रक्षा कर सकें। उन दिनों बहुतेरे नार्वे निवासी अपनी जीविका उन जहाजों पर लदे माल असबाब को लूटकर चलाते थे जो एक नगर से दूसरे नगर को सामान लेकर जाते थे। हैन्सियाटिक संघ के जहाज़ दस्ते बनाकर घूमते थे और इस तरह जो सुरक्षा प्राप्त हुई, उससे उत्तरी सागरों में जहाज लेकर चलना अधिक सुरक्षित हो गया।

इस संघ ने बढ़कर बहुत शक्तिशाली संगठन बना लिया जो अपनी मर्जी के सामने राजा लोगों तक को झुका देता था। हैन्सा नगरों के व्यापारी धनी और शक्तिशाली हो गए। ये सुदूर देशों से अपने देश में दौलत और संस्कृति लाने लगे।

मेले—मध्ययुगीन मेले पर्वों-त्योहारों पर लगते थे। स्थानीय मेले आम तौर से किसी धार्मिक छुट्टी के सिलसिले में लगते थे और एक दो हफ्ते चलते थे। आस-पास के नगरों से जो लोग आते थे, वे मेलों में धार्मिक पूजा पाठ के प्रयोजन से आते थे। दृश्य देखने, खबरें सुनने और सम्भवतः सामान खरीदने के लिए इधर-उधर घूमते रहते थे। सड़कों पर या चर्च या कैथेड्रल के पास खुली जगहों पर दुकानें खोल दी जाती थीं और आस-पास के इलाके में चलने वाला दूसरा सारा व्यापार-धन्धा मेलों के

दौरान वर्जित कर दिया जाता था। फिरते व्यापारी अपने सामान लाद कर इन मेलों में आते थे और ऐसी चीज़ों की बिक्री करते थे जिनका उत्पादन उन स्थानों पर नहीं होता था।

बारहवीं शताब्दी के बाद कुछ मेले बहुत बड़े पैमाने पर सामान के विनिमय के केन्द्र बन गए। इन महान् मेलों में जो सबसे अधिक विख्यात थे उनमें से एक मेला फ्रान्स के शेम्पेन नगर में लगता था। इन्हीं स्थानों पर किसानों को पहली बार सुदूर कुस्तुन्तुनिया, वेनिस, या गेनोआ के विचित्र पहनावे पहने हुए और कम्बल, शाल, मसाले, इत्र आदि बेचने वाले लोगों को देखने का और जागीर से बहुत दूर के स्थानों पर होने वाली घटनाओं को सुनने का अवसर मिलता था। व्यापारियों और खरीदारों के अलावा, लोगों का मनोरंजन करने के लिए अपनी ओर फेंके गए धेले-छदाम पर काम करने वाले बाँसुरी वादक, विदूषक, बाजीगर और नट भी इधर-उधर घूमते रहते थे।

स्थानीय और बड़े दोनों तरह के मेलों का मध्ययुगीन यूरोप पर बहुत महत्त्वपूर्ण प्रभाव पड़ा। इन्हीं मेलों में उन्हें ऐसे सामानों को खरीदने का अवसर मिलता था जो उनके पास-पड़ोस में नहीं बनते थे। पर इससे अधिक महत्त्वपूर्ण बात थी उनकी अपनी जागीर या नगर की तंग जिन्दगी के बाहर के लोगों और उनके मामलों की जानकारी।

१. प्रारम्भिक मध्ययुग में क्यों व्यापार लगभग बिल्कुल खत्म हो गया था ?
२. व्यापार में वृद्धि कैसे और किस समय शुरू हुई ?
३. चित्र पर दिए पाँचों हैन्सा नगरों को दिखाओ।
४. हैन्सियाटिक संघ की स्थापना क्यों हुई ?
५. किसी मध्यकालीन मेले का वर्णन करो।
६. मध्ययुग के लोगों के लिए मेले क्यों महत्त्वपूर्ण थे ?

नागरिक जीवन और उद्योग में श्रेणियों (गिल्डों) का प्राधान्य था

श्रेणियों (गिल्डों) के प्रकार—जैसे-जैसे नगर बढ़ने लगे और धर्मयुद्धों के पीछे-पीछे वाणिज्य का विकास होने लगा, वैसे ही वैसे नगरों में श्रेणी (गिल्ड) नामक संगठनों का विकास होने लगा। गिल्ड दो प्रकार के थे। एक थे व्यापारी गिल्ड जिनके सदस्य एक नगर से दूसरे नगर के बीच व्यापार करते थे, और दूसरे कौशलों के गिल्ड जिनके सदस्य नगर में ही सामान बनाते और उसकी बिक्री करते थे। नगर के हर कौशल का अपना अलग ही एक गिल्ड होता था। इनमें मोमबत्तियां बनाने वाले, सुनार, बुनकर और दूसरे कई पेशों के लोग थे।

एक मेले में बनाए गए इस दुमंजिले मंच को देखो। मकानों के ऊपर पीछे की ओर व्यापारिक संघों के निशान लटक रहे हैं।

किसी कौशल को सीखना—दस्तकार लोग सिर्फ़ ऐसे लोगों को अपने गिल्ड का सदस्य बनाते थे जो अपने काम में पहले से ही सिद्धहस्त होते थे। इसके अलावा वे दूसरे किसी को सदस्य बनाना उचित नहीं मानते थे। इस कारण उन्होंने प्रशिक्षण पद्धति चला रखी थी। प्रशिक्षण के लिए नियम गिल्ड के सदस्यों द्वारा बनाए जाते थे। माता-पिता अपने बच्चों को हुनर में माहिर लोगों के पास काम सीखने को भेज देते थे। बच्चों को किसी हुनर में काम करने के एवज में खाना, रहने का स्थान और उस हुनर का प्रशिक्षण मिलता था। उसके शिक्षार्थी (अप्रैंटिस) रहने की अवधि हुनर के अनुसार ही तीन से सात साल तक की होती थी। इस अवधि के समाप्त हो जाने पर वह कमेरा शिल्पकार (जर्नीमैन) बन जाता था। इस समय भी काम वह अपने गुरु के लिए ही करता था लेकिन बदले में उसे मजदूरी मिलने लगती थी। कुछ समय तक कमेरा शिल्पकार रहने के बाद वह यह दिखाने को कि अब वह अपना काम अकेले कर सकता है और उसका काम काफी उच्च स्तर का है और इसलिए वह खुद गुरु बनने के योग्य है, वह अपनी सबसे "उम्दा चीजे" (मास्टरपीस) बनाता था।

गिल्ड के नियम—हुनर के गिल्डों का उद्देश्य अपने सदस्यों की रक्षा करना और दूसरे शिल्पियों से प्रतियोगिता को रोकना था। इस काम को करने के लिए गिल्ड चीजों के उत्पादन और उनकी बिक्री को नियमित करने के लिए नियम स्थिर करते थे। गिल्ड के नियम काम के घण्टों को भी स्थिर करते थे। वे रात में काम करने को वर्जित करते थे। कोई उस्ताद कितना सामान तैयार कर सकता है और उस सामान को तैयार करने के लिए कितनी सामग्री का इस्तेमाल कर सकता है, इस पर रोक रखी जाती थी। नियमों में उत्पादित सामान की कोटि को ऊँचा बनाए रखने की ओर ध्यान दिया जाता था, और सामान की मात्रा को नियमित किया जाता था, ताकि कोई चीज जरूरत से अधिक तैयार न होने पाए और दाम में गिरावट

इन व्यापारिक संघों के निशानों को पहचानना तुम्हारे लिए कठिन बात न होगी।

न आने पाए। काम सीखने वालों की संख्या को सीमित रखने के लिए भी नियम बने होते थे ताकि इससे बेकारी के कारण बहुत सारे लोग एक ही शिल्प में प्रशिक्षित न हो जाएँ, और किसी को तब तक किसी शिल्प में नहीं लगाया जाता था जब तक कि वह उस शिल्प के गिल्ड का सदस्य न हो। दूसरी ओर, काम में आने वाले सामानों को सीमित रखने के नियम आजमाइश पर रोक रखते थे। नई सामग्रियों और शैलियों का विकास नहीं किया जाता था और इसलिए नए सामानों और नई तरह की चीजों के होने से जितनी बिक्री हो सकती थी, उसकी अपेक्षा बिक्री काफी कम होती थी।

बाद में उत्तर मध्य युग में कुछ अधिक सम्पन्न वस्त्र-निर्माताओं ने अपने लिए शिल्पियों को किराये पर रखना शुरू किया। वे अपना सामान बनाने के लिए शिल्पियों से एक इमारत में काम कराते थे। यह कारखानों की पद्धति बहुत छोटे पैमाने पर थी, लेकिन इसके दृष्टान्त कई नगरों में पाए जा सकते थे।

नया मध्यम वर्ग—प्रारम्भिक मध्य युग में समाज के सिर्फ तीन ही वर्ग थे, अर्थात् : पादरी, जमींदार और किसान, और इनके बीच काफी बड़ा अन्तर था। जब नगरों का महत्त्व बढ़ गया तो एक नया मध्यम या शहरी वर्ग सामने आया। मध्यमवर्ग सम्पन्न व्यापारियों और माहिर शिल्पियों द्वारा बना हुआ था। वे नगर में आरामदेह और सुसज्जित मकानों में रहते थे। धीरे-धीरे उन्होंने अपने नगरों के लिए स्वशासन के स्थानीय अधिकार-पत्रों की माँग की। फिर सामन्तों के पुराने जागीरी कानून के स्थान पर नगरों द्वारा बने कानून आ गए।

नगर की परिषदों के उच्च पदों पर आम तौर से नए मध्यम वर्ग का ही एकाधिकार होता था, और गरीब नागरिकों की बात शायद ही कोई पूछता था। चाकरी (सर्फ पद्धति) के ह्रास और नगरों की वृद्धि के साथ ही साथ यह नया वर्ग अधिक शक्तिशाली बन गया। बाद में यह उन नए राष्ट्रीय राज्यों का मेरुदण्ड बना जो यूरोप में विकसित हो रहे थे। उत्तर मध्य युग में एक नए मध्य वर्ग का उत्थान सम्भवतः सबसे महत्त्वपूर्ण विकास था।

१. मध्यकालीन गिल्डों के कौन से दो भेद थे ?
२. कुछ शिल्पों के गिल्डों का नाम गिनाओ जिन्हें मध्ययुगीन नगरों में पाया जा सकता था।
३. गिल्डों का उद्देश्य क्या था ?
४. उस रीति का वर्णन करो जिससे कोई व्यक्ति किसी गिल्ड का सदस्य बन सकता था।
५. अपने सदस्यों के लिए गिल्डों द्वारा निर्धारित नियमों में से कुछ का उल्लेख करो।
६. इन नियमों की कुछ सुविधाएँ बताओ।
७. नया मध्यम वर्ग क्यों महत्त्वपूर्ण था ?

विचार-विमर्श के लिए प्रश्न

१. अमरीकी संविधान के निर्माताओं ने अपने संविधान में इस बात की व्यवस्था क्यों की कि संयुक्त राज्य के नागरिक किसी तरह की सामन्ती उपाधि नहीं लगा सकते।

२. हालांकि मध्ययुग में निरन्तर युद्ध चलते रहते थे, फिर भी बहुत अधिक लोग हताहत नहीं होते थे और युद्ध का व्यय भी कम पड़ता था।

३. शिवैलरस (शूर) का क्या अर्थ है ?

४. आज किसानों को उसी तरह हीन वर्ग का क्यों नहीं समझा जाता जैसे मध्ययुग के किसानों को समझा जाता था।

५. आज किसी अमरीकी मजदूर का जीवन-स्तर मध्ययुग के किसी काउण्ट या ड्यूक की अपेक्षा उच्च क्यों है ?

६. मध्ययुगीन नगरों के मजदूरों की प्रमुख चिन्ताएँ क्या थीं।

७. मध्ययुगीन नगरों में महामारी की बीमारियाँ इतनी अधिक क्यों फैलती थीं ?

८. आज राष्ट्रों के मध्य व्यापार में पड़ने वाली रुकावटें कौन सी हैं ?

९. मजदूर यूनियनें किन अर्थों में मध्ययुगीन गिल्डों जैसी हैं ? वे किन अर्थों में उनसे बिल्कुल भिन्न हैं ?

१०. मध्ययुगीन गिल्ड प्रगति के रास्ते में किन रूपों में रुकावट डालते थे ?

११. क्या आज के मेलों से भी उतने ही उपयोगी उद्देश्य सिद्ध होते हैं जितने मध्यकालीन मेलों से होते थे ?

१२. नये शहरी वर्ग की स्थिति जन्म पर नहीं बल्कि धन पर आधारित थी। इनमें कौन अधिक लोकतांत्रिक है ? क्यों ?

१३. यूरोप में नये मध्यम वर्ग का उत्थान इतना महत्त्वपूर्ण क्यों था ?

इतिहास के उपकरणों का प्रयोग

एक. नाम, तिथियाँ और स्थान

१. क्या तुम इन शब्दों की व्याख्या कर सकते हो ?

अप्रेंटिस (शिक्षार्थी)—काली मौत—शौर्य—डंजन—उठाऊ पुल—नाइट को उपाधि देने की रस्म—मेले—स्वामिभक्ति—फ्यूड (भूखंड)—सामन्ती नजराना—सामन्तवाद—फीफ (भू सम्पदा)—गिल्ड—हैन्सियाटिक संघ—होमेज—विनियोग (इन्वेस्टिचर)—कमेरा (जर्नीमैन)—अन्तर्कोट—नाइट की उपाधि—सामन्त—मैनर (जागीर)—उस्ताद शिल्पी—चारण—खाई—भृत्य—किसान—पोर्टकुलिस—चाकर (सर्फ)—स्क्वायर—टूर्नामेण्ट—धर्म संधि—वासल।

२. क्या तुम्हें यह तिथि याद है ?

१३८१

३. ये स्थान नक्शे में दिखाइए :

एक्सलाशैपेल—कुस्तुन्तुनिया— फ्लाण्डर्स—फ्लोरेन्स — फ्रैंकफोर्ट — लन्दन— मार्सेलीज़—नेपल्स— पेरिस— पीटरबरो —तूर्स— वेनिस—विंचेस्टर।

४. एक चित्र पर हैन्सियाटिक संघ के प्रमुख नगर भी दिखाओ :

ल्यूवेक—ब्रेमेन—हैम्बर्ग— कोलोन—यूट्रेख्ट — विस्वाई ।

दो. क्या तुम अपने विचार अच्छी तरह व्यक्त कर सकते हो ?

१—अपने अध्यापक से स्वीकृति मिलने पर निम्नलिखित को अपनी कक्षा के किसी लड़के के साथ मिल कर तैयारी के लिए और अपनी कक्षा के लड़कों को बताने के लिए चुनो ।

अ—दो सर्फों (चाकरों या भूदासों) के बीच एक वर्तालाप लिखो जिसमें वे जिन स्थितियों में रहते थे, उन पर अपनी सहमति और असहमति प्रकट करें। इसमें तुम्हें पावर की पुस्तक "मैडिवल पीपुल" से सहायता मिलेगी ।

ब—दो शिक्षार्थियों के बीच होने वाला एक वार्तालाप लिखो जिसमें वे एक दूसरे को यह बताते हैं कि वे अपने काम को, अपने उस्ताद को, अपने नगर को और अपने दोस्तों को कितना पसन्द करते हैं ।

२—कल्पना करो कि तुम मध्य युग की एक विशाल गढ़ी में रहते हो। अपनी कक्षा के विद्यार्थियों के सम्मुख विशाल कक्ष के उस समय के दृश्य का वर्णन करो जब उसमें कोई चारण पहुँचता था। इस पर टैपन की "ह्वेन नाइट्स वेयर वोल्ड" या मिल की "मिडल एजेज" से सामग्री प्राप्त हो सकती है ।

३—शूरता की एक ऐसी आचार-नियमावली तैयार करो जिसे तुम्हारी कक्षा के लड़के आजकल अमल में ला सकते हैं ।

४—कक्षा को दो दलों में बाँट लो, हर वर्ग अनौपचारिक रूप से इनमें से एक-एक विषय की चर्चा करे :

मध्यकालीन भूदासों की दशा रोमन गुलामों से अच्छी थी ।

जागीर के सामन्तों का जीवन बहुत मजेदार था।

मैं क्यों किसी मध्यकालीन गढ़ी में एक साल रहना पसन्द करूँगा (या नहीं करूँगा) ।

नार्वे के लुटेरे सरदार उतने ही बुरे थे जितने आजकल के गुण्डे ।

भूदासों की किस्मत बहुत खराब थी ।

५—मान लो कि तुम मध्ययुग के एक व्यापारी हो और बहुमूल्य चीजों का सौदा लेकर फ्रांस, जर्मनी या इंग्लैंड के किसी मेले में आ रहे हो। अपनी कक्षा के लिए एक विवरण तैयार करो कि मेले को जाते हुए रास्ते में तुम्हें क्या-क्या अनुभव हुए या मेले में तुमने क्या-क्या देखा। इस सन्दर्भ में जसरैण्ड की "इंग्लिश वेफेयरिंग लाइफ इन द मिडल एजेज" पुस्तक या कोई अन्य पुस्तक देख सकते हो ।

६—मध्य युग में अधिकांश लोग अपना पहला या ईसाई नाम ही रखते थे। गोत्र के नाम या उपनाम उत्तरकालीन मध्ययुग में या उसके बाद रखे जाने लगे। अनेक उपनाम उन पेशों से निकले जिन्हें कोई अपनाता था। रोटी पकाने वाले (बेकर) जान का नाम जान बेकर हो गया। उन उपनामों की एक तालिका बनाओ जो मध्ययुगीन पेशों से निकले हैं ।

तीन. नाट्य रचना :

वासल या नाइट बनाने के ऊपर एक नाट्य रचना करो। तुम्हारी कक्षा के कुछ सदस्य शेष कक्षा के सम्मुख इस नाटक का अभिनय करने के लिए इसमें भाग ले सकते हैं ।

चार. वेश-विन्यास की मंडली

अपनी कक्षा में एक वेश-विन्यास की मंडली की आयोजना करो और अपनी कक्षा के कुछ लड़कों को मध्य युग के लोगों की तरह पोशाक पहनने को तैयार करो। तुम एक चारण, दो किसान दो विदूषक रख सकते हो और शेष को सामन्त और उनकी महिलाएँ बना सकते हो। उस तरह के खेल और मनोरंजन करो जैसे मध्ययुग की गढ़ियों में चलते थे। इसमें डेविस की पुस्तक "लाइफ ऑन ए मेडिवल बैरोनी" से तुम्हें सहायता मिलेगी। पोशाक, खाना, खेल, संगीत और अतिथियों के प्रबन्ध के लिए समितियाँ नियुक्त की जा सकती हैं ।

पाँच. इतिहास का विज्ञान और कला से सम्बन्ध

१—अगर तुम्हारी रुचि दवाओं में है तो

पता लगाओ कि कौन-सी बीमारियाँ मध्ययुग में जानलेवा थीं और कौन-सी बीमारियाँ आज जान-लेवा हैं। श्यामपट्ट पर अपनी तालिका को समानान्तर खानों में लिखो।

२—दलों में काम करते हुए निम्नलिखित में से एक का नमूना तैयार करो और इसकी व्याख्या कक्षा में करो :

(अ) एक मध्ययुगीन नगर जिसमें मकान, नगर-भवन (टाउनहाल), गिरजे, बाजार और नगर की चहारदीवारी दिखाई गई हो।

(ब) एक गढ़ी, जिसमें प्रमुख कमरे, दीवार, बुर्ज, उठाऊ पुल आदि दिखाए गए हों।

(स) एक जागीर, जिसमें सामन्त का भवन, गाँव के मकान, ताल, खेत, जंगल, मिल, फांसी का तख्ता वगैरह दिखाए गए हों।

छह. **सूचनापट्ट के लिए**

सूचनापट्ट के लिए गढ़ियों के चित्र इकट्ठे करो। हर एक को उसके नाम और स्थान का उल्लेख करते हुए चिपकाओ। (क्या तुम्हारी सूचना-पट्ट समिति की पद्धति अभी चल रही है ?)

सात. **चित्र द्वारा अध्ययन**

पृष्ठ २०३ पर दिए हुए चित्र की एक-एक बात को लेकर चर्चा करो।
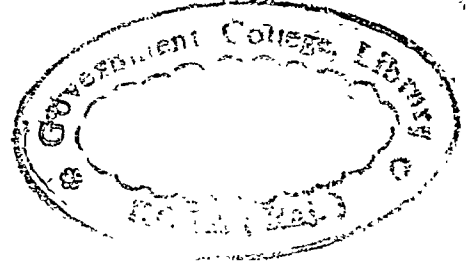
१७ पश्चिमी राष्ट्र विश्व के मंच पर आए

यदि आप सन् १००० ई० में पश्चिमी यूरोप के किसी भाग में रहते होते तो आप अपने को इंग्लैण्ड-वासी, फ्रांसवासी या स्पेनवासी न वतलाकर लंदनवासी, पेरिसवासी या कार्दोवावासी वतलाते। या आप यह कहते कि आप यार्कशायर, ब्रिटेनी या सैक्सोनी के रहने वाले हैं। किसी देश के राजा का वड़े सरदारों और उनकी भूमि पर इतना कम नियंत्रण होता था कि लोगों में किसी राष्ट्र का होने की भावना ही नहीं होती थी।

उत्तर मध्ययुग में यातायात के उन्नत साधनों और वेहतर हथियारों के होने के वाद राजाओं के हाथ में अधिक सत्ता आयी। धर्मयुद्धों के कारण भी उनकी शक्ति वढ़ी। पवित्र देश में जाने वाले वहुत से लार्ड वापस नहीं लौटे। कुछ ने लौट कर पाया कि लार्ड द्वारा पीछे छोड़ी गयी भूमि को किसी न किसी उपाय से राजा ने अपने हाथ में ले लिया है। उत्तर मध्ययुग में एक महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक गतिविधि यह थी कि राजाओं की शक्ति वढ़ी और राष्ट्रों का उदय हुआ।

राष्ट्रीय एकता स्थापित करने वाला पहला राज्य-इंग्लैंड

इंग्लैंड में एकता किस तरह आयी, इसे समझने के लिए हमें पहले यह देखना पड़ेगा कि वहां पिछली कई शताब्दियों में क्या हो रहा था। इसके लिए हमें वहां के प्रारम्भिक इतिहास का अध्ययन करना पड़ेगा। सवसे अधिक स्पष्ट दिखने वाली वात द्वीप पर विजयों का एक क्रम जिसके फलस्वरूप देश में विभिन्न जातियों के लोग आये और इस पर अपने-अपने चिह्न छोड़ गये।

ब्रिटेन के मूलनिवासियों के वारे में वहुत कम मालूम है। वहुत पहले, १५०० ई० पू० में द्वीप के दक्षिणी भाग में कार्नवाल के समुद्रवर्ती तट पर कलई लेने के लिए फिनीशियन आये। १००० ई० पू० के लगभग उत्तरी यूरोप के सेल्ट्ज लोगों ने द्वीप पर

ब्रिटेन में रोमन सभ्यता का वर्बर आक्रमणकारियों ने सत्यानाश कर दिया; जिनकी अपनी एक भाषा भी थी।

वेटीमैन आर्काइव

कलवर सर्विस

यह एक बहुत पुराने कशीदे का छोटा-सा नमूना है जिसमें विलियम प्रथम की विजय का चित्रण किया गया है।

आक्रमण करके विजय प्राप्त की। उन्होंने द्वीप के निवासियों के साथ विवाहादि सम्बन्ध स्थापित किया और कोई कोई हजार साल तक रहते रहे। तब रोमनों ने ब्रिटेन की खोज की। ५५ ई० पू० में सीज़र इंग्लिश चैनल पार कर इंग्लैंड पहुंचा पर सेल्टिक योद्धाओं के सुदृढ़ निश्चय के आगे उसे वापस लौटना पड़ा। अगले वर्ष और अच्छी तैयारी करके वह टेम्स नदी के किनारे एक छोटे गाँव तक गया जहाँ आज लंदन बसा हुआ है। सेल्टों को पराजित करने के बाद उसने उनसे कर वसूला और फिर वापस चला आया। सौ वर्ष तक द्वीपवासी शान्ति से रहे। इसके बाद द्वीप पर रोम का अधिकार हो गया और वे पहली शताब्दी के मध्य से लेकर ४१० ई० तक इंग्लैंड पर शासन करते रहे।

रोमन साम्राज्य पर बर्बर आक्रमणों के दौरान यूरोप में अपने अधिकृत प्रदेशों की सुरक्षा के लिए ब्रिटेन से रोमन सेना को वापस बुलाना पड़ा। फिर जर्मनीय ऐंगिल, सैक्सन और जूट लोग उत्तरी सागर से आये और इन्होंने द्वीप के उस भाग पर अधिकार जमा लिया जिसे हम इंग्लैंड कहते हैं। ये लोग क्रूर थे और द्वीप पर मिली लातीनी संस्कृति की इनके लिए कोई उपयोगिता नहीं थी। इन्होंने छोटे-छोटे राज्य बनाये। हर एक राज्य का अपना शासक था, अपने-अपने कानून थे।

फिर आठवीं शती के उत्तर काल और नवीं शती के प्रारम्भ में साहसिक नाविक डेन आये। ऐंग्लो-सैक्सनों ने छोटे राज्य में से एक के राजा अल्फ्रेड महान् (८७१-९०१) के रूप में योग्य नेता पाया। वह देश के दक्षिणी और पश्चिमी भागों से डेनों को बाहर खदेड़ने में सफल हुआ। कर देकर उन्हें वह बाहर रख सका। अल्फ्रेड की मृत्यु के बाद पुनः इंग्लैंड को बुरे दिन देखने पड़े। केन्यूट (१०१६-१०३५) के नेतृत्व में डेन दक्षिण की ओर बढ़ आये। केन्यूट डेनमार्क का बादशाह था। उसने सारा स्कैंडिनेविया जीता था और वह बहुत बड़े साम्राज्य पर शासन करता था। अपने जीवन भर वह इंग्लैंड को अपने साम्राज्य का भाग बना कर रखने में सफल रहा। फिर गद्दी ऐंग्लोसैक्सनों के हाथ में चली गयी जो कमजोर सिद्ध हुए।

नार्मंडी के ड्यूक विलियम ने देश की कमजोरी का फायदा उठाने का निश्चय किया। उसने पोप से अनुमति प्राप्त की और समुद्र पार कर दक्षिणी इंग्लैंड पहुँचा और सैक्सन राजा हैराल्ड को १०६६ ई० में हेस्टिंग्ज़ में पराजित किया। हैराल्ड लड़ाई में मारा गया और कुछ सरदारों ने विलियम को अपना राजा चुना। विलियम को अगले बीस वर्षों में पूरे देश को जीतने के लिए कई बार उत्तर की ओर अभियान करना पड़ा। विलियम ने सर्वोत्तम पद अपने नार्मन अनुयायियों को दिये जो उसके साथ इंग्लैंड आये थे। सरदारों से भी भूमि ले ली गयी और विलियम के अनुयायियों को दी गयी। इस प्रकार नार्मन ब्रिटेन के मालिक हो गये।

नार्मन विजय का इंग्लैंड के इतिहास पर बहुत प्रभाव पड़ा। एक तो विलियम ने देश में सामंतवाद को सुदृढ़ किया। लेकिन उसकी यह मंशा नहीं थी कि सामंतों का बल इतना बढ़ जाय कि वह कमजोर पड़ जाय। इसलिए उसने इंग्लैंड के सभी भूमिस्वामियों को सैलिसबरी के निकट मैदान में बुलवाया और अपने प्रति निष्ठा की शपथ दिलवायी। वहाँ उन्होंने सभी लोगों के सामने उसके प्रति वफादारी की शपथ ली। सामंतवाद के इस परिणत रूप से राजा के हाथ में और अधिक शक्ति आयी और शासन का केन्द्रीयकरण हुआ।

सरदारों ने जिस तरह फ्रांस के राजाओं की अवहेलना की थी, उस तरह वे विलियम की अवहेलना नहीं कर सकते थे।

नार्मन विजय के कुछ दूसरे प्रभाव भी पड़े। नार्मन लोग रोमन शैली के भवन बनाते थे जिसे अंग्रेज नार्मन स्थापत्य कहते हैं। नए शिल्प, खास करके ऊनी कपड़ों की बुनाई, इंग्लैंड में महत्त्वपूर्ण हो गए। कुछ समय तक इंगलैंड में एंग्लो-सैक्सन और नार्मन-फ्रेंच दोनों भाषाएँ एक साथ बनी रहीं। धीरे-धीरे नार्मन फ्रेंच के शब्द, जो लैटिन भाषा पर आधारित थी, एंग्लो-सैक्सन में मिलते गए। उन दोनों भाषाओं के परस्पर मिलन से उस भाषा का निर्माण हुआ जिसे हम अंग्रेजी कहते हैं। उसमें सिर्फ एंग्लो-सैक्सन शब्द "माइल्ड" (विनम्र) "शीप" (भेड़), और "ब्लूम" (फूल) आदि ही नहीं हैं बल्कि लैटिन से निकले हुए इन्हीं के समानार्थी शब्द "जेंटिल" "मटन" और "फ्लावर" भी प्रचलित हैं। पहले तो एंग्लो-सैक्सन लोगों को भू-दासों की स्थिति में पहुँचा दिया गया, लेकिन अन्ततः एक जाति के लोग दूसरी जाति के लोगों में विवाह-शादी करने लगे। अंग्रेजों के खून में सभी आक्रामक जातियों का खून मिला हुआ है।

इंग्लैंड की सरकार ने महत्त्वपूर्ण कदम उठाए

हेनरी द्वितीय—विजेता विलियम (विलियम द कांकरर) के उत्तराधिकारी कमजोर थे और इंग्लैंड को एक लम्बा गृह-युद्ध भोगना पड़ा। इस कारण हेनरी द्वितीय (११५४-११८९) को सिंहासन पर आसीन पाकर इंग्लैंड के लोगों को हर्ष ही हुआ। वह इंग्लैंड के अब तक के योग्यतम राजाओं में गिना जाता है। हेनरी एक फ्रांसीसी सरदार का पुत्र था और उसकी माता विजेता विलियम की पोती थी। हेनरी को उत्तराधिकार में फ्रांस में जमीन तो मिली ही, साथ ही उसे इंग्लैंड की राजगद्दी भी प्राप्त हुई। फ्रांस के राजा के वासल के रूप में वह उस देश की आधी से अधिक ज़मीन का मालिक था। फ्रांस की जागीरों में उसने जो सामन्ती सेना खड़ी कर ली थी, उससे उसको इतनी शक्ति प्राप्त थी जिससे वह इंग्लैंड के उद्दंड सरदारों को दबा सकता था। इंग्लैंड में आने के बाद सबसे पहले उसने जो काम किया, वह था शान्ति और व्यवस्था को पुनः लाना।

हेनरी ने टामस बेकेट को कैण्टरबरी का आर्कबिशप बनाकर चर्च पर पूरा नियंत्रण पा लिया। बेकेट चर्च का एक अधिकारी था। पर साथ ही वह राजा की सेवा में भी था। इस रूप में वह हेनरी के लिए बहुत सहायक सिद्ध हुआ। बेकेट सुयोग्य व्यक्ति था लेकिन उसे युद्ध जैसे जोखिमों, शिकार और आन-बान भरी दरबारी जिन्दगी का भी शौक था जिसे वह अपने नियंत्रण में आने वाले चर्चों से आने वाली मालगुजारी के बल पर निभाता था।

हेनरी को यह जानकर आश्चर्य हुआ कि कैण्टरबरी के आर्कबिशप के रूप में बेकेट ने तत्काल राजा के विरुद्ध अपने अधिकारों की हेकड़ी दिखाई, और हेनरी का, जो चर्च पर नियंत्रण करना चाहता था, विरोध कर दिया। बेकेट को

हेनरी द्वितीय ने अपने शासनकाल का अधिकांश समय फ्रान्स में बिताया, लेकिन उसे इंग्लैंड के महत्तम शासकों की गिनती में आने का अवसर मिला।
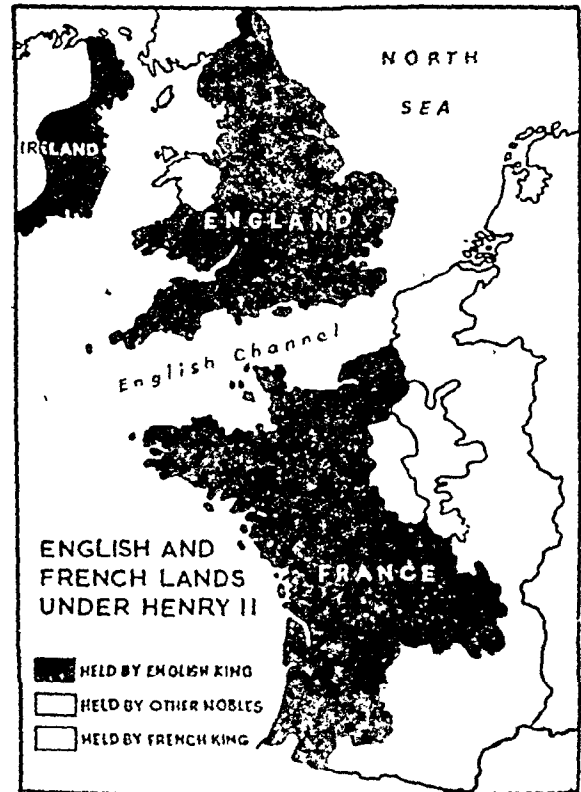
हेनरी के क्रोध से बचने के लिए भाग कर फ्रांस में और पोप की शरण में जाना पड़ा। झगड़े में सुलह हो गयी लेकिन जब बेकेट इंग्लैंड लौटा और उसने कुछ पादरियों को धर्म-बहिष्कृत कर दिया, तो हेनरी क्रोध से पागल होकर चीख उठा, "क्या कोई ऐसा आदमी नहीं है जो उस दुष्ट पादरी से मेरा बदला चुका सके?" किसी ने इस बात को यथातथ्य सत्य मान लिया और कैन्टरबरी कैथेड्रल में बेकेट की हत्या कर दी। इस घटना से आतंकित और भयभीत होकर हेनरी ने पोप के साथ, उस सम्पत्ति को वापस देकर, जिसे उसने चर्च से छीन लिया था और एक धर्म-युद्ध में सहायता करके समझौता कर लिया।

हेनरी की दिलचस्पी कानून में थी और उसे इंग्लैंड के न्यायालयों में बहुत धाँधली दिखाई दी। वह चाहता था कि राजकीय न्यायालय में कुछ अधिक मुकदमों पर, खास तौर से जमीन की मिल्कियत सम्बन्धी मुकदमों पर, विचार हो। इस रूप में उसने अनेक मामले सामन्तों की अदालतों से अपनी अदालत में ले लिए। उसके न्यायाधीश जगह-जगह घूमते-फिरते रहते थे और उन्हीं स्थानों पर जाकर विचार करते थे जहाँ लोग रहते थे, न कि वहाँ जहाँ राजा निवास करता था। वे उन स्थानों में पाई जाने वाली कानूनी प्रथाओं का राजकीय न्यायालय द्वारा निर्धारित कानूनी मतों से मिलान बैठाते थे। इस रूप में उन्होंने समूचे इंग्लैंड में एक सदृश कानूनों का संग्रह कर लिया। उसे हम "कामन ला" या देशविधि कहते हैं। यह अधिकांश सामन्ती अदालतों की अपेक्षा अधिक न्यायसंगत और मानवोचित थी।

हेनरी के शासन-काल में जूरी के सदस्यों द्वारा विचार एक अन्य विकास था। हर जिले में हेनरी ने ऐसे लोग नियुक्त कर रखे थे, जो अपने पास-पड़ोस के किसी ऐसे आदमी की ओर न्यायाधीशों का ध्यान दिलाते थे जिसके ऊपर उन्हें किसी तरह का गलत काम करने का सन्देह होता था और उस पर वे अभियोग लगाते थे या उसे दोषी करार देते थे। यह पद्धति अमरीका की ग्रैंड जूरी (बड़ी अदालतों) का पूर्वरूप थी जिसमें जूरी के सदस्य बैठते हैं। बाद में एक और जूरी पेटिट जूरी का विकास हुआ। इसमें आम तौर से बारह लोग होते थे जो मामले की जाँच-पड़ताल करते थे, अदालत में उपस्थित होते थे, और किसी व्यक्ति के अपराधी या निरपराध होने का शपथपूर्वक कथन करते थे। गो ग्रैंड जूरी और पेटिट जूरी उसी तरह काम नहीं करते थे, जैसे आज करते हैं, लेकिन आज की अमरीकी जूरी पद्धति का मूल हेनरी द्वितीय की जूरी के सदस्य ही हैं।

अपने शासन-काल में हेनरी द्वितीय ने एक महत्त्वपूर्ण कदम उठाया जिसने इंग्लैंड के बाद के इतिहास को प्रभावित किया। उसने आयरलैंड की विजय प्रारंभ की। आयरलैंड सदा से छोटी-छोटी रियासतों में बँटा हुआ था, और हर रियासत एक कबीले की होती थी। पांचवीं सदी के उत्तरार्ध में जब इंग्लैंड की रियासतें एक-दूसरे से लड़ रही थीं, आयरलैंड एक शान्ति और समृद्धि के युग में पड़ा था। सन् ४५० के लगभग सन्त पैट्रिक ने आयरलैंड में ईसाइयत का प्रचार शुरू किया था। समूचे द्वीप के ऊपर मठ स्थापित किये गए और पाण्डित्य और धर्म का विकास हुआ। अगली शताब्दी में आयरलैंड ईसाई धर्म-प्रचारकों को स्काटलैण्ड और यूरोप महाद्वीप भेज रहा था। लेकिन इसके बाद आयरलैंड की संस्कृति का ह्रास हो गया और हेनरी द्वितीय के युग में कबीलों के लोग निरन्तर एक दूसरे से लड़ रहे थे। हेनरी ने अपने पुत्र जान को आयरलैंड पर कब्जा करने और शासन करने को भेजा। पर जान ने वहाँ के सरदारों को नाराज कर दिया और वे उसके खिलाफ हो गए। आयरलैंड को न तो हेनरी ही अपने अधीन कर सका, न जान ही, लेकिन हेनरी ने "आयरलैंड का सम्राट्" की उपाधि का दावा किया।

रिचार्ड प्रथम (शेर दिल)—हेनरी का पुत्र और उत्तराधिकारी रिचार्ड प्रथम (या शेर दिल—लायन-हार्टेड) एक महत्त्वाकांक्षी नाइट था, लेकिन उसमें राजा होने के उतने गुण नहीं थे। उसके राज्यकाल के दस वर्षों में से लगभग आधा वर्ष इंग्लैंड में बीता, और वह भी, वह इंग्लैंड में एक धर्म-युद्ध के लिए धनराशि जुटाने के लिए आया था। पर इसका नतीजा कुछ अच्छा ही हुआ।
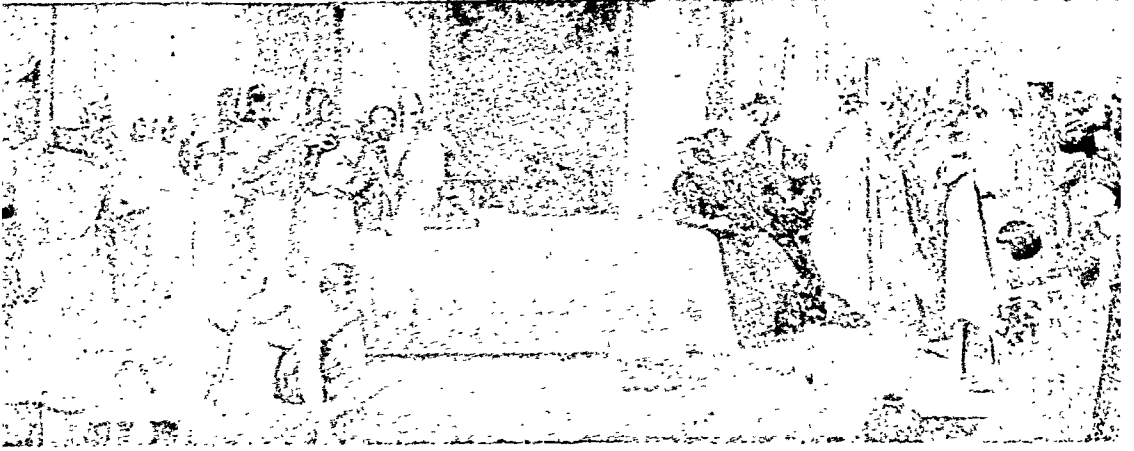
मायर फोटो आर्ट हाउस

इस चित्र में मैग्नाकार्टा पर हस्ताक्षर करने के बाद जान का कोप दिखाया गया है। उसके बैरन भी, जो उसके दूसरी ओर मेज़ के किनारे खड़े हैं, अपने सही रूप में चित्रित हैं। आर्कबिशप (लाट पादरी) ने अपने पादरी-वर्ग को लेकर बैरनों का पक्ष ग्रहण किया था।

उसने जिन तरीकों से धन एकत्र किया, उनमें से एक था नगरों को स्वशासन का अधिकार-पत्र प्रदान करना। इन अधिकार-पत्रों को बेचना तो बुरा था, लेकिन इससे नगरों को जो अधिकार प्राप्त हुए, वे अच्छे थे। इन स्वशासित नगरों में ही स्वतंत्रता की भावना विकसित हुई।

जान—रिचार्ड की मृत्यु के बाद उसका भाई जान (११९९-१२१६) गद्दी पर बैठा, जो सम्भवतः इंग्लैंड का सबसे अप्रिय राजा था। जिस समय जान इंग्लैंड का शासन कर रहा था, उसी समय फिलिप आगस्टस जो तीसरे धर्मयुद्ध पर निकला था, फ्रांस पर शासन कर रहा था। दोनों राजाओं के बीच हुए झगड़े में जान ने अपनी उस भूमि का बहुत काफी हिस्सा गंवा दिया जो फ्रांस में उसके अधिकार में थी। जैसा कि हम देख चुके हैं, जान ने पोप इन्नोसेण्ट तृतीय से भी झगड़ा कर लिया और इन्नोसेण्ट का बासल बन गया।

जान को अपने सरदारों के साथ भी काफी उलझन में पड़ना पड़ा, जो उसे कुछ उचित कारणों से बहुत नापसन्द करते थे। जब जान ने सरदारों से धन की मांग की और यह चाहा कि वे उसके साथ फिलिप आगस्टस से फ्रांस में उसकी गँवाई हुई जमीन को पुनः कब्जे में लेने के लिए एक अभियान पर चलें तो उन्होंने इनकार कर दिया। उन्होंने कहा कि उनके जागीरी कर्त्तव्यों में इंग्लैंड से बाहर जाकर युद्ध करना सम्मिलित नहीं है। दोनों ओर से काफी धौंस-धमकियों के बाद बैरनों (सरदारों) ने एक अधिकारपत्र तैयार किया और जान से इस पर जबर्दस्ती हस्ताक्षर करवाया। यह प्रसिद्ध दस्तावेज़ मैग्ना कार्टा या महान् अधिकार-पत्र (१२१५) के नाम से मशहूर है, जिससे राजा के अधिकार सीमित हो गए। एक ओर तो इसने मुख्यतः राजा के अधिकारों को सीमित करके और महाद् परिषद् को अधिकार प्रदान करके सरदारों के अधिकारों की रक्षा की, दूसरी ओर इसने अंग्रेजों की स्वतन्त्रता की नींव रखी।

मैग्नाकार्टा में अनेक बातों की व्यवस्था थी। जो व्यवस्थाएँ आधुनिक जगत् के लिए सबसे महत्त्वपूर्ण थीं, वे निम्न हैं:

१. महा-परिषद् की सहमति के बिना उन करों को छोड़कर कोई नया कर नहीं लगाया जाएगा, जो अब तक सामन्तों में प्रचलित रहे हैं।

२. किसी स्वतन्त्र व्यक्ति को सिर्फ अपने

अपराध के अनुपात में ही जुर्माना किया जाएगा या सजा दी जाएगी।

३. अपने समकक्ष जूरी के सदस्यों द्वारा विचारणा के बिना किसी भी स्वतन्त्र व्यक्ति को न तो कैद किया जाएगा, न दण्ड दिया जाएगा।

४. यदि राजा इस अधिकार-पत्र का पालन नहीं करेगा तो पचीस सरदारों का एक दल उससे इसका पालन करायेगा।

महापरिषद् या पार्लमेण्ट का विकास—हम इंग्लैंड की महापरिषद् के बारे में पढ़ते रहे हैं। अब आइये, यह देखें कि यह संस्था कैसे विकसित हुई। जब विजेता विलियम शासक हुआ तब उसने इस संस्था को महापरिषद् का नाम दिया। जब राजा जान ने मैग्नाकार्टा पर हस्ताक्षर किया, तब उसे इस महापरिषद् के महत्त्व और शक्ति को मानना पड़ा।

महापरिषद् के विकास में दूसरा चरण तब आया जब जान का पुत्र हेनरी तृतीय शासक बना। वह अपनी प्रजा में बहुत अप्रिय हो गया, और साइमन डि माण्टफोर्ट के नेतृत्व में सरदार राजा से युद्ध कर बैठे। हेनरी को लन्दन टावर (लन्दन का किला) में बन्द कर दिया गया, जो विजेता विलियम द्वारा बनवाया हुआ एक किला था और शताब्दियों से राजनीतिक बन्दियों को बन्द करने के काम आ रहा था। जब हेनरी टावर में था, तभी साइमन ने महापरिषद् की एक बैठक बुलाई। इसमें पहले की तरह सिर्फ सरदार, मठाधीश और बिशप लोग ही नहीं थे। उसने इसमें हर काउंटी से दो नाइट और हर बड़े नगर से दो नागरिक भी बुलवाये। यह सभा, जो सन् १२६५ में हुई थी, पहली ऐसी सभा थी, जिसमें इंग्लैंड के सरदारों के अतिरिक्त किसी अन्य को बुलाया गया था।

जब एडवर्ड प्रथम (१२७२-१३०७) का राज्य था, तब उसने महापरिषद् की एक बैठक बुलाई, जिसमें उन्हीं-उन्हीं वर्गों के सदस्य थे, जिन्हें डि माण्टफोर्ट ने सम्मिलित किया था। सन् १२९५ में हुई यह बैठक पार्लमेण्ट का नमूना मानी जाती है। तब से, एक बार बहुत थोड़े समय को छोड़कर अंग्रेजी सरकार, में सरदार, साधारणजन और राजा सम्मिलित होते रहे हैं, हालांकि हर समय उनकी बात की एक जैसी ही सुनवाई नहीं होती रही है। कुछ समय बाद पार्लमेण्ट दो सदनों में विभाजित हो गई, हाउस आफ लार्ड्स और हाउस आफ़ कामन्स। हाउस आफ लार्ड्स के सदस्य पार्लमेण्ट में बैठने का अधिकार उत्तराधिकार में पाते थे। हाउस आफ कामन्स के सदस्य निर्वाचित होते थे।

मध्यकाल में राजाओं द्वारा महापरिषद् की बैठकें बुलाने का प्रधान कारण था धन का अनुदान प्राप्त करना। लेकिन परिषद् अक्सर इन अनुदानों को रोक लेती थी। यह उनके लिए आम व्यवहार की बात हो गई थी कि वे धन का अनुदान तभी देते थे जब राजा सदस्यों द्वारा चाहे जाने वाले सुधार करने को तैयार होता था। इस तरह से यह राजा के उपयोग के लिए धन की मंजूरी देने वाली संस्था होने के साथ ही साथ कानून बनाने वाली संस्था भी बन गई।

इस तरह मध्ययुग के अन्त तक इंग्लैंड एक ऐसा संगठित राज्य बन गया जिसमें एक राजा होता था जिसके अधिकार कुछ अंशों में सीमित हुआ करते थे। पार्लमेण्ट, जो अब महापरिषद् का नाम पड़ गया था, एक ऐसी सुस्थापित संस्था थी जिसे कर निर्धारित करने, निरंकुश शासक को हटाने, और लागू होने वाले कानूनों में अपनी इच्छा लागू करा सकने का अधिकार था।

१. किन लोगों ने इंग्लैंड पर आक्रमण किया और इसे जीत लिया?
२. विजेता विलियम ने राजा को एक शक्तिशाली हस्ती कैसे बनाया?
३. जब हेनरी द्वितीय शासक बना तो इंग्लैंड में किस तरह की अदालतें थीं?
४. हेनरी द्वितीय की सफलताओं की तालिका बनाओ।
५. व्याख्या करो: कामन ला (देशविधि), ग्रैण्ड जूरी, पेटिट जूरी।
६. आयरलैंड इंग्लैंड के शासकों के अधीन कैसे हुआ?
७. राजा जान इतना अप्रिय शासक क्यों था?

८. जिन परिस्थितियों में मैग्नाकार्टा का निर्माण हुआ, उनका उल्लेख करो।

९. मैग्नाकार्टा की तिथि बताओ और यह भी बताओ कि इसमें मुख्यतः किन बातों की व्यवस्था थी।

१०. महापरिषद् या पार्लमेण्ट का विकास दिखाओ।

फ्राँसीसी राजाओं ने अपने देश को एकताबद्ध किया

फ्राँस पर भौगोलिक प्रभाव—फ्रान्स का विकास इंग्लैंड से भिन्न तरीके से हुआ था। फ्राँस की भौगोलिक स्थिति ऐसी थी कि इस पर आसानी से आक्रमण हो सके क्योंकि यह चारों ओर से समुद्र द्वारा उसी तरह सुरक्षित नहीं था जैसे इंग्लैंड था। न उसकी सब सीमाओं की पूरी तरह रक्षा की जा सकती थी। शक्ति और अधिकार एक व्यक्ति को सौंपे गये थे, न कि पार्लमेण्ट को, क्योंकि इससे शक्तिशाली राजा आपत्तिकाल में तत्काल कार्यवाही कर सकता था।

फ्रान्स पर सामन्तवाद का प्रभाव—लेकिन राजा के हाथों में शक्ति का यह जमाव धीरे-धीरे हुआ। जब शार्लमैन का साम्राज्य छिन्न-भिन्न हुआ, तब फ्रान्स सामन्तों के बीच बँट गया। हर सामन्त के अपने वासल थे और अपनी गढ़ियाँ थीं। राजा को बहुत कम अधिकार प्राप्त था। फ्रान्स में सामन्तवाद सशक्त केन्द्रीय सरकार के विरुद्ध क्रियाशील रहा।

फिलिप आगस्टस—जब फिलिप आगस्टस (११८०-१२२३) राजा बना, तब सिर्फ पेरिस और उसके चारों ओर का बहुत थोड़ा-सा भू-खण्ड राजा के हाथों में था। शेष फ्रान्स पर शक्तिशाली सामन्तों का अधिकार था। एक शताब्दी से राजा के कुछ वासल छोटी-छोटी जागीरों को मिलाकर अधिकाधिक शक्तिशाली होते जा रहे थे। इन वासलों में इंग्लैंड का राजा जान, जिसके अधिकार में फ्रान्स का आधे से अधिक भाग था, सबसे शक्तिशाली था। लेकिन फिलिप शक्ति भी प्राप्त करना चाहता था, वह सिर्फ नाममात्र को राजा बना रहना नहीं चाहता था। उसे जल्द ही जान का विरोध करने का एक बहाना मिल गया और उसने जान को अपने दरबार में फ्रान्स बुलाया। हालांकि वासल होने के नाते अपने स्वामी के दरबार में जाना उसका एक कर्त्तव्य था, लेकिन जान ने जाने से इनकार कर दिया। इसलिए फिलिप ने फ्रान्स की उसकी भूमि का अधिकांश भाग जब्त कर लिया और जान के कब्जे में सिर्फ दक्षिणी-पश्चिमी कोना छोड़ दिया। इस तरह राजा ने अपने साम्राज्य को बहुत बड़ा कर लिया। किसी न किसी बहाने से फिलिप दूसरे वासलों से भी जमीन हथियाने लगा; उसके उत्तराधिकारियों ने भी इसी नीति को जारी रखा।

फिलिप ने राजा के अधिकार और सम्मान को भी कई तरीकों से बढ़ाया। उसने सामान्य मनुष्यों का पक्ष लिया, प्रायः उन्हें दरबार में उच्च पदों पर नियुक्त किया जो उसके प्रति उत्तरदायी थे, न कि सामन्तों के प्रति। उसने चर्चों की अदालतों की शक्ति में अड़ंगा लगाया। अपनी मृत्यु के समय तक फिलिप आगस्टस ने राजा को अपने किसी अन्य वासल की अपेक्षा अधिक शक्तिशाली बना लिया था और उसके पास किसी अन्य वासल की अपेक्षा अधिक ज़मीन हो गई थी।

फिलिप चतुर्थ (न्यायप्रिय)—न्यायप्रिय फिलिप (१२८५-१३१४) ने फ्रान्स की सरकार में कुछ नई वृद्धियाँ करना शुरू किया। इनमें से एक थी पार्लमेण्ट जिसे 'इस्टेट्स जनरल' कहा जाता था। पर इस संस्था का कानून बनाने और कर निर्धारित करने पर कोई अधिकार नहीं होता था, जैसा इंग्लैंड की पार्लमेंट को था। पहली बात तो यह है कि फ्रान्स वालों के पास मैग्नाकार्टा जैसी कोई चीज़ नहीं थी जिससे वे राजाओं को कानून का पालन करने के लिए विवश कर सकें। इसके अतिरिक्त 'इस्टेट्स जनरल' में तीन वर्ग थे: पादरी, सामन्त और तीसरा वर्ग। तीसरे वर्ग में वे जमींदार और व्यापारी आते थे जो सामन्त नहीं थे। दोनों उच्च वर्ग प्रायः वही करते थे, जो राजा उनसे कराना चाहता था, इसलिए उनके मत तीसरे वर्ग के मतों से दूने पड़ते थे। फिलिप ने तीव्र विरोध के बावजूद आमदनी पर भी एक प्रत्यक्ष कर लगाया। राजा

वैटीमैन आर्काइव

पेरिस विश्वविद्यालय में चोव, जो सत्ता का प्रतीक समझा जाता था, लिये हुए आदमी मध्ययुगीन डाक्टरों के समूह में व्यवस्था कायम करता था।

अब फ्रान्स में सबसे शक्तिशाली हस्ती बन गया था।

शत-वर्षीय युद्ध—फ्रान्स और इंग्लैंड के बीच सन् १३३७ में लड़ाई शुरू हुई और बहुत लम्बे समय तक इन लड़ाइयों का क्रम बना रहा। हालांकि लड़ाइयाँ अनवरत नहीं हुईं और बीच-बीच में कई बार बन्द भी हुईं, लेकिन ये लड़ाइयाँ शतवर्षीय युद्ध के नाम से मशहूर हैं। इनकी शुरुआत निम्न रूप में हुई। इंग्लैंड का एडवर्ड तृतीय यह दावा करता था कि अपने मातृपक्ष से वह फ्रान्स की गद्दी का उत्तराधिकारी है। वह एक सेना लेकर सिंहासन पर कब्जा करने के लिए फ्रान्स में आ उतरा। यह युद्ध का एक प्रत्यक्ष कारण था। लेकिन यह पहला दौर उस संघर्ष का केवल एक भाग था जो इंग्लैंड और फ्रांस के बीच एक शताब्दी तक चलता रहा। अंग्रेज अपने नये हथियार, लम्बे धनुष, के कारण बहुत आसानी से जीत गये। इसके बाद वे मनमाने ढंग से फ्रान्स में इधर-उधर घूमने लगे। फ्रान्स की परेशानियों में एक और वृद्धि हुई। फ्रान्सीसी सामन्तों के दो दलों के बीच गृह-युद्ध शुरू हो गया। इन परिस्थितियों में डाफिन, जो फ्रान्सीसी गद्दी के उत्तराधिकारी को कहा जाता था, इतना दुर्बल पड़ गया कि वह अपना राजतिलक भी नहीं करा सका।

इसी समय एक फ्रांसीसी महिला जोन आफ आर्क ने फ्रांसीसी सैनिकों के भीतर राष्ट्रीयता की भावना भरी। जोन एक किसान बालिका थी, जिसने राजा को इस बात के लिए राजी किया कि वह उसे अपनी सेना का नेतृत्व करने दे। उसने अपनी सैनिक टुकड़ी के मन में स्वदेश-प्रेम की भावना जाग्रत की और उन्हें आर्लिएन्स में विजय भी दिलवाई। इस विजय के बाद राजा का रीम्स कैथेड्रल में राजतिलक किया गया, जो राजतिलक का परम्परागत स्थान था। बाद में जोन अंग्रेजों के हाथ में पड़ गई और उसके ऊपर टोने और धर्म-वर्जित कार्य करने के आरोप लगाकर चर्च के न्यायालय में मुकद्दमा चलाया गया। उसे अपराधी सिद्ध किया गया और तख्ते से बाँध कर जला दिया गया।

जोन आफ आर्क के नेतृत्व और साहस ने फ्रांसीसी सेनाओं को इतना अनुप्राणित कर दिया था कि अंग्रेजों को इसके बाद एक भी विजय नहीं प्राप्त हो सकी। धीरे-धीरे उन्हें फ्रांस के बाहर निकाल दिया गया और १४५३ में यह नौबत आ गई कि उनके पास सिर्फ कैले ही रह गया।

हेनरी द्वितीय को फ्रान्स के आधे भूभाग पर अपनी जागीर के रूप में दावा करके इंग्लैंड के राजसिंहासन पर बैठे अब तक तीन सौ साल बीत चुके थे। इस काल में और खास करके शतवर्षीय युद्ध में उस भूभाग को कब्जे में लेने के प्रयास में इंग्लैंड का काफी खज़ाना और रक्त बहाया गया। आखिर मामला तय हुआ।

मध्ययुग के अन्तिम काल में फ्रांस की दशा—युद्ध में फ्रांस की विजय हुई। इससे क्षेत्रीय परिवर्तनों के अतिरिक्त दूसरे कई महत्त्वपूर्ण परिवर्तन हुए। सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण था इस काल में नये हथियारों का प्रचलन। युद्ध के उत्तर काल में बारूद का पहली बार प्रयोग हुआ जिसने जिरह्-बख्तर-धारी नाइटों को बिल्कुल असमर्थ सिद्ध कर दिया। इसके बाद, पैदल सैनिकों की एक सेना को तोपों और बन्दूकों से सुसज्जित करके कोई राजा सामन्तों की गढ़ियों की दीवारों को ध्वस्त कर सकता था और नाइटों को परास्त कर सकता था। इसने सामन्त प्रथा के ह्रास में बहुत सहायता पहुँचाई।

युद्ध ने फ्रांस में सम्पत्ति की बहुत बड़ी बर्बादी की थी। हर ओर अपराध, भिखमंगापन और कष्ट दिखाई देता था। फ्रांस ने यह जान लिया था कि विदेशियों द्वारा आक्रमण का क्या अर्थ होता है। फ्रांस ने अपनी राष्ट्रीय एकता भी स्थापित कर ली थी, लेकिन इस एकता को प्राप्त करने और विदेशी आक्रमणों को रोकने के कार्य में राजा की शक्ति अधिक बढ़ गई थी। अब राजा के पास एक उच्च कोटि की सेना थी और वह बिना किसी की अनुमति के एक सालाना कर वसूल कर सकता था। अब राजा के अलावा किसी दूसरे को सेना खड़ी करने और उसे बनाए रखने का अधिकार नहीं था। एक नियमित सेना और उसके निर्वाह के लिए उचित धन के द्वारा, फ्रांस के राजा असीम शक्तिमत्ता के रास्ते पर पूरी तरह आ गये थे।

१. फ्रांस की भौगोलिक स्थिति के कारण फ्रांस के राजा को इंग्लैंड के राजा की तुलना में अधिक शक्ति क्यों प्राप्त हुई?
२. फिलिप आगस्टस ने फ्रांस की सरकार का केन्द्रीयकरण कैसे किया?
३. न्यायप्रिय फिलिप ने फ्रांस के राजा की शक्ति कैसे बढ़ाई?
४. इस्टेट्स-जनरल क्यों इतनी शक्तिशाली नहीं हो सकी कि वह राजा की शक्ति पर रोक लगा सके?
५. शतवर्षीय युद्ध का फ्रान्स पर क्या प्रभाव पड़ा?

स्पेनी शासकों को असीम शक्ति प्राप्त हुई

स्पेन का एकीकरण—आठवीं शताब्दी में जब मुसलमानों या मूरों ने स्पेन को जीता, उसी समय से यह उनके शासन में था। इसके परिणामस्वरूप दो शताब्दियों तक स्पेन में एक ऐसी संस्कृति का साम्राज्य रहा जो उसके किसी भी पड़ोसी राज्य से उच्च कोटि की थी, क्योंकि मूर साहित्य और विज्ञान में दिलचस्पी लेते थे। समय ज्यों-ज्यों बीतता गया, त्यों-त्यों स्पेन का मुसलमानी शासन अधिकाधिक निरंकुश होता गया और ईसाई जनता की ओर से कई क्रान्तियाँ हुईं। उत्तर में छोटी-छोटी ईसाई रियासतें विकसित हुईं, और उनका आकार बढ़ता गया। इन रियासतों में प्रमुख थीं कैस्टील और ऐरागन की रियासतें। पुर्तगाल भी स्वतन्त्र हो गया। सन् १२५० तक मूरों के कब्जे में सिर्फ ग्रैनैडा का राज्य ही रह गया जो दक्षिणी छोर पर प्रायद्वीप का एक हिस्सा है।

इस समय तक, स्पेन एक संगठित राज्य होने से बिल्कुल दूर था। पर्वतीय भूभाग, सामन्तवाद और यहूदियों, मूरों और ईसाइयों की खिचड़ी आबादी के कारण राष्ट्रीय एकता प्राप्त करना बहुत कठिन था। यही हालत उस समय तक बनी रही जब तक कि इसके दो सौ वर्ष बाद ऐरागन के फर्डिनैण्ड और कैस्टील की आइज़ाबेला का विवाह नहीं हुआ। इन दोनों ने अपने-अपने कब्जे के भूभाग को एक में मिला दिया और कम से कम कहने को तो ग्रैनैडा को छोड़कर शेष सम्पूर्ण स्पेन के शासक बन गये। इसे उन्होंने १४९२ में अपने राज्य में मिलाया जब उन्होंने मूरों की जड़ में पड़े हुए इस भाग पर धावा किया और वहाँ के निवासियों को स्पेन से बाहर भगा दिया।

निरंकुश राजतंत्र—फर्डिनैण्ड और आइजाबेला निरंकुश सम्राट् बनना चाहते थे। छल या निर्ममता से उन्होंने अपनी शक्ति के सम्पूर्ण विरोधों को खत्म कर दिया। सामन्तों के बीच युद्ध की मनाही कर दी गई, उनकी अनुमति के बिना गढ़ियां नहीं बन सकती थीं; चर्च को उनके नियंत्रण में रखा गया। वे समस्त मूरों और यहूदियों को भी देश से निकालने पर कमर कसे हुए थे। हजारों को

भगा दिया गया और तहकीकात (इन्क्विज़िशन) के लिए अदालतें स्थापित की गईं। ये चर्च की अदालतें थीं जिनकी स्थापना विधर्मियों को खोज निकालने और उनके मुकदमे पर विचार करने के लिए हुई थी। इन अदालतों को फर्डिनैण्ड और आइज़ावेला ने बिल्कुल अपने अधीन रखा था और इनके द्वारा इतने लोगों को निर्ममतापूर्वक दण्ड दिया गया कि तहकीकात का नाम सुनकर ही लोगों के रोंगटे खड़े हो जाते थे। मध्ययुग के अन्त तक स्पेन राजा और रानी के अधीन पूरी तरह संगठित हो गया।

कलवर सर्विस

जब फर्डिनैण्ड और आइज़ाबेला का विवाह हुआ तब फर्डिनैण्ड की आयु सत्रह साल की थी और आइज़ाबेला की अट्ठारह साल की। उनके विवाह की घड़ी से ही स्पेन का उत्थान शुरू हुआ।

पवित्र रोमन साम्राज्य द्वारा राष्ट्रीयता में बाधा

पूर्वी फ्रैंकिश राज्य की कमजोरी—सन् ८७० की सन्धि ने फ्रैंकिश साम्राज्य को तीन हिस्सों में विभाजित कर दिया था: पूर्वी फ्रैंकिश राज्य, पश्चिमी फ्रैंकिश राज्य और इटली। पूर्वी फ्रैंकिश या जर्मनी राज्य को अनेक विपत्तियां थीं। एक पर एक कमजोर राजा, जो अक्सर सामन्तों द्वारा चुने जाते थे, लड़ाकू सामन्तों पर कब्जा पाने में असमर्थ होते थे। शासक पूर्व के स्लाव कबीलों, खास कर चेकों और हंगेरियनों के कारण हमेशा परेशान रहते थे। पूर्वी फ्रैंकिश राज्य नाम मात्र को ही एक राष्ट्र था।

स्पेन के पाँच राज्य

ओटो महान्—अन्ततः पूर्वी फ्रैंकिश राज्य में एक महत्त्वपूर्ण व्यक्ति निकला। वह था ओटो महान् (९३६-९७३)। ओटो अपनी शक्ति का प्रभाव समूचे राज्य में जमाने में सफल हुआ। उसने स्लावों को भी परास्त किया और उन्हें और पूरब की ओर ठेलना शुरू किया। यह रीति शताब्दियों तक जारी रही। जर्मन वाशिन्दे उनके पीछे-पीछे एल्बे के पार और डेन्यूब नदी के मैदान तक आकर बस गए और उन्होंने वहाँ बचे हुए स्लावों को जर्मन बना लिया।

फिर ओटो ने अपनी निगाह इटली पर फेरी। एक इटालियन सामन्त की उन्नीस वर्षीया विधवा ने ओटो से सहायता के लिए प्रार्थना की। उसके पति के स्पर्धी ने उसे अपने से विवाह न करने के कारण जेल में डाल रखा था। ओटो इटली गया, उसको बन्दी बनाने वाले सामन्त को पराजित किया, उस लड़की से प्रेम करने लगा और खुद उसने उससे विवाह कर लिया। दस साल बाद दो विरोधी दलों के बीच एक झगड़ा निवटाने के लिए
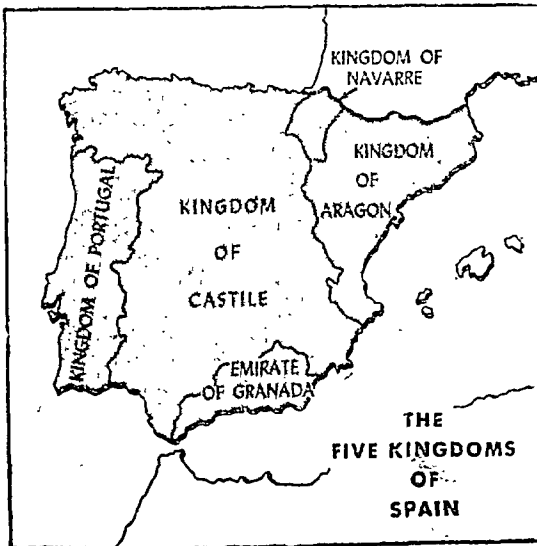
वह फिर इटली गया। इस बार उसे पोप द्वारा शार्लमेन के उत्तराधिकारी की संज्ञा दी गई और सन् ९६२ में "जर्मन राष्ट्र के रोमन सम्राट्" के रूप में मुकुट पहनाया गया। बाद में यह विशाल भूभाग पवित्र रोमन साम्राज्य के नाम से विख्यात हुआ, और कम से कम नाम मात्र को ही सन् १८०६ तक इसी रूप में बना रहा।

इटली और जर्मनी के इस राजनैतिक मिलन ने इन दोनों देशों पर अधिक प्रभाव डाला। जर्मन शासक अपने इटालियन वासलों को राजभक्त बनाए रखने के व्यर्थ प्रयत्न में अपना धन-जन बर्बाद करते रहे और जब वे इधर इटली में होते तब जर्मन वासल उनके विरुद्ध क्रान्ति कर देते। दूसरी ओर, इटली तब तक एक राष्ट्र नहीं बन सकता था जब तक इसका शासक आल्प्स के पार का कोई विदेशी हो। इसके अतिरिक्त शासकों का पोपों से फसाद खड़ा हो जाता था, क्योंकि पोप इटली के मामले में उनके हस्तक्षेप को बुरा मानते थे, खास कर चर्च के मामलों में उनके हस्तक्षेप को। पोप भी कभी-कभी ऐसा महसूस करते थे कि चूंकि वे ही सम्राटों को ताज पहनाते थे, इसलिए उन्हें इनका चुनाव करने का अधिकार है। इन सब बातों के होते हुए भी सम्राट् की उपाधि बहुत लोभनीय थी। इसमें सम्मान, गौरव और प्रभाव भरा हुआ था। यह पश्चिमी यूरोप की सर्वोच्च उपाधि थी।
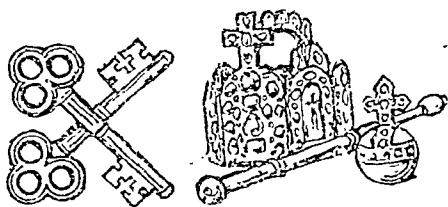
पदस्थापन (इन्वेस्टिचर) का संघर्ष—पोपों और सम्राटों के बीच सबसे नाटकीय संघर्ष वह झगड़ा था जो पोप ग्रिगरी सप्तम और सम्राट् हेनरी चतुर्थ (१०५४-११०६) के बीच हुआ। यह संघर्ष बिशपों और महाधीशों की नियुक्ति के प्रश्न को लेकर छिड़ा था। यह पदस्थापन का संघर्ष (इन्वेस्टिचर स्ट्रगल) के नाम से विख्यात है। अनेक शासकों ने खुद बिशपों और मठाधीशों की नियुक्ति की थी, क्योंकि उन्हें जो भूमि प्राप्त होती थी वह शासकों द्वारा प्रदत्त जागीर हुआ करती थी। लेकिन कभी कभी ये लोग चर्च के अधिकारी के रूप में बहुत अयोग्य सिद्ध होते थे और पोप ग्रिगरी इस दस्तूर को बदलने के लिए आरूढ़ हो गया। हेनरी और ग्रिगरी दोनों की सेनाओं में युद्ध छिड़ गया जो तब तक चलता रहा जब तक कि ये दोनों व्यक्ति मर नहीं गए। सन् ११२२ में वर्म्स के समझौते द्वारा ही यह मामला तय हो पाया जो वर्म्स नगर में किया गया था। इसके द्वारा पोपों को बिशपों और मठाधीशों को चुनने और उन्हें अपने पद का प्रतीक देने का अधिकार प्राप्त हुआ। एक अलग समारोह द्वारा शासक उन्हें भूमि दान कर सकता था।

बाद के सम्राट्—बाद में पवित्र रोमन सम्राटों के सामने कुछ कठिनाइयाँ आ खड़ी हुईं। सम्राटों की शक्ति के भय से पोप उत्तरी इटली के नगरों में उनके लिए बवाल खड़े कर देते थे। धीरे-धीरे नगरों ने पूर्ण स्वतन्त्रता प्राप्त कर ली और सम्राटों को इस बात की अनुमति देनी पड़ी कि वे नगर-राज्य स्थापित कर लें। उत्तरी इटली साम्राज्य से निकल गया। मध्य युग के अन्तिम दिनों में पवित्र रोमन साम्राज्य के अधीन मुख्यतः जर्मनी के ही राज्य रह गए थे और सम्राट् की उपाधि एक खोखला सम्मान रह गयी थी। इसके बावजूद भी यह बरकरार रही और अधिकतर इसके ही कारण न तो जर्मनी के राज्य ही और न ही इटली के राज्य आपस में मिलकर उस तरह का राष्ट्र बना सके, जैसे इंग्लैंड, फ्रांस और स्पेन ने बनाए।

मध्ययुग में प्रगति हुई

मध्य युग के राज्य—उत्तर मध्य युग के राष्ट्र आजकल के राष्ट्रों की तरह देश की जनता के सार्वजनिक समर्थन पर आधारित नहीं थे। अब भी जनता की सर्वप्रथम निष्ठा अपने इलाके के प्रति ही हुआ करती थी। राजा या राजा तथा सरदारों का एक दल ही राष्ट्र का प्रतिनिधित्व करता था और यही राज्यों को एक सूत्र में बांध

कर रखता था। जनता राज्य में कोई दिलचस्पी नहीं रखती थी।

प्रगति के कदम—इस तथ्य के होते हुए भी कि मध्य युग में सभ्यता का धरातल भिन्न था, उस काल में पश्चिमी यूरोप में कई बातों में महत्त्वपूर्ण प्रगति हुई। पूर्वमध्ययुग में ओजस्वी जर्मेनिक लोगों ने मरणोन्मुख पश्चिमी रोमन साम्राज्य पर कब्जा किया। इस काल में उत्साही संन्यासियों ने यूरोप के सुदूर स्थलों में भी ईसाइयत का प्रचार किया। परिणाम यह हुआ कि स्पेन को छोड़ कर यूरोप के दूसरे सभी देशों की संस्कृति की प्रकृति ईसाई हो गई। स्पेन शताब्दियों तक उसी सभ्यता को ग्रहण किए रहा जो अरब के लोग इस्लाम धर्म के साथ-साथ इस देश में लाये थे।

उत्तर मध्यकाल में सामन्तवाद विकसित हुआ और उससे पश्चिम में कुछ व्यवस्था आई। बाद में नया मध्यवर्ग या शहरी वर्ग विकसित हुआ जो नगरों और कस्बों में रहता था। इस वर्ग के भाग्य में समस्त पश्चिमी देशों में सबसे महत्त्वपूर्ण वर्ग होना बदा था। इंग्लैंड, फ्रांस, स्पेन और पुर्तगाल में राष्ट्रीय राज्य उदित हुए, और तभी से राष्ट्रीय राज्य राजनीति की सबसे प्रमुख इकाई बने हुए हैं।

इंग्लैंड में मैग्नाकार्टा पर हस्ताक्षर हुए, जिससे सर्वप्रथम सम्राट् की शक्ति सीमित हुई। अन्ततः
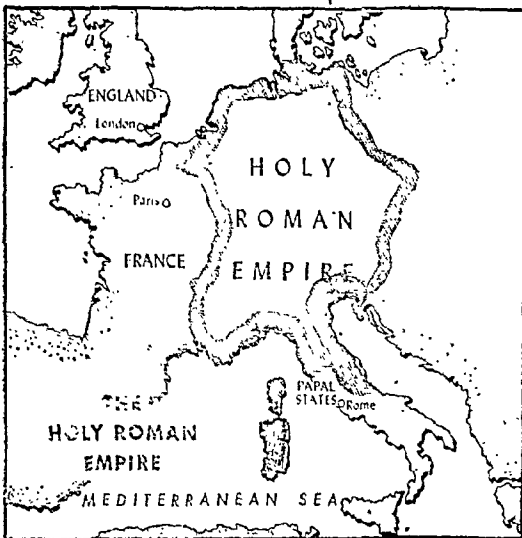
पवित्र रोमन साम्राज्य

"पार्लमेण्टों की जननी" अंग्रेजी पार्लमेण्ट अस्तित्व में आई। इसने विकसित होकर प्रतिनिधिमूलक सरकार का रूप लिया जो अधिकांश राष्ट्रों की सरकारों का नमूना है। मध्ययुग से पश्चिमी संस्कृति के बहुतेरे मौलिक तत्त्वों का आविर्भाव हुआ।

१. आठवीं शताब्दी में स्पेन में किन लोगों का अधिकार और शासन था?
२. स्पेन को पुनः एक ईसाई राज्य बनाने में शार्लमेन ने और बाद में फर्डिनैण्ड और आइजाबेला ने क्या योग दिया?
३. फर्डिनैण्ड और आइजाबेला ने किस तरह सरकार की शक्ति को अपने हाथों में केन्द्रित किया?
४. तहकीकात (इनक्विजीशन) क्या चीज थी?
५. जब ओटो महान् शासक बना, तब पूर्वी फ्रैंकिश राज्य की क्या दशा थी?
६. वह किन परिस्थितियों में सम्राट् बना?
७. इस साम्राज्य ने जर्मनी या इटली के भविष्य को किस तरह प्रभावित किया?
८. हेनरी चतुर्थ और ग्रिगरी सप्तम के बीच होने वाले झगड़े की कहानी बताओ।
९. हेनरी चतुर्थ के समय में साम्राज्य की जो स्थिति थी, मध्ययुग के अन्त में उसमें क्या भिन्नता आई?
१०. उत्तर मध्ययुग के राष्ट्रीय राज्यों में और आज के राष्ट्रीय राज्यों में क्या अन्तर है?
११. मध्ययुग में कौन-सी महत्त्वपूर्ण प्रगतियाँ हुई?

विचार-विमर्श के लिए प्रश्न

१. एल्फ्रेड महान् और शार्लमेन रोमन साम्राज्य के पतन और १००० ई० के बीच के दो महत्तम शासकों में गिने जाते हैं। वे किन अर्थों में परस्पर समान थे?

२. इंग्लैंड को जीतने वालों में अन्तिम नार्मन लोग थे। बाद के शासकों ने ऐसा करने की योजना बनाई पर असफल रहे। क्यों? क्या इंग्लैंड आज भी आक्रमण से उतना ही सुरक्षित है जितना १५०० ई० में था?

३. मध्ययुगीन राजा अपने वासलों की

गढ़ियों की संख्या घटाने की कोशिश क्यों करते थे ? राजा लोग स्वयं अपने देश के विभिन्न भागों में गढ़ियाँ क्यों बनवाते थे ?

४. मध्ययुग में फ्रांस के साथ सम्बन्ध से इंग्लैंड को यदि कुछ लाभ हुए, तो वे कौन से थे ?

५. पेटिट जूरी या विचारक जूरी के रहते हुए भी ग्रैंड जूरी का होना क्यों उचित है ?

६. जूरी के सदस्यों द्वारा विचारणा के अधिकार को हर जगह के अंग्रेजी-भाषी लोग इतना मूल्यवान् क्यों समझते हैं ?

७. अमरीका के संविधान के सातवें संशोधन में दस डालर से ऊपर के मुकदमों का विचार जूरी द्वारा करने का आश्वासन दिया गया है। इससे कम के मुकदमों का विचार करने के लिए क्यों नहीं ?

८. यदि अठारहवीं शताब्दी का कोई राजा राजकीय मामलों पर उतना कम समय लगाता जितना शेरदिल रिचार्ड लगाता था, तो उसकी भर्त्सना की जाती। यह तथ्य कि रिचार्ड की लोग बहुत प्रशंसा करते थे, इस बात को प्रकट करना है कि मध्ययुगीन विचार इससे बहुत भिन्न थे। व्याख्या करो।

९. एक कहावत है कि राष्ट्र के राजकोष की कुंजी जिसके हाथ में होती है, वही राष्ट्र का नियंत्रण करता है। व्याख्या करो कि कैसे यह कहावत पार्लमेण्ट की शक्ति में विकास होने के साथ ही साथ निरर्थक सिद्ध होती गयी।

१०. क्या फ्रान्स की पुरानी समस्या, आक्रमण का भय, आज भी उसके लिए समस्या बनी हुई है ?

११. क्यों शतवर्षीय युद्ध को बेकार का युद्ध कहा जा सकता है ?

१२. क्या उन तरीकों से जिनका प्रयोग मध्ययुगीन स्पेन की तहकीकात की अदालतें करती थीं, आज लोगों में धर्म के प्रति रुचि जाग्रत की जा सकती है ? क्या धार्मिक अत्याचार आज भी किसी देश में प्रचलित है ?

१३. मध्य युग में अपने पड़ोसी जर्मन राज्यों को संगठित या विघटित करना क्या फ्रांस के लिए हितकर था ? क्यों ?

१४. पवित्र रोमन साम्राज्य में पदस्थापन के संघर्ष में जो संधि हुई उससे आपकी राय में किसे अधिक लाभ हुआ ?

इतिहास के उपकरणों का प्रयोग

एक. नाम, तिथियाँ और स्थान

१. क्या तुम इन शब्दों की व्याख्या कर सकते हो ?

ऐंगल···बैरन···सैल्ट···वर्म्स की संधि··· डेन···इस्टेट्स जनरल···ग्रैण्ड जूरी···महापरिषद् ···हाउस आफ कामन्स ··हाउस आफ लार्ड्स··· तहकीकात···पदस्थापन का संघर्ष···जूट···मैग्ना-कार्टा···मूर···पार्लमेण्ट···पेटिट जूरी···सेलिसबरी प्रतिज्ञा···सैक्सन···तीसरा वर्ग (थर्ड एस्टेट)

२. क्या तुम्हें तिथियाँ याद हैं ?

१००० ई० पू०···५५ ई० पू०···८७०··· ९६२···१०६६··· ११२२···१२१५···१२६५··· १२९५···१३४६···१४९२···

३. नक्शे में ये स्थान दिखाइए :

क. ऐरागन··· ब्रिटैनी···कैले··· कैस्टील··· डेन्मार्क···इटली···इंग्लिश चैनल···ग्रैनैडा··· हेस्टिंग्ज़···आयरलैण्ड···पवित्र रोमन साम्राज्य··· नार्मण्डी···आर्लिएन्स···पुर्तगाल···पिरेनीज़ पहाड़ ···रीम्स···सैलिसबरी···पश्चिमी फ्रैंकिश राज्य··· वर्म्स···

ख. हेनरी द्वितीय और ओटो महान् के अधिकार में जो भाग था वह दिखाओ।

४. क्या तुम यह बता सकते हो कि ये लोग कौन थे ?

एल्फ्रेड महान्···सीज़र···कैन्यूट···शार्लमेन ···साइमन डि माण्टफ़ोर्ट······एडवर्ड प्रथम··· एडवर्ड तृतीय···फर्डिनैण्ड···ग्रिगरी सप्तम··· हैड्रिएन···हैराल्ड···हेनरी द्वितीय···हेनरी तृतीय··· हेनरी चतुर्थ (सम्राट्)···आइज़ाबेला···जान... जोन आफ आर्क···ओटो महान्···फिलिप आगस्टस ···फिलिप चतुर्थ···रिचार्ड शेरदिल···सन्त पैट्रिक···विजेता विलियम।

दो. क्या तुम अपनी बात स्पष्टतया कह सकते हो ?

१. इस काल के इतिहास में अनेक ऐसे दिलचस्प विषय हैं जिनको इस पाठ में नहीं सम्मि-

लित किया गया है, या जिनका उल्लेख मात्र किया गया है। निम्नलिखित में से एक को आगे पढ़ने के लिए और मौखिक रूप से बताने के लिए चुनो :

अल्फ्रेड महान् का शासनकाल—हेनरी द्वितीय और टामस ए बेकेट के बीच कलह—डूम्स डे बुक—इन्नोसेण्ट तृतीय के साथ राजा जान का झगड़ा—फिलिप आगस्टस के साथ राजा जान का झगड़ा—जान ने मैग्नाकार्टा पर हस्ताक्षर क्यों किया—कैन्यूट का शासनकाल—प्रिंस आफ वेल्स के पद की उत्पत्ति—अलहम्ब्रा—ग्रैनैडा पर मूरों का कब्जा—कैनोसा का हेनरी चतुर्थ—जोन आफ आर्क का जीवन।

२. फ्रांसीसी लोग अपने राजाओं और सरदारों के कौतुकपूर्ण नाम रखा करते थे। एक विद्यार्थी इन मनोरंजक और दिलचस्प नामों की एक तालिका अपनी कक्षा के लिए बना सकता है। शार्लमेन की माँ से शुरू करो।

३. निम्नलिखित घटनाओं में से किसी एक का व्यंग्य चित्र बनाओ या चित्र रंगो : (लोगों के पहनावे पर गौर करो)

ब्रिटेन में उतरता हुआ सीज़र—एल्फ्रेड द्वारा डेनों की पराजय—हैराल्ड की नार्मन पराजय—रिचार्ड धर्मयुद्ध से लौट रहा है—माडल पार्लमेण्ट में एक नगर निवासी—आर्लिएन्स में अंग्रेजों की पराजय के बाद फ्रांस के राजा का राजतिलक—ग्रैनैडा से मूरों को भगाया जाना—ओटो महान् की ताजपोशी।

४. इस अध्याय में जितनी शताब्दियों का वर्णन किया है, उनके दौरान मानव की लोकतांत्रिक पद्धति की ओर प्रगतियों की तालिका बनाओ।

तीन. सामूहिक कार्य

१. आयरलैंड के लोगों को सन्त पैट्रिक द्वारा ईसाई बनाए जाने से शुरू करके इस खंड में निरूपित इंग्लैंड और आयरलैंड के सम्बन्धों का अनुकरण करते हुए एक कालचक्र तैयार करो। इस कालचक्र में इन दोनों देशों के हमारे अध्ययन को भी जोड़ो।

२. यदि संभव हो तो कोलम्बिया ब्राडकास्टिंग सिस्टम से उन चारों रिकार्डों को प्राप्त करो जिनमें मैग्नाकार्टा पर हस्ताक्षर का नाट्यरूपक प्रस्तुत किया गया है। यदि ये उपलब्ध नहीं हैं तो अपनी कक्षा के लिए दस मिनट का एक नाटक लिखो और इस अत्यन्त महत्त्वपूर्ण घटना का अभिनय करो।

३. मध्यकालीन पोशाक बहुत भड़कीली हुआ करती थी। अपनी गुड़ियों के संग्रह में इस काल की पोशाक पहने हुए कुछ गुड़ियाँ और रखो : एक सर्फ (भूदास), एक संन्यासी, एक संन्यासिन, तेरहवीं शताब्दी की एक महिला, एक नाइट या एक राजा।

चार. ब्लैकबोर्ड पर

इस विषय पर इस खण्ड में उपलब्ध सामग्री का उपयोग करते हुए इंग्लैंड की पार्लमेंट के विकास में महत्त्वपूर्ण कदमों की कालक्रम से एक तालिका बनाओ। आगे चलकर इस पुस्तक में तुम पार्लमेण्ट में बाद में होने वाले परिवर्तनों के बारे में जानकारी प्राप्त करोगे, और उन्हें अपनी तालिका में जोड़ सकोगे।

पांच. चित्र-अध्ययन

१. टैपेस्ट्री (पृ० २०६) में इतिहासकारों की रुचि क्यों होती है ?

२. पृष्ठ २१३ के चित्र में बिशप क्यों दिखाए गए हैं ?

१८ विभिन्न जातियों द्वारा अपनी संस्कृतियों का निर्माण

मध्ययुग में जहाँ पश्चिमी और पूर्वी यूरोप की संस्कृति में धीमी गति से किन्तु मौलिक परिवर्तन हो रहे थे, वहीं एशिया और पश्चिमी गोलार्द्ध में भी उसी तरह संस्कृतियों का विकास हो रहा था। यातायात के साधनों की दुर्लभता के कारण चीन, जापान, भारत और अमरीका यूरोप से बहुत दूर थे। वे जर्मन आक्रमणों से अछूते थे। केवल चीन और भारत पर तातारों के तथा भारत पर मुसलमानों के हमलों का प्रभाव पड़ा था। अधिकांश मध्ययुगीन यूरोपवासी इन देशों में घट रही घटनाओं से और यहाँ तक कि इन देशों के अस्तित्व से भी अनभिज्ञ थे।

पूर्व में चीनी संस्कृति द्वारा मार्गदर्शन

हान वंश के पतन (२०० ई०) के बाद चीन में अस्त-व्यस्तता छायी रही। इस अवधि को चीन का 'अन्धकार युग' कहा जाता है। चीन के बाहरी प्रदेश हाथ से निकल गए और साम्राज्य में ठेठ चीन ही बच रहा। उत्तर से आक्रामकों ने चीनियों को यांग्त्से नदी की घाटी में ठेल दिया। आक्रामक बहुधा चीनी पोशाक, बोली और प्रथाओं को अपना लेते थे। इसी युग में चीन में या तो बहुत से नये विचारों का जन्म हुआ या चीनियों ने दूसरों के विचार अपनाए। वे चाय पीने लगे। उन्होंने यह खोज की कि 'काले पत्थर' जलते हैं और घरों को गरम रखने के लिए उपयोगी हैं। पहिये की गाड़ी, पालकी और पानी रहट का आविष्कार और प्रयोग शुरू हुआ। बौद्ध धर्म चीन भर में बहुत तेजी से फैला और इसके साथ बौद्ध भारत की तरह की

चीन में आज भी लोगों की गरीबी और भूमि की कमी के उदाहरण मिलते हैं। इस गाँव में, जो शंघाई के पास है, नहर के किनारे पर झोंपड़ियां बनाई गई हैं ताकि धान की खेती के लिए जमीन बचाई जा सके।

यूइंग गैलोवे

चित्रकला और मूर्तिकला का भी प्रचलन हुआ।

तथ्रांग वंश—चीनी इतिहास में तथ्रांग राजवंश का काल (६१८-६०७) बहुत उज्ज्वल काल था, जिसके सम्मुख शार्लमैन का साम्राज्य अर्ध-बर्बर मालूम होता है। उस समय के चीन की तुलना शक्ति, धन और संस्कृति की दृष्टि से मुस्लिम जगत् से की जा सकती थी। विस्तार में चीन, मंचूरिया और मंगोलिया से लेकर दक्षिण में इण्डोचीन तक और पश्चिम में मध्य एशिया तक फैला हुआ था। उसका व्यापार जहाजों द्वारा और साथ ही स्थल मार्ग से काफिलों के रास्तों से होता था। इसके द्वारा वह अरबों, यहूदियों, फारस के निवासियों, तातारों, सीरिया वासियों और यूनानियों के सम्पर्क में आता था।

महत्तम चीनी चित्रकार वू ताओ त्सू, जिसका प्रभाव आजतक महसूस किया जाता है, उसी काल में हुआ था। सबसे पहले चीनियों ने ही रोशनाई, कागज, पेंसिल और छपाई का आविष्कार किया। आठवीं शताब्दी में चीनियों ने हाथ की छपाई के स्थान पर ब्लाक द्वारा छपाई को चलाया। वे एक लकड़ी की तख्ती पर पूरे के पूरे पृष्ठ की आकृतियाँ खोद लेते थे और फिर उसकी जितनी प्रतियाँ चाहते थे उतनी प्रतियाँ ठप्पे लगा-लगाकर तैयार कर लेते थे। कुछ समय बाद चीनियों ने चल (हटाए जा सकने योग्य) टाइप बनाया, जिससे इतने अधिक अलग-अलग ब्लाक बनाना जरूरी नहीं रह गया। बौद्ध धर्म ने छपाई में लोगों की दिलचस्पी जगाई क्योंकि बौद्ध संन्यासी यह समझते थे कि यदि अपने पवित्र धर्मग्रन्थों की प्रतिलिपियाँ बनाकर दूसरों को पढ़ने के लिए बाँटेंगे तो इससे उन्हें विशेष रूप से पुण्य मिलेगा। छपाई के कारण चीनी दसवीं शताब्दी में सबसे पहले ताश और कागजी मुद्रा (नोट) बनाने में सफल हुए।

चीनियों ने बहुत प्रारम्भ में ही रेशम के कीड़ों के कोयों से धागे तैयार करना और उसे बुनकर रेशमी कपड़ा बनाना सीख लिया था जिसे वे बहुत चटक रंगों में रंगते थे और खूबसूरत कशीदे काढ़ते थे। रेशम बनाना चीन का प्रमुख उद्योग बन गया।

सुंग वंश—सुंग वंश (९६०-१२७९) के समय में सरकार की दशा बहुत अच्छी नहीं थी लेकिन चीनी कला और पाण्डित्य का स्तर बहुत ऊँचा था। इस काल में उत्कृष्ट चित्र और सुन्दर चीनी बर्तन और तश्तरियाँ बनाई जाती रहीं। फूलों, चिड़ियों तितलियों और भू-दृश्यों के चित्रण ने चीन में ललित कला का रूप ले लिया। चीनी साहित्य में उच्च कोटि के काव्य और कथा साहित्य की वृद्धि हुई।

यूआन वंश—यूरोप और एशिया के भूखण्डों के क्रूर मंगोल विजेता चंगेजखाँ ने चीनी क्षेत्र का एक हिस्सा अपने साम्राज्य में मिला लिया, लेकिन उसके पोते कुबलाई खाँ के युग में जाकर ही चीन के समूचे विस्तृत भूखण्ड की विजय हो पाई, और उसमें मंगोल वंश की स्थापना हो सकी। इसका नाम यूआन (मंगोल) वंश (१२७९-१३६८) पड़ा। खान ने चीनी रस्मों-रिवाजों को स्वीकार कर लिया, जिनका वह बहुत प्रशंसक था, और उतना ही अधिक वहाँ का बनकर चीन पर शासन किया जैसे कोई चीनी शासक शासन करता। खान का साम्राज्य यूरोप में पोलैंड और रूस से लेकर प्रशान्त महासागर तक और मंगोलिया से इंडोचीन तक फैला हुआ था।

इस परिवार की गरीबी इसके कपड़ों, मकान और इस बेढंगी बच्चागाड़ी में साफ झलकती है।

एसोशियेटेड प्रेस

उसके ही शासन-काल की बात है जब बहुत बड़ी संख्या में व्यापारी खुद चीन में आते थे। स्थल के रास्ते से व्यापार साम्राज्य के हर भाग से चलता था। सुदूर इटली तक से व्यापारी चीन के उत्कृष्ट उत्पादनों—चाय, रेशम, चीनी मिट्टी के बर्तन, हरितमणि (जेड) और चित्र-कृतियों को देखने और सम्भवत: खरीदने जाते थे। मुस्लिम देश चीन में अपने धर्म का प्रचार करते थे और ईसाई चर्च भी चीन में अपने धर्म का प्रचार-प्रसार करने की निष्फल चेष्टा में लगा हुआ था। कुबलाई खाँ की मृत्यु के बाद यूआन वंश कमजोर पड़ गया और एक शताब्दी से भी कम समय में चीनियों ने अपने मंगोल शासकों को निकाल भगाया था।

मिंग वंश—मिंग वंश (१३६८-१६४४) के शासक विशुद्ध से रूप चीनी थे, और वे शक्तिशाली थे। उन्होंने बहुत बड़े भूभाग पर कब्जा कर रखा था परन्तु उनके युग की सभ्यता उतनी ओजस्वी नहीं थी, जितनी इसके पहले की थी। लोगों की रुचि विचारों में कम रह गई थी। पर यह निर्माण का काल था। दक्षिणी राजधानी नानकिंग के अतिरिक्त एक नई उत्तरी राजधानी पेकिंग का निर्माण किया गया। चीन की विशाल दीवार को और बढ़ाया गया।

मिंग वंश के समय में यूरोपियन चीन के छोरों पर और इसके पार्श्ववर्ती देशों में बसे। अब पश्चिमी यूरोप के निवासियों ने अच्छे जहाज बनाना सीख लिया था और उन्होंने जो भौगोलिक ज्ञान प्राप्त कर लिया था, उसके कारण चीन और पश्चिमी देश एक दूसरे के बहुत निकट आ गए थे।

मांचू वंश (१६६४-१९१२) की समाप्ति के बाद से, जो मिंग वंश के बाद आया था, चीनी लोग अपने विशाल देश के लिए एक सरकार बनाने के प्रयत्न में लगे रहे हैं।

१. मध्य युग में यूरोप के निवासियों को दुनिया के दूसरे हिस्सों में होने वाली घटनाओं की इतनी कम जानकारी क्यों थी?
२. हान वंश के अन्त के बाद जो काल आया, उसमें चीनियों ने किन नई चीजों की जानकारी प्राप्त की?
३. तआंग वंश चीन के इतिहास में एक उज्ज्वल काल क्यों माना जाता था?
४. सुंग वंश में चीनी किन कलाओं में सबसे आगे बढ़े हुए थे?
५. यूआन वंश में चीन के शासक कौन थे?
६. मिंग वंश में पूर्व और पश्चिम एक दूसरे के निकट क्यों कर आए?

जापान ने अपनी संस्कृति चीन से पाई

भूगोल—जापान के साम्राज्य में चार द्वीप सम्मिलित हैं जिनका कुल क्षेत्रफल उतना ही बड़ा है जितना कैलिफोर्निया राज्य का, यहाँ की जलवायु औसत और खेती के लिए बहुत अच्छी है, लेकिन जमीन उपजाऊ नहीं है। इसकी सिर्फ़ सत्रह प्रतिशत भूमि में खेती की जाती है। इस देश में खनिज पदार्थों का भी अभाव है, इसलिए जापान एक गरीब देश है। चूँकि यह एशिया महाद्वीप के इतने निकट है, इसलिए जो कुछ इस महाद्वीप में होता है वह जापान के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण सिद्ध होता है।

चीनी प्रभाव पड़ने से पूर्व जापान की दशा—चीनी सभ्यता के प्रभाव में आने के पूर्व जापान के लोगों की क्या दशा थी या उनका रहन-सहन क्या था, इस विषय में बहुत कम जानकारी प्राप्त होती है। हमें सिर्फ इतना ही मालूम है कि वहाँ की जनता मोटे तौर पर कबीलों में बंटी हुई थी। किसी विशेष शक्तिशाली कबीले का मुखिया उस देश का सम्राट् बन जाता था। हालांकि दूसरे लोगों का भी काफी प्रभाव पड़ता आया है परन्तु अमरीका की खोज होने के शताब्दियों पहले से आज तक जापान का साम्राज्य एक प्रमुख परिवार के ही हाथों में रहा है। प्रारंभ में जापान के कुलीन तंत्र का गठन हर कबीले के नेताओं द्वारा होता था। हर कबीले से बंधे जुड़े कुछ कमकर हुआ करते थे जो ऐसी संस्थाओं में गठित थे जिन्हें हम गिल्ड (व्यापार मंडल या श्रेणी) कह सकते हैं। सामाजिक और आर्थिक दृष्टि से उनके नीचे गुलामों का नम्बर आता था।

रोज़मर्रा की जिन्दगी सादी थी। लोग शिकार करते थे, मछली मारते थे और चावल पैदा करते थे। मिट्टी के बर्तन बनाना और कपड़े बनाना मुख्य

व्यवसाय थे। धर्म भी बिल्कुल सादा था। जापानियों का विश्वास था कि सभी पदार्थ सजीव हैं और वे उनकी पूजा करते थे। इनमें से कुछ दूसरों की अपेक्षा अधिक महत्त्वपूर्ण थे।

चीनी प्रभाव—हान वंश के समय में ही चीनियों ने जापान का पता लगा लिया था और उन्होंने वहाँ की सभ्यता पर प्रभाव डालना प्रारम्भ कर दिया। चीनी यात्री, व्यापारी और कलाकार सम्भवतः कोरिया के रास्ते से जापान गए। जापानियों ने कोरिया के छोर पर एक बस्ती बसाई और वहीं वे चीनियों के सम्पर्क में आए। तआंग और सुंग राजवंशों के काल में चीनी जापान पर अपना प्रभाव बढ़ाते रहे और अन्ततः जापान ने चीन की संस्कृति को बहुत कुछ अपना लिया।

चीनियों से ही जापानियों ने लिखने की कला सीखी। लेखन के साथ ही साथ चीनी साहित्य भी वहाँ पहुँचा। खास कर कन्फ्यूशियस की कृतियाँ। इनसे प्रेरित होकर, जापानियों ने अपना इतिहास और अपने लोक साहित्य की पुराणकथाएँ लिखना शुरू किया। उन्होंने कानून की संहिता बनाई और गद्य तथा पद्य दोनों में रोमानी कहानियां लिखीं।

त आंग वंश के समय में अनेक बौद्ध प्रचारक और व्यापारी चीन से जापान गए। बौद्ध संन्यासियों ने अपने मठ स्थापित किए और सड़कें तथा पुल बनाए। उन्होंने अनाथों और अपाहिजों के लिए अनाथालय खोले। वहाँ के मन्दिर, चित्र और मूर्तियां चीनियों की तरह की थीं।

समय आने पर जापानी शासकों ने चीन की केन्द्रित सरकार के लाभों को पहचाना और उसकी नकल करने की कोशिश की। पर, जापान के कबीले इतने शक्त थे कि वे इसे पूर्णतः मानने को तैयार नहीं थे। फिर भी सम्राट् की शक्ति काफी बढ़ गई और लोग यह विश्वास करने लगे कि वह सूर्य-देव के वंश का है और इसलिए देवोपम है। सरकारी कामकाज कबीलों के नेताओं के हाथ में था, न कि उन लोगों के जो लोक-सेवा-परीक्षा द्वारा यह सिद्ध कर सकते थे कि वे किसी काम को संभालने के योग्य हैं। चीन में यह बाद वाली प्रथा ही प्रचलित थी।
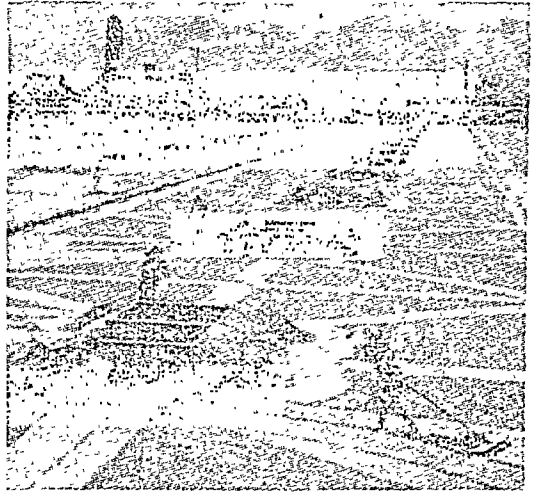
जापान ट्रैवल इनफौर्मेशन सर्विस

ये जापान के तीन महत्त्वपूर्ण उद्योग हैं: रेशम के कीड़ों का पालन और रेशम का उत्पादन; समुद्र के पानी को सुखाकर नमक बनाना; और मछली का शिकार।

जापान की राजधानी आठवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में आधुनिक क्योतो में लाई गई। वहाँ त आंग वंश के नमूने पर एक नई राजधानी बसाई गई। यह संस्कृति और सुरुचि का केन्द्र थी। कला की वृद्धि हुई। महलों और धनी लोगों के मकानों के चारों ओर सुन्दर और बड़ी-बड़ी वाटिकाएँ लगाई गईं। चित्रकला और लेखन उस समय की महत्त्वपूर्ण कलाएं थीं।

सामन्तवाद—जापान के बड़े परिवारों के प्रधान लोगों ने अपनी शक्ति को ही बनाए नहीं रखा, बल्कि अपनी भूमि भी बनाए रखी। ये जमीनें वसी ही थीं जैसी पश्चिमी यूरोप की जागीरें। समय बीतने के साथ उनके मालिक अधिकाधिक स्वतन्त्र होते गए और जापान तथा इसके सम्राट् को सामन्तवाद के एक दौर का अनुभव हुआ। बड़े परिवारों के प्रधान लोग डायमिआ कहलाते थे जिसका अर्थ है 'महान् व्यक्ति'। उनके सशस्त्र अनुचरों को समूराई कहा जाता था, जिसका मतलब है 'सेवक जन'। इन बाद के लोगों ने आगे चलकर एक लड़ाका जाति का रूप ले लिया जिनका प्रतीक तलवार थी। मध्ययुगीन यूरोप की ही तरह यहाँ के बड़े-बड़े परिवारों का अधिकाँश समय आपस में लड़ने में बीतता था।

शोगुन राज्य—बारहवीं शताब्दी में इन प्रतिस्पर्धी युद्धों ने शोगुनेट को जन्म दिया, जो शोगुन का पद था। यह वास्तव में कोई नई उपाधि नहीं थी। इसका मतलब था 'बर्बरों को दबाने वाला सेनानायक'। सेनापति योरीतोमो ने, जिसने यह उपाधि सन् ११९२ में धारण की, अपने को इतना शक्तिशाली बना लिया जितना इस पद पर पहुँचने वाला कोई व्यक्ति नहीं हो पाया था। सरकार के अधिकारीगण शोगुन के आश्रित हो गए और लड़ाका वर्ग जापान का असली शासक बन गया। सम्राट् के प्रति लोग श्रद्धा रखते थे, लेकिन वह सिर्फ नाममात्र का प्रधान था।

१. जापान की भौगोलिक स्थिति का वर्णन करो।
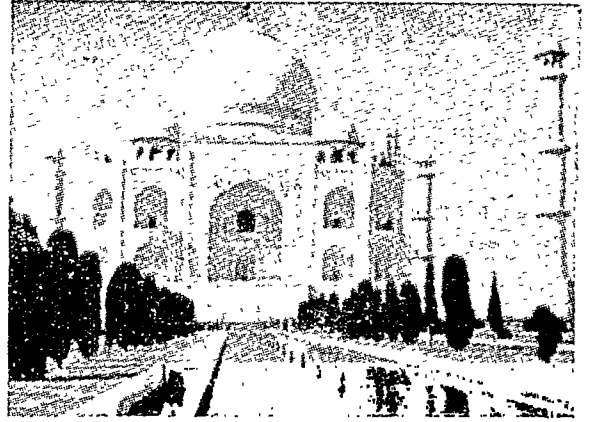
मौकमेयर

"महलों के सिरताज", ताजमहल का निर्माण शाहजहां ने अपनी मृत पत्नी की याद में कराया था।

२. चीनियों के प्रभाव में आने के पहले जापानियों की सरकार और रहन-सहन का वर्णन करो।
३. चीन पर जापान का क्या प्रभाव पड़ा?
४. जापान ने चीन की केन्द्रीय सरकार की पद्धति को क्यों नहीं अपनाया?
५. जापान में सामन्तवाद क्यों विकसित हुआ?
६. शोगुन के क्या अधिकार थे?
७. शोगुनेट के प्रारम्भ होने के बाद सम्राट् की क्या स्थिति थी?

भारत पर आक्रमण

गुप्त साम्राज्य—हालांकि भारत उत्तर में हिमालय पर्वत द्वारा एशिया से कटा हुआ है, फिर भी दक्षिणी एशिया के इस त्रिभुजाकार देश की समृद्धि की बढ़ी-चढ़ी कहानियों से लालच में आकर बहुतेरे आक्रमणकारी इसके पहाड़ी दर्रों से होकर इस पर आक्रमण करते रहे। लगभग निरन्तर वैमनस्य और आक्रमणों के एक युग के बाद भारत के निवासी गुप्त परिवार ने उत्तरी भारत में चौथी शताब्दी में एक साम्राज्य की स्थापना की। भारत के इतिहास में गुप्त वंश का काल सबसे उज्ज्वल काल था और इसे कभी-कभी भारत का स्वर्ण-युग कहा जाता है। इस काल में बौद्ध धर्म और हिन्दू धर्म अपने पूरे जोर-शोर पर थे। उच्च कोटि के चित्रों, भवनों,

मूर्तियों, नाटकों और काव्य की रचना हुई। पाँचवीं शताब्दी के मध्य में भारत पाण्डित्य का केन्द्र था और इसमें बहुत बड़े-बड़े विश्वविद्यालय थे। लेकिन हूणों के आक्रमण ने इन सबका खात्मा कर दिया।

मुसलमान आक्रमणकारी—अपने इस्लाम धर्म को पूर्व में फैलाते हुए मुसलमान आक्रमणकारी भारत में आठवीं शताब्दी में पहुँचे। आठवीं से सोलहवीं शताब्दी तक इस प्रायद्वीप में मुसलमान आक्रमणकारियों की लहर पर लहर आती रही। अरब-तुर्किस्तान, फारस और मंगोलिया के मुसलमान आक्रमण करते रहे। ऐबक नामक व्यक्ति ने जो पहले तुर्क गुलाम रह चुका था, भारत में मुसलमानी सल्तनत कायम की (१२०६)। उसने दिल्ली को अपनी राजधानी बनाया। वहाँ से वह गंगा और सिन्ध की घाटियों के लोगों पर शासन करता रहा। उसके उत्तराधिकारियों ने भारत के अधिकांश भाग को जीत लिया, लेकिन चौदहवीं शताब्दी के मध्य तक मुसलमानी साम्राज्य कमजोर

भारत का महान् सम्राट् अकबर रानी एलिजाबेथ के दरबार के राजदूत से मिल रहा है।

शोनफैल्ड कलेक्शन फ्राम श्री लायन्स

पड़ गया और अधिकांश हिन्दू राजाओं ने अपने राज्य को हथिया लिया।

भारत पर आक्रमण करने वालों में सबसे मशहूर लोगों में एक था तैमूर लंग, जो उन भयानक मंगोलों का वंशज था जो तेरहवीं शताब्दी में मंगोलों के विस्तृत साम्राज्य का शासन करते थे। तैमूर ने भारत में सन् १३९८ में प्रवेश किया, दिल्ली को उसने लूट लिया, और जहाँ-जहाँ गया, वहाँ-वहाँ लूटमार की। वह जहाँ-जहाँ गया, वहाँ-वहां बर्बादी और निराशा फैलाता गया। हालांकि वह भारत में केवल दो साल ही रहा लेकिन उसने इस देश में खलबली मचा दी। इसके एक शताब्दी से कुछ ही बाद उसी मंगोल परिवार के एक दूसरे व्यक्ति बाबर ने उत्तरी भारत पर कब्जा कर लिया और मुगल साम्राज्य की स्थापना की तथा दिल्ली को अपनी राजधानी बनाया।

बाबर की मृत्यु के कुछ ही समय बाद उसका पोता शासक बना, जो इतिहास के बहुत विलक्षण शासकों में से एक था। उसका नाम अकबर था, वह भी मंगोल ही था। हालांकि वह एक सफल और साहसी विजेता था, लेकिन वह अपनी विजयों के कारण उतना प्रसिद्ध नहीं है जितना अपने शान्ति-कालीन सुधारों के कारण। उसने सरकार को सुव्यवस्थित किया और एक कुशल और ईमानदार लोक-सेवा का प्रारम्भ किया, और लोगों की बहुत अच्छी सेवा की। अपनी उदारता के कारण उसने हिन्दुओं और मंगोलों, दोनों को सरकार की सेवा के लिए नियुक्त किया। उसने खुद एक हिन्दू लड़की से शादी की। उसने कर और मुद्रा-प्रणाली में सुधार किया और नाप और तोल के लिए सर्वत्र एक जैसी पद्धति प्रचलित की। उसने उन करों को हटा दिया जो इसके पहले उन सभी लोगों पर लगाए गए थे जो मुसलमान नहीं थे।

अकबर सभी धर्मों में दिलचस्पी लेता था। हालांकि वह मुसलमान था, लेकिन वह सभी धर्मों का अध्ययन करता था।

१. गुप्त साम्राज्य की संस्कृति का वर्णन करो।
२. किस रास्ते से आक्रमणकारी भारत पहुँचते थे?
३. भारत पर इतने अधिक लोगों ने धावा क्यों किया?

४. मुसलमानी साम्राज्य की राजधानी कौन सी थी ?
५. तैमूर लंग, बाबर और अकबर कौन थे ?

पश्चिमी गोलार्ध में सभ्यता का उदय

रैड इंडियनों का आगमन—आज से संभवत: बीस-पच्चीस हजार साल पूर्व, पाषाण युग के लोग एशिया से पश्चिमी गोलार्ध में आकर बसे। ये लोग संभवत: एल्यूशियन द्वीपसमूह और अलास्का से होकर आए थे। या मुमकिन है उस समय साईबेरिया और अलास्का स्थल की एक पट्टी से जुड़े रहे हों। शताब्दियों के दौरान ये लोग दक्षिण की ओर बढ़ते गए और अन्त में यह स्थिति आ गई कि उत्तरी और दक्षिणी अमरीका दोनों में यत्र तत्र ताम्रवर्ण के कबीलों के लोग फैल गए। इस विषय में बहुत कम जानकारी प्राप्त है कि उन्होंने उन्नति किस तरह की पर जब पन्द्रहवीं शताब्दी में यूरोप के लोग पेरू और मेक्सिको में आए तब उन्होंने आश्चर्यजनक सभ्यता का प्रसार पाया।

मय सभ्यता—अमरीकी आदिवासियों की एक सभ्यता के केन्द्र आज के ग्वाटेमाला, ब्रिटिश हौण्डूरास, और मेक्सिको के यूकाटान प्रायद्वीप में स्थित थे। ये मय लोग कहाँ से आए थे, और कब इनकी सभ्यता अपने शिखर पर पहुँची थी, इसके बारे में आज हमें कोई ठीक जानकारी नहीं है। ऐसा माना जाता है कि ये लोग यहाँ १००० ई० पू० आए थे और अमरीकी आदिवासियों के एक कम उन्नत वर्ग को इन्होंने पराजित किया था।

खुदाइयों और पुरातत्त्वविदों के अध्ययनों से हमें मय संस्कृति के बारे में कुछ असाधारण बातों का पता चलता है। सरकार की इकाई था नगरराज्य। नगर एक दूसरे के साथ सुन्दर सड़कों से जुड़े हुए थे जिन पर हरकारे दौड़ते रहते थे। वहाँ घोड़े और पहियेदार सवारियाँ नहीं थीं। नगर-राज्यों के बीच बहुत स्पर्धा बनी रहती थी।

मय भवन उतने निर्दोष नहीं बने थे जितने प्राचीन यूरोप या मिस्र के भवन, फिर भी उनमें उत्कृष्ट कोटि का शिल्प झलकता। उनके अनेक मन्दिर पिरामिडों की शक्ल के होते थे और उन पर बेढंगी आकृतियाँ खुदी रहती थीं। उनकी मूर्तियों में बहुत सौन्दर्य पाया जाता है। नहरों की सड़कें पत्थर या सीमेन्ट की बनी होती थीं। नगरों और पनालों से नगर को सूखा और स्वच्छ बनाए

पुरातत्त्ववेत्ताओं ने ग्वाटेमाला के टिकल नगर की खुदाई की है। इस नमूने से हमें मय सभ्यता की, पिरामिड के आकार की इमारतों की स्पष्ट झलक मिल जाती है। सबसे बड़ा परनाला नगर के मध्य में बना है, और सड़कें बहुत सावधानी से योजनापूर्वक बनी हुई हैं।

ब्रुकलिन म्यूजियम कलेक्शन
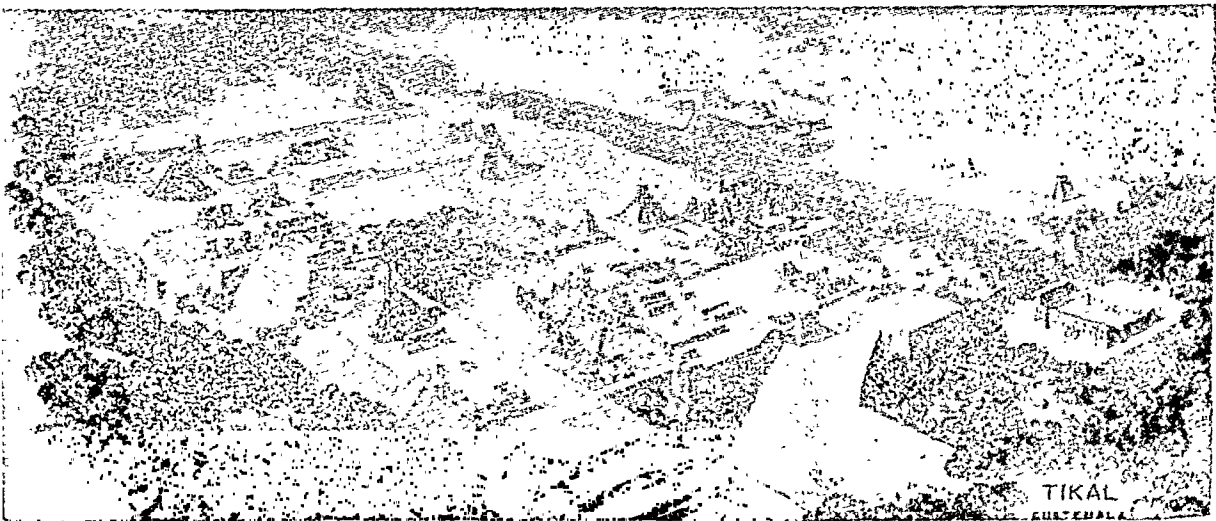
रखने में सहायता मिलती थी।

मयों के अनेक देवता थे जिनमें सूर्यदेव और रात्रिदेव, चन्द्रदेव, ध्रुवतारा और पवनदेव भी आते थे। वे अन्न देवता की प्रार्थना करते थे और कालदेव से डरते थे। उनके देवियों-देवताओं को नर बलि चढ़ाई जाती थी।

मय लोग कुछ लेखा रखते थे पर उनकी भाषा में लिपि नहीं थी। उनके प्रतीक प्राचीन चित्र-लिपि से विकसित हुए थे। दूसरी अनेक सभ्यताओं की तरह ही उनके कुछ बहुत उन्नत विचार उनके धर्म से उत्पन्न हुए थे। अपने धार्मिक पर्वों का हिसाब रखने के लिए, पुजारियों ने एक पंचाँग बना रखा था जो बहुत जटिल था लेकिन था बहुत दुरुस्त। इसके लिए गणित की जानकारी के साथ ही साथ ज्योतिष का ज्ञान भी होना जरूरी था। उन्हें ग्रहों और तारामंडलों का ज्ञान था, चन्द्रमा की गति का पता था और वे ग्रहणों की भविष्यवाणी कर सकते थे। मध्य युग के अन्त में यूरोपवासियों के आने से पहले दूसरे अमरीकी आदिवासियों की तुलना में मय सभ्यता सबसे ऊंची थी। किन्हीं अज्ञात कारणों से १००० ई० के लगभग इसका ह्रास हो गया।

पश्चिमी गोलार्द्ध में सभ्यता

ऐज्टेकों के तिथिपत्र में बहुत से चित्र होते थे। यह एक प्रकार की चित्रलिपि है।

हैडेन नक्षत्रमण्डल। अमेरिकन म्यूज़ियम आफ नेचुरल हिस्ट्री।
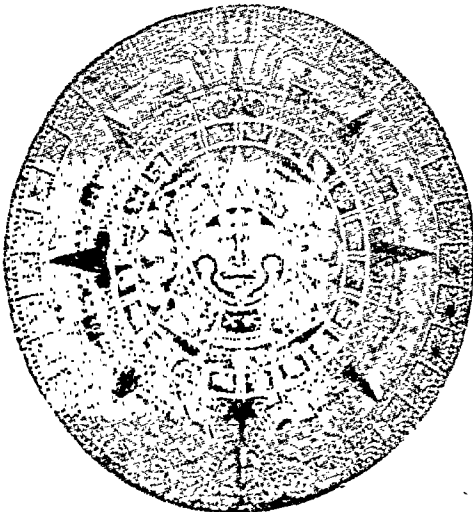
ऐज्टेक सभ्यता—तेरहवीं शताब्दी के दौरान ऐज्टेक कहे जाने वाले लोग मैक्सिको में जा बसे जहाँ उनको मयों के उत्तराधिकारी लोग मिले। उन्होंने उनसे बहुत कुछ सीखा। ऐज्टेक लड़ाकू जाति के थे। इन्होंने बहुत बड़ा और शक्तिशाली साम्राज्य स्थापित किया। समूचे साम्राज्य में अच्छी सड़कें बनी हुई थीं और एक शक्तिशाली सेना द्वारा इस पर नियंत्रण रखा जाता था।

उन्होंने टेक्सकोको की दलदली जगह में एक द्वीप पर अपनी सुन्दर राजधानी उसी जगह पर बसाई थी जहाँ आज का मैक्सिको नगर है। सन् १५२० में इस नगर की आबादी दो लाख के लगभग थी। पत्थर के बने रास्ते इस नगर को आस-पास के देश से जोड़ते थे। सुरक्षा की दृष्टि से इन रास्तों पर बीच-बीच में नालों पर उठाऊ पुल बने हुए थे। नगर में चौड़ी सड़कें थीं, बड़े-बड़े बाजार थे, और शानदार पत्थर की इमारतें थीं।

खेती ऐज्टेकों का प्रमुख व्यवसाय था। वे मक्का, टमाटर, याम, आलू आदि अनेक चीजें पैदा करते थे जो अमरीका में ही पैदा होती थीं और मध्यकालीन यूरोप के लिए अज्ञात चीजें थीं। उनकी राजधानी में अनाज के बड़े-बड़े बखार थे, जिसे वे सूखे या युद्ध के दिनों के लिए भरे रहते थे। जमीन पर सभी लोगों का अधिकार था, समूची उपज में से हर परिवार को अपना हिस्सा मिलता था।

ऐज्टेकों का धर्म भयावना और खूनी था। उनका प्रमुख देवता युद्ध का देव था जो नर-वलि मांगता था। युद्ध के वन्दियों को दास बनाकर बेच दिया जाता था, अथवा रक्त के प्यासे देवता को वलि चढ़ा दिया जाता था। अनेक दूसरे देवता थे जो प्रकृति की शक्तियों के प्रतिनिधि थे। पुरोहितों का एक वर्ग दूसरे लोगों के परिश्रम पर आनन्द से जीवन विताता था।

ऐज्टेकों का अपना एक पंचांग था, हालांकि यह उतना दुरुस्त नहीं था जितना मयों का पंचांग। उनकी लिखावट कुछ संकेत-चिह्नों से बनी हुई थी जिससे वे अपना लेखा तैयार करते थे। ऐज्टेक शिल्पकार सोने, चाँदी, ताँबे, काँसे और बहुमूल्य मणियों के जवाहरात और आभूषण तथा बर्तन बनाते थे जो प्राचीन यूनान की चीजों के जोड़ के होते थे।

इंका सभ्यता—दक्षिण की ओर आज के कोलम्बिया और मध्य चिली के बीच में इंका लोग रहते थे जो ऐज्टेकों से आगे बढ़े हुए थे। ये पेरू के पठार में पूर्व की ओर से आये थे, और धीरे-धीरे अपना शासन उन कबीलों पर करते गये थे जो वहाँ रहते थे। सन् १४०० तक उन्होंने एक साम्राज्य स्थापित कर लिया था जिसमें आधुनिक इक्वेडर, पेरू और बोलीविया सम्मिलित थे।

इंका लोग कुशल किसान थे। जमीन पहाड़ी और बंजर थी, लेकिन सिंचाई करके और सीढ़ीदार खेत बनाकर वे काफी अनाज पैदा कर लेते थे। हर गाँव के पास अपना गोदाम हुआ करता था

बैटीमैन आर्काइव

क्या इंका लोगों के लिए सूर्य को अपना प्रधान देवता मानना स्वाभाविक बात थी? उनके मूल पेशों का ध्यान करो।

जहाँ से यदि किसी कारण लोगों की अपने रसद में कमी पड़ जाती थी तो उन्हें अपना निश्चित हिस्सा मिला करता था। भूमि पर किसानों का व्यक्तिगत रूप से अधिकार नहीं था, बल्कि सरकार हर आदमी को जीवन भर के लिए कमाने खाने को एक जमीन का टुकड़ा सौंप रखती थी।

इंका लोगों का धर्म उतना निर्मम नहीं था जितना ऐज्टेकों का था। सम्राट् या इंका के प्रति लोग यह मानकर कि वह देवताओं का वंशज है, बहुत श्रद्धा रखते थे। पर उनके प्रमुख देवता थे सूर्यदेव जो कृपालु और सहायक प्रकृति के थे। उनके सम्मान में इंका लोगों ने एक मन्दिर बना रखा था जो सोने से पूरी तरह सजा हुआ था। इनके अनेक देवताओं में से किसी को भी शायद ही कभी नर-बलि चढ़ाई जाती रही हो।

सरकार शक्तिशाली इंका के अधीन थी और सुव्यवस्थित थी। इंका ने अपने साम्राज्य को चार खण्डों में बाँट रखा था, जिन्हें दुनिया के चार खंड

कहा जाता था। हर खण्ड को भी बाँटा गया था और इन खंडों को भी और आगे बाँटकर उस सीमा तक पहुँचाया गया था कि इसकी सबसे छोटी इकाई में दस परिवार आते थे। हर छोटे खण्ड का प्रधान अपने से ऊपर के खण्ड के प्रधान के प्रति उत्तरदायी होता था। इस पद्धति से पूरे साम्राज्य को सुसंगठित कर रखा गया था—लेकिन इसके कारण अफसरों की भरमार थी, जिन्हें लोगों द्वारा चुकाये जाने वाले कर से वेतन मिलता था।

समूचे साम्राज्य को सूत्रबद्ध बनाए रखने के लिए सड़कों और पुलों की भी एक बेजोड़ व्यवस्था की गई थी। यह सम्भवतः अपने समय की दुनिया में सड़कों की सबसे सुन्दर व्यवस्था थी। इंका इंजीनियर दलदली भूमि और ऊँचे पठारों के पार सड़कें बना लेते थे। गहरी खाइयों के आर-पार रस्सियों पर लटकते हुए पुल बने हुए थे और नदियों और नालों के ऊपर पुल बने हुए थे। युद्ध की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण स्थानों पर ऊँची जगहों पर गढ़ियाँ बनी हुई थीं, जहाँ से आस-पास की सारी जगह दिखाई देती थी। चूँकि इंका लोगों को पहियेदार गाड़ियों के बारे में कोई ज्ञान नहीं था, इसलिए अधिकतर सड़कें संकरी और यातायात तथा माल असबाब का लाया जाना हरकारों और बोझा ढोने वाले आदमियों के द्वारा चलता था।

इंका लोग बहुत कुशल वास्तुकार थे। इमारतें बड़े-बड़े पत्थरों को चुनकर बनाई जाती थीं जिनमें से एक-एक कई टनों के वजन का होता था। इनकी पट्टियाँ इतनी सावधानी से काटी जाती थीं कि आपस में बिल्कुल दुरुस्त बैठ जाती थीं। इंका इमारतों के अवशेषों से उनके वास्तुकारों का कौशल दिखाई पड़ता है।

इंका लोगों के जीवन में दूसरी कलाएँ भी पाई जाती थीं। शिल्पी सुन्दर सूती कपड़े, टेपेस्ट्रियाँ, और सोने तथा चाँदी की सजावटी चीजें बनाते थे। इंका डाक्टर, दन्तचिकित्सक और शल्य-चिकित्सक ऐसे आपरेशन (चीरफाड़) भी कर लेते थे जिनके लिए बहुत कौशल की जरूरत पड़ती है।

इंका लोगों की लेखन-पद्धति बहुत अटपटी थी। उन लोगों में मयों और ऐज्टेकों की तरह प्रतीकात्मक लेखन शैली नहीं प्रचलित थी। इनके स्थान पर वे विभिन्न रंगों की गाँठ दी हुई रस्सियों का प्रयोग करते थे जिनमें से हर एक का अलग-अलग अर्थ होता था। इनके द्वारा पुरोहित लोग बहुत महत्त्वपूर्ण घटनाओं को अंकित कर रखते थे।

मयों, ऐज्टेकों और इंका लोगों की सभ्यता इससे भी अधिक आश्चर्यजनक तब लगती है जब हम यह याद करते हैं कि इनका निर्माण लोहे या काँसे के औजारों के या बोझा ढोने के लिए घोड़ों के बिना ही हुआ था।

१. किस समय के लगभग अमरीकी आदिवासी पश्चिमी गोलार्द्ध में आए?
२. वे किस रास्ते से होकर वहाँ पहुँचे?
३. अमरीकी आदिवासी सभ्यता के तीनों केन्द्र कहाँ-कहाँ थे?
४. ये तीनों सभ्यताएँ किन कलाओं में बहुत बढ़ी-चढ़ी थीं?

विचार-विमर्श के लिए प्रश्न

१. कहा जाता है कि चीन अपने विजेताओं पर सदा से विजय प्राप्त करता रहा है। जो कुछ तुमने चीन के बारे में पढ़ा है, उसको देखते हुए क्या तुम इस कथन से सहमत हो?

२. कुछ काल ऐसे होते हैं जब इतिहास में बहुत तेजी से परिवर्तन होते हैं और दूसरे कुछ कालों में इतिहास का प्रवाह बहुत मन्द हो जाता है। चौथी से सातवीं शताब्दी के बीच चीन के बारे में इनमें से कौन सी बात सत्य उतरती है?

३. चीन और जापान की भौगोलिक स्थिति ने इनके विकास को किन रूपों में प्रभावित किया?

४. जापान में एक ही परिवार के लोगों के सम्राट् बनने से जापान को क्या किसी तरह का लाभ हुआ? क्या इसमें तुम्हें कोई हानि भी दिखाई देती है?

५. तुम्हारी राय में अकबर को किन बातों ने महान् बनाया?

६. आपकी राय में क्या मय सभ्यता मिस्र की सभ्यता जैसी थी?

७. प्रारम्भिक शताब्दियों की संस्कृतियों में युद्ध का देवता इतना महत्त्वपूर्ण क्यों था?

५. लोकतंत्र की दिशा में बढ़ते कदम

यूरोप के अधिकांश भागों में मध्ययुग पिछड़ेपन का युग था। मानवता की स्वतंत्रता और निर्बन्धता की दिशा में होने वाली प्रगति को शक्तिशाली राजाओं ने अवरुद्ध कर दिया था। सामान्यजन गरीबी और युद्ध द्वारा उत्पन्न कष्ट की दशा में पड़े हुए थे।

जर्मन कबीलों का शासन सरदार लोग करते थे जिनका निर्वाचन स्वतंत्रजनों (फ्रीमैन) की एक सभा द्वारा होता था। लेकिन रोमन कानूनी पद्धति का स्थान बेढंगे कानूनों ने और अन्धविश्वास ने ले लिया था। पर जर्मन कबीलों में गुलामी की वैसी पद्धति नहीं थी जो रोमन साम्राज्य में आम थी।

सामान्य जन लार्डों के अत्याचार और उत्पीड़न के शिकार थे। मध्य युग में सर्फों

(भूदासों) ने मजदूरी में पैसे की मांग की। इंग्लैंड में भूदास प्रथा का अन्त हो गया।

धीरे-धीरे समूचे यूरोप के बढ़ते हुए नगरों में बसने वाले नए मध्यम वर्ग ने स्वायत्त शासन की मांग की और इसे कुछ अंशों में प्राप्त भी किया। नगर के लोगों को पार्लमेण्टों में बैठने की अनुमति मिली।

८. कुछ लोग ऐसा मानते हैं कि समूची मानव जाति स्वभावतः काहिल है और यह प्रगति तभी करती है जब परिस्थितियों से ऐसा करने को बाध्य होती है। क्या तुम यह सोचते हो कि भौगोलिक स्थिति के दबाव के कारण ही इंका लोगों ने खेती करने की नई रीतियाँ निकालीं?

इतिहास के उपकरणों का प्रयोग

एक : नाम, तिथियाँ और स्थान

१. क्या तुम निम्न शब्दों की व्याख्या कर सकते हो?

बौद्ध धर्म—एल्यूशियन द्वीपसमूह—गंगा

लोकतांत्रिक सरकार की दिशा में मध्ययुग के उत्तरार्द्ध में इंग्लैंड में महत्त्वपूर्ण कदम उठाए गए। इनमें चलती-फिरती अदालतें, आम कानून का प्रारंभ, जूरी के सदस्यों द्वारा मुकदमों पर विचार, महापरिषद् (ग्रेट कौंसिल) का और अन्ततः पार्लमेंट का निर्माण, और मैग्नाकार्टा सम्मिलित थे। इन सभी विकासों ने राजा की शक्ति को क्षीण कर दिया और जनता के अधिकारों को बढ़ा दिया।

फ्रान्स की तस्वीर बिल्कुल भिन्न ही थी, जहां धीरे-धीरे राजा ने असीम शक्ति प्राप्त कर ली और जनता को कोई राजनैतिक शक्ति प्राप्त नहीं रह गई।

स्पेन में निरंकुश राजतंत्र और इनक्विजिशन (जांच-पड़ताल) ने सरकार की प्रगति और जिज्ञासा की स्वतंत्रता को रोका और वैज्ञानिक शोध को अवरुद्ध किया।
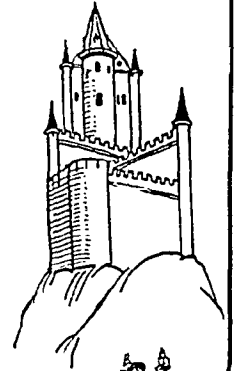
इस तरह समूचे मध्ययुग में मानवता ने कुछ क्षेत्रों में लोकतांत्रिक आदर्शों की दिशा में कदम बढ़ाया और दूसरे कुछ क्षेत्रों में पिछड़ापन आया। लेकिन इंग्लैंड में इस काल में होने वाली प्रभावकारी उपलब्धियां भावी पीढ़ियों के लिए निर्माण कार्य के लिए स्थायी उपलब्धियां सिद्ध हुईं।

नदी—ग्वाटेमाला—भारत—इण्डोचीन—सिन्ध नदी—ब्रिटिश होंडुरास—कैलिफोर्निया—जापान क्योतो—मंचूरिया—मैक्सिको नगर—चीन—दिल्ली—मंगोलिया—पेरू—पोलैंड—साइबेरिया यांग्त्से नदी—यूकाटान प्रायद्वीप।

२. **क्या तुम बता सकते हो कि ये व्यक्ति कौन थे?**

अकबर—बाबर—ऐबक—चंगेजखां—कुबलाई खां—तैमूर लंग।

दो. क्या तुम अपनी बात को स्पष्ट रूप से कह सकते हो?

नीचे लिखे हुए कथनों में से कुछ पर अनौपचारिक रूप से बहस का आयोजन करो:

जापानी सिर्फ नकलची थे।

शोगुनेट ने जापान को सामन्ती राज्य के पचड़े से बचा लिया।

चीन प्राकृतिक साधनों की दृष्टि से एक धनी राज्य है।

५. जीवन निर्वाह की प्रगति के चरण

जब पश्चिमी रोमन साम्राज्य पर हमला हुआ, तब रोमन सभ्यता का ह्रास शुरू हो गया। गरीबी, असुरक्षा और व्यापार-वाणिज्य के अभाव से अनेक क्षेत्रों की प्रगति अवरुद्ध हो गई। इन सबके बावजूद मध्य युग में सांस्कृतिक उपलब्धियों का सर्वथा अभाव नहीं होने पाया।

विज्ञान और आविष्कार में प्रगति

प्रारंभिक मध्ययुग में स्पेन में जो अरब लोग बसे, वे अपने साथ अनेक वस्तुएँ—कम्बल और गलीचे, कपड़े, और नई खाद्य सामग्रियां—लाए। पर मुसलमानों के अधिकार में आने वाला अधिकांश भाग गरीबी और आक्रमणों से तबाह हो रहा था, जिससे सांस्कृतिक प्रगति का होना असम्भव हो गया था।

चौदहवीं शताब्दी में एक नए हथियार, लम्बे धनुष, का प्रयोग शुरू हुआ। इसके एक शताब्दी बाद, बारूद का आविष्कार फ्रान्स में हुआ जिसने युद्ध-कौशल में आमूल परिवर्तन कर दिया।

इसी बीच पूर्व में चीनी रेशम तैयार कर रहे थे और इससे कपड़े बुन रहे थे, ब्लाक के टाइपों से छपाई कर रहे थे, शक्ति के लिए पनचक्की और ठेलों (ह्वील बैरों) का प्रयोग कर रहे थे, और मध्ययुग के उत्तरार्द्ध में नई राजधानी बसा रहे थे।

शिक्षा में प्रगति

मध्ययुग के प्रारम्भिक काल में शार्लमेन ने स्वतंत्र जनों के बालकों के लिए विहारों के स्कूलों (ऐब्बी स्कूल) की स्थापना करके अपने समूचे राज्य में शिक्षा का पुनरुत्थान किया। उसके मरने के साथ ही सभ्यता में उन्नति की ओर होने वाली यह स्वल्प रुझान समाप्त हो गई।

इसी समय के लगभग मय लोग गणित के अनेक नए सिद्धान्तों की खोज कर रहे थे। उन्हें ज्योतिष के बारे में भी कुछ जानकारी प्राप्त थी।

यूरोप के मठों में संन्यासी लोगों ने सैकड़ों वर्षों तक उन एकमात्र स्कूलों को बनाए रखा जिनका उन दिनों अस्तित्व था। उन्होंने पाण्डुलिपियों की प्रतिलिपियां तैयार करके यूनानियों के ज्ञान और पाण्डित्य की दुनिया के हित के लिए रक्षा की।

बारहवीं और तेरहवीं शताब्दी में इंग्लैंड और फ्रान्स में विश्वविद्यालयों की स्थापना हुई। लेकिन मध्ययुग में ऐसे लड़कों और लड़कियों की संख्या बहुत अधिक थी जिन्हें किसी तरह की शिक्षा का अवसर नहीं मिलता था।

कलाओं में प्रगति

पश्चिमी साम्राज्य के जर्मन हमलावर सोने और अम्बर (तृणमणि) के आभूषण बनाते थे और चमड़े के काम करते थे, लेकिन कुल मिलाकर उनकी सभ्यता बहुत बेढंगी और अविकसित थी। उन्होंने सभ्यता के विकास में कोई योगदान नहीं किया।

समूचे पश्चिमी यूरोप में रोमन और गोथिक शैली के गिरजे बनाए गए। पूर्व में चीनी रेशम और मिट्टी के पात्र पर रंगसाजी करते रहे, संगीत की रचना की, कागज और चीनी के नाजुक बर्तन बनाए, और उच्च कोटि के काव्य और कथा साहित्य की रचना की।

स्पेन में मूरों की सभ्यता बहुत उच्चकोटि की थी। बाइजैंटियम (कुस्तुन्तुनिया) की शैली में उनके महल और मसजिदें बन रही थीं जिन्हें वे मोजइक से सजाते थे। मूर शिल्पी अनेक तरह की सुन्दर चीजें बनाते थे।

यूरोप के लिए विश्व के अपरिचित भाग में मय, एज़टेक और इंका सुन्दर मूर्तियों का निर्माण कर रहे थे, बहुमूल्य मणियों पर इस तरह की नक्काशी कर रहे थे जो प्राचीन यूनान की चीजों से होड़ ले रही थी और साथ ही एक तरह के स्थापत्य का विकास कर रहे थे।
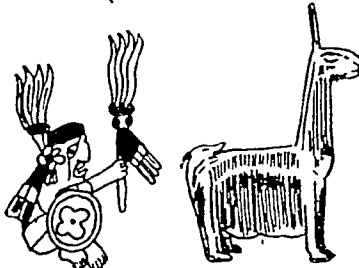
इस तरह रोम के ध्वंस के बाद कुछ लोगों की प्रतिभा और रुचि के बल पर विश्व ने बहुत थोड़ी सी सांस्कृतिक प्रगति की।

तैमूर ने भारत की संस्कृति में अवरोध ला दिया।

उच्च सभ्यता के विकास के लिए लोहे का प्रयोग आवश्यक नहीं है।

पंचांग बनाना सभ्यता का एक चिह्न है।

जातीय दृष्टि से किसी भी देश के लोग 'शुद्ध' नहीं हैं।

२. अपनी कक्षा के तीन लड़कों को १० मिनट की एक रेडियो वार्ता के लिए चुनो जिनमें से हर एक किसी इंका या ऐज़्टेक नगर की खोज का आखों देखा हाल प्रस्तुत करे।

तीन. सूचना-पट्ट के लिए

१. इस अध्याय में जिस काल का वर्णन किया गया है, उसके दौरान चीन, भारत और अमरीका में जो चीज़ें उत्पन्न होती थीं, उनके चित्र लाओ और उन्हें अपनी कक्षा के लिए प्रदर्शित करो। मेज़ पर रखकर दिखाने के लिए इन उत्पादित चीजों के नमूने लाओ।

२. सुन्दर बर्तन बनाने में चीन बेजोड़ रहा है। इन बर्तनों में से कुछ के चित्र अपने सूचनापट्ट के लिए जुटाओ।

चार. चित्र अध्ययन

पृष्ठ २२५ पर दिए हुए चित्र का अध्ययन करो और उसमें दिखाए हुए व्यवसायों और रीतियों पर अपनी कक्षा में बहस करो। सबसे ऊपर के चित्र की स्त्री रेशम के कीड़े पाल रही है। भारत में नमक कैसे तैयार किया जाता है? क्यों हमारे देश की मछली मारने वाली नौकाएँ जापानी नावों जैसी लगती हैं?

पांच. कला के माध्यम से इतिहास का अध्ययन

१. इस अध्याय में जिस काल का उल्लेख है उस काल के चीनियों, हिन्दुओं, मंगोलों या अमरीकी आदिवासियों का चित्र बनाओ या रंगो और उनका पहनावा भी दिखाओ।

२. चीनी कला पर भाषण देने के लिए अपने कला-शिक्षक या अन्य किसी अधिकारी व्यक्ति को आमंत्रित करो।

छह. सामूहिक कार्यक्रम

एक सभा की आयोजना करो जिसमें तुम मध्ययुगीन जगत् के सुदूर भागों के लोगों का चित्रण करो : एक हिन्दू, एक चीनी, एक जापानी, एक रूसी, एक अरब का मुसलमान, एक इंग्लैंड का नाइट, फ्रांस का एक भू-दास, स्पेन का एक मूर, और इटली का एक फ्रांसिस्कन संन्यासी, ये सभी अपने-अपने युग की पोशाक पहने हों और अपने देश की उपलब्धियों का वर्णन करें। कक्षा की समितियाँ निम्न काम करेंगी : (अ) लेख तैयार करना, (ब) पोशाक जुटाना, (स) रंगमंच की व्यवस्था करना, और (द) रिहर्सल। ऐसे सामूहिक आयोजन से मध्य युग का तुम्हारा अध्ययन अपने चरम उत्कर्ष पर पहुँच जाएगा।
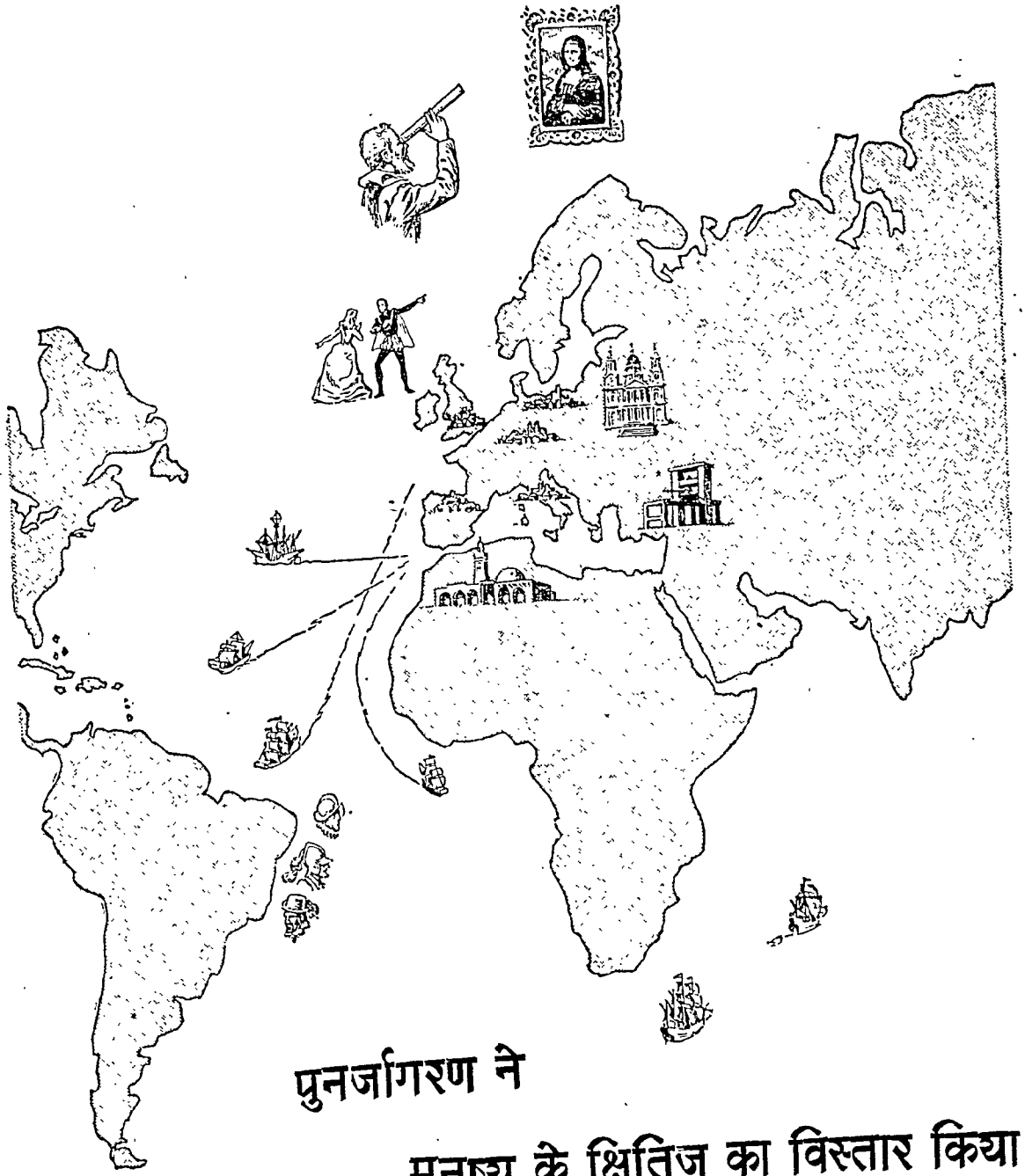
पुनर्जागरण ने

मनुष्य के क्षितिज का विस्तार किया

पुनर्जागरण युग

पुनर्जागरण के लिए अंग्रेजी में प्रचलित फ्रेंच शब्द है "रिनेसाँ," जिसका शाब्दिक अर्थ है पुनर्जन्म। पुनर्जागरण नाम से ज्ञात युग में पश्चिमी यूरोप के लोग फिर से प्राचीन यूनान और रोम की संस्कृति की ओर उन्मुख हुए। उन्होंने यूनानी और लातीनी का अध्ययन किया, तथा यूनानी मूर्तिकला और वास्तुकला के प्रति संवेदनशील हुए, उसकी अनुकृति की और उससे प्रेरणा प्राप्त की। वैसे किसी भी व्यतीत का पुनरुज्जीवन नहीं हो सकता। पुनर्जागरणकालीन लोगों ने मध्ययुगीन यूरोप की संस्कृति के आधार पर एक नयी संस्कृति का विकास किया जिसमें उन्होंने यूनानी और रोमन सभ्यताओं से प्राप्त प्रेरणाओं और विचारों का योगदान लिया।

यूरोप में पुनर्जागरण युग मध्ययुग और आधुनिक युग के बीच पुल की तरह है। धर्मयुद्धों के फलस्वरूप पश्चिमी यूरोप में पूर्व के विचारों का आना शुरू हुआ जिन्होंने लोगों की कल्पनाओं और मानों को मथ डाला। बारहवीं और तेरहवीं शताब्दियों में हुई व्यापार की अभिवृद्धि पुनर्जागरण युग के अन्वेषणों और व्यापार में फलीभूत हुई। यूरोप में ११०० ई० के बाद जो कस्बे विकसित हुए उन्होंने पुनर्जागरणकालीन समृद्धिशाली नगरों का स्वरूप ग्रहण किया। और इस प्रकार मध्यकालीन यूरोप में पुनर्जागरण का प्रारम्भ हुआ—पहले इटली में तेरहवीं शताब्दी के उत्तरकाल में जहाँ यह चौदहवीं और पन्द्रहवीं शताब्दियों में बढ़ता रहा। वहाँ से आल्प्स के पार फ्रांस में और वहाँ से इंग्लैंड में इसका प्रसार हुआ।

मध्यकालीन यूरोप में व्यक्ति अपने को एक इकाई का एक अंग मानता था। वह एक सार्वभौम चर्च का सदस्य था। वह एक मैनर (जागीर) का सदस्य था। यदि वह किसी कस्बे में रहता था तो उसकी रक्षा के लिए लड़ता था। वह किसी व्यवसाय-श्रेणी का सदस्य हो सकता था। इस प्रकार व्यक्ति सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक इकाइयों का एक अंग था।

फिर धीरे-धीरे आदमी मैनर से सम्बन्ध तोड़कर कृषिफार्मों पर स्वतन्त्र मज़दूरी करने लगे या गाँवों में जाकर काम करने और अपनी स्वयं की दूकानें खोलने लगे। कुछ लोगों के मन में ऐसा विचारमंथन चला कि वे पीढ़ियों से निर्विरोध चले आ रहे विचारों में संदेह करने लगे। वे अपने लिए स्वयं सोचने लगे और उन्होंने जगत् के सम्बन्ध में नये सिद्धांत और विचार बनाना शुरू किया।

भौतिक जगत् में अपनी इस नयी अभिरुचि के फलस्वरूप यूरोपीय नाविक यूरोपीय और उत्तर अफ्रीकी समुद्रतट का सुरक्षित यातायात छोड़कर दूरवर्ती स्थानों का अन्वेषण करने लगे। इन अन्वेषणों के फलस्वरूप पश्चिमी यूरोप के लोग एशिया और पश्चिमी गोलार्द्ध के निवासियों के सम्पर्क में आये जहाँ उन्हें अपने से भिन्न संस्कृतियाँ मिलीं।

कई कारणों से पश्चिमी यूरोप के पुनर्जागरण का प्रारम्भ इटली में हुआ। प्रथमतः, इटालवी नगरों के व्यापार के कारण वहाँ धन था। पहले कभी इतना धनी और इतना बड़ा मध्यवर्ग नहीं रहा था। दूसरे, इटली के नगर पूर्वी भूमध्यसागरीय देशों की यूनानी सभ्यता के निकटतम थे। अंततः, इटली में प्राचीन सभ्यता का कभी भी पूर्ण विनाश नहीं हुआ था। मठों में बहुत सारा लातीनी साहित्य छिपा पड़ा था और प्राचीन रोम के बहुत से महत्त्वपूर्ण भवन अब भी खड़े थे।

1000 AD
2000 AD
1100 AD
1900 AD
1200 AD
1800 AD
1300 AD
1700 AD
1400 AD
1500 AD
1600 AD
The Renaissance
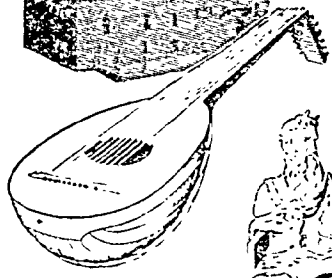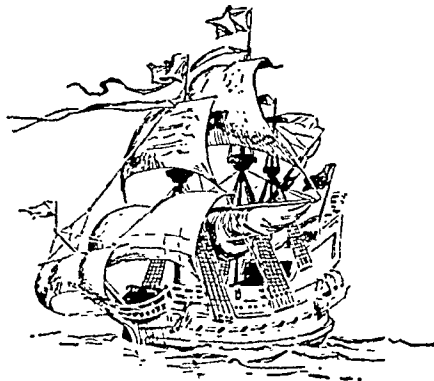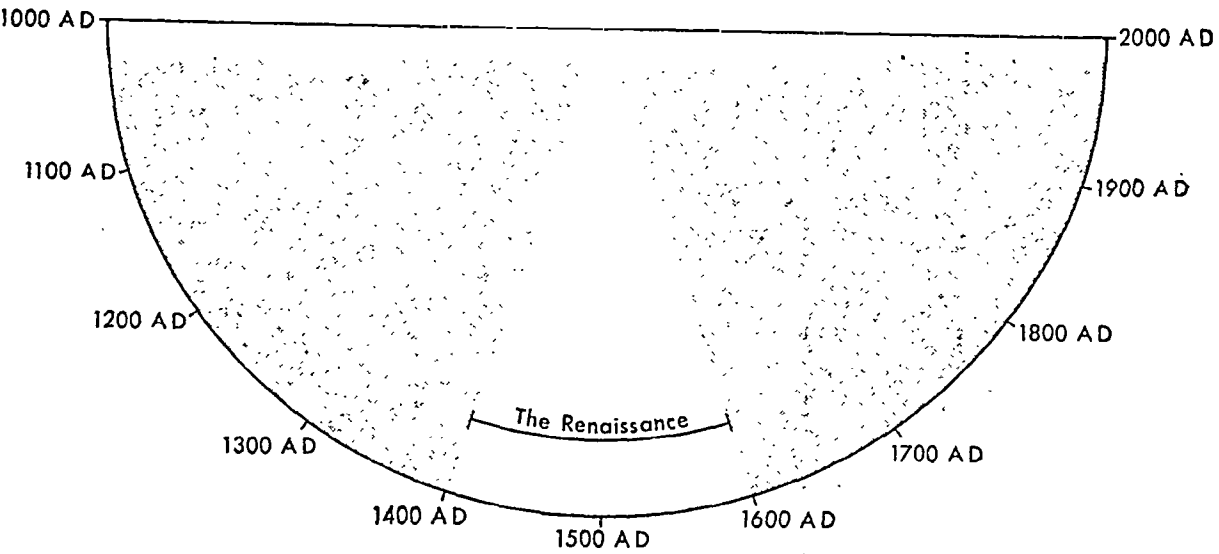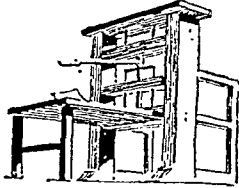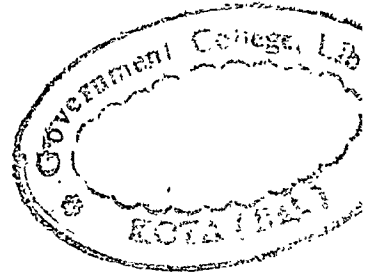
१९ यूरोप में शिक्षा और कलाओं का पुनरुत्थान

यह नया युग जो पुनर्जागरण काल के नाम से प्रसिद्ध है, एकाएक नहीं आया बल्कि यह एक लम्बे समय के दौरान क्रमशः विकसित हुआ। पर इस तथ्य के कई प्रमाण थे कि पुनर्जागरण काल वास्तव में एक नया युग था।

राजाओं ने शक्ति अर्जित की

पुनर्जागरण काल में होने वाले परिवर्तनों में से एक था सरकारों में परिवर्तन। मध्ययुग में सामन्त लोग बहुत शक्तिशाली हो गए थे, अक्सर वे राजा से भी अधिक शक्तिशाली हुआ करते थे। अब सामन्तों की शक्ति में ह्रास होने लगा और पश्चिमी यूरोप के अनेक राजा अपने देश पर अधिकाधिक प्रभुत्व कायम करते गए। अब सामन्तों से प्राप्त होने वाले खिराज के स्थान पर राजा लोग सीधे अपनी प्रजा पर कर लगाकर आय प्राप्त करते थे और इसी से अपनी सरकारें चलाते थे। इस धन का अधिकांश भाग मध्यम वर्ग से आता था, जिसे प्रायः बुर्जुआ कहा जाता था जिसकी स्थिति धन पर आधारित थी। वे राष्ट्रीय कोष में उससे अधिक धन देते थे, जितना सामन्त लोग दिया करते थे और इसलिए उनसे अधिक महत्त्वपूर्ण थे। राजा लोग अब सामन्ती सेना के भरोसे नहीं थे, वल्कि अपने देश के नागरिकों को या विदेशियों को सेना में भर्ती करते थे, जिन पर राज्य का अधिक नियंत्रण रहता था। सदा बनी रहने वाली सेना और करों के कारण राजा लोग अधिकाधिक शक्तिशाली बनते गए। यह बात फ्रांस और स्पेन के बारे में विशेष रूप से सच थी।

मैकियावेली—राजाओं की नई स्थिति का चित्रण पुनरुत्थान काल के प्रमुख राजनीतिक लेखक निकोलो मैकियावेली की कृतियों में चित्रित है, जिसका जन्म इटली के फ्लोरेन्स नगर में हुआ था। फ्लोरेन्स के शासकों के सचिव के रूप में अपने अनुभवों तथा अपनी सूक्ष्मदृष्टि से उसने उन राजनीतिक विचारों को विकसित किया जिन्हें उसने अपनी प्रमुख रचना "द प्रिन्स" में व्यक्त किया है। इस पुस्तक में उसने यह दिखाया है कि कोई राजा एक शासक के रूप में अपनी शक्ति बढ़ा सकता है और अपने साम्राज्य का विस्तार कर सकता है। उसने शासक को एक निरंकुश व्यक्ति के रूप में चित्रित किया है और यह माना है कि यदि वह उन्हीं नैतिक सिद्धान्तों का पालन करते हुए शासन कर रहा हो जिनसे वह अपने व्यक्तिगत आचरण में पथप्रदर्शन प्राप्त करता हो, तो उसे किसी तरह के पथप्रदर्शन की जरूरत नहीं। उसका कहना था कि उत्तम कामों के लिए निर्दयता और छल-प्रपंच से काम लिया जा सकता है। मैकियावेली की पुस्तक में उसके युग के इटली के शासकों का चित्र उपस्थित किया गया है। पुनर्जागरण काल के सभी शासकों ने सरकार सम्बन्धी उन्हीं विचारों पर

अमल करते हुए शक्ति अर्जित नहीं की जो "द प्रिंस" में पाये जाते हैं। लेकिन फिर भी मैकियावेली के प्रभाव के कारण इस काल की सरकारों में बहुत क्रान्तिकारी परिवर्तन हुए।

एक नए प्रकार की शिक्षा

मानवतावादी—प्राचीन यूनान के साहित्य में **जीवन** के प्रति एक रुचि झलकती है। वे उस जगत् में गहरी रुचि रखते थे, जिसमें वे रहते थे। बाद में प्राचीन यूनानी साहित्य के वे अध्येता जो प्रकृति और मनुष्य की रुचियों का विवेचन करते थे, मानवतावादी कहे जाने लगे। वे इस दुनिया में ही अनुरक्त हुए, न कि भविष्य के जीवन में, जैसा कि मध्य युग के विद्वान् किया करते थे। प्रकृति, विज्ञान, और कलाओं में पाई जाने वाली हर ऐसी चीज़ जो मनुष्य को आज प्रभावित करती है, मानवतावादियों के लिए महत्त्वपूर्ण बन गई।

धर्मयुद्धों के कारण भी पूर्वी राज्यों के ऊपर से तुर्कों का खतरा खत्म नहीं हुआ। इसके विपरीत तुर्कों ने एजियन सागर को पार किया और यूनान तथा बाल्कन प्रायद्वीप को रौंद डाला। अन्ततः सन् १४५३ में कुस्तुन्तुनिया को निर्मूल कर दिया गया और तुर्क या ओटोमैन लोगों के साम्राज्य ने पूर्वी रोम साम्राज्य का स्थान ले लिया। ईसाइयों को दासता की नौबत को पहुँचा दिया गया। बहुतेरे ग्रीक भाषा-भाषी लोग सुरक्षा के लिए भाग कर इटली में आ गए। इनमें से कुछ लोग अपने साथ ग्रीक भाषा की पुस्तकें भी लेते आए। इस बात ने इटली के निवासियों की दिलचस्पी ग्रीक भाषा और साहित्य में बढ़ा दी, अतः इटली में थोड़ी सी ग्रीक जानने का एक आम चलन हो गया।

मानवतावाद का प्रारंभ इटली में हुआ, लेकिन जल्दी ही यह फ्रान्स, इंग्लैंड और नीदरलैंड्स में फैल गया। नए विषयों को पढ़ाने के लिए विश्वविद्यालयों की स्थापना हुई। शिक्षित लोग इसमें

हिस्टौरिकल पिक्चर सर्विस
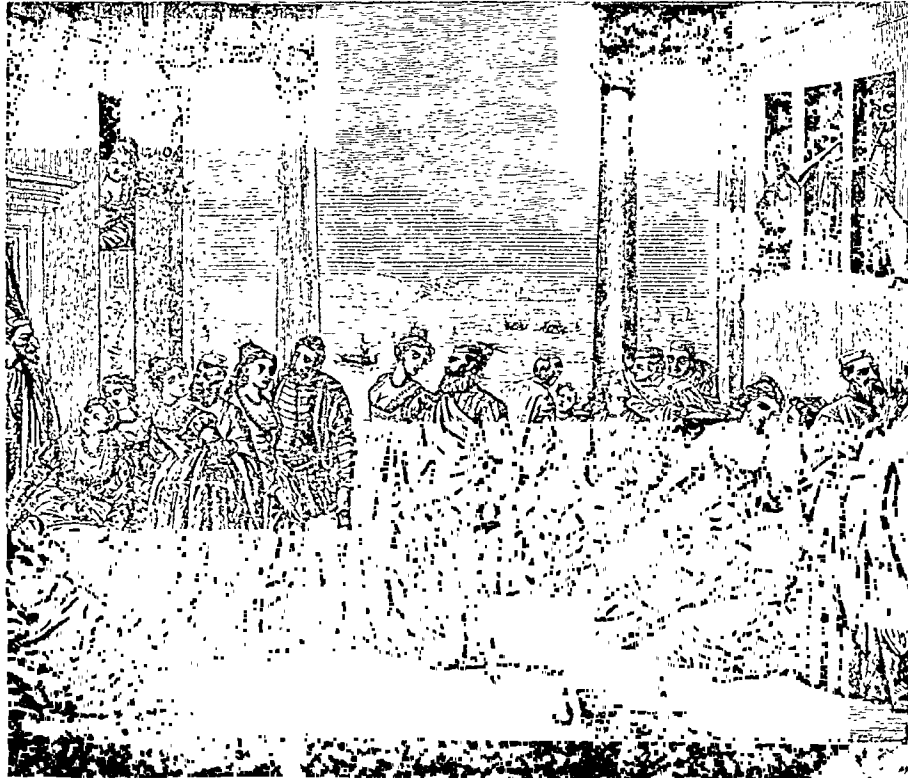
एक प्राचीन नक्काशी में पुनर्जागरण काल में वेनिस के धनी लोगों का सामाजिक जीवन चित्रित किया गया है।

रुचि लेने लगे। इनमें से एक महान् व्यक्ति इरेज़मस (१४६६-१५३६) नाम का एक डच व्यक्ति था। उसने बड़े सच्चे मन से नए टेस्टामेण्ट को मूल ग्रीक में पढ़ा और यूनानी ईसाइयों की रचनाओं को भी पढ़ा। अपनी पुस्तक "प्रेज़ आफ फाली" (मूर्खता की प्रशंसा) में उसने चर्च के कुछ विश्वासों की आलोचना की जिन्हें उसने अन्धविश्वास पर आधारित बताया।

१. पुनर्जागरण काल में सामन्तों की शक्ति क्यों खत्म हो गई?
२. पुनर्जागरण काल में राजाओं और व्यापारियों ने शक्ति क्यों अर्जित कर ली?
३. मेकियावेली के "द प्रिन्स" के अनुसार पुनर्जागरण काल के शासकों के सिद्धान्त क्या थे?
४. मानवतावादी कौन थे? इरेज़मस कौन था? उन्होंने किस बात की शिक्षा दी?

साहित्य में पुनर्जागरण की अभिव्यक्ति

राष्ट्रीय भाषाओं का उत्थान—पुनर्जागरण की अभिव्यक्ति साहित्य में भी हुई। इतिहास के हर युग का अपना साहित्य रहा है और पुनर्जागरण में विश्व की कुछ महत्तम कृतियों का सृजन हुआ। मध्य युग में लगभग सभी रचनाएँ लैटिन में होती थीं—लेकिन इसी समय बोलचाल की दो भाषाएँ पश्चिमी यूरोप में विकसित हो रही थीं। उस क्षेत्र के भीतर जो रोम साम्राज्य में आता था, लैटिन से कुछ भाषाएँ विकसित हुईं, जिन्हें रोमान्स भाषाएँ कहा जाता है। ये हैं: इटालियन, फ्रेंच, स्पेनी और पुर्तगाली। रोम साम्राज्य की उत्तरी सीमा के बाहर जर्मनिक बोलियों से जो बोलचाल की भाषाएँ विकसित हुईं, ये थीं: जर्मन, अंग्रेज़ी, नार्वेजियन, डच और स्वीडिश।

तेरहवीं शताब्दी में ही लेखक लैटिन के स्थान पर दैनिक बोलचाल की भाषाओं का प्रयोग करने लगे। पुनर्जागरण काल के लेखकों ने इन्हें जारी रखा और इस तरह सामान्य जन की भाषाएँ

कलवर सर्विस

ये लोग उन धर्मयात्रियों में से हैं जो चासर के 'कैण्टरबरी टेल्स' में पात्र रूप में चित्रित किए गए हैं।

उनकी साहित्यिक भाषाएँ बन गई। बाइबिल के भी अनुवाद सर्वसाधारण भाषाओं में हुए।

पुनर्जागरण काल के प्रारम्भ में चार महान् साहित्यकार हुए, दान्ते, बोकैशो, और पेट्रार्क इटली में तथा ज्याफ्री चासर इंगलैंड में।

दान्ते (१२६५-१३२१) ने "द डिवाइन कामेडी" की रचना इटालियन में की जिससे वे सभी लोग जो पढ़ना जानते थे, इसका आनन्द ले सकते थे। उसने अपनी रचना तुस्कन भाषा में की, अर्थात् उस भाषा में जो तुस्कानी में बोली जाती थी। यही इटली की साहित्यिक भाषा बन गई। इस दृष्टि से दान्ते पुनर्जागरण काल जितना ही आधुनिक था, जिसको प्रस्तुत करने में उसने सहायता की। पर दान्ते के विचार मध्ययुगीन थे। "द डिवाइन कामेडी" की विषय-वस्तु मृत्यु के बाद आत्मा की स्थिति है, और यह हमें उसके युग के धार्मिक और सामाजिक जीवन का बोध कराती है। "द डिवाइन कामेडी" एक महाकाव्य है।

कुशल कहानीकार गिओवानी बोकैशो (१३१३-१३७५) उसी तरह इटालियन गद्य का जनक था जैसे दान्ते इटालियन कविता का जनक था। उसकी महत्तम रचना "डिकैमरों" सौ कहानियों का एक

संकलन है और विश्व की एक महान् पुस्तक है। ये कहानियाँ सजीवता से भरपूर हैं और मध्ययुग के लेखकों की पवित्रता की कहानियों से बिल्कुल भिन्न हैं।

महान् कवि और विद्वान् पेट्रार्क (१३०४-१३७४) फ्लोरेन्स का नागरिक था। अपनी जवानी में उसने इटालियन भाषा में रचनाएँ कीं, पर बाद में चलकर उसने अपनी स्थानीय भाषा को त्याग दिया और क्लासिकल लैटिन की सेवा में लग गया। वह मानवतावादी आन्दोलन के प्रारंभिक समर्थकों में था। अपने सानेटों और गीतों के द्वारा, जिनके कारण ही वह सबसे अधिक मशहूर है, उसने इटली को यूरोपीय साहित्य में सर्वश्रेष्ठ बना दिया।

ज्योफ्री चासर (१३४०-१४००) ने अंग्रेज़ी भाषा में सबसे पहले महत्त्वपूर्ण रचनाएं कीं। उसकी महत्तम रचना **"कैण्टरबरी टेल्स"** है। जैसे दान्ते की रचनाओं में हमें मध्ययुगीन विचारों की एक झलक मिलती है, वैसे ही चासर की रचनाओं में उसके युग के इंग्लैंड के जीवन में जो श्रेणियाँ बन गई थीं, उनकी झलक मिलती है।

उत्तरकालीन लेखक—पुनर्जागरण के अपने पूरे जोर पर आने के बाद, बहुत बड़ी संख्या में लेखक सामने आए। फ्रान्स में फ्रान्स्वा रेबेला (१४९०-१५५३) ने सशक्त और ओजस्वी फ्रेंच में **"महान् गरगन्तुआ का महान् जीवन"** की रचना की। यह रचना शिक्षा और राजनीति पर एक टीका जैसी थी जिसे हास्य और व्यंग्य मिश्रित शैली में लिखा गया था। पर फ्रेंच भाषा को गद्यशैली प्रदान करने वाला व्यक्ति रेबेला नहीं, बल्कि एक धार्मिक सुधारक जान काल्विन (१५०९-१५६४) था, जिसका अनुसरण बाद के फ्रांसीसी लेखकों ने किया।

सर्वान्तेज (१५४७-१६१६) ने, जो पुनर्जागरण काल के स्पेन का सबसे महत्त्वपूर्ण लेखक था, दुनिया को **"डान क्विक्सोट"** नामक रचना प्रदान की। इस रचना में उसने पुरानी शूरता का मजाक उड़ाया था और अपने प्रमुख पात्र डान क्विक्सोट को, जो अपने को नाइट समझता था, दुनिया को सुधारने की कोशिश में दुर्गति भोगते दिखाकर उसने नाइट के पद को हास्यास्पद जैसा दिखाया था।

इंग्लैंड में सोलहवीं शताब्दी में पुनर्जागरण अपने शिखर पर पहुँचा। इस काल के मशहूर लेखकों में सर्वप्रथम टामस मूर (१४७८-१५३५) था, जिसने **"युटोपिया"** (कल्पित लोक) की रचना की। हालांकि यह पुस्तक लैटिन भाषा में लिखी गई थी, लेकिन यह अपने युग के समाज और सरकार की हास्यपूर्ण आलोचना थी। मूर ने प्राचीन काल के प्लेटो की भाँति एक आदर्श नगर का चित्र उतारा था, जिसमें इंग्लैंड के नगरों में पाई जाने वाली कुरूपता और क्रूरता का नाम-निशान नहीं था।

एडमण्ड स्पेन्सर (१५५२-१५९९) पुनर्जागरण काल का दूसरा महान् अंग्रेजी साहित्यकार था। अपनी **"फेयरी क्वीन"** (भाग १) में इस कवि ने राजकुमार आर्थर नामक अपने नायक की अच्छाइयों का वर्णन किया है। हर अच्छाई, पवित्रता, संयम, शुचिता, मित्रता, न्याय, और विनय, एक नाइट के रूप में उपस्थित होती है और अपने विरोधी दुर्गुण से लड़ती है। दूसरी चीजों के साथ ही साथ इस कविता में मध्य युग के टूर्नामिण्टों और तमाशों का भी वर्णन है।

फ्रान्सिस बेकन (१५६१-१६२६) सम्पूर्ण साहित्य के महत्तम निबन्धकारों में से एक था। उसका विश्वास था कि लोगों को मध्ययुग के दर्शन को कम पढ़ना चाहिए और प्रकृति तथा भौतिक विज्ञानों के अध्ययन की ओर मुड़ना चाहिए। इस बात का प्रतिपादन उसने अपनी पुस्तक **'द ऐडवान्समेंट आफ लर्निंग"** (विद्या की उन्नति) में किया। अपनी दूसरी पुस्तक **"द न्यू अटलाण्टिस"** में बेकन ने विज्ञान को स्कूलों और विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रमों में रखवाने में बहुत योगदान किया।

अंग्रेजी नाटक का विकास—विश्व के सबसे चिरस्थायी साहित्य का कुछ अंश था इंग्लैंड में पुनर्जागरण के उत्तरार्ध में रानी एलिजाबेथ के युग में लिखा हुआ नाट्य-साहित्य। मध्ययुग में इंग्लैंड में चामत्कारिक नाटकों और रहस्य-नाटकों का बोलबाला था जो बाइबिल की कथाओं और सन्तों की जीवनियों पर आधारित होते थे। इनके बाद नैतिकता पर आधारित नाटकों का युग आया जिनमें अच्छाइयाँ और बुराइयाँ—मृत्यु, नेकी, प्रेम, लोभ
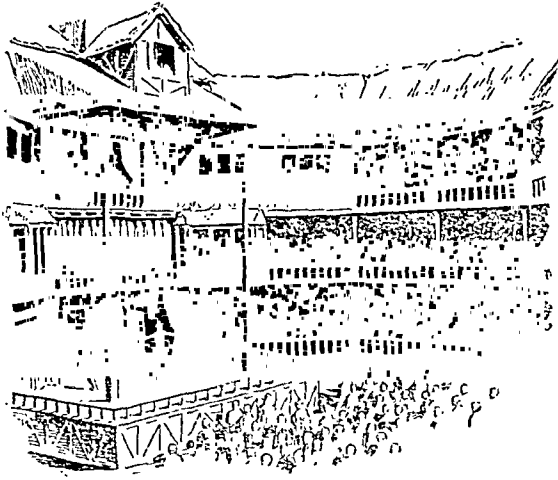
शेक्सपीयर के नाटकों के अभिनय को देखने वाली दर्शक मण्डली के अधिकांशतः लोग आसमान की छत के नीचे गड्ढों में खड़े रहते थे।

और मित्रता—चरित्रों के रूप में उपस्थित होती थीं।

एलिजाबेथ के युग के नाटक—मध्ययुग के इन नाटकों ने एलिजाबेथ के युग के नाटकों की पृष्ठभूमि तैयार की। इसके बाद पैदा हुए क्रिस्टाफर मार्लो (१५६४-१५९३) और बेन जान्सन (१५७२-१६३७)। ये दोनों महान् लेखक थे, लेकिन ये अपने ही देश के अधिक प्रखर नाटककार विलियम शेक्सपीयर (१५६४-१६१६) के सम्मुख फीके पड़ गए जिसकी रचनाएँ आज भी एक दर्जन से अधिक भाषाओं में पढ़ी जाती हैं। शेक्सपीयर ने पुराने कथानकों और कहानियों को अपना विषय बनाया और उसके कल्पनाशील मस्तिष्क ने उन्हें उच्चकोटि के नाटक और कविताओं में पिरो दिया। उसकी रचनाओं को किसी दूसरे साहित्य की अन्य कोई रचना मात नहीं दे सकी।

जिन लेखकों का यहाँ जिक्र किया गया है वे ही मात्र इस युग के महान् कवि और लेखक नहीं थे जो उस काल में विश्व की कुछ सर्वोत्तम रचनाओं का सृजन कर रहे थे। चूंकि नए विचारों से प्रेरित लोग अपने मनोभावों को अपनी रचनाओं द्वारा व्यक्त कर रहे थे, इसलिए समूचे यूरोप के अधिकांश भागों में साहित्य का बहुत व्यापक पैमाने पर सृजन हो रहा था।

१. पश्चिमी यूरोप में जिन दो वर्गों की भाषाओं का विकास हुआ वे कौन से थे? इनमें से प्रत्येक के उदाहरण दो।
२. कुस्तुन्तुनिया की पराजय ने पश्चिमी संस्कृति पर क्या प्रभाव डाला?
३. दान्ते और बोकैशो के साहित्यिक योगदान पर टिप्पणी लिखो।
४. "कैण्टरबरी टेल्स" किस कारण महत्त्वपूर्ण है?
५. **"इन्स्टीट्यूट्स आफ द क्रिश्चियन रिलिजन"**—का लेखक कौन था?
६. सोलहवीं शताब्दी के कुछ अंग्रेजी लेखकों का नाम बताओ।

कला में पुनर्जागरण की अभिव्यक्ति

नई शैली की कला—पुनर्जागरण काल की कला का जन्म अपने युग की स्वतन्त्रता और वैयक्तिकता की भावना से हुआ। प्राचीन यूनान और रोम के कलाकारों की भाँति ही पुनर्जागरण काल के कलाकार लोगों के जीवन और उनके भौतिक क्रिया-कलाप में रुचि रखते थे। रोम के समय के बाद पहली बार मूर्तिकारों और चित्रकारों ने मानव शरीर का अंकन किया। मध्यकालीन मूर्तिकारों ने मनुष्यों के चेहरों और हाथों और वेश-विन्यास को गढ़ा था, लेकिन वस्त्रों के नीचे मानव शरीर की बनावट को कभी आंका नहीं जा सकता था। दूसरी ओर पुनर्जागरण काल के मूर्तिकारों ने मानव शरीर का अध्ययन किया और उन्हें यह जानकारी थी कि मनुष्य के शरीर की पेशियाँ और जोड़ कैसे उभरते हैं। इसलिए वे अपनी आकृतियों को अधिक सजीव बना सके।

जिस तरह अप्रेंटिसी द्वारा दूसरे व्यवसायों की शिक्षा दी जाती थी, उसी तरह कला की भी शिक्षा दी जाती थी। अर्थात् उस्ताद कृतियों की रूपरेखा तैयार करता था और उसके अप्रेंटिस शिक्षार्थी रंग मिलाते थे या उसे तूली पकड़ाते थे। बाद में यदि

वे रुझान दिखाते थे तो उन्हें गौण भागों को रंगने दिया जा सकता था, और इसके और बाद चलकर वे स्वतन्त्र रूप से काम करने लगते थे, और अक्सर अपने उस्ताद से आगे निकल जाते थे। ऐसे स्कूल फ्लोरेन्स, वेनिस, रोम और दूसरे केन्द्रों पर उच्च कोटि के कलाकारों द्वारा चलाए जाते थे। इससे समूचे यूरोप में कला के प्रसार में योगदान मिला।

फ्रा आंजेलिको (१३८७-१४५५) ने, जो एक उच्च प्रतिभासम्पन्न संन्यासी था, पहले छोटे गिरजों और मठों के लिए भित्तिचित्र और वेदी-चित्र बनाये। जब फ्लोरेन्स के सन्त मार्क ने उसे कुछ चित्र बनाने के लिए कहा तो उसने मठ को इतने सुन्दर भित्तिचित्रों से सजाया जिनकी आज भी कला के विद्यार्थी सराहना करते हैं और अध्ययन करते हैं। पोप ने उसे वेटिकन के कुछ भागों को सजाने के लिए बुलवाया, और यह उसकी महत्तम कृति है। आंजेलिको केवल धार्मिक विषयवस्तु को लेकर ही चित्र बनाता था, जो अपनी गहन आत्मिक खूबियों के कारण बेजोड़ माने जाते हैं।

कुछ लोग रफाएल के सिस्टीन मैडोना को विश्व का सबसे महान् चित्र मानते हैं।

एरिक एस० हरमैन इन्का० एन० वाई०

उस काल के कलाकारों के और दुनिया के सौभाग्य से, पुनर्जागरण काल में धनी लोग कला के संरक्षक बन गये थे। पन्द्रहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में फ्लोरेंस का शासक लोरेन्ज़ो दे मेदिची इन लोगों में सबसे विख्यात व्यक्ति था। उसके बाग में, जिसमें खड़े होने पर पूरा नगर दिखाई देता था, उच्च कोटि की मूर्तियों का एक बहुत बड़ा खजाना था। उसका महल उन उत्कृष्टतम सजावटी वस्तुओं से भरा हुआ था जिन्हें वह प्राप्त कर सकता था। मेदिची परिवार के लोग व्यापारी और महाजन थे, और उनके द्वारा नियुक्त लोग समूचे भूमध्यसागरीय जगत् में प्राचीन रचनाओं और कलाकृतियों की टोह में उसी तरह रहते थे जैसे सौदे की टोह में।

लेकिन लोरेंज़ो फ्लोरेंस के कलाकारों में भी दिलचस्पी लेता था। उसने अधिक होनहार कलाकारों को अपने महल में चित्र बनाने को बुलवाया था। दूसरे, कुछ कलाकारों को वह वजीफे देता था जिससे वे जीविका के चक्कर में पड़े बिना अपनी कला-साधना को जारी रख सकें। उसने इस तरह जो प्रोत्साहन उन्हें दिया वह उस काल के कला-जगत् में फ्लोरेंस के योगदान का बहुत बड़ा कारण था।

पुनर्जागरण काल के कुछ कलाकार दूसरे क्षेत्रों में भी उसी तरह प्रतिभाशाली थे जैसे चित्रकला के क्षेत्र में। इनमें से एक था अद्भुत प्रतिभासम्पन्न लियोनार्दो दा विंची (१४५२-१५१९) जो चित्रकार, मूर्तिकार, वैज्ञानिक, इन्जीनियर, वास्तुकार, और गणितज्ञ था। लियोनार्दो की कृतियों से यह जाहिर होता है कि एक चित्रकार किसी व्यक्ति के बाह्य रूपाकार को उतने ही यथातथ्य ढंग से समेट सकता है जैसे कैमरा, और उसने कृतियों की रचना कैमरे के आविष्कार के सैकड़ों वर्ष पूर्व की थी। अपनी कलात्मक प्रतिभा के अतिरिक्त लियोनार्दो एक वैज्ञानिक भी था। अपने चित्रों में उसने रंगों और चित्रण की विधियों के सम्बन्ध में प्रयोग किए; उसने मानव शरीर का अध्ययन भी बहुत मनोयोग-

पूर्वक किया और उसको सभी मुद्राओं में चित्रित किया। वह द्रवगतिकी, भूगर्भ विज्ञान और वनस्पति-शास्त्र में भी रुचि रखता था और उसने उड़ान के रहस्यों को जानने की चेष्टा में अपना बहुत सारा समय लगाया और एक उड़नखटोला बनाने की कोशिश में लगा रहा।

अनेक क्षमताओं से युक्त दूसरा प्रतिभाशाली व्यक्ति माइकेल ऐंजेलो (१४७५-१५६४) था। वह वास्तुकार, मूर्तिकार, चित्रकार और कवि था। सोलहवीं शताब्दी के प्रारम्भिक दिनों में पोप रोम में पीटर का एक दूसरा कैथेड्रल बनवा रहा था। माइकेल ऐंजेलो ने इसके गुम्वद की रूपरेखा बनाई जिसे दुनिया का सबसे निर्दोष अनुपात रखने वाला गुम्वद कहा जाता है। पोप ने उसे सिस्टाइन शैपेल की भीतरी छत को चित्रित करने के लिए भी नियुक्त किया जो वेटिकन में पोप का महल था। उसने इस काम को साढ़े चार साल में पूरा किया। उसका चित्र 'द लास्ट जजमैंट' (अन्तिम न्याय), जो सिस्टाइन शैपेल की दीवार पर चित्रित है, महत्तम कृतियों में गिना जाता है,

माइकेल ऐंजेलो मुख्यत: एक मूर्तिकार था, और उसकी कृतियाँ उसे दुनिया के प्रमुख कलाकारों की गणना में पहुँचा देती हैं। उसकी मोसेज़, द बाउण्ड स्लेव (बन्दी गुलाम), और डेविड की मूर्तियाँ विश्व की महत्तम कृतियों में आती हैं क्योंकि वे जिन व्यक्तियों को प्रस्तुत करती हैं उनकी भावनाओं को भी बहुत स्पष्टता के साथ प्रकट करती हैं।

माइकेल ऐंजेलो से बाद का और उससे कई बातों में भिन्न चित्रकार था रैफाएल सान्त्स्यी (१४८३-१५२०)। वह एक कवि और वास्तुकार भी था और उसने सेण्टपीटर के कैथेड्रल की रूपरेखा तैयार की थी। लेकिन वह मुख्यत: अपने चित्रों के कारण स्मरण किया जाता है। सैंतीस वर्ष की आयु में ही उसकी मृत्यु हो गई। फिर भी उसने मैडोना और शिशु के पचास से भी अधिक महान् चित्र और अनेक पोर्ट्रेट तैयार किए। माइकेल ऐंजेलो की कृतियों में पाये जाने वाले ओजस्वी वेग की तुलना में इन चित्रों में सौन्दर्य और शान्ति पाई जाती है।

पुनर्जागरण काल में इटली के सबसे बेजोड़ चेहरे (पोर्ट्रेट) चित्रित करने वाले कलाकारों में एक था तिशन (१४७७-१५७६) जो वेनिस का निवासी था और निन्यानवे वर्ष तक जीवित रहा और लगभग अपनी मृत्यु के क्षण तक सक्रिय रहा। उसने अनेक पोपों, पादरियों, सामन्तों और भद्र महिलाओं के चेहरे (पोर्ट्रेट) बनाए और हल्के रंगों के चित्रों की बहुत बड़ी थाती दी, जिसे कोई दूसरा चित्रकार नहीं पहुँच सका।

फ्लोरेंस की बैप्टिस्ट्री (धर्मसंस्कार बप्तिस्मा का भवन) में दो दरवाजे लगे हुए हैं जो माइकेल ऐंजेलो के शब्दों में स्वर्ग के द्वार होने के योग्य हैं। मूर्तिकार लारेंज़ो गीबर्टी (१३७८-१४५५) ने इस एक ही काम पर बीस वर्ष से भी अधिक समय व्यय किया। दरवाजे काँसे के हैं, जिनके दस लम्बवत् फलकों पर नक्काशी की गई है और हर फलक पर बाइबिल की एक कहानी कही गई है।

फ्रान्स, स्पेन, नीदरलैंड्स और इंग्लैंड में पुनर्जागरण इटली से आया। उत्तर में सबसे महान् चित्रकार डच थे। वान इक बन्धु हर्बर्ट और जान ने अपने रंजक द्रव्यों को अंडे की सफेदी के स्थान पर तेल में घोलने का प्रयोग किया। अंडे की सफेदी का प्रयोग अधिकांश चित्रकार पन्द्रहवीं शताब्दी तक करते आये थे।

फ्रान्ज हाल्स (१५०८-१६६६) विश्व के अब तक के सबसे दिलचस्प पोर्ट्रेट चित्रकारों में से एक है। वह अपने विषयों की तलाश में अक्सर शराबखानों में और अँधेरी सड़कों पर आया करता था, लेकिन सामन्त लोग भी उसे अपना पोर्ट्रेट बनाने को नियुक्त किया करते थे।

नीदरलैंड्स का दूसरा महत्त्वपूर्ण चित्रकार रैम्ब्राँ वान रिन (१६०६-१६६९) था जिसने हमें अपनी सैकड़ों नक्काशियों और रेखा-चित्रों के अतिरिक्त पाँच सौ से भी अधिक चित्रों की थाती दी। रेम्ब्राँ एक दयालु आदमी था जो बुजुर्ग लोगों के प्रति, जिनका चित्र बनाना उसे पसन्द था, बहुत सहानुभूति रखता था। रंगों और प्रकाश तथा छाया के प्रयास में वह सिद्धहस्त था।

इंग्लैंड के चार्ल्स प्रथम ने ऐन्थोनी वान डाइक (१५९९-१६४१) को हालैंड से आकर अपना दरबारी चित्रकार बनने का निमंत्रण दिया। यहाँ इस महान् कलाकार ने राजा के बच्चों के अनेक चित्र
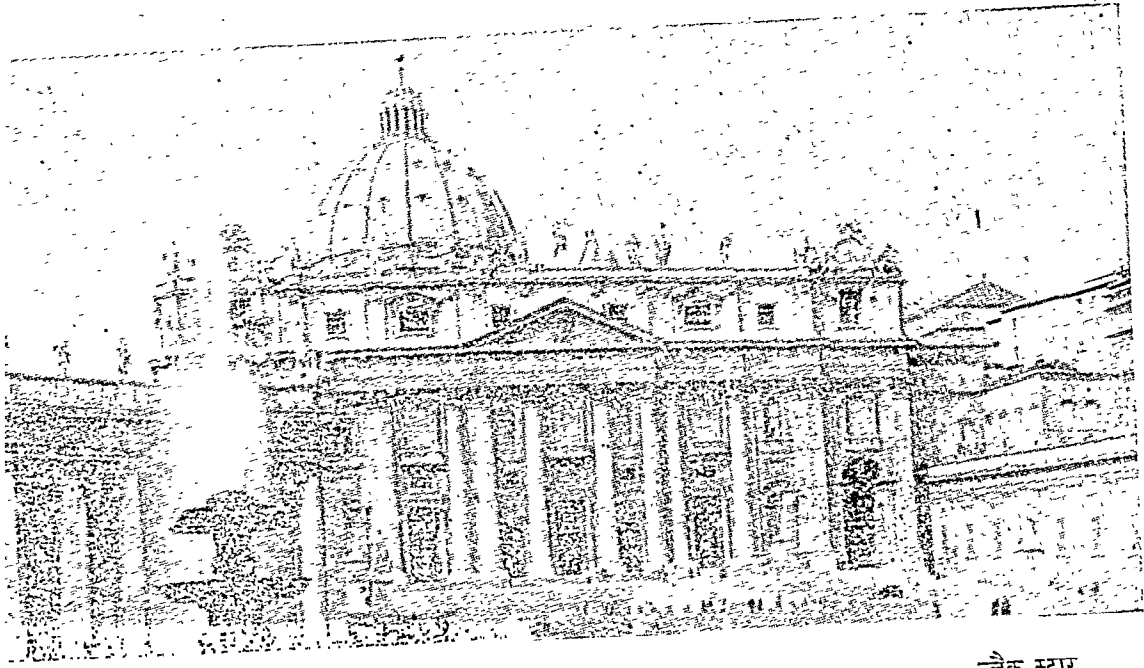
ब्लैक स्टार

सेण्टपीटर का गिरजा दुनिया का सबसे बड़ा गिरजा है। यह पुनर्जागरण काल के स्थापत्य का एक शानदार उदाहरण ही नहीं है, बल्कि यह कला का एक खजाना भी है, क्योंकि इसकी सजावट के लिए पोपों ने अनेक कलाकारों को नियुक्त किया था।

बनाये, और दरबार के लोगों द्वारा चित्र बनाने की मांगों की भरमार होने लगी। अनेक डच चित्रकारों की भाँति वान डाइक लेस, जवाहरात और वस्त्रों की बारीकियों को अपने पोर्ट्रेटों में चित्रित करने में सिद्धहस्त था।

स्पेन में डीगो वेलेसक्वैथ (१५९९-१६६०) फिलिप चतुर्थ का दरबारी चित्रकार था। उसने अपना बहुत सा समय शाही परिवार के लोगों के पोर्ट्रेट बनाने में लगाया। उसका लक्ष्य स्वाभाविक आकृति को उरेहना था।

पुनर्जागरण काल का स्थापत्य—पुनर्जागरण काल के इटली ने क्लासिकी यूनानी और रोमन स्थापत्य से नई शैली के भवन बनाने की प्रेरणा ग्रहण की। रोम के वेटिकन और सेण्टपीटर के कैथेड्रल और वेनिस में सेण्ट मार्क कैथेड्रल इस नई शैली के नमूने हैं। गुम्बदों का प्रयोग होता था पर ये रोमन गुम्बदों से अधिक लम्बे और अधिक सुन्दर हुआ करते थे। यूनानी बरसातियों और स्तम्भों का भी प्रयोग होता था। स्थापत्य की यह शैली इटली के बाहर भी फैली। लन्दन का सेण्ट पाल गिरजा इसी शैली में बना है और बाद में टामस जैफर्सन ने इसका प्रारम्भ अपने घर की रूपरेखा तैयार करने के द्वारा अमरीका में भी किया।

संगीत—पुनर्जागरण काल की दूसरी कलाओं के साथ-साथ संगीत की भी प्रचुरता हुई। नए वाद्य-यंत्रों का आविष्कार हुआ जो पुराने वाद्य-यंत्रों से कहीं अधिक उच्च कोटि के थे। हार्प्सीकार्ड, जो पियानो का पूर्व रूप था, और वायलिन इन यंत्रों में से दो थे। सामूहिक संगीत सबसे बेजोड़ था और सबसे पहला आपेरा सन् १५९४ में प्रस्तुत किया गया था।

सबसे पहला सिद्ध संगीत-रचयिता गिओवानी पालेस्ट्राइना था। उसका यह नाम इटली के उस नगर के नाम पर पड़ा था जिसमें वह रहता था।

पालेस्ट्राइना की सामूहिक संगीत की पहली पुस्तक सन् १५५४ में प्रकाशित हुई थी और इसकी रचना इतनी सुन्दर बन पड़ी थी कि यह तब से आज तक प्रयोग में आ रही है।

पुनर्जागरण काल की कलाओं से बढ़कर कलाकृतियाँ कभी नहीं रची गईं। इनमें जीवन के सभी पक्ष दिखाये गये हैं। इनमें हर्ष और विषाद, साधुता और दुनियागीरी, धन और निर्धनता का चित्रण किया गया। विभिन्न तरह के पदार्थों—रंजक द्रव्य, काँसे, पत्थर, पात्र, लकड़ी का प्रयोग किया गया।

१. पुनर्जागरणकाल की कला मध्य युग की कला से किन अर्थों में भिन्न थी?
२. बालकों को कलाकार बनने के लिए कैसे प्रशिक्षित किया जाता था?
३. लारेंज़ो दे मेदिची कौन था?
४. पुनर्जागरण काल में किन नए वाद्य-यंत्रों का प्रयोग शुरू हुआ? संगीत में किन नए रूपों का प्रयोग शुरू हुआ?
५. पुनर्जागरण काल की स्थापत्यकला का वर्णन करो। कुछ उत्कृष्ट नमूनों का नाम गिनाओ।
६. पुनर्जागरण काल के सबसे विख्यात चित्रकार, मूर्तिकार, और वास्तुकार कौन-कौन थे?

विज्ञान में पुनर्जागरण की अभिव्यक्ति

मध्य युग में पिछली पीढ़ियों से जो ज्ञान चला आया था, उसी को सबसे प्रामाणिक माना जाता रहा। अधिकांश लोग उस दुनिया की छानबीन करने में रुचि नहीं रखते थे जिसमें वे रहते थे। कुछ विरले लोग, जो इनमें रुचि रखते भी थे, इसके साथ जादू और अन्धविश्वास का विचित्र घालमेल कर देते थे। लेकिन रोजर बेकन सत्य का एक गम्भीर अन्वेषक था। उसने धातुओं और रसायनों के ऊपर कुछ प्रयोग किए और सम्भवतः उसके पास एक मामूली ढंग का सूक्ष्मदर्शी भी था। उसने कुछ ऐसे सिद्धान्त बनाए जिनसे उसके बाद होने वाले अनेक आविष्कारों की व्यावहारिक उपयोगिता सिद्ध होती थी। इनमें वाष्पचालित जहाज, मोटर और हवाई जहाज़ भी आते हैं। बेकन के कामों के बावजूद उत्तर पुनर्जागरण काल तक सच्ची वैज्ञानिक भावना नहीं विकसित हो सकी।

रोजर बेकन के बहुत बाद में एक पोलिश ज्योतिर्विद्, निकोलस कोपर्निकस (१४७३-१५४३) ने वैज्ञानिक पद्धति का प्रयोग किया। उसने एक वेधशाला बनाई जिससे वह आकाश के नक्षत्रों का बहुत धैर्यपूर्वक अध्ययन किया करता था। वह इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि ब्रह्माण्ड का पुराना सिद्धान्त गलत है। यह सिद्धान्त जिसे यूनानी भूगोलवेत्ता टोलेमी ने प्रतिपादित किया था, यह कहता था कि धरती ब्रह्माण्ड के बीचोंबीच स्थित है और तारे, सूर्य तथा ग्रह इसकी परिक्रमा करते हैं। कोपर्निकस ने यह दावा किया कि धरती उन बहुतेरे ग्रहों में से एक है जो सूर्य की परिक्रमा करते हैं। चर्च ने इस नए सिद्धान्त को बाइबिल और चर्च की शिक्षा के विपरीत मानकर इसे अस्वीकार कर दिया। इससे मनुष्य अपने गौरव से च्युत हो जाता था कि वह उस ब्रह्मांड के केन्द्र में नहीं है जिसकी रचना उसी के लिए हुई है।

गैलीलियो (१५६४-१६४२) नामक एक इटालियन विद्वान् ने दूरदर्शी (दूरबीन) बनाया और इससे पचास मील दूर के जहाजों को इतनी स्पष्टता से देखा जा सकता था मानो वे केवल पाँच मील की दूरी पर हों। इस यंत्र ने ज्योतिष-शास्त्र के

गूतेनबर्ग इतना छिपकर काम करता था कि उसके पड़ोसियों को यह सन्देह हुआ कि वह जादूगर है और शैतान से मिलता-जुलता है।

न्यूयार्क पब्लिक लाइब्रेरी

अध्ययन में भी सहायता पहुँचाई। गैलीलियो बहुत लोकप्रिय और प्रखर वक्ता और लेखक था। कोपर्निकस के सिद्धान्तों की चर्चा करते हुए उसने अपने श्रोताओं को बताया कि उसने खुद भी बृहस्पति के चाँदों को देखा है और इस ग्रह को अपनी धुरी पर घूमते देखा है। इस कथन पर उसे चर्च की अदालत में बुलाया गया, जहाँ उसे अपनी सिखाई सभी बातों को वापस लेने अथवा आजीवन कारावास और संभवतः यातना भोगने को कहा गया। कहा जाता है कि जब वह मुकदमे से बरी होकर निकला, तब लोगों ने उसे दबी ज़बान में कहते सुना, "लेकिन धरती तो घूमती ही है।" गैलीलियो ने पेण्डुलम के भी कुछ नियमों की खोज की जिससे अधिक संतोषजनक दीवालघड़ियों का बनना सम्भव हो पाया। पीसा की झुकी हुई मीनार पर से प्रयोग करके उसने यह सिद्ध किया कि भारी और हल्की सभी चीजें एक ही गति से धरती पर गिरती हैं।

छापाखाना—आज हमारे पास जो ज्ञान के माध्यम—किताबें, पत्रिकाएँ, रेडियो और टेलीविजन—हैं, उनके बिना यूरोप के लोगों को साहित्य और वैज्ञानिक ज्ञान को कैसे सुलभ कराया जा सकता था? सौभाग्य से पुनर्जागरण काल का सबसे महत्त्वपूर्ण आविष्कार सन् १४५० में हुआ। यह था चल टाइपों का आविष्कार। उस समय से पहले पुस्तकों को हाथ से नकल करना होता था, या लकड़ी के बने पूरे पृष्ठ के ब्लाकों से छापना पड़ता था। सबसे पहले अलग-अलग अक्षरों के लिए अलग-अलग ब्लाकों का प्रयोग करके संतोषजनक छापाखाना बनाने का श्रेय जोहान गूतेनबर्ग नामक एक जर्मन को दिया जाता है जिसने सन् १४५० के लगभग बाइबिल की एक सुन्दर प्रति छापी। खुदे हुए अक्षरों को बनाकर एक साथ जोड़कर एक पन्ने की छपाई की जाती थी। जब सभी प्रतियाँ छप जाती थीं तब उन्हीं अक्षरों का प्रयोग दूसरे पन्नों के लिए किया जाता था।

अपनी सादगी के बावजूद, जब किसी आदमी के दिमाग में यह आविष्कार आया तब से लेकर आजतक चल टाइपों से अधिक महत्त्वपूर्ण अन्य कोई आविष्कार नहीं हुआ। चौदहवीं शताब्दी में यूरोप में कागज़ आम प्रयोग की चीज़ बन गया था, जिसने अपनी अपेक्षा बहुत अधिक मंहगे चर्मपत्र का स्थान ले लिया था, जो युगों से पुस्तकें बनाने के काम आता था। कागज़ और छापेखाने को पाकर ज्ञान का प्रसार बहुत अधिक बढ़ गया। छपी हुई किताबें हाथ से लिखी हुई हस्तलिपियों से बहुत सस्ती थीं और अब सामान्य लोग उन्हें खरीद सकते थे। चूँकि अब बहुत से लोग किताबें रख सकते थे, इसलिए वे पढ़ना सीखने को इच्छुक थे। पुस्तकें पढ़ने से जो ज्ञान आया, उसने धर्म, विज्ञान, साहित्य और सरकार के विषय में चर्चाओं को बढ़ावा दिया।

१. प्रकृति के ज्ञान के सम्बन्ध में पुनर्जागरण काल के लोगों का दृष्टिकोण मध्य युग के लोगों से किस अर्थ में भिन्न था?
२. छापाखाने का क्या महत्त्व था?
३. कौन-कौन से लोग पुनर्जागरण काल के प्रमुख वैज्ञानिक थे और उन्होंने विज्ञान को क्या योगदान दिया?

विचार-विमर्श के लिए प्रश्न

१. क्या, जैसा कि मैकियावेली ने कहा था, शासकों के लिए यह सच है कि राष्ट्रों के बीच नैतिक नियम का पालन करना उनके लिए उस तरह ज़रूरी नहीं है जैसे व्यक्तियों के बीच? क्या राष्ट्रों के बीच इसी तरह का व्यवहार हो तो इससे शान्ति कायम रह सकेगी?

२. मध्य युग के सभी शिक्षित लोगों के आम व्यवहार की भाषा लैटिन थी। यह उनके बीच एकता स्थापित करने वाली एक चीज थी। आधुनिक युग में कुछ लोग ऐसे हैं जो यह मानते हैं कि एक आम भाषा का होना इन्हीं कारणों से जरूरी है। उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में इसी मतलब से एक पोलिश यहूदी ने एक भाषा तैयार की। इसका नाम एस्परैन्तो है। क्या ऐसी कोई भाषा इस काम के लिए उतनी ही उपयोगी हो सकेगी, जितनी फ्रेंच या अंग्रेजी?

३. जब लोगों का साहित्य उनकी अपनी भाषा में लिखा जाने लगा तब यह क्यों जनसाधारण के लिए एक बहुत महत्त्वपूर्ण कदम था?

४. पुनर्जागरण काल की महान् हस्तियाँ थीं साहित्यकार, कलाकार और शासक। आज की सभ्यता की महान् हस्तियाँ कौन-सी हैं ? इस तरह का अन्तर क्यों पाया जाता है ?

५. पन्द्रहवीं शताब्दी में प्रकृति के किसी पहलू के सम्बन्ध में किसी नए सिद्धान्त की घोषणा करने के लिए आज की अपेक्षा अधिक साहस की जरूरत क्यों पड़ती थी ?

६. कहा जाता है कि कला और विज्ञान राष्ट्रीय सीमाओं के कायल नहीं हैं। इसका क्या मतलब है ? क्या तुम इससे सहमत हो ?

७. जहाँ तक विज्ञान का सम्बन्ध है, फ्रान्सिस बेकन ने अपने युग के स्कूलों के पिछड़ेपन की शिकायत की थी। क्या तुम्हारी समझ में आज के स्कूल किसी दृष्टि से अपने युग से पिछड़े हुए हैं ?

८. हमारे युग के सुधारकों और आलोचकों की बहुत अधिक आदर्शवादी होने के लिए क्यों हँसी उड़ाई जाती है।

९. आज संयुक्त राज्य में हमारी प्रजातांत्रिक सरकार जिस प्रकार की है, क्या छापाखाने के बिना उसका वैसा रह सकना संभव होगा ? व्याख्या करो।

१०. नया बुर्जुआ वर्ग धन पर टिका हुआ था, न कि जन्म पर। इनमें से कौन अधिक जनतांत्रिक है ?

इतिहास के उपकरणों का प्रयोग

एक. तिथियां और स्थान

१. क्या तुम निम्न शब्दों की व्याख्या कर सकते है ?

बुर्जुआ——मानवतावाद——मानवतावादी——चामत्कारिक नाटक——नैतिकता पर आधारित नाटक——चल टाइप——रहस्य-नाटक——पुनर्जागरण——रोमांस भाषाएँ——वेटिकन——

२. क्या तुम्हें तिथियाँ याद हैं ?

११००——१४५० के लगभग

३. मानचित्र पर ये स्थान दिखाइए :

बाल्कन प्रायद्वीप——कुस्तुन्तुनिया——इंग्लैंड——

कलवर सर्विस

गैलिलियो संवाद लेखन में बड़ा दक्ष था, संवादों में ही उसने ब्रह्माण्ड के अपने सिद्धान्तों की व्याख्या की है।

फ्लोरेन्स——हालैंड——इटली——लन्दन——मिलान——नार्वे——पुर्तगाल——रोम——स्पेन——स्वीडन——वेनिस——वाशिंगटन——

४. क्या तुम बता सकते हो कि निम्न लोग कौन थे ?

फ्रान्सिस बेकन——रोजर बेकन——बोकाशो——जान काल्विन——सर्वान्तेज़——दान्ते——लियानार्दो दा विंची——लारेन्जो दे मेदिची——एलिज़ाबेथ प्रथम——इरेज़मस——फ्रा आंजेलिको——गैलीलियो——गीवर्ती——जोहान गूतेनबर्ग——हाल्स——जेफर्सन——जान्सन——मैकियावेली——क्रिस्टाफर मार्लो——माइकेल ऐंजेलो——सर टामस मूर——पैलेस्ट्राइना——पेट्रार्क——रेबेला——राएफेल——रेम्ब्रां——शेक्सपीयर——एडमण्ड स्पेन्सर——तिशन——वान डिक——वान इक बंधु——वेलास्क्वेथ।

दो——क्या तुम अपनी बात को स्पस्ट रूप से व्यक्त कर सकते हो ?

जितनी भाषाओं में ढूंढ़ना संभव हो, उतनी भाषाओं में पिता या माता शब्द को ढूंढो। इनमें से कितने शब्द लैटिन के "पेटर" (पिता) या

"मेटर" (माँ) से निकले हैं ? इनमें से कौन से शब्द लैटिन से नहीं निकले हैं ?

२. अपनी कक्षा को एस्परेन्तो के बारे में कुछ बताओ। इसके कुछ शब्दों को अपनी कक्षा के लड़कों को दिखाने के लिए श्यामपट्ट पर लिखो।

३. कालेजों में पढ़ाए जाने वाले कुछ विषयों को ह्यूमैनिटीज़ कहा जाता है। किसी कालेज के पाठ्यक्रम को देखो और अपनी कक्षा को बताओ कि इसके अन्तर्गत कौन-कौन से विषय पढ़ाए जाते हैं ?

४. पुनर्जागरण काल के जिस साहित्यकार की रचनाएँ तुम्हें पसन्द हों, उसके बारे में अपनी कक्षा के विद्यार्थियों को कुछ बताओ। तुम्हारे स्कूल में या सार्वजनिक पुस्तकालय में तुम्हें साहित्य के इतिहास की पुस्तकें मिल जाएँगी जिनसे तुम्हें सहायता मिलेगी।

५. शेक्सपीयर का एक सानेट या उसके किसी नाटक का कुछ अंश अपनी कक्षा को सुनाने के लिए याद करो। तुम्हारे अंग्रेजी शिक्षक इसका चुनाव करने में तुम्हारी सहायता करेंगे।

६. गैलीलियो का दूरदर्शी इस तरह का था कि उससे पचास मील दूर का जहाज़ इतना साफ दिखाई पड़ सकता था मानो वह पाँच मील की ही दूरी पर हो। आज पैलोमर पर्वत की वेधशाला के दूरदर्शी से ६००,००,००,००,००,००,००,००,००,००० मील दूर तक देखा जा सकता है। यह ५० मील से कितने गुना दूर हुआ। प्रकाश की गति प्रति सैकण्ड लगभग १,८६,००० मील है। इस वेधशाला द्वारा सुदूर तारों का जो प्रकाश देखा जा सकता है, वह कितने साल पहले वहाँ से चला था ?

तीन. कला के माध्यम से इतिहास

१. निम्नलिखित में से किसी एक के चित्रों का संकलन करो :

इटली के पुनर्जागरणकालीन चित्र—पुनर्जागरणकालीन मूर्त्तियाँ—डच पुनर्जागरण के चित्र—पुनर्जागरण काल की इमारतें।

इनमें से हर चित्र के नीचे कलाकार का नाम, उसका जीवन, राष्ट्रीयता या नगर का नाम लिखकर ठीक से चिपकाओ। अपनी पुस्तिका के सम्बन्ध में यह बताते हुए कि इस पुस्तिका में पायी जाने वाली चीजों के बारे में तुम क्या जानते हो, एक भूमिका लिखो। चित्र न्यूयार्क नगर के मेट्रापालिटन म्यूज़ियम से या छोटी रंगीन तस्वीरें बेचने वाली किसी दूकान से पाए जा सकते हैं।

२. यदि तुम्हारी दिलचस्पी संगीत में है तो बायर की "म्यूज़िक थ्रू द एजेज़" पुस्तक में पैलेस्ट्राइना और उसकी रचना या पुनर्जागरण काल के किन्हीं नये वाद्ययंत्रों के बारे में पढ़ो। इसके विषय में अपनी कक्षा के छात्रों को बताओ। यदि तुम पलेस्ट्राइना को चुनो तो अपना कथन एक रेकार्डिंग के साथ प्रस्तुत करो।

३. शेक्सपीयर के युग के ग्लोब थिएटर का एक नमूना बनाओ।

४. यदि तुम्हें नाटक देखना पसन्द है तो तुम इस बारे में अधिक दिलचस्पी लोगे कि शेक्सपीयर के नाटक पहले किस रूप में प्रस्तुत किये जाते थे। इस विषय में अपनी कक्षा को मौखिक रूप से कुछ बताओ। देखो चेनी का "**द थिएटर**" या थार्नडाइक का "**शेक्सपीयर्स थियेटर**"।

चार. नाटकीयकरण

शेक्सपीयर के "**जूलियस सीज़र**" या "**द मर्चेण्ट आफ वेनिस**" या "**मेकबेथ**" के कुछ अंशों के रिकार्ड अपनी कक्षा के लिए प्राप्त करो। एक समिति पूरे रिकार्ड सुने और यह फैसला करे कि इसका कौन सा भाग कक्षा में खेला जा सकता है।
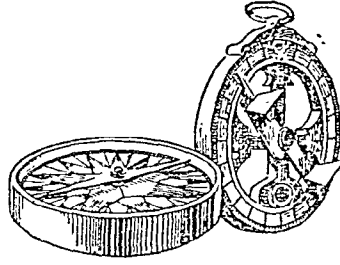
२० धन खोजते हुए नये देश मिले

प्रारम्भिक पुनर्जागरण का एक लक्षण था नगरों का तेजी से विकास और उनके महत्त्व में वृद्धि। इस दृष्टि से इटली के नगरों का स्थान पहले आता है। दूसरे देशों के नगर स्वतन्त्र नहीं हुए, परन्तु अपने देशों के शासनों में उनका महत्त्व बढ़ा क्योंकि राष्ट्रीय शासन को उनसे धन प्राप्त होता था। धीरे-धीरे मैनरों में काम करने वाले मजदूरों को मैनर से दूर नगरों में काम पाना अधिक लाभप्रद लगा। मैनरों वाले कुछ गाँव भी व्यापार बढ़ने से नगर बन गये। ऐसे कई नगरों को लार्डों ने स्वायत्तशासन के शासन-पत्र दिये। अब लार्ड अपने मैनरों के पोषण के लिए सर्फों और मजदूरों के रूप में काम लेने के बजाए पूरे नगर से कर पाते थे। इस प्रकार सर्फ और मैनर प्रथा धीरे-धीरे समाप्त होने लगी। पश्चिमी यूरोप में मध्ययुग और पुनर्जागरण के बीच यह भी भेद था कि पहले शुद्ध ग्राम-जीवन था पर अब ऐसी सभ्यता का जिसमें नागरिक जीवन महत्त्वपूर्ण था, अधिक महत्त्व हो गया था।

पूँजीवादी पद्धति का प्रारम्भ

मैनर (जागीर या कृषिकुल) प्रथा के टूटने के अतिरिक्त कुछ दूसरे महत्त्वपूर्ण आर्थिक परिवर्तन भी हुए। शिल्प-श्रेणियों का स्वरूप भी बदल रहा था और मालिकों और कारीगरों के बीच दरार पड़नी शुरू हो गयी थी। शिल्प श्रेणियों के बहुत

पुराने जमाने के महाजन बहुत धनी व्यापारी भी होते थे। चूँकि धर्मयुद्धों के बाद जिस व्यापार का उत्थान हुआ, उससे इटली में दौलत आयी, इसलिए फ्लोरेन्स, वेनिस और गेनोआ तथा इटली के दूसरे नगर महाजनी के केन्द्र बन गये।

हिस्टोरिकल पिक्चर सर्विस

से उस्ताद धनी हो गये जबकि अप्रेंटिस (शिक्षार्थी) और जर्नीमैन (शिक्षित) हस्तकर्मकार प्रायः बहुत गरीब होते थे। सिर्फ कुछ ही जर्नीमैन कभी उस्ताद-कारीगर और शिल्प-श्रेणियों के सदस्य हो पाते थे। इसकी बजाय वे मजदूरी पर ही काम करते रहे। शिल्प श्रेणी का सचालन करने वाला शक्तिशाली गुट प्रायः नगर के व्यापार पर अपना पूरा नियंत्रण कर लेता था और उस व्यापार में लगे अन्य लोगों को या तो नौकर बना लेता था या व्यवसाय-विहीन कर देता था। इसमें हमें पूँजीवादी पद्धति के प्रारम्भ के दर्शन होते हैं जिसमें धनवान् आदमी लाभ कमाने के लिए व्यापार की शुरुआत करता है। फिर वह इस लाभ को भी व्यापार में लगाकर और लाभ कमाता है। चूँकि बहुत से लोगों के पास व्यापार में लगाने के लिए पूँजी या धन नहीं होता था, इसलिए उन्हें दूसरों के लिए मजदूरी पर काम करना पड़ता था।

व्यापार में अभिवृद्धि के फलस्वरूप व्यापार में साझेदारियाँ और संयुक्त पूँजी कम्पनियाँ शुरू हुईं। साझेदारी में दो या अधिक आदमी मिलकर व्यापार करते हैं। हर एक को लाभ में हिस्सा मिलता है और हर एक पर हानि की जिम्मेदारी रहती है। चूँकि अधिकांश व्यापार समुद्री मार्ग से होता था, इसलिए व्यापार में लगाने के लिए बहुत बड़ी पूँजी की जरूरत पड़ती थी। एक पूरे जहाजी बेड़े के लिए धन का प्रबन्ध करने को कम्पनी के हिस्से बेचे जाते थे और कुल हिस्सेदारों की कम्पनी बनती थी। पश्चिमी यूरोप में पूर्व से व्यापार के लिए ऐसी कम्पनियाँ बनायी गयी थीं। बाद में ऐसी ही कम्पनियों ने अमरीका और पूर्वी देशों में वहाँ व्यापार बढ़ाने की दृष्टि से उपनिवेश बसाये। लंदन कम्पनी, प्लाइमाउथ कम्पनी, हडसन्ज बे कम्पनी और अन्य कई नाम इस युग में बहुत प्रसिद्ध थे।

कुछ सौदागरों और शिल्प-श्रेणियों ने बहुत अधिक धन-राशि जमा कर ली और वे कर्ज भी देने लगे। बाद में साहूकारी अलग कारोबार के रूप में स्थापित की गयी। साहूकार व्यापारिक कम्पनियों को अपने व्यापार में धन लगाने के लिए कर्ज देते थे। वे नगरों, राजाओं और यहाँ तक कि पोप को भी अत्यन्त मंहगे युद्धों का खर्च चलाने के लिए कर्ज देते थे। इससे उन्हें बहुत लाभ होता था।

१. स्पष्ट करिये कि किस तरह विभिन्न तरीकों से बने हुए नगर बढ़कर महत्त्वपूर्ण हो गये।
२. शिल्प-श्रेणियों के परिवर्तित तरीके किस प्रकार पूँजीवाद का आरम्भ थे ? प्रदर्शित करिये।
३. साझेदारी, संयुक्त पूँजी कम्पनी, और पूँजीवाद पदों की व्याख्या करिये।
४. पुनर्जागरण युग में शुरू हुईं कुछ व्यापारिक कम्पनियों के नाम बतलाइए।

अन्वेषण के युग ने नयी दुनिया के द्वार खोले

भूगोल में अभिरुचि—पुनर्जागरण युग के दौरान पश्चिमी यूरोपवासियों ने अपनी भूगोल की सीमित जानकारी बढ़ायी। इसके कई कारण थे। चुम्बक और वेधयंत्र (एस्ट्रोलेब), जिनसे नाविकों को अपने जाने की दिशा और अपनी स्थिति का ज्ञान होता था, आविष्कृत हो चुके थे। जलपोतों की रचना में उन्नति हुई थी जिससे वे पहले दुर्गम समझे जाने वाले समुद्रों में यात्रा के उपयुक्त हो गये थे। अधिक विचारशील नाविकों को यह भय नहीं रह गया था कि यदि वे समुद्र में बहुत दूर तक गये तो पृथ्वी के किनारे से गिर पड़ेंगे। उनके मार्गदर्शन के लिए बेहतर मानचित्र भी बनाये गये। इन सभी बातों से भूगोल में लोगों की अभिरुचि और अन्वेषण की इच्छा, बल्कि उत्सुकता भी जाग्रत हुई।

मार्को पोलो—कभी-कभी कोई अपेक्षाकृत अधिक साहसिक पश्चिम यूरोपवासी चीन तक व्यापार करने चला जाता था। तेरहवीं शताब्दी में वेनिस के मार्को पोलो ने ऐसी यात्रा की। वह चीन के शासक कुबलाई खाँ के महल में कई साल तक रहा। बीस साल बाद वेनिस लौटने पर उसके एक मित्र ने उसके वर्णनों के आधार पर पूर्व के महान् वैभव का वृत्तान्त लिखा। वहाँ मिलने वाले कपास, चीनी, मसालों और सोने के मार्को पोलो

के विवरणों ने इटालवी लोगों को वहाँ के प्रति बहुत आकर्षित किया और वे लोग पूर्वी एशिया के साथ अब पहले से भी अधिक सीधा सम्पर्क स्थापित करने की सोचने लगे।

इटली के नगरों के धन और व्यापार ने पश्चिमी यूरोप के नये राष्ट्र-राज्यों के राजाओं को भी धन प्राप्त करने के लिए हर प्रयत्न करने को प्रोत्साहित किया। वे पूर्वीय देशों की समृद्धि में हिस्सा बढ़ाना चाहते थे क्योंकि उनकी नयी सरकारों का व्यय अधिक था और राष्ट्रीय सेवाओं और नौसेनाओं का खर्चा चलाने के लिए धन के नये स्रोतों की जरूरत थी। चूँकि पूर्वी भूमध्य-सागर के व्यापार पर इटली के नगर-राज्यों का नियन्त्रण था, अतः वे पूर्वी एशिया से थलमार्ग से होने वाले व्यापार पर एकाधिकार जमाने में समर्थ थे। इसलिए पश्चिमी यूरोप के राष्ट्र-राज्य पूर्व के लिए समुद्री मार्ग ढूँढ निकालने के लिए बहुत उत्सुक थे।

विश्व के चारों ओर प्रथम समुद्री यात्रा।

THE FIRST VOYAGE AROUND THE WORLD

पुर्तगालियों की खोजें—इस भौगोलिक अन्वेषण कार्य में छोटा देश पुर्तगाल सबसे आगे था। अंधमहासागर में उसकी स्थिति इस कार्य के लिए विशेष उपयुक्त थी। प्रिंस हेनरी ने प्रारम्भिक खोज-यात्राओं को प्रोत्साहित किया। उसने समुद्री नाविकों के लिए एक स्कूल खोला और यात्राओं के लिए उन्हें सहायता दी। इसके अभियान अफ्रीका के पश्चिमी तट पर दूर दक्षिण तक बढ़ते रहे। अन्ततः बार्थोलोम्यू डिआस नामक बहुत ही योग्य पुर्तगाली नाविक उत्तमाशा अन्तरीप का चक्कर लगाने में सफल हुआ। वास्को द गामा को और भी आगे जाने के लिए नियुक्त किया गया। वह अफ्रीका का चक्कर लगाकर १४९८ ई० में भारत में कालीकट पहुँचा। अंततः यूरोपीय विशाल अफ्रीकी महाद्वीप का चक्कर लगाकर भारत पहुँच गये।
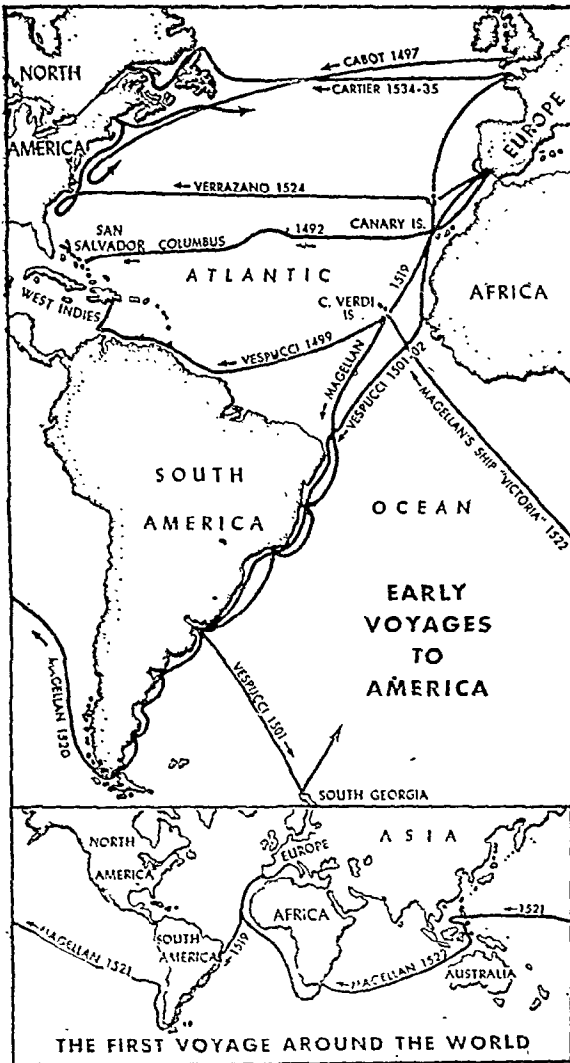
स्पेनियों की खोजें—पूर्वी देशों के लिए अपना निजी समुद्री मार्ग खोजने में स्पेन की रुचि के फलस्वरूप एक और महत्त्वपूर्ण खोज हुई। स्पेन की रानी आइसाबेला के आर्थिक सहयोग पर क्रिस्टोफर कोलम्बस ने पूर्व के लिए नया रास्ता खोजने का संकल्प किया। उसे विश्वास था कि एशिया का पूर्वी तट अंध महासागर के उस पार है और वह तीन छोटे जहाजों में वहाँ पहुँचने के लिए रवाना हुआ। दीर्घकालीन संकटमय यात्रा के बाद कोलम्बस वहाँ पहुँचा। हमारे आधुनिक पंचांग के अनुसार वह १२ अक्तूबर, १४९२ ई० को सम्भवतः बहामा के किसी द्वीप पर उतरा। उसने सोचा कि वह एशिया के दक्षिण-पूर्व में स्थित भारत (इंडीज़) द्वीपसमूह में पहुँच गया है।

पुर्तगाली लोग स्पेनी खोजों को ईर्ष्या की

दृष्टि से देखते थे। दोनों राज्यों के बीच प्रतिद्वन्द्विता को सुलझाने के लिए पोप ने केप वर्दे द्वीप-समूह के ३७० लीग पश्चिम, उत्तरी ध्रुव से दक्षिण ध्रुव तक अंधमहासागर के बीच से एक विभाजक रेखा खींचते हुए एक आधिकारिक [illegible] जारी किया। उस रेखा के पश्चिम के [illegible] पर किसी दूसरे ईसाई राजा का [illegible] था, स्पेन के माने गये और रेखा के पूर्व में पुर्तगाल के।

कोलम्बस ने हमेशा यह सोचते हुए कि वह एशिया पहुँच गया है, नयी दुनिया की तीन यात्राएँ और कीं। यद्यपि वह एशिया नहीं पहुँचा था, फिर भी उसने उत्तरी और दक्षिणी अमरीका की विशाल नयी दुनिया के अन्वेषण और उपनिवेशीकरण का मार्ग प्रशस्त कर दिया था।

कोलम्बस के अन्वेषणों ने दूसरों को उसका अनुकरण करने के लिए प्रेरित किया। अमेरिगो वेस्पूची नामक इटालवी कई ऐसे अभियानों के साथ गया जिन्होंने कोलम्बस द्वारा पाये गये क्षेत्र में और आगे अन्वेषण किया। वेस्पूची को यह निश्चय हो गया कि वह एशिया से बिलकुल अलग कोई नयी ही दुनिया थी। वेस्पूची के सिद्धांत का पता लगने पर एक जर्मन भूगोलशास्त्री ने सुझाव दिया कि इस नयी दुनिया को अमेरिगो के सम्मान में अमेरिका कहा जाय।

वास्को नूनेज़ डि बालबोआ को नयी दुनिया में सोना मिलने की उम्मीद थी। वह जंगलों में और पहाड़ों पर इस्थमस आफ़ डेरिएन (पनामा) को पार करता घूमता रहा। अंततः उसे नीचे देखने पर विशाल नीला सागर दीख पड़ा जिसे उसने दक्षिण सागर कहा।

फर्डिनांड मैगेलान स्पेन से चला और स्टेट्स आफ़ मैगेलान से होकर दक्षिण सागर पार करते हुए, जिसे उसने प्रशान्त महासागर नाम दिया, उसने दक्षिण अमेरिका का चक्कर लगाया। वह फिलीपाइन में उतरा और आदिवासियों से हुए एक संघर्ष में मार डाला गया पर उसका दल अफ्रीका का चक्कर लगाता हुआ स्पेन वापस पहुँच गया। विश्व की परिक्रमा करने वाली इस यात्रा में तीन वर्ष लगे। इससे पृथ्वी का आकार और रूप निश्चित रूप से सिद्ध हो गया। इससे यह भी सिद्ध हो गया कि अमरीका द्वीप मात्र या एशिया का कोई भागमात्र नहीं, बल्कि एक महाद्वीप था।

पोंथे दा लेआन ने यौवन के स्रोत की तलाश करते हुए फ्लोरिडा की खोज की। हरनांडो कोर्टेज़ मेक्सिको में उतरा और आज के मैक्सिको नगर के स्थान पर उसने एज़्टेकों को पीछे हटा दिया। उसने उनके शासक मोंटेजूमा को बाहर खदेड़ दिया और स्वयं प्रशासक बन गया। वहाँ से उसने मध्य-अमरीका और कैलिफोर्निया का अन्वेषण किया। पिजारो ने विषुवत् रेखा तक अभियान किया और वैभवशाली प्रदेश पेरू को इन्का लोगों से छीन लिया। दि सोटो ने लोअर मिसीसिपी नदी के आस-पास के प्रदेश की खोज की। ऐसे ही आदमियों की साहसिक यात्राओं और खोजों के जरिये स्पेन ने नयी दुनिया में अपने साम्राज्य की स्थापना की।

अंग्रेजों की खोजें—दूसरे देश एशिया के लिए अपने निजी समुद्री मार्ग चाहते थे। अंग्रेजों ने सोचा कि चूंकि स्पेनी सीधे पश्चिम दिशा में जाने से इंडीज में पहुँचे हैं अतः उन्होंने भारत के लिए उत्तर-पश्चिम दिशा का मार्ग खोजने का निश्चय किया। सन् १४९७ में हेनरी सातवें ने जान कैबट नामक इटालवी नाविक को चीन और इंडीज जाने का मार्ग ढूंढने के लिए उत्तरी अंधमहासागर में खोज करने की अनुमति दी। कैबट जहाँ पहुंचा वह पूर्वी उत्तरी अमरीका का तट था। पांच सौ वर्ष पूर्व उत्तर-वासियों की वहाँ की यात्रा के बाद से, वह पहला यूरोपीय था जो इस तट पर पहुंचा। कैबट ने एक द्वीप का नाम "न्यू फाउंडलैंड" ("नव प्राप्त देश") रखा लेकिन उसे इस बात का पता नहीं था कि वह एक नये महाद्वीप तक पहुंच गया है। दूसरे अंग्रेजों ने बाद में उत्तरी-पश्चिमी मार्ग खोजने के असफल प्रयत्न किये।

फ्राँसीसी खोजें—सन् १५२४ में फ्रांस के राजा की नौकरी में लगे वेरात्सानो नामक इटालवी ने नयी दुनिया के एक भाग पर फ्राँस का हक स्थापित किया। वह वास्तव में एशिया के लिए पश्चिमी मार्ग ढूँढ रहा था और उसके लिए वह आज के नार्थ

कैरालिना से लेकर न्यूयार्क तक की खाड़ियों और नदियों के मुहानों में खोज कार्य में लगा हुआ था। दस वर्ष बाद जाक कार्त्या नामक फ्रांसीसी सेंट लारेंस नदी के रास्ते भीतर प्रविष्ट हुआ और उसने एक व्यापारिक चौकी की स्थापना की जो मांट्रियल नगर के रूप में विकसित हुई। सामुएल दे शैम्पलें ने १६०८ में क्यूबेक की स्थापना की। मार्क्वित, जोलिए और बाद में ला साले ने उत्तरी अमरीका के मध्य और मिसीसिपी और सेंट लारेंस नदी प्रणालियों पर फ्रांस का हक बढ़ाया।

गार मैन्यूफेक्चरिंग कं०

सीसिपी घाटी के अमरीकी आदिवासियों और फ्रान्सीसियों बारे में हमें जो कुछ जानकारी प्राप्त होती है, उसका हुत-सा भाग मार्क्वेत की डायरी पर आधारित है।

नयी दुनिया के यूरोप पर प्रभाव—स्पेनियों द्वारा अपनी विजयों के फलस्वरूप प्राप्त सोने और चांदी की विशाल राशियों का यूरोप पर गहरा प्रभाव पड़ा। पूरे मध्ययुग के दौरान सोने और चांदी की मात्रा बहुत कम रही थी। धात्विक धनराशि में अकस्मात् वृद्धि के फलस्वरूप चीजों के दाम बढ़ गये। अपनी समृद्धि बढ़ जाने के कारण स्पेन यूरोप की प्रमुख शक्ति हो गया। नये व्यापार के फलस्वरूप जहाँ अंधमहासागर तटवर्ती नगरों की जनसंख्या और समृद्धि बढ़ गयी, वहीं भूमध्यसागर के व्यापारिक केन्द्रों का महत्त्व घट गया। जैसे-जैसे समुद्री यातायात का मार्ग भूमध्यसागर से हट कर अंधमहासागर की ओर होता गया वैसे ही धीरे-धीरे वेनिस, गेनोआ और इनसे व्यापार-सम्बन्ध रखनेवाले दक्षिणी जर्मनी के नगरों का महत्त्व कम हो गया।

नयी दुनिया में हुई खोजों का एक और फल यह हुआ कि यूरोपीय देशों में उपनिवेशों और उनसे मिलने वाले धन पर अधिकार जमाने की प्रतिद्वंद्विता बढ़ गयी। धन को सुरक्षित यूरोप लाने के लिए बड़ी नौसेनाएँ रखना आवश्यक हो गया। इंग्लैंड और स्पेन प्रतिद्वंद्वी नौशक्ति के रूप में विकसित हुए। राजनैतिक और धार्मिक मतभेदों ने उनके बीच विरोध को और बढ़ाया। अंग्रेज जहाज वाले स्पेनी जहाजों को लूटने लगे और उन पर लदा हुआ सोना-चाँदी चुरा ले जाने लगे। सर फ्रांसिस ड्रेक और कैप्टेन जान हाकिंस इस लूट के अंग्रेज नेताओं में थे।

स्पेन की बृहत् नौसेना—अंततः इंग्लैंड और स्पेन की प्रतिद्वंद्विता सन् १५८८ में अंतिम सीमा पर पहुंच गयी जब स्पेन ने सारे ब्रिटिश द्वीपसमूह पर आक्रमण करने की धमकी दी। दो वर्षों तक फिलिप द्वितीय अपनी दुर्द्धर्ष बृहत् नौसेना को तैयारी में रखे रहा।

स्पेन की बृहत् नौसेना ३० मई, १५८८ ई० को फिलिप के लक्ष्यों की पूर्ति के लिए आगे बढ़ी। इस बेड़े में १३० जहाज थे और नीदरलैंड्स में उस समय एक विद्रोह को दबाने में लगे हुए १७,००० सैनिक इसमें शरीक होने वाले थे। इंगलिश चैनल में पहुँचने पर यह बृहत् नौसेना संख्या में अंग्रेजी जहाजों की संख्या से बहुत बड़ी थी। लेकिन इंग्लैंड की छोटी-छोटी द्रुत-नौकाओं ने व्यापक युद्ध से बचते हुए इसे काफी नुकसान पहुँचाया। इंगलिश चैनल में तूफान आया और स्पेनी जहाजों को कोई सुरक्षित बन्दरगाह नहीं मिला। वे उत्तरी सागर की ओर बढ़ गये जहाँ उन्हें और अधिक जहाज और सैनिक गँवा देने पड़े। कुल एक-तिहाई ही वापस स्पेन लौट पाये। स्पेन की योजनाएँ असफल हो गयीं।

स्पेन ने फिर कभी इंग्लैंड पर आक्रमण करने की धमकी नहीं दी यद्यपि दोनों देशों में प्रतिद्वंद्विता कई वर्षों तक चलती रही। वैसे स्पेनी बृहत् नौसेना के पराजय के कारण इंग्लैंड का आत्मविश्वास बहुत बढ़ गया और इस विश्वास के साथ कि स्पेनी आक्रमणों से सुरक्षित रख सकेगा, वह शीघ्र ही अमरीकी साम्राज्य का निर्माण करने में लग गया।

व्यापारिक क्रान्ति—पुनर्जागरण युग के प्रारम्भ में सारे पश्चिमी यूरोप में यातायात बहुत था और भूमध्यसागर में तथा यूरोप के समुद्री तट पर जोरों का व्यापार चल रहा था। इस युग की समाप्ति होते-होते नाविक अफ्रीकी समुद्र तट को यातायात के घेरे में शामिल करने के लिए आगे बढ़ चुके थे; हिन्द महासागर को पार कर वे पूर्वी द्वीपसमूह तक पहुँच चुके थे, और यूरोप के प्रमुख देश अंधमहासागर के पार अमरीकी महाद्वीपों में उपनिवेश और व्यापारिक केन्द्र स्थापित कर चुके थे। अंधमहासागर और हिन्दमहासागर के व्यापार की तुलना में भूमध्यसागर में व्यापार का महत्त्व गौण हो गया था। एक व्यापारिक क्रान्ति हो चुकी थी।

१. अन्वेषण-युग किन हालतों और घटनाओं के कारण आया ?
२. पूर्व के साथ व्यापार की रुचि जाग्रत करने में मार्को पोलो का योगदान क्या था ?
३. नाविक हेनरी कौन था ?
४. प्रमुख पुर्तगाली, स्पेनी, अंगरेज और फ्रांसीसी अन्वेषक कौन-कौन थे और उन्होंने कौन-कौन सी खोजें कीं ?
५. यूरोप पर भौगोलिक खोजों के प्रधान प्रभाव बतलाइए।
६. स्पेन के लिए और इंग्लैंड के लिए स्पेनी बृहत् नौसेना के पराजय का क्या महत्त्व था ?

विचार-विमर्श के लिए प्रश्न

१. शिल्प-श्रेणियों में, परिवर्तन किन रूपों में लाभदायक थे ?

२. पुनर्जागरण युग में महाजनी (बैंक-प्रथा) की शुरूआत से किस प्रकार व्यापार में वृद्धि हुई ?

३. अमरीका जाने वाले प्रारम्भिक अन्वेषक मूलत: सोने और चांदी की तलाश में रहते थे। इस तरह अमरीका का वास्तविक धन उनकी आँखों से ओझल रह गया। क्या आप इस कथन से सहमत हैं ?

४. पुर्तगाल की भौगोलिक स्थिति किस रूप में प्रारम्भिक खोजों में उसके आगे रहने में सहायक हुई ?

५. अब जब कि दुनिया का हर भाग खोजा जा चुका है और उसकी छान-बीन हो चुकी है, साहसिक लोगों के लिए क्या करने की सम्भावनाएँ रह गयी हैं ?

इतिहास के उपकरणों का उपयोग

एक· नाम, तिथियाँ, और स्थान

(१) इन शब्दों की व्याख्या करिये:—

पूंजी, पूँजीवाद, पूँजीपति, व्यापारिक क्रान्ति, विभाजक रेखा, साझेदारी, स्पेन की बृहत् नौसेना, संयुक्त पूँजी कम्पनी।

(२) ये तिथियाँ किस लिए उल्लेखनीय हैं ?

१४९२, १४९८, १५८८, १६०८

(३) मानचित्र में इन स्थानों को ढूँढ़िए :—

एज़ोर्स, वहामा, कालीकट, कैलिफोर्निया, उत्तमाशा अन्तरीप, वर्दे द्वीपसमूह अन्तरीप, मध्य अमरीका, विभाजक रेखा, पूर्वी द्वीपसमूह, इक्वेडर, इंगलिश चैनल, फ्लोरिडा, गेनोआ, इस्थमस आफ पनामा, मदीरा द्वीपसमूह, मेक्सिको, मिसीसिपी नदी, मांट्रियल, न्यूफाउण्डलैंड, न्यूयार्क, उत्तरी कैरोलिना, उत्तर सागर, प्रशांत महासागर, पेरू, फिलीपीन,

ऐज्टेक किस भावना को लेकर कोर्तेज़ आए? इस ऐज्टेक चित्र में इसका ब्यौरा तुम्हें मिलेगा।

बैटीमैन आर्काइव

सेंट लारेंस नदी, स्पाइस द्वीपसमूह, स्ट्रेट्स ग्राफ मेगलान, सीरिया।

(४) ये लोग कौन थे :—

वास्को नूनेज द बल्बोग्रा, जान कैबट, जाक कार्त्या, सैमुग्रल दे शैम्पलें, क्रिस्टोफर कोलम्बस, हर्नान्दो कार्टेज, बार्थोलोम्यू डिग्रास, सर फ्रांसिस ड्रेक, वास्को द गामा, सर जान हाकिन्स, हेनरी सप्तम, नाविक हेनरी, ग्राइसाबेला ग्राफ स्पेन, लुई जोलिए, रिने लेसाले, फर्डिनांड मेगलान, जाक मार्क्वेते, स्काटों की रानी मेरी, मान्तेत्सुमा, स्पेन का फिलिप द्वितीय, फ्रांसिस्को पिजारो, मार्को पोलो, पोर्क दे लिग्रों, गिग्रोबानी वेरात्सानो, ग्रमेरिगो वेस्पूची।

दो. ग्रभिव्यक्ति के लिए ग्रभ्यास

(१) यंत्रों में ग्रभिरुचि रखने वाले किसी विद्यार्थी को कक्षा में वेधयंत्र (एस्ट्रोलेब) ग्रौर कम्पास की कार्य-विधि बतलाने को कहिए।

(२) दो विद्यार्थी वास्को द गामा के भारत पहुँचने पर उसके ग्रौर एक ग्ररब सौदागर के बीच हुए वार्तालाप का ग्रभिनय करें।

(३) कक्षा में निम्नलिखित विषयों में से किसी एक का मौखिक विवरण प्रस्तुत करिए :—

(ग्र) पुनर्जागरण युग के निम्नलिखित साहूकारों में से किसी एक का जीवन-वृत्त

जाक किऊ, सर रिचर्ड व्हिटिंगटन, फगर्स, वार्दी परिवार, पेरूज़ी परिवार

(ब) हडसन बे कम्पनी

(स) प्लाईमाउथ कम्पनी

(द) लंदन कम्पनी

(य) राजकुमार नाविक हेनरी

तीन. व्यंगचित्र

निम्नलिखित विषयों में किसी एक से सम्बन्धित एक व्यंगचित्र बनाइए :—

(ग्र) वृहत् नौसेना की पराजय के बाद स्पेन की दशा

(ब) उत्तरी ध्रुव की बर्फीली चट्टानों की बाधा के कारण उत्तरी-पश्चिमी समुद्री मार्ग के ग्रन्वेषण में विफल एक ग्रंग्रेज ग्रन्वेषक
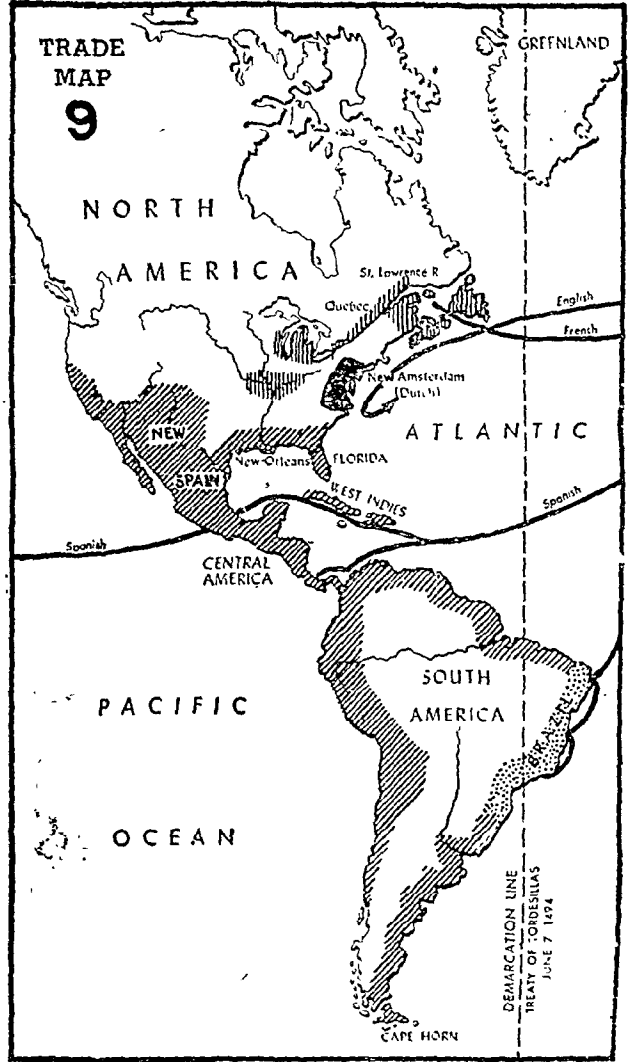
व्यापार नक्शा—९

(स) फ्रांस का उत्तर-ग्रमरीकी महाद्वीप के मध्यभाग का स्वामी होना

(द) स्पेन में ग्रमरीका से सोने ग्रौर चाँदी के ग्रायात के फलस्वरूप भावों में वृद्धि

(य) एक राजा द्वारा ग्रपने देश पर वाणिज्यवाद लादने का प्रयत्न

चार. बस्ती में शोध

साहूकारी ग्रौर वित्त में रुचि रखने वाला कोई विद्यार्थी किसी स्थानीय साहूकार से मिलकर संयुक्त
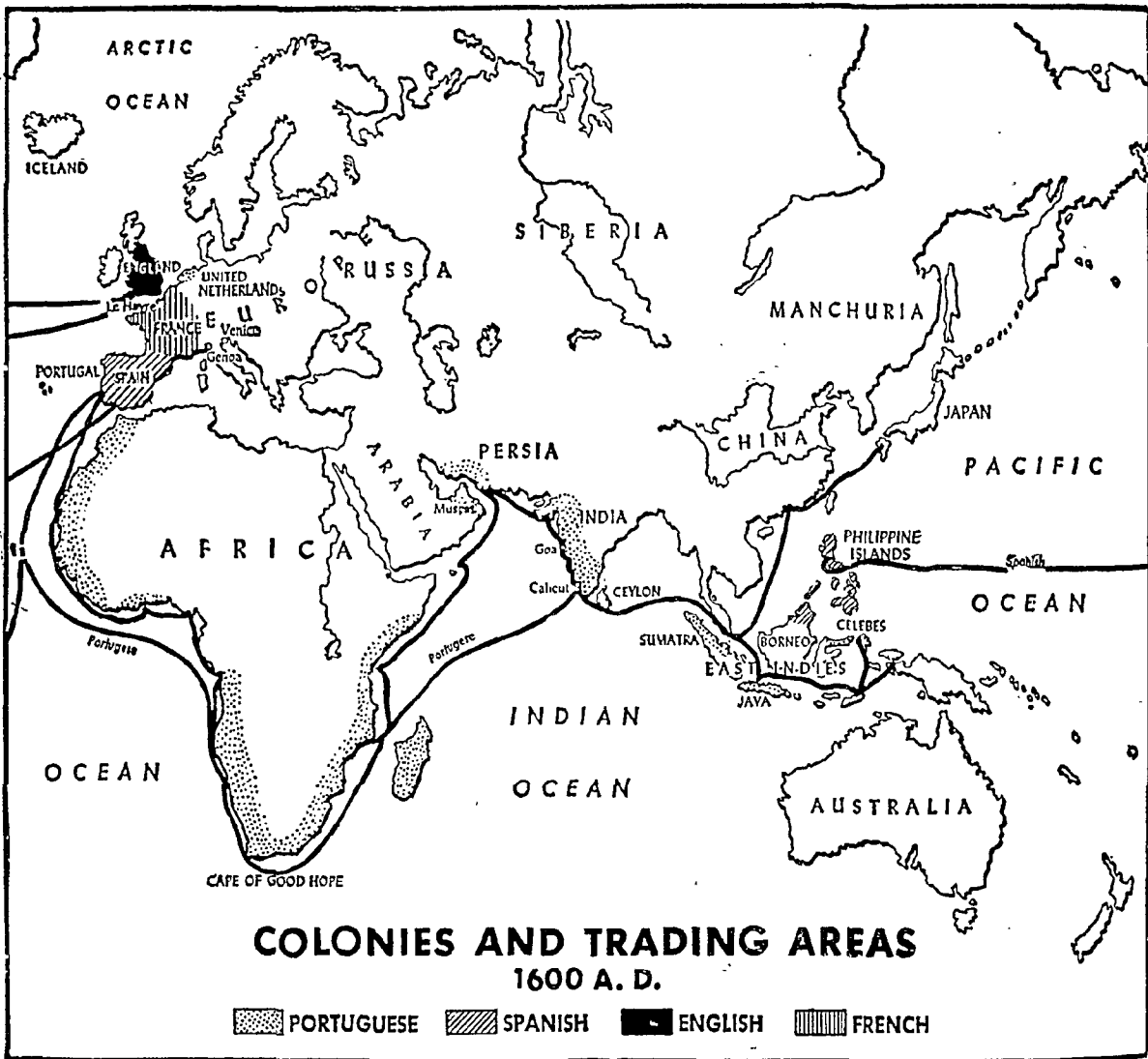
उपनिवेश और व्यापारिक क्षेत्र, सन् १६०० ई०

पूंजी कम्पनी की कार्यविधि का पता लगाये और कक्षा को बतलाए। क्या आपके नगर में ऐसी पूंजी कम्पनियाँ हैं ? मिलने वाले विद्यार्थी को कक्षा द्वारा प्रश्न दे दिये जाएँ, जिससे वह साहूकार से पूरी सूचना प्राप्त कर सके।

पाँच. अभिनय

कोलम्बस के फर्डिनांड और आइसावेला के दरबार में वापस आने या मार्को पोलो के अपने नगर में वापस आने का अभिनय करिए। अभिनय का एक भाग अन्वेषक द्वारा भेंट देने के लिए लायी गयी वस्तुओं का भेंट देना हो।

छः कक्षा-समिति का कार्य

(१) दुनिया का ६" × ४" का मानचित्र बनाने के लिए एक समिति बनाइए। इस पर नयी दुनिया के प्रमुख अन्वेषकों का यात्रा-मार्ग प्रदर्शित हो। विभिन्न यूरोपीय देशों के मार्ग भिन्न-भिन्न रंगों से

दिखाये जाएँ। मार्ग के साथ ही अन्वेषक का नाम लिखा हो। इसी मानचित्र पर प्रत्येक यूरोपीय देश द्वारा अधिकृत प्रदेश भी दिखाये जा सकते हैं। पृ० २५५ पर दिये गये मानचित्र से कुछ सहायता मिल सकती है पर बाद में आये अन्वेषकों के नाम और यात्रा-मार्ग भी दिखलाइए।

(२) एक दूसरी समिति बनाइए जो पुनर्जागरण युग के मानचित्र एकत्रित करे जिनसे उन मानचित्रकारों की उस समय की विश्व के बारे में धारणा ज्ञात हो सके। मानचित्र के बनाये जाने का समय उस पर चिप्पी लगा कर उल्लिखित करिए। मानचित्र को सूचना-पट्ट पर लगा दीजिए।

(३) जहाजों के नमूने बनाने वाले विद्यार्थी कोलम्बस के एक जहाज का भी नमूना बना कर संग्रह में रख लें।
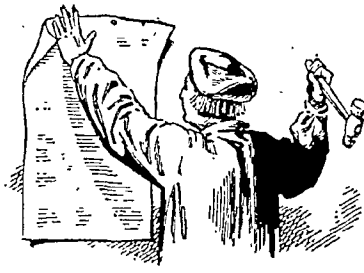
२१ पुनर्जागरण का धर्मों पर प्रभाव

जिन दिनों यूरोप के लोग नए व्यापारिक मार्गों और नए देशों की खोज कर रहे थे, और अपने जगत् का विस्तार कर रहे थे, उन्हीं दिनों ईसाई धर्म के भीतर कुछ नए परिवर्तन दृष्टिगोचर हो रहे थे।

मध्ययुग में चर्च धर्म-विरोधी बातों को समाप्त करने में समर्थ था। पर सोलहवीं शताब्दी में चर्च के कुछ धार्मिक विचारों के विरुद्ध विद्रोह इतना प्रबल हो उठा था कि चर्च उसे दबाने में असमर्थ था। अपने धार्मिक विश्वासों को छोड़ने के स्थान पर विद्रोहियों ने चर्च का परित्याग कर अपने निजी धर्म की स्थापना करना अधिक उचित समझा। यह आन्दोलन प्रोटैस्टैंट क्रान्ति या सुधारक्रान्ति के नाम से मशहूर है।

जान वाइक्लिफ ने चर्च के पादरियों को बाइबिल का अपना अनुवाद दिया।

वैटमैन आर्काइव

धार्मिक सुधार के आर्थिक और राजनीतिक कारण

सोलहवीं शताब्दी में धार्मिक सुधार आने के कई कारण थे। इनमें से पहला कारण था राष्ट्रीय राज्यों और निरंकुश राजतन्त्रों का उत्थान। अनेक शासकों और उनकी प्रजा के लोगों ने अन्तर्राष्ट्रीय ईसाइयत का विरोध किया। वे एक ऐसी ईसाइयत चाहते थे जो किसी विदेशी पोप के प्रति निष्ठावान न हो। नयी राष्ट्रवादी भावना प्रोटैस्टैंट क्रान्ति का एक महत्त्वपूर्ण कारण थी।

वाणिज्य में तीव्र प्रसार, नगरों के विकास और धन में वृद्धि के फलस्वरूप भी चर्च और उसकी शिक्षाओं के प्रति बहुत से लोगों का रुख बदला। चर्च आध्यात्मिक गुणों और पारलौकिक जीवन के लिए तैयारी करने पर बल देता था लेकिन वे लोग जो इस जीवन के धन-धान्य से समृद्ध हो रहे थे, और बहुत से ऐसे लोग जिन्हें धन प्राप्त होने की आशा थी, यह विश्वास करते थे कि ऐहलौकिक जीवन में भी सुख के बहुत से अवसर हैं। व्यापारियों ने कर्ज लेने और सूद पर कर्ज देने के विरुद्ध चर्च के नियमों से अपने को बाधित महसूस किया। समृद्ध होने के साथ-साथ व्यापारियों में स्वतन्त्रता और व्यक्तिवादिता की भावना विकसित होने लगी। उन्होंने सोचा कि यदि वे अपने ही प्रयत्नों से इतना अधिक धन जमा कर सकते हैं तो सम्भवतः बिना

किसी दूसरे की सहायता के ईश्वर के आध्यात्मिक आशीर्वाद भी प्राप्त कर सकते हैं। दूसरों का विश्वास था कि बिना पादरी की सहायता के ही अपने पापों की क्षमा मिल सकती है।

धार्मिक कारण—धार्मिक स्थिति का एक और भाग तत्कालीन विद्वानों द्वारा लिखी जा रही चर्च और उसके क्रिया-कलापों की कटु आलोचनाएँ थीं। मुद्रण यंत्रों के आविष्कार के फलस्वरूप पहले से अधिक लोग पढ़ना सीख गये, चर्च की आलोचना अधिक से अधिक लोगों तक पहुँचने लगी और वे परिलक्षित बुराइयों के प्रति शंकालु होने लगे। निचले स्तर के बहुत से पादरी अज्ञानी थे और अपने पद के उपयुक्त शिक्षा उन्हें नहीं मिली थी। बिशप, मठाधीश और यहाँ तक कि पोप भी प्रायः शान-शौकत और आराम से रहने वाले तथा अपने धार्मिक कर्तव्यों का पालन न करने वाले विषयासक्त व्यक्ति थे। चौदहवीं शती में इंग्लैंड में किसी अज्ञात लेखक द्वारा लिखित "पिएर्स प्लोमैन" नामक प्रसिद्ध कविता में पादरी वर्ग द्वारा कर्तव्य की इस अवहेलना की ओर इंगित किया गया। चर्च के पदों पर नियुक्त बहुत से बिशप अनुष्ठानों को करने के लिए अपने कार्यक्षेत्र में ही कभी नहीं जाते थे। प्रायः ये इटालवी होते थे और इटली में ही रहना अधिक पसंद करते थे लेकिन उन्हें धन जर्मनी, इंग्लैंड या फ्रांस के चर्चों से मिलता था। इसके अतिरिक्त, बहुत से मठाधीश और बिशप राजाओं द्वारा इसलिए नियुक्त किये जाते थे कि वे राजा की नीतियों का समर्थन करेंगे; इसलिए नहीं कि वे ईसाई धर्म की प्रतिष्ठा करेंगे।

कुछ धर्मनिष्ठ लोगों ने कई वर्ष पहले भी चर्च के भीतर सुधारों के लिए आवाज़ उठायी थी। चौदहवीं शताब्दी में जान वाइक्लिफ़ ने इंग्लैंड में पादरी वर्ग के ठाठ-बाट के विरुद्ध उपदेश किया था और उन्होंने अपने आस-पास कुछ ऐसे पादरी एकत्रित किये थे जो सादगी से रहना चाहते थे। बोहेमिया में वाइक्लिफ़ के एक अनुयायी जान हस ने वाइक्लिफ़ की रचनाओं को अनूदित करके वितरित किया और चर्च की जिन गतिविधियों को वह गलत समझता था, उनके विरुद्ध प्रचार करने के कारण उसे जीवित जला दिया गया। मठों में सुधार-आन्दोलन शुरू हुए। फिर महान् विद्वान् इरेस्मस ने भी, जो चर्च से अलग नहीं होना चाहता था, खुले तौर पर चर्च के क्रिया-कलापों में सुधार की आवश्यकता बतलायी। उसका विश्वास था कि चर्च में अंधविश्वास स्थान पाये हुए हैं जिन्हें शिक्षा के जरिए धीरे-धीरे दूर किया जा सकता है।

सोलहवीं शताब्दी के प्रारम्भ में सुधार की अत्यधिक आवश्यकता के बहुत ही स्पष्ट चिह्न थे। लेकिन मेदिची परिवार का पोप लिओ दशम कलाकृतियों के संग्रह और रोम में इमारतें बनवाने में इतना व्यस्त था कि क्षोभ के लक्षणों की ओर उसका ध्यान ही नहीं गया। परिणामतः विद्रोह शुरू हो गया।

१. प्रोटेस्टैंट विद्रोह होने में सहायक कारणों का उल्लेख करिए।

२. चर्च का सुधार करने में निम्नलिखित लोगों का क्या योगदान था ?

जान वाइक्लिफ़, जान हस, इरेस्मस

लूथर के विरोधों के फलस्वरूप नये चर्च का प्रारम्भ

मार्टिन लूथर—सुधार-काल मार्टिन लूथर द्वारा जर्मनी में शुरू हुआ। लूथर एक खान-श्रमिक का पुत्र था लेकिन उसे वकील बनने की शिक्षा मिली थी। लेकिन एक अपराध-भावना से उसका मन परेशान था और अपने माता-पिता की इच्छा के विरुद्ध उसने साधु बनने का निश्चय किया। मठ में मानसिक और आत्मिक शान्ति पाने की आशा में उसने उपवास और प्रार्थना का दृढ़ता से पालन किया। उसे शान्ति मिली लेकिन उस विधि से नहीं। शान्ति उसे इस विचार से मिली कि ईश्वर स्नेहालु पिता है और वह हर विश्वासी व्यक्ति को मुक्ति प्रदान करेगा। लूथर को यह विश्वास भी हुआ कि हर विश्वासी व्यक्ति धर्मग्रन्थ की व्याख्या और उपदेश कर सकता है। लूथर के विचार नये नहीं थे। पहले भी वे व्यक्त हुए थे, पर चर्च ने उनकी निन्दा की थी। लूथर पहला व्यक्ति था जिसके विचारों को इतनी व्यापक स्वीकृति मिली कि फल-

"मार्टिन लूथर" शीर्षक एक आधुनिक चलचित्र में उस संन्यासी को चर्च के अधिकारियों के सम्मुख विचार के लिए उपस्थित दिखाया गया है।

लूई डि रोचमौंट एसोसियेशन

स्वरूप मध्ययुगीन चर्च खंडित हो गया।

रोम में संत पीटर के गिरजाघर को पुनः बनवाने को धन एकत्रित करने के लिए वाइटेनबर्ग में एक साधु अनुग्रह-पत्रों का वितरण कर रहा था। लूथर को इससे विशेष दुःख हुआ। अनुग्रह-पत्र देना नयी बात नहीं थी। चर्च की हमेशा से यह शिक्षा रही थी कि किसी व्यक्ति के अपने पाप के लिए पश्चात्ताप करने और पाप-निवेदन करने के बाद उसे क्षमा मिल जाती है परन्तु नरक में अपने पाप के दण्ड से मुक्ति पाने के लिए प्रायश्चित्त करना जरूरी है। प्रायश्चित्त को तीर्थयात्रा, उपवास, ईश्वर-भजन, चर्च को भेंट या गरीबों को धन-दान का स्वरूप मिल सकता था। लूथर को विश्वास था कि ये अनुग्रह-पत्र प्रदान करना गलत है। लूथर की शिक्षाओं के अनुसार यदि मनुष्य अपने पापों के लिए खेद प्रकट करता है और ईश्वर में विश्वास रखता है तो वह अनुग्रह-पत्रों के बिना भी उसे क्षमा कर देगा। लूथर ने अपनी आपत्तियों को ९५ कथनों के रूप में लैटिन में लिखकर उस समय विश्वविद्यालयों में विचार के लिए विषय प्रस्तुत करने की प्रथा के अनुसार वाइटेनबर्ग के गिरजाघर के दरवाजे पर लगा दिया। १५१७ के प्रसिद्ध "पच्चानवे पूर्वपक्ष" यही हैं और इन्हीं से सुधार-युग की वास्तविक शुरूआत समझनी चाहिए। लूथर ने विद्वानों को शास्त्रार्थ करने की चुनौती दी।

इन अनुग्रह-पत्रों को विद्वानों की चर्चा के लिए छोड़ रखने के स्थान पर किसी ने इनका अनुवाद जर्मन भाषा में कर दिया और इनका व्यापक पैमाने पर वितरण किया। ये सिद्धान्त तत्काल ही अनेक जर्मन राज्यों में उत्तेजनापूर्ण बातचीत के विषय बन गए।

वर्म्स की राज्य परिषद्—लूथर धीरे-धीरे चर्च की शिक्षाओं से दूर हटता गया। बाद में उसने यह माँग की कि पादरियों को उनके विशेषाधिकारों से वंचित कर दिया जाए। उसने कहा कि पादरियों के कर्त्तव्य पुनीत हैं, न कि स्वयं वे। इसके बाद उसने यह भी माँग की कि सामन्त लोग विदेशी पादरियों के चंगुल से देश को छुड़ा लें और चर्च की अपार सम्पत्ति पर कब्जा कर लें। वह चाहता था कि जर्मन

बिशपों की नियुक्ति जर्मन शासकों द्वारा हो और इसमें पोप का कोई हस्तक्षेप न रहे। उसने यह भी कहा कि अगर पादरी लोग चाहें तो उन्हें विवाह करने दिया जाए। इस तरह वह सिर्फ चर्च की रीतियों पर ही नहीं, चर्च के सिद्धान्तों पर भी आघात कर रहा था।

इन आक्रमणों के जवाब में पोप ने लूथर को धर्म-बहिष्कृत कर दिया और सम्राट् ने उसके मामले पर विचार करने के लिए वर्म्स की राज्य-परिषद् की बैठक बुलाई। यह राज्यपरिषद् लोकतांत्रिक संस्था नहीं थी। परिषद् ने लूथर को कानून-बाह्य घोषित किया और उसकी रचनाओं को जलाने का आदेश दिया। पर लोगों ने मुकदमे के इस फ़ैसले पर खास ध्यान नहीं दिया। इसके स्थान पर लूथर की रचनाएँ समूचे जर्मनी में लोकप्रिय हो गईं। कुछ समय तक लूथर के मित्रों ने उसे एक गढ़ी में छिपाए रखा, जहाँ उसने अपना समय बाइबिल का जर्मन भाषा में अनुवाद करने में बिताया।

किसानों की क्रान्ति—लम्बे समय से जर्मनी के किसानों में बेचैनी छाई हुई थी। अब ईश्वर के समक्ष मनुष्यों की समानता के सिद्धान्त का उपदेश देने वाला लूथर आ धमका था। किसानों का विश्वास था कि उसका मतलब धार्मिक स्वतन्त्रता के साथ ही साथ सामाजिक और आर्थिक समानता से भी है। अन्ततः पैसों के रूप में मजदूरी और भूदासप्रथा के उन्मूलन की मांग करते हुए उन्होंने अपने मालिकों के विरुद्ध विद्रोह कर दिया। लूथर हिंसा नहीं चाहता था, इसलिए उसने किसानों से अपने काम पर वापस जाने का अनुरोध किया। जब उन्होंने ऐसा करने से इन्कार किया तब उसने सामन्तों से रक्तपात करके भी इस विद्रोह को कुचलने को कहा। सामन्तों ने उन्हें कुचलने में बहुत निर्दयता दिखाई। इस विद्रोह को कुचलने में अनुमानतः ५०,००० किसानों को मौत के घाट उतारा गया था।

आग्सबर्ग की स्वीकारोक्ति—इतने अधिक जर्मन शासक लूथर के अनुयायी बन गए थे, कि सम्राट् चार्ल्स पंचम ने परिषद् की एक सभा प्रोटैस्टेण्टों के मामले की सुनवाई के लिए आग्सबर्ग में बुलाई। लूथर के एक मित्र ने सुधारवादियों की धार्मिक मान्यताओं को लेखबद्ध किया, इस लेख-पत्र को आग्सबर्ग की स्वीकारोक्ति कहा जाता है।

आग्सबर्ग की धार्मिक सन्धि—मार्टिन लूथर की मृत्यु के नौ वर्ष बाद सन् १५५५ में ही जाकर जर्मनी की धार्मिक समस्याओं पर विचार करने और उनका कोई समाधान निकालने के लिए दुबारा प्रयत्न किया गया। उस साल आग्सबर्ग में परिषद् की बैठक ने **आग्सबर्ग की धार्मिक शान्ति** की घोषणा की जिसमें निम्न बातों पर सहमति प्रकट की गई: (१) जर्मनी के हर राज्य के शासक को ही यह निश्चित करना था कि उसका राज्य कैथोलिक सम्प्रदाय का रहेगा या लूथेरन, जैसाकि लूथर के अनुयायियों को कहा जाने लगा था। उस राज्य की समस्त प्रजा को शासक के चुनाव को या तो मानना था या राज्य को छोड़कर चले जाना था। (२) लूथेरन बनने पर पादरी अपने कब्जे की चर्च की जमीन को छोड़ देगा। इस तरह जर्मनी में धार्मिक सहिष्णुता सीमित मात्रा में ही थी, क्योंकि लूथेरन को छोड़कर किसी दूसरे प्रोटैस्टैण्ट मत की अनुमति नहीं थी और कैथोलिक और लूथेरन दोनों तरह के शासक अपनी प्रजा को शासक के धर्म को मानने को बाध्य कर सकते थे।

जर्मनी के उत्तरी राज्यों ने इस नए मत को आम तौर से मान लिया। लूथरवाद वहाँ से डेन्मार्क, नार्वे और स्वीडेन में फैला। दूसरी ओर दक्षिणी जर्मनी के राज्य मध्यकालीन चर्च के प्रति निष्ठावान बने रहे।

१. मध्ययुगीन चर्च से अलग होने के पहले लूथर के जीवन की झाँकी प्रस्तुत करो।
२. सुधारवाद का प्रारम्भ किस घटना और किस तिथि से माना जाता है ?
३. चर्च की शिक्षाओं की लूथेरनों द्वारा क्या आलोचनाएँ की जाती थीं ?
४. लूथर की शिक्षाओं ने किसानों के विद्रोह को कैसे उभाड़ा ?

५. आग्सबर्ग की धार्मिक शान्ति में कौन सी बातें थीं?

स्विट्जरलैंड में काल्विनवाद का प्रारम्भ यूलरिख़ ज़्विंगली

स्विट्जरलैंड में इस काल का सबसे पहला धार्मिक सुधारक यूलरिख़ ज़्विंगली था, जो जितना बड़ा धार्मिक सुधारक था, उतना ही बड़ा राजनीतिक सुधारक भी था। ज़्विंगली ने पोप प्रणाली पर आक्षेप किया और कहा कि धर्मानुकूल जीवन-यापन का मार्गदर्शक चर्च नहीं है, बल्कि बाइबिल है। ज़ूरिख़ कैथेड्रल में धर्मोपदेशक की हैसियत से उसने अपने तमाम अनुयायी बना लिए। एक धार्मिक संघर्ष में ज़्विंगली को मार डाला गया।

काल्विनवाद—इसके कुछ ही समय बाद जान काल्विन स्विट्जरलैंड पहुँचा। उसको राजा ने फ्रांस से निकाल भगाया था जो इस बात पर कमर कसे था कि वह अपने देश को उन सभी लोगों से निष्कंटक कर देगा जो रोमन कैथोलिक सम्प्रदाय के प्रति निष्ठावान् नहीं थे। स्विट्जरलैंड में काल्विन ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ **इन्स्टीट्यूट्स आफ क्रिश्चियन रिलिजन** (ईसाई धर्म की रीतियाँ) को लिखा। इस पुस्तक में उसने अपने धार्मिक विचार को रखा था, जिनका दूसरे प्रोटैस्टैंट सम्प्रदायों पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ा। काल्विनवाद दूसरे देशों में फैला। स्काटलैंड में काल्विनवादियों को प्रेसबीटीरियन कहा जाने लगा। फ्रांस में काल्विन के अनुयायियों को ह्यूगनाट कहा जाता था। इंग्लैंड में आगे चलकर काल्विन की धार्मिक शिक्षाओं पर प्यूरिटनों ने अमल किया।

काल्विनवादियों के लिए मुक्ति का एकमात्र उपाय थी बाइबिल। अपने समस्त रूपों में काल्विनवाद एक नितान्त सादा धर्म था, क्योंकि हर तरह की विलासिता इस धर्म में वर्जित थी और गिरजे बिल्कुल सादे रखे जाते थे। प्रार्थना की व्यवस्था बहुत सादी थी। नाच, बहुत खर्चीले पैमाने पर भोज, और वेश-भूषा में विलासिता को बुरा माना जाता

जान काल्विन को अपनी बुद्धि और विशद ज्ञान के कारण यूरोप के बढ़ते हुए व्यापारी वर्ग को इतना प्रभावित करने का अवसर मिला।

था। इतवार का दिन सिर्फ धर्म के लिए ही सुरक्षित रखा जाता था। दिन का अधिकांश भाग गिरजे में ही बिताना होता था।

नान्तेज का फर्मान—फ्रांसीसी राजे बार-बार ह्यूगनाटों का बिल्कुल सफाया करने की कोशिश करते रहे, लेकिन वे इसमें पूर्णतया सफल नहीं हो सके। हेनरी चतुर्थ फ्रांस की गद्दी पर बैठा। उसने ऐसा महसूस किया कि एक कैथोलिक देश का शासन करने के लिए उसे भी कैथोलिक बनना पड़ेगा। दूसरे शब्दों में फ्रांस का शासन करने के लिए हेनरी कैथोलिक सम्प्रदाय की सामूहिक प्रार्थना में सम्मिलित होने को तैयार था। कहा जाता है कि उसने यह उद्गार प्रकट किया था कि 'पेरिस के लिए कैथोलिक पूजा-समारोह में भी जाया जा सकता है।' पर यद्यपि वह खुद कैथोलिक बन गया लेकिन वह अपने प्रोटैस्टैंट मित्रों और अनुयायियों को नहीं भूला। दूसरी ओर, धर्म के मसले को लेकर फ्रांस में होने वाले रक्तपात को खत्म करने का उसने इरादा किया। इसके अनुसार, उसने सन् १५९८ में नान्तेज़ का फर्मान जारी किया, जो आधुनिक जगत् में धार्मिक सहिष्णुता का पहला फर्मान था। इसमें प्रमुख रूप से निम्न बातों की व्यवस्था की गई थी: (१) पेरिस और कुछ दूसरे बड़े नगरों को छोड़कर ह्यूगनाट ,जहाँ कहीं भी चाहें, वहाँ

उन्हें पूजा करने की छूट है। (२) वे सभाएँ कर सकते हैं और सबसे बड़ी बात यह कि उन्हें वे ही राजनीतिक सुविधाएँ प्राप्त रहेंगी जो कैथोलिकों को प्राप्त हैं। (३) उन्हें दो सौ किलाबन्द (दीवारों से सुरक्षित) नगर आठ साल के लिए दिए गए।

नान्तेज के फर्मान के बाद लगभग सौ साल तक फ्रांस में धार्मिक सहिष्णुता बनी रही। पर शेष यूरोप में धर्म के बारे में धार्मिक असहिष्णुता एक आम सी बात हो गई थी।

१. अपने शब्दों में बताओ कि सुधारवाद को चलाने में निम्न लोगों में से हर एक का क्या महत्त्व है : यूलरिख तिस्वगली, जान काल्विन, हेनरी चतुर्थ।
२. काल्विनवाद की कुछ प्रमुख विशेषताओं का उल्लेख करो।
३. नान्तेज के फर्मान की तिथि बताओ और यह भी बताओ कि इसमें किन बातों की व्यवस्था की गई थी।

बेटीमैन आर्काइव

ऐरागन की कैथरीन अपने पक्ष की वकालत हेनरी अष्टम के सम्मुख कर रही है और कार्डिनल वूलसी इसे देख रहा है।

इंग्लैंड के चर्च ने पोप की शक्ति का जुआ उतार फेंका

इंग्लैंड में सुधारवाद के समय में पोप और मध्यकालीन चर्च की रीतियों के विरुद्ध बहुतेरी शक्तियाँ काम कर रही थीं। लोग बाइबिल की शिक्षाओं को नहीं भूले थे। **'पियर्स प्लोमैन'** और **'द कैंटरबरी टेल्स'** जैसी कृतियों ने, जिनमें कुछ पादरियों का चित्रण किया गया था, समाज पर अपना प्रभाव डाला था। सन् १५२८ में एक पुस्तक लिखी गई थी जिसमें पादरियों को लोभी सिद्ध किया गया था और चर्च के द्वारा अधिकृत बहुत सारी भूमि का हवाला देते हुए कहा गया था कि उन्होंने इंग्लैंड के एक-तिहाई राज्य को हथिया रखा है। इंग्लैंड में पोप के हस्तक्षेप से इतना अधिक असंतोष व्याप्त था कि सन् १३५१ में ही पोप को इंग्लैंड में चर्च के पदों पर नियुक्तियाँ करने की मनाही करने का एक आदेश जारी किया गया था। इस तरह इंग्लैंड सुधार के लिए परिपक्व हो चुका था और जब एक राजा ने अपने मनचाहे ढंग से कुछ भी करने के अधिकार पर जोर दिया तब तीर छूट गया।

हेनरी अष्टम (१५०९-१५४७), जो उस समय इंग्लैंड का शासन कर रहा था, ट्यूडर परिवार का था। इंग्लैंड के अधिकांश राजवंश विदेशों से आए हैं, पर ट्यूडर लोग इंग्लैंड के ही रहने वाले थे। इसके अलावा वे बहुत देशभक्त थे, और अंग्रेज लोग राजा के प्रति भक्ति-भावना रखते थे।

हेनरी अष्टम ने चर्च के कानून के विरुद्ध अपने भाई की विधवा कैथरीन आफ ऐरागन से विवाह किया था। लेकिन पोप ने उसे इस बात के लिए विशेष रूप से छूट दी थी, अर्थात् इस विषय में चर्च के कानून को उसने दरकिनार कर दिया था। अब हेनरी उसे तलाक देना चाहता था और पोप ने इस बात की अनुमति देने से इन्कार कर दिया था। चर्च तलाक के लिए अनुमति नहीं दिया करता था, लेकिन हेनरी ने सोचा कि अगर उससे विवाह करने के लिए एक कानून को दरकिनार किया जा सकता

है तो तलाक देने के लिए एक दूसरे कानून को भी दरकिनार किया जा सकता है। पोप हीले-हवाले करता रहा। इसका कारण कुछ तो यह था कि हेनरी की पत्नी स्पेन के चार्ल्स पंचम की नजदीकी रिश्तेदार लगती थी, जिसे पोप नाराज़ नहीं करना चाहता था। इसके अलावा, यदि पोप हेनरी के आवेदन को मान लेता तो ऐसा करके वह उस विशेष आदेश को ही रद्द करता जिसे उसने हेनरी को कैथरीन से विवाह करने के लिए दिया था। हेनरी तलाक देने पर उतारू था। वह एक लड़की से विवाह करना चाहता था जिससे उसे पुत्र के जन्म की आशा थी।

इंग्लैंड की पार्लमैंट इंग्लैंड से पोप के अधिकार को उखाड़ फेंकने के लिए इच्छुक थी, इसलिए उसने हेनरी के अनुरोध पर एक कानून बनाया जिसमें पोप को किसी तरह का धन देने की मनाही की गई थी। साथ ही, इंग्लैंड की अदालतों की कोई अपील पोप के यहाँ अब नहीं होनी थी। राजा को ही सभी बिशपों को नामांकित करना था। इसके बाद हेनरी इससे भी एक कदम आगे बढ़ा और उसने पार्लमैंट से एक कानून पारित कराया जिससे वह इंग्लैंड के चर्च का प्रधान बन गया। इस तरह इंग्लैंड का चर्च पोप के प्रभाव से बिलकुल अलग हो गया।

हेनरी अपने को एक नेक कैथोलिक समझता था और चर्च की प्रार्थनाएँ यथापूर्व चलती रहीं। अधिकांश पादरियों ने हेनरी से लगाव की शपथ ग्रहण की लेकिन कुछ ने ऐसा करने से इन्कार कर दिया।

चूंकि हेनरी को मठों की सम्पत्ति का लोभ था, इसलिए उसने उनकी जाँच-पड़ताल करने और उनकी त्रुटियों का पता लगाने को अपने एजेण्ट भेजे। फिर हेनरी को बहाना मिल गया और उसने निर्लज्जतापूर्वक हर मूल्यवान चीज को, यहाँ तक कि छाजन पर काम आने वाले सीसे तक को, जब्त कर लिया। मठों के खात्मे का इंग्लैंड पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ा। स्कूल और अस्पताल, जिन्हें संन्यासी और संन्यासिनें चलाती थीं, बन्द हो गये। यात्रियों को रात को ठहरने को जगह मिलना दूभर हो गया; इस बर्बादी का एक इससे भी बुरा प्रभाव पड़ा, वह था बेकारों की संख्या में वृद्धि। हजारों संन्यासियों को काम की तलाश थी और साथ ही काम की तलाश उन हजारों किसानों को भी थी जो चर्च की जमीन पर खेती करते थे, क्योंकि जिन लोगों ने इन जमीनों को लिया, वे इनका उपयोग भेड़ें पालने के लिए करने लगे और अब उन किसानों की कोई ज़रूरत नहीं थी जो उन पर खेती करते आए थे।

हेनरी बहुत जल्द ही अपनी दूसरी पत्नी ऐनी बोलीन से ऊब गया, जिसने पुत्र के स्थान पर एलिजाबेथ नामक पुत्री को जन्म दिया था। हेनरी ने अपनी पत्नी पर राजद्रोह का अपराध लगाया और उसका सिर उतरवा लिया। हेनरी की तीसरी पत्नी से एक पुत्र उत्पन्न हुआ, जो एडवर्ड षष्ठ (१५४७-१५५३) के नाम से उसका उत्तराधिकारी बना।

एडवर्ड षष्ठ—जब एडवर्ड के पिता का देहान्त हुआ, तब वह अभी बिलकुल बच्चा था, इसलिए असल में शासन दरबार के पुराने लोगों के हाथ में आ गया। इसी बीच काल्विनवादी सिद्धान्त इंग्लैंड में फैल गए थे और वहाँ के चर्च को प्रभावित कर चुके थे। अनेक मठों को लूट लिया गया था। गिरजाघरों से प्रतिमाओं और खिड़कियों के सुन्दर रंगीन शीशों को निकाल लिया गया। प्रार्थनाएँ लैटिन के स्थान पर अंग्रेजी में होने लगीं और मध्यकाल के चर्च की अनेक रीतियों को समाप्त कर दिया गया। चर्च की इमारतों और प्रार्थनाओं, दोनों को बहुत सादा बना दिया गया। पहली **'बुक आफ कामन प्रेयर'** (कीर्तन पुस्तिका) सन् १५४९ में इंग्लैंड में प्रचलित पुरानी प्रार्थना पुस्तिका के आधार पर बनी। इसमें कुछ अंशों को छोड़ दिया गया और शेष को अंग्रेजी में उल्था किया गया था।

मेरी ट्यूडर—एडवर्ड छह वर्ष तक राज्य करने के बाद मर गया और सिंहासन मेरी के हाथ में आ गया जो रिश्ते में उसकी बहन लगती थी। मेरी (१५५३-१५५८) कट्टर रोमन कैथोलिक थी। उसका विवाह स्पेन के फिलिप द्वितीय से हुआ था, जो यूरोप में कैथोलिक सम्प्रदाय का बहुत बड़ा

समर्थक था। मेरी ने सुधारकों के सारे किये-कराये को खत्म कर देने का निश्चय किया। उसने पार्लमेंट को पुनः पोप को मानने के लिए बाध्य किया। ऐसे हर आदमी को, जिसने मध्ययुगीन चर्च के नियमों और पोप की सर्वश्रेष्ठता को नहीं स्वीकार किया, यातना दी गई। अनेक असाधारण बिशपों को प्राणदण्ड दिया गया। मेरी के कारनामे इतने कठोर थे कि इतिहास में तबसे आज तक वह 'खूनी मेरी' के नाम से मशहूर है। अधिकांश अंग्रेज रोमन कैथोलिक चर्च की ओर मुड़ने के इच्छुक नहीं थे, और मेरी की मृत्यु के बाद उसका किया कराया सब खत्म हो गया।

बिशप लैटिमर को प्रोटेस्टैण्ट सम्प्रदाय के प्रति अपनी भक्ति-भावना के कारण तख्ते से बाँधकर जला दिया गया। अपने एक शहीद मित्र से उसने कहा, "धीरज धरो, मास्टर रिडले, और कुछ मर्दानगी दिखाओ। ईश्वर की कृपा से, हम लोग आज के दिन एक ऐसा चिराग जलाएंगे जो, जहाँ तक मुझे विश्वास है, कभी बुझने नहीं पायेगा।"

एलिजाबेथ—अब हेनरी द्वितीय की पुत्री एलिजाबेथ (१५५८-१६०३) गद्दी पर बैठी। अभी तक धार्मिक मसला सुलझा नहीं था। एलिजाबेथ एक शक्तिशाली महिला थी और दूसरे सभी ट्यूडरों की तरह अपने मनमाने ढंग से बरतना चाहती थी। लेकिन उसने अपने पिता और बहन मेरी की नृशंसता के बेतुकेपन को भाँप लिया था। एलिजाबेथ चाहती थी कि चर्च के उपदेश इतने व्यापक हों कि इंग्लैंड में प्रचलित विभिन्न तरह के विचार इसमें समाहित हो सकें, लेकिन वह सहिष्णु कदापि नहीं थी। उसके समय में हर आदमी से यह आशा की जाती थी कि वह इंग्लैंड के धार्मिक विश्वासों को मानेगा। चर्च इस समय रोमन कैथोलिक और लूथेरन सम्प्रदाय का मध्यवर्ती था। इसमें सेक्रामेंट (धार्मिक कृत्य) और बिशपों, पादरियों तथा डीकनों (पादरी के बाद तीसरे दर्जे के धर्माधिकारी) के अधिकार रखे गये थे। जो भी हो, प्रार्थना जनता की भाषा में होती थी और मध्ययुगीन चर्च की अनेक रीतियाँ खत्म कर दी गई थीं। पोप ने एलिजाबेथ को धर्म-बहिष्कृत कर दिया। पर उसके लिए पोप की उपेक्षा करना आसान था, क्योंकि मेरी की अतियों ने लोगों को नाराज़ कर दिया था। पोप की कार्यवाहियाँ इंग्लैंड के चर्च को उसके अधीन नहीं कर सकीं।

इन दिनों एलिजाबेथ की हत्या के षड्यन्त्र रचे गए। कुछ ऐसे पत्र पाए गए जिनसे पता चला कि स्पेन का फिलिप द्वितीय, एलिजाबेथ की चचेरी बहन और स्काटलैंड की रानी मेरी स्टुअर्ट के साथ इंग्लैंड को एलिजाबेथ से मुक्त करने के लिए षड्यन्त्र कर रहा था। जब इंग्लैंड पर स्पेनी सेना द्वारा हमला करने की योजना सामने आई, तब एलिजाबेथ के सलाहकारों ने उससे मेरी से छुटकारा पाने का अनुरोध किया। इतना ही काफी था। एलिजाबेथ ने उसके प्राणदण्ड के आज्ञापत्र पर हस्ताक्षर कर दिया। मेरी के अपराध के सम्बन्ध में तब से आजतक लोगों की राय भिन्न-भिन्न है। पर उसने एक बेकार बात के लिए अपना प्राण गँवाया, क्योंकि इंग्लैंड का चर्च फिर पोप के अधीन नहीं हो पाया।

१. उन प्रमुख शक्तियों का नाम गिनाओ जो इंग्लैंड में सुधारवाद को लाने के लिए क्रियाशील थीं।
२. सुधारवाद के युग में इंग्लैंड में किस परिवार का राज्य था ?
३. हेनरी अष्टम के पोप के साथ झगड़े की कहानी बताओ।
४. 'विशेष आदेश' से क्या तात्पर्य है ?
५. इंग्लैंड के ऊपर मठों की समाप्ति का क्या प्रभाव पड़ा ?

६. एडवर्ड षष्ठ के शासनकाल में इंग्लैंड के चर्च में परिवर्तन कैसे हुआ ?
७. मेरी ट्यूडर को 'खूनी मेरी' क्यों कहा जाता था ?
८. एलिजाबेथ के शासनकाल में धार्मिक मसले का क्या निदान निकाला गया ?
९. एलिजाबेथ के शासनकाल में मेरी स्टुअर्ट और फिलिप द्वितीय ने क्या भूमिका प्रस्तुत की ?

रोमन कैथोलिक चर्च में सुधार

पोपों का सुधार—पुनर्जागरण काल के पोप सुसंस्कृत और सुशिक्षित व्यक्ति थे जो पुनर्जागरण द्वारा अनुप्राणित नई कलाओं और नए ज्ञान के प्रशंसक थे। उनका मस्तिष्क इन्हीं बातों से भरा रहता था और वे अपने आध्यात्मिक कर्त्तव्यों की ओर बहुत कम ध्यान देते थे। सन् १५३४ में एक सुधारक पोप बना। उसके अनुगामी बहुत से चरित्रवान् और पवित्र जीवन बिताने वाले लोग थे जो चर्च की उन बुराइयों को दूर करने पर लग गए, जिन पर प्रोटैस्टैंट आपत्ति करते थे। पोपों के अलावा भी अनेक निष्ठावान् रोमन कैथोलिक ऐसे थे जिनका विश्वास था कि चर्च में सुधार की आवश्यकता है।

ट्रैण्ट की परिषद्—सुधार लाने के लिए सन् १५४५ में इटली के ट्रैण्ट नामक स्थान में चर्च की एक परिषद् बुलाई गई। इसकी बैठकें बीच-बीच में अट्ठारह साल तक होती रहीं। इस परिषद् ने मध्यकालीन चर्च के मुख्य उपदेशों की पुष्टि की : (१) पोप चर्च का प्रधान है और सभी सिद्धान्तों का अन्तिम व्याख्याता है। (२) धर्मग्रन्थों का अर्थ लगाने का अधिकार सिर्फ चर्च को ही है। (३) कैथोलिकों की आधिकारिक बाइबिल लैटिन भाषा की एक नई बाइबिल होगी जिसका नाम वल्गेट संस्करण रहेगा।

परिषद् ने अपने पुराने विश्वासों की पुनः पुष्टि ही नहीं की, बल्कि इसने कुछ सुधार भी किए : (१) चर्च के पदों की बिक्री की भर्त्सना की गई। (२) बिशप अपने हल्के में ही रहेंगे और अपने पद से सम्बन्धित कर्त्तव्यों का निर्वाह करेंगे। (३) ऐसे स्कूलों की स्थापना की जाएगी जहाँ पादरियों को विधिवत् प्रशिक्षित किया जाएगा। (४) जब तब जनता की भाषा में भी धर्मोपदेश होंगे।

जेसुइट—सुधार का दूसरा दौर था अनेक नए धार्मिक पन्थों की स्थापना। इनमें सबसे महत्त्वपूर्ण पंथ जेसुइट का था। इसकी स्थापना एक स्पेनी सिपाही इग्नैशियस लायला ने की थी, जो युद्ध में घायल हुआ था। यह पंथ कई अर्थों में बहुत कठोर था और इसका प्रशिक्षण बहुत लम्बा और कठिन था। जब उनका प्रशिक्षण समाप्त हो जाता था, तब लोगों को कठिन काम करने को भेजा जाता था। कुछ ने स्कूलों की स्थापना की जो अपने समय में यूरोप के सबसे अच्छे स्कूल थे। दूसरे प्रोटैस्टैण्ट देशों में जाकर पुनः लोगों को रोमन कैथोलिक सम्प्रदाय की ओर मोड़ने का प्रयत्न करते थे। दूसरे कुछ लम्बी और कठिन यात्राओं पर निकलते थे और जो लोग ईसाई नहीं होते थे, उन्हें ईसाई बनाने की कोशिश करते थे। इन बहादुर लोगों में से ही जेक्युअस मार्क्वेत थे जिन्होंने मिसीसिपी घाटी के ऊपरी भाग की खोज थी की और वहाँ के अमरीकी आदिवासियों को ईसाई बनाया था। दूसरे

जेनेवा में बना सुधार आन्दोलन के स्मारक का एक अंश जिसमें चार धार्मिक नेताओं—काल्विन, फेरेल, डि बिजा और नाक्स को दिखाया गया है।
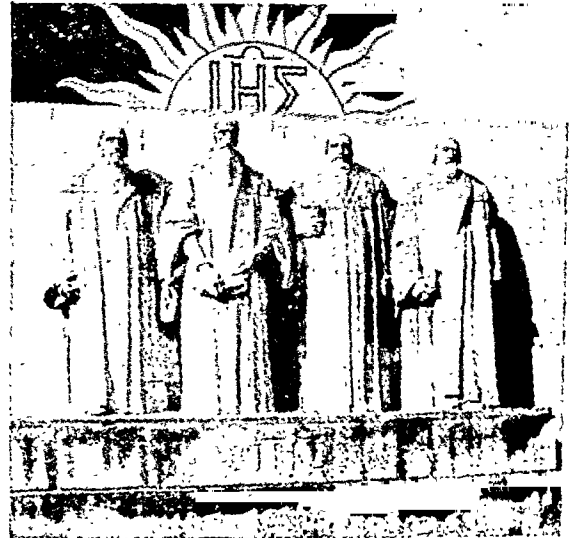
थे फ्रान्सिस जेवियर जो ईसाइयत को जापान ले गए।

बाद के संघर्ष—यद्यपि सुधारवाद का दौर सिर्फ सोलहवीं शताब्दी में ही रहा, लेकिन इसका प्रभाव बाद में भी बना रहा। पोप के अधिकार के प्रति विद्रोह ने उन लोगों को प्रेरित कर दिया जो इससे भी अधिक व्यापक धार्मिक स्वतन्त्रता प्राप्त करना चाहते थे। सन् १५५५ में आग्सबर्ग की संधि ने जर्मनी में काल्विनवादियों के अधिकारों को नहीं स्वीकार किया था। न ही इसने इस समस्या को तय किया था कि यदि कोई शासक लूथेरन हो जाए तो चर्च की भूमि और पादरियों का क्या हो। इन हल न हो सके मसलों के कारण जर्मनी में सन् १६१८ में एक धार्मिक युद्ध छिड़ गया। यह युद्ध सन् १६४८ तक चलता रहा और तीस-वर्षीय युद्ध के नाम से मशहूर है। वेस्टफेलिया के समझौते में, जिसके द्वारा युद्ध समाप्त हुआ, काल्विनवादियों को कैथोलिकों और लूथेरनों के समान अधिकार दिए गए। फ्राँस में कैथोलिकों और ह्यूगनाटों के बीच पूरी सत्रहवीं शताब्दी में संघर्ष चलता रहा, जब कि नान्तेज के फर्मान के सन् १६८५ में रद्द होने के साथ ह्यूगनाटों को अपनी स्वतन्त्रता से हाथ धोना पड़ा। इस दुःखद झगड़े में दोनों पक्षों के लोग अपने धार्मिक विश्वासों के प्रति निष्ठावान् थे। वे ऐसा महसूस करते थे कि वे अपने को गलत प्रतीत होने वाले दूसरे धर्म का सफाया करने में सहायक होकर ईश्वर और धर्मनिष्ठता के प्रति अपना फर्ज पूरा कर रहे हैं।

सोलहवीं शताब्दी के अन्त के साथ पुनर्जागरण और सुधारवाद के युग का अन्त हो गया। यह जीवट और आत्माभिव्यक्ति से भरपूर युग था। जिस भौतिक जगत् में लोग रहते थे और जिसमें वे सोचते-विचारते थे, उन दोनों की सीमाओं को अधिकाधिक पीछे को ठेल दिया गया था। अब मनुष्य के सोचने पर कोई सीमा नहीं रह गई थी। वह जीवन के सभी पहलुओं में प्रयोग करने को स्वतन्त्र था। वह धरती का अन्वेषण करने लगा था ताकि इसका हर कोना उसके लिए खुल जाए। इन सालों में आधुनिक दुनिया में सुख और आत्म-विकास की खोज के लिए बहुत महान् सम्भावनाएँ तैयार की गईं। आओ देखें कि इनका उपयोग किन रूपों में हुआ।

१. ट्रेण्ट की परिषद् क्यों बुलाई गई?
२. परिषद् ने किन उपदेशों की पुष्टि की?
३. ट्रेण्ट की परिषद् ने क्या सुधार किए?
४. जेसुइट पन्थ की स्थापना किसने की? वे किस तरह के काम करते थे?
५. कम-से-कम आंशिक रूप से ही, धर्म के मसले को लेकर कौन से युद्ध हुए?
६. नान्तेज़ का फर्मान क्या था? इसका पुनः प्रयोग कब किया गया?

विचार-विमर्श के लिए प्रश्न

१. प्रोटेस्टैण्ट क्रान्ति के कारण धार्मिक के साथ ही साथ राजनीतिक और आर्थिक भी थे। क्या तुम्हारे विचार में राजनीतिक और आर्थिक परिस्थितियाँ आम तौर से सामाजिक स्थितियों को प्रभावित करती हैं? क्या तुम इसके दूसरे उदाहरण भी गिना सकते हो?

२. एक देश में विभिन्न भाषाएँ, जैसे स्विट्ज़रलैंड में तीन भाषाएँ, क्यों बोली जाती हैं जो प्रायः देश की एकता के लिए घातक हुआ करती हैं?

३. तुम्हारे देश के प्रोटैस्टैण्ट सम्प्रदाय एक दूसरे से किन अर्थों में भिन्न हैं? वे किन बातों में एक दूसरे से मिलते-जुलते हैं?

४. आग्सबर्ग की सन्धि क्यों एक बुरी सन्धि थी?

५. क्या दुनिया में ऐसे देश हैं जहाँ आज भी धार्मिक असहिष्णुता उतनी ही तीव्र है, जितनी यूरोप के अधिकांश भाग में सोलहवीं शताब्दी में थी?

६. जब हेनरी अष्टम गद्दी पर बैठा तो इंग्लैंड के लोगों ने खुशियाँ मनाईं क्योंकि जनता उसे प्यार करती थी। जब वह मरा तो लोगों ने उससे छुटकारा पाने पर भी खुशियाँ मनाईं। तुम्हारे विचार से इस परिवर्तन का कारण क्या था?

७. एलिजाबेथ प्रथम इतिहास में "नेक रानी बेस" के नाम से क्यों प्रसिद्ध है?

६. लोकतंत्र की दिशा में बढ़ते कदम

यूरोप में नए मध्यम वर्ग—व्यापारियों और व्यवसायियों—के कारण पुनर्जागरण काल में जनता की स्वतंत्रता की दिशा में नई प्रगतियां हुईं।

पुनर्जागरण काल में मानव इतिहास के दूसरे कालों की ही तरह मानव स्वतंत्रता और स्वाधीनता की दिशा में लोग दो कदम आगे चलते थे तो एक कदम पीछे हटना पड़ता था।

इंग्लैंड में भूदास प्रथा के पूर्ण लोप से बहुत बड़ा लाभ हुआ। इसी तरह राजाओं के उत्थान से भी बहुत लाभ हुआ। राजा सामन्तों की अपेक्षा कम शक्तिशाली थे और सामन्त अपने वैसलों और सर्फों (भूदासों) के प्रति जितने निष्ठुर हुआ करते थे, राजा उनकी अपेक्षा प्रायः कम निर्दय हुआ करते थे।

ज्यों-ज्यों नगर और कस्बे बढ़ते गए, ये अपनी सरकारों के लिये अधिक महत्त्वपूर्ण होते गए, क्योंकि इनके पास राजाओं को देने के लिए धन था। इनमें से अनेक नगर, खासकर उत्तरी इटली में, स्वशासित गणतंत्र बन गए।

सुधारवाद ने जनता में विचार-स्वातन्त्र्य की भावना पैदा की। नान्तेज के फ़र्मान ने फ्रान्स के ह्यूगनाटों को कुछ धार्मिक स्वतन्त्रता प्रदान की।

इतिहास के उपकरणों का प्रयोग

एक. क्या तुम निम्न शब्दों की व्याख्या कर सकते हो ?

आग्सबर्ग की स्वीकारोक्ति···ग्राम कीर्तन की पुस्तिका···नान्तेज का फर्मान···जर्मन राज्य परिषद्···ह्यूगनाट···पच्चानवे कथन···अनुग्रह पत्र-पच्चानवे पूर्वपक्ष···पोप का विशेष आदेश (बुल)···आग्सबर्ग की संधि···वेस्टफैलिया की सन्धि···प्रायश्चित्त···प्रोटेस्टैण्ट क्रान्ति···सुधारवाद···वल्गेट।

२. क्या तुम्हें ये तिथियां याद हैं ?

१४६०, १५१७, १५६८, १६१८–१६४८, १६८५।

३. मानचित्र पर ये स्थान दिखाओ :

आग्सबर्ग···बोहेमिया···डेन्मार्क··· जापान···

६. जीवन-निर्वाह की प्रगति के चरण

मध्ययुग की कठिनाइयों से अनेक वर्षों के दौरान धीरे-धीरे इतिहास के सबसे उज्जवल युग का विकास हुआ जिसे पुनर्जागरण का युग कहते हैं।

विज्ञान और आविष्कार में प्रगति
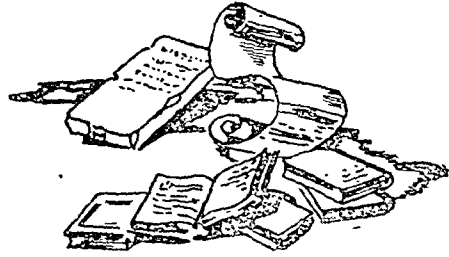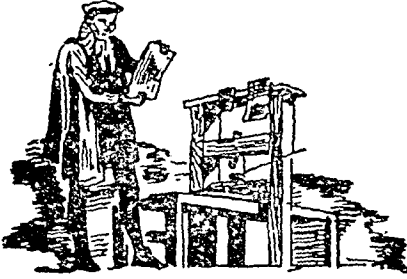
रोजर बेकन, कौपर्निकस और गैलीलियो जैसे कुछ वैज्ञानिक प्रतिभासम्पन्न लोग भौतिक जगत् में सत्य की खोज करने लगे। पुनर्जागरण काल के इन लोगों ने जिन सिद्धान्तों को गढ़ा, उनसे उस समय की दुनिया को बहुत लाभ हुआ और उनके आधार पर बाद में चलकर अनेक आधुनिक आविष्कार हुए।

मनुष्य के सबसे व्यापक प्रभाव रखने वाले आविष्कारों में से एक था छापाखाने का आविष्कार।

मिसीसिपी नदी···नार्वे—स्काटलैण्ड···स्वीडन··· स्विट्ज़रलैण्ड ··· ट्रेण्ट ··· वेस्टफैलिया ··· विटेन-बर्ग···

४. क्या तुम बता सकते हो कि ये लोग कौन थे ?

ऐनी बोलीन···कैथरीन आफ ऐरागन···चार्ल्स पंचम···एडवर्ड षष्ठ···फ्रान्स का हेनरी चतुर्थ··· इंग्लैंड का हेनरी अष्टम···जान काल्विन···जान हस···लिओ दशम···इग्नैशियस लायला...मार्टिन लूथर···मार्क्वेत···स्काटलैण्ड की रानी मेरी···मेरी ट्यूडर···फिलिप द्वितीय···जान वाइक्लिफ···यूलरिख त्स्विगली···फ्रान्सिस जैवियर।

दो· क्या तुम अपने विचार अच्छी तरह प्रकट कर सकते हो ?

१. कक्षा के विभिन्न सदस्य निम्नलिखित में

शिक्षा में प्रगति

जब पुनर्जागरण काल के लेखकों ने जनता की भाषाओं में लिखना प्रारम्भ किया, तब उन्होंने एक उच्चतर सांस्कृतिक स्तर पर पहुंचने में मानवता की सहायता की। इस तरह रोमान्स भाषाओं में और अंग्रेजी में महान् साहित्य का विकास हुआ।
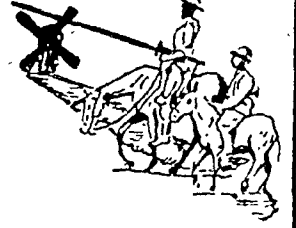
जब छापाखाने का आविष्कार हुआ, तब ज्ञान का, और ज्ञान के साथ ही विश्व के सम्बन्ध में अधिक जानकारी प्राप्त करने की लालसा का आरम्भ हुआ। साहसी खोजी धनी लोगों की सहायता पाकर, जो उनकी यात्रा के लिए आवश्यक धन प्रदान करते थे, नए महाद्वीपों की खोज में निकल पड़े।
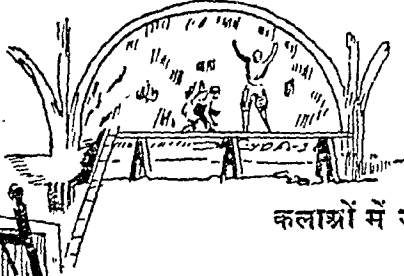
कलाओं में उन्नति

अपने इतिहास के प्रारम्भ में ही मनुष्य ने अपनी गुफाओं की दीवारों को तराशकर और उन पर चित्र बनाकर अपने परिवेश को सुन्दर बनाने की कोशिश की थी। जीवन को सुन्दर बनाने की उसी बलवती लालसा ने पुनर्जागरण काल के चित्रकारों, मूर्तिकारों और संगीतज्ञों को जन्म दिया। मानवता के कलात्मक विकास के इस महत्तम युग ने शाश्वत कृतियों का सृजन किया।

से एक-एक को विशेष विवरण के लिए चुन लें: वाइक्लिफ, जान हस, ज्विंगली, जान काल्विन और जान नाक्स।

२. अपनी कक्षा को दो दलों में बाँट लो और निम्न विषयों के पक्ष-विपक्ष में बहस करो:

(अ) फ्रान्स के हेनरी चतुर्थ का कैथोलिक बनने का इरादा, सिंहासन को प्राप्त करने के अभिप्राय से था। यह बात उसकी उक्ति से जाहिर होती है। यदि ऐसा था तो क्या इस आशय के लिए उसका कैथोलिक बनना न्यायोचित था?

(आ) हेनरी अष्टम की पत्नी से कोई पुत्र नहीं उत्पन्न हुआ था। क्या इसके लिए उसका अपनी पत्नी को तलाक देना न्यायपूर्ण था?

३. क्या नान्तेज का फर्मान फ्रान्स की शान्ति की दृष्टि से बुद्धिमत्ता से भरा हुआ था?

४. निम्न दृश्यों में से एक का रेखाचित्र या

रंगीन चित्र बनाओ :

(अ) चर्च के दरवाजे पर कील से पच्चानवे पूर्वपक्षों को ठोकता हुआ लूथर।

(आ) स्विट्जरलैण्ड के लोगों से अपने देश की भलाई के लिए काम करने का अनुरोध करता हुआ त्स्विगली।

(इ) अमरीकी आदिवासियों के बीच उपदेश देता हुआ मार्क्वेत।

तीन. कालचक्र

कक्षा को चार-चार पाँच-पाँच के दलों में बाँट लो। हर दल को पुनर्जागरण काल की प्रमुख घटनाओं और व्यक्तियों का कालचक्र बनाने दो। शिक्षक इसके निर्णायक हो सकते हैं और विजेता दल इसकी प्रतिलिपियाँ अपनी कक्षा में बाँट सकता है या इसकी नकल श्यामपट्ट पर उतार सकता है।
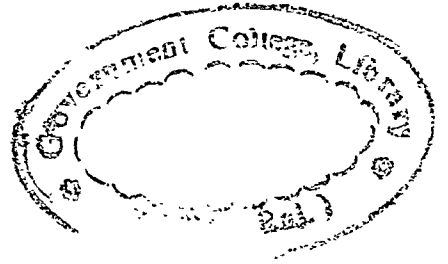
शासकों और सरकारों का

उत्थान-पतन होता रहा

राजाओं का उत्थान और पतन

समूह में रहना आरम्भ करने के समय से ही मनुष्य के सम्मुख रही समस्याओं में शासन की सर्वोत्तम पद्धति की खोज की भी एक समस्या रही है। शासन के कर्त्तव्य क्या हैं, और अच्छे शासन के लक्षण क्या हैं? इन सवालों का उत्तर दे पाना कठिन है क्योंकि विभिन्न जातियों, स्वभावों और विभिन्न ऐतिहासिक अवस्थाओं से होकर गुजरी जातियों के लोगों को शासन की विभिन्न पद्धतियों की आवश्यकता प्रतीत होती है। इसीलिए कोई भी दो शासन-पद्धतियाँ कभी भी बिलकुल समान नहीं रही हैं।
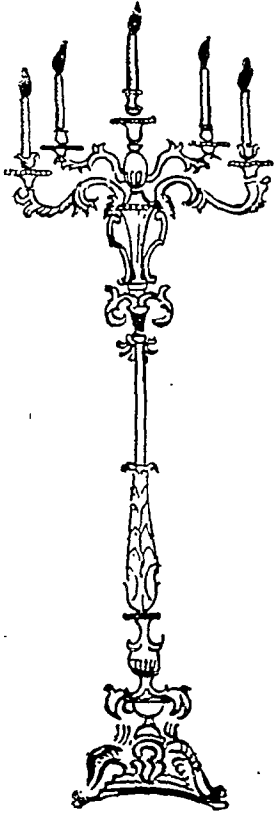
सभी शासन-पद्धतियों को तीन वर्गों में रखा जा सकता है: राजतंत्र, अल्पतंत्र, और लोकतंत्र। राजतंत्र का अर्थ है "एक व्यक्ति का शासन।" यही शासन-पद्धति प्राचीन मिस्र, बैबिलोनिया और फारस में थी। यदि एक आदमी शासन का निरंकुश प्रधान होता था और उसका पद वंशानुगत होता था तो यह निरपेक्ष राजतंत्र होता था। और यदि राजा या सम्राट् को उसका पद वंशानुगत प्राप्त होता था पर उसके हाथों में सम्पूर्ण राजसत्ता नहीं रहती थी तो यह सीमित राजतंत्र होता था।

दूसरे प्रकार की शासनपद्धति में एकाधिक व्यक्ति शासन करते हैं। इस पद्धति को अल्पतंत्र कहते हैं जिसका अर्थ है "कुछ व्यक्तियों का शासन"। प्राचीन स्पार्टा में यह शासन-पद्धति थी।

तीसरी शासन-पद्धति लोकतंत्र है जिसके अन्तर्गत जनता अपना शासन स्वयं करती है। लोकतंत्र का शाब्दिक अर्थ है "जनता का शासन"। दुनिया में दो प्रकार के लोकतंत्र हुए हैं: प्रत्यक्ष लोकतंत्र और अप्रत्यक्ष लोकतंत्र। प्रत्यक्ष लोकतंत्र में प्राचीन एथेंस की तरह जनता एक जगह एकत्र होती है और अपने कानून बनाती है। एथेंस में उन सभी लोगों को जो मान्यताप्राप्त नागरिक थे, नगरकोट के बाहर एक पहाड़ी पर निश्चित तिथियों पर होने वाली सभा में भाग लेने का अधिकार था जहाँ वे अपने नगर की समस्याओं पर विवाद करते थे और अपना मत प्रदान करके निर्णय करते थे। इस प्रकार का लोकतन्त्र वहीं मिलता है जहाँ जनसंख्या इतनी कम होती है कि सभी नागरिक एक स्थान पर एकत्रित होकर अपनी समस्याओं पर चर्चा कर सकते हैं। दूसरी पद्धति है अप्रत्यक्ष लोकतंत्र जिसमें नागरिक ऐसे व्यक्ति चुनते हैं जो उनके प्रतिनिधि के रूप में एकत्रित होकर उनके लिए कानून बनाते हैं।

सत्रहवीं और अठारहवीं शताब्दी में यूरोप की सारी शासन-पद्धतियाँ राजतंत्रात्मक थीं। यूरोप के इतिहास की इस अवधि में शक्तिशाली राजाओं का अभ्युदय हुआ और इनमें से कई ने निरंकुश राजा की तरह शासन किया।

1000 AD
2000 AD
1100 AD
1900 AD
1200 AD
1800 AD
1300 AD
1700 AD
1400 AD
1500 AD
1600 AD
The Ups and Downs of Kings

२२ संसद्, राजा और अंग्रेज जनता
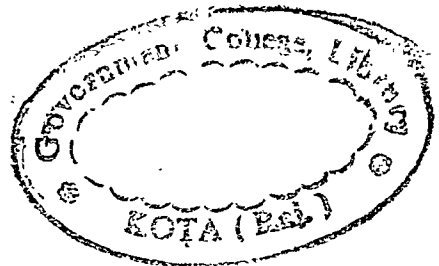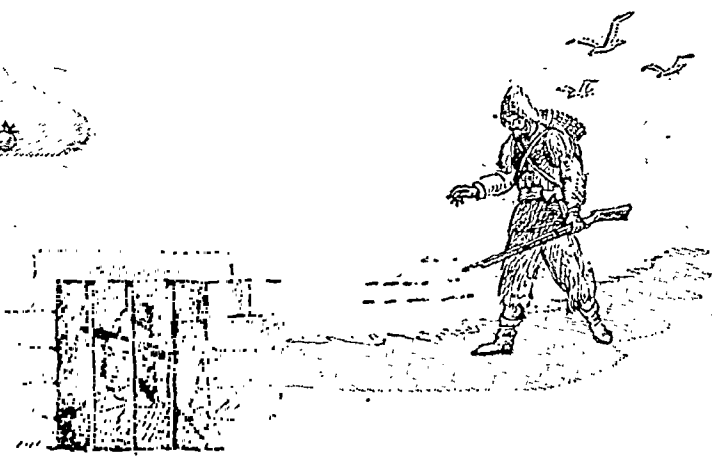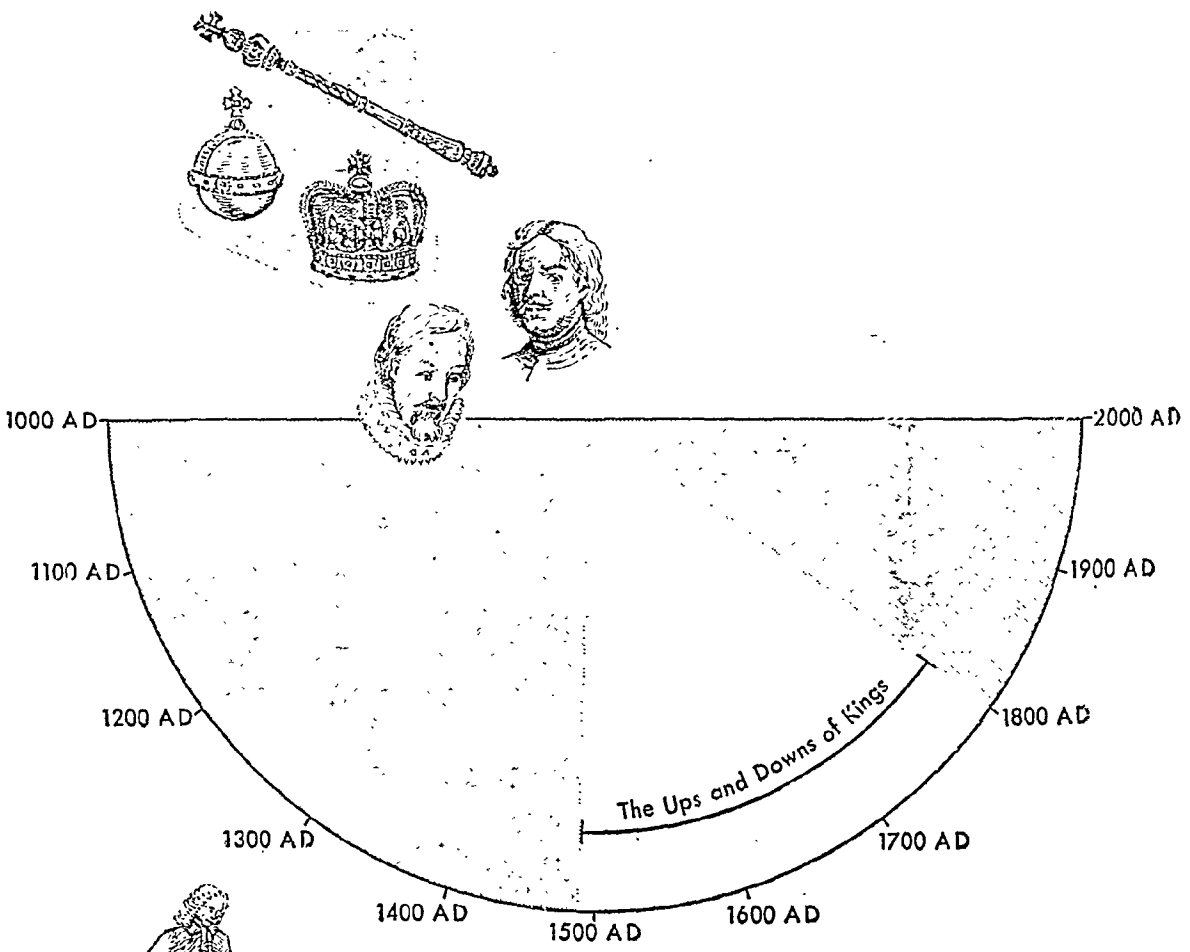
आज दुनिया के बहुत से देशों में प्रचलित कई लोकतांत्रिक संस्थाओं और रीतियों का उद्भव इंगलैंड में हुआ था जहाँ तेरहवीं शताब्दी में कुछ महत्त्वपूर्ण प्रगति के कार्य हुए थे। अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अधिकारपत्र "मैग्ना कार्टा" पर इसी समय हस्ताक्षर हुआ था और इंग्लैंड की संसद् इस समय लोक सभा (हाउस आफ कामन्स) और लार्ड सभा (हाउस आफ लार्ड्स) में विभाजित होकर अस्तित्व में आयी।

ट्यूडर लोगों के शासनकाल (१४८५-१६०३) में संसद् सशक्त राजाओं के प्रभाव में रही। ऐसा इसलिए नहीं हुआ कि राजाओं ने संसद् पर बल-प्रयोग किया बल्कि वे शासन की प्रतिभा वाले सशक्त व्यक्ति थे। ट्यूडर काल में इंगलैंड की व्यापारिक प्रगति हुई ही, दुनिया के देशों में उसका महत्त्व भी बढ़ा। अंग्रेजों को अपने देश पर गर्व था और ट्यूडर लोग दुनिया में इंग्लैंड की शक्ति और गौरव के प्रतीक थे।

जेम्स प्रथम और राजाओं का दैवी अधिकार

जब ट्यूडर कुल की अन्तिम कड़ी रानी एलिजाबेथ निःसन्तान मर गयी तो राज्याधिकार एलिजाबेथ की रिश्ते की बहन स्काट्स की रानी मेरी के पुत्र के हाथ में चला गया। उसका नाम जेम्स स्टुअर्ट था और वह जेम्स छठे के नाम से स्काटलैंड पर शासन कर रहा था। अब वह जेम्स प्रथम (१६०३-१६२५ ई०) के नाम से इंग्लैंड का भी राजा हो गया।

सन् १६०३ में स्टुअर्ट परिवार के हाथों में सत्ता आने के बाद अंग्रेज शासन में कई महत्त्वपूर्ण परिवर्तन हुए और कई झगड़े भी उठ खड़े हुए। एक तो स्काट लोग अंग्रेज नहीं, विदेशी थे और जेम्स प्रथम बहुत ही रसहीन व्यक्ति था। फिर ट्यूडर लोग संसद् से निभाकर चलते थे। वे इसकी अवहेलना न करके इससे मिलजुल कर रहते थे। पर स्टुअर्टों का विश्वास था कि शासन करना दैवी अधिकार था। अर्थात् वे यह मानते थे कि यह ईश्वर की इच्छा है कि वे शासन करें और प्रजा उनकी आज्ञाओं का पालन करे। इस तरह संसद् नहीं, राजा ही शासक था। राजत्व के सम्बन्ध में यह विचार यूरोप में प्रचलित था पर बहुत से इंग्लैंडवासी इसमें विश्वास नहीं करते थे।

धार्मिक परिस्थिति—इंग्लड की हालत धार्मिक झगड़ों की वजह से और भी उलझ गयी थी। बहुत से अंग्रेजों का विश्वास था कि इंग्लैंड में सुधारणा ('रिफामशन') इतनी अधिक नहीं चल सकी कि देश कैथोलिक शिक्षाओं के प्रभाव से मुक्त हो सके। वे गिरजाघरों की मूर्तियों, पादरियों की वेश-भूषा और पूजा के कर्मकाण्ड को हटाकर चर्च को शुद्ध करना चाहते थे। इस वर्ग के अतिशय उग्र लोगों को शुद्धतावादी या प्योरिटन कहा जाता था। पहले तो वे लोग इंग्लैंड के चर्च में बने रहे पर बाद में उससे अलग हो गये और पार्थक्यवादी या सेपरेटिस्ट कहलाए।

लेकिन इंग्लैंड में कुछ दूसरे ऐसे लोग भी थे
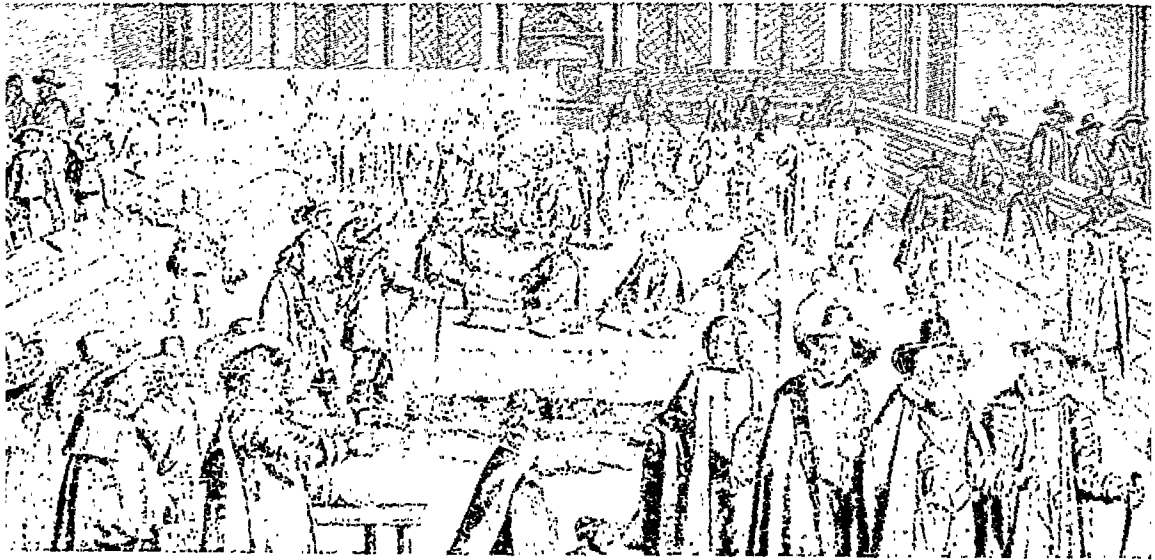
हिस्टौरिकल पिक्चर सर्विस

क्रामवेल ने रम्प पार्लमेंट से विक्षुब्ध होकर अन्ततः सन् १६५३ में सदस्यों को बाहर निकाल दिया। सम्भवतः अपने व्यवहार को न्यायोचित सिद्ध करने के लिए वह चिल्लाया था, "तुम लोगों की घड़ी आ गई है; ईश्वर ने तुम्हारी शामत ला दी है।"

११. राजा और इंग्लैंड की जनता पर गृहयुद्ध का क्या प्रभाव पड़ा ?

योग्य निरंकुश शासक औलिवर क्रामवेल

चार्ल्स प्रथम की मृत्यु और औलिवर क्रामवेल के सत्ताधारी होने से शासनतंत्र पर इंग्लैंड की जनता का नियंत्रण नहीं स्थापित हुआ। यद्यपि क्रामवेल के अधीन इंग्लैंड का शासन गणराज्य या राष्ट्रमंडल कहलाता था, पर यह नाम भर के लिए था। जब भी संसद् क्रामवेल से सहमत नहीं होती थी, वह उसकी अवहेलना कर देता था। वह सेना के बल पर शासन करता रहा और वास्तव में अपने देश का अधिनायक था।

वैदेशिक मामलों में क्रामवेल बहुत सफल रहा। इंग्लैंड की जलसेना श्रेष्ठ योद्धाशक्ति बन गयी जिससे दुनिया में इंग्लैंड की प्रतिष्ठा सदा से उच्चतर शिखर पर पहुँच गयी। आयरलैंड और स्काटलैंड के अपने विरुद्ध विद्रोह करने पर क्रामवेल ने उन्हें अपने अधीन कर लिया। उसने डच लोगों को युद्ध में परास्त किया और फ्राँस के शक्तिशाली राजा लुई चौदहवें का आदरभाजन रहा। विदेशों में मिली इन सफलताओं के बावजूद क्रामवेल को अपनी असफलता का पता था क्योंकि यह जाहिर था कि इंग्लैंड की बहुसंख्यक जनता शुद्धतावादी धर्म की अनुयायी नहीं होना चाहती थी और सेना के शासन से परेशान हो चुकी थी।

शासन पर पुनः स्टुअर्टों का अधिकार

चार्ल्स द्वितीय—औलिवर क्रामवेल की मृत्यु के कुछ ही दिनों बाद राष्ट्रमण्डलीय शासन समाप्त हो गया। चार्ल्स प्रथम का पुत्र चार्ल्स द्वितीय (१६६०-१६८५) राजा हुआ। उसकी सरकार ने तुरन्त राष्ट्रमंडल की नीतियों को बदलना शुरू किया। सभी शुद्धतावादियों को सरकारी पदों से हटाने और शुद्धतावादी धर्म को समाप्त करने के कानून बनाये गये।

चार्ल्स द्वितीय के शासनकाल में संसद् ने मानव स्वतन्त्रता की मनुष्य द्वारा निर्मित सबसे बड़ी

बेटीमैन आर्काइव

विलियम आफ आरेंज और उसकी पत्नी मेरी रिश्ते के बहन-भाई थे और स्टुअर्ट परिवार में पैदा हुए थे। जब विलियम १५,००० सैनिकों को लेकर इंग्लैंड में उतरा तो सम्मानित अंग्रेजों के एक दल ने जहाज से उतरने पर उसका स्वागत किया।

सुरक्षा की स्थापना की। यह था सन् १६७९ का वन्दी-प्रत्यक्षीकरण कानून (हैबियस कार्पस ऐक्ट)। इसमें गिरफ्तार किये गये व्यक्ति को अदालत के सामने उपस्थित करने और जेल में रखे जाने का कारण बताने की व्यवस्था की गयी। इस कानून के फलस्वरूप राजा राजनैतिक कैदियों को बिना उनके विरुद्ध आरोप लगाये लम्बी अवधि के लिए कैद में नहीं रख सकता था, जैसा पहले प्रायः होता था। बंदी-प्रत्यक्षीकरण कानून सत्रहवीं शती में इंग्लैंड में लागू होकर आज हमारे देश में भी प्रचलित है और वैयक्तिक स्वतन्त्रता की सुरक्षा कर रहा है। इस अंग्रेजी संविधि के फलस्वरूप ही आज कोई भी व्यक्ति बिना बताए और उपयुक्त कारण के जेल में नहीं रखा जा सकता।

जेम्स द्वितीय और गौरवशाली क्रान्ति—जेम्स द्वितीय (१६८५-१६८८) सिंहासन पर अपने भाई चार्ल्स द्वितीय का उत्तराधिकारी हुआ। वह चार्ल्स की तरह अधिक सावधान नहीं था। उसका विश्वास था कि इंग्लैंड में निरंकुश राजतन्त्र होना चाहिए और उसने ऐसा ही करने की कोशिश की। इसके अतिरिक्त वह रोमन कैथोलिक मत का अनुयायी था और उसने एक कैथोलिक राजकुमारी से अपना दूसरा विवाह किया। उसी धर्म में पाला गया उनका पुत्र, उसकी प्रथम पत्नी से उत्पन्न प्रोटैस्टैंट मतानुयायी पुत्री मेरी के बजाय गद्दी पर बैठने वाला था। मेरी का विवाह हालैंड के राजा विलियम आफ आरेंज से हुआ था। इंग्लैंड की जनता जेम्स के शासन को शायद सहन कर लेती यदि उसे यह आशा होती कि उसके बाद उसकी पुत्री मेरी गद्दी पर बैठेगी। लेकिन उसके पुत्र के जन्म के बाद लोगों ने उसके शासन को समाप्त करने का निश्चय कर लिया। कुछ प्रमुख नागरिकों ने विलियम आफ आरेंज और मेरी के पास इंग्लैंड आने और गद्दी पर बैठने का सन्देश भेजा। जब विलियम इंग्लैंड के तट पर सेना के साथ उतरा और लन्दन की ओर आगे बढ़ा तो जेम्स की सेना भाग गयी। बिना कोई युद्ध हुए ही जेम्स फ्रांस

भाग गया और विलियम (१६८९-१७०२) तथा उसकी पत्नी मेरी (१६८६-१६९४) इंग्लैंड के संयुक्त शासक हुए। १६८८ की इस घटना को गौरवशाली क्रान्ति कहा जाता है।

मानव अधिकारों की और अधिक सुरक्षा—नये शासकों के सिंहासन पर बैठने के पहले ही संसद् ने अधिकार-विधेयक ('बिल आफ राइट्स') बनाया और नये सत्ताधारियों ने इस पर १६८९ ई० में हस्ताक्षर किये। इस अत्यन्त महत्त्वपूर्ण दस्तावेज में (१) संसद् की सहमति के बिना राजा द्वारा नियमित सेना न रखे जाने, (२) संसद् के अधिवेशन शीघ्र-शीघ्र बुलाये जाने; (३) जनता को राजा के सम्मुख याचिका पेश करने का अधिकार होने; (४) किसी रोमन कैथोलिक के कभी भी इंग्लैंड का राजा न होने; और (५) कर राजा द्वारा नहीं; संसद् द्वारा लगाये जाने की व्यवस्था थी।

१६८९ में पारित 'सहिष्णुता कानून' ('टालरेशन ऐक्ट') के कारण धार्मिक स्वतन्त्रता भी बढ़ी। इस कानून से शुद्धतावादियों को अपने अलग गिरजाघर रखने का अधिकार मिला।

जॉन लाक—गौरवशाली क्रान्ति के फलस्वरूप एक महत्त्वपूर्ण पुस्तक की रचना हुई। अंग्रेज राजनीतिक-विचारक जॉन लाक (१६३२-१७०४) ने रक्तहीन गौरवशाली क्रान्ति में जेम्स द्वितीय के सिंहासनच्युत करने को न्यायसंगत ठहराने के लिए एक पुस्तक लिखी। लाक ने यह विवेचन किया कि सरकारों को शासितों की सहमति से ही बने रहने का अधिकार है और जनता को जीवन, स्वतन्त्रता और सम्पत्ति, ये कुछ प्राकृतिक अधिकार होने चाहिए। सरकारें इन अधिकारों की रक्षा के लिए होती हैं और जब तक सरकारें ऐसा करें; लोगों को उनके निर्देशों का पालन करना चाहिए। लाक ने शिक्षा के और अधिक व्यापक प्रसार तथा पूर्ण धार्मिक सहिष्णुता का प्रतिपादन किया। लाक के राजनैतिक विचार आज हमें अकठोर लगते हैं पर तीन सौ वर्ष पूर्व उन्हें बहुत क्रान्तिकारी माना जाता था।

रानी ऐन—विलियम और मेरी की उत्तराधिकारिणी, रानी मेरी की बहन रानी ऐन के राजत्वकाल में इंग्लैंड के शासन में दो महत्त्वपूर्ण परिवर्तन हुए। जेम्स प्रथम के समय से ही इंग्लैंड और स्काटलैंड का एक ही राजा हुआ करता था पर अब दोनों देश मिलकर ग्रेट ब्रिटेन का संयुक्त राज-शासन (यूनाइटेड किंगडम आफ ग्रेट ब्रिटेन), के नाम से एक राष्ट्र बन गये। राजधानी लन्दन थी और इस नगर में संसद् में इंग्लैंड और स्काटलैंड, दोनों देशों के प्रतिनिधि भाग लेते थे। दूसरे परिवर्तन से राजा की सत्ता और अधिक सीमित हो गयी। रानी ऐन अंतिम शासक थी जिसे संसद् के किसी कानून को लागू न होने देने का निषेधाधिकार प्राप्त था। यद्यपि इस विषय में कोई कानून नहीं बनाया गया किन्तु इसके बाद किसी भी शासक ने इस अधिकार का उपयोग नहीं किया।

१. चार्ल्स प्रथम की मृत्यु के बाद इंग्लैंड का शासक कौन हुआ?
२. इस शासक को वैदेशिक नीति में कौन सी सफलताएँ मिलीं?
३. इन सफलताओं के बावजूद वह क्यों असफल रहा?
४. राष्ट्रमंडल क्या था?
५. चार्ल्स द्वितीय की सरकार ने इंग्लैंड में शुद्धतावादियों के सम्बन्ध में क्या कार्य किये?
६. सहिष्णुता कानून और बंदी प्रत्यक्षीकरण कानून क्या थे?
७. जेम्स द्वितीय को सिंहासनच्युत क्यों किया गया?
८. गौरवशाली क्राति क्या थी?
९. अधिकार विधेयक किन परिस्थितियों में पारित किया गया?
१०. मानव प्रगति के लिए जॉन लाक ने क्या योग दिया?
११. रानी ऐन का राजत्वकाल शासन में किन दो परिवर्तनों के लिए विख्यात है?

एक्मी

अंग्रेज, बहुत कठिनता से जीते हुए, अपनी सरकार के विरुद्ध स्वतंत्रता से और खुल कर बोलने के अपनें अधिकार को आज समुचित रूप से जिलाए हुए हैं।

नयी राजनीतिक संस्थाओं का विकास

मंत्रिमण्डल पद्धति—विलियम आफ आरेंज को शासन के बारे में बहुत कम पता था और उसकी रुचि भी इसमें कम थी। इसलिए संसद् के मन्त्रियों के एक दल ने शासन का अधिकांश कार्य अपने हाथ में ले लिया। जैसे-जैसे समय बीतता गया, यह प्रथा बनती गयी कि इस दल, यानी मंत्रिमण्डल, के सदस्य लोकसभा में बहुमत रखने वाली पार्टी के हों। ये एक इकाई की तरह काम करते थे और संसद् के बहुमत के समर्थन तक पद पर बने रहते थे। अन्यथा उन्हें पद छोड़ना पड़ता था।

प्रधानमन्त्रित्व—जब रानी ऐन उत्तराधिकारी के बिना मर गयी तो उसका रिश्ते का भाई जर्मनी के हैनोवर का राजकुमार जार्ज (१७१४-१७२७) गद्दी पर बैठा। अंग्रेजी नहीं जानने के कारण वह संसद् की बैठकों में भाग नहीं लेता था। इस परिस्थिति के फलस्वरूप राजा की अनुपस्थिति में मंत्रिमंडल की अध्यक्षता करने के लिए प्रधान मंत्री पद का विकास हुआ। मंत्रिमंडल की तरह ही इस पद का भी नियोजन नहीं किया गया था अपितु परिस्थितिवश ही इसका जन्म हुआ था और उस समय के राजनीतिज्ञों को यह भान नहीं था कि प्रधानमंत्रित्व कभी इंगलैंड की सरकार का सबसे प्रधान पद हो जाएगा।

ब्रिटिश शासन के लोकतांत्रिक पहलू—अठारहवीं शताब्दी के मध्य तक स्वशासन का अधिकार अर्जित करने के अपने संघर्ष में इंग्लैंड की जनता काफी आगे बढ़ चुकी थी। जैसा हम पीछे पढ़ चुके हैं, राजा की सत्ता ब्रिटिश "संविधान" कही जा सकने वाली विधियों के द्वारा सीमित हो गयी थी। १२१५ ई० में अधिकार पत्र "मैग्ना कार्टा" के लागू होने के समय से ऐसे कई कानून बने जिनके फलस्वरूप राजा के अधिकार सीमित हो गये। शासन के सम्बन्ध में कुछ ऐसी रीतियां और रूढ़ियाँ बनती गयी थीं जिन्हें कभी लिपिबद्ध नहीं किया गया था। लिखित और अलिखित नियमों के इस समूह को ही अंग्रेजी "संविधान" कहते हैं। अठारहवीं शताब्दी के मध्य तक इससे राजा की सत्ता निम्नलिखित तरीकों से सीमित हुई थी: (१) वह संसद् की सहमति के बिना कर नहीं लगा सकता था। (२) वह कानून नहीं लागू कर सकता था। (३) संसद् द्वारा पारित कानूनों को वह अवरुद्ध नहीं कर सकता था। (४) संसद् की सहमति के बिना वह सेना नहीं रख सकता था। (५) देश की अदालतों पर उसका अधिकार नहीं था। (६) वह लोगों को जूरी द्वारा सुनवाई के अधिकार से वंचित नहीं कर सकता था। (७) न्यायाधीशों के निर्णयों को नापसन्द करने के कारण वह उन्हें हटा नहीं सकता था। (८) कारण बताये बिना और न्यायिक विचार हुए बिना किसी को जेल में नहीं बंद किया जा सकता था। (९) समाचारपत्रों को सरकार की नीतियों की आलोचना करने का अधिकार दिया गया था। (१०) दो राजनीतिक दल थे। राजा की सत्ता पर इन पाबंदियों के कारण इंग्लैंड में सीमित राजतंत्र पद्धति थी और शासन करने का अधिकार संसद् को था।

ब्रिटेन में लोकतंत्र के विकास के कुछ और भी लक्षण प्रकट थे। लोकसभा ('हाउस आफ कामन्स') चुनी हुई संस्था थी। अब सरकार लोगों को अपनी

इच्छा के अनुरूप चर्च में जाने के कारण उनको जेल में बंद या उनकी हत्या नहीं कर सकती थी। इन सब वातों के अतिरिक्त, लोगों को अपनी सरकार की आलोचना करने का अधिकार मिल गया था।

ब्रिटिश शासन के अलोकतांत्रिक पहलू—इन हालतों के बावजूद इंग्लैंड में पूर्ण लोकतंत्र अभी नहीं आया था। मत देने या सरकारी पद पाने का अधिकार केवल बड़े भूमिपतियों को था। ऐंग्लिकन चर्च के सदस्यों का सरकारी पदों पर एकाधिकार था। बहुत से कस्बे, जिन्हें पीढ़ियों पहले लोकसभा में सदस्य भेजने का अधिकार मिला था, जनसंख्या बहुत कम हो जाने के बावजूद अभी भी अपने सदस्य भेजते थे। दूसरी ओर ऐसे बड़े नगर विकसित हो चुके थे जिन्हें प्रतिनिधित्व नहीं दिया गया था। लार्ड सभा की सदस्यता चुनाव से न होकर वंशानुगत थी और लार्डों को लोकसभा द्वारा पारित किसी भी कानून को अवरुद्ध ('वीटो') करने का अधिकार था। मौखिक मतदान की प्रणाली के कारण घूसखोरी व्यापक रूप से प्रचलित थी क्योंकि मालिक और अन्य प्रभावशाली लोग लोगों के अभिमत पक्ष का पता पा जाते थे। घूस दे-देकर ह्विग दल काफी अरसे तक सत्ता पर अधिकार बनाये रहा। इसके अतिरिक्त कुछ जगहों में मतदान की अवधि दो हफ्तों तक रहती थी जिससे जिनकी भूमि देश के कई हिस्सों में थी, वे एक से दूसरे हिस्से में जाकर कई बार मतदान कर सकते थे। सौ से भी अधिक अपराधों पर मृत्युदण्ड की व्यवस्था थी। इंग्लैंड में भी शासन में कई सुधार होने जरूरी थे।

१. किन परिस्थितियों में हैनोवर परिवार ब्रिटेन के राज्यसिंहासन पर बैठा ?
२. इंग्लैंड में मंत्रिमंडल प्रणाली की शुरुआत किस तरह हुई ?
३. अठारहवीं शती के मध्य में इंग्लैंड के शासन के लोकतांत्रिक और अलोकतांत्रिक पहलुओं की सूची बनाइए।

मध्यवर्गीय अंग्रेजी शासन और आर्थिक परिस्थिति ✓

वाणिज्यवाद—वाणिज्यवाद के अनुसार "लाभकर व्यापार-संतुलन" अर्थात् ऐसा व्यापार जिसमें आयात या खरीदारी कम हो और निर्यात या विक्रय अधिक हो. होना चाहिए। इसके लिए देश के पास ऐसे उपनिवेश होने चाहिए जो कच्चा माल प्रदान कर सकें जिससे पक्का माल बनाया जा सके और फिर वे उपनिवेश यह पक्का माल वापस खरीद लें। देश में उद्योगों को आर्थिक अनुदान दिया जाना चाहिए और बाहर से आने वाले माल पर इतनी अधिक चुंगी लगानी चाहिए कि वह आना ही बन्द हो जाय। उपनिवेशों का अन्य देशों से व्यापार भी इस कठोरता से व्यवस्थित किया जाय कि स्वदेश को ही लाभ हो।

गौरवपूर्ण क्रान्ति के बाद मध्यवर्गीय सौदागर और व्यापारी बड़ी संख्या में लोकसभा के सदस्य होने लगे। संसद् में उनका प्रभाव सबसे अधिक हो गया। चूँकि यह उनके लाभ में था, अतः उन्होंने वाणिज्य-प्रणाली का समर्थन किया और इसके पक्ष में राजाओं के साथ एकबद्ध हो गये। संसद् द्वारा वाणिज्य और उत्पादन के सम्बंध में ऐसे कानून बनाये गये जो ब्रिटिश व्यापारियों के हित में थे। इस तरह वाणिज्य-सिद्धान्त राजा और संसद्, दोनों की नीति बन गया।

✓**एडम स्मिथ**—अठारहवीं शताब्दी का तीन-चौथाई बीतने के पहले से लोग वाणिज्य-प्रणाली की सार्थकता में सन्देह करने लगे क्योंकि उनके अनुसार इससे व्यापार में कमी आ जाती थी। बहुत से राजनीतिज्ञों और व्यापारियों की यह दृढ़ धारणा बन गयी थी कि इंग्लैंड को अपनी वाणिज्य नीति का परित्याग कर देना चाहिए। १७७६ ई० में ग्लासगो विश्वविद्यालय के अध्यापक एडम स्मिथ ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक "देशों की समृद्धि के कारणों और स्वरूप की परीक्षा" ("ऐन इन्क्वायरी इन्टू द नेचर ऐंड काजेज आफ द वेल्थ आफ नेशन्स") में इस नीति पर कड़ा आघात किया। इंग्लैंड और अन्य यूरोपीय देशों में इस पुस्तक से प्रेरित होकर बहुत विवाद छिड़ा रहा। स्मिथ ने औपनिवेशिक

कलवर सर्विस

"गुलिवर की यात्राएँ" में लिलिपुट के नन्हें लोगों का वर्णन है। इस कहानी से ही अंग्रेजी का "लिलिपुटियन" शब्द निकला है।

व्यापार पर पाबंदियों का विरोध किया। उसका विचार था कि सुरक्षात्मक चुंगियों को खत्म करना चाहिए और यदि सरकार निर्बाध व्यापार-नीति ("लैसे-फेयर नीति") अपनाकर व्यापार पर से अपना नियंत्रण हटा ले तो हर पक्ष समृद्ध होगा।

१. गौरवपूर्ण क्रांति के बाद मध्य वर्ग ने क्यों राजा का समर्थन किया ?
२. वाणिज्यवादियों के व्यापार और उपनिवेशों के सम्बंध में क्या सिद्धांत थे ?
३. एडम स्मिथ ने वाणिज्यवाद का क्यों और कैसे विरोध किया ?

विज्ञान, धर्म और कलाएँ

विश्व-इतिहास में प्राय: ऐसी जातियाँ हुई हैं जिन्होंने अपनी प्रतिभा का उपयोग मानव-संस्कृति को आगे बढ़ाने और उसे समृद्ध करने के लिए लिखने में किया है। राजनीतिक क्रान्ति और आर्थिक परिवर्तन की इस अवधि में अंग्रेजों ने ऐसे महान् साहित्य की रचना की जो अमरीकी सांस्कृतिक दाय का अंग बन गया। राष्ट्रमण्डल के दिनों में श्रेष्ठ लेखक शुद्धतावादी विचारधारा से प्रभावित थे। इनमें जान मिल्टन (१६०८-१६७४) सम्भवत: सर्वश्रेष्ठ था। उसने लोकतांत्रिक शासन और धार्मिक स्वतंत्रता के लिए चल रहे शुद्धतावादी संघर्ष के समर्थन में जोरदार पुस्तिकाएँ लिखीं। "पैराडाइज लास्ट" नामक अपने महाकाव्य के माध्यम से उसने अपनी पीढ़ी को ईश्वरीय मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित किया। जान बनियन (१ २८-१६८८) बैप्टिस्ट उपदेशक था। अपनी मान्यताओं का प्रवचन करने के अपराध में हुई जेल की सजा के दौरान उसने "द पिलग्रिम्स प्राग्रेस" नामक पुस्तक लिखी जो सम्पूर्ण साहित्य में अपने प्रकार की महत्तम पुस्तकों में से है। इसमें एक ईसाई के स्वर्गीय नगर की ओर अभियान के मार्ग में आने वाली कठिनाइयों का वर्णन है।

सन् १६६० में राजतंत्र की पुन: प्रतिष्ठा के बाद इंग्लैंड में पुन: प्रसन्नता की लहर दौड़ आयी। अंग्रेज नीरस शुद्धतावादी शासन से छुटकारा पाकर

रेनाल्ड्स और उसके समय के दूसरे चित्रकार अपने चित्रों की मानव आकृतियों को किसी लैण्डस्केप (प्राकृतिक भूदृश्य) की पृष्ठभूमि देकर चित्रित करते थे जैसा कि इस "टू चिल्ड्रन" (दो बच्चे) शीर्षक चित्र में दिखाया गया है।

बैटमैन आर्काइव

प्रसन्न थे। रानी ऐन के शासन-काल में इंग्लैंड के इतिहास की सर्वश्रेष्ठ प्रतिभाओं में से कुछ ने साहित्य-रचना की। डेनियल डिफो (१६६०-१७३१) साहसिक अभियान की अपनी अमर पुस्तक "राबिन्सन क्रूसो" के लिए प्रसिद्ध था। जोनाथन स्विफ्ट (१६६७-१७४५) ने इंग्लैंड की बहुत सी खामियों का मजाक उड़ाने और अपने समय की सामाजिक बुराइयों की आलोचना करने के लिए "गुलिवर की यात्राएँ", ("गुलिवर्स ट्रैवल्स") नामक पुस्तक लिखी। वाक्-चतुर अलेक्जेंडर पोप (१६८८-१७४४) ने भी रानी ऐन के समय के उच्चवर्ग की कमजोरियों के बारे में लिखा। अठारहवीं शती के उत्तरार्ध में सैमुअल जानसन हुए जिन्होंने अंग्रेजी भाषा के पहले सुगठित कोश की रचना की। उनके बारे में जानकारी हमें प्रधानतः उनकी जीवनी "द लाइफ आफ सेमुअल जानसन" के लेखक जेम्स बासवेल से मिलती है।

चित्रकला—अठारहवीं शती के अंग्रेज चित्रकार अपने समय के सर्वोत्तम चित्रकार थे। सर जोशुआ रेनाल्ड्स, टामस गेन्सबारो और जार्ज रोमनी अत्यन्त सुन्दर शबीहों (पोर्ट्रेट) की रचना करते थे।

शिक्षा—वास्तविक लोकतांत्रिक राष्ट्र के निर्माण में जनता को प्राप्त शैक्षणिक अवसरों का सदैव बहुत महत्त्व होता है। अठारहवीं शताब्दी में बच्चों को स्कूल जाने का अधिक अवसर मिलने लगा लेकिन अब भी यह बहुत सीमित था। ऐंग्लिकन् चर्च ने अपने युवकों की शिक्षा की जिम्मेदारी ली, और गिरजाघरों में स्कूल खोलकर, जहाँ पादरी लोग पढ़ाते थे, यह कार्य पूरा किया। इसके अतिरिक्त, इंग्लैंड में "पब्लिक स्कूल" थे जो वास्तव में केवल धनिक वर्ग के पुत्रों के लिए निजी स्कूल थे। कुछ धनी लोगों ने धर्मार्थ स्कूल भी खोले जहाँ कुछ गरीब बच्चों को पढ़ने, लिखने, अंकगणित, शिष्टाचार और धर्म की शिक्षा दी जाती थी तथा उन्हें भोजन-वस्त्र भी दिया जाता था। लेकिन इंग्लैंड के अधिकांश बच्चे स्कूल नहीं जा पाते थे।

सन् १७८० में राबर्ट रेक्स ने सूटी ऐले, ग्लौ-

न्यूटन जिसे वैज्ञानिक लोग "आज तक की महत्तम प्रतिभा" मानते हैं, अपने स्पेक्ट्रम के साथ प्रयोग कर रहा है।

सेस्टर में अपना पहला सुप्रसिद्ध रविवारीय स्कूल ("सण्डे स्कूल") शुरू किया। फैक्टरियों और खदानों में काम करने वाले उपेक्षित बच्चे अज्ञान और अवगुणों के बीच विकसित हो रहे थे। इन रविवारीय स्कूलों का प्रयोजन ऐसे बच्चों को पढ़ने, लिखने और साथ ही धर्म की बुनियादी बातों की शिक्षा देना था। यह आन्दोलन बढ़ा और ग्रेट ब्रिटेन के हर भाग में, यहाँ तक कि अमरीकी उपनिवेशों में भी फैल गया। रविवारीय स्कूलों से आवश्यकता की पूर्ति में कुछ सहायता मिली, पर इंग्लैंड की सरकार ने तब तक देश के बच्चों की शिक्षा का कोई दायित्व नहीं लिया।

विज्ञान—पुनर्जागरण काल में विश्व के आश्चर्यों के प्रति जागरूकता बढ़ी थी और फ्रांसिस बेकन जैसे विद्वानों ने विज्ञान के प्रति लोक-रुचि जाग्रत करने के लिए बहुत काम किया था। ऐकेडेमियों और विश्वविद्यालयों में विज्ञान के पाठ्यक्रम शुरू हुए और वैज्ञानिक सभाओं की स्थापना हुई। इनमें से ब्रिटेन

की रायल सोसायटी सर्वाधिक उल्लेखनीय संस्थाओं में थी।

लन्दन स्थित रायल सोसायटी के उत्कृष्टतम सदस्यों में एक सर आइज़क न्यूटन (१६४२-१७२७) था। उसने 'जिस गुरुत्वाकर्षण शक्ति से सेब जमीन पर टपक पड़ता है, वह शक्ति हर स्थिति में लागू होती है', यह खोज करने के बाद गुरुत्वाकर्षण के नियम का प्रतिपादन किया। यह आजतक आविष्कृत सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण भौतिक नियमों में से है। न्यूटन न प्रकाश-किरणों के स्पेक्ट्रम के छह रंगों में बँट जाने का भी अध्ययन किया।

इसी उल्लेखनीय अवधि में चिकित्सा-विज्ञान में भी इंग्लैंड में खोजें हुईं। विलियम हार्वे ने मानव शरीर में रुधिर-संचार की गति का पता लगाया।

विज्ञान में अभिरुचि इतनी व्यापक थी कि धनी व्यक्तियों और सामन्तों में अपनी निजी वेधशालाएँ और प्रयोगशालाएँ स्थापित करने का शौक चल पड़ा। विश्वकोशों की रचना हुई जिनमें उस समय की वैज्ञानिक जानकारी दी गयी थी। दुनिया विज्ञान के महत्त्व के प्रति जागरूक हो गयी थी जिससे आज इस क्षेत्र में हुई उल्लेखनीय प्रगति का रास्ता खुला।

धर्म—चर्च आफ इंग्लैंड को छोड़ने वाले कुछ शुद्धतावादी सेपरेटिस्ट अमेरिका आये जहाँ वे यात्री कहलाए। इंग्लैंड में "मित्र" ("फ्रेंड्स") या क्वेकर नामक एक और असन्तुष्ट सम्प्रदाय था। उनका नेता जार्ज फाक्स था। फाक्स का मत था कि चूँकि धर्म ईश्वर से पूर्णतः व्यक्तिगत सम्बंध की वस्तु है, इसलिए पादरी वर्ग की कोई आवश्यकता नहीं है। उसके अनुयायी उसके निर्देशन में बहुत सादा जीवन व्यतीत करते थे और सादी वेशभूषा में रहते थे। वे, चाहे किसी भी कारण से युद्ध छिड़े, उसके विरोधी थे और दासता की प्रथा की भी निन्दा करते थे। अधिकांश क्वेकर निम्न वर्ग के थे पर कुछ सामंत-वर्ग के भी थे। पेनसिलवानिया का संस्थापक विलियम पेन अभिजात वर्ग का था पर उसने क्वेकर शिक्षाओं का पालन करने के लिए अपनी पदवी का परित्याग कर दिया।

एक और असाधारण धार्मिक नेता ऐंग्लिकन चर्च का पादरी और आलोचक जान वेस्ले था जिसका प्रभाव आजकल भी दूर-दूर तक है। वह कुछ दिनों के लिए अमरीका में धर्मप्रचारक था। इंग्लैंड वापस आने के बाद वह देहात में प्रतिवर्ष पाँच हजार मील की यात्रा करते हुए साधारण जन के बीच उपदेश दिया करता था। अपने विधिपूर्ण जीवन-क्रम के कारण वेस्ले के अनुयायी "मैथाडिस्ट" (विधिवादी) कहे जाने लगे। वेस्ले की मृत्यु के बाद उसके अनुयायी ऐंग्लिकन चर्च से अलग हो गये और उन्होंने अपने स्वतन्त्र गिरजाघरों की स्थापना की।

इंग्लैंड में राजनीति, धर्म और सामाजिक दशाओं में सारे असन्तोष और जनता के विद्रोहों के बावजूद अठारहवीं शताब्दी में व्यापक सुधार नहीं हुआ। १७८९ ई० में फ्रांसीसी क्रान्ति शुरू होने के बाद इंग्लैंड का सुधार-समर्थक नेतावर्ग भयभीत हो गया कि निम्न वर्गों को और अधिक सत्ता दिये जाने पर कहीं उनके देश की भी फ्रांस जैसी ही दशा न हो। फिर इंग्लैंड इसी समय नैपोलियन के विरुद्ध युद्धों में लग गया और अपने अस्तित्व के संघर्ष में सुधारों के लिए समय नहीं रह गया।

१. क्रामवेल के शुद्धतावादी शासन का इंग्लैंड पर क्या प्रभाव पड़ा? पुनःस्थापन का क्या प्रभाव रहा?
२. जान मिल्टन और जान बनियन किन कृतियों से प्रसिद्ध हुए? उनकी कृतियों का क्या उद्देश्य था?
३. इस समय के दो असाधारण चित्रकारों के नाम बताइए।
४. इंग्लैंड में शिक्षा की कौन-सी सुविधाएँ प्राप्त थीं?
५. सर आइज़क न्यूटन और विलियम हार्वे की मानवजाति को क्या देन रही है?
६. जार्ज फाक्स और जान वेस्ले के नेतृत्व में हुए आन्दोलनों का वर्णन करिए।
७. अठारहवीं शताब्दी में इंग्लैंड में सुधार का काम क्यों रुक गया?

विचार-विमर्श के लिए प्रश्न

१. आज अमरीकी नागरिकों को प्राप्त अधि-

कारों में से किन-किन का जन्म स्टुअर्टों के शासन-काल में इंग्लैंड में हुआ था ?

२. स्टुअर्ट कुल के एक व्यक्ति का १६४९ में सिर काटने वाली ब्रिटेन की जनता उसके पुत्र का १६६० ई० में अपने राजा के रूप में स्वागत करके इतनी प्रसन्न क्यों थी ?

३. अधिकांश व्यापारी और सौदागर क्यों "दैवी अधिकार" सिद्धान्त के विरोधी थे जब कि सामंत और ग्रामीण लोग इसे स्वीकार करने के इच्छुक थे ?

४. ऐंग्लिकन चर्च के पंचांग में चार्ल्स प्रथम की स्मृति में एक दिन नियत है। क्यों ?

५. रानी ऐन के समय से क्यों सारे ब्रिटिश शासक सहमत न होते हुए भी हर कानून पर हस्ताक्षर कर देते हैं ?

६. कहा जाता है कि ब्रिटिश शासन का नियोजित विकास न होकर जैसे-तैसे ही विकास होता गया है। क्या आप इसे प्रमाणों से सिद्ध कर सकते हैं ?

७. मध्यवर्गीय व्यापारी वाणिज्य-सिद्धान्त के पोषक क्यों थे ? क्या यह बुद्धिमत्ता का कार्य था ?

८. अमरीकी राष्ट्रपति की मंत्रि-परिषद् और ब्रिटिश मंत्रिमण्डल में कौन-से अन्तर हैं ?

९. लोकतांत्रिक देश के लिए जन-व्यापी शिक्षा आवश्यक क्यों हैं ?

क्वेकरों का यह नाम इसलिए पड़ा था कि जार्ज फाक्स ने एक न्यायाधीश से कहा था कि "ईश्वर के नाम को सोच कर सिहरो।" 'क्वेक' शब्द का अर्थ 'सिहरना' है।

इतिहास के उपकरणों का उपयोग :

एक. नाम, तिथियाँ और स्थान :

१. निम्नलिखित की व्याख्या करिए :—

अधिकार विधेयक, मन्त्रिमण्डल, अश्वारोही, धर्मार्थ स्कूल, "राजाओं का दैवी अधिकार", अंग्रेजी अधिकार विधेयक, लाभकर व्यापार संतुलन, गौरवशाली क्रान्ति, बन्दी प्रत्यक्षीकरण कानून, उच्च चर्च दल, निर्बाध व्यापार नीति, वाणिज्यवाद, मेथोडिस्ट, अधिकार याचिका, प्रधानमन्त्री, पब्लिक स्कूल, शुद्धतावादी, क्वेकर, गोलमुंडे, रायल सोसायटी, पुच्छ संसद्, रविवारीय स्कूल, सहिष्णुता कानून, अवरोधाधिकार (वीटो)

२. ये तिथियाँ किसलिए उल्लेखनीय हैं ?

१४८५-१६०३, १६२८, १६३६, १६४२-१६४९, १६४७, १६६०, १६८८, १६८९, १७७६।

३. इन स्थानों को मानचित्र में ढूँढिए :—

जिनीवा, ग्लासगो, हालैंड, आयरलैंड, लॉस एंजिलस, मेसाचुसेट्स, पेनसिलवानिया।

४. क्या आप इन व्यक्तियों का परिचय दे सकते हैं ?

फ्रांसिस बेकन, जेम्स बासवेल, जान बनियन, जान काल्विन, चार्ल्स प्रथम, चार्ल्स द्वितीय, आलिवर क्रामवेल, डेनियल डिफो, जार्ज फाक्स, जार्ज प्रथम, टामस गेन्सबारो, विलियम हार्वे, जेम्स प्रथम, जेम्स द्वितीय, विलियम लाड, जान लाक, रानी मेरी, जान मिल्टन, सर आइज़क न्यूटन, विलियम पेन, अलेक्जेंडर पोप, रानी ऐन, राबर्ट रैक्स, सर जोशुआ रेनाल्ड्स, एडम स्मिथ, जोनाथन स्विफ्ट, जान वेस्ले।

दो. अभिव्यक्ति के लिए अभ्यास :

१. श्यामपट्ट पर एक दूसरे के समानान्तर अंग्रेजी अधिकार विधेयक और संयुक्त राज्य अमरीका के अधिकार विधेयक (संविधान के प्रथम दस संशोधन) की विशेष व्यवस्थाओं की संक्षिप्त सूची बनाइए। दोनों में समान व्यवस्थाओं की कक्षा में चर्चा करिए।

२. अमरीकी स्वतंत्रता के घोषणापत्र में राजा जार्ज तृतीय के विरुद्ध उल्लिखित शिकायतों का अध्ययन करिए। वहाँ उल्लिखित ऐसी शिकायतों

की सूची बनाइए जो स्टुअर्ट शासकों के विरुद्ध अंग्रेज जनता की थीं।

३. आज सरकार से किन सुविधाओं की आशा की जाती है ? चार्ल्स प्रथम के शासन-काल में अंग्रेज जनता अपनी सरकार से उनमें से किन सुविधाओं की आशा कर सकती थी ?

४. कक्षा का एक विद्यार्थी बाइबिल के राजा जेम्स संस्करण की रचनापद्धति का पता लगाये और कक्षा को बताए।

५. पुस्तकालय की कार्ड-सूची की सहायता से इस अध्याय में उल्लिखित एक लेखक या चित्रकार के नाम के अन्तर्गत दी हुई रचनाओं की सूची बनाइए। अपनी-अपनी सूचियों की कक्षा में तुलना करिए। अध्यापक की सहमति से सूची में से एक पुस्तक चुनिए और उसे पढ़कर उसका विवरण कक्षा में बताइए।

६. एक विद्यार्थी पता लगा कर कक्षा को यह बतलाए कि पब्लिक स्कूलों की स्थापना के सम्बन्ध में उसके राज्य में कौन से कानून हैं ?

तीन. व्यंग्य चित्र

इस अवधि में इंग्लैंड में हुए किसी विरोधी आन्दोलन को चित्रित करने के लिए एक व्यंग्यचित्र बनाइए।

चार. चित्र अध्ययन

इस अध्याय में पृ० २८४ पर दिये गये क्राम-वेल के चित्र को देखिए और पता लगाइए कि वह क्या कर रहा है।

२३ दो राजपरिवारों के कारण यूरोप में युद्ध जारी रहा

पूरे मध्ययुग के दौरान छोटे जर्मन राज्य पवित्र रोमन साम्राज्य नामक विचित्र राजनैतिक इकाई के अंग थे। इस पवित्र रोमन साम्राज्य के बारे में एक वाक्चतुर ने यह सही ही कहा था कि यह न तो पवित्र था, न रोमन था और न ही साम्राज्य था। यह पवित्र नहीं कहा जा सकता था क्योंकि यह हमेशा पोपों और अन्य शासकों से युद्ध छेड़े रहता था। यह रोमन नहीं था क्योंकि इसके सम्राट् और उसकी सारी प्रजा जर्मन थी। इसे साम्राज्य भी नहीं कहा जा सकता था क्योंकि किसी भी राज्य पर सम्राट् का बहुत कम अधिकार था। साम्राज्य के अंगभूत कोई तीन सौ या अधिक राज्यों में से केवल सात के शासक उसका इस पद पर चुनाव करते थे। ये चुनने वाले ऐसे व्यक्ति को चुनने की कोशिश करते थे जो उनके अधिकारों में हस्तक्षेप न करे। चुनने वाले एकतंत्रीय शासक हुआ करते थे। धीरे-धीरे सम्राट् का पद कमोबेश कुलागत हो गया। सम्राट् का प्रभाव था, उसे गौरवशाली उपाधि मिली हुई थी पर उसके हाथ में कोई वास्तविक सत्ता नहीं थी।

हैप्सबर्ग परिवार

आस्ट्रिया की छोटी डची एक बहुत ही प्राचीन और धनी परिवार के शासन में आ गयी जिसे तेरहवीं शताब्दी के उनके निवास की गढ़ी के नाम पर हैप्सबर्ग परिवार कहा जाता था। कई सौभाग्यप्रद विवाह-सम्बन्धों के फलस्वरूप हैप्सबर्ग परिवार की विशाल रियासत बढ़ती ही गयी थी और उन्होंने वियना को राजधानी बनाकर एक शक्तिशाली राज्य की स्थापना कर ली थी। उस समय, तेरहवीं शताब्दी में, आस्ट्रिया का हैप्सबर्ग परिवार का

उस युग में जब अधिकांश शासकों का नैतिक स्तर बहुत निम्न हुआ करता था, मैरिया टेरेसा एक पतिपरायण पत्नी और वात्सल्यपूर्ण मां थी।

हिस्टौरिकल पिक्चर सर्विस

न्यूयार्क हिस्टौरिकल सोसायटी

तीन शताब्दियों के दौरान न्यू ऐम्सटर्डम का नन्हा सा नगर बढ़कर दुनिया का सबसे विशाल नगर बन गया जिसे आज न्यूयार्क कहा जाता है।

शासक पवित्र रोमन सम्राट् चुना गया। हैप्सबर्ग परिवार के लोग सन् १९१८ तक यूरोप के कुछ भागों के शासक बने रहे। प्रथम महायुद्ध के फलस्वरूप उन्हें अपना अन्तिम आस्ट्रिया-हंगरी का राज्य छोड़ना पड़ा।

हैप्सबर्ग परिवार और उनके प्रतिद्वंद्वी जर्मनी के एक बड़े राज्य प्रशिया के होएन्त्सालनों ने बहुत, बहुत वर्षों तक यूरोप को युद्ध की स्थिति में रखा। हम दो सौ वर्षों तक विस्तृत इस युद्धरत युग का जरा संक्षिप्त अवलोकन करेंगे।

पवित्र रोमन साम्राज्य का विभाजन

चार्ल्स पंचम—सन् १५१९ में चार्ल्स पंचम (१५१९-१५५६) को सम्राट् चुना गया। सम्राट् की उपाधि के अतिरिक्त चार्ल्स के पास अन्य तमाम उपाधियाँ थीं जो उसकी गरिमा और शक्ति को प्रकट करती थीं। वह स्पेन और उसके यूरोप में अधिकृत प्रदेशों और विशाल अमरीकी साम्राज्य का राजा था। आस्ट्रिया और उसके अधिकार के प्रदेश भी उसके थे।

चार्ल्स को केवल इस विशाल साम्राज्य का शासन ही नहीं, कुछ क्लेशकर समस्याओं का समाधान भी करना था। वह साम्राज्य और नीदरलैंड्स में प्रोटेस्टेंट सुधार और प्रतिद्वंद्वी शासकों के बीच चलने वाले युद्धों से परेशान था। थककर और बीमार पड़कर अंततः चार्ल्स पंचम ने गद्दी का परित्याग कर दिया और अपने साम्राज्य का विभाजन कर दिया। स्पेनी प्रदेश उसके पुत्र फिलिप द्वितीय (१५५६-१५९८) को और आस्ट्रियायी प्रदेश उसके भाई फर्डिनांड को मिले। आस्ट्रियायी शाखा के शासकों के साथ ही सम्राट् की उपाधि जुड़ती रही।

फिलिप द्वितीय के शासन-काल में स्पेनी हैप्सबर्ग शासन की प्रतिष्ठा में कमी

हालैंड हाथ से निकल गया—स्पेन पर फ़िलिप का शासन सफल नहीं था। चार्ल्स पंचम की तरह फिलिप द्वितीय भी कट्टर कैथोलिक था, लेकिन प्रोटैस्टैंटवाद का उच्छेद करने में वह अपने पिता से भी अधिक उत्साही था। हालैंड की उसकी हजारों प्रजा काल्विन मतानुयायी थी। फिर भी फ़िलिप ने प्रोटैस्टैंटों के विरुद्ध तहकीकात या इन्क्विज़िशन की पुनः स्थापना की। उसकी कठोरताओं के फलस्वरूप विलियम आफ़ आरेंज के नेतृत्व में सफल विद्रोह हुआ और फिलिप हालैंड को खो बैठा। स्पेन के लिए यह बहुत कड़ा धक्का था क्योंकि यूरोप के कुछ सबसे धनी नगर हालैंड में थे।

नीदरलैंड्स—इस तरह नीदरलैंड्स का विभाजन हो गया। बेल्जियम अगली दो शताब्दियों

तक स्पेनिश शासन में बना रहा जबकि उत्तरी भाग, हालैंड, आरेंज परिवार के शासन में स्वतन्त्र हो गया। डच प्राइवेटियर्स नामक देश के लिए लड़ने वाले निजी जहाजों ने महासागरों में स्पेनी और पुर्तगाली जहाजों पर धावे बोलना शुरू किया। शीघ्र ही हालैंड ने अपनी नौसेना और व्यापारिक जहाजी बेड़े का निर्माण कर लिया। एम्सटडर्म विश्व के प्रधान व्यापारिक नगरों में हो गया।

सत्रहवीं शताब्दी के प्रारम्भ में डच ईस्ट इंडिया कम्पनी स्थापित की गयी। इसने पुर्तगालियों को समृद्ध ईस्ट इंडीज़ से निकाल बाहर किया और द्वीपों तथा वहाँ जाने के जलमार्ग पर नियन्त्रण कर लिया। अन्य हालैंडवासी अमेरिका आये जहाँ उन्होंने न्यू एम्सटर्डम की स्थापना की और कुछ दिनों तक नयी दुनिया के उपनिवेशीकरण में अंग्रेजों के प्रतिद्वंद्वी रहे। वैसे शीघ्र ही उनका उत्तर अमरीकी उपनिवेश उनके हाथ से अंग्रेजों के हाथ में चला गया और डच लोगों को अमरीका में उपनिवेश स्थापित करने की प्रतियोगिता से अलग हो जाना पड़ा। फिर भी हालैंड यूरोप के धनिकतम देशों में बना रहा और पश्चिमी यूरोप के अन्तर्राष्ट्रीय मामलों में महत्त्वपूर्ण भाग लेता रहा।

औपनिवेशिक नीति—फ़िलिप की औपनिवेशिक नीति भी अबुद्धिमत्तापूर्ण थी। कर की ऊँची दरों की वजह से व्यापार घट गया और अमरीका के औपनिवेशिकों पर लगायी गयी पाबंदियों के फलस्वरूप वे वफादार नहीं रहे। स्पेनी अधिवासियों द्वारा आदिवासी "इंडियनों" के प्रति बर्बर व्यवहार के फलस्वरूप देशवासी जनता अनुत्साही और आलसी हो गयी। इस तरह जो बड़ी समृद्धि स्पेन को अपने उपनिवेशों से प्राप्त हुई होती, वह उसके हाथ आने से रह गयी।
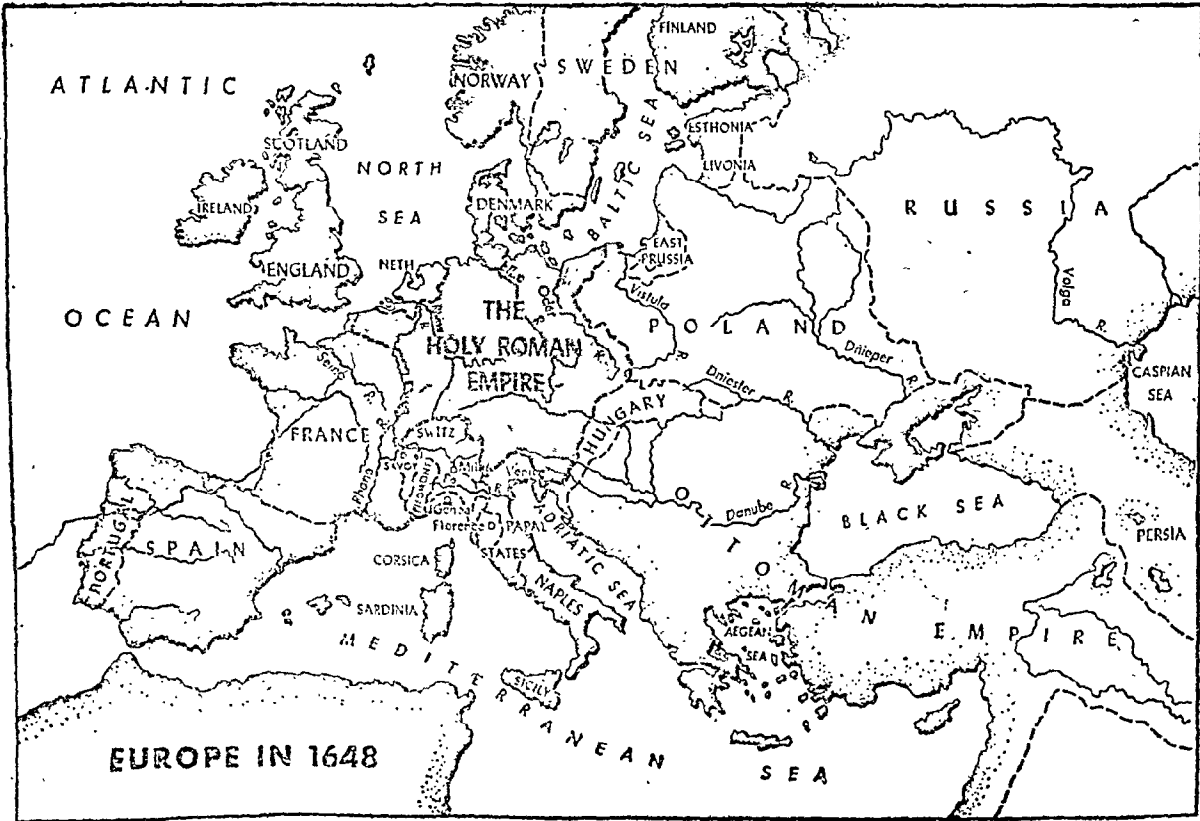
१६४८ में यूरोप

इंग्लैंड के साथ सम्बन्ध—फ़िलिप द्वितीय के शासनकाल में इंग्लैंड और स्पेन के बीच अच्छे सम्बन्ध नहीं थे। अपनी पत्नी मेरी ट्यूडर की मृत्यु के बाद फ़िलिप ने इंग्लैंड को रोमन कैथोलिक मत में बनाये रखने के लिए उस पर कुछ नियंत्रण रखने की कोशिश की। उसने रानी एलिजाबेथ से विवाह करने का प्रस्ताव किया लेकिन वह इतनी बुद्धिमती थी कि उसने इस तरह की शादी करना अस्वीकार कर दिया। फिर फ़िलिप ने उसके विरुद्ध कई तरीकों से षड्यंत्र किये। हर षड्यंत्र के असफल हो जाने के बाद फिलिप ने बलप्रयोग का सहारा लिया। उसने अपनी "दुर्द्धर्ष नौसेना" को सन् १५८८ में ब्रिटेन पर हमला करने के लिए भेजा जो बुरी तरह असफल हुआ।

फिलिप द्वितीय की असफलताओं के फलस्वरूप स्पेन की शक्ति में बड़ी कमी आयी। लगभग एक शताब्दी तक वह यूरोप का अगुआ देश रहा था। अब वह हालत नहीं रह गयी।

तीस-वर्षीय युद्ध के दौरान आस्ट्रियायी हैप्सबर्ग परिवार की प्रतिष्ठा में कमी

तीस-वर्षीय युद्ध का प्रारम्भ—आग्सबर्ग के शान्तिस्थापन समझौते के फलस्वरूप पवित्र रोमन साम्राज्य प्रोटैस्टैंट और कैथोलिक देशों में बँट गया था। तबसे इन दोनों वर्गों में धर्म के ऊपर लड़ाइयाँ हुआ करती थीं। बहुत से प्रोटैस्टैंट देश सम्राट् के शासन के अन्तर्गत नहीं रहना चाहते थे। इनमें से एक देश बोहेमिया था। सन् १६१८ में बोहेमिया में तीस-वर्षीय युद्ध शुरू हो गया। यह युद्ध धर्म के ऊपर भी था और सम्राट् की शहंशाही के विरुद्ध विद्रोह भी था।

बोहेमियनों या चेकों ने सम्राट् के तीन मंत्रियों को खिड़की से साठ फुट नीचे खाई में फेंक दिया। इसके बाद उन्होंने एक प्रोटैस्टैंट को गद्दी पर बैठने के लिए चुना और अपने पर पुनः अधिकार करने के सम्राट् के प्रयत्नों की अवहेलना की। सम्राट् ने उनकी चुनौती स्वीकार की और शीघ्र ही नये राजा को भाग जाना पड़ा और बोहेमियन कुचल दिये गये। इस शुरूआत के बाद युद्ध फैलता ही गया। दूसरे राज्यों में धार्मिक प्रश्न के साथ-साथ राजनैतिक मामले भी जुड़ गये और युद्ध समाप्त होते-होते अधिकांश पश्चिमी यूरोप किसी न किसी वजह से युद्ध में शरीक हो चुका था।

गुस्तावस ऐडोल्फस—युद्ध का स्वीडिश भाग भी बहुत महत्त्वपूर्ण था। सम्राट् के पास अच्छे

गुस्तावस ऐडोल्फस अनेक गुणों से सम्पन्न व्यक्ति था। वह योद्धा, जननेता, सुशिक्षित (वह सात भाषाएँ बोल सकता था) था और अपने युग के संगीत और साहित्य में रुचि रखता था।

कलवर सर्विस

किन्तु अत्यन्त क्रूर सेनापति थे जो विजय प्राप्त करते थे और अपनी सेनाओं को विजित प्रदेश लूटने और नष्ट करने की अनुमति दे देते थे। प्रोटैस्टैंटों को अपने प्रयोजन के समर्थक एक सेनापति की आवश्यकता थी। उन्हें शीघ्र ही ऐसा सेनापति गुस्तावस ऐडोल्फस के रूप में प्राप्त हो गया जो कट्टर प्रोटैस्टैंट था और स्वीडन की राज्यसीमा का विस्तार भी करना चाहता था। वह फिनलैंड, इस्टोनिया और लिवोनिया पर अधिकार जमा चुका था और अब बाल्टिक सागर के दक्षिण तटवर्ती प्रदेश पर अधिकार जमाना चाहता था। ऐडोल्फस बुद्धिमान मनुष्य, योग्य राजनीतिज्ञ और अत्युत्तम सैनिक और सेनापति था। साम्राज्य के बहुत से प्रोटैस्टैंट शासक उसके साथ हो गये। फ्रांस का प्रधानमंत्री रिशलू स्वयं रोमन कैथोलिक चर्च का कार्डिनल होते हुए भी ऐडोल्फस की अस्त्र-शस्त्र और धन से सहायता करने पर सहमत हो गया। उसे यह आशा थी कि ऐसा करके वह हैप्सबर्ग शासन को दुर्बल बना देगा और फ्रांस के लिए कुछ प्रदेश अधिकार में कर लेगा।

ऐडोल्फस ने एक विशाल अभियान चलाया। उसकी सेना में सैनिकों की संख्या कम थी पर वे सम्राट् की सेनाओं की तुलना में अच्छी तरह अनुशासित थे। ऐडोल्फस को हर ओर विजय मिली। १६३२ ई० में हुई एक महत्त्वपूर्ण लड़ाई में उसके नेतृत्व में प्रोटैस्टैंट विजयी हुए, पर उनका नेता मारा गया। उसके तुरन्त बाद ही पवित्र रोमन साम्राज्य के हैप्सबर्ग सम्राट् को भी अपना सर्वोत्तम सेनापति गँवा देना पड़ा।

वेस्टफैलिया की सन्धि—जब रिशलू ने फ्रांस के लिए प्रदेश हथियाने और हैप्सबर्गों को कमजोर करने का अवसर देखा तो उसने फ्रांस को सक्रिय रूप से युद्ध में लगा दिया। वैसे यह प्रकट था कि दोनों पक्ष युद्ध से तंग आ चुके थे। जर्मन राज्यों से न तो सम्राट् और न उसके शत्रु ही बाहर किये जा सके। फलस्वरूप सन् १६४८ में लड़ाई बन्द हो गयी।
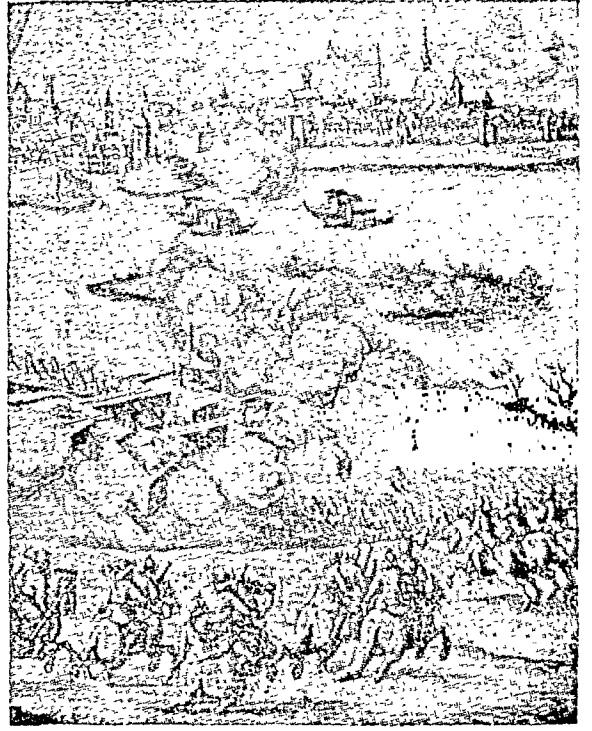
हिस्टौरिकल पिक्चर सर्विस

गुस्तावस ऐडोल्फस की सेना पहली ऐसी सेना थी जो अपने साथ रसद लेकर चलती थी, और लूट-मार और चोरी की रसद पर निर्भर नहीं करती थी।

तीस-वर्षीय युद्ध इतिहास के सर्वाधिक विनाशकारी युद्धों में से था। जर्मन राज्य दीन और विध्वस्त हो गये। जनसंख्या अत्यन्त कम हो गयी और शिक्षा तथा सामान्य संस्कृति का स्तर बहुत गिर गया। युद्ध की शुरूआत धार्मिक द्वंद्व से हुई थी और अंत तक आते-आते यह शासकों और राज्यों का सत्ता के लिए संघर्ष हो गया।

सन् १६४८ में वेस्टफैलिया की संधि पर हस्ताक्षर हुए। यह आधुनिक यूरोप की उन संधियों में से पहली थी जिनसे इस महाद्वीप का राजनैतिक नक्शा ही बदल गया। हैप्सबर्गों को स्विट्जरलैंड और हालैंड की स्वाधीनता स्वीकार करनी पड़ी यद्यपि वास्तव में ये देश बहुत पहले स्वतन्त्र हो चुके थे। इस संधि के अनुसार बाल्टिक तट का कुछ प्रदेश स्वीडन को मिला और फ्रांस प्राप्त प्रदेशों के फलस्वरूप अपनी प्राकृतिक सीमाओं के अधिक

निकट आ गया। पवित्र रोमन साम्राज्य के राज्यों के व्यवहारत: स्वतंत्र हो जाने से सम्राट् की शक्ति बहुत कम हो गयी। आस्ट्रिया के आर्कड्यूक के रूप में हैप्सबर्ग परिवार के शासक के पास कुछ शक्ति थी लेकिन प्रशिया का उत्थानरत राज्य, होहेन्त्सालर्न परिवार के शासन में वहाँ भी उसके लिए चुनौती हो गया।

मेरिया टेरेसा—एक शताब्दी बाद मेरिया टेरेसा (१७४०-१७८०) आस्ट्रिया की गद्दी की उत्तराधिकारिणी हुई। उसके पिता को विश्वास नहीं था कि कोई नारी पड़ोसी राजाओं के विरुद्ध होते हुए आस्ट्रिया के सिंहासन पर बैठी रह सकेगी। अत: उसने यूरोप के शासक परिवारों से उसके शासन-अधिकार का समर्थन करते हुए एक दस्तावेज पर हस्ताक्षर करवाया। इस सुलहनामे को "व्यावहारिक स्वीकृति" ("प्रागमैटिक सैंक्शन") कहा जाता है। मेरिया टेरेसा को मिला हैप्सबर्ग प्रदेश असंगठित था। उसकी सेना गरीब थी और उसके राजकोश में धन नहीं था। इसके अतिरिक्त लोभी पड़ोसी अपना वचन भूलने को तैयार बैठे थे और आक्रमण की तैयारी कर रहे थे।

१. पवित्र रोमन सम्राट् अपने पद किस तरह प्राप्त करते थे ?
२. हैप्सबर्ग परिवार की शक्ति में वृद्धि का वर्णन करिए।
३ यूरोप और नयी दुनिया (अमरीका) के किन क्षेत्रों पर चार्ल्स पंचम का शासन था ?
४. अपने साम्राज्य की समस्याओं के अतिरिक्त और किन गम्भीर समस्याओं का सामना चार्ल्स पंचम को करना पड़ा ?
५. चार्ल्स पंचम ने पदत्याग क्यों किया और उसका राज्य उत्तराधिकार में किसे मिला ?
६. फिलिप द्वितीय के शासनकाल में स्पेन पर कौन सी आपदाएँ आयीं और क्यों ?
७. यूरोपीय जगत् में हालैंड को प्रमुखता का स्थान किस तरह प्राप्त हुआ ?
८. तीस-वर्षीय युद्ध का प्रारम्भ किस तरह हुआ ?
९. तीस-वर्षीय युद्ध में ऐडोल्फस ने क्या भाग लिया ?
१०. इस युद्ध की समाप्ति की संधि का नाम और उसकी तिथि बतलाइए। इसकी प्रमुख व्यवस्थाओं का उल्लेख करिए।
११. जर्मन राज्यों पर तीस-वर्षीय युद्ध का किस तरह प्रभाव पड़ा ? इसका हैप्सबर्ग शासकों और होएन्त्सालर्न शासकों पर क्या प्रभाव पड़ा ?
१२. "व्यावहारिक स्वीकृति" क्या थी ?

होएन्त्सालर्न शासकों और हैप्सबर्ग शासकों में प्रतिद्वंद्विता के फलस्वरूप एक और बड़ा युद्ध

होएन्त्सालर्न शक्ति में वृद्धि—जर्मन राज्यों में एक छोटी सी स्थिति से उठकर प्रशिया धीरे-धीरे महान् शक्ति बन गया। यह मुख्यत: होएन्त्सालर्न परिवार के एक के बाद एक कई शासकों के प्रयत्नों का फल था। इस परिवार के हर शासक ने अपने राज्य में कुछ और प्रदेश जोड़ने में गौरव समझा। तीसवर्षीय युद्ध के बीच महान् निर्वाचक फ्रेडरिक विलियम (१६४०-१६८९) शासक हुआ। उसने न केवल अपने राज्य का विस्तार किया बल्कि अपने बिखरे हुए प्रदेशों के शासन को संयुक्त करके शक्तिशाली राजतन्त्र का निर्माण करने में भी, जिसमें उसकी सत्ता निरंकुश थी, वह सफल हुआ। उसने उस समय फ्रांस में लुई चौदहवें द्वारा उत्पीड़ित हो रहे और देश से निष्कासित किये जा रहे ह्यूगनाटों के आने को प्रोत्साहन दिया और धार्मिक सहिष्णुता की स्थापना की। उसने कृषि और उद्योग को प्रोत्साहन दिया और अपनी सुरक्षा की आवश्यकता से बड़ी सेना का निर्माण किया।

फ्रेडरिक द्वितीय—जिस वर्ष मेरिया टेरेसा आस्ट्रिया की रानी हुई, उसी वर्ष "महान्" कहा जाने वाला फ्रेडरिक द्वितीय प्रशिया की गद्दी पर बैठा। दो प्रमुख जर्मन राज्यों के शासकों के रूप में उनके बीच एक संघर्ष बढ़ता रहा। यद्यपि फ्रेडरिक द्वितीय ने मेरिया टेरेसा के शासन-प्रदेश को मान्यता देने वाली "व्यावहारिक स्वीकृति" पर हस्ताक्षर किया था, फिर भी उसने आस्ट्रिया पर
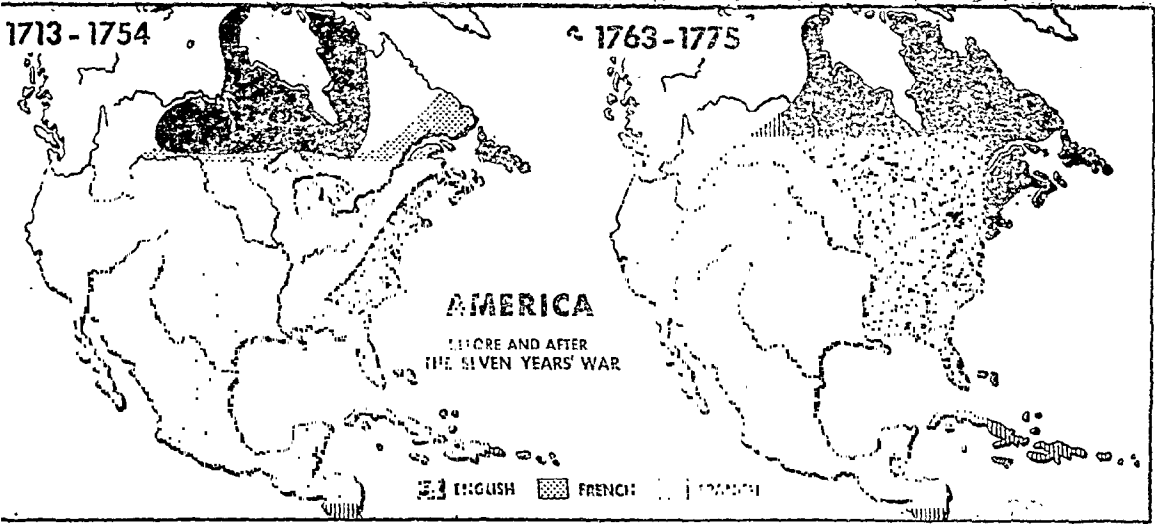
अमरीका में बिखरी हुई छोटी फ्रांसीसी चौकियों की कई साल तक इंग्लैंड को कोई परवाह नहीं थी। लेकिन जब फ्रांसीसी ओहायो की घाटी में चले आए, तब अंग्रेजों को यह भय समा गया कि उन्हें अपने सभी उपनिवेशों में पीछे न हटा दिया जाए। आज हमें सप्तवर्षीय युद्ध का अमरीकी महाद्वीप पर क्या प्रभाव दिखाई देता है?

आक्रमण करके ओडर नदी की उपजाऊ घाटी साइलेसिया पर अधिकार कर लिया जिसकी जनसंख्या प्रशिया के बराबर थी। इससे सन् १७४० में आस्ट्रियायी उत्तराधिकार का युद्ध नामक लड़ाई शुरू हो गयी।

आस्ट्रियायी उत्तराधिकार का युद्ध—साइलेसिया पर अधिकार के फलस्वरूप दूसरे देशों, विशेषकर फ्राँस और इंग्लैंड को अपना पक्ष ग्रहण करने का अवसर मिला। युद्ध का क्षेत्र व्यापक होकर सुदूर अमेरिका तक फैल गया जहाँ फ्राँसीसी और अंग्रेज सेनाओं में अपने उपनिवेशों पर अधिकार के प्रश्न पर लड़ाइयाँ हुईं। सन् १७४८ में युद्ध की समाप्ति होने पर यूरोपीय देश अपनी युद्धपूर्व की स्थिति पर वापस आ गये। पर प्रशिया साइलेसिया पर अपना अधिकार बनाये रहा। यह अनावश्यक युद्ध था जिससे कुछ भी प्राप्ति नहीं हुई।

यूरोप में सप्तवर्षीय युद्ध—इस युद्ध की समाप्ति के बाद भी शान्ति नहीं रही। मेरिया टेरेसा को पता था कि फ्रेडरिक महत्त्वाकांक्षी है और सम्भवतः फिर आक्रमण करेगा। अतः उसने इस अवसर का सामना करने की तैयारी की। इंग्लैंड का विश्वास न करके मेरिया आस्ट्रिया के पुराने शत्रु फ्रांस की ओर सहायता के लिए उन्मुख हुई जिससे इंग्लैंड प्रशिया के फ्रेडरिक की तरफ हो गया। १७५६ की ग्रीष्म ऋतु बीतते-बीतते यूरोप में पुनः युद्ध शुरू हो गया। अंग्रेज़ों ने कुछ सैनिकों और अधिक धन से अपने प्रशियायी मित्र की सहायता की पर उनकी मुख्य रुचि अमरीका और भारत में फ्राँसीसी साम्राज्य की शक्ति विच्छिन्न करने में थी। ब्रिटेन साइलेसिया पर प्रशिया का अधिकार बनाये रखने को उतना सचेष्ट नहीं था। न ही फ्राँस साइलेसिया पर पुनः आस्ट्रिया का अधिकार करवाने को बहुत उत्सुक था। यूरोप में बहुत अधिक युद्ध होते रहे जिनमें फ्रेडरिक ने अपनी सेनाओं से बड़ी सेनाओं के विरुद्ध उल्लेखनीय विजय प्राप्त करते हुए महान् सेनापतित्व का प्रदर्शन किया। यह युद्ध सात वर्षों तक चलता रहा और इसे सप्तवर्षीय युद्ध कहा जाता है।

अमरीका में सप्तवर्षीय युद्ध—अमरीका में लड़ाई सन् १७५४ में शुरू हुई जब फ्राँसीसियों ने ओहायो नदी की घाटी के प्रदेश पर अधिकार कर

हिस्टौरिकल पिक्चर सर्विस
क्लाइव ने दिलेरी से भारत के स्थानीय राजाओं पर हमला किया। यहाँ महान् मुगल सम्राट् उसे भारत की उर्वरा भूमि पर एक इलाका दे रहा है।

लिया जिसे अंग्रेज अपना प्रदेश मानते थे। सप्तवर्षीय युद्ध का यह दौर फ्राँसीसी और इंडियन युद्ध कहलाता है। युवक जेम्स वूल्फ के नेतृत्व में ब्रिटिश सेनाओं ने मार्क्विस द मांकम और उसके फ्राँसीसी सैनिकों को क्यूबेक नामक स्थान पर सन् १७६० में हरा दिया। युद्ध में दोनों सेनापतियों की जान चली गयी। ब्रिटेन को सेन्टलारेंस की खाड़ी के दो छोटे द्वीपों को छोड़कर कनाडा और मिसीसिपी नदी के पूर्व का सारा फ्राँसीसी प्रदेश मिल गया। स्पेन बाद में युद्ध में शामिल हुआ और उसे मिसीसिपी नदी के पश्चिम का फ्राँसीसी प्रदेश दिया गया।

भारत में सप्तवर्षीय युद्ध—भारत में ब्रिटिश ईस्ट इण्डिया कम्पनी के एक क्लर्क राबर्ट क्लाइव ने फ्राँसीसियों के विरुद्ध युद्ध में अंग्रेजों का नेतृत्व किया। फ्राँसीसी दक्षिण भारत में पांडिचेरी के बन्दरगाह के आस-पास बहुत सुदृढ़ स्थिति में थे। उन्होंने फ्रांस के समर्थक राजाओं को गद्दी पर बिठाने की कोशिश की। अंग्रेजों ने प्रतिद्वंद्वी राजाओं का समर्थन किया। दोनों देशों ने सिपाहियों की देशी टुकड़ियों का अपनी ओर से लड़ने में उपयोग किया। क्लाइव स्थानीय लोगों को घूस देकर और कौशलपूर्ण सैनिक आघातों से अपने पक्ष के राजा को गद्दी पर बैठाने में सफल हुआ और इस तरह दक्षिण में उसकी शक्ति बढ़ गयी। उत्तर में कलकत्ता के आस-पास क्लाइव को, न केवल फ्राँसीसियों का, बल्कि अंग्रेजों के विरोधी एक युवक भारतीय शासक का भी सामना करना पड़ा। क्लाइव के नेतृत्व में इस शासक को पराजित कर गद्दी पर से उतार दिया गया। वहाँ से आगे बढ़कर क्लाइव ने फ्राँसीसियों को भी पराजित किया। लड़ाई जारी रही पर अंत में फ्रांस को भारत में अंग्रेजों का आधिपत्य स्वीकार करना पड़ा।

१७६३ ई० में हुई पेरिस की सन्धि में एक सामान्य बन्दोबस्त किया गया जिसमें साइलेसिया पर प्रशिया का आधिपत्य भी स्वीकार किया गया। आस्ट्रिया के हैप्सबर्ग शासक अवनत हो गये और प्रशिया को यूरोप के शक्तिशाली राज्यों में माना जाने लगा। यद्यपि युद्ध आस्ट्रिया द्वारा साइलेसिया पर पुनः अधिकार करने की कामना और प्रशिया के भय से शुरू हुआ था पर इसके सबसे महत्त्वपूर्ण फल का सीधा प्रभाव ब्रिटेन और फ्राँस पर पड़ा। भारत और अमरीका की लड़ाइयों के फलस्वरूप फ्राँसीसी साम्राज्य छिन्न-भिन्न हो गया और ब्रिटिश साम्राज्य विश्व में सबसे शक्तिशाली हो गया।

प्रशिया पर एक हितकारी निरंकुश राजा का शासन

फ्रेडरिक द्वितीय चतुर सेनापति होने के साथ-साथ योग्य शासक भी था। वह अठारहवीं शती के उन शासकों में से था जिन्हें हितकारी या प्रबुद्ध निरंकुश राजा कहा जाता था। ये शासक निरंकुश शासन में विश्वास करते थे पर फ्रेडरिक के अनुसार ये यह भी मानते थे कि शासक अपनी प्रजा की भलाई के लिए हैं। वह और दूसरे हितकारी निरंकुश राजा

यह मानते थे कि प्रजा का हित किस बात में है, यह उन्हें पता है। ये शासक शिक्षा के प्रसार में रुचि रखते थे और अपने समय के लेखकों और विचारकों से परिचित थे।

प्रबुद्ध निरंकुश शासक के रूप में फ्रेडरिक ने प्रशिया में बहुत से सुधार किये। वह सभी धर्मों के प्रति उदार था और उसने उत्पीड़ित ह्यूगनाटों को अपने देश में बसने के लिए आमन्त्रित किया। फ्रेडरिक ने दलदलों को सुखाने का प्रबन्ध किया और प्रशिया में कृषि तथा उद्योगों को प्रोत्साहन दिया। उसने देश के कानून को स्पष्ट बनाया और जनता के लिए स्कूलों और अकादमियों की स्थापना की।

लेकिन फ्रेडरिक के उत्तराधिकारी बहुत दुर्बल हुए और कुछ समय तक प्रशिया में बहुत कम प्रगति हुई।

१. होएन्त्सालर्न शक्ति के अभ्युदय का वर्णन करिए।
२. फ्रेडरिक द्वितीय के शासनकाल तक प्रशिया के विकास का वर्णन करिए।
३. प्रशिया पर किस परिवार का शासन था ?
४. आस्ट्रियायी उत्तराधिकार के युद्ध का संक्षिप्त विवरण दीजिए।
५. आस्ट्रिया और प्रशिया के बीच युद्ध में फ्रांसीसी और अंग्रेज क्यों शामिल हुए ?
६. यूरोप में सप्तवर्षीय युद्ध शुरू होने का कारण क्या था और यह कहां तक फैला ?
७. फ्रेडरिक द्वितीय को 'महान्' क्यों कहा जाता है ?
८. हितकारी या प्रबुद्ध निरंकुश राजा के लक्षण क्या थे ? अपने राज्यों पर शासन करने के सम्बन्ध में उनके क्या विचार थे ?

जर्मनों का संस्कृति में योगदान

यह असम्भव लग सकता है पर जिन दिनों प्रतिद्वन्द्वी राजाओं के बीच युद्ध चल रहे थे, और प्रदेश हारे या जीते जा रहे थे; उन्हीं दिनों आस्ट्रिया और अन्य जर्मन राज्यों की जनता दूसरी चीजों में भी रुचि ले रही थी। धर्म, विज्ञान, साहित्य, दर्शन और संगीत को सभी जर्मन देशों में महत्ता प्राप्त थी और इन सभी क्षेत्रों में संस्कृति में कुछ उल्लेखनीय योगदान किया गया।

धर्म—जर्मनी में कुछ लोग लूथरन चर्च से निराश थे। इसने पोप की शक्ति का परित्याग कर दिया था पर अभी भी व्यक्तियों को अपने मतों का अनुसरण करने का अधिकार नहीं था। सत्रहवीं शती के मध्य में लूथरन चर्च के भीतर अधिक जनतांत्रिकता के लिए एक आन्दोलन शुरू हुआ। इस आन्दोलन के अनुयायियों को इनके आलोचक धार्मिकतावादी ("पाएटिस्ट") कहते थे। धार्मिकतावादियों का विश्वास था कि ईसाई सिद्धांत पादरियों द्वारा निश्चय की नहीं, निजी वस्तु होनी चाहिए। इन शिक्षाओं का जर्मनी में प्रोटेस्टेंटवाद पर बहुत प्रभाव पड़ा।

साहित्य—अठारहवीं शती में कहीं जाकर जर्मन राज्यों में उल्लेखनीय जर्मन साहित्य की रचना हुई। योहान वुल्फगांग गेटे (१७४९-१८३२) उनका पहला महान् लेखक और दार्शनिक था। उसकी रचनाओं की १३२ जिल्दों में सबसे विख्यात 'फाउस्ट' नामक उसका नाटक है। इस महान् कृति में वृद्ध डा० फाउस्ट युवावस्था और प्रेम के बदले में अपनी आत्मा को शैतान के हाथ बेच देते हैं। एक आदमी किन ऊँचाइयों तक उठ सकता है और किन गहराइयों तक गिर सकता है, यह "फाउस्ट" में चित्रित है। गेटे ने उपन्यास, कविताएँ और दार्शनिक ग्रंथ भी लिखे।

अठारहवीं शती का दूसरा जर्मन लेखक नाटककार फ्रेडरिख शिलर (१७५९-१८०५) था। उसका अन्तिम और सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण नाटक "विलियम टेल" था जिसमें स्विस लोगों के स्वाधीनता संग्राम को गौरवान्वित किया गया था। शिलर ने बहुत-सी ऐसी कविताएँ लिखीं जिनसे जर्मनों को मातृभूमि-प्रेम की प्रेरणा मिली

"फाउस्ट" और "विलियम टेल" के आधार पर संगीतिकाएँ (आपेरा) बनायी गयी हैं जिनके रूप में दोनों नाटक आज बहुत सुविदित हैं। गेटे के कई नाटकों के लिए संगीतरचना भी हुई है। वस्तुतः

न्यूयार्क सिटी सेंटर

पेरा **फास्ट** का संगीत बहुत मधुर होता है और इसकी
च व्यवस्था और पात्र बहुत भड़कीले होते हैं।

शेक्सपियर को छोड़कर गेटे ने संगीतज्ञों को जितना प्रभावित किया है उतना किसी दूसरे कवि ने नहीं।

संगीत—जर्मन लोग हमेशा संगीत से प्रेम करते रहे हैं। हर अवसर पर वे गाते हैं और उनके लोकगीत विश्व के सर्वाधिक प्रिय लोकगीतों में हैं। आश्चर्य नहीं कि आजतक पैदा हुई संगीत की महत्तम प्रतिभाओं में से कई जर्मनी में पैदा हुईं। इनमें से एक जार्ज फ्रेडरिख हैंडेल था जिसने "मसीहा" आदि कई संगीतियों ("आरेटरियों") की रचना की।

जर्मनी में संगीतकला की कुछ और प्रतिभाएँ भी हुईं। योहन सेबास्टियन बाख (१६८५-१७५०) नामक आर्गन-वादक और संगीतलेखक को प्रायः "आधुनिक संगीत का पिता" कहा जाता है। उसकी शैली पहले के संगीतलेखकों से भिन्न और अधिक प्रयत्नसाध्य थी। उसका अधिकांश संगीत धार्मिक अवसरों के लिए लिखा गया था।

वुल्फगांग एमेडियस मोत्सार्ट (१७५०-१७९१) इतना प्रतिभावान् संगीतज्ञ था कि पांच वर्ष का होते होते वह न केवल हार्प्सिकार्ड बजाना सीख गया बल्कि अपने बजाने के लिए संगीतरचना भी करता था। बहुत ही कम आयु में दिवंगत होने के बावजूद उसने छह सौ से अधिक संगीतरचनाएँ कीं जिन्हें विश्व के सर्वोत्तम संगीत में स्थान दिया जाता है। "द मैजिक फ्लूट," और "द मैरिज आफ फिगारो" जैसी लोकप्रिय संगीतिकाएँ उसकी रचनाओं में हैं।

मोत्सार्ट का संगीत-अध्यापक फ्रैंज जोसेफ हीडेन (१७३२-१८०९) अपनी सिम्फनियों और संगीतियों ("ओरैटोरियो") के लिए प्रसिद्ध है। "स्ट्रिंग क्वार्टेट्स" के लिए संगीत-रचना करने में भी वह निपुण था।

बहुत से जर्मन राज्यों के शासक प्रसिद्ध संगीतज्ञों और संगीतरचयिताओं को अपने दरबारों में संगीत-प्रदर्शन के लिए आमंत्रित करते थे। संगीत-जगत् में इस भूमिका के बाद संगीतज्ञ विशाल श्रोता-समुदायों के सामने संगीत-प्रदर्शन करते हुए यूरोपीय राजधानियों की यात्रा करते थे। अठारहवीं शती के जर्मन राज्यों ने संगीत के क्षेत्र में संसार का नेतृत्व किया।

१. धार्मिकतावादी कौन थे?
२. गेटे और शिलर की एक-एक कृति का नाम बताइये। इनमें क्या वर्णित है?

अनेक प्रतिभाशाली संगीतकारों के विपरीत, मोजार्ट को उसके प्रतिभाशाली परिवार से संगीत में प्रोत्साहन मिला।

बैटीमैन आर्का:व

३. चार जर्मन संगीतज्ञों के नाम बताइए और बतलाइए कि संगीत के क्षेत्र में इनका योगदान क्या रहा ?

विचार-विमर्श के लिए प्रश्न

१. लोग पवित्र रोमन साम्राज्य के सम्राट् क्यों होना चाहते थे जब कि इस पद से इतनी कम सत्ता मिलती थी और इतनी अधिक समस्याओं का सामना करना पड़ता था ?

२. विलियम आफ आरेंज को प्राय: अपने देश का जार्ज वाशिंगटन क्यों कहा जाता है ?

३. गुस्तावस ऐडोल्फस के समय में स्वीडन यूरोप के महान् राष्ट्रों में था। यह स्थान बनाये रखने में स्वीडन की भौगोलिक स्थिति क्यों हानिकर हुई ?

४. क्यों मेरिया टेरेसा के समय के बाद नारियों के प्रति दृष्टिकोण में इतना अन्तर आ गया है कि शासन का प्रधान होने की किसी नारी की योग्यता में सन्देह न हो ?

५. होएन्त्सालर्न शासक कृपण और मितव्ययी थे जबकि उस समय के फ्रांसीसी शासक खूब शान-शौकत से रहते थे और मुक्तहस्त खर्च करते थे। क्या अन्ततः होएन्त्सालर्न लोगों की मितव्ययिता लाभप्रद सिद्ध हुई ?

६. क्या आप मित्र से अचानक शत्रु हो जाने का इतिहास में कोई और वैसा उदाहरण ढूँढ सकते हैं जैसा ब्रिटेन और आस्ट्रिया के बीच हुआ ?

७. सप्तवर्षीय युद्ध की समाप्ति के समय एक प्रसिद्ध ब्रिटिश कूटनीतिज्ञ ने कहा कि ब्रिटेन दुनिया की राजधानी हो गया है। इस कथन का क्या औचित्य था ?

८. संयुक्त राज्य अमरीका का उपनिवेश-कालीन इतिहास किस अर्थ में वास्तव में यूरोपीय इतिहास था ?

९. यद्यपि प्रबुद्ध निरंकुश शासकों का विश्वास था कि वे अपनी प्रजा के लाभ के लिए शासन करते हैं फिर भी उनकी शासनपद्धति जनता के लिए लोकतांत्रिक शासन जितनी लाभकर क्यों नहीं थी।

इतिहास के उपकरणों का उपयोग

एक. नाम, तिथियाँ और स्थान

(१) निम्नलिखित की व्याख्या करिए—

हितकारी निरंकुश शासक; प्रबुद्ध निरंकुश शासक; अजेय नौसेना; धार्मिकतावादी; व्यावहारिक स्वीकृति; सिपाही; वेस्टफैलिया की संधि; ह्यूगनाट; इन्क्विज़िशन, संगीति (आरेटेरियो); सिम्फनी।

(२) ये तिथियाँ किस लिए उल्लेखनीय हैं ?

१५१९-१५५६; १६१८-१६४८; १६४८; १६४०; १७५६-१७६३; १७६३।

(३) इन स्थानों को मानचित्र में ढूंढ़िए :

आस्ट्रिया, बाल्टिक सागर, बोहेमिया, कलकत्ता, ईस्ट इंडीज, इस्टोनिया, फिनलैंड, हंगरी, भारत, लिवोनिया, निम्नतल के देश, मिसीसिपी नदी, न्यू एम्सटर्डम, ओडर नदी, ओहायो नदी, पांडिचेरी, प्रशिया, क्यूबेक, साइलेसिया, स्वीडन, वियेना।

(४) क्या आप इन व्यक्तियों का परिचय दे सकते हैं ?

बाख, कैथरीन द्वितीय, सम्राट् चार्ल्स पंचम, राबर्ट क्लाइव, फ्रेडरिक द्वितीय, फ्रेडरिक विलियम (महान् निर्वाचक) ऐलिजाबेथ, मेरी ट्यूडर, जार्ज द्वितीय, गेटे, गुस्तावस ऐडोल्फस, हैंडेल, हेडेन, जोसफ द्वितीय, लुई चौदहवां, मेरिया टेरेसा, मांकम्, मोत्सार्ट, फाउस्ट, रिशलू, शिलर, विलियम आफ आरेंज, जेम्स वूल्फ।

दो. अभिव्यक्ति के लिए अभ्यास

(१) (अ) कांग्रेस के सदस्यों या विदेशों में राजदूतों के रूप में अमरीका में बड़े पदों पर नियुक्त महिलाओं की एक सूची बनाइए।

(ब) अपने राज्य की महिला अधिकारियों की एक सूची बनाइए।

(२) निम्नलिखित व्यक्तियों में से किसी एक को चुनकर कक्षा में उसकी उपलब्धियों का मौखिक वर्णन करिए :

चार्ल्स पंचम, फिलिप द्वितीय, राबर्ट क्लाइव, फ्रेडरिक द्वितीय, रिशलू, शिलर, बाख, हैण्डेल, मेरिया टेरेसा, विलियम आफ आरेंज, गुस्तावस ऐडोल्फस, गाटहोल लेसिंग, महान् निर्वाचक, मोत्सार्ट, हेडेन।

(३) अठारहवीं शताब्दी में भारत रोचक और समृद्ध देश था। निम्नलिखित भारत सम्बन्धित विषयों में से अपनी अभिरुचि के किसी विषय का मौखिक वर्णन करिए :—

भारतीय राजा, भारत की धार्मिक प्रथाएँ, भारतीय फकीर, हिन्दू वास्तुकला।

(४) कक्षा को छोटे-छोटे दलों में विभाजित कर प्रत्येक द्वारा निम्नलिखित कथनों के पक्ष और विपक्ष में चर्चा करवाइए :

(अ) साइलेसिया पर फ्रेडरिक द्वितीय का आक्रमण न्यायसंगत नहीं था।

(ब) चार्ल्स पंचम का साम्राज्य बहुत बड़ा था।

(स) इंग्लैंड के लिए अपने मित्र देश आस्ट्रिया का साथ छोड़ देना उचित नहीं था।

(द) ईस्ट इंडिया कम्पनी ने भारत में कठोर तरीके अपनाये।

(य) हितकारी निरंकुश शासक शासन के "दैवी अधिकार" वाले स्टुअर्ट शासकों से शासक के रूप में बेहतर नहीं था।

(५) कक्षा से दो विद्यार्थियों को चुनिए जिनमें एक संवाददाता बने और दूसरा मुलाकात देने वाला हो। संवाददाता फ्रेडरिक महान् के दरबार के प्रतिनिधि से अपनी जनता के लिए सम्राट् की योजनाओं के बारे में वार्ता करे।

तीन. संगीत से सम्बन्धित इतिहास

(१) बहुत से संगीत-रचयिताओं ने इतिहास की घटनाओं की प्रशंसा में या राष्ट्रीय नायकों की स्मृति में सिम्फनी या अन्य रचनाएँ रची हैं। कम से कम किसी एक का नाम बताइए। यदि सम्भव हो तो उस सम्पूर्ण संगीत-रचना का या उसके किसी अंश का प्रदर्शन भी करिए।

(२) जानकार लोगों को कक्षा के सम्मुख इस अध्याय में उल्लिखित कुछ संगीतकारों के विषय में वार्ता के लिए बुलाइए। वार्ता संगीत के रिकार्डों के साथ हो।
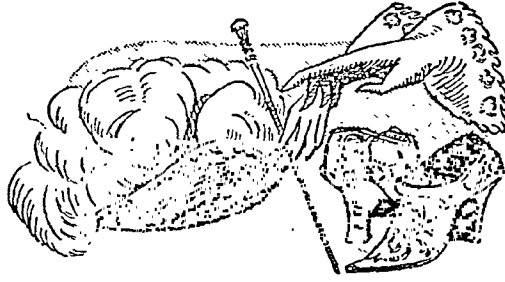
२४ फ्राँसीसी राजाओं की शक्ति में वृद्धि

जहाँ एक ओर ब्रिटेन में शासन धीरे-धीरे अविरत प्रयत्नपूर्वक किन्तु स्थिर, सीढ़ी-दर-सीढ़ी गति से जनतंत्र की ओर आगे बढ़ रहा था, वहाँ फ्राँसीसी शासन की दशा दूसरी ही थी। मध्ययुग में फ्रांस में राजा के हाथ में एक सशक्त केन्द्रीय शासन होने की ओर झुकाव था। राजा के हाथों में शक्ति धीरे-धीरे करके सामंतों के हाथ से आयी थी जो अपने अधिकारों की रक्षा के प्रति बहुत सचेत थे। मध्ययुग की समाप्ति के आस-पास सौ वर्षों के युद्ध के फलस्वरूप राजा के पास एक स्थायी सेना हो गयी और इसके निर्वाह के लिए लगे कर से प्राप्ति भी होने लगी।

फ्राँस का एकीकरण

फ्रांसिस प्रथम—जब फ्रांसिस प्रथम (१५१५-१५४७) गद्दी पर बैठा, तब तक फ्राँस संयुक्त और सशक्त हो चुका था। इसके बावजूद फ्रांस में भय बना हुआ था। आस्ट्रिया के शासक हैप्सबर्ग परिवार ने एक बड़े साम्राज्य का निर्माण कर लिया था जिसका प्रधान उस समय चार्ल्स पंचम था। फ्रांसिस ने देखा कि वह हर तरफ से हैप्सबर्ग प्रदेशों से घिरा हुआ था क्योंकि नीदरलैंड्स जर्मन राज्य, मिलान और स्पेन पर चार्ल्स का अधिकार था। चार्ल्स और फ्रांसिस के बीच संघर्ष बढ़ता रहा और अंत में इटली के प्रदेशों के ऊपर १५२२ ई० में युद्ध छिड़ गया। प्रधानतया इटली में ही हुआ यह युद्ध बीच-बीच में रुककर सैंतीस वर्षों तक चलता रहा। इसके बीच में ही फ्रांसिस और चार्ल्स दोनों की मृत्यु हो गयी। अंत में इटली पर हैप्सबर्ग परिवार का नियंत्रण स्वीकार किया गया और फ्रांसिस को अपनी पूर्वी सीमा पर छोटे किन्तु महत्त्वपूर्ण प्रदेश मिले।

फ्रांसिस की सेनाएँ इटली में सफल नहीं हुईं पर यह अभियान फ्रांसीसी इतिहास में महत्त्वपूर्ण था। इटली से लौटते हुए फ्रांसीसी सिपाहियों ने पुनर्जागरण के आन्दोलन को आल्प्स पर्वत के उत्तर में प्रचारित किया। वे अपने साथ इटली का ज्ञान और वहाँ की कलाएँ ले आये जिनके आधार पर फ्रांस में एक नयी संस्कृति विकसित हुई। फ्रांसिस स्वयं नये ज्ञान-विज्ञान में बहुत रुचि रखता था और उसने अपने दरबार में इतनी नयी रीतियों का प्रचलन किया कि उसे "जेण्टिलमैन किंग" ("नेक राजा") कहा जाने लगा। पुराना राजभवन भी अब उसे पसन्द नहीं आ रहा था और उसने अपने लिए फांतेनब्लो में एक नया राजभवन बनाने के लिए इटली के कुछ श्रेष्ठतम वास्तु-शिल्पियों को नियुक्त किया।

धार्मिक गृहयुद्ध—फ्रांसिस प्रथम की मृत्यु के बाद फ्राँस में पचास वर्षों तक धार्मिक युद्ध चलते रहे। राजा लोग प्रोटैस्टैंट ह्यूगनाटों को पकड़वाकर निर्दयतापूर्वक उत्पीड़ित करते थे। प्रोटैस्टैंट लोग इतने शक्तिशाली थे कि उन्होंने इसका सामना किया और एक ह्यूगनाट, हेनरी चतुर्थ (१५८९-१६१०) के गद्दी पर बैठने तक अत्यन्त कटु युद्ध चलते रहे।

हेनरी चतुर्थ—फ्रांसीसी राजाओं के इतिहास में

हेनरी का उल्लेख महान् राजा के रूप में ही नहीं, सबसे लोकप्रिय राजा के रूप में होता है। उसने एक नये राजवंश की शुरुआत की, जो दो सौ वर्षों तक फ्राँस पर शासन करता रहा। यह बार्बन वंश था, जिसमें यूरोप महाद्वीप के सबसे शक्तिशाली राजा पैदा हुए। हेनरी एक ऐसे देश का शासक बना जो अव्यवस्थित पड़ा हुआ था। पर वह इस योग्य था कि उसमें व्यवस्था ला सके। उसके सबसे महत्त्वपूर्ण कार्यों में से एक था राजाओं की शक्ति और प्रभुता को पुन: स्थापित करना, जिसे गृहयुद्ध के दौरान बहुत क्षति उठानी पड़ी थी। यह काम उसने कुछ ही सालों में पूरा कर लिया। उसने बड़ी बुद्धिमत्ता से मंत्रियों का चुनाव किया, जिन्होंने देश में समृद्धि और सुशासन की स्थापना में उसकी सहायता की। उसने सन् १५९८ में नान्तेज़ के फर्मान को जारी करके धार्मिक झगड़ों को निबटाया।

हेनरी ने देश की समृद्धि की ओर विशेष रूप से ध्यान दिया। उसके वित्तमंत्री ड्यूक आफ सली ने देश को दिवालिया होने से बचाया। हेनरी का विश्वास था कि फ्रान्सीसी अर्थव्यवस्था की नींव खेती है, इसलिए उसने खेती-बारी को प्रोत्साहन दिया। किसानों की सहायता के लिए नहरें, सड़कें और पुल बनाए गए। हेनरी ने कपड़े के उत्पादन को, खासकर रेशम और लिनन को भी, प्रोत्साहन दिया।

उसकी विदेशनीति भी बहुत विवेकपूर्ण थी। उसने अपने पड़ोसी राज्यों के साथ शान्ति बनाए रखी। वह नई दुनिया में फ्रांसीसी भूमि में दिलचस्पी रखता था और उसने एक कम्पनी वहाँ भेजी जिसने नोवा स्कोशिया में एक बस्ती बसाई। इसके कुछ ही बाद शेम्प्लेन ने क्वेबेक की स्थापना की जिसे केन्द्र बनाकर फ्रांसीसी मिशनरियों और खोजियों ने नई दुनिया की खोज-यात्राएं कीं। फ्रांसीसी यदि हेनरी को 'नेक' राजा कहते थे तो इसमें आश्चर्य की बात ही क्या है।

लुई तेरहवाँ—हेनरी चतुर्थ की मृत्यु के उपरान्त उसका आठ वर्ष का लड़का लुई तेरहवें (१६१०-१६४३) के नाम से फ्रांस का राजा बना। बाद में जब लुई ने सरकार का शासनभार संभाला, तब वह अपने पिता-जैसा योग्य नहीं सिद्ध हुआ, और एक बार तो ऐसा लगा कि फ्रांस की सरकार की दशा फिर बिगड़ जाएगी। जो भी हो, सन् १६२४ में एक महान् राजनीतिज्ञ फ्रांस का मुख्य मंत्री और उसका असली शासक बना। उसका नाम था कार्डिनल रिशलू।

कार्डिनल रिशलू—फ्रान्सिस प्रथम की ही तरह रिशलू भी फ्रांस की संस्कृति में दिलचस्पी रखता था। उसने फ्रांसीसी दरबार के जीवन को अधिक औपचारिक और सौम्य बनाकर उसमें सुधार किया। उसने लेखकों और कलाकारों को प्रोत्साहन दिया। इस दिशा में संभवत: उसका सबसे महत्त्वपूर्ण योगदान फ्रेंच ऐकेडेमी की स्थापना थी, जिसमें चालीस फ्रांसीसी विद्वान् थे और जिसका अस्तित्व आज भी बना हुआ है। इसका प्रमुख कार्य है फ्रेंच व्याकरण के नियम बनाना और फ्रांसीसी भाषा में नए शब्दों को मान्य या अमान्य करना। इस ऐकेडेमी ने फ्रेंच शब्दकोश का संग्रह किया और उसी के द्वारा इसे सर्वथा नया से नया बनाए रखा जाता है।

योग्य और ओजस्वी रिशलू के अपनी सरकार के सम्बन्ध में दो लक्ष्य थे। पहला था राजा को

नान्तेज के फर्मान द्वारा ह्यूगनाटों को किलेबन्द नगर रखने का अधिकार मिला जिसके लिए बाद में इन्हें यंत्रणा दी गई। बेटमैन आर्काइव
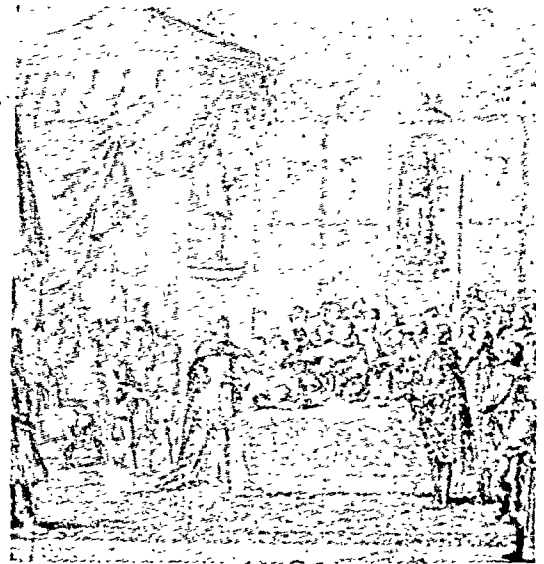
फ्रांस में सर्वप्रभुतासम्पन्न बनाना और दूसरा था फ्रांस को यूरोप में सर्वश्रेष्ठ बनाना। फ्रांस में दो वर्ग ऐसे थे जिनसे राजा की शक्ति को खतरा था। इनमें से एक वर्ग सामन्तों का था, जिनके पास सुदृढ़ गढ़ियाँ थीं और रिशलू के समय में भी कुछ क्षेत्रों के सामन्तों को बहुत अधिक शक्ति प्राप्त थी, जहाँ वे सरकार के विरुद्ध तमाम तरह की चालबाजियाँ करते रहते थे। रिशलू ने ऐसी सभी गढ़ियों को बर्बाद कर दिया जो राष्ट्र की सुरक्षा के लिए आवश्यक नहीं थीं और खुफियों की व्यवस्था करके चालबाज़ों को ठिकाने लगा दिया। राजा की शक्ति का विरोध करने वाला दूसरा वर्ग प्रोटैस्टैण्टों का था जिन्हें ह्यूगनाट कहा जाता था। रिशलू ने ह्यूगनाटों को दबा दिया जो नान्तेज़ के फर्मान द्वारा प्राप्त अपनी शक्ति के कारण शाही शक्ति का तिरस्कार कर रहे थे।

रिशलू ने इस्टेट्स-जनरल की बैठकें बुलाने से इन्कार कर दिया। इस बात से राजा मनमाना काम करने को स्वतंत्र हो गया। राजा कानून बनाने और उन्हें लागू करने लगा; वह कर लगाने और उन्हें खर्च करने लगा। इस तरह रिशलू निरंकुश राजतंत्र का प्रमुख निर्माता था।

रिशलू ने इतनी ही कुशलता से फ्रान्स को यूरोप में सबसे श्रेष्ठ बनाने के दूसरे लक्ष्य को भी सिद्ध किया। वह जानता था कि यदि फ्रान्स की शक्ति को बढ़ाना है तो हैप्सबर्गों की शक्ति को घटाना होगा जो फ्रान्स के पार्श्ववर्ती भूभाग का शासन करते थे। तीस-वर्षीय युद्ध से उसे ऐसा करने का अवसर मिल गया। रिशलू तीस-वर्षीय युद्ध के समाप्त होने के पहले ही मर गया पर उसके जीवनकाल में ही फ्रान्स की शक्ति का पासा पलट गया था। युद्ध के बाद होने वाले आम समझौते में फ्रान्स को वह सीमा प्राप्त नहीं हो सकी जिसकी रिशलू को आशा थी। पर फ्रान्स को राइन नदी के निकास के पास के आल्सेस का भाग और मेत्ज़, तूल और वर्डून की तीन प्रमुख गढ़ियाँ प्राप्त हो गईं।

१. मध्य युग में फ्रांसीसी सरकार का विकास इंग्लैंड की सरकार से किन बातों में भिन्न था ?

२. फ्रांसीसी सरकार पर शतवर्षीय युद्ध का क्या प्रभाव पड़ा ?

३. फ्रान्सिस प्रथम को हैप्सबर्गों से भय क्यों लगा हुआ था ?

४. इटली में फ्रांसीसी अभियान का फ्रांसीसी संस्कृति की दृष्टि से क्या महत्त्व है ?

५. हेनरी चतुर्थ ने किन बातों में उन्नति की ?

६. धर्म के मामले में रिशलू का क्या महत्त्व था ? फ्रांसीसी सरकार में उसका क्या महत्त्व था ?

७. रिशलू के दो महान् लक्ष्य कौन से थे ? उसने शिक्षा और संस्कृति को किस तरह उन्नत बनाया ?

८. रिशलू ने उन वर्गों से क्या सलूक किया जो राजा की शक्ति को क्षीण बना रहे थे ?

९. रिशलू ने फ्रान्स को तीस-वर्षीय युद्ध में क्यों डाला ?

१०. तीस-वर्षीय युद्ध से फ्रान्स को क्या लाभ हुआ ?

लुई चौदहवें का शासनकाल फ्राँस का स्वर्ण युग था

लुई चौदहवां—फ्रान्स लुई चौदहवें (१६४३-१७१५) के शासनकाल में यूरोप में सबसे शक्तिशाली हो गया था। चूंकि जब लुई चौदहवें के पिता लुई तेरहवें का देहान्त हुआ, तब लुई चौदहवें की आयु सिर्फ पाँच वर्ष की थी, इसलिए कुछ वर्षों के लिए शासन-भार को किसी दूसरे के हाथों में सौंपना पड़ा। इस दौरान लुई चौदहवें को यह शिक्षा दी गई कि वह 'ईश्वर की कृपा से' राजा बना है और किसी को उसकी शक्ति को चुनौती देने का अधिकार नहीं है। इसे देखते हुए इस बात में कोई आश्चर्य नहीं कि जब वह इक्कीस साल का हुआ तब उसने खुद अपनी मंत्रणा पर चलने का निश्चय किया और अपने को परामर्श देने के लिए इस्टेट्स जनरल की आवश्यकता नहीं समझी। चूंकि लुई बहुत जीवट का आदमी था और बहुत मेहनत करता था, इसलिए निरंकुश राजा के रूप में अपने कर्त्तव्य-निर्वाह के लिए वह सर्वथा उपयुक्त था। इसके अलावा वह अपने तौर-तरीके तथा आकृति में बहुत शालीन और राजोचित था और अपने कार्य को बहुत अच्छी तरह निभा लेता था।

फ्रान्सीसी संस्कृति—लुई चौदहवें के समय में फ्रांसीसी संस्कृति का सबसे गौरवशाली युग आया और इसके बाद कई पीढ़ियों तक पेरिस संस्कृति का केन्द्र बना रहा। लुई चौदहवाँ बहुत खर्चीला था और अपने ऊँचे तबके के अनुकूल ही अपने आस-पास की हर चीज़ को बनाए रखता था। उसने 'बेगारी' का बहुत लाभ उठाकर प्रसिद्ध वर्सेलीज़ महल का निर्माण कराया। इस महल के खर्चे के कागज़ों को लुई ने बर्बाद करा दिया, लेकिन अनुमानतः इसके बनाने पर राष्ट्र को ५०,००,००,००० रुपयों का व्यय वहन करना पड़ा होगा। इस महल में लुई चित्रकारों, मूर्तिकारों, लेखकों और संगीतज्ञों को अपनी कला का प्रदर्शन करने और अपने पद को गौरवान्वित करने के लिए आमन्त्रित करता था। सामन्त, जिन्हें दरबारी गण कहा जाता था, राजा के आस-पास रहने और उन खर्चीले मनोरंजनों में भाग लेने को, जिन्हें राजा अपने दरबार पर लुटाता रहता था, वर्सेलीज़ में भीड़ लगाए रहते थे। विदेशी शासक इस विलासिता की नकल करने के लिए परस्पर स्पर्धा करते रहते थे, पर यूरोप का कोई भी दरबार कभी भी शान-शौकत में लुई चौदहवें के दरबार से टक्कर नहीं ले सका।

इस काल के जो सबसे विख्यात लोग इस दरबार की शोभा बढ़ाए हुए थे, वे लेखक थे। हास्य-लेखक मौलियर दरबारियों का अपनी वाक्चातुरी से मनोरंजन करता था, जबकि रेसाइन नामक करुण रस के महान् कवि ने उन्हें और आज हमें भी विश्व के कुछ महान् नाटक प्रदान किए। लैंडस्केप के कलाकारों ने महल के आस-पास के मैदान को यूरोप में सर्वश्रेष्ठ बना दिया। चित्रकारों और मूर्तिकारों ने ऐसी कृतियाँ बनाईं जो आज भी प्रसिद्ध हैं। बुनकर बड़े-बड़े कमरों को सजाने के लिए सुन्दर टेपेस्ट्रियाँ और कालीन बनाते थे। इसके एवज में इन कलाकारों को राजा की ओर से पेन्शनें मिली हुई थीं और वे सारे यूरोप में विख्यात थे। फ्रांसीसी फर्नीचर, पोशाक, साहित्य और कला यूरोप के लिए नमूना बन गई थी, और फ्रेंच भाषा सारी दुनिया के राजनयिक व्यवहार की भाषा बन गई थी।

बेटीमैन आर्काइव

लुई चौदहवें के समय के एक पंचांग का यह पृष्ठ उसके दरबार में होने वाले एक शाम के मनोरंजन का चित्रण करता है।

कोलबर—लुई चौदहवें को उसके कार्यों में उसके वित्तमन्त्री जेन बैप्तीस्त कोलबर ने सहायता दी। कोलबर ने मेहनतकश लोगों पर से कर घटाकर और सरकार में मितव्ययिता लाकर देश की आर्थिक दशा में सुधार किया। उसने फ्रान्स में नए उद्योग प्रचलित किए और पुराने उद्योगों को प्रोत्साहित किया। दूसरे देशों से निपुण कारीगर लाए गए, और फ्रान्स में इतने उत्तम वस्त्र बनने लगे कि फ्रान्सीसी माल विदेशों के बाजारों में बहुत लोकप्रिय हो गए। अनेक राजपत्र प्राप्त व्यापारी कम्पनियों ने भारत, कनाडा और पश्चिमी द्वीपसमूह में उपनिवेश और व्यापारिक केन्द्र स्थापित किए। कोलबर के आर्थिक मामलों की दक्षतापूर्ण संभाल

मैट्रोपोलिटन म्यूजियम आफ आर्ट

पेरिस में बनी हुई गोब्रेज़िन टेपेस्ट्रियां यद्यपि हमेशा बहुत रंजक नहीं हुआ करती थीं, लेकिन वे बहुत मशहूर थीं। इस टेपेस्ट्री का शीर्षक है "द सोअर"।

से ही यह सम्भव हो पाया कि लुई न केवल अपने देश के सांस्कृतिक विकास के कार्यक्रमों को चला सका बल्कि फ्रान्स ताबड़-तोबड़ कई युद्धों के दबाव को भी सहन कर सका।

मिनुएट सबसे मन्द नृत्यों में से एक था। यह इस काल की वेशभूषा के सर्वथा अनुरूप था।

वैटीमैन आर्कांइव

धार्मिक यंत्रणा—फ्रांस के धार्मिक जीवन में लुई चौदहवें ने ऐसी नीतियाँ अपनाईं, जिनसे उसे पहले की अपेक्षा अधिक शक्तियाँ प्राप्त हो सकें और साथ ही देश में एकता स्थापित हो सके। उसने फ्रान्स में चर्च का प्रबन्ध करने में पोप के प्रभाव को सीमित कर दिया। दूसरी ओर, उसने धर्मविरोधी तत्त्वों को समाप्त करने के लिए कठोर कदम उठाए। फ्रान्सीसी प्रोटेस्टैण्टों को कठोर और अमानवीय वर्ताव सहना पड़ा। अन्ततः सन् १६८५ में उनके सभी विशेषाधिकारों को खत्म कर दिया गया जब कि नान्तेज के फर्मान को रद्द कर दिया गया। बहुतेरे प्रोटेस्टैण्ट जान बचाकर इंग्लैंड और नीदरलैंड्स को भाग गए। इन लोगों का वहाँ पर स्वागत हुआ क्योंकि इनमें से बहुतेरे कुशल कारीगर थे जो अपने नए देश के बढ़ते हुए उद्योगों की सेवा कर सकते थे। इन देशों को जो लाभ हुआ, वह फ्रान्स के लिए एक तरह का घाटा था।

युद्ध—यदि लुई अपने को घरेलू मामलों में ही लगाए रखने को इच्छुक रहा होता और विदेशी मामलों को उसने अधिक शान्ति-प्रेमी लोगों के जिम्मे छोड़ रखा होता तो उसे बहुत बड़ी सफलता प्राप्त हुई होती। जो भी हो, वह फ्रान्स की प्राकृतिक सीमाओं को पूरा करना चाहता था और इसलिए उसने अनेक लम्बे और बहुत बड़े-बड़े युद्ध मोल लिए। कुछ युद्धों में उसकी सेनाएँ बुरी तरह परास्त हुईं। इन युद्धों में धन-जन की इतनी बर्बादी हुई कि लुई ने फ्रान्स को कर्जदार बना दिया और उसकी सेना बहुत अधिक घट गई। लुई चौदहवें का शासन-काल इतिहास का सबसे दीर्घ शासनकाल था और यूरोप के दूसरे राजा उससे ईर्ष्या करते थे। फिर भी उसके शासन ने फ्रान्स को कमज़ोर बना दिया।

१. लुई चौदहवें को क्यों सर्वथा सर्वगुण-सम्पन्न ढंग का राजा कहा जाता है?
२. फ्रान्सीसी संस्कृति का 'गौरव काल' किस राजा के शासनकाल में था? इस पद का क्या अर्थ है?

३. वर्सेलीज के महल में फ्रान्सीसी दरबार की जीवन-पद्धति क्या थी ?
४. लुई चौदहवें के समय के कुछ फ्रांसीसी लेखकों का नाम बताओ।
५. फ्रान्स को आर्थिक दृष्टि से सुदृढ़ बनाने के लिए कोलबर ने जो कुछ किया, उनमें से महत्त्वपूर्ण बातों का उल्लेख करो।
६. लुई चौदहवें ने सामन्तों को सन्तुष्ट और राज-भक्त बनाए रखने के लिए क्या किया ?
७. लुई चौदहवें की विदेश-नीति फ्रान्स के लिए बुरी क्यों थी ?

आलोचकों ने फ्रान्स में सुधारवाद के व्यापक प्रसार की माँग की

लुई पन्द्रहवाँ—लुई का पड़पोता लुई पन्द्रहवाँ (१७१५-१७७४) पाँच वर्ष की आयु में गद्दी पर बैठा। उसके शासनकाल में जो प्रमुख बातें हुईं, वे थीं वे लड़ाइयाँ जो फ्रांस के लिए लुई चौदहवें के युग में हुई लड़ाइयों से भी अधिक घातक थीं। ये थीं आस्ट्रिया के उत्तराधिकार की लड़ाई और सप्तवर्षीय युद्ध, जिसके समाप्त होने के साथ वस्तुतः फ्राँस ने अपने उस समूचे साम्राज्य को गँवा दिया जिसे उसने नई दुनिया में प्राप्त किया था। भारत में भी अंग्रेजों ने फ्रान्सीसियों को रोका जबकि स्वदेश में उसकी आर्थिक स्थिति लगभग निराशा-जनक हो गई।

लुई सोलहवाँ—जब लुई सोलहवाँ सन् १७७४ में फ्रांस की गद्दी पर बैठा तब आलोचना का स्वर तीखा होने लगा था। फ्रांस के अनेक अच्छे लोग उन तमाम बुराइयों की शिकायत करने लगे थे जिन्हें वे अपने देश में देख रहे थे। यह चेतना का युग था जब विवेकशील लोग राजनैतिक, धार्मिक और सामाजिक परिवर्तनों के सुझाव देने लगे थे।

वाल्तेयर—फ्रँकोई डि वाल्तेयर (१६९४-१७७८) बहुत प्रखर आलोचक था जिसकी रचनाओं ने फ्रांसीसियों में अपनी सरकार में सुधार करने की आवश्यकता की चेतना जगाई। उसकी मेधा बहुत तीक्ष्ण थी, जिससे वह अक्सर झमेले में पड़ जाता था। कई बार तो उसे फ्रांस से भागना पड़ा।

हिस्टौरिकल पिक्चर सर्विस

हाजिर-जवाब वाल्तेयर पोत्सडम में फ्रेड्रिक महान् से मिल रहा है और महल की मशहूर गोलमेज गोष्ठी का मनोरंजन कर रहा है।

फ्रांसीसी लेखक और आलोचक डेनिस डाइड्राट ने एक सत्रह खण्डों का विश्वकोश संकलित किया। विश्वकोश के इस पृष्ठ पर अट्ठारहवीं शताब्दी के प्रारंभ की एक लोहे की भट्ठी का दृश्य चित्रित है।

वैटीमैन आर्काइव

वाल्तेयर विचार की स्वतन्त्रता और भाषण की स्वतन्त्रता का समर्थक था। उसने पाया कि इंग्लैंड के लोगों को अपनी सरकार की आलोचना करने और अपना मनचाहा धर्म अपनाने की स्वतन्त्रता है। उसे इस बात से अनुताप हुआ कि किसी फ्रांसीसी को ऐसी स्वतन्त्रता को भोगने के लिए विदेश में रहना पड़ता है।

रूसो—फ्रान्स के क्रान्तिकारी सुधारकों में से एक जीन जैक्युअस रूसो (१७१२-१७७८) था। अपनी प्रसिद्ध पुस्तक "द सोशल काण्ट्रैक्ट" (सामाजिक अनुबन्ध) में उसने यह तर्क दिया कि मनुष्यों को प्राकृतिक रूप से कुछ अधिकार प्राप्त हैं और अगर उन्हें अपने अधिकारों पर अमल करने की छूट दी जाए तो वे अपने पड़ोसियों के अधिकारों का भी सम्मान करेंगे। तुम्हें याद होगा कि इंग्लैंड में जान लाक ने भी सौ वर्ष पहले ही इन्हीं विचारों को रखा था। रूसो ने यह दलील दी कि सरकार को शासन का अधिकार शासितों से प्राप्त होना चाहिए, न कि ईश्वर से, जैसा फ्रांसीसी राजे सोचने के आदी थे। ऐसे सिद्धान्त फ्रान्स में बहुत क्रान्तिकारी थे, और रूसो को अपना देश छोड़ने को बाध्य किया गया।

सन् १७६२ में रूसो ने एक दूसरी पुस्तक 'एमिल' लिखी, जिसने समूचे यूरोप की शिक्षा की प्रवृत्ति को बदलने में योग दिया। इस पुस्तक में रूसो ने एक काल्पनिक बच्चे की शैशवावस्था, बचपन, और किशोरावस्था की शिक्षा का वर्णन किया था और लड़की की भी शिक्षा का वर्णन किया था जो बाद में जाकर एमिल की पत्नी बनी। इस पुस्तक में जिन विचारों को जाहिर किया गया था, उनमें से कई रूसो के मौलिक विचार नहीं थे। लेकिन शिक्षा की उसकी रूपरेखा क्रान्तिकारी थी। उसका विश्वास था कि उस समय तक की शिक्षा मात्र तथ्यों की रटाई थी, न कि बच्चे की बौद्धिक शक्तियों के विकास की प्रक्रिया।

रूसो के निम्न विचार हमारे लिए सुपरिचित मालूम होते हैं लेकिन इन्होंने उसके समय के शिक्षकों को बेचैन कर दिया था :

बैटमैन आर्काइव

स्विट्ज़रलैण्ड के पेस्टालोजी ने सबसे पहले औद्योगिक कलाओं की शिक्षा दी। उसने अपनी जागीर में गरीब लड़कों के लिए एक स्कूल खोला।

१. शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जिससे बच्चे को सोचने और तर्क करने का प्रशिक्षण मिले।
२. शिक्षा को बच्चे की स्वाभाविक प्रवृत्तियों और रुचियों के अनुसार चलना चाहिए।
३. शारीरिक क्रियाकलाप को शिक्षा का अंग होना चाहिए, विशेषतः तरुणों की शिक्षा का।

हालांकि फ्रांसीसी सरकार ने 'एमिल' की भर्त्सना की, लेकिन शिक्षा और बालकों के जीवन पर इसका बहुत गहरा प्रभाव पड़ा। रूसो के अनुयायी शिक्षा-शास्त्री बच्चों का अध्ययन करने लगे और अपनी शिक्षा का आधार उनकी आवश्यकताओं और रुचियों को बनाने लगे।

जन-शिक्षा—फ्रान्स में अठारहवीं शती में एक दूसरा महान् विचार जाग्रत हुआ जिसने बाद में यूरोप के लोगों की जीवन-पद्धति को बदल दिया। जैसा कि हम देख चुके हैं, यूरोप के अधिकांश स्कूल चर्चों या ऐसे धनी लोगों द्वारा चलाए जाते थे जो

अपने बन्धु-बान्धवों की उन्नति में दिलचस्पी रखते थे। फ्रान्स के राजनीतिक सुधारकों का विश्वास था कि यदि शिक्षा को सही अर्थों में लोकतांत्रिक होना है तो इसे राज्य द्वारा सहायता और निदेश प्रदान करना होगा। सन् १७९१ के फ्रांसीसी संविधान ने यह घोषणा की कि "सभी नागरिकों के लिए आम और निःशुल्क जन शिक्षा-प्रणाली का निर्माण और गठन किया जाएगा।" अन्ततः सन् १७९५ में सार्वजनिक खर्च पर सबके लिए खुले स्कूल स्थापित किए गए। निश्चय ही उनमें बहुत से दोष थे, उनकी व्यवस्था बहुत लचर थी, और वे स्थायी नहीं थे, लेकिन अठारहवीं शताब्दी के अन्त तक सार्वजनिक सहायता से चलने वाले स्कूलों की धारणा पश्चिमी यूरोप में बद्धमूल हो गई थी।

फ्रांसीसी समाज और फ्रांसीसी सरकार की जो इतनी सारी आलोचना हुई, उसके पर्याप्त कारण मौजूद थे। जब लुई पन्द्रहवें ने उस खतरनाक स्थिति को देखा था जिसका सामना उसका देश और राजतंत्र कर रहा था, तब उसने कहा था, "जब तक मैं जिन्दा हूँ तब तक यह चलता रहेगा, मेरे उत्तराधिकारी अपनी जानें।" उसके पोते लुई सोलहवें को जो आलोचनाएँ सुनने को मिलीं, उनको झेल पाना उसके वश की बात नहीं थी। यद्यपि इस नए राजा के इरादे काफी नेक थे, लेकिन उन बड़ी-बड़ी समस्याओं को सुलझाने की दृष्टि से वह नितान्त अनुपयुक्त था।

१. फ्रान्स को अधिक लोकतांत्रिक बनाने के लिए वाल्तेयर और रूसो ने किन विचारों को रखा?
२. एमिल में शिक्षा सम्बन्धी किन नए विचारों का प्रतिपादन किया गया था?
३. अठारहवीं शताब्दी के राजनैतिक सुधारकों ने शिक्षा में किन परिवर्तनों का सुझाव रखा?

विचार-विमर्श के लिए प्रश्न

१. फ्रान्सिस प्रथम के युद्धों से इटली की संस्कृति का और प्रसार हुआ। आज एक देश की संस्कृति का दूसरे देशों में प्रसार कैसे होता है?

२. हनरी चतुर्थ की विदेश-नीति लुई चौदहवें की विदेश-नीति से अधिक बुद्धिमत्तापूर्ण क्यों थी? क्या युद्ध से बचना किसी राष्ट्र के लिए हर हालत में अच्छा ही होता है?

३. हेनरी चतुर्थ का विश्वास था कि फ्रांस का आर्थिक आधार खेती है। क्या संयुक्त राज्य का आर्थिक आधार भी खेती है?

४. लुई चौदहवें की प्रकृति का कोई राजा क्यों रिशलू जैसे मंत्री को पसन्द नहीं कर सकता था?

५. एक बार लुई चौदहवें ने कहा था, "मैं ही राज्य हूँ।" ऐसा कहने से उसका क्या आशय था?

६. लुई चौदहवां किसी को यह क्यों जानने नहीं देना चाहता था कि वर्सेलीज के महल पर कितना व्यय हुआ है?

७. कई पीढ़ियों तक फ्रान्स स्त्रियों और पुरुषों की पोशाक के फैशनों में अगुआ बना रहा। आज दुनिया में पोशाक के फैशनों में अगुआ कौन सा देश है?

८. क्या फ्रांसीसी समाज और सरकार की आलोचनाएँ न्यायोचित थीं?

९. क्या शिक्षा के सम्बन्ध में रूसो के विचारों से तुम सहमत हो? क्या जिस ढंग की शिक्षा तुम्हें आज दी जा रही है, उसका समर्थन रूसो करता?

इतिहास के उपकरणों का उपयोग :

एक. नाम, तिथि और स्थान

१. क्या तुम निम्नलिखित शब्दों की व्याख्या कर सकते हो?

दरबारी—नान्तेज का फर्मान—फ्रेंच ऐकेडेमी——"नेक सम्राट"——"गौरवपूर्ण युग"—ह्यूगनाट।

२. क्या तुम्हें ये तिथियां याद हैं?

१६४३-१७१५, १७१५-१७७४

३. मानचित्र पर ये स्थान दिखाओ :

आल्प्स पर्वत, आल्सेस, मेत्ज़, मिलान, नोवा स्कोशिया, पिरेनीज़ पर्वत, क्वेबेक, राइन नदी, तूल, वर्दून।

३. क्या तुम बता सकते हो कि ये लोग कौन थे ?

कोल्बर—फ्रान्सिस प्रथम—हेनरी चतुर्थ—लुई अष्टम—लुई चौदहवाँ—लुई पन्द्रहवाँ—लुई सोलहवाँ—मोलियर—रेसाइन—रिशलू—रूसो—सली—वाल्तेयर।

निकोलस मैन्सर्ड—आन्द्रे ल नोत्र—चार्ल्स ल ब्रन—मदाम डि सेविन—जीन डि ला फान्तेन—पियरे कार्नेल।

दो. क्या तुम अपनी बात अच्छी तरह प्रस्तुत कर सकते हो ?

१. जब फ्रांसीसी सेना इटली से वापस लौटी, उस समय फ्रान्सिस के एक सैनिक और पेरिस के एक निवासी के बीच एक वार्ता लिखो। किसी दूसरे छात्र को साथ लेकर इस वार्ता को अपनी कक्षा में पढ़ो।

२. कल्पना करो कि तुम लुई चौदहवें के समय में वर्सेलीज़ का महल देखने गए हो। अपने घर को एक पत्र लिखो जिसमें वहाँ देखे गए लोगों और चीज़ों का वर्णन करो।

३. एक छात्र फ्रेंच एकेडेमी पर, दूसरा अंग्रेजी शब्दकोश के संग्रह और तीसरा अमरीका में शब्द-कोश के निर्माण पर एक रिपोर्ट लिखकर कक्षा को सुनावे।

४. निम्न लोगों ने वर्सेलीज़ या दूसरे फ्रांसीसी महलों को शान-शौकत को बढ़ाने में सहयोग दिया। इनमें से किसी एक को कक्षा में मौखिक विवरण देने के लिए चुनो :

तीन. सृजनात्मक कलाओं के माध्यम से इतिहास का अध्ययन

१. कक्षा के कुछ विद्यार्थी फान्तेनब्लो के महल, वर्सेलीज़ के महल, होटेल डे इनवैलिड्स या पेरिस के किसी विजयसूचक महराब का नमूना मिट्टी या लकड़ी या दफ्ती से बनाएँ।

२. कुछ लड़कियाँ अपने बीच से किसी एक के बालों को लुई चौदहवें के दरबार की महिलाओं के ढंग से संवार सकती हैं।

३. एक दूसरा दल किसी गुड़िया को उस काल में रहने वाले स्त्रियों या पुरुषों की शैली में सजा सकता है।

चार. सूचना-पट्ट के लिए

अपनी कक्षा के लड़कों को सूचना-पट्ट के लिए तस्वीरें जुटाने के लिए कई समितियों में बांट लो। हर समिति अपनी तस्वीरों को एक-एक दिन बारी-बारी से प्रदर्शित कर सकती है :

फ्रांसीसी स्थापत्य—फ्रान्सीसी फर्नीचर (अपनी तस्वीरों को कालक्रम से अर्थात् जिन शासन कालों में ये बने थे उनके अनुसार सजाओ)—हर युग की फ्रांसीसी वेश-भूषा।

२५ रूस में एकतंत्री शासन का विकास

ईवान तृतीय (१४६२-१५०५) का शासनकाल समाप्त होने तक रूस मंगोल आधिपत्य से मुक्त हो चुका था और शासन पर पुनः अपना अधिकार कर चुका था। वैसे भी उसका दृष्टिकोण पूर्वोन्मुखी था। बहुत समय तक मंगोलों के शासन में रहने के कारण रूस प्रशान्त महासागर की ओर पूर्वाभिमुख हो गया।

रूस की पूर्वाभिमुख दृष्टि

ईवान ने अपने को 'सभी रूसी राज्यों के निरंकुश शासक' के रूप में स्थापित किया था। उसने सही या गलत तरीकों से आस-पास के तमाम राज्यों पर अधिकार करके पश्चिम में पोलैंड से लेकर उत्तर में आर्कटिक महासागर और पूर्व में यूराल पर्वत तक की सारी भूमि को एक राज्य के अन्तर्गत कर लिया था। वह पूर्वीय सम्राट् के उत्तराधिकारी और पूर्वीय या 'आर्थोडाक्स' चर्च के संरक्षक के रूप में सामने आया था। इसके बाद के सम्राटों ने साम्राज्य का विस्तार किया और सीजरों के आधिपत्य में रोम की स्मृति जीवित करते हुए 'जार' की उपाधि धारण की। रूस बढ़ती हुई ताकत था पर पश्चिम यूरोपीय देशों पर उसका बहुत कम प्रभाव था और इन देशों से उसके सम्बन्ध भी अधिक नहीं थे।

पूर्व की ओर अभियान—सोलहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध और सत्रहवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में रूस में हुई सबसे महत्त्वपूर्ण बात थी इसका पूर्व की ओर अभियान। पूर्व की ओर आगे बढ़ने वाली पहली जाति कज्जाक थी। ये लोग रूस के सीमाप्रदेश में रहने वाले भयानक योद्धा और उत्तम घुड़सवार थे। वे पहले गये और उनके पीछे-पीछे समूर संग्रह करने वाले और व्यापारी गये। मूल निवासियों के साथ युद्ध में विजय प्राप्त करते हुए कज्जाक पूर्व की ओर आगे बढ़ते ही गये। जब जार को यह पता चला कि रूसी अमूर नदी तक आगे बढ़ गये हैं तो उसने उस समय के कामचलाऊ मानचित्रों का अध्ययन किया और उस समय की प्रतीक्षा करने लगा जब रूस को अमूर नदी के मुहाने के रूप में पूर्व में एक द्वार मिल जाएगा। सत्रहवीं शताब्दी के मध्य तक रूसी प्रशान्त महासागर तक पहुँच चुके थे और राजधानी मास्को से सात हजार मील दूर तक के देश पर उन्होंने रूस का अधिकार स्थापित कर लिया था। इसके बाद वे बेरिंग सागर पार कर अलास्का गये।

पूर्व की ओर साम्राज्य विस्तार करने में उनका मंचूरिया पर चीनी आधिपत्य के साथ संघर्ष हुआ। दोनों देशों में इस बात पर सुलह हुई कि रूस मंचूरिया से बाहर ही रहेगा लेकिन रूसी व्यापारियों को चीन आने-जाने की अनुमति रहेगी। इसी आधार पर दोनों देशों के बीच दो सौ वर्ष तक शान्ति बनी रही। चीनियों को समूर देकर रूसी उसके बदले बहुमूल्य रेशम और चाय प्राप्त करते रहे।

पहले लोगों की साइबेरिया में जाकर बसने की गति धीमी रही। वैसे आर्थोडाक्स चर्च के कुछ धर्म-प्रचारकों ने जंगलों में आगे जाने का साहस किया। वे ही लोग इस क्षेत्र के पहले अन्वेषक थे। सरकार

भी अपराधियों और राजनैतिक कैदियों को साइबेरिया भेजती थी। बहुत से कैदियों को वहाँ खुद बसने या दूसरों के लिए बस्ती बनाने के बदले में मुक्ति दे दी जाती थी। लेकिन अठारहवीं शती के आरम्भ तक अलास्का और साइबेरिया के विशाल क्षेत्र में कुल दो-ढाई लाख रूसी ही बसे हुए थे। फिर भी जारों के हाथ में एक महान् और समृद्धि की सम्भावनाओं वाला साम्राज्य था।

१. ईवान तृतीय ने रूसी प्रदेश का विस्तार कैसे किया?
२. कज्जाक कौन थे?
३. सन् १७०० तक रूस के अधिकार में कौन-कौन से प्रदेश आ गये थे?
४. रूसी लोग चीन में किस सामान का व्यापार करते थे?
५. रूस की चीन के साथ क्या संधि हुई?
६. सरकार साइबेरिया में किन लोगों को भेजती थी?

पीटर महान् ने रूस को पश्चिमाभिमुख किया

पीटर महान् (१६८२-१७२५) का शासन-काल आने पर ही रूस को यूरोपीय राष्ट्रों में स्थान मिलना शुरू हुआ। पीटर का पितामह अपने साथी सामंतों द्वारा जार चुना गया था जिसके फलस्वरूप रोमानोफ नामक नया परिवार सिंहासन पर आया। पीटर अपने देश के हितों को पश्चिमी यूरोप से संलग्न करने और रूस को आधुनिक बनाने के लिए कटिबद्ध था। ऐसा करने के लिए वह स्वयं पश्चिमी यूरोप के देशों में वहाँ के उद्योगों, वहाँ की सेनाओं, सरकारों और प्रथाओं का अध्ययन करने गया। हालैंड में वह एक बन्दरगाह में काम करने वाले मजदूर के वेश में रहा तथा छद्मवेश में ही उसने इंग्लैंड और प्रशिया की यात्रा की। उसने इन देशों से रूस जाकर वहाँ इच्छित परिवर्तन लाने के लिए प्रशिक्षित कारीगरों को चुना। अपने अंगरक्षकों में विद्रोह हो जाने के कारण उसकी योजनाओं में बाधा पड़ गयी। वह रूस वापस लौट आया और उसने कठोरता से पूरी तरह विद्रोह को दबा दिया तथा व्यवस्था स्थापित की। सात हजार आदमी मारे गये जिनमें कई की मृत्यु पीटर के ही हाथों हुई।

विद्रोह समाप्त करने के बाद पीटर उतने ही उत्साह से अपने नये ज्ञान का उपयोग करने में लग गया। उसने अपनी सरकार को फ्रांस के लुई चौदहवें जैसे निरंकुश राजतंत्र के नमूने पर आधारित किया। राज्य की समस्याओं को सुलझाने और अपनी योजनाओं को कार्यान्वित करने में सहायता करने के लिए उसने अधिकारियों के एक मंत्रिमंडल की रचना की। चूंकि उसे योग्य और अनुभवी रूसी अधिक नहीं मिले, अतः उसने दायित्व के पदों पर कुछ विदेशियों की नियुक्ति की। उसने प्रशिया की तरह एक सशक्त सेना का संगठन किया और इसके प्रशिक्षण के लिए विदेशी सेनानायकों को बुलाया। चर्च को और अधिक पूर्ण रूप से शासन का अनुगत बना दिया गया। पीटर ने नये उद्योगों की शुरूआत की जिनमें कई पर राज्य का स्वामित्व था। इनमें दास श्रमिक थे। उसने एक औद्योगिक वर्ग को व्यवसायों की स्थापना के लिए भी प्रोत्साहित किया। किसान, जिनकी स्वतन्त्रता का धीरे-धीरे हरण कर लिया गया था, अब बिलकुल दास-दशा को पहुँच गये थे और उन्हें पीटर द्वारा बड़ी संख्या में बनाये गये नये सामंतों की जमीन पर काम करना पड़ता था। रूस की औरतें पूर्वीय प्रथा के अनुसार शताब्दियों से अलग पड़ी हुई थीं। अब वे पश्चिमी यूरोप की औरतों की तरह पुरुष-समाज में आने-जाने लगीं। पीटर ने वेष-भूषा के तरीके को भी बदल दिया। पुरुषों को अपनी दाढ़ी साफ करानी पड़ती थी, अन्यथा उन्हें भारी कर देना पड़ता था और उन्हें फ्रांसीसी या जर्मन वेश-भूषा धारण करनी पड़ती थी। इस प्रकार पीटर ने रूस को पश्चिमी राष्ट्रों की तरह बनाने की कोशिश की।

पश्चिम की ओर खिड़कियाँ—पीटर का विश्वास था कि रूस के पश्चिमीकरण के लिए रूस के पास बाल्टिक सागर में और कालासागर में एक बन्दरगाह होना चाहिए। वह इन्हें 'पश्चिम की ओर खिड़कियाँ' कहता था। तुर्कों के आटोमान साम्राज्य ने उसे काला सागर के पास नहीं आने दिया। अतः उसने उनके विरुद्ध युद्ध शुरू कर दिया। उसे पूरी

सफलता नहीं मिली और अंततः काला सागर के अपने प्रदेश पर तुर्की का अधिकार कुछ समय के लिए बना रहा। स्वीडन के चार्ल्स बारहवें के साथ युद्ध में उसे अधिक सफलता मिली। वह केवल अठारह वर्ष का था। परन्तु वह उत्कृष्ट सिपाही था और उसने महान् विजय प्राप्त की। बाद में पीटर का प्रशिया और फिनलैंड के बीच के बाल्टिक-तटवर्ती प्रदेश पर अधिकार हो गया और उसे पश्चिम की ओर एक "खिड़की" प्राप्त हो गई।

हाल ही में अपने अधिकार में आये फिनलैंड की खाड़ी की तटवर्ती कठोर शीतवाली दलदली भूमि पर पीटर ने एक नयी राजधानी का निर्माण किया जिसमें प्राचीन पूर्वीय रूसी संस्कृति के साथ कोई सम्बन्ध नहीं रखने का प्रयत्न किया गया था। इस नये नगर के निर्माण में बहुत अधिक धन खर्च हुआ और बहुत सी जानें गयीं क्योंकि इमारती लकड़ी सैकड़ों मील दूर से कठोर रूसी जाड़े में बर्फीले दलदल पर स्लेज गाड़ियों पर लानी पड़ती थी। एक लेखक के अनुसार, नगर का निर्माण "गुलामों के आँसुओं और उनकी पीड़ा" से हुआ। फिर भी यह नये रूस का प्रतीक था और महत्त्वाकांक्षी जार ने इसका नाम सेंट पीटर्सबर्ग रखा। अपनी मृत्यु के समय पीटर नये रूस के लिए एक सशक्त केन्द्रित शासन, बाल्टिक सागर में सशक्त स्थिति और पश्चिम यूरोपीय मामलों में बढ़ती हुई अभिरुचि छोड़ गया। रूस की दृष्टि अपने दुर्बल असुरक्षित पड़ोसी देश पोलैंड पर भी थी।

१. पीटर महान् किस परिवार से आया था?
२. रूस के लिए उसकी योजना क्या थी?
३. पीटर ने अपनी योजना को कार्यान्वित करने के लिए अपने को किस तरह तैयार किया?
४. पीटर ने अपनी योजना किस तरह कार्यान्वित की?
५. पीटर पश्चिम की ओर कौन-सी दो "खिड़कियाँ" चाहता था? क्या वह इन्हें पाने में सफल हुआ?
६. सेंट पीटर्सबर्ग के निर्माण का वर्णन करिए।

कैथरीन द्वितीय ने रूस को महान् शक्ति बनाया

कैथरीन द्वितीय (१७६२-१७९६) एक प्रशियन

पीटर ने क्लासिकी शैली में अपनी नई राजधानी बनवाने के लिए फ्रांसीसी और इटालियन स्थपतियों को वेतन पर रखा। यह विश्वविद्यालय की प्रारंभिक इमारत का एक भाग है। सन् १७१३ में पीटर ने अपनी राजधानी मास्को से सेंट पीटर्स बर्ग हटाई।

सोवफोटो
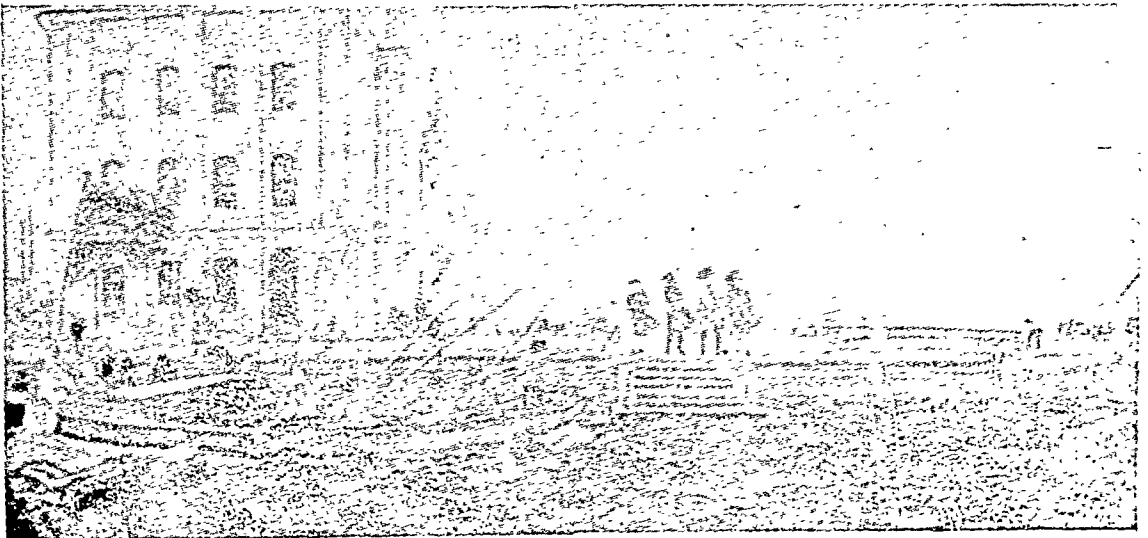
सेनापति की पुत्री थी। रूसी सिंहासन के उत्तराधिकारी के साथ उसका चौदह वर्ष की अवस्था में ही विवाह राजनैतिक उद्देश्यों से किया गया था। रूस में रहने के लिए आने के बाद वह रूसियों के ही बीच में रहने लगी। उसने उनकी भाषा सीखी, उनकी प्रथाएँ अपनायीं और रूसी चर्च की सदस्यता ग्रहण कर ली। उसका पति क्षीणमति था और उसमें देश पर शासन करने की योग्यता नहीं थी। उसके गद्दी पर बैठने के छह महीने के भीतर ही षड्यंत्र-निपुण किन्तु अत्यन्त योग्य कैथरीन ने उसके विरुद्ध विद्रोह का नेतृत्व किया और सेना की सहायता से शासन पर अधिकार कर लिया।

गृहनीति—अठारहवीं शताब्दी बौद्धिक अभिरुचि की शताब्दी थी और स्वयं सुशिक्षित न होते हुए भी कैथरीन अपने समय के विदेशी लेखकों में रुचि रखती थी। वह फ्रांस के श्रेष्ठ दार्शनिकों से पत्रव्यवहार करती थी और उसने महान् फ्रांसीसी दार्शनिक वाल्तेयर को अपने दरबार में आने तक के लिए आमंत्रित किया। यद्यपि वह इन आदमियों से सुधारों पर चर्चा करती थी, पर इनके द्वारा समर्थित सुधारों को वह व्यवहार में नहीं लायी। इसके विपरीत, उसके देश के सर्वोत्तम लेखक किसानों के बारे में सहानुभूतिपूर्वक लिखने का साहस करने के कारण साइबेरिया में निष्कासित कर दिये गये थे। कैथरीन द्वितीय के काल में रूसी शासन सदा जितना ही एकतंत्रात्मक था और चर्च को कठोरतापूर्वक शासक के प्रभाव में रखा गया था।

दासों की दशा पहले से भी खराब हो गयी। मध्ययुग में भी यूरोप में कुछ ही ऐसे देश रहे होंगे जहाँ अठारहवीं शती के रूस से अधिक निकृष्ट मानवीय दुर्दशा रही हो। भूमि पर भूमिपतियों का स्वामित्व था जो अपनी समृद्धि को एकड़ों, पशुओं और अपने दास मनुष्यों की संख्या से मापते थे। दूसरी ओर, दास खेतों से लाकर बनायी गयी फूस की या पत्थरों की झोंपड़ियों में रहते थे। उन्हें काफी देर तक काम करना पड़ता था और भोजन

अठारहवीं शताब्दी का रूस ऐसे शक्तिशाली राष्ट्र का बेजोड़ नमूना था जो दुर्बल राष्ट्रों को दबाकर उनसे लाभ उठाते हैं।

या चिकित्सा की व्यवस्था बहुत स्वल्प थी। उनकी मृत्यु का महत्त्व बैलों या घोड़ों की मृत्यु से कुछ ही अधिक, कभी-कभी तो उससे भी कम था।

गाँवों में रहनेवाले किसानों की दशा भी अपने देहाती पड़ोसियों से बेहतर नहीं थी। वे हमेशा भूखे रहते थे और लम्बे जाड़ों में निरन्तर शीत का प्रकोप सहते थे।

विदेश नीति—कैथरीन की विदेश नीति पीटर महान् जितनी ही आक्रामक थी और अपनी विदेश नीति के कारण ही उसने 'महान्" की उपाधि अर्जित की। उसका पश्चिम की ओर विस्तार आटोमान साम्राज्य और पोलैंड की वजह से रुक पड़ा था। इन दोनों देशों में दुर्बल सरकारें थीं।

तुर्कों के साथ लड़ाई में कैथरीन ने काला सागर के उत्तर के प्रदेश पर अधिकार कर लिया और नीस्टर नदी रूस और आटोमान साम्राज्य के बीच सीमा निर्धारित हुई।

अठारहवीं शताब्दी में आकार की दृष्टि से पोलैंड यूरोपीय देशों में रूस के ठीक बाद आता था लेकिन बड़े आकार के बावजूद वह अशक्त था। उसकी सीमाएँ प्राकृतिक नहीं थीं। देश में बहुत सी जातियाँ थीं जिनमें से हर एक की अपनी भाषा थी। धर्म की दृष्टि से संख्या रोमन कैथोलिकों, प्रोटैस्टैंटों, आर्थोडाक्सों और यहूदियों में बँटी हुई थी। मध्य वर्ग का बिलकुल अभाव था। एक ओर भूमि के स्वामी और भ्रष्ट राजनीति चलाने वाले सामंत थे, और दूसरी ओर गरीब और अज्ञानी किसानों का विशाल समुदाय था जो कर देता था। सरकार दुर्बल और भ्रष्ट थी। राजा का चुनाव होता था, उसकी शक्ति नगण्य थी और संसद् एक भी मत विरोध में आने पर कोई कानून पारित नहीं कर सकती थी। इन परिस्थितियों में शासन में स्थिरता असम्भव थी।

रूस की रानी कैथरीन द्वितीय पोलैंड की परिस्थिति को शीघ्र ही भाँप गयी और उसने इसका लाभ उठाया। उसने अपनी रुचि के एक राजा को गद्दी पर बैठाने के लिए पोलैंड के एक चुनाव में हस्तक्षेप किया। इसके बाद उसने प्रशिया के फ्रेडरिक द्वितीय और आस्ट्रिया की मेरिया टेरेसा के साथ १७७२ ई० में पोलैंड का विभाजन किया जिसमें प्रत्येक को एक-एक हिस्सा मिला। एक के बाद एक दो विभाजनों में उन्होंने यूरोप के नक्शे में से पोलैंड का अस्तित्व ही समाप्त कर दिया। रूस को देश का आधा से अधिक भाग मिला और अब उसकी सीमाएँ आस्ट्रिया और प्रशिया तक फैल गयीं।

अठारहवीं शती में रूस में महान् परिवर्तन हुए। पीटर महान् पश्चिमी तरीकों में दिलचस्पी रखता था। कैथरीन ने रूस की सीमाएँ दक्षिण और पश्चिम में विस्तृत कीं। उसने रूस को यूरोप की महान् शक्तियों में बना दिया।

१. कैथरीन द्वितीय का जन्म किस देश में हुआ था?
२. कैथरीन किस तरह रूस की जारीना (महिला-जार, रानी) बनी?
३. कैथरीन को अपने समय में प्रचलित सुधारों में क्या दिलचस्पी थी?
४. कैथरीन के समय में किसानों की क्या दशा थी?
५. पोलैंड क्यों निर्बल राज्य था? कैथरीन ने इसका किस तरह लाभ उठाया?

पोलैंड का बँटवारा—१७७२-१७९३-१७९६।

प्रगति की दो शताब्दियाँ

सत्रहवीं और अठारहवीं शताब्दियों में सारे यूरोप में बहुत से युद्ध होते रहे। स्पेनी और आस्ट्रियायी हैप्सबर्ग वंश, जर्मन हॉएन्त्सालर्न, फ्रांसीसी बूर्बन और रूसी रोमानोफ आदि प्रतिद्वंद्वी राजवंशों की अपनी महत्त्वाकांक्षाओं के कारण यूरोप को बहुत कष्ट झेलने पड़े। अंग्रेज और फ्रांसीसी सारी दुनिया में जहाँ भी सम्पर्क में आये, अपने मतभेदों पर लड़ पड़े। लेकिन इस सारे रक्तपात के बावजूद कुछ महान् मनीषियों के प्रयत्नों और विचारों के कारण विश्व की बहुत प्रगति हुई। उनके जरिए आधुनिक यूरोप के प्रमुख राष्ट्रों में एकता स्थापित हुई। ब्रिटेन और उसके अमरीकी उपनिवेशों में लोकतन्त्र की भावना घर करने लगी। इसी अवधि में कुछ उत्कृष्टतम साहित्य और अत्यन्त अद्भुत संगीत की

७. लोकतंत्र की दिशा में बढ़ते कदम

सत्रहवीं और अठारहवीं शताब्दी में इंग्लैंड ने लोकतंत्रात्मक सरकार की स्थापना की दिशा में प्रगति की। उस समय के अनेक राजनैतिक सुधार हमारे अमरीकी प्रजातंत्र के अंग बन चुके हैं। दूसरे देशों में भी कुछ स्वल्प उन्नति दृष्टिगोचर हुई।

Charles I

इंग्लैंड में चार्ल्स प्रथम को अधिकार याचिका (पेटिशन आफ राइट्स) पर बाध्य होकर हस्ताक्षर करना पड़ा, जिससे जनता को कुछ महत्त्वपूर्ण विशेषाधिकार प्राप्त हुए। निरंकुश प्यूरिटन, ओलिवर क्रामवेल और दुराग्रही जेम्स द्वितीय के शासनकाल में इंग्लैंड में लोकतंत्र की दिशा में कोई प्रगति नहीं हुई।

विलियम और मेरी ने अधिकार विधेयक (बिल आफ राइट्स) और सहिष्णुता अधिनियम (टालरेशन ऐक्ट) पर हस्ताक्षर किये। सन् १६७८ का बन्दी प्रत्यक्षीकरण अधिनियम (हेबियस कार्पस एक्ट) स्वतंत्रताओं की रक्षा करता रहा। बाद में इंग्लैंड के राजा को पार्लमेण्ट के अधिनियमों के निषेध का अधिकार नहीं रहा।

यूरोप में अन्यत्र प्रजातंत्र को बहुत कम सफलता मिली। स्पेन में फिलिप द्वितीय के शासन काल में जनता के अधिकारों को बहुत क्षति उठानी पड़ी। प्रशिया के फ्रैड्रिक द्वितीय ने जनता की सेवा अच्छी तरह की, लेकिन उसके बाद जो लोग शासक हुए, वे कमजोर थे। रिश्लू ने फ्रान्स को निरंकुश राजतंत्र का रूप दे दिया और रूस के सर्फों (भूदासों) की स्थिति बहुत कष्टपूर्ण थी।

रचना हुई। अठारहवीं शती बीतते-बीतते वैज्ञानिक उन सत्यों की खोज कर चुके थे जिनसे बाद की शताब्दियों में मनुष्य की विचारधारा और उसकी जीवनपद्धति बदल जाने वाली थी। इन दो शताब्दियों में अधिकांश देशों में शासक लोग अपने देश की जनता पर शासन करते रहे, लेकिन इस बात के चिह्न प्रकट होने लगे थे कि जनता अब हाथ-पाँव मारने लगी थी।

१. स्पेन, फ्रान्स, प्रशिया, आस्ट्रिया, और रूस में सत्रहवीं और अठारहवीं शताब्दी में किन-किन वंशों का शासन था ?

७. जीवन-निर्वाह की प्रगति के चरण

मानवता की प्रगति की दिशा में सत्रहवीं और अठारहवीं शताब्दियां बहुत अनूठी थीं। युद्धों के कारण व्यापक नरसंहार और कष्ट उत्पन्न हुए, लेकिन साथ ही महान् चिन्तक मानवता की हित-साधना में लगे हुए थे।

विज्ञान और आविष्कार की प्रगति

पुनर्जागरण-काल में होने वाली खोजों से उत्साहित होकर वैज्ञानिक लोगों ने उन इने-गिने औजारों के द्वारा काम करते हुए जो उनके पास थे, अपने अध्ययन और प्रयोगों को जारी रखा। इनमें सबसे बड़ा था फ्रान्सिस बेकन।

न्यूटन ने गुरुत्वाकर्षण के नियम का पता लगाया और विलियम हार्वे ने मानव शरीर के अध्ययन में महत्त्वपूर्ण योगदान किया। अकादमियों और विश्वविद्यालयों ने अपने पाठ्य-विषयों में विज्ञान को भी स्थान दिया।

शिक्षा में प्रगति
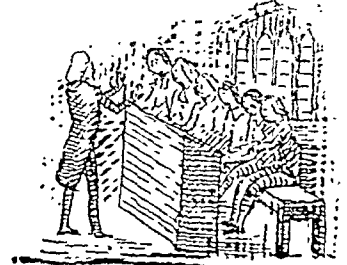
इन शताब्दियों में शिक्षा ने वैज्ञानिक शोध से परे कोई प्रगति नहीं की। राबर्ट रेक के स्कूलों में उपेक्षित बालकों को पढ़ना सिखाया गया जिससे वे बाइबिल पढ़ सकें। उसकी पद्धति समूचे इंग्लैंड में फैल गई, लेकिन ये स्कूल बहुत कम छात्रों को ही सुलभ हो पाते थे। इंग्लैंड में चर्च स्कूल ही एक मात्र निःशुल्क स्कूल थे।

---

२. इस काल में यूरोपीय राष्ट्रों ने किन बातों में प्रगति की?

विचार-विमर्श के लिए प्रश्न

१. रूस के इतिहास को देखते हुए क्या तुम्हारी दृष्टि में रूसियों के लिए उस प्रकार की तानाशाही को स्वीकार करना ब्रिटेन या संयुक्त राज्य की जनता की अपेक्षा आसान था, जो वहां आज पाई जाती है?

२. यदि तुम्हें रूसियों के पूरब की ओर और संयुक्त राज्य के पश्चिम की ओर बढ़ने में कोई साम्य दिखाई देता है तो उसका उल्लेख करो।

३. तुम्हें इस बात का क्या कारण दिखाई देता है कि जब पश्चिमी यूरोप में भूदास प्रथा

फ्रान्स में रूसो की रचनाओं ने, विशेषकर उसकी पुस्तक 'एमिल' ने शिक्षाशास्त्रियों को प्रभावित किया और स्थिति यहाँ तक पहुँची कि सन् १७९५ में फ्राँसीसी सरकार ने सार्वजनिक स्कूलों की स्थापना की। इन स्कूलों में से अधिकांश सुसज्जित नहीं थे और उनके अध्यापक प्रशिक्षित नहीं थे, लेकिन इनके कारण लोग सबके लिए शिक्षा के अवसरों की वांछनीयता के बारे में सोचने लगे।
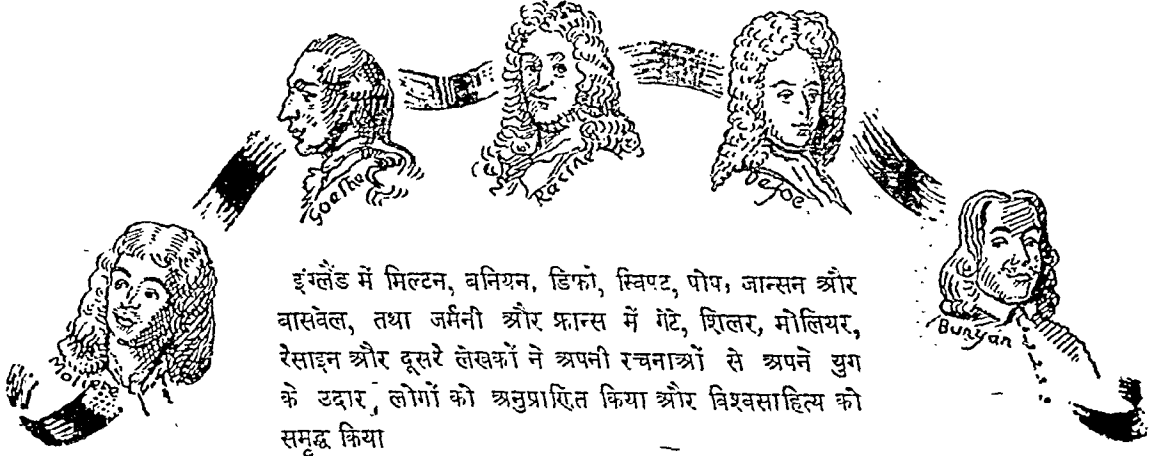
इंग्लैंड में मिल्टन, बनियन, डिफो, स्विफ्ट, पोप, जान्सन और बासवेल, तथा जर्मनी और फ्रान्स में गेटे, शिलर, मोलियर, रेसाइन और दूसरे लेखकों ने अपनी रचनाओं से अपने युग के उदार, लोगों को अनुप्राणित किया और विश्वसाहित्य को समृद्ध किया

कला में प्रगति

रेनाल्ड, गिन्सबरो, रोमनी तथा अन्य चित्रकारों के चित्रों, और हैंडेल, बाख, मोजार्ट और इनके साथी संगीत-रचयिताओं के संगीत,

और फ्रान्स में रिशलू के प्रयत्नों ने यूरोप के सभी सांस्कृतिक देशों के साधनसम्पन्न लोगों में ललित कलाओं के प्रति रुचि विकसित की।

समाप्त हो रही थी, उस समय रूसी किसानों पर भूदास प्रथा को लाद दिया गया था?

४. पीटर के लिए पूर्वी प्रथाओं से छुटकारा पाना क्यों उससे अधिक कठिन था जितना रूसियों का इन्हें पहले पहल ग्रहण कर पाना?

५. पश्चिमी यूरोप में पहली बार पुस्तक छपने के सौ साल बाद रूस में पहली बार कोई पुस्तक छपी, इस तथ्य से रूसी संस्कृति के बारे में तुम्हें क्या पता चलता है?

६. एक आदमी के रूप में पीटर महान् के बारे में तुम्हारी क्या राय है?

७. क्या तुम समझते हो कि कैथरीन द्वितीय पश्चिमी यूरोप की संस्कृति में सचमुच रुचि रखती थी?

८. रूस के पास आर्कटिक महासागर के बन्दरगाह पहले से ही थे, फिर भी उसे बाल्टिक सागर के और कालासागर के बन्दरगाहों की क्यों आवश्यकता पड़ी ?

९. रूस में अनेक जातियों के लोग रहते हैं, इसका कारण बताओ।

इतिहास के उपकरणों का प्रयोग

एक. नाम, तिथियाँ और स्थान

१. क्या तुम इन शब्दों की व्याख्या कर सकते हो ?

निरंकुशतंत्र, सारे रूसियों का अधिनायक, कज्जाक, ज़ार, "पश्चिम की खिड़की"।

२. क्या तुम्हें ये तिथियाँ याद हैं ?

१६८२-१७२५, १७६२-१७९६, १७७२।

३. मानचित्र पर ये स्थान दिखाओ :

एलास्का···अमूर नदी···आर्कटिक महासागर···आस्ट्रिया···बाल्टिक सागर···काला सागर···चीन ··· नीस्टर नदी ··· फिनलैंड···मंचूरिया···मास्को···ओटोमन साम्राज्य···पोलैण्ड ··· प्रशिया रूस···साइबेरिया···सेण्ट पीटर्सबर्ग···स्वीडन···यूराल पर्वत।

(अ) विश्व के एक मानचित्र पर सन् १५०० में रूस का विस्तार दिखाओ। (ब) सन् १८०० में रूस का विस्तार दिखाओ।

४. क्या तुम बता सकते हो कि निम्न लोग कौन थे ?

कैथरीन द्वितीय, चार्ल्स बारहवाँ, फ्रेड्रिक द्वितीय, ईवान तृतीय, मैरिया टेरेसा, पीटर महान्, वाल्तेयर।

दो. क्या तुम अपनी बात अच्छी तरह व्यक्त कर सकते हो ?

१. यदि तुम्हें चित्र, रेखाचित्र या माडल (नमूना) बनाना पसन्द है तो तुम्हारे लिए नीचे कुछ सुझाव दिये जा रहे हैं :

कज्जाक, पीटर महान्, कैथरीन द्वितीय, क्रेमलिन, एक रूसी चर्च।

२. अध्यापक का अनुमोदन पाने पर निम्न में से एक चीज अपनी कक्षा में पढ़ने के लिए लिखो :

(अ) पीटर महान् ने जब लोगों की दाढ़ियों के सम्बन्ध में अपना आदेश दिया, उस समय के दो बूढ़ों के बीच वार्तालाप।

(आ) जब पोलैंड का नाम-निशान मानचित्र से मिटा दिया गया था, उस समय के दो पोलैंड-वासियों के बीच वार्तालाप।

(इ) दो ऐसे लेखकों के बीच वार्तालाप जिन्हें देश-निकाला दे दिया गया है और जिनकी भेंट साइबेरिया में होती है।

(ई) पीटर महान् के पश्चिम से लौटने पर एक पाँच मिनट का रेडियो समाचार, जो उस समय दिया गया होता।

(उ) एक पाँच मिनट का रेडियो समाचार जो उस समय प्रसारित किया गया होता जब रूस पूर्व की ओर अपना प्रसार करता हुआ प्रशान्त महासागर तक पहुँच गया।

३. यद्यपि रूस के कज्जाक और अमरीका के चरवाहे एक दूसरे से बहुत भिन्न किस्म के थे, फिर भी उन्होंने रूस के इतिहास में उतने ही रोमानी काल को निरूपित किया जितना अमरीका के इतिहास में चरवाहों ने। कज्जाकों के बारे में कुछ और सामग्री पढ़ो और इसका ब्योरा अपनी कक्षा में सुनाओ।

४. इस अध्याय की सामग्री पर जबानी सवाल-जवाब की योजना करो। अपनी कक्षाओं से एक को इसका प्रधान बना लो।

तीन. कला के माध्यम से इतिहास

यदि तुम्हारी रुचि कला में है तो उन मूर्तियों, रत्न जड़े ताजों, या राज-तिलक की वेदी की सजावटों के चित्र जुटाओ, जिनके लिए रूसी प्रसिद्ध रहे हैं। उपयुक्त लेबल लगाकर उन्हें सूचना-पट्ट पर प्रदर्शित करो।

चार. कक्षा समिति के लिए काम

सूचना-पट्ट के लिए रूसी भवनों के चित्र जुटाओ। उनके पास-पास उसी काल के पश्चिमी यूरोप के भवनों के चित्र लगाओ। इनके आपसी भेदों को अपनी कक्षा के लड़कों को समझाओ।

बहुत से देशों में
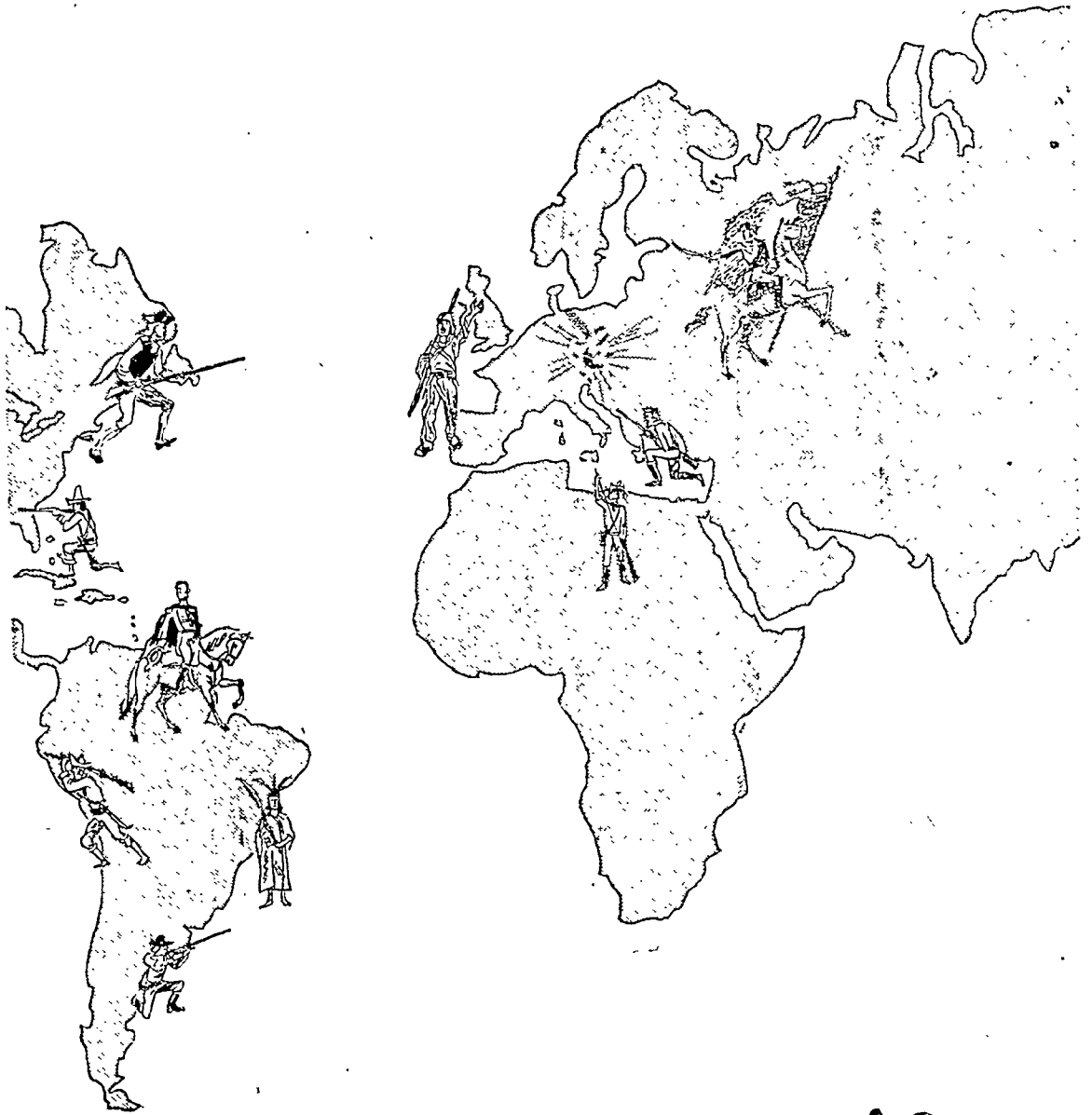
जनता ने स्वतन्त्रता के लिए संघर्ष किया

आजादी के लिए

जब लौक, रूसो, वाल्टेयर और दूसरे विचारकों ने शासन-सिद्धान्तों के बारे में लिखा, तब उन्होंने एक नयी प्रवृत्ति को जन्म दिया। लोग प्रश्न पूछने लगे। किस कारण राजाओं का दूसरे लोगों पर शासन होना चाहिए? सरदारों को विशेष अधिकार क्यों प्राप्त होने चाहिए? किसानों, मजदूरों और व्यापारियों को सरकार का खर्च क्यों उठाना चाहिए जब कि बदले में उन्हें कोई खास चीज नहीं मिलती? तब मध्यवर्ग इन अवस्थाओं को बदलने की मांग करने लगा। हमसे कम टैक्स लिया जाए और सरदारों से अधिक लिया जाए। शासन में हमारी आवाज होनी चाहिए और राजा को हमारी बात पर ध्यान देना चाहिए। वे कहते थे कि आखिरकार लौक और रूसो ने यही तो लिखा है कि सब मनुष्यों को कुछ नैसर्गिक अधिकार—जीवन, स्वतंत्रता और सम्पत्ति का अधिकार—प्राप्त हैं।

इस प्रकार प्रश्न पूछने और तर्क करने वाले लोगों को **लिबरल** (उदारतावादी) कहते थे और पश्चिमी यूरोप में उन्होंने जो आन्दोलन चलाया, वह लिबरलवाद कहलाया। राजाओं और सरदारों ने, जो अब भी राजाओं के दैवीय अधिकार तथा अपने विशेषाधिकारों में आशा रखते थे, लिबरलों को दबाने का यत्न किया। पर वे कभी ही, और बहुत ही थोड़े समय के लिए, सफल हो सके। दबाये जाने पर लिबरल कुछ देर के लिए छिप गये और फिर बाहर आ गये, या कहीं और जाकर काम करने लगे। बहुत से लिबरल अपने सिद्धान्त के लिए खुशी से मर गये, पर उनके स्थान पर और लोग खड़े हो गये।

लोग एक और तरह के प्रश्न भी पूछ रहे थे। वे उस देश के प्रति निष्ठा के बारे में थे जिसमें वे रहते थे, और कुछ इस प्रकार थे। हम ऐसे राजा के शासन में क्यों रहें जो विदेशी है और ऐसी भाषा बोलता है जो हम नहीं जानते? हम ऐसे गिरजाघरों को चलाने के लिए टैक्स क्यों दें जिनकी दी हुई शिक्षा पर हमारी आस्था नहीं है? हमारे अपने पूर्वज वीरों की प्रशंसा हमें क्यों नहीं करने दी जाती और हमें पराये वीरों का आदर करने को क्यों मजबूर किया जाता है। उनका कहना था कि हमारा धर्म और हमारी भाषा शासक के धर्म के बराबर ही, बल्कि उससे भी अधिक, अच्छे हैं। हमारे वीर उन लोगों से अधिक बहादुर थे जिनका हमसे सम्मान कराया जाता है। हमारा अतीत भी शानदार था। तो फिर हम अपने आप में एक राष्ट्र क्यों नहीं बन सकते या दूसरी जाति के साथ मिल कर राष्ट्र क्यों नहीं बना सकते? इस प्रकार के प्रश्न पूछने वालों की भावना को **राष्ट्रवाद** कहते हैं, अर्थात् अपने स्वदेश, अपनी भाषा, धर्म और वीरों के प्रति निष्ठा की भावना।

इस खंड में हम यूरोप और अमरीका में लिबरलवाद (उदारतावाद) और राष्ट्रवाद के बहुत से उदाहरण देखेंगे।

कठिन संघर्ष

1500 AD
2000 AD
1550
1950
1600 AD
1900 AD
1650
1850
1700 AD
1750
1800 AD
The Uphill Struggle
for Freedom
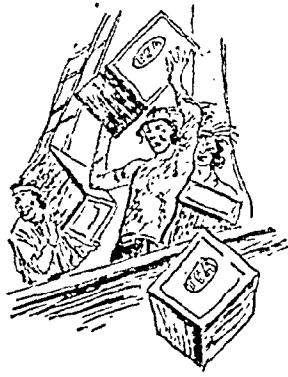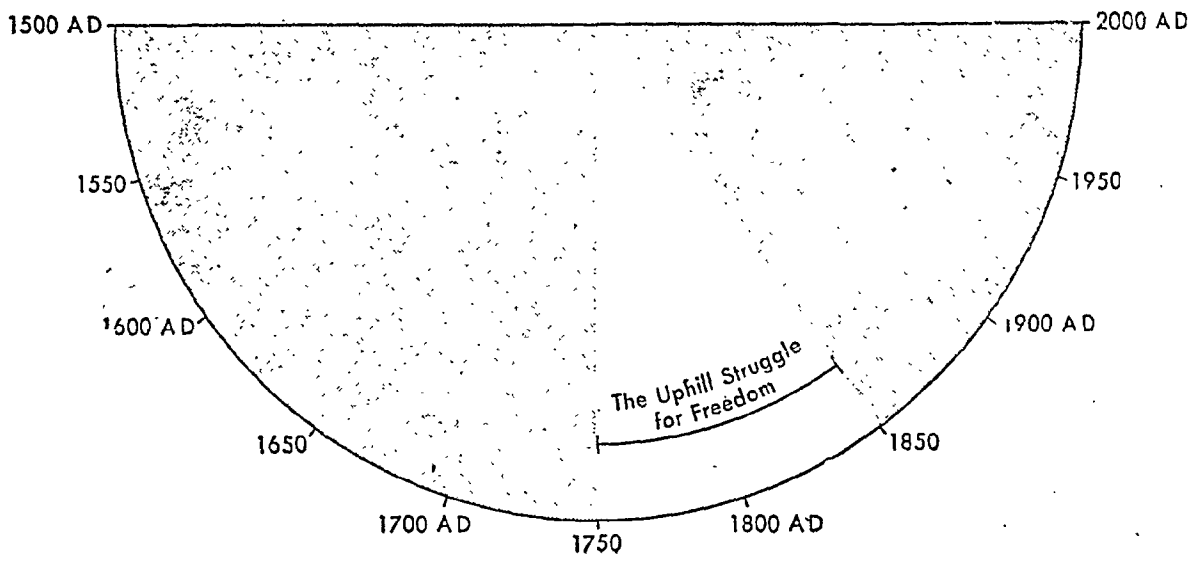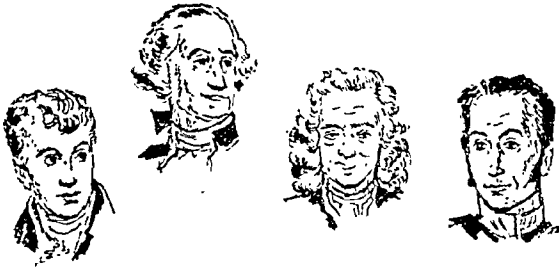
२६ अमेरिका और फ्रांस का आजादी के लिए संघर्ष

आरंभिक बसने वालों ने जब अपने कदम अमेरिका की भूमि पर रखे तो वे अपने रहन-सहन के तौर-तरीकों में से कुछ को, जिनके वे अभ्यस्त थे, पूर्णरूप से पीछे छोड़ आये थे। घनी आबादी वाले मुल्क के बजाय, जिसमें फार्म और शहर हों, उन्हें जंगल ही जंगल मिला था। वे लकड़ी के लट्ठों की, जो कोठरियाँ (केबिनें) बनाते थे, वे उनकी जन्मभूमि में फूस से छाई जाने वाली काटेजों से सर्वथा भिन्न थीं। मवेशियों और सूअर के गोश्त तथा करमकल्ले के स्थान पर उन्होने खरगोश, हिरन, जंगली मुर्गी, आलू, शकरकंद, मक्का और नयी दुनिया में पैदा होने वाले स्क्वैश का भोजन सीखा। यूरोप में ये लोग अपने घरों में सुरक्षित रहने के आदी हो गये थे, अमेरिका में उन्हें जंगली जानवरों और विरोधी इण्डियनों से बराबर सतर्क रहना पड़ता था। नयी दुनिया में "लार्ड" नहीं थे जिनके सामने उन्हें अपने टोप उतार कर सलाम करना पड़े। यह भी एक परिवर्तन था, और स्वागत के योग्य था।

जो व्यक्ति नयी दुनिया में अपना अस्तित्व बनाये रखना चाहता था, उसके लिए आत्मनिर्भर रहना जरूरी था। वहाँ न डाक्टर थे, दर्जी और न मोची। पायनीयर (पुरोगामी) को स्वतः हल बनाना और स्वतः अन्न पैदा करना पड़ता था। अपने शत्रुओं से भी उसे स्वतः ही अपना बचाव करना पड़ता था। दूसरे शब्दों में उसे अपने ऊपर निर्भर रहना पड़ता था। ऐसे आत्मनिर्भर लोग भला यह कैसे गवारा कर सकते थे कि दूसरे लोग उनको यह सिखाएँ कि वे किस तरह अपना शासन-भार संभालें। और फिर सरकार का मुखिया भी था बहुत दूर। अतलांतक पार कर लंदन पहुँचने में छह से लेकर आठ सप्ताह का समय लगता था। इंग्लैंड में पास हुए कानून इतनी दूर और इतनी भिन्न स्थितियों में रहने वाले लोगों को अवसर

१६५६ में मानहाटन द्वीप में डच बस्ती बहुत छोटी होने पर भी मजबूत लोगों की बस्ती थी।

फिलिपजेंड्रो

अनुचित लगते थे। उपनिवेशवासी चाहते थे कि अपनी परिस्थितियों के अनुकूल कानून वे स्वयं ही बनायें।

इंग्लैंड के साथ बंधन ढीले पड़े

सन् १७६३ तक, जब फ्रांस अमरीका में अपने उपनिवेश खो चुका था, अधिकांश उपनिवेशवासी अमरीकी बन गये थे। अधिकांश ने इंग्लैंड देखा ही नहीं था, गोकि, उनमें से शायद ९० प्रतिशत ब्रिटिश थे। शेष लोग यूरोप के अन्य मुल्कों से आये थे। तब यह कोई अचम्भे की बात नहीं थी कि इंग्लैण्ड और उसके उपनिवेशों के बीच के बंधन ढीले पड़ते जा रहे थे।

१७६३ से पूर्व की ब्रिटिश नीति—इन बन्धनों के शिथिल पड़ने का कारण आंशिक रूप से ब्रिटिश सरकार द्वारा उसकी अमेरिकी उपनिवेशों के प्रति बरती जाने वाली नीति थी। ब्रिटिश पार्लमेंट अन्य समस्याओं में फंसी हुई थी और उनकी ओर बहुत कम ध्यान देती थी। फ्रांसीसी या स्पेनिश उपनिवेशों की तुलना में, १७६३ से पहले, ब्रिटिश उपनिवेश जैसा

ब्रिटेन को जरा भी अन्दाजा नहीं था कि स्टाम्प एक्ट कालोनियों में विद्रोह खड़ा कर देगा।

चाहें वैसा करने को स्वतंत्र थे। ब्रिटेन ने उनके धर्म पर कोई पाबंदी नहीं लगाई थी, गोकि उपनिवेशवासी ही अक्सर एक दूसरे पर धार्मिक पाबंदियां लगाया करते थे। यह सच है कि वस्तुओं के निर्माण और व्यापार पर प्रतिबंध के कानून पास किये गये थे, लेकिन इंग्लैंड बहुत दूर पड़ता था और उपनिवेशवासी अधिकतर कानूनों की उपेक्षा करते और जो वस्तुएं चाहते अपने देश में ले जाते और बेचते थे। टैक्स भी नहीं दिये जाते और कुछ उपनिवेशवासी ब्रिटेन के शत्रुओं के साथ व्यापार जारी रखे हुए थे।

१७६३ से बहुत पहले से, उपनिवेशवासी बहुत अंशों तक स्वशासनाधिकार के उपभोग के आदी हो गये थे। वर्जीनिया में, १६१९ से ही, उपनिवेश के लिए महत्त्वपूर्ण मसलों पर विचार-विमर्श के लिए प्रतिनिधि एक छोटे से लकड़ी के बने चर्च में गवर्नर और उसकी कौंसिल से मिला करते थे। नयी दुनिया में यह प्रथम प्रतिनिधित्व वाली असेम्बली थी। ज्यों-ज्यों और उपनिवेश बसे उन्होंने भी जनता के चुने हुए प्रतिनिधियों की असेम्बलियाँ बनाईं। सभी उपनिवेशों में, स्थानीय महत्त्व के सभी मामलों के निर्णय, जैसे कोई सड़क या स्कूल बनाने के लिए धन एकत्रित करना, उस क्षेत्र के लोगों द्वारा किया जाता था। और इस प्रकार अमेरिकी जनता का कामों को करने का ढंग ब्रिटिश ढंग से अलग ही नहीं हो गया अपितु उन्हें अपने ऊपर शासन करने का अनुभव भी हो गया।

इंग्लैण्ड की औपनिवेशिक नीति में परिवर्तन

नयी नीति—१७६३ की पेरिस की संधि इंग्लैंड और उसके अमेरिकी उपनिवेशों के आपसी सम्बन्धों में उल्लेखनीय मोड़ ले आई। उसकी पुरानी ढीली नीति अब सख्ती में परिवर्तित हो गयी, और उपनिवेशों ने, जैसा चाहें वैसा करने के आदी हो जाने के कारण, इस परिवर्तन का विरोध किया।

सात वर्षों की लड़ाई में, जिसे हम अमेरिका में फ्रेंच और इण्डियन युद्ध कहते हैं, इंग्लैण्ड को बहुत धन व्यय करना पड़ा था। उसने उपनिवेशों को फ्रांस से बचा लिया था और अब यह कहता था कि उपनिवेश उसका बिल चुकाने में क्यों न सहायता करें? उपनिवेशों का उत्तर था कि उपनिवेशों की सेनाओं ने अमेरिका में युद्ध जीतने में मदद की है और इस रूप में कुछ अंशों तक उपनिवेशों ने युद्धों में धन दिया है।

मातृभूमि और उपनिवेशों के बीच अन्यान्य मतभेद भी पैदा हुए। वहाँ बसने वालों ने, फ्रांस से

ताजा जीते गये क्षेत्र, एपालाचियन पर्वतमालाओं, के परली ओर बसना शुरू कर दिया था। ग्रेट ब्रिटेन उत्सुक था कि ओहायो घाटी के इण्डियनों से कोई झगड़े-फसाद न हों, इसलिए उसने १७६३ का घोषणापत्र जारी किया। इसमें यहाँ बसने वालों को पश्चिमी मैदानों की ओर निष्क्रमण की मुमानियत थी। यहाँ के बाशिंदे, जो इस क्षेत्र के लिए लड़े थे, इस घोषणा को मानने के लिए तैयार नहीं थे और उन्होंने पश्चिम की ओर बढ़ना जारी रखा।

उपनिवेशवालों द्वारा नीतियों का विरोध—जब १७६० में जार्ज तृतीय राजा बना तो वह यूरोप महाद्वीप के अन्य राजाओं की तरह शासन करना चाहता था। वह कृतसंकल्प था कि उपनिवेशों के वाणिज्य को नियमित करने के लिए पास किये गये कानूनों को लागू किया जाय। कई नौपरिवहन कानून पास किये गये थे, जिनमें उपनिवेशों द्वारा आयात किये जाने वाली कुछ वस्तुओं पर कर लगाये गये थे और उपनिवेशों के इंग्लैण्ड के अलावा किसी अन्य देश से, व्यापार करने पर प्रतिबन्ध लगाया गया था। अब ये कानून महसूल वसूल करने के लिए वहाँ भेजे गए एजेन्टों द्वारा लागू किये जाने थे। अलावा इसके एक सेना भी अमेरिका में रखी गयी थी। राजा जार्ज का कहना था कि यह उपनिवेशवासियों की सुरक्षा के लिए है। लेकिन उपनिवेशवासी महसूस करते थे कि वे अपनी रक्षा स्वयं कर सकते हैं और उन्हें भय था कि उनके बीच सेना रखने का वास्तविक उद्देश्य अमेरिकनों की इण्डियनों या किसी विदेशी शक्ति से रक्षा की अपेक्षा ब्रिटिश कर-संग्रह करने वालों का पृष्ठपोषण करना है।

नयी नीति के अन्तर्गत लागू किये गए कानूनों में से, सर्वाधिक नफरत से देखा जाने वाला एक कानून यह था कि ब्रिटिश अफसरों को 'रिट्स आफ असिस्टेंस' कहाने वाले आम वारंट का प्रयोग करके किसी भी संदिग्ध तस्कर व्यापारी के घर की तलाशी लेने की अनुमति थी। इस प्रकार के व्यवहार के खिलाफ जबरदस्त आवाज उठाई गई। उपनिवेशवासी महसूस करते थे कि यह अंग्रेज होने के नाते उनको प्राप्त मौलिक अधिकारों में हस्तक्षेप है।

चार्ल्स फेल्प्स कुशिंग

ब्रिटिश पार्लमेंट का विलियम पिट दि एल्डर अनेक बार अमेरिकनों की मांगों के समर्थन में बोला।

दूसरा एक कानून यह अनुमति प्रदान करता था कि नयी दुनिया में किसी अपराध के अभियोगी ब्रिटिश अफसर को मुकदमा चलाने के लिए इंग्लैंड भेजा जाय। उपनिवेशवालों का इस पर यह मत था कि यह अपराधियों को मुक्त करने के ही समान है क्योंकि ब्रिटिश अदालतें अफसरों का पक्ष लेंगी।

करों के बारे में उपनिवेशवाले अंग्रेजों से अपने मतभेदों के सम्बन्ध में बहुत स्पष्ट थे। वस्तुतः मतभेद करों के बारे में उतना अधिक नहीं था, क्योंकि वे बहुत अधिक नहीं थे, जितना कि पार्लमेंट में उनके प्रतिनिधित्व के विचार पर था। ब्रिटिश दृष्टिकोण से, पार्लमेंट का प्रत्येक सदस्य साम्राज्य के तमाम लोगों का प्रतिनिधित्व करता था। इसलिए उन्हें अधिकार है कि वे सभी पर कर लगायें। दूसरी ओर, उपनिवेशवालों का विश्वास था कि उन पर कर लगाने वाली समिति में कालोनी के

बैटीमैन आर्काइव

बेंजामिन फ्रैंकलिन ने अपनी सादगी के आकर्षण से फ्रांस को विमोहित कर दिया। उसने अमेरिकी स्वातंत्र्य को फ्रांस में फैशनेबल बना दिया। वहां महिलाएँ अपनी हेयर आल बोस्तोनियेनी या आल फिलाडेल्फी पहनती थीं और पुरुष क्वेकर हैट लगाते थे।

प्रतिनिधि होने ही चाहिए। इस प्रश्न पर प्रत्येक पक्ष अपने विचारों पर अडिग था। निःसंदेह, उपनिवेश अपने प्रतिनिधियों को ब्रिटिश पार्लमेंट में भेजना नहीं चाहते थे; यह पद्धति व्यावहारिक नहीं हो सकती थी। वे चाहते यह थे कि उन्हें अपनी ही असेम्बलियों में अपने ऊपर कर लगाने का अधिकार दिया जाय।

राजा और पार्लमेंट के दृष्टिकोण ने उपनिवेश-वालों को कुपित कर दिया। दोनों पक्षों में इतना गहरा मतभेद नहीं था और पार्लमेंट तथा राजा की बुद्धिमत्ता से ये मतभेद हल किये जा सकते थे। पार्लमेंट में भी कुछ सदस्य ऐसे थे जो अमेरिकी दृष्टिकोण को समझने और उससे सहमत होने के पक्ष में थे। पार्लमेंट और राजा ने सिर्फ यही देखा कि ब्रिटेन एक व्यापक आयोजना द्वारा साम्राज्य को सुगठित करके एक बनाने की कोशिश कर रहा है जिसमें प्रत्येक उपनिवेश का योगदान उसकी उस वस्तु के योगदान के रूप में रहे, जो वह दे सकता है। उदाहरण के लिए, अमेरिकी उपनिवेश जहाजों के लिए मस्तूल, तम्बाकू, सन और नील का उत्पादन करेंगे। आयरलैण्ड लिनन बनायेगा जब कि ब्रिटेन कारखानों में बनने वाले माल का निर्माण करेगा। ऐसी योजना, उनके विचार से, समूचे साम्राज्य को मजबूत बना येगी। अमेरिकी उपनिवेशक उनकी इस व्यापक योजना में दिलचस्पी नहीं रखते थे; उनकी दिलचस्पी सिर्फ़ अपने ऊपर पड़नेवाले प्रभाव में थी। ब्रिटिश नीति ने आर्थिक रूप से उन्हें नुकसान पहुँचाया और अपने ऊपर शासन तथा अपनी रक्षा स्वयं करने की क्षमता के उनके गौरव को ठेस पहुँचाई।

(१) उपनिवेशवासी ब्रिटेन के प्रति राजभक्ति से क्यों विमुख हो गए ?
(२) १७६३ से पूर्व ब्रिटेन की उपनिवेशों के प्रति क्या नीति थी ?
(३) १७६३ के बाद ब्रिटेन ने किस रूप में उप-निवेशों के प्रति अपनी नीति बदली ?

उपनिवेशकों की अपनी मातृभूमि के खिलाफ बगावत

अमेरिकी बस्तियों और उनकी मातृभूमि के बीच मतभेद अपनी चरम सीमा तक पहुँच चुके थे। अप्रैल १९, सन् १७७५ में कानकार्ड और लेक्सिंग्टन, मैसेच्युसैट्स में युद्ध शुरू हो गया। पहले-पहल उपनिवेशवालों ने यह मंशा जाहिर की कि वे अंग्रेज होने के नाते अपने अधिकारों के लिए लड़ रहे हैं। कुछ लोगों ने, जैसे मैसेच्युसैट्स के सेमुअल ऐडम्स, लोगों के सामने आजादी का सवाल रखा और टामस पेन ने, जो इंग्लैंड से अमेरिका आया हुआ था, "कामनसेंस" नामक एक प्रभावशाली पैम्फलेट लिखा, जिसमें उसने बताया था कि उपनिवेशवासियों का ग्रेट ब्रिटेन के प्रति राजभक्ति की बात करना असंगत है क्योंकि वे, इसके साथ ही साथ, उससे लड़ भी रहे हैं।

आजादी की लड़ाई—अन्त में, ४ जुलाई, १७७६ को फिलाडेल्फिया में हुई महाद्वीपी कांग्रेस में आजादी का घोषणापत्र स्वीकार किया गया। टामस जफरसन ने मजमून बनाने का काम किया और यह जाहिर था कि उस पर इंगलिश और फ्रेंच सुधारकों जान लॉक और बेरन डी मोण्टेस्क्यू के ग्रन्थ पढ़ने से, बड़ा प्रभाव पड़ा था। इस घोषणापत्र का द्विमुखी महत्त्व था। पहला यह बताते हुए कि "शासितों की स्वीकृति से अपनी उचित शक्तियाँ प्राप्त कर सरकारें लोगों के बीच कायम की जाती हैं," उसने सरकार के लिए एक बुनियादी सिद्धान्त स्थापित किया था। दूसरे, इस निश्चय ने कि उपनिवेशों को स्वतन्त्रता दी जायगी, संघर्ष में एक नयी जान डाल दी थी।

अंग्रेजों ने अधिक जोरों से युद्ध का अभियान नहीं चलाया था। इसका कारण यह था कि पार्लमेंट के कुछ सदस्यों जैसे सेमुअल वर्क और विलियम पिट, का मत था कि इस विवाद में उपनिवेशवासियों की माँग उचित थी। औपनिवेशिक सेनाओं के प्रधान सेनापति जार्ज वाशिंगटन ने भारी योग्यता का परिचय दिया था। युद्ध के बहुत कम साधनों और अल्प साजो-सामान से लैस अमेरिकी सेनाएँ अक्सर लड़ाई में हार तो जाती थीं, पर वे हमेशा ही दुबारा लड़ाई के लिए तैयार हो जाती थीं।

पेन्सिलवानिया के बेंजामिन फ्रैंकलिन को उपनिवेशवासियों की ओर से मदद प्राप्त करने फ्रांस भेजा गया था। फ्रांस ने सिर्फ आर्थिक सहायता ही नहीं दी अपितु इंग्लैण्ड से युद्ध की घोषणा भी कर दी और वह उपनिवेशवासियों की ओर से लड़ा। १७६३ में ब्रिटेन ने फ्रांस को, उसकी नयी दुनिया का साम्राज्य खत्म कर, जो भारी नुकसान पहुँचाया था, उसका दंश फ्रांस अभी भी नहीं भूला था। यह एक सुनहरी मौका था और वे आशा करते थे कि वे अपनी खोई हुई प्रतिष्ठा और संभवतः कुछ बस्तियाँ भी, फिर से पा सकेंगे। स्पेनवासी और डच भी इंग्लैण्ड द्वारा उन्हें पहुँचाये गये नुकसान को न भूले थे और वे भी ब्रिटेन के खिलाफ संयुक्त अभियान में शामिल हो गये।

लड़ाई चलती रही। उपनिवेशवासियों के समुद्रतट से लगे हुए अधिकांश प्रमुख शहर अंग्रेजों के हाथों चले गये थे लेकिन जब कभी भी उनका मोर्चा "अन्दरूनी क्षेत्रों" में ब्रिटेन से पड़ता, तब वे विजयी होते थे। जब उपनिवेशवासियों ने, १७८१ में, यार्कटाउन की निर्णयात्मक लड़ाई जीती तब ब्रिटिश सरकार ने संधि कर लेने का फैसला किया। पेरिस में (१७८३) एक संधि पर हस्ताक्षर हुए। उपनिवेशों को स्वतन्त्रता प्रदान की गयी। उन्हें पश्चिम में मिसीसिपी नदी तक की भूमि मिली। उत्तरी और दक्षिणी सीमान्त का मामला विवादास्पद था और उसका निर्णय बाद के लिए छोड़ा गया। स्पेन को फ्लोरिडा मिला और फ्रांस ने भी १७६३ में खोये हुए कुछ छोटे द्वीप प्राप्त किये। डचों को कोई भी क्षेत्र नहीं मिला। इस प्रकार अमेरिका के यूरोपीय साथियों को युद्ध में बहुत कम मिल पाया, लेकिन इंगलैंड पराजित हो गया था और उपनिवेशवासियों ने उसके हाथों जो क्षति उठाई थी, उसका बदला उन्होंने ले लिया था।

अमेरिकनों का शासन-सम्बन्धी तजुर्बा—तब उपनिवेशवासियों के सामने एक सरकार कायम करने का पेचीदा मसला था। पहले-पहल तेरह स्वतंत्र राज्य "संघीय अन्तर्नियम" नामक एक संविधान

यूरोप में, जहां स्वाधीनता की अग्नि प्रज्वलित हो रही थी, अमेरिका की स्वाधीनता की घोषणा समाचार-पत्रों का प्रमुख शीर्षक थी।

के अन्तर्गत सामान्य रूप से एक दूसरे के साथ सम्बद्ध थे। अन्त में १७८९ में मौजूदा संविधान के अन्तर्गत एक सुसंबद्ध यूनियन कायम किया गया। तब जार्ज वाशिंगटन को नये गणतन्त्र का प्रेसीडेंट चुना गया। एक महान् परीक्षण आरम्भ हुआ। क्या कोई राष्ट्र, उसका मार्गदर्शन करने वाले, राजा और सामन्तों के बगैर स्वतः शासन कर सकता है?

अमेरिकी क्रांति का प्रभाव—अमेरिकी उपनिवेशों का हाथ से निकल जाना व्यापार के "वाणिज्य सिद्धान्त" (मर्कन्टाइल थ्योरी) के ऊपर प्रहार था जिसके मातहत यूरोपीय राष्ट्र अपने उपनिवेशों पर शासन करते आ रहे थे। इस सिद्धान्त के अनुसार वही देश सबसे अधिक धनवान् था जिसके पास मुद्रा के रूप मे सबसे ज्यादा सोना और चांदी है। अगर एक देश आयात से अधिक अपना माल बेचता है तो उसके पास यह बचा हुआ सोना और चांदी होगा। चूंकि सभी देश ऐसा करना चाहते थे, इसलिए उनके बीच प्रतिद्वन्द्विता थी और १५०० तथा १८०० के बीच की कई लड़ाइयां आंशिक रूप से वाणिज्यवाद का ही परिणाम थीं। इस सिद्धान्त में उपनिवेशों का भी एक महत्त्वपूर्ण कार्य था। उन्हें मातृभूमि में निर्मित किये गये माल को खरीदने के लिए बाध्य किया जा सकता था। इसके साथ ही साथ उनका कच्चा माल मातृभूमि को उसके मूल्य पर बेचा जाता था, जो निःसन्देह, थोड़ा होता था। इस प्रकार मातृभूमि सोने और चाँदी में अपनी इच्छित बचत पा जाती थी। ब्रिटेन ने अमेरिकी उपनिवेशों को इसीलिए खो दिया कि उनके साथ व्यवहार में वह वाणिज्य सिद्धान्त का प्रयोग करता था। अमेरिकी क्रांति से बहुत से लोगों को संदेह था कि कालोनी विकसित की जा सकेंगी अथवा नहीं और मातृभूमि के लाभ के लिए अनिश्चित काल तक उन पर अधिकार रह भी पायेगा या नहीं। लेकिन इस प्रकार के संदेह की अदूरदर्शिता तब और भी स्पष्ट हो गयी जब कि ब्रिटेन और स्वतन्त्र संयुक्त राज्य अमेरिका के बीच व्यापार उससे कहीं अधिक हुआ जितना कि उसके उपनिवेश रहने के दौरान था।

अमेरिकी क्रान्ति की सफलता का विश्वव्यापी महत्त्व रहा। स्वतन्त्रता की घोषणा के सिद्धान्तों का व्यापक अध्ययन किया गया। दार्शनिकों और सुधारकों ने सभी मनुष्यों की समानता और शासितों की स्वीकृति से सरकार के सिद्धान्त को बार-बार दुहराया है। यूरोप महाद्वीप में एकछत्र राजा, ऐशपरस्त सामन्तवर्ग, सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक अधिकारों की असमानता अब भी मौजूद थी। लेकिन यूरोप की जनता अमेरिकनों के सरकार के परीक्षण की प्रगति को बड़ी दिलचस्पी के साथ देख रही थी।

१. अमेरिकी क्रान्ति में निम्नलिखित व्यक्तियों में से प्रत्येक का क्या काम रहा: सेम्युअल ऐडम्स, टामस पेन, जार्ज वाशिंगटन, बेंजामिन फ्रैंकलिन, विलियम पिट और एडमंड बर्क।
२. स्वतन्त्रता के घोषणा-पत्र का अमेरिकी उपनिवेशवादियों पर क्या प्रभाव पड़ा?
३. किन मुल्कों ने संयुक्त राज्य की मदद की और क्यों?
४. १७८३ की पेरिस सन्धि की क्या शर्तें थीं?

५. अमेरिका का प्रथम संविधान क्या था ?
६. किस सन् में मौजूदा संविधान लागू हुआ ?
७. व्यापार का "वाणिज्य सिद्धान्त" क्या था और इस पर अमेरिकी क्रान्ति का किस रूप में प्रभाव पड़ा ?

फ्राँस के पुराने शासन से असंतोष फैला

कानूकार्ड और लेक्सिंग्टन की लड़ाई के एक वर्ष पूर्व फ्रांस की गद्दी पर २०वर्षीय एक नव-युवक बैठा। लुई १६ वें ने (१७७४-१७९३), जो बादशाहत विरासत में पायी वह पुरानी प्रणाली की थी, जो पीढ़ियों से चली आ रही थी। पुराना शासन खराब था और राजा से लेकर गरीब किसान तक, हर कोई, जानता था कि परिवर्तनों की जरूरत है। फ्रांस सिर्फ़ दिवालियापन के कगार पर ही नहीं था अपितु बहुत ज्यादा असंगठित भी था। जबकि मध्ययुगीन शासकों ने अधिक भूमि अपने राज्य में मिलाई थी तो उन्होंने कानूनों को बदल कर उन्हें शेष फ्रांस के अनुरूप करने की चिन्ता नहीं की। अगर नये प्रान्त राजा के अधिकार को मानते हैं और जो कर वह मांगता है उसे दे देते हैं, तो वे संतुष्ट थे। परिणामस्वरूप फ्रांस विभिन्न रिवाजों, कानूनों और ऐतिहासिक परम्पराओं वाले राज्यों की एक खिचड़ी-सी बन गया था।

वर्गभेद—फ्रांस में वर्गभेद भी बड़ा तीव्र था। जनसंख्या तीन एस्टेटों या वर्गों में बंटी हुई थी।

पहला वर्ग बड़े पादरियों, आर्कबिशपों, बिशपों और मठाधिकारियों का था, जो फ्रांस के चर्च पर शासन करते थे और सरकार पर उसका अत्यधिक प्रभाव था। वे चर्च की विशाल सम्पत्ति का उपभोग करते थे, जो समूचे फ्रांस की कुल ज़मीन के पाँचवाँ हिस्से का मालिक था और उन्हें जनता से "टाइथ" नामक कर वसूल करने का अधिकार था। इसके साथ ही साथ पादरियों को सरकार द्वारा लगाये गये करों से छूट मिली हुई थी। चर्च अब भी फ्रांस में शिक्षा को नियन्त्रित करता था और गरीबों तथा बीमारों की देख-भाल का जिम्मा लिए था ?

सामन्तगण या दूसरा वर्ग भी, विशेषाधिकार प्राप्त था। अब भी उनके कई प्राचीन अधिकार सुरक्षित थे। विभिन्न प्रान्तों में उनके विशेषाधिकार भी भिन्न-भिन्न थे लेकिन उनमें से सभी अधिकाँश करभार से मुक्त थे। कुछ स्थानों में अब भी उन्हें यह अधिकार था कि किसानों द्वारा उगाई गयी

बैटमैन आर्काइव

फ्रांस में लगाये गये कई टैक्सों में हेड टैक्स (व्यक्ति कर) भी था, जो हर व्यक्ति द्वारा दिया जाता था।

१,७८९ के एक फ्रेंच व्यंग्यचित्र में ज़ंजीर से बंधी जनता के एक साधारण व्यक्ति को कुलीनों और पादरियों को अपनी पीठ पर ढोते हुए दिखाया गया है।

बैटमैन आर्काइव

फसलों का हिस्सा लें। बहुधा, एकमात्र तंदूर, मिल और शराब का भट्टा वहाँ के लार्ड का होता था। ऐसी स्थिति में किसान लार्ड को रोटी, आटे और शराब का जो वे बनाते थे, कुछ अंश देते थे। सामंतों को अब भी अधिकार था कि जहाँ उनकी मर्जी हो, शिकार खेलें, चाहे उनके ऐसा करने से किसानों की बोई हुई फसल ही बरबाद क्यों न हो। इसके अलावा किसानों को यह अनुमति नहीं थी कि वे हिरन, खरगोश, कबूतर और उनकी फ़सलें नष्ट करने वाले अन्य जानवरों को मारें। ये सभी विशेषाधिकार मध्ययुगीन थे और वे इतनी अच्छी तरह जड़ जमा चुके थे कि उन्हें समाप्त कर देना मुश्किल था।

पादरी और सामन्तवर्ग तो विशेष अधिकारों का उपभोग करते थे और कोई कारण नहीं था कि वे अपनी स्थिति से असंतुष्ट हों, पर तीसरा वर्ग असंतुष्ट था। यह वर्ग फ्रांस की बहुसंख्यक जनता का था। फ्राँसीसी किसान स्पेन या जर्मनी के किसानों से अच्छी स्थिति में थे क्योंकि वहाँ वे अब भी दास थे। दर असल, कुछ फ्रांसीसी किसान इतने बुद्धिमान् थे कि वे उस प्रणाली के अन्यायों को समझते थे, जिसके अन्तर्गत वे रह रहे थे और वे उन्हें हटाना चाहते थे। उनमें से कुछ ने रूसो, मोण्टेस्क्यू और वाल्टेयर जैसे व्यक्तियों के विचारों को सुना था। वे यह भी जानते थे कि अमेरिकी उपनिवेशवासियों ने उस ब्रिटिश शासन को उखाड़ फेंका है जिसे वे पसंद नहीं करते थे।

लुई सोलहवाँ—तब फ्रांस की ऐसी स्थिति थी जिसमें लुई १६वाँ शासन करने के लिए पैदा हुआ। वह अच्छे विचारों का व्यक्ति था लेकिन उसकी शिक्षा उसके इस पद के अनुरूप नहीं थी। वह चाहता था फ्रांस की स्थिति में सुधार लाये लेकिन उसमें सुधार लाने की आत्मशक्ति का अभाव था क्योंकि सुधारों को लाने से वह उन दरबारियों की नज़रों में बदनाम हो जाता जिनसे उसका सम्पर्क था। वह राजाओं के दैवी अधिकारों पर भी विश्वास रखता था।

लुई का विवाह आस्ट्रिया की मारिया थेरेसा की सुन्दर पुत्री मेरी एंटोएनेट से हुआ था। इस विवाह का उद्देश्य राजनीतिक था और फ्रांस की तत्कालीन सरकार ने आस्ट्रिया से मैत्री रखने के लिए इसे सम्पन्न कराया था। लेकिन आस्ट्रिया के राजा की पुत्री के साथ विवाह करना फ्रांस की जनता को कतई पसन्द नहीं आया। इसके अलावा मेरी एंटोएनेट बहुत ही उथली औरत थी। उसे अपने तथा अपने ऐशो-आराम के अलावा और किसी का कोई खयाल नहीं था। वह गरीबों की स्थिति से अनभिज्ञ थी और उसकी उनमें कोई दिलचस्पी भी नहीं थी। लुई और मेरी एंटोएनेट फ्रांस के सम्मुख उपस्थित समस्याओं को सुलझाने में नितान्त अयोग्य थे।

फ्रांस की वित्तीय समस्याओं को सुलझाने का प्रयत्न—लुई के सामने सबसे पहली तात्कालिक समस्या देश की आर्थिक स्थिति में सुधार की थी। लुई ने एक के बाद एक कई व्यक्तियों को फ्रांस के वित्त मन्त्री के रूप में नियुक्त किया और प्रत्येक नियुक्ति के साथ वह यह उम्मीद करता था कि नया व्यक्ति खर्च में कटौती या नये करों को लगाये बगैर ही बजट को संतुलित करने का जादू दिखा सकेगा। लेकिन नियुक्त किया गया व्यक्ति जानता था कि राजदरबार में किफायतशारी का होना लाज़मी है जहाँ कि धन बेहिसाब खर्च किया जाता है। असफलता का बहुत बड़ा कारण रानी थी क्योंकि अगर वित्त मन्त्री दरबारी-जीवन के ठाठ-बाट को घटाकर खर्च में कमी लाने की कोशिश करता तो वह कुढ़ती थी।

अन्त में लुई ने, अन्तिम उपाय के रूप में जनता के प्रतिनिधियों की एक सभा, इस प्रश्न पर विचार करने के लिए कि क्या किया जाए, बुलाने को सहमति प्रदान की। एस्टेट्स जनरल का अधिवेशन बुलाये हुए १७५ वर्ष बीत चुके थे और एस्टेट्स जनरल क्या चीज है, इसके बारे में बहुत कम जानकारी लोगों को थी। लेकिन १७८९ में लगभग ६० लाख लोगों ने उसके समय के प्रथम चुनाव में, आशान्वित होकर वोट डाले। राजा न तो सुधार की उम्मीद ही करता था और न चाहता ही था; उसका मंशा सिर्फ़ अपने रिक्त खजाने को भरना था।

यूइंग गैलोवे
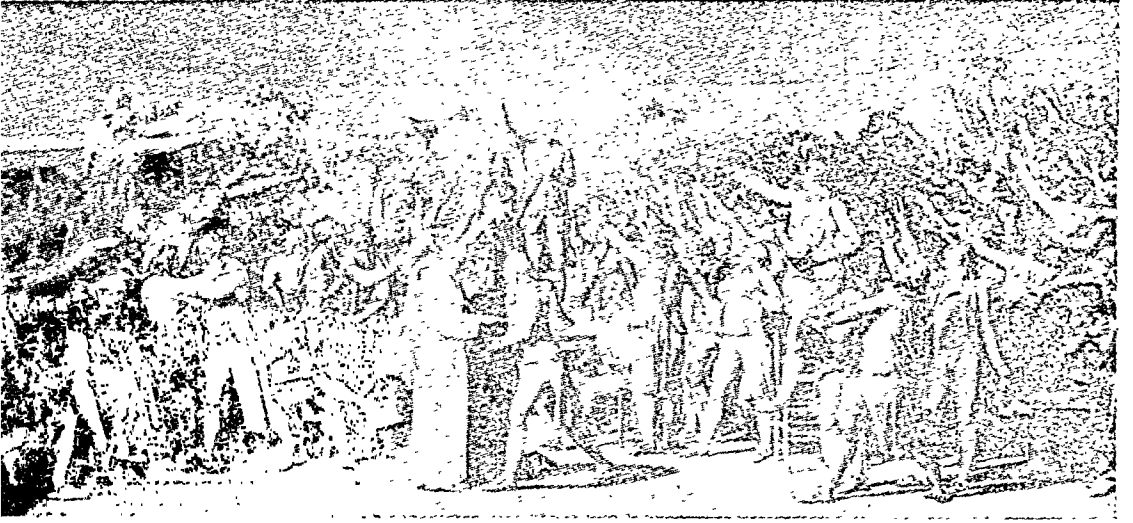
राष्ट्रीय महासभा, जिसे अपने सभा भवन से निकाल दिया गया था, आंगन के टैनिस-कोर्ट में मिली। यहाँ सदस्यों ने शपथ ली कि जब तक राज्य का संविधान स्थापित नहीं होता, जहां कहीं भी उचित परिस्थितियां होंगी, वे इकट्ठे होंगे।

राष्ट्रीय महासभा (नेशनल असेम्बली) ने फ्रांस की सरकार का कार्य-भार संभाला

१७८९ में जब एस्टेट्स जनरल की बैठक हुई तब वह तीन विभिन्न विभागों में विभक्त थी, क्रमशः पुरोहित श्रेणी, कुलीन या सामन्त श्रेणी और सर्व-साधारण वर्ग। इससे पूर्व इन वर्गों की बैठकें अलग-अलग हुआ करती थीं और चूंकि प्रत्येक वर्ग एक इकाई के रूप में मतदान करता था इसलिए प्रथम दो वर्ग आसानी से तीसरे वर्ग के वोटों को काट सकते थे। तीसरे वर्ग के सदस्यों में बहुत से वकील भी थे, लेकिन उसके सदस्यों में से किसी को भी संसदीय कामों का अनुभव नहीं था। वे छोटे-छोटे मामलों में उलझ पड़ते थे और बैठकों में आम अव्यवस्था फैल जाती थी। अन्त में तृतीय वर्ग के सदस्य एक बात पर सहमत हो गये। तीनों ही वर्ग, बजाय अलग-अलग बैठकें करने के एक सदन के रूप में बैठेंगे। और इकाई के रूप में वोट देने के इस तरीके से वे आशा कर सकते थे कि उनकी नीतियों के पक्ष में उन्हें बहुमत प्राप्त हो सकेगा।

चूंकि राजा इन मामलों में कोई भाग नहीं लेता था, इसलिए छह सप्ताह की बहस के बाद तृतीय वर्ग (जनता वर्ग) ने अपने को राष्ट्रीय महासभा के रूप में संगठित कर लिया और पुरोहित वर्ग तथा सामन्तवर्ग को उनके साथ शामिल होने को आमंत्रित किया। फ्रांस की क्रांति का यह प्रथम चरण था।

बैस्टील का घेरा—लुई की राष्ट्रीय महासभा की नीतियों से कोई सहानुभूति नहीं थी। अपने दरबारियों की सलाह पर उसने शाही गारद को पेरिस बुला लिया था। एक समय ऐसा प्रतीत हुआ कि वह राष्ट्रीय महासभा को भंग करने के लिए उसका प्रयोग करेगा लेकिन वह ऐसा करने में झिझकता था।

इसी बीच पेरिस की भीड़ ने, क्रांति की भावना से प्रेरित होकर १४ जुलाई को बैस्टील पर हमला कर दिया। बैस्टील पेरिस का एक पुराना किला था जो लम्बे अर्से से राजनीतिक बंदियों को कैद रखने के लिए प्रयुक्त होता आया था। इसलिए वह जनता की नजरों में पुराने शासन का प्रतीक था।

जब जनता की भीड़ जबरदस्ती बैस्टील में

घुसी तो वहाँ उन्हें सिर्फ सात कैदी मिले, जिन्हें लोगों ने खुशियां मनाते हुए कैदखाने से मुक्त किया। तब से बैस्टील को ध्वस्त करने का दिवस फ्रांस में प्रमुख राष्ट्रीय दिवस के रूप में मनाया जाता है। उसका ध्वंस करना फ्रांस के पुराने शासन को ध्वंस करने का प्रतीक है।

राष्ट्रीय महासभा के सुधार—राष्ट्रीय महासभा फ्रांस की सरकार मे सुधार के कार्यों में जुट गयी। पहला काम उसने यह किया कि सामन्तवाद और दासता के सभी अवशेषों का उन्मूलन कर दिया। कुलीनों ने इस सुधार का समर्थन किया, क्योंकि वे किसानों से घबराये हुए थे। चर्च का "टाइथ कर" लगाने का शताब्दियों पुराना अधिकार समाप्त कर दिया गया। राष्ट्रीय महासभा ने इससे भी आगे बढ़ कर चर्च की सम्पत्ति को जब्त कर लिया और पादरियों की संख्या घटा दी। वे राजकर्मचारी बना दिये गये, उनका वेतन सरकार देती थी और उन्हें जनता द्वारा उनके पदों के लिए चुना जाता था। बहुत से पादरियों ने इस आमूल परिवर्तन को अस्वीकार किया और वे देश से भाग गये। राष्ट्रीय महासभा ने कानूनों के स्थानीय विभेदों को समाप्त कर सभी फ्रांसीसी नागरिकों के लिए एक कानून बनाया। पुराने प्रान्त समाप्त कर दिये गये और फ्रांस "विभागों" में विभक्त कर दिया गया, जो इतने छोटे होते थे कि उनका प्रशासन आसानी से किया जा सके। इस प्रकार राष्ट्रीय महासभा ने फ्रांस की सरकार और सामाजिक परिस्थितियों में भारी परिवर्तन ला दिया।

जनता के अधिकारों की घोषणा—१७८९ में राष्ट्रीय महासभा ने जनता के आधारभूत अधिकारों की भी घोषणा की। इस घोषणा में फ्रेन्च सुधारकों के बहुत से विचार थे और इसमें अमेरिकनों के स्वतन्त्रता के घोषणा-पत्र का प्रभाव भी परिलक्षित होता था। फ्रेन्च घोषणा-पत्र यूरोप में तब तक जारी की गई घोषणाओं में सबसे महत्वपूर्ण दस्तावेज था। इसने आने वाली फ्रेन्च

कलचर सर्विस

१४ जुलाई का फ्रांस के लिए वही महत्त्व है जो अमेरिका के लिए ४ जुलाई का—अत्याचारी शासन के खिलाफ बगावत का दिन।

सरकारों तथा अन्य यूरोपीय देशों की सरकारों के लिए एक आदर्श का कार्य किया। इसके प्रत्येक नियम को इस प्रकार बनाया गया था कि कुछ कुरीतियाँ जिनसे फ्रांसीसी जनता पीढ़ियों से पीड़ित होती आई थी, सदा-सर्वदा के लिए समाप्त हो जायं।

राजा संरक्षण में पेरिस लाया गया—राजा ने घोषणा-पत्र पर हस्ताक्षर करने में हिचकिचाहट दिखाई और यह अफवाह थी कि लुई क्रांति को कुचलकर पुराने शासन की फिर से स्थापना करने के निमित्त पेरिस में सेना लाने जा रहा है। इसके अलावा पेरिस में खाद्यान्न की कमी हो गयी थी। ५ अक्तूबर, १७८९ को, पेरिस से एक भीड़ वर्साय को चली और उसके पीछे-पीछे नवनियुक्त नेशनल गार्ड्स थे। जनता ने मांग की कि राजा उनके साथ-साथ पेरिस लौटे। उसके पास कोई दूसरा रास्ता नहीं था, इसलिए क्रांति का त्रिकोण हैट पहने हुए राजा, रानी और अपने पुत्र के साथ, भीड़ के संरक्षण में पेरिस वापस आ गया। राष्ट्रीय

महासभा ने राजा का अनुसरण किया और पेरिस में अपने कार्य-कलाप जारी रखे।

१७९१ का संविधान—आखिरकार १७९१ में राष्ट्रीय महासभा ने फ्रांस के लिए एक संविधान तैयार कर लिया। यह पहला संविधान "१७९१ के संविधान" के नाम से पुकारा जाता है। गोकि यह अपने जमाने का आमूल परिवर्तनकारी संविधान लगता है, लेकिन यह बहुत ज्यादा लोकतन्त्रात्मक नहीं है। इसके अन्तर्गत राजा गद्दीनशीन रहा लेकिन उसके अधिकांश अधिकार समाप्त हो गये। विधान सभा नामक एक सदन के सभासद कानून बनाने के लिए सीधे चुन लिये जाते थे। सिर्फ कर देने वाले नागरिक ही मतदान कर सकते थे और सिर्फ भूस्वामी ही पदों को संभाल सकते थे। यह संविधान सिर्फ फ्रांस का ही नहीं अपितु यूरोप महाद्वीप का पहला लिखित संविधान था।

राजा अपनी वफादारी में ढुलमुल था। जब वह क्रांति के नेताओं के साथ होता तो वह उनकी नीतियों को स्वीकार करने का वायदा करता था और जब वह रानी तथा अपने दरबारियों के बीच होता, तो उनसे वायदा करता था कि वह क्रांति को समाप्त करने की कोशिश करेगा। संविधान को स्वीकार कर लेने के बाद उसने आस्ट्रिया भाग जाने की कोशिश की। लेकिन वह रानी के साथ सीमा के पास पकड़ लिया गया और बेइज्जती से पेरिस लाया गया।

राष्ट्रीय महासभा की उपलब्धियाँ—जब राष्ट्रीय महासभा ने फ्रांस का शासन १७९१ के संविधान के अन्तर्गत सरकार को सौंपा तब उसकी अनेक उल्लेखनीय उपलब्धियाँ थीं। देश में मानवीय अधिकारों की घोषणा हो चुकी थी और उसका एक लिखित संविधान बन चुका था। पुराने शासन के अन्तर्गत सामन्तवाद के चिह्न, संगठन की शिथिलता और चर्च तथा कुलीनों के विशेषाधिकार समाप्त किये जा चुके थे। फ्रांसीसी क्रांति का प्रथम दौर सम्पन्न हो चुका था। नेतागण अभीतक मध्यवर्ग के लोग थे जो हिंसा नहीं, सुधार चाहते थे। वे आशा करते थे कि फ्रांस की सरकार को इंग्लैण्ड की तरह सीमित राजतन्त्र वाली बनायेंगे। मध्यवर्ग में उग्र क्रांतिकारियों (रेडिकलों) की संख्या और हिम्मत बढ़ती जा रही थी और ऐसी स्थिति में राजा के भाग निकलने की कोशिश ने उन लोगों की स्थिति को मजबूत नहीं किया जो साधारण तरीकों से सुधार लाने के पक्ष में थे।

१. पुराने शासन की किन परिस्थितियों ने फ्रांसीसी क्रांति को भड़काया ?
२. लुई १६ वाँ अच्छा राजा क्यों नहीं समझा जाता ? उसकी रानी जनप्रिय क्यों नहीं थी ?
३. लुई ने एस्टेट्स जनरल का अधिवेशन क्यों बुलाया ?
४. किन घटनाओं से टेनिस कोर्ट शपथ ली गई वह शपथ क्या थी ? (देखो चित्र पृष्ठ ३३७)
५. पेरिस की भीड़ ने बैस्टील को क्यों और कब नष्ट किया ?
६. राष्ट्रीय महासभा के सुधारों का उल्लेख करो।
७. मानव अधिकारों की घोषणा क्या थी ?
८. १७९१ के संविधान की प्रमुख व्यवस्थाएँ क्या थीं ?
९. १७९१ में राजा की वफादारी क्यों ढुलमुल थी ?

विधान निर्मात्री सभा का फ्राँस में शासन (१७९१-१७९२)

फ्राँस में आन्तरिक विभाजन—१७९१ के संविधान से फ्रांस के शासन के लिए निर्मित विधान सभा में सभी अनुभवहीन लोग थे जो सरकार के संचालन के बारे में कुछ भी नहीं जानते थे। उन्होंने देश को बुरी तरह बंटा हुआ पाया। कुछ लोगों का विचार था कि बहुत अधिक परिवर्तन ला दिये गये हैं और दूसरों का विश्वास था कि ये परिवर्तन नाकाफी हैं। बहुत से सोचते थे कि राजा को गद्दी से उतार दिया जाय। बहुत से भगोड़े (अपना देश फ्रांस छोड़ने वाले) परदेशवासी आस्ट्रिया और जर्मन राज्यों से फ्रांस में पुराने शासन की स्थापना के लिए मदद लेने के प्रयास में थे। अधिकांश किसान बहुत अधिक धार्मिक थे और चर्च तथा सरकार में किये गये परिवर्तनों के विरोधी थे। जब वे स्थिति

की समीक्षा करने शहर के कैफों में मिलते तो वहाँ क्लब बन जाया करते थे। इनमें सबसे महत्त्वपूर्ण जेकोबिन क्लब था जिसका नेतृत्व मैक्सिमिलियन रोबस्पियर करता था। विधान सभा में भी राजनीतिक दल बन गये थे जो प्रश्नों पर पक्ष-विपक्ष में हो जाया करते थे।

विदेशों से युद्ध—कुछ विदेशी शक्तियों ने फ्रांस की क्रांति को बड़ी उत्सुकता से देखा था, और कुछ भयभीत थीं। अमेरिका और इंग्लैण्ड के बहुत से लिबरल विचारकों ने मानवीय अधिकारों की घोषणा और बैस्टील को ध्वस्त किये जाने का स्वागत किया था। लेकिन प्रारंभ से ही महाद्वीप के शासक फ्रांस की घटनाओं को असंतोष की नजर से देखते आये थे। उन्हें भय था कि क्रांति-आन्दोलन उनके मुल्क में भी फैलेगा। उन्होंने फ्रांस से मिली सीमा पर अपनी फौजों का जमाव कर दिया था और जब फ्रांस ने उन्हें हटाने की मांग की तो उस आदेश की अवज्ञा की गई। तब फ्रांस की क्रांतिकारी

एक जेकोबिन क्लब

सरकार ने अपने देश के बचाव के लिए एक सेना भरती की। लोग बड़े उत्साह से, एक नया गाना 'मार्सेल्ज' गाते हुए, जो फ्रांस का राष्ट्रगीत बना, आगे आये। फ्रांसीसी युवक क्रांति और राष्ट्रीय उमंग से भरे हुए थे। उन्होंने स्वतंत्रता, समानता और भाईचारे का नारा बुलंद किया। इस प्रकार फ्रांस उस समय अपने घर के भीतर ही विभक्त था जब वह विदेशी युद्धों में फंसा।

सीमित राजतंत्र का अन्त—फ्रांसीसी सेना युद्ध के लिए न तो अधिक सुरक्षित ही थी और न उसके पास पर्याप्त युद्धास्त्र ही थे। नतीजा यह हुआ कि वह हार गयी। लोगों ने अपनी पराजय का सारा दोष राजा और रानी पर थोपा। चारों ओर यह खबर फैली कि राजा और रानी देश में पुनः एकच्छत्र राजतंत्र की स्थापना के लिए शत्रुओं से समझौता कर रहे हैं। आक्रमणकारी फौजों के एक जनरल ने ऐलान किया कि फौजें राजा को पुराने अधिकार और प्रतिष्ठा प्रदान करेंगी और धमकी दी कि यदि जनता ने राजा को नुकसान पहुँचाने की हिमाकत की तो वह पेरिस को मिटा देगा। इससे फ्रांस की जनता का खून खौल उठा। विधान सभा ने राजा को कैद कर लिया और राष्ट्रीय कन्वेन्शन बुलाने के लिए प्रतिनिधियों के चुनाव का आदेश दिया, जो नया संविधान तैयार करे।

राष्ट्रीय कन्वेन्शन ने आतंकपूर्ण शासन किया

राष्ट्रीय कन्वेन्शन विभिन्न पार्टियों को मिला-जुला कर बना था। जिरोंदिस्तों को, जो फ्रांसीसी क्रांति की ज्यादती पर आपत्ति उठाते थे, हाल के दाहिनी ओर बैठाया गया था। रेडिकलों को, जिन्हें 'माउण्टेन' नाम दिया गया था, हाल के बाईं ओर ऊँचा स्थान बैठने को मिला। इन दोनों के बीच में 'प्लेन' दल के लोग बैठे। यह सभी दलों के ऐसे लोग थे जिनके विचार इन दोनों चरम विचारों वाले दलों के बीच के थे। कन्वेन्शन में जिरोंदिस्तों और माउण्टेन दल वालों के बीच में गरमा-गरमी रही और अन्त में पहले दल को बाहर खदेड़ दिया गया।

प्रथम फ्रांसीसी गणतंत्र—राष्ट्रीय कन्वेंशन ने फ्रांस की सरकार की बागडोर संभाली। सितम्बर, १७९२ में उसने फ्रांस को एक गणराज्य घोषित किया। लुई १६वें पर मुकदमा चलाया गया और जनवरी १७९३ में देशद्रोह के अपराध में पेरिस के एक सार्वजनिक चौराहे में उसका सिर धड़ से अलग कर दिया गया।

आतंक का शासन—कन्वेन्शन ने महसूस किया

कि जो कार्यभार उसने लिया है वह उसके लिए बड़ा भारी है। इसलिए अप्रैल १७९३ में उसने फ्रांस के अन्दरूनी मामलों का अधिकार "जन सुरक्षा समिति" को सौंपा। रोबस्पियर समिति का प्रमुख व्यक्ति बना। इससे ज्यादा निर्भर व्यक्ति पाना मुश्किल था। समिति ने फ्रांस के सभी संदिग्ध शत्रुओं का सफाया शुरू कर दिया। परिणाम-स्वरूप, मुकदमा चलाने के बाद, जो महज एक दिखावा था, हजारों की संख्या में कुलीन, पादरी और अन्य लोग जो उनके इन निर्मम तरीकों के विरोधी थे, फांसी के तख्ते पर लटका दिये गये। मृत्युदण्ड दिये जाने वालों में रानी मेरी एंटोएनेट भी थी जिसे "आस्ट्रियाई औरत" के नाम से पुकारा जाता था। कन्वेंशन में रोबस्पियर के दुश्मनों ने, अपनी मृत्यु की आशंका से भयभीत होकर, उसे पकड़ लिया और तेजी से उसे गुलेटिन पर चढ़ा दिया। एक सौ दिन तक वह फ्रांस का वास्तविक तानाशाह बना रहा। फ्रांसीसी इतिहास का यह समय "आतंक का राज्य" के नाम से प्रसिद्ध है लेकिन रोबस्पियर की मृत्यु के बाद फ्रांस में आभ्यन्तर खून-खराबी समाप्त हो गयी।

"**बाह्य राष्ट्रों का संयुक्त गुट**"—इसने जोशो-खरोश के साथ कन्वेंशन ने फ्रांस के शत्रुओं के खिलाफ आवाज उठाई थी। उसके खिलाफ राष्ट्रों का एक संयुक्त गुट बना था। उसमें आस्ट्रिया, ब्रिटेन, प्रशिया, हालैण्ड, स्पेन और सार्डीनिया शामिल थे। शीघ्र ही कई युवा और उत्साही जनरल उन्हें हराने और फ्रांस से बाहर निकालने में सफल हुए।

"**स्वतन्त्रता, समानता, भाईचारा**"—हमें यह देखना चाहिए कि छह वर्ष पूर्व, उस भाग्य-निर्णायक दिवस के बाद जबकि बैस्टील को ध्वस्त किया गया था, फ्रांस में क्या-क्या हुआ? सामन्तवाद के अवशेष समाप्त हो चुके थे। फ्रांस में यह सिद्धान्त प्रतिष्ठापित हो चुका था कि सरकारें अपना अधिकार शासितों से प्राप्त करती हैं। सभी नागरिक कानून की दृष्टि में बराबर माने जा चुके थे। चर्च की बहुत बड़ी सम्पत्ति और उसका सरकार में व्यापक प्रभाव खत्म हो चला था। चर्च और कुलीनों की जमीनें जब्त कर ली गयी थीं और उन्हें किसानों तथा मध्य वर्ग के बीच बाँट दिया गया था।

फ्रांसवासियों ने फ्रांसीसी क्रांति के मतलब को अपने नारे में उतार लिया था—"स्वतंत्रता, समानता, भाईचारा।" उनके लिए **स्वतंत्रता** का मतलब व्यक्तिगत अधिकारों की प्राप्ति था। उनमें सम्पत्ति रखने का अधिकार, जहाँ काम करना चाहें वहाँ काम करने का अधिकार, अपनी इच्छा के मुताबिक पूजा का अधिकार और अपनी मर्जी के मुताबिक बोलने और लिखने का अधिकार भी थे। **समानता** का अर्थ सामन्तशाही और दासत्व के सभी तत्त्वों का उन्मूलन और सभी लोगों को कानून की दृष्टि से समानाधिकार प्रदान करना था। **भाईचारे** का मतलब फ्रांस के सभी लोगों के बीच भ्रातृत्व था जो क्रांति के द्वारा जाग्रत की गयी राष्ट्रीयता की भावना को प्रदर्शित करे।

१. विधान सभा के सत्तारूढ़ होते समय फ्रांस की क्या स्थिति थी?
२. जेकोबिन क्लब क्या था?
३. फ्रांस किस तरह अपने पड़ोसियों के साथ युद्ध में फंसा?
४. 'मार्शेलज' का प्रादुर्भाव कैसे हुआ?
५. विधान सभा ने नये चुनाव क्यों कराये?
६. माउन्टेन, जिरोंदिस्त और प्लेन कौन थे?
७. आतंक का राज्य क्या था? उसका नेता कौन था?
८. फ्रांस के विरुद्ध संयुक्त गुट में कौन कौन से देश शामिल थे?
९. फ्रांस की क्रांति से प्राप्त स्थायी उपलब्धियों की तालिका बनाओ।

१०. फ्रांसीसी क्रांति के नारे का क्या मतलब था ?

डाइरेक्टरी ने नैपोलियन के (१७९५-१७९६) अभ्युदय का मार्ग प्रशस्त किया

राष्ट्रीय कन्वेन्शन ने एक नया संविधान तैयार किया था जिसमें दो संस्थाओं की एक प्रतिनिधि सभा और पाँच सदस्यों की एक कार्य समिति की व्यवस्था थी। इसे "डाइरेक्टरी" कहते थे। विधायक डाइरेक्टरी का चुनाव करते थे। आरंभ से ही डाइरेक्टरी लोकप्रिय नहीं थी। अधिकांश व्यक्ति, जो इसमें होते थे, बहुत कमजोर या भ्रष्ट या दोनों ही थे। सरकार फ्रांस में बेरोजगारों की गंभीर समस्या को हल नहीं कर पाई। सर्व-साधारण जनता इसलिए विरोध करती थी कि वह वोट नहीं दे सकती थी।

नैपोलियन बोनापार्ट—फ्रांस के शत्रुओं के विरुद्ध युद्ध जारी रखने के निमित्त एक सुयोग्य सैनिक नेता की तलाश के दौरान, डाइरेक्टरी ने कोर्सिका के एक युवक को फ्रांसीसी सेना का मुखिया बनाया। यह व्यक्ति नैपोलियन बोनापार्ट था। नैपोलियन बाल्यकाल में ही एक सैनिक अकादमी में प्रशिक्षण प्राप्त करने ब्रीएन भेजा गया था। तब उसने यह प्रदर्शित किया कि वह बड़ा प्रतिभाशाली है, कठिन से कठिन समस्याओं को सुलझाने में उसकी पकड़ जबरदस्त है और वह अध्ययन करने को उत्सुक है। बहुत से काबिल सैनिक अफ़सर क्रांति के दौरान फ्रांस से भाग गये थे, इसलिए युवकों के लिए तेजी से पदोन्नति करना आसान हो गया था। नैपोलियन उनमें से एक था। डाइरेक्टरी ने इटली में आस्ट्रियनों से लड़ने के लिए सेना की कमान सम्भालने का कार्य उसे सौंपा। उसने शीघ्र ही अपनी सामान्य अनुशासित फौज को एक कुशल लड़ाकू फौज बना दिया। तेजी के साथ उसने आस्ट्रियनों को उत्तरी इटली से खदेड़ दिया। वह अपनी सेना के देवता के रूप में ही नहीं अपितु फ्रांसीसी जनता के महान् विजेता के रूप में फ्रांस लौटा। डाइरेक्टरी ने, उसकी लोकप्रियता से घबरा

बैटीमैन आर्काइव

नैपोलियन की सेना के पास ज्यादा युद्धास्त्र नहीं थे लेकिन उसके सैनिक उसके प्रति पूरी तरह वफादार थे।

कर उसका ध्यान इंग्लैण्ड की ओर मोड़ने का अल्पकालीन संतोष प्राप्त किया। आरंभिक संयुक्त गुट में से इंग्लैंड ही सिर्फ ऐसा महत्त्वपूर्ण राष्ट्र रह गया था जो अब भी फ्रांस से लड़ रहा था।

मिस्र पर आक्रमण—चूंकि इंगलिश चैनल को पार कर सीधा हमला बहुत बड़े खतरे से भरा समझा गया, इसलिए डाइरेक्टरी ने नैपोलियन को मिस्र पर विजय की कोशिश करने की अनुमति खुशी से दे दी। ऐसा करने से इंग्लैण्ड की भारत के साथ संचार की लाइन कट जायगी या शायद मिस्र एक ऐसा अड्डा बन सके जहाँ से भारत के नियंत्रण का लाभ हासिल किया जा सके। नैपोलियन ने मिस्र में कई स्थलीय युद्धों में विजय प्राप्त की लेकिन नील नदी की लड़ाई में फ्रांसीसी नौसेना

होराटियो नेल्सन के नेतृत्व में लड़ रही ब्रिटिश नौसेना से हार गयी। इससे नैपोलियन की खुद की सेना का फ्रांस से रसद मार्ग कट गया। नैपोलियन ने तब अपनी सेना को तो पीछे छोड़ दिया और एक तेज चलने वाली नौका से तेजी से फ्रांस पहुँच गया। उसको मिस्र में सफलता न मिलने के बावजूद उसका वहाँ उत्साहपूर्वक स्वागत हुआ।

फ्रांस के खिलाफ दूसरा संयुक्त मोर्चा—इस उत्साह के पीछे कुछ कारण थे। फ्रांस की स्थिति गंभीर हो गयी थी। उसने अपने चारों ओर, विजित राज्यों में, कई गणतन्त्र कायम किये थे, लेकिन उनका शासन पेरिस द्वारा निर्धारित नीतियों के अनुसार चलता था। ऐसी सरकारें "कठपुतली" कही जाती थीं। इन कठपुतली गणतंत्रों में से अधिकांश ने नैपोलियन की अनुपस्थिति में बने नये संयुक्त गुट की सहायता से अपनी स्वतन्त्रता फिर से प्राप्त कर ली थी। फ्रांस के शत्रु रूस, ब्रिटेन और आस्ट्रिया थे। ये राष्ट्र हमेशा महाद्वीप में एक शक्तिशाली राष्ट्र से घबराते थे। इस बाहरी खतरे के अलावा, फ्रांस बहुत ज्यादा कर्ज में डूबा हुआ था। आर्थिक और सैनिक, दोनों ही, दृष्टियों से भ्रष्ट डाइरेक्टरी इसे संभाल पाने के लिये अयोग्य थी। लोगों को नैपोलियन की शानदार विजयों की स्मृति थी और फ्रांस की जनता उसे पुनः फ्रांस में देखकर प्रसन्न थी। वह उस समय का सर्वप्रिय 'हीरो' था।

राज्य क्रांति—इस प्रसिद्धि से महत्वाकांक्षी नैपोलियन डाइरेक्टरी के एक सदस्य का समर्थन प्राप्त कर सका, जिसके साथ उसने भ्रष्ट और अयोग्य सरकार का तख्ता उलटने का षड्यंत्र किया। उसने अपने वफादार सैन्य दस्तों से विधान सभाभवन घेर लिया और सरकार को मजबूर किया कि वह त्यागपत्र दे दे और उसे सर्वोच्च सेनापति नियुक्त करे। इस प्रकार यकायक सरकार का तख्ता पलट देने को राज्य क्रांति, या राज्य को एक प्रहार में खत्म कर देना कहते हैं। इस प्रकार गणतन्त्र का अन्त हो गया और फ्रांस एक सैनिक तानाशाह (डिक्टेटर) के सुयोग्य नियंत्रण में चला गया। नैपोलियन पहला कांसल बना।

१७९९ का संविधान—नयी सरकार नया संविधान बनाने के काम में जुट गयी, लेकिन संविधान बनाने का अधिकांश कार्य एक व्यक्ति ने किया और वह नैपोलियन था। उसका रूप तो गणतन्त्र का ही रहा, लेकिन उसमें नैपोलियन बोनापार्ट को पूर्ण अधिकार दिये गये थे। संविधान जनता के सामने रखा गया कि वह मतदान द्वारा चाहे तो उसे स्वीकार करे, चाहे अस्वीकार कर दे। इस प्रकार की प्रगति "जनमत संग्रह" कहलाती है। डाइरेक्टरी इस बुरी तरह असफल रही थी कि नया संविधान अलोकतंत्रात्मक होते हुए भी उसके समर्थन में भारी बहुमत प्राप्त हुआ।

ब्रिटेन के साथ शान्तिसंधि—नैपोलियन रूस, ब्रिटेन और आस्ट्रिया के नये गुट की ओर मुखातिब हुआ जो उसे खटक रहा था। उसने तेजी से आल्प्स पर्वत पार किया और पुनः आस्ट्रिया को इटली में हराया। मिस्र की लड़ाई की तरह अब भी वह नेल्सन के सेनापतित्व में लड़ रही ब्रिटिश नौसेना को नहीं हरा पाया। ब्रिटेन को आशा नहीं थी कि वह फ्रांस को महाद्वीप पर हरा पायेगा इसलिए १८०२ में एक शांति संधि पर हस्ताक्षर किये गये।

एक अमेरिकी साम्राज्य—ब्रिटेन के साथ हुई संधि से प्राप्त शांतिकाल में नैपोलियन ने अमेरिका में एक औपनिवेशिक साम्राज्य स्थापित करने का निश्चय किया। यह योजना फ्रांस में पसंद की गयी क्योंकि अधिकांश लोग अमेरिकी क्षेत्रों के फ्रांस के हाथ से निकल जाने की क्षति को नहीं भूले थे। नैपोलियन ने हैटी द्वीप पर कब्जा करने के लिए, जिसने फ्रांसीसी शासन के खिलाफ बगावत कर दी थी एक सेना भेजी। उनका कमाण्डर पीत ज्वर से मर गया और सेना पराजित हो गयी। परिणामस्वरूप, नैपोलियन को हैटी द्वीप से अपनी सेनाएँ हटाने को विवश होना पड़ा। इसी दर्मियान, १८०० में, स्पेन से संधि हो जाने के कारण नैपोलियन
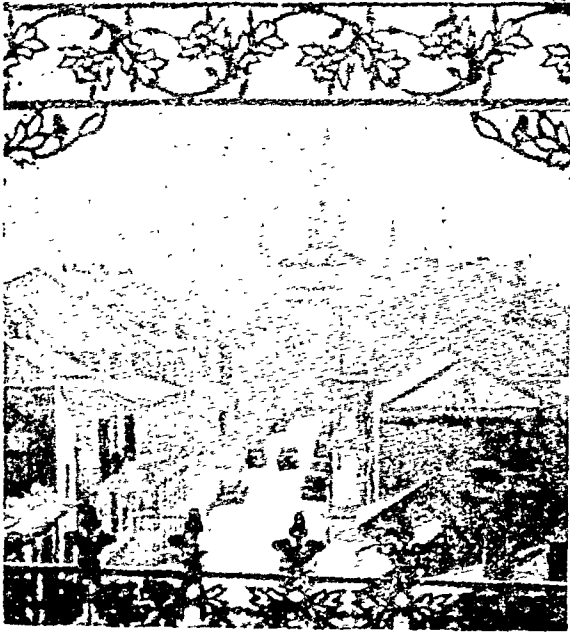
डेवानी

न्यू ऑर्लान्स के फ्रांसीसी क्वार्टर में खूबसूरत लोहे की छड़ों वाले छज्जे हैं। सेंट लुई कैथिड्रल पृष्ठभूमि में है।

को मिसीसिपी नदी और रॉकी पर्वतमाला के बीच का इलाका लुसियाना मिल गया था। वह आशा करता था कि इसे वह एक औपनिवेशिक साम्राज्य के रूप में विकसित करेगा। हैटी के ऊपर नियंत्रण प्राप्त करने की नैपोलियन की असमर्थता और ग्रेट ब्रिटेन के साथ नये सिरे से युद्ध शुरू हो जाने से उसके लिए लुसियाना का बचाव कठिन हो गया। इस भय से कि ब्रिटेन उस पर कब्जा कर लेगा और इसलिए भी कि युद्ध चलाने के लिए धन की जरूरत थी, नैपोलियन ने लुसियाना को १८०३ में अमेरिका के हाथों बेच दिया।

१. डाइरेक्टरी में किस तरह के लोग थे ?
२. नैपोलियन द्वारा फ्रेंच सेना का आस्ट्रिया के खिलाफ युद्ध में नेतृत्व किये जाने से पूर्व उसका इतिहास क्या था ?
३. मिस्र में ब्रिटेन के खिलाफ लड़े गये युद्ध के बारे में बताओ।
४. जब नैपोलियन मिस्र से लौटा तब फ्रांस की स्थिति कैसी थी ?
५. १७९९ की राज्यक्रांति का वर्णन करो।
६. १७९९ के संविधान में किस चीज की व्यवस्था थी ?
७. वह किस रूप में लोकतंत्रात्मक नहीं था ?
८. नैपोलियन ने ब्रिटेन के साथ क्यों संधि पर हस्ताक्षर किये ?
९. नैपोलियन लुसियाना को अमेरिका के हाथों बेचने को क्यों तैयार हुआ ?

नैपोलियन फ्रांस का सम्राट् बना

नैपोलियन की प्रतिष्ठा इतनी अधिक थी कि १८०२ में वह जीवन भर के लिए प्रधान कौंसल बना दिया गया। १८०४ में जनता ने उसे अपने नाम के आगे सम्राट् लगाने और उसके बाद उसके उत्तराधिकारियों को गद्दी का हकदार बनने का अधिकार मतदान द्वारा दिया। २ दिसम्बर, १८०४ को नोट्रडेम कैथेड्रल में अभिमानी नैपोलियन ने इस समारोह के लिए रोम से आये हुए पोप के हाथों से ताज लेकर अपने सिर पर रख लिया। उसका उद्देश्य यह प्रदर्शित करना था कि ताज पोप का दिया गया तोहफा नहीं अपितु उसकी अपनी सफलताओं का परिणाम है। अब गणतन्त्र का रहा-सहा बाह्य रूप भी समाप्त हो गया।

युद्धों का पुनरारम्भ—१८०२ की शांति अल्पकालीन थी। १८०५ में नैपोलियन की सेना और कुछ युद्ध-पोत फ्रांस और बेल्जियम के तटों पर पड़े हुए, इंग्लैण्ड पर हमले के अवसर की प्रतीक्षा में थे। लेकिन एक दिन प्रतीक्षा करने वाले फौजी जवानों तक यह घोषणा पहुँची, "बहादुर सैनिको, तुम्हें इंग्लैण्ड नहीं जाना है। ब्रिटेन के सोने ने आस्ट्रियाई सम्राट् को फुसला लिया है और उसने फ्रांस के खिलाफ युद्ध छेड़ दिया है।" नैपोलियन के खिलाफ रूस, इंग्लैंड और आस्ट्रिया का तीसरा संयुक्त गुट बन गया था। वह चामत्कारिक ढंग से कई लड़ाइयां जीतता हुआ पूर्व की ओर मुड़ा। आस्ट्रिया को शांति की प्रार्थना करनी पड़ी और रूस भी शांति संधि में शामिल हुआ।

बैटमैन आर्काइव

सम्राट् के रूप में नैपोलियन निरंकुश बनता चला गया। उसने समाचारपत्रों पर सेंसर लगा दिया और अपने आप सर्वोच्च शासक बन बैठा।

अपने सैनिकों के लिए नैपोलियन ने राजघोषणा की, "तुम लोगों ने अपने लिए निरन्तर गौरव अर्जित किया है।"

नैपोलियन, यूरोप का मालिक—१८१० में नैपोलियन की शक्ति उसकी चरम सीमा तक पहुँच चुकी थी। वह इंग्लैण्ड को छोड़ कर, सारे पश्चिमी यूरोप पर शासन करता था और उसका नियंत्रण पूर्व में रूस और आस्ट्रिया तक फैला हुआ था। वह इतना शक्तिशाली था कि आस्ट्रिया का सम्राट् अपनी पुत्री मेरिया लुइसा का विवाह उसके साथ करने को तैयार हो गया। नैपोलियन को आशा थी कि इस विवाह से आस्ट्रिया के साथ मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध हो जायेंगे और उधर से संकट का खतरा टल जायगा। परिणामस्वरूप, नैपोलियन ने अपनी पत्नी को तलाक दे दिया और आस्ट्रिया की राजकुमारी से विवाह कर लिया। अब वह युवक, जिसे बारह वर्ष पूर्व कोई भी नहीं जानता था, महाद्वीप का मालिक बन गया और उसका विवाह भी यूरोप के सबसे पुराने और प्रतिष्ठित शासक परिवार में हो गया।

ब्रिटेन का प्रतिरोध—सिर्फ ब्रिटेन नैपोलियन के खिलाफ युद्ध कर रहा था। ब्रिटेन इसलिए खड़ा रह पाया था कि उसका समुद्र पर नियन्त्रण था। १८०५ में, जब कि नैपोलियन स्थलीय युद्धों में विजय पर विजय प्राप्त कर रहा था, नेलसन ने स्पेन तट से दूर ट्रैफलगर के मशहूर युद्ध में फ्रांसीसी युद्ध बेड़े को तहस-नहस कर डाला। फिर भी नैपोलियन को आशा थी कि अपनी "महाद्वीपीय पद्धति" से वह *महाद्वीप के सभी देशों को ग्रेट ब्रिटेन से व्यापार करने* की मनाही कर उसे भूखा मार सकता है और उसको घुटने टेकने के लिए मजबूर कर सकता है। नैपोलियन का जहाजी बेड़ा बहुत छोटा था। इसलिए उसे *नाकेबंदी में सफलता नहीं मिली* और ब्रिटेन उसकी योजनाओं के लिए खतरा बना रहा।

रूस पर हमला—इसी दौरान, रूस का युवा-जार उसकी परेशानी बढ़ा रहा था। वह रूस में कुछ क्षेत्र शामिल करना चाहता था और नैपोलियन उसके रास्ते का रोड़ा था। रूस ने नाकेबंदी में भी कोई विशेष योगदान नहीं किया था। १८१२ में, नैपोलियन ने, अपने सलाहकारों की सलाह के विरुद्ध एक बड़ी फौज लेकर रूस पर चढ़ाई की। रूसियों ने उसका प्रतिरोध नहीं किया और वे पीछे हटते हुए हर चीज नष्ट करते चले गये। जब नैपोलियन मास्को पहुँचा तो उसे अहसास हुआ कि उसकी यह विजय खाली हाथ रही। नैपोलियन के पास इसके अलावा और कोई चारा नहीं रहा कि वह फ्रांस लौट जाय। लड़ाई जारी रखने के लिए रसद पाने के निमित्त वह अपने अड्डे से बहुत दूर था और जो कोई भी सामग्री रूसी अपने साथ नहीं ले जा पाये थे उसे पीछे हटते हुए उन्होंने नष्ट कर दिया था। यहाँ तक कि मास्को का शहर भी जला डाला गया था। जब तक नैपालियन घर को लौटे, जाड़ा शुरू हो गया था। वापसी के दौरान उसके हजारों सैनिक भूख और ठंड से ठिठुर कर और

हटती हुई सेना के पीछे से रूसी लोगों के अंधेरे में गोलियाँ चलाने से, मर गए। रूस की ठंड, उसके क्षेत्र की विशालता और उनकी "जमीन छोड़ते हुए नष्ट करते जाओ की नीति" से नैपोलियन जीता हुआ भी पराजित हो गया था और उसके लगभग ढाई लाख सैनिक मारे गये थे। पर उसकी इस भयंकर हार और इंग्लैण्ड को कुचल डालने में विफल रहने के बावजूद फ्रांस ने उस पर अपना विश्वास नहीं खोया।

नैपोलियन की शक्ति और उसकी कमजोरियाँ

नैपोलियन अपनी महत्ता और अपनी शक्ति के विचार से ओतप्रोत था। वह दूसरों को अपने ऊपर विश्वास दिलाने में समर्थ था। फ्राँस का राज्य उसके लिए काफी नहीं था। अपने एक मित्र से बातचीत में उसने कहा, "अगर महान् प्रारब्ध मुझे विश्व का डिक्टेटर बनने की ओर ले जाता है तो क्या मैं उसे रोक सकता हूं?......मेरा इरादा यह है कि जिसे मैंने शुरू किया है, उसे समाप्त करूँ ......मैं सभी राष्ट्रों को एक धागे में पिरो दूँगा। यही एक मात्र हल है, जिससे मुझे संतोष होगा।"

नैपोलियन जिस लक्ष्य के लिए लड़ा उसे प्राप्त नहीं कर सका, लेकिन वह यूरोप में पुरानी पड़ कर गल गयी चीजों को मिटाने में सफल हुआ। जहाँ कहीं भी उसने विजय हासिल की, वहाँ उसने सामन्तवाद को मिटा दिया। उसने वे कानूनी पद्धतियाँ समाप्त कर दीं जो समय की आवश्यकताओं के अनुरूप नहीं थीं। उसने फ्रांसीसी क्रान्ति की कई अच्छाइयों को, उसके स्वतन्त्रता, समानता और भाईचारे के सिद्धान्त को, शेष यूरोप में लागू किया। उसने १८०६ में पवित्र रोमन साम्राज्य का अन्त कर उसके स्थान पर दक्षिणी जर्मन राज्यों को एक में मिला कर "राइन संगठन" बनाया और उसे आस्ट्रिया से पूर्णरूपेण स्वतन्त्र रखा।

सभी डिक्टेटरों की भांति, नैपोलियन ने भी अपने देश का खून नष्ट किया और अन्त में वह असफल रहा। लेकिन राष्ट्रीयता की भावना, जिसे फ्रांसीसी क्रान्ति ने एक उच्च स्तर तक उठाया था,

बैटीमैन आर्काइव

रूस में अपने कष्ट-पीड़ित और मरते हुए सैनिकों को छोड़कर नैपोलियन तेजी से फ्रांस की ओर लौटा, जहां उसकी आखिरी पराजय हुई।

सम्पर्क से फैलने वाली भावना थी। नैपोलियन ने जिन मुल्कों को सर किया उनमें उसने वह भावना छोड़ दी थी और उसने "बूमरैंग" का कार्य किया। विजित राष्ट्र विदेशी शासन के अधीन रहना नहीं चाहते थे।

रूस से लौटने के बाद नैपोलियन को उन "कठपुतली राष्ट्रों" से उलझना पड़ा जो उसने पश्चिमी यूरोप में कायम किये थे। इसके अलावा वह अपने पुराने दुश्मनों, ग्रेट ब्रिटेन और रूस, को कभी भी नहीं जीत पाया था। सभी राष्ट्रों का एक अन्य गुट संगठित हो गया जिसने अन्त में उसे हरा डाला। उसे एल्बा नामक एक छोटे से द्वीप का "साम्राज्य" दे दिया गया। उसको अपनी सम्राट् की पदवी कायम रखने का अधिकार रहा और वार्षिक पेंशन के रूप में अच्छी रकम दी जाती थी।

जब राजनीतिज्ञ वियना में यूरोप के टुकड़ों को मिलाने की कोशिश में जुटे हुए थे, नैपोलियन भाग निकला और फ्रांस लौट आया। वहाँ उसकी सेनाओं ने उसका स्वागत किया और उसकी सेना में आ आ कर भरती होने लगे। एक सौ दिनों तक वह

फ्रांस में रहा। तब उसके शत्रुओं ने अपनी स्तब्धता से जाग कर उसके खिलाफ प्रयाण किया। उसका अन्त तब हुआ जब १८१५ में, इंग्लैण्ड के ड्यूक आफ विलिंगटन ने १८ जून को उसे बेल्जियम स्थित वाटरलू की लड़ाई में हराया। यह अद्भुत छोटा-सा जनरल विश्व की शांति को भंग करने वाला घोषित किया गया और उसे दक्षिण अतलांतक में सेण्ट हेलेना में भेज दिया गया। वहां उसे छह वर्ष तक ब्रिटिश गैरीजन के पहरुओं की सख्त निगरानी में रखा गया और ५१ वर्ष की आयु में वह मर गया।

नैपोलियन को फ्रांस में इतना सम्मान और इतनी शक्ति कैसे प्राप्त हुई? उसने फ्रांस के लिए क्या किया? पहली बात तो यह है कि लगभग २० वर्षों के दर्मियान ही उसने फ्रांस को ऐसा शक्तिशाली राष्ट्र बना दिया था कि उसके पड़ोसी उससे डरते और उसकी इज्जत करते थे। उसकी विदेशों में लड़ी गई लड़ाइयों में खून-खराबी और परेशानियों के बावजूद, नैपोलियन ने फ्रांस को कुछ स्थायी लाभ पहुँचाये। उसने फ्रांस को एक कानून संहिता दी। देश में कोई विधिवत् प्रणाली नहीं थी और कानून बड़ी गड़बड़ी से भरे थे। उसने उनके लिए लाभदायक कानूनों को चुन लिया और एक ऐसी संहिता तैयार की जो समझने में आसान तथा समस्त फ्रांस के लिए एकरूप थी। वह अपने जमाने के कानूनों की बेहतरीन प्रणाली मानी जाती थी। वित्तीय व्यवस्था में गड़बड़ी ही मुख्य तौर से १७८९ की क्रान्ति का कारण थी। नैपोलियन ने फ्रांस को ठोस मुद्रा दी और बैंक आफ फ्रांस की स्थापना की जिसने राष्ट्र की अच्छी तरह सेवा की। उसने फ्रांस में मितव्ययिता के तौर-तरीके और कर प्रणाली की अच्छी व्यवस्था बरती। इसके अलावा राष्ट्रीय कर्जदारी थोड़ी थी क्योंकि युद्ध के खर्च का ज्यादा हिस्सा विजित देशों द्वारा भुगतान किया गया। चर्च के साथ सम्बन्ध भी मैत्रीपूर्ण हो गये थे। उसने पोप के साथ एक समझौता किया जो १८०१ की धर्मसंधि (कौनकोर्डेट) के नाम से प्रसिद्ध है। इसमें पोप को फांस के चर्च के मुखिया के रूप में मान्यता दी गयी।

नैपोलियन ने अपने जमाने की विशद शिक्षा प्रणाली की स्थापना की। यह प्रणाली प्राइमरी स्कूलों से लेकर पेरिस विश्वविद्यालय तक लागू थी और इसमें शिक्षकों की ट्रेनिंग के विशेष स्कूल भी शामिल थे। गोकि इन स्कूलों ने लोगों को नैपोलियन की भक्ति करना सिखाने का उसके लिए फायदेमंद कार्य भी सिद्ध किया, लेकिन उनसे शिक्षा भी मिली। नैपोलियन ने फ्रांस की सरकार का केन्द्रीय-

यूइंग गैलोवे
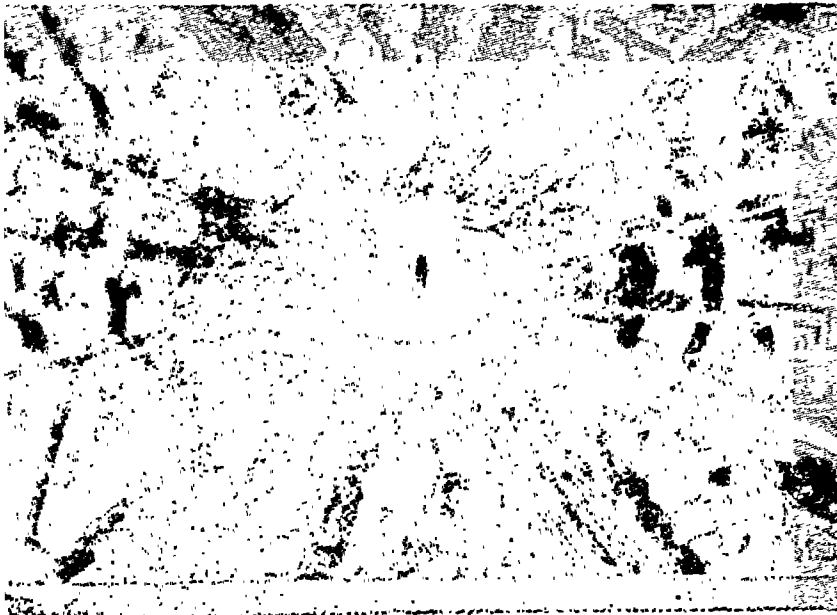
नेपोलियन ने खूबसूरत एवेन्यू डे केम्पास एलीसी के आर-पार एक विशाल पत्थर का मेहराब आर्क द ट्रायम्फ बनाना आरम्भ किया।

प्राचीन शहर की दीवारों पर बनी सायेदार सड़कें, जो चोड़े होते गये घेरों में बनी हैं, पेरिस के असाधारण ढाँचे का एक अंग है।

करण कर दिया था लेकिन उसने सभी लोगों के समानाधिकार कायम रखे।

इन सुधारों के अलावा, नैपोलियन ने अन्दरूनी स्थिति में भी बहुत तरक्की ला दी थी। उसने सैनिक सड़कें बनवाईं जो पेरिस से देश की सीमा तक दौड़ती थीं। पुल और नहरें बनवाई गई थीं, दलदल सुखा दिये गये थे और बंदरगाहों की हालत सुधारी गयी थी। पेरिस की खूबसूरत इमारतों, मेहराबों, सड़कों को सुन्दर रूप दिया गया था। और उनके किनारे छायादार पेड़ लगवाये गये थे। नैपोलियन ने फ्रांस के लिए क्रांति के सामाजिक लाभों में से बहुत से स्वतः अपनाये थे। इन सब उपलब्धियों ने नैपोलियन की प्रसिद्धि और प्रतिष्ठा को बढ़ाया।

१. १८०२ में और १८०४ में नैपोलियन को कौन से पद मिले?
२. क्या प्रमाण थे कि नैपोलियन फ्रांस में वास्तव में जनप्रिय था?
३. नैपोलियन ने मेरिया लुइसा से क्यों विवाह किया?
४. उसके रूस पर हमले का वर्णन करो।
५. नैपोलियन का जीवन में क्या उद्देश्य था?
६. फ्रांसीसी क्रांति के विचारों ने किस तरह नैपोलियन की पराजय में योगदान किया?
७. नैपोलियन ने फ्रांस के बाहर क्या परिवर्तन किये?
८. नैपोलियन की प्रथम पराजय के बाद उसका क्या हुआ? सौ दिन क्या थे?
९. ड्यूक आफ विलिंगटन कौन था? वाटरलू के बाद नैपोलियन का क्या हुआ?
१०. नैपोलियन के शासन से फ्रांस को हुए स्थायी लाभों की सूची बनाओ।

विचार-विमर्श के लिए प्रश्न

१. १७७० में उपनिवेशवासियों के लिए ब्रिटिश पार्लमेंट में प्रतिनिधि भेजना क्यों कर व्यावहारिक नहीं था?

२. इसका क्या प्रमाण है कि राष्ट्रीयता की भावना आज विश्व में एक शक्ति है?

३. व्यापार के वाणिज्य सिद्धान्त का क्या औचित्य था? स्पष्ट करो।

४. क्या वाणिज्यवाद आज भी प्रयोग में लाया जाता है?

५. किस अर्थ में अमेरिकी क्रांति को अंग्रेजों द्वारा स्टूअर्ट्स के शासनकाल में अधिक अधिकारों के लिए किये गये संघर्ष का ही अगला रूप कहा जा सकता है?

६. अमेरिकी क्रांति से अधिक उग्र फ्रांसीसी क्रांति क्यों थी?

७. क्या इतनी बड़ी हिंसा के बावजूद दीर्घकाल की दृष्टि से यह अच्छा था कि फ्रांसीसी क्रांति हुई?

८. राजनीति में "दक्षिण" और "वाम" का आरम्भ कैसे हुआ? आज इन शब्दों का क्या अर्थ है?

९. नैपोलियन ने पोप को अपने सिर पर ताज क्यों नहीं पहनाने दिया?

१०. ब्रिटेन के एक द्वीप होने के बावजूद, वह हमेशा ही यूरोप महाद्वीप की घटनाओं के प्रति दिलचस्पी रखता आया है। क्यों?

११. क्या अन्य राष्ट्रों का नैपोलियन को विश्व की शांति को गड़बड़ाने वाला कहना ठीक था?

इतिहास के उपकरणों का प्रयोग

एक. नाम, तिथियाँ और स्थान

(क) क्या तुम इन शब्दों की व्याख्या कर सकते हो?

संघ के अन्तर्नियम—बैस्टील दिवस—संयुक्त पक्ष (कोएलिशन), कौकेड (टोप का फुँदना)—जन-सुरक्षा समिति—विभाग—डाइरेक्टरी—निष्क्रान्त—जिरोंदिस्त—जेकोबिन—स्वतन्त्रता—समानता—भाईचारा—माउण्टेन—राष्ट्रीय महासभा—१८०१ की धर्म संधि—राइन का संघ—महाद्वीपीय कांग्रेस—महाद्वीपीय पद्धति—कन्वेन्शन—राष्ट्रवाद—पुराना शासन—प्लेन—जनमत संग्रह—१७६३ की घोषणा—कठपुतली राज्य—आतंक का राज्य—गणतंत्र—राज्य क्रांति—स्वतन्त्रता की घोषणा—मानवीय अधिकारों की घोषणा—"जमीन छोड़ते हुए नष्ट करते जाओ"

नीति...राष्ट्रीय कन्वेन्शन (सम्मेलन)—तृतीय वर्ग—पेरिस की संधि (१७६३)—पेरिस की संधि (१७८३)—सहायता के समादेश (रिट)

(ख) क्या तुम इन तिथियों के बारे में जानते हो ?

१६१६—१७६३—अप्रैल १६,१७७५, जुलाई ४,१७७६—१७८३—जुलाई १४, १७८६—१७६२—१८०४—जून १८, १८१५।

(ग) नक्शे में ये स्थान दिखाओ।

अप्पालाचियन पर्वतमाला—आस्ट्रिया—कान्कार्ड—कोर्सिका—मिस्र—एल्बा—फ्लोरिडा—फ्रांस—जर्मनी—हैटी—हालैण्ड—पवित्र रोमन साम्राज्य—आयरलैण्ड—लेक्सिंग्टन—लुसिआना क्षेत्र—मास्को—ओहायो नदी—पेरिस—प्रशिया—रॉकी पर्वतमाला—रूस—सार्डीनिया—स्पेन—सेंट हेलेना—ट्रैफलगर—विएना।

१७६३ की घोषणा की सीमा दिखाओ। लुसिआना खरीदने के बाद संयुक्त राज्य अमेरिका का क्षेत्र दिखाओ।

(घ) इन व्यक्तियों के बारे में तुम क्या जानते हो।

सेम्युअल ऐडम्स—एडमंड बर्क—बेंजामिन फ्रैंकलिन—जार्ज तृतीय—टामस जफ़रसन, १६ वाँ लुई—मेरिया लूइसा—मेरी एंटोएनेट—मारिया थेरेसा—मौण्टेस्क्यू—नैपोलियन(प्रथम)—हेराटियो नेल्सन—टामस पेन—विलियम पिट—रोबस्पियर—रूसो—ऐडम स्मिथ—वाल्टेयर—जार्ज वाशिंगटन—ड्यूक आफ विलिंगटन।

दो. क्या तुम अपने विचार स्पष्ट प्रकट कर सकते हो ?

(अ) निम्नलिखित में से कोई एक विषय छाँट लो और कक्षा में उसकी विशेष मौखिक रिपोर्ट सुनाओ।

(क) वे घटनाएँ जिनकी स्मृति में चेखोवस्की ने अपना १८१२ ओवरचर तैयार किया। (संभव हो तो कक्षा में इसका एक रिकार्ड सुनाओ)।

(ख) लूसिआना की खरीदारी की कहानी।

(ग) नैपोलियन के शक्ति-सम्पन्न होने का रहस्य।

(घ) ड्यूक ऑफ विलिंगटन।

(ङ) मेरी एंटोएनेट।

(च) ब्रिटेन का महान् नौसेनापति लार्ड नेल्सन।

(छ) बहुमुखी प्रतिभा का धनी फ्रैंकलिन।

(ज) देहाती भद्र पुरुष जार्ज वाशिंगटन।

(ब) कल्पना करो कि तुम वाटरलू के युद्ध में एक रिपोर्टर हो। अपने अखबार के लिए दो सौ शब्दों की एक रिपोर्ट भेजो। अपनी स्टोरी के लिए तुम क्या शीर्षक पसंद करोगे ?

(स) कुछ शीर्षक बनाओ जो कि फ्रांसीसी क्रान्ति पर अमेरिकी अखबारों में निकले होते। सबसे अच्छे शीर्षकों को बुलेटिन बोर्ड पर लगाओ।

तीन. ब्लैक बोर्ड के लिए

(क) कक्षा में साथ-साथ काम करते हुए स्वतन्त्रता का घोषणा-पत्र पढ़ो और एक छात्र से ब्लैक बोर्ड पर अमेरिकी उपनिवेशवासियों की ग्रेट ब्रिटेन के खिलाफ शिकायतें जैसी कि वहाँ बताई गई हैं, नोट करने को कहो। सूची की प्रत्येक वस्तु पर आपस में विचार करो कि उपनिवेशवासियों को उस पर क्यों आपत्ति थी ?

(ख) ब्लैक बोर्ड के तीन कालम बनाओ। पहले में नीचे दी गयी बातें दर्ज करो। दूसरे में संक्षेप में उन सब की वह स्थिति बताओ जो कि लुई १६ वें के शासनकाल में मौजूद थी। तीसरे में वे स्थितियाँ बताओ जो इनमें से प्रत्येक वस्तु के बारे में फ्रांसीसी क्रान्ति के बाद वहाँ हो गई।

सामन्ती कर......टैक्स...सम्पत्ति के स्वामित्व का अधिकार...धार्मिक स्वतन्त्रता—भाषण और प्रेस सम्बन्धी स्वतन्त्रता—वे राज्य जिन्हें मिला कर फ्रांस बना हुआ था।

(ग) समानान्तर कालमों में, फ्राँस में नैपोलियन के शासन से यूरोप के लिए हुए अच्छे और बुरे परिणामों की सूची तैयार करो।

चार. इतिहास बनाम कला

सुप्रसिद्ध चित्रकारों, जान ट्रम्बेल और गिलबर्ट स्टूअर्ट ने अमेरिकी क्रांति की घटनाओं और व्यक्तियों को चित्रों में उतारा है। आपस में एक ऐसी समिति बनाओ जो जितने भी पेन्टिंग उप-

लब्ध हो सकें, इकट्ठे करके उन्हें दिखलाये। उनके बारे में कक्षा में विचार करो।

पांच· सभा कार्यक्रम

अमेरिकनों द्वारा स्वाधीनता के लिए किये गये संघर्ष के विषय को लेकर उसके आधार पर एक सभा कार्यक्रम बनाओ। क्लास को कमेटियों में विभाजित किया जा सकता है, प्रत्येक कमेटी अध्यापक के निर्देशन में एक दृश्य के लिए उत्तरदायित्व लेगी। यहां कुछ सुझाव दिये गये हैं। लेकिन तुम अन्य घटनाओं को भी शामिल कर सकते हो :

(क) सेमुअल ऐडम्स कुछ उपनिवेशवासियों के समक्ष एक ओजस्वी भाषण कर रहे हैं। इन लोगों में कुछ उनके समर्थक थे और कुछ नहीं भी थे।

(ख) वाशिंगटन और उसकी सेना के वैली-फोर्ज में होने का दृश्य।

(ग) राजभक्तों का एक दल जो कनाडा भागने का उपक्रम कर रहा है।

(घ) औपनिवेशिक विधान सभा का स्वतन्त्रता के घोषणा-पत्र पर विचार के लिए बुलाया गया एक अधिवेशन।

(ङ) जफरसन और उसकी कमेटी द्वितीय महाद्वीपीय कांग्रेस में स्वतन्त्रता की घोषणा प्रस्तुत करते हुए।

(च) अमेरिकी क्रांति का एक नेता या सेनानी जो तुम्हारे क्षेत्र में रहता हो।

(छ) कार्नवालिस का आत्म-समर्पण।

(ज) निम्नलिखित यूरोपीय लोगों में से जिन्होंने अमेरिकी क्रांति में उपनिवेशवासियों को सहायता की, कोई एक :

लाफायटी......वान स्टूवेन...कोशिस्रोस्की...पुलास्की।

२७ विएना कांग्रेस ने समय की गति को पलटा

जब कि नैपोलियन अभी एल्बा में ही था, यूरोपीय देशों के नेता फ्रांसीसी क्रांति और नैपोलियन के युद्धों से उत्पन्न व्यापक उथल-पुथल में पुनः व्यवस्था कायम करने के लिए विएना में (१८१४-१८१५) मिले। इन नेताओं को गंभीर मसले हल करने थे; क्योंकि लगभग २५ वर्षों से यूरोप निरंतर युद्धों में फंसा हुआ था। पुराने शासनों को नैपोलियन ने नष्ट कर अपनी कठपुतली सरकारें कायम की थीं। अब, उसके पृष्टपोषण के बगैर, उसकी कठपुतली सरकारें अपना अस्तित्व कायम नहीं रख सकती थीं। अधिकांश पश्चिमी यूरोप में किसी किस्म की सरकारें कायम हों, यह प्रश्न तय होना शेष था?

नैपोलियन ने यूरोप के बहुत से देशों की सीमाएँ भी बदल डाली थीं। राजा लोग शासन के अधिकार का दावा करते हुए, अपने हित में इनमें

आस्ट्रिया के सम्राट् ने विएना कांग्रेस के दौरान, स्वागत-सत्कार पर प्रतिदिन ढाई लाख डालर खर्च किया। शहर एक आमोद-प्रमोद का स्थान था, और कांग्रेस के सदस्य शिकार, नृत्य और दावतें पसंद करते थे।
बैटीमैन आर्काइव
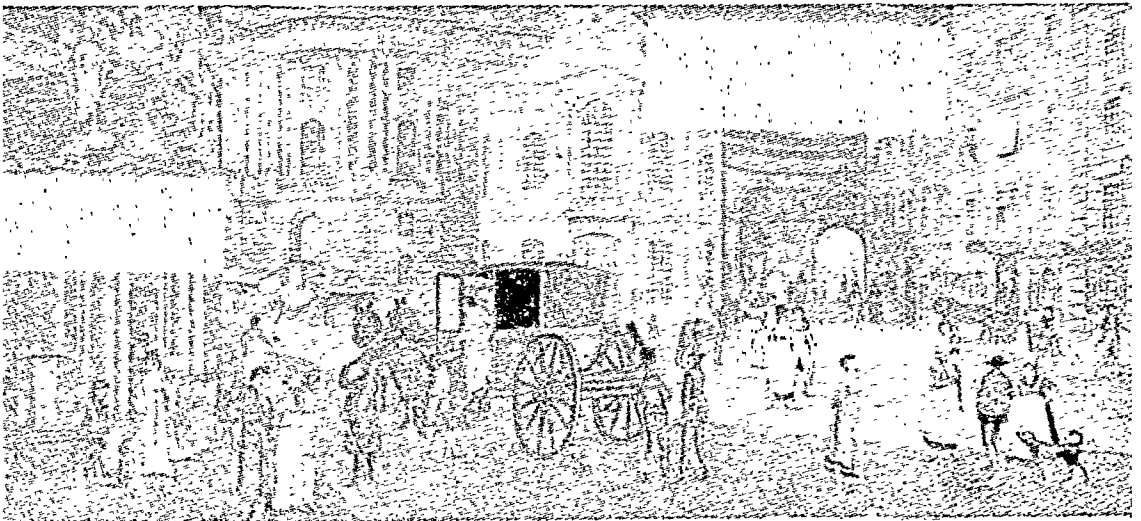
बैटीमैन आर्काइव

स्थिति को सर्वथा अनुकूल बनाने के लिए राजनीतिज्ञों के इस दल को ऐसे अवसर मिले थे जैसे लोगों को बहुत कम मिलते हैं,लेकिन उन्होंने स्वार्थपूर्ण निर्णय किये। मैटरनिख जो 'यूरोप की दुष्ट प्रतिभा' कहलाता था, बाईं ओर अपनी कुर्सी के पास खड़ा है।

हेर-फेर करने को उत्सुक थे।

हर तरह से यूरोप में दुःख दैन्य छाया हुआ था। सेनाओं ने व्यापक बरबादी कर डाली थी। बरबादी के कारण गरीबी फैली हुई थी। बीमारियों ने लोगों को तबाह कर डाला था। विएना सम्मेलन के लिए कई और विभिन्न प्रकार की समस्याएँ थीं। उनके निराकरण के लिए साहस और बुद्धिमत्ता की जरूरत थी।

विएना की कांग्रेस—इस महत्त्वपूर्ण कार्य के लिए एकत्रित हुए लोगों पर हमें एक नजर डालनी चाहिए। सबसे प्रभावशाली व्यक्तित्व वाला आस्ट्रिया का प्रधान मंत्री काउण्ट वान मेटरनिख था। उनकी प्रमुख दिलचस्पी राजाओं को ही शासनारूढ़ रखने और उदार विचारों को कांग्रेस में प्रवेश करने देने से रोकने में थी। फिर वहाँ रूस का जार अलेकजेण्डर प्रथम (१८०१ से १८२५) था। वह आदर्शवादी था पर उसकी निगाह पोलैण्ड पर थी। ब्रिटेन ने विलिंगटन के ड्यूक को कांग्रेस में भेजा था क्योंकि उसी को वाटरलू में नैपोलियन को परास्त करने का श्रेय मिला था। ब्रिटेन ने लार्ड कैसलरी को भी भेजा था, जो फ्रांस के प्रति नरम नीति और महाद्वीप में राष्ट्रों के बीच शक्ति संतुलन का समर्थक था। हेनरी अष्टम के जमाने से ही इंग्लैण्ड इस प्रकार के "शक्ति संतुलन" का प्रयास करता चला आ रहा था। इसका अर्थ यह था कि महाद्वीप का कोई भी राष्ट्र इतना प्रबल न हो जाय कि उससे ब्रिटेन की सुरक्षा को खतरा हो जाय। कैसलरी विएना में यह यत्न करने आया था कि यह शक्ति-संतुलन कायम रखा जाय। प्रशिया का मन्दमति राजा फ्रेडरिक विलियम तृतीय (१७९७-१८४०) आया हुआ था। फ्रांस तक को प्रतिनिधि भेजने से वंचित नहीं रखा गया था। उसका प्रतिनिधि १९ वीं शताब्दी का बहुत ही योग्य और चालाक राजनीतिज्ञ प्रिंस तेलीराँ था। राजाओं और सामन्तों के इस जमघट के अलावा वहाँ स्वीडन

पुर्तगाल और स्पेन की सरकारों के प्रतिनिधि भी थे। जनता का वहाँ कोई प्रतिनिधि नहीं था। यह राजा-महाराजाओं और उमरावों का सम्मेलन था। उन किसानों और मजदूरों की ओर से जिन्होंने इतने अधिक कष्ट झेले थे, बोलने वाला वहाँ कोई नहीं था। उन मध्यम-वर्ग के व्यापारियों और रोजगार करने वालों की ओर से भी वहां कोई प्रवक्ता नहीं था जिन्होंनें युद्ध में इतना अधिक नुकसान उठाया था।

वैधता, मुआवजा और गारंटी—इस प्रकार के विशेषाधिकार प्राप्त लोगों के दल से, जो अपनी स्थिति और अपनी शक्ति बरकरार रखना चाहते थे, किसी क्रांतिकारी परिवर्तन की कुछ भी आशा नहीं रखी जा सकती थी। उनके तीन ध्येय थे, "वैधता, मुआवजा और गारंटी।" वैधता से उनका मतलब था कि हकदार या वैध वंश ही, जो फ्रांसीसी क्रांति से पहले सत्तारूढ़ थे, जहां तक संभव हो, गद्दी पर बैठाये जायं। मुआवजे से उनका अभिप्राय था कि वे शासक और देश, जिन्हें वर्षों के विप्लव या इस कांग्रेस के निर्णयों से क्षति पहुंची है या पहुंचे, उनको क्षति के लिए मुआवजा मिलना चाहिए। फ्रांस के पड़ोसियों को इस बात की गारंटी दी जानी थी कि उसे उन पर हमले से रोका जायगा, क्योंकि फ्रांस लगभग पिछले पचीस वर्षों से हमला करता चला आ रहा था। विएना की कांग्रेस आगे को देखने के बजाय पीछे को देख रही थी; वह यूरोप को उस स्थिति में लाने के प्रयास में थी, जैसा वह १७८९ से पहले था। तेलीराँ ने अधिकांश प्रतिनिधियों की मनोभावना व्यक्त की जब कि उसने कहा, "कोई भी व्यक्ति, जो १७८९ से पहले नहीं रहा, नहीं जान सकता कि जीवन कितना मधुर हो सकता

यूरोप का नक्शा पुनः खींचना तो विएना कांग्रेस के डेलीगेटों के लिए आसान पड़ा लेकिन कांग्रेस के कुछ वर्षों बाद उत्पन्न हुए स्वाधीनता और मुक्ति के संघर्षों के परिणामस्वरूप बहुत से यूरोपियन अमेरिका चले गये।
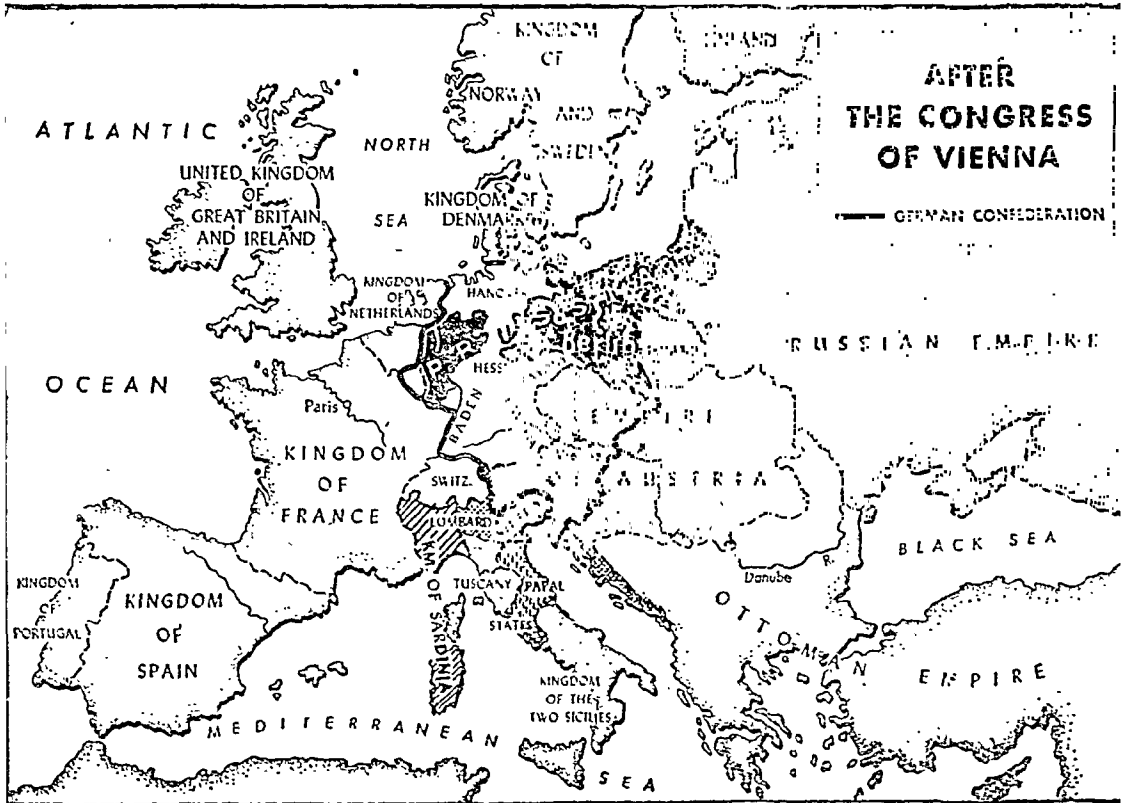
है।" निःसंदेह तेलीराँ अपने एक सामन्त और उच्च पदस्थ चर्च के अधिकारी होने के अनुभव पर बोल रहा था। ऐसा प्रतीत होता था कि उसकी अभिरुचि इस बात में नहीं थी कि १७८९ से पहले किसान क्या सोचते होंगे।

वैधता—पुराने शासक परिवारों को गद्दी पर बैठाना या उनकी गद्दी कायम रखना कठिन नहीं था। लुई १८ वाँ (१८१४-१८२४) और बूर्बो परिवार का फर्डिनाण्ड सप्तम (१८०५-१८३३) क्रमशः फ्रांस और स्पेन की गद्दी पर बैठाये गये। जर्मन राज्यों के एकतंत्र शासक पुनः शासनारूढ़ हुए और छोटे इटालियन राज्यों के शासकों को उनके ताज वापस किये गए। फ्रांसिस प्रथम (१८०४-१८३५) आस्ट्रिया का सम्राट् बना रहा और जार्ज तृतीय अब भी इंग्लैंड के तख्त पर बैठा हुआ था। आस्ट्रिया इटली में पुनः प्रभावशाली हो गया और आस्ट्रिया तथा प्रशिया पुनः जर्मन राज्यों का नेतृत्व करने लगे। पवित्र रोमन साम्राज्य की पुनः स्थापना नहीं हुई, लेकिन आस्ट्रिया के नेतृत्व में ३८ जर्मन राज्यों का एक राज्यसंघ (कन्फेडरेशन) स्थापित किया गया। इन प्रतिक्रियावादी तत्त्वों के सत्तासम्पन्न हो जाने से यह आशा की जाती थी कि दूसरी क्रांति रोकी जा सकेगी और यूरोप युद्ध से बच जायगा।

मुआवजा—नैपोलियन के काल में जो देश फ्रांस के खिलाफ लड़े थे, उनमें से प्रत्येक किसी न किसी रूप में मुआवजा चाहता था। इससे यूरोप का पुनः नक्शा खींचना जरूरी हो गया। ऐसा करने में, राष्ट्रीयता, धर्म या तत्सम्बन्धित लोगों की भाषा पर बहुत थोड़ा ध्यान दिया गया। रूस को फिनलैंण्ड और प्रशिया का पोलैण्ड-स्थित अधिकांश हिस्सा दिया गया। नार्वे डेनमार्क से लेकर स्वीडन को दिया गया। प्रशिया को, पोलैण्ड का कुछ हिस्सा उससे छिन जाने की क्षति पूरी करने के लिए, स्वीडिश पोमेरेनिया, सेक्सोनी का हिस्सा और राइन का कुछ क्षेत्र दिया गया। हालैण्ड को आस्ट्रिया

कलचर सर्विस

तेलीरां कभी भी हारने वाले पक्ष में नहीं रहा। १८१७ का हर व्यंग्यचित्र उसे "छहसिरों वाला व्यक्ति" प्रदर्शित करता है।

से बेल्जियम मिला और आस्ट्रिया को टायरोल और वेनेटिया तथा लोम्बार्डी नामक दो इटालियन प्रदेश मिले। इंग्लैण्ड को यूरोप महाद्वीप में कोई क्षेत्र नहीं मिला लेकिन उसे उपनिवेश मिले। एक भूमध्यसागर में माल्टा द्वीप था जो उसके भारत के मार्ग में ठहरने का अड्डा था और दूसरा भारतीय तट से दूर लंका (सीलोन) था, जिसे उसने डचों से पाया। उत्तम आशा अन्तरीप (केप आफ गुड होप) भी, जो कि उसके दक्षिण अफ्रीका में जाने के लिए एक अड्डा था, ब्रिटेन को मिला। ये सभी परिवर्तन बिना कठिनाइयों के नहीं हुए, लेकिन आखिरकार १८१५ में, सभी संधियों पर हस्ताक्षर हो गये।

गारंटी—विएना में दो गठबंधन हुए। जार अलेक्जेण्डर प्रथम ने 'पवित्र गठबंधन' का प्रस्ताव

रखा। गोकि प्रशिया और आस्ट्रिया के शासकों का विश्वास था कि यह महाज़ बेवकूफ़ी है, लेकिन उन्होंने जार को संतुष्ट करने के लिए उस पर हस्ताक्षर किये। बाद में यूरोप के अधिकांश शासक 'पवित्र गठबंधन' के सदस्य हो गये। हस्ताक्षर-कर्ताओं ने रजामंदी जाहिर की कि न्याय और क्रिश्चियन सिद्धान्त उनके मार्गदर्शक बनेंगे।

'पवित्र गठबंधन' को बहुत कम महत्त्व देते हुए मैटरनिख ने उस योजना पर कार्य किया जिसे वह अधिक व्यावहारिक योजना समझता था। उसने चार राष्ट्रों के चतुर्देशीय गठबंधन पर प्रशिया, ग्रेट ब्रिटेन, रूस और आस्ट्रिया के हस्ताक्षर ले लिये। इससे चारों राष्ट्रों ने अपने आप पर, समय-समय पर मसलों पर विचार के लिए, मिलने का बधन लगा लिया ताकि शांति कायम रखी जा सके। यूरोप में बहुत युद्ध हो चुके थे, जनता के सब वर्ग शान्ति चाहते थे। यूरोप के कूटनीतिज्ञों का शान्ति कायम रखने का यह एक प्रयास था। चतुर्देशीय मैत्री में सदस्यों ने यह भी शपथ ली कि वे यूरोप में "यथा स्थिति" कायम रखेंगे। "यथा स्थिति" से यहाँ अभिप्राय शांति समझौते का था, जिसे वे स्थायी बनाना चाहते थे।

(१) विएना कांग्रेस के अवसर पर यूरोप की क्या स्थिति थी ?
(२) कांग्रेस में कौन-कौन प्रमुख लोग थे ?
(३) कांग्रेस कब हुई थी ?
(४) यूरोप के मसलों को तय करने के लिए कांग्रेस ने किन तीन सिद्धान्तों पर अमल किया ?
(५) जर्मन राज्य संघ क्या था ?
(६) विएना कांग्रेस में क्षेत्रों से सम्बन्धित समझौते से क्या परिवर्तन किये गये ?
(७) पवित्र गठबंधन क्या था ? इसका प्रस्तावक कौन था ?
(८) चतुर्देशीय गठबंधन क्या था ? इसकी योजना बनाने वाला कौन था ?

विप्लवों के दौरों से यूरोप में उथल-पुथल

विएना कांग्रेस अभी समाप्त ही हुई थी कि असंतोष की मरमराहट आरम्भ हो गयी। राजाओं और सामन्तों ने जो विएना में मिले थे, यह विश्वास बना लिया था कि "समय की गति को बदल कर" वे फ्रांस की क्रांति के पूर्व के दिन ला सकेंगे। उन्होंने सोचा कि वे सिर्फ फ्रांस में ही नहीं अपितु समस्त यूरोप में पुनः पुराने शासन की स्थापना कर लेंगे। उन्हें जल्दी ही पता चल गया कि वे २५ वर्षों के युद्ध और परिवर्तन के प्रभाव को नहीं बदल सकेंगे। यूरोप फ्रांसीसी क्रांति के पहले से भिन्न हो चला था।

उदारवादियों की संख्या बढ़ चली थी और वे प्रतिक्रियावादी शासकों से, जिन्हें फिर से सत्तारूढ़ कर दिया गया था, असंतुष्ट थे। लेकिन यूरोप में, सख्ती के साथ पुलिस नियंत्रण द्वारा, शासक वर्ग कुछ समय के लिए उदारवादी तत्त्वों को अपने मातहत रख सका। उदाहरणार्थ, जर्मन राज्यों में डाइट ने "कार्लसुबाड आज्ञप्ति" के नाम से कई प्रस्ताव स्वीकार किये। इस आज्ञप्ति में यह व्यवस्था रखी गयी थी कि सभी कालेज प्रोफेसरों का निरीक्षण किया जायगा कि वे क्या पढ़ाते हैं और सभी समाचारपत्रों, मैगज़ीनों, और पैम्फलेटों की स्वीकृति, उनको प्रकाशित करने से पूर्व, सरकार से लेना आवश्यक थी।

विएना कांग्रेस राष्ट्रवाद की भावना की ओर भी, जो नैपोलियन की सेनाओं के संसर्ग से तमाम यूरोप भर में जाग्रत हो चली थी, ध्यान देने में असफल रही। अब यह भावना अधिकांश यूरोप में महसूस की जाने लगी थी।

१८२०-२१ का विद्रोह—पहला खुला विद्रोह १८२० में स्पेन में हुआ। यहाँ उदार विचार वालों ने राजा को एक संविधान को मान्यता देने के लिए मजबूर किया। राजा ने चतुर्देशीय गठबंधन से सहायता की अपील की। फ्रांस ने राजा को पुनः एकसत्तात्मक अधिकार दिलाने और विद्रोह को कुचल डालने का बीड़ा उठाया। सुरक्षित, पुनः गद्दी पर बैठ जाने के बाद, राजा ने खूनी तरीकों से क्रांतिकारियों का दमन किया।

अन्य देशों के लोग स्पेन के राजा के निर्दयता के तौर-तरीकों से घबराये नहीं और विद्रोह अन्य

मुल्कों में फैला। सिसली के दोनों हिस्सों ने एक संविधान की मांग की और १८२९ में ग्रीस ने टर्की के शासन से स्वाधीनता प्राप्त कर ली। गोकि शासक उन्हें दबाने की भरसक कोशिश में थे, लेकिन उदारतावाद और राष्ट्रवाद की भावना को नष्ट नहीं किया जा सकता था।

१८३० की क्रांतियां—जैसा कि हम देख चुके हैं, विएना कांग्रेस ने लुई १८वें को फ्रांस की गद्दी पर बिठला कर बूर्बो राजवंश को पुनः सत्तारूढ़ किया था। लुई अपने भाई लुई १६ वें की तरह स्वेच्छाचारी राजा नहीं था। १८१४ के घोषणा-पत्र (चार्टर) के अनुसार उसने पार्लमेंट की स्वीकृति से शासन किया। जब तक लुई शासन करता रहा, फ्रांस संतुष्ट रहा, लेकिन १८२४ में एक तीसरा भाई चार्ल्स दसवां (१८२४-१८३०) गद्दी पर बैठा। वह क्रांति का कट्टर शत्रु था और अब उसने कुलीनों तथा पादरियों के विशेषाधिकारों की पुनः स्थापना का प्रयास किया। जब प्रतिनिधि सभा ने उसके तौर-तरीकों पर आपत्ति उठाई तो उसने १८१४ के घोषणापत्र को ताक में रख दिया और अपनी मर्जी के मुताबिक शासन का प्रयास किया। इससे एक खुला विद्रोह हो गया जिसमें चार्ल्स को गद्दी से हटने को मजबूर होना पड़ा और उसका दूर का भाई, लुई फिलिप, राजा बन गया। (१८३०-१८४८)

१८३० में, चार्ल्स दशम के खिलाफ बगावत के दौरान कई मुल्कों में विद्रोह हुए। तुम्हें स्मरण होगा कि विएना कांग्रेस ने हालैण्ड और बेल्जियम को मिला दिया था। इस प्रकार के संयुक्तीकरण से विएना में एकत्र हुए लोगों की अदूरदर्शिता साफ जाहिर थी। राष्ट्रीयता, भाषा और धर्म के लिहाज से ये दोनों देश भिन्न-भिन्न थे। इसके अलावा बेल्जियनों की अपेक्षा डचों का सरकार में अधिक प्रभाव था। १८३० में बेल्जियनों ने विद्रोह कर अपना स्वतन्त्र राज्य स्थापित कर लिया। बड़े राष्ट्रों ने इसे बड़ी अप्रसन्नता की नजर से देखा लेकिन वे ज्यादा कुछ नहीं बिगाड़ सकते थे। फ्रांस अपने ही देश में क्रांति में फंसा हुआ था और आस्ट्रिया बहुत दूर था। अन्त में बेल्जियम की स्वतन्त्रता स्वीकार कर ली गयी। उन्होंने लुई फिलिप

विएना कांग्रेस के तैंतीस वर्ष बाद तूफान फट पड़ा। त्रिप्लवी फ्रेंच जनता ने पेरिस-स्थित राजप्रासाद को घेर लिया, राजा को गद्दी से उतार दिया और यूरोप में विद्रोह की लहर पैदा कर दी।

शोनफेल्ड कलेक्शन फ्राम थ्री लायन्स

यूइंग गैलोवे
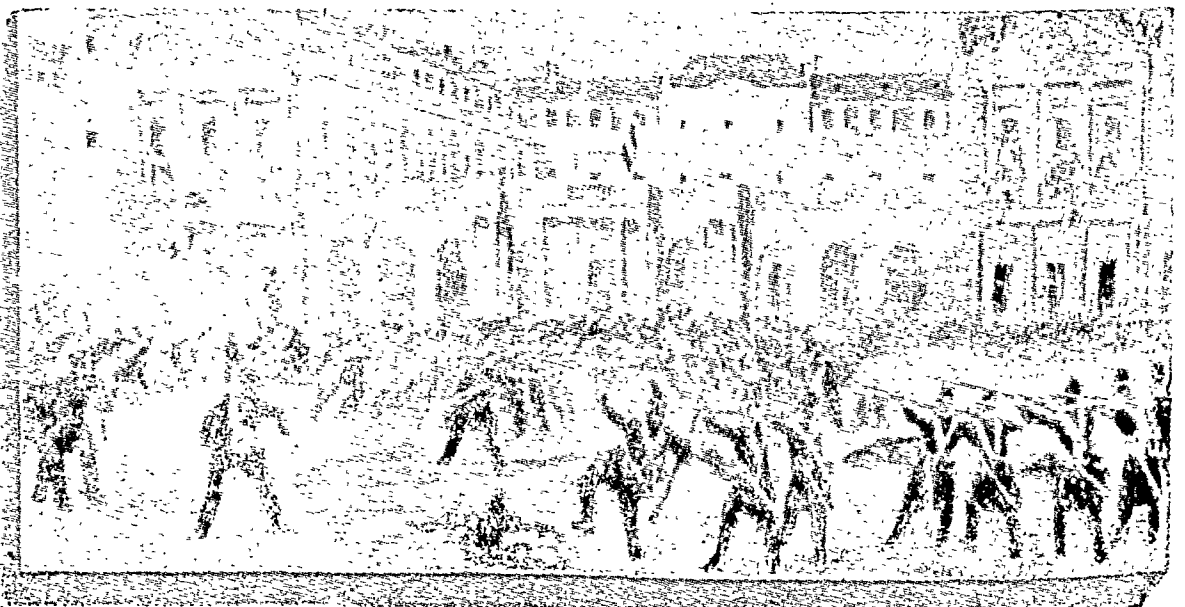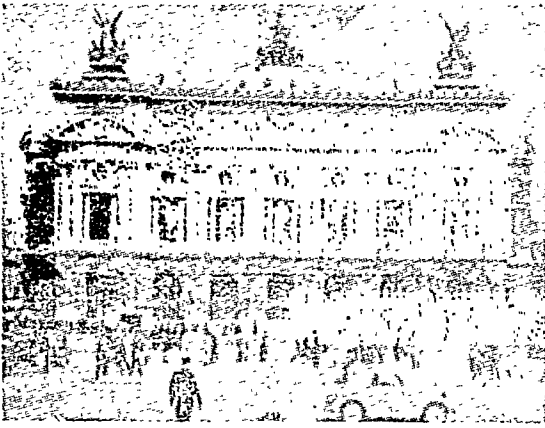
पेरिस ओपेरा हाउस दुनिया की सबसे प्रसिद्ध इमारतों में एक है। यह नैपोलियन तृतीय के शासन-काल में बनी थी।

के मातहत वहाँ संवैधानिक राजतंत्र स्थापित किया।

विद्रोह पोलैण्ड में भी फैला, जिसका अधिकांश भाग विएना कांग्रेस ने रूस को दे दिया था। पोल लोगों की स्थिति बेल्जियनों से भिन्न थी, क्योंकि इसमें एक बड़ा राष्ट्र रूस भी संलिप्त था। पोल लोगों को अपने पड़ोसियों से कोई मदद नहीं मिली। वे जम कर लड़े लेकिन हार गये। परिणामस्वरूप, जार ने पोलैण्ड को रूस का एक हिस्सा बना लिया। सैकड़ों पोलों को प्राणदण्ड दिया गया और उनके अन्दर राष्ट्रीय भावना को मिटाने के लिए हर संभव उपाय किया गया।

१८४८ के विद्रोह—जैसा कि १८३० में हुआ था, उसी तरह १८४८ में बगावत फ्रांस से आरम्भ हुई। लुई फिलिप विधान-सम्मत राजा माना जाता था। वास्तव में उसके राज्याभिषेक के समय उसे "नागरिक राजा" कहा गया था। समारोह में उसके सिर पर ताज पहनाते हुए, "ईश्वर की अनुकम्पा से" और "राष्ट्र की इच्छानुसार" शब्द कहे गये थे। ज्यों-ज्यों समय बीतता गया, उसकी सरकार अधिकाधिक प्रतिक्रियावादी होती चली गयी। १८४८ तक उसने अपने शासन के खिलाफ काफी विरोध पैदा कर लिया। उसके विरोधी अनेक थे। राजा का प्रधान मन्त्री बदनाम था इसलिए राजा को उसे पदच्युत करना पड़ा। पदच्युत प्रधान मंत्री के घर के सामने दंगा हो गया। राजा के सैनिकों ने भीड़ पर गोली चलाई और उनमें से २३ को मार डाला। भीड़ इतनी हिंसात्मक हो चली थी कि लुई फिलिप ने निश्चय किया कि एकमात्र उपाय यहाँ से भाग जाना ही रह गया है। "गणतन्त्र चिरजीवी हो" के नारे सुनता हुआ वह देश के बाहर खिसक गया, जैसा कि उसके भाई लुई १६वें ने करने का प्रयास किया था, और इंग्लैण्ड चला गया।

पेरिस में, जहाँ क्रांतिकारी भावना विशेष रूप से प्रबल थी, सड़कों पर लड़ाई जारी रही। मजदूर-पेशा लोगों ने काम की माँग की और कुछ समय के लिए अन्तरिम सरकार ने उन्हें काम देने का प्रयास किया। इस परीक्षण का नेता, एक सोशलिस्ट, लुई ब्लांक बनाया गया। बेईमानी और लालच के कारण योजना चल नहीं सकी और हिंसात्मक उपद्रव जारी रहे। अन्त में सरकारी दस्तों ने राजद्रोह करने वालों को पराजित किया और कड़ी से कड़ी सजाए दीं।

अन्ततोगत्वा, संयुक्त राज्य अमेरिका के ही समान एक संविधान बनाया गया। दिसम्बर, १८४८ में, नैपोलियन प्रथम का एक भतीजा, लुई नैपोलियन, भारी बहुमत से फ्रांस के दूसरे गणतंत्र का राष्ट्रपति चुना गया। यह गणतंत्र ज्यादा दिन स्थिर न रह सका। लुई नैपोलियन धूर्त व्यक्ति था और उसने अपने को "सम्राट्" बनाने का दृढ़ निश्चय कर लिया था। नैपोलियन का नाम अब भी फ्रांसवासियों के दिलों में जादू का असर करता था। इसलिए उसको उनके उत्साह को अपने स्वार्थ साधन में ढालने में कोई असुविधा नहीं हुई। १८५२ में उसने इस बात के लिए जनमत संग्रह करवाया कि उसे सम्राट् बनाया जाय अथवा नहीं। परिणाम, भारी बहुमत से उसके पक्ष में हुआ। दूसरे गणतन्त्र का खात्मा हो गया और पुनः फ्रांस में एक सम्राट् था, इस बार फ्रांस नैपोलियन तृतीय के, जैसा कि उसे पुकारा जाता था शासन में था।

स्लाविक जनता द्वारा विद्रोह—१८४८ की क्रांतिकारी भावना अन्य देशों में फैली। सशक्त आस्ट्रियाई साम्राज्य में राष्ट्रीयता और उदारवाद, दोनों ही पनप रहे थे। सम्राट् और मैटरनिख की प्रतिक्रियावादी सरकार कानून बनाती, टैक्स लगाती और जनता को हिसाब-किताब दिये बगैर उसे खर्च करती थी। जर्मन हैप्सबर्ग राजवंश के शासक पोलों, चेकों, रूथों, स्लावों, सर्बियनों, क्रोटियनों और मगयारों पर शासन कर रहे थे,। इनमें से, अगर एक साथ लिया जाय तो, स्लाविक लोगों की संख्या ज्यादा थी लेकिन बोहेमिया और आस्ट्रिया के जर्मनों का सरकार में पक्षपात होता था। स्लाव लोगों ने साम्राज्य के अन्तर्गत स्वशासनाधिकार की माँग की। सम्राट् ने कुछ वायदे भी किये, लेकिन उसने उनका पालन नहीं किया। विद्रोह में उसे अपने १८ वर्षीय भतीजे फ्रांसिस जोसफ (१८४८-१९१६) के लिए गद्दी छोड़ने को विवश किया गया। मैटरनिख अपनी मृत्यु के भय से, इंग्लैण्ड भाग गया। जब मिलान और वेनिस के लोगों ने सुना कि मैटरनिख भाग गया है, उन्होंने आस्ट्रियन दस्तों को अपने क्षेत्र से बाहर भगा दिया और गणतंत्रों की स्थापना की।

प्रशिया में विद्रोह—क्रांति की भावना का प्रशिया पर भी प्रभाव पड़ा। एक भीड़ फ्रेडरिक विलियम चतुर्थ (१८४०-१८६१) के पास संविधान की माँग करती हुई गयी। बर्लिन में खून-खच्चर और दंगे शुरू हो गये। राजा घबरा गया और उसने बर्लिन में संविधान सभा की एक बैठक बुलवाई। उनका कार्य समाप्त होने से पहले ही, फ्रेडरिक को अपने ऊपर विश्वास लौट आया और उसने उसे भंग कर दिया। १८५० में उसने जनता को अपना स्वतः बनाया हुआ संविधान दिया। इसमें राजाओं और कुलीनों की शक्ति और अधिकारों को सुरक्षित रखने की व्यवस्था थी। इससे प्रशिया के उदार विचारों के लोगों को घोर निराशा हुई, पर वे इतने सशक्त भी नहीं थे कि जिस प्रकार का संविधान वे चाहते हों, उसे प्राप्त कर लें।

उदारतावादियों की असफलता—कुछ समय के लिए क्रांति का चाव खत्म-सा हो गया था। उदारतावादी हर जगह मार खा रहे थे। हम देख चुके हैं कि फ्रांस और प्रशिया में क्या हुआ। आस्ट्रिया में नये युवा सम्राट् के आधीन एक प्रतिक्रियावादी सरकार ने नियंत्रण हासिल किया। इटली के राज्यों के संविधान और जन सरकारें समाप्त कर दी गयीं।

जर्मन राज्यों को एक साम्राज्य के रूप में संगठित होने की आशा थी। उन्होंने १८४८ में फ्रांकफोर्ट में राष्ट्रीय महासभा का एक अधिवेशन बुलाया। हफ्तों वे इस बात पर बहस करते रहे कि किस प्रकार की सरकार वे बनायें, लेकिन उनके इस वादानुवाद से जनता की निगाहों में उनकी प्रतिष्ठा खत्म हो गयी। अन्त में, जब वे संविधान तैयार कर चुके, उन्होंने सम्राट् का पद प्रशिया के राजा को देने का प्रस्ताव रखा। फ्रेडरिक विलियम ने, महासभा के प्रति जनता की मनोभावना को समझते हुए, क्रांतिकारी महासभा से ताज पाने से इन्कार कर दिया। इसलिए, जर्मनी, १८१५ में स्थापित जर्मन राज्य संघ के अन्तर्गत, छोटे-छोटे राज्यों में ही बँटा रहा।

१८४८ में उदारतावाद और राष्ट्रवाद आम तौर से असफल रहे। व्यक्तिगत आजादी हासिल न की जा सकी। इटली और जर्मनी, किसी को भी संयुक्तीकरण की उपलब्धि नहीं हुई। लोकतंत्रात्मक सरकारें अब भी उदार सुधारकों के सपने मात्र थीं।

(१) १८२० से आरंभ दशक में कौन-कौन से तीन विद्रोह हुए?
(२) फ्रांस ने लुई अठारहवें को क्यों शासनारूढ़ रखा?
(३) विस्तारपूर्वक बताओ कि चार्ल्स दशम और लुई फिलिप क्यों फ्रांस से भागे?
(४) किन उपायों से लुई नैपोलियन नैपोलियन तृतीय बना?
(५) फ्रांस के अलावा किन और दो देशों में १८३० में क्रांतियाँ हुईं? उनका क्या परिणाम रहा?

न्यूयार्क पब्लिक लाइब्रेरी

बर्लिन में क्रान्तिकारियों के फटे हुए झंडे पर 'रिपब्लिक' शब्द पर गौर करो। निराश लोग छड़ियों से लड़े।

(६) १८४८ में आस्ट्रिया-हंगरी की क्रांति की कहानी बताओ।

(७) किन परिस्थितियों में १८५० का संविधान प्रशिया में स्वीकार किया गया ?

(८) १८४८ में जर्मन राज्य क्यों एकता के सूत्र में नहीं बँध पाये ?

(९) १८४८ की क्रांतियों के आम परिणाम क्या रहे ?

विचार-विमर्श के लिए प्रश्न

(१) विएना कांग्रेस ने बीमारी, सम्पत्ति की बरबादी, और गरीबी की सामाजिक समस्याओं पर विचार क्यों नहीं किया ?

(२) क्या अब भी राष्ट्रवाद और उदारतावाद की भावनाएँ विश्व में असंतोष का कारण हैं ?

(३) अगर विएना कांग्रेस में जनता के प्रतिनिधि रहे होते तो किस रूप में परिणाम भिन्न हुए होते ?

(४) क्या तुम विएना कांग्रेस के अधिकांश प्रतिनिधियों से सहमत हो कि 'पवित्र गठबंधन' के विचार बेवकूफी के थे ?

(५) क्या उदारतावाद और राष्ट्रवाद साथ-साथ चलते हैं ? क्या तुम स्पष्ट कर सकते हो ?

(६) क्या संविधान इस बात की गारंटी है कि जनता के अधिकारों की इज्जत की जायगी ?

(७) १८४८ की क्रांति क्यों असफल रही ?

(८) क्या उदारतावादियों को १८१५ और १८४८ के बीच कुछ लाभ प्राप्त हुए ?

इतिहास के उपकरणों का प्रयोग

एक. नाम, तिथियां और स्थान

(क) क्या तुम इन शब्दों की व्याख्या कर सकते हो ? राज्य त्याग...शक्ति संतुलन...कार्ल्सबाद आज्ञप्ति..."नागरिक राजा".....मुआवजा....गारंटी....पवित्र गठबंधन....वैधता....चतुर्देशीय गठबंधन यथा स्थिति।

(ख) क्या तुम इन तिथियों को जानते हो ? १८१५...१८२०...१८३०...१८४८.

१८४८ में विएना की इस क्रांति ने मैटरनिख को इंग्लैण्ड भागने के लिए मजबूर किया। क्या १८४८ की क्रांतियां पूर्ण असफल रहीं ?

बैटमैन आर्काइव

(ग) निम्नलिखित स्थान नक्शे में दिखाओ : आस्ट्रिया ... आस्ट्रिया-हंगरी ... वेल्जियम ... बोहेमिया ... उत्तम आशा अन्तरीप ... लंका ... फिनलैंण्ड ... फ्रांस ... ग्रेट ब्रिटेन ... ग्रीस ... हालैण्ड ... लोम्बार्डी ... माल्टा ... पोलैण्ड ... पुर्तगाल ... प्रशिया ... राइन नदी रूस ... सेक्सोनी ... स्पेन ... स्वीडन ... स्वीडिश पोमेरानिया ... दो सिसली ... टायरोल।

दो. इन व्यक्तियों के बारे में तुम क्या जानते हो?

अलेक्जेण्डर प्रथम—लुई ब्लांक—कैसलरे—चार्ल्स दशम—फर्डिनाण्ड जोसफ—फ्रेडरिक विलियम तृतीय—फ्रेडरिक विलियम चतुर्थ—जार्ज तृतीय—हेनरी तृतीय—लुई १८वाँ, लुई नैपोलियन—तेलीराँ—लुई फिलिप—मैटरनिख।

तीन. क्या तुम अपने विचार प्रकट कर सकते हो?

(१) कक्षा का प्रत्येक छात्र निम्नलिखित देशों में से विस्तृत अध्ययन के लिए किसी एक देश को चुन ले: फिनलैण्ड—स्वीडन—नार्वे—हालैण्ड—बेल्जियम या आस्ट्रिया। अपने अध्ययन के आधार पर एक संक्षिप्त विवरण लिख डालो। तुम जिस भी देश का अध्ययन करो, उसके विवरण में वहाँ के निवासियों के कपड़ों, घरों, उद्योगों और शहरों के चित्र दे सकते हो। नेशनल "जिओग्राफिक मैगजीन" सूचना और चित्रों को उपलब्ध करने का अच्छा साधन है। इस चित्रमय मैगजीन को अपनी लायब्रेरी में खोजो।

(२) विएना कांग्रेस के किसी एक प्रतिनिधि को चुन कर उसके जीवन और सफलताओं के बारे में कक्षा को विवरण सुनाओ।

चार. रेडियो ब्राडकास्ट

विएना कांग्रेस के सम्बन्ध में हुई दावतों और नृत्य समारोह का वर्णन करते हुए रेडियो से प्रसारित करने के लिए पांच मिनट की एक स्क्रिप्ट तैयार करो। पृष्ठ ३५१ पर चित्र देखो।

पांच. ब्लैक बोर्ड पर चर्चा

(१) ब्लैक बोर्ड पर निम्नलिखित नाम लिखो:

जार्ज वाशिंगटन, नैपोलियन प्रथम, अलेक्जेण्डर प्रथम, लुई १८ वाँ, मैटरनिख, तेलीराँ।

कक्षा के ४ या ५ छात्रों को इस बात के लिए नियुक्त करो कि वे कक्षा को बतायें कि इनमें से कौन सबसे महान् व्यक्ति था। वाद-विवाद के अन्त में ब्लैकबोर्ड पर उस व्यक्ति की विशेषताएँ लिख डालो जिनका एक महान् व्यक्ति में होना कक्षा जरूरी समझती है और जिनकी चर्चा बहस के दौरान हो चुकी होगी।

(२) इस अध्याय में वर्णित उन सब घटनाओं का उल्लेख करो जो उदार सरकार बनाने के संघर्ष में विद्रोह का कारण बनीं; एक दूसरी सूची उन घटनाओं की तैयार करो जिनमें राष्ट्रवाद की भावना से विद्रोह हुआ। कुछ घटनाओं को तुम्हें दोनों ही कालमों में दिखलाना होगा।

छः. खिलौनों का संग्रह

उस काल की राष्ट्रीय पोशाकें, जिनमें उस काल में फ्रांस और ग्रेट ब्रिटेन में प्रचलित फैशन के स्टाइल भी सम्मिलित हैं, तुम्हारे संग्रह में और दिलचस्पी पैदा करेंगी।

२८ लैटिन अमेरिकी राष्ट्रों का अभ्युदय

जब कि यूरोपीय क्रांतियाँ वहां के देशों के *लोगों का रहन-सहन और सरकारें बदल रही थीं,* लैटिन अमेरिका के कम बसावट वाले मुल्कों में भी क्रांति उभर रही थी। लैटिन अमेरिका निवासियों ने इस बात का लाभ उठाया कि स्पेन और पुर्तगाल में, जो कि उनकी मातृभूमि थी, संकट आया हुआ था और वे अपने ही संकट में व्यस्त थे। उन्होंने उन देशों के शासन को उखाड़ फैंकने का प्रयास किया।

हम यह जानने का प्रयास करेंगे कि सोलहवीं शताब्दि के गवेषकों की खोज के बाद से लैटिन अमेरिकी देशों में क्या हुआ। बहुत ही अल्प समय में स्पेनिश और पुर्तगालियों ने कुछ अन्दरूनी जंगलों और पर्वतीय इलाकों को छोड़ कर, समस्त लैटिन अमेरिका को छान डाला था। अन्दरूनी क्षेत्रों में अब भी कुछ ऐसे स्थान हैं जिनकी पूरी खोजबीन नहीं हो पाई है। पुर्तगालियों ने ब्राजील पर कब्जा कर लिया और स्पेन को दक्षिण अमेरिका का तमाम शेष हिस्सा, मैक्सिको, मध्य अमेरिका और समृद्ध वेस्ट इण्डीज का क्षेत्र मिला। चूंकि डच, फ्रेंच और अंग्रेजों को दुनिया के दूसरे हिस्सों में उनके हित व्यस्त रखे हुए थे, इसलिए उन्हें लैटिन अमेरिका में बहुत थोड़े से उपनिवेशों का लाभ हुआ।

लैटिन अमेरिका की सम्पत्ति

वह भूमि, जिस पर स्पेनिशों और पुर्तगालियों का दावा था, संयुक्त राज्य के क्षेत्रफल से लगभग तीन गुना अधिक थी। वह उत्तर में रीओग्राण्डा नदी से दक्षिण में, सात हजार मील दूर, केपहार्न तक फैली हुई थी। इनके पश्चिम में सँकरा तटवर्ती *मैदान है, जिसका कुछ हिस्सा नाइट्रेटों* से भरा हुआ है। इस मैदान के पूर्व में ऊँचे एण्डीज पर्वतों की शृंखला एकदम सीधी उठी हुई है। इन पर्वतों में तांबा, टिन, सोना और चांदी की खानें छिपी हुई हैं, जिन तक पहुंचना कठिन है। दक्षिणी अमेरिका के दक्षिण और मध्य भाग में विस्तृत पम्पास घास के मैदान हैं जो कि मवेशी और भेड़-बकरी पालने के उत्तम क्षेत्र हैं। ला प्लाटा नदी के उत्तर में पठार की ऊँचाई ब्राजील के अधिकांश भाग के तापमान को वर्ष-पर्यन्त सुखदायक बनाती है। इसके और उत्तर में, दुनियाँ की सबसे बड़ी नदी अमेजन की घाटी है। अमेजिन घाटी घने उष्ण कटिबंधीय पेड़-पौधों से इतनी ज्यादा ढकी है कि श्वेत लोगों के लिए उसमें प्रवेश करना मुश्किल था। दक्षिण अमेरिका के उत्तरी हिस्से, वेस्ट इण्डीज, मध्य अमेरिका और मैक्सिको में चांदी, पैट्रोलियम, बढ़िया किस्म की लकड़ियों और अन्य प्रकार के पेड़-पौधों का अटूट भंडार है। प्राकृतिक साधनों वाली सम्पत्ति के बावजूद लैटिन अमेरिका में कोयले और लोहे की कमी है और इसकी अधिकांश धरती कम उर्वर है।

यूरोपीय संस्कृति—यूरोपीय लोग, जो इस नयी भूमि में आये, अपनी स्पेनिश और पुर्तगाली भाषाएँ, धर्म और रीतिरिवाज भी साथ लाये। उन्होंने नयी फसलें, जैसे, जौ, गेहूँ, संतरे और नींबू, चलाईं। वे घोड़े और अच्छी नस्ल के मवेशी लाये। उन्होंने स्पेनिश ढंग के मकान बनवाये जिनमें अन्दरूनी

दालान और बाहर की ओर निकले हुए बारजे थे। बड़े कस्बों में प्रत्येक में गिरजाघर बनाये गये और चर्च ने कई स्थानों में विश्वविद्यालय स्थापित किये। लीमा विश्वविद्यालय के द्वार, अमेरिका के प्रथम कालेज हारवर्ड की स्थापना से एक शताब्दि पूर्व, छात्रों के लिए खुल गये थे। १६०० तक लैटिन अमेरिका के सभी भागों में मैक्सिको सिटी, पनामा, लीमा, सेंटियागो, ब्यूनस आइरस, रीओडे जानारो, हवाना और अन्य शहरों का निर्माण हो गया था।

उपनिवेशवादी और आदिम निवासी—आदिम निवासियों के मंदिरों और महलों को लूटने के बाद, अगर स्पेनिशों को सोने और चांदी की जरूरत पड़ती तो उन्हें खानों में से उसे निकालना था। इस कार्य के लिए उन्होंने इण्डियनों को गुलाम बनाने की कोशिश की, लेकिन उनमें से अधिकांश थोड़े ही समय में मर गये। सिर्फ कुछ ही स्पेनिश खानों में नियंत्रण कर सके। उनमें से अधिकांश को सोने और चांदी का एक पंचमांश स्पेन के राजा को भेजना होता था। इस पर भी, खानों के मालिक अत्यधिक धनी हो गये।

सभी यूरोपीय लोग अमेरिका में धन प्राप्त करने नहीं आये थे, और कुछ, जो इस उद्देश्य से आये भी थे, वहीं रह गये क्योंकि उन्हें वह देश पसंद आया। अनुमान लगाया गया है कि औपनिवेशिक काल में ३० हजार स्पेनिश परिवार नयी दुनिया में आये। पुर्तगालियों और स्पेनिश लोगों ने आदिम लोगों को क्रिश्चियन बनाने के लिए धर्म-प्रचारक भेजे। धर्म-प्रचारकों ने इण्डियनों को गुलाम बनाने से रोकने का प्रयास किया और आम तौर पर उन्हें शिक्षित बनाने के लिए स्कूल खोले। यद्यपि उनके प्रयासों को निर्दयी और लालची गवेषकों ने जो आदिम लोगों के कल्याण के बारे में नहीं सोचते थे, विफल कर दिया।

स्पेनिश शासन—उस काल के अन्य राष्ट्रों की ही भांति स्पेनवालों ने अपने तथा उपनिवेशों के बीच व्यवहार में वाणिज्यवाद का सिद्धान्त लागू किया। व्यापारी माल अनिवार्य रूप से स्पेनिश जहाजों से ले जाना पड़ता था और कोई भी वस्तु जिसकी प्रतियोगिता स्पेनिश निर्माताओं के माल से होती हो, अमेरिका में निर्मित नहीं की जा सकती थी। स्पेन-वासियों का विश्वास था कि उपनिवेशों को स्पेन को दौलत देनी चाहिए।

अन्य रूप में भी स्पेन अपने उपनिवेशों पर सख्त नियंत्रण रखता था। उन्हें स्वशासन प्राप्त नहीं था। विचारों की स्वतन्त्रता नहीं थी। टैक्स बहुत ज्यादा और बेतरतीब बंटे हुए थे। अगर कोई व्यक्ति लैटिन अमेरिका को निष्क्रमण चाहता था तो उसे यह सबूत देना पड़ता था कि उसके पूर्वज पीढ़ियों से कैथोलिक रहे हैं और वह स्वयं स्पेन में पैदा हुआ है। इस तरह लैटिन अमेरिका को कैथोलिक रखना उद्देश्य था।

लीमा (पेरू) की ला युनिवर्सिडाड डे सान मार्कोस की स्थापना १५५१ में हुई थी। यह पश्चिमी गोलार्द्ध के दो सबसे प्राचीन विश्वविद्यालयों में से एक है।

पैन अमेरिकन एअरवेज

पुर्तगाली शासन—पुर्तगालियों के भी ब्राजील के सम्बन्ध में इसी तरह के कानून थे, गोकि वे उतने कड़े नहीं थे। ब्राजील में परिस्थितियाँ भी भिन्न थीं। विजेताओं को वहाँ कोई उच्च सभ्यता नहीं मिली थी, गोकि वहाँ की जमीन अधिक प्राकृतिक सम्पदा से सम्पन्न थी। ब्राजील एक बड़ा देश था, मौजूदा संयुक्त राज्य अमेरिका से भी बड़ा। देश का अधिकांश भाग घने जंगलों का था। पुर्तगालियों ने तट के किनारे-किनारे खेती शुरू की और उनमें काम करने वाले इण्डियन और नीग्रो दोनों ही दास थे।

इसमें आश्चर्य नहीं कि इन कठोर पाबंदियों के होते हुए, उपनिवेशों ने अपनी स्वाधीनता की उपलब्धि के लिए सर्वप्रथम अवसर का लाभ उठाया।

(१) कौन-कौन से देशों ने लैटिन अमेरिका के अधिकांश उपनिवेश हथियाये ?
(२) हालैण्ड, फ्रांस और ग्रेट ब्रिटेन को दक्षिण अमेरिका में इतनी थोड़ी-सी भूमि ही क्यों मिली ?
(३) किस क्षेत्र को लैटिन अमेरिका कहते हैं ? वहाँ क्या प्राकृतिक साधन उपलब्ध हैं ?
(४) स्पेनिश लोग लैटिन अमेरिका क्यों गये ?
(५) उपनिवेशवादियों ने किस प्रकार लैटिन अमेरिकी संस्कृति पर प्रभाव डाला ?
(६) स्पेन और पुर्तगाल ने अपने उपनिवेशों में क्या-क्या प्रतिबंध लगाये ?

लैटिन अमेरिकनों का विद्रोह

लैटिन अमेरिकी क्रांतियों के कारण—उत्तरी अमेरिका में ब्रिटिश उपनिवेशवासियों द्वारा स्वाधीनता प्राप्त किये जाने की सफलता से उन लोगों का हौसला बढ़ा जोकि लैटिन अमेरिकनों को स्वाधीनता प्राप्त कराने की आशा रखते थे। फ्रान्स की क्रान्ति से भी उपनिवेश के नेताओं को अपनी आज़ादी के लिए आगे बढ़ने का साहस मिला। अनेक उपनिवेशवासियों ने अपने पुत्रों को यूरोपीय विश्वविद्यालयों में पढ़ने भेजा जहाँ वे अंग्रेज और फ़्रान्सीसी दार्शनिकों के बारे में पढ़ते थे और उनकी राजनीतिक विचारधारा को स्वीकार करने लगे थे। तब, स्पेनिश आर्माडा की पराजय (१५८८) के बाद स्पेन बराबर-निर्बल पड़ता जा रहा था और औपनिवेशिक सरकारों के ऊपर उसका नियंत्रण आसानी से हटाया जा सकता था। इन सब कारणों से लैटिन अमेरिकी स्वायत्तशासन के लिए आतुर थे।

यूरोप में नैपोलियनकालीन युद्धों ने अवसर प्रदान किया। स्पेन को नैपोलियन की सेनाओं ने रौंद दिया था, राजा को गद्दी से हटने को मजबूर होना पड़ा और नैपोलियन ने उसके बड़े भाई, जोसफ, को स्पेन के तख्त पर बैठाया। जब नयी सरकार के प्रतिनिधि उपनिवेशों में पहुँचे, तब बहुत से शाही अफसरों ने, वहाँ उनका आदेश मानने से इन्कार कर दिया और पहले की ही भाँति शासन-प्रबन्ध करने लगे। अन्य मामलों में शाही अफसरों के बदले स्थानीय लोग नियुक्त किये गये। उन वर्षों

क्या तुम कुछ लैटिन अमेरिकी देशों की अस्थिरता का को ऐतिहासिक कारण बता सकते हो ?

के दौरान, जब यह स्थिति थी, उपनिवेशवासी उन सरकारों के अभ्यस्त हो गये जो स्पेन से बंधी हुई नहीं थीं। नैपोलियन-कालीन युद्धों के बाद जब राजा पुनः सत्तारूढ़ हुआ, उपनिवेशों ने उसके खिलाफ बगावत की।

फ्रान्सिस्को डी मिराण्डा—स्पेनिश उपनिवेशों में क्रान्ति अमेरिकी उपनिवेशों की भाँति एक संयुक्त प्रयास नहीं था। अपितु, स्पेनिश उपनिवेश स्वतन्त्र रूप से अपनी आजादी के लिए लड़े। किन्हीं स्थानों

में क्रान्ति १८१० ही में आरम्भ हो गई थी लेकिन विद्रोहों का अन्त १८२६ तक नहीं हुआ था। विद्रोह करने वाला पहला देश वेनेजुएला था जिसने फ्रांसिस्को डी मिराण्डा के नेतृत्व में, जो क्रान्तियों और युद्धों के योग्य संचालक की अपेक्षा उनका योग्य योजनाकार सिद्ध हुआ, बगावत का झण्डा बुलन्द किया। वह पराजित हुआ और स्पेन ले जाया गया, जहाँ उसकी कारावास में मृत्यु हुई। जो चिनगारी उसने लगा दी थी, जलती रही और अन्त में अन्य लोगों ने क्रान्ति का सफल समापन किया।

फादर हिडालगो—उसी वर्ष जबकि मिराण्डा ने वेनेजुएला को स्पेनिश शासन से मुक्त करने का असफल प्रयास किया था, मैक्सिको में उस देश को स्वाधीन करने का प्रयत्न किया गया। वहाँ हिडालगो नामक एक पादरी ने किसानों के एक दल का मैक्सिको-स्थित स्पेनिश सेना के खिलाफ नेतृत्व किया। मिराण्डा की भाँति हिडालगो भी असफल रहा और उसे फाँसी चढ़ा दिया गया। लेकिन मिराण्डा की ही भाँति, उसकी देश-भक्ति ने मैक्सिकनों को प्रेरणा प्रदान की और कुछ वर्षों बाद मैक्सिको ने स्पेनिश गवर्नर को बाहर भगाकर गणतन्त्र की स्थापना की। मैक्सिको में हिडालगो का सम्मान "उस देश के राष्ट्रपिता" का है।

सिमोन बोलीवर—लैटिन अमेरिका के स्वाधीनता के इतिहास में सिमोन बोलीवर का नाम अन्य सबसे ऊपर है। वह वेनेजुएला के एक धनी शासक परिवार का सदस्य था, लेकिन उसने अपने जीवन के १० वर्षों से अधिक और अपनी समस्त दौलत दक्षिण अमेरिका की आजादी के काम में लगा दी। बहुत कठिन परिस्थितियों में और बहुत कम समर्थन के साथ वह अपनी सेनाओं को वेनेजुएला की स्वाधीनता के लिए मरुस्थलों और एण्डीज पर्वतमाला के ऊँचे-ऊँचे दर्रों से ले गया। बाद में वह इक्वेडोर और पेरू की ओर से लड़ा। वेनेजुएला कोलम्बिया, इक्वेडोर और पेरू बोलीवर को अपना मुक्तिप्रदाता मानते हैं।

फिलिप जेंड्रो

बोलीवर की यह घुड़सवार बेहतरीन प्रतिमा उसके अत्यधिक बहादुर होने की भावना को परिचायक है।

जोस डी सान मार्टिन—जोस डी सान मार्टिन अर्जेन्टिना में पैदा हुआ था लेकिन उसका आरम्भिक जीवन स्पेन में बीता, जहाँ उसका पिता एक सैनिक अफसर था। वह जब केवल ग्यारह वर्ष का था तब स्वयं भी सेना में भरती हो गया था और उसने स्पेन में महत्त्वपूर्ण लड़ाइयाँ जीतीं। २० वर्षों की सैनिक सेवा के बाद, उसने अपने मुल्क में स्वाधीनता के संग्राम की बात सुनी। वह स्पेन छोड़ कर संग्राम में सहायता करने अमेरिका वापस चला गया। उसे शीघ्र ही अर्जेन्टिना की फौजों की कमान सौंप दी गयी। चिली को मुक्त करने के लिए वह अपनी फौजों को एण्डीज पर्वतों के परली ओर ले गया। यह इतना साहसिक कार्य था कि उसकी तुलना आल्प्स पार करने वाले हनीबाल से की जाती है। सान मार्टिन को चिली में विजय मिली और वह अन्य देशों की सहायता करता चला गया। यह उसके दूरदर्शी नेतृत्व का ही परिणाम था कि अर्जेन्टिना, चिली और पराग्वे ने अपनी स्वाधीनता हासिल की।

तब उसने और बोलीवर ने पेरू और बोलिविया में अन्तिम स्पेनिश सेनाओं को हराया। उन दोनों के बीच, बोलीवर और सान मार्टिन ने नौ उपनिवेशों को स्पेनिश दमनचक्र से छुटकारा दिल-

एल० सी० हैंडी स्टूडियोज

इस चित्र को 'मुनरो सिद्धान्त की उत्पत्ति' कहा जा सकता है। राष्ट्रपति मुनरो अपने मंत्रिमंडल के साथ पश्चिमी गोलार्द्ध सम्बन्धी अपनी योजना पर बातचीत कर रहे हैं। इस तरह, स्वाधीनता के ५० वर्ष बाद ही अमेरिका ने यूरोप की शक्ति को चुनौती दी।

बाया था। इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि उनकी प्रस्तरमूर्तियाँ आज समस्त दक्षिणी अमेरिका में दिखाई देती हैं।

अन्य लोगों ने उनका तब तक अनुसरण किया जब तक कि दक्षिणी अमेरिका की मुख्य भूमि में सभी स्पेनिश उपनिवेशों को स्वाधीनता नहीं मिल गयी।

ब्राजील की स्वाधीनता—ब्राजील की कहानी बिल्कुल दूसरी ही थी। पुर्तगाल में नैपोलियन के हाथों वहाँ का राजा अपना ताज खो चुका था। वह किसी प्रकार, ब्रिटेन की मदद से ब्राजील भाग गया था और उसने ब्राजील का दर्जा एक उपनिवेश से उठाकर राज्य बना दिया था। इतिहास में यह एक ही दृष्टान्त था जबकि कोई उपनिवेश एक साम्राज्य की राजधानी बना। जब पुर्तगाल में पुनः स्वतंत्र सरकार कायम हुई, राजा घर लौटा और अपने पुत्र डान पेड्रो को ब्राजील का राज्याधिकारी (रीजेन्ट) बनाकर वहीं छोड़ गया। ब्राजील की जनता स्वतन्त्रता के लिए उत्सुक थी और १८२२ में रीजेन्ट को सम्राट् पेड्रो प्रथम घोषित किया गया। ब्राजील बगैर युद्ध या रक्त-क्रान्ति के स्वाधीन हो गया। पेड्रो प्रथम ने नौ वर्षों तक राज्य किया और फिर उसने जनप्रिय पुत्र पेड्रो द्वितीय के लिए अपनी गद्दी छोड़ दी। पेड्रो द्वितीय एक उदार राजा था और उसने अपने देश के लिए बहुत कुछ किया, लेकिन इसके बावजूद लैटिन अमेरिका के शेष देशों की भाँति, ब्राजील में भी गणतन्त्र प्रणाली की सरकार के आन्दोलन ने जोर पकड़ा। अन्त में, १८८९ में, राजतन्त्र की समाप्ति कर गणतन्त्र की स्थापना हुई।

१. लैटिन अमेरिकी उपनिवेश क्योंकर स्पेन के शासन को उखाड़ फेंकने में समर्थ हुए?
२. स्पेनिश अमेरिका में स्वाधीनता-आन्दोलन के नेता कौन थे और हर एक को कितनी सफलता मिली?
३. ब्राजील किस तरह गणतन्त्र के रूप में परिणत हुआ, इसका विवरण बताओ?

लैटिन अमेरिकी गणराज्यों में स्थायित्व का अभाव

मुनरो सिद्धान्त—ये क्रांतियाँ विएना में मैटरनिख और यूरोप में सहानुभूति न रखने वाले अन्य लोगों से छिपी नहीं रहीं। यूरोप महाद्वीप के बड़े राष्ट्र चतुर्देशीय गठबंधन से यथास्थिति कायम रखने को वचनबद्ध थे। उन्होंने दक्षिण अमेरिकी विद्रोहों को असंतोष की दृष्टि से देखा और स्पेन को उसके उपनिवेश वापस दिलाने के लिए हस्तक्षेप की धमकी दी। दूसरी ओर, ग्रेट ब्रिटेन इस बात के लिए उत्सुक था कि गणतंत्र अपनी स्वतंत्रता बनाये रहें। उसने लैटिन अमेरिका में अपना बाजार विकसित कर लिया था और वह जानता था कि अगर स्पेन को पुनः उपनिवेशों और व्यापार का लाभ मिल गया तो वह चौपट हो जायगा।

संयुक्त राज्य के बहुत से लोग लैटिन अमेरिकी स्वाधीनता के प्रति सहानुभूति रखते थे, आंशिक रूप से इसलिए कि स्वयं उन्होंने अपनी आजादी हासिल की थी। कांग्रेस ने राष्ट्रपति से अनुरोध किया कि नये गणराज्यों को मान्यता प्रदान की जाय। आखिर में राष्ट्रपति मुनरो ने, दिसम्बर १८२३ में, कांग्रेस के नाम राष्ट्रपति के संदेश में एक वक्तव्य शामिल किया जो "मुनरो सिद्धान्त" के नाम से प्रसिद्ध हुआ। इसमें उन्होंने यूरोपीय राष्ट्रों को चेतावनी दी कि वे अपनी पद्धतियाँ इस गोलार्द्ध के किसी भी हिस्से में फैलाने की कोशिश न करें और कहा कि अब अमेरिका उपनिवेशवाद के लिए खुला नहीं है। मुनरो ने यह भी स्पष्ट कर दिया कि संयुक्त राज्य अमेरिका यूरोपीय मामलों में हस्तक्षेप नहीं करेगा।

यूरोपीय राष्ट्र वस्तुतः इस स्थिति में नहीं थे कि लैटिन अमेरिकी गणराज्यों के खिलाफ अपनी धमकी को क्रियान्वित कर सकें। न अमेरिका ही उस समय ऐसी स्थिति में था कि उन्हें रोक सके। मुनरो सिद्धान्त अमेरिका और ग्रेट ब्रिटेन दोनों ही जगह स्वीकार कर लिया गया। बाद में यह अमेरिका की विदेश नीति का बुनियादी पत्थर बन गया।

नये गणराज्यों की समस्याएँ—लैटिन अमेरिकी गणराज्य शीघ्र ही जान गये कि स्वाधीनता पा लेने से उनकी सभी समस्याएँ हल नहीं हो गयी हैं। बहुसंख्यक जनता लिखना या पढ़ना कतई नहीं जानती थी। वर्गभेद बना हुआ था। जो वर्ग तब तक शासन करता आया था, वह अब भी शासक था। टैक्स अब भी असमान रूप से विभाजित थे। जनता गरीबी में रखी जाती थी। संवहन के साधन स्वल्प थे और देश के बहुत समृद्ध प्राकृतिक साधनों को विकसित करने के लिए मुद्रा उपलब्ध नहीं थी। इन परिस्थितियों के कारण नागरिक तनाव बना हुआ था। शासक सत्तारूढ़ बने रहने के लिए घूस, चुनावों में भ्रष्टाचार और तानाशाही तौर-तरीकों का प्रयोग करते थे। प्रतिद्वन्द्वी उम्मीदवारों के समर्थकों के बीच मतदान में एक दूसरे पर मुक्केबाजी और गोलियाँ चल जाया करती थीं। रिओग्राण्डा के दक्षिण के अधिकांश देशों में लोकतंत्र एक स्वांग-मात्र रह गया था।

सीमा सम्बन्धी विवाद भी उठ खड़े हुए थे। घनी बस्ती वाले विशाल क्षेत्रों की सीमाएँ कभी भी

कोलम्बिया में अधिकांश फसलों की बुआई के लिए लकड़ी के हल और बैल प्रयुक्त होते हैं। चट्टानी जमीन में आधुनिक औजार अव्यावहारिक हैं।

स्टैंडर्ड आयल कम्पनी, न्यू० ज०

सुनिश्चित नहीं हुई थीं। सीमाओं को एक गोल-मेज सम्मेलन में तय करने के बजाय लैटिन अमेरिकावासी अक्सर लम्बी और जबरदस्त लड़ाइयाँ लड़ने लगते थे।

लैटिन अमेरिकी गणराज्यों की समस्याएँ बहुत गहरी थीं। वहाँ की श्वेत जनता वहाँ उस स्वतंत्र परम्परा में नहीं पली थी जिस परम्परा में अंग्रेजी उपनिवेशों के उत्तर-यूरोपीय पले थे। बहुसख्यक आबादी इण्डियनों की थी। संविधान और प्रतिनिधि सरकारें उनके लिए एकदम नयी वस्तु थीं। दीर्घकालीन औपनिवेशिक अवधि में उन्हें स्वशासन या स्वतंत्र आर्थिक जीवन की नगण्य-सी ट्रेनिंग मिली थी। यह कोई विशेष आश्चर्य की बात नहीं कि लैटिन अमेरिका के गणराज्य अस्थिर थे और बहुत से गणतंत्र तानाशाहों के शासनान्तर्गत समाप्त हो गये।

प्रगति—गोकि १८३० में अपनी मृत्युशय्या पर पड़े हुए बोलीवर ने बड़े खेद के साथ लिखा कि स्वाधीनता ही एकमात्र ऐसी वस्तु थी, जिसे लैटिन अमेरिका ने हासिल किया था, फिर भी कुछ प्रगति १९ वीं शताब्दि के दौरान हुई। यह सच है कि गाँव और ग्रामीण जिले पिछड़े हुए रहे। सड़कों और रेलपथों के अभाव में वे अलग से पड़ गये थे। परिणामस्वरूप जीवन वहाँ थोड़ा भी न बदला, बहुत ही थोड़े किसान लिख या पढ़ सकते थे, सफाई पुराने ही जमाने की तरह रही और जीवन-निर्वाह कष्ट-साध्य था। चूंकि लैटिन अमेरिका की अधिकांश भूमि उपजाऊ नहीं है और किसानों को कोई जानकारी नहीं थी कि उसे किस तरह खेतीयोग्य बनाया जाय, इसलिए लोग गरीब ही बने रहे। दूसरी ओर लैटिन अमेरिका के नगर कई रूप से विकसित हुए। उनकी चौड़ी सड़कें, खूबसूरत बगीचे, शानदार इमारतें अमेरिका या यूरोप के बड़े शहरों से मुकाबला करती थीं। बंदरगाह सुधारे गए और व्यापार बढ़ा, विशेषकर बहुत से यूरोपीय मुल्कों से। इटली, जर्मनी और इंग्लैण्ड से हजारों देशान्तरवासी अपने नये घर बसाने दक्षिण अमेरिका आये। अधिक विकसित देश अर्जेन्टिना, ब्राजील और चिली की सरकारें यदि अधिक उदार नहीं हो पाईं तो भी वे अधिक सुदृढ़ हो चली थीं।

एण्डीज पर्वतमालाओं की एक हिमाच्छादित चोटी पेरू के एक शहर के इस खूबसूरत प्लाजा की पृष्ठभूमि का काम कर रही है। कैथेड्रल प्लाजा की पृष्ठभूमि का काम कर रहा है। कैथेड्रल प्लाजा के सामने बना है। दाईं ओर इमारत में बनी रोमन मेहराबों पर गौर करो।

ब्लैक स्टार
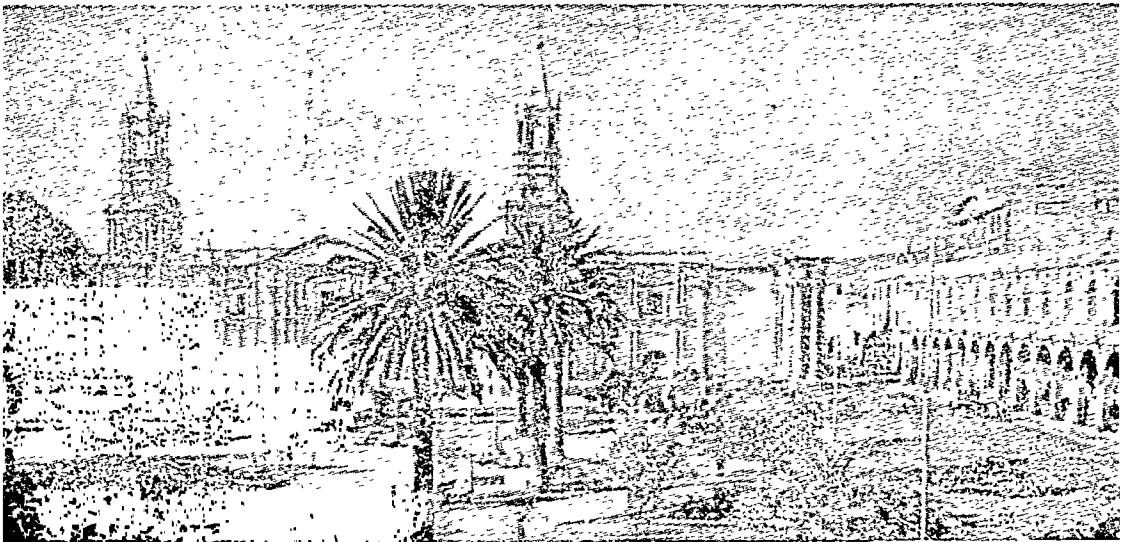
लैटिन अमेरिका की क्रांतिकारी भावना ने वहाँ ऐसे साहित्य का निर्माण किया जिससे गद्य और पद्य काव्यों में वोलीवर और अन्य राष्ट्र-निर्माता साहित्य में अमर हो गए। बाद में इसी प्रकार का साहित्य लिखा गया जिसका रूप राष्ट्रीय था। बहुत से बड़े शहरों में "कला कक्ष" निर्मित हुए। ओपेराघरों और संगीत भवनों में विश्व के प्रमुख कलाकार अपनी कलाओं का प्रदर्शन करते थे। राजकीय और नगरों के मालिकाना अधिकारों वाले थियेटरों में कलाकारों की बेहतरीन कंपनियाँ नाटक दिखलाती थीं। कम से कम, नगर तो संस्कृति के केन्द्र थे।

उत्तर का कालोसस—१८२३ में लैटिन अमेरिका में आक्रामक यूरोपीय शक्तियों से सुरक्षा के रूप में मुनरो सिद्धान्त का स्वागत किया गया। लैटिन अमेरिकावासियों का विश्वास था कि उनका उत्तर का भाई गणराज्य उनका संरक्षक है। इसके २५ वर्ष बाद, सिर्फ एक बार, संयुक्त राज्य और मैक्सिको के बीच युद्ध हुआ (१८४६-१८४८)। इसके परिणामस्वरूप अमेरिका को मैक्सिको का कुछ भाग मिला। इससे बहुत से लैटिन अमेरिका-वासियों को अपने विचार बदलने पड़े।

१९ वीं शताब्दि के उत्तरार्द्ध में अमेरिकी पूँजी लैटिन अमेरिका के विकास में लगनी आरंभ हो गयी थी ताकि रिओग्राण्डा के दक्षिणी देशों के प्राकृतिक साधनों को विकसित किया जाय। बहुत से निवासी अमेरिकनों के उत्साहपूर्ण व्यापार के तरीकों को नहीं समझते थे जो जंगलों और खानों को चलाने लैटिन अमेरिका आये थे। बहुत से मुल्कों में राष्ट्रवाद का विकास हो चला था और वहाँ के नेता अपने कारोबार स्वतः चलाना चाहते थे। उन्हें यह बात विशेष रूप से नापसंद थी कि अमेरिकी सरकार व्यवस्था कायम करने और क्रांतियों में अमेरिकी पूँजी को नष्ट होने से बचाने में उनकी सरकारों की मदद करे। १९ वीं शताब्दि के अन्त तक लैटिन अमरीकी एक बात पर सहमत हो गए। वे अमरीका से डरते थे। अमेरिकनों के पास वह पूंजी थी जिसकी दक्षिण अमेरिका वालों को अपने कच्चे माल का प्रयोग करने के लिए जरूरत थी। लेकिन अमेरिका की शक्ति बहुत बड़ी थी। संयुक्त राज्य "उत्तर का कालोसस" बन चुका था। दूसरी ओर, अमेरिका को लैटिन अमेरिका के साथ रोजगार करने में कठिनाई प्रतीत हो रही थी। वहाँ की सरकारों की अस्थिरता वहां पूंजी लगाने में एक बड़ा खतरा थी। एक डिक्टेटर इस प्रकार पूंजी लगाने का स्वागत कर सकता था और उसके बाद आने वाला नया व्यक्ति पूंजी लगाने वाले को भगा-कर उसकी सम्पत्ति जब्त कर सकता था।

१. मुनरो सिद्धान्त क्या था और यह क्यों जारी किया गया?
२. लैटिन अमेरिकी सरकारों में स्थिरता के अभाव के क्या कारण थे?
३. लैटिन अमेरिकी देशों के बीच इतने ज्यादा सीमा-विवाद क्यों हुए?
४. लैटिन अमेरिका के गाँव और देहाती जिले विशेष रूप से पिछड़े हुए क्यों रहे?
५. १९ वीं शताब्दि में लैटिन अमेरिका में कितनी प्रगति हुई?
६. लैटिन अमेरिका संयुक्त राज्य से क्यों डरता था?
७. संयुक्त राज्य अमेरिका के लोगों को लैटिन अमेरिका में व्यापार करने में क्यों कठिनाई महसूस हुई?
८. क्रांति के युग में दुनिया में क्या-क्या महत्त्वपूर्ण परिवर्तन हुए?

विचार-विमर्श के लिए प्रश्न

१. लैटिन अमेरिका में स्पेनिश उपनिवेशवाद किस रूप में उत्तरी अमेरिका के ब्रिटिश उपनिवेश-वाद से भिन्न था?

२. रिओ ग्राण्डा नदी से दक्षिण की भूमि लैटिन अमेरिका क्यों कहलाती है?

३. किस रूप में लैटिन अमेरिका की मुक्ति संयुक्त राज्य अमेरिका के स्वाधीनता संघर्ष से अधिक कठिन सैनिक कार्य थी?

४. दक्षिण अमेरिका समृद्ध क्यों है?

५. किस रूप में लैटिन अमेरिकी अमेरिका से अधिक यूरोप वालों से बंधे हुए थे?

८. लोकतंत्र की दिशा में बढ़ते कदम

१८ वीं शताब्दी के अन्तिम और १६ वीं शताब्दी के प्रारम्भिक वर्षों का काल दुनिया के बहुत से क्षेत्रों में मानव के "जीवन, स्वतंत्रता और सुख की आकांक्षा" की ओर प्रयत्नशील रहने का काल था। क्रांति से प्राप्त कुछ उपलब्धियाँ स्थायी थीं। बहुतसी कुछ समय के लिए लुप्त हो गयीं जबकि स्वार्थी शासकों ने अपनी शक्ति बढ़ाने और कायम रखने की योजनाएँ बनाईं
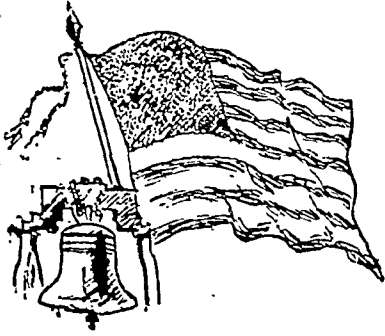
लोकतन्त्र की दिशा में चिरस्थायी प्रगति, जिसे दुनिया ने अभी जाना नहीं था, इसी काल के दर्मियान हुई जबकि अमेरिकी उपनिवेशवासियों ने इंग्लैण्ड से अपनी स्वतंत्रता की घोषणा की, उसे प्राप्त करने के लिए संघर्ष किया और अमरीकी संविधान की स्थापना की।

फ्रांस में कुछ वर्षों बाद तृतीय वर्ग (जनता) ने राष्ट्रीय महासभा की स्थापना कर फ्रांसीसी क्रान्ति को जन्म दिया। मानवीय अधिकारों की घोषणा ने मानव को स्वतंत्रता और मुक्ति दिलाने की ओर निर्देशन देने में हाथ बटाया।
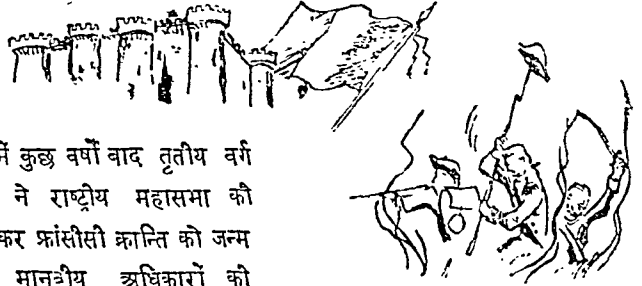
विएना कांग्रेस के यूरोप में पुराने शासन स्थापित करने के प्रयास सफल रहे, लेकिन वे असंतोष की आग पहले ही भड़का चुके थे, परिणामस्वरूप राजाओं और सामन्तों के खिलाफ विद्रोह हुए। इनमें से अधिकांश असफल रहे। लेकिन ग्रीस ने स्वतंत्रता प्राप्त कर ली और दोनों सिसली राज्यों को एक लिखित संविधान की उपलब्धि हुई।

समुद्र पार मैक्सिको में और दक्षिणी अमेरिका में देशभक्तों ने वेनेजुएला, कोलम्बिया, इक्वेडोर, पेरू और अर्जेन्टिना में स्पेन के खिलाफ बगावतें कीं। इन देशों ने और ब्राजील ने स्वाधीनता हासिल की लेकिन लोकतंत्र बहुत कम था। लगभग तत्काल ही वे स्वार्थी और महत्त्वाकांक्षी लोगों के नियंत्रण में आ गये।

६. लैटिन अमेरिका की जनसंख्या में अमेरिकी जनसंख्या की अपेक्षा ज़्यादा मात्रा में इण्डियन खून क्यों है?

७. अमेरिका के किन हिस्सों की प्रारंभ में स्पेनिशों ने गवेषणा की और उन्हें बसाया?

८. क्या लैटिन अमरिका वालों का संयुक्त राज्य से भयभीत रहना उचित था?

इतिहास के उपकरणों का प्रयोग

एक. नाम, तिथियाँ और स्थान।

(क) क्या तुम इन शब्दों की व्याख्या कर सकते हो?

"उत्तर का कालोसस"—मुनरो सिद्धान्त।

(ख) इन तिथियों के बारे में तुम क्या जानते हो?

८. जीवन-निर्वाह की प्रगति के चरण

नैपोलियन-कालीन युद्धों और क्रांतियों ने यूरोप में बरबादी, दैन्य और आम जनता के लिए तबाही ला दी थी। मानव इस काल में मानव स्वतंत्रता के संघर्ष पर ध्यान केन्द्रित किये हुए था। स्वतंत्रता के साथ ही जीवन के स्तर में भी सुधार आया और धीरे-धीरे मानव ने संस्कृति के उच्च स्तरों की ओर बढ़ना आरम्भ किया।

विज्ञान और आविष्कारों में प्रगति

इसी दौरान जबकि राजनीतिक बगावतें हो रही थीं, खोजी दिमाग लोगों के काम की तलाश में थे। कुछ महत्त्वपूर्ण आविष्कार हुए जिनसे मानव जीवन में क्रांति आने वाली थी। इनमें काटन जिन (कपास ओटाई मशीन) स्पिनिंग जैनी, फ्लाइंग शटल, पावरलूम और स्टीम इंजन भी थे।
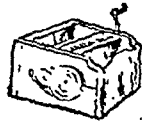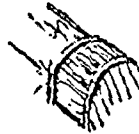
काटन जिन फ्लाइंग शटल
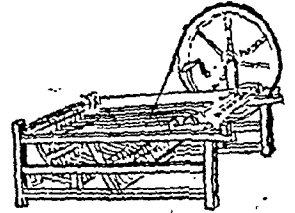
स्पिनिंग जैनी
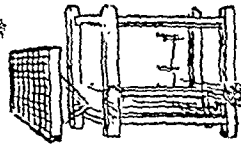
पावरलूम
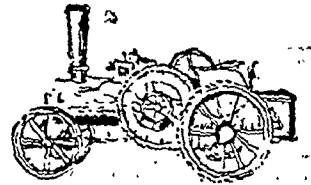
स्टीम इंजन

शिक्षा में प्रगति

नैपोलियन ने फ्रांस में एक स्कूल प्रणाली स्थापित की जो प्राइमरी स्कूल से लेकर पेरिस विश्वविद्यालय और टीचर्स कालेजों तक थी। उसने फ्रांस के लिए एक कानूनी संहिता भी बनाई, जो अपने जमाने की सबसे श्रेष्ठ संहिता थी।

बहुत वर्ष पूर्व स्थापित विश्वविद्यालयों में उनके इर्द-गिर्द युद्ध जारी रहने के बावजूद विशेषाधिकार प्राप्त थोड़े से लोगों की उच्च शिक्षा जारी थी। शिक्षण की सुविधाओं से दुनियाँ के अधिकांश लोग वंचित थे।

कलाओं में प्रगति

नैपोलियन ने पेरिस को सुन्दर बनाया। लैटिन अमेरिकी शहरों में बेहतरीन प्लाजा और कैथेड्रल और अन्य सार्वजनिक इमारतें बनीं।

संगीत तथा कला की अन्य शाखाओं में अभिव्यक्ति का रूप निखरा। अक्सर यह मानव के संघर्ष का ही परिणाम था।

१८१०-१८२६, १८२३, १८४६-१८४८, १८८९।

(ग) निम्नलिखित स्थान नक्शे में दिखाओ :

अमेजन नदी—एण्डीज पर्वतमाला—अर्जेन्टिना—ब्राजील—ब्यूनस आयर्स—मध्य अमेरिका—चिली — कोलम्बिया — इक्वेडोर — हवाना—ला प्लाटा नदी—लीमा—मैक्सिको—मैक्सिको सिटी—पनामा—पुर्तगाल—रायोडीजेनेरो—रिओ ग्राण्डा नदी—सेंटियागो—वेनेजुएला ।

(घ) इन व्यक्तियों के बारे में तुम क्या जानते हो ?

सिमोन बोलीवर—जोसफ बोनापार्ट—फादर हिडाल्गो—फ्रांसिस्को डी मिराण्डा—जेम्स मुनरो—नैपोलियन प्रथम—पेड्रो द्वितीय—जोस डी सान मार्टिन ।

दो. क्या तुम अपने विचार स्पष्ट प्रकट कर सकते हो ?

(क) कक्षा में विशेष रिपोर्ट प्रस्तुत करने के लिए ।

रायोडी जेनेरो का बन्दरगाह—ब्राजील में रबर की खेती—ब्राजील में कौफी उद्योग—हमारा चुइंगम कहां से आता है ?—लैटिन अमेरिका के कलाकक्ष—"एण्डीज का ईसा"—रेल मार्ग द्वारा एण्डीज का एक दौरा—विमान से एण्डीज की यात्रा चिली का नाइट्रेट उद्योग—पम्पाज के गौचो—लैटिन अमेरिका में यातायात के तरीके ।

(ख) लैटिन अमेरिकी विश्वविद्यालयों में से एक का कैटलॉग प्राप्त करो। उसमें पढ़ाये जाने वाले पाठ्यक्रमों की तुलना अपने विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम से करो । अपनी जांच का परिणाम कक्षा को बताओ ।

तीन. क्लास कमेटी का कार्य ।

(क) संयुक्त राज्य अमेरिका के ऐसे स्थानों की सूची बनाओ जिनका नामकरण स्पेनिश उपनिवेशवाद काल में हुआ हो । सूची की नकल ब्लैक-बोर्ड पर उतारो ।

(ख) विस्तृत अध्ययन के लिए तीन या चार लैटिन अमेरिकी देशों को चुनो । उन देशों की बिब्लियोग्राफी तैयार करने के लिए कक्षा को कमेटियों में विभाजित कर लो । अध्यापक की स्वीकृति से प्रत्येक बिब्लियोग्राफी का एक लेख कक्षा में सुनाने के लिए चुन लो । बुलेटिन बोर्ड पर सबसे अच्छे बने हुए नकशे दिखाओ ।

चार. बुलेटिन बोर्ड के लिए ।

(१) दुनिया का नक्शा लेकर लैटिन अमेरिकी गणराज्यों में से प्रत्येक की जनसंख्या बताओ। ग्राफ के जरिये बताओ कि पिछली जनगणना में प्रत्येक का एक दूसरे के मुकाबले और सयुक्त राज्य की जनसंख्या के मुकाबले क्या अनुपात रहा ?

(२) दक्षिण अमेरिका या लैटिन अमेरिका का एक चित्रमय नक्शा बनाओ और प्रत्येक देश की मुख्य पैदावार दिखाओ । तुम्हें इसके बारे में वाणिज्य भूगोल से सहायता मिलेगी । सबसे अच्छे नक्शे बुलेटिन बोर्ड पर लगाओ ।

पाँच. लैटिन अमेरिकी संगीत ।

कक्षा में लैटिन अमेरिकी संगीत के रेकार्ड लगाओ ।

छः चित्र-अध्ययन ।

३६५ पृष्ठ पर चित्र का अध्ययन करो । दीवार पर टंगे चित्र में क्या दिलचस्प चीज है ? राष्ट्रपति की केबिनेट के किन सदस्यों को तुम पहचान पाते हो ? वे किन पदों पर हैं ? राष्ट्रपति मुनरो औपनिवेशिक स्टाइल के कपड़े पहनने वाला अन्तिम राष्ट्रपति था ।

मनुष्य और मशीनों ने

रहन-सहन के तरीके बदल दिये
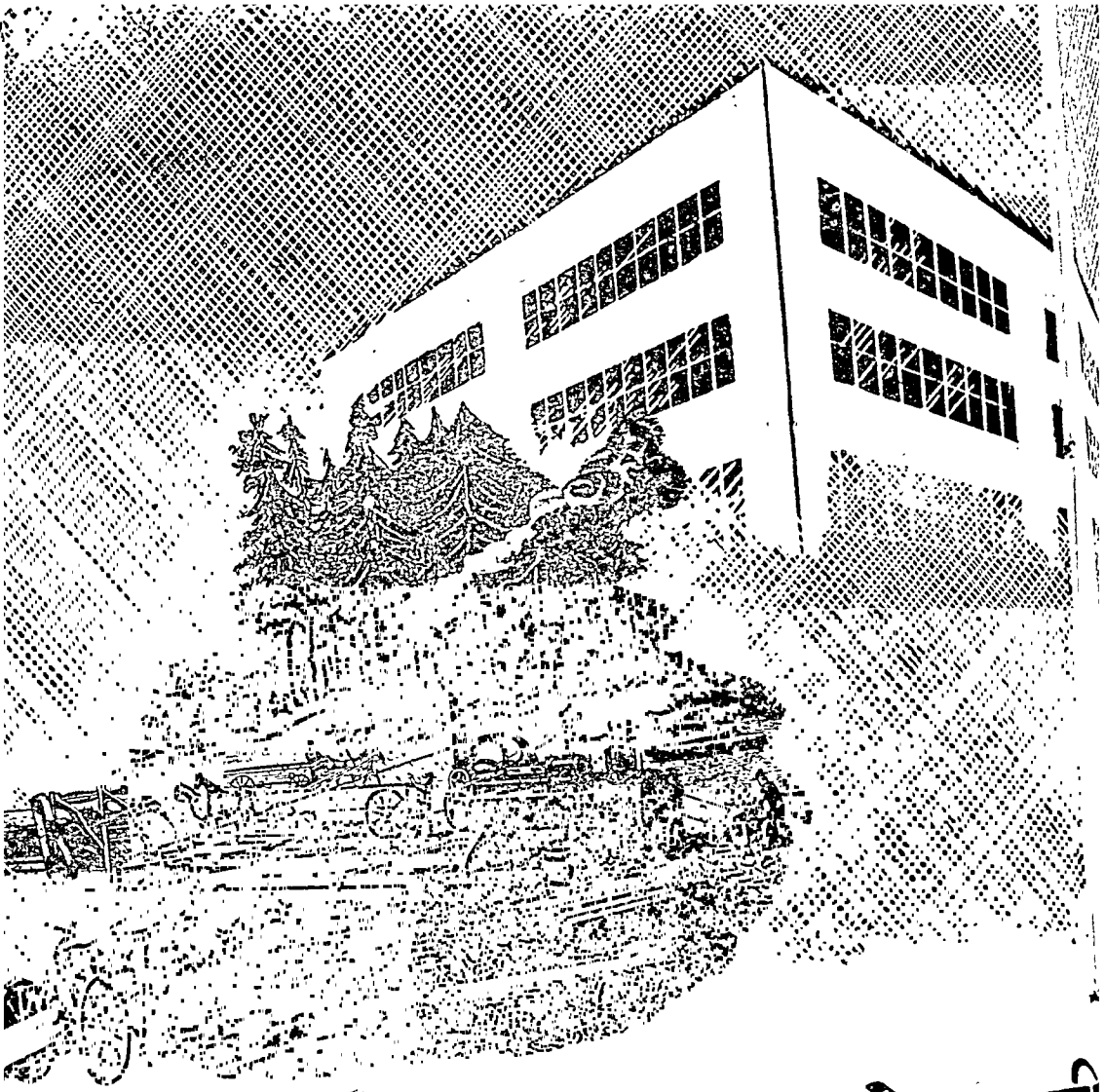
उद्योग की

फरूनों के जमाने से लेकर शताब्दियों बाद फ्रांस के लुई १४ वें और इंग्लैण्ड के जार्ज प्रथम के समय तक मानव में कोई आमूल परिवर्तन नहीं आया था और निर्माण तथा खेती के तौर-तरीकों में बहुत कम प्रगति हो पायी थी। इसमें संदेह नहीं कि बुनाई की मशीनों और हलों में सुधार हुए थे लेकिन उनका सुधार बहुत थोड़ा था। उन्हें अब भी हाथ से चलाना पड़ता था और मनुष्य या जानवर उनमें शक्ति प्रदान करने का काम करते थे।

अठारहवीं शताब्दी का तीन-चौथाई समय

नयी दुनिया
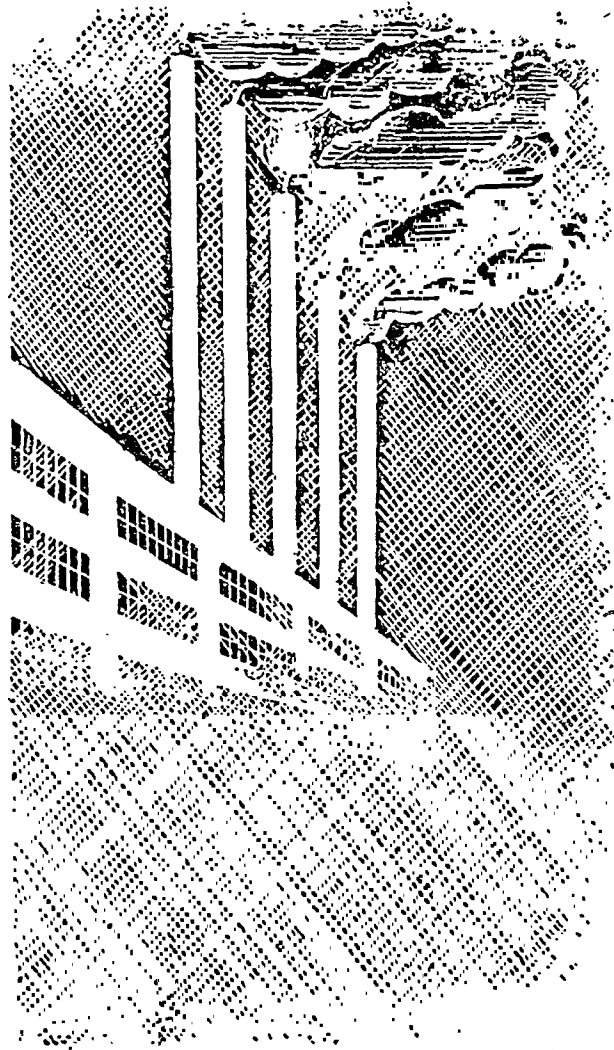
बीत जाने पर एक वास्तविक परिवर्तन, एक क्रांति इन तरीकों में आई। हम इस परिवर्तन को औद्योगिक क्रांति कहते हैं। औद्योगिक क्रान्ति क्या थी? यह हाथ के काम के बजाय मशीन से काम लेने का परिवर्तन था। यह घरेलू प्रणाली से, यानी घर में बैठकर चीजें बनाने से, फैक्ट्री प्रणाली का परिवर्तन भी था।

इस परिवर्तन के प्रथम दौर को हम औद्योगिक क्रांति कहते हैं, लेकिन एक रूप में आज भी यह क्रांति निर्बाध रूप से जारी है। इसने थोड़ी मात्रा के उत्पादन को इतने बड़े पैमाने के निर्माण में परिवर्तित कर दिया है कि आज हमारा उत्पादन बड़े पैमाने पर होता है। हमने मानवशक्ति के बजाय भाप से मशीनें चलाने से शुरुआत की। आज भाप ही नहीं अपितु बिजली भी मशीनें चलाने के लिए प्रयुक्त होती है। औद्योगिक क्रांति के आरम्भिक काल में ईंधन के लिए लकड़ी प्रयुक्त होती थी। आज तेल और कोयला सामान्य ईंधन हैं। वैज्ञानिक इस दिशा में काम कर रहे हैं कि हमारी मशीनें चलाने के लिए ईंधन के रूप में सूर्य की किरणों का प्रयोग किया जाय। परमाणु के विस्फोट से यह भी सम्भव हो चला है कि चीजों के निर्माण के लिए अणु-शक्ति का प्रयोग किया जाय। एक रूप में औद्योगिक क्रांति पूरी हो चुकी है लेकिन औद्योगिक क्रांति ने मानव समाज को जिस रास्ते पर बढ़ाया था उसी रास्ते पर भविष्य में और कई नयी मंजिलें बढ़ना है।

औद्योगिक क्रांति ग्रेट ब्रिटेन से आरम्भ हुई। वहाँ से वह अमेरिका लायी गयी जहाँ वह पनपी और उसने एक विशाल औद्योगिक साम्राज्य बनाया, ज्यों-ज्यों समय गुजरता गया, वह अन्य यूरोपीय देशों में, एशिया, लैटिन अमेरिका, कनाडा और आस्ट्रेलिया में फैली। घरेलू प्रणाली अब भी विश्व के कुछ हिस्सों में प्रयुक्त होती है जहाँ अभी मशीनों ने मानव के कठोर श्रम के बोझ को कम नहीं किया है। फिर भी प्रतिवर्ष फैक्ट्री प्रणाली विश्व के अन्य हिस्सों में फैलती जाती है।

1500 AD
2000 AD
1550 AD
1950 AD
1600 AD
1900 AD
1650 AD
1850 AD
1700 AD
1750 AD
1800 AD
The New World of Industry
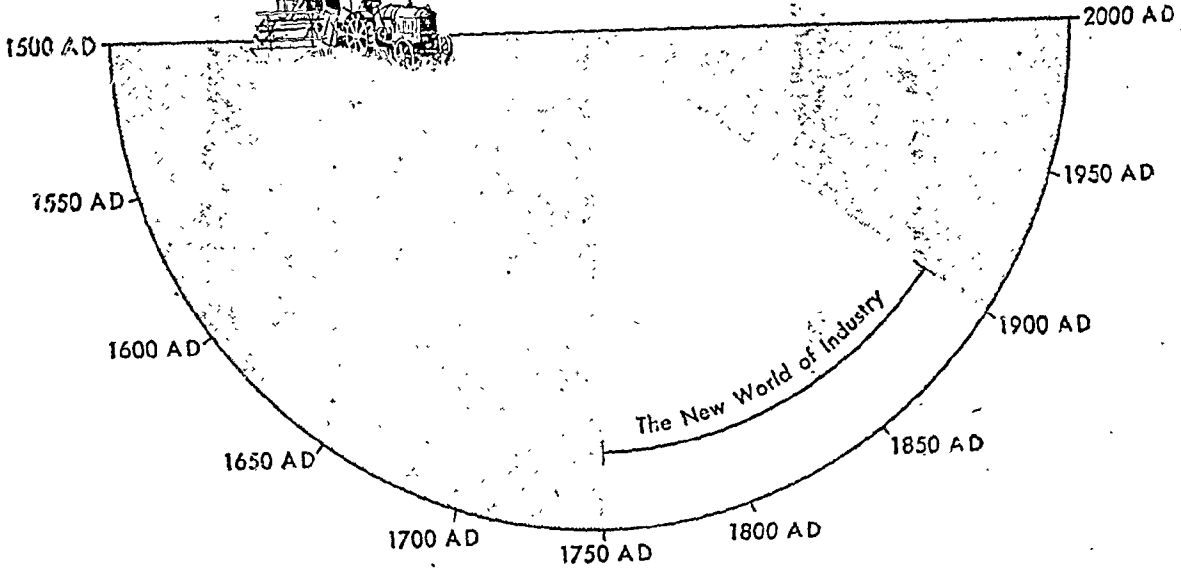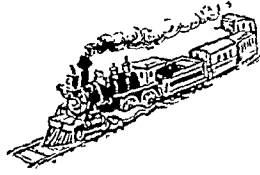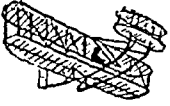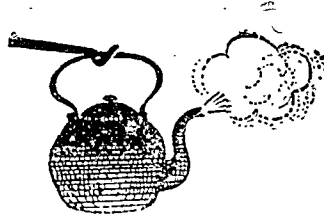
२९ मशीनों ने दुनिया को बदल डाला

औद्योगिक क्रांति फ्रांस के बजाय जोकि उस जमाने का दूसरा बड़ा राष्ट्र था, ग्रेट ब्रिटेन से क्यों शुरू हुई ? इसके कई कारण थे। पहला कारण यह था कि ब्रिटेन के पास बड़े-बड़े कल-कारखानों में *लगाने के लिए आवश्यक धन था। समुद्र में ब्रिटेन* की सर्वोच्चता ने वाणिज्य को प्रोत्साहित किया था और अंग्रेज लोग अपने व्यापार और उद्योग द्वारा दौलत इकट्ठी कर रहे थे। उस देश का नया धनी वर्ग कुलीन वर्ग का नहीं अपितु सौदागरों और व्यापारियों का था जो अपने आपको उद्योग और वैज्ञानिक कृषि के काम में लगाने को तत्पर थे। वे इस बात पर विश्वास नहीं करते थे कि किसी कारोबार में लगना उनकी शान के खिलाफ है। दूसरी ओर फ्रांस की दौलत मुख्य रूप से कुलीन वर्ग के पास थी और वे उद्योग को विकसित करने के लिए आवश्यक कार्य नहीं करना चाहते थे।

दूसरे, ग्रेट ब्रिटेन ने बहुत पहले से ही कम खर्चीली और अधिक व्यवहार में आने वाली वस्तुओं के निर्माण का काम हाथ में ले रखा था, जिसकी जनता में मांग हमेशा बढ़ती ही रहती है, विशेषकर नये मध्यम वर्ग में। ऊनी और सूती वस्त्र, लोहे और लकड़ी का सामान शताब्दियों तक इंग्लैण्ड की प्रमुख वस्तुएँ रहा है, जब कि फ्रांस शौक-मौज वाले वर्ग की चीजें बनाता रहा है। इन्हें कभी भी बड़े पैमाने पर नहीं बनाया जा सकता था क्योंकि इनमें व्यक्तिगत विशेषता की आवश्यकता रहती थी। इसके अलावा विलास-वस्तुओं की मांग हमेशा सीमित रहती है। इंग्लैंड उन चीजों का उत्पादक था जिनकी बड़ी मात्रा में जरूरत रहती है और अगर वह उन्हें और सस्ता बनाने का साधन पा जाय तो उसका बाजार बढ़ेगा। इसलिए वह उन तरीकों को अपनाने के लिए तैयार था जिनसे उनका बड़ी तायदाद में निर्माण संभव हो सके।

तीसरे, लम्बे अर्से तक इंग्लैंड के पास बहुत *बड़ी संख्या में अर्ध-कुशल कारीगर रहे।* जब इंग्लैंड में सामन्ती व्यवस्था भंग हुई और जमींदार भेड़ों को पालने का काम करने लगे, बहुत से अंग्रेज कस्बों में जा बसे। वहाँ वे कपड़ा बुनने, जूते बनाने लकड़ी पर नक्काशी करने और हस्तकौशल के अन्य कई पेशों में लग गये। जब औद्योगिक क्रांति शुरू हुई, ये लोग नयी मशीनों पर काम करने के लिए उपलब्ध हुए। इसके अलावा, ये स्वतन्त्र लोग थे और जैसे-जैसे मजदूरों की मांग होती, ये एक स्थान से दूसरे स्थान पर आ-जा सकते थे। फ्रांस में यह बात नहीं थी। फ्रांस अब भी मुख्यतः कृषिप्रधान था और किसान बहुत प्रकार से अपने मालिकों के साथ बँधे हुए थे। वे आसानी से शहरों में नहीं जा सकते थे।

चौथे, इंग्लैंड में कोयला इफरात से मिलता था और इस सस्ते ईंधन की बहुत बड़ी मात्रा कारखानों को चलाने के लिए आवश्यक थी। उत्तरी फ्रांस में भी कोयला था, लेकिन फ्रांस ऐसे साधनों को उपयोग में लाने में पिछड़ गया था क्योंकि हर कोई प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से अपनी आजीविका के लिए खेती पर निर्भर था।

सूती वस्त्र उद्योग में औद्योगिक क्रांति की शुरुआत हुई

फ्लाइंग (उड़ने वाला) शटल—१७ वीं सदी में इंग्लैण्ड में सूत का उपयोग व्यापक पैमाने पर

यूइंग गैलोवे
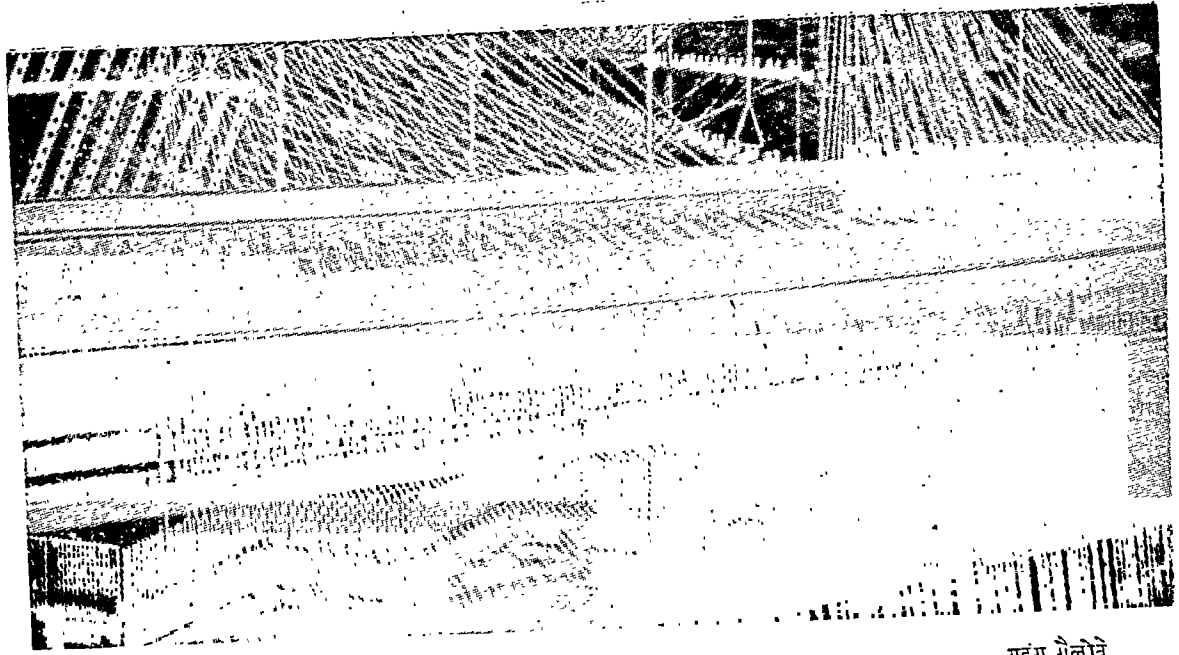
एक आधुनिक शक्तिचालित ऊन का ताना डालने की मशीन, जो सिद्धान्त में मिस्रियों के हाथ से बुनने के यंत्र से भिन्न नहीं है। इस चित्र की तुलना पृष्ठ ३६ के चित्र से करो।

होने लगा था बावजूद इसके लीनन और ऊनी वस्त्र निर्माताओं को संरक्षण देने के लिए उसके प्रयोग सम्बन्धी कानून पास कर दिये गये थे। यह नया सूती वस्त्र उद्योग ही था जहाँ पहले-पहल निर्माण उपकरणों में सुधार के कदम उठाये गये। १७३३ में जान के ने कपड़ा बुनने की क्रिया में तेजी लाने के लिए फ्लाइंग शटल (उड़ने वाली ढरकी) का आविष्कार किया। ढरकी करघे का वह हिस्सा होती थी, जो चौड़ाई में पड़ने वाले तागों को जिसे बाना कहा जाता है, तागे की लम्बाई वाले हिस्से के जिसे ताना कहते हैं, बीच से गुजरता था। पर इस शटल का प्रयोग व्यापक रूप से होने में और ३५ वर्ष लग गये।

तागा बनाने वाली मशीनें—लगभग १७६७ में जेम्स हरग्रीव्स ने एक ऐसे चरखे का आविष्कार किया जिसमें आठ सूत एक साथ काते जा सकते थे। मजदूरों ने इस भय से कि इससे बेरोजगारी फैलेगी, पहले-पहल नयी मशीन का बहिष्कार किया। अन्त में उसे अपना लिया गया, और कत्तिनों ने उसे अपने घरों में लगा लिया। हरग्रीव्स ने अपनी कताई मशीन का नाम अपनी पत्नी के सम्मान में "जेनी" रखा था। दो वर्ष बाद रिचर्ड आर्कराइट ने एक ऐसी मशीन ईजाद की जिसे वह "जल यंत्र" कहता था क्योंकि इसमें ऊर्जा के लिए जल-शक्ति का प्रयोग होता था। चूँकि "जलयंत्र" घरों में प्रयोग के लिए बहुत बड़े थे, इसलिए उन्हें रखने के लिए कारखाने बनाने पड़े। आर्कराइट और उसके साझीदार ने बड़ी-बड़ी मिलें कायम कीं और कारखाना-प्रणाली को चालू किया। बाद में सेमुअल क्रौम्पटन ने हरग्रीव्स की "जेनी" और आर्कराइट के "जलयंत्र" की बेहतरीन बातों को मिला कर कताई की "म्यूल" मशीन बनाई।

शक्तिचालित करघा—कारखानों में लगी नयी मशीनों से बड़े पैमाने पर सूत तैयार होने लगा था, लेकिन बुनाई में हुए सुधार सूत कातने में हुई तरक्की के समकक्ष नहीं हो पाये थे। एडमंड कार्टराइट ने एक ऐसी बुनाई की मशीन बनाना आरंभ किया जो कताई मशीनों द्वारा किये जाने वाले

उत्पादन की बराबरी कर सके। १७८५ में उसने अपनी नयी खड्डी मशीन तैयार कर ली। बुनकरों ने पहले इसके प्रयोग से इन्कार किया क्योंकि उन्हें भय था कि ऐसा करने से बेरोजगारी फैलेगी, क्योंकि शक्तिचालित करघा कई आदमियों का काम कर लेता था। लगभग ४० वर्ष बाद कार्टराइट का करघा आम तौर पर कारखानों में प्रयुक्त किया जाने लगा।

कपास ओटने की मशीन—सूती वस्त्र उद्योग में प्रयुक्त होने वाली अगली महत्त्वपूर्ण मशीन एक अमेरिकी स्कूल टीचर एली ह्विटने ने १७६३ में बनाई। उसने रूई से बिनौला अलग करने के लिए "जिन" नामक मशीन का आविष्कार किया। चूँकि इससे दक्षिणी संयुक्त राज्य में कपास की खेती अधिक लाभदायक बन गयी थी, इसलिए कपास की खेती वहाँ की प्रधान फसल बन गयी। बहुत बड़ी मात्रा में रूई नयी मशीनों में खपन के लिए जहाजों से इंग्लैंड भेजी जाती थी। १७६१ में, ब्रिटेन से आये हुए प्रवासी सेमुअल स्लाटर ने, संयुक्त राज्य में सर्वप्रथम सूती वस्त्र का कारखाना स्थापित कर लिया। ब्रिटेन के कानूनों ने उसकी योजनाओं को देश के बाहर ले जाने पर प्रतिबन्ध लगा दिया था इसलिए स्लाटर ने इंग्लैंड में एक फैक्ट्री के मानचित्र को अपनी स्मृति में उतार लिया और रोड द्वीप में, जहाँ वह बसने के लिए आया था, उसी तरह का कारखाना बनवाया।

बहुत से रूपों में छोटी से छोटी सीनेवाली सुई से लेकर ऊँचे, गगनचुम्बी भवनों तक में इस्पात मानवजाति की सेवा करता है।
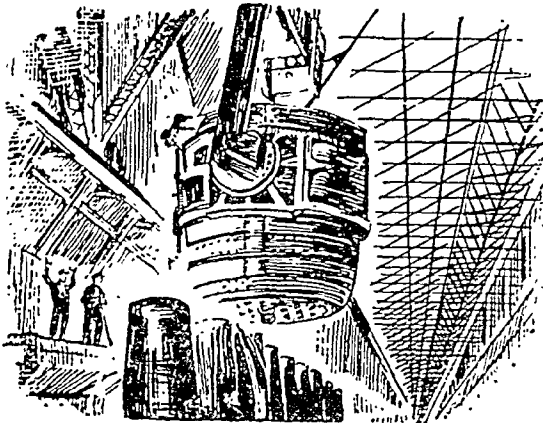
सूत की रंगाई, धुलाई और छपाई के नये तरीके बाद में अपनाये गये और इस प्रकार सूती वस्त्रों का निर्माण ग्रेट ब्रिटेन का एक सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण पेशा बन गया।

वाष्प शक्ति—नयी मशीनें चलाने के लिए शक्ति की आवश्यकता थी। टामस न्यूकोमन नामक एक अंग्रेज ने कुछ वर्ष पहले खानों से पानी बाहर निकालने के लिए प्रथम वाष्प इंजन का सफल आविष्कार किया था। जेम्स वाट ने न्यूकोमन के इंजन के दोषों को देखते हुए जिसमें कि बहुत ज्यादा ईंधन लगता था, लगभग १७६६ में उसे सुधारा और उसे कम खर्चीला तथा अधिक उपादेय बनाया। वाष्प इंजन तब सूती वस्त्र निर्माण के नये आविष्कारों को शक्ति प्रदान करने लगा।

कोयला और इस्पात उद्योग के मूलाधार बने

कोयला—औद्योगिक क्रांति के पूर्व तक ग्रेट ब्रिटेन में ईंधन के रूप में लकड़ी इस्तेमाल की जाती थी। नयी मशीनों के प्रयोग से लकड़ी की खपत इतनी अधिक बढ़ गयी कि द्वीप की लकड़ी की मात्रा तेजी से चुकती जा रही थी। १८ वीं और १६ वीं शताब्दियों में कोयले की खानों का काम तेजी से महत्त्वपूर्ण होता जा रहा था और कोयले को खान से निकालना ब्रिटेन में एक प्रमुख उद्योग बना।

इस्पात—नयी मशीनों को बनाने के लिए अधिकाधिक लोहे की जरूरत थी। लोहे को गला कर शुद्ध करने की मशीनें और भट्टे ग्रेट ब्रिटेन में खड़े किये गये थे। १८५६ में हेनरी बेस्सीमेर ने लोहे को शोधने और उसे अधिक सख्त बनाने की एक प्रणाली ईजाद की। इस उच्च कोटि के शुद्ध किए हुए लोहे से, जो इस्पात कहलाता था, अधिक सही औजारों का बनना संभव हुआ। १६ वीं शताब्दि के अन्त में और बीसवीं शताब्दि के आरम्भ में मैंगनीज और टंगस्टन जैसी धातुएँ भी इस्पात को अधिक सख्त बनाने के लिए उसमें मिलाई जाने लगी थीं। इस परिष्कृत इस्पात और उससे निर्मित माल की सख्ती के कारण ही आधुनिक सूक्ष्म औजारों का बनना सम्भव हो पाया है।

(१) औद्योगिक क्रांति इंग्लैंड में क्यों हुई, इसके प्रमुख कारण बताओ।

(२) औद्योगिक क्रांति के प्रारम्भिक काल में सूत की कताई में क्या-क्या सुधार हुए? प्रत्येक का आविष्कारक कौन था?

(३) बुनाई के तौर-तरीकों में क्या तरक्की हुई और उसे करने वाला कौन था?

(४) टामस न्यूकोमन और जेम्स वाट का औद्योगिक क्रांति में क्या योग रहा?

(५) एली ह्विटने कौन था? उसका आविष्कार क्यों महत्त्वपूर्ण था?

(६) औद्योगिक क्रांति के आरम्भ में ईंधन के रूप में क्या प्रयुक्त होता था?

(७) हेनरी बेस्सीमेर का आविष्कार औद्योगिक क्रांति के लिए इतने महत्त्व का क्यों बना?

औद्योगिक क्राँति से संवहन और संचार में वृद्धि

सड़कें—बड़े पैमाने पर उत्पादन से कोयला, कच्चा लोहा और अन्य उत्पादित वस्तुओं को उनके उत्पादन स्थल से उस स्थान तक पहुँचाना जरूरी हो गया जहाँ कि माल निर्मित हो रहा है। निर्मित वस्तुएँ भी उसी तरह दूरस्थ स्थानों को ले जानी आवश्यक थीं जहाँ उनकी खपत हो। इनके लिए यातायात के अच्छे साधनों का होना आवश्यक था। फ्रांस ने १८ वीं शताब्दि के पिछले वर्षों में सड़कों और नहरों का निर्माण कर अगुवाई की थी। ग्रेट ब्रिटेन और संयुक्त राज्य में प्रमुख नदियों और झीलों को मिलाती हुई नहरें खोदी गयीं। तब एक स्काटलैण्डवासी मकाडम ने (१७५६-१८३६) सड़क-निर्माण का एक नया तरीका निकाला। उसने सड़कों के निचले भाग में पत्थरों की परतें रखीं, भारी सबसे नीचे, और उसके बाद प्रत्येक परत पर छोटे-छोटे पत्थर। पत्थरों के ऊपर उसने अलकतरे या तार कोल की एक परत जमायी। यह सख्त सतह वाली "मकाडम सड़कें" बहुत अधिक टिकाऊ सिद्ध हुईं और इनकी प्रसिद्धि सिर्फ इंग्लैण्ड में ही नहीं अपितु कनाडा और संयुक्त राज्य में भी हुई, जहाँ इन्हें प्रचलित किया गया। नयी सड़कों पर पहियों वाली बग्घियाँ १४ मील फी घंटा की रफ्तार से दौड़ती थीं।

लवंग की पत्तियों की भाँति एक दूसरे को काटने वाली सड़कों ने भीड़भाड़ वाले क्षेत्रों की कुछ पेचीदा यातायात समस्याओं को हल कर दिया है।

स्टैंडर्ड आयल कम्पनी

स्टीम नौकाएँ—पानी में भी अधिक तेजी से यातायात की जरूरत थी। प्रथम व्यापारिक स्टीम बोट "क्लेरमोंट" का सफल परीक्षण, संयुक्तराज्य में, हडसन नदी में किया गया था। इसका आविष्कारक एक अमेरिकी, राबर्ट फुल्टन था। उसने न्यूयार्क से लेकर एल्बानी तक १५० मील की यात्रा, लगभग ५ मील प्रति घंटा की रफ्तार से, ३२ घंटे में की।

गोकि फुल्टन की स्टीम बोट छोटी थी, लेकिन यह शुरुआत थी और उससे ही बाद में समुद्र में चलने वाले जहाज विकसित हुए। प्रथम समुद्र पार जाने वाली स्टीम बोट "सिरिअस" ने १८३८ में अतलांतक अठारह दिनों में पार किया था। १८५० से आरंभ दशक में पैडल ह्वील के स्थान पर स्क्रू प्रोपेलर लगाया गया और नावें बड़ी तथा अधिक तेज भागने वाली बनने लगीं।

रेल मार्ग—अच्छी सड़कों, नहरों और स्टीम बोटों से यातायात में मदद मिली, लेकिन इतना

ही काफी नहीं था। प्रारंभ में स्वचालित इंजन का सफल आविष्कार ग्रेट ब्रिटेन निवासी जार्ज स्टीफेन्सन ने किया। उनका "राकेट" १८२९ में बना और अपनी पहली यात्रा में १४ मील प्रति घंटा की रफ्तार से ३१ मील तक दौड़ा। बहुत से लोगों ने इस बेहद शोर मचाने वाले और भयावह दानव पर आपत्ति उठाई। उन्हें डर था कि घोड़े खत्म हो जायंगे और किसान अपनी घास और जई नहीं बेच सकेंगे, अपने धुएँ से यह वायु को दूषित करेगा, जब यह गुजरेगा तो गायों और मुर्गियों को भयभीत करेगा और रेलपथ के करीब के घरों में आग लगा देगा। आपत्तिकर्त्ताओं के बावजूद रेलमार्गों की संख्या बढ़ती चली गयी। शीघ्र ही बेल्जियम, इटली, फ्रांस, जर्मनी और संयुक्त राज्य में तथा ग्रेट ब्रिटेन में लोहे की पटरियाँ बिछा दी गयीं। उदाहरण के लिए, १८३० और १८७० के बीच संयुक्त राज्य में, उसके समस्त उत्तर-पूर्वी भाग में रेल मार्गों का जाल बिछा दिया गया था और इस्पाती पटरियाँ पूर्व से पश्चिम तक समूचे महाद्वीप में फैली हुई थीं। और समुद्रों से सम्बद्ध थीं। रूस में ४००० मील लम्बा रेलपथ, ट्रान्स साइबेरियाई रेलमार्ग, मास्को को प्रशान्त सागर तट पर बसे हुए व्लाडीवोस्तोक से मिलाता है। ब्रिटेन द्वारा अफ्रीका में बनाई गई छोटी-छोटी रेलवे लाइनें, अगर साथ मिला दी जायं, तो वे मिस्र स्थित काहिरा को दक्षिण अफ्रीका स्थित जोहान्सवर्ग से मिला देंगी। जर्मनी ने बर्लिन और बगदाद को तुर्की होते हुए रेल मार्ग से सम्बद्ध करने की योजना बनाई थी और आंशिक रूप से उसे पूरा भी किया था।

रेलमार्ग सिर्फ माल ढोने के लिए ही नहीं अपितु यात्रा के एक सर्वसुलभ और लोकप्रिय साधन के रूप में भी बनाये गये थे। यात्री-ट्रेनों में कई सुधार किये गये। हवा-ब्रेकों द्वारा उन्हें अधिक सुरक्षित, बड़े और सुधरे हुए इंजनों द्वारा तेज चलने वाला, डाइनिंग कारों, स्लीपिंग कारों और मुलायम कोचों द्वारा अधिक आरामदेह बनाया गया।

१८८० से आरंभ दशक के मध्य में गैसोलीन (पेट्रोल) इंजन का आविष्कार किया गया। चालक शक्ति के रूप में इसका उपयोग मोटर लाँच, बाईसिकल और मोटर बग्घी में किया जाता था। संयुक्तराज्य में, बीसवीं शताब्दि के प्रारम्भिक वर्ष में कई कम्पनियाँ मोटर बनाने के लिए खुल गयी

ब्रिटेन में बाहर भेजा जाने वाला कोयला मार्शलिंग यार्डों में इकट्ठा होता है जहां से मालगाड़ियां भर कर देश के विभिन्न भागों को भेजी जाती हैं। सभी प्रकार का माल इस यार्ड में छंटकर अलग होता है और अपने गन्तव्य स्थान को जाता है।

ब्रिटिश इन्फार्मेशन सर्विस

थीं। हेनरी फोर्ड ने मोटरों को सस्ते दामों में बना कर उनको लोकप्रिय बनाया ताकि औसत दर्जे का अमेरिकावासी उन्हें खरीद सके। उसने बड़े पैमाने पर निर्माण करके यह सब किया। कार का हर हिस्सा मानकित था और बड़ी तायदाद में बनाया जाता था। कारखानों में धीरे-धीरे काम करने वाली असेम्बली लाइनें कायम की गईं। आंशिक रूप से बनी हुई कारें जब मजदूरों के सामने से गुजरती थीं तब उनमें से प्रत्येक उसमें एक हिस्सा जोड़ता था। अन्त में लाइन के छोर पर पहुँचने पर बना हुआ माल उतार लिया जाता था। मानकीकरण की इस प्रणाली से पुर्जे हजारों की संख्या में तैयार होते थे। बड़े पैमाने पर उत्पादन की प्रणाली अन्य उद्योगों में भी लागू की गयी। फ्रांस, जर्मनी और ग्रेट ब्रिटेन में भी मोटर निर्माण के कारखाने स्थापित हुए, गोकि यदि दुनिया के शेष भागों को एक साथ मिला दिया जाय तो भी संयुक्त राज्य में उनसे ज्यादा मोटरें बनती हैं।

१८३९ में चार्ल्स गुडइयर ने यह खोज निकाला कि रबर का किस तरह वल्कनीकरण किया जाय कि वह सख्त हो जाय। इस खोज ने मोटर-उद्योग की सफलता में बहुत ज्यादा सहायता पहुँचाई। रबर के टायरों से कार आरामदेह और इसलिए खूब प्रसिद्ध हुई। रबर बहुत से अन्य रूपों में भी उद्योग में काम में आता है।

विमान—प्राचीन ग्रीकों के जमाने से ही मानव हवा में उड़ने के स्वप्न देखा करता था। ग्रीकों के देवकथा-शास्त्र के अनुसार आइकारस नामक एक युवक ने दो डैने बनाये थे और मोम से उन्हें अपने शरीर से चिपका लिया था। दुर्भाग्य से वह सूर्य के बहुत करीब जा उड़ा और सूर्य की गर्मी से मोम पिघल गया। डैने निकल कर दूर जा गिरे और आइकारस समुद्र में गिरकर डूब गया। लिओ-कार्डो डा विन्सी ने उड़ने का रहस्य सीखने की बहुत चेष्टा की थी, लेकिन वह सफल नहीं हुआ गोकि उसके निर्माण के बहुत से सिद्धान्त सही थे। १८ वीं शताब्दि के अन्त में कुछ फ्रांसीसी गैस-भरे बैलूनों में आसमान में ऊँचे उड़े थे। १८९० के दशक से जर्मन काउन्ट वोन जिपलिन ने हाइड्रोजन से भरे हुए बड़े वायुयानों के डिजाइन बनाने आरंभ किये और ऐसा प्रतीत होता था कि हवा से हलके

बहुत से बड़े अमेरिकी शहरों में टेलीफोन एक्सचेंज होने से खरीदारों के लिए यह संभव हो गया है कि वे दूसरे देशों के शहरों से सीधे बातचीत कर सकें। ये औपरेटर औरतें पेरिस, लंदन, लिस्बन और कोलम्बिया स्थित बोगोटा के लिए टेलीफोन मिला रही हैं। एक समुद्र-पारीय रेडियो-टेलीफोन ट्रान्समीटर आवाज को समुद्र पार भेजता है।

अमरीकन टेलीफोन एंड टेलीग्राफ कम्पनी
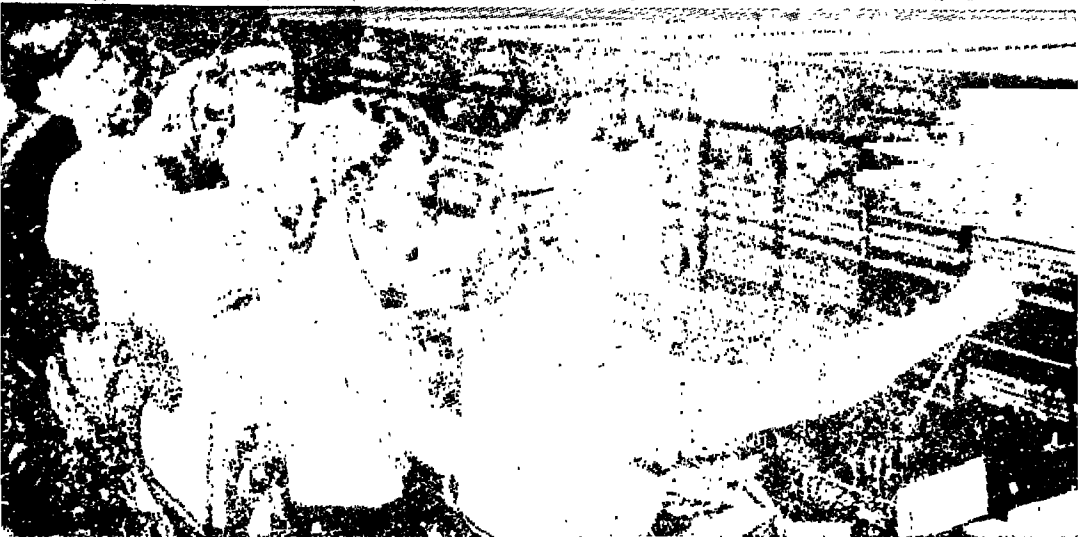
वायुपोतों का भविष्य उज्ज्वल है। दूसरों ने हवा से भारी पोतों को गैसों के बजाय, मोटरों और पंखों के जरिये उठाने के परीक्षण किये।

१९०३ तक कोई प्रगति नहीं हुई जबकि विलबर और ओरविले राइट नामक दो अमेरिकनों ने प्रथम उड़ने वाली मशीन बनाने में सफलता प्राप्त की। ठीक जिस प्रकार मोटर उद्योग तेजी से बढ़ा, उसी तरह विमान निर्माण उद्योग भी बढ़ा। यूरोपीय राष्ट्र पहले-पहल विमानों के प्रयोग में संयुक्त राज्य से आगे थे, बावजूद इसके कि यह आविष्कार अमेरिकनों का था। १९२० से आरंभ दशकों से यात्रा और व्यापारिक कार्यों के लिए नियमित उड़ान मार्ग स्थापित हो चुके थे। विमानों की सैनिक महत्ता के कारण तमाम दुनिया विमानों के लिए लालायित रहने लगी और व्यापार तथा सैर के लिए भी विमानों का भविष्य सुरक्षित था।

संचार—१८६६ में साइरस फील्ड प्रथम अतलांतक समुद्री तार बिछाने में सफल हुआ। दस वर्षों बाद अलेक्जेण्डर ग्राहम बेल ने, जो एक स्काटलैण्ड में पैदा हुआ अमेरिकी था, प्रथम टेलीफोन का प्रदर्शन किया।

१८९६ में गुग्लियेल्मो मारकोनी नामक एक इटालियन ने बेतार के तार से तार भेजने की एक मशीन बनाई। विश्व के नौगमन के लिए, बीसवीं शताब्दि के प्रारंभ में, रेडियो मुफीद चीज थी, लेकिन १९२० से आरंभ दशक से पहले कोई व्यापारिक ब्राडकास्टिंग स्टेशन नहीं थे। तब वे लगभग हर देश में स्थापित हो गये। कारों की तरह रेडियो भी अमेरिका में बड़ा प्रसिद्ध हुआ, जहाँ करोड़ों लोगों ने रेडियो रिसीविंग सेट खरीदे। यूरोप के बहुत से लोगों के पास भी रेडियो सेट हो गये। कुछ वर्षों बाद टेलीविजन शुरू हुआ।

औद्योगिक क्रांति के सबसे आश्चर्यजनक परिणाम ये हुए कि रेलपथों, टेलीफोन, भाप से चलने वाले जहाज, टेलीग्राफी, वायुयानों रेडियो और टेलीविजन के प्रयोग से दुनिया सिकुड़ गयी। अब कोई भी स्थान दूसरे स्थान से अलग-थलग नहीं रहा। इसका अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों पर प्रभावशाली असर पड़ना अनिवार्य था।

(१) औद्योगिक क्रांति ने सड़क और नहर निर्माण को क्यों आवश्यक बनाया?
(२) निम्नलिखित व्यक्तियों में से प्रत्येक का यातायात के क्षेत्र में क्या योगदान रहा: जार्ज स्टीफेन्सन, राबर्ट फुल्टन, हेनरी फोर्ड, चार्ल्स गुडइयर, विल्बर और ओरविले राइट।
(३) संयुक्तराज्य में रेलमार्गों के विकास के बारे में बताओ।
(४) असेम्बली लाइन क्या है?
(५) संचार के क्षेत्र में निम्नलिखित में से प्रत्येक व्यक्ति का क्या योगदान रहा: साइरस फील्ड, अलेक्जेण्डर ग्राहम बेल, गुग्लियेल्मो मारकोनी?

यह उत्पादित माल को भेजने से पहले कुशलता के साथ परख कर रखने की असेम्बली लाइन टेकनीक है। घूमने वाली बेल्ट में इन मुर्गी के बच्चों की जांच स्वच्छ परिस्थितियों में की जा रही है।

जनरल फूड्स
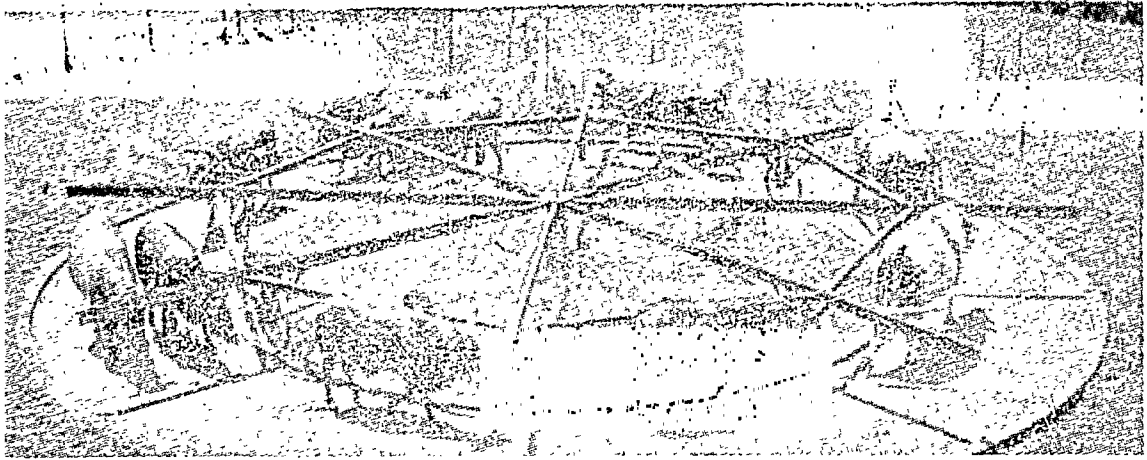
मॅकमेयर

सरकारी अन्वेषक इन शुद्ध रक्त के सांडों को दो घंटे तक एक चक्र पर व्यायाम कराते हैं। नीचे की तरफ भारत से लाया गया एक सांड है जो अमरीकी मवेशियों के साथ संकर के लिए लाया गया।

औद्योगिक क्रांति ने व्यापार के तौर-तरीके बदल डाले

औद्योगिक क्रांति से पहले निर्माण कार्य घर में हाथ से होता था। औद्योगिक क्रांति के प्रारंभिक काल में छोटे कारखाने स्थापित किये गये थे। तब फिर और परिवर्तन आया। व्यापारियों ने देखा कि उनकी दौलत को एक जगह इकट्ठा करने और छोटे कारखानों की जगह बड़ी फैक्ट्रियों में मशीनों को लगाने में फायदा है। कुछ लोग छोटे पैमाने पर काम पसंद करते थे पर अधिक लोग बड़े कारोबार के जिसमें हजारों कर्मचारी काम करते हों, आंशिक मालिक बनने के इच्छुक थे। ये बड़ी फैक्ट्रियां कार्य कुशल सिद्ध हुईं और माल और सस्ता तैयार होने लगा।

ऐसी फैक्ट्रियाँ ऐसे लोगों को भी नौकर रख सकती थीं जो हर समय खर्च घटाने, प्रति व्यक्ति से अधिक काम लेने और अपने माल के लिए और बाजार खोजने के तौर-तरीकों का अध्ययन कर सकें। अपनी निपुणता के कारण बड़े कारोबार अक्सर छोटे कारोबार वालों से सस्ता बेचकर उनका कारोबार उनसे ले सकते थे। इसलिए औद्योगिक क्षेत्रों में अधिकाधिक, लोगों का रुझान बड़े कारोबारों की ओर था, लेकिन कई देशों में छोटे रोजगार भी समृद्ध होते चले गये।

विशेषज्ञता का विकास—घरेलू प्रणाली के अन्तर्गत वस्तुएं, शुरू से अन्त तक एक ही व्यक्ति द्वारा बनाई जाती थीं। कारखाना प्रणाली ने इसे बदल डाला। प्रत्येक व्यक्ति को छोटा-छोटा काम करने को दिया जाता था और अक्सर एक व्यक्ति अन्य लोगों के कामों के बारे में बहुत कम जानकारी रखता था, जो कि किसी चीज को अन्तिम रूप देने के क्रम में करने होते थे।

स्वयं काम करने वाला आदमी ही एकमात्र विशेषज्ञ नहीं था। कारखानों में विशेषज्ञ भी होते थे। एक कार में कई सौ पुर्जे होते हैं। अक्सर एक बड़ा कारखाना एक ही हिस्सा बनाता है। कुछ कारखाने स्क्रू (पेंच) बनाते हैं, कुछ बैटरियाँ बनाते हैं, कुछ ढाँचे, कुछ टायर और कुछ इंजन। तब ये सभी हिस्से एक स्थान पर इकट्ठे करके दूसरे कारखाने में जोड़े जाते हैं। इस प्रकार पुर्जे या हिस्से दर्जनों की संख्या में नहीं अपितु लाखों की तादाद में तैयार होते हैं।

औद्योगिक क्रांति का प्रसार—गोकि क्रांति ग्रेट ब्रिटेन में आरंभ हुई थी, पर वह वहीं तक सीमित नहीं रही। आविष्कारों की प्रतिभा एक ही देश का एकाधिकार नहीं है। अन्य राष्ट्रों का भी उसमें योगदान रहता है। तब, औद्योगिक तरीकों का
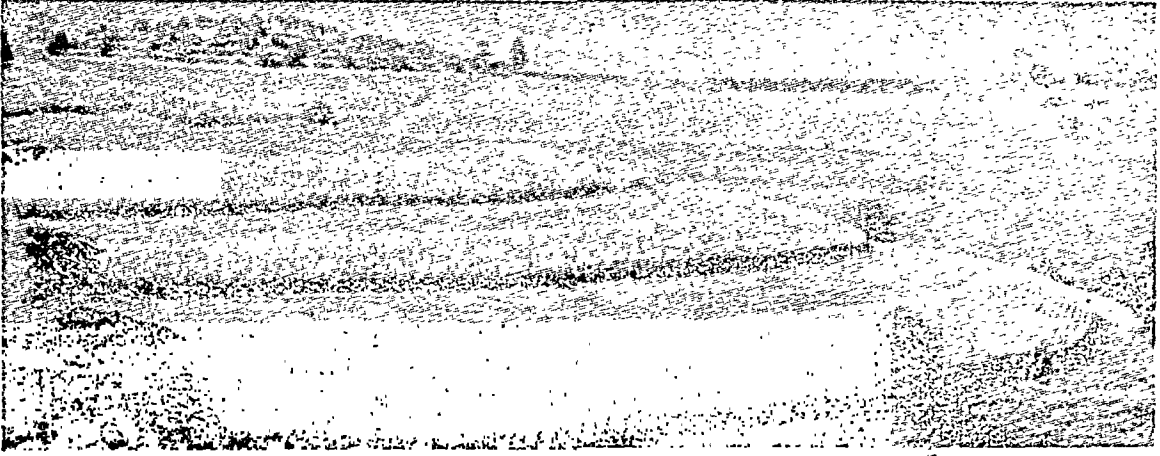
मोंकमेयर

आधुनिक खेती के तरीकों में ऊपर-नीचे जोतने के बजाय पहाड़ी के चारों ओर जोत देना भी शामिल है ताकि जमीन का कटाव न हो। जब पहाड़ी पर ऊपर-नीचे हल चलता है, तब हल नाली बना देता है जिससे होकर बरसाती पानी दौड़ता है और मिट्टी बहा देता है।

परिज्ञान भी दुनिया के अन्य हिस्सों में फैला। जापान, रूस, मंचूरिया, भारत, दक्षिण अफ्रीका और पूर्वी यूरोप के उद्योगपतियों ने नये तरीकों को सीखा और कार्य रूप दिया। बीसवीं शताब्दि में फैक्ट्रियाँ कच्चे माल के स्रोतों के पास स्थापित हुईं, भले ही वे दुनिया के किसी भी हिस्से में पाये जायं। दूसरी फ़ैक्ट्रियाँ उपभोक्ता क्षेत्र में बनी। संयुक्तराज्य के हेनरी फोर्ड ने मोटर निर्माण के कारखाने ग्रेट ब्रिटेन, फ्रांस, जर्मनी, कनाडा और अन्य देशों में खोले। और इस तरह औद्योगिक क्रांति तब तक फैलती चली गयी जब तक कि दुनिया के लोगों ने इस महान् क्रांति के बारे में जाना नहीं और अपने दैनिक जीवन में उसके मधुर परिणामों का अहसास नहीं किया। यह संभवतः दुनिया की जानकारी में महत्तम क्रांति थी।

(१) बड़े कारोबारों से छोटे कारोबारों के मुकाबले क्या लाभ थे ?
(२) इन लाभों ने व्यापार की रुझान और आकार को किस प्रकार बदल डाला ?
(३) औद्योगिक क्रांति की प्रगति के साथ-साथ इसने निम्नलिखित में से प्रत्येक को किस तरह बदला : एक मनुष्य का कार्य, एक कारखाने का कार्य और कारखानों की जगह ?

औद्योगिक क्रांति से कृषि-प्रणाली में परिवर्तन

१८ वीं शताब्दि से आरंभ होकर, एक कृषि क्रांति भी औद्योगिक क्रांति के साथ-साथ हुई। कुछ कारणों ने एक को बढ़ाया तो दूसरी को भी प्रगति करने में सहायता दी। बहुत से वैज्ञानिक और आविष्कर्त्ता, जो उद्योगों में परिवर्तन लाये, कृषि की समस्याओं को सुलझाने में भी सक्रिय थे। ज्यों-ज्यों एक क्षेत्र में प्रगति हुई, दूसरे क्षेत्र में भी उसके प्रभाव दृष्टिगोचर हुए।

औद्योगिक क्रांति की ही भाँति कृषि क्रांति भी इंग्लैंड से आरंभ हुई। अंग्रेजों की "मर्केण्टाइल नीति" (वाणिज्य नीति) में आत्मनिर्भरता पर विशेष बल दिया गया था। इंग्लैंड अपने को भोजन और वस्त्र के मामले में आत्मभरित बनाने के लिए प्रयत्नशील था। विदेशी कच्चे माल को बाहर रखने के लिए तटकर रूपी दीवारें खड़ी की गयी थीं। तेजी से जनसंख्या में वृद्धि के कारण यह अनिवार्य हो गया कि या तो इंग्लैंड

अपनी कृषि की उपज बढ़ाये या अपनी नीति में परिवर्तन करे। १८ वीं शताब्दि के कई युद्धों ने, जिनमें आदमियों और सामग्री दोनों की ही मांग बढ़ी, कारखानों और खेतों (फर्मों) की माँग को और भी अधिक बढ़ा दिया। ज्यों-ज्यों कारखाना प्रणाली का प्रसार हुआ, शहरों की संख्या बढ़ी और अधिकाधिक लोग कम आत्मनिर्भर रहने लगे। जो लोग फार्मों में रहते थे, उन्हें शहर के रहने वालों के लिए भी अधिक गल्ला और कपड़ा बनाने की वस्तुओं का अधिक उत्पादन करना पड़ता था। इसके अलावा कारखानों की निर्माण की क्षमता बढ़ जाने के कारण, वे भी अधिकाधिक कच्चे माल की मांग कर रहे थे।

कृषि-उत्पादन को बढ़ाने के लिए किसानों के लिए यह आवश्यक था कि वे अधिक वैज्ञानिक तरीकों को अपनायें और अधिक अच्छे औजार विकसित करें। शताब्दियों तक लोगों ने खाने के लिए खेत बोये थे लेकिन अब लोग नफा कमाने के लिए फार्मों में पूँजी लगा रहे थे। नफा तभी संभव था जबकि प्रति एकड़ मजदूरी घट जाय और प्रति एकड़ उपज ज्यादा हो। चूँकि सिर्फ धनी जमींदारों के पास ही परीक्षणों के लिए धन और अवकाश था, इसलिए प्रारंभिक उन्नति अधिकांशतः "समृद्ध किसानों" द्वारा ही की गयी।

सीड ड्रिल (बीज बोने का यन्त्र)—जेथ्रो टुल (१६७४-१७४०) नामक एक अंग्रेज जमींदार ने अच्छे और बुरे बीज की पहचान सीखी। उसने यह भी देखा कि पतली बोआई और समय-समय पर जुताई से पैदावार अधिक होती है। टुल ने सीड ड्रिल ईजाद किया जिससे बीज उन कतारों में बँट जायँ, जो एक दूसरे से दूर-दूर बोआई के लिए बनी हैं।

जेथ्रो टुल के एक दोस्त वाइकाउण्ट टाउनसैण्ड (१६७४-१७३८) ने फसलें एक विशेष क्रम से उगाने की एक निपुण और लोकप्रिय प्रणाली निकाली। गेहूँ, शलजम, जौ और क्लोवर की खेती क्रमशः आने वाले वर्षों में उसी जमीन के टुकड़े में करने से जमीन को सीजन भर बेजोत भी नहीं रखना पड़ता और जमीन की उर्वरता भी नष्ट नहीं होने पाती। इस प्रणाली से टाउनसैण्ड प्रति एकड़ पैदावार दुगनी करने में सफल रहा।

जानवरों की नस्ल और फसलों में सुधार—बाद में, १८ वीं शताब्दि में, दूसरे एक अंग्रेज, राबर्ट बेकवैल, ने मवेशियों और घोड़ों की नस्लों में सुधार और चुनी हुई भेड़ों की उत्पत्ति बढ़ाने का प्रयास किया। वह मवेशियों को दुधारू तथा गोश्त प्रदान करने वाला और भेड़ों को ऊन तथा माँस देने वाला बनाने में सफल रहा। बेकवैल के समय के बाद से वैज्ञानिकों ने स्वस्थ जानवरों की वृद्धि के और भी उपाय खोज निकाले हैं। वनस्पति विज्ञान शास्त्रियों ने भी पेड़-पौधों की नयी और अच्छी पौध उत्पन्न करने में सफलता प्राप्त की है। एक अमेरिकी वनस्पति वैज्ञानिक, लूथर बरबंक (१८४९-१९२४) गोकि उसे कोई स्कूली तालीम नहीं मिली थी, कैलीफोनिया के अपने फार्म में पौधों की नयी किस्में पैदा करने में सफल रहा। पौधों में कलम लगाने से, इच्छित और नयी किस्में बनाई गई। बरबंक के आलू इस प्रकार की सौ से अधिक उपलब्धियों में एक थे।

जमीन की उर्वरता में सुधार—१८४० तक किसान अपने खेतों में खाद देने में कोई तर्कसंगत तरीका इस्तेमाल नहीं करते थे। लेकिन उस वर्ष जर्मन रसायनज्ञ जस्टस वॉन लीबिग ने, एक पुस्तक प्रकाशित की, जिसमें उसने बताया कि पौधों की आधारभूत खुराक पोटाश, नाइट्रोजन और फास्फोरस है। इन द्रव्यों की मात्राएँ मिला देने से मिट्टी की उर्वरता वैसी ही बनी रह सकती है या बढ़ जाती है। व्यापारिक खादें अब बड़े पैमाने पर प्रयुक्त होती हैं।

ज्यों-ज्यों जनसंख्या बढ़ती गयी विश्व के विभिन्न राष्ट्रों ने अधिक खेती करने योग्य भूमि बनाने का प्रयास किया। उत्तरी यूरोप की निचली जमीनों को सुखाने और पश्चिमी संयुक्त राज्य और आस्ट्रेलिया की सूखी जमीनों में सिंचाई के लिए कुछ इंजीनियरिंग कौशल की जरूरत थी, और यह बड़े पैमाने पर किया गया।

खेती के औजारों में सुधार—श्रम बचाने की मशीनरी का प्रयोग कृषि में किया जाने लगा था क्योंकि औद्योगिक मशीनों के लिए अधिक कृषि उत्पादन की आवश्यकता थी। हरग्रीव्स, क्रोम्पटन और

— ब्राउन ब्रदर्स

सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक, जार्ज वाशिंगटन कार्वर ने मूंगफली और शकरकंद के नए और आश्चर्यजनक प्रयोग विकसित किये।

आर्कराइट की कताई और बुनाई की नयी मशीनों के जवाब में एली ह्विटने की कपास और विनौला अलग करने वाली "काटन जिन" मशीन थी। अमेरिका में भाड़े के मजदूरों की कमी अंशतः अमेरिकनों के फार्म मशीनरी बनाने में अगुवाई का कारण है। साइरस एच० मैककोरमिक ने फसल काटने वाली मशीन का आविष्कार किया, एफ० एप्पलबाइ ने बटोरने वाले दुहरे बाइण्डर इसमें जोड़ कर इसे उपादेय बनाया। लगभग उसी दर्मियान अन्य आविष्कारक घोड़े से खींचा जाने वाला पांचा, मढ़ाई की मशीन, लोहे का हल और तनेदार हैरो (पटड़ा) प्रचलित कर रहे थे। बाद में घोड़े की जगह भाप इंजन, गैसोलीन इंजन, और बिजली की मोटरें फार्म मशीनरी में लगाई गयीं और फार्म का कार्य तेजी से किया जाने लगा।

कृषि की पैदावार के संरक्षण और प्रयोग के नये तरीके—कृषि की पैदावार से माल तैयार करने और तेजी से उन्हें बाजार में लाने के आविष्कार हुए। नैपोलियन कालीन युद्धों में डिब्बाबंदी उद्योग फ्रांस से आरम्भ हुआ। १९ वीं शताब्दि के अन्त में प्रशीतक मशीनरी से जल्दी ही सड़ने-गलने वाले खाद्य पदार्थों को रेलमार्गों और जहाजों द्वारा दूरस्थ स्थानों तक पहुँचाना और उस "ताजे" भोज्य पदार्थ को जरूरत तक स्टोर करना संभव हो गया था। मक्खन अलग करने वाले यंत्र के आविष्कार और फ्रांसवासी लुई पाश्चर के कार्य ने मक्खन और पनीर बनाने के कार्य को सुधारा। रासायनिकों ने फार्म की कुछ फसलों के विश्लेषण और उनके नये प्रयोगों की खोज कर उनके लिए बाजार को विस्तृत बनाया। उदाहरण के लिए, अमेरिकी नीग्रो वैज्ञानिक, जार्ज वाशिंगटन कार्वर (१८६४-१९४३) ने यह प्रदर्शित किया कि मीठे आलू से एक सौ विभिन्न प्रकार की वस्तुएँ और मटर की छीमी से ३०० प्रकार की वस्तुएँ बन सकती हैं।

आर्थर यंग—कृषि अन्वेषकों और वैज्ञानिकों की खोजों और गवेषणाओं को सर्वसाधारण द्वारा प्रयोग में लाये जाने में काफ़ी समय लगा। आर्थर यंग (१७४४-१८२०) इंग्लैंड का एक जमींदार किसान था जिसने "नयी खेती" को प्रचारित किया। उसने तत्कालीन कृषि-प्रणालियों की जांच करने के लिए इंग्लैंड, आयरलैंड और फ्रांस का दौरा किया और जो कुछ देखा उस पर कई किताबें लिखीं। यंग कृषि के ब्रिटिश बोर्ड की स्थापना करने वाला प्रमुख व्यक्ति था जिसका उद्देश्य किसानों में नये विचारों को फैलाना था। १९ वीं शताब्दि के अन्तिम दिनों में प्रत्येक बड़े देश ने एक कृषि मंत्रालय (या विभाग) कायम किया। उन्होंने पौधों और भूमि-समस्याओं के लिए परीक्षणक्षेत्र स्थापित किये और अपनी खोजों के परिणामों को प्रचार-पत्रों और किताबों द्वारा प्रचारित करने का काम जारी रखा। राष्ट्रीय और स्थानीय सरकारों ने कृषिस्कूलों की स्थापना की, जहाँ वैज्ञानिक ढंग से खेती का काम अधिक विस्तार से सीखा जा सके।

१. कृषि क्रांति कहाँ से आरम्भ हुई और क्यों ?
२. कृषि-प्रणालियों और कृषि के औजारों में परिवर्तन लाने वाले लोगों के नाम बताओ और यह भी बताओ कि प्रत्येक ने क्या किया ?
३. खाद्यान्न के संरक्षण के तरीकों में क्या परिवर्तन आये ?
४. आर्थर यंग कौन था ?

विचार-विमर्श के लिए प्रश्न

१. किसी श्रमिक के व्यक्तिगत दृष्टिकोण से फैक्ट्री प्रणाली अच्छी है या घरेलू प्रणाली ?

२. असेम्बली लाइन की मजदूरों के लिए कुछ खामियाँ क्या हैं ?

३. भारत के एक बड़े आध्यात्मिक और राजनीतिक नेता ने अपने देश में उद्योगीकरण पर आपत्ति उठाई। तुम बता सकते हो क्यों ?

४. किस रूप में हम उन लोगों को 'वीर' की संज्ञा दे सकते हैं जिन्होंने उद्योग, यातायात और संवहन में हुए महत्वपूर्ण विकास को कार्यरूप दिया ?

५. "बड़े कारोबार" स्वतंत्र व्यवसाय में सहायक हैं या बाधक ?

६. क्या औद्योगिक क्रांति ने मानव की सहूलियतों और खुशहाली को बढ़ाया ?

७. कृषि क्रांति के विकास की गति औद्योगिक क्रांति की गति से पिछड़ी क्यों रही ?

८. किस रूप में एक औद्योगिक देश में, जैसे जापान, ग्रेट ब्रिटेन, या संयुक्त राज्य, कृषि एक बुनियादी उद्योग है।

इतिहास के उपकरणों का प्रयोग

एक. नाम, तिथियाँ तथा स्थान

क्या तुम इन शब्दों का अर्थ बता सकते हो ?

औद्योगिक क्रांति···असेम्बली लाइन···बड़ा कारोबार···पूंजी···काटन जिन···घरेलू प्रणाली ···डिस्क हैरो (तवेदार पटड़ा)···फैक्ट्री प्रणाली··· शक्तिचालित करघा···औद्योगिक क्रांति···बड़े पैमाने पर उत्पादन···रीपर···फसलों का बारी-बारी बोना · स्पिनिंग जिन···स्पिनिंग म्यूल···वाटर फ्रेम (जलयंत्र)···मढ़ाई मशीन।

(ख) तिथियाँ

औद्योगिक क्रांति के विभिन्न पहलुओं की तिथियों के बजाय शताब्दियाँ याद रखो।

(ग) नक्शे में निम्नलिखित स्थान दिखाओ :

अल्बानी···न्यूयार्क···कनाडा···फ्रांस···जर्मनी ···ग्रेट ब्रिटेन···भारत···जापान···जोहान्सबर्ग··· लंदन···मंचूरिया···मास्को···न्यूयार्क शहर···रूस ···दक्षिण अफ्रीका···टोकियो···व्लाडीवोस्टक··· वाशिंगटन।

निम्नलिखित रेलमार्गों को दिखाओ :

ट्रान्स-साइबेरियन रेलवे···काहिरा से जोहान्सबर्ग तक रेलमार्ग···अमेरिका में प्रथम महाद्वीपी रेल-पथ···आंशिक रूप से बना बर्लिन से बगदाद तक का रेलमार्ग।

(घ) इन व्यक्तियों के बारे में तुम क्या जानते हो ?

जान एप्पलबाई···रिचर्ड आर्कराइट, राबर्ट बैकवेल···अलेक्जेण्डर ग्राहम बेल···हेनरी बेस्सीमेर··· लूथर बरबंक···एडमंड कार्टराइट···जार्ज वाशिंगटन कार्वर···सेमुअल क्रोम्पटन···लियोनार्डो डा विन्सी ···हेनरी फोर्ड···राबर्ट फुल्टन···चार्ल्स गुडइयर··· जेम्स हरग्रीव्स···जान के···जस्टस वान लीबिग जान मेकाडम···गुग्लीलमो मारकोनी···साइरस मैककोर्मिक···टामस न्यूकोमन···लुई पाश्चर··· सेमुअल स्लाटर···जार्ज स्टीफेन्सन···वाइकाउण्ट टाउनसेण्ड···जेथ्रो टुल···जेम्स वाट···एली व्हिटने ···ओरविले राइट···विलबर राइट···आर्थर यंग।

दो. क्या तुम अपने विचार प्रकट कर सकते हो ?

१. कक्षा में पढ़ कर सुनाने के लिए निम्नलिखित व्यक्तियों के बीच एक काल्पनिक बातचीत लिख डालो :

(क) एक आधुनिक किसान और एक ऐसा किसान जो ऐसे क्षेत्र में रहता हो जहाँ अभी तक कृषिक्रांति का प्रभाव नहीं पड़ा।

(ख) १७७० में अपने घर पर काम करने वाले एक बुनकर और फैक्ट्री में काम करने वाले बुनकर के बीच।

(ग) एक विमान चालक और एक ऐसे व्यक्ति के बीच जो कभी हवाई जहाज में नहीं चढ़ा।

(घ) एक रेलरोड इंजीनियर और एक लड़के के बीच जो कभी रेल में नहीं चढ़ा।

(२) निम्नलिखित पेशों में काम करने वाले कर्मचारियों में से प्रत्येक के कर्मचारी को कक्षा में विवरण सुनाने के लिए आमंत्रित करो।

(क) एक फार्म व्यूरो का प्रतिनिधि।
(ख) एक फोर-एच (युवक कृषि-क्लव) नेता।
(ग) एक स्थानीय फैक्ट्री का रोजगार एजेण्ट।
(घ) स्थानीय वस कम्पना का एक रोजगार-एजेण्ट।
(ङ) एक विमान चालक।
(च) एक रेलवे इंजीनियर या कंडक्टर।
(छ) एक सड़क निर्माण कम्पनी का मालिक या मैनेजर।

इन वार्तामालाओं के बाद कक्षा में एक निवन्ध लिखो कि तुम क्यों—-होना चाहते हो। (तुम्हारी महत्त्वाकांक्षा भले ही उपरोक्त पेशों या रोजगारों से भिन्न हो)।

(३) इस अध्याय में आये लोगों में से किसी एक व्यक्ति के जीवन-चरित्र के बारे में और काम के बारे में पढ़ो जिसमें तुम्हें दिलचस्पी हो और कक्षा में उसे सुनाओ।

(४) कक्षा में पढ़ने के लिए एक पांच मिनट की रेडियो स्क्रिप्ट लिखो, जिसका विषय निम्न-लिखित में से एक हो, अपनी दूध दुहने की मशीन की हिफाजत—सेव, आड़ू या अन्य फलों के पेड़ों में कृमिनाशकों का छिड़काव—विशेष किस्म की फसल काटने, घास काटने, घास इकट्ठा करने या फार्म की अन्य मशीनें—किस प्रकार अमेरिका का कृषि विभाग व्यक्तिगत खेती करने वाले किसान को मदद पहुँचा सकता है।

तीन. ब्लैक बोर्ड पर

(१) इस अध्याय में वर्णित सभी आविष्कारकों के नाम ब्लैक बोर्ड पर लिखो और उनकी राष्ट्रीयता तथा आविष्कारों के बारे में भी बताओ।

(२) फार्म के ऐसे औजारों की सूची बनाओ जो १७०० में फार्मों में प्रयुक्त न होते होंगे।
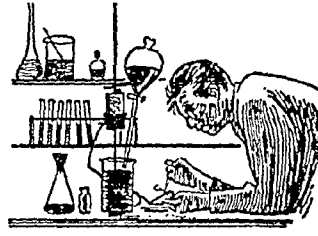
३० उद्योग और विज्ञान ने मानव के रहन-सहन का ढंग बदल डाला

जरा कल्पना करके देखो कि औद्योगिक क्रांति से पहले जीवन कैसा था? तब जीवन आज से सर्वथा भिन्न था। एक बात तो यह थी कि परिवार न केवल एक साथ रहता था, अपितु घर में साथ-साथ काम भी करता था। अगर पिता एक किसान था तो उसकी जमीन घर के इर्द-गिर्द होती थी और परिवार के सभी सदस्य फार्म का काम हाथ से करने में उसकी सहायता करते थे। प्रत्येक सदस्य के जिम्मे उसका काम था, जिसे पूरा करना पड़ता था। फार्म में मशीनरी के प्रयोग ने इसे बदल डाला। फार्म अब बड़े हो सकते थे और एक व्यक्ति मशीन से उतना काम कर सकता था जितना कई व्यक्ति मिलकर हाथ से करते थे।

औद्योगिक क्रांति का घरेलू जीवन पर प्रभाव

शहरों में परिवार एक साथ, और भी कम, रहने लगे थे। औद्योगिक क्रांति से पहले पिता, जो दर्जी, स्वर्णकार या किसी किस्म का हाथ का काम जानने वाला होता था, घर का एक कमरा दूकान के लिए अलग कर लेता था। उसकी पत्नी और बच्चे उसकी मदद करते थे। उसके लड़के उसका धंधा सीखते होते थे। औद्योगिक क्रांति ने पिता को उसकी छोटी

इस प्रकार के मकान, जो कोयला खानों वाले जिलों में बहुतायत से मिलते हैं, अब बदले जा रहे हैं क्योंकि मालिक और मजदूर वेतनवृद्धि, जीवन के स्तर को ऊंचा उठाने और बस्ती के जीवन को सुधारने में सहयोग दे रहे हैं।

स्टैंडर्ड आयल कम्पनी
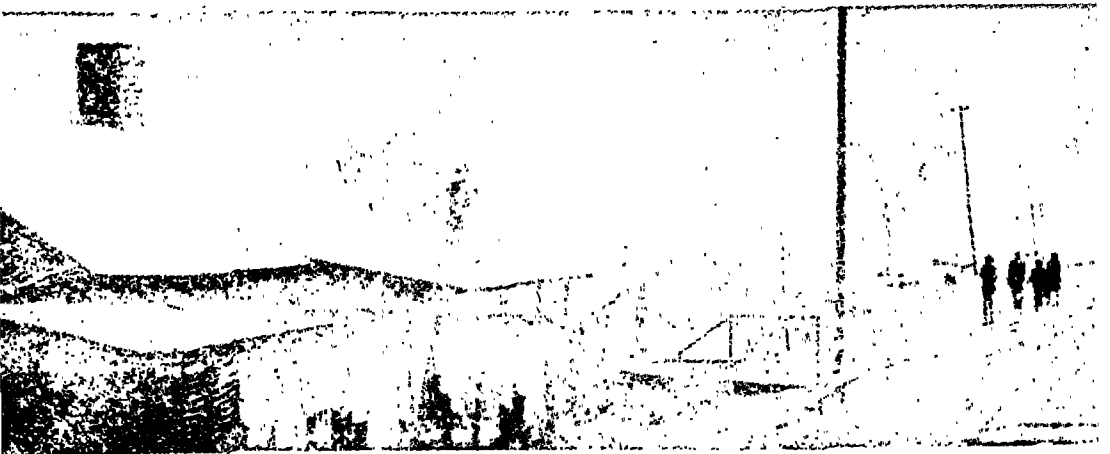
सी दूकान से उठाकर एक कारखाने में पहुँचा दिया।

गंदी बस्तियां—अधिकांशत: परिवार पिता के समीप रहने के लिए कारखाने के नजदीक रहने चले गये। अधिकाधिक परिवार फैक्ट्री के इर्द-गिर्द बहुत सटे हुए क्वार्टरों और झोंपड़ों में बस गये। इस स्थिति ने गंदी बस्तियों को जन्म दिया। जहाँ कहीं भी कारखाने स्थापित हुए, इनकी संख्या बढ़ती चली गई और आज बड़े शहरों में यह एक रोग के रूप में हो गया है।

कई मामलों में पिता अपने परिवार के भरण-पोषण के लिए पर्याप्त धन कमाने में असमर्थ रहता था, क्योंकि वेतन बहुत कम था। माँ को भी काम करने की मजबूरी हो जाती थी। इससे दूसरी समस्या खड़ी हो गयी। छोटे-छोटे बच्चे देख-रेख के अभाव में दूषित वातावरण में बड़े होते थे, और अक्सर अपराधी बन जाते थे। गंदी बस्तियों में बालापराधी भी बन जाते थे।

यातायात में सुधार का प्रभाव—यातायात के विभिन्न साधनों में कुछ सुधार आने से यह संभव हो सका कि मजदूर अपने काम के स्थान से दूर, ज्यादा घनी बस्तियों से दूर, रह सकें। फैक्ट्री-मजदूरों के लिए यातायात का पहले प्रकार का साधन बसें थीं। लेकिन १९२० तक संयुक्त राज्य के अधिकांश मजदूर कार खरीदने और उसमें बैठकर काम पर जाने के लिए पर्याप्त धन कमाने लगे थे। तब वे शहरों के छोर पर भी रह सकते थे जहाँ उनके परिवारों को खुली जगह, और धूप और धुएँ से रहित ताजी हवा मिल सके। दूसरे मुल्कों के लिए यह बात लागू नहीं होती जहाँ वेतन इतना अच्छा नहीं है और कारें बहुत महंगी हैं।

संयुक्तराज्य में रिचमोण्ड, वर्जीनिया, पहली बस्ती थी जहाँ बसें चलाई गईं। उन्होंने यातायात के किस साधन को हटाया था?

औद्योगिक क्रांति से मनोरंजन पर प्रभाव

औद्योगिक क्रांति से पूर्व मनोरंजन—औद्योगिक क्रांति से पूर्व अधिकांश मनोरंजन घर के चारों ओर केन्द्रित थे। शतरंज, चेकर्स, ब्लाइण्डमैन्स बफ और ताश के खेल आम थे। अमेरिका में काम करने के लिए लोग इकट्ठे होते थे और इस प्रकार एक-दूसरे से मिलते थे। मढ़ाई और फसलों की कटाई पर होने वाली पार्टियों में क्षेत्रों की सीमाओं पर अपने पड़ोसियों से मिलते थे। यूरोप के शहरों में और बहुत कम अंशों तक कुछ अमेरिकी शहरों में, ऊँचे तबके के लोगों द्वारा बहुत औपचारिक बाल-डांस आयोजित किये जाते थे। मनोरंजन नाटक मंडलियों के उन अभिनेताओं द्वारा किया जाता था जो ड्रामा करते हुए यूरोप के मुख्य-मुख्य शहरों में घूमते थे और संगीतज्ञ एक दरबार से दूसरे दरबार में जाते और आमंत्रित अतिथियों के लिए अपनी कला दिखाते थे। लेकिन अच्छा संगीत और अच्छे नाटक सिर्फ चंद लोगों को ही सुनने-देखने को मिलते थे।

मनोरंजन में परिवर्तन—१९ वीं शताब्दि में और बीसवीं शताब्दि के आरंभ में अच्छा मनोरंजन अधिक लोगों के लिए सुलभ हुआ। सस्ते टिकट पर दिखाये जाने वाले नाटक और कनसर्ट यूरोप के अधिकांश शहरों, लैटिन अमेरिका और संयुक्त-राज्य में, रंगमंच पर खेले जाते थे। सिनेमा, रेडियो और टेलीविजन ने नये किस्म का मनोरंजन प्रदान किया और दुनिया के सभी उद्योगीकृत शहरों में सर्वसाधारण को ये ज्यादा सुलभ हुए।

जिस प्रकार औद्योगिक क्रांति ने मजदूरी कमाने वालों को अपना काम करने के लिए घर से बाहर किया, उसी तरह मनोरंजन भी अधिकाधिक घर

के बाहर की चीज बन गया। बहुत से खेलों का बड़े पैमाने पर चलन हो गया, जिनमें बेसबाल, फुटबाल, हाकी, टेनिस और बास्केटबाल भी शामिल हैं। कारों और घूमते-फिरते सिनेमाघरों ने इस आन्दोलन में बड़ा महत्त्वपूर्ण हिस्सा लिया, वाणिज्यीकृत मनोरंजन ने अधिकांश लोगों को उसमें भाग लेने वाला बनाने के बजाय उसका दर्शक बना दिया।

औद्योगिक क्रांति ने जीवन का स्तर बदला

मध्यम वर्ग—१८ वीं शताब्दि के पुरुषों और स्त्रियों ने उन सुविधाओं की स्वप्न में भी कल्पना न की होगी जिन्हें आज हम एकदम साधारण समझते हैं। आज अमेरिका का एक मजदूर १८०० के एक धनी, कुलीन से भी अच्छे स्तर से रहता हैं। मुख्यतः औद्योगिक क्रांति से ही यह हो पाया है।

मध्यम वर्ग को ही सर्वप्रथम औद्योगिक क्रांति का लाभ पहुँचा। उनकी स्थिति दौलत पर आधारित थी। वे ही ज्यादातर फैक्ट्रियों, खानों, यातायात के नये साधनों और संचार के मालिक थे। इस वर्ग में बहुत से लोगों ने अच्छी दौलत कमाई, खूबसूरत इमारतें बनवाई और समुदाय के राजनीतिक तथा सामाजिक जीवन में प्रमुख बन गये। पहले पहल यूरोप के शहरों में रहने वाले लार्ड (कुलीन) उन लोगों को, जिन्होंने उद्योग से धन कमाया था और जिनकी धमनियों में कुलीन रक्त नहीं था, हेय दृष्टि से देखते थे। लेकिन ज्यों-ज्यों समय गुजरता गया और लार्ड, नये धनी उद्योगपतियों के मुकाबले गरीब पड़ते गये उनमें से बहुतेरों ने भी निर्माण और व्यापार में धन लगाया। अन्यों ने अपने पुत्रों तथा पुत्रियों के विवाह नये धनिकों के बच्चों से किये।

श्रमिक—१९ वीं शताब्दि में जब कि फैक्ट्री-मालिक दौलत पैदा कर रहे थे, अधिकांश मजदूरों की स्थिति बुरी ही बनी रही। मजदूरी बहुत ही कम थी; पुरुषों को आम तौर पर प्रतिदिन १२ या १५ घंटे काम करना पड़ता था; छह या सात बरस के बच्चों को अक्सर फैक्ट्रियों और खानों में काम पर जोत दिया जाता था; और महिलाओं को भी ज्यादा घंटों तक काम करना होता था, जो उनके लिए बड़ा कष्टसाध्य था। फैक्ट्रियों की सफाई का आम तौर पर कोई खयाल नहीं रखा जाता था और चूँकि मशीनों में भी सुरक्षा के उतने ज्यादा साधन नहीं थे, इसलिए दुर्घटनाएँ आम तौर पर हुआ करती थीं। इसके अलावा, घायलों और बीमारों की देख-रेख की व्यवस्था नहीं थी। जब मंदी का काल आया और कर्मचारी को रोजगार से निकाल दिया गया या अस्थायी तौर से बेरोजगार रहना पड़ा

फैक्ट्री (कारखाना) प्रणाली के साथ-साथ बालश्रम और खतरनाक तथा अस्वास्थ्यकर कार्य-स्थिति की खराबियाँ भी आई।

तब उसके पास अपने भरण-पोषण के लिए धन कमाने का इसके अलावा और कोई रास्ता नहीं था कि उसे फिर से काम मिले। इन सब खराबियों को दूर करने के लिए मजदूरों द्वारा एक दीर्घकालीन और तीव्र संघर्ष किये जाने की जरूरत थी।

१. औद्योगिक क्रांति का पारिवारिक जीवन पर क्या प्रभाव पड़ा ?
२. शहरों पर उसका क्या प्रभाव पड़ा ?
३. किस प्रकार यातायात के सुधरे हुए साधनों ने कारखानों में काम करने वाले मजदूरों के रहन-सहन की स्थिति को सुधारा ?
४. औद्योगिक क्रांति से पूर्व मनोरंजन के प्रमुख साधन क्या थे ?
५. औद्योगिक क्रांति ने मनोरंजन को किस तरह परिवर्तित किया ?
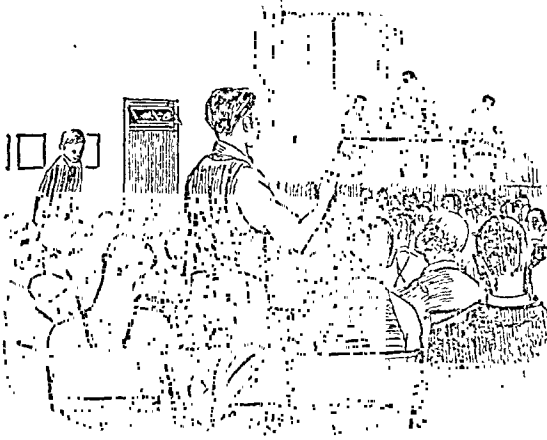
६. क्या औद्योगिक क्रांति से घर का महत्त्व खत्म हो गया ?
७. औद्योगिक क्रांति का प्रथम लाभ किन लोगों को मिला और क्यों ?
८. फैक्ट्री प्रणाली के आरंभिक काल में फैक्ट्रियों में काम की कैसी स्थिति थी ?

मजदूरों का अपनी समस्याएँ हल करने का प्रयास

श्रमिक यूनियनों का संगठन—पहले-पहल ग्रेट ब्रिटेन में श्रमिक अपनी समस्याओं को हल करने का कोई जरिया निकालने को सक्रिय हुए। वे जानते थे कि या तो उन्हें संयुक्त होकर अपने मालिकों से मांग करनी पड़ेगी या फिर राजनीतिक कार्रवाई करनी होगी। मजदूरी कमाने वालों के लिए राजनीतिक कार्रवाई करना कठिन था क्योंकि उन्हें वोट देने का या पदासीन होने का अधिकार नहीं था। उनके लिए श्रमिक यूनियनों में एकत्रित हो जाना भी कठिन था क्योंकि १८०० में पार्लमेंट ने यूनियनों पर प्रतिबंध लगा दिया था। पार्लमेंट में नेताओं को भय था कि यूनियनें फ्रेंच जेकोबिन क्लबों की नकल कर सकती हैं और इस तरह क्रांति को उभाड़ सकती हैं। बहरहाल, उनका कहना था कि यूनियनें कभी-कभी हड़ताल करा देती हैं और हड़तालों से वाणिज्य और उद्योग में गतिरोध उत्पन्न होता है। फिर भी कानून की अवज्ञा करते हुए मजदूर गुप्त रूप से संगठन करते रहे।

१८२५ में कुछ उदारदलीय नेताओं ने, जो मजदूरों से सहानुभूति रखते थे, पार्लमेंट को बाध्य किया कि वह मजदूरों को यूनियनें बनाने की अनुमति दे। कुछ समय बाद ही, कई प्रकार के कामगारों की यूनियनें स्थापित हो गयीं। १८३४ में उन्होंने सबको मिलाकर एक नेशनल यूनियन के माध्यम से अतिरिक्त शक्ति प्राप्त करने की कोशिश की, जिसकी मुख्य दिलचस्पी उस समय ८ घंटे का दिन माने जाने की थी। १८३० से आरंभ दशक के अन्तिम वर्षों की मंदी के दौरान, नेशनल यूनियन बिखर गयी। १८५० से आरम्भ दशक में यूनियनें अपनी खोई हुई शक्ति हासिल कर पाईं लेकिन १९०० तक ग्रेट ब्रिटेन में बहुत सी यूनियनें बन गयीं।

यूरोपीय महाद्वीप में श्रमिक यूनियनें तेजी से बढ़ीं। १८७५ में फ्रांस ने उन्हें कानूनी मान्यता दी। संयुक्तराज्य में आरंभिक यूनियनों को बहुत ज्यादा सफलता नहीं मिली, लेकिन १८८१ में अमेरिकी मजदूर फेडरेशन की स्थापना हुई और यह बहुत शक्तिशाली बन गया। कुछ श्रमिक यूनियनों का नेतृत्व उग्रपंथी (रेडिकल) लोगों के हाथ में था और वे मालिकों के सामने अनुचित मांगें रखते थे, लेकिन अधिकांश के लिए यह कहना सही नहीं था। आठ घंटे का दिन माना जाना, एक दल के रूप में या संयुक्त होकर मालिकों से लाभ का सौदा करने का अधिकार दिया जाना, अधिक सफाई और काम पर सुरक्षा की स्थिति, अच्छा वेतन और बाल श्रम को बंद करना, अधिकांश देशों में, उनकी मुख्य मांगें थीं।

मजदूरों के लिए राजनीतिक अधिकार—ग्रेट ब्रिटेन में बहुत से श्रमिक नेताओं का विश्वास था कि मजदूर तब तक अपनी मांगें हासिल नहीं कर सकते जब तक उन्हें राजनीतिक अधिकार न दिये जायं और पार्लमेंट को उनके पक्ष में कानून पास करने को मजबूर न किया जाय। चार्टिस्टों ने, मजदूरों के नेतृत्व में, पीपल्स चार्टर (जन मांग पत्र) तैयार किया। उसने मजदूरों के लिए ऐसे राज-

नैतिक अधिकारों की मांग की, जैसे, वोट देने और पद ग्रहण करने का अधिकार। अगर मजदूर इन अधिकारों को प्राप्त कर सके तो वे अपने दोस्तों को पार्लमेंट के लिए चुन सकेंगे और अपने हितों की रक्षा करने वाले कानून पास करवा सकेंगे। चार्टिस्ट आन्दोलन १८४८ में असफलता के साथ समाप्त हुआ। ग्रेट ब्रिटेन के मजदूरों को तब तक मतदान का अधिकार नहीं मिला जब तक कि १८६७ का सुधार कानून नहीं बना।

संयुक्तराज्य और यूरोप महाद्वीप के उद्योगीकृत देश भी धर्म या सम्पत्ति सम्बन्धी योग्यताएँ लादे बगैर लोगों को मतदान का अधिकार प्रदान कर ज्यादा लोकतन्त्रात्मक बने।

सामाजिक बेहतरी के विधान—वोट देने और पदारूढ़ होने का अधिकार प्राप्त हो जाने पर मजदूरों ने अब सामाजिक विधान पर दबाव डाला जिससे उनकी काम करने और रहन-सहन की स्थिति में सुधार हो। सामाजिक विधान में जर्मनी सबसे आगे रहा। १८८० के दशक में चांसलर वान बिस्मार्क ने दुर्घटना बीमा, बाल श्रम कानून, अधिकतम घंटों का कानून और कारखानों तथा खानों की सरकारी जाँच और नियंत्रण के कानून बना दिये थे। अन्य देशों ने जर्मनी के श्रमिकों को सहायता देने के प्रयास की नकल की। ग्रेट ब्रिटेन में विंस्टन चर्चिल और लायड जार्ज जैसे नेताओं को श्रमिकों की स्थिति सुधारने के लिए पार्लमेंट से कई कानून पास करवाने में सफलता मिली। उनमें कुछ विशेष उद्योगों के लिए न्यूनतम वेतन कानून, बीमारी, बेरोजगारी और वृद्धावस्था के कुप्रभावों के खिलाफ बीमा, और गंदी बस्तियों की सफाई का एक कार्यक्रम भी था। संयुक्तराज्य में कुछ राज्यों ने बालश्रम पर प्रतिबन्ध लगाने, मालिकों को अपने कर्मचारियों की दुर्घटनाओं के खिलाफ बीमा करवाने को बाध्य करने और कार्य के घंटों को सीमित करने में अगुवाई की।

शिक्षा में प्रगति—अधिकांश श्रमिकों ने यह भी महसूस किया कि उनके बच्चों के लिए अच्छी तालीम जरूरी है। बहुत से यूरोपीय देशों में, जापान और अमेरिका में कम से कम प्राथमिक स्कूलों के माध्यम से निःशुल्क सार्वजनिक शिक्षा की व्यवस्था की गयी। डेनमार्क के जनता हाई-स्कूलों में रात्रि को हजारों की संख्या में वयस्क पढ़ने जाते थे।

१९ वीं शताब्दि के अन्तिम वर्षों में निःशुल्क सार्वजनिक वाचनालयों के आन्दोलन ने संयुक्त-राज्य में, जोर पकड़ा। और अधिकांश शहरों तथा अनेक कस्बों में सभी नागरिकों के लिए पुस्तकालय खोले गये।

जब जापान का उद्योगीकरण हुआ तब उसने स्कूल खोले और अनिवार्य स्कूली शिक्षा के कानून बनाये।

अन्य सामाजिक विधानों की भाँति ही, स्कूली शिक्षा के कानून मुख्यतः औद्योगिक देशों तक ही सीमित रहे। यह अनुमान लगाया गया है कि १९१२ में रूस में सिर्फ ७ प्रतिशत जनता पढ़ और लिख सकती थी। लैटिन अमेरिका में, स्कूल प्रणाली सिर्फ शहरों में ही थी और सिर्फ सम्पन्न

प्रत्येक देश में, जो रहन-सहन की स्थिति सुधारने में दिलचस्पी रखता है, छोटे साफ-सुथरे मकानों ने शनैःशनैः गंदी बस्तियों को बदला।

यूइंग गैलोवे
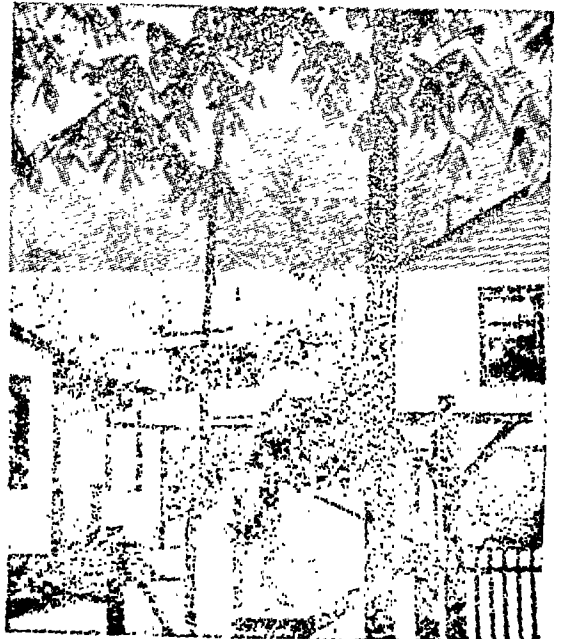
लोगों के लिए थी। चीन और भारतवर्ष में धनिकों के अलावा, बहुत कम लोग पढ़-लिख सकते थे।

मालिकों द्वारा बस्तियों का निर्माण—बहुत से देशों में गंदी बस्तियों की सफाई और भवन-निर्माण योजनाएँ १९ वीं शताब्दि के उत्तरार्द्ध में आरंभ हुईं। फैक्ट्रियों के मालिकों ने देखा कि अस्वास्थ्यकर परिस्थितियों में रहने वाले लोगों की कार्यशक्ति आरामदेह और साफ मकानों में रहने वाले स्वस्थ लोगों की अपेक्षा कम होती है और उनका काम भी घटिया रहता है। ब्रिटेन, जर्मनी और स्कैण्डिनेवियाई देशों में कंपनियों ने अपने मजदूरों के लिए आवास बनाये।

गंदी बस्तियों का उन्मूलन—शनैः शनैः जनता इस तथ्य के प्रति जागरूक हुई कि गंदी बस्तियाँ समाज में सबके लिए महंगी पड़ती हैं। गंदी बस्तियों वाले क्षेत्रों में आगजनी, पुलिस और स्वास्थ्यरक्षण पर अन्य क्षेत्रों की अपेक्षा कई गुना ज्यादा खर्च बैठता है। इसके अलावा विचारशील लोगों के बीच, जो हृदय से बच्चों और वयस्कों का हित चाहते थे, इस आन्दोलन ने जोर पकड़ा। शनैः शनैः राष्ट्रीय तथा राज्य सरकारों और नगरों के प्रबन्धकों ने इस समस्या को हाथ में लिया और बीसवीं शताब्दि के आरंभ में अधिकांश औद्योगिक देशों में इस स्थिति से उभरने के प्रयास होने लगे। छह यूरोपीय देश इसके अगुवा बने। वे थे ग्रेट ब्रिटेन, फ्रांस, जर्मनी, आस्ट्रिया, स्वीडन और नीदरलैण्ड। अधिकांश नये मकान या तो सरकारी बने या सरकार की सहायता से। १९३० के दशक से पहले ऐसा कोई कार्यक्रम अमेरिका में शुरू नहीं हुआ था। इन सभी देशों में हजारों गन्दी बस्तियाँ उजाड़ डाली गयीं और आधुनिक साफ-सुथरी, हवादार इमारतें बनीं।

नयी इमारतों के कार्यक्रम के सम्बन्ध में एक महत्त्वपूर्ण बात यह थी कि नगर आयोजना से बसे। पहले अधिकांश शहर बिना किसी रूप-रेखा और योजना के बढ़े थे। नयी प्रणाली के अन्तर्गत कारखानों, व्यापारिक कार्यों और आवास के लिए क्षेत्र निर्धारित हुए। यातायात, पार्क, बगीचों और स्वास्थ्य तथा खूबसूरती के लिए पेड़ लगाये जाने की व्यवस्था रखी गयी।

सहकारी संस्थाएँ—मजदूरों ने अपनी स्थिति सुधारने के प्रयास में जो तौरतरीके अख्तियार किये, उनमें यूनियनों की स्थापना और सामाजिक विधानों को बनवाना ही नहीं था। सहकारिता आन्दोलन १८४४ में इंगलैण्ड के रोचडेल में आरंभ हुआ था, जबकि लीनन बुनकरों के एक दल ने १४० डालर इकट्ठे करके अपना एक स्टोर खोल डाला। पहले वर्ष में उन्होंने ४००० डालर का कारोबार किया जिसमें उन्हें १६० डालर मुनाफा रहा। यह उसमें पूँजी लगाने वालों के बीच उनकी लगायी गई पूँजी के अनुपात से बाँट दिया गया। इस सहकारिता की योजना उत्पादक से सीधे थोक दाम पर माल खरीदकर जीवन-यापन का व्यय घटाने और उसे बीच वाले व्यक्ति को मुनाफा दिये बगैर फुटकर दामों पर मजदूरों को बेचने के लिए बनायी गई थी।

काम करने वाली माताओं के बच्चों के लिए बालघर खुल जाने के परिणाम स्वरूप समूचे समुदाय को क्या लाभ हुए?

सहकारिता आंदोलन तेजी से बढ़ा। इससे पश्चिमी यूरोप और संयुक्तराज्य के अनेक मजदूर और किसान अधिक खुशहाल बने। स्कैण्डीनेवियाई देशों में सहकारिताएँ बहुत सफल रहीं। कुछ इसलिए बनीं कि किसान अपने अंडे, मक्खन और अन्य सामान इकट्ठे मिल कर अच्छी कीमत पर बेच सकें। बैंकिंग और निर्माण सहकारिताएँ भी बहुत सफल रहीं।

समाजवाद का जन्म—बहुत से देशों में ऐसे भी लोग थे जो यह सोचते थे कि मजदूरों की परेशानियाँ सिद्धान्ततः औद्योगिक प्रणाली और मालिकों तथा मजदूरों के सम्बन्ध से पैदा हुई हैं। इनमें से एक अंग्रेज निर्माता राबर्ट ओवन था। अपनी प्रणाली के अन्तर्गत क्या किया जा सकता है, यह दिखाने के लिए उसने न्यू लेनार्क, स्काटलैण्ड, की गंदी बस्ती को एक आदर्श बस्ती में बदल डाला। न्यू लेनार्क में चलाये जाने वाले उद्योगों के मालिकाना अधिकार और मुनाफा मजदूरों और प्रबन्धकों के बीच बंटे थे। यह समुदाय इतना सफल रहा कि ओवन ने अन्यत्र भी इसे आरंभ किया। इसमें अमेरिका स्थित इण्डियाना में प्रारंभ किया गया वह असफल प्रयोग भी शामिल था। ओवन और अन्य लोग, जो उसी की विचारधारा के अनुसार सोचते थे, अक्सर यूटोपीयन (काल्पनिक) समाजवादी कहलाते थे।

फ्रांस में, चार्ल्स फूर्याँ और क्लूडे हेनरी सॉसीमोन ने प्रस्ताव रखा कि सरकार सम्पत्ति का प्रबन्ध सँभाले और लोगों के बीच उसे बाँटे। १८४८ की क्रांति के दौरान लुई ब्लॉक ने प्रस्ताव रखा था कि पेरिस नगर में बेरोजगारों के लिए कारखाने खोले जाएँ। ऐसा करने का प्रयास हुआ, जो असफल रहा।

१८४८ में ही दो प्रमुख जर्मन सोशलिस्टों, कार्ल मार्क्स (१८१८-१८८३) और फ्रेडरिक ऐंगल्स ने "कम्युनिस्ट घोषणा-पत्र" नामक एक पुस्तिका प्रकाशित की। इसमें इन्होंने अपने विचार व्यक्त किए थे कि क्यों मजदूर गरीबी में रहते हैं और उनकी स्थिति सुधारने की क्या आशा की जा सकती है। उस समय "कम्युनिस्ट घोषणा-पत्र" के बारे में बहुत कम लोगों ने जाना।

१८६७ में मार्क्स और ऐंगल्स ने "दास कैपीटाल" नामक पुस्तक की पहली तीन जिल्दें प्रकाशित कीं। इन पुस्तकों में उन्होंने बहुत विस्तार के साथ अपने सिद्धान्तों को स्पष्ट किया था जो "मार्क्सवादी समाजवाद" या "साम्यवाद" के रूप में पुकारे गये। "दास कैपीटाल" का आधार यह विचारधारा है कि सभी लोग दो वर्गों में से एक के हैं: पूँजीवादी और मजदूर। मार्क्स और ऐंगल्स ने कहा कि मजदूर समस्त दौलत के स्रोत हैं और अपना हिस्सा प्राप्त करने के लिए मजदूरों को अवश्य संगठित होना चाहिए तथा आवश्यकता पड़ने पर क्रान्ति करनी चाहिए।

कार्ल मार्क्स ने १८६४ में पूँजीवाद को समाप्त करने के लिए सभी देशों के मजदूरों को "अन्तर्राष्ट्रीय श्रमिक संघ" में बाँधने का प्रयास किया। यह संगठन प्रथम इंटरनेशनल के नाम से प्रसिद्ध हुआ। प्रथम इण्टरनेशनल में कभी भी ज्यादा सदस्यता नहीं हो पायी और वह १८७६ में भंग हो गया। कुछ वर्षों बाद उसकी स्थानपूर्ति दूसरे इंटरनेशनल ने की। इन संगठनों ने सोशलिस्टों को प्रेरित किया कि वे सरकारों को पलटने के लिए हिंसात्मक वृत्ति की सीख दें।

लगभग प्रत्येक देश में सोशलिस्टों ने मार्क्सवादी विचारों के प्रसार के लिए राजनीतिक पार्टियाँ संगठित कीं। १८७५ और १९०६ के बीच जर्मनी, बेल्जियम, आस्ट्रिया, फ्रांस, रूस, ग्रेट ब्रिटेन और संयुक्त राज्य में सोशलिस्ट पार्टियाँ बन गयी थीं। २०वीं शताब्दि के आरम्भ तक यूरोप के अधिकांश देशों में सोशलिस्ट पार्टियाँ प्रमुखता प्राप्त कर चुकी थीं। उस समय तक उन्होंने अपने दल में सिर्फ मजदूरों को ही नहीं अपितु उन लोगों को भी शामिल कर लिया था जो उन समस्याओं के समाधान की तलाश में थे जिन्हें वे औद्योगिक क्रान्ति के साथ आई महसूस करते थे।

१९वीं शताब्दि के अन्तिम वर्षों में रूस में सोशलिस्ट डेमोक्रेटिक पार्टी संगठित हुई। इस पार्टी की कुछ बैठकें लन्दन में हुईं। इनमें से एक बैठक में, जो १९१० में हुई, पार्टी दो भागों में बँट गयी। एक भाग, मेंशेवीकी, यह विश्वास रखता था कि सोशलिस्ट उद्देश्यों की प्राप्ति धीरे-धीरे की जाय। दूसरा भाग, बोल्शेवीकी, जो बाद में कम्युनिस्ट पार्टी के नाम से प्रख्यात हुआ और जिसका नेता निकोलस लेनिन था, इस बात पर आस्था रखता था कि सिर्फ क्रान्ति और बल-प्रयोग ही प्रभावशाली शस्त्र हैं।

१९१० से ही कम्युनिस्ट इस बात का दावा करने लगे थे कि वह समय आने वाला है जब युद्ध पूँजीवादी देशों को इतना अशक्त बना देगा, कि

कम्युनिस्ट उनकी सरकारों को पलट सकेंगे और अपना कब्जा जमा सकेंगे। कम्युनिस्टों के बहुत से प्रयत्न स्वतन्त्र देशों की सरकारों को निर्बल बनाने की दिशा में रहे हैं और चल रहे हैं। लेनिन और अन्य कम्युनिस्टों का दावा था कि "सर्वहारा वर्ग का अधिनायकत्व" मजदूरों को सरकार और सम्पत्ति पर नियंत्रण दिलवायेगा। अब हम जानते हैं कि "सर्वहारा वर्ग का अधिनायकत्व" एक झूठा और दुष्टतापूर्ण विचार है। लेनिन की आस्थाओं के रूस में प्रयोग ने मजदूरों को उनकी स्वतन्त्रता, धर्म और जीवनयापन के उच्चस्तर से वंचित कर दिया है। साम्यवाद ने जनता को स्वतन्त्र चुनावों की सुविधाओं से वंचित कर उनसे अपने पदाधिकारियों की आलोचना का अधिकार भी छीन लिया है। चूंकि बोल्शेविज्म की स्थापना के शीघ्र बाद में कम्युनिस्टों को रूस में अपने सिद्धान्तों को क्रियान्वित करने का मौका मिला, इसलिए दुनिया को अब उसकी भारी कीमत चुकानी पड़ रही है।

१. १९वीं शताब्दि के प्रारम्भ में श्रमिक यूनियनों के लिए क्या-क्या सुविधाएँ प्राप्त की गयीं ?
२. चार्टिस्टों का उद्देश्य क्या था ?
३. मजदूर किस प्रकार अपनी स्थिति सुधारने के लिए कानून पास कराने में समर्थ हुए ? वे कानून क्या थे ?
४. सहकारिता आन्दोलन के क्या उद्देश्य थे ? किस देश में यह आन्दोलन सर्वाधिक सफल रहा ?
५. ओवन, चार्ल्स फूरयाँ, क्लूडे और लुई ब्लांक ने समाजवाद के जन्म में कौन सा पार्ट अदा किया ?
६. कहाँ सशक्त सोशलिस्ट पार्टियाँ विकसित हुई ?
७. कार्ल मार्क्स और फ्रेडरिक ऐंगल्स कौन थे ? श्रमिकों की दिक्कतों को दूर करने के लिए उनके क्या सिद्धान्त थे ?
८. प्रथम और द्वितीय इण्टरनेशनल क्या थे ?
९. बोल्शेविक या कम्युनिस्ट पार्टी किस प्रकार रूस में स्थापित हुई ? उसका नेता कौन था और उसके क्या विश्वास थे ?

प्रकृति के विद्यार्थियों ने नये सिद्धान्तों का निरूपण किया

१८वीं, १९वीं और २०वीं शताब्दियों के सभी आविष्कार और खोजें मशीनरी और औजारों से सम्बन्धित नहीं थीं। प्राकृतिक विज्ञान में किये गये परीक्षणों से कई आश्चर्यजनक नयी बातों का पता चला। बहुत सी खोजों का प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष प्रभाव उद्योग पर पड़ा, परन्तु, उन सभी चेतन प्रयासों का परिणाम यह नहीं था कि श्रमिकों का बोझ हलका करने या उत्पादन में तेजी लाने के लिए मशीनरी बनायी जाय। बहुत सी खोजों का लक्ष्य स्वास्थ्य की समस्या और पदार्थ जगत् के गुप्त रहस्यों का पता लगाना था।

प्रकृतिवादी—१८वीं शताब्दी में आज की अपेक्षा विज्ञान के अध्ययन में कम विशेषज्ञता थी। भू-विज्ञान, भौताकृतिकतत्त्व, वनस्पति-शास्त्र, प्राणि-विज्ञान तथा अन्य विज्ञानों के जो आज इतने सुपरिचित हैं, स्थान पर वैज्ञानिक "प्राकृतिक विज्ञान" नामक आम संज्ञा के अन्तर्गत प्रकृति का अध्ययन करते थे।

हमबोल्ट ने ध्वनि के वेग को नापा। उसकी अन्य उपलब्धियों में विश्व को जलवायु का नक्शा भी है।

बेटीमैन आर्काइव

शायद इन सब लोगों में अलेक्जेण्डर वोन हमबोल्ट (१७६९-१८५९) और लुइस आगासी (१८०७-१८७३) सबसे ज्यादा प्रसिद्ध थे। वोन हमबोल्ट ने इंग्लैंड, फ्रांस और जर्मनी में अध्ययन किया। तब पाँच वर्षों तक वह मध्य और दक्षिण अमेरिका में एक अभियान का नेतृत्व करता रहा, जहाँ उसने जलवायु, निवासियों, पेड़-पौधों और वन्य पशु जीवन का अध्ययन किया। अपनी वृद्धावस्था में उसने अपने ज्ञान को पाँच भागों में लिखा, जिसे "कौसमोस" नाम दिया गया। इनमें उसने अपने जमाने के वैज्ञानिक ज्ञान को संक्षेप में लिखा। यह विश्व का एक बहुत बड़ा वैज्ञानिक ग्रन्थ है।

आगासी, जो वोन हमबोल्ट का दोस्त था, स्विट्जरलैंड में पैदा हुआ था। वह जर्मन विश्वविद्यालयों में दवाओं की पूर्ण ट्रेनिंग प्राप्त करने के बाद लेक्चर देने अमेरिका आया था। अमेरिका में उसने मछली, ग्लेशियरों और प्रकृति के अन्य पहलुओं के बारे में अपना अध्ययन जारी रखा और दुनिया के एक विशेषज्ञ के रूप में प्रख्यात हुआ। हारवर्ड में एक शिक्षक के रूप में आगासी ने अमेरिका में प्राकृतिक विज्ञान के अध्ययन को प्रोत्साहन दिया।

सर चार्ल्स लायल—१९वीं शताब्दि के मध्यान्तर के बाद से विशेषज्ञता का चाव बढ़ने लगा। सर चार्ल्स लायल (१७९७-१८७५) ने, जो बहुत योग्य अंग्रेज भू-वैज्ञानिक था, "भू-विज्ञान के सिद्धान्त" नामक एक पुस्तक लिखी, जिसमें बताया गया था कि वर्षा, नदियों, ग्लेशियरों और ज्वालामुखी के उद्गारों से आज धरती की सतह पर किस तरह परिवर्तन हो रहे हैं और हवाएँ आसानी से स्पष्ट कर सकती हैं कि धरती के धरातल का मौजूदा रूप क्यों बना। अपने सबूतों की खोज में लायल ने संयुक्त राज्य की दो बार यात्राएँ कीं, जहाँ उसने जीवाश्म और चट्टानों की बनावट का अध्ययन किया। उसने अपने साथी वैज्ञानिकों को विश्वस्त कर दिया कि दुनिया छः हजार वर्ष पहले नहीं बनी थी, जैसा कि आम लोगों की धारणा है, अपितु लाखों वर्ष पुरानी है।

चार्ल्स डार्विन—शायद १९वीं शताब्दि का सबसे उल्लेखनीय वैज्ञानिक चार्ल्स डार्विन (१८०९-१८८२) नामक अंग्रेज ही था जो स्कूल में इतना बोदा था कि उसका पिता उसके बारे में चिन्तित रहता था। अपना "घर का काम" करने के बजाय वह अपना समय देहात में पौधों की किस्मों के अध्ययन में बरबाद करता था। जब उसके पिता ने उससे कालेज जाने को कहा तो युवक डार्विन ने उसके बदले दुनिया के सर्वेक्षण अभियान में जाना पसन्द किया। उसकी यात्रा उसे दूर अपरिचित स्थानों में ले गयी जहाँ उसने सब प्रकार की वनस्पतियों के नमूने इकट्ठे किये। १८५९ में अपनी सबसे महत्त्वपूर्ण और प्रमुख किताब लिखने से पूर्व उसने वर्षों उनका अध्ययन किया। "प्राकृतिक चयन द्वारा स्पीशीज़ का उद्गम" के बाद उसने "मानव की उत्पत्ति" नामक पुस्तक लिखी।

२१ वर्ष की उम्र में डार्विन ने अपने जीवन-कार्य के लिए सबसे अच्छी शिक्षा पा ली—उसने विभिन्न क्षेत्रों में प्रकृति का अध्ययन करने के लिए विश्व के चारों ओर चक्कर लगाया।

इन पुस्तकों में डार्विन ने अपने विकासवाद के सिद्धान्त का निरूपण किया। इस सिद्धान्त के अनुसार दुनिया में पायी जानेवाली विभिन्न स्पीशीज़ अलग-अलग समय में नहीं बनीं अपितु वे सब एक ही स्रोत से उत्पन्न हुईं। इस प्रकार चार्ल्स डार्विन ने प्रकृति का ऐतिहासिक अध्ययन किया। ऐतिहासिक पद्धति ने तब से वैज्ञानिकों को प्रकृति के बहुत से रहस्यों को स्पष्ट करने में मदद दी है। डार्विन ने यह भी कहा है कि किसी एक समय में दुनिया में इतनी ज्यादा स्पीशीज़ थी कि उनके लिए खुराक पाना कठिन था। वे स्पीशीज़, जिनमें जीवन धारण

की खूबियाँ थीं, जीवित रहीं और अन्य शताब्दियों के जीवन संघर्ष के बाद नष्ट हो गयीं। इसे "योग्यतम की अतिजीविता" का सिद्धान्त कहा जाता है।

डार्विन के सिद्धान्त दुनिया के लिए नये नहीं थे। उसके दादा ने "विकासवाद के सिद्धान्त" को जाना था। फ्रांसीसी वैज्ञानिक लामार्क ने ५० वर्ष पहले विकासवाद के एक सिद्धान्त को स्पष्ट किया था। तथापि, डार्विन ने सिद्धान्त के लिए बहुत सारे सबूत इकट्ठे किये थे। वह एक अच्छा लेखक भी था और अपने सिद्धान्त को प्रचारित कर सकता था। हाल के कई अध्ययनों ने डार्विन के विचारों में कुछ त्रुटियों की ओर संकेत किया है लेकिन उसकी पुस्तक ने प्रकृति के बारे मे मानव विचारों को बदल डाला।

१. "प्रकृतिवादी" कौन कहलाता था ?
२. लुई आगासी और अलेक्जेण्डर वोन हमबोल्ट कौन थे ?
३. लायल ने मानव की विश्व के बारे में विचार-धारा में क्या परिवर्तन ला दिया था ?
४. विकासवाद का सिद्धान्त क्या है ? इसे किसने प्रचारित किया ?
५. लायल, वोन हमबोल्ट और डार्विन द्वारा कौन-कौन सी पुस्तकें लिखी गयीं ?

भौतिक शास्त्र में नयी खोजें

विद्युत् का प्रकाश—अधिकांश आविष्कार और खोजें कई लोगों के कार्यों का परिणाम हैं। उदाहरण के लिए, बिजली के बल्ब को ही ले लो। अठारहवीं शताब्दि के मध्य में बेंजामिन फ्रेंकलिन ने यह खोज कर ली थी कि तड़ित् (बादलों की बिजली) और बिजली एक ही चीज हैं और १८०० के लगभग, एक इटालियन, काउण्ट वोल्टा ने, एक बिजली की बैटरी का आविष्कार किया। बहुत से लोग प्रकृति की इस रहस्यमयी शक्ति के बारे में अधिकाधिक जानकारी हासिल करने के लिए परीक्षण करते रहे। अगला परीक्षण सर हम्फ्री डेवी ने किया, जिसने बिजली की रोशनी का सिद्धान्त सीख लिया था। लेकिन १८७९ से पहले जब अमेरिका के टामस एडीसन ने बिजली के बल्ब का ढाँचा तैयार किया, बिजली की रोशनी नहीं थी।

एडीसन के कई आविष्कारों में बिजली का प्रकाश भी एक था। उनकी प्रतिभा के परिणाम-स्वरूप ५०० नयी चीजें बनीं या प्रणालियाँ निकलीं जिन्हें उसने पूर्ण या आंशिक तौर पर बनाया था।

टेलीग्राफ और टेलीफोन—अमेरिकनों ने अन्य क्षेत्रों में भी अध्ययन जारी रखा। सेमुअल
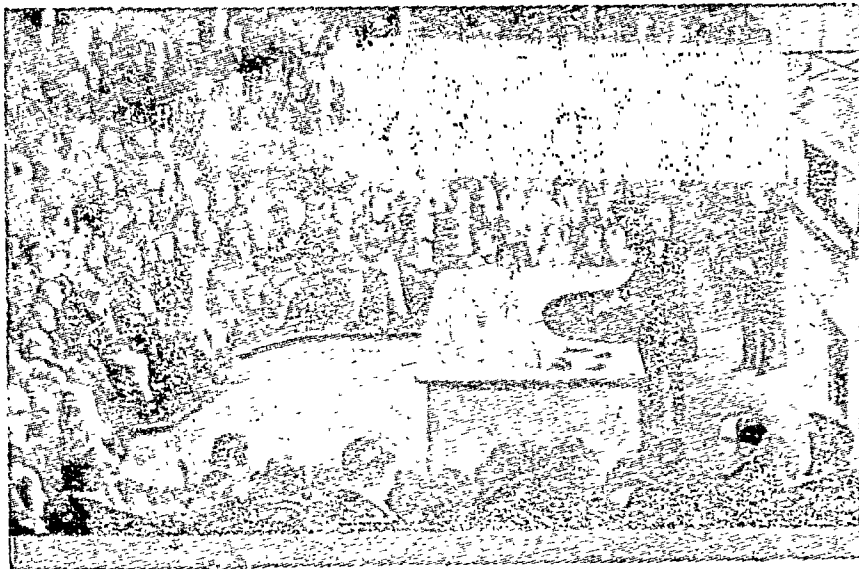
बर्नडाई लाइब्रेरी

माइकल फैरेडे नामक एक अंग्रेज और जोसफ हेनरी नामक एक अमेरिकी ने लगभग साथ ही साथ बिजली की मोटरों के निर्माण के सिद्धान्त को खोज निकाला। यहां फैरेडे अपने डायनमो का प्रदर्शन कर रहा है।

एफ० बी० मोर्स ने जो एक आर्टिस्ट और वैज्ञानिक था, १८४४ में बिजली को टेलीग्राफ में प्रयुक्त किया।

अलेक्जेण्डर ग्राहम बेल बहरों के प्रशिक्षण के लिए स्काटलैण्ड से अमेरिका आया था। मानव वाणी में उसकी दिलचस्पी ने उसे परीक्षणों की प्रेरणा दी, जिसका परिणाम १८७६ में टेलीफोन का आविष्कार हुआ।

डायनमो—इस दिशा में दूसरा महत्त्वपूर्ण कदम डायनमो का आविष्कार था। माइकल फैरेडे जो लंदन के एक लुहार का पुत्र था, पुस्तकें बेचने का काम सीखता था। फैरेडे की स्कूली शिक्षा बहुत सामान्य हुई थी, लेकिन अपने काम में उसे विस्तृत अध्ययन का मौका था और उसने उसका लाभ उठाया। स्वतः ही बहुत कुछ पढ़ा। उसके अध्ययन ने उसके मन में वैज्ञानिक बनने की लालसा जगायी। उसने सर हेम्फ्री डेवी से नौकरी माँगी। फैरेडे शीघ्र ही डेवी से भी आगे बढ़ गया और ३४ वर्ष की उम्र में ग्रेट ब्रिटेन के रायल इंस्टीच्यूट का अध्यक्ष बन गया। वहाँ उसने अपनी खोज बिजली के व्यावहारिक प्रयोगों द्वारा जारी रखी। पाँच वर्ष बाद उसने एक बिजली के डायनमो का आविष्कार किया। गोकि उसका डायनमो व्यावहारिक प्रयोग के काम का नहीं था, फिर भी फैरेडे ने सिद्धान्त निरूपित कर दिया था और अपने आविष्कार को व्यावहारिक बनाने का काम औरों के लिए छोड़ता हुआ वह अन्य बातों के अध्ययन में लगा रहा। इसे वे १८७० में बना पाये। डायनमो से बिजली के वितरण में बड़ा परिवर्तन आ गया। अब एक स्थान पर पैदा की गयी बिजली मीलों दूर प्रयुक्त हो सकती थी।

मानव शरीर के अध्ययन में प्रगति

विसंज्ञक—रसायनशास्त्र और भौतिकी के अध्ययन से विसंज्ञकों (बेहोश करने की दवाओं) की पहली किस्में ज्ञात हुईं। एक की खोज डेवी ने और दूसरी की फैरेडे ने १८ वीं शताब्दि के आरंभ में की थी। ईथर में विसंज्ञक अंशों का रहना १८१८ में फैरेडे ने खोज निकाला था और चीर-फाड़ में उसका प्रयोग जेफरसन, जार्जिया के डाक्टर क्राफोड डब्लू० लौंग ने १८४२ में और बोस्टन के एक दंत चिकित्सक डाक्टर डब्लु० टी० जी० मार्टन ने डाक्टर जे० सी० वारन द्वारा किये गए एक आपरेशन में १८४६ में किया।

रोगाणुरोधक—रोगाणुरोधक दवाओं के क्षेत्र में सुप्रसिद्ध व्यक्ति एक अंग्रेज सर्जन जोसफ़ लिस्टर था। उसने छूत से, जिसने शल्य चिकित्सा को अब तक इतना खतरनाक बना दिया था, कार्बोलिक एसिड के परीक्षण किये। उसने शल्य चिकित्सा में फ्रांसीसी रासायनिक लुई पाश्चर (१८२२-१८९५) के सिद्धान्तों को अपनाया, जिसने कुछ समय पहले परीक्षणों से यह परिणाम निकाला था कि बीमारी के कारण अणुजीव हैं। लिस्टर और पाश्चर की खोज ने चिकित्सा के क्षेत्र में काया पलट कर दिया।

टीका (वेक्सिनेशन)—चिकित्सा में दूसरी प्रगति तब हुई जब यह जान लिया गया कि लोगों के

लंका की एक छोटी लड़की को लंका सरकार और संयुक्त राष्ट्र के तत्त्वावधान में तपेदिक के बचाव का टीका लगाया जा रहा है।

यूनाइटेड नेशन्स
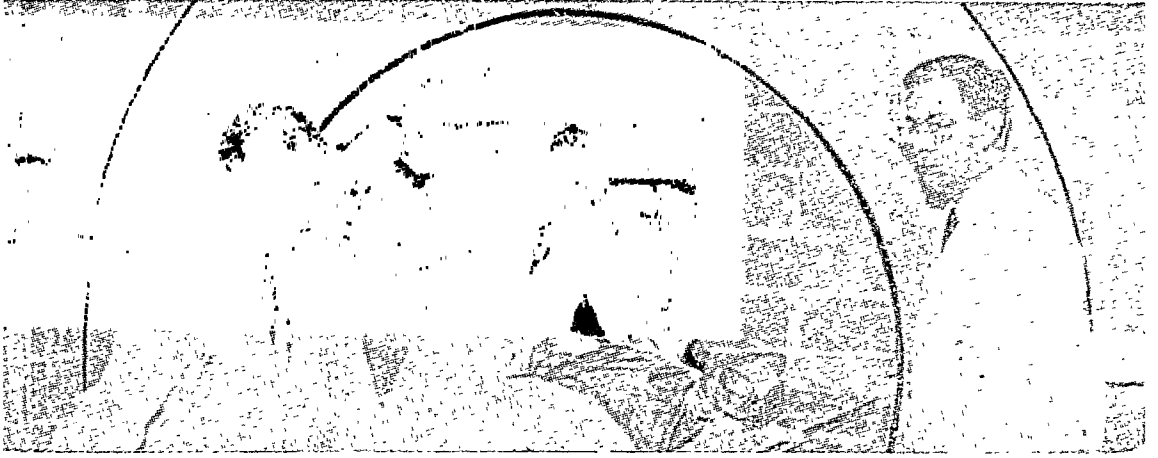
अमेरिकन कैंसर सोसायटी

कैंसर 'डोनट' १ करोड़ २० लाख डालर मूल्य के रेडियम का विकिरण डालने वाला यंत्र है। रेडियो-धर्मी यंत्र से किरणें बाईं ओर से अन्दरूनी हिस्से में कैंसर पर पड़ती हैं और रुग्ण कोशिकाओं को नष्ट कर देती हैं।

शरीर को कुछ खास बीमारियों से निरापद किया जा सकता है। एडवर्ड जेन्नर (१७४९-१८२३) ने चेचक से बचने का टीका खोज निकाला। जर्मन डाक्टर राबर्ट कोच (१८४३-१९१०) ने हैजे का कारण दण्डाणु को पाया। उसकी खोज से अन्य डाक्टरों ने अन्य बीमारियों जैसे मुखबंध, मलेरिया और डिप्थीरिया को उत्पन्न करने वाले दंडाणुओं के इस परिज्ञान से चिकित्सा की सम्पूर्ण समस्या को एक नया दृष्टिकोण दिया।

एक्सरे—एक्सरे का आविष्कार जर्मन वैज्ञानिक विलहेल्म रुन्टजेन ने किया, जो विश्वविद्यालय में पढ़ाने के बाद के समय में इस पर शोधकार्य करता था। एक दिन दोपहर को जब वह अपनी प्रयोगशाला में काम कर रहा था, उसने देखा कि उस ट्यूब की किरणें, जिससे वह काम कर रहा था, ठोस पदार्थ के भीतर से गुजर सकती हैं। वह निरन्तर उसी चीज की खोज करने लगा जिसे उसने अचानक ही पाया था। उसके परिश्रम का फल चिकित्सा-विज्ञान में एक्सरे का प्रयोग था। डाक्टर टूटी हुई हड्डियों, दाँतों की जड़ों और शरीर के अन्दरूनी हिस्सों का पता एक्सरे से चला सकते थे। रुन्टजेन की चिकित्सा-विज्ञान को यह सबसे महत्त्वपूर्ण देन है। एक्सरे या रुन्टजेन रे कुछ बीमारियों के इलाज में भी महत्त्वपूर्ण हैं।

रेडियम—१८९८ में, एक फ्रांसीसी वैज्ञानिक पेरी क्यूरी और उसकी पोलिश पत्नी, मेरी क्यूरी, ने यह पता लगा लिया कि पिचब्लैण्ड नामक खनिज से रेडियम अलग किया जा सकता है। कुछ बीमारियों के इलाज में, जिनमें कैंसर भी है, रेडियम महत्त्वपूर्ण बन गया।

एक बदली हुई दुनिया—इन दिशाओं में और अन्य कई क्षेत्रों में, विज्ञान ने दुनिया को बदल डाला। आविष्कारों और खोजों ने स्वास्थ्य में सहायता पहुँचाई, मजदूरों के कंधों से वह बोझ उठाया जिसे वे ढोते थे और आम तौर से जीवन को अधिक सुगम, खुशहाल और अधिक दिलचस्प बनाया। मानव पाषाण युग में बहुत लम्बी यात्रा कर चुका था। अब दुनिया में वैज्ञानिक युग आ गया था।

१. निम्नलिखित व्यक्तियों में से प्रत्येक ने विज्ञान को क्या योगदान किया : सेमुअल एफ० बी० मोर्स, टामस एडीसन, विलहेल्म वोन रुन्टजेन,

पेरी और मेरी क्यूरी, बेंजामिन फ्रेंकलिन, हम्फ्री डेवी और माइकल फैरेडे।

२. १६वीं शताब्दि के किन लोगों ने विसंज्ञकों (एनेस्थटिक्स) के प्रयोग का पता लगाया ?

३. जोसफ लिस्टर, लुई पाश्चर, एडवर्ड जेन्नर और राबर्ट कोच के योगदान का उल्लेख करो।

विचार-विमर्श के लिए प्रश्न

१. संयुक्त परिवार के क्या फायदे हैं ? क्या उसमें कोई खराबियाँ भी हैं ?

२. गंदी बस्तियाँ समुदाय के लिए किस तरह महंगी पड़ती हैं ? क्या तुम उदाहरण दे सकते हो ?

३. पेशेवर खिलाड़ियों और शौकिया खिलाड़ियों के लाभों का मुकाबला करो।

४. किस प्रकार कार के आविष्कार ने परिवार को विघटित किया ?

५. क्या तुम सहमत हो कि परिवार जीवन की एक "बुनियादी संस्था" है।

६. क्या हमेशा परिवार के रहन-सहन का मापदण्ड उसकी आमदनी से आँका जाता है ?

७. व्यक्तिगत उद्योगों को उद्योगों के सरकारी मालिकाना अधिकार के मुकाबले क्या फायदे है ?

८. कौन सा शब्द-समूह सही है: अनिवार्य स्कूली उपस्थिति या अनिवार्य शिक्षा ? क्यों ?

९. टामस जफरसन का यह कहना कहाँ तक सत्य है कि "अगर एक राष्ट्र एक सभ्यता के युग में अनभिज्ञ और स्वतन्त्र रहने की उम्मीद करता है तो वह ऐसी चीज की आशा करता है जो न कभी थी, न कभी होगी।"

१०. चिड़ियों, कीड़े-मकोड़ों या अन्य जानवरों की आकृतियों से उदाहरण देकर समझाओ कि कौन-कौन से अंगों का उन्होंने विकास किया जिन्होंने उनकी जाति को जीवित रहने में मदद पहुँचाई ?

११. क्या तुम पाश्चर के इस कथन से सहमत हो कि "मेरा यह दृढ़ विश्वास है कि विज्ञान और शान्ति की अज्ञान और युद्ध पर विजय होगी, राष्ट्र एक होंगे, एक-दूसरे को नष्ट करने के लिए नहीं अपितु निर्माण के लिए, और भविष्य उनका है जो मानवता के लिए अधिक दे सकेंगे।"

इतिहास के उपकरणों का प्रयोग

एक. नाम तिथियाँ और स्थान

१. क्या तुम इन शब्दों को स्पष्ट कर सकते हो ?

क्रिश्चियन सोशलिस्ट···साम्यवाद···कम्युनिस्ट घोषणापत्र··· सहकारिता··· "अभिजात वर्ग का अधिनायकत्व"···विकास···प्रथम इंटरनेशनल··· प्राकृतिक विज्ञान···जनता का चार्टर···द्वितीय इंटरनेशनल··· यूरोपियन सोशलिस्ट···"योग्यतम की अतिजीविता।"

२. नक्शे में निम्नलिखित स्थान दिखाओ :

आस्ट्रिया···बेल्जियम···बोस्टन···मैस्सेच्युसैट्स···फ्रांस···जर्मनी···ग्रेट ब्रिटेन···इण्डियाना···रूस···स्काटलैंड।

३. इन व्यक्तियों के बारे में तुम क्या जानते हो ?

लुइस आगासी···मेरी क्यूरी···पेरी क्यूरी··· चार्ल्स डार्विन···हम्फ्री डेवी···टामस एडीसन··· फ्रेडरिक ऐंगल्स···माइकल फैरेडे···साइरस फील्ड ···चार्ल्स फ्यूरा···बेंजामिन फ्रेंकलिन···अलेक्जेण्डर वान हमबोल्ट···एडवर्ड जेन्नर···राबर्ट कोच··· निकोलस लेनिन···जोसफ लिस्टर···सर चार्ल्स लायल···कार्ल मार्क्स···सर टामस मोर···डब्लु० जी० टी० मोर्टन···सेमुअल एफ० बी० मोर्स राबर्ट ओवन···लुई पाश्चर···विलहेल्म वान रुन्टजेन···क्लूड हेनरी सेंट सीमोन···काउण्ट वोल्टा।

दो. क्या तुम अपनी बात स्पष्ट कह सकते हो ?

१. अपने घर की रसोई के बर्तनों और अन्य सामग्री के बारे में लिखो जो १७५० में एक धनी व्यक्ति की रसोई में नहीं होती होगी।

छह ऐसी सवारियों की सूची बनाओ जिन्हें तुम दैनिक प्रयोग में लाते हो। लेकिन १७५० में लोगों को वे उपलब्ध नहीं थीं। मिलान के लिए अपनी सूची कक्षा में लाओ।

२. निम्नलिखित विषयों में से एक पर कक्षा को मौखिक रिपोर्ट सुनाओ :

(क) तुम्हारी बस्ती के अधिकारियों के पास बस्ती को विभिन्न कार्यों के पृथक् क्षेत्रों में बाँटने की कौन सी योजना है ?

(ख) तुम्हारे समुदाय में कौन सी गन्दी बस्तियाँ साफ की गयी हैं और कौन सी साफ करने की जरूरत है ?

(ग) वाशिंगटन शहर की योजना।

(घ) तुम्हारे समुदाय में शिक्षा का इतिहास।

(ङ) तुम्हारे स्कूल का इतिहास।

(च) बीते हुए युगों में कुछ बीमारियों का प्रभाव, जैसे चेचक, जिस पर अब नियन्त्रण पा लिया गया है।

(छ) संयुक्त राज्य के पेटेंट आफिस का उद्देश्य।

३. कक्षा में सुनाने के लिए "घर में मेरा उत्तरदायित्व या अच्छे पारिवारिक जीवन के लिए आवश्यक बातें" पर एक निबन्ध लिखो।

४. एक "रिप वान विंकल" के साथ, जो दो सौ वर्षों तक सोने के बाद तुम्हारे स्कूल में प्रविष्ट होने के वर्ष जागा हो, काल्पनिक बातचीत लिखो।

५. आज की कुछ बीमारियों की सूची बनाओ जिन पर नियन्त्रण पाना बाकी है।

तीन. ब्लैक बोर्ड पर

एक खेल ऐसा चुनो जिसमें तुम्हारी अभिरुचि है। उसका इतिहास मोटे तौर पर ब्लैक बोर्ड पर बताओ या ब्लैक बोर्ड पर रेखाचित्र बनाकर किस तरह उसे खेला जाता है, यह समझाओ।

चार. क्लास कमेटी का कार्य

स्वास्थ्य बोर्ड, मेयर या स्कूल नर्स से मिलकर उन सभी एजेन्सियों की लिस्ट प्राप्त करने के लिए एक कमेटी नियुक्त करो जो रोगियों की देखभाल करती हैं। उनमें से प्रत्येक को अपने क्षेत्र या काउण्टी के नक्शे में दिखाओ।

३१ नये उद्योग और विज्ञान का साहित्य और कला पर प्रभाव

जीवन के एक पहलू में यदि कुछ होता है तो अन्य क्षेत्रों में उसका प्रभाव पड़े बगैर नहीं रहता। दुनिया को बदल देने वाले औद्योगिक, कृषि सम्बंधी, राजनीतिक और वैज्ञानिक परिवर्तनों का भी साहित्य और कला पर प्रभाव पड़े बगैर नहीं रह सकता था। जब पूँजीपति उत्पादन और बिक्री के और बेहतर तरीके सोचने में लगे थे और मजदूर और किसान अपनी मजदूरी बढ़ाने के प्रयास में थे; आविष्कारक और वैज्ञानिक पदार्थ जगत् का अध्ययन कर रहे थे, उस समय लेखक, चित्रकार और शिल्पी भी अपने को व्यक्त कर रहे थे।

कुछ लेखकों ने स्वच्छन्दता का भाव अपनाया

१८ वीं शताब्दि के उत्तरार्द्ध और १६ वीं शताब्दी के प्रारम्भ में साहित्य और कला में जो भावनाएँ अभिव्यक्त हुईं वह "स्वच्छन्दतावाद" कहलाता है। स्वच्छन्दतावादियों के प्रेरणा के बहुत सूत्र थे, लेकिन वे सभी अपनी कल्पनाशक्ति का सहारा लेते थे और महज तथ्यों के पुनर्निरूपण के बजाय अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति में अधिक दिलचस्पी रखते थे। कुछ लेखकों, चित्रकारों और शिल्पियों ने बीते हुए युगों को, विशेषकर मध्यकाल को अपनी अभिव्यक्ति की विषय-वस्तु बनाया, जैसा कि सर वाल्टर स्काट ने "आइवानहो" में या टेनीसन ने अपने "आइडिल्स आफ दि किंग" में दिखलाया है।

"मुझे बना दो अपना सरदार, क्योंकि मैं
जानता हूँ, महाराज,
सरदारी के बारे में सब कुछ, और प्रेम
करना।"

कुछ अन्य लेखकों ने गरीबों और पददलितों की परिस्थितियों का चित्रण कर भावनाओं को उभारा और कुछ अन्य प्रेरणा के लिए प्रकृति की ओर झुके। यहाँ शैली स्काई लार्क चिड़िया को एक कवित्वमय श्रद्धांजलि देता है।

स्वागत तेरा, प्रसन्न आत्मा,
तू चिड़िया कभी नहीं थी,
स्वर्ग से या इसके समीप से
उंडेलती है तू अपना पूरा हृदय
स्वत: स्फूर्त कला के सुन्दर छन्दों में

स्वच्छन्दतावादियों ने कभी-कभी अपनी विषय-वस्तु में राष्ट्रीयता और देशभक्ति को लिया है, जैसा कि विलियम कौलिन्स ने अपने देश की सेवा में मारे गये सैनिकों के प्रति अपने गीत में कहा है:

जो वीर अपने देश की सम्पूर्ण शुभकामनाओं से भर कर गिरते हैं, वे इस प्रकार सोते हैं। जब वसन्त अपनी शीतल ओसभरी उँगलियों से उनके मुख की आभा संवारने आएगी, तब वह कल्पना की पहुँच से भी अधिक मधुर मिट्टी से उनका शृंगार कर जाएगी।

विलियम वर्ड्सवर्थ एक साधारण देहाती जीवन का कवि था जो इंग्लैंड के सुन्दर झीलों वाले देहाती क्षेत्र में घूमने में घंटों बिता देता था। उसने घूमते हुए हवा में लहलहाते हुए डेफोडिलों का एक विस्तृत क्षेत्र देखा था।

काईदार पत्थर के निकट कोई वायलेट फूल,
आँख से आधा छिपा हुआ।

एक अन्य अंग्रेज स्वच्छन्दतावादी रावर्ट ब्राउनिंग ने अपने जीवन का अधिकांश हिस्सा इटली में बिताया। उसने इटली की पुनर्जागरण कला का अध्ययन किया और उस जमाने के लोगों के बारे में कविताएँ लिखीं। उसने कविता की परम्परागत प्रणाली का विरोध कर अधिक मुक्त छंदों का प्रयोग किया।

साल की वसन्त है,
वसन्त का है प्रात:;
प्रात: का सात है;
पहाड़ी पर ओस के मोती हैं;
लार्क उड़ रही है;
घोंघा कांटे पर है;
भगवान् अपने स्वर्ग में हैं;
दुनिया मज़े में चल रही है।

जो कोई भी विषय, रोमांटिक कवियों ने चुना, उसमें उन्होंने १८ वीं सदी के आंरभ की कविता के क्लिष्ट रूप का विरोध किया और उनमें से अनेक ने, अपनी कविताओं के द्वारा, अपने देशों के स्वाधीनता संग्राम में योगदान किया। जर्मन राज्यों में सुधार की भावना ने जर्मन कवियों को भी प्रेरित किया। इनमें से दो जॉन वुल्फगेंग वान गेटे और जॉन शीलर थे। गेटे बहुमुखी प्रतिभा का व्यक्ति था, लेकिन उसकी सबसे महान् साहित्यिक कृति एक मध्ययुगीन किंवदन्ती पर आधारित नाटकीय कविता "फाउस्ट" है।

शीलर आलोचक, नाटककार और कवि था। उसकी उल्लेखनीय कृति "विलियम टैल" थी जो "फाउस्ट" की ही भाँति नाटक के रूप में ढाली गयी। शीलर की बहुत-सी कृतियाँ स्वतंत्रता और मानव की स्वाधीनता के निमित्त लिखी गयी थीं। उसने अपने काल के जर्मन उदारतावादियों को प्रेरणा दी।

स्वच्छन्दतावादी (रोमांटिक) उपन्यासकार—१८ वीं शताब्दि में उपन्यास एक नया साहित्यिक रूप था। लेकिन वह पाठक वर्ग के बीच १९ वीं शताब्दि से पहले लोकप्रिय नहीं हो पाया। इस काल में इंग्लैंड में कुछ सर्वश्रेष्ठ उपन्यास लिखे गये। सर वाल्टर स्काट के उपन्यास मध्ययुगों के इतिहास पर आधारित थे। उनमें से बहुप्रचलित "आइवान हो" और "केनिलवर्थ" हैं। दूसरी ओर चार्ल्स डिकन्स ने सिर्फ मनोरंजन के लिए ही कहानियाँ नहीं लिखीं अपितु कठोर परिश्रम करने वाले बच्चों

रावर्ट ब्राउनिंग अपनी कविता एलिजाबेथ बारेट को सुना रहा है जो स्वयं कवयित्री थी। बाद में दोनों का विवाह हो गया था।

और इंग्लैंड की जेलों में सड़ने वाले कर्जदारों की दुर्गति का चित्रण अपनी भावनात्मक भाषा में खींचा। या उसने अपने जमाने के स्कूलों की गरीबी

का ऐसा चित्र खींचा कि उसके पाठकों का ध्यान उस ओर आकर्षित हुआ। जार्ज इलियट नामक प्रथम महिला ने, जिसे उपन्यासकार के रूप में ख्याति मिली, इस कल्पित नाम से साधारण परिस्थितियों के लोगों के बारे में या गरीब और पीड़ित लोगों के बारे में लिखा। फ्रांसनिवासी विक्टर ह्यूगो ने अपनी प्रभावशाली और लच्छेदार भाषा में अपने इर्द-गिर्द के लोगों के दुःख-दैन्य की तसवीर खींची। दूसरे फ्रांसीसी लेखक अलेक्जेण्डर ड्यूमा ने ऐतिहासिक उपन्यास लिखे, जिनमें उल्लेखनीय "तीन तिलंगे" (थ्री मस्केटियर्स) है।

रूसियों के, नैपोलियनकालीन युद्धों के बाद, जर्मनों और अंग्रेजों के सम्पर्क में आने पर स्वच्छन्दतावाद की भावना वहाँ भी फैली। राष्ट्रीयता का भाव रूस के प्रथम महान् साहित्यकार अलेक्जेण्डर पुश्किन की कृतियों में प्रतिबिम्बित होता है। पुश्किन ने रूस के प्राचीन वीरों और पीटर महान् के स्वीडन को हराने के वीरतापूर्ण कार्यों के बारे में लिखा। दूसरा स्वच्छन्दतावादी रूसी लेखक तुर्गनेव था जिसने अपने घरेलू क्षेत्र में गरीब और विशेषाधिकार रहित लोगों के बीच देखी गयी हृदयस्पर्शी घटनाओं और दृश्यों का वर्णन किया। उसके लेख रूस में पैदा होने वाली क्रांतिकारी भावना का एक अंग थे।

स्वच्छन्दतावाद दूसरे देशों में भी फैला। संयुक्त राज्य, स्कैण्डिनेविया, नीदरलैंड्स, पोलैंड और स्पेन, सभी देशों ने स्वच्छन्दतावादी साहित्य का सर्जन किया। इतिहास, राष्ट्रवाद, सामाजिक सुधार और प्रकृति-प्रेम, जहाँ कहीं भी स्वच्छन्दतावादी साहित्य फला-फूला, उनके लिए विषय-वस्तु बने।

स्वच्छन्दतावाद के बाद यथार्थवाद

स्वच्छन्दतावाद की भावना जारी रही, लेकिन १९ वीं शताब्दि के अन्तिम वर्षों में कुछ लेखक और चित्रकार यथार्थवाद के नये भाव की ओर झुके। यथार्थवादी अपने विषय को चटक-मटक या कल्पना से आच्छादित नहीं करते थे। उन्होंने जीवन को यथारूप दिखलाने का प्रयास किया लेकिन अकसर उन्होंने अपना केन्द्र बदसूरत, अश्लील और दोषपूर्ण अंग को बनाया और बुराई के साथ जो अच्छा और सुन्दर था उस पर कम ध्यान दिया।

जार्ज बर्नार्ड शा के **मैन एण्ड सुपरमैन** का एक दृश्य, जिसे उसने बीसवीं शताब्दि के प्रारंभिक सामाजिक रिवाजों पर टीका करने के लिए लिखा था। शा स्वयं नाटक लिखने से पहले संगीत तथा ड्रामा आलोचक के रूप में प्रतिष्ठित था।
मौरिस ईवन्स

लेखक गण—स्वच्छन्दतावाद या कल्पनावाद की ही भाँति यथार्थवाद भी किसी एक देश में सीमित नहीं रहा। फ्रांस के अनातोले फ्रांस (१८४४-१९२४) को अपने चारों ओर इतनी बुराइयाँ और बेवकूफियाँ नज़र आई कि उसे इस दुनिया को अच्छी दुनिया बनाने की मनुष्य की योग्यता के बारे में ज्यादा आशा नहीं थी। धार्मिक प्रभाव के बारे में उसका निराशावाद उसके उपन्यास "दि रिवोल्ट आफ़ द एंजिल्स" मे व्यक्त हुआ। टामस हार्डी ने अपने उपन्यासों में उस थोड़े से अस्तित्व का वर्णन किया जिसके लिए अंग्रेज किसानों और ग्रामीणों को इतनी सख्त मेहनत करनी पड़ती थी। "मेयर आफ़ केस्टरब्रिज" उसके कई उपन्यासों में से एक था जो उसने इस आधार पर लिखे। बाद में एक आइरिश, बर्नार्ड शा ने कई साहित्यिक रूपों में जीवन के बारे में ही सब टीका-टिप्पणी लिखी, लेकिन उसका नाम नाटककार के रूप में ज्यादा प्रसिद्ध है। मनोरंजक होने के साथ-साथ वे सामाजिक समस्याओं पर भी ध्यान केन्द्रित करते थे। एक अंग्रेज साइंस टीचर, एच० जी० वेल्स ने उपन्यासों को विज्ञान के भावी चमत्कारों की नयी दिशा दी। वह दुनिया की बुराइयाँ मिटाने के बारे में आशावादी था और उसने "ए माडर्न यूटोपिया" में हमारी जानकारी से अधिक नेक दुनिया का वर्णन किया। नार्वे में पैदा हुए हेनरिक इब्सन नामक साहित्यकार को अपने नाटकों के लिए अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त हुई। "ए डौल्स हाउस" उन अनेक रचनाओं में एक था जिसने सामाजिक समस्याओं की ओर जनता का ध्यान खींचा। काउण्ट लियो तालस्ताय, जो एक रूसी सामन्ती परिवार का था, रूसी किसानों के जीवन को सुधारने के बारे में गहरी दिलचस्पी रखता था। गोकि क्रीमिया युद्ध में उसने रूसी सेना में काम किया था लेकिन उसका विश्वास था कि युद्ध एक भयानक सामाजिक बुराई है और उसका उपचार होना चाहिए। उसने शांतिवाद का प्रसार करने के लिए "वार एण्ड पीस" नामक उपन्यास लिखा। उसकी आस्था थी कि ईसाइयत विश्व की समस्याओं के लिए एक व्यावहारिक रास्ता है।

इस तरह औद्योगिक क्रांति ने स्वच्छन्दतावादी या कल्पनावादी और यथार्थवादी लेखकों की कलम को शक्ति प्रदान की। समाचारपत्र, पत्रिकाओं और किताबों ने, जो कि अब करोड़ों लोगों की पहुँच की वस्तुएँ थीं, लेखकों के हाथों में मानव की विचारधारा के ऊपर असाधारण प्रभाव डालने की शक्ति दे दी थी।

१. स्वच्छन्दतावादी या कल्पनावादी लेखकों के विषय क्या थे ?
२. कौन-कौन प्रमुख स्वच्छन्दतावादी लेखक थे और उनकी मुख्य-मुख्य कृतियाँ कौन-कौन सी हैं ?
३. यथार्थवाद किस रूप में स्वच्छन्दतावाद से भिन्न है ?
४. यथार्थवादियों में उल्लेखनीय लेखकों के नाम बताओ और उनकी कृतियों का एक उदाहरण पेश करो।

कलाकारों ने भी स्वच्छन्दतावादी भाव का अनुसरण किया

१९ वीं शताब्दि का संगीत भी स्वच्छन्दता-

बीथोवन ने अपने स्वास्थ्य, गरीबी और घर न होने की समस्याओं से बराबर संघर्ष करते हुए भी अपने उत्साह और चरित्र की विशेषता को नहीं छोड़ा।

स्टीनवे एण्ड सन्स

वादी या कल्पनावादी भावना से ओत-प्रोत था गोकि बहुत से संगीतकार किसी एक ही रूप से दृढ़ता से बंधे न थे। बड़े संगीतकारों ने संगीत सिर्फ चर्च के लिए ही नहीं लिखा अपितु उन्होंने व्यक्तिगत भावना और देशभक्ति प्रकट करने के लिए भी लिखा। सिंफनी, ओरेटोरियो और ओपेरा बहुत अधिक लोकप्रिय हुए। मध्ययुगीन कहानियाँ और लोककथाएँ ओपेरा में संगीत में बांधी जाती थीं। लगभग प्रत्येक देश में एक राष्ट्रीय गान लिखा गया।

जर्मन संगीतकार—लुडविग वान बीथोवन (१७७०-१८२७) ने ऐसी स्वर-रचना की जो मोज़ार्ट और हाइडन की शैली से, जो उसके सामने थी, सर्वथा भिन्न थी। इस तरह उसने स्वच्छन्दतावादी संगीतकारों के लिए एक नई स्वररचना की। अन्य जर्मन स्वच्छन्दतावादी संगीतकारों ने उसका अनुसरण किया।

उनमें से रिचर्ड वाग्नीर (१८१३-१८८३) भी था जिसने अपनी प्रतिभा को जर्मन राष्ट्रीय भावना के विकास में लगाया। उसका कार्यकाल उन कठिन वर्षों का था जब कि विभिन्न जर्मन राज्यों को एक शक्तिशाली राष्ट्र के रूप में एकताबद्ध किया जा रहा था। युद्ध लड़े जा रहे थे और जर्मनी को एकताबद्ध करने के लिए शक्तिशाली नेता आगे आ रहे थे। वाग्नीर को जर्मन राष्ट्रवाद

ब्रुकलिन म्यूज़ियम कलेक्शन

पेरिस में रहने वाली अमेरिकी महिला चित्रकार मेरी कासट अपने 'मां और बच्चे' वाले चित्रों के लिए प्रसिद्ध है।
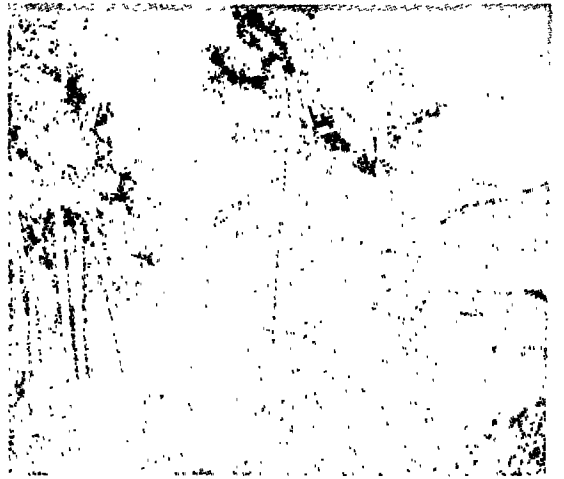
मेट्रोपोलिटन म्यूज़ियम आफ आर्ट

पाल सीज़ाँ, जो माडर्न फ्रेंच आर्ट में लब्धप्रतिष्ठ कलाकार माना गया है, अपने निवासस्थान प्रोवेन्स (फ्रांस) के प्राकृतिक चित्र बनाना पसंद करता था।

जान कान्स्टेबल प्रथम प्राकृतिक चित्रकारों में से एक था जिसने सीधे प्रकृति से चित्र बनाये।

बोस्टन म्यूज़ियम आफ फाइन आर्ट्स

की उपलब्धि का गर्व था और उसने जर्मन लोक गीतों को जर्मन वीरों के साथ बाँधकर उसके आधार पर ओपेरा लिखे तथा जर्मनी के अतीत को अधिक शानदार बनाया। उसके ओपेरा प्रसिद्ध हुए जैसे "टेनहोसर"। वाग्नीर ने एक नये संगीत रूप का विकास कर अपने देश को गौरवान्वित करने का प्रयास किया।

अन्य देशों के संगीतकार—संगीतकार चार्ल्स गूनू (१८१८-१८९३) ने कुछ बेहतरीन फ्रेंच ओपेरा बनाये। उसका "फाउस्ट" विश्व के बेहतरीन ओपेराओं में एक है और उसका "एवे मारिया" एक प्रिय पवित्र संगीत है। एक अन्य फ्रांसवासी जॉबीज़ा (१८३८-१८७५) ने "कारमैन" नामक ओपेरा लिखकर अक्षय ख्याति प्राप्त की। इस काल में बहुत से इटालियन ओपेरा भी निर्मित हुए। इनमें सबसे अधिक प्रिय जूसेपी वार्डी का "रिगोलिटो" है। वार्डी भी वाग्नीर की ही भाँति (१८१३-१९०१) उन वर्षों में रह रहा था जबकि देश को एकता की उपलब्धि हो चुकी थी। उसका अधिकांश संगीत देश के प्रति उसके गर्व को परिलक्षित करता है। तो भी, उसके महान् ओपेरा में से एक "आइदा" मिस्र को सम्मानित करता है। पोलिश लोगों ने भी विश्व को उच्चकोटि के संगीत प्रदान किये। फ्रेडरिक शूपान (१८१०-१८४९), एक प्रतिभावान संगीतकार और पियानोवादक था

आर्ट इन्स्टीट्यूट आफ शिकागो

तोलूसे-लौरिक अपनी प्रिय विषय-वस्तु संगीत-भवनों और सर्कस में पाता था। उसके चित्रों में तीखा व्यंग्य है।

आर्ट इन्स्टीट्यूट आफ शिकागो

पाल गुगिन एक नाविक था, फिर वकील और तत्पश्चात् चित्रकार बना। उसने अपने जीवन के अन्तिम दिन साउथ सी आइलैंड्स में चित्र बनाते हुए व्यतीत किये।

डीगास ने चित्रकार बनने के लिए कानून छोड़ दिया। उसे बैले डांस चित्रित करना पसंद था और उसने उस पर दर्जनों चित्र बनाये।

फ्रिक कलेक्शन, न्यूयार्क

और अपने उदारतावादी राजनीतिक विचारों के कारण जेल में बंद कर दिया गया था। उस समय पोलैंड में विद्रोह को रूसी शासकों ने निर्ममता से कुचल डाला था। बहुत बड़ी कुशलता के साथ शूपान ने अपने दुःख के भावों को संगीत में उतारा। एंग्निस जान पाड़ेविस्की (१८६०-१९४१) ने, जो आधी शताब्दि बाद हुआ, विश्व को अपनी संगीत रचना और पियानोवादन के प्रदर्शनों से भाव-विह्वल बना दिया। संगीतकार अपने संगीत में एक ही भाषा बोलते हैं। उस समय के इटालियन, जर्मन, फ्रेंच और पोलिश संगीतकारों ने समझ लिया था कि प्रत्येक क्या करने का प्रयास कर रहा है।

स्वच्छन्दतावादी चित्र—स्वच्छन्दतावादी भाव चित्रकला में भी व्यक्त हुआ। वहाँ राष्ट्रीय वीरों के ऐतिहासिक चित्रों की बाढ़ सी आ गयी थी, जैसे जोन आफ आर्क और नैपोलियन। फ्रांसीसी चित्रकार फर्डिनाण्ड डीलाक्रावा ने इस किस्म के चित्र बहुत कौशल से बनाये। अन्य फ्रांसीसी चित्रकारों ने सहानुभूति के साथ दीन-हीन किसानों का चित्रण किया। इसी काल में प्राकृतिक चित्र-चित्रण बहुत लोकप्रिय हुआ। बहुत से चित्रकारों ने अपने आस पास के वातावरण को स्थायी रूप से केनवास पर उतारने का प्रयास किया।

प्रभाववाद (Impressionism)—१८५० के दशक में जापान में पश्चिमी सभ्यता के लिए राह खुल जाने के बाद जापानी चित्रण का पश्चिमी कला पर प्रभाव पड़ा। एडुआर्ड मानी (१८३२-१८८३) नये प्रकार के चित्रण का, जिसे "प्रभाववाद" नाम दिया गया, जन्मदाता था। जैसा कि इसके नाम से जाहिर है, चित्रकारों ने अपने विषय की भावनाओं या प्रभाव को चित्रों में उतारने का प्रयास किया।

प्रभाववादी बारीकियों पर कोई ध्यान नहीं देते थे। उनके चित्र जीवन्त और आलोकपूर्ण होते थे। एक अमेरिकी चित्रकार, जेम्स ह्विस्टलर (१८३४-१९०३) ने जापानी कला से प्रभावित

आर्ट इन्स्टीट्यूट आफ शिकागो

ओनेर दोमिये की यह भावाभिव्यक्ति यथार्थवाद है या स्वच्छन्दतावाद? इसका शीर्षक है 'पेशेवर सहानुभूति'।

मेट्रोपोलिटन म्यूजियम आफ आर्ट

फ्रेडरिक रेमिंगटन का प्रिय विषय घोड़े, इण्डियन चरवाहे और पश्चिमी मैदानों के सैनिक थे।

होकर पश्चिमी जगत् का ध्यान उस ओर खींचा। उसके खुद के चित्रों पर इसका बहुत बड़ा प्रभाव था। फ्रांसीसी कलाकार क्लूड मोनी (१८४०-१९२६) और पेरी रीन्वार (१८४१-१९१९) ने प्रभाववादी शैली में बेहतरीन प्रकार के चित्र अंकित किये।

इलस्ट्रेशन (विषयवस्तु पर आधारित चित्र)—समाचारपत्रों और मैगजीनों की अच्छी खासी संख्या १९वीं शताब्दि के उत्तरार्द्ध में प्रकाशित होने लगी थी। इसने चित्रकारों के लिए एक विस्तृत क्षेत्र खोल दिया। कैमरा अभी तक इलस्ट्रेशनों के लिए एक महत्त्वपूर्ण साधन नहीं बना था, लेकिन व्यंग्य चित्रकार और चितेरों को बड़ी संख्या में नौकरियों पर रखा जाने लगा था। जान टेनयेल (१८२०-१९१४) सबसे प्रसिद्ध व्यंग्य चित्रकारों और चितेरों में माना जाता है।

वास्तुशिल्प—१७ वीं और १८ वीं शताब्दियों में यूरोप और अमेरिका में चिर-प्रतिष्ठित वास्तुकला का पुनरुद्धार हुआ। टामस जफरसन ने इसे अपने घर, मोन्टीसीलो (संयुक्तराज्य) में और वर्जीनिया विश्वविद्यालय के निर्माण में प्रयुक्त किया। ११ वीं शताब्दि के द्वितीयार्द्ध तक स्वच्छन्दतावादी आन्दोलन के परिणामस्वरूप वास्तुकला का रूप क्लासिक से हटकर गॉथिक बन गया था। ग्रेट ब्रिटेन और संयुक्त राज्य में चर्च तथा सार्वजनिक इमारतें गॉथिक शैली की बनने लगी थीं।

१. १९ वीं शताब्दि के संगीत के अधिकांश रूप क्या थे?
२. कौन-कौन से देशों ने विशिष्ट संगीत और संगीतकारों को उत्पन्न किया?
३. इस अध्याय में वर्णित संगीतकारों के नाम गिनाओ और बताओ कि उनमें प्रत्येक किस देश का था?
४. इस अध्याय में वर्णित विशिष्ट चित्रकार कौन थे? हर एक किस विशेषता के लिए प्रसिद्ध है?
५. प्रभाववाद क्या था?
६. कौन-कौन सी अमेरिकी इमारतें क्लासिक वास्तुकला की परिचायक हैं? इस ढंग को अमेरिका में किसने चलाया?
७. स्वच्छन्दतावादी आन्दोलन के प्रभाव में अमेरिका और ब्रिटेन में मुख्यतः किस किस्म की इमारतों का निर्माण हुआ?

औद्योगिक क्राँति के बाद भौतिकवाद आया

जीवन के सभी पहलू एक-दूसरे के साथ गुंथे हुए हैं। आविष्कार, खोजें, संगीत, कला और साहित्य सभी मानव जीवन को प्रभावित करते हैं। औद्योगिक क्रान्ति ने लोगों के मस्तिष्क को भौतिक वस्तुओं की ओर अधिकाधिक खींचा। कलाओं और साहित्य में यथार्थवाद ने भी ऐसा किया।

भौतिकवाद का धर्म पर प्रभाव—भौतिकवाद का धर्म पर एक महत्त्वपूर्ण प्रभाव पड़ा है। बहुत से लोग, यह विश्वास रखते हुए भी कि ईश्वर है, यह सोचने लगे कि उनकी शक्ति, दौलत और समय जनता के भौतिक सुखों की बेहतरी में खर्च होने चाहिए, न कि धार्मिक कार्यों में। उनका कहना था कि ईश्वर की पूजा प्रकृति में या एक दयावान् और नैतिक जीवन बिता कर की जा सकती है। गिरजाघरों की जरूरत नहीं है। दूसरों का कहना था कि ईश्वर नहीं है और धर्म अंधविश्वास है। जर्मन दार्शनिक फ्रेडरिक डब्लु० नीत्से इससे भी आगे बढ़ गया और उसने कहा कि "मानव की वास्तविक और गहरी प्रवृत्ति शक्ति के लिए है।" उसका तर्क था कि यह प्रवृत्ति यहाँ तक बढ़ाई जानी चाहिए कि ऐसे सशक्त लोगों का राष्ट्र विकसित हो जो अच्छाई और बुराई से ऊपर होंगे। अन्य दार्शनिकों ने नीत्से के नैतिकवाद का अनुगमन किया और उसकी शिक्षाओं का जर्मनी पर विशेष प्रभाव पड़ा।

समाजशास्त्र—औद्योगिक क्रान्ति की असाधारण प्रगति के फलस्वरूप बहुत से लोग यह सोचने लगे कि मानव सर्वप्रतिभासम्पन्न है और जो कुछ वह चाहे उसे करने में समर्थ है। यहाँ तक कि सामाजिक बुराइयों, जैसे अपराध, बेरोजगारी, और परिवार-भंग का इलाज संभव है, यदि मनुष्य अपना दिमाग उन्हें दूर करने में लगाये। सामाजिक समस्याओं के कुछ विद्यार्थियों का विश्वास था कि जिस तरह प्रकृति के नियम हैं, ठीक उसी तरह ऐसे भी नियम हैं जिन्हें अपनाकर मनुष्य समूह, राष्ट्र या विश्व में सफलतापूर्वक एक साथ रह सकते हैं। उन छात्रों में एक फ्रांसीसी कोंट था,

सिगमंड फ्रायड एक आस्ट्रियाई डाक्टर था जिसने मनोविश्लेषण की स्थापना की।

जिसने इस विज्ञान को "सोशियोलाजी" या समाज-विज्ञान नाम दिया। इंग्लैंड में, हरबर्ट स्पेंसर की सोशियोलॉजी की पुस्तकों में कहा गया है कि मानव-समाज को स्वाभाविक रूप से अधिकाधिक दौलत और सुख प्राप्ति की दिशा में प्रगति करनी ही चाहिए।

मनोविज्ञान—एक दूसरे विज्ञान साइकोलॉजी ने यह बतलाने का प्रयास किया कि लोग जिस प्रकार का आचरण करते हैं, वह क्यों करते हैं? क्रिश्चियन चर्च का मत है कि जब लोग गलत काम करते हैं तो इसलिए कि उनमें शैतान की आत्मा आ जाती है, जिसे यदि वे चाहते तो जीत सकते थे। वैज्ञानिकों का अब यह कहना है कि आत्मा और शरीर अलग-अलग नहीं हैं और शरीर का स्वास्थ्य और उसके आसपास का वातावरण उन्हें एक खास प्रकार का अच्छा या बुरा कार्य करने की ओर ले जाता है। हारवर्ड विश्वविद्यालय के एक प्रोफेसर, विलियम जेम्स, संयुक्तराज्य में मनोविज्ञान के एक संस्थापक हुए हैं।

भौतिकवाद ने सभी देशों के लोगों पर प्रभाव डाला। इसकी अभिव्यक्ति सिर्फ समाजशास्त्र और मनोविज्ञान के क्षेत्रों में ही नहीं अपितु साहित्य और कला को भी सम्मिलित कर, जीवन के सभी क्षेत्रों में हुई और वहाँ नास्तिकवाद की वृद्धि हुई। लोगों के दिमाग और समय उन भौतिक चीजों को प्राप्त करने तथा उनका उपभोग करने में लगे हुए प्रतीत होने लगे जिन्हें औद्योगिक क्रांति ने सभव बना दिया था।

१८वीं शताब्दि के अन्त में, औद्योगिक क्रान्ति ने एक नयी दुनिया में प्रवेश किया। १९वीं और २०वीं शताब्दियों ने इन आविष्कारों और खोजों को उन्नत और विकसित किया है। अब मानव अधिक सुविधाजनक और कई अर्थों में अधिक सुखी जीवन बिता सकता है। लेकिन इन दोनों के साथ-साथ कई गम्भीर समस्याएँ और उत्तरदायित्व भी आ गये हैं क्योंकि दुनिया आध्यात्मिक और नैतिक स्तरों पर अपनी वैज्ञानिक प्रगति के साथ कदम मिलाकर चलने के लिए प्रयत्नशील है।

१. भौतिकवाद क्या था?
२. किस प्रकार भौतिकवाद ने विचारों और धर्म को प्रभावित किया?
३. दार्शनिक नीत्से का क्या प्रभाव पड़ा?
४. १९वीं शताब्दि के अन्तिम वर्षों में भौतिकवाद पर कौन-कौन से नये विज्ञान आधारित हुए?
५. किस रूप में विज्ञान और आविष्कारों ने मानव के समक्ष गंभीर समस्याएँ उत्पन्न कर दी हैं?

विचार-विमर्श के लिए प्रश्न

१. तुम एक स्वच्छन्दतावादी हो या यथार्थ-वादी?

२. तुम क्यों समझते हो कि मेरी एन इवान्स ने अपने कल्पित नाम जार्ज इलियट के नाम से लिखा?

३. आज के साहित्य के विषय कौन से बल और परिस्थितियाँ हैं?

४. क्या तुम सोचते हो कि आज की कला, वास्तुकला, और संगीत उस मशीन युग की अभि-व्यक्ति करते हैं जिसमें हम रह रहे हैं?

९. लोकतंत्र की दिशा में बढ़ते कदम

चूंकि औद्योगिक क्रांति ने दुनिया के इतने अधिक लोगों के जीवन के ढंग को बदल डाला था, इसलिए इसने अनिवार्यतः सरकारों और मानव की स्वतंत्रता तथा आजादी पर भी प्रभाव डाला। कुछ परिवर्तन अच्छे थे और कुछ बुरे।
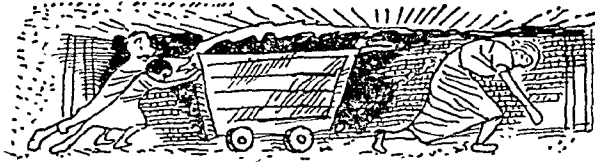
कारखाना प्रणाली के साथ-साथ कई गंभीर खराबियां भी आईं, जैसे काम के दीर्घकालीन घंटे, कार्य की स्थिति का अच्छा न होना और बाल श्रम। ये स्थितियां कई वर्षों तक बनी रहीं, तब अन्त में श्रमिकों की यूनियनें बनीं। आखिरकार ब्रिटेन, अमेरिका और फ्रांस ने इन श्रम-यूनियनों को कानूनी करार दिया।

अपनी यूनियनों के द्वारा मजदूर वर्ग अपनी सरकारों पर प्रभाव डालने और अन्त में मताधिकार प्राप्त करने में सफल हुआ। अपने मतदान के अधिकार के साथ उन्होंने मजदूरों के संरक्षण, रहन-सहन की अच्छी स्थिति और अन्य सुविधाओं के कानूनों की माँग की। उनका वोट उनसे सहानुभूति रखने वाले उम्मीदवार को जाता था।

इसी काल में लोकतंत्र का विचार और विस्तृत हुआ। इसमें सिर्फ राजनीतिक लोकतंत्र, यानी वोट देने का अधिकार ही नहीं, बल्कि आर्थिक और सामाजिक लोकतंत्र, यानी अच्छी परिस्थितियों में काम करने तथा समुचित वेतन पाने का अधिकार और अन्य व्यक्तिगत अधिकार भी शामिल किये गये।

५. पूर्णरूप से भौतिकवादी दृष्टिकोण क्यों दुर्भाग्यपूर्ण है ?

६. क्या तुम सहमत हो कि अपराध, बेरोज़गारी और युद्ध की खराबियाँ अधिक मानवीय प्रयास से दूर की जा सकती हैं ? तुम उनके बारे में क्या कर सकते हो ?

इतिहास के उपकरणों का प्रयोग

एक. नाम, तिथियाँ, और स्थान

१. क्या तुम इन शब्दों को स्पष्ट कर सकते हो ?

प्रभाववाद···भौतिकवाद···राजकवि···यथार्थवाद···स्वच्छन्दतावाद।

२. इन व्यक्तियों के बारे में तुम क्या जानते हो ?

लुडविग वान बीथोवन···जॉवीजे···फ्रेडरिक शूपान···राबर्ट ब्राउनिंग···लार्ड जार्ज गौर्डन बायरन···अगस्टी कोन्ट···फर्डिनाण्ड डेलाक्रो···चार्ल्स डिकन्स···अलेक्जेण्डर ड्यूमा···जार्ज इलियट···अनातोले फ्रांस···जोन गेटे···चार्ल्स गूनू···टामस

९. जीवन-निर्वाह की प्रगति के चरण
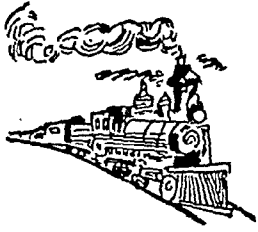
आविष्कारों ने, जिन्होंने औद्योगिक क्रांति उत्पन्न की, मानव के प्रतिदिन के जीवन में इतना ज्यादा क्रान्तिकारी परिवर्तन ला दिया था जितना उसके विकास के समस्त इतिहास में नहीं हुआ था। पाश्चात्य संस्कृति तो एकदम बदल गयी।
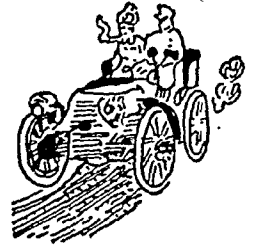
विज्ञान और आविष्कार में प्रगति

मशीनों से यात्रा और संवहन के तरीके सुगम हो गये। लोग अधिक स्वच्छन्दता-पूर्वक घूमने-फिरने और काम करने तथा खेलने जाने लगे। बड़े पैमाने पर उत्पादन ने और अधिक औजारों, निर्मित वस्तुओं और जिन्सों को बढ़ाकर उनमें से अधिकाधिक को अधिक लोगों के लिए सुलभ बनाया।
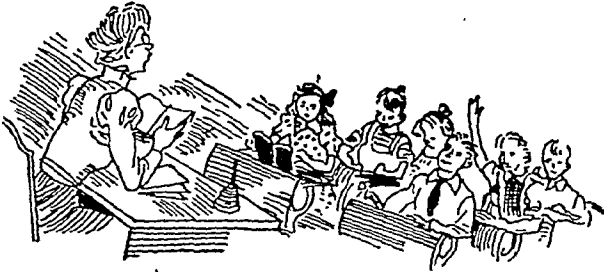
शिक्षा में प्रगति

यूरोपीय देशों और संयुक्त राज्य में और जापान में जन-शिक्षा ने भारी प्रगति की। पदार्थ जगत् में भी अभिरुचि जागी, चिकित्सा-विज्ञान में तेजी से प्रगति हुई। समाजशिक्षा और मनोविज्ञान बहुत से कालेजों और विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम में शामिल हुए।

कला में प्रगति
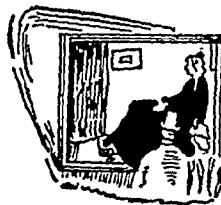
स्वच्छन्दतावादियों ने सुन्दरता और भावनाओं के बारे में, यथार्थवादियों ने अपने इर्द-गिर्द के वास्तविक जीवन के बारे में, जिसमें बुराइयां भी उन्होंने देखी थीं, लिखा। अपनी भावनाओं और जीवन की प्रतिक्रियाओं की अभिव्यक्ति में चित्रकार भी स्वच्छन्दतावादी या यथार्थवादी थे।

संगीत के धुरंधर आचार्य बीथोवन, मोजार्ट, वेर्डी, चोपिन, और अन्यों ने, १८ वीं और १९ वीं शताब्दि में विश्व को अपने संगीत से समृद्ध बनाया। कुछ संगीत-कार उस जमाने के उदारतावादी आन्दोलन में भी दिलचस्पी रखते थे।

हार्डी · विक्टर ह्यूगो—हेनरी इस्वन···विलियम जेम्स···टामस जफरसन···एडवर्ड मेने···क्लूड मोनेट···फ्रेडरिक नीत्से···इग्नेस फाड्ेवस्की···अलेक्जेण्डर पुश्किन···पेरीरेनो···जा नशिलर···सर वाल्टर स्काट···जार्ज वर्नार्ड शा···हरवर्ट स्पेंसर···एल्फ्रेड टेनीसन···काउण्ट लियो तालस्ताय···इवान तुर्गनेव···जूसेपी वार्डी···रिचर्ड वागनीर···एच० जी० वेल्स···जेम्स ह्विस्टलर···विलियम वर्ड्स्वर्थ।

दो. क्या तुम अपने विचार स्पष्ट प्रकट कर सकते हो ?

१. कक्षा में स्वच्छन्दतावादी कवियों की एक कविता पढ़ो जो तुम्हें पसन्द हो।

२. १९वीं शताब्दि के किसी लेखक का एक उपन्यास पढ़ो और उसको संक्षिप्त रूप में कक्षा में सुनाओ।

३. अगर तुम इस काल के संगीतकारों के छोटे गीतों के रिकार्ड उपलब्ध कर सको तो उन्हें क्लास में सुनाओ और फिर उनपर अपना-अपना मत व्यक्त करो।

तीन. बुलेटिन बोर्ड के लिए

१. स्वच्छन्दतावादी और प्रभाववादी शैली के चित्रकारों के चित्र संकलित करो।

२. आधुनिक गाथिक प्रणाली के भवनों में से कुछ विशिष्ट इमारतों के चित्रों का संग्रह करो।

३. बीसवीं शताब्दि के आरम्भ से, प्रति वर्ष कुछ अपवादों को छोड़कर, एक विशिष्ट लेखक को साहित्य के सर्जन के लिए नोबल पुरस्कार मिलता है। कक्षा के एक सदस्य को, नोबल पुरस्कार कब से और क्यों मिलने लगा, इस पर रिपोर्ट तैयार करने के लिए नियुक्त करो और पुरस्कार प्राप्त करने के रूप का भी वर्णन उसमें हो।

४. अगर तुम कविता लिखना चाहते हो तो स्कूल पेपर के लिए एक गीति कविता या सानेट लिखो। ऐसा करने से पूर्व अपने क्लास टीचर से सलाह कर लो।

चार. सभा कार्यक्रम

स्कूल में एक सभा करो और उसमें इस काल के कुछ कलाकारों के गीत वायलिन और पियानो पर सुनाओ।

विश्व की शक्ति के लिए
Great Britain
France
Netherlands
Belgium
TOP OF THE
WORLD
Italy
Germany
Japan
United States
राष्ट्र प्रतिद्वन्द्वी थे
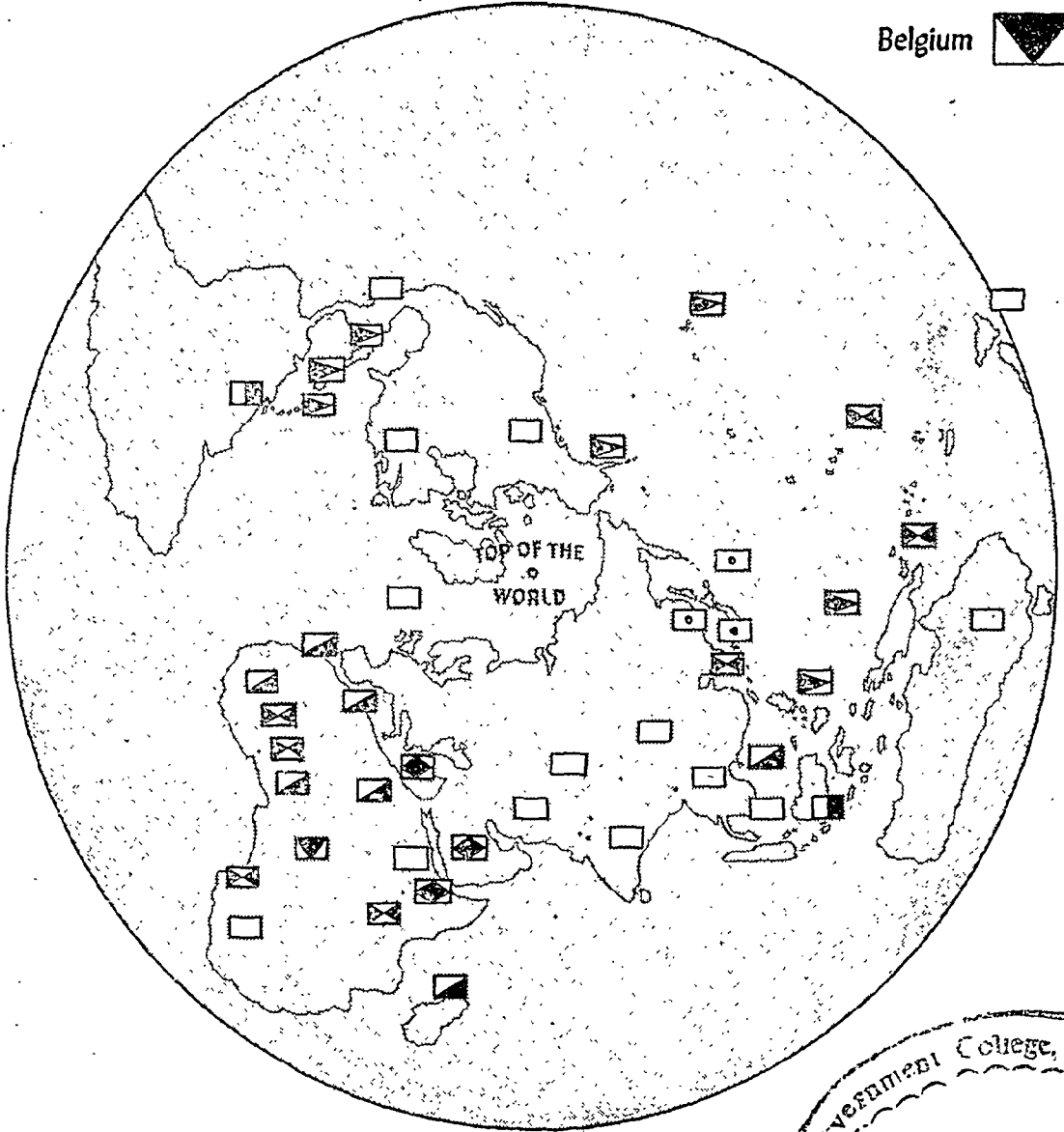
1500 AD
1550
1600 AD
1650
1700 AD
1750
1800 AD
1850
1900 AD
1950
2000 AD
Nationalism,
Imperialism,
and Democracy
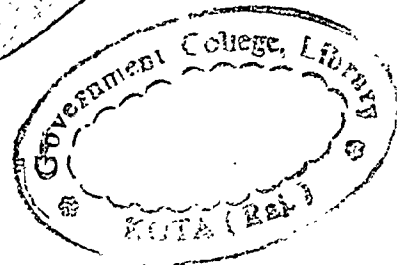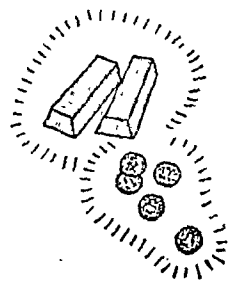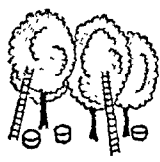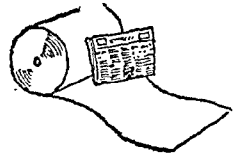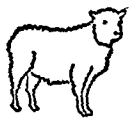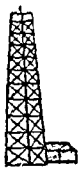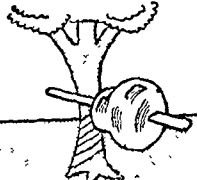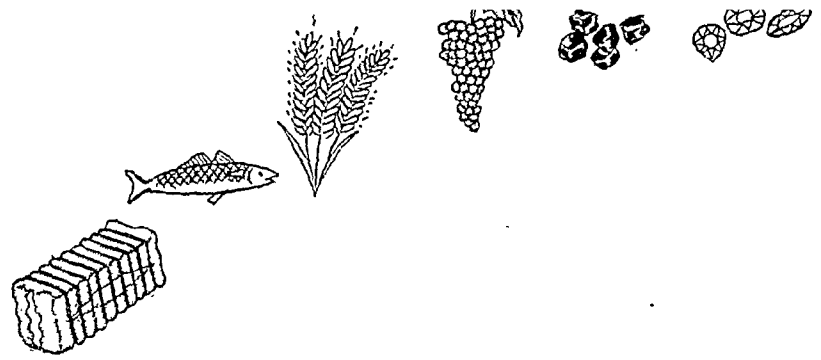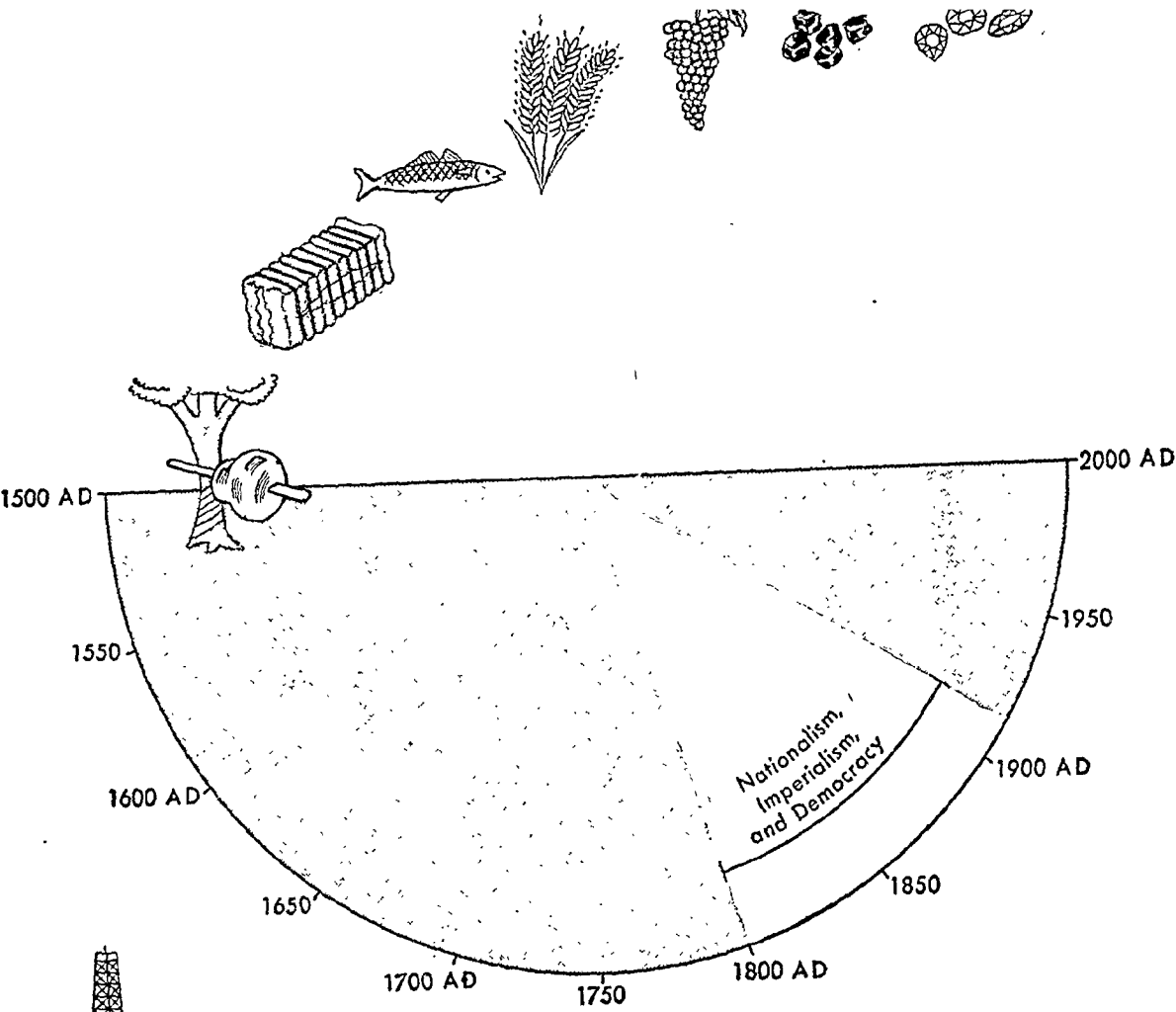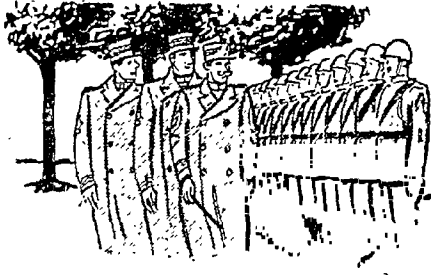
३२ जर्मनी और इटली राष्ट्रीय राज्य बने

उस काल में जबकि यूरोप में राष्ट्रीय राज्य विकसित हो रहे थे, छोटे-छोटे जर्मन राज्य और इटालियन राज्य, दोनों कई-कई टुकड़ों में बने रहे और प्रत्येक टुकड़ा अपने-अपने शासक के आधीन था। पवित्र रोमन सम्राट् को उनके ऊपर कोई नियंत्रण नहीं था। जर्मनी और इटली नाम महज भौगोलिक संज्ञाएँ थे। वे उस तरह राष्ट्रों के परिचायक नहीं थे, जैसे कि आज हैं।

जर्मन राज्यों में प्रशिया सबसे शक्तिशाली राष्ट्र बना

जैसे-जैसे समय बीतता गया, आस्ट्रिया और प्रशिया लगभग ३०० जर्मन राज्यों में सबसे शक्तिशाली बन गए। नैपोलियनकालीन युद्धों के अन्त में जर्मन राज्यों की संख्या ३८ थी। आस्ट्रिया और प्रशिया में नेतृत्व के लिए एक दूसरे से प्रतिद्वन्द्विता थी। गोकि १८१५ में विएना कांग्रेस ने आस्ट्रिया को जर्मन राज्य संघ का मुखिया बनाया था लेकिन प्रशिया ने प्रदर्शित किया कि उसमें जर्मन राज्यों के नेतृत्व की शक्ति है।

प्रशिया या आस्ट्रिया—कुछ बातें प्रशिया के पक्ष में थीं। मध्ययुगों में, जबकि व्यापार भूमध्यसागर के चारों ओर केन्द्रित था, व्यापार मार्ग

जर्मनी के सबसे प्राचीन शहरों में से एक मेंज। राइन नदी के तट पर बसे होने की अनुकूल स्थिति के कारण यह प्रारम्भ से ही एक बड़ा कारोबारी और रेलमार्ग का मुख्य केन्द्र रहा। इसी शहर में, १४५६ में, सर्वप्रथम बाइबिल प्रकाशित हुई थी।

कलचर सर्विस
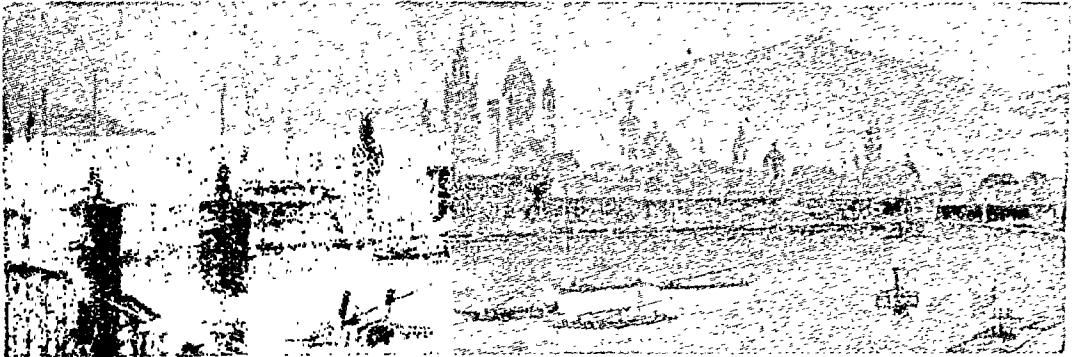
स्थल मार्ग से विएना से आस्ट्रिया जाते थे और डेन्यूब नदी व्यापारी माल को विएना के द्वार तक पहुँचाती थी। जब व्यापार का केन्द्र उत्तर की ओर बढ़ा, प्रशिया और उत्तर के अन्य जर्मन राज्य अनुकूल स्थल पर बसे हुए थे। प्रशिया के शासकों ने इन राज्यों के बीच सहयोग का लाभ देखा। १८१८ और १८४२ के बीच प्रशिया ने एक "सीमाशुल्क संघ" (कस्टम्स यूनियन) बनाया, जिसमें आस्ट्रिया और हनोवर को छोड़ कर बाकी सभी जर्मन राज्य शामिल थे। यह यूनियन "त्सोलफेरिन" के नाम से पुकारा जाता था और यह यूनियन कर विभिन्न सदस्य राज्यों के बीच वितरित कर उन्हें व्यापार और समृद्धि को बढ़ाने वाली एक आर्थिक इकाई बनाता था। जब मध्य यूरोप में औद्योगिक क्रान्ति आई तो उसका प्रभाव आस्ट्रिया की अपेक्षा प्रशिया और कुछ उत्तरी जर्मन राज्यों पर कहीं अधिक पड़ा। आस्ट्रिया अधिकतर कृषिप्रधान ही बना रहा। इन सब कारणों से प्रशिया समृद्धिशाली और शक्तिशाली बन गया और आस्ट्रिया की अपेक्षा उसकी स्थिति और सुदृढ़ हो चली।

बिस्मार्क द्वारा जर्मन राज्यों की एकता—१८६१ में विलियम प्रथम प्रशिया का राजा बना। वह लम्बे अर्से तक सेनानी रहा था और प्रशिया की सैन्य शक्ति बढ़ाने का अभिलाषी था। उस समय प्रशिया की एक पार्लमेंट थी, जो "डाइट" कहलाती थी। इसमें दो सदन होते थे। उपरि-सदन के सदस्यों को राजा नियुक्त करता था, जबकि निचले सदन का चुनाव कुलीन और धनी मध्यम वर्ग करता था और ज्यादातर अधिकार इसी सदन के थे। संविधान में राजा के शासन करने के दैवीय अधिकार को मान्यता दी गयी थी।

"डाइट" के इस प्रकार के संगठन के बावजूद निचले सदन (लोक सभा) ने बड़ी सेना रखने के निमित्त अधिक धन प्रदान करने की विलियम की प्रार्थना को स्वीकार करने से इन्कार कर दिया। विलियम को घोर निराशा हुई और वह गद्दी छोड़ने के लिए तैयार हो गया। वस्तुतः उसने गद्दी त्याग करने का पत्र भी लिख डाला। ऐसा करने से पूर्व अन्तिम उपाय के रूप में, उसने ओटो वान बिस्मार्क को यह देखने के लिए अपना मंत्री नियुक्त किया कि वह उसकी योजना को कार्य रूप दे पाता है अथवा नहीं। बिस्मार्क ने इस पद को स्वीकार कर लिया और वह प्रशिया का प्रमुख व्यक्ति बन गया।

बिस्मार्क—बिस्मार्क डाइट के निचले सदन का एक सदस्य रह चुका था और रूस तथा फ्रांस में राजदूत-कार्य का अनुभव भी उसे था। वह एक देशभक्त था और जर्मन राज्यों के संयुक्तीकरण को उत्सुक था। जुंकर या कुलीन वर्ग का सदस्य होने के कारण उसकी पार्लमेंट या लोकतन्त्र में कोई आस्था नहीं थी। राजाओं के दैवीय अधिकारों पर उसकी दृढ़ आस्था थी और प्रशिया के लिए एक सशक्त सेना का वह प्रबल हिमायती था। इसके अलावा उसमें अपनी योजनाओं को कार्यान्वित करने की क्षमता और लगन थी। जब उसने प्रशिया की सेना के निर्माण और प्रशिया के भाग्य निर्देशन का कार्य स्वीकार किया तो इसी दृढ़ निश्चय के साथ कि वह अपने रास्ते में किसी भी रुकावट को ठहरने नहीं देगा, उसने डाइट के संवैधानिक अधिकारों की उपेक्षा करते हुए सेना के खर्च के लिए विशेष कर लगाया। डाइट के लिए बिस्मार्क ने कहा कि, युग की गंभीर समस्याएँ भाषणों और बहुमत के प्रस्तावों से नहीं, खून से और हथियारों से हल की जा सकती हैं।

THE GERMAN STATES

OTHER STATES IN THE NORTH GERMAN CONFEDERATION
SOUTH GERMAN STATES
SCHLESWIG-HOLSTEIN
ALSACE-LORRAINE

डेनमार्क के साथ युद्ध—डाइट के साथ अपने संघर्ष में विजयी होने के बाद बिस्मार्क अपने अन्य उद्देश्यों की पूर्ति के काम में जुट गया। उसने पहले सैनिकों की अनिवार्य भरती कर सेना का विस्तार किया। नये लड़ाई के हथियारों और अनुशासन ने प्रशिया की लड़ाकू फौजों को यूरोप की सेनाओं का अग्रणी बना दिया। १८६४ में बिस्मार्क आस्ट्रिया की सहायता से, हाल्स्टाइन और श्लेश्विग प्रान्तों को प्राप्त करने के लिए डेनमार्क के खिलाफ युद्ध लड़ा, और विजयी हुआ। तब आस्ट्रिया और प्रशिया जीत के बटवारे के लिये झगड़ने लगे। छोटी सी सात सप्ताह की लड़ाई में प्रशिया ने आस्ट्रिया को पछाड़ दिया। प्रशिया ने उत्तरी जर्मन राज्यों को उत्तर जर्मन राज्यसंघ में संगठित किया और आस्ट्रिया को उसमें शामिल नहीं किया गया।

फ्रैंको-प्रशिया युद्ध—जब नैपोलियन तृतीय ने देखा कि फ्रांस से लगा हुआ प्रशिया राज्य सशक्त होता चला जा रहा है तो वह डरा। वह युद्ध के लिए तैयार नहीं था लेकिन बिस्मार्क तैयार था। नैपोलियन चाहता था कि कोई ऐसा काम किया जाय जिससे प्रशिया की प्रतिष्ठा को ठेस पहुँचे और बिस्मार्क फ्रांस से लड़ने का बहाना चाहता था। कपट द्वारा जर्मन मंत्री ने फ्रांस को विश्वास दिलाया कि उनके बर्लिन स्थित राजदूत की बेइज्जती की गयी है। फ्रांस उसके लिए बनाये गये इस जाल में फंस गया और उसने युद्ध की घोषणा कर दी। फ्रांस-प्रशिया युद्ध (१८७०-१८७१) निर्णयात्मक था।

जर्मन साम्राज्य—जर्मनी ने फ्रांस को हरा दिया। नैपोलियन तृतीय पकड़ लिया गया लेकिन युद्ध बंद होने पर वह मुक्त कर दिया गया और इंग्लैण्ड चला गया, जहाँ १८७३ में उसकी मृत्यु हो गयी। १८७१ में बिस्मार्क को वर्साय राजप्रासाद के शीश-महल के प्रसिद्ध हाल में आज्ञप्ति पढ़ कर सुनाने का संतोष हुआ। इस आज्ञप्ति में हाहेन-जोलर्न वंश का प्रशिया का राजा, विलियम प्रथम,

जब जर्मनी के सम्राट्, विलियम द्वितीय ने बिस्मार्क को इस्तीफा देने को बाध्य किया तो यह प्रसिद्ध व्यंग्य-चित्र "चालक को गिराना" 'पंच' नामक मैगज़ीन में प्रकाशित हुआ था।

जर्मन सम्राट् घोषित किया गया। दक्षिणी राज्य भी इस प्रकार जर्मन राज्य संघ में सम्मिलित कर लिए गये। आल्सेस और लारेन प्रदेश फ्रांस से छीन कर जर्मन साम्राज्य के अंग बना दिये गए। अलावा इसके, जर्मनी ने फ्रांस को युद्ध का खर्चा या हर्जाना एक अरब डालर, देने को बाध्य किया।

फ्रांस प्रशिया युद्ध से एक कटुता चारों ओर फैल गयी थी। फ्रांसवासी अपनी अपमानजनक हार, भारी रकम का हरजाना और सर्वाधिक आल्सेस और लारेन का हाथ से निकल जाना नहीं भूल सकते थे। जर्मनों को हमेशा फ्रांस के बदला लेने का डर लगा रहता था। दोनों ओर से घृणा और संदेह का वातावरण था जिसके परिणामस्वरूप कई वर्षों तक संघर्षों का दौर-दौरा रहा।

१. मध्ययुग में जर्मन राज्यों की स्थिति कैसी थी ?
२. कौन दो राज्य प्रमुख जर्मन राज्य बने ?
३. किन कारणों से प्रशिया जर्मन राज्यों के बीच आस्ट्रिया से आगे हो गया ?
४. प्रशिया की डाइट में कौन-कौन प्रतिनिधि होते थे ?
५. प्रशिया के संविधान में राजा की क्या स्थिति थी ?
६. विलियम प्रथम ने बिस्मार्क को मन्त्रि पद स्वीकार करने के लिए क्यों आमन्त्रित किया ?
७. क्या गुण और विश्वास बिस्मार्क में थे कि १८६२ में विलियम प्रथम के लिए उसका चुनाव अच्छा रहा ?
८. किन तीन देशों के साथ प्रशिया के युद्ध हुए और प्रत्येक युद्ध का कारण क्या था ?
९. फ्रांस और प्रशिया के युद्ध का जहां तक जर्मनी का सम्बन्ध था क्या परिणाम रहा ?

जर्मन साम्राज्य का सैनिकवादी रूप जारी रहा

जर्मन साम्राज्य अपनी स्थापना के बीस वर्ष बाद तक बिस्मार्क के नियंत्रण में रहा। वह चांसलर पद पर था, जैसा कि जर्मन प्रधान मन्त्री को कहा जाता था। लेकिन जब विलियम द्वितीय राजगद्दी पर बैठा तब उसका और बिस्मार्क का विदेश नीति के मामले में मतभेद हो गया। इसके अलावा विलियम चाहता था कि उसे छोड़ कर और किसी का भी सशक्त हाथ सरकार में न हो। वह शासन करने को आतुर था। १८९० में कैसर विलियम द्वितीय ने बिस्मार्क को बरखास्त कर दिया और वह स्वयं साम्राज्य का शासक बना।

जर्मन साम्राज्य की सरकार—साम्राज्य की सरकार इस चतुराई से संगठित थी कि सम्राट् का नियन्त्रण बना रहे। अमेरिका की भांति, जर्मनी भी राज्यों का एक संघ था। जर्मन साम्राज्य में २५ राज्य थे जिनमें से अधिकांश में राजतन्त्र था। प्रशिया का प्रमुख नियंत्रण था, क्योंकि डाइट के उपरि-सदन में उसके १७ प्रतिनिधि थे जब कि अन्य राज्यों में से प्रत्येक के दो, तीन या चार प्रतिनिधि थे। ये प्रतिनिधि राज्यों के शासकों द्वारा चुने जाते थे और उसी तरह मतदान करते थे, जैसे करने के लिए शासक उन्हें निर्देश देता था। इस प्रकार प्रशिया के राजा के लिए यह आसान था कि वह अपना मनचाहा काम करा ले। निचली सभा (रिक्सटाक) आम पुरुष मताधिकार द्वारा चुनी जाती थी, लेकिन उसके अधिकार बहुत ज्यादा सीमित थे। सभी प्रस्तावों पर उपरि-सदन की स्वीकृति अनिवार्य थी। ऐसी सरकार के मातहत कैसर साम्राज्य का शासक था और कैसर विलियम सचमुच शासन करने का इरादा रखता था।

सैनिकवाद—सैनिकवाद, जो पिछली १७ वीं शताब्दि में प्रारंभ हुआ था, बराबर बना हुआ था। जर्मनी ने युद्ध से एकता हासिल की थी और उस एकता से वह एक बड़ा और शक्तिशाली राष्ट्र बन गया था। इसलिए सेना की जो इज्जत वहाँ थी वह अन्य देशों में मिलनी कठिन है। लोग भी अनुशासित थे। प्रत्येक व्यक्ति को दो वर्ष सेना में रहना पड़ता था और फिर ४५ वर्ष का होने तक वह रिजर्व सेनाओं में रहता था। स्कूलों में ट्रेनिंग भी सख्त दी जाती थी। हर व्यक्ति को हुकूमत की इज्जत करना सिखाया जाता था। इससे जीवन के सब क्षेत्रों में दक्षता आ गई। सरकार भी दक्ष थी। उद्योग असाधारण दर्जे तक बढ़ चले थे जिससे जर्मनी दुनिया के बड़े औद्योगिक राष्ट्रों में से एक हो गया। नगरों का निर्माण सुनियोजित रूप से हुआ था और उनकी सुन्दरता का ध्यान रखा जाता था। अधिकांश घर साफ-सुथरे और व्यवस्थित थे। जर्मनी ने जिस असाधारण तेजी से प्रगति की थी, उस पर विश्व को आश्चर्य था। पर्यवेक्षकों ने बहुत देर बाद देखा कि जर्मनों ने यह दक्षता कुछ कुरबानी करके पाई है। उन्हें वे व्यक्तिगत स्वतन्त्रताएं प्राप्त नहीं थीं, जो अंग्रेजों या अमेरिकनों को प्राप्त थीं।

दुनिया सिर्फ जर्मनी की दक्षता के ही कारण उसकी ओर देखने के लिए प्रेरित नहीं हुई थी। उसकी उपनिवेशों की इच्छा, उसके व्यापारिक बेड़े और नौसेना निर्माण का कार्यक्रम भी ध्यान आक-

षित किये हुए थे। विशेष रूप से इंग्लैण्ड समुद्र में इस प्रतिद्वन्द्विता से भयभीत था।

त्रिराष्ट्र मैत्री—जर्मनी ने मित्रों की आवश्यकता को देखते हुए, १८१६ में आस्ट्रिया से मैत्री की कि वह रूस और फ्रांस से उसकी रक्षा करेगा। संधि में यह व्यवस्था थी कि अगर जर्मनी या आस्ट्रिया पर रूस या फ्रांस हमला करेंगे तो दूसरा सदस्य उसकी रक्षा को दौड़ा आयेगा। १८८२ में इटली को इसमें शामिल कर त्रिराष्ट्र संधि का रूप दिया गया। जर्मनी अब सैन्य शक्ति से मजबूत था और उसके मित्र भी थे। राष्ट्रों के बीच इस प्रकार की मैत्री संधियाँ, जिनमें से बहुत सी एक देश की जनता की जानकारी के बगैर हुईं, युद्धों के कारणों में से एक रही हैं।

आस्ट्रिया-हंगरी का साम्राज्य

इसी दौरान आस्ट्रिया के हैप्सबर्ग शासक दो बार हार चुके थे। एक बार वे इटालियनों से हारे जिन्होंने १८६० में उन्हें इटली से बाहर खदेड़ दिया और दूसरी बार १८६६ में प्रशियावालों ने उन्हें हराया। पराजय कभी भी किसी सरकार को लोकप्रिय नहीं बनाती। भगाये गये हैप्सबर्गों का शासन

उन विभिन्न राष्ट्र-जातियों की निगाह में लोकप्रिय नहीं रहा, जो आस्ट्रिया की प्रजा थीं। साम्राज्य के विभिन्न लोगों के बीच जिनमें राष्ट्रीयता के अंकुर फूट आये थे, और जो आजादी के लिए प्रयत्नशील थे, चेक, स्लोवाक, स्लाव, क्रोट, सर्ब, हंगरीवासी और पोल थे। हैप्सबर्गों की जाहिरा कमजोरी से इन लोगों ने अवसर देखा कि स्वशासन की मांग पेश कर दें।

द्वैध राजतन्त्र—आस्ट्रिया के सम्राट् फ्रांसिस जोसफ ने निश्चय किया कि सिर्फ हंगरी वालों की ही बात सुनी जाय, क्योंकि संख्या में वे बहुत अधिक थे। हंगरी के नेता फ्रांसिस डियाक द्वारा प्रस्तुत की गई और १८६७ में स्वीकृत योजना के अनुसार साम्राज्य दो हिस्सों में बंट गया, आस्ट्रिया और हंगरी। दोनों की एक ही सेना और एक ही परराष्ट्र नीति थी, लेकिन प्रत्येक के कानून, संसद् और अदालतें अलग-अलग थीं। इस तरह आस्ट्रिया का साम्राज्य आस्ट्रिया और हंगरी का द्वैध राजतन्त्र बन गया। साम्राज्य के अन्तर्गत अल्पसंख्यक इस व्यवस्था से संतुष्ट नहीं थे। चूंकि कानूनों का सभी भाषाओं में अनुवाद करना होता था, ताकि सभी उन्हें जान सकें, इसलिए हरचंद कोशिश यही रहती थी कि अल्पसख्यकों के बीच राष्ट्रीय भाषाओं और रीति-रिवाजों को किसी प्रकार का प्रोत्सा न न दिया जाय। यद्यपि यह द्वैध-शासन ५० वर्षों तक चला, पर अल्पसंख्यक कभी भी आस्ट्रिया-हंगरी के द्वैध शासन से संतुष्ट नहीं रहे।

१. बिस्मार्क जर्मन चांसलर के पद से क्यों हटाया गया ?
२. जर्मन साम्राज्य की सरकार का वर्णन करो।
३. विलियम द्वितीय सम्राट् के रूप में अपनी स्थिति के बारे में क्या सोचता था ?
४. किस प्रकार जर्मनी अपनी विशाल सेना बनाये रखता था ?
५. किस रूप में जर्मनों की दक्षता और अनुशासन जर्मन जीवन पर प्रभाव डालता था ?
६. जर्मनी की शक्ति के बारे में ग्रेट ब्रिटेन क्यों चिन्तित था ?
७. त्रिराष्ट्रमैत्री संधि क्या थी ?
८. आस्ट्रियाई साम्राज्य के मुख्य-मुख्य नागरिकों की राष्ट्रीयता बताओ।
९. द्वैध-राजतन्त्र का स्पष्टीकरण करते हुए बताओ कि वह कब स्थापित हुआ ?
१०. आस्ट्रिया-हंगरी के साम्राज्य को अल्पसंख्यक किस दृष्टि से देखते थे ?
११. गुप्त-संधियाँ युद्धों की जन्मदात्री क्यों होती हैं ?

विभाजित इटालियन राज्य

जर्मन राज्यों की तरह, मध्य काल, में इटली भी विभाजित था। इसका एक कारण यह भी था, चर्च द्वारा शासित, पोप के राज्य वहाँ थे, जो सेन्ट्रल इटली में अवस्थित थे और उत्तरी इटली को उसके दक्षिणी हिस्से से पृथक् करते थे। बँटे हुए रहने का दूसरा कारण उत्तरी इटली पर पवित्र रोमन सम्राट् का दावा था। सम्राट् अक्सर जर्मनी से आल्प्स पार करता हुआ यह देखने वहाँ जाया करता था कि उत्तरी इटली के राज्य उसकी प्रजा बने रहें। उसके प्रयासों के बावजूद, उत्तरी नगरों ने विद्रोह किया और स्वतंत्र हो गए।

लेकिन नगर-राज्य उनके चारों ओर विकसित होने वाली प्रबल शक्तियों के सामने अपनी स्वाधीनता कायम नहीं रख सकते थे। यूटरेख्ट की संधि के अन्तर्गत जो १७१३ में यूरोप में क्षेत्रीय विस्तार युद्धों की समाप्ति पर हुई थी, नेपल्स और मिलान आस्ट्रिया को प्राप्त हुए थे। उसके बाद, आस्ट्रिया और पोपशाही, इटली के एकीकरण के रास्ते में बाधक बनी रही। नैपोलियन-कालीन युद्धों के बाद, आस्ट्रिया एक शक्तिशाली राष्ट्र के रूप में उभरा।

इटली प्रायद्वीप का इतिहास आक्रमणों का इतिहास रहा है। नैपोलियन के शासन में यह फ्रांस के आधीन रहा। बाद में, विएना कांग्रेस ने इसका अधिकांश क्षेत्र आस्ट्रिया और पोप को दे दिया।

अब उसका टायरोल, वेनेटिया और लोम्बार्डी पर सीधा अधिकार था।

इटली के एकीकरण के रास्ते में एक तीसरी बाधा भी थी : नेतागण आपस में एकमत नहीं हो पाते थे कि वे किस किस्म की सरकार चाहते हैं। कुछ इटली के राज्यों के उदार राजाओं के मातहत राजतंत्र चाहते थे। कुछ पोप के मातहत संयुक्तीकरण चाहते थे। एक तीसरा पक्ष-गणतंत्र का पक्षपाती था।

मेजिनी और 'युवक इटली'—प्रारंभिक इटालियन विद्रोहों का सर्वाधिक उल्लेखनीय नेता एक मेधावी, आदर्शवादी तथा कवि जूसेप्पी मेजिनी था। मेजिनी शरीर से दुबला-पतला था लेकिन उसके अन्दर अपने साथी इटालियनों को निर्दयी शासकों से मुक्त करने की आग धधकती थी। १८३१ में उसने "युवक इटली" नामक एक संस्था की स्थापना की। उसके सदस्यों ने शपथ ली थी कि वे इटालियन जनता के बीच जाकर उन्हें स्वाधीनता की शिक्षा और प्रेरणा देंगे। मेजिनी एक स्वतन्त्र और संयुक्त इटली का समर्थक था जिसमें गणतंत्र प्रणाली की सरकार हो। उसकी इस प्रबल क्रांतिकारी भावना के कारण उसे इटली से देशनिकाला दिया गया, लेकिन वह लंदन चला गया और वहाँ से इटली की स्वाधीनता पर बराबर लेख लिखता रहा।

एकता का सपना साकार हुआ

कावूर—मेजिनी ने जिस उद्देश्य की सिद्धि की दिशा में काम किया था, उसे सम्पन्न करने का श्रेय दूसरे इटालियन देशभक्त को प्राप्त हुआ। वह व्यक्ति काउण्ट कोम्मिलो डी कावूर था। कावूर एक धनी कुलीन व्यक्ति था, लेकिन उसके विचार जनतंत्रात्मक थे और वह एक बार अपने उदार विचारों के लिए कारावास भी भोग चुका था। गोकि आम तौर पर १८४८ की क्रांति इटली में असफल रही, पर एक राज्य, सार्डीनिया, ने अपनी जनता के लिए संविधान की स्वीकृति दे दी। इसके शीघ्र बाद में (१८५२) सार्डीनिया के युवक राजा विक्टर एमेनुअल द्वितीय ने कावूर से अपने प्रधानमंत्री के रूप में काम करने को कहा। कावूर एक वफादार

देशभक्त, अपने दृष्टिकोण में उदार और बहुत ही योग्य व्यक्ति था।

कावूर का विश्वास था कि इटली का संयुक्तीकरण सार्डीनिया और उसके उदार राजा के नेतृत्व में होना चाहिए। जब राजा विक्टर एमेनुअल ने उसे अपना मंत्री बना लिया तो उसके पास मौका था। उसने रेलमार्गों का निर्माण कर और कृषि तथा व्यापार को प्रोत्साहन देकर देश की आर्थिक स्थिति को सुधारा। उसके निर्देशन में सार्डीनिया फला-फूला और लोग उदार सरकार के अन्तर्गत खुशहाल रहने लगे। इससे बहुत से इटालियन, जो पहले मेजिनी के अनुयायी थे, अब नेतृत्व के लिए सार्डीनिया और कावूर की ओर देखने लगे।

कावूर ने फ्रांस के नैपोलियन तृतीय से इटली से आस्ट्रिया वालों का प्रभुत्व समाप्त करने के निमित्त मदद मांगी। उसने वायदा किया कि सार्डीनिया इसके एवज में फ्रांस को फ्रांस का समीपवर्ती क्षेत्र दे देगा। नैपोलियन को इस प्रकार के मौके की जरूरत थी जिससे वह स्वदेश में अपनी प्रतिष्ठा बढ़ा सके। फ्रांस के उदारवादी इटली की एकता में सहायता के इच्छुक थे और सभी फ्रांसवासियों को नया क्षेत्र लाभ करने का गौरव पाने की आशा थी। नैपोलियन ने सहर्ष एक सेना कावूर की मदद के लिए भेज दी और दोनों ने मिलकर आस्ट्रिया को हराया। आस्ट्रिया लोम्बार्डी से खदेड़ दिया गया और लोम्बार्डी सार्डीनिया के राज्य में मिला लिया गया। नैपोलियन तृतीय ने नीचे का शहर और सेवाय प्रान्त, जिसे कावूर ने उसे उसकी सहायता की कीमत के रूप में देने का वायदा किया था, फ्रांस में मिला लिये और सार्डीनिया को एकीकरण का कार्य सम्पन्न करने के लिए छोड़ दिया। शीघ्र ही पोप के राज्यों से उत्तर की ओर के सब राज्य, वेनेटिया को छोड़कर, एक एक करके सार्डीनिया के राज्य में शामिल हो गये।

गैरीबाल्डी—पोप के राज्यों के दक्षिण में दो सिसली राज्य अभी यूनियन के बाहर थे। यहाँ जूजेप्पा गैरीबाल्डी के कार्य इटली की एकता में सहायक बने। गैरीबाल्डी एक प्रसिद्ध देशभक्त था। "लाल कुर्ती" सैनिकों का नेतृत्व करते हुए उसने

गैरीबाल्डी का अधिकांश जीवन स्वाधीनता के संघर्ष में बीता। एक युवक के रूप में उसे जेनेवा में विद्रोह में भाग लेने पर प्राणदण्ड मिला था। वह फ्रांस भाग गया, फिर यूरुग्वे के साथ अर्जेन्टिना के विरुद्ध लड़ने दक्षिणी अमेरिका चला गया। कुछ समय वह संयुक्त राज्य में भी रहा। वह अपने देश की जनता को स्वाधीन कराने और उसके एकीकरण के लिए इटली लौट गया।

ब्राउन ब्रदर्स
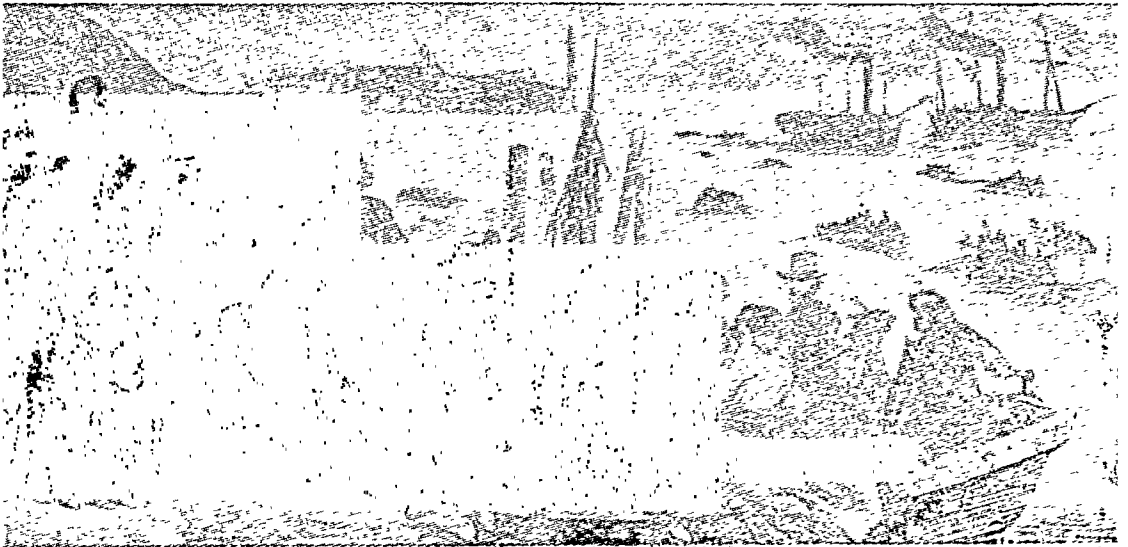
यूर्इंग गैलोवे

इटली के पर्वत और ढलान इसे बहुत सुरम्य बनाते हैं। इटालियन आल्प्स के इस हिस्से में महल के पीछे ढालवां जमीन पर खेत बने हैं। इटली की जटिल समस्या हमेशा उपजाऊ भूमि की कमी रही है।

बूर्बो शासकों की सेनाओं पर चामत्कारिक विजयें प्राप्त कीं और चंद सप्ताहों में दोनों सिसलियों का नियंत्रण प्राप्त कर लिया। तब उसने नेपल्स को प्रयाण किया, वहाँ प्रतिरोध चरमरा कर ध्वस्त हो गया और विजयी वीर सेनानी के रूप में उसका स्वागत हुआ। गैरीबाल्डी इतना अधिक जनप्रिय था कि वह आसानी से डिक्टेटर बन सकता था। लेकिन, इसके बजाय, जनमत संग्रह हुआ और गैरीबाल्डी द्वारा विजित क्षेत्र ने सार्डीनिया के नेतृत्व में, शेष यूनियन में शामिल होने के पक्ष में मत दिया। १८६१ में इटली राज्य की घोषणा की गयी और विक्टर एमेनुअल द्वितीय उसका राजा बना। राजा ने गैरीबाल्डी को पदवियाँ और दौलत देनी चाही, लेकिन उसने कुछ भी लेने से इन्कार कर दिया और अपने फार्म में लौट कर अवकाश ले लिया।

वेनेटिया और रोम—नये राज्य के सम्मुख अब दो समस्याएँ रह गयी थीं, लेकिन यूरोप की घटनाओं ने उन्हें हल कर दिया। १८६६ में आस्ट्रिया और प्रशिया के बीच सात सप्ताहों के युद्ध में वेनेटिया इटली को, प्रशिया की मदद करने के एवज में, लूट के हिस्से के रूप में दिया गया। दूसरी समस्या पोपशाही के राज्यों की थी। कावूर हमेशा कहता था कि संयुक्त इटली की राजधानी रोम ही होनी चाहिए। १८६१ में पोप अपने क्षेत्र का कुछ हिस्सा इटली को खो चुका था, लेकिन नैपोलियन तृतीय पोप को उसके क्षेत्रीय अधिकारों से वंचित रखने पर आपत्ति करता था। १८७० में प्रशिया के हाथों फ्रांस की पराजय से नैपोलियन तृतीय इस मामले में महत्वहीन हो गया। अब पोप के अधिकारान्तर्गत शेष भूमि इटली के साथ सन्नद्ध की जा सकती थी, क्योंकि फ्रांसीसी सैनिक अब उसकी रक्षा नहीं करते थे। १८७० में इटली की फौजों ने रोम के शहर पर कब्जा कर लिया और इसे इटली की राजधानी बनाया गया। रोम के शामिल कर लिए जाने से, इटली का संयुक्तीकरण पूर्ण हो गया।

१. १९ वीं शताब्दी से इटली संयुक्त क्यों नहीं

हो पाया ?

२. विभिन्न नेताओं के इटली के संयुक्तीकरण पर विभिन्न विचार थे। वे क्या थे ?
३. इटली कब एक संयुक्त देश बनाया गया ?
४. इटली के संयुक्तीकरण के लिए कौन तीन व्यक्ति मुख्य रूप से जिम्मेदार थे और प्रत्येक का क्या कार्य रहा ?
५. "लाल कुर्ती" कौन थे ?
६. रोम कब इटली में सम्मिलित किया गया ?

विश्व के अन्य राष्ट्रों के मध्य संयुक्त इटली को स्थान मिला

इटली के संयुक्तीकरण से यूरोपीय राष्ट्रों के बीच उसका स्थान बन गया था। उसने अपनी सरकार को ग्रेट ब्रिटेन के ढांचे पर ही बनाया। अधिकार पार्लमेंट के हाथों में था, जिसके प्रति मंत्रिमंडल उत्तरदायी था। राजा के अधिकार सीमित थे। १९१२ में सभी वयस्क पुरुषों को मतदान का अधिकार प्रदान किया गया। सरकार का संगठन लोकतंत्रात्मक आधार पर था, लेकिन नागरिक अपनी सरकार से असंतुष्ट थे।

इटली एक गरीब मुल्क था, उसके साधन बहुत थोड़े थे और धरती, शताब्दियों से खेती करते रहने के कारण, पुरानी पड़ चली थी। बावजूद इसके इटली ने सड़कें, रेलमार्ग और स्कूल बनवाये और बन्दरगाहों को सुधारा। महाद्वीप के अन्य राष्ट्रों की नीति के अनुरूप, उसने भी एक बड़ी स्थायी सेना संगठित की और नौसेना को बढ़ाया। इस पर इतना अधिक धन व्यय करना पड़ा कि कभी-कभी मुल्क दिवाले की स्थिति में पड़ जाता था। लेकिन उत्तरी इटली आर्थिक दृष्टि से विकसित था और मिलान तथा टूरिन में निर्माण कार्य प्रमुख हो चला था। दक्षिण में अक्सर वहाँ की बहुसंख्यक आबादी के भरण-पोषण के लिए पर्याप्त कार्य तक नहीं रहता था और हजारों की संख्या में इटलीनिवासी १९वीं शताब्दी के अन्त मे और बीसवीं शताब्दी के शुरू में अमेरिका या अफ्रीका को निष्क्रमण कर गये।

विदेशी मामले—नयी सरकार के रूप में इटली को मित्रों की जरूरत थी और यूरोप के अन्य राष्ट्रों की भांति वह भी उपनिवेशों का इच्छुक था। साम्राज्यवाद में वह रोम के प्राचीन गौरव की वापसी और साथ ही साथ अधिक जनसंख्या तथा कम कच्चे माल की समस्याओं का हल देखता था। १८८१ में, जब फ्रांस ने दक्षिण अफ्रीका स्थित ट्यूनिस ले लिया तो इटली को निराशा हुई क्योंकि वह स्वयं उसे लेना चाहता था। उसने महसूस किया कि अगर वह उपनिवेशों को हस्तगत करने का इच्छुक है तो उसे मित्रों की सर्वाधिक आवश्यकता है। इसलिए १८८२ में, वह जर्मनी और आस्ट्रिया के साथ तीन राष्ट्रों की मैत्रीसंधि में सम्मिलित हुआ। १८९६ में उसके अफ्रीकास्थित अबीसीनिया से क्षेत्र छीनने के प्रयास इटालियन सेनाओं की गंभीर पराजय में समाप्त हुए। वह १९११ में तुर्की के साथ युद्ध में कुछ ज्यादा सफल रहा। इस युद्ध के फलस्वरूप इटली को ट्रिपोली और साइरेनिका प्राप्त हुए। १९१४ तक इटली यूरोप का एक महत्त्वपूर्ण, शक्तिशाली राष्ट्र बन गया था।

१. संयुक्त इटली ने किस प्रणाली की सरकार कायम की ?
२. इटली की सरकार क्यों सुचारु रूप से नहीं चल पायी ?
३ कौन-कौन सी मुख्य आर्थिक समस्याएँ थीं जिन्हें इटली को अपने देश में हल करना पड़ रहा था ?
४. क्या कारण था कि इटली तीन राष्ट्रों की मैत्री संधि में सम्मिलित हुआ ?
५. कौन-कौन से औपनिवेशिक क्षेत्र इटली ने हस्तगत किये ?

विचार-विमर्श के लिए प्रश्न

१. जर्मनी के इतिहास ने उसे किस प्रकार एक सैनिक राष्ट्र बना दिया ?

२. यह कहा गया है कि नैपोलियन प्रथम ने जर्मन साम्राज्य की नींव डाली। किस रूप में यह कथन सही है ?

३. बिस्मार्क को पार्लमेंट और लोकतंत्र में क्यों विश्वास नहीं था ?

४. जोलोवेरिन किस रूप में जर्मनी के एकी-

करण की दिशा में उठाया गया कदम था ?

५. तुम्हारी राय में जर्मन अनुशासन अच्छी चीज थी या बुरी ?

६. आस्ट्रिया-हंगरी साम्राज्य का शासन करना मुश्किल क्यों था ।

७. इटली के संयुक्तीकरण से पहले किसी ने इसे "भौगोलिक अभिव्यक्ति" कहा था । क्यों ?

इतिहास के उपकरणों का प्रयोग

एक. नाम, तिथियाँ और स्थान

१. इन शब्दों को स्पष्ट करो :

चांसलर—डाइट—द्वैध राजतंत्र—भौगोलिक अभिव्यक्ति—जर्मन राज्य संघ (कन्फेडरेशन)—जुंकरवर्ग—कैसर—उत्तर-जर्मन संघ—लाल कुरती—रिषटाक—त्रिराष्ट्र संधि—युवक इटली—जोलोवेरिन ।

२. इन तिथियों के बारे में बताओ :

१७१३—१८६०—१८६१—१८६४—१८६६—१८६७—१८७०—१८७०—१८७१—१८७१ १८७६ ।

३. निम्नलिखित को नकशे में दिखाओ :

साइरेनिका—अबीसीनिया—अलास्का—आस्ट्रिया-हंगरी—डेनमार्क—जर्मन साम्राज्य—लोम्बार्डी—लारेन—प्रशिया—मिलान—नेपल्स—नीचे—पोप के राज्य—रोम—रूस—सार्डीनिया—सेवाय—श्लेश्विग—होल्स्टीन—स्पेन—त्रिपोली—ट्यूनिस—दो सिसली—टायरोल ।

४. क्या तुम इन व्यक्तियों के बारे में बता सकते हो ?

आटोवान बिस्मार्क—कम्मिलो कूवर—फ्रेंसिस डीक—फ्रेंसिस जोसफ—गैरीबाल्डी—मेजिनी—नैपोलियन तृतीय—विक्टर इमेनुअल द्वितीय—विलियम प्रथम—विलियम द्वितीय ।

दो. क्या तुम अपने विचार स्पष्ट रीति से प्रकट कर सकते हो ?

१. एक विद्यार्थी से कहो कि वह अमेरिका में रहने वाले इटली में उत्पन्न व्यक्तियों की और दूसरा जर्मनी में उत्पन्न व्यक्तियों की संख्या के बारे में रिपोर्ट दे ।

२. इस अध्याय में आये इटली सम्बन्धी प्रकरण की रूपरेखा तैयार करो । निम्नलिखित प्रसंगों को अपनी रिपोर्ट में लो और कक्षा में उसको मिलान के लिए लाओ :

(१) प्रारंभिक कार्य,
- (क) मेजिनी
- (ख) सार्डीनिया में कूवर

(२) संयुक्तीकरण
- (क) उत्तरी इटली
- (ख) दो सिसली
- (ग) वेनेटिया
- (घ) पोपशाही के राज्य

(३) एकीकृत इटली
- (क) सरकार
- (ख) साम्राज्यवाद

३. निम्नलिखित विषयों पर मौखिक रिपोर्ट दो:

प्रशिया का जुंकर वर्ग—प्रशिया की सेना का अनुशासन—एम्स डिस्पैच (फ्रांस और प्रशिया के बीच युद्ध का कारण बनने वाला डिस्पैच)—आस्ट्रिया-हंगरी में रहने वाले नागरिकों की राष्ट्र-जातियाँ ।

४. निम्नलिखित में से एक व्यक्ति के बारे में रिपोर्ट तैयार करो । अध्यापक कक्षा में पढ़ने के लिए इन रिपोर्टों में से छाँटेंगे :

बिस्मार्क—विलियम द्वितीय—मेजिनी ।

५. बिस्मार्क के "लोहा और खून" वाले भाषण के मुख्य-मुख्य अंशों को विचार-विमर्श के लिए पढ़ कर सुनाओ ।

तीन. कार्टून

(क) अगर तुम चाहो तो निम्नलिखित घटनाओं में से एक या अधिक पर कार्टून बनाओ :

(क) विलियम प्रथम बिस्मार्क को सरकारी सत्ता सौंपते हुए ।

(ख) आस्ट्रिया और प्रशिया डेनमार्क के साथ हुए युद्ध के बाद युद्ध की जीत के बंटवारे के लिए लड़ते हुए ।

(ग) जर्मन साम्राज्य की घोषणा ।

(घ) आस्ट्रिया-हंगरी में द्वैध राजतंत्र का निर्माण ।

चार. क्लास कमेटी का कार्य

(१) एक क्लास कमेटी को निम्नलिखित में से एक या अधिक विषयों पर अनौपचारिक बहस का काम सपुर्द करो।

(१) (क) जर्मन अनुशासन ने लोगों की व्यक्तिगत राजनीतिक प्रगति का गला घोट दिया।

(ख) नैपोलियन तृतीय एक कमजोर शासक था।

(ग) आस्ट्रिया-हंगरी के अन्तर्गत विभिन्न राष्ट्रीय जातियों के लोगों का रहना साम्राज्य के लिए असुविधाजनक था।

(घ) मेज़िनी, कूवर और गैरीबाल्डी, इन तीनों में से कूवर का इटली पर सर्वाधिक प्रभाव था।

(ङ) कूवर का रोम को इटली की राजधानी बनाने के लिए संघर्ष करना उचित था।

(च) इटली की जनसंख्या अधिक होने और जमीन ज्यादा उर्वर न होने से उसका उपनिवेशों को प्राप्त करने की कोशिश करना उचित था।

(२) लाखों इटलीवासी बीसवीं शताब्दी के आरम्भ में दूसरे देशों में बसने चले गये। एक छोटी कमेटी के लिए यह काम सौंपो कि वह कक्षा में, इटलीवासी किन-किन देशों में जा बसे, इसकी रिपोर्ट सुनाये।

पाँच. ब्लैक बोर्ड पर

एक छात्र को ब्लैक बोर्ड पर भेजकर उन दो नीतियों—वाणिज्यवाद और शक्ति-सन्तुलन—को लिखो और फिर यह विचार करो कि किस प्रकार इन दो नीतियों के कारण इतनी शताब्दियों तक जारी संघर्ष से किस प्रकार इटली के एकीकरण के सवाल पर प्रभाव पड़ा।

छह. समाचार पत्र के शीर्षक

इटली और जर्मनी के संयुक्तीकरण काल में विभिन्न समयों में जो शीर्षक समाचारपत्र के लिए मौजूं होते वे लिखो।

सात. चित्र अध्ययन

आधुनिक काल के प्रसिद्ध कार्टूनों में से एक पृष्ठ ४२३ में दिखलाया गया है। उसका शीर्षक देखो और उसके अर्थ पर कक्षा में बहस करो। कार्टून बनाने वाला एक प्रसिद्ध चित्रकार भी था।

ही थी, लेकिन अच्छी गृहिणी थी और अपने पति और बच्चों के बड़े परिवार के साथ सुख से इस प्रकार रहती थी, जिस तरह किसी अच्छे परिवार का रहना अंग्रेज लोग अच्छा समझते थे। उसने सर्वत्र अंग्रेजों को अपने और राजपरिवार के प्रति प्रेम रखने की प्रेरणा दी। विक्टोरिया का शासन-काल (१८३७-१९०१) इंग्लैंड के लिए एक महान् युग था। उसके शासनकाल में व्यापार और उत्पादन ने ठोस तरक्की की। इसी प्रकार समाज सुधारों ने भी। औरतों और बच्चों के काम के घंटों पर पाबंदी लगा दी गयी। खानों में सुरक्षा के साधनों का प्रयोग अनिवार्य बना दिया गया और श्रमिक यूनियनों को कानूनी मान्यता प्रदान की गयी।

ग्लैडस्टन और डिजरायली—१८६५ और १८८१ के बीच के समय में इंग्लैण्ड के राजनीतिक मंच पर दो प्रधानमंत्रियों का प्रभुत्व रहा। एक विलियम ई० ग्लैडस्टन, जो देहाती क्षेत्र का था, वह लिबरल पार्टी का था जो पहले ह्विग कही जाती थी, और उच्चकोटि का वक्ता था। दूसरा नेता बेंजामिन डिजरायली था, जो रूढ़िवादी दल का नेता था जो पहले टोरी पार्टी कहलाती थी।

१८६७ का सुधार बिल—१८३२ के सुधार कानूनों से बहुतेरे अंग्रेजों को संतोष नहीं था। मजदूरी पर काम करने वाले मतदान का अधिकार चाहते थे। जान ब्राइट नामक एक जनप्रिय नेता और वक्ता ने, यह कहते हुए लोगों से आन्दोलन करने का अनुरोध किया कि, "अगर पार्लमेंट स्ट्रीट सुधार की मांग करने वाले मजदूरों से भर दी जाय तो वे अपने अधिकार पा जायंगे।" लेकिन रूढ़िवादी डिजरायली ने ही १८६७ का सुधार विधेयक पार्लमेंट में पेश किया। इसके अनुसार, शहरों में उन लोगों को वोट देने का अधिकार मिल गया जो कम से कम १० पाउण्ड प्रतिवर्ष किराया देते थे और ग्रामीण क्षेत्रों में उन लोगों को वोट देने की अनुमति मिली जो साल में १२ पाउण्ड लगान देते थे। इस विधान से ब्रिटेन में मतदाताओं की संख्या लगभग दुगनी हो गई।

ब्राउन ब्रदर्स

मिसेज एमेलिन पेंक्हर्स्ट और उनकी साथिनों ने मताधिकार आन्दोलन द्वारा अंग्रेज महिलाओं को मताधिकार प्रदान कराने के लिए बहुत कुछ किया।

ग्लैडस्टन मंत्रिमंडल के सुधार बिल—विलियम ग्लैडस्टन के मंत्रित्व काल में अन्य सुधार लाये गये। १८७२ में इंग्लैण्ड ने एक गुप्त मतदान प्रणाली या आस्ट्रेलियाई मतदान प्रणाली अपनाई और १८८४ में एक सुधार विधान के अनुसार लगभग सभी कृषिकर्त्ताओं और शहरों में सब किरायेदारों को वोट देने का अधिकार मिला। दूसरे वर्ष एक कानून द्वारा इंग्लैंड को बराबर निर्वाचन जिलों में बाँट दिया गया, प्रत्येक का एक प्रतिनिधि पार्लमेंट में रहता था। इससे 'सड़े गले नगरों' की प्रणाली एकदम समाप्त हो गयी और नये औद्योगिक शहरों को समान प्रतिनिधित्व मिला।

सार्वजनीन मताधिकार—१९१८ में अधिकाधिक पुरुषों को मताधिकार प्रदान करने वाले कानूनों के लम्बे क्रम की पूर्ति और अधिक उदार कानून द्वारा की गयी। नये कानून द्वारा २१ वर्ष से अधिक उम्र के सभी पुरुषों और ३० वर्ष

से ऊपर की सभी महिलाओं को, जो वहाँ के स्थायी निवासी हों, मतदान का अधिकार दिया गया। दस वर्षों बाद महिलाओं को भी मतदान के वही अधिकार मिल गये जो पुरुषों को थे। इस प्रकार एक लम्बे और कठिन संघर्ष के बाद, जो हिंसात्मक नहीं था, इंग्लैंड ने सार्वजनीन मताधिकार स्वीकार किया।

लेबर पार्टी—लेबर पार्टी का विकास शनैः शनैः हुआ और १९०६ में उसके २९ सदस्य कामंस सभा के लिए चुन लिये गये। उसका उद्देश्य श्रमिकों की सुविधा के कानून बनवाना और अन्य सुधार कानून बनवाना था।

लायड जार्ज—लिबरल पार्टी का एक प्रमुख सदस्य डेविड लायड जार्ज था, जो १९०६ में ब्रिटिश मंत्रिमंडल में वित्तीय मामलों का इनचार्ज, वित्तमंत्री बना। लायड जार्ज एक वेल्स निवासी था और उसे गर्व था कि वह साधारण जनता के बीच से आया है। वह एक चतुर वक्ता था और श्रमिकों तथा उदारदलीय लोगों को बहुत भाता था।

सामाजिक विधान की आवश्यकता को देखते हुए लायड जार्ज ने मजदूरों की बीमारी के व्यय, बेरोजगारी और वृद्धावस्था के लिए बीमा करने का प्रस्ताव रखा। इस प्रकार की बीमा योजना में धन की जरूरत थी। इसलिए लायड जार्ज ने बड़े भूमि मालिकों पर कर लगा कर उसे प्राप्त करने का प्रस्ताव रखा। इंग्लैंड की जमीन का बड़ा हिस्सा चंद लोगों के मालिकाना अधिकार में था और उसके अधिकांश हिस्से में खेती नहीं की जाती थी। इसके बजाय, उसे प्राइवेट पार्कों और शिकारगाहों के रूप में इस्तेमाल किया जाता था। लायड जार्ज द्वारा लागू किये गये नये कर विधेयक में ऐसी जमीनों पर भारी कर लगाने की व्यवस्था थी। विधेयक कामंस सभा ने पास कर दिया लेकिन लार्ड्स सभा ने उसे स्वीकार करने से इन्कार कर दिया। पार्लमेंट भंग कर दी गयी और नया चुनाव हुआ। इस बार, बहुत अनिच्छा के साथ, लार्ड्स सभा ने विधेयक पास किया। भारी करों को अदा करने के लिए बहुतेरे जमींदारों को अपनी जमीन का हिस्सा बेचना पड़ा। इस प्रकार बजट बिल ने, जैसा कि उसे पुकारा जाता था, तीन काम किये। इससे मजदूरों के सामाजिक बीमे की व्यवस्था हुई; इससे इस बीमे में धन लगाने के लिए उसे प्राप्त करने का साधन मिला और इससे कुछ बड़ी जमींदारियाँ टूट गयीं, भूमि का और समान रूप से वितरण हुआ।

लिबरल और लेबर पार्टी को, विशेषकर लायड जार्ज को, यह बहुत बुरा लगा कि बजट बिल इतने अर्से तक सामन्ती लार्ड्स सभा में रुका रहा। इसलिए उसने पार्लमेंट में बिल पेश किया जिसका उद्देश्य भविष्य में इस प्रकार की स्थिति को पैदा होने से रोकना था। इस विधेयक में लार्ड्स सभा के अधिकारों को घटाने के लिए दो व्यवस्थाएँ थीं। पहली, कामंस सभा में पास सभी वित्तीय विधेयक लार्ड्स सभा में पेश होने के एक महीने बाद से कानून बन जायंगे, भले ही वह सदन विधेयकों को अस्वीकार कर दे। दूसरी, कामंस सभा द्वारा पारित अन्य विधेयक दो वर्षों से अधिक देर तक, लार्ड्स सभा द्वारा निषेधाधिकार का प्रयोग कर नहीं रोके जा सकेंगे। उस अवधि के बीत जाने पर, उनका बिल पर, निषेधाधिकार समाप्त हो जायगा। एक तीसरी व्यवस्था भी बहुत महत्त्वपूर्ण थी। कामंस सभा के आम चुनाव प्रत्येक पांचवें वर्ष अवश्य ही हो जाने चाहिए।

डेविड लायड जार्ज १६ वर्ष की उम्र में कोयला खानों में काम करता हुआ कानून का अध्ययन करता था। २१ वर्ष का होने पर वह सुधार कार्यों में दिलचस्पी लेने लगा।

१९११ का पार्लमेंट ऐक्ट कानून बन गया। लार्ड्स की शक्तियाँ तो खतम हो गयीं गोकि ब्रिटिश सरकार में उनका प्रभाव अब भी बना रहा।

ब्रिटिश इतिहास में १९ वीं शताब्दी महत्त्व-पूर्ण शताब्दी रही। देश का राजनीतिक और आर्थिक विकास हुआ। शताब्दी के आरम्भ में चंद धनी लोगों का सरकार पर नियंत्रण था। १९१४ तक इंग्लैंड में बड़े कारखाने और बड़ा कारोबार स्थापित हो चला था और प्रगति करता हुआ वास्तविक लोकतन्त्रात्मक प्रणाली तक पहुँच गया था।

१. ड्यूक आफ वेलिंगटन ने प्रधानमंत्री पद क्यों खोया ?
२. १८३२ के सुधार विधेयक में क्या व्यवस्था थी ? वह किस प्रकार पारित हुआ ?
३. बताओ कि ब्रिटेन में किस तरह संसदीय प्रणाली चलाई जाती है ?
४. १८३० से आरम्भ दशक में इंग्लैंड में राज-नीतिक पार्टियों में क्या परिवर्तन किये गए ?
५. आर्थिक और सामाजिक स्थितियों में सुधार के लिए १९ वीं शताब्दी के प्रथमार्द्ध में कौन से कानून पास हुए ?
६. ब्रिटेन ने स्वतन्त्र व्यापार की प्रणाली क्यों कायम की ?
७. विलियम ग्लैडस्टन और बेंजामिन डिजरायली कौन थे ?
८. १८६७ के सुधार बिल का उद्देश्य क्या था ? १८८४ और १९१८ के सुधार बिलों की व्यवस्थाओं का भी वर्णन करो।
९. बीसवीं शताब्दी के आरम्भ में कौन सी तीसरी महत्त्वपूर्ण पार्टी बनी ?
१०. १९११ का पार्लमेंटरी कानून क्या था ?

फ्राँस में तृतीय रिपब्लिक लोकप्रिय हुई

फ्रांस-प्रशिया युद्ध (१८७०) फ्रांस के लिए एक बड़ा प्रहार था। युद्ध आरंभ होने से पहले वह यूरोप महाद्वीप का सबसे बड़ा देश माना जाता था, लेकिन जर्मन सेनाओं ने उसे रौंद कर छोड़ दिया। दो समृद्ध प्रान्त आल्सेस और लारेन उसके हाथ से निकल चुके थे। युद्ध में उसका अरबों डालर व्यय हुआ था और देश को व्यापक क्षति पहुँची थी। पाँच लाख फ्रांसीसी युद्ध में हताहत हुए थे। जर्मनों का विश्वास था कि आने वाली कई पीढ़ियों तक फ्रांस ऐसा राष्ट्र नहीं रहेगा जिसकी कि गिनती की जाय। लेकिन यह उनकी भूल थी; सख्त मेहनत और हिम्मत ने उसे फिर विश्व का एक बड़ा राष्ट्र बना दिया।

सरकार—पर अपनी पूर्व स्थिति में आने से पहले फ्रांस को गृहयुद्ध की कठिन परीक्षा से गुजरना पड़ा और जिसमें यह निश्चय न था कि किस किस्म की सरकार कायम की जाय। अन्त में यह तय हुआ कि तृतीय रिपब्लिक, जो युद्ध के दौरान स्थापित हुई थी, बरकरार रहे। १८७५ में एक संविधान लिखा गया। सरकार ब्रिटिश सरकार के ढांचे पर ही स्थापित हुई, सिर्फ यह अन्तर था कि वहाँ कोई राजा नहीं था। उसके स्थान पर सात वर्षों के लिए चुना गया एक राष्ट्रपति था जो मुख्य शासनाधिकारी था। वास्तव में उसके अधि-कार इंग्लैण्ड के राजा से अधिक नहीं थे। वास्त-विक शासन-सत्ता एक कैबिनट या मंत्रिमंडल के हाथ में थी, जिसका प्रमुख प्रधानमन्त्री होता था। विधानमंडल या पार्लमेंट में एक सेनेट (जो अब रिपब्लिक की परिषद् कहलाती है) और एक प्रति-निधि सभा थी। प्रतिनिधि सभा कानून बनाती, और

जूलेस फेरी के प्रयासों से लगभग १८८० में, फ्रांस में बच्चों के लिए शिक्षा अनिवार्य कर दी गयी।
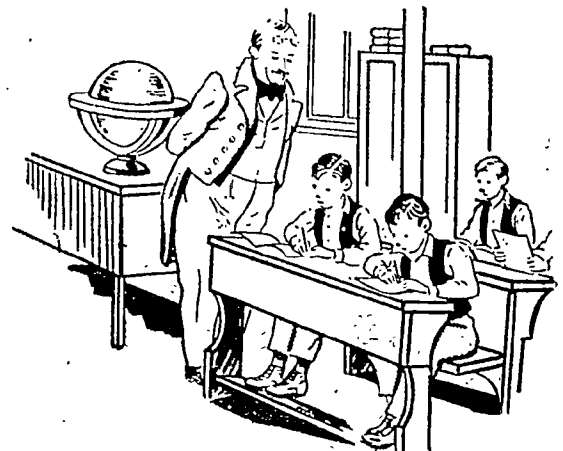
वित्त विधेयकों को स्वीकार करती थी, तथा प्रधान मन्त्री उसके समक्ष उत्तरदायी होता था।

फ्रांस में राजनीतिक दलबन्दी—फ्रांस के भीतर कई धड़े थे, जो एक-दूसरे के विरोधी थे। फ्रांस में एक गंभीर मत-भेद रोमन कैथोलिक चर्च और पादरी-विरोधियों के बीच था, जो कि सरकार में चर्च के प्रभाव के विरोधी थे। फ्रांस में चर्च ने रिपब्लिक के प्रति कोई वफादारी नहीं दिखाई थी क्योंकि रिपब्लिक ने उसके खिलाफ कठोर कदम उठाये थे। बीसवीं शताब्दी के प्रारंभ में फ्रांस की पार्लमेंट ने कानून पर कानून पास कर चर्च और राज्य को अलग-अलग कर दिया था और शिक्षा के क्षेत्र में चर्च की शक्ति कम कर दी थी। धार्मिक संस्थाओं के सदस्यों, पादरियों और पादरिनों को सरकारी स्कूलों में पढ़ाने की अनुमति नहीं थी।

दूसरा गंभीर झगड़ा राजतन्त्रवादियों (मोनार्किस्टों) और रिपब्लिकनों में था। मोनार्किस्ट रिपब्लिक को खत्म कर एक राजा को सत्तारूढ़ करने का बहाना ढूंढते थे। वे रिपब्लिक पर भ्रष्टाचार और अयोग्यता का आरोप लगाते थे।

आर्थिक सुधार—इन मतभेदों के बावजूद, जो कभी-कभी रिपब्लिक को समाप्त करने के लिए क़ाफी प्रबल प्रतीत होते थे, सरकार की लोकप्रियता बढ़ती रही। इसका एक कारण यह था कि आर्थिक स्थिति सुधरी हुई थी, जिसने किसानों, श्रमिकों और उद्योग को मदद पहुँचाई।

शिक्षा—रिपब्लिक के नेताओं ने महसूस किया कि अगर लोगों को बुद्धिमान मतदाता बनाना है तो उन्हें पढ़ने और लिखने योग्य अवश्य ही होना चाहिए। १८८० से आरंभ दशक में ६ वर्ष की आयु से लेकर १३ वर्ष तक के बच्चों की स्कूलों में उपस्थिति अनिवार्य कर दी गयी।

फ्रांस को लोकतन्त्र बड़ी मुश्किलों से प्राप्त हुआ। जब कि इंग्लैण्ड १२१५ ई० से राजा जान के प्रसिद्ध आज्ञापत्र (मैग्नाकार्टा) के बाद से शनैः शनैः प्रजातन्त्र की ओर बढ़ रहा था, फ्रांस बूर्बो सम्राटों के अधीन सरकार के रूप में निरंकुश होता जा रहा था। पुराने शासन को खत्म करने के लिए फ्रांस की क्रान्ति के रूप में काफी खून-खराबी हुई। उसके बाद, फ्रांस रिपब्लिक से राजतन्त्र में बदला, फिर रिपब्लिक बनी और कई बार यह क्रम चला। अब भी फ्रान्स में ऐसे बहुत से लोग थे जो यह विश्वास रखते थे कि राजतन्त्र ही उनके देश में बेहतरीन शासन हो सकता है। लेकिन ज्यों-ज्यों अधिकाधिक क्षेत्रों को अपने मामले स्वयं देखने की अनुमति दी गयी और ज्यों-ज्यों लोगों ने शनैः शनैः स्वशासन की कला सीखी, फ्रांसीसी गणतन्त्र में सुधार होता चला गया।

१. फ्रांस-प्रशिया युद्ध का फ्रांस पर क्या प्रभाव पड़ा ?
२. फ्रांस की तीसरी रिपब्लिक कब स्थापित हुई ?
३. तृतीय रिपब्लिक के अन्तर्गत फ्रांस सरकार का वर्णन करो।
४. फ्रांस की सरकार ब्रिटेन की अपेक्षा कम स्थायी क्यों थी ?
५. तृतीय रिपब्लिक द्वारा रोमन कैथोलिक चर्च के खिलाफ क्या कार्रवाई की गयी ?
६. फ्रांस के लाभ के लिए क्या आर्थिक सुधार किये गये ? उनके प्रभावशाली होने का सबूत दो।
७. फ्रांस में शिक्षा में कैसे सुधार लाया गया ?
८. कृषकों, श्रमिकों और उद्योग के बीच फ्रांस सरकार की लोकप्रियता किस प्रकार बढ़ती चली गयी ?

संयुक्तराज्य अमेरिका में लोकतन्त्र और एकता की वृद्धि

जब ग्रेट ब्रिटेन और फ्रांस प्रजातन्त्र प्रणाली में अग्रसर हो रहे थे, उस समय संयुक्त राज्य भी अधिक लोकतन्त्रात्मक होता जा रहा था। १७८७ के संविधान के अन्तर्गत संयुक्त राज्य की सरकार पूर्ण लोकतान्त्रिक नहीं थी। संविधान का कार्यान्वयन किस प्रकार किया जाय, इस पर उत्पन्न मतभेदों ने दो राजनीतिक पार्टियों को जन्म दिया।

फेडरलिस्ट पार्टी—फेडरलिस्ट पार्टी, जिसका

सरकार पर १८०१ तक नियंत्रण रहा, अपने संस्थापक अलेक्जेण्डर हैमिल्टन के विचारों का अनुसरण करती थी। उसका विश्वास था कि सरकार 'धनी, योग्य और सम्पन्न घरों में पैदा हुए लोगों' की होनी चाहिए। कानून व्यापारियों और वणिकों का पक्षपात करने वाले बनते थे। स्वदेश में निर्मित चीजों को प्रोत्साहन देने के लिए आयात पर तटकर लगाया गया था। ह्विस्की पर कर लगाने से पश्चिम के किसानों को गहरी आर्थिक चोट लगी और एक नेशनल बैंक ने धनिकों को लाभ पहुँचाया। दूसरी ओर फेडरलिस्टों ने देश के लिए एक ठोस वित्तीय आधार स्थापित किया और उसे सफलतापूर्वक युद्धरत ब्रिटिश और फ्रांस के बीच से शान्ति के मार्ग पर चलाया। उन्होंने देश की अच्छी सेवा की।

डेमोक्रेटिक रिपब्लिकन पार्टी—फेडरलिस्टों के विपक्षी डेमोक्रेटिक रिपब्लिक थे, जिनका नेतृत्व टामस जैफरसन ने किया। १८०० के चुनावों में फेडरलिस्टों की प्रधानता समाप्त हो गयी और टामस जैफरसन को कांग्रेस में डेमोक्रेटिक रिपब्लिकनों के बहुमत के साथ, राष्ट्रपति चुना गया। उनका समर्थन तेजी से विकसित हो रहे पश्चिम के लोगों ने बहुमत से किया था। पश्चिम ही इसका कारण बना कि बहुत से उदार कानून बने। उदाहरणार्थ संविधान के अन्तर्गत वोट का अधिकार पूर्ण रूप से राज्यों द्वारा नियन्त्रित था। कुछ राज्यों में मतदान के लिए कुछ खास धार्मिक योग्यताएँ अपेक्षित थीं और सभी राज्यों में कुछ खास सम्पत्ति की योग्यताएँ थीं। परिणामतः छह में से सिर्फ एक बालिग पुरुष को मतदान का अधिकार था। १८२८ तक यह परिवर्तित कर दिया गया। कई पश्चिमी राज्य यूनियन में शामिल हो गये थे। उनके संविधानों में आम पुरुष मताधिकार की व्यवस्था थी। पूर्वी राज्यों ने देखा कि पश्चिम की ओर उनके बहुत अधिक मजदूर आकर्षित हो रहे हैं। एक के बाद एक उन्होंने भी पुरुष मताधिकार की मंजूरी प्रदान की।

एण्ड्र जैक्सन—प्रथम राष्ट्रपति, जो कि पश्चिम के एक साधारण परिवार में पैदा था, १८२८ में चुना गया। एण्ड्र जैक्सन सर्वसाधारण जनता और पश्चिमी प्रदेशों के हितों के पक्षपाती थे जिनका देश के पूर्वी भाग द्वारा अपने आर्थिक स्वार्थों के कारण विरोध किया जाता था।

प्रारम्भिक सामाजिक सुधार—१८३० और १८६० के बीच के समय में सामाजिक सुधारों के लिए आन्दोलन, विशेषकर देश के उत्तरी हिस्से में, आरंभ होने लगा था। विलियम लायड गैरीजन ने, अपने समाचारपत्र "दि लिबरेटर" के माध्यम से, संयुक्त राज्य में गुलामों की स्वतन्त्रता के लिए संघर्ष किया। समस्त उत्तर में गुलामी विरोधी सोसाइटियाँ संगठित की गयीं। बहुत से दक्षिणवासियों ने भी गुलामी पर आपत्ति उठाई। शराब-विरोधी समितियों ने शराब की बुराइयों को उछाला। इसी काल में पहले-पहल महिलाओं ने सामाजिक सुधार में सक्रिय भाग लिया। पागलों के लिए अस्पताल खोले गये और कैदियों के साथ अधिक मानवीय व्यवहार आरंभ हुआ। यह सब मुख्यतः महिलाओं के प्रयासों का परिणाम था। कर्ज के लिए बंदीगृह भेजना समाप्त कर दिया गया।

संयुक्तराज्य के संस्थापकों ने जन-शिक्षा की आवश्यकता को स्वीकार किया था। टामस जैफरसन अपने जीवनपर्यन्त अपने घर के राज्य वर्जीनिया में जन-शिक्षा की एक पद्धति बनवाने के लिए प्रयास करते रहे। न्यू इंग्लैंड के बाहर, १८०० में, बहुत कम स्कूल ऐसे थे जो निःशुल्क थे। अब्राहम लिंकन को एक वर्ष से ज्यादा स्कूली शिक्षा नहीं मिली थी और उनके बाद राष्ट्रपति बने एण्ड्र जैक्सन तब तक पढ़ना-लिखना नहीं जानते थे जब तक उनकी पत्नी ने उन्हें नहीं पढ़ाया था।

१८३० से आरम्भ दशक में शिक्षा में अभिरुचि पुनः बढ़ी। इसका अधिकांश श्रेय होरेस मान और हेनरी बरनार्ड जैसे लोगों के कार्यों को है। प्रत्येक राज्य में शिक्षण-पद्धतियाँ कायम हो गईं और उनमें से बहुतों ने टीचरों की ट्रेनिंग के लिए स्कूल स्थापित किये और राज्य अधीक्षकों से शिक्षण कार्यों की योजना बनाने और गतिविधि का निरीक्षण करने को कहा। कुछ राज्यों ने हाईस्कूल भी स्थापित

किये और कुछ ने आगे की पढ़ाई के लिए कालेज बनवाये। पर अमेरिका के सार्वजनिक हाईस्कूलों और कालेजों का अधिक विकास बाद में ही हुआ।

राज्यों के बीच युद्ध—शुरू से ही संविधान के अन्तर्गत यह मतभेद बना हुआ था कि राज्यों और संघीय सरकार के क्या-क्या अधिकार रहेंगे। कुछ अपवादों को छोड़कर, संविधान में प्रत्येक के अधिकारों को स्पष्ट नहीं किया गया था। इस प्रश्न पर राज्यों और संघीय सरकार के बीच कई वाद-विवाद थे। पहले पहल, फेडरलिस्ट पार्टी ने केन्द्र में एक शक्तिसम्पन्न सरकार का समर्थन किया और डेमोक्रेटिक रिपब्लिकनों का कहना था कि राज्यों के हाथों में अधिक शक्ति सौंपी जाय। गरज यह कि डेमोक्रेटिक रिपब्लिकन पार्टी राज्यों के अधिकारों की पक्षपाती थी। बाद में जब डेमोक्रेटिक रिपब्लिकनों को राष्ट्रीय सरकार का नियंत्रण मिला, तब उन्होंने राष्ट्रीय सरकार के अधिक अधिकारों पर ज़ोर दिया, जब कि फ़ेडरलिस्टों ने राज्यों के अधिकारों का पृष्ठ-पोषण

अपाहिजों के लिए शारीरिक चिकित्सा एक नवीनतम और सबसे सफल चिकित्सा है। यह नवयुवतियों के लिए एक आमदनी कराने वाला पेशा भी बन सकता है।

किया। तब, लगभग १८०० में, संयुक्त राज्य अमेरिका के सुप्रीम कोर्ट ने, जान मार्शल के नेतृत्व में, एक सशक्त राष्ट्रीय सरकार का समर्थन किया। इस प्रश्न पर देश धीरे-धीरे भौगोलिक आधार पर बँट गया। ओहायो नदी और मोटे तौर से इसके मुहाने से पश्चिम की ओर खींची गई रेखा के उत्तर के राज्यों ने सशक्त केन्द्रीय सरकार का समर्थन किया। इस रेखा के दक्षिण के राज्यों ने अधिकार-सम्पन्न राज्य सरकारों की हिमायत की।

एक और प्रश्न पर भी उत्तर और दक्षिण बँट गये। अधिकांश गुलाम दक्षिण में रहते थे और उत्तर में एक प्रबल गुलाम विरोधी भावना पैदा हो गयी थी। राष्ट्रीय सरकार गुलामी के प्रश्न का निर्णय करेगी या राज्य सरकारें? यह प्रश्न पुनः राज्यों के अधिकारों की बात खुले रूप से सामने ले आया। अन्त में इस प्रश्न पर घमासान लड़ाई छिड़ गयी। राज्यों के बीच का युद्ध (१८६०-१८६५) अमेरिका के इतिहास में सर्वाधिक दुःखपूर्ण और सर्वाधिक खून-खराबी वाला रहा। युद्ध की समाप्ति पर अब्राहम लिंकन के नेतृत्व में उत्तर की विजय ने अमेरिका में गुलामी की परिसमाप्ति को सुनिश्चित बना दिया और अमेरिका राष्ट्रीय एकता की ओर अग्रसर हुआ।

बाद के सामाजिक सुधार—युद्ध के बाद संयुक्त राज्य में उद्योगीकरण बहुत तेजी से हुआ। देश में कोयला, लोहा, लकड़ी, तेल और अन्य प्राकृतिक साधनों से बड़ी-बड़ी सम्पत्तियाँ बनीं। चूँकि संविधान लगभग ४० लाख किसानों के एक राष्ट्र के लिए बना था, इसलिए इसमें उन समस्याओं पर विचार नहीं किया गया था जो एक और बड़े तथा उद्योगीकृत राष्ट्र में उत्पन्न होंगी। स्वार्थी लोगों ने राष्ट्र के प्राकृतिक साधनों को बरबाद किया और श्रमिकों से अनुचित लाभ उठाया। जबरदस्त संघर्ष के बाद ही राज्य और संघीय सरकारों ने प्राकृतिक साधनों के संरक्षण और निर्माण तथा रेलपथों के नियमन के कानून पास किये। श्रमिकों की सहायता के लिए श्रमिक संगठनों ने कानून बनवाए।

प्रेसीडेण्ट थियोडोर रूजवेल्ट और प्रेसीडेण्ट वुडरो विलसन ने व्यापार पर नियंत्रण और श्रमिकों तथा जनता की शोषण से रक्षा के लिए उदार विधान की पैरवी की। बड़े कारोबार वालों को छोटे रोजगार वालों का कारबार ठप्प करने को मजबूर करने से रोकने के लिए कानून पास किये गये। रेल-पथों के भाड़े का नियमन कर रेलपथों

की कई दूषित प्रणालियाँ गैरकानूनी करार दी गई। प्राकृतिक साधनों को बेकार बरबाद होने से बचाने के लिए, थियोडोर रूजवेल्ट ने दीर्घकालीन संरक्षण कार्यक्रम जारी किया। श्रमिकों और किसानों के पक्ष के कानून विलसन प्रशासन में पास हुए। कांग्रेस ने भी एक ऐक्ट पास कर संयुक्त राज्य के बैंकिंग में सुधार किया। थियोडोर रूजवेल्ट का सबके लिए "बराबर न्याय", और वुडरो विलसन की "नयी स्वतन्त्रता" ने संयुक्तराज्य अमेरिका में सामाजिक और आर्थिक लोकतंत्र को अग्रसर किया।

मताधिकार—संयुक्तराज्य में मतदान की योग्यताएँ आम तौर पर राज्य विधानमण्डलों द्वारा निश्चित की गयी थीं, फिर भी, राज्यों के बीच युद्ध के बाद संघीय संविधान में एक संशोधन पारित किया गया कि भूतपूर्व दासों को मताधिकारों की गारंटी रहेगी। १९२० में एक दूसरे संशोधन से महिलाओं को मताधिकार मिला।

अन्त: प्रवास—१९वीं सदी में संयुक्तराज्य की अन्त:प्रवास की नीति बड़ी उदार थी। इसका एक कारण यह भी था कि श्रमिकों के लिए पश्चिमी प्रदेश को बसाने के लिए और पूर्वी कारखानों में श्रमिकों की आवश्यकता थी। जो कोई भी ऐसा करना चाहता, वह अमेरिका आकर उसका नागरिक बन सकता था। विश्व के पददलितों के लिए अमेरिका संरक्षण और स्वतन्त्रता का प्रतीक बन गया था।

ज्यों-ज्यों अमेरिका में आबादी घनी होती गई और श्रमिक संगठनों ने अमेरिका में सस्ते विदेशी श्रमिको को बुलाने पर आपत्ति उठाई, अन्त:प्रवास को विनियमित करने के कानून पास हुए। पहले कानून ने चीनियों पर रोक लगाई। दूसरे कानूनों ने अवांछनीयों, बीमारों, पागलों और अपराधियों के लिए द्वार बन्द किये। बाद में, प्रत्येक राष्ट्र के लिए एक वार्षिक कोटा निर्धारित किया गया।

लोकतन्त्र—१९वीं सदी में ग्रेट ब्रिटेन, फ्रांस और संयुक्तराज्य में लोकतन्त्र विकसित हुआ। दुनिया के अन्य राष्ट्र इस परीक्षण को उत्सुकता से देख रहे थे। ऐसा प्रतीत होता था कि दुनिया की राजनीतिक बुराइयों का निदान मिल गया है। इसलिए नहीं कि इन सरकारों में से कोई आदर्श थीं—ये उससे बहुत दूर थीं। लेकिन यह सिद्धान्त कि मानव समाज सामूहिक रूप से निश्चय कर सकता है कि उनकी सरकार कैसी होनी चाहिए, विश्व के तीन सबसे आगे बढ़े हुए देशों में स्थापित हो गया प्रतीत होता था।
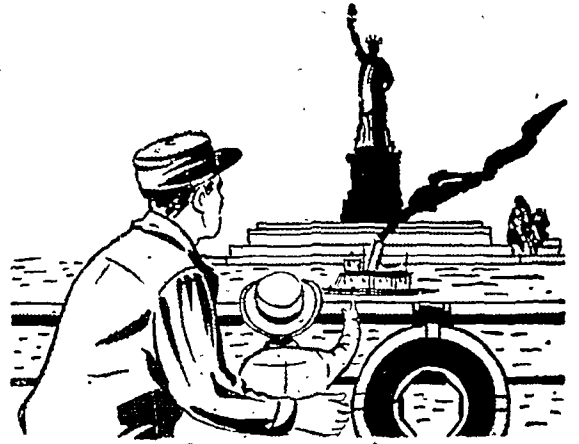
१. संयुक्तराज्य में प्रथम दो राजनीतिक पार्टियाँ कौन-कौन सी थीं ? उनका नेतृत्व कौन करते थे और उनके विचारों में क्या अन्तर था ?
२. आम पुरुष मताधिकार अमेरिका में क्यों स्वीकार किया गया ?
३. जैक्सन किन नीतियों का समर्थक था ?
४. १८३० और १८६० के बीच संयुक्तराज्य में कौन से सामाजिक सुधार हुए ?
५. उत्तर और दक्षिण के किन प्रमुख मतभेदों से राज्यों के बीच युद्ध हुआ ? उसका क्या परिणाम रहा ?
६. सामाजिक विधान बनाने में संयुक्त राज्य को क्यों विलम्ब लगा ? थियोडोर रूजवेल्ट और वुडरो विलसन के प्रशासन में कौन से कानून पास हुए ?
७. संविधान में कौन से संशोधन कर अधिक लोगों को मतदान का अधिकार दिया गया ?
८. किस तरह और क्यों अमेरिका की अन्त:-प्रवास नीति में परिवर्तन हुए ?

विचार-विमर्श के लिए प्रश्न

१. इंग्लैंड की लार्ड्स सभा ने अधिक पीयर बनाये जाने पर क्यों आपत्ति उठाई ?

२. एक देश में, जिसे स्वायत्त शासन का अनुभव नहीं है, एकाएक लोकतन्त्र की स्थापना के बजाय शनैः शनैः लोकतन्त्र का विकास क्यों ज्यादा संतोषजनक होता है ?

३. अनुदार सरकारें कभी-कभी ऐसे उदार कानून क्यों बनाती हैं जिनको वे पूर्णरूप से स्वीकार नहीं करतीं ?

४. तुम्हारे राज्य में मौजूदा समय में कौन-कौन सी पार्टियाँ हैं ?

५. संयुक्त राज्य के संविधान-निर्माताओं ने उसमें यह व्यवस्था क्यों रखी कि प्रत्येक दस वर्षों के बाद प्रतिनिधि सभा की सीटों का पुनर्वितरण हो ?

६. १९११ के पार्लमेंट ऐक्ट के बाद ग्रेट ब्रिटेन में लार्ड सभा की क्या उपादेयता थी ?

७. संयुक्त राज्य में अब भी किन सामाजिक सुधारों की जरूरत है ?

८. बताओ कि अमेरिकी कवि आर्किबाल्ड मैकलेश का यह लिखने का क्या अभिप्राय था कि, "लोकतंत्र कुछ ऐसी वस्तु है जिसे राष्ट्र को हमेशा व्यवहार में लाते रहना चाहिए ?"

इतिहास के उपकरणों का प्रयोग

एक. नाम, तिथियाँ और स्थान

(क) क्या तुम इन शब्दों को स्पष्ट कर सकते हो ?

ब्लाक—बजट बिल—केबिनेट—कैथोलिक—मुक्ति कानून—चांसलर आफ एक्सचेकर—कंजरवेटिव (रूढ़िवादी पार्टी)—फेडरलिस्ट—एक सरकार बनाना—लेबर पार्टी—लिबरल पार्टी—व्यापारिक जहाजी बेड़ा—प्रधान मंत्री—मंत्रिवर्ग—पीयर—पार्लमेंट बिल—१८३२ का सुधार विधेयक—१८६७ का सुधार विधेयक—१८८४ का सुधार विधेयक—सड़े-गले शहर—तटकर—'तृतीय पार्टियाँ'—टोरी पार्टी।

(ख) इन तिथियों के बारे में बताओ :

१८३२—१८३७—१९०१—१८६०-१८६५ १८६७—१८८४—१९११—१९२०।

(ग) निम्नलिखित स्थानों को नक्शे में दिखाओ :

आलसेस—लारेन—न्यू इंग्लैंड—न्यूयार्क—संयुक्त राज्य का उत्तरी भाग—ओहायो नदी—संयुक्त राज्य का दक्षिणी हिस्सा—वर्जीनिया।

(घ) इन व्यक्तियों के बारे में तुम क्या जानते हो ?

हेनरी बर्नार्ड—जान ब्राइट—बेंजामिन डिजरायली—डेविड लायड जार्ज—विलियम ई० ग्लैडस्टन—अलेक्जेण्डर हैमिल्टन—एण्ड्र जैक्सन—वुडरो विल्सन—अब्राहम लिंकन—जान मार्शल—विक्टोरिया—ड्यूक आफ वेलिंगटन।

दो. क्या तुम अपने विचार स्पष्ट रीति से प्रकट कर सकते हो ?

(क) कामंस सभा का एक सदस्य लगभग ७० हजार लोगों का प्रतिनिधित्व करता है। कक्षा के एक छात्र को इस बात की जानकारी देने के लिए नियुक्त करो कि अमेरिकी प्रतिनिधि सभा का एक सदस्य कितने लोगों का प्रतिनिधित्व करता है।

(ख) एक दूसरे छात्र को इस बात का जिम्मा सौंपो कि वह तुम्हारे राज्य में मतदान के लिए आवश्यक योग्यताओं और अपेक्षाओं का पता लगाकर कक्षा में रिपोर्ट दे।

(ग) तीसरा छात्र संयुक्त राज्य में तृतीय राजनीतिक दलों का विवरण पेश करते हुए बताए कि हर एक पार्टी की नीति क्या है ?

(घ) बहुत-सी गैर-सरकारी संस्थाएँ सामाजिक सुधार और अन्तर्राष्ट्रीय सद्भाव बढ़ाने का काम कर रही हैं। उनमें से कुछ के नाम नीचे दिये गये हैं। इनमें से एक को चुनकर उस पर रिपोर्ट लिखो।

रॉकफेलर फाउण्डेशन—यंगमैन्स क्रिश्चियन एसोसियेशन—यंग विमेन्स क्रिश्चियन एसोसियेशन—ब्वॉय स्काउट—गर्ल्स स्काउट—हल हाउस—इंगलिश स्पीकिंग यूनियन—रसल सेज फाउण्डेशन—ए० डब्लु० मैलोन एजुकेशनल एण्ड चैरिटेबल ट्रस्ट—गर्ल्स गाइड—रेडक्रास—कार्नेगी कार्पोरेशन आफ न्यूयार्क—फोर्ड फाउण्डेशन—वर्ल्ड पीस फाउण्डेशन।

तीन. एक सम्पादकीय (अग्रलेख)

निम्नलिखित प्रसंगों में से किसी एक को चुन कर उस पर अग्रलेख लिखो जो एक समाचारपत्र में प्रकाशित हुआ होता ।

(क) ड्यूक आफ वेलिंगटन का प्रधानमंत्री के पद से इस्तीफा ।

(ख) १८३२ का सुधार बिल पारित हो गया ।

(ग) अमेरिका (या ब्रिटेन) में महिलाओं को मतदान का अधिकार प्राप्त हुआ ।

(घ) ड्रेफ़ुस अपराधमुक्त घोषित किया गया ।

(ङ) जैफरसन संयुक्त राज्य अमेरिका के राष्ट्रपति चुन लिये गये ।

(च) संयुक्त राज्य में अन्तः प्रवासियों की कोटा-प्रणाली को कानून बना दिया गया ।

(छ) पार्लमेंट बिल पारित हुआ ।

अधिकांश प्रश्नों पर, यदि तुम्हारा अग्रलेख एक लिबरल समाचारपत्र के लिए लिखा गया है तो वह किसी रूढ़िवादी पत्र के लिए लिखे जाने वाले अग्रलेख से भिन्न होगा ।

३४ अन्य देशों में परिवर्तन

जर्मनी और इटली की राष्ट्रीय भावना और फ्रांस, ग्रेट ब्रिटेन तथा संयुक्त राज्य में उदारवादी आन्दोलन दुनिया के अन्य भागों में भी महसूस किये गये। यह बात बाल्कन प्रायद्वीप के लिए सत्य थी जहाँ जनता शताब्दियों से तुर्कों के शासन में कष्ट उठाती रही थी। बाल्कन प्रायद्वीप में राष्ट्रीय राज्यों का विकास कठिन था क्योंकि बहुत से विभिन्न जातियों के लोग वहाँ रहते थे। वहाँ सर्बियन, बल्गेरियाई, ग्रीक, क्रोट, हंगेरियन, रूमानियन और स्लावों की मुख्य-मुख्य जातियों के अलावा अन्य बहुत सी जातियाँ थीं। १४५३ में कुस्तुन्तुनिया के पतन के बाद तुर्कों ने अधिकांश प्रायद्वीप पर अधिकार जमा लिया था और वहाँ के सभी लोगों को अपनी अनिच्छुक प्रजा बनाया था।

बाल्कन प्रदेशों पर तुर्क शासन

१७ वीं सदी के उत्तरार्द्ध में तुर्क अपनी शक्ति की चरम सीमा पर पहुँच गये थे। उस समय उनका साम्राज्य कैस्पियन सागर, काला सागर और पश्चिम में फारस की खाड़ी तक फैला हुआ था, जिसमें उत्तरी अफ्रीका का तट भी शामिल था। १६८३ में उन्होंने हंगरी का सारा इलाका जीता। उन्होंने विएना में घेरा डाला और प्रतीत होता था कि पश्चिमी यूरोप की ओर बढ़ेंगे। लेकिन पोलैंड का राजा पवित्र रोमन सम्राट् की मदद को दौड़ा और उन दोनों ने मिलकर मुसलमानों को परास्त किया। इसके बाद, तुर्की की शक्ति कम हो गयी। शनैः शनैः तुर्क पीछे खदेड़े गये और १७ वीं सदी के अन्त तक ट्रान्सिलवानिया और हंगरी पुनः पवित्र रोमन सम्राट् के हाथ में आ गये। शेष बाल्कन प्रायद्वीप में, क्रिश्चियन दास से बना दिये गये और तुर्कों की सेना ने निर्दयता से उन पर शासन किया। तुर्की का सैनिक शासन निर्दयी ही नहीं, भ्रष्ट भी था। सैनिक नेता एक दूसरे से ईर्ष्या रखते थे। गुलाम जातियाँ अक्सर लम्बी घूस देकर अच्छा व्यवहार पाने का यत्न करती थीं। ऐसी परिस्थितियों में सुलतान की सेना की शक्ति घटने लगी और रूस का कैथराइन, द्वितीय उनके खिलाफ युद्ध छेड़कर कामयाब हुआ। १७९२ में तुर्कों ने निस्तर नदी के उत्तर का समस्त क्षेत्र रूस के हवाले किया। कैथराइन ने ग्रीस में तुर्कों के लिए संकट पैदा करने का प्रयास किया लेकिन उस

सुलतान अपनी बाल्कन प्रजा पर सभी प्रकार की क्रूरता करने और बेहद कर लादने पर आपत्ति न करता था।

समय उसे बहुत कम सफलता मिली। बाद में, १८२९ में रूस, फ्रांस और ब्रिटेन की मदद से ग्रीक तुर्क शासकों से अपनी स्वाधीनता प्राप्त कर सके।

क्रीमिया का युद्ध—ऐसा प्रतीत होता है कि तब तुर्की की शक्ति तेजी से घट रही थी। वस्तुतः रूस के जार ने १८५३ में तुर्की को "यूरोप के बीमार आदमी" की संज्ञा दी थी और ब्रिटेन को सुझाव दिया था कि चूँकि बीमार व्यक्ति जल्दी ही मर जाएगा, इसलिए वे उसका क्षेत्र भी ले सकते हैं। यह वे आसानी से कर सकते थे, लेकिन ब्रिटेन और फ्रांस दोनों ही पूर्वी भूमध्यसागर में रूस के शक्तिशाली होने से भयभीत थे और चाहते थे कि तुर्की या ओटोमान साम्राज्य वहाँ "अन्तःस्थ राज्य" के रूप में बना रहे. दो शक्तिशाली राष्ट्रों के बीच में हो। फिर भी रूस यह चाहता था कि भूमध्यसागर जाने का रास्ता उसे मिले और वह बाल्कन प्रदेश और कुस्तुनतुनियाँ में तुर्कों की शक्ति को कमजोर बनाने के मौके की प्रतीक्षा में था। अन्त में जार और तुर्की के बीच इस प्रश्न पर, झगड़ा पैदा हो गया कि फिलिस्तीन में आर्थोडाक्स क्रिश्चियनों की रक्षा का रूस को अधिकार है या नहीं। इसके बाद युद्ध हुआ। ब्रिटेन और फ्रांस रूस के इरादों से भयभीत होकर, १८५४ में तुर्की की ओर से युद्ध में कूदे। लड़ाई मुख्यतः क्रीमिया प्रायद्वीप में सेवस्तोपोल में घेरा डालने की थी, इसलिए यह युद्ध क्रीमिया युद्ध कहलाया। इस युद्ध में, दोनों पक्षों की सेनाओं की असाधारण क्षति हुई, पर युद्ध के घावों से भी ज्यादा सैनिक बीमारी और भुखमरी से मरे। अन्त में सेवस्तोपोल मित्रराष्ट्रों के हाथ में आ गया और रूस ने संधि का प्रस्ताव रखा। कुछ समय के लिए रूसी हमला रोक दिया गया।

इसी क्रीमिया युद्ध से फ्लोरेंस नाइटिंगेल ने मरीजों की देखभाल में सुधार प्रारम्भ किये थे।

फ्लोरेंस नाइटिंगेल "लैंप वाली देवी" क्रीमिया युद्ध में घायलों की सेवा कर रही है।

यूरोप में ओटोमान साम्राज्य का विघटन—ग्रीस के अलावा बाल्कन के अन्य लोगों ने आजादी हासिल करने की कोशिश की। इसका कारण अंशतः राष्ट्रीयता की एक जबरदस्त भावना और अंशतः तुर्कों का निर्दय शासन था। गोकि पश्चिमी यूरोप के क्रिश्चियन राष्ट्र तुर्कों की प्रजा से सहानुभूति रखते थे पर उन्हें भय था कि छोटे और कमजोर बाल्कन राज्यों के समूह को रूस हड़प जायगा या कम से कम उसका प्रभुत्व उन पर हो जायगा। इससे पश्चिमी राष्ट्रों की स्थिति विचित्र सी हो गयी थी। वे बाल्कन लोगों को स्वतन्त्र देखना तो पसंद करते थे लेकिन वे रूस की शक्ति की बढ़ोतरी से घबराते थे।

रूसी और बाल्कन लोग, सभी स्लाव थे और रूस ने छोटे स्लाविक गुटों के संरक्षक होने का ढोंग रचा। अन्त में, १८७७-१८७८ में रूस ने अपने स्लाविक भाइयों की मदद के लिए तुर्कों से युद्ध छेड़ दिया। उसकी सफलता से ब्रिटेन तथा आस्ट्रिया-हंगरी, दोनों चिन्तित हुए। उन्होंने माँग की कि एक संधि पर निर्णय के लिए बड़े राष्ट्रों की बर्लिन में एक कांग्रेस हो। बर्लिन की संधि (१८७८) ने, यूरोप में तुर्कों के शासनान्तर्गत लगभग सब क्षेत्रों के लोगों को स्वाधीनता प्रदान कर दी। इसके साथ ही साथ ब्रिटेन तथा आस्ट्रिया-हंगरी रूस के प्रसार को रोकने में सफल हुए।

बाल्कन युद्धों ने विश्व संकट उपस्थित किया

बाल्कन राज्यों का संकट अभी समाप्त नहीं हुआ था। सर्बिया आस्ट्रिया-हंगरी का एक प्रान्त बोसनिया लेना चाहता था और अन्य नये स्वतंत्र राज्य अपनी सीमाओं से सन्तुष्ट नहीं थे। १९०८ में, तुर्की की सरकार युवक तुर्कों के एक दल के मातहत नये सिरे से संगठित हुई थी, जिन्होंने सुधार लाने और तुर्की की सेना को शक्तिशाली बनाने का प्रयास किया।

प्रथम बाल्कन युद्ध—१९१२ में बल्गेरिया, सर्बिया और ग्रीस राज्यों ने तुर्कों के आक्रमणों से अपनी रक्षा के लिए एक सैन्य संधि की, जो बाल्कन लीग कहलाई। जब तुर्की की सेनाएँ युद्धाभ्यास कर रही थीं, बाल्कन लीग युद्ध के लिए तैयार हो गयी। पहले छोटे से राज्य मान्टिनिग्रो ने तुर्की के खिलाफ युद्ध घोषित किया और फिर बाल्कन लीग को अपने साथ शामिल होने के लिए बुलाया। रूस ने, अपने को फिर इन छोटे स्लाविक राज्यों का एक प्रकार का बड़ा भाई दर्शाते हुए, इस बार युद्ध न करने की सलाह दी। लेकिन लीग तुर्की के खिलाफ युद्ध लड़ती गयी और विजयी हुई। समझौते में, बल्गेरिया को जो, १९०८ में अपनी स्वतन्त्रता की घोषणा कर चुका था, यूरोप में तुर्की के शेष बचे क्षेत्र का अधिकांश भाग मिला। यूरोप में तुर्की के अधिकार में अब सिर्फ कुस्तुन्तुनियां और समुद्रतट के किनारे की छोटी-सी पट्टी रह गयी।

द्वितीय बाल्कन युद्ध—असन्तुष्ट बल्गेरिया ने दूसरे बाल्कन राज्यों पर हमला कर दिया और १९१३ में द्वितीय बाल्कन युद्ध आरम्भ हो गया। इस बार सर्बिया, ग्रीस, रूमानिया, मान्टिनिग्रो और तुर्की बल्गेरिया के विरुद्ध लड़े। बल्गेरिया पराजित हुआ और उसे नयी हस्तगत की गयी जमीन का कुछ हिस्सा छोड़ देना पड़ा। अन्य देशों ने उसका क्षेत्र हथिया कर अपने राज्यों की सीमाएँ बढ़ा लीं। तुर्की को थ्रेस का कुछ हिस्सा वापस मिल गया।

यूरोप के बड़े राष्ट्र इन युद्धों को इस आशंका के कारण बड़े ध्यान से देख रहे थे कि कहीं यह बाल्कन प्रायद्वीप के बाहर न फैल जाये। रूस अपने स्लाविक भाइयों को शक्तिसम्पन्न बनाना चाहता था लेकिन आस्ट्रिया डरता था कि बाल्कन का राष्ट्रीयता आन्दोलन उसके अपने देश में भी फैल सकता है, जो इतने राष्ट्रों के लोगों से मिलकर बना है। इसलिए बाल्कन में जो कुछ भी हो रहा था, उसे वह असंतोष की दृष्टि से देखता था। अन्त में यह संकट खत्म हो गया। यूरोप में बड़ी लड़ाई टल गयी थी, लेकिन सर्बिया को कोई बन्दरगाह नहीं मिला था और वह अब भी असंतुष्ट था।

१. कुस्तुन्तुनियां के पतन के बाद किस प्रकार तुर्कों को यूरोप पर फैलने से रोका गया ?
२. कैथराइन महान् ने कौन से क्षेत्र तुर्की से लिए ?
३. रूस ने बाल्कन देशों के मामलों में हस्तक्षेप क्यों किया ?
४. किन देशों ने रूस को बाल्कन देशों को हथियाने से रोकने का प्रयास किया और क्यों ?
५. क्रीमिया युद्ध के क्या कारण थे ? उसमें किसकी जीत रही ?
६. फ्लोरेंस नाइटिंगेल कौन थी ?
७. बर्लिन की काँग्रेस क्यों बुलाई गयी ? वहाँ क्या समझौता किया गया ?
८. बाल्कन प्रायद्वीप की किन परिस्थितियों के कारण प्रथम बाल्कन युद्ध हुआ ?
९. उस युद्ध का क्या परिणाम हुआ ? उसने द्वितीय बाल्कन युद्ध के बीज कैसे बोए ?
१०. बाल्कन युद्धों में यूरोप के बड़े राष्ट्रों की दिलचस्पी क्यों थी ?

रूसी निरंकुश प्रभुता के विरुद्ध विद्रोह

रूसी जनता—१९वीं सदी के प्रारम्भ में रूस वास्तव में बहुत सी जातियों के लोगों को मिलाकर बना एक साम्राज्य था। साम्राज्य के मध्य में रूसी थे, जो अधिकांश यूरोपीय रूस में बसे थे। किनारों पर बहुत सी विदेशी जातियों के लोग थे। उन्हें विगत काल में जीतकर रूस के कठोर शासन में लाया गया था। १८०९ में फिनलैंड, नैपोलियनकालीन युद्धों के

दर्मियान शामिल किया गया था। पोलैंड का एक बड़ा हिस्सा थोड़ा-थोड़ा करके प्राप्त किया गया था। दक्षिण-पश्चिमी रूस में 'छोटे रूस' के लोग रहते थे। बहुत से रूमानिया वासी बेस्सारबिया में रहते थे। बाल्टिक सागर क्षेत्र में, रूस का लिथुयानियाई, लेटवियाई और श्वेत रूसियों पर शासन था। इनमें से अधिकांश जातियों की भाषा, रीति-रिवाज और ऐतिहासिक पृष्ठभूमि 'बड़े रूसियों' से सर्वथा भिन्न थी और कुछ का धर्म भी अलग था। इस कारण १९वीं सदी में, जबकि जनता की राष्ट्रीयता अन्य जातियों को एकता के सूत्र में बाँध रही थी रूस की बहुत सी जातियाँ भी इसके लिए इच्छुक थीं।

पाश्चात्यवाद और सर्व-स्लाववाद— रूसी जार जो अपने विस्तृत राज्य-क्षेत्र को कायम रखने की आशा लगाये थे, विद्रोहों को बढ़ावा मिलने के भय से राष्ट्रीयता को प्रोत्साहन देने का साहस नहीं करते थे। जार असन्तोष को दबाने में बड़े तेज थे। दूसरी ओर, यूरोप में १९वीं सदी की घटनाओं ने रूसियों में राष्ट्रवादी भावना को प्रबल बना दिया था। उदाहरण के लिए, रूस में उदारवादी अपने देश को उतना ही प्रगतिशील बनाना चाहते थे जितना यूरोप के अन्य राष्ट्र थे। वे विश्वास करते थे कि रूस पश्चिमी तौर-तरीके अपनाकर ही प्रतिष्ठा प्राप्त कर सकता है। उनका कहना था कि रूस को एक संवैधानिक सरकार बनानी चाहिए, अपनी सेना में सुधार करना चाहिए और अपनी अर्थव्यवस्था का उद्योगीकरण करना चाहिए। पर जो लोग जाति के आधार पर रूसी राष्ट्रवाद कायम करना चाहते थे, उन्होंने सर्व-स्लाववाद नामक आन्दोलन को बढ़ाया। पूर्वी और दक्षिण-पूर्वी यूरोप की अनेक जातियां मूल-जाति की स्लाविक शाखा की थीं। रूसियों को यह विश्वास दिलाया गया था कि स्लावों के कल्याण की देख-भाल करना उनका "पवित्र कर्त्तव्य" है।

रूस के उदारवाद विरोधी—रूसी शासकों ने सिर्फ साम्राज्य में रहने वाली विदेशी जातियों के स्वशासन का ही विरोध नहीं किया, अपितु उन्होंने जहाँ भी उदारवाद की चिनगारियाँ देखीं वहीं उन्हें बुझा दिया। जार अलेक्जेण्डर प्रथम (१८०१-१८२५) ने रूसियों के लिए संविधान मंजूर करने के बारे में गंभीरतापूर्वक सोचा। उसने पाश्चात्य विचारों के प्रति सहानुभूति जाहिर की। पर व्यवहार में, उसने सिर्फ प्रशासन में सुधार कर उसे अधिक कर्त्तव्यपरायण बनाने के अलावा और कोई प्रगति नहीं दिखाई। अलेक्ज़ेण्डर प्रथम ही ने यथास्थिति कायम रखने और आमूल परिवर्तन रोकने के लिए चतुर्विध मित्रमंडल के संगठन में सहायता की थी। अलेक्जेण्डर का भाई, निकोलस प्रथम, उसके बाद रूस का शासक हुआ। उसने उदारवादी होने का दिखावा तक नहीं किया। उसने लोकतन्त्रीय विचारों के लोगों को पकड़ना सरकार का काम बना दिया। वस्तुतः, १८३३ में उसने उदारवाद के खिलाफ आस्ट्रिया और प्रशिया के शासकों से मैत्री की। १८४९ में उसने हंगरी में विद्रोह को दबाने में आस्ट्रिया की सहायता की।

"सुधारवादी जार"—अलेक्जेण्डर द्वितीय (१८५५-१८८१) ने, क्रीमिया युद्ध के दौरान अपने पिता निकोलस की मृत्यु के बाद, रूस की बागडोर संभाली। रूस पराजित हुआ था और युद्ध में रूस के आचरण की देश में बहुत ज्यादा आलोचना हुई थी। अलेक्जेण्डर ने, जो शान्ति सम्मेलन में रूस का प्रतिनिधित्व कर रहा था, ऐसी शान्ति का प्रयास किया जो उसके लिए बहुत मँहगी न पड़े। इस तरह वह आलोचकों को शाँत कर सकेगा। अलेक्जेण्डर ने असन्तुष्ट दलों को सन्तुष्ट करने का सच्चे दिल से प्रयास किया। अगले कुछ वर्षों तक उसने अपना ध्यान सामाजिक और आर्थिक सुधारों में लगाया और इस प्रकार "सुधारवादी जार" की प्रतिष्ठा प्राप्त की।

एक सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य अलेक्जेण्डर द्वितीय ने यह किया कि सर्फों अर्थात् बेगारिये मजदूरों को मुक्त कर दिया। १८६१ में एक ऐसा कार्यक्रम चलाया गया कि कृषि का काम करने वाले कई लाख किसानों को मुक्ति मिले। उस योजना के अन्तर्गत लगभग आधी कृषि भूमि उस समय सर्फों को दे दी गयी और जमींदारों को उनकी क्षति के

हिस्टौरिकल पिक्चर सर्विस

२२ जनवरी, १९०५ को एक आर्थोडाक्स पादरी ने हड़तालियों के एक दल का नेतृत्व किया और उन्हें जार के समक्ष यह प्रतिवेदन प्रस्तुत करने के लिए कि उनके कष्टों को कम किया जाय, उन्हें शिशिरकालीन सेंट पीटर्सबर्ग के राजमहल में ले गया। राजमहल के सैनिकों ने भीड़ पर गोली चलाई, सैकड़ों व्यक्ति मर गये या घायल हुए और यह दिन "लाल रविवार" के नाम से मशहूर है।

एवज में कुछ वर्षों तक वार्षिक किस्तों के रूप में मुआवजा दिया गया।

अलेक्जेण्डर तृतीय—अलेक्जेण्डर द्वितीय का पुत्र, अलेक्जेण्डर तृतीय, १८८१ में अपने पिता की हत्या हो जाने के बाद गद्दी पर बैठा। उसने उदारवादियों या परिवर्तनवादियों को रोकने के लिए कदम उठाये क्योंकि वह उन्हें अपने पिता की मृत्यु के लिए उत्तरदायी समझता था। जब राष्ट्रीय भावना की अभिव्यक्ति की जाती थी तो उसे तेजी से दबा दिया जाता था। अलेक्जेण्डर ने अपनी प्रजा के सभी जातियों के लोगों को उनकी इच्छा के विरुद्ध रूसी बनाने की जीतोड़ कोशिश की। एक दक्ष गुप्तचर प्रणाली कायम की गयी और हजारों लोग उत्तर की ठंड में ठिठुर कर मरने के लिए साइबेरिया भेजे गये। इसके अलावा कठोर नियमों के अन्तर्गत, रूस में हजारों की संख्या में यहूदी कैद किये गए और मार डाले गये। यह आशा की जाती थी कि अलेक्जेण्डर का पुत्र, निकोलस द्वितीय, जो १८९४ में सिंहासन पर बैठा, आवश्यक आर्थिक और सामाजिक सुधार लायेगा।

जब १९०५ में जापान के साथ हुए युद्ध ने निकोलस की सरकार को कमजोर सिद्ध कर दिया, तब रूसी लोगों ने विद्रोह कर दिया। इससे डर कर निकोलस ने डूमा कहलाने वाली पार्लमेंट स्थापित करने की अक्तूबर घोषणा को जारी किया तथा अन्य कई सामाजिक सुधार किये। डूमा ने किसानों को अधिक भूमि और कम सूद पर ऋण दिया और यूनियनों को अनुमति देकर तथा दुर्घटना बीमा कानूनों को पास कर श्रमिकों को सहायता पहुँचाई।

१. रूस में उदारवादियों ने क्या मांगें रखीं?
२. अलेक्जेण्डर प्रथम, निकोलस प्रथम और अलेक्जेण्डर द्वितीय ने कौन सी खास बातें कीं?
३. १८६१ में सर्फ अवस्था (दासता) से मुक्त होने के बाद किसानों की स्थिति क्या थी?
४. अलेक्जेण्डर तृतीय किस किस्म का शासक था?
५. रूस में उदारवाद को कहाँ तक सफलता मिली?

स्कैण्डिनेवियाइ देशों ने लोकतन्त्र को अपनाया

स्कैण्डिनेवियाई देशों में जिस प्रकार की प्रगति रही वह तुर्की और रूस से सर्वथा भिन्न थी। स्कैण्डिनेवियाई देश दूसरी श्रेणी के राष्ट्र थे और विएना कांग्रेस के समय उन्हें अपने भाग्य के बारे में कुछ भी नहीं कहने दिया गया।

कांग्रेस के निर्णयानुसार स्वीडन ने अपने साम्राज्य का अन्तिम टुकड़ा भी प्रशिया को दे दिया। इसके बदले में उसे नार्वे दिया गया जो उस समय तक डेनमार्क के आधीन था। दोनों देशों की एक यूनियन बनी, जिनकी अपनी-अपनी पार्लमेंटें थीं, लेकिन राजा एक ही था।

नार्वे और स्वीडन—नार्वे और स्वीडन में कोई भी ऐसी बात नहीं थी जो दोनों में समान हो। नार्वे गरीब और बिखरा-बिखरा, कम आबादी वाला मुल्क था। देश पहाड़ी है और खाड़ियाँ गहरी तथा पश्चिमी समुद्रतट पथरीला और कटाफटा है। नार्वे के लोग लोकतन्त्रात्मक थे और भूमि उनके बीच अच्छे ढंग से बँटी हुई थी। स्वीडन में भूमि और राजनीतिक मामले कुलीनों के हाथों में थे और बहुसंख्यक जनता गरीब और शक्तिहीन थी। १९ वीं सदी में स्वीडन में, वहाँ लोहे, वनों और पानी से उत्पन्न शक्ति के कारण, उद्योगों का विकास हुआ। नार्वे एक व्यापारिक देश के रूप में विकसित हुआ और दुनिया के व्यापारिक जहाजी बेड़े में उसका चौथा स्थान था। इसी दौरान, स्वीडन ने, रूसी आक्रमण के समय से, जर्मनी के साथ नजदीकी सम्बन्ध स्थापित कर लिये। दूसरी ओर नार्वे ब्रिटेन और फ्रांस के साथ अधिकाधिक मित्रता स्थापित करता चला गया।

अन्त में, १९०५ में, नार्वे की पार्लमेंट ने स्वीडन से नार्वे के अलग और स्वतन्त्र होने की घोषणा की। स्वीडन अधिक शक्तिशाली था, फिर भी उसने नार्वे को वगैर युद्ध के ही जाने दिया। नार्वेवासियों ने डेनमार्क के एक राजकुमार को राजा बनने के लिए आमन्त्रित किया। उसके अधिकार सीमित थे और देश राजनीतिक रूप से लोकतन्त्रात्मक था। वहाँ कुलीन वर्ग नहीं था और १९१३ में, बड़े राष्ट्रों के ऐसा करने से पहले ही, नार्वे ने पुरुषों को प्राप्त मताधिकार के आधार पर ही स्त्रियों को भी मताधिकार प्रदान किया।
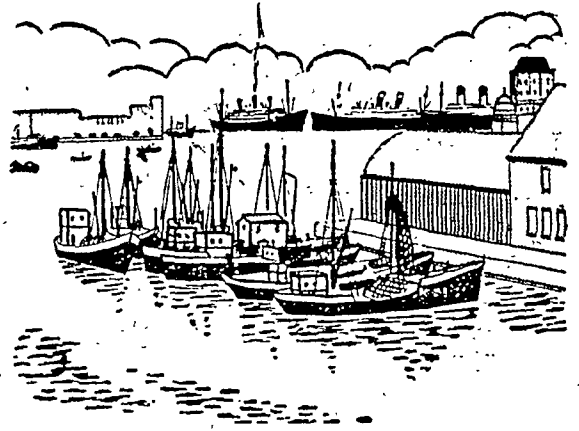
हैरिंग मछली उद्योग नार्वे में बहुत महत्त्वपूर्ण है गोकि बड़े पैमाने पर कई किस्म की मछलियां पकड़ी जाती हैं। नार्वे दुनिया के आधे से ज्यादा ह्वेल मछली के तेल का उत्पादक है।

स्वीडन भी लोकतन्त्रात्मक प्रणाली पर विकसित हुआ लेकिन उसकी प्रगति बहुत धीमी थी। आम पुरुष मताधिकार स्वीकृत किया गया था लेकिन १९१९ से पहले स्त्रियों को मतदान का अधिकार नहीं था। आर्थिक स्थिति में भी सुधार हुआ।

डेनमार्क—डेनमार्क, जो कभी स्कैण्डिनेवियाई देशों में सबसे शक्तिशाली था, सबसे कम शक्तिसम्पन्न रह गया था। डेनमार्क निचले मैदानों का देश और खेती के लिए अच्छा है। १८६४ में, प्रशिया ने डेनमार्क के दो दक्षिणी प्रान्त श्लेस्विग हालस्टाइन, जिनमें मुख्यतः जर्मन बसे हुए थे, अपने अधिकार में ले लिये। उसके बाद डेनमार्क को प्रशिया के हमले का डर बना ही रहता था। डेनमार्क के पास दूरस्थ आइसलैण्ड और ग्रीनलैण्ड थे लेकिन १९१६ में उसने "विर्जिन द्वीपसमूह" संयुक्तराज्य अमेरिका के हाथों वेच दिया।

डेनमार्क ने औद्योगिक, राजनीतिक और सामाजिक रूप से उन्नति की। उसने कृषि और दुग्ध व्यवसाय को विकसित किया और बहुत उन्नति

की। १६०१ में नयी राजनीतिक व्यवस्था स्थापित की गयी जिसने राजतन्त्र को वास्तविक लोकतन्त्र बनाया। नार्वे की ही भाँति, डेनमार्क ने भी अपने स्कूलों को बहुत ऊँचे दर्जे तक सुधारा। इन दोनों ही देशों में बिना पढ़े-लिखे लोग मुश्किल से मिलेंगे।

नीचे देश

नीदरलैण्ड्स के संयुक्त राज्य भंग किये गए

विएना कांग्रेस में नीदरलैंड्स और बेल्जियम "नीदरलैंड्स संयुक्तराज्य" बनाने के लिए संयुक्त कर दिये गए थे। नार्वे और स्वीडन की भाँति, यह संयुक्तीकरण भी संतोषजनक नहीं रहा। बेल्जियम में मुख्यतः कैथोलिक रहते थे और वह फ्रांस की संस्कृति से प्रभावित था। हालैंड में प्रोटेस्टेण्ट थे और उनकी संस्कृति जर्मनों की थी। डच राजा ने डच भाषा और कानून बेल्जियम पर लादने चाहे, जिससे गहरा असंतोष फैला। जब १८३० में फ्रांस में क्रांति हुई तो वह बेल्जियम में भी फैली और उसने अपनी स्वाधीनता की घोषणा की। फ्रांस और इंग्लैंड बेल्जियम के स्वशासन के पक्ष में थे, इसलिए डचों को उन्हें अपने रास्ते जाने देना पड़ा।

बेल्जियम—बेल्जियम ने आर्थिक और राजनीतिक क्षेत्र में उन्नति की। कोयला और लोहा उसके प्राकृतिक साधन थे ही। वह एक औद्योगिक राष्ट्र बनने में सफल हुआ। यूरोप में उसकी भौगोलिक स्थिति ने भी उसे व्यापार में सहायता पहुँचाई जिसके कारण वह समृद्ध हो गया। वहाँ प्रारम्भ से ही संवैधानिक राजतंत्र था और १८६४ में ग्राम पुरुष मताधिकार प्रदान किया गया।
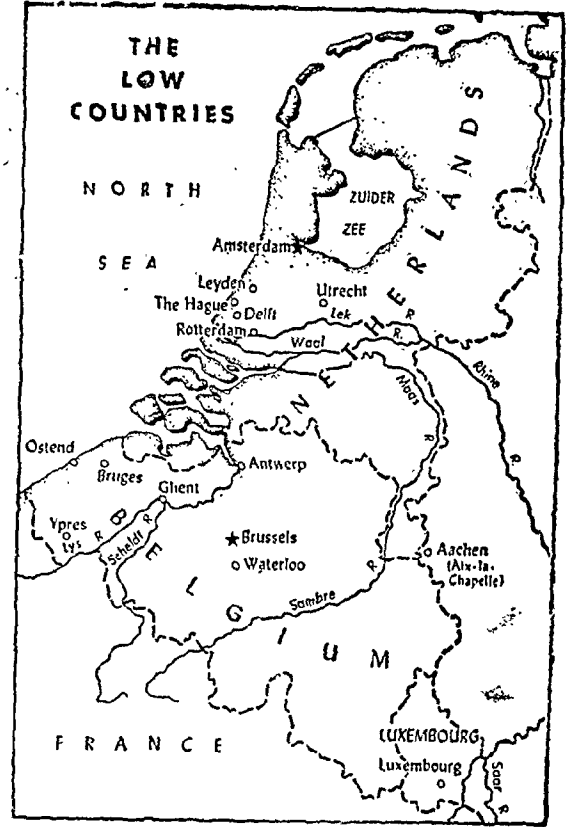
"पोल्डर" वह क्षेत्र है जिसमें बांध बांध कर नई जमीन प्राप्त की जाती है। हवामिल कई नालियों से जमीन का पानी सुखा देती है। हालैण्ड ने इस प्रकार बहुत सी पोल्डर भूमि के टुकड़े प्राप्त किये हैं।

नीदरलैंड्स इन्फार्मेशन सर्विस
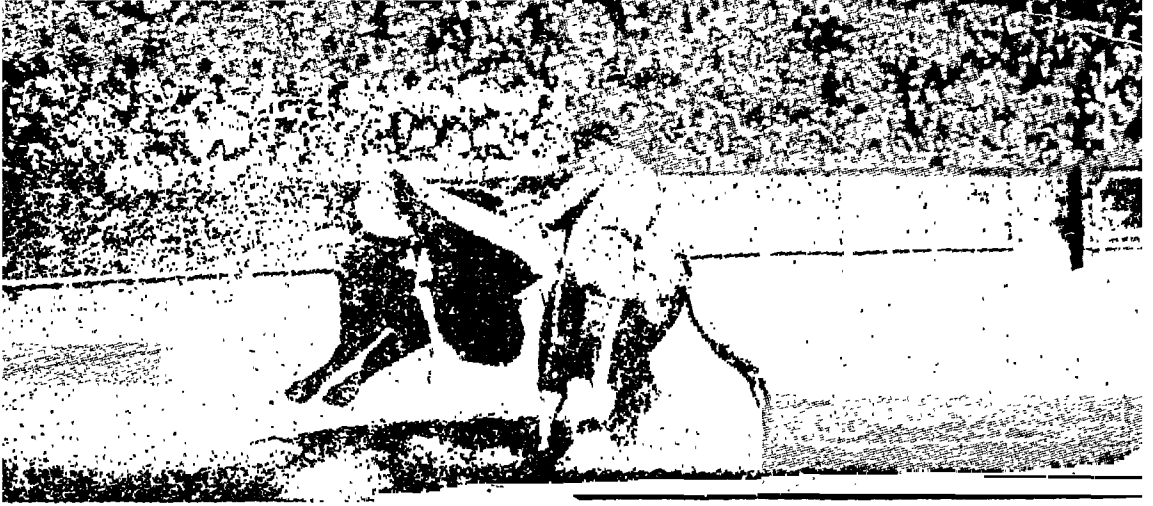
रैफो-गिलुमेट

आधुनिक स्पेन का अधिकांश जीवन रंगीनियों से भरा है। उसकी इमारतें, संगीत और ग्रामीण क्षेत्रों के रीति-रिवाज प्राचीन काल के परिचायक हैं। सांड-पहलवानी प्राचीन ग्रीकों और रोमनों का खेल था जिसे मूरों ने स्पेन में चलाया था।

नीदरलैंड्स—दूसरी ओर हालैंड मुख्यतः खेतिहर और वाणिज्य-प्रधान बना रहा। हालैंड बहुत घना बसा हुआ था और उसे अधिक भूमि की आवश्यकता थी, इसलिए मितव्ययी डचों ने समुद्र से जमीन प्राप्त करने का कार्य आरम्भ कर दिया। उन्होंने बड़े-बड़े बाँध बाँधे और फिर उनके भीतर से समुद्र का पानी बाहर निकाला। इस प्रकार हासिल की गयी नयी भूमि में बड़े पैमाने पर फूलों की खेती की गयी, विशेषकर कीमती गाँठ वाले फूलों की पैदावार बढ़ाई गयी। हालैंड का व्यापारिक जहाजी बेड़ा दुनिया की बेहतरीन जहाजरानियों में से एक था और वह ईस्ट इण्डियन उपनिवेशों (अब इंडोनेशिया) से दौलत खींचता था। औद्योगिक राष्ट्रों के निकट रहते हुए उसने अपने बगीचों की चीजों, फूलों, गाँठदार फल-फूलों, मछली और दूध की बनी चीजों का निर्यात किया। नीदरलैंड्स के सम्पन्न होते हुए भी, लोगों ने राजनीतिक स्वतंत्रता प्राप्त करने में सुस्ती दिखाई। १९१७ में, महिलाओं तथा पुरुषों को मताधिकार प्रदान किया गया और मतदान अनिवार्य कर दिया गया।

नार्वे और नीदरलैंड्स के व्यवसाय, नार्वे की लकड़ी, स्वीडन के लोहे तथा डेनमार्क और हालैंड के दूध की बनी चीजों और बेल्जियम के उद्योगों ने उन्हें पश्चिमी यूरोप में महत्त्वपूर्ण बना दिया है।

स्पेन और पुर्तगाल पिछड़े रहे

स्पेन के पिछड़े रहने के कारण—जबकि स्कैण्डिनेवियाई और निचले देश लोकतन्त्र प्रणालियों के आधार पर प्रगति कर रहे थे, स्पेन ने बहुत थोड़ी प्रगति की। इसके कई कारण थे। पायरेनी पर्वत-श्रेणियाँ इस प्रायद्वीप को शेष यूरोप से पृथक् करती हैं और स्पेन की संस्कृति स्वतन्त्र रूप से विकसित हुई। पर्वत-श्रेणियाँ उस पठार से भी उठी हुई हैं जो इस प्रायद्वीप को बनाता है। इस कारण स्पेन में सड़कें और रेलपथ बना पाना कठिन था। परिणामस्वरूप देश के विभिन्न हिस्सों में रीति-रिवाज बोलियाँ और पोशाकें भिन्न-भिन्न रहे, जिन्हें उन्होंने स्पेन के संयुक्त राष्ट्र हो जाने पर भी कायम रखा।

१९वीं सदी के प्रारम्भ में अमेरिकी उपनिवेश हाथ से निकल जाने के बाद अब अमेरिका की दौलत स्पेन में नहीं आती थी और उसे अपने ही साधनों पर निर्भर रहना पड़ा। लेकिन स्पेन बहुत

ज्यादा धनी देश तो था नहीं। गोकि कृषि वहाँ का मुख्य पेशा थो, पर प्रायद्वीप का अधिकांश भाग सूखा था और सिंचाई आवश्यक थी। थोड़े-से स्पेनिश बहुत ज्यादा धनी थे, लेकिन बहुसंख्यक जनता गरीब थी। भूमि थोड़े से धनिकों और चर्च के अधिकार में थी। ऐसी स्थितियों में असमानता बनी हुई थी और प्रगति तेजी से नहीं हो पाती थी।

स्पेनिश लोग यूरोपीय लोगों से भिन्न हैं। मूरों ने अपनी संस्कृति ही नहीं, अपितु अपना रक्त भी स्पेन में छोड़ा। स्पेनिश लोगों की काली आँखें और बाल उनके मूर पूर्वजों की ही देन हैं।

नैपोलियनकालीन युद्धों के बाद का स्पेन—नैपोलियनकालीन युद्धों के बाद, स्पेन को दुर्भाग्य से फर्डिनाण्ड सप्तम जैसा पिछड़ा हुआ शासक मिला, जिसने नैपोलियन के काल में हुए सुधारों को समाप्त कर दिया। उसने पुरानी कुरीतियाँ फिर से स्थापित कीं, जिनमें कुलीनों को विशेषाधिकार देना और उन पर कोई कर न लगाना भी शामिल था। सरकारी जाँच का काम फिर से शुरू हो गया और उदारतावादियों को निर्ममतापूर्वक कुचल दिया गया। विद्रोह हुए लेकिन १८२३ में चतुर्दशीय गठबन्धन ने फ्रांस की सेनाओं को उन्हें दबाने के लिए स्पेन भेजा। फर्डिनाण्ड पुन: शासनारूढ़ हुआ और उसने उन लोगों से बदला लिया जिन्होंने विद्रोहों की योजना बनाई थी और उसके खिलाफ विद्रोहों का समर्थन किया था। उसकी मृत्यु के बाद का काल भ्रष्ट सरकार, क्रूर शासन और स्पेन और उसके उपनिवेशों में अधिकारों के दुरुपयोग का था।

पुर्तगाल—पुर्तगाल फर्डिनाण्ड और इसाबेला के काल से पूर्व स्पेनिश प्रायद्वीप के स्वतन्त्र राज्यों में एक था और इसलिए उसने अपनी भाषा और अपने साहित्य का विकास किया। स्पेन की तरह, पुर्तगाल भी पायरेनी पर्वतश्रेणी से शेष यूरोप से अलग हो गया है। थोड़ी-सी अवधि के लिए स्पेन पुर्तगाल में अपना शासन स्थापित कर पाया, लेकिन १६४० में पुर्तगाल पुन: स्वतन्त्र हो गया और फिर स्वतन्त्र ही बना रहा। उसके स्वतन्त्र बने रहने का एक कारण यह था कि वहाँ के लोगों में जबरदस्त राष्ट्रीय भावना थी और दूसरा यह था कि इंग्लैंड इस छोटे से मुल्क का मित्र था।

पुर्तगाल का राजनीतिक इतिहास उथल-पुथल वाला रहा है। उसके शासक अधिकतर क्रूर और अत्याचारी रहे। कर बहुत अधिक थे, राजनीति भ्रष्ट थी और कोई भी सामाजिक विधान नहीं था। असंतोष बढ़ता ही चला गया, जब कि १९०८ में, राजा और उसकी गद्दी के वारिस राजकुमार की हत्या कर दी गयी। १९११ में एक गणतन्त्र की स्थापना हुई। गणतन्त्र ने धार्मिक व्यवस्थाओं को समाप्त करने और उनके द्वारा हस्तगत की गयी सम्पत्ति को जब्त करने के कानून बनाये। लेकिन गणतन्त्र सरकार में फैले भ्रष्टाचार को समाप्त नहीं कर पाया। जनता का सरकार से असन्तोष बना रहा और बहुत सी हड़तालें हुईं।

१. मध्ययुग में स्कैंडिनेवियाई देशों की क्या स्थिति थी?
२. १६वीं और १७वीं शताब्दियों में किन-किन देशों ने साम्राज्य बनाये?
३. विएना काँग्रेस ने स्कैंडिनेवियाई देशों में क्या-क्या परिवर्तन किये?
४. १९वीं सदी में नार्वे और स्वीडन की तुलना करो। नार्वे किस प्रकार स्वाधीन हुआ?
५. नीदरलैंड्स और बेल्जियम, दोनों ही, दोनों देशों की यूनियन के अन्तर्गत संतोषजनक ढंग से काम नहीं कर पाये। वे क्यों अलग-अलग हो गये?
६. पुर्तगाल और स्पेन पिछड़े हुए क्यों रहे?
७. इस अध्याय में वर्णित प्रत्येक देश की राजनीतिक और आर्थिक स्थिति प्रथम महायुद्ध के प्रारंभ में कैसी थी?

जापान अपने एकाकीपन से उभरा

नया राष्ट्रवाद यूरोप तक ही सीमित नहीं था। जापान में भी यही भावना जाग्रत हो गयी थी।

जापान का बाहरी दुनिया के साथ अल्पकालीन सम्पर्क तब स्थापित हुआ था जब सेंट झेवियर ने १६वीं शताब्दि में वहाँ एक क्रिश्चियन मिशन

स्थापित किया था। उस समय बहुत से जापानी क्रिश्चियन हो गये थे। इससे जापानी सरकार चिन्तित हो उठी थी क्योंकि ऐसा प्रतीत होता था कि ईसाई धर्म राज्य के धर्म "शिन्तोवाद" को, जिसमें कि देवताओं की पूजा की जाती थी और राजा को पवित्र माना जाता था, विनष्ट करता जा रहा है। अन्ततोगत्वा, सभी क्रिश्चियन पादरियों पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया और १६१५ तक ईसाई धर्म अवैध घोषित रहा। जापानी क्रिश्चियनों को दंडित किया गया। कोई और धर्म-प्रचारक जापान में न घुसने पाये, इस बात को सुनिश्चित करने के लिए जापान सरकार ने स्पेन और पुर्तगाल से सभी प्रकार के व्यापार सम्बन्ध समाप्त कर दिये। जापान ने अपने आप को पश्चिम से बिल्कुल अलग कर लिया।

जुलाई १८५३ में, अमेरिका का नौसेनापति मैथ्यू सी० पेरी चार जंगी जहाज लेकर याकोहामा बंदरगाह में प्रविष्ट हुआ। जापानी सीने की मशीनों, टेलीग्राफ और रेलवे के नमूनों और अन्य मशीनी औजारों में जोकि पेरी ने सम्राट् को भेंट किये थे, दिलचस्पी रखते थे। अगले वर्ष पेरी और अधिक जहाज लेकर लौटा और सम्राट् ने उसके साथ संधि कर ली। जापान ने अमेरिकी व्यापार के लिए एक बन्दरगाह खोलने और एक अमेरिकी वाणिज्यदूत को वहाँ रहने की अनुमति प्रदान की। अन्य देशों ने भी शीघ्र ही ऐसी सुविधाएँ प्राप्त कीं।

बाहरी सम्पर्क का जापान पर प्रभाव—जापान को बाहरी दुनिया के लिए खोल दिये जाने के परिणामस्वरूप १८६७-६९ में जापानी सरकार में एक क्रांति आई। एक सुधार पार्टी नये सम्राट् को प्रभावित करने के लिए काफी प्रबल हो गयी थी। वे अपने देश का पश्चिमीकरण और आधुनिकीकरण चाहते थे। शोगुन की स्थिति कमजोर पड़ गयी और सम्राट्, जो मिकाडो कहलाता था, सरकार का प्रधान बना। सामन्तवाद समाप्त कर दिया गया और किसान अपनी जोतभूमि के मालिक बन गए। सामन्ती सेना भंग कर दी गयी और एक राष्ट्रीय सेना का निर्माण किया गया। शिन्तोवाद राज्य का धर्म बना। येडो में, जिसका दूसरा नाम टोकियो पड़ा, नयी राजधानी बनाई गयी।

नये सम्राट् ने राष्ट्र का यूरोपीयकरण आरंभ किया। स्कूल खोले गए और उपस्थिति अनिवार्य कर दी गयी। छात्रों को अध्ययन के लिए बाहर भेजा गया। पश्चिमी संस्थाओं और सरकार प्रणालियों का अध्ययन-निरीक्षण करने के लिए कमीशन भी यूरोप और अमेरिका भेजे गये। एक संविधान बनाकर दो सदनों की एक पार्लमेंट स्थापित की गयी लेकिन प्रशासनाधिकार सम्राट् के हाथों में ही रहा। जापान ने एक नौसेना बनाई और अपनी सेना का आधुनिकीकरण किया जो बजाय पार्लमेंट के सम्राट् के अधीन थी। पश्चिमी औद्योगिक तरीकों का अध्ययन और नकल की गयी। रेशम और सूती वस्त्र-उद्योग दिन दूना और रात चौगुना बढ़ा। १९वीं शताब्दि के अन्त तक जापान एक आधुनिक औद्योगिक राष्ट्र बन गया।

चीन ने मांचुओं के शासन का तख्ता उलट दिया

जापान के पड़ोसी चीन की कहानी जापान से भिन्न है। १९ वीं सदी के आरंभ में चीन कई

कमोडोर पैरी स्टीम इंजन, चक्की के नमूने और अन्य वस्तुएँ योकोहामा लाया और इस प्रकार उसने अमेरिका का प्रचार किया।

लाइब्रेरी आफ कांग्रेस

प्रान्तों का सामान्य रूप से मिला-जुला एक साम्राज्य था, जिन्हें एक सम्राट् के मातहत इकट्ठा किया हुआ था। वे राजनीतिक बंधनों की अपेक्षा सांस्कृतिक सम्बन्धों से अधिक बंधे हुए थे। विभिन्न प्रान्तों के राजा समय-समय पर सम्राट् से मिलने आते और उसके लिए भेंट लाते थे। चीन के प्रान्तों के अलावा उसकी बाहरी सीमाओं पर अन्य अर्ध-स्वतंत्र राज्य थे जिनसे चीन राजकर का दावा करता था: मंचूरिया, कोरिया, मंगोलिया, तिब्बत, बर्मा, इण्डो-चाइना और अन्य छोटे-छोटे राज्य। इतने ढुलमुल तरीके से एक साथ बंधे हुए इस तरह के साम्राज्य से उसके सीमान्त राज्यों को शक्तिशाली राष्ट्रों द्वारा छीन कर अधिकार कर लिया जाना बहुत आसान था।

मांचू शासक—१९वीं शताब्दि के मंचूरियाई शासक ने चीन का नियंत्रण प्राप्त करने में सफलता प्राप्त की थी और इस प्रकार मंचूरिया तथा चीनी साम्राज्य को अपने शासन में संयुक्त कर दिया था। मंचूरियाई शासकों को विदेशी प्रभाव पर आपत्ति थी। जो भी धर्मोपदेशक और व्यापारी उस देश में जाते थे, वे अपनी सम्पत्ति और अपनी जान खोने का खतरा उठाकर जाते थे।

अफ़ीम युद्ध—१८३७ में ग्रेट ब्रिटेन और चीन के बीच, चीन में अफीम के तस्कर व्यापार के प्रश्न पर, झगड़ा उठ खड़ा हुआ। चीन सरकार ने इस नुकसानदेह वस्तु के देश में आने पर पाबंदी लगा दी थी जिससे ब्रिटेन लम्बा मुनाफा कमा रहा था। अफीम युद्ध (१८३९-१८४२) के परिणामस्वरूप ग्रेट ब्रिटेन की विजय हुई और पाँच चीनी बंदरगाह विदेशी व्यापार के लिए खुल गये। हाँगकाँग का द्वीप ब्रिटेन को मिल गया।

बाद में फिर झगड़ा शुरू हुआ। एक फ्रांसीसी धर्मोपदेशक मारा गया और कुछ अंग्रेज नाविक चीनियों द्वारा पकड़ लिये गये। इस दूसरे युद्ध (१८५६-१८६०) में भी पश्चिमी राष्ट्रों की विजय रही। तिन्तसिन की एक संधि द्वारा और भी बंदरगाह पश्चिमी व्यापार के लिए खुले, विदेशों को अपने प्रतिनिधि पीकिंग भेजने की अनुमति मिल गयी और विदेशी धर्मोपदेशकों को संरक्षण प्राप्त हुआ।

खुले द्वार की नीति—ज्यों-ज्यों समय बीतता गया, यूरोपीय और जापानी व्यापारियों ने देखा कि अगर वे सिर्फ खानों और देश के अन्य प्राकृतिक साधनों को विकसित करें तो चीन में धन पैदा किया जा सकता है। उन्हें यहाँ बेकार पड़े हुए, सस्ते मजदूर भी मिल जायंगे। लेकिन यूरोपीय चीन में सुरक्षित नहीं थे। इसलिए प्रत्येक राष्ट्र ने चीनी क्षेत्र का एक-एक टुकड़ा निकालना या अपने प्रभाव का एक क्षेत्र लेना शुरू किया। उस क्षेत्र में वे व्यवस्था कायम रख सकेंगे और अपने राष्ट्र के लोगों तथा अपने व्यापारियों की हिफाजत कर सकेंगे। संयुक्त राज्य अमेरिका को यह नीति नापसंद थी और उसे डर था कि इससे चीन पश्चिमी राष्ट्रों और जापान के बीच बँट जायगा। इसलिए अमेरिका ने अपनी "खुले द्वार की नीति" पर जोर देते हुए कहा कि "चीन में वाणिज्य और उद्योग के लिए सभी राष्ट्रों को समान सुविधाएँ मिलनी चाहिए" और चीन की क्षेत्रीय अखंडता की गारंटी अवश्य होनी चहिए।

बौक्सर विद्रोह—"विदेशी कुत्तों" के खिलाफ
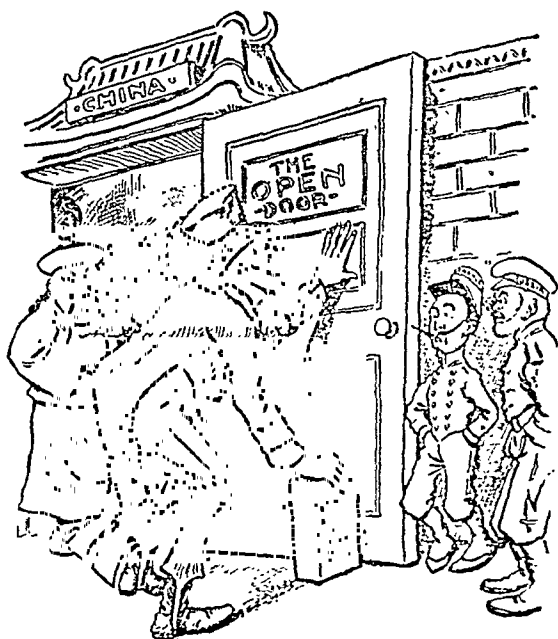
चीन में घृणा बढ़ती जा रही थी। चीन की सम्राज्ञी उनसे विशेष रूप से नफरत करती थी। अन्त में उसके दृष्टिकोण से प्रोत्साहित होकर चीन के एक पंथ के लोग, जो आम तौर पर बौक्सर कहलाते थे, चीन में धर्मोपदेशकों और अन्य श्वेत लोगों के खिलाफ प्रदर्शन करने लगे। उनमें से बहुत से मार डाले गये। १९०० में विदेशियों के खिलाफ पेकिंग में, वास्तविक युद्ध शुरू हो गया। बौक्सरों को तत्काल ही एक अन्तर्राष्ट्रीय सेना ने हराया और चीन को विदेशियों की सम्पत्ति की क्षति के एवज में मुआवजा देने को वाध्य किया गया। संयुक्त राज्य अमेरिका को २४ करोड़ डालर से अधिक रकम दी गयी। इस धनराशि में से आधे से भी कम की अमेरिकी नागरिकों के दावों की अदायगी के लिए जरूरत थी। इसलिए, संयुक्त राज्य ने शेष रकम लौटा दी। इसका उपयोग चीनियों ने संयुक्त राज्य में चीनी छात्रों की शिक्षा के लिए एक कोष स्थापित करने में किया और सैकड़ों की संख्या में छात्रों को अमेरिकी कालेजों में पढ़ने के लिए छात्रवृत्तियाँ दी गयीं।

चीनी क्रांति—सम्राज्ञी ने अब कुछ छोटे-मोटे सुधार किये लेकिन वे युवक चीनी सुधारकों को संतुष्ट नहीं कर सके। १९०८ में सम्राज्ञी की मृत्यु हो गयी और उसका उत्तराधिकारी एक नाबालिग सम्राट् था, जो एक कमजोर राज्याधिकारी के संरक्षण में गद्दी पर बैठाया गया। कुछ सुधारक अपने वायदे के अनुसार मजबूर थे, लेकिन डा० सुनयात सेन के नेतृत्व में क्रांतिकारियों का दल राष्ट्रीय महासभा के समझौते के प्रस्ताव से संतुष्ट नहीं था। १९११ में उन्होंने गणराज्य प्रणाली की सरकार स्थापित करने की योजना बनाई जिसमें सम्राट् के लिए कोई स्थान नहीं था। दूसरे वर्ष सम्राट् गद्दी से उतार दिया गया और चीन में मांचू वंश का अन्त हो गया। डा० सुनयात-सेन के निर्देशन में गणराज्य स्थापित हुआ, जो लम्बे अर्से से इस प्रकार की सरकार बनाने की बात कहते आ रहे थे। डा० सुन अपने सभी सिद्धान्तों को कार्य-

चार्ल्स पी० कुशिंग

सानफ्रांसिस्को के "चीनाटाउन" में डा० सुनयात-सेन की यह मूर्ति बनी हुई है। डा० सुनयात-सेन ने कुछ वर्ष संयुक्त राज्य में बिताये।

रूप नहीं दे सके, फिर भी १९२५ में अपनी मृत्यु तक वे बराबर क्रांति की भावना के निर्देशक रहे।

चीन से तब यह आशा नहीं की जा सकती थी कि तत्काल वहाँ स्थायी सरकार कायम हो सकेगी। उसकी ४० करोड़ जनसंख्या का अधिकांश हिस्सा अनपढ़ था और चीन की आर्थिक हालत बहुत खराब थी। चीन के समृद्ध प्राकृतिक साधन अछूते थे क्योंकि देश का उद्योगीकरण नहीं हुआ था। विदेशी शक्तियाँ अपना प्रभाव डालती रहीं और देश के भीतर बहुत से दल, उनके देश को किस किस्म की सरकार की आवश्यकता है, इस पर एकमत नहीं थे।

१. जापान में सन्त फ्रेवियर किस कार्य के लिए गया था?
२. १७ वीं शताब्दि के आरंभ में जापान क्यों एक एकाकी राष्ट्र बन गया था?
३. किस प्रकार कमोडोर पेरी ने जापान को अपना एकाकीपन छोड़ने के लिए प्रेरित किया?

४. पश्चिमी राष्ट्रों से सम्पर्क के बाद किस प्रकार जापान ने अपनी सरकार, उद्योग और संस्कृति में परिवर्तन किये ?

५. १७ वीं सदी के प्रारंभ में मंचूरिया और चीन के आपसी सम्बन्ध कैसे थे ? अन्य राज्य भी गिनाओ जिनके बीच ऐसे ही सम्बन्ध थे ?

६. १७ वीं से २० वीं शताब्दि तक चीन में शासक वंश कौन थे ?

७. चीन सरकार का विदेशियों के प्रति क्या दृष्टिकोण था ?

८. विदेशी व्यापारी चीन में जाने को क्यों उत्सुक थे ?

९. अफीम युद्धों की कहानी बतलाओ। परिणाम क्या रहे ?

१०. "खुले द्वार की नीति" क्या थी ?

११. बौक्सर विद्रोह क्या था ? बौक्सर फंड क्या था ?

१२. चीन में क्यों और किस सन् में क्रांति हुई ? नेता कौन था ?

१३. चीन में गणराज्य की स्थिरता इतनी कठिन क्यों थी ?

विचार-विमर्श के लिए प्रश्न

१. क्या यूरोपीय राष्ट्रों का तुर्कों को यूरोप से भगाने का उद्देश्य उचित था ?

२. रूस कुस्तुन्तुनिया क्यों चाहता था और बाल्कन क्षेत्रों में उसका क्या स्वार्थ था ? ग्रेट ब्रिटेन को उसका ऐसा उद्देश्य क्यों नापसंद था ?

३. रूस ने ऐसा क्यों महसूस किया कि तुर्क साम्राज्य में आर्थोडाक्स क्रिश्चियनों की रक्षा उसे करनी है ?

४. इसके क्या प्रमाण हैं कि तुर्की यूरोप का "रोगी मनुष्य" था ?

५. स्पष्ट रूप से बताओ कि बाल्कन देश "टिंडरबक्स" क्यों कहलाते थे ?

६. क्या १८६१ में रूस में किसानों की मुक्ति के बाद उनकी हालत पहले से अच्छी थी ?

७. रूस में लिबरलों को छिपे तौर पर काम क्यों करना पड़ता था जबकि ब्रिटेन में वे खुले रूप से काम करते थे ?

८. स्पेन में क्रांति को कुचलने के लिए चतुर्देशीय गठबंधन का प्रयास कहाँ तक उचित था ?

९. जापान इतने कम अर्से में अपने आधुनिकीकरण में क्यों समर्थ हुआ ?

१०. क्या जापान ने पश्चिम से सिर्फ वही नकल किया जो वहाँ अच्छा था ?

११. चीन और संयुक्त राज्य के बीच मैत्री की इतनी दीर्घ परम्परा क्यों थी ?

इतिहास के उपकरणों का प्रयोग

एक. नाम, तिथियाँ तथा स्थान

१. क्या तुम इन शब्दों की व्याख्या कर सकते हो ?

बौक्सर—मध्यवर्ती राज्य—डूमा—फोर्ड्स—मिकाडो—मिर—खुले द्वार की नीति—अफीम युद्ध—पान-स्लाविज्म—शोगुन—यूरोप का बीमार

२. इन तिथियों के बारे में तुम क्या जानते हो ?

१४५३, १८५३, १८५४, १८६०, १८७८, १९००, १९०४-१९०५, १९०५, १९१२, १९१३।

३. निम्न स्थान नक्शे में बताओ :

बाल्कन प्रायद्वीप—बाल्टिक सागर—बेल्जियम—बेस्साराबिया—काला सागर—बोस्निया—बल्गेरिया—बर्मा—कैस्पियन सागर—चीन—डेनमार्क—निस्टर नदी—ईस्ट-इण्डीज (इंडोनेशिया)—फिनलैंण्ड—ग्रीस—ग्रीन लैंण्ड—हालैण्ड—हांगकांग—हंगरी—आइसलैंण्ड—इण्डोचाइना—जापान—मंचूरिया—कोरिया—मंगोलिया—मोन्टेनीग्रो—नीदरलैण्ड—नार्वे—फारस की खाड़ी—पोलैण्ड—पोमेरानिया—पुर्तगाल—प्रशिया—श्लेश्विग—होलस्टीन—स्याम—सेवास्तोपोल—तिब्बत—तीन्तसिन—तुर्की साम्राज्य (१८२०) तुर्की साम्राज्य(१९१४)—वियेना—विर्जिन द्वीप समूह—वैस्टइण्डीज—योकोहामा।

४. इन व्यक्तियों के बारे में तुम क्या जानते हो ?

अलेक्जेण्डर प्रथम—अलेक्जेण्डर द्वितीय—अलेक्जेण्डर तृतीय—कैथराइन द्वितीय—फर्डिनाण्ड सप्तम—फ्रेवियर—निकोलस प्रथम—निकोलस द्वितीय—मैथ्यू सी० पैरी—सुनयात-सेन।

दो. क्या तुम अपने विचार स्पष्ट प्रकट कर सकते हो ?

(१) जिन देशों का इस अध्याय में वर्णन है उनमें से किसी का नागरिक तुम्हारी बस्ती में हो या कोई लड़का तुम्हारी कक्षा में हो तो उससे कहो कि वह अपने देश और वहाँ के लोगों के बारे में तुम्हें बताये। चित्र इस वार्ता को ज्यादा उपादेय बनायेंगे।

(२) एक ऐसा पत्र लिखो जो निम्नलिखित में से किसी के द्वारा भेजा गया हो :

(क) मैथ्यू सी० पैरी ने जब जापान में प्रवेश किया।

यह कमोडोर पैरी की आकृति के बारे में एक जापानी कलाकार का विचार है।

लाइब्रेरी आफ कांग्रेस

(ख) क्रीमिया से फ्लोरेंस नाइटिंगेल।

(ग) सेंट पीटर्सबर्ग का एक व्यक्ति जिसने लाल रविवार देखा हो।

(घ) अफीम युद्ध में एक फ्रांसीसी सैनिक।

(ङ) अमेरिका में बौक्सर छात्रवृत्ति पर अध्ययन करने वाला एक चीनी छात्र।

(३) फ्लोरेंस नाइटिंगेल, डा० सुन-यात-सेन या अलेक्जेण्डर द्वितीय के जीवन के बारे में पढ़ कर संक्षेप में क्लास को बताओ।

तीन. ब्लैकबोर्ड पर

(१) ब्लैक बोर्ड पर इस अध्याय में आये उन देशों में, जितने देशों के बारे में संभव हो, यह बताओ कि निम्नलिखित शब्दों के लिए क्या शब्द हैं ? पिता...माता...रोटी...जूता। क्या तुम बता सकते हो कि इन शब्दों का स्रोत एक ही है या नहीं।

(२) इस खंड में वर्णित देशों में से कक्षा का सदस्य एक देश चुन सकता है और इन देशों के सुबह के नाश्ते की वस्तुओं की एक सूची तैयार करो। उस सूची को ब्लकबोर्ड पर उतार कर उसका तुलनात्मक अध्ययन करो।

चार. सभा-कार्यक्रम

विश्व के राष्ट्रों के राष्ट्रगीतों का फीचर के रूप में एक असेम्बली-प्रोग्राम तैयार करो।
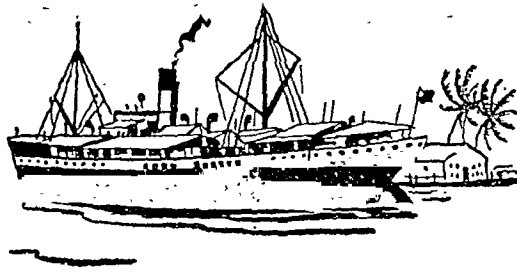
३५ शक्तिशाली राष्ट्रों के बीच साम्राज्य के लिए होड़

१६वीं, १७वीं, और १८वीं शताब्दियों में ग्रेट ब्रिटेन ने उत्तरी अमेरिका, वैस्ट इण्डीज, अफ्रीका और भारत में अपना साम्राज्य स्थापित कर लिया था। इस साम्राज्य को बनाने के लिए ब्रिटेन ने स्पेनिशों, डचों और फ्रांसीसियों को हराया। जब उसने अपनी वाणिज्यवादी नीति अमेरिकी उपनिवेशों में प्रयुक्त की तो उसे जबरदस्त प्रतिरोध का सामना करना पड़ा।

ब्रिटेन ने दुनिया में सबसे बड़ा साम्राज्य स्थापित किया

तेरह अमेरिकी उपनिवेशों के हाथ से निकल जाने के बाद भी ग्रेट ब्रिटेन का प्रसार नहीं रुका; उसने दूसरा साम्राज्य बनाया। विएना कांग्रेस में उसे कई छोटे-छोटे किन्तु सामरिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण स्थलों में अवस्थित उपनिवेशों को रखने की अनुमति मिल गयी थी, जहाँ वह अपने बढ़ते हुए व्यापार के लिए कोयला-पानी लेने वाले स्टेशन स्थापित कर सके। विएना-कांग्रेस के एक शताब्दि बाद तक ब्रिटेन ने अपनी साम्राज्यवादी नीति जारी रखी। वास्तव में, ब्रिटेन में यह आम तौर पर मान्य धारणा थी कि साम्राज्यवाद मानव समाज के लिए ब्रिटेन का कर्तव्य है। अंग्रेज लेखक रुडयार्ड किप्लिंग ने इसे "श्वेत व्यक्ति का दायित्व" कहा था और इंग्लैंड के बहुत से राजनेता उसकी इस बात से सहमत थे। ब्रिटेन ने इस विश्वास को बरकरार रखते हुए अधिक उदार नीति अपनाई। पार्लमेंट में लिबरलों (उदार दल) ने, जो मुक्त व्यापार के समर्थक थे, साम्राज्य के उस हिस्से में, जहाँ अंग्रेज संख्या में अधिक थे, अधिक आर्थिक और राजनीतिक स्वतंत्रता देना भी मंजूर किया था। अन्य उपनिवेशों में, जहाँ अधिकांश वहीं के निवासी रहते थे, मुख्यत: शासन-प्रबन्ध अब भी लंदन से चलता था। हर उपनिवेश के प्रति ऐसी नीति बरती जाती थी जो ब्रिटिश सरकार को उपनिवेश की आवश्यकताओं के लिए सर्वाधिक अनुकूल और ग्रेट ब्रिटेन के लिए सर्वाधिक लाभप्रद लगती थी।

१८३७ के पूर्व कनाडा—सप्तवर्षीय युद्ध के परिणामस्वरूप जब ब्रिटेन ने कनाडा प्राप्त किया तो उसके पास वास्तव में दो कनाडा थे। लोअर सेंट लारेंस नदी के किनारे-किनारे फ्रेंच कनाडा था और नदी के पश्चिम में ब्रिटिश कनाडा। उस समय कनाडा में लगभग ६० हजार फ्रेंच नागरिक और फ्रेंच कनाडियन थे और अंग्रेजों की संख्या एक हजार से भी कम थी। चूंकि ब्रिटिश सरकार अपनी नयी फ्रेंच प्रजा से अच्छे सम्बन्ध स्थापित करने को उत्सुक थी, इसलिए उसने १७७४ में क्वेबेक ऐक्ट पास कर उन्हें अपने रोमन कैथोलिक धर्म का पालन करने, अपने दीवानी कानून का प्रयोग करने और अपनी फ्रेंच भाषा का उपयोग करने की अनुमति दे दी।

अमेरिकी क्रांति के बाद बहुत से टोरी या

वफादार, जो अमेरिका में रहने की अपेक्षा ब्रिटिश शासन में रहना पसंद करते थे, कनाडा भाग गये और इस प्रकार उस देश में उन्होंने ब्रिटिश मूल निवासियों की संख्या बढ़ाई। ब्रिटिश लोगों ने नोवा स्कोशिया और सेंट लारेंस घाटी में कुछ बस्तियाँ बसायीं, लेकिन उनकी अधिक संख्या फ्रेंच लोगों के पश्चिम की भूमि में बसी। शीघ्र बाद में, ब्रिटिश प्रधानमंत्री विलियम पिट ने कनाडा को, अपर कनाडा (ओन्टारियो), जो मुख्यत: अंग्रेजों की बस्ती थी, और लोअर कनाडा (क्यूबेक), जो मुख्यत: फ्रेंच लोगों का था, इन दो भागों में बाँट दिया। यह विभाजन फ्रेंच या ब्रिटिश लोगों में से किसी को भी पसंद नहीं आया। फ्रेंच लोगों ने एक अंग्रेज को गवर्नर बनाने पर आपत्ति उठाई और अपर तथा लोअर कनाडा में, गवर्नर और असेम्बली की नियुक्ति पर मतभेद बना रहा।

कनाडा पर डर्हम की रिपोर्ट—१८४० में लोअर और अपर कनाडा को एक फेडरेशन (संघ) बना कर मिला दिया गया। कुछ ही वर्षों के बाद कनाडा को, उसके विदेशी मामलों को छोड़ कर स्वशासनाधिकार मिला। १८६७ में ब्रिटिश उत्तरी अमेरिकी ऐक्ट पास हुआ। इससे न्यू ब्रुनस्विक और नोवा स्कोशिया फेडरेशन में सम्मिलित कर कनाडा का डोमीनियन बना दिया गया। बाद में और क्षेत्र भी शामिल किये गये और अन्त में संयुक्त राज्य के उत्तर का समस्त क्षेत्र, न्यूफाउण्डलैंड और अलास्का को छोड़ कर, कनाडा डोमीनियन का हिस्सा बन गया। तब कनाडा का क्षेत्र संयुक्त राज्य अमेरिका से बड़ा था। न्यूफाउण्डलैंड १९४६ में औपनिवेशिक स्वराज्य (डोमीनियन) में प्रविष्ट हुआ।

कनाडा की सरकार ब्रिटिश नमूने पर बना दी गयी। एक गवर्नर-जनरल ब्रिटिश सरकार द्वारा नियुक्त किया जाता है जो ब्रिटिश राजा का प्रतिनिधि होता है। संसद् का प्रथम सदन लोकसभा कहलाता है और वह जनता द्वारा चुना जाता है। दूसरा सदन सैनेट कहलाता है और उसके सदस्य गवर्नर-जनरल द्वारा जीवन-भर के लिए नियुक्त किये जाते हैं। प्रत्येक प्रान्त में एक लेफ्टिनेण्ट गवर्नर होता है और एक विधानसभा होती है।

कनाडा की आर्थिक स्थिति—कनाडा का जलवायु और वहाँ के प्राकृतिक साधन विविध प्रकार के हैं। उपनिवेशवाद के प्रारंभिक काल में कनाडा निवासी मुख्यत: शिकार करने और मछली मारने में लगे रहते थे। पूर्वी तथा पश्चिमी तटों के किनारे-किनारे मछली मारना महत्त्वपूर्ण धंधा बना रहा। जब पश्चिम का विकास हुआ तो कृषि का काम महत्वपूर्ण बन गया। मैदानों में गेहूँ बड़े

कनाडा दुनिया के सर्वाधिक गेहूँ उत्पादन करने वाले मुल्कों में एक है। सस्केटचेवान प्रान्त की जमीन उर्वरा है, जलवायु अनुकूल है और दक्षिण की ओर के जिलों की अपेक्षा यहां अधिक धूप रहती है और यहां बढ़िया किस्म का गल्ला पैदा होता है।

ब्यूरो आफ पब्लिकशन्स, सस्केटचेवान

पैमाने पर उगाया जाने लगा। घने जंगलों वाले क्षेत्रों में लकड़ी का धंधा विकसित हुआ। अलास्का की सीमा पर सोना पाया गया और अल्युमिनियम, निकल, ताँबा, जस्ता तथा एस्बेस्टस देश के विभिन्न भागों में मिला। हाल में भारी मात्रा में यूरेनियम और कच्चे लोहे की खानों का पता चला है। बीसवीं शताब्दि के प्रारंभिक वर्षों में नियाग्रा प्रपात क्षेत्रों में निर्माण का काम एक महत्त्वपूर्ण धंधा बन गया है क्योंकि वहाँ बहुत काफी पन-बिजली उपलब्ध है।

कुछ वर्षों के बाद कनाडा और संयुक्त राज्य के बीच व्यापार भी अच्छे पैमाने पर विकसित हुआ। बावजूद इसके कि व्यापार में ब्रिटेन और कनाडा घनिष्ठ मित्र थे और बावजूद इसके कि कनाडा और संयुक्त राज्य दोनों ही बड़े पैमाने पर खेती करते हैं और उन दोनों के बीच तटकर की दीवारें हैं, दोनों के बीच व्यापार चमका। दरअसल बात यह है कि कनाडा अमेरिका का बेहतरीन ग्राहक बन गया।

१. पहले-पहल ब्रिटिश साम्राज्य में कौन से-देश थे ?
२. ब्रिटेन का दूसरा साम्राज्य कब और कैसे पनपा ?
३. १९ वीं शताब्दि में किस रूप में ब्रिटेन ने अपनी औपनिवेशिक नीति में परिवर्तन किया ?
४. अपर और लोअर कनाडा क्या थे ?
५. डर्हम रिपोर्ट क्या थी ?
६. किन परिस्थितियों में कनाडा को औपनिवेशिक स्वराज्य प्राप्त हुआ ?
७. कनाडा की सरकार का वर्णन करो।
८. कनाडावासियों के क्या-क्या साधन और धंधे हैं ?

आस्ट्रेलिया—अमेरिकी क्रांति के समय प्रशान्त के बारे में सिर्फ इतना मालूम था कि यह जल ही जल से भरा हुआ अपार क्षेत्र है जिसको पार करने में मैगलान को तीन महीने से अधिक समय लगा। इससे अधिक उस क्षेत्र के बारे में और कुछ पता नहीं था। अमेरिकी क्रांति युद्ध के दौरान जेम्स कुक नामक एक ब्रिटिश कप्तान इस महासागर के मध्य और दक्षिणी हिस्सों की खोज कर रहा था। उसके अभियानों के फलस्वरूप हवाई द्वीपसमूह का पता चला और फिर उसने न्यूजीलेंड का चक्कर काटा। कुक आस्ट्रेलिया में "बोटनी बे" (हरी भरी खाड़ी) में भी उतरा और उसने जार्ज तृतीय के नाम पर वहाँ अपना अधिकार कर लिया।

१७८८ में, ब्रिटिश जेलखानों के पुरुषों और औरतों से लदे जहाजों का एक बेड़ा न्यू साउथ वेल्स में पहुँचा। कुछ यात्री वास्तव में अपराधी थे और अन्य में से अधिकांश छोटे-मोटे अपराधों या कर्जा

कनाडा के गेहूँ के खेतों से बहुत दूर आस्ट्रेलिया की बड़ी-बड़ी रेंचें दुनिया को बड़ी मात्रा में ऊन, गोश्त और मेमने देती हैं। यहां भेड़ों की संख्या लोगों से कई गुनी अधिक है।

मौंकमेयर
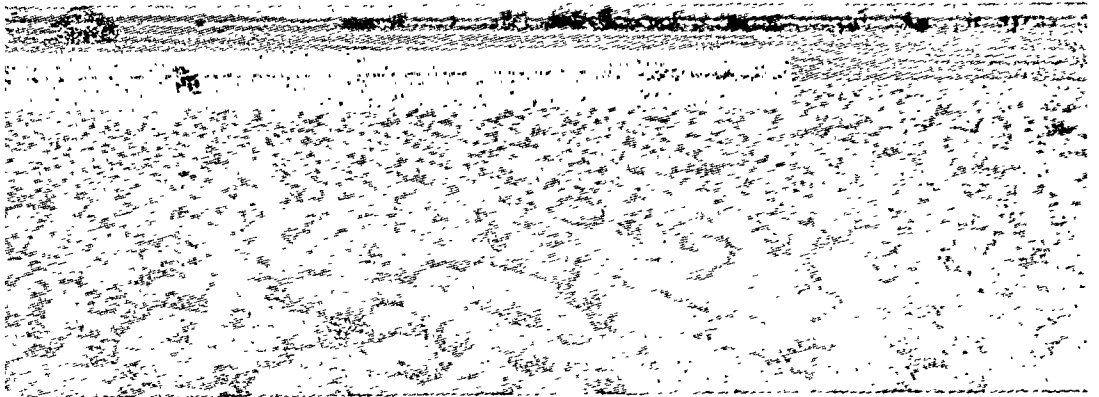
अदा न करने के अपराध में जेलों में ठूंसे गये थे। वहरहाल, उनमें से लगभग ५०० उस तट पर उतारे गये जिसे उनके कप्तान ने "दुनिया का बेहतरीन वन्दरगाह" कहा। यहाँ उन्होंने नया सिडनी नामक शहर बसाया, जो कि दुनिया के प्रमुख बन्दरगाहों में से एक बन गया है। १८४० तक ब्रिटेन आस्ट्रेलिया का उपयोग दण्डित अपराधियों की बस्ती के रूप में करता रहा।

आस्ट्रेलिया की छानबीन और वहाँ बस्ती बसाना मुश्किल काम साबित हुआ। उसके ८० लाख निवासी अब भी मुख्यत: दक्षिण-पूर्वी समुद्र तट पर बसते हैं। महाद्वीप का उत्तर का ४० प्रतिशत इलाका उष्ण कटिबंध में है और अन्दरूनी हिस्सा गरम रेगिस्तानी है। १८६२ में एक खोजी रेगिस्तान को, उत्तर से लेकर दक्षिण तक, पार करने में सफल हुआ। महाद्वीप का एक पांचवाँ हिस्सा, जो लगभग संयुक्त राज्य के ही बराबर बड़ा है, अब भी उजाड़ है।

इन कठिनाइयों के बावजूद आस्ट्रेलिया के प्रारंभिक बस्ती बसाने वाले "झाडी" में, जैसा कि वहाँ बस्तियों से परे की भूमि को कहा जाता है, घुसते गये। आस्ट्रेलिया के प्रारंभिक इतिहास में एक सैनिक अफसर ने यहाँ भेड़ पालना शुरू किया था जो अब उद्योग के रूप में देश की दौलत का सबसे बड़ा साधन सिद्ध हुआ। आस्ट्रेलिया दुनिया में सबसे अधिक ऊन का उत्पादन करता है और सोने के उत्पादन में उसका दुनियाँ के देशों में चौथा स्थान है।

महाद्वीप पर अन्य बस्तियाँ भी बसायी गयीं। आर्थिक असमानताओं के कारण ये स्वतन्त्र रूप से विकसित हुईं। आस्ट्रेलियाई प्रथम लोग थे जिन्होंने गुप्त मतदान प्रणाली (१८५५) चलाई और तब से इसका नाम "आस्ट्रेलियन बैलट" पड़ा। १६०० में ब्रिटिश पार्लमेंट ने आस्ट्रेलियाई कामनवेल्थ ऐक्ट पास कर उसके उपनिवेशों को एक राष्ट्र के रूप में सम्बद्ध कर दिया। वहाँ की सरकार कनाडा के ही समान है, लेकिन अलग-अलग राज्यों को अधिक स्वशासनाधिकार प्राप्त हैं।

न्यूजीलैण्ड—डच नाविक अबेल जसजून टस्मान ने कप्तान कुक के आस्ट्रेलियाई तट पर पहुँचने से एक शताब्दि से भी अधिक पहले न्यूजीलैण्ड का पता लगा लिया था। अंग्रेजों ने कुक की खोज का अनुसरण कर १८४० में वहाँ स्थायी बस्तियाँ बसा दीं। उन्होंने देखा कि वहाँ के आदिम निवासी "मओरी" बड़े मेधावी थे।

न्यूजीलैंड भी, आस्ट्रेलिया की भांति, धीरे-धीरे विकसित हुआ। दोनों देश अपने आकार-प्रकार में ब्रिटेन से लगते थे और अन्य देशों से, विशेषकर पूर्वी देशों से, लोगों का यहाँ आकर बसना पसन्द नहीं करते थे। उन्होंने अन्त:प्रवास के सख्त कानून बना दिये। सामाजिक विधानों में न्यूजीलैंड अगुवा था। १८६३ में सर्वप्रथम न्यूजीलैंड में महिलाओं को मतदान का अधिकार दिया गया। वृद्धों को वृद्धावस्था की पेंशन की व्यवस्था कर संरक्षित किया गया। मजदूरों को मजदूरों का मुआवजा देकर दुर्घटनाओं के खर्च से उन्हें संरक्षण प्रदान किया गया। श्रमविवाद विशेष श्रमिक पंच अदालतों के समक्ष लाये जाते थे। सरकार ने जरूरतमंद किसानों के लिए सस्ते ब्याज पर ऋण की व्यवस्था की। रेल-पथों, बीमा कम्पनियों और कोयला खानों पर सरकारी नियन्त्रण के कारण आंशिक रूप से श्रमिक यूनियनों का सरकार पर भी प्रभाव था। इन उद्योगों का समाजीकरण कर, यूनियनें नागरिकों के लिए उन सेवाओं की कीमत घटाने की आशा करती थीं।

न्यूजीलैंड एक कृषिप्रधान देश है। आस्ट्रेलिया की ही भाँति, वहाँ बड़े पैमाने पर भेड़ें पाली जाती हैं। दूध उद्योग की वस्तुओं और अनाज का भी वहाँ से निर्यात होता है।

१. कप्तान कुक और अबेल टस्मान कौन थे ?
२. किन-किन चीजों पर आस्ट्रेलिया का आर्थिक जीवन निर्भर करता है ?
३. आस्ट्रेलिया में वर्गवाद की भावना क्यों थी ?
४. आस्ट्रेलियाई कामनवैल्थ ऐक्ट क्या था ?
५. आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड किस रूप में समान हैं ?
६. न्यूजीलैंड में पास हुए कुछ सामाजिक विधानों का उल्लेख करो।

आयरलैण्ड का प्रारंभिक इतिहास—१२ वीं शताब्दि से ही अंग्रेज शासक आयरलैंड को अपने आधीन करने के लिए प्रयत्नशील थे। उनकी इस दिशा में प्रगति इतनी धीमी रही कि १५०० तक डबलिन शहर के बाहर ही अंग्रेजों के प्रभुत्व की अवहेलना की जाती रही। १६वीं शताब्दि में इंग्लैंड आयरलैंड पर पूर्ण रूप से काबिज हो पाया लेकिन वहाँ के लोगों को राजभक्त और वफादार प्रजा नहीं बना पाया। जब ओलीवर क्रामवैल ब्रिटिश सरकार का मुखिया बना, तब आयरलैंड में विद्रोह हो गया। निर्मम अत्याचारों से जो उसकी विशेषता थी, क्रामवैल ने आयरलैंड का दमन किया। तब उसने अंग्रेजों और स्काटों को आयरलैंड में बसने के लिए प्रोत्साहित किया। उनमें से अधिकांश उत्तरी जिलों में बस गये, लेकिन जहाँ-कहीं भी वे बसे, उन्हें भूमि तथा विशेष सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक सुविधाएँ प्रदान की गयीं।

यूनियन ऐक्ट—मध्यकाल से ही आयरलैंड की एक पार्लमेंट थी लेकिन अपने राजनीतिक विशेषाधिकारों से प्रोटेस्टेन्टों ने उस पर नियन्त्रण पा लिया था। रोमन कैथोलिकों ने समय-समय पर अल्पसंख्यकों के शासन के खिलाफ विद्रोह किया और १८०१ में इंगलिश पार्लमेंट ने एक "यूनियन ऐक्ट" पास किया। इससे ब्रिटेन और आयरलैंड को संयुक्त कर "यूनाइटेड किंगडम" (यू०के०) बना दिया गया और डबलिन स्थित आइरिश पार्लमेंट भंग कर दी गयी। आयरिश लोग १०० प्रतिनिधि कामन्स सभा में और २८ पियर लार्ड सभा में लंदन भेजते थे।

आयरिश समस्याएँ—इससे आयरिश लोग संतुष्ट नहीं थे। उन्हें अब भी बहुत सी शिकायतें थीं। पहली चीज यह थी कि रोमन कैथोलिक पार्लमेंट से बाहर रखे गये थे गोकि जनता के कम से कम पाँच में से चार आदमी रोमन कैथोलिक थे। दूसरे, चर्च आफ इंग्लैण्ड की आयरलैंड में स्थापना की गयी थी और सभी आयरिश उसकी सहायता के लिए टैक्स देते थे गोकि वे उसके सदस्य नहीं थे। तीसरी शिकायत भूमि सम्बन्धी थी, जिसका अधिकांश हिस्सा इंग्लैंड में रहने वाले अंग्रेजों का था जो जब तक उन्हें ऊँची दरों पर लगान मिलता रहे, अपनी सम्पत्ति की बहुत कम परवाह रखते थे। इसका मतलब यह कि आयरिश किसान गरीब थे और अक्सर लगान न देने के कारण बेदखल कर दिये जाते थे। अधिकांश लोग छोटे फार्मों पर, गरीबी में, झोपड़ियाँ बनाकर रहते थे।
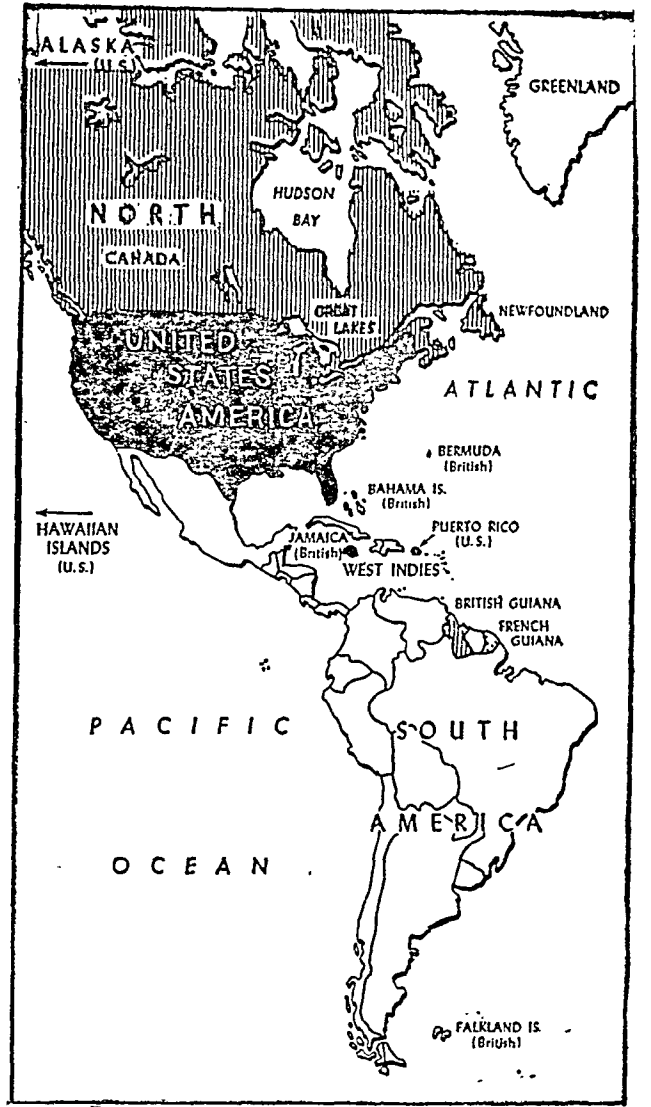
राजनीतिक और धार्मिक सुधार—इन शिका-

संसार और साम्राज्यवाद
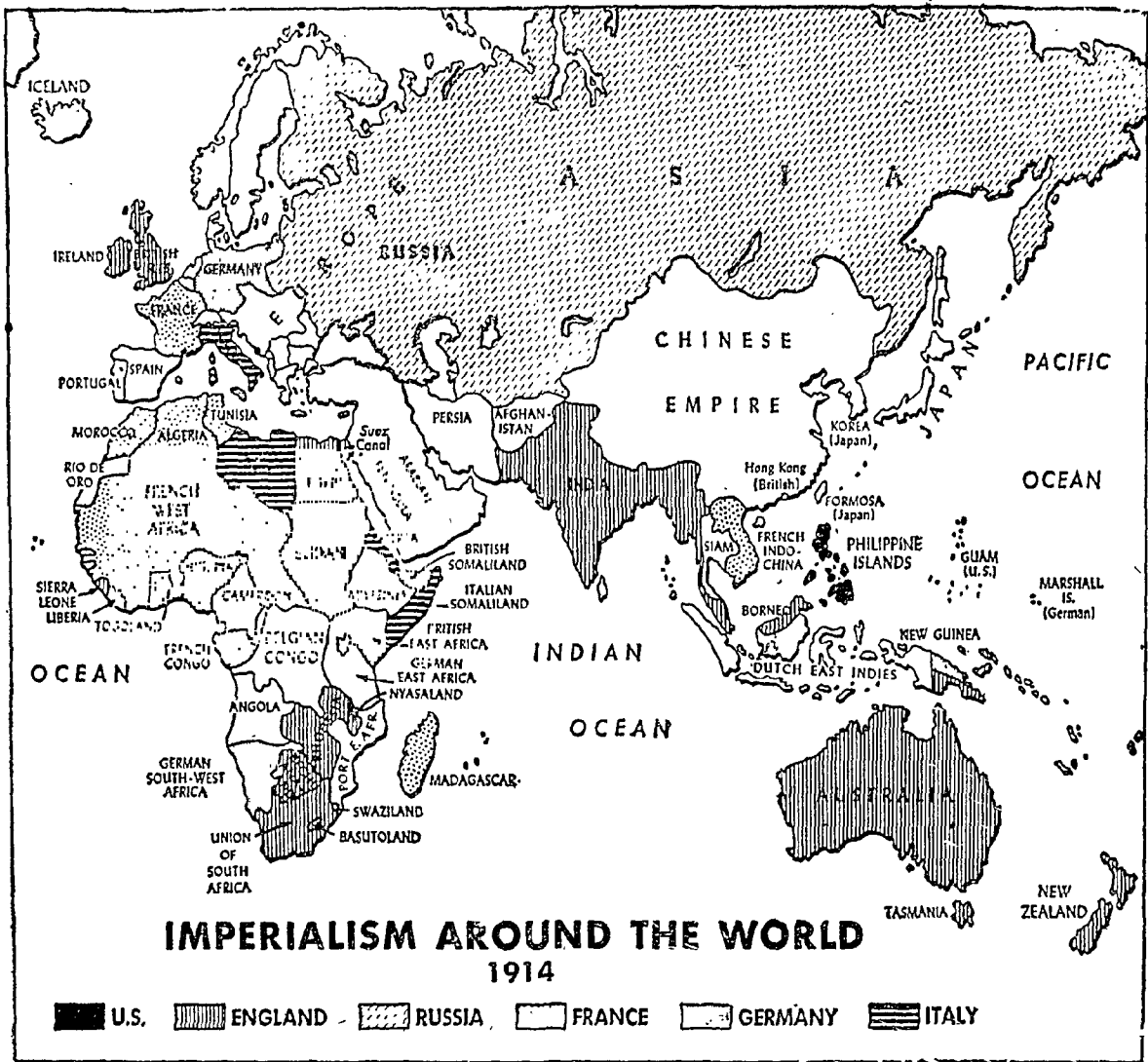
यतों को दूर करने में अंग्रेजों को काफी समय लगा और इसी बीच में आयरलैंडवासियों के दिलों में इंग्लैंड के खिलाफ जबरदस्त घृणा पैदा हो गयी। १८२९ में पास हुए कैथोलिक मुक्ति ऐक्ट के अनुसार रोमन कैथोलिकों को पद संभालने और संसद् के लिए निर्वाचित होने का अधिकार मिला। १८६९ में आयरलैंड में एंग्लिकन चर्च समाप्त कर दिया गया। इसके बाद अब रोमन कैथोलिकों को उस चर्च की सहायता के लिए कर नहीं देना पड़ता था, जिसके वे सदस्य नहीं थे।

देशान्तरण—जब समय-समय पर आलू की फसल खराब हो जाती थी तब हजारों की संख्या में लोग भूखों मर जाते थे। अन्य कई हजार लोग इस दुर्भाग्य से बचने के लिए आयरलैण्ड छोड़ कर अन्य देशों में जा बसे।

भूमि-सुधार—इंग्लैंड में उदार दल ने, विलियम ई० ग्लैडस्टन के नेतृत्व में, आयरलैंड की आर्थिक स्थिति को सुधारने के लिए कई उपाय अपनाये। दो भूमिसुधार कानूनों से, जिनमें से
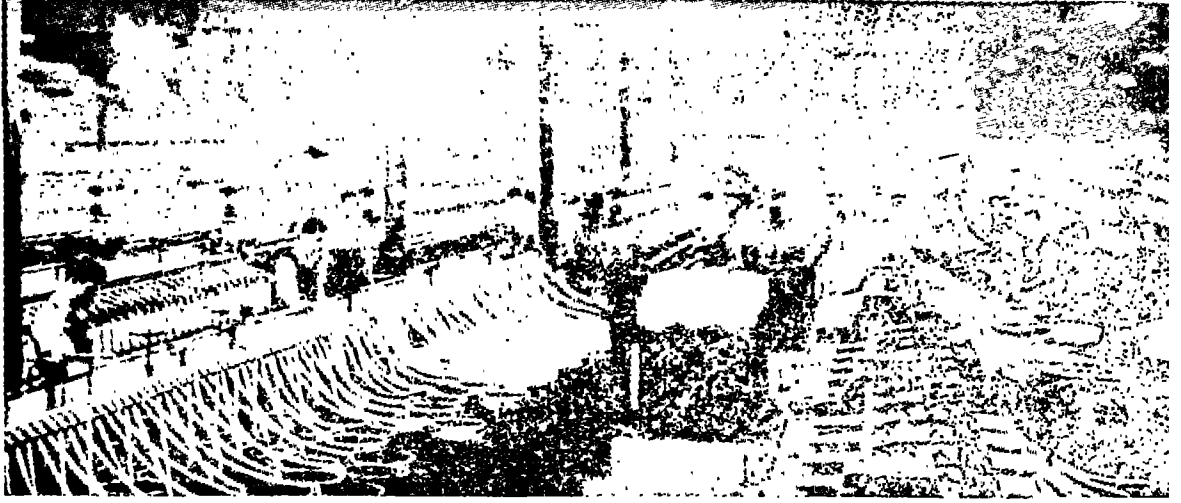
आयरिश एक्सपोर्ट प्रोमोशन बोर्ड

सन पैदा करना और उससे लीनन बनाना आधुनिक आयरलैण्ड के उद्योगों में एक प्रमुख उद्योग है। ये बुनाई मशीनें अथलोनी की एक फैक्ट्री में लगी हैं।

पहला १८७० में पास हुआ, जमींदारों के अत्याचारों को रोका गया। दूसरा कानून (१८८१) पास कर समुचित लगान, पट्टे की निश्चितता और स्वतन्त्र बिक्री की गारंटी कर दी गयी। अनुदार पार्टी ने बाद में अन्य भूमि सम्बन्धी कानून पास कर असामियों को उनकी जमीनें खरीदने के लिए ऋण प्रदान किया।

स्वशासन—जबकि आयरिश आर्थिक सुधारों की मांग कर रहे थे, वे स्वशासनाधिकार के लिए भी जोर लगा रहे थे। आयरिश लोगों ने, जो पार्लमेंट के ऐक्ट द्वारा होम रूल (स्वशासन) की आशा रखते थे, आयरिश नेशनलिस्ट पार्टी का संगठन किया। १९१४ में होम रूल बिल कानून बना। आर्थर ग्रिफिथ के नेतृत्व में, सिन फेनर नामक एक राजनीतिक दल ने, इस सीमित होमरूल का विरोध किया और पूर्ण स्वशासन की मांग की। आयरिश लोगों का आन्दोलन और विरोध जारी रहा।

१. अंग्रेजों का आयरलैंड को जीतने का अभियान कब से आरम्भ हुआ?
२. आयरलैंड की विजय में क्रामवैल का क्या कार्य रहा?
३. "यूनियन ऐक्ट" क्या था?
४. १९ वीं शताब्दि में आयरिश लोगों की ब्रिटेन के खिलाफ कौन-सी चार प्रमुख शिकायतें थीं?
५. इन शिकायतों को दूर करने की दिशा में अंग्रेज १९ वीं शताब्दि में कितनी दूर तक गये?
६. १९१४ का होम रूल बिल क्या था? आयरिश इससे असंतुष्ट क्यों थे?

दक्षिण अफ्रीका में अंग्रेजी आधिपत्य का प्रारम्भिक काल

अफ्रीका का सुदूर दक्षिणी कोना बहुत अर्से तक पूर्वी देशों को जाने के मार्ग में आधे रास्ते का पड़ाव था, जबकि विएना कांग्रेस में ग्रेट ब्रिटेन ने उसे प्राप्त कर लिया। पुर्तगाली पहले वहाँ पहुँचे थे और उन्होंने उस पर अपना दावा किया। बाद में वह डचों ने ले लिया, जिन्होंने हालैण्ड से लोगों को लाकर वहाँ बसाया। डच अन्दरूनी क्षेत्र में बहुत दूर नहीं गये बल्कि तटवर्ती क्षेत्र के समीप ही रुक गये।

ब्रिटेन के इस पर नियंत्रण पा जाने के बाद

डच वाशिन्दों ने जिन्होंने ब्रिटिश शासन पर आपत्ति उठाई थी, उत्तर की ओर बढ़ना शुरू किया। यह "सामूहिक यात्रा" थी, जैसा कि डच इसे पुकारते थे। यह वास्तव में इस देश के इतिहास का बड़ा रंगीन काल था। घरेलू सामान और खेती-बारी के औजारों से लदी हुई डच बोअरों या किसानों की वैगनें जो बैलों या घोड़ों द्वारा खींची जाती थीं अन्दरूनी नये इलाकों में पहुँचती थीं। वहाँ उन्होंने नेटाल, आरेंज फ्री स्टेट और ट्रान्सवाल के नये राज्य बसाये और वहीं बस कर खेती करने लगे।

वे अधिक समय तक शान्ति से नहीं रह सके, क्योंकि १९वीं शताब्दि के उत्तरार्द्ध में उनके नये निवास स्थलों में सोना और हीरा पाया गया। हजारों लोग दौलत की खोज में उस क्षेत्र की ओर दौड़े। बोअरों को उनकी जमीनों की ऊँची-ऊँची कीमतें दी गयीं और वे फिर अपने नये घरों से बैलगाड़ियों पर लदे हुए उत्तर की ओर चल पड़े। लेकिन उनके नवीनतम घरों में भी खानें पाई गयीं और उन्होंने फिर अपने आपको ब्रिटिश वाशिंदों से घिरा पाया। शीघ्र ही यह इलाका अपने बड़े और बहुमूल्य हीरों के लिए मशहूर हो गया।

सेसिल रोड्स—इसी बीच एक आक्सफोर्ड का ग्रेजुएट अंग्रेज, सेसिल रोड्स, नये मुल्क दक्षिण अफ्रीका में रहने और स्वास्थ्य-लाभ करने वहाँ चला गया। उसे खोया हुआ स्वास्थ्य फिर मिला और साथ ही साथ उसने हीरे और सोने की खानों से दौलत भी हासिल की। अफ्रीका से जहाजों द्वारा भेजे जाने वाले हीरों का ९० प्रतिशत उन कंपनियों द्वारा भेजा जाता था जिनका नियंत्रण रोड्स करता था। लेकिन अपनी व्यक्तिगत सम्पत्ति को बढ़ाने से अधिक महत्वपूर्ण कार्य उसने यह किया कि ब्रिटेन के लिए दो उपनिवेश दक्षिण रोडेशिया और उत्तरी रोडेशिया, बनाए। उसका स्वप्न था कि समस्त अफ्रीका को ब्रिटेन के लिए एक राज्य में संगठित कर ले।

बोअर युद्ध—रोड्स के स्वप्न की जबरदस्त रुकावट बोअर राष्ट्रपति डा० पाल क्रूगर था जो देश में बसे हुए ब्रिटिश नागरिकों को पूर्ण नागरिकता के अधिकार देने से इन्कार करता था। सेसिल रोड्स के एक सहयोगी डा० जेम्सन ने, यह आशा रखते हुए कि वह डचों को सहयोग के लिए बाध्य करेगा, ट्रान्सवाल में बोअरों के खिलाफ अभियान का नेतृत्व किया। उसका आक्रमण असफल रहा और परिणामस्वरूप डचों और अंग्रेजों के बीच और भी ज्यादा घृणा फैल गयी। अन्त में, १८९९ में डच गणराज्यों और अंग्रेजों के बीच युद्ध शुरू हो गया। डा० क्रूगर और उसके योग्य सरदार इस योग्यता से लड़े कि लड़ाई तीन वर्ष तक खिंच गयी। अन्त में ब्रिटिश लोगों की विजय रही और बोअर गणराज्य ब्रिटिश उपनिवेशों की बढ़ती हुई सूची में शामिल कर लिये गये।

बहुत से बोअर अपने ब्रिटिश शासकों का विरोध करते रहे, गोकि ब्रिटिश उपनिवेशवादियों ने अगले कुछ वर्षों के भीतर ही बस्तियों को बसाने और वहाँ कस्बों की हालत सुधारने में लगभग १ करोड़ ५० लाख डालर खर्च किया और कालोनियों को स्वशासनाधिकार दे दिया। १९१० में पार्लमेंट के एक ऐक्ट द्वारा उन सबको एक में मिलाकर आस्ट्रिया और कनाडा के नमूने पर दक्षिण अफ्रीकी यूनियन कायम किया गया।

दक्षिण अफ्रीका में जातीय समस्या बड़ी विकट थी। वहाँ की कुल १ करोड़ आबादी में मूल निवासी नीग्रो लोगों की संख्या बहुत ज्यादा थी। वहाँ बहुत से एशियाई, अधिकांश भारतीय भी थे जो दक्षिण अफ्रीका में बस गये थे। चूंकि गैर-यूरोपीय जनसंख्या इतनी ज्यादा थी, इसलिए बोअरों ने उन पर सख्त पाबन्दियां लगा रखी थीं, जिन्हें ब्रिटिश वाशिंदों ने लागू ही रहने दिया। अधिकांश सख्त मेहनत का काम नीग्रो लोगों द्वारा बहुत कम मज़दूरी पर किया जाता था। रंगीन जनता को प्रतिबन्धित क्षेत्र में रहना पड़ता था और वे गन्दी बस्तियों में रहते थे। उनमें से अधिकाँश को विवश किया जाता था कि एक स्थान से दूसरे स्थान में जाने के लिए वे अपने पास अनुमति-पत्र रखें। मताधिकार केवल यूरोपीय लोगों के वंशजों तक ही सीमित था। एक सशक्त नेशनलिस्ट पार्टी दक्षिण अफ्रीका में हर कीमत पर श्वेत जाति का प्रभुत्व कायम रखने के लिए संघर्ष करती रही।

पाकिस्तान इन्फार्मेशन सर्विस

जूट बड़े पैमाने पर पाकिस्तान में पैदा होता है, गोकि इस देश की मुख्य फसल चावल है। जूट, पाकिस्तान की अन्य निर्यात वस्तुओं की ही भांति, कच्चा ही बाहर भेजा जाता है क्योंकि यहां औद्योगिक कारखाने नहीं हैं।

भारत में ब्रिटेन की समस्याएँ—सप्तवर्षीय युद्ध (१७५६-६३) का एक पहलू यह भी था कि फ्रांस और ब्रिटेन भारत पर नियंत्रण के लिए लड़ रहे थे। अन्यत्र की ही भाँति, यहाँ भी ब्रिटेन ने फ्रांस को पराजित किया। तो भी, भारत का शासन सीधे ब्रिटिश साम्राज्य के अंग के रूप में नहीं किया जाता था। इसके बजाय, ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कम्पनी को शासनाधिकार थे। चूंकि कम्पनी पर भ्रष्टाचार के आरोप थे इसलिए पार्लमेंट ने उसके राजनीतिक और व्यापारिक विशेषाधिकारों को घटा दिया और सरकार का उत्तरदायित्व ले लिया।

१८५८ में ईस्ट इण्डिया कम्पनी भंग कर दी गयी। भारत तब साम्राज्य का एक अंग बन गया और उसका प्रशासन ब्रिटिश मंत्रिमंडल में एक सेक्रेटरी आफ स्टेट के मातहत तथा भारत-स्थित वाइसराय के निर्देशन में चलने लगा। लेकिन भारतीयों को स्वशासनाधिकार प्राप्त नहीं थे। शताब्दि के अन्त में "यंग इण्डिया" नामक एक आन्दोलन स्वराज्य की माँग करता हुआ उठा। १९०९ में अंग्रेजों ने थोड़ी सी रियायतें प्रदान कीं। भारतीयों को स्थानीय सरकार में अधिक प्रतिनिधि रखने और वाइसराय और सेक्रेटरी आफ स्टेट की परिषदों में ओहदे प्राप्त करने के अधिकार मिले।

भारत की समस्याएँ अनेक थीं। आर्थिक दृष्टि से वहाँ सुधार की जरूरत थी ताकि वहाँ की ३५ करोड़ से अधिक जनता के रहन-सहन का स्तर ऊँचा उठे। बहुत से देशी नरेश अत्यधिक धनी थे जबकि उनकी प्रजा अत्यन्त निर्धनता में जीवन के लिए संघर्ष करती थी। सामाजिक और धार्मिक दृष्टि से भारतीय बहुत अधिक अंशों तक विभाजित थे। भारत के लोग अब भी कट्टर वर्ण-व्यवस्था में बंटे हुए थे। विभिन्न धार्मिक रिवाजों के कारण भारतीयों का एक साथ काम करना कठिन था। बहुसंख्यक जनता हिन्दू थी, लेकिन लगभग ७ करोड़ मुसलमान भी थे। ब्रिटेन की भारतीय रिवाजों को पश्चिमी तौर-तरीकों में बदलने की नीति ने इस बड़े उप-महाद्वीप की व्यवस्था सम्भालने के काम को और भी उलझा दिया।

ब्रिटिश लोग भारत में अपनी समस्याओं से हतोत्साह नहीं थे। भारत में प्रवेश कर लेने के बाद

आथैंटिकेटेड न्यूज

प्रथम विश्वयुद्ध के बाद ईरान ब्रिटेन की तेल की जरूरतों का मुख्य स्रोत बन गया। यह एक ब्रिटिश तेल क्षेत्र है जो ईरान के दक्षिण-पश्चिमी क्षेत्र में है। तेल का अटूट प्राकृतिक भंडार होने से ईरान विश्व का एक झगड़ा पैदा करने वाला स्थल बन गया है।

१८८५ में उन्होंने बर्मा ले लिया। तिब्बत के मामले में चीन से काफी जद्दोजहद के बाद, १९१४ में ब्रिटेन ने उसका दक्षिणी हिस्सा प्राप्त कर लिया। उन्होंने सम्पन्न मलाया प्रायद्वीप पर भी नियंत्रण पा लिया, जो अपने टिन तथा रबर और साथ-साथ सिंगापुर बन्दरगाह के लिए प्रसिद्ध हुआ। लेकिन कुछ ही वर्ष बाद ब्रिटेन के लिए उसके विशाल साम्राज्य में अनेक संकट उपस्थित होने वाले थे।

१. दक्षिण अफ्रीका में अपना दावा करने वाले प्रथम तथा द्वितीय यूरोपीय राष्ट्र कौन-कौन थे?
२. ग्रेट ब्रिटेन ने दक्षिण अफ्रीका को किस तरह हासिल किया?
३. 'सामूहिक यात्रा' की कहानी बताओ।
४. बोअरों ने केप कॉलोनी के उत्तर में किन-किन राज्यों को बसाया?
५. सेसिल रोड्स कौन था? डाक्टर क्रूगर और डाक्टर जेम्सन कौन थे?
६. बोअर युद्ध का क्या कारण था?
७. ग्रेट ब्रिटेन का विजित राज्यों के साथ क्या सलूक था?
८. "यंग इण्डिया" क्या था?
९. दक्षिण अफ्रीका की जातीय समस्या पर विचार करो।
१०. अंग्रेजों ने फ्रांस वालों को भारत से बाहर कब भगाया?
११. अपने साम्राज्य के इस हिस्से का शासन अंग्रेजों ने कैसे किया?
१२. प्रथम विश्वयुद्ध से पहले भारतीय स्वशासन प्राप्त करने में कितने सफल रहे?
१३. भारत में शासन के दौरान अंग्रेजों को किन-किन प्रमुख समस्याओं का सामना करना पड़ा?

ईरान और अफगानिस्तान में ब्रिटिश हित—ईरान और पड़ोसी अफगानिस्तान पिछड़े हुए मुल्क थे जो ब्रिटेन के लिए भारत की प्रतिरक्षा

की दृष्टि से बड़े महत्त्वपूर्ण थे। ब्रिटेन इस बात को फूटी आँख नहीं देख सकता था कि कोई प्रतिद्वन्द्वी शक्ति इन देशों में अपने पाँव जमाये। उसका प्रमुख प्रतिद्वन्द्वी इस क्षेत्र में रूस था। १९ वीं सदी के अन्त तक रूसी सरकार ने ईरान के शासक को जो शाह कहलाता था, बहुत ज्यादा अपने प्रभाव में कर लिया था। ब्रिटिश सरकार ने कोशिश की कि वह ईरान के शाह को रूस का विरोध करने के लिए उभाड़े। उसने युद्धपोत भेजे, धन ऋण के रूप में दिया और शाह से मित्रता करने के लिए राजनयज्ञों को भेजा। जब रूस-जापान युद्ध (१९०५) में जापानियों ने रूस को हरा दिया तो ईरान को राहत की साँस मिली। रूस कमजोर पड़ चुका था और अब घरेलू सुधारों का अवसर था। शाह को मजबूर किया गया कि वह अपनी जनता के लिए संविधान स्वीकार करे और प्रतिनिधि सभा स्थापित करे।

कुछ महीने बाद ब्रिटेन ईरान में रूस के प्रभाव को घटाने में सफल हुआ। अपनी विभिन्न एशियाई समस्याओं को सुलझाने की दृष्टि से की गयी एक संधि द्वारा रूस और ब्रिटेन ने ईरान को अपने-अपने प्रभाव के तीन हिस्सों में बाँटने का निश्चय किया। रूस उत्तरी ईरान को विकसित करने में स्वतंत्र रहेगा, ब्रिटेन अपने आर्थिक विकास कार्य दक्षिणी ईरान में चलायेगा और मध्य का हिस्सा उन दोनों के ही प्रभाव-क्षेत्र में रहेगा। दूसरी ओर, अफगानिस्तान ब्रिटेन के प्रभाव में या ब्रिटिश संरक्षित राज्य रहेगा। इसका मतलब यह हुआ कि देश का शासन कहने को स्थानीय शासकों द्वारा किया जायगा पर ब्रिटिश सरकार शासकों को बतायेगी कि उन्हें क्या करना है।

मिस्र, एक झंझटभरा संरक्षित राज्य—कई वर्षों तक षड्यंत्रों और युद्ध के बाद १८४१ में मिस्र के मुस्लिम गवर्नर ने अपने देश को तुर्की के सुलतानों की अधीनता से आंशिक तौर पर स्वतन्त्र कर लिया, गोकि वह तुर्की को राजकर दिया करता था। अंग्रेजों की भी मिस्र में दिलचस्पी थी। ब्रिटिश अन्वेषकों ने नील नदी को उसके उद्गम तक खोज लिया था और अंग्रेज पूर्वी भूमध्य सागर में दिलचस्पी रखते थे क्योंकि उनके व्यापारी उस मार्ग से भारत जाते थे। लेकिन फ्रांसीसी भी उस पर आँख गड़ाये थे। एक फ्रेंच कंपनी ने महत्त्वपूर्ण स्वेज नहर का निर्माण कर भूमध्यसागर और लालसागर को जोड़ दिया था। मिस्र का महत्त्वाकांक्षी शासन, जिसे खदीव की पदवी मिली थी, अपने देश का आधुनिकीकरण और मिस्री सूडान तक, जो नील के ऊपरी भाग का बहुत विस्तृत क्षेत्र है, अपने शासन का प्रसार चाहता था। मिस्री सूडान में घुमक्कड़ कबीले वाले रहते थे जो उन्हें नियंत्रण में लाने के किसी भी प्रयास का डटकर विरोध करते थे। इन योजनाओं में धन खर्च करने के अलावा खदीव अपने ऐशो-आराम में धन उड़ाने में शाहखर्च था। इन सब कार्यों के लिए धन यूरोपीय बैंकरों और पूँजी लगाने वालों के पास से आता था। जब वह इतना अधिक ऋण में डूब गया कि उसे और कर्ज मिलना कठिन हो गया, तब ब्रिटेन और फ्रांस आगे आये और उन्होंने तुर्की के सुलतान से मांग की कि उसे पदच्युत कर नये खदीव को नियुक्त किया जाय। तब फ्रांस और ब्रिटेन ने मिस्र के वित्तीय मामलों में संयुक्त नियन्त्रण स्थापित किया।

मिस्र को वित्तीय संकटों से दूर रखने के लिए आवश्यक बचतों और करों के कारण देश में असंतोष फैल गया। वहाँ रहने वाले विदेशियों के खिलाफ आवाज उठी और उन्होंने रक्षा के लिए अपनी-सरकारों से अपील की। फ्रांस वालों ने अपने नागरिकों को वापस बुलाने का निश्चय किया। लेकिन ब्रिटेन ने उस मुल्क में अमन कायम करने के लिए एक फ़ौज भेज दी। यह कार्य मुश्किल ही नहीं, कई वर्षों तक असंभव सा था। जब अन्त में व्यवस्था स्थापित हुई, ब्रिटेन ने मिस्र छोड़ देने के अपने वायदों के बावजूद ऐसा नहीं किया।

१८७५ में लगभग दीवालिया हो गए मिस्री शासक ने स्वेज नहर के अपने शेयर ब्रिटेन के हाथों बेच दिये। इस सौदे से, जो प्रधानमन्त्री बेंजामिन डिजरायली के द्वारा किया गया था, ब्रिटेन को स्वेज नहर में नियंत्रणकारी हिस्से मिल गये। ब्रिटेन के मिस्र में आधिपत्य से उन हिस्सों की रक्षा में सहायता मिली। लेकिन मिस्रियों ने ब्रिटिश

अधिकार का विरोध किया और समय-समय पर ब्रिटेन के संरक्षण से छूटने का प्रयत्न करते रहे।

दूसरी एक समस्या ब्रिटेन के सामने थी। एक कबीले ने मिस्री सूडान पर कब्जा जमा लिया। जब एक अंग्रेजी फौज का वहाँ सफाया कर दिया गया तो अंग्रेज इतने क्रुद्ध हुए कि उन्होंने सूडान पर नियन्त्रण रखने और खूंखार कबीलों को दबाये रखने के लिए मिस्रियों का साथ दिया।

सात समुद्रों में ब्रिटिश अधिकार-क्षेत्र—१९ वीं शताब्दि के दुनिया के नक्शे से ज्ञात होता है कि ब्रिटेन के शासन में डोमीनियन राज्यों, भारत और संरक्षित क्षेत्रों के अलावा दर्जनों छोटे-छोटे द्वीप और बंदरगाह थे। इन पर अधिकार मुख्यतः स्थानीय शासकों को दबा कर किया गया था। इनमें से अधिकांश का नियंत्रण इंग्लैंड से होता था और उन्हें स्वायत्त शासन प्राप्त नहीं था। इसके अलावा, अफ्रीका, एशिया और दक्षिण अमेरिका में भी ब्रिटेन के अधिकार-क्षेत्र थे। इन अधिकार-क्षेत्रों में से बहुतेरे क्षेत्रों में ऐसे लोग रहते थे, जिनका अंग्रेजों के आने से पूर्व कोई बाहरी सम्पर्क नहीं था। इन उपनिवेशों में सभी जातियों के लोग रहते थे। अफ्रीका में नीग्रो, हाँगकाँग में पूर्वी जातियाँ और मलाया तथा होण्डूरास में अन्य लोग थे। वहाँ मुसलमान थे, यहूदी थे, क्रिश्चियन थे और बहुत से प्राचीन धर्मों के मानने वाले विभिन्न लोग थे। सभ्यता के सभी चरणों का प्रतिनिधित्व वहाँ था, अफ्रीका के जंगली नीग्रो कबाइलियों से लेकर उच्च सांस्कृतिक लोग, जो अपने बच्चों को बेहतरीन विश्वविद्यालयों में शिक्षा प्राप्त करने यूरोप भेजते थे। इससे पूर्व कभी भी किसी राष्ट्र ने इतने विस्तृत और इतने विभिन्न किस्म के लोगों पर साम्राज्य करने का प्रयास नहीं किया था।

१. मिस्री शासक की पदवी क्या थी ?
२. मिस्र और तुर्की में क्या सम्बन्ध था ?
३. बताओ कि किस प्रकार ब्रिटेन और फ्रांस मिस्र के आर्थिक मामलों पर अधिकार करने दौड़े ?
४. ब्रिटेन ने मिस्र पर अधिकार के लिए सैनिक क्यों भेजे ?
५. किस प्रकार ब्रिटिश लोगों को स्वेज नहर का नियन्त्रण मिला ?

"नवीन भारत" इस कारखाने में एक भूतपूर्व-जमींदारी में प्रतिबिम्बित है जहां नवयुवतियां काम कर रही हैं। भारत की समस्याएँ बहुत बड़ी हैं। उसकी घनी आबादी के लिए भोजन की कमी और उद्योगों का अभाव दो मुख्य समस्याएँ हैं।
ब्लैक स्टार

६. किन विभिन्न लोगों से मिलकर ब्रिटिश साम्राज्य बना था ?
७. इस साम्राज्य पर शासन करना क्यों मुश्किल था ?

संसार का दूसरा बड़ा साम्राज्य—फ्रेंच साम्राज्य

१९१४ तक फ्रांस ने तृतीय बृहद् साम्राज्य स्थापित कर लिया था, पहला साम्राज्य उसने ब्रिटेन के हाथों खो दिया था, दूसरा नेपोलियन के पतन पर समाप्त हो चला था। १८३० में ही फ्रांस ने उत्तरी अफ्रीका के एक हिस्से, अल्जीयर्स को, वहाँ के निवासियों से छीन लिया था। बाद में उसने मिस्र के लिए अंग्रेजों से होड़ खत्म कर दी और अफ्रीका के अन्य हिस्सों में अपना प्रभाव-क्षेत्र बढ़ाया। १८८१ में ट्यूनिस एक संरक्षित क्षेत्र बना। १९०४ में उसने अधिकांश मोरक्को में संरक्षित राज्य स्थापित किया। ये उत्तर अफ्रीकी उपनिवेश फ्रांस के लिए उनके फलों और जैतून के तेल के कारण कीमती थे। यहाँ के रहने वाले अरब के और मोहम्मद के मानने वाले थे इसलिए वे पूर्वी भूमध्य सागरीय क्षेत्र के मुस्लिम जगत् से बहुत करीब से जुड़े हुए थे।

फ्रांस ने इन बस्तियों को बगैर चुनौती के प्राप्त नहीं किया था। इटली और जर्मनी भी उपनिवेशों की तलाश में थे। इटली ट्यूनिस चाहता था, जो उस देश के ठीक सामने भूमध्य सागर के पार पड़ता था जिसे रोम ने शताब्दियों पहले कार्थेजों से छीना था। इटली की दिलचस्पी आंशिक रूप से भावनात्मक थी। जब १९०५ में, फ्रांस ने अपना संरक्षण मोरक्को के हिस्से में फैलाना शुरू किया, जर्मनी के विलियम द्वितीय ने मोरक्को का एक मैत्रीपूर्ण दौरा किया, जिसमें उसने स्पष्ट किया कि वह एक स्वतन्त्र राष्ट्र है। इससे मोरक्को में पहली बार संकट उत्पन्न हुआ और ऐसा प्रतीत होता था कि यह यूरोप को युद्ध में डालने का खतरा पैदा कर देगा। लेकिन फ्रांस पीछे हट गया और मामला उस समय के लिए अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन से टल गया। अन्त में फ्रांस ने मोरक्को का अधिकांश हिस्सा हथिया लिया लेकिन इन घटनाओं से फ्रांस और जर्मनी के बीच तनातनी बढ़ी।

फ्रेंच साम्राज्यवाद जारी रहा। उसने अपना नियंत्रण विस्तृत सहारा क्षेत्र और अफ्रीका के मध्य में, भूमध्यरेखीय अफ्रीका में फैला लिया था। यह क्षेत्र सोना, ताँबा, जस्ता, सीसा, हाथी दाँत और हीरे आदि बहुमूल्य रत्नों से समृद्ध इलाका था। फ्रांस का अफ्रीका-स्थित सबसे बड़ा उपनिवेश जनसंख्या और क्षेत्रफल दोनों के लिहाज से, फ्रेंच-पश्चिमी अफ्रीका था। यहाँ कीमती तेलों, फल, रबर और लकड़ी का उत्पादन होता था। १८९६ में मैडागास्कर द्वीप एक उपनिवेश घोषित किया गया। वहाँ कृषि और भेड़-बकरी पालन बहुत महत्त्वपूर्ण हुआ।

१८६२ में नैपोलियन तृतीय ने इण्डोचाइना में घुसना शुरू कर दिया था और धीरे-धीरे वे उसकी सारी भूमि को हड़प गए। इण्डोचाइना का क्षेत्रफल लगभग टैक्सास के बराबर था। वहाँ बहुतायत से पायी जाने वाली वस्तुएँ टिन, टंगस्टन, मैंगनीज, मिर्च, चावल, रबर और कीमती लकड़ी हैं। इन चीजों के कारण यह फ्रांस के लिए कीमती बन गया।

फ्रांसीसी स्वभावतः उपनिवेशवादी लोग नहीं थे, गोकि उनका साम्राज्य दुनिया में दूसरे नम्बर का था। फ्रांस वालों को अपनी अतिरिक्त जनसंख्या के लिए जगह की तलाश नहीं थी क्योंकि उसकी कोई आवश्यकता नहीं थी। इसके अलावा उसके उपनिवेश मुख्यतः उष्ण कटिबन्ध में थे जहाँ श्वेत लोगों के लिए रहना मुश्किल था। फ्राँस मुख्यतः अपने उपनिवेशों का उपयोग उनमें पैदा होने वाली या पाई जाने वाली वस्तुओं के लिए करता था।

डचों का सम्पन्न साम्राज्य—पुर्तगालियों ने, १६वीं सदी में, इंडोनेशिया के प्रमुख द्वीपों पर दावा किया था और उनके साथ लाभदायक व्यापार स्थापित किया था। स्पेन के पुर्तगाल पर अधिकार के बाद नये स्वतन्त्र नीदरलैंड्स ने इस व्यापार को हथियाने और सम्पन्न इंडोनेशिया का दावा करने के स्वर्ण अवसर का लाभ उठाया। एक जमाने में डचों का दक्षिणी अफ्रीका के न्यू एमस्टरडम और केप कालोनी में भी अधिकार था। उसने १६६४

में न्यू एमस्टरडम अंग्रेजों के हाथ गँवा दिया था और केप कॉलोनी नैपोलियनकालीन युद्धों में उसके हाथ से निकल गयी। दक्षिण अमेरिकी तटवर्ती गायना क्षेत्र में उसका हिस्सा बरकरार रहा।

डच उपनिवेशों का क्षेत्रफल उनके छोटे से मुल्क की अपेक्षा लगभग छह गुना बड़ा था और उनकी आबादी लगभग आठ गुनी अधिक थी। इंडोनेशिया दुनिया की सम्पन्न औपनिवेशिक बस्तियों में से एक था। रबर वहाँ दक्षिण अफ्रीका से आया था। वहाँ की जलवायु उसकी पैदावार के लिए बहुत अनुकूल सिद्ध हुई और रबर वहाँ की सर्वाधिक उपयोगी पैदावार बन गया। टिन, रबर और मसाले, सभी से, नीदरलैंड्स मालामाल बन गया।

१. १९१४ से पहले फ्रांस की तीसरी रिपब्लिक को कौन-कौन क्षेत्र मिले थे ?
२. प्रथम मोरक्को संकट क्या था ? इस और इसके बाद के संकटों का जर्मनी और फ्रांस के सम्बन्धों पर क्या प्रभाव पड़ा ?
३. किन उपनिवेशों को फ्रांस ने प्राप्त किया और वहाँ उसे क्या मिलता था ?
४. किन परिस्थितियों में डचों ने इंडोनेशिया पर अधिकार प्राप्त किया ?
५. डचों को कौन-कौन उपनिवेश ब्रिटेन को देने पड़े ?
६. डच औपनिवेशिक क्षेत्रों का क्षेत्रफल और जनसंख्या और उनकी मातृभूमि के क्षेत्र फल तथा जनसंख्या में क्या अनुपात है, दोनों की तुलना करो।
७. इंडोनेशिया इतना महत्त्वपूर्ण क्यों था ?

एक बेल्जियन शासक ने एक साम्राज्य बनाया

१९वीं शताब्दि के अन्तिम दिनों में सभ्य संसार के लोग मध्य अफ्रीका के बेल्जियन काँगो से प्राप्त होने वाले समाचारों से महान् दुःखी थे जिसे बेल्जियम के लियोपोल्ड द्वितीय ने जबरन अपनी व्यक्तिगत सम्पत्ति के रूप में दबा रखा था। अफ्रीका-स्थित एक ब्रिटिश धर्मोपदेशक, डेविड लिविंगस्टोन, की उस देश में दिलचस्पी हो गयी थी और वह अन्वेषक बन गया। इस रूप में उसने बहादुरी के काम किये और वह वहाँ के मूल निवासियों का मित्र तथा गुलामी का विरोधी बना। उसकी प्रसिद्धि बाहरी दुनिया तक पहुँच चुकी थी। तब कुछ समय तक उसके बारे में कुछ भी समाचार नहीं मिला और एक अमेरिकी समाचार पत्र ने हेनरी स्टेनले को उसका पता लगाने भेजा। उसे डाक्टर लिविंगस्टोन मूलनिवासियों के बीच मिला और अमेरिका तथा यूरोप इस मशीनरी-अन्वेषक के बारे में स्टेनले द्वारा भेजे गये विवरण से बड़े प्रभावित हुए।

बेल्जियम ने काँगो किस तरह प्राप्त किया—स्टेनले ने व्यापारियों से अफ्रीका के अटूट प्राकृतिक साधनों को विकसित करने का अनुरोध किया। राजा लियोपोल्ड द्वितीय ने, उसकी सलाह की

उत्तरी रोडेशिया, अफ्रीका की एक समृद्ध तांबे की पट्टी है जहां खान से उसे निकाल कर शुद्ध करने की आधुनिक मशीनें लग गयी हैं।

यूइंग गैलोवे

बुद्धिमत्ता को देखते हुए, अफ्रीका के मध्यभाग, काँगो नदी क्षेत्र, को विकसित करने के लिए एक कम्पनी की स्थापना की। १८८५ में, लियोपोल्ड ने उसे एक व्यक्तिगत जमींदारी के रूप में अपने हाथ में ले लिया। स्टेनले की सलाह बहुत मुफीद सिद्ध हुई। रबर, हाथीदाँत और ताड़ के तेलों से लियोपोल्ड प्रतिवर्ष करोड़ों कमाने लगा। लेकिन यह दौलत उन स्थानीय लोगों की मेहनत पर बटोरी जाती थी जो बड़ी खराब परिस्थितियों में गुलामों की तरह पिसते थे। आखीर में काँगो की बुरी स्थिति के समाचार बाहरी दुनिया में पहुँचे। जनमत विरोध करने लगा था। राजा ने कुछ सुधार लागू किये और तब, १९०८ में, उसने अपनी इस रियासत को काफी अच्छी धनराशि प्राप्त कर बेल्जियन पार्लमेंट को सौंप दिया। इस प्रकार बेल्जियम के लोगों को एक ऐसा उपनिवेश मिल गया जो आकार में उनके अपने मुल्क से अस्सी गुना बड़ा था और प्राकृतिक साधनों के रूप में वहाँ अपार दौलत भरी पड़ी थी। कुछ समय बाद सरकार ने वहाँ जंगली जानवरों का संरक्षित जंगल स्थापित किया।

इटली अफ्रीका की ओर मुखातिब हुआ

जब इटली का संयुक्त राज्य बना तो उसे बड़े औपनिवेशिक क्षेत्रों को प्राप्त करने के लिए काफी विलम्ब हो चुका था। अधिकांश अच्छे-अच्छे उपनिवेश अन्य राष्ट्रों ने हथिया लिए थे। सिर्फ कुछ एकाकी इलाके रह गये थे जिन्हें वह अन्य यूरोपीय राष्ट्रों द्वारा किसी प्रकार की आपत्ति उठाये बगैर ही प्राप्त कर सकता था। इनमें से एक असाब था। १८७० में इटली ने लाल सागर के छोर पर स्थित असाब बन्दरगाह खरीद लिया और फिर अन्दर की ओर बढ़ कर इरिट्रिया उपनिवेश बसाया। कुछ वर्षों बाद दक्षिण की ओर हिन्द महासागर में सोमालीलैण्ड नामक बस्ती स्थापित की गयी। यहाँ से इटली ने अबीसीनिया के स्वतंत्र राज्य की जमीन हड़पने का प्रयास आरंभ किया। १८९६ में उसकी करारी हार हुई और उसे पीछे हटना पड़ा।

इटली की दिलचस्पी अब भूमध्यसागरीय तट पर, उत्तरी अफ्रीका में बसे हुए तुर्की के प्रान्त, त्रिपोली की ओर मुड़ गयी। १९११ में उसने उस प्रान्त पर हमला किया और एक वर्ष तक लड़ाई के बाद तुर्कों को बाहर भगाकर तुर्की का अन्तिम अफ्रीकी क्षेत्र अपने अधिकार में कर लिया। उसने इस क्षेत्र का नया नाम लीबिया रखा जो इस क्षेत्र का पुराना रोमन नाम था। यहाँ के कबीले वाले, जो मुसलमान थे, इटली का शासन पसंद नहीं करते थे और वहाँ नियंत्रण कायम रखने में भारी खर्च हो रहा था।

अंडरवुड एण्ड अंडरवुड

अफ्रीका में हजारों की संख्या में हाथी प्रतिवर्ष उनके दांतों के लिए मारे जाते हैं जिनसे कि बेहतरीन हाथीदांत (भीतरी दांत) मिलता है।

व्यापार या पैदावार के लिहाज से इटली का कोई भी उपनिवेश उसके लिए मुफीद नहीं था। उनके रख-रखाव में भारी व्यय ही नहीं हो रहा था अपितु ज्यादा संख्या में इटली निवासी भी उन क्षेत्रों में नहीं गये थे।

१. डेविड लिविंगस्टोन और हेनरी स्टेनले कौन थे?
२. वेल्जियम का कांगो क्षेत्र पर अधिकार किस प्रकार हुआ?
३. कांगो इतना कीमती उपनिवेश क्यों था?
४. इटली ने उपनिवेश प्राप्त करने में इतनी देरी क्यों की?
५. उसने किन-किन उपनिवेशों को प्राप्त किया?
६. अबीसीनिया के साथ इटली के क्या सम्बन्ध थे?
७. इटली ने लीबिया किस से प्राप्त किया?

विलियम द्वितीय ने 'धरती पर स्थान' की मांग की

उपनिवेशों को प्राप्त करने की दौड़ में जर्मनी भी पिछड़ गया था। इसका एक कारण यह भी था कि बिस्मार्क की नीति में अधिक प्रबल औपनिवेशिक भावना का अभाव था। इसी से विलियम द्वितीय ने उसे चांसलर के पद से हटा दिया था। तो भी, बिस्मार्क ने अफ्रीका में चार महत्त्वपूर्ण उपनिवेश जर्मनी के लिए हस्तगत किये थे : तोगोलैण्ड, कैमरोन, जर्मन दक्षिण-पश्चिमी अफ्रीका और जर्मन पूर्वी अफ्रीका। ये वहाँ के मूल निवासियों से १८८४ और १८९० के बीच प्राप्त किये गये थे। ये धन और जन दोनों ही दृष्टियों से जर्मनी के लिए महंगे सिद्ध हुए। उनसे रवर, लकड़ी, हाथी-दाँत और ताड़-तेलों की उपलब्धि होती थी, लेकिन इतनी पर्याप्त मात्रा में नहीं कि उन्हें एक आमदनी वाला व्यवसाय बनाया जा सके। इसके अलावा, वे उष्ण कटिबंध में थे और जर्मन बस्तियों के लिए अनुपयोगी थे। इसलिए वे जर्मनी की बढ़ती हुई जनसंख्या के लिए विकास के स्थान नहीं थे।

विलियम द्वितीय की नीति—विलियम द्वितीय और उपनिवेश प्राप्त करने के लिए कृतसंकल्प था। उसने अपना ध्यान सुदूर पूर्व की ओर दिया। प्रशान्त में, बिस्मार्क ने बिस्मार्क द्वीप और मार्शल द्वीपसमूह प्राप्त किये थे। अब विलियम ने और कई छोटे-छोटे द्वीपों और न्यूगाइना नामक बड़े द्वीप के हिस्से को अपने साम्राज्य में मिलाया। १८९० के दशक में चीन कमजोर पड़ गया था, और अधिकांश बड़े राष्ट्रों द्वारा भूमि प्राप्त करने और व्यापार की विशेष सुविधाएँ प्राप्त करने के लिए सुलभ जगह समझा जाता था। जर्मनी ने, ब्रिटिश, फ्रेंच, रूसी और जापानियों के साथ-साथ, स्थिति का फायदा उठाया।

१९१४ तक जर्मनी औपनिवेशिक क्षेत्रफल में चौथा राष्ट्र और अपने उपनिवेशों की जनसंख्या के लिहाज से छठा राष्ट्र था। फिर भी जर्मन अपने उपनिवेशों में बसने के लिए नहीं गये और न ये उपनिवेश जर्मनी के लिए आर्थिक दृष्टि से ही लाभदायक थे। उनसे महज उनके राष्ट्रीय गौरव की तुष्टि होती थी और कैसर के शब्दों में वे उसे "धरती पर स्थान" दिलाते थे।

१. किन-किन उपनिवेशों को बिस्मार्क ने जर्मनी के लिए प्राप्त किया?
२. किन उपनिनेशों को विलियम द्वितीय ने अपने साम्राज्य में शामिल किया?
३. १९१४ में जर्मन साम्राज्य का क्षेत्रफल और उसकी जनसंख्या अन्य उपनिवेशवादी बड़े राष्ट्रों की तुलना में किस अनुपात में थी?

जापान का एशिया की मुख्य भूमि की ओर रुख

जब यूरोपीय राष्ट्र साम्राज्य बना रहे थे, तब जापान भी चुपचाप नहीं बैठा था। वह भी साम्राज्यवादी हो गया था और वही दलीलें पेश करता था जो पश्चिमी राष्ट्रों ने दी थीं। जापान के छोटे-छोटे द्वीप उसकी तेजी से बढ़ती हुई जनसंख्या के लिए नाकाफी थे और उसकी आँखें चीन की ओर लगी हुई थीं जहाँ उसके पास पश्चिमी राष्ट्रों के साम्राज्यवाद का एक अच्छा उदाहरण था। जापान ने पहले तो कोरिया की चीन से स्वतंत्रता को मान्यता प्रदान

की ओर फिर कोरियाई मामलों में दखलन्दाजी करने लगा। कोरिया ने चीन से मदद मांगी और इस तरह १८९४-१८९५ में चीन-जापान युद्ध हुआ। चीन में औद्योगीकरण न होने की कमजोरी शीघ्र प्रकट हो गयी। कुछ ही महीनों में जापान ने कोरिया और मंचूरिया के हिस्सों को सर कर लिया। पोर्ट आर्थर पर भी कब्जा कर लिया गया था और चीन ने संधि का प्रस्ताव रखा। शांति सम्मेलन में चीन ने लम्बी रकम हर्जाने में देना और कोरिया पर सब दावे छोड़ना स्वीकार किया। १९१० में जापान ने कोरिया को अपने साम्राज्य में मिला लिया। चीन-जापान युद्ध से जापान को फारमोसा द्वीप भी मिल गया।

शीघ्र ही जापान ने देखा कि यूरोपीय राष्ट्रों को चीन में अधिकार मिलते चले जा रहे हैं। उसका विशेष भय और विरोध रूस के पूर्व की ओर मंचूरिया में बढ़ाव के सम्बन्ध में था। इसके परिणामस्वरूप १९०४ में रूस पर हमला हुआ। पुनः सुशिक्षित और देशभक्त जापानी सेनाओं और नौसेना ने कई लड़ाइयां जीतीं, लेकिन जब जापान के सभी साधन समाप्त होने के करीब थे, राष्ट्रपति थियोडोर रूजवेल्ट ने दोनों देशों के बीच शांति-स्थापनार्थ मध्यस्थता का प्रस्ताव रखा। तदनुसार, पोर्टस्माउथ नौसेना के अड्डे में, जो कि मेन और न्यू हैम्पशायर के बीच में पड़ता है, बैठक हुई और एक संधि पर हस्ताक्षर हुए। जापान और रूस, दोनों ने मंचूरिया में एक दूसरे के "प्रभाव क्षेत्र" को मान्यता दी लेकिन लाओतुंग प्रायद्वीप और पोर्ट आर्थर जापान को प्राप्त हुए। उसे सखालिन द्वीप के दक्षिण का आधा हिस्सा भी प्राप्त हुआ।

१. जापान साम्राज्यवादी क्यों बना ?
२. किन क्षेत्रो को जापान ने प्राप्त किया था ?
३. उस काल में जापान के चीन के साथ क्या सम्बंध थे ? रूस के साथ क्या सम्बन्ध थे ?

संयुक्त राज्य अमेरिका ने समुद्र पर एक साम्राज्य प्राप्त किया

अलास्का—समुद्रपार का पहला क्षेत्र, जिस पर अमेरिका को आधिपत्य प्राप्त हुआ, अलास्का था। १८२३ से, जब मुनरो सिद्धान्त जारी किया गया था संयुक्त, राज्य अलास्का से दक्षिण की ओर रूसी प्रसार को रोकने का प्रयास कर रहा था। इसके कुछ समय बाद, रूस एक संधि पर सहमत हुआ कि वह ५४-४० समानान्तर से दक्षिण में नहीं बढ़ेगा। बाद में रूस यह महसूस करने लगा कि अगर अलास्का पर हमला हुआ तो उसके लिए उसका बचाव असंभव हो जायगा। इसके अलावा अलास्का रूस के लिए फायदेमंद नहीं रहा था। फलतः वह उसे बेचना चाहता था। १८६७ में अमेरिका ने ७२ लाख डालर में उसे खरीद लिया। रूस अब पीछे एशिया में धकेल दिया गया। अलास्का अपने फरों, सेना, मछली और लकड़ी के लिए बहुमूल्य क्षेत्र था। उन्हें यह भी मालूम हुआ कि दक्षिण अलास्का का जलवायु समशीतोष्ण है जो कृषि और मवेशीपालन के अनुकूल है।

हवाई द्वीप—अलास्का ही एक बाहरी क्षेत्र नहीं था जिसमें अमेरिका की दिलचस्पी थी। १७८८ में दो अमेरिकी जहाज हवाई द्वीपों में पहुँचे थे और अगली शताब्दि के भीतर बहुत से अमेरिकी जहाज होनोलूलू बन्दरगाह को, उत्तरी प्रशान्त में व्यापार कार्यों के लिए, अड्डे के रूप में प्रयुक्त करने लगे थे। अमेरिकी धर्मप्रचारक वहाँ पहुँचे और उन्होंने वहाँ गिरजे तथा स्कूल स्थापित किये। गन्ने की खेती इस कृषिसमृद्ध क्षेत्र में शुरू की गयी और अमेरिकनों को विशेष सुविधाएँ प्रदान की गयीं।

स्टैंडर्ड आयल कम्पनी (न्यू० ज०)

वल्बोआ और कोर्टेज ने प्राकृतिक मार्ग न मिलने पर दो समुद्रों को एक नहर से मिलाने की संभावना पर विचार किया था। यह कमी ४०० वर्षों वाद पूरी हुई और यह नहर विश्व की इंजीनियरी के सबसे बड़े नमूनों में है।

१८९१ में हवाई में एक नयी रानी गद्दी पर बैठी। उसने विदेशियों के अधिकारों पर प्रतिबन्ध लगा दिया। इससे वहाँ रहने वाले अमेरिकनों ने विद्रोह संगठित किया और रानी को गद्दी से उतार दिया। तब एक रिपब्लिक स्थापित की गयी और एक संधि द्वारा संयुक्त राज्य से द्वीपों का प्रशासन अपने हाथ में लेने को कहा गया। राष्ट्रपति ग्रोवर क्लीवलैंड का विश्वास था कि हवाई में अमेरिकनों ने अपने अधिकारों की सीमा को पार किया है और संधि की पुष्टि करने से इन्कार कर दिया। बाद में, जब विलियम मैकिनले राष्ट्रपति बने, कांग्रेस ने सम्बद्धीकरण को स्वीकार करने का एक संयुक्त प्रस्ताव पास किया। इस प्रकार १८९८ में हवाई द्वीपसमूह संयुक्त राज्य के अधिकार में आ गये।

स्पेनिश-अमेरिकी युद्ध—उसी दर्मियान जब कि अमेरिका ने हवाई द्वीप का नियन्त्रण संभाला, उसका स्पेन से युद्ध छिड़ गया। क्यूबा लम्बे अर्से से स्पेनिशों के कुशासन से पीड़ित था। अक्सर दंगे हो जाया करते थे और सेनाएँ उस क्षेत्र को रौंदती; व्यापार-संचार को भंग कर चीनी और तम्बाकू की खेती नष्ट कर डालती थीं। अमेरिकी नागरिकों की क्यूबा में खेती थी और अशांति से उनके रोजगार को भारी धक्का पहुँचता था। कुछ अमेरिकी समाचारपत्रों ने क्यूबा की निर्दयी सरकार और अन्य स्पेनिश उपनिवेशों के बारे में बहुत कुछ लिखा था। जब अमेरिकी जंगी जहाज "मेन" हवाना बंदरगाह में उड़ा दिया गया तब अमेरिकनों की युद्ध-प्रवृत्ति युद्धज्वर में परिणत हो गयी। गोकि विस्फोट का कारण कभी भी निश्चित नहीं हो पाया, पर कांग्रेस ने स्पेन के खिलाफ युद्ध की घोषणा कर दी।

युद्ध असमान प्रतियोगिता थी। स्पेन कमज़ोर, युद्ध के सफलतापूर्वक संचालन में अयोग्य और असावधान था और अपने समुद्रतट से इतनी दूरी पर था। अमेरिका ने सिर्फ क्यूबा पर ही अधिकार नहीं किया अपितु एडमिरल डिवी का जंगी बेड़ा फिलीपीन द्वीपसमूह में मनीला की खाड़ी में भी घुस गया और उसने शहर पर कब्जा जमा लिया।

एक संधि द्वारा, जिससे युद्ध समाप्त हुआ, संयुक्त राज्य को वेस्ट इण्डीज में पोर्टोरिको तथा

पश्चिमी प्रशान्त में गुग्राम क्षेत्र मिले और उसने दो करोड़ डालर फिलीपीन को दिये। क्यूबा को सीमित स्वतन्त्रता दी गयी। फिलिपीनवासी अमेरिकी शासन को भी उतना ही नापसंद करते थे जितना स्पेनिश आधिपत्य को। वहाँ विद्रोहों को दबाने और व्यवस्था कायम करने के लिए तीन वर्षों तक संघर्ष चलता रहा।

इन क्षेत्रों के अलावा, संयुक्त राज्य ने हवाई द्वीपसमूह और फिलीपीन के बीच के कुछ छोटे द्वीपों पर भी अधिकार कर लिया जो इन दोनों के बीच "कदम रखने के पत्थरों" का काम दें।

पनामा नहर—१८४९ में सोना प्राप्त करने कैलीफोर्निया के लिए हुई दौड़ के शीघ्र बाद, संयुक्त राज्य को इस बात का अहसास हुआ कि उसके पश्चिमी तट के सैन्य संरक्षण के लिए पनामा से एक नहर वांछनीय है। बीसवीं शताब्दि के प्रारंभिक काल से पहले संयुक्त राज्य के सैनिक इंजीनियर इस काम को शुरू नहीं कर सके थे। राष्ट्रपति थियोडोर रूजवेल्ट पनामा में भूमि प्राप्त करने के लिए, जिससे होकर यह नहर बनने वाली थी, संधि के प्रयास में विफल रहे। लेकिन पनामा में क्रांति होने से वहाँ उस समय एक स्वतन्त्र देश बन गया। संयुक्त राज्य ने क्रांति का फायदा उठाया, पनामा रिपब्लिक को मान्यता प्रदान की और उससे एक संधि करके संयुक्त राज्य के लिए उसकी भूमि से नहर ले जाने की अनुमति प्राप्त कर ली। नहर सभी राष्ट्रों के लिए समान आधार पर खोल दी गयी। नहर के बन जाने से एक सप्ताह की यात्रा का समय बच गया और जहाज के भाड़े में भारी कमी आ गयी। अब जहाजों को अतलांतक से प्रशान्त महासागर जाने में दक्षिणी अमेरिका का चक्कर काटकर नहीं जाना पड़ता था।

पनामा नहर के निर्माण के बाद यह महत्त्वपूर्ण प्रतीत हुआ कि उस तक पहुँचने के सभी मार्गों पर निगरानी की व्यवस्था हो। जब १९१७ में जर्मनी के साथ युद्ध की संभावना हुई तो संयुक्त राज्य ने डेनमार्क से कैरीबियन सागर में वर्जिन द्वीपसमूह में से कुछ को खरीद लिया क्योंकि वे नहर के एक मार्ग पर पड़ते थे।

इस प्रकार साम्राज्यवाद की भूख ने, किसी न किसी कारण से, छोटे-बड़े सभी राष्ट्रों को ग्रस्त कर लिया था। साम्राज्य की इस होड़ से बहुत मंहगी और विनाशक लड़ाइयाँ हुईं, जबकि इसने कई अविकसित क्षेत्रों के लिए पाश्चात्य सभ्यता का मार्ग भी खोल दिया और विजेता तथा विजित दोनों के ही जीवन में कई परिवर्तन ला दिये। साम्राज्य की दौड़ ने बड़े राष्ट्रों के बीच प्रतिद्वंद्विता भी पैदा कर दी जो कि १९१४ के विश्वयुद्ध में एक-दूसरे के साथ टकराये।

१. उन सब क्षेत्रों की सूची तैयार करो जो संयुक्त राज्य ने देश से बाहर प्राप्त किये?
२. उन परिस्थितियों का वर्णन करो जिनके अन्तर्गत संयुक्त राज्य ने हवाई द्वीप प्राप्त किये।
३. संयुक्त राज्य पनामा की भूमि से एक नहर क्यों निकालना चाहता था?
४. स्पेन से युद्ध के क्या कारण थे? युद्ध के फलस्वरूप कौन से क्षेत्र संयुक्त राज्य को मिले?
५. किस प्रकार और क्यों संयुक्त राज्य ने वर्जिन द्वीपों को प्राप्त किया?

विचार-विमर्श के लिए प्रश्न

१. कुछ देश अन्य देशों की अपेक्षा उपनिवेश बसाने में अधिक सफल क्यों रहे?

२. छोटे, घने बसे हुए मुल्कों को, जैसे नीदरलैंड्स, जापान, इटली और बेल्जियम, संयुक्त राज्य जैसे देशों की अपेक्षा उपनिवेशों की क्यों अधिक आवश्यकता महसूस हुई?

३. क्या दुनिया में अब भी ऐसे देश हैं जहाँ के निवासियों से औपनिवेशिक राष्ट्र दुर्व्यवहार करते हैं। उपनिवेशों में विदेशी शासन के कारण विश्व में कौन-कौन से अशांति के स्थल मौजूद हैं?

४. क्या औपनिवेशिक राष्ट्रों की यह नैतिक जिम्मेदारी है कि उनके उपनिवेशों के मूल निवासी शिक्षित बनें, स्वस्थ परिस्थितियों में रहें और स्वशासन सीखें?

१०. लोकतंत्र की दिशा में बढ़ते कदम

ब्रिटिश संसद ने सुधार विधेयक और कैथोलिक मुक्ति कानून पास किये और आयरलैण्ड में होमरूल लागू कर मताधिकार प्रदान किया।

संयुक्तराज्य में राष्ट्रपति जैफरसन और राष्ट्रपति जैक्सन के शासन में लोकतंत्र की उन्नति हुई। १८६३ में दास प्रथा समाप्त कर दी गयी। फ्रांस में तृतीय रिपब्लिक ने १८७५ का संविधान लिखा।

जर्मनी और इटली में लोकतंत्र नहीं था। बाल्कन देशों ने अपने अत्याचारी राजाओं से स्वाधीनता प्राप्त की। स्कैण्डिनेवियाई देशों, बेल्जियम और नीदरलैण्ड्स में लोकतंत्रात्मक राजतंत्र था। कनाडा स्वशासित बना, लेकिन दक्षिण अफ्रीका, भारत, मिस्र और ईरान ब्रिटिश शासन के अधीन रहे।

करोड़ों रूसी किसान दास १८६१ में स्वतंत्र हुए लेकिन अन्य सुधार एकछत्र राजतंत्र द्वारा रोक दिये गये। स्पेन और पुर्तगाल राजनीतिक विकास में अन्य यूरोपीय देशों की अपेक्षा बहुत पिछड़े रहे।
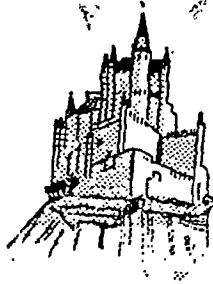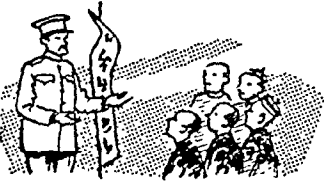
जापान को अन्त में, पश्चिम से सम्पर्क स्थापित करने को विवश होना पड़ा। सामन्तवाद समाप्त कर दिया गया और जमीन किसानों को बांटी गयी। एक शक्तिशाली सैनिक दल ने लोकतंत्रीय उन्नति के मार्ग में रोड़े अटकाये।

१९११ तक चीन में राजतंत्र समाप्त कर दिया गया और एक रिपब्लिक स्थापित की गयी।

५. क्या एक देश का दूसरे पर शासन हमेशा ही गलत है?

६. जापान के द्वीपों में जनसंख्या बढ़ जाने से क्या एशिया की मुख्य भूमि के हिस्से उसे दे दिये जाने चाहिए?

७. क्या संयुक्त राज्य ने क्यूबा में हस्तक्षेप कर उचित किया?

इतिहास के उपकरणों का प्रयोग

एक. नाम, तिथियाँ और स्थान

(क) क्या तुम इन पदों को स्पष्ट कर सकते हो?

बोअर—"झाड़ी"—बसे हुए स्थान से उठा देना—औपनिवेशिक स्वराज्य—डरहम रिपोर्ट—

१०. जीवन-निर्वाह की प्रगति के चरण

राष्ट्रों के उत्थान और स्वसंचालित सरकार प्रणाली के बाद हुए राजनीतिक संघर्षों और युद्धों के बावजूद, हमारी अधिकांश आधुनिक मशीनों और तौर-तरीकों का आविष्कार और विकास १६ वीं शताब्दि में हुआ।

विज्ञान और आविष्कारों में प्रगति

औद्योगिक क्रांति के प्रारंभिक काल में जिन आविष्कारों का प्रयोग होने लगा था, उनमें सुधार जारी रहा और नये-नये विचार व्यावहारिक प्रयोग में लाये जाने लगे।
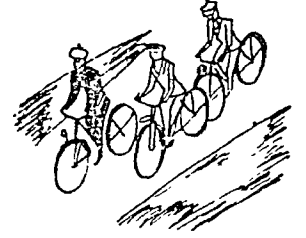
संयुक्त राज्य में, राज्यों के आपसी युद्ध के बाद, उत्पादन बड़े पैमाने पर होने लगा। अमेरिका के व्यापक प्राकृतिक साधनों का प्रयोग उद्योग को शक्ति प्रदान करने, कारखाने बनाने और नयी-नयी चीजों के निर्माण कार्यों में किया जाने लगा।
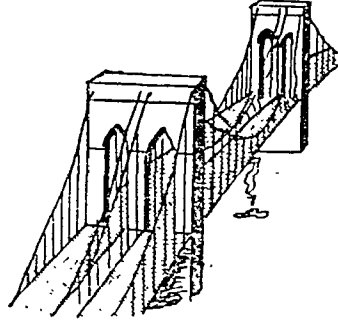
१८६० के बाद बसों, साइकिलों, इस्पात की पटरियों और पुलों के निर्माण द्वारा हमारे जीवन-निर्वाह के मौजूदा स्तर के लिए अन्य महत्त्वपूर्ण विकास कार्य हुए।
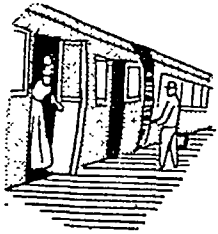
गोकि, इस शताब्दि में अमेरिका अब भी, मुख्यतः एक कृषि-प्रधान देश बना रहा, फिर भी लोग शहरों में बसने के लिए बड़ी संख्या में जाने लगे थे, जहां नये औद्योगिक कारखानों में उन्हें काम मिल जाता था।

यूरोप के कुछ क्षेत्रों में यातायात सुधरा, विशेषकर इंग्लैण्ड, स्वीडन और फ्रांस में। इस दौरान उत्पादन बढ़ा और नयी वस्तुएँ बनने लगीं।

जापान भी एक औद्योगिक देश बना। यहां रेशम का उत्पादन एक मुख्य उद्योग बन गया था।

'सामूहिक यात्रा'—होम रूल—साम्राज्यवाद—खदीव — माओरी — "धरती पर स्थान" — संरक्षित राज्य—शाह—सिन फेन—"श्वेत व्यक्ति का दायित्व"।

(ख) इन तिथियों के बारे में तुम क्या जानते हो ?

१७७४, १८०१, १८२३, १८२९, १८३७, १८४६, १८६७, १८६४, १८६५, १८६८, १९००, १९०४-१९०५, १९१०।

(ग) नक्शे में निम्नलिखित स्थान दिखाओ।

अबीसीनिया—अडोवा—अफगानिस्तान ... अफ्रीका—अलास्का—अल्यूशियन द्वीप—अल्जियर्स—अजोर—एशिया माइनर—आस्ट्रेलिया—असाव—आस्ट्रिया—बाल्कन—बेहरिंग समुद्र—

शिक्षा में प्रगति

१८ वीं शताब्दि के अन्तिम दिनों में फ्रांस में ६ से लेकर १३ वर्ष के बच्चों के लिए स्कूल में उपस्थित रहना अनिवार्य हो गया था।
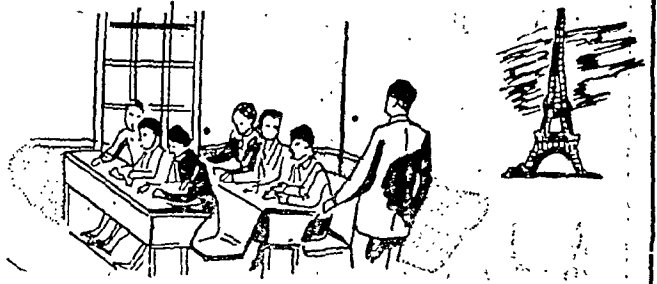
संयुक्त राज्य में, मुख्यतः होरेस मान ने मैसेच्युसेट्स, हेनरी बर्नार्ड ने कनेक्टिकट, थाडुस स्टीवेंस ने पेनसिल्वानिया में और स्त्रियों की उच्च शिक्षा में दिलचस्पी रखने वाली मेरी लाओन ने शिक्षण संस्थाएँ खोलीं और सार्वजनिक स्कूलों की महत्ता की ओर अमेरिकी जनता का ध्यान आकृष्ट हुआ।
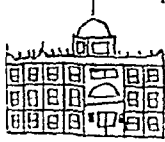
१८७२ में जापान में बच्चों के लिए स्कूली तालीम अनिवार्य कर दी गयी। उस शताब्दि में पश्चिम के द्वार खुल जाने के बाद जापानी छात्र अध्ययन के लिए विदेश भेजे गये।
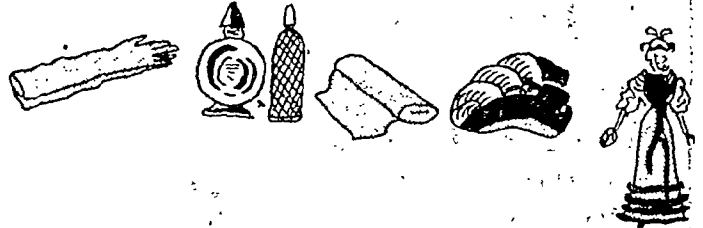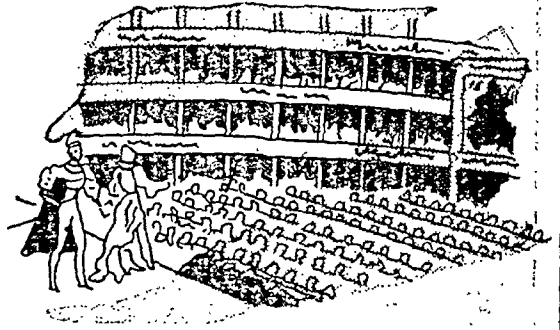
कला में प्रगति

संगीत, चित्रकला और अन्य ललित कलाओं में लोगों की अभिरुचि बढ़ने के साथ-साथ व लोगों के जीवन में अधिक महत्त्वपूर्ण बनीं। कला के अध्ययन को संयुक्त राज्य में प्रोत्साहित किया गया और स्कूलों के पाठ्यक्रम में कला विषय चालू किया गया। यूरोपीय शहर, विशेषकर जर्मनी और इटली विश्व के संगीत केन्द्र थे। फ्रांस में दस्तकारी, फैशन और सूती वस्त्रोद्योग पनपे।

बिस्मार्क द्वीप—बोटनी बे—कनाडा—केप कालोनी—कैरोलीन द्वीप—कुस्तुन्तुनिया—कांगो—क्यूबा—दमिश्क—मिस्र—भूमध्यरेखीय अफ्रीका—इरिट्रिया — फ्रेंच वैस्ट अफ्रीका — जर्मन पूर्वी अफ्रीका—जर्मन दक्षिण-पूर्वी अफ्रीका—गुआम—

हवाना—हवाई—होण्डूरास—हांगकांग— होनोलूलू—हंगरी—भारत — इण्डोचाइना — आयरलैंड—इटली—कोरिया—लाओतुंग प्रायद्वीप—मंचूरिया—मनीला—मार्शल द्वीप—मोरक्को—नेटाल—न्यू एमस्टरडम—न्यू ब्रन्सविक—न्यू गाइना

—न्यूज़ीलैंड — नोवास्कोशिया—ओन्टारियो—ओरेन्ज फ्री स्टेट—प्रशान्त महासागर—पनामा नहर—पर्शिया—पर्शिया की खाड़ी—फिलीपीन्स—पोलैंड—पोर्ट आर्थर—पुर्तगाल—पोर्ट्समाउथ—न्यू हैम्पशायर—पोर्टोरिको—पंजाब—क्वेबेक—रॉकी पर्वतमाला—रूस—सहारा—सखालिन—सोमालीलैंड — सेंट लारेंस नदी—सूडान—स्वेज नहर—टैक्सास— तेरह उपनिवेश—तोगोलैंड—ट्रान्सवाल — ट्रिपोली—ट्यूनिस—टर्की—दक्षिण अफ्रीकी यूनियन।

(घ) निम्नलिखित व्यक्तियों के बारे में तुम क्या जानते हो ?

ओटो वान बिस्मार्क—ग्रोवर क्लीवलैंड—जेम्स कुक—ओलीवर क्रामवैल—एडमिरल डिवी—लार्ड डरहम—विलियम ग्लैडस्टन—आर्थर ग्रिफिथ—डा० एस० एल० जेम्सन—रुडयार्ड किप्लिंग—पाल क्रूगर—लियोपोल्ड द्वितीय—मेगालिन—विलियम मैकिनले—नैपोलियन प्रथम—नैपोलियन तृतीय—विलियम पिट—सेसिल रोड्स ।

दो· क्या तुम अपने विचार स्पष्ट प्रकट कर सकते हो कि

(१) निम्नलिखित में से प्रत्येक के बारे में अपनी प्रतिक्रिया का स्पष्टीकरण करते हुए कक्षा में एक संक्षिप्त वक्तव्य दो।

(क) 'युवा तुर्कों' ने संभवतः तुर्की को बचाया।

(ख) राष्ट्रपति क्लीवलैंड ने कहा कि अमेरिकनों ने हवाई में अपने अधिकारों का अतिक्रमण किया।

(ग) अगर कोई राज्य साम्राज्यवाद शुरू कर देता है तो उसके लिए इससे रुकना बड़ा मुश्किल है ।

(घ) राष्ट्रवाद ही साम्राज्यवाद का मुख्य कारण है।

(ङ) ब्रिटेन ने यूरोप से जाकर उपनिवेशों में बसने वाले लोगों को अन्यों की अपेक्षा अधिक स्वशासनाधिकार दिये।

(च) आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड ने रंगीन जातियों के लोगों को अपने देशों में नहीं बसने दिया।

(छ) कुछ उपनिवेशवादियों का कहना है कि हम अन्य लोगों की अच्छी सरकार की अपेक्षा अपनी गरीब सरकार द्वारा स्वशासन पसंद करेंगे।

(ज) अलास्का की खरीद लाभ का सौदा था।

(२) प्रत्येक छात्र संयुक्त राज्य के उपनिवेशों को विस्तृत अध्ययन के लिए चुन ले। चित्र दिखलाते हुए कक्षा में उसका विवरण पेश करो।

(३) अफ्रीका या आस्ट्रेलिया या न्यूजीलैंड के आदिवासी कबीलों में से किसी एक कबीले के बारे में अध्ययन कर एक वार्ता तैयार करो ।

तीन. कार्टून और शीर्षक

समाचार पत्रों के शीर्षक या कार्टून खींचकर दिखाओ जो कि निम्नलिखित अवसरों पर प्रकाशित हुए होते। उस देश का नाम लिखो जिसमें शीर्षक या कार्टून समाचारपत्रों में प्रकाशित हो सकता था।

जापान ने १८९५ में चीन को हराया···जापान ने १९०४ में रूस पर हमला किया···बोअर युद्ध समाप्त हुआ···डिज़रायली ने स्वेज नहर के शेयर खरीदे···संयुक्त राज्य ने हवाई को अपने राज्य में मिलाया।

चार. व्यापारिक और चित्रमय नक्शे

(१) किसी आर्थिक भूगोल की सहायता से मालूम करो कि ब्रिटेन अपने उपनिवेशों और डोमिनियनों से कौन सी वस्तुएँ आयात करता है। ब्रिटिश साम्राज्य का एक बड़ा नक्शा बनाओ। रंगीन तागों के टुकड़ों से उनमें से प्रत्येक का एक सिरा इंग्लैंड से बाँध दो और दूसरा सिरा उपनिवेश या डोमीनियन से, जिससे कि माल आता है। प्रत्येक व्यापार-मार्ग पर उस माल का नाम लिख कर लेबल लगा दो।

(२) अफ्रीका का एक चित्रमय नक्शा तैयार कर उसके प्रत्येक उपनिवेश से आनेवाली मुख्य पैदावार दिखाओ। तुम चित्रों को रंग सकते हो या कटी हुई तसवीरें नक्शे में जोड़ सकते हो।

पाँच. कमेटी का कार्य

बेल्जियन कांगो या प्रशान्त द्वीपसमूहों में से किसी एक के रहने वाले व्यक्ति के घर का माडल बनाओ। अपना माडल क्लास को दिखा कर ऐसे घरों में प्रयोग में लाया गया सामान, फर्नीचर और उसकी स्थिति बताओ।

छह. सभा-कार्यक्रम

ब्रिटिश या किसी अन्य साम्राज्य पर आधारित असेम्बली प्रोग्राम बनाओ। एक सुझाव यहाँ दिया जाता है कि दस या बारह छात्र एक उपनिवेश-विशेष की पोशाक पहन लें और अपने को वहाँ का देशवासी समझ कर दो या तीन मिनट अपने देश के बारे में बोलें। पोशाकें पुरानी चादरों या कम खर्चीले सामान से आसानी से तैयार हो सकती हैं। आइल पेन्टिंग द्वारा उनमें डिजाइन बनाए जा सकते हैं।

सात. यात्रा-वर्णन

इस अध्याय में वर्णित उपनिवेशों या डोमीनियनों में से एक की यात्रा पुस्तिका में वहाँ की सीनरी, जानवरों और पेड़-पौधों तथा लोगों के बारे में अध्ययन करो। अपनी कक्षा को एक काल्पनिक सैर-सपाटे पर ले जाओ और जिस देश का तुमने अध्ययन किया है, उस पर अपनी वार्ता को, संभव हो सके तो, चित्रों द्वारा समझाओ।
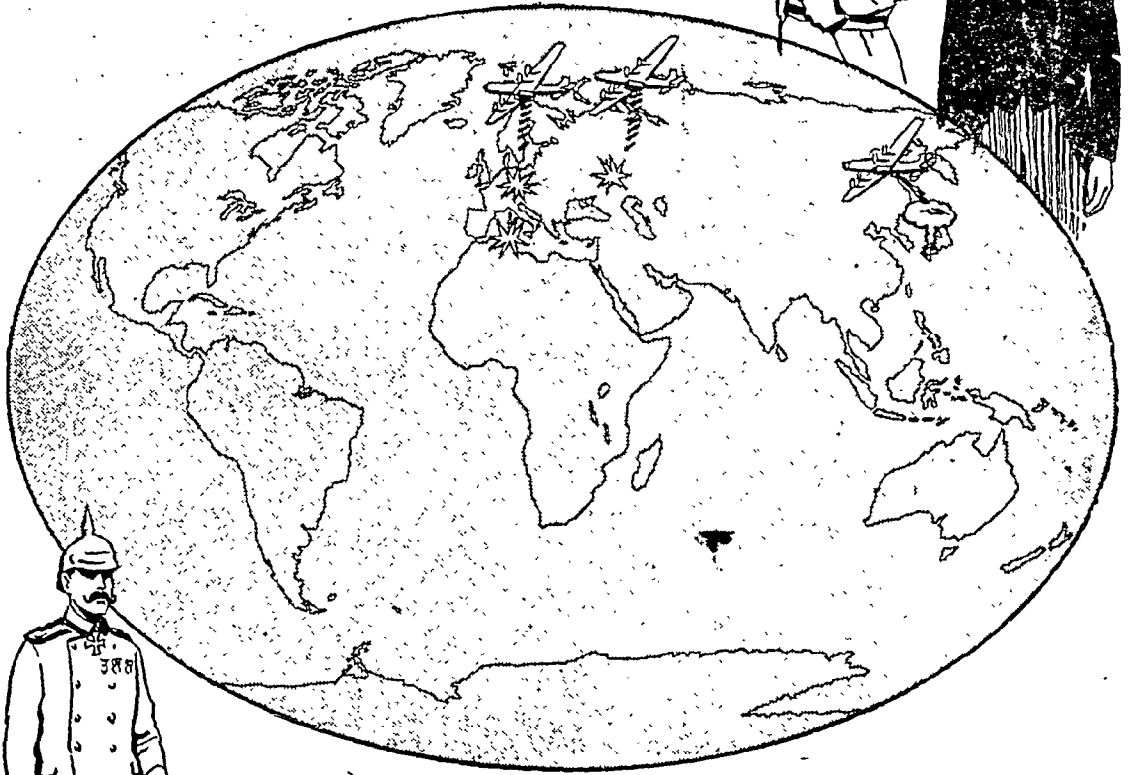
साम्राज्य की होड़ ने
प्रथम विश्वयुद्ध को जन्म दिया

१६१४ और १६३६ के बीच की चौथाई शताब्दी में अनेक धरती को हिला देने वाली घटनाएँ हुईं, एक विश्वयुद्ध, कई देशों में हिंसात्मक राजनैतिक क्रान्तियाँ, गंभीर आर्थिक मन्दी और विज्ञान की नयी उन्नति। इन घटनाओं ने सब देशों के लोगों के जीवनों को बहुत बदल दिया और आगे भी यह परिवर्तन होता रहेगा। इन घटनाओं ने अधिकांश मानवजाति की सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक अवस्थाओं को इतना अधिक बदल दिया कि आज आप १९१४ से पहले की दुनिया से बहुत भिन्न दुनिया में जीवन बिता रहे हैं।

१६१४ से पहले की लगभग एक शताब्दी अपेक्षया शान्तिमय रही। युद्ध तो हुए पर वे छोटे थे, उनमें बड़ी शक्तियाँ एक दूसरे के मुकाबले में नहीं थीं। पर ये बलवान राष्ट्र अधिकाधिक राष्ट्रवादी, अधिकाधिक साम्राज्यवादी और अधिकाधिक सैनिकवादी होते जा रहे थे। १६१४ तक यह अवस्था हो गयी कि वे एक-दूसरे पर अविश्वास करने लगे और एक-दूसरे से डरने लगे। इसके अतिरिक्त, उनके पास ऐसे नये उपकरण और सामान हो गये थे जिनसे युद्ध बड़ा विनाशकारी हो जाता।

कुछ विचारशीलों ने यह अनुभव किया कि

विश्व में

उथल-पुथल

राष्ट्रों में परस्पर सहयोग का अभाव बड़ी मूर्खता है और उन्होंने इस बारे में कुछ करने का यत्न किया। कुछ राष्ट्रों में मैत्री संधियाँ हुईं और विवादों के निपटारे के लिए काँग्रेसें और सम्मेलन हुए। पर इन से इतिहास का वह सबसे अधिक व्यापक युद्ध न टाला जा सका जिसे प्रथम विश्व-युद्ध कहते हैं।

प्रथम विश्वयुद्ध का परिणाम मौत और विनाश हुआ और इसने भविष्य के लिए और अधिक झगड़े के बीज भी बो दिये। इन बीजों के पनपने से हिंसक क्रान्तियाँ और पहले से भी भयंकर सैनिकवाद और राष्ट्रवाद का जन्म हुआ।

युद्ध से कोई भी समस्या स्थायी रूप से हल नहीं हुई। युद्ध के बाद इतनी तीव्र आर्थिक गड़बड़ी हुई कि दुनिया के दूरतम कोनों में रहने वाले लोगों को भी यह अनुभव हुई। १९१४ और १९३९ के बीच का समय अनिश्चय, परिवर्तन और उथल-पुथल का रहा।

न केवल सरकारों में, बल्कि मनुष्य की संस्कृति में भी परिवर्तन हुए। युद्ध के दिनों में लोगों के जीवनों में परिवर्तन हो जाने के कारण नये आविष्कारों, नयी प्रथाओं और आचार-व्यवहार का जन्म हुआ। उनका कलाओं, शिक्षा और सामाजिक जीवन पर प्रभाव पड़ा।

RED CROSS
CANTEEN

1800 AD

1820 AD

1840 AD

1860 AD

1880 AD

1900 AD

1920 AD

1940 AD

1960 AD

1980 AD

2000 AD

The World in Turmoil

३६ राष्ट्र सहयोग न कर सके
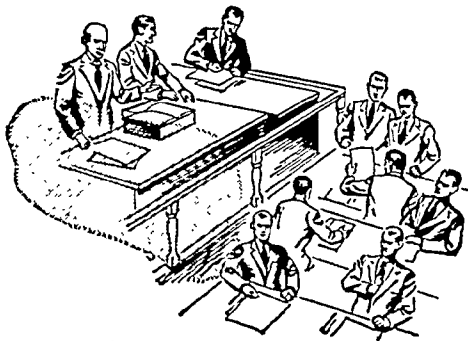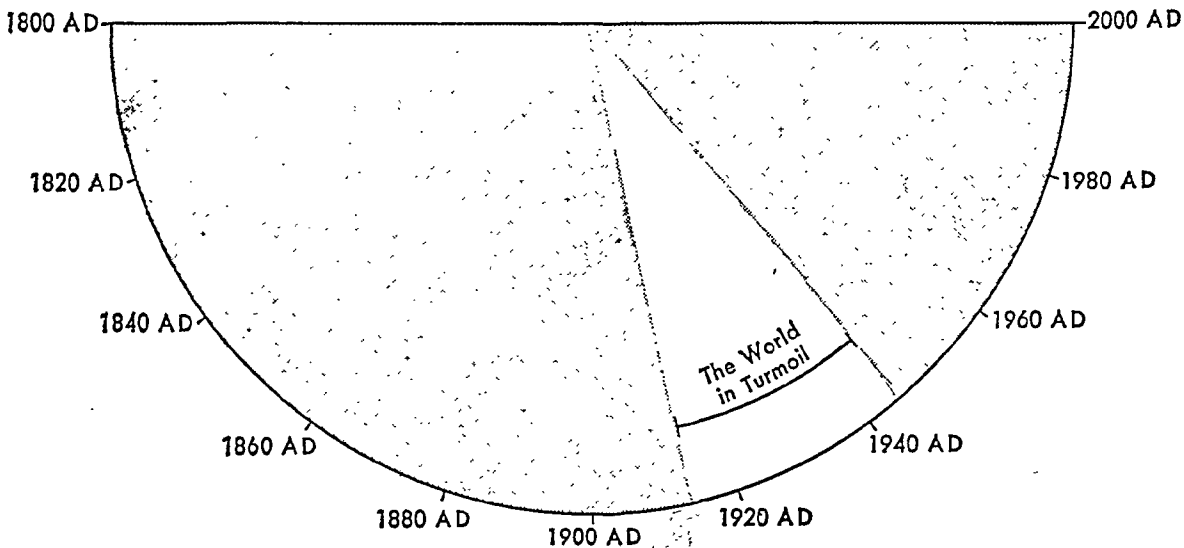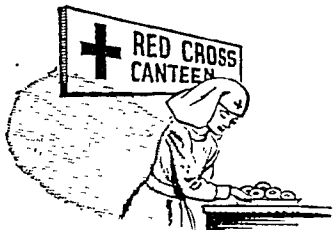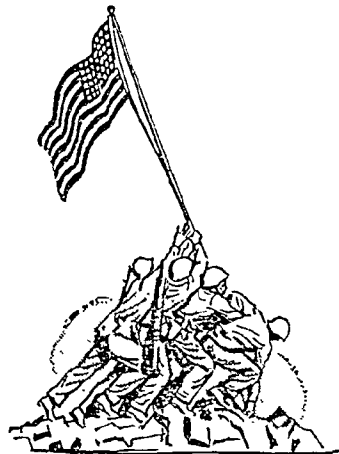
जबसे राष्ट्रीय राज्यों का उदय हुआ तब से ही विचारशील पुरुषों ने राज्यों की पारस्परिक ईर्ष्या व एक दूसरे के प्रति सन्देह की खाई को पाटने का यत्न किया है। संसार के ज्यादातर भागों में इस प्रकार के प्रयत्न सफल नहीं हुए क्योंकि अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग कठिन होता है। लेकिन जैसे इधर राष्ट्रवाद युद्धों का कारण बना वैसे ही सहयोग के द्वारा शांतिमय उपलब्धियाँ भी हुई। यह सहयोग निम्नलिखित रूपों में रहा।

दौत्य (राजनयिक) संबन्ध—सोलहवीं शताब्दी में राजाओं ने पड़ोसी राज्यों में अपने-अपने प्रतिनिधि भेजे ताकि वे प्रतिनिधि उन राज्यों की गतिविधियों की जानकारी रख सकें। इन प्रयत्नों से दौत्य सम्बन्ध आरम्भ हुआ, जो राष्ट्रों में आज भी मौजूद है। प्रत्येक देश अपना एक राजदूत या दूत दूसरे देश में भेजने लगा। ये प्रतिनिधि अपने देश की सरकार को संसार की राजनीतिक गतिविधियों का ब्योरा देते थे तथा अपने देश के प्रतिनिधि के रूप में, दूसरे जिस देश में वे भेजे गए होते थे, उसमें कार्य करते थे।

अन्तर्राष्ट्रीय विधि—तीस-वर्षीय क्रूरतापूर्ण युद्ध के बाद, तब एक नए विचार की उत्पत्ति हुई जब हालैंड के निवासी ह्यूगो ग्रोशियस ने अन्तर्राष्ट्रीय विधि पर एक विचारपूर्ण पुस्तक लिखी। अपनी उस पुस्तक में ग्रोशियस ने अपने इस विचार का प्रतिपादन किया कि स्वतन्त्र राज्यों तथा राजाओं के अतिरिक्त एक और कानून नैतिक कानून है जिसका सबको पालन करना चाहिए, चाहे युद्ध ही क्यों न हो रहा हो। अन्तर्राष्ट्रीय कानून राज्य के भीतरी कानूनों से बहुत भिन्न था। इसका उल्लेख संधियों के सिवाय और कहीं शायद ही हुआ हो। इसको लागू करने के लिए कोई पुलिस नहीं थी। तब भी आज विश्व-इतिहास में इसका एक महत्त्वपूर्ण भाग है। सभ्य राष्ट्रों ने राष्ट्रों के बीच व्यापार, युद्ध-बन्दियों से व्यवहार, तथा युद्ध के संचालन विषयक प्रचलनों को अन्तर्राष्ट्रीय कानून स्वीकार किया। इन प्रचलनों का बहुधा उल्लंघन कर दिया जाता था; उन उल्लंघनकर्ताओं को रोकने वाली शक्ति केवल लोकमत था और लोकमत हमेशा उन्हें रोकता नहीं था।

शक्ति का संतुलन—शान्ति स्थापित रखने का दूसरा प्रयत्न शक्ति-संतुलन के द्वारा हुआ। यूरोपीय राष्ट्रों का अध्ययन करते हुए हम इसके बारे में पढ़ चुके हैं। उदाहरण के लिए, ब्रिटेन की यह दृढ़ नीति थी कि यूरोप महाद्वीप के किसी राष्ट्र की शक्ति इतनी न बढ़ जाए कि वह महाद्वीप के शक्ति-संतुलन को परिवर्तित कर दे तथा उसके स्वयं के लिए खतरा बन जाए। अपनी नीति के बावजूद, ब्रिटेन स्वयं इस संतुलन को कायम रखने में सदा समर्थ न हुआ।

गठबंधन—शक्ति-संतुलन कायम रखने के निमित्त, राष्ट्र गठबंधन करते रहे हैं ताकि कोई

वैटीमैन आर्काइव
एक कलाकार ने व्यंग्यचित्र द्वारा यह दिखाया है कि जर्मनी की ठोकर से युद्ध-पूर्व के गठबंधन कैसे टूट गये।

शक्तिशाली राष्ट्र उनके लिए खतरा न बन जाए। शताब्दियों से इस प्रकार के गठबंधन बीच-बीच में होते रहे हैं। उन्नीसवीं शताब्दी के अन्तिम भाग में जर्मनी, आस्ट्रिया और इटली ने फ्रांस तथा ब्रिटेन की शक्ति का मुकाबला करने के लिए त्रिदेशीय गठबंधन कर लिया था। बीसवीं शताब्दी के आरंभिक भाग में इस त्रिदेशीय गठबंधन का मुकाबला करने के लिए फ्रांस, ब्रिटेन और रूस ने अपनी त्रिदेशीय मैत्री संधि की। ये गठबंधन, जो शान्ति कायम रखने के निमित्त किये गये थे, असल में प्रथम विश्वयुद्ध का एक कारण बने। पर कुछ अन्य ऐसे भी गठबंधन हुए हैं जिन्होंने शान्ति कायम रखने में मदद दी।

कांग्रेसें—१८१५ में विएना कांग्रेस के समय से यूरोपीय शक्तियों ने समय-समय पर उन कठिनाइयों को सुलझाने के लिए अनेक राजनीतिक सम्मेलन किये, जिनसे बिगाड़ अथवा युद्ध उत्पन्न होने की सम्भावना थी। इनमें से कुछ पर नजर डालने से सहयोग के लिए किये गये प्रयत्नों का पता चलेगा।

१८६४ में जिनीवा में एक कांग्रेस हुई जिसके परिणामस्वरूप अन्तर्राष्ट्रीय रैड क्रास की स्थापना हुई। इसका कार्य युद्ध के घायल सैनिकों की देख-भाल करना था, चाहे वे घायल किसी भी पक्ष के हों। बाढ़ों तथा भूकम्पों जैसी आपत्तियों में भी रेड क्रास अपनी अमूल्य सेवाएँ देता है।

१८८४-१८८५ में राष्ट्रों का एक सम्मेलन अफ्रीका के बटवारे के नियम बनाने के लिए बर्लिन में हुआ। १९०६ में, अलजेसिरास (स्पेन) में हुए एक सम्मेलन ने जर्मनी और फ्रांस के बीच अफ्रीकी राज्य मोरक्को के बारे में उत्पन्न झगड़े को रोका। नई दुनिया के अखिल-अमरीका सम्मेलन की सिलसिलेवार बैठकों ने, जो १८८९ में आरंभ हुईं, पश्चिमी गोलार्द्ध की बहुत सी कठिनाइयों तथा आपसी मतभेदों को हल किया। इन सम्मेलनों के द्वारा सहयोग की भावना को बल तो मिला लेकिन इन्हें शीघ्रता से नहीं बुलाया जा सकता था।

अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय—१८९९ में रूस के जार निकोलस द्वितीय ने नीदरलैंड के हेग नामक स्थान पर एक अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति सम्मेलन बुलाया। छब्बीस राष्ट्रों ने अपने प्रतिनिधि भेजे। वहाँ युद्ध-सामग्री की सीमा निश्चित करने का प्रस्ताव उठा लेकिन कुछ प्रगति न हो सकी। फिर भी, एक अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय स्थापित कर लिया गया, जिसे हेग का न्यायालय भी कहते थे, जिसमें राष्ट्र निपटारे के लिए अपने झगड़े ला सकते थे। कोई भी राष्ट्र न्यायालय में अपने झगड़ों को लाने के लिए मजबूर नहीं था, तब भी १८९९ तथा १९१४ के बीच इस न्यायालय के द्वारा पन्द्रह अन्तर्राष्ट्रीय झगड़ों का निपटारा हुआ। वास्तव में यह एक न्यायालय न था, बल्कि यह झगड़े वाले राष्ट्रों को नामों की एक सूची भेजता था, जिनमें से वे उन लोगों को चुन लेते थे जो न्याया-

धीश बनते। उन्नीसवीं शताब्दी में बहुत से छोटे-छोटे युद्ध हुए, लेकिन बड़े पैमाने पर कोई युद्ध न हुआ।

प्रथम महायुद्ध के गहरे कारण

राष्ट्रों के आपसी मतभेद दूर करने के साधन उपलब्ध होते हुए भी, घृणा तथा सन्देह बने रहे और अन्त में वे एक विश्वयुद्ध के रूप में फूट पड़े। ये घृणाएँ तथा सन्देह वियना कांग्रेस के समय से ही चल रहे थे।

राष्ट्रवाद—प्रथम तो, लोगों में राष्ट्रवाद की तीव्र भावना मौजूद थी। यूरोप में बहुत सी 'अर्ध-विलीन' जातियाँ थीं। आपको याद होगा कि आस्ट्रो-हंगेरियन साम्राज्य की स्थापना अनेक जातिसमूहों से हुई थी, जो स्वतन्त्रता के इच्छुक थे। रूसी साम्राज्य में भी ऐसी जातियाँ थीं, जो स्वयं एक राष्ट्र की हैसियत से शासन करना चाहती थीं। दूसरे राष्ट्र अपने पड़ोसियों के उद्देश्यों में अविश्वास तथा भय रखने लगे थे। यदि इस प्रकार की भावनाओं को रोका न जाता तो उनसे निश्चय ही युद्ध पैदा हो जाता।

साम्राज्यवाद—युद्ध का दूसरा कारण साम्राज्यवाद था। एशिया और अफ्रीका में औपनिवेशिक साम्राज्यों के लिए जो होड़ चली, उसने राष्ट्रों में गहरी ईर्ष्या पैदा कर दी। इस प्रकार की भावना यूरोप के उन राष्ट्रों में अधिक थी जो प्राकृतिक सम्पदा वाली अविकसित भूमि बिल्कुल भी नहीं या बहुत कम ले सके थे।

सैनिकवाद—इसका तीसरा कारण युद्ध की सामग्री इकट्ठा करने की होड़ थी। यूरोप महाद्वीप के प्रायः हर देश में सैनिक शिक्षा अनिवार्य हो चुकी थी। इंग्लैंड बहुत अरसे से समुद्री शक्ति में आगे रहा है, परन्तु जर्मनी ने जब अपनी सामुद्रिक शक्ति को बढ़ाना शुरू किया तब इंग्लैंड ने भी अधिक से अधिक जहाज बनाने शुरू कर दिए ताकि उसकी सामुद्रिक शक्ति जर्मनी के मुकाबले अच्छी तथा बड़ी रहे। इस प्रकार सामुद्रिक शक्ति की होड़ हो गई। बड़ी स्थल तथा जल सेनाएँ और युद्ध सामग्री सदा ही युद्ध छिड़ना आसान कर देती हैं।

गठबंधन—चौथा कारण गठबंधन पद्धति था। त्रिदेशीय गठबंधन तथा त्रिदेशीय मैत्रीसंधि से भावी आक्रमणकारियों का आत्मविश्वास बढ़ा, जिन्हें इस बात का आश्वासन था कि यदि सशस्त्र युद्ध छिड़ा तो उन्हें मदद मिल जाएगी।

सीमा के झगड़े—प्रथम महायुद्ध का पाँचवाँ कारण सीमा के झगड़ों का एक सिलसिला था। फ्रांस भूल नहीं सकता था कि जर्मनी ने उसका आलसेस-लौरेन ले लिया था। इटली भी ट्रियेस्ट तथा ट्रेन्टिनो का प्रदेश चाहता था, जहाँ बहुत से इटालियन रहते थे। ऐसे ही दूसरे क्षेत्रीय दावे भी थे जिन्होंने राष्ट्रों के बीच बिगाड़ पैदा किया।

१. राष्ट्रों के बीच कब और क्यों, राजनयिक या दौत्य संबन्ध प्रारम्भ हुआ? दौत्य संबन्ध से क्या तात्पर्य है, इसे स्पष्ट करिए।
२. ह्यूगो ग्रोशियस कौन था?
३. राष्ट्रीय विधि अन्तर्राष्ट्रीय विधि से किस प्रकार भिन्न है?
४. 'शक्ति-संतुलन का अर्थ क्या है?
५. इस अध्याय में किन गठबंधनों की चर्चा है? प्रत्येक में कितने देश थे? प्रत्येक का क्या उद्देश्य था?
६. निम्नलिखित में से प्रत्येक सम्मेलन का क्या उद्देश्य था।
    (क) १८६४ की जिनीवा कांग्रेस।
    (ख) १८८४-८५ की बर्लिन कांग्रेस।
    (ग) १९०६ का अलजेसिरास सम्मेलन।
    (घ) अखिल-अमरीका सम्मेलन।
    (ङ) १८९९ का हेग सम्मेलन।
७. अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय द्वारा झगड़े निपटाने के लिए प्रयोग किए जाने वाले तरीके की व्याख्या करो।
८. प्रथम महायुद्ध के मुख्य-मुख्य कारण बताओ।

प्रथम महायुद्ध में अधिकतर राष्ट्र उलझ गये

प्रथम महायुद्ध कैसे प्रारम्भ हुआ—२८ जून, १९१४ को बोसनिया के सारायेवो शहर में आस्ट्रिया-हंगरी साम्राज्य के सिंहासन के उत्तराधिकारी आर्कड्यूक फ्रेंसिस फरडिनैण्ड तथा उसकी पत्नी की हत्या की गयी। बोसनिया के उस देशभक्त ने यह काम अपने लोगों, अर्थात् सर्बिया के निवासियों, पर आस्ट्रिया के आधिपत्य का विरोध करने के लिए किया था। आस्ट्रिया ने कहा कि सर्बिया ने इस हत्या के षड्यन्त्र में सहायता की है। उसने सर्बिया को एक अल्टिमेटम भेजा, जो उसे अड़तालीस घंटों के अन्दर-अन्दर स्वीकार कर लेना था। उस अल्टिमेटम में, और बातों के अलावा यह मांग भी की गई थी कि आस्ट्रिया के अफसर सर्बिया में आस्ट्रिया-विरोधी प्रचार के दमन में सहायता दें। अल्टिमेटम के इस हिस्से को मानने से सर्बिया ने इन्कार कर दिया, लेकिन उसने मामला हेग न्यायालय में अथवा महत्त्वपूर्ण शक्तियों के सम्मेलन में रखने का प्रस्ताव रखा। अल्टिमेटम भेजने से पहले आस्ट्रिया ने यह निश्चय कर लिया था कि युद्ध छिड़ने पर जर्मनी उसकी सहायता को आएगा। इस पर रूस ने स्लाविक राज्यों के "रक्षक" के रूप में आस्ट्रिया को इस बात की चेतावनी दी कि यदि उसने सर्बिया के ऊपर आक्रमण किया तो वह खुद सर्बिया की मदद करेगा। इंग्लैंड ने, आम लड़ाई छिड़ जाने के भय से आस्ट्रिया तथा सर्बिया के बीच के झगड़े की पंचायत करने के लिए जर्मनी, फ्रांस, इटली और इंग्लैंड का सम्मेलन करने का प्रस्ताव रखा। लेकिन जर्मनी राजी न हुआ और २८ जुलाई को आस्ट्रिया ने सर्बिया के खिलाफ युद्ध की घोषणा कर दी और इस प्रकार एक भयंकर झगड़ा प्रारम्भ हो गया।

प्रथम महायुद्ध कैसे फैला—घटनाएँ जल्दी-जल्दी होने लगीं। ३० जुलाई को जार निकोलस द्वितीय ने रूसी सेनाओं को तैयार होने का हुक्म दिया। एक अगस्त को जर्मनी ने रूस के साथ युद्ध की घोषणा कर दी। और दो ही दिन बाद जर्मनी ने रूस के मित्र फ्रांस के साथ भी युद्ध करने की घोषणा कर दी। इंग्लैंड का भय ठीक सिद्ध हो चुका था, क्योंकि एक बड़ा युद्ध प्रारम्भ हो गया था।

प्रत्येक युद्ध पिछले युद्ध से अधिक विनाशक होता है क्योंकि लड़ाई के साधन अधिकाधिक घातक होते जाते हैं। यह तथ्य उत्साहवर्द्धक है कि इसी प्रकार शान्ति की कामना भी संसार के अधिकाधिक क्षेत्र में निरन्तर बढ़ती जाती है।

एक्मी

जर्मनी ने अपनी सेनाओं को फ्रांस, बेल्जियम, तथा लक्जमबर्ग की सीमाओं पर इकट्ठा किया और बेल्जियम के पास एक अल्टिमेटम भेजा जिसमें उसके देश में से गुजरने की इजाजत माँगी गई थी। १८३९ में बेल्जियम को एक ऐसा देश घोषित किया गया था, जिसकी तटस्थता का सबको सम्मान करना चाहिए। इसलिए बेल्जियम ने उत्तर दिया कि यदि उसकी तटस्थता को नष्ट करने का प्रयत्न किया गया तो वह अपनी रक्षा करेगा। ४ अगस्त को जर्मनी ने अपनी सेनाएँ बेल्जियम के पार भेज दीं। इस कार्य से सारे संसार को एक धक्का लगा। इंग्लैण्ड ने इस डर से कि एक शक्तिशाली शत्रु इंग्लिश चैनल के दूसरी ओर आ जाएगा, इसका विरोध किया। और उसी दिन, चार अगस्त को इंग्लैंड ने जर्मनी के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी। जर्मन चांसलर ने इंग्लैंड को यह कहते हुए दोषी ठहराया कि इंग्लैंड ने तो 'एक कागज के टुकड़े' पर लड़ाई छेड़ दी है... उसने उस संधि को 'कागज का टुकड़ा' कहा जो बेल्जियम के साथ हुई थी।

जापान, जिसकी इंग्लैंड के साथ मैत्री संधि थी, अब मित्रराष्ट्रों—फ्रांस, ब्रिटेन, रूस तथा बेल्जियम की ओर से युद्ध में आ गया। जापान ने प्रशान्त महासागर में जर्मनी के कुछ क्षेत्रों पर आसानी से अधिकार कर लिया। तुर्की केन्द्रीय शक्तियों, अर्थात् जर्मनी और आस्ट्रिया की ओर शामिल हो गया और मौनटेनिग्रो सर्बिया की सहायता के लिए आया। तुर्की ने रूस के पुराने भय से ऐसा किया, तथा वह जर्मनी के बहुत प्रभाव में भी था जिसने तुर्की की आर्थिक सहायता की थी। कुछ ही समय बाद सब महाद्वीपों के राष्ट्र युद्ध में शामिल हो गये।

सुविधाएँ तथा कठिनाइयाँ—जब युद्ध प्रारम्भ हुआ तब यह स्पष्ट हो गया कि प्रत्येक पक्ष को कुछ सुविधाएँ थीं। मित्र राष्ट्रों के पास अधिक मनुष्यशक्ति थी, जिससे वे अधिक सैनिक ले सकते थे, और उनके पास केन्द्रीय शक्तियों की अपेक्षा बहुत अधिक धन था। फ्रांस के पास बहुत बड़ी तथा सुशिक्षित सेना थी; ब्रिटिश जल सेना समुद्र की निर्विवाद स्वामिनी थी, तथा युद्ध के प्रारम्भिक दिनों में ही इसने जर्मनी को सम्पूर्ण विश्व से अलग कर दिया था। युद्ध के उद्देश्य में भी भिन्नता थी। मित्र राष्ट्रों का विचार था कि वे आजादी के लिए लड़ रहे थे, जबकि जर्मनी ने स्वदेश में स्वतन्त्रता के प्रयत्नों को कुचल दिया था और आस्ट्रो-हंगेरियन लोगों और तुर्कों को पता ही न था कि स्वतन्त्रता क्या होता है। मित्र राष्ट्रों को यह भी डर था कि जर्मनी की विजय से पश्चिम में लोकतन्त्र का अन्त हो जाएगा।

केन्द्रीय शक्तियों को अपनी भौगोलिक स्थिति के कारण भी सुविधा थी, और वे जर्मनी की शानदार रेलवे प्रणाली का उपयोग भी कर सकते थे जिससे एक मोर्चे से दूसरे मोर्चे पर शीघ्रता से सैनिक तथा माल भेजे जा सकते थे। लगभग शुरू से ही, युद्ध का संचालन जर्मन हाई कमान के हाथ में था जबकि मित्र राष्ट्रों की संयुक्त कमान युद्ध के अन्तिम दिनों में ही बन सकी। जर्मन लोगों का यह विश्वास था कि वे अपने अस्तित्व के लिए, उस 'लोहे के घेरे' से छुटकारा पाने के लिए लड़ रहे हैं, जो उनके चारों तरफ डाल दिया गया है।

बेल्जियम की विजय—शूरवीर राजा अलबर्ट के नेतृत्व में बेल्जियनों के वीरतापूर्ण मुकाबले के बावजूद जर्मन लोग बेल्जियम को चीरकर चले गए। तब उन्होंने फ्रांस और इंग्लैंड पर इस जोर से आक्रमण किया कि एक बार तो उन्हें पेरिस से १५ मील पहले तक खदेड़ दिया। तब फ्रांसीसी जनरल जाफरी एक नई सेना लाया और उसने मार्ने की लड़ाई में जर्मनी को पीछे धकेल दिया। यह लड़ाई युद्ध की अनेक निर्णायक लड़ाइयों में से एक थी जिससे पैरिस की रक्षा हुई तथा इसने जर्मनी को शीघ्र विजय न पाने दी। मार्ने की सफलता का आंशिक श्रेय बेल्जियमवासियों को था, जिन्होंने जर्मनों को वीरतापूर्वक काफी देर तक रोके रखा जिससे फ्रांसीसी तैयारी कर सकें। जर्मनी ने बेल्जियम को लगभग भूखों मरने तक की स्थिति में पहुँचाकर दण्डित किया। हरबर्ट हूवर ने अमरीका से बड़ी मात्रा में आए अनाज के वितरण का निरीक्षण किया।

रूस की हार—रूसियों ने भी सेनाओं को हटाने में सहयोग दिया। उन्होंने प्रशिया और आस्ट्रिया-हंगरी के कुछ हिस्सों पर अधिकार कर लिया था और जर्मनों ने अपनी कुछ पश्चिमी सेना को उन्हें रोकने भेजा था। जर्मनी की सेनाओं ने जनरल पाल वौन हिण्डनबर्ग के नेतृत्व में पूर्वी प्रशिया में टैननबर्ग में एक निर्णायक विजय प्राप्त की और फिर रूसियों को, परे, उनके देश में ढकेल दिया। रूसियों को आस्ट्रिया-हंगरी से भी पीछे हटने को मजबूर होना पड़ा और इस प्रकार जो क्षेत्र उन्होंने लिया था, वह सारा उन्होंने खो दिया। तो भी, जर्मनों को यह सब करने के लिए पश्चिम में अपना दवाव कम करना पड़ा।

जापान तथा चीन—जिस समय अमरीका तथा यूरोपियन शक्तियाँ यूरोप में व्यस्त थीं, उस समय का लाभ उठाकर जापान ने चीन पर दवाव डालकर परिमोक (रियायती क्षेत्र) पाने की कोशिश की। जापान चीन से जो कुछ मांगता था वह उसे मिल जाता तो चीन पर उसकी शक्ति बहुत बढ़ जाती। १९१७ में, जापान के दवाव के कारण चीन ने मित्र राष्ट्रों की ओर से युद्ध में प्रवेश किया।

इटली तथा मित्रराष्ट्र—युद्ध के प्रारम्भ में इटली ने अपनी तटस्थता घोषित की थी क्योंकि उसके त्रिदेशीय संधि वाले मित्र एक आक्रामक युद्ध कर रहे थे, और उस संधि की शर्तों में यह कहा गया था कि केवल रक्षात्मक युद्ध में ही उसे सहायता देनी थी। मित्र राष्ट्रों के क्षेत्र देने का वचन देने पर, मई, १९१५ में इटली ने, ट्रेन्टिनो तथा ट्रीएस्ट प्राप्त करने की आशा से, मित्र राष्ट्रों की ओर लड़ने का निश्चय किया।

जर्मनी का हमला—फरवरी १९१६ में जर्मनों ने पश्चिमी मोर्चे पर वरदून पर आक्रमण किया जो मित्र राष्ट्रों की छह सौ मील लम्बी किलेवन्दी का सवसे अच्छा किलेवन्द स्थान था। वरदून की लड़ाई छह महीने तक जारी रही जिसमें पहले एक पक्ष को और वाद में दूसरे पक्ष को कुछ लाभ हुआ। जन-हानि दिल दहलाने वाली थी। पाँच लाख से ऊपर मनुष्यों ने इस युद्ध में अपने प्राण खोए। जनरल हेनरी पैंता की प्रतिज्ञा, 'उन्हें कभी नहीं गुजरने देंगे' फ्राँस के लिए एक राष्ट्रीय नारा बन गई। अन्त में जर्मनी को पीछे हटना पड़ा। उसी समय जनरल डगलस हेग के नेतृत्व में ब्रिटेन ने सोन नदी के किनारे जर्मनी के विरुद्ध लड़ाई छेड़ी। इसका परिणाम भी अनिश्चित ही रहा।

इस समय तक अधिकतर वाल्कन राज्य इस युद्ध में उलझ चुके थे। सर्बिया का एक पुराना शत्रु बलगारिया भी १९१५ में केन्द्रीय शक्तियों में शामिल हो गया। १९१६ में रूमानिया मित्रराष्ट्रों में प्रविष्ट हुआ और अगले ही साल ग्रीस मित्रराष्ट्रों की ओर से युद्ध में आ गया।

युद्ध के नए साधन—इस बीच, युद्ध का एक नया तरीका दृष्टिगोचर हुआ। समानान्तर खाइयां खोदी जाती थीं, जिनमें से सेनाएँ आपस में लड़ती थीं। बड़ी-बड़ी तोपें, जो पन्द्रह से बीस मील तक गोला फेंकती थीं, प्रयोग की गई। एक बार तो जर्मन तोपों द्वारा पेरिस में ७० मील दूर से गोलाबारी की गई। युद्ध में इंग्लैंड ने सर्वप्रथम 'टैंक' का उपयोग किया, जबकि जर्मनी ने जहरीली गैस तथा शहरों पर बम-बारी करने के लिए हवाई जहाजों का प्रयोग शुरू किया।

१. कैसे और कब प्रथम महायुद्ध प्रारम्भ हुआ ?
२. बताइये कि निम्नलिखित में से प्रत्येक देश कैसे युद्ध में शामिल हुआ ?
   जर्मनी, रूस, वेल्जियम, ब्रिटेन, फ्रांस, मौन्टि-निग्रो और तुर्की।
३. युद्ध के प्रारम्भिक दिनों में मित्र राष्ट्रों तथा केन्द्रीय शक्तियों में से प्रत्येक को क्या-क्या सुविधाएँ थीं ?
४. रूस के लिए युद्ध का क्या परिणाम हुआ ?
५. इटली किस कारण युद्ध में कूदा ?
६. और कौन-कौन से दूसरे यूरोपियन राष्ट्र युद्ध में आए ?
७. लड़ाई के कौन से नये तरीके प्रारम्भ हुए ?
८. किन्हीं दो विशिष्ट सेनापतियों के नाम बताइए।

अमरीकी सैनिकों ने एरेगोन जंगल को विस्फोटों द्वारा साफ करके रास्ता बनाया और इस प्रकार युद्ध समाप्त करने में सहायता की।

एक्मी

अमरीका भी युद्ध में पड़ गया

इस प्राणनाशक युद्ध में ब्रिटिश तथा जर्मन दोनों ने अमरीकनों की तटस्थता का उल्लंघन किया। ब्रिटिश उल्लंघन से तो सम्पत्ति का नुकसान हुआ, पर जर्मनी के उल्लंघन से अमरीकी जीवनों का नाश होने लगा। ब्रिटेन ने अमरीकन जहाजों में जर्मनी या जर्मनी की सीमाओं के देशों को जाती हुई सामग्री को जब्त कर लिया। सीमा के देशों से वह सामग्री फिर जर्मनी भेजी जाती। अमरीकी अधिकारों को कुचलने पर इंग्लैंड के विरुद्ध बहुत से विरोधी प्रदर्शन हुए। पर शीघ्र ही, जर्मनी के हाथों अमरीकी जीवनों का जो नाश हुआ, उससे अमरीकन लोग ब्रिटेन द्वारा किये गये अमरीकनों की सम्पत्ति के नाश को भूल गए।

अमरीकी हस्तक्षेप का कारण—राष्ट्रपति विलसन ने यूरोप में युद्ध प्रारम्भ होने पर तटस्थता की घोषणा की और अमरीकनों से वैचारिक रूप से भी तटस्थ रहने का अनुरोध किया। लेकिन जर्मनी के विनाशक पनडुब्बी जहाजों ने इसे असम्भव या बहुत कठिन बना दिया। जब जर्मनी ने पनडुब्बियों से युद्ध करना प्रारम्भ किया, तब उसने अमरीका को चेतावनी दी कि वे लोग बिना किसी चेतावनी के ही उन तटस्थ या शत्रु जहाजों को डुबा देंगे जो ब्रिटेन या फ्रांस के लिए सामान ले जाते हुए पकड़े जाएँगे। अमरीका ने कहा कि इसमें अन्तर्राष्ट्रीय विधि का अतिक्रमण होता है, जिसके अनुसार जहाज पर सवार लोगों को सुरक्षित स्थान पर पहुँचा कर ही जहाज नष्ट किया जाना चाहिए। जब ब्रिटिश यात्री जहाज लूसिटैनिया के डूबने से अमरीकन लोग जो उसमें यात्रा कर रहे थे, मारे गये, तब जर्मन लोगों के विरुद्ध तीव्र भावना फैल गई। और भी जहाज डुबाए गये।

मित्र राष्ट्रों के प्रति अमरीका का अनुकूल रुख होने के और भी अनेक कारण थे। इन कारणों में से एक कारण जर्मनी द्वारा बेल्जियनों के प्रति पशुता-पूर्ण व्यवहार की खबरें थीं। और फिर, अमरीकनों ने जर्मनी के स्वेच्छाचारी शासन के मुकाबले फ्रांस तथा इंग्लैंड की लोकतन्त्रीय सरकारों का समर्थन करना अच्छा समझा। मित्र राष्ट्रों की विजय में बहुत से अमरीकनों के वित्तीय हित भी थे, क्योंकि उन्होंने ब्रिटेन तथा फ्रांस को ऋण दे रखे थे। मित्र राष्ट्रों ने अपने पक्ष में इस देश की जनता का समर्थन प्राप्त करने के लिए प्रचार की सहायता ली। दूसरी ओर, जर्मन तरीकों का उद्देश्य अमरी-

कियों को डराना था। जर्मनी तथा आस्ट्रिया दोनों ने ही अमरीका में अपने आदमी भेजे जिन्होंने देश की फैक्ट्रियों तथा बन्दरगाहों में तोड़फोड़ के काम किये। यह भी पता चला कि जर्मनी मैक्सिको को वह प्रदेश देने का प्रस्ताव कर रहा था, जो मैक्सिकन युद्ध में अमरीका ने मैक्सिको से लिया था बशर्ते कि मैक्सिको अमरीका पर युद्ध-घोषणा कर दे।

अधिकतर अमरीकन तटस्थ रहना चाहते थे और बहुत सों ने १९१४ में युद्ध शुरू होने पर जर्मनी का पक्ष लिया था। लेकिन तीन साल बाद लोगों के विचार इस कदर परिवर्तित हो चुके थे कि राष्ट्रपति विलसन ने कांग्रेस से युद्ध-घोषणा के लिए कहा। ६ अप्रैल, १९१७ को काँग्रेस ने युद्ध की घोषणा का समर्थन किया और जनरल जान पर्शिंग को अमरीकन अभियान सेनाओं का मुख्य सेनापति बनाकर फ्रांस भेजा गया।

विलसन के चौदह सूत्र—८ जनवरी, १९१८ को राष्ट्रपति विलसन ने अपने भाषण में काँग्रेस के समक्ष उन प्रसिद्ध चौदह सूत्रों का खाका खींचा जिनके बारे में वे कहते थे कि इन्हें केन्द्र बनाकर शान्ति कायम की जा सकता है। उन्होंने कहा था कि, "विश्व-शांति का कार्यक्रम हमारा कार्यक्रम है, और वह एकमात्र सम्भव कार्यक्रम हमारे विचार में इस प्रकार है:

(१) राष्ट्रों में खुले तौर से की गईं खुली संधियाँ, (२) समुद्रों की स्वतन्त्रता, (३) आर्थिक बाधाओं को हटाना, (४) युद्ध सामग्री में कमी करना, (५) औपनिवेशिक दावों को उपनिवेशवासियों के हितों की दृष्टि से हल करना, (६) रूसी भूमि से विदेशी सनिकों को हटाना, (७) एक स्वतन्त्र पोलैंड की स्थापना, (८) बेल्जियम की पूर्वावस्था, (९) फ्रांस को आलसेस-लोरेन की वापसी, (१०) तुर्की के अधीन जातियों को स्वतन्त्रता, (११) आस्ट्रो-हंगेरियन साम्राज्य के अधीन जातियों को स्वतन्त्रता, (१२) रूमानिया, मौन्टिनिग्रो तथा सर्बिया से सैनिकों को हटाना, (१३) इटली की सीमा का जातियों के अनुरूप करने के लिए परिवर्तन, और (१४) शान्ति कायम रखने के लिए राष्ट्रों के एक संघ की स्थापना।

जर्मनी की सफलताएँ—यद्यपि राष्ट्रपति के चौदह सूत्रों में वे शर्तें बताई गई थीं जो मित्र राष्ट्र स्वीकार कर लेते, पर १९१८ के शुरू में यह प्रतीत होता था कि असली शर्तें जर्मनी की होंगी जो औरों को माननी पड़ेंगी। उसने रूस को हरा दिया था और मार्च, १९१८ में रूस को पोलैंड, लिथुआनिया, एस्टोनिया, फिनलैंड तथा यूक्रेन छोड़ने पड़े। यह एक कठोर संधि थी, जिससे मित्र राष्ट्रों तथा बहुत से जर्मनों को जर्मनी की सफलता का आभास होने लगा था, क्योंकि इससे जर्मनी की सेनाएँ पश्चिमी मोर्चे पर केन्द्रित की जा सकती थीं। लेकिन मित्र राष्ट्रों ने नए आक्रमण के मुकाबले के लिए अपने प्रयत्नों को बढ़ा दिया। १९१६ में लायड जार्ज इंग्लैंड का प्रधानमन्त्री बना तथा नवम्बर १९१७ में जार्ज क्लीमैन्शो को फ्रांसीसियों ने अपना प्रधानमंत्री चुना।

११ नवम्बर, १९१८ को प्रातः ५ बजे जनरल फोश के रेलगाड़ी के डिब्बे में अस्थायी संधि पर हस्ताक्षर हुए।

इन दोनों नेताओं ने अपनी-अपनी जनता को अधिक प्रयत्न करने के लिए उत्साहित किया तथा इसके निमित्त उन्हें जोश प्रदान किया। जनरल पर्शिंग ने राष्ट्रपति विलसन को सन्देश भेजा कि अमरीकी सैनिकों की एकदम आवश्यकता है। इसके परिणामस्वरूप, अमरीका ने लड़ाई में शामिल होने के लिए जल्दी-जल्दी सैनिक भेजे। कुछ अमरीकन सैनिकों के फ्रांस पहुँचने से मित्रराष्ट्रों में एक नई चेतना तथा आशा का संचार हुआ।

अन्तिम विजय—मार्च १९१८ में, जर्मनी ने एक नया आक्रमण किया, जिससे उन्होंने आशा की थी कि मित्र राष्ट्रों को अमरीकी सैनिकों के बहुत अधिक संख्या में पहुँचने से पहले ही अन्तिम झटका दे देंगे। और मित्र राष्ट्रों ने अपने संकट को समझते हुए एक व्यक्ति को सब सेनाओं का प्रधान सेनापति बनाने का निश्चय किया। इस पद के लिए उन्होंने फरडिनैण्ड फोश को चुना जो मित्र राष्ट्रों की सेनाओं का मुख्य सेनापति बना। जर्मनी द्वारा किए गए आक्रमण के उत्तर में ऐसा प्रत्याक्रमण किया गया जिससे जर्मन १९१७ में स्थापित की गई लाइन से भी परे फेंक दिए गए। इस आक्रमण में अमरीकनों ने विशिष्ट भाग लिया। जनरल परशिंग ने सैनमैयाल पर आकस्मिक आक्रमण किया, जो एक महान् सफलता थी।

इस प्रकार मित्र राष्ट्रों की विजयों से जर्मनी के मित्रों का यह विश्वास हिल गया कि जर्मनी युद्ध जीत सकेगा। और एक-एक करके वे सब शान्ति की शर्तें पूछने लगे। बलगारिया, तुर्की और आस्ट्रिया-हंगरी ने आत्मसमर्पण कर दिया।

अक्तूबर, १९१८ में जर्मनी की सेना पंक्ति बहुत जगहों से तोड़ दी गई। उस समय जर्मनों का हौसला पस्त हो गया, जब लड़ाई जर्मनी की अपनी सीमाओं तक पहुँच गई, और राष्ट्रपति विल्सन के चौदह सूत्रों के औचित्य ने सैनिकों तथा देशवासियों के मन में यह विश्वास बैठा दिया कि युद्ध को जारी रखना मूर्खता है। जर्मनी में एक बलवा हो गया और कैसर विलियम द्वितीय को हालैण्ड भाग जाने की सलाह दी गई। वह यूरोप के शक्तिशाली होहैनज़ोलैर्न परिवार में से अन्तिम राजा था। ११ नवम्बर को अस्थायी संधि पर हस्ताक्षर किए गए, जिससे जर्मनी दुबारा युद्ध छेड़ने के लिए आवश्यक शक्ति से पूर्णतया हीन हो गया। इस प्रकार मानव इतिहास में सबसे बड़ा तथा खर्चीला युद्ध जर्मनी तथा उसके मित्रों की हार के साथ समाप्त हो गया। लेकिन इस युद्ध ने घृणा, क्रान्ति तथा बेचैनी का एक ऐसा तूफान पैदा कर दिया जिससे संसार अब तक व्याकुल है।

१. वे कारण बताइये जिनसे अमरीका ने प्रथम महायुद्ध में प्रवेश किया।
२. अमरीकन फौजों का नेतृत्व किसने किया?
३. राष्ट्रपति विल्सन ने किस लिए अपने चौदह सूत्र जारी किये थे। और वे क्या थे?
४. १९१८ में रूस की हार होने पर रूस को कौन से प्रदेश जर्मनी को देने पड़े।
५. लॉयड जार्ज, क्लीमैन्शो तथा फरडीनैण्ड फोश कौन थे?
६. जर्मनी के मित्रों ने क्यों शांति की प्रार्थना की?
७. जर्मनी ने शांति के लिए क्यों प्रार्थना की?

ब्रिटेन के लायड जार्ज, इटली के आरलैंडो, फ्रांस के क्लीमैंशो और अमरीका के प्रेसिडेंट विल्सन को, वर्तमान पीढ़ी के भविष्य के बारे में बहुत कुछ कहना था—चाहे वे यह बात पूरी तरह महसूस कर सके हों या नहीं।

ब्राउन ब्रदर्स

वियेना कांग्रेस की तरह वर्साई की संधि ने भी यूरोप का नया नक्शा बनाया, यद्यपि यह अधिक लिबरल आधार पर बनाया गया। कौन से नये देशों की स्थापना हुई? बाद में उनमें से बहुतों को क्या हुआ? यूरोप, प्रथम विश्वयुद्ध से पहले और पीछे। प्रथम विश्वयुद्ध के बाद हुए सीमा-परिवर्तन।

पैरिस की शांति

पराजित केन्द्रीय शक्तियों के साथ पैरिस में या पैरिस के समीप संधियाँ की गईं। इन सन्धियों में से एक सन्धि, जो विश्व के बहुत अधिक लोगों से सम्बन्धित थी, जर्मनी के साथ की गई संधि थी, जिसे वर्साई की सन्धि कहते हैं।

"चार बड़े"—जिन बत्तीस राष्ट्रों ने जर्मनी के साथ युद्ध किया था, उन्होंने वर्साई में अपने-अपने प्रतिनिधि भेजे। विशेषज्ञों की टोलियाँ गुप्त रूप से कार्य करती थीं और तब अपने निर्णय स्वीकृति के लिए "चार बड़ों" के पास भेजती थीं। वे चार बड़े थे, अमरीका के राष्ट्रपति वुडरो विल्सन, ग्रेट ब्रिटेन के लॉयड जार्ज, फ्रांस के जार्ज क्लीमैन्शो तथा इटली के विटोरियो ओरलैन्डो। इन्हीं लोगों ने वर्साई की संधि का अन्तिम मसविदा तय किया था।

संधि की शर्तें—६ मई, १९१९ को संधि अन्तिम रूप से सभी मित्र राष्ट्रों के प्रतिनिधियों के द्वारा स्वीकृत कर ली गई थी। अगले दिन जर्मनी के प्रतिनिधियों को संधि दिखाई गई। उन्होंने इसकी कठोरता का विरोध किया, परन्तु अन्त में हस्ताक्षर कर दिए। इस बात पर किसी को भी सन्देह न था कि संधि वास्तव में बहुत कठोर थी। कुछ राष्ट्र इसको बहुत ही अधिक कठोर समझते थे लेकिन दूसरे मित्र राष्ट्रों का यह विचार था कि जर्मनों तथा उनके नेताओं को यह पाठ पढ़ाने के लिए कि युद्ध से कुछ लाभ नहीं होता, ऐसी संधि बहुत आवश्यक थी।

संधि की शर्तों के अनुसार, जर्मनी के सब उपनिवेश छिन गये। आल्सेस-लौरेन फ्रांस को वापस कर दिया गया। जर्मनी की सेना को घटा कर १,००,००० कर दिया गया और उसकी जल सेना को इतना कम कर दिया गया कि वह दूसरे देशों पर आक्रमण करने के योग्य न रह सके। राइन नदी के किनारे का प्रदेश सैन्यरहित किया जाना था, अर्थात् उससे सारी किलेबन्दियों और हथियार हटाये जाने थे। संधि में जर्मनी पर युद्ध शुरू करने का दोष लगाया गया और उसे उस हानि की पूर्ति के लिए पैसा देना था जो उसने की थी। ठीक-ठीक धन का निश्चय बाद में किया जाना था। जब तक क्षतिपूर्ति का पूरा पैसा न दे दिया जाता, तब तक मित्र राष्ट्रों की सेनाओं ने राइन का बायां किनारा घेरे रखना था। मित्रराष्ट्रों ने यह आशा की थी कि यह संधि जर्मनी को आगामी कई पीढ़ियों तक अपने पड़ोसियों से युद्ध करने के लिए असमर्थ कर देगी।

आस्ट्रिया-हंगरी—युद्ध की समाप्ति पर हुई एक संधि के द्वारा आस्ट्रिया-हंगरी को अलग-अलग और छोटा कर दिया गया। आस्ट्रिया को वियना के चारों तरफ एक छोटे से राज्य में बदल दिया गया जिसके पास समुद्र तक पहुँचने का कोई मार्ग न था। हंगरी को एक अलग देश बना दिया गया जबकि साम्राज्य के दूसरे भागों को स्वतन्त्र कर दिया गया। मैटरनिख के शासन में जो साम्राज्य एक शताब्दी पहले सारे यूरोप पर हावी था, अब वह एक छोटा सा देश रह गया था जो अपने सीमित साधनों के द्वारा अपने को मुश्किल से ही जीवित रख सकता था।

मित्र राष्ट्रों द्वारा राष्ट्रसंघ (लीग आफ नेशन्स) की स्थापना

वर्साई की संधि में ही "लीग आफ नेशन्स" या राष्ट्रसंघ का समझौता या विधान शामिल था। इस युद्ध में बहुत से विचारवान नेता, जो इस युद्ध में नष्ट हुए जीवन तथा धन की प्रचुर मात्रा से घबड़ा गए थे, इस प्रकार की दूसरी विनाशक घटना न होने देने के लिए योजनाएं बनाने लगे। इन विचारों को प्रचारित करने के लिए फ्रांस, ब्रिटेन तथा अमरीका में अनेक संगठन बन गये। सरकारों ने, जो इन गुटों के दबाव को महसूस कर रही थीं, इस विचार का अध्ययन करना प्रारम्भ किया। राष्ट्रपति विल्सन राष्ट्रों की एक ऐसी परिषद् की आवश्यकता को तीव्रता से अनुभव कर रहे थे जिसमें अन्तर्राष्ट्रीय कठिनाइयाँ हल हो सकें। राष्ट्रपति विल्सन का यह विचार दूरदर्शितापूर्ण सिद्ध हुआ।

अमरीका सदस्य नहीं—राष्ट्रपति विल्सन ने अनुच्छेद दस को राष्ट्रसंघ के विधान का मुख्य भाग बताया। इस अनुच्छेद में सदस्यों पर यह दायित्व डाला गया था कि वे दूसरे सदस्यों की क्षेत्रीय अखंडता और वर्तमान राजनीतिक स्वतन्त्रता का आदर करें और उसे विदेशी आक्रमणों से बचाएं। बहुत से अमरीकनों का यह विश्वास था कि इससे अमरीका यूरोपियन युद्धों में सम्मिलित हो जाएगा। इसलिए उन्होंने राष्ट्रसंघ में अमरीकन सदस्यता का विरोध किया। दलीय राजनीति भी इस प्रश्न में आ घुसी क्योंकि यह चुनाव का समय था। राष्ट्रपति ने वर्साई सम्मेलन में अपने साथ जाने के लिए किसी भी सैनेटर को नियुक्त न करके सैनेट को नाराज कर दिया। इन सब घटनाओं के परिणामस्वरूप, अमरीका की सैनेट ने इस सन्धि का समर्थन करने से इन्कार कर दिया और अमरीका राष्ट्रसंघ का सदस्य न बना। १९२१ में अमरीका ने जर्मनी के साथ एक पृथक् शान्ति-सन्धि की जिसमें राष्ट्रसंघ का कोई उल्लेख न था।

राष्ट्रसंघ (लीग आफ नेशन्स)—अमरीका के सम्मिलित न होने पर भी राष्ट्रसंघ (लीग आफ नेशन्स) बन गया। विधान में इसके गठन तथा कार्य के लिए भी व्यवस्था थी। १९२० में इसके उन्तीस सदस्य थे, परन्तु दूसरे राष्ट्र इसमें पीछे सम्मिलित हो गये। एक समय बासठ राष्ट्र राष्ट्रसंघ के सदस्य थे। लीग के विधान के अनुसार, सदस्यों ने अपने झगड़ों का फैसला पंचनिर्णय द्वारा कराना या परिषद् की जांच के लिए प्रस्तुत करना स्वीकार किया। उन्होंने यह भी माना कि निर्णय के बाद तीन महीने तक वे युद्ध नहीं छेड़ेंगे। यदि
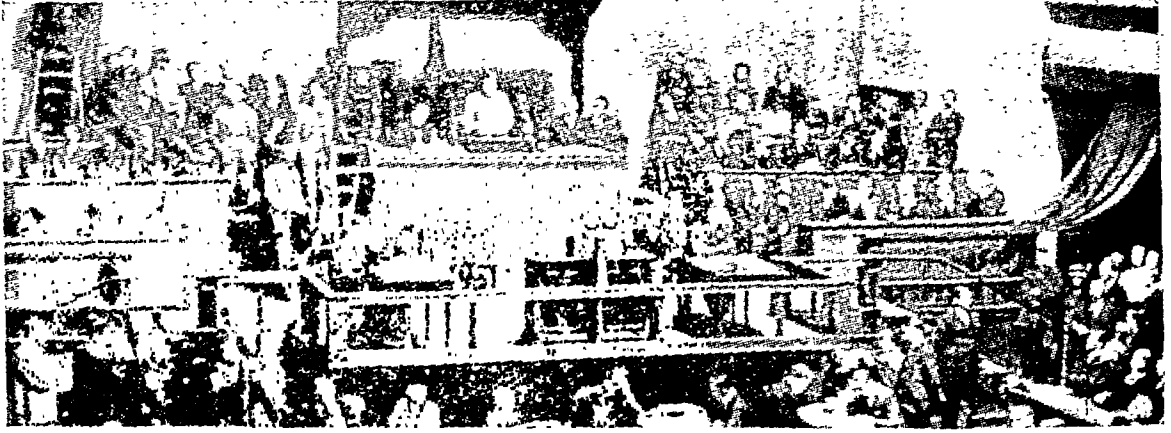
अंडरवुड एंड अंडरवुड

यह कहा गया है कि वुडरो विल्सन सद्भावना वाले लोगों का प्रवक्ता था। पर जो देश शताब्दियों से एक-दूसरे के शत्रु थे, उनको प्रथम विश्वयुद्ध के बाद एक सम्मेलन में एक-दूसरे पर विश्वास करने में कठिनाई हुई।

राज्य अपनी प्रतिज्ञा भंग करते और युद्ध छेड़ते तो वे मुअत्तिल, अर्थात् कुछ समय के लिए संघ से अलग, किए जा सकते थे। इस प्रकार व्यवहार करने वाले राष्ट्र के साथ व्यापार रोक दिया जाना था और परिषद् यह सिफारिश भी कर सकती थी कि दूसरे सदस्य इसके विरुद्ध फौजी कदम उठाएं। संघ उन बहुत से झगड़ों का निपटारा करने में सफल हुआ जिनसे युद्ध की आशंका थी परन्तु यह बड़े राष्ट्रों के बीच उत्पन्न होने वाले झगड़ों का निपटारा करने में असफल रहा।

शासनादेश (मैंडेट)—वर्साई के सम्मेलन में सबसे जटिल समस्याओं में से एक यह थी की जर्मनी के नगरों तथा तुर्की से लिये गए प्रदेशों का क्या किया जाए। अन्ततः एक शासनादेश (मैंडेट) पद्धति चालू की गई। इस योजना के अन्तर्गत एक राष्ट्र को एक नगर या प्रदेश के शासन का उत्तरदायित्व सौंपा गया। अन्ततः इन प्रदेशों में स्वशासन होना था। जो राष्ट्र इस प्रकार के भू-प्रदेशों पर शासन कर रहे थे, वे लीग आफ नेशन्स के प्रति उत्तरदायी थे तथा उन्हें अपने आधीन प्रदेश की उन्नति की सूचना देनी थी। इस योजना के अनुसार जर्मनी के अफ्रीकी उपनिवेश फ्रांस, ब्रिटेन, बेल्जियम तथा दक्षिण अफ्रीका के संघ को शासन करने के लिए बांट दिए गए। जर्मनी के प्रशान्त महासागर-स्थित उपनिवेशों में से जो भूमध्य रेखा के उत्तर में थे, वे जापान को दिए गए, तथा जो भूमध्य रेखा के दक्षिण में थे वे दो राष्ट्रों, आस्ट्रेलिया तथा न्यूजीलैंड, को दिए गए। तुर्की का पहला साम्राज्य तोड़ दिया गया। फिलस्तीन, ट्रान्सजोर्डन तथा ईराक ब्रिटेन को दिए गए तथा सीरिया फ्रांस को। कुछ समय बाद ब्रिटेन द्वारा शासित ईराक तथा ट्रान्सजोर्डन स्वतन्त्र कर दिए गए।

विश्व न्यायालय—संघ के विधान के चौदहवें अनुच्छेद में अन्तर्राष्ट्रीय न्याय के लिए एक स्थायी न्यायालय की स्थापना की व्यवस्था थी। १९२२ में इस प्रकार का न्यायालय, जिसे बोलचाल में विश्व न्यायालय कहते थे, हेग में स्थापित किया गया। इसमें कौंसिल तथा संघ की असेम्बली से निर्वाचित पन्द्रह न्यायाधीश होते थे जो नौ वर्ष के लिए चुने जाते थे। ये न्यायाधीश किसी भी राष्ट्र से चुने जा सकते थे, चाहे वह राष्ट्र इस न्यायालय का सदस्य हो अथवा नहीं। चार अमरीकन भिन्न-भिन्न समय पर इसके न्यायाधीश के पद पर आसीन हुए। पचपन राष्ट्र इसके सदस्य थे, परन्तु अमरीका ने इसमें शामिल होने से इन्कार कर दिया। अमरीका में दूसरे राष्ट्रों से पृथक्ता की भावना का बहुत जोर

एक्मी

ब्रिटिश लार्ड सभा के भवन में पाँच देशों—ब्रिटेन, अमरीका, जापान, फ्रांस और इटली के नौसैनिक निरस्त्रीकरण सम्मेलन का उद्घाटन ब्रिटेन के राजा जार्ज पंचम ने किया।

था। अपने जीवन के प्रथम दस वर्षों में, न्यायालय ने सोलह मामलों का निपटारा किया तथा अन्य बहुत से मत दिये।

राष्ट्रसंघ से सम्बन्धित संस्थाएं—संघ तथा विश्व न्यायालय की इस नियमित व्यवस्था के अतिरिक्त, कुछ ऐसी संस्थाएं बनीं जो सब राष्ट्रों के असहाय और पीड़ित लोगों को सहायता देती थीं। प्रथम तो, अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर संगठन था, जिसका प्रधान कार्यालय जिनीवा में था। यह संगठन सम्पूर्ण विश्व के मजदूरों की अवस्थाओं के बारे में सूचनाएं इकट्ठी करता था तथा वे इधर-उधर भेजता था। इसके कार्य के परिणामस्वरूप कुछ सिफारिशें निकलीं :

(१) मजदूरों के संघ बनाने का अधिकार, (२) दिन में आठ घंटे काम, (३) मज़दूरों को निर्वाह-मंजूरी, (४) बच्चों के मजदूरी करने पर रोक, (५) सप्ताह में एक आराम का दिन, तथा कुछ अन्य। इनमें से अधिकतर सिफारिशों को संसार के बहुत से भागों में लागू नहीं किया गया।

एक अन्तर्राष्ट्रीय स्वास्थ्य आयोग ने बन्दरगाहों का निरीक्षण किया तथा बीमारियों को फैलने से रोकने के लिए कारंटीन (रुकावट) केन्द्र बनवाए। एक समिति ने विश्व के कुछ भागों में दास-प्रथा (दासत्व) की खबरों की जांच की। एक और समिति ने अफीम तथा अन्य हानिकारक औषधियों की अवैध बिक्री रोकने के लिए प्रयत्न किए। एक अन्य समिति ने यूरोप के कुछ देशों में पीड़ित होकर भागे हुए शरणार्थियों की देखभाल की। इन सब मामलों में लीग ने विश्व की कुचली हुई जातियों की सहायता के लिए काम किया।

१. वर्साई सम्मेलन में "चार बड़े राष्ट्र" कौन थे?
२. वर्साई की संधि की मुख्य शर्तें क्या थीं?
३. शासनादेश (मैण्डेट) क्या होता है?
४. तुर्की तथा आस्ट्रिया-हंगरी के साथ हुई सन्धियों ने इन राष्ट्रों का क्या किया?
५. राष्ट्रसंघ (लीग आफ नेशन्स) का विधान किस प्रलेख का हिस्सा है?
६. वर्साई की सन्धि पर अमरीका ने हस्ताक्षर क्यों नहीं किए?
७. राष्ट्रसंघ (लीग आफ नेशन्स) के उद्देश्यों की, पूर्ववर्ती शताब्दियों में चली साम्राज्य की होड़ से तुलना कीजिए।
८. विधान ने युद्ध को रोकने के लिए क्या उपबंध किये थे?
९. अमरीका राष्ट्रसंघ का सदस्य क्यों नहीं बना?
१०. विश्व न्यायालय क्या था तथा अमरीका

का इससे सम्बन्ध क्यों नहीं था ?

११. मानव जाति के कल्याण की देखभाल के लिए कौनसी संस्थाओं की स्थापना हुई ?

१२. अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर संगठन की क्या सिफारिशें थीं ?

युद्ध रोकने के अन्य प्रयत्न

लोकार्नो पैक्ट—१९२५ में कुछ समझौते, जो कि लोकार्नो पैक्टों के नाम से जाने जाते हैं, यूरोप के राजनीतिज्ञों ने किये, ताकि यूरोप में स्थायी शान्ति रह सके। जिन राष्ट्रों ने इन संधियों पर हस्ताक्षर किए वे जर्मनी, फ्रांस तथा बैल्जियम के बीच उस समय मौजूद सीमाओं को कायम रखने पर सहमत हो गए। जर्मनी को राष्ट्रसंघ का सदस्य बनाना और उसे परिषद् में स्थान देना भी तय हुआ।

निरस्त्रीकरण सम्मेलन—चूंकि ऐसा प्रतीत हो रहा था कि नौसैनिक शस्त्रास्त्रों की होड़ फिर शुरू होने वाली है, इसलिए अमरीका के विदेश मन्त्री चार्ल्स इवान्स ह्यूज़ ने १९२१ में वाशिंगटन में एक नौसैनिक निरस्त्रीकरण सम्मेलन बुलाया। संघ का इस सम्मेलन में कोई भाग न था, जहाँ नौ राष्ट्रों के प्रतिनिधि आए थे। सम्मेलन में इस बात पर सहमति प्रगट की गई कि जहरीली गैसों तथा व्यापारिक जहाजों के विरुद्ध पनडुब्बियों के प्रयोग को गैरकानूनी करार दिया जाए। उन्होंने चीन की क्षेत्रीय अखंडता तथा चीन की खुले द्वार नीति का सम्मान करने पर भी सहमति प्रकट की।

जिन राष्ट्रों के प्रतिनिधि वहाँ थे उनमें से पाँच ने पंच-शक्ति संधि की जिसमें सब की बड़े-बड़े युद्ध के जहाजों की टनेज (मात्रा) सीमित की गई। अमरीका, ब्रिटेन, जापान, फ्रांस और इटली को अपनी जलसेनाओं में ५ : ५ : ३ : १·६७ : १·७५ का अनुपात रखना था। यह अनुपात दस वर्षों के लिए था जिसके बीच और कोई बड़ा जहाज नहीं बनाना था। इस अधिवेशन में चार-शक्ति संधि पर भी ब्रिटेन, फ्रांस, जापान तथा अमरीका ने हस्ताक्षर किए जिसके अनुसार उन्होंने प्रशान्त महासागर में प्रत्येक के प्रदेश का सम्मान करने पर सहमति प्रकट की।

इससे पहले कि दसवर्षीय अवधि प्रारम्भ होती, वे पांच देश जिन्होंने जल सैनिक जहाजों की मात्रा सीमित करने वाली संधि पर हस्ताक्षर किए थे, १९३० में लन्दन में इसे नया करने के लिए इकट्ठे हुए। पर फ्रांस तथा इटली इससे सहमत न हुए। अतः जापान, ब्रिटेन तथा अमरीका ने कुछ मामूली परिवर्तन करके इसके अनुपात को अगले पांच वर्ष के लिए बदल दिया। परन्तु अभी पंचवर्षीय अवधि प्रारंभ भी नहीं हुई थी कि जापान ने १९३६ में इसकी अवधि समाप्त होने पर, संधि को समाप्त करने की इच्छा व्यक्त की। इस प्रकार नौसैनिक शस्त्रास्त्रों को सीमित करने के प्रयत्न विफल हो गए।

पैरिस पैक्ट—१९२८ में फ्रांस के प्रधानमंत्री एरेस्टेड ब्रियान ने अमरीकी विदेशमंत्री फ्रैंक बी० कैलोग के पास एक प्रस्ताव भेजा कि फ्रांस तथा अमरीका अपनी कठिनाइयों को हल करने के लिए युद्ध को गैरकानूनी करार देदें। कुछ विचार के पश्चात् इस प्रस्ताव को व्यापक बनाने और सब राष्ट्रों से इस पर हस्ताक्षर करवाने का निश्चय हुआ। पैरिस पैक्ट पर विश्व के बहुत से राष्ट्रों ने हस्ताक्षर किए लेकिन सब राष्ट्रों ने आत्मरक्षा के लिए लड़ाई करने का अधिकार सुरक्षित रखा।

युद्ध ऋण—प्रथम महायुद्ध के बाद के समय की एक कठिनाई थी अन्तर्राष्ट्रीय ऋणों का निपटारा। वर्साई में स्थापित मुआवजा कमीशन ने जर्मनी से, उसके द्वारा किए गए नुकसान की पूर्ति के लिए बत्तीस अरब डालर देने के लिए कहा। जर्मनी द्वारा चुकाई जाने वाली क्षतिपूर्ति के अतिरिक्त कुछ मित्रराष्ट्रों के बीच आपसी ऋण भी थे। ब्रिटेन ने अपने कई मित्रराष्ट्रों को युद्ध के पहले तीन वर्षों में बहुत से बड़े-बड़े ऋण दिए थे। अमरीका ने युद्ध के अन्तिम वर्षों तथा अस्थायी संधि के तुरन्त बाद के समय में ब्रिटेन, फ्रांस, बैल्जियम तथा दूसरे राष्ट्रों को ग्यारह अरब डालर से अधिक उधार दिए थे। जर्मन ऋण की वसूली के लिए व्यवस्था की गई और अमरीका ने यह प्रबन्ध किया कि ऋण पर सूद राष्ट्र के चुकाने के सामर्थ्य के अनुसार लिया जाय।

जर्मनों ने पहले तो यह दावा किया कि वे इतनी बड़ी वार्षिक राशि नहीं दे सकते जो उन्हें देने के लिए मजबूर किया जा रहा है। फिर कुछ वर्ष बाद जर्मनी ने यह घोषित किया कि वे उस योजना के अनुसार पड़ने वाले दायित्व जरा भी पूरे करने में असमर्थ हैं। तब मित्रराष्ट्रों ने कहा कि यदि जर्मनी उन्हें क्षतिपूर्ति न देगा तो वे भी अमरीका का ऋण वापस न कर सकेंगे और इस प्रकार एक-एक करके उन सबने अपने ऋण चुकाने से हाथ खींच लिया। अमरीका का ऋण न चुकाने से एक लम्बा तथा तीव्र विवाद पैदा हो गया और अन्ततः अमरीका अपने विशाल ऋण वापस न ले सका। केवल फिनलैंड ने अपना दायित्व निभाया।

राष्ट्रसंघ (लीग आफ नेशन्स), विश्व न्यायालय, लोकार्नो पैक्ट, शस्त्रों को कम करने तथा ऋण समस्याओं को सुलझाने के प्रयत्नों के बावजूद, हालत अच्छी होने के बजाय ज्यादा बुरी हो गई। विश्व में सन्देह तथा ईर्ष्या बढ़ने लगी। प्रत्येक लोकतन्त्रीय राष्ट्र शान्ति चाहता था लेकिन उसे आक्रमण का भय लगा रहता था।

१. लोकार्नो पैक्ट क्या थे ?
२. किसने वाशिंगटन निरस्त्रीकरण सम्मेलन की बैठक बुलवाई ?
३. वाशिंगटन सम्मेलन में नौ राष्ट्र किस बात पर सहमत हुए थे ?
४. पंच-शक्ति-संधि क्या थी ? उस समझौते का बाद का इतिहास क्या था ?
५. चार-शक्ति संधि क्या थी ?
६. किस राष्ट्र ने अमरीका को उसका ऋण चुकाना जारी रखा ?
७, पैरिस पैक्ट क्या था ?

विचार-विमर्श के लिए प्रश्न

१. शान्ति स्थापित करने के सब प्रयत्न प्रभावहीन क्यों हुए जब कि बड़े राष्ट्र लड़ने के लिए शस्त्रसन्नद्ध और तैयार थे ?

२. क्या ब्रिटिश राष्ट्र का बैल्जियम के लोगों की सहायता के लिए आना ठीक था ? इसके लिए कारण दीजिए।

३. यूरोप महाद्वीप पर शक्ति सन्तुलन में कोई परिवर्तन होने से ब्रिटेन को चिंता क्यों रहती है, यद्यपि वह एक टापू है ?

४. जर्मन चांसलर के संधि को 'कागज का टुकड़ा' कहने पर संसार को धक्का क्यों लगा ?

५. क्या आज कोई 'अर्ध-विलीन जातियाँ' हैं ?

६. राष्ट्रपति विल्सन के चौदह सूत्रों में से आज कितने लागू हो सकते हैं ?

७. क्या आपके विचार से अमरीका के पास प्रथम महायुद्ध में पड़ने के उचित कारण थे ? यदि हाँ, तो वे क्या थे ?

८. क्या आपके विचार में जर्मनी के साथ की गई संधि की शर्तें बहुत अधिक कठोर थीं ?

९. यदि शासनादेश (मैंडेट) प्रणाली जिस प्रकार सोचा गया था, उस प्रकार सफल रहती तो क्या वह पुराने समय से चले आने हुए इस नियम से कि उपनिवेशों को युद्ध की लूट के रूप में विजयी लोगों में बांट दिया जाय, अच्छी स्थिति होती ? कारण दीजिये। मैंडेट प्रणाली क्यों सफल न हो सकी ?

१०. यद्यपि राष्ट्रसंघ (लीग आफ नेशन्स) अपने कार्यों में असफल रहा तथा नष्ट हो गया, तब भी इसका विश्व इतिहास में क्या महत्त्व है ?

११. क्या आप सोचते हैं कि अमरीका को राष्ट्रसंघ अथवा विश्व न्यायालय में सम्मिलित होना चाहिए था ? क्यों या क्यों नहीं ?

१२. क्या आप यह निश्चय कर सकते हैं कि नौसैनिक निरस्त्रीकरण सम्मेलन में बड़े युद्धपोतों का जो अनुपात रखा गया था, वह क्यों उचित समझा गया था ?

१३. क्या किसी आक्रामक राष्ट्र को अपनी हार के पश्चात् क्षतिपूर्त्ति करनी चाहिए ? क्यों या क्यों नहीं ?

१४. क्या अमरीका का यह आशा करना ठीक था कि जो कुछ यूरोप के राष्ट्रों ने उससे उधार लिया है, वह वे उसे लौटाएँ ?

इतिहास के उपकरणों का प्रयोग

एक. नाम, तिथियाँ तथा स्थान

१. क्या आप इन शब्दों की व्याख्या कर सकते हैं ?

मित्रराष्ट्र, अनुच्छेद दस, शक्ति संतुलन, चार बड़े राष्ट्र, केन्द्रीय शक्तियाँ, विधान, सैन्य-रहित करना, चार-शक्ति संधि, चौदह सूत्र, हेग न्यायालय, अन्तर्राष्ट्रीय श्रम संगठन, मित्रराष्ट्रों के आपसी ऋण, लोकार्नो पैक्ट, शासनादेश, दोनों पक्षों के अधिकार से बाहर क्षेत्र, अर्धविलीन जातियाँ, विश्व न्यायालय, क्षतिपूर्ति, त्रिदेशीय गठबंधन, त्रिदेशीय मैत्री संधि, अल्टिमेटम।
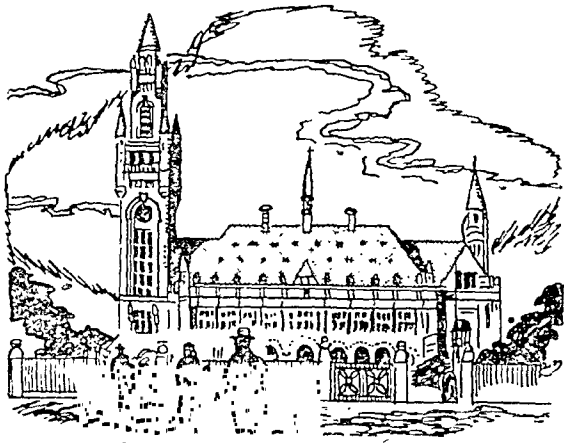
हेग का शान्ति प्रासाद, विश्वशान्ति को बढ़ाने के लिए, एंड्रू कारनेगी ने दान किया था।

२. क्या आप ये तिथियाँ जानते हैं ?

१८६४, १८९९, १९१४-१८, १९१९, ६ अप्रैल १९१७, ११ नवम्बर, १९१८, १९२१-१९२२, १९२५, १९२८, १९३०।

३. नक्शे पर ये स्थान दिखाइए।

अलजेसिरास, आल्सेस-लौरेन, बर्लिन, बोसनिया, बलगारिया, इंगलिश चैनल, एस्टोनिया, फ़िनलैंड, जिनीवा, ग्रीस, हालैंड, ईराक, इटली, जापान, राइन का बायाँ किनारा, आस्ट्रो-हंगेरियन साम्राज्य, मार्न की लड़ाई, लियुआनिया, लक्जमबर्ग, मेमेल, मैक्सिको, मोन्टिनिग्रो, मोरक्को, न्यूजीलैंड, फिलस्तीन, पैरिस, पोलैण्ड, प्रशिया, रूमानिया, सेन्ट मिहियेल, बैल्जियम, बर्लिन, सारायेवो, सर्बिया, स्वीडन, सीरिया, हेग, ट्रान्स-जोर्डन, ट्रैन्टिनो, ट्रीएस्ट, तुर्की, यूक्रेन, दक्षिण अफ्रीकी संघ, वर्साई, वियेना, विल्ना, यूगोस्लाविया।

४. क्या आप इन लोगों का परिचय दे सकते हैं ?

अलबर्ट, एरेस्टेड ब्रियान, जार्ज क्लीमैन्शो, फरडिनैण्ड फोश, लायड जार्ज, ह्यूगो ग्रोशियस, चार्ल्स इवान्स ह्यूज़, फ्रैंक बी० कैलोग, निकोलस द्वितीय, विटोरियो औरलैण्डो, जान परशिंग, हेनरी पैतां, पोल वान हिंडनबर्ग, विलियम द्वितीय, वुडरो विल्सन।

दो. क्या आप अपने विचार अच्छी तरह प्रकट कर सकते हैं ?

१. समाचार-पत्र के शीर्षक : आप अपने शहर के समाचार-पत्र के लिए इन घटनाओं के बाद की सुबह के लिए क्या शीर्षक तैयार करोगे ?

क. अमरीकन सैनेट में राष्ट्र संघ (लीग आफ नेशन्स) की हार।

ख. जलसैनिक सामग्री सीमा समझौते से जापान का हटना।

ग. फ्रांस तथा अमरीका द्वारा पेरिस पैक्ट की घोषणा।

घ. अन्तर्राष्ट्रीय संघ की स्थापना।

अपने शीर्षकों की तुलना कर सबसे अच्छे शीर्षक चुनिए।

२. कक्षा में वाद-विवाद

निम्नलिखित विषयों में से कुछ पर अनौपचारिक वादविवाद करिए।

अ. एक अंग्रेज वैज्ञानिक तथा लेखक ने कहा कि विश्व के वास्तविक विजेता सेनापति नहीं, विचारक हैं।

ब. भूतपूर्व अमरीकी राष्ट्रपति फ्रैंकलिन डी० रूजवैल्ट ने कहा था कि अगर लोग युद्ध के सवाल पर अपने विचार स्पष्ट रूप से अभिव्यक्त कर सकते तो कोई युद्ध न होता।

स. चीन के प्राचीन दार्शनिक कनफ्यूशियस ने कहा था कि साधारणतया मानव प्रकृति एक सी होती है, केवल उनकी आदतें उन्हें अलग-अलग बाँट देती हैं।

द. १७ वीं शताब्दी के कवि जान मिल्टन ने कहा था कि शान्ति भी विजय प्राप्त कर सकती है और उसकी विजय युद्ध की विजय से कम नहीं है।

३. सम्पादकीय लेख

निम्नलिखित घटनाओं में से किसी एक पर एक ऐसा संक्षिप्त सौ शब्दों का सम्पादकीय लेख लिखिए जो इन घटनाओं के बाद किसी अमरीकी समाचारपत्र में प्रकाशित हुआ होता। आप कोई भी पक्ष ले सकते है।

अ. जब त्रिदेशीय सन्धि हुई थी :
ब. जब अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय स्थापित किया गया।
स. जब आस्ट्रियन राजगद्दी का उत्तराधिकारी कत्ल किया गया।
द. जब जर्मनी ने बैल्जियम को कुचल दिया।
क. जब ब्रिटेन ने जर्मनी के साथ युद्ध की घोषणा की।
ख. जब संयुक्त राज्य ने युद्ध में प्रवेश किया।
ग. जब राष्ट्रपति विल्सन ने अपने चौदह सूत्रों की घोषणा की।
घ. जब शान्ति की घोषणा की गई।
ङ. जब अमरीका ने राष्ट्रसंघ में सम्मिलित होने से इन्कार कर दिया।

तीन. ब्लैकबोर्ड पर

अ. समानान्तर कालमों में वियेना कांग्रेस तथा पेरिस सम्मेलन की निम्नलिखित बातों में तुलना कीजिए : उपस्थित व्यक्तियों का प्रकार, सम्मेलन का राष्ट्रवाद के प्रश्न पर रुख, भविष्य की शान्ति के लिए किये गये उपबन्ध।
ब. संसार के उन सब राष्ट्रों की एक सूची बनाइए जो लीग आफ नेशन्स में सम्मिलित हुए थे, और एक सूची उनकी बनाइए जो विश्व न्यायालय में सम्मिलित हुए।

चार. बाहरी खोज

१. राजनयिक सेवा को अपना जीवन कार्य बनाने के इच्छुक छात्र इस कार्य के लिए आवश्यक शिक्षा संबंधी और व्यक्तिगत योग्यता का पता लगाएं। आपका निर्देशन-अध्यक्ष या अध्यापक आपकी सहायता कर सकता है। अपनी जानकारी कक्षा के सामने प्रस्तुत कीजिए।

२. प्रथम विश्वयुद्ध में निम्नलिखित देशों में मरे और घायल हुए लोगों की संख्या दिखानेवाला दंड-ग्राफ (बार ग्राफ) बनाओ : रूस, जर्मनी, फ्रांस, ब्रिटिश साम्राज्य, इटली, आस्ट्रिया-हंगरी और अमरीका। विश्व-सूचनाकोष (एलमैनेक) से आवश्यक जानकारी मिल जाएगी।

३७ स्वेच्छाचार-तंत्र नये नाम से प्रकट हुआ

प्रथम विश्वयुद्ध में प्रवेश करते हुए अमेरिका का नारा "दुनिया को लोकतन्त्र के लिए सुरक्षित बनाओ" था। तो भी, युद्धोपरान्त के वर्षों में दुनिया के बहुत से प्रमुख देशों में लोकतन्त्रात्मक सरकारों के बजाय स्वेच्छाचारी सरकारें पनपीं। इनमें से कुछ में लोकतन्त्र कभी नहीं रहा था, न कभी उसका परीक्षण ही हुआ था। कुछ अन्य देशों में लोकतन्त्र का परीक्षण किया गया था, लेकिन वह समुचित नेतृत्व के अभाव में असफल रहा। विभिन्न देशों में इन नयी निरंकुश सरकारों का रूप विभिन्न था लेकिन वे प्राचीन शब्द डिक्टेटरशिप, (तानाशाही या अधिनायकवाद) के नाम से ही पुकारी जाती थीं। एक देश में साम्यवादी अधिनायकवाद था, दूसरे में फासिस्ट अधिनायकवाद, और अन्य तीसरे में नाजी तानाशाही। वे सब इस रूप में एक थीं कि वे एक व्यक्ति या व्यक्तियों के छोटे से समूह की सरकारें थीं और जनता को अपने जीवन के बारे में कुछ कहने का अधिकार नहीं था। अन्य रूपों में वे भिन्न थीं। हम पहले सोवियत रूस से ही आरंभ करें।

बोल्शेविक या लाल क्रान्ति

गोकि जब १९१४ में पहले-पहल प्रथम विश्वयुद्ध छिड़ा तो रूस में बहुत से लोगों में असंतोष था लेकिन क्रान्तिकारी बोल्शेविक पार्टी को छोड़कर सभी राजनीतिक दल रूस के युद्ध-प्रयासों के समर्थक थे। लेकिन जब विपत्ति आई और हार हुई तो शीघ्र ही उनका उत्साह बदल गया। गोकि रूसी सेना युद्ध में सबसे बड़ी थी लेकिन वह बहुत ही कौशलहीन थी और उनके पास अच्छे युद्धास्त्र नहीं थे। तो भी, जार ने इसके निकम्मेपन की आलोचना सुनने से इन्कार कर दिया। युद्ध में मृतकों की सूची और रूस में भुखमरी फैलने से असंतोष बढ़ता ही चला गया और अन्त में १९१७ में एक क्रान्ति हुई, जिसे जार निकोलस द्वितीय दबा नहीं पाया। १५ मार्च, १९१७ को उसने गद्दी छोड़ दी और इस प्रकार रोमानोव राजवंश की समाप्ति हो गयी।

तब, जिस लिबरल सरकार की स्थापना की गयी वह न तो ज्यादा सशक्त ही थी और न इतनी अधिक परिवर्तन-पक्षपाती ही थी कि असन्तुष्ट

लगभग ७ वर्षों तक, लेनिन रूसी कम्युनिस्ट पार्टी का प्रधान नेता था। वह पार्टी का अध्यक्ष और रूस का अधिनायक था।

सोवफोटो

श्रमिकों का समर्थन प्राप्त कर सके; परिणामस्वरूप, नवम्बर १९१७ में दूसरी बार क्रान्ति हुई। इससे निकोलस लेनिन के नेतृत्व में बोल्शेविकों को, जिन्हें लेनिन कम्युनिस्ट कहता था, सत्ता मिली। लेनिन और उसके अन्य कई समर्थकों को देशनिकाला मिला हुआ था, लेकिन वे मार्च की क्रांति के बाद रूस लौट आये थे। उसके समर्थकों में लियोन ट्राटस्की भी था जिसने बोल्शेविक या लाल सेना संगठित की। गोकि रूसी जनता का बहुत थोड़ा-सा हिस्सा उसकी पार्टी में था, लेकिन पार्टी पूर्ण अनुशासित और अच्छी तरह संगठित थी और वे लोग जानते थे कि वे क्या चाहते हैं तथा कैसे उसे प्राप्त किया जा सकता है। जो नयी सरकार की योजनाओं और तरीकों का विरोध करते थे, उन्हें सख्त सजा दी जाती थी। हजारों लोग मारे गये और अनेक देश से भाग गये।

कम्युनिस्ट सरकार अपने घर में ही बुरी तरह फँसी हुई थी और उसने १९१७ में जर्मनी के साथ हुई एक संधि के परिणामस्वरूप अपना जो क्षेत्र खो दिया था, उसे पुन: वापस लेने का प्रयास नहीं किया। १९१८ में, जर्मनी की पराजय के बाद फिनलैण्ड, एस्थोनिया, लैटविया, लिथुआनिया और पोलैण्ड स्वतंत्र गणराज्य बन गये।

रूस में साम्यवाद की स्थापना के प्रयास—लेनिन ने अपने क्रान्तिकारी आर्थिक सिद्धान्तों को अमल में लाने का कार्य आरम्भ किया। किसानों से कहा गया कि वे जमींदारों से फार्म (खेत) ले लें; कारखानों के मजदूरों या सर्वहारा वर्ग को सलाह दी गयी कि वे कारखानों के मालिकों को बाहर भगा दें और स्वयं ही कारखानों का संचालन करें। किसानों और मजदूरों के संचालन के फलस्वरूप फार्मों का उत्पादन उनके सामान्य परिमाण से लगभग आधा रह गया और उद्योग लगभग ठप्प से हो गये। सरकार ने बैंकों, यातायात और संवहन के साधनों तथा खानों को अपने अधिकार में ले लिया।

इन परिवर्तनों से गड़बड़ फैली। हजारों लोग अच्छी परिस्थितियों की तलाश में एक स्थान से दूसरे स्थान को निष्क्रमण करने लगे। स्थिति तब और बदतर हो चली जब १९२१ के सूखे ने फसल को और भी घटा दिया। यह अनुमान लगाया गया है कि २० लाख से लेकर ३० लाख के बीच लोग अपर्याप्त भोजन और भुखमरी से मरे थे जबकि अन्य को भारी कष्ट मिला था। किसान और मजदूर, समान रूप से, असन्तुष्ट थे। साम्यवाद उससे कहीं भिन्न साबित हुआ था जिसका कि वहाँ दावा किया जाता था।

नयी आर्थिक नीति—लेनिन और उसके सलाहकारों, कमीसारों की परिषद् ने इस भय से कि रूस में उनका नियन्त्रण नहीं रह पायेगा, १९२१ में, एक नयी आर्थिक नीति की घोषणा की। इस योजना के अन्तर्गत छोटे व्यापार प्राइवेट मालिकों को लौटा दिये गये और फार्म मालिकों को जमीन पर आसामी बैठाने, जमीन का स्वामी बनने, अपनी पैदावार बढ़ाने तथा जहाँ इच्छा हो, वहाँ उन फसलों को बेचने की अनुमति प्रदान की गयी। सरकार ने रूस में सभी खानों, बैंकों और यातायात और संवहन के साधनों का नियन्त्रण अपने ही हाथ में रखा। दूसरी ओर, विदेशियों को आमन्त्रित किया गया कि वे रूस में आकर अपनी पूँजी लगाएँ और टेक्निकल काम जानने वाले लोगों से कहा गया कि वे कारखानों, खानों, बाँधों और विद्युत् शक्ति के विकास में मदद के लिए आयें। यह साम्यवाद और स्वतंत्र उद्यम की एक मिली-जुली पद्धति थी। नयी आर्थिक नीति के परिणामस्वरूप कृषि और उद्योग, दोनों में ही उत्पादन बढ़ा।

सरकार—रूस में शासन करने वाली इकाई स्थानीय "सोवियत" थी, जिसका अर्थ रूस में कमेटी है। ये कमेटियाँ क्रान्ति के समय स्थानीय कार्यों को चलाने के लिए समस्त रूस में बन गयी थीं। कारखानों, खानों, कालेजों, किसानों के गाँवों और यहाँ तक कि सेना में भी ये बनी थीं। स्थानीय सोवियत के सदस्य जिला सोवियत के लिए प्रतिनिधि चुनते थे जो प्रान्तीय सोवियत के लिए अपने प्रतिनिधि चुनते थे। प्रान्तीय सोवियत "सोवियतों की अखिल रूसी काँग्रेस" में अपने सदस्य चुनकर भेजती थी। इस काँग्रेस में लोगों का एक छोटा दल,

जो कि कम्युनिस्ट पार्टी के नेता भी थे, नीति-सम्बन्धी सभी मामलों पर अन्तिम निर्णय करता था। पोलितब्यूरो, पार्टी के संचालक प्रमुख कम्युनिस्ट नेताओं का एक छोटा सा गुट था। इस प्रकार की प्रणाली के अन्तर्गत पोलितब्यूरो के लिए समस्त देश पर नियन्त्रण रखना आसान था।

१. प्रथम विश्वयुद्ध का रूस पर क्या प्रभाव पड़ा ?
२. निकोलस लेनिन कौन था ?
३. नवम्बर १९१७ की क्रान्ति का किसानों और सर्वहारा वर्ग पर तात्कालिक प्रभाव क्या पड़ा ?
४. १९१७ की क्रान्ति के बाद के वर्षों में सरकार ने किन-किन उद्योगों का राष्ट्रीयकरण किया ?
५. क्रांति के तत्काल बाद रूस में साम्यवाद की स्थापना के प्रयास का रूस की अर्थव्यवस्था पर क्या असर पड़ा ?
६. नयी आर्थिक नीति क्या थी ?
७. रूस की सरकार किस प्रकार संगठित थी ?

स्तालिन ने क्रांति को जारी रखा

१९२४ में लेनिन की मृत्यु के बाद जोसफ स्तालिन और लियो ट्राटस्की में, जो कम्युनिस्ट पार्टी के प्रमुख सदस्य थे, सिद्धान्तों और तरीकों पर मतभेद उत्पन्न हो गया। ट्राटस्की कम्युनिस्ट पार्टी से निकाल दिया गया और बाद में देश से निकाल दिया गया। ट्राटस्की चाहता था कि रूस में किसी न किसी साधन से कुलकों या धनी किसानों का उन्मूलन कर दिया जाय और विश्वक्रांति द्वारा साम्यवाद फैलाया जाय। स्तालिन सोचता था कि कुलकों को समाप्त करने का समय अभी नहीं आया है; वह साम्यवाद को पहले रूस में कार्य करने देना ज्यादा पसंद करता था। उसे उसकी पार्टी का समर्थन मिला और १९२७ में वह रूस का अधिनायक बन गया।

पंचवर्षीय योजनायें—नयी आर्थिक नीति ने रूस के व्यापारी जीवन का पुनरुत्थान करने में सहायता की थी लेकिन कम्युनिस्ट नेता यह नहीं चाहते थे कि सार्वजनिक उद्योगों के मुकाबले में रूस में व्यक्तिगत उद्योग पनपें। इसलिए, १९२८ में स्तालिन ने पंचवर्षीय योजना का समारंभ किया। इस प्रथम पंचवर्षीय योजना का एक उद्देश्य यह था कि रूस में राजकीय भारी उद्योगों, रेल पथों, जल-विद्युत्, बांधों, बिजली पैदा करने वाली मशीनों और खेती के औजार बनाने वाली मशीनों को प्रोत्साहन दिया जाय। एक दूसरा उद्देश्य रूस के सभी फार्मों का सामूहिकीकरण करना और इस प्रकार उन कुलकों से छुटकारा पाना था जिनकी स्तालिन अब कोई जरूरत नहीं समझता था।

सामूहिक फार्मों में किसानों द्वारा सरकारी मशीनरी और जानवरों की मदद से काम शुरू किया गया। आमदनी किसानों के बीच, सामूहिक खेती के लिए उनके दिये गये भूमि के टुकड़े के आकार और उनके द्वारा उन पर की गयी मेहनत के अनुपात से, बाँट दी जाती थी।

पंचवर्षीय योजना की एक विशेषता यह थी कि सरकार की और उसकी नीति की आलोचनाओं को पूर्ण रूप से दबा दिया जाय। सूचना के सभी स्रोतों पर, जिनमें समाचार-पत्र भी सम्मिलित थे, जबरदस्त सेंसर लगा दिया गया था। रूसी जनता केवल वही सुनती और पढ़ती थी जिसे स्तालिन और उसके अनुयायी चाहते थे कि वह जाने। प्रजातन्त्रात्मक, पूँजीवादी देशों की खबरें गलत और गुमराह करने वाली होती थीं और हमेशा ही उन्हें प्रतिकूल समझा जाता था। रूसी जनता को इसके परिणामस्वरूप जो भी लाभ पहुँचे हों, लेकिन उसकी जो कीमत चुकाई गयी वह बहुत अधिक थी।

स्तालिन की पुलिस सर्वत्र थी। उससे जनता डरती थी और जहाँ तक संभव हो दूर ही रहने की चेष्टा करती थी।

पंचवर्षीय योजना की समाप्ति के करीब स्तालिन ने ऐलान किया कि योजना बहुत ज्यादा सफल रही। यह सच था या नहीं, शेष दुनिया नहीं जानती, लेकिन स्तालिन ने रूस की आर्थिक शक्ति को अधिक मज़बूत बनाने के लिए दूसरी और फिर तीसरी पंचवर्षीय योजनाओं की घोषणा की। तीसरी पंचवर्षीय योजना में अधिक सफलता प्राप्त होने से पेश्तर ही द्वितीय विश्वयुद्ध ने उसमें बाधा उत्पन्न कर दी।

१९३६ का संविधान—१९३६ में रूसी जनता के लिए नया संविधान बनाया गया। इसने सरकार प्रणाली में कई तब्दीलियाँ कीं। रूस में सभी लोगों के लिए गुप्त मतदान प्रणाली लागू की गयी। सभी लोगों, पुरुषों तथा स्त्रियों को १८ वर्ष से अधिक की आयु प्राप्त करने पर वोट देने का अधिकार दिया गया। इस संविधान ने लोगों को व्यक्तिगत सम्पत्ति रखने की अनुमति दी, गोकि कोई भी अपनी सम्पत्ति का उपयोग धन कमाने के लिए नहीं कर सकता था। राज्य ने नागरिकों के सम्पत्ति का वारिस बनने और कार्य के लिए मज़दूरी प्राप्त करने के अधिकारों को मान्यता प्रदान की। संविधान ने सभी नागरिकों के कार्य पाने, अवकाश का समय प्राप्त करने और निःशुल्क शिक्षा प्राप्त करने के अधिकार को भी मान्यता दी। उसने धार्मिक स्वतन्त्रता तो प्रदान की लेकिन उसके साथ ही साथ धर्म-विरोधी प्रचार की भी खुली छूट दी।

ये सब व्यवस्थाएँ सुनने या पढ़ने में तो बड़ी अच्छी लगती हैं, लेकिन कहानी यहीं खत्म नहीं हो जाती। निःसंदेह, सभी बालिगों को मताधिकार था लेकिन वहाँ अधिकतर एक पद के लिए एक ही उम्मीदवार होता था, और लगभग सभी जगह वह कम्युनिस्ट पार्टी द्वारा नामजद होता था। लगभग सभी लोग सरकार के लिए काम करते थे और व्यक्तिगत मालिकाना उद्योग बहुत ही कम थे। सरकार की नीतियों की आलोचना की वहाँ कोई स्वतन्त्रता नहीं थी। गोकि वहाँ धर्म की तथा-कथित स्वतन्त्रता थी लेकिन कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य चर्चों के सदस्य नहीं थे और वे धर्म का सक्रिय विरोध करते थे। चर्चों को स्कूल चलाने की अनुमति नहीं थी। न वे कोई सामाजिक कार्य ही चला सकते थे, न अस्पताल ही खोल सकते थे। दूसरे शब्दों में, जिस व्यक्तिगत स्वतंत्रता का अमेरिका में उपभोग किया जाता है, रूस में उसका अस्तित्व ही नहीं है। रूसी जनता जारों के शासन में वह नहीं पा सकी और कम्युनिस्टों के अन्तर्गत भी उसे वह उपलब्ध नहीं है।

विदेशों से सम्बन्ध—रूस एक विशाल देश है। उसकी १८ करोड़ की आबादी किसी भी रूप में अधिक नहीं है। उसके प्राकृतिक साधन भी बहुत थे, जो अब तक अछूते थे। इसलिए सोवियतों को रहने की जगह के लिए या बहुत किस्मों के कच्चे माल के लिए विदेशों की ओर नहीं देखना पड़ा। रूस अन्य देशों के साथ व्यापार अवश्य करता था और वह "लीग आफ नेशन्स" में सम्मिलित हुआ। अपने प्राकृतिक साधनों के विकास और नयी प्रणाली को चलाने के लिए शांति उसके लिए अनिवार्य प्रतीत होती थी। दूसरे देशों में कम्यु-निस्ट संगठनों और तृतीय इण्टरनेशनल से, बगैर सैनिक हमलों के दुनिया को साम्यवाद में बदलने का प्रचार हो ही रहा था। तृतीय इण्टरनेशनल वह संगठन था जिसमें विभिन्न देशों के कम्युनिस्ट संगठन शामिल थे और इससे वे आदेश प्राप्त करते थे। तृतीय इण्टरनेशनल का संचालन स्वयं मास्को से होता था।

१. सरकार-संगठन के संबंध में ट्राटस्की और स्तालिन के विचार किस रूप में भिन्न थे?
२. ट्राटस्की रूस से क्यों निकाला गया?
३. प्रथम पंचवर्षीय योजना क्या थी?
४. किस प्रकार १९३६ का संविधान जनता को वास्तविक आजादी दिलाने में असफल रहा, समझाओ?
५. १९२० तथा १९३० के दशकों में ऐसा क्यों प्रतीत होता था कि रूस युद्ध नहीं चाहता?
६. तृतीय इण्टरनेशनल क्या था?

मुसोलिनी द्वारा इटली में फासिस्टवाद का संगठन

प्रथम विश्वयुद्ध के बाद इटली दीवालिया हो गया था। उसकी जनता बहुत अधिक रुष्ट हो चली थी क्योंकि आस्ट्रिया-हंगरी से जितना क्षेत्र पाने की उन्होंने सोची थी, पैरिस शांति सम्मेलन में, उन्हें उसका बहुत कम हिस्सा मिला मिला था। युद्ध में इटली के ६ लाख ५० हजार व्यक्ति मारे गये थे और अन्य १० लाख घायल हुए थे। हजारों की संख्या में घर लौटने वाले सैनिकों के लिए कोई काम नहीं था। गरीबी व्यापक रूप से फैली थी और सरकार अपनी आर्थिक समस्याओं को सुलझाने

में असमर्थ थी। युद्ध से पहले ही इटली में बहुत से सोशलिस्ट और कम्युनिस्ट गुट बन गये थे और अब असंतुष्ट सैनिक इन गुटों में शामिल हो गये। हड़तालें, दंगे और ध्वंसात्मक कार्य सामान्य हो गये थे और कमजोर इटालियन पार्लमेंट उन्हें नियंत्रित करने में असमर्थ प्रतीत होती थी।

बेनिटो मुसोलिनी—इस प्रकार की परिस्थितियों में बेनिटो मुसोलिनी इटली में सत्तारूढ़ हुआ। वह गाँव के एक लुहार का पुत्र था, लेकिन एक गतिशील महत्त्वाकांक्षा तथा एक सहायक तथा कर्तव्यनिष्ठ माँ के शिक्षण ने उसकी अभिरुचि जाग्रत की और वह अध्ययन के लिए विश्वविद्यालय में गया। वह शीघ्र सोशलिस्ट दल में शामिल हो गया और एक सोशलिस्ट समाचार पत्र का प्रकाशक बना। अपने सिद्धान्तों के कारण उसे इटली से भागना पड़ा। वह स्विट्जरलैण्ड चला गया और देश-बहिष्कृत के रूप में वहाँ रहने लगा। पहले पहल उसने इटली के प्रथम महायुद्ध में कूदने का विरोध किया लेकिन बाद में उसने राय बदली और दो वर्षों तक प्राइवेट के रूप में सेना में काम किया। अन्त में उसे सम्मानपूर्वक सेना से अलग कर दिया गया।

युद्धोपरान्त मुसोलिनी ने सोशलिज्म और कम्युनिज्म दोनों, को ही दोषी ठहराते हुए फासिस्ट पार्टी की स्थापना की। फासिस्ट जबरदस्त राष्ट्रवादी और साम्यवाद-विरोधी थे। मुसोलिनी ने इटली में फैली अव्यवस्था की निंदा की। उसने शाँति सम्मेलन में एड्रियाटिक समुद्रतट प्राप्त न कर पाने पर, जैसी कि इटली सरकार की योजना थी, सरकार की कमजोरी की निंदा की। मुसोलिनी की नीतियों से नयी पीढ़ी के लोगों में उसके बहुत से अनुयायी हो गये, जो महसूस करते थे कि युद्ध में इटली ने व्यर्थ ही अपने को मिटा डाला। अव्यवस्था के कारण अपनी सम्पत्ति से हाथ धोने वाले इटालियन व्यापारी भी फासिस्ट बन गये। मुसोलिनी ने "ब्लैकशर्ट" कहाने वाला एक दल संगठित किया। उन्हें सैनिक कवायद कराई जाती थी और वे शीघ्र ही रोम के लिए प्रयाण में समर्थ हुए। जब वे नगर के करीब पहुँचे, विक्टर इमेनुअल तृतीय नामक निर्बल राजा ने, किसी भी प्रकार के संकट रोकने की दृष्टि से, मुसोलिनी को एक मंत्रिमंडल बनाने और प्रधान मंत्री के रूप में कार्य करने को आमंत्रित किया। यह घटना अक्तूबर १९२२ में हुई।

सरकार का प्रधान—मुसोलिनी ने यह प्रस्ताव स्वीकार कर लिया और शीघ्र बाद पार्लमेंट के कुछ तत्त्वों ने उसे एक वर्ष के लिए अधिनायकत्व के अधिकार प्रदान किये। उसने तत्काल ही सरकार का पुनर्गठन आरम्भ कर दिया। उसने सरकारी कार्यालयों के सभी पदों पर फासिस्टों को रखा और अपने को सिर्फ राजा के प्रति उत्तरदायी बनाया। पार्लमेंट का कानून बनाने का अधिकार छीन लिया गया; इसके बजाय मुसोलिनी आज्ञप्तियाँ जारी करता था जिनमें कानूनी शक्ति निहित थी। उसका पद प्रधान मंत्री से बदल कर "इलडूचा" या सरकार का प्रधान, कर दिया गया था और सभी मंत्री उसके द्वारा नियुक्त किये जाते थे। इस प्रकार सरकार बदल कर मुसोलिनी को उसका पूर्ण नियंत्रण दिया गया।

सभी विरोधों का तत्काल और निर्ममता से दमन किया जाता था। सभी राजनीतिक दल, फासिस्ट पार्टी को छोड़कर भंग कर दिये गये थे। कोई भी गुप्त समितियाँ, इटली में बनाने की अनुमति नहीं थी और सभी समाचारपत्रों पर सख्त सेंसर था। अगर समाचारपत्र सरकार की आलोचना जारी रखते तो उन्हें कारोबार छोड़ने को मजबूर किया जाता था। इन तरीकों से सरकारी नीतियों का सब विरोध समाप्त कर दिया गया था।

पोप के साथ धर्मसंधि (कानकार्डेट)—मुसोलिनी ने महसूस किया कि उसकी सरकार को जन-समर्थन प्राप्त करने के लिए पोप की स्वीकृति जरूरी है, क्योंकि अधिकांश इटलीवासी रोमन कैथोलिक थे। तदनुसार, १९२९ में उसने पोप के साथ एक धर्मसंधि पर हस्ताक्षर किये और १८७० से चली आती हुई इटली की सरकार की दीर्घकालीन समस्याओं में से एक को हल कर लिया। इस धर्मसंधि से वेटिकन सिटी में, जो कि एक वर्गमील से भी कम क्षेत्र था और जिसकी जनसंख्या ५०० थी, पोप का राज्य

स्थापित हो गया। यहाँ पोप को फिर सांसारिक अधिकार मिल गये। इसके अलावा, इटली में एक-मात्र रोमन कैथोलिक धर्म को राज-धर्म की मान्यता मिल गयी। स्कूलों में धार्मिक शिक्षा दिये जाने की स्वीकृति हो गयी। इस संधि का इटली में और इटली के बाहर अनेक लोगों ने स्वागत किया और मुसोलिनी को इससे प्रतिष्ठा मिली।

सैनिकवाद—सैनिकवाद फासिस्टवाद का एक अंग था। बहुत से बेरोजगारों को बढ़ती हुई सेनाओं में खपा लिया गया। लड़कों और युवकों को युद्ध के लिए प्रशिक्षित किया गया। छह वर्ष की उम्र में ही लड़कों को युवक संगठनों में भरती होकर कवायद और "इलडूचा" का अनुसरण करना सिखाया जाता था। स्कूल पुनः संगठित किये गये और पाठ्यक्रम में परिवर्तन कर शारीरिक व्यायाम आदि को अधिक अंश में जोड़ा गया।

व्यक्तिगत स्वतंत्रता का अपहरण—मुसोलिनी ने इटली में कुछ सुधार किये, जिनमें से अधिकांश प्रभावोत्पादक थे; जैसा कि अधिनायकवाद का ढंग होता है। नगरों को साफ किया गया; दलदल सुखाये गये; जमीन में रासायनिक खाद दी गयी, ट्रेनें समय पर चलने लगीं और बेरोजगारी लगभग समाप्त कर दी गयी और सड़कों पर भीख मांगना भी अधिकांशतया बंद हो गया। ये सुधार निःसंदेह अच्छे थे लेकिन इन्हें इटली की जनता की व्यक्तिगत स्वतंत्रता को खत्म कर और निर्मम नियमों की कीमत पर लाया गया था। हर एक को राज्य की बेहतरी के लिए काम करना पड़ता था और राज्य का हुक्म मानना पड़ता था। श्रमिक संगठनों की अनुमति नहीं थी और उनके अधिकांश नेताओं को देशनिकाला मिला था या मार डाला गया था। भाषण स्वातंत्र्य और समाचारपत्रों की स्वतंत्रता प्रतिबंधित थी और न सभाएँ करने का ही अधिकार था।

१. प्रथम विश्वयुद्ध के बाद इटली की जनता के असंतोष और निराशा के क्या कारण थे?
२. मुसोलिनी कौन था? वह इटली की सरकार का प्रधान कैसे बना?
३. "ब्लैकशर्ट" कौन थे?
४. मुसोलिनी ने किस तरह सरकार में परिवर्तन किया?
५. मुसोलिनी ने पोप के साथ क्या समझौता किया? उसकी तिथि भी बताओ।

एक विशिष्ट मुद्रा में मुसोलिनी मजदूरों के एक दल के समक्ष भाषण कर रहा है जो उन थोड़ी सी लाभदायक योजनाओं में से एक के अन्तर्गत पोन्टीने दलदल को सुखा रहे हैं जिनके द्वारा तानाशाह अपने को शासनारूढ़ बनाये रखने की आशा करता था।

एक्मी

६. मुसोलिनी के इटली के लिए प्रोग्राम में सैनिकवाद को क्या स्थान था ?
७. इटली में क्या सुधार हुए ?
८. सरकार द्वारा लोगों की व्यक्तिगत आजादी में किस प्रकार कटौती की गयी ?

जर्मन गणतन्त्र की असफलता

जर्मन क्रांति—१९१८ में कैसर के जर्मनी से हालैण्ड भाग जाने पर जर्मन साम्राज्य के बहुत से राज्यों ने अपने शासकों को उखाड़ फैंका और गणराज्यों की स्थापना की। १९१९ में साम्राज्य एक जर्मन गणतन्त्र (रिपब्लिक) में बदल दिया गया। नयी सरकार की समस्याएँ गम्भीर तथा अनेक थी ! युद्ध ने देश के साधनों को समाप्त कर दिया था। व्यापार अस्तव्यस्त हो चला था। जो शान्ति सन्धि नयी रिपब्लिक ने की थी, उससे लोग असंतुष्ट थे। जर्मन जनता को सरकार को राष्ट्रीय कार्यों का, सरकार के रूप में, कोई अनुभव नहीं था। जर्मनी में कम्युनिस्ट नेताओं ने क्रान्ति में इस आशा से मदद की थी कि शायद उन्हें नियन्त्रण मिल जाय और वे एक साम्यवादी सरकार कायम कर सकें।

जर्मन रिपब्लिकन सरकार—नयी सरकार का चाँसलर एक सोशलिस्ट, फ्रेडरिक एबर्ट था। सरकार का प्रथम कार्य, फरवरी १९१९ को एक संविधान का मसविदा तैयार करने के लिए "वेमार" में परिषद् की एक बैठक बुलाना था। वहाँ बहुत से दलों के लोगों का प्रतिनिधित्व था और कई तरह की रायें जाहिर की गयीं। लम्बी बहसों के बाद संविधान बना। उसमें फ्रांस की तरह राष्ट्रपति की व्यवस्था थी, लेकिन उसके कोई अधिकार नहीं थे। वहाँ संसद् (पार्लमेंट) के दो सदन थे, लेकिन लोअर हाउस या रिश्टाक का राजकाज पर वास्तविक नियन्त्रण था। उसका चुनाव सार्वदेशिक मताधिकार के अनुसार होता या जबकि द्वितीय सदन (अपर हाउस), रिक्सरॉट, राज्य सरकारों द्वारा नियुक्त प्रतिनिधियों की बनी थी। कानूनों के कार्यान्वियन का अधिकार चांसलर और राष्ट्रपति द्वारा नियुक्त एक मंत्रिमंडल के हाथ में था लेकिन वे रिश्टाक के प्रति उत्तरदायी थे।

प्रारम्भ में रिपब्लिक का कोई विशेष स्वागत नहीं किया गया। बहुत से जर्मन वर्साई शान्ति संधि की अपमानजनक शर्तों को स्वीकार करने का दायित्व रिपब्लिक पर थोपते थे, अन्य लोगों को इस प्रणाली की सरकार नापसंद थी। एक ओर वे चरमपन्थी लोग थे जो राजतन्त्र चाहते थे और दूसरी ओर वे लोग थे जो कम्युनिज्म की बात कहते थे। लेकिन नयी सरकार के सामने सर्वाधिक अहम समस्या आर्थिक थी। युद्ध ने व्यापार को छिन्न-भिन्न कर दिया था। बहुत बड़ी सेना, जो विघटित कर दी गयी थी, काम खोजती थी लेकिन काम नहीं था। जिन लोगों ने युद्ध के दौरान सरकार को मुद्रा दी थी वे जानते थे कि उन्हें वह धन वापस नहीं मिलेगा जब कि इसी समय मित्र राष्ट्र युद्ध द्वारा हुई क्षति का मुआवजा पाने की उम्मीद रखते थे। जर्मनी की मुद्रा मार्क का अवमूल्यन हो गया था और अन्त में वह बेकार हो गयी। रिपब्लिक की अप्रतिष्ठा का दूसरा कारण सरकार का दीवालियापन था।

विदेशी मामले—जर्मनी के सम्बन्ध अपने पड़ोसियों के साथ अच्छे नहीं थे। फ्रांस को उस पर कभी भी विश्वास नहीं था और बेल्जियम को भी नहीं गोकि जब उसने मुआवजे की अपने जिम्मे की रकम अदा कर दी थी तब दोनों के सम्बन्ध कुछ अच्छे हो गये थे। ब्रिटेन ने रिपब्लिक को प्रोत्साहित किया लेकिन जब मन्दी आई और जर्मन रिपब्लिक ने बाजार पाने की कोशिश की तो वहाँ आर्थिक प्रतिद्वन्द्विता उठ खड़ी हुई।

बावजूद इसके कि मुआवजा माफ कर दिया गया था, जर्मनी अन्य देशों की ही भाँति विश्वव्यापी मन्दी के चंगुल में फँसा था। इसने एडोल्फ हिटलर के अधीन नेशनल सोशलिस्ट या नाजी पार्टी के उत्थान का मार्ग प्रशस्त किया। बहुत से जर्मनों को लगा कि रिपब्लिक असफल सिद्ध हुई। यहाँ तक कि कुछ एक लोग फिर राजतन्त्र चाहते थे।

एडोल्फ हिटलर जर्मनी का तानाशाह बना

एडोल्फ हिटलर—एडोल्फ हिटलर एक आस्ट्रियाई नागरिक था और कलाकार के रूप में घरों में चित्र बनाया करता था। उसे थोड़ा-थोड़ा सभी

प्रकार के धन्धों की जानकारी थी लेकिन उसे उनमें से किसी में भी ज्यादा सफलता नहीं मिली थी। विश्वयुद्ध में उसे बहादुरी के लिए जर्मन सेना में लौह-पदक मिला था, लेकिन वह कार्पोरल के पद से ज्यादा ऊँचा नहीं उठ पाया था। युद्ध के बाद वह राजनीति में आ गया और उसने देखा कि वह अपने जोशीले भाषणों से श्रोताओं को प्रभावित कर सकता है। १९२३ में म्यूनिख में हुई एक राज्य-क्रांति में उसने और उसके साथियों ने सरकार को उखाड़ फेंकने की कोशिश की लेकिन वे असफल रहे और हिटलर को कारावास का दण्ड मिला। वहाँ रहते हुए उसने 'मीन कैम्फ' नामक एक पुस्तक लिखी जिसमें उसके राजनीतिक विचार और विश्व-विजय की उसकी योजनाएँ थीं।
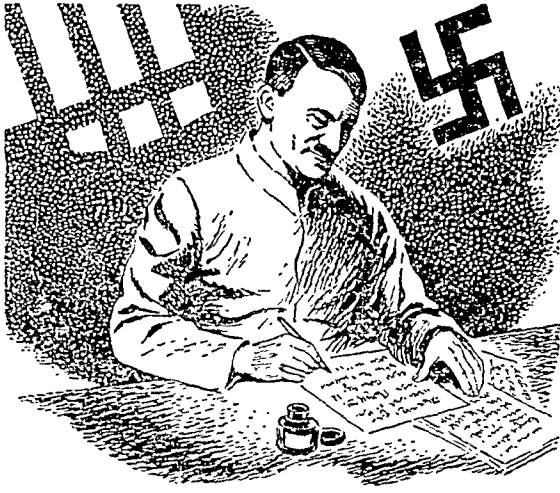
एक वर्ष से भी कम समय में वह जेल से बाहर आ गया और फिर राजनीति में लग गया। जर्मनी की आर्थिक स्थिति के कारण अधिकाधिक जर्मन उसके अनुयायी बनने लगे। अपने मन्त्रपाश में बाँध लेने वाले भाषणों में उसने जर्मनी के तथाकथित दुश्मनों, यहूदियों, कम्युनिस्टों, वेमार संविधान और वर्साई संधि की आलोचना कर उनपर प्रहार किया। "यही जर्मनी के दुःख दैन्य का कारण रहे हैं," उसने कहा। जर्मन जाति एक श्रेष्ठ जाति है, वह कहता था। इस प्रकार के भाषणों से उसे इतनी प्रतिष्ठा प्राप्त हुई कि १९३२ में वह राष्ट्रपति के लिए चुनाव लड़ा और मुकाबले में दूसरा आया। विश्वयुद्ध के लब्धप्रतिष्ठ जनरल वान हिंडनबर्ग को, जो अब बूढ़ा हो चला था, राष्ट्रपति के पद के लिए उससे अधिक वोट मिले थे। अगले वर्ष हिंडनबर्ग ने हिटलर से चांसलर बनने को कहा, जिसे हिटलर तृतीय रिक् कहता था। इसके बाद वह पूर्ण तानाशाह के रूप में सामने आया।

रिश्टाक में अग्निकांड—हिटलर के नेशनल सोशलिस्टों का रिश्टाक में बहुमत नहीं था लेकिन पुलिस तथा उनकी प्राइवेट सेना "स्टार्म ट्रूपर्स" पर उनका नियंत्रण था। इन्हें रिपब्लिक की ओर से किसी प्रकार के हस्तक्षेप के बगैर प्रशिक्षित किया गया था। इसी दौरान जहाँ रिश्टाक की बैठकें हुआ करती थीं, उस भवन में आग लग गयी और हिटलर ने उस भवन को नष्ट करने का अभियोग कम्युनिस्टों पर थोपा। उनमें से सैकड़ों जेलों में ठूँस दिये गये, इनमें रिश्टाक के भी कई सदस्य शामिल थे।

फ्यूरर का अधिनायकत्व—अपने विरोधियों को सरकार से बाहर कर देने पर १९३३ में, हिटलर को अधिनायक के अधिकार प्राप्त हो गये। इनका प्रयोग उसने खुलकर किया। उसने रिश्टाक को भंग कर दिया। जर्मन राज्यों से उनके अधिकांश स्वशासनाधिकार छीन लिये गये और प्रत्येक के लिए चांसलर नियुक्त किये गये। इन लोगों में सबसे महत्त्वपूर्ण हेरमान गोरिंग था, जो प्रशिया का चांसलर बनाया गया था और वह जीवन-पर्यन्त हिटलर के प्रति वफादार रहा।

रूस की कम्युनिस्ट पार्टी की भांति, नाजी पार्टी छोटी ही रखी गयी। हर समय उसमें सख्त अनुशासन रखा जाता था। किसी भी सदस्य से मुक्ति पाने के लिए, जो फ्यूरर की नीतियों से विरोध रखने का साहस करता था, शुद्धीकरण किया जाता था। फ्यूरर की पदवी, जिसका अर्थ 'नेता' है, हिटलर को हिंडनबर्ग की मृत्यु के बाद प्राप्त हुई थी। उसके बाद उसने राष्ट्रपति और चांसलर के पदों को स्वतः अपने हाथ में रखकर एक में मिला दिया था।

धर्म—कैथोलिक और प्रोटेस्टेंट दोनों, ने ही

नाजियों की नीतियों का विरोध किया। सरकार और हिटलर द्वारा जिस सम्मान और भक्ति की मांग की गयी थी, उसने नेशनल सोशलिज्म को एक धर्म और साथ-ही-साथ एक पार्टी बना दिया था। राज्य के प्रति इस प्रकार की कट्टर भक्ति का विरोध करने वाले मंत्रियों और पादरियों को नजरबंदी शिविरों में फेंक दिया जाता था।

आर्थिक परिवर्तन—१९३३ में, हिटलर के सत्तारूढ़ होने के बाद जर्मनी में कुछ आर्थिक परिवर्तन भी हुए। अन्य बातों के साथ-साथ सभी श्रमिक यूनियनें भंग कर दी गयीं। हिटलर ने सत्तारूढ़ होने के समय जो व्यापक बेरोजगारी पायी थी, वह एक व्यापक सार्वजनिक निर्माण कार्यक्रम और बड़े पैमाने पर पुनः शस्त्रीकरण कार्यक्रम द्वारा मिटा दी गयी। वास्तव में, बड़े काम के लिए मजदूरों की इतनी ज्यादा जरूरत थी कि आसपास के देशों के बेरोजगारों को जर्मनी में काम मिला। बहुत से जर्मन पूंजीपतियों ने कम्युनिस्टों की तुलना में हिटलर का समर्थन किया। उन्हें अपने कारोबार कायम रखने की अनुमति दी गयी थी, लेकिन उन पर भारी कर लगा दिये गये थे और उनके उद्योगों पर सरकार का सख्त नियंत्रण था।

मुसोलिनी की ही भांति हिटलर ने भी जर्मनी को आत्मभरित बनाने का प्रयास किया। कृषि और उद्योगों को प्रोत्साहन मिला। ऐसा सामान, जो जर्मनी नहीं बनाता था या उसकी आवश्यकताओं के बराबर उत्पादित नहीं करता था, उसके एवज में दूसरा सामान तैयार करने या कृत्रिम सामग्री का निर्माण करने के हेतु रसायन शास्त्री व्यस्त रखे जाते थे। इस प्रकार कृत्रिम रबर, तेल, कपड़ा और यहां तक कि खाद्य वस्तुओं का आविष्कार हुआ। राष्ट्रीय हितों को सर्वोपरि रखते हुए आयात और निर्यात पर नियंत्रण था। लगभग सभी प्रकार की वस्तुओं के दाम सरकार द्वारा निर्धारित थे। इस प्रकार नाजी सरकार देश में आत्मनिर्भरता लाने के लिए अर्थ-व्यवस्था पर जबरदस्त निगरानी रखती थी।
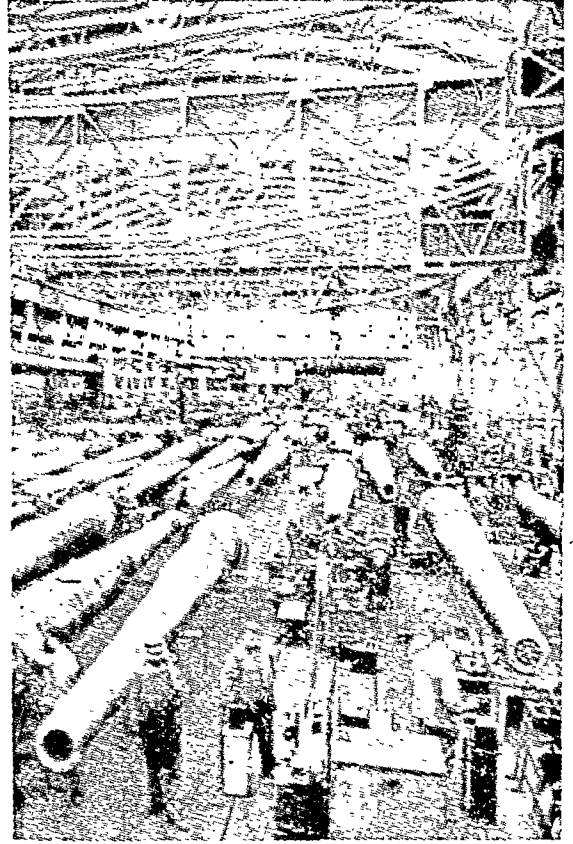
ब्राउन ब्रदर्स

जर्मनी के लिए हिटलर की महत्वाकांक्षा पूरी करने के लिए युद्धास्त्रों की होड़ आरंभ हुई, जिसका परिणाम सीधे सैनिक आक्रमण हुआ।

जर्मनी की महत्त्वाकांक्षा आत्मनिर्भरता से अधिक थी। हिटलर ने दुनिया की अर्थ-व्यवस्था पर प्रभुत्व की योजना बनाई थी, जिसमें जर्मनों का, उसकी शिक्षाओं के अनुसार, सर्वश्रेष्ठ जाति होने के कारण, नेतृत्व होने की बात कही गयी थी।

युद्ध की तैयारी—अपनी महत्त्वाकांक्षाओं की उपलब्धि के लिए हिटलर एक सैनिक मशीन का निर्माण करने में जुट गया था। उसने वर्साई की संधि को ठुकराते हुए जर्मनी को "लीग आफ नेशन्स" से हटा लिया। उसने बहुत शक्तिशाली सेना का निर्माण किया और जर्मन उद्योग को, सैनिक कार्यों

के लिए, यातायात के साधनों की उन्नति और युद्ध-सामग्री के निर्माण में लगा दिया। ऐसे कार्यक्रम के लिए धन की आवश्यकता थी और उस समय कर जर्मनी में सब समयों से ऊँचे थे। गोकि सरकार ने बजट प्रकाशित करना बंद कर दिया था फिर भी यह सर्वविदित बात थी कि वार्षिक घाटा बहुत अधिक था। सख्त नियमों और नाजियों द्वारा किये जा रहे भारी व्यय के बावजूद जर्मन जनता को या तो डर से या इस कारण से कि हिटलर ने उनके लिए रिपब्लिक से बहुत कुछ अधिक किया है, हिटलर का शासन कबूल था। हिटलर अपने कार्यक्रम में इतना कामयाब रहा कि १९३८ तक १९१८ का पराजित और विसैन्यीकृत जर्मनी यूरोप की सबसे बड़ी सैनिक शक्ति के रूप में सामने आया। इसके अलावा चतुराई भरे प्रचार और सभी विरोधियों के निर्दयतापूर्वक खत्म कर दिये जाने के कारण, राष्ट्र एक इकाई के रूप में, बिना किसी प्रकार की आपत्ति उठाये, फ़ूरर का अनुसरण करने को तैयार था।

१. १९१९ में जर्मन रिपब्लिक के समक्ष क्या समस्याएँ थीं?
२. जर्मन रिपब्लिक का पहला चांसलर कौन था?
३. वेमार संविधान को बनाने वाले सम्मेलन में कौन-कौन लोग शामिल थे?
४. वेमार संविधान की मुख्य-मुख्य व्यवस्थाएँ क्या थीं?
५. जर्मन रिपब्लिक जनप्रिय क्यों नहीं हो पायी?
६. १९३३ से पहले हिटलर का इतिहास क्या था?
७. हिटलर को चांसलर बनने को क्यों आमंत्रित किया गया?
८. हिटलर को अधिनायक के अधिकार किस प्रकार मिले? उसने सरकार में परिवर्तन लाने के लिए उनका किस तरह उपयोग किया? उसने अपनी पार्टी को अपने प्रति वफादार कैसे रखा?
९. हिटलर ने जर्मनी में धार्मिक तत्वों पर किस प्रकार प्रभाव डालने की कोशिश की?
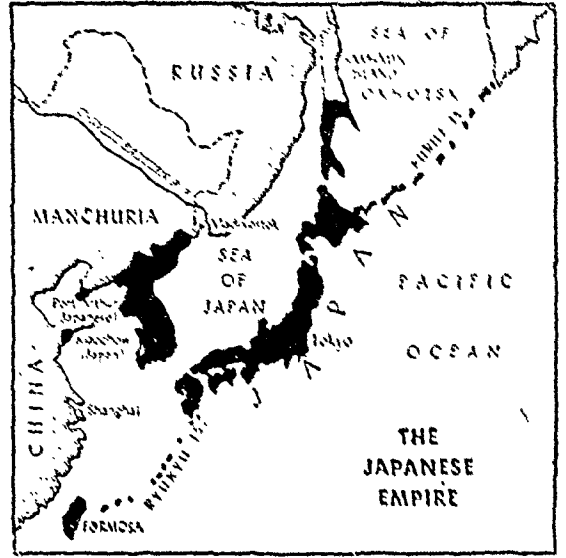
जापानी साम्राज्य

१०. हिटलर की नीतियों ने जर्मनी के जीवन पर किस प्रकार प्रभाव डाला?
११ हिटलर की नीतियों का जर्मनी के बजट और जर्मनी के करों पर क्या प्रभाव पड़ा?
१२. एक विश्व शक्ति के रूप में, जर्मनी के लिए, हिटलर की क्या महत्वाकांक्षा थी?

जापानी सैनिकवादियों की प्रगति

जापानी साम्राज्य—प्रथम महायुद्ध से जापान विश्व के एक बड़े राष्ट्र के रूप में उभरा। अब उसका एक साम्राज्य था जिसमें कोरिया, फारमोसा और पोर्ट आर्थर के अलावा दक्षिण में, भूमध्यरेखा तक चले गए बिखरे-बिखरे छोटे द्वीप थे जिनका शासन मैंडेट द्वारा होता था। इसके अलावा, अब जापान के पास शक्तिशाली नौसेना, समृद्धिशाली व्यापार और एक कुशल सेना थी। निःसंदेह यह पश्चिमी प्रशान्त का शक्तिशाली राष्ट्र बन गया था।

इसके साथ ही साथ जापान बहुत अधिक राष्ट्रवादी बन गया था। जनता को सिखाया जाता था कि देवता के अंशावतार के रूप में सम्राट् हीरोहितो की भक्ति करें। वह जापान का प्रतीक था जिसे देखने की सर्वसाधारण को कभी अनुमति नहीं दी जाती थी। राष्ट्र के धर्म शिंतोवाद से राज्यभक्ति और सम्राट्भक्ति की ओर बढ़ाया गया था। यह

धर्म सम्राट् की पूजा सिखाता था और लोकतंत्रात्मक तरीकों के प्रयोग में बाधा डालता था।

सम्राट् के और देश के प्रति प्रेम को, सर्व-साधारण जनता के बीच, साम्राज्यवाद की भावना को बढ़ाने के लिए प्रयुक्त किया गया। जापान के छोटे से क्षेत्र में, जिसका अधिकांश भाग पहाड़ी है और खेती के लिए अनुपयुक्त है, सात करोड़ लोग रह रहे थे। काम लायक जमीन का क्षेत्रफल लगभग इण्डियाना राज्य के बराबर था। इसके अलावा जापान को अपने निर्माण कार्यों के लिए आवश्यक कच्चा माल और खनिज पदार्थों का अधिकांश आयात करना पड़ता था। जापानी नेताओं ने इस बात पर जोर दिया कि जापान को एशिया की मुख्य भूमि पर और दक्षिण प्रशान्त के द्वीपों में अपने रहने की जगह और आवश्यक खनिज पदार्थों के लिए प्रसार करना ही चाहिए।

चीनियों का दर्दनाक पलायन इतिहास के सबसे बड़े सामूहिक पलायनों में है।

मंचूरिया पर हमला—जापानी नेताओं ने साम्राज्यवादी उद्देश्यों से १९३१ में सेनाओं को मंचूरिया पर हमला करने भेजा। इसके लिए उन्होंने यह बहाना निकाला कि मंचूरिया में जापानी रेलवे सम्पत्ति की चीनी लुटेरों से रक्षा के लिए वे ऐसा कर रहे हैं। यह जापान की नागरिक सरकार की सैनिक शाखा जापानी "डाइट" या पार्लमेंट के प्रति नहीं, अपितु सम्राट् के प्रति उत्तरदायी थी। तो भी, जब कार्रवाई हो चुकी तब जापानी डाइट ने इसकी स्वीकृति प्रदान की।

उस समय जापान में दो राजनीतिक दल थे जिनमें से एक दूसरे की अपेक्षा अधिक राष्ट्रवादी था। १९३२ में एक राज्य क्रांति से, कट्टर राष्ट्रीयतावादी और सैन्यवादी दल ने सत्ता प्राप्त कर ली और जापान को मंचूरिया अभियान के लिए वचनबद्ध कर दिया। इसके बाद से, जापान की शक्ति मंचूरिया पर अधिकाधिक अपने पंजे फैलाने में लग गयी। जापानी सेनाओं ने शीघ्र देश को रौंद दिया और मुख्य चीन के उत्तरी प्रान्तों की ओर बढ़ने लगीं। जापान के युद्धलिप्सु सामन्त अब शासनारूढ़ थे और सैनिक अभियानों से मुख्य चीन और फिलीपीन तथा प्रशान्त के अन्य समृद्धिशाली द्वीपों की ओर बढ़ने की तैयारियाँ कर रहे थे। सम्राट् इस सैनिक गुट के हाथों एक खिलौना मात्र रह गया था और जापान का आर्थिक जीवन, जर्मनी के आर्थिक जीवन की भाँति युद्ध की दिशा में पलट गया था।

तानाशाहों ने अन्य देशों में भी नियंत्रण संभाला

युद्धोपरान्त यूरोप के मुख्य अधिनायकवादी मुल्क रूस, जर्मनी और इटली थे, लेकिन अन्य कई देश निरंकुश शासन की ओर झुक गये थे।

पोलैण्ड—विश्वयुद्ध का एक परिणाम यह भी हुआ था कि जो देश शताब्दियों से अन्य देशों की, खासकर रूस, आस्ट्रिया और जर्मनी की प्रजा थे अब स्वतंत्र राष्ट्र बन गये थे। राष्ट्रपति विल्सन के १४ सूत्रों में से एक में कहा गया था कि पोलैण्ड को स्वतंत्र होना चाहिए और उसकी पहुँच समुद्र तक होनी चाहिए। ज्योंही जर्मनी में क्रांति आरंभ हुई, पोल, जो १८ वीं शताब्दि के अन्तिम वर्षों से रूसियों जर्मनों और आस्ट्रियावालों के मातहत विभाजित रह रहे थे, एक हो गये और उन्होंने एक स्वतंत्र सरकार कायम कर ली। शांति सम्मेलन ने पोलैण्ड की नयी सरकार को मान्यता प्रदान की, लेकिन सीमाओं का प्रश्न एक समस्या था। पोलैण्ड और रूस के बीच तथा पोलैण्ड और जर्मनी के बीच कोई प्राकृतिक सीमा नहीं थी। काफी अध्ययन के बाद इन सीमाओं को एक समझौते द्वारा निर्धारित किया गया, लेकिन पोलैण्ड बाल्टिक सागर में अपनी पहुँच चाहता था। इसलिए उसे बाल्टिक सागर में प्रवेश

दिलाने के लिए एक विचित्र व्यवस्था की गयी। डेंज़िग में, समुद्र तक पहुँचने के लिए एक "पोलिश-गलियारा" स्थापित किया गया और जर्मनी को अधिकार था कि वह कुछ खास स्थानों पर इस गलियारे को पार कर सकता है। ऐसा न होने पर पूर्वी प्रशिया जर्मनी से कट जाता था।

शुरू से ही पोलैण्ड में इतनी अधिक राजनीतिक पार्टियाँ थीं कि शासन चलाना कठिन था। युद्ध का प्रमुख सेनानी जोसफ पिल्सूत्स्की, प्रथम राष्ट्रपति और प्रसिद्ध गीतकार और पियानोवादक इग्नेस पाडरेविस्की, प्रधान मंत्री थे। सरकार कभी भी संतोषजनक नहीं रही और १९२६ में पिल्सूत्की ने, जिसके पीछे सेना थी, राज्य-विप्लव करवाया और अधिनायकवादी अधिकारों वाली एक सरकार स्थापित की।

पोलैण्ड मुख्यतया खेतिहर देश था, गोकि प्रथम विश्वयुद्ध के बाद उसने वाणिज्य में भी उन्नति की थी। रिपब्लिक के अन्तर्गत बहुत सी बड़ी जागीरें तोड़ दी गयी थीं और दस वर्षों तक प्रतिवर्ष, पांच लाख एकड़ भूमि उन किसानों के बीच बांटी गयी थी, जो उस पर खेती करते थे। वाणिज्य में उन्नति के लिए पोलों ने, डेंजिग के अन्तर्राष्ट्रीय नगर के समीप, गाडीनिया नामक अपना बन्दरगाह बनाया था। २५ वर्षों के भीतर ही यह एक छोटे से मछली मारने वाले गाँव से १२ लाख ५० हजार की आबादी वाला एक शहर बन गया था, जो पोलैण्ड के अधिकांश समुद्री व्यापार का नियंत्रण करता था।

पोलैंड के जर्मनी के साथ तथा अपने देश के भीतर रहने वाले अल्पसंख्यकों से झगड़े थे। एक समस्या यहूदियों की थी जिनकी बहुत बड़ी संख्या पोलैंड में रह रही थी। समय-समय पर यहूदियों के खिलाफ हिंसात्मक दंगे हो जाया करते थे और मामला "लीग आफ नेशन्स" के पास ले जाया गया। पोलैंड ने यहूदियों के साथ अच्छे व्यवहार का वायदा किया लेकिन शिकायतें बराबर बनी रहीं। इसी तरह पोलैंड की अच्छी संख्या वाली अल्पसंख्यक यूक्रेनियन और जर्मन जनता ने भी उनके साथ किये जाने वाले दुर्व्यवहार की शिकायतें कीं। हिटलर ने पोलैण्ड स्थित जर्मनों के प्रति पोलैण्ड के दुर्व्यवहार के दावों के आधार पर जर्मनी में पोलैण्ड के खिलाफ जर्मनों की भावनाओं को उभारा। दोनों देशों के बीच मन-मुटाव का कारण पूर्वी प्रशिया को शेष जर्मनी से विभक्त कर देने वाला पोलिश गलियारा भी था। गोकि पोलैण्ड ने अपनी आर्थिक स्थिति बहुत-कुछ सुधार ली थी लेकिन न तो उसकी सरकार ही योग्य थी और न उसके विदेशों से सम्बन्ध ही अच्छे थे।

यूगोस्लाविया—यूगोस्लाविया एक प्राकृतिक राष्ट्र नहीं था। इस देश में रहने वाले सर्ब, क्रोट और स्लाव जातियों के विभिन्न समूह इसके पेश्तर कभी भी एक राष्ट्र के रूप में संयुक्त नहीं हुए थे। उनकी भाषाएँ और संस्कृतियाँ भिन्न-भिन्न थीं। गोकि उन्होंने १९१७ में स्वेच्छा से एक राष्ट्र की स्थापना स्वीकार की थी, पर उन्हें शीघ्र ही एक साथ रहकर काम करने की दिक्कतों का पता चल गया। अन्त में १९२९ में राजा अलेक्जेण्डर ने पार्लमेंट को भंग कर दिया और यूगोस्लाविया में एकतन्त्र शासन की स्थापना की। अगले तीन वर्षों के समय में अलेक्जेण्डर ने स्थानीय मतभेदों को मिटाने की कोशिश की। नयी सीमा रेखाओं को निर्धारित करना और स्थानीय झंडों को फहराने की अनुमति देने से इन्कार करना आसान था लेकिन लोगों की संस्कृति को बदल देना आसान नहीं था और यही वास्तविक समस्या थी। इन मतभेदों के परिणामस्वरूप, अक्तूबर १९३४ में अलेक्जेण्डर की हत्या कर दी गयी। उसका ११ वर्ष का पुत्र पीटर द्वितीय के नाम से गद्दी पर बैठाया गया।

तुर्की—पूर्वी यूरोप में हंगरी, बल्गेरिया, ग्रीस, रूमानिया, यूगोस्लाविया और तुर्की, सभी अधिनायकवादी देश बन गये थे। इन सबमें से तुर्की में सर्वाधिक परिवर्तन हुए। मुस्तफा कमाल नामक एक सुयोग्य सेना-अधिकारी के नेतृत्व में युवा तुर्कों के एक दल ने सुलतान की सरकार को उखाड़ फेंका और एक रिपब्लिक की स्थापना की, जिसमें कमाल को अधिनायक के अधिकार दिये गये। कमाल का उद्देश्य तुर्की का, जिसने कि शताब्दियों से अपने जीवन के ढंग नहीं बदले थे, आधुनिकीकरण करना था। इसके लिए कमाल ने लोगों को आधुनिक
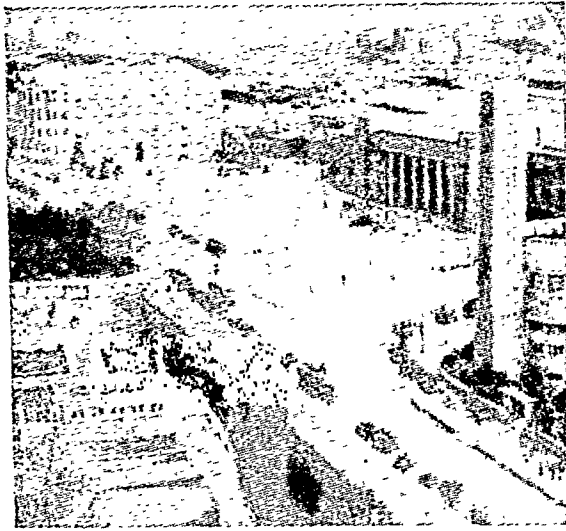
एक्मी

अंकारा का एक रेलवे स्टेशन आधुनिक तुर्की का परिचायक है।

पोशाक पहनना सिखाया और राज्य को मुसलमानी धर्म से अलग कर दिया। महिलाओं को प्रोत्साहित किया गया कि वे अपने घरों से बाहर निकल कर समान आधार पर पुरुषों के साथ घुलें-मिलें। कमाल ने तुर्की की पुरानी लिपि को भी खत्म कर यूरोप की पश्चिमी लिपि का प्रयोग चालू करवाया। गोकि कमाल ने तुर्की को आधुनिकतम बनाने का प्रयास किया लेकिन वह यह नहीं चाहता था कि तुर्की सिर्फ पश्चिम की नकल करे। वह आधुनिक तुर्की की अपनी संस्कृति चाहता था।

देश को आधुनिकतम बनाने की उल्लेखनीय सफलता के साथ-साथ कमाल ने तुर्की को शक्तिशाली भी बनाया। तुर्की अब "यूरोप का बीमार" नहीं कहा जाता था। आधुनिक उद्योग; प्रशिक्षित सेनाएँ और कुस्तुन्तुनिया में सुदृढ़ प्रतिरक्षा कायम होने से तुर्की की उसके पड़ोसियों में इज्जत होने लगी थी।

बाल्टिक राज्य—मध्ययुग के उत्तरार्द्ध में बाल्टिक सागर के इर्दगिर्द की भूमि स्वीडन के अधिकार में थी लेकिन १९ वीं शताब्दि में वह रूस का एक हिस्सा बन गयी। उसने लोगों के "रूसीकरण" का प्रयास किया लेकिन विभिन्न दलों में राष्ट्रीय आंदोलन विकसित हुआ और वे अपनी संस्कृतियों से बँधे रहे। जब प्रथम विश्वयुद्ध में रूस की हार हुई तो इन लोगों ने स्वाधीनता की माँग की। एक बार ऐसा प्रतीत होता था कि वे जर्मनी के हाथों में चले जायंगे लेकिन मित्रराष्ट्रों की विजय के बाद विश्व के बड़े राष्ट्रों ने चार छोटे देशों—फिनलैण्ड, लिथुआनिया, लैटविया और एस्थोनिया—को मान्यता प्रदान की। उन्हें शीघ्र ही "लीग आफ नेशन्स" की सदस्यता प्रदान की गयी।

स्वतन्त्र रिपब्लिक राष्ट्रों के रूप में उनका निर्वाह आसान नहीं था। लिथुआनिया पर, जिसकी सीमाएँ पोलैण्ड और जर्मनी से मिली हुई थीं, बराबर उन देशों का दबाव पड़ता था और यह रूस से दूर भी नहीं था। एस्थोनिया और लैटविया रूसी सीमाओं से मिले होने के कारण, उस देश से होने वाले प्रचार के शिकार थे। उनकी स्वाधीनता स्थापित होने के २० वर्षों के भीतर ही लैटविया, लिथुआनिया और एस्थोनिया अधिनायकवादी शासकों के अन्तर्गत आ गये।

स्पेन—फ्रांसीसी क्रांति के बाद स्पेन में लिबरलों और अनुदारदलीय पार्टियों के बीच संघर्ष

नये बाल्टिक राज्य

लगातार चलता ही रहा। स्पेन प्रथम विश्वयुद्ध में शामिल नहीं हुआ था लेकिन युद्ध के बाद जो आम असंतोष फैला, उससे स्पेन बचा न रह सका। वह औद्योगिक हड़तालों से विशेष रूप से त्रस्त था जिनके बीच-बीच में दंगे और सड़कों पर लड़ाइयाँ छिड़ जाना सामान्य बात हो गयी थी।

१९२१ की क्रांति के बाद १० वर्षों तक स्पेन में सरकारें अस्थायी रहीं। अन्त में १९३१ में राजा एल्फोन्सो फ्रांस भाग गया और "सभी वर्गों के मजदूरों की" एक रिपब्लिक स्थापित की गयी।

नयी सरकार ने स्पेन में क्रांतिकारी परिवर्तन किये। धार्मिक स्वतन्त्रता प्रदान की गयी। स्पेन में जेसुइट पन्थ खत्म कर दिया गया और उसकी सम्पत्ति जब्त कर ली गयी। २३ वर्षों से अधिक आयु के सभी स्त्री-पुरुषों को वोट का अधिकार मिला। कुलीनों की पदवियाँ समाप्त कर दी गयीं और चर्च

तथा कुलीनों की बड़ी जागीरें सरकार की सम्पत्ति बना दी गयीं, जिसका प्रयोग भूमिहीन किसान कर सकें। शिक्षा का सारा प्रबन्ध सरकार करती थी। अब स्पेन अर्ध मध्यकालीन राज्य नहीं रह गया था। अब वह आधुनिक अर्ध समाजवादी राष्ट्र था।

स्पेन में बहुत से लोग ऐसे थे जो नयी सरकार को पसंद नहीं करते थे। "दक्षिण पंथी," जिनमें पादरी और भूतपूर्व कुलीन थे, चाहते थे कि राजतंत्र के अन्तर्गत क्रांति के पहले की स्थिति लौट आये जब कि उन्हें विशेषाधिकार प्राप्त थे। दूसरी ओर कट्टर वामपक्षी दल चाहता था कि स्पेन और अधिक समाजवादी तौर-तरीके अपनाये। विद्रोहों के द्वारा सरकार को अपदस्थ करने के प्रयत्न हुए। इसके अलावा विश्वव्यापी मंदी के कारण फैली बेरोजगारी और गरीबी ने सत्तारूढ़ सरकार की प्रतिष्ठा को कम कर दिया था।

अन्त में, १९३६ की जुलाई में जनरल फ्रेंसिस्को फ्रेंको ने सेना में एक क्रांति का नेतृत्व किया। वह फालंगहे कहलाने वाली एक फासिस्ट पार्टी का अध्यक्ष था। लगभग सभी अफसरों और करीब दो-तिहाई प्रशिक्षित सैनिकों ने फ्रेंको का अनुसरण किया और सरकार के समर्थन में बहुत थोड़े-से सैनिक रह गये। इटली के फासिस्ट और जर्मनी के नाजी दोनों ही फ्रेंको की मदद को आये। उन देशों से हजारों की संख्या में अफसर और सैनिक फ्रेंको की सेना में "स्वयंसेवकों" के रूप में शामिल हुए। दूसरी ओर, रूस ने उन लोगों को मदद भेजी जो स्पेन की रिपब्लिक के समर्थक थे और "लायलिस्ट" कहलाते थे। औपचारिक तरीके से ब्रिटिश, अमेरिकी और फ्रांसीसियों ने इस संघर्ष में किसी भी पक्ष की ओर से भाग लेने से इन्कार किया था लेकिन इन लोकतन्त्रात्मक देशों के बहुत से स्वयंसेवक लायलिस्टों की ओर से लड़े। लेकिन हिटलर और मुसोलिनी ने जो शस्त्र दिये थे, उन्होंने अन्त में अन्य देशों के व्यक्तियों की सहायता को नाकामयाब बना दिया। २८ मार्च, १९३९ को गृहयुद्ध फ्रेंको की विजय के साथ समाप्त हुआ।

फ्रेंको ने अधिनायकवादी शासन स्थापित किया। रोमन कैथोलिक चर्चों को उनकी पुरानी स्थिति में प्रतिष्ठित किया गया। जमीन चर्चों और कुलीनों को लौटा दी गयी। श्रमिक यूनियनें भंग कर दी गयीं और भाषण-स्वातन्त्र्य और समाचार-पत्रों पर प्रतिबन्ध लग गया। फ्रेंको को स्पेनवासियों के जीवन पर सर्वोच्च अधिकार मिल गया था।

लोकतन्त्र के विरुद्ध अधिनायकवाद—विश्वयुद्ध समाप्त होने के १५ वर्ष बाद दुनिया के बड़े हिस्से में लोकतन्त्र मिटा दिया गया था। बड़े लोकतंत्रात्मक राष्ट्र फ्रांस, ब्रिटेन और अमेरिका अब भी पश्चिमी यूरोप के कुछ छोटे लोकतन्त्रात्मक देशों के साथ खड़े थे। लेकिन ऐसा प्रतीत होता था कि वे

दुनिया को अपने उदाहरण का अनुकरण करने के लिए प्रभावित कर पाने में असमर्थ हैं।

१. प्रथम विश्वयुद्ध की समाप्ति के अवसर पर जापानी साम्राज्य में कौन-कौन से देश सम्मिलित थे?
२. १९२६ के बाद जापान का सम्राट् कौन था? जापानी जनता उसे किस रूप में देखती थी?
३. जापान का राज्य धर्म क्या था?
४. जापान की आर्थिक समस्या क्या थी?
५. १९३२ में जापान में किस प्रकार की सरकार को नियंत्रण मिला? उनकी महत्त्वाकांक्षा क्या थी?
६. जापान का मंचूरिया में कैसे युद्ध प्रारम्भ हुआ?
७. प्रथम विश्वयुद्ध और द्वितीय विश्वयुद्ध के बीच किन-किन छोटे मुल्कों में अधिनायकवाद स्थापित हुआ?
८. "पोलिश-गलियारा" क्या था?
९. पिल्सुत्की और पाडरेविस्की तथा फ्रैंको कौन थे?
१० यूगोस्लाविया की मुख्य समस्या क्या थी?
११. तुर्की एक आधुनिक राष्ट्र कैसे बना?
१२. स्पेन में गृह-युद्ध की कहानी सुनाओ।

विचार-विमर्श के लिए प्रश्न

१. "क्रांति की बहुत बड़ी कीमत चुकानी पड़ती है।" इस कथन की सत्यता की अपने विचारों से पुष्टि करो।

२. क्या रूसी संविधान में धर्म की स्वतन्त्रता का वही मतलब है जो संयुक्त राज्य के संविधान में अधिकार विधेयक (बिल आफ राइट्स) का।

३. कम्युनिज्म फासिज्म से किस रूप में भिन्न है?

४. हिटलर और मुसोलिनी ने युवक संगठनों पर इतना अधिक जोर क्यों दिया?

५. इटली, जर्मनी और स्पेन क्रमशः मुसोलिनी, हिटलर और फ्रैंको के मातहत एकदलीय या तानाशाही राज्य क्यों कहलाये?

६. यूगोस्लाविया विल्सन के १४ सूत्रों में से एक का उल्लंघन किस प्रकार था?

७. क्या बहुत से तानाशाहों की कार्यक्षमता स्वतन्त्रता के अपहरण की कीमत के बराबर थी? क्या वह वस्तुतः उनकी योग्यता थी?

८. इस अध्याय में वर्णित घटनाओं से मानव की प्रगति को प्रोत्साहन मिला या उसकी अवनति हुई?

इतिहास के उपकरणों का प्रयोग

एक. नाम तिथियाँ और स्थान

(क) क्या तुम इन शब्दों को स्पष्ट कर सकते हो?

"ब्लैकशर्ट"— बोल्शेविकी— चांसलर— कलेविटव्स (सामूहिक खेत)—धर्म संधि—अधिनायकवाद—फालंगहे—फासिस्ट—पंचवर्षीय योजना—फ्यूरर—इलडूचा—कुलक—नाजी—नयी आर्थिक नीति—"पोलिश गलियारा"—पोलितब्यूरो—रिशराट्—रिश्टॉक—सोवियत—"स्टार्म ट्रूपर्स"—एकदलीय शासन—तृतीय इन्टरनेशनल—तृतीय रिक—दक्षिण पन्थी।

(ख) इन तिथियों के बारे में बताओ:

१९१९—१९२२—१९३१—१९३३—१९३६

(ग) निम्नलिखित स्थान नक्शे में दिखाओ:

बाल्टिक राज्य—डैन्ज़िग—एस्थोनिया—फारमोसा—कोरिया—लैटविया—लिथुआनिया—मंचूरिया—पोर्ट आर्थर—"पोलिश गलियारा"—स्पेन—स्विटजरलैण्ड—तुर्की—वेटिकन सिटी—वेमार—यूगोस्लाविया।

(घ) क्या तुम इन व्यक्तियों के बारे में बता सकते हो?

अलेक्जेन्डर—एल्फोन्सो—फ्रेडरिक एबर्ट—फ्रांसिस्को फ्रैंको—हेरमान गोरिंग—हीरोहितो—एडोल्फ हिटलर—मुस्तफा कमाल—निकोलस लेनिन—मुसोलिनी—निकोलस द्वितीय—इग्नेस पाडरेवस्की—जोसफ पिल्सूत्की—जोसेफ स्तालिन लियोट्राटस्की—विक्टर इमेन्युअल द्वितीय।

दो. क्या तुम अपने विचार स्पष्ट प्रकट कर सकते हो?

(१) निम्नलिखित प्रसंगों में से एक के बारे में कक्षा को बताओ:

(क) शिन्तोवाद और उसका जापान पर प्रभाव।

(ख) एक रूसी कलेक्टिव का जीवन।

(ग) मुसोलिनी का रोम को प्रयाण।

(घ) रूसी कुलक।

(ङ) जर्मनी में नाजी शासन के अन्तर्गत शिक्षा।

(च) फासिस्ट इटली में श्रम-संगठन।

(२) एक पृष्ठ को तीन हिस्सों में बाँटो। एक में नाजी जर्मनी में राजनीतिक और व्यक्तिगत स्वतंत्रता पर लगाई गई पाबन्दियों को लिखो; दूसरे में, पहले कालम में दिखलाई गयी पाबन्दियों के आगे सिलसिलेवार रूस की स्थिति दिखाओ और तीसरे में संयुक्त राज्य की स्थितियों का वर्णन करो। अपने-अपने पर्चों का मिलान कर जहाँ आवश्यक हो, अपनी सूची में संशोधन या परिवर्तन करो।

(३) इस अध्याय में वर्णित किसी एक व्यक्ति की जीवनी लिखो जिसमें तुम्हारी दिलचस्पी हो। उसके जीवन की मुख्य-मुख्य बातें कक्षा को बताओ।

तीन. दलों के रूप में कार्य

यूरोप के खाके में एक रंग में १९३८ के लोकतंत्रात्मक देश और दूसरे रंग में अधिनायक-वादी देश दिखाओ। नक्शे में प्रत्येक राज्य की जनसंख्या भी अन्दाज से दिखाओ।
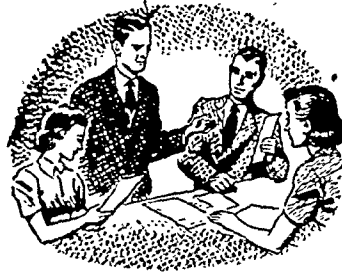
३८ लोकतंत्रों के समक्ष अनेक समस्याएँ

मित्र राष्ट्रों को प्रथम महासमर में विजय अवश्य मिल गयी थी लेकिन भारी कीमत पर। विश्व के लोकतंत्रों के समक्ष अब कई गुरुतर समस्याएँ थीं जो उनके नेतृत्व को चुनौती दे रही थीं। भारी ऋण, गोला-बारूद और युद्ध का अन्य सामान बनाने वाले उद्योगों को बंद कर देने से उत्पन्न बेरोजगारी, सेना से बड़ी संख्या में लौटने वाले सैनिकों को रोजगार प्रदान करने तथा अनुभवी लोगों की देखभाल का खर्च, यह सब लोकतंत्रों पर लदे हुए बोझ कुछ समस्याएँ थीं। पुनर्निर्माण की समस्याएँ भी बहुत जटिल थीं।

ब्रिटेन

प्रथम विश्वयुद्ध ने ब्रिटेन की अर्थव्यवस्था को बड़ा धक्का पहुँचाया था। चंद लोगों ने युद्ध में अपार दौलत समेटी थी, लेकिन श्रमिक जनता के बहुसंख्यक लोगों की आर्थिक स्थिति में कोई सुधार नहीं हुआ था। युद्धोपरान्त विश्व के बाजारों में इंगलैण्ड को गहरी प्रतियोगिता का मुकाबला करना पड़ रहा था क्योंकि अन्य देशों ने, जिन्होंने युद्ध के दौरान गोला बारूद बनाने के लिए उत्पादन बढ़ाया था, अब अपने कारखानों में नागरिक माल बनाना शुरू कर दिया था। इनकी निर्मित वस्तुएँ इंगलैण्ड में बनी वस्तुओं के मुकाबले बढ़ी-चढ़ी होने लगी थीं जिसका परिणाम इंगलिश कारखानों में बहुत से मजदूरों की बेरोजगारी होता था।

इस स्थिति से उभरने की उम्मीद में अंग्रेज मजदूर रैम्जे मैकडोनाल्ड के नेतृत्व में बड़ी संख्या में लेबर पार्टी में शामिल होने लगे। नये लेबर सदस्यों में से अधिकांश उदार (लिबरल) दल से आ

हजारों की संख्या में लोग ब्रिटेन में और अन्यत्र बेरोजगार थे। इस प्रकार के प्रदर्शन जुलूस साधारण बात थी। भूतपूर्व सैनिक न्यूयार्क शहर की सड़कों के कोनों पर सेब बेचा करते थे। चारों ओर घोर निराशा थी।
एक्मी

रहे थे और इस प्रकार वह पार्टी कमजोर होती जा रही थी। १९२२ में जब लेबर पार्टी पार्लमेंट की बहुसंख्यक सीटों को प्राप्त करने में सफल हुई, रैम्जे मैकडोनाल्ड प्रधानमंत्री बन गया। ब्रिटेन की आर्थिक स्थिति में कोई सुधार नहीं आया और मैकडोनाल्ड एक वर्ष के भीतर ही प्रधानमंत्री के पद से हटा दिया गया।

प्रधानमंत्री स्टेनली बाल्डविन—दूसरा प्रधानमंत्री स्टेनली बाल्डविन अनुदार पार्टी का नेता था। १९२४ के चुनावों में अनुदार दल का पार्लमेंट में इतना अधिक बहुमत हो गया था जितना कि पिछले कई वर्षों में किसी भी पार्टी का नहीं हुआ था। अनुदारदलीय सरकार ने वृद्धावस्था और बेरोजगारी की सुविधाओं का विस्तार किया तथा संरक्षणात्मक तटकर लगाये लेकिन इन उपायों से इंगलैण्ड की आर्थिक दुर्दशा में कोई सुधार नहीं आया। वस्तुस्थिति यह थी कि बेरोजगारी बढ़ चली थी और बाल्डविन सरकार के खर्चे की कटौती में असमर्थ रहा। जब कोयला खानों के संचालकों ने खनिकों से अधिक घण्टे काम करने और साथ साथ अपने वेतन में कटौती स्वीकार करने को कहा तो खनिकों ने हड़ताल कर दी। १९२६ में सहानुभूति में हुई २० लाख मजदूरों की राष्ट्रव्यापी हड़ताल ने इंगलैण्ड को आर्थिक अवरोध और सामाजिक क्रांति के कगार पर ला दिया। खतरों के बावजूद खनिकों की माँगें पूरी नहीं की गई और हड़ताल असफलता के साथ समाप्त हुई। इंगलैण्ड की बड़ी समस्या बेरोजगारी की थी।

मिला-जुला मंत्रिमंडल—१९३१ में मैकडोनाल्ड ने, जो पुनः प्रधानमंत्री बन गया था, उदार और अनुदार दलों को, एक मिली-जुली सरकार बनाने के लिए, जिसके मंत्रिमंडल में हर पार्टी के सदस्य रहें, आमंत्रित किया। पार्लमेंट में अनुदार दलीय सदस्यों की संख्या सर्वाधिक थी और इंगलैण्ड उनके प्रभाव में बहुत राष्ट्रवादी हो गया था। विदेशी वस्तुओं को बाहर ही रखने के लिए तटकर की दरें और बढ़ा दी गयीं और "सिर्फ़ ब्रिटिश वस्तुएँ खरीदो" आन्दोलन चलाये गये। लेकिन इन सब उपायों से सामान्य मजदूर को कोई लाभ नहीं हुआ, वह अब भी बगैर रोज़गार ही था।

रूस के साथ सम्बन्ध—ब्रिटेन को रूस, जर्मनी और इटली के समग्रवादी राज्यों के प्रति क्या दृष्टिकोण अपनाना चाहिए? यह एक अहम समस्या विश्वयुद्ध के बाद ब्रिटेन के सामने थी। फासिस्ट और कम्युनिस्ट अन्य यूरोपीय देशों में बहुत से अनुयायी बनाने में सफलता प्राप्त कर रहे थे लेकिन इंगलैण्ड में वे अधिक सफल नहीं हुए थे। गोकि ब्रिटेन साम्यवाद का समर्थक नहीं था, लेकिन व्यापार-सम्बन्धों के कारण १९२४ में ब्रिटेन ने रूस की कम्युनिस्ट सरकार को मान्यता प्रदान की थी और क्रेमलिन में अपना राजदूत भेजा था।

इटली के साथ सम्बन्ध—इटली के एकीकरण के बाद से ब्रिटिश और इटली की सरकारों के बहुत ज्यादा मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध थे। जब मुसोलिनी ने अपने साम्राज्यवादी पंजे अफ्रीका में फैलाने शुरू किये तो दोनों देशों के स्वार्थ आपस में टकराये। १९३५ में इटली की इथिओपिया विजय और भूमध्यसागर को 'इटली की झील" बनाने की उसकी महत्त्वाकांक्षा से ब्रिटेन को चिन्ता हुई क्योंकि भूमध्यसागर भारत जाने वाले 'जीवन मार्ग' के रूप में इंगलैण्ड के लिए बहुत बड़ा महत्त्व रखता था।

जर्मनी के साथ सम्बन्ध—जर्मनी में वेमार रिपब्लिक की स्थापना के बाद से इंगलैण्ड की ज्यादातर सहानुभूति जर्मनी के साथ हो चली थी। उसे आशा थी कि जर्मनी के शक्तिशाली होने से पश्चिमी यूरोप में फ्रांस का आर्थिक प्रभुत्व रुक जायगा। तथापि, जब हिटलर ने अपने हमलों का क्रम जारी किया, तब ब्रिटेन भयभीत हो गया और उसने जर्मनी के दो संभाव्य दुश्मनों —फ्राँस और पोलैण्ड से नजदीकी सम्बन्ध स्थापित कर लिये।

बावजूद इस तथ्य के कि अधिनायकवादी बड़ी सेनाएँ बना रहे थे, अंग्रेज युद्ध या सैनिक तैयारियों के सख्त खिलाफ थे। उन्होंने महायुद्ध में गहरी क्षति उठाई थी और वे जानते थे कि दूसरे युद्ध से उनकी कोई भलाई नहीं होगी तथा उनके कष्ट और भी बढ़ जायेंगे। ब्रिटेन देख रहा था कि नयी और आक्रमण के लिए उद्यत सरकारें इतिहास का निर्माण कर रही हैं जब कि वह अपने साम्राज्य की

समस्याओं और अत्यधिक खराब घरेलू आर्थिक स्थिति में बुरी तरह फँसा हुआ था।

१. प्रथम विश्वयुद्ध के बाद ब्रिटेन में लेबर पार्टी की सदस्य संख्या क्यों बढ़ी ? उस पार्टी का नेता कौन था ?
२. स्टेनली बाल्डविन कौन था ? उसके प्रथम प्रधानमंत्रित्व के दौरान पार्लमेंट ने कौन से कानून पास किये ?
३. मिला-जुला मंत्रिमंडल क्या होता है ?
४. ब्रिटेन ने सोवियत सरकार को मान्यता क्यों दी ?
५. इटली और ब्रिटेन के मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों में तनाव क्यों पैदा हुआ ?
६. हिटलर के सत्तारूढ़ होने के बाद ब्रिटेन का जर्मनी के प्रति दृष्टिकोण क्यों बदला ?
७. इस काल में शस्त्रीकरण के प्रति ब्रिटिश सरकार की नीति क्या थी और क्यों थी ?

ब्रिटिश साम्राज्य क्षीण होने लगा

ब्रिटेन की समस्याओं में एक बड़ी समस्या उसके डोमीनियनों और उपनिवेशों की बढ़ती हुई जबरदस्त राष्ट्रीय भावना थी जो कभी-कभी हड़तालों और दंगों के रूप में प्रकट होती थी।

अनेक वर्षों तक पश्चिमी राष्ट्रों ने अपने उपनिवेशों के प्रति ऐसा आचरण किया था कि मानो ईश्वर ने उन्हें उन लोगों पर शासन करने और उन तक पाश्चात्य सभ्यता को फैलाने के लिए नियुक्त किया है जिन्हें वे "पिछड़े" समझते थे।

यह तीव्र राष्ट्रीय गौरव और श्रेष्ठता की भावना छुआछूत की बीमारी थी और उन देशों में, जो उपनिवेश थे, यह व्यापक रूप से फैल गयी थी। विश्वयुद्ध के बाद ब्रिटिश उपनिवेशों से ही नहीं, अपितु अन्य क्षेत्रों से भी माँग उठी थी कि उपनिवेशों को आजादी दी जाय। जब यह सुझाव दिया गया कि अभी वे स्वशासन की जिम्मेदारियाँ संभालने के लिए तैयार नहीं हो पाये हैं तो उसके उत्तर में औपनिवेशिक नेताओं ने कहा कि "हम विदेशी राष्ट्रों द्वारा अच्छी तरह शासित होने की अपेक्षा अपने कुशासन में रहना पसंद करेंगे।"

आयर—अन्य कहीं भी स्वाधीनता की इतनी प्रबल माँग नहीं हुई थी जितनी दक्षिण आयरलैंड में, जो सभी व्यावहारिक कार्यों के लिए एक स्वतंत्र राष्ट्र बन गया था। युद्ध के बाद सिनफिनेर, १९१४ के होमरूल कानून द्वारा उन्हें प्राप्त सुविधाओं से अधिक की माँग कर रहे थे। वे पूर्ण स्वशासित देश चाहते थे। अन्त में, १९२० में विश्वयुद्ध के प्रधान मंत्री लायड जार्ज को जो उस समय भी प्रधान मंत्री थे, पार्लमेंट से नया कानून बनवाने में सफलता मिली। इस कानून के अनुसार छह उत्तरी काउन्टियाँ—अलस्टर—ब्रिटेन के लिए छोड़ दी गयीं। २६ दक्षिणी काउन्टियों को, जो लगभग ठोस रूप से रोमन कैथोलिक थीं, अपनी पार्लमेंट के मातहत स्वशासन का अधिकार मिल गया। वे राजा के प्रति वफादारी रखने वाले ब्रिटिश साम्राज्य के एक अंग के रूप में बनी रहीं। आइरिश फ्री स्टेट ने, जैसे कि वे पुकारी जाती थीं, इस विभाजन का विरोध किया, लेकिन १९२१ में हस्ताक्षर की गयी एक संधि के अन्तर्गत इस आधार पर ब्रिटेन के अन्तर्गत स्वतंत्र राज्य (डोमीनियन) का स्तर स्वीकार किया गया कि अलस्टर, यदि चाहे तो, दक्षिण के साथ मिलने के लिए मत दे सकता है। अलस्टर ने आईरिश फ्री स्टेट से अलग रहने के पक्ष में मत दिये। अलस्टर ब्रिटिश पार्लमेंट में अपने सदस्य भेजता है और उसका शासन ब्रिटेन के एक अंग के रूप में चलता है।

ईमन डी वेलेरा नामक एक अमेरिका में उत्पन्न आइरिश १९३२ में, आइरिश फ्री स्टेट का राष्ट्रपति बना। वह उग्र राष्ट्रवादी था। उसके निर्देशन
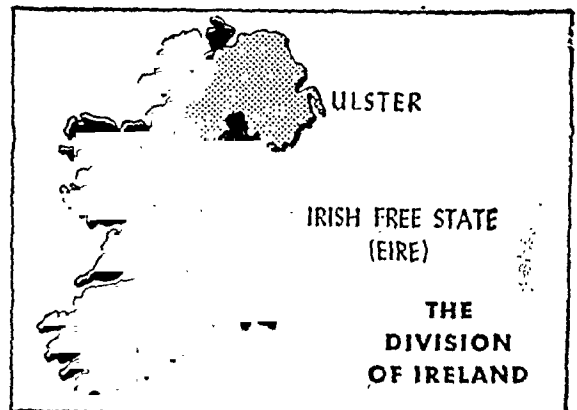
आयरलैंड का विभाजन

में आयरलैंड ने राजा के प्रति भक्ति की शपथ को रद्द किया और ब्रिटेन को दी जाने वाली रकम देना बंद कर दिया। ब्रिटेन ने विरोध किया लेकिन आयरलैण्ड अपने निश्चय पर अड़ा रहा। उन्होंने अपने देश का आइरिश नाम आयर रखा, जो उनकी नयी आजादी के एक प्रतीक के रूप में था।

मिस्र—प्रथम विश्वयुद्ध में जब तुर्की जर्मनी के साथ मिल गया, ब्रिटेन ने तुर्की के साथ मिस्र के सभी प्रकार के सम्बन्ध खत्म कर दिये और मिस्र को ब्रिटिश संरक्षित राज्य बनाया। चूँकि युद्ध काल में आदमियों और सामग्री की माँग बढ़ चली थी, इसलिए ब्रिटेन ने मिस्र पर अपना नियन्त्रण और कड़ा कर दिया था। मिस्र के एक शक्तिशाली राष्ट्रवादी दल ने स्वाधीनता की माँग की।

१९२२ में एक संधिपत्र तैयार किया गया जिस में मिस्र की स्वाधीनता मंजूर करते हुए ब्रिटेन को स्वेज नहर पर नियन्त्रण रखने, मिस्र में सशस्त्र सेनाएँ रखने और सूडान के नियन्त्रण में ब्रिटेन का भी हिस्सा रखने की व्यवस्था रखी गयी थी। मिस्रियों ने इस बात का विरोध किया और कहा कि यह स्वाधीनता नहीं है।

१९३६ की एक नयी संधि में ब्रिटेन काहिरा और अलेक्जेण्ड्रिया से अपनी फौजें हटाने और मिस्र को लीग आफ नेशन्स का सदस्य बनाने में मदद करने को राजी हुआ। मिस्र ने तब ब्रिटेन के स्वेज नहर के संरक्षण और सूडान में हिस्सा बाँटने के अधिकारों को स्वीकृति प्रदान की।

भारत—युद्ध के परिणामस्वरूप भारत की बहुत ज्यादा देनदारी हो गयी थी। हजारों की संख्या में भारतीय ब्रिटिश सेना में भरती हुए थे और उन्होंने मित्रराष्ट्रों की ओर से बहुत बड़ा काम किया था। बहुत से भारतीयों का विश्वास था कि युद्ध में उनके प्रयत्नों के कारण वे आजादी पाने के हकदार हैं।

भारत में कई धार्मिक फिर्के थे, लेकिन हिन्दुओं ने स्वशासन की माँग के लिए मार्गदर्शन किया। उनके नेता महात्मा गाँधी थे, जो एक हिन्दू थे। उनके माता-पिता ने उन्हें आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में पढ़ने इंगलैण्ड भेजा। वापस घर लौटने पर गांधी ने बम्बई में वकालत शुरू की और तब कई वर्ष दक्षिण अफ्रीका में बिताये। १९२४ में वे स्वशासन के संघर्ष में सहायता के लिए भारत लौटे। लेकिन उनका यह "संघर्ष" असामान्य था क्योंकि गाँधी हिंसा के खिलाफ थे। उन्होंने सोचा कि भारतीय शांति के साथ लेकिन दृढ़तापूर्वक ब्रिटेन से सहयोग से इन्कार करते हुए अपनी मांगों की पूर्ति करा सकते हैं। उन्हें ब्रिटिश कानूनों को नहीं मानना चाहिए, ब्रिटिश माल नहीं खरीदना चाहिए और अंग्रेजों के मातहत कोई पद भी स्वीकार नहीं करने चाहिए। अगर वे इस सविनय अवज्ञा और अहिंसा की नीति पर चलते रहे तो गांधी का विश्वास था कि अंग्रेजों को भारत छोड़ने को विवश होना पड़ेगा। इस तथ्य के बावजूद कि भारतवासी गांधी को अपना आध्यात्मिक नेता और शिक्षक मानते थे और उन्हें महात्मा

एकमी

जवाहरलाल नेहरू, जो महात्मा गांधी के बहुत बड़े प्रशंसक थे, १९४६ में बम्बई की अखिल भारतीय कांग्रेस में विचार-विमर्श करते हुए।

मानते थे; बहुत से भारतीय उनके अहिंसात्मक नेतृत्व से ऊब गये थे और उन्होंने सरकार के खिलाफ हिंसात्मक तरीके अपनाये।

१९१९ में ब्रिटेन ने भारत को कुछ स्वशासनाधिकार देने का निश्चय किया लेकिन भारतीयों

को संतुष्ट करने के लिए यह पर्याप्त नहीं था और संकट बना ही रहा। १९३० में लंदन में ब्रिटिश तथा भारतीय नेताओं के बीच एक सम्मेलन हुआ। इन समझौता वार्ताओं के फलस्वरूप १९३५ में भारत के लिए एक संविधान स्वीकृत हुआ। इससे भारत ११ प्रान्तों में बँट गया।

१९३७ के चुनाव में कांग्रेस पार्टी, पंडित नेहरू के नेतृत्व में, जोकि गांधी जी के मित्र और अनुयायी थे, विजयी हुई। इस पार्टी ने अपने देश के लिए अधिक स्वशासनाधिकार माँगे। भारत अगर अपनी माँगों को संयुक्त होकर माँगता तो वह अधिक सफल हो सकता था। लेकिन देश के दो प्रमुख वर्गों—हिन्दू और मुसलमानों के बीच मतभेद बढ़ते ही चले गये। मुसलमानों को खतरा था कि हिन्दू-शासित भारत में उनकी स्थिति ब्रिटिश-शासित भारत से भी बदतर हो जायगी। इसलिए वे मुसलमानों के लिए अलग राज्य चाहते थे। चूँकि भारत स्थित दल आपस में ही एक मत नहीं थे, इसलिए ब्रिटेन ने उस समय भारत को स्वशासन प्रदान करने की दिशा में अधिक कुछ नहीं किया।

दक्षिण अफ्रीका—दक्षिण अफ्रीका में भिन्न स्थिति थी। वह जातीय समस्याओं से बुरी तरह ग्रस्त था। जब नीग्रो सुशिक्षित होने लगे तो उन्होंने उस देश में, जो कि बुनियादी तौर पर उनका मुल्क था, श्वेत जाति के लोगों को अधिक उच्च राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक स्थिति में रखे जाने का विरोध किया। यह प्रश्न कि एक नीग्रो को किस अंश तक सामाजिक और राजनीतिक अधिकार दिये जायँ, तब दक्षिण अफ्रीका में चुनावों का प्रश्न बन गया था। उस देश में बसे हिन्दू भी अधिक अशांत हो उठे थे। समय-समय पर नीग्रो और हिन्दू यूरोपियनों के खिलाफ दंगे कर डालते थे, जिनमें खून-खराबी होती थी।

दक्षिण अफ्रीका में भी आयरलैंड और भारत की भाँति, ब्रिटेन से पूर्ण रूप से सम्बन्ध विच्छेद किए जाने की जबरदस्त माँग थी। एक नेशनलिस्ट पार्टी बनाई गयी जिसमें बोअर जनता के भी अधिकांश लोग शामिल थे, जो नीग्रो लोगों के अधिकारों के सख्त खिलाफ थे। वे विशेष रूप से, एक रिपब्लिक की स्थापना के पक्ष में थे। जान स्मट्स ने, जो कई वर्षों तक प्रधान मंत्री रहा, कुछ समय के लिए डच और अंग्रेज वंशी लोगों को मिलाये रखा लेकिन आने वाले वर्षों के लिए संकट धीरे-धीरे अंकुरित हो रहा था।

कनाडा का महत्त्व बढ़ा

कनाडा ने भी युद्ध में बहुत महत्त्वपूर्ण हिस्सा लिया था। उसने ब्रिटिश साम्राज्य की फौजों के लिए सैनिक और रसद दोनों ही चीजें दी थीं। युद्ध समाप्त होने पर उसने शांति सम्मेलन में अपने प्रतिनिधि भेजे। जब लीग आफ नेशन्स की स्थापना हुई तो वह एक सक्रिय सदस्य बन गया। गोकि युद्ध से पहले कनाडा के विदेशी मामले ब्रिटेन देखता था पर १९२३ में कनाडा ने संयुक्त राज्य के साथ स्वतः अपनी व्यापार संधि की बातचीत की।

कनाडा का महत्त्व बढ़ने का एक कारण उसका तेजी से हो रहा आर्थिक विकास था। उसकी सम्पत्ति और आजीविका का मुख्य साधन खेती था और वह ग्रेट ब्रिटेन तथा संयुक्त राज्य दोनों को उद्योगों के लिए कच्चा माल देता था। युद्ध के दौरान और बाद में स्वतः कनाडा में उद्योग तेजी से पनपे। अपने आर्थिक विकास में सहायक के रूप में, उसने दो रेल-मार्ग बना कर देश को अतलांतक से लेकर प्रशान्त तक जोड़ दिया। साम्राज्य के कुछ हिस्सों से भिन्न, कनाडा के ब्रिटिश सरकार के साथ सम्बन्ध संतोष-जनक बने रहे।

वेस्टमिंस्टर अधिनियम

चूँकि ब्रिटिश साम्राज्य के बहुत से अंग्रेजी भाषा-भाषी हिस्से यह महसूस करते थे कि वे स्वतः शासन करने में पूर्ण रूप से समर्थ हैं इसलिए १९२६ में ब्रिटेन और डोमिनियनों के प्रतिनिधियों के एक सम्मेलन में स्वशासन का एक प्रस्ताव पास हुआ। प्रस्ताव के अनुसार "ब्रिटेन और डोमीनियन ब्रिटिश साम्राज्य के अन्तर्गत बराबर दर्जे वाले समुदाय हैं। उनके घरेलू या विदेशी मामलों में वे एक-दूसरे के मातहत किसी भी रूप में नहीं हैं। गोकि वे सम्राट् के प्रति वफादारी की एक सामूहिक शपथ से बंधे

रहेंगे और ब्रिटिश राष्ट्रमण्डल के सदस्यों के रूप में स्वतंत्र रूप से शामिल होंगे।" १९३१ में ब्रिटिश सरकार ने प्रस्ताव स्वीकार किया और उसे कानून बनाया। यह "वेस्टमिस्टर अधिनियम" के नाम से पुकारा जाता है।

इन आन्दोलनों के बावजूद दूर-दूर तक फैले उपनिवेशों के साथ ब्रिटिश साम्राज्य कायम रहा। दुनिया के नक्शे से ज्ञात होगा कि दर्जनों छोटे-छोटे द्वीप या महाद्वीपों के बड़े-बड़े हिस्से ग्रेट ब्रिटेन के थे। पर 'अंग्रेजी भाषा-भाषी डोमीनियन स्वतन्त्र राष्ट्र थे और वे ब्रिटेन के साथ ब्रिटिश राष्ट्रमण्डल का निर्माण करते थे।

१. १९२० के आयरलैण्ड सम्बन्धी कानून की क्या व्यवस्थाएँ थीं? क्या इससे आयरलैण्ड को संतोष था?
२. डी वेलेरा कौन था? १९२२ में उसने क्या-क्या परिवर्तन किये?
३. १९२२ में मिस्र और ब्रिटेन के बीच हुई संधि में क्या-क्या व्यवस्थाएँ थीं?
४. प्रथम विश्वयुद्ध में भारत का क्या योगदान रहा?
५. गांधी कौन थे? भारत में ब्रिटिश सरकार के विरोध में उन्होंने कौन से सिद्धान्त अपनाये?
६. कौन से उपायों से भारत ने आजादी हासिल की?
७. पण्डित नेहरू कौन थे?
८. भारत ब्रिटेन के समक्ष अपनी मांगें रखने में एकमत क्यों नहीं था?
९. दक्षिण अफीका में राष्ट्रीयता और जाति की क्या संकटपूर्ण समस्याएँ थीं?
१० कनाडा का महत्त्व कैसे बढ़ा?
११. वेस्टमिस्टर अधिनियम क्या था?
१२. ब्रिटिश राष्ट्रमण्डल क्या है?

फ्राँस को जर्मनी का भय बना रहा

प्रथम विश्वयुद्ध मुख्यतः फ्रांसीसी क्षेत्र में लड़ा गया था और सम्पत्ति की व्यापक बरबादी हुई थी। उत्तरी फ्रांस की सार्वजनिक इमारतों, घरों, सड़कों, रेल मार्गों और खेतों का नाश कर दिया गया था। जर्मनी के हर्जाना अदा न करने के बावजूद, सरकार ने फ्रांस के पुनर्निर्माण को बढ़ाया था और अपने देश को फिर से बनाने के लिए फ्रांस की जनता ने सख्त मेहनत और साहस का परिचय दिया था।

सरकार—युद्धोपरान्त फ्रांस की सरकार में कोई तब्दीली नहीं हुई थी। वही राजनीतिक दल थे और नीति सम्बन्धी वही विचारधाराएँ। चूँकि वहाँ ज्यादा राजनीतिक दल नहीं थे इसलिए युद्ध के पहले की भाँति, मिली-जुली सरकार का बनाना आवश्यक था। कभी संयुक्त सरकार लिबरल "वामपक्षीय" गुटों की जिसमें श्रमिक, मध्यमवर्ग के व्यापारी और किसान होते थे, बनती थी। ये लोग श्रमिकों के लाभ के कानून चाहते थे। उनका विश्वास था कि धनी लोग करों का अधिक बोझ सहन करें। वे रेलों और सार्वजनिक उपयोगिता के साधनों पर सरकारी आधिपत्य के समर्थक थे। कभी अनुदार दलीय "दक्षिण पंथी" जिन पर बैंकरों और बड़े व्यापारियों का नियंत्रण था, सरकार की बागडोर संभालते थे। यह अधिक राष्ट्रवादी गुट था और एक सशक्त विदेश नीति तथा जर्मनी से मुआवजा वसूलने की माँग करता था। लेकिन यह गुट व्यापार के नियमन और भारी करों का विरोधी था। कम्युनिज्म ने भी फ्राँस में बहुत सारे अनुयायी बना लिये थे।

जब १९३० के दशक में व्यापक मंदी आई, तब फ्रांस में मन्त्रिमण्डल तेजी से बनते बदलते रहे। कोई भी फ्रांस को पुनः समृद्धिशाली बनाने की योजना नहीं ढूंढ़ सका।

विदेश नीति—युद्ध के बाद काफी अर्से तक फ्रांस राष्ट्रीय सुरक्षा के प्रश्न पर ही उलझा रहा। उसने महसूस किया कि जर्मनी से दूसरे युद्ध की स्थिति के लिये तैयार होना अनिवार्य है। जर्मनी पर उसे कतई विश्वास नहीं था। उसने अनिवार्य भरती की एक प्रणाली द्वारा बड़ी फौज कायम रखी। उसने चेकोस्लोवाकिया, यूगोस्लाविया, रूमानिया और पोलैण्ड से "पारस्परिक सहायता" करार किये। इन करारों में यह व्यवस्था रखी गयी थी कि अगर एक सदस्य पर आक्रमण होता है तो दूसरे उसकी

मदद को दौड़ेंगे। फ्रांस एक शक्तिशाली लीग ग्राफ नेशन्स के पक्ष में था जो किसी भी हमलावर राष्ट्र को रोकने में समर्थ हो। इन उपायों के अलावा उसने अपने और जर्मनी के बीच किलों की एक खर्चीली और पेचीदा कतार बनवाई थी जो "मेजीनो लाइन" कहलाती थी।

फ्रांस द्वारा अपने पड़ोसी राष्ट्रों के साथ मित्रता स्थापित किये जाने से उसकी स्थिति यूरोप के कई राष्ट्रों के बीच नेतृत्व की हो चली थी। फ्रांस को इस स्थिति में लाने का मुख्य श्रेय एरेस्टेड ब्रिग्रान को था जिसने फ्रांस सरकार के मंत्रिमण्डल में कई विभाग संभाले थे। उसे "केलाँग ब्रिग्रान पैक्ट" या "पेरिस-पैक्ट" के लिए भी स्मरण किया जाता है।

ब्रिग्रान की मृत्यु के बाद फ्रांस की, ग्रेट ब्रिटेन की ही भांति अनिश्चित विदेश नीति रही। मोटे तौर पर फ्रांस ब्रिटेन और रूस के नजदीक आता चला गया और जर्मनी से अधिकाधिक भयभीत रहने लगा;

रूर घाटी की बहुमूल्य कोयला खानों ने इस जमीन के छोटे से टुकड़े को बहुत महत्त्वपूर्ण और आकांक्षित क्षेत्र बना दिया है।

उसका भय तब विशेष रूप से बढ़ चला था जब एडोल्फ हिटलर सत्तारूढ़ हुआ। बहुत से फ्रांसीसी, खास कर पादरी वर्ग के लोग थे जो साम्यवादी और धर्म-विरोधी रूस से नजदीकी सम्बन्ध नापसंद करते थे। हिटलर फ्रांस की बदलती हुई और अनिश्चित नीति को गौर से देख रहा था और उसने निश्चय किया कि फ्रांस को जीत लेना कठिन नहीं होगा।

फ्रांसीसी औपनिवेशिक प्रणाली—१६१८ में फ्रांस का दुनिया में दूसरा बड़ा साम्राज्य फैला हुआ था। उसकी ६ करोड़ ८० लाख की उपनिवेशों की आबादी में मुख्यतः वहीं के मूल निवासी और उपनिवेशों में बसे हुए कुछ फ्रांसीसी देशान्तरवासी थे। अपने समुद्रपार के उपनिवेशों को फ्रेंच पार्लमेंट में प्रतिनिधित्व प्रदान करने की फ्रांस की नीति उपनिवेशों को मान्यता प्रदान करने का एक अद्वितीय तरीका था। कुछ अंशों तक युद्ध के उपरान्त भी यह जारी रहा, लेकिन अधिकांश उपनिवेशों में बहुत से मूल निवासियों को मतदान का अधिकार नहीं था। ब्रिटिश साम्राज्य के कुछ हिस्सों में जो राष्ट्रीयता की भावना इतनी प्रबल थी, वह फ्रांसीसी साम्राज्य में कम मात्रा में परिलक्षित होती थी।

१. युद्ध के बाद किस भय ने अधिकांश रूप से फ्रांस की नीतियों पर असर डाला?
२. उस भय से बचने के लिए तैयार रहने को फ्रांस ने क्या उपाय बरते?
३. फ्रांस की पार्लमेंट में कौन लोग "वामपक्षीय" गुट और कौन "दक्षिण पंथी" गुट में प्रधानता प्राप्त करते थे?
४. फ्रांस में प्रधानमंत्री इतनी जल्दी-जल्दी क्यों बदले?
५. युद्ध के बाद फ्रांस की विदेशनीति में सुरक्षा प्रधान क्यों थी?
६. एरेस्टेड ब्रिग्रान ने फ्रांस की सुरक्षा की कोशिश किस प्रकार की?
७. फ्रांस अपनी विदेशी नीति में ढुलमुल क्यों था?
८. फ्रांस की, उसके उत्तरी अफ्रीकी उपनिवेशों के साथ, क्या समस्याएँ थीं?

अन्य यूरोपीय देशों में लोकतंत्र कायम रहा

स्कैण्डिनेवियाई देश—यूरोप के अन्य लोकतंत्रीय देशों में भी इस मंदी का असर था। स्कैण्डि-

नेवियाई देशों, डेनमार्क, स्वीडन और नार्व पर, उनकी सरकार प्रणाली को उखाड़ फेंकने के लिए फासिस्ट और कम्युनिस्ट, दोनों गुटों का दबाव पड़ रहा था। लेकिन ये परिवर्तनकारी पार्टियाँ इन लोकतांत्रिक देशों में नगण्य सी प्रगति कर पाई थीं। स्कैण्डिनेवियाई देशों ने सहकारिताओं की स्थापना कर अपनी आर्थिक समस्याओं को हल करने की दिशा में जो प्रयास किया था, उसमें उन्हें अच्छी सफलता मिली थी।

बेल्जियम, नीदरलैण्ड्स और स्विटजरलैण्ड—बेल्जियम, नीदरलैंड्स और स्विटजरलैण्ड पर भी फासिस्ट और कम्युनिस्ट आन्दोलन का असर पड़ा था, लेकिन वे दृढ़तापूर्वक लोकतंत्र को कायम रखे हुए थे, बावजूद इसके कि मंदी का उन पर गहरा प्रभाव पड़ा था और वे जर्मनी की सीमा पर थे जिससे कि वे भी घबराते थे।

फिनलैण्ड—नये बाल्टिक राज्यों में सबसे बड़ा और सबसे शक्तिशाली फिनलैण्ड था। फिन लोग मुख्यत: खेती और दुग्ध उद्योग करते थे और उनकी लोकतंत्र पर गहरी आस्था थी। चूँकि उनके रूस के साथ दीर्घकालीन कटु सम्बन्ध चले आ रहे थे, इसलिए वहाँ जाहिरा तौर पर लोगों के बीच रूस-विरोधी भावना थी। रूस के निकटतम पड़ोसी होने की भौगोलिक स्थिति से उनको अपनी छोटी सी रिपब्लिक को कायम रख पाना मुश्किल पड़ रहा था। १९३० के दशक में फिन अधिकाधिक जर्मनी की ओर झुके, जिसकी हिटलरकालीन सैन्यशक्ति के वे प्रशंसक थे।

आस्ट्रिया—हैप्सबर्गों के एक जमाने के गर्वीले आस्ट्रो-हंगरी साम्राज्य को शांति संधि ने कई छोटे-छोटे हिस्सों में बाँट दिया था जिनमें से अधिकांश १९३० के दशक से पहले या इसी दौरान अधिनायकवादी हो गये थे। इसी अर्से में हैप्सबर्गों को गद्दी से उतार दिया गया था और वे देश छोड़ कर चले गये थे। आस्ट्रिया और चेकोस्लोवाकिया
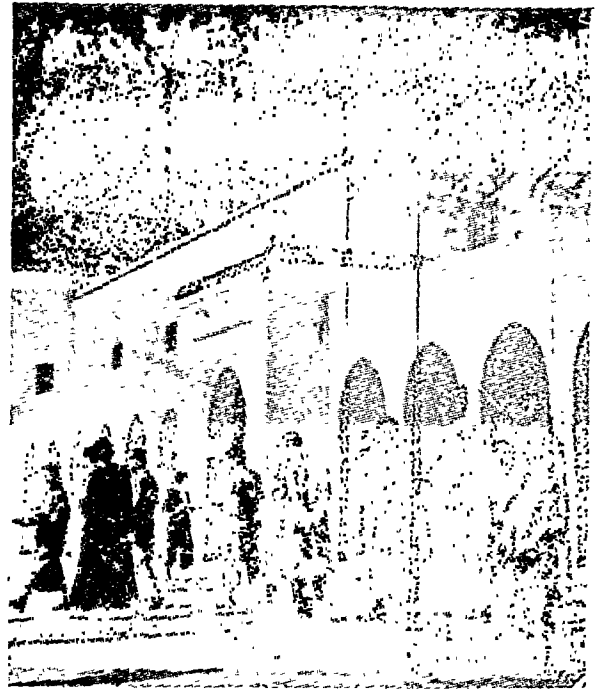
मोरक्को कालेज

फ्रांसीसी मोरक्को के एक कालेज का अहाता।

ने, भूतपूर्व बड़े साम्राज्य से निकालकर बनाये गए कुछ अन्य राज्यों के विपरीत, लोकतांत्रिक गणतंत्र स्थापित किये थे।

कम्युनिस्टों ने आस्ट्रिया का नियंत्रण हथिया लेने की कोशिश की लेकिन वे ऐसा करने में असमर्थ रहे। जर्मनी ने प्रस्ताव रखा कि आस्ट्रिया जर्मन रिपब्लिक से एकता स्थापित कर ले और आस्ट्रिया की जनता ने इस योजना को स्वीकार भी किया। लेकिन बड़े राष्ट्रों को खतरा था कि इस प्रकार के एकीकरण—"आन्शलुस"—से जर्मनी बहुत अधिक शक्तिशाली हो जायगा और उन्होंने योजना के कार्यान्वयन की अनुमति देने से इन्कार कर दिया।

जर्मनी में हिटलर के सत्ता संभालने के बाद आस्ट्रिया में नाजी पार्टी का जोर बढ़ गया था और उसके सदस्यों ने "आन्शलुस" की जोरों से माँग जारी रखी। जर्मनी से, इस एकीकरण के प्रचार को फैलाने और चाँसलर इगलबर्ट डलफस की सरकार के विरोध के लिए जो हिटलर के शासना-

रूढ़ होने के बाद इस प्रकार के एकीकरण की विरोधी थी, प्रशिक्षित आन्दोलनकारी आस्ट्रिया भेजे गये थे। अन्त में नाजियों ने आस्ट्रिया सरकार के विरुद्ध एक षड्यंत्र रचा। षड्यंत्र विफल हुआ लेकिन षड्यंत्रकारियों द्वारा डलफस की हत्या कर दी गयी।

१९३० में हिटलर ने आस्ट्रिया की स्वाधीनता को मान्यता प्रदान की और वायदा किया कि वह उसके घरेलू मामलों में हस्तक्षेप न करेगा। तब, मार्च १९३८ में प्रचार और जासूसों के जरिये पृष्ठभूमि तैयार कर लेने के बाद, उसने विएना पर प्रयाण किया और आस्ट्रिया तृतीय रिक का एक अंग हो गया।

चेकोस्लोवाकिया—आस्ट्रिया-हंगरी के साम्राज्य से बनाये गये सभी राज्यों में से चेकोस्लोवाकिया सबसे ज्यादा लोकतन्त्रात्मक, समृद्ध और स्थायी राज्य था। इसका कारण अंशतः देश के भीतर कृषि और उद्योग की स्वस्थ प्रणालियाँ थीं जो कि इसे समृद्ध बनाती थीं। इसका श्रेय नये राज्य का निर्देशन करने वाले टामस मसारिक और एडुअर्ड बिनेस को भी था।

मसारिक को राष्ट्रपति चुना गया था और वह १९३५ में अपने अवकाश ग्रहण करने तक अपने पद पर आसीन रहा। जब प्रथम विश्वयुद्ध आरंभ हुआ तो वह प्राग विश्वविद्यालय में प्रोफेसर था। उदार विचारों का होने के कारण उसने तब प्राग छोड़ दिया और विदेश में रह कर चेकोस्लोवाकिया की स्वाधीनता के लिए कार्य करता रहा। विदेश में एडुअर्ड बिनेस नामक दूसरे प्रोफेसर का उससे साथ हो गया। वे दोनों साथ-साथ विश्व के नेताओं के बीच काम करते हुए उन्हें आश्वस्त करने का प्रयास करते रहे कि उनके देशवासियों को स्वतंत्र होना चाहिए। जब युद्ध समाप्त हो गया और चेकोस्लोवाकिया एक राष्ट्र बना, बिनेस विदेश मंत्री बनाया गया। वह अपने इस पद पर मसारिक के अवकाश ग्रहण करने तक रहा और उसके बाद राष्ट्रपति बना।

अपने राजनीतिक जीवन में बिनेस ने हमेशा दूसरे राष्ट्रों के साथ सहयोग के लिए कार्य किया। लेकिन उसे अपने देश की भौगोलिक स्थिति की कमजोरी का पता था—उसके चारों ओर अधिक शक्तिशाली राष्ट्र थे। उसने चेकोस्लोवाकिया के लिए कई मैत्री संधियाँ की थीं और आशा करता था कि इस तरीके से उसका राष्ट्र सुरक्षित रहेगा।

इस प्रकार विश्वयुद्ध के बाद यूरोप तीन खेमों में विभाजित हो गया था: लोकतांत्रिक देश, फासिस्ट और नाजी अधिनायकवादी देश तथा कम्युनिस्ट अधिनायकवाद।

१. प्रथम तथा द्वितीय विश्वयुद्धों के बीच कौन यूरोपीय देश लोकतंत्रात्मक बने रहे?
२. किस प्रकार स्कैण्डिनेवियाई देशों ने अपनी आर्थिक समस्याओं को हल करने का प्रयास किया?
३. प्रथम विश्वयुद्ध के बाद आस्ट्रिया क्यों कमजोर पड़ गया?
४. कई वर्षों तक चेकोस्लोवाकिया इतना स्थायी रिपब्लिक क्यों बना रहा?
५. आस्ट्रिया ने अपनी आजादी किस तरह खोई?
६. चेकोस्लाव रिपब्लिक के नेता कौन-कौन थे?

संयुक्त राज्य की युद्धोत्तर समस्याएँ

अलगाववाद—युद्ध के बाद समस्याएँ अकेले यूरोपीय लोकतंत्रवादी देशों में ही नहीं थीं।

चेकोस्लोवाकिया और उसके पड़ोसी

CZECHOSLOVAKIA AND HER NEIGHBORS

पश्चिमी गोलार्द्ध के लोकतंत्रवादी देशों के सामने भी कुछ गंभीर परिस्थितियाँ थीं। जब विश्वयुद्ध समाप्त हुआ, तब संयुक्त राज्य शेष दुनिया को भूलने के लिए तैयार था। सिर्फ रोजगार और व्यापार को छोड़ कर और सब दृष्टियों से वह अलगाववाद में आ गया था। संयुक्त राज्य युद्ध में शामिल होना नहीं चाहता था लेकिन परिस्थितियाँ उसे उसमें धकेलती प्रतीत होती थीं। बहुत से अमेरिकी सैनिक यह गीत गाते हुए युद्ध में शामिल हुए कि :

"ओ मेरी प्रियतमे घबराना मत खबरदार—
लाऊँगा मैं तेरे लिए राजा रूपी यादगार—
मिलेगा तुझे एक तुर्क और कैसर भी—
इससे अधिक कर ही क्या पायेगा यह प्रेमी।"

उनके गीत से यह आशावाद व्यक्त होता था कि वे विश्व के संकटों को अपने सीधे और उत्साह-पूर्ण ढंग से सुलझा लेंगे।

इनमें से बहुत से सैनिक निराशा लेकर घर लौटे। उन्होंने यूरोप को उसकी बदतर स्थिति में देखा था जबकि भयावह युद्ध चल रहा था और उन्हें यह पसंद नहीं आया था। वे चाहते थे कि संयुक्त राज्य अब यूरोप से कोई वास्ता न रखे, एक शब्द में, वे अलगाववादी थे। डैमोक्रेटिक पार्टी, जो युद्ध-काल में सत्तारूढ़ थी और जो चाहती थी कि संयुक्त राज्य लीग आफ नेशन्स में शामिल हो, मतदान में भारी बहुमत से पदच्युत कर दी गयी थी।

संयुक्त राज्य की कांग्रेस ने तब बहुत से कदम ऐसे उठाये थे, जो स्वरूप में अलगाववादी थे। लीग आफ नेशन्स और विश्व अदालत में शामिल होने से इन्कार करने के अलावा उसने विदेशी माल पर भारी तटकर लगा दिया था। कांग्रेस के कार्य बहुसंख्यक नागरिकों की इच्छा के परिचायक थे। १९२० के दशक में संयुक्त राज्य ने वस्तुतः दुनिया की ओर अपनी पीठ घुमा ली थी।

आर्थिक स्थिति—संयुक्त राज्य का विश्वास था कि वह अलगाव की स्थिति में रह सकता है, क्योंकि कुल मिला कर वह समृद्ध देश था। यूरोप निर्मित माल चाहता था जो अमेरिकनों को बेचना होता था। बहुत से यूरोपीय मुल्कों को दिये गये ऋण अमेरिका में खर्च होते थे, जिसने अमेरिकी श्रमिकों के लिए काम अधिक बढ़ा दिया था। अमेरिकी जनता भी ऐसी वस्तुएँ खरीदने को उत्सुक थी जो वह युद्ध-काल में नहीं खरीद पाई थी। मोटरों की बिक्री तेजी से बढ़ी और नये आविष्कार, रेडियो ने व्यापार के लिए समूचा नया क्षेत्र खोल दिया था।

अमेरिकी जनता का एक वर्ग ऐसा था जो १९२० के देश में समृद्ध नहीं हुआ था और वह था कृषक वर्ग। युद्ध के दौरान, जबकि अमेरिकी सेनाओं में बड़ी मात्रा में, खेतों के उत्पादन की खपत थी, संयुक्त राज्य सारी आवश्यक सामग्री और देशों को नहीं दे पाया था। इसलिए उस समय आस्ट्रेलिया, भारत और कनाडा ने विश्व के कुछ बाजार हथिया लिये थे। युद्धोपरान्त सोवियत रूस भी संयुक्त राज्य का एक प्रतिद्वन्द्वी बन गया था। परिणाम यह हुआ कि अमेरिकी किसानों के पास अतिरिक्त फसल बच जाती थी और उसकी जिन्सों की कीमतें उन निर्मित वस्तुओं के मुकाबले में कम होती थीं जिन्हें ऊँची कीमतों पर उसे खरीदना पड़ता था।

नयी व्यवस्था (न्यू डील)—दुनियाँ के अन्य हिस्सों के साथ-साथ १९३० के दशक में मंदी से संयुक्त राज्य भी पीड़ित हुआ। इस कारण, रिपब्लिकन पार्टी, जो १९२१ से शासन संभाले हुए थी, १९३२ के चुनाव में हार गयी और फ्रेंकलिन डी० रूजवेल्ट, जो डेमोक्रेट थे, राष्ट्रपति चुन लिए गये। उनके प्रशासन में मंदी से टक्कर लेने के तौर-तरीके अपनाये गये। उन्होंने अपनी नीति को नयी व्यवस्था (न्यू डील) की संज्ञा दी। उसमें करोड़ों बेरोजगारों को राहत प्रदान करने की व्यवस्थाएँ थीं, जिसमें रोजगार की व्यवस्था के लिए व्यापक सार्वजनिक निर्माण कार्य भी शामिल थे। यह पुनः जंगल लगाना, बगीचों का निर्माण, बाढ़ों को रोकने तथा बिजली पैदा करने के लिए सड़कों, पुलों और बांधों को बनाना तथा सार्वजनिक भवन निर्माण-कार्य थे। किसानों और शिक्षित युवकों की सहायता तथा बैंकों को फेल होने से रोकने के कानून पास

हुए। आम तौर पर व्यापार पर कड़े प्रतिबन्ध नियम लगाये गये। बेरोजगारी के मुआवजे, वृद्धावस्था का बीमा और अपाहिज व्यक्तियों के अनेक वर्गों के लिए सामाजिक सुरक्षा कानून बनाये गये। एक श्रमिक कानून बन कर श्रमिकों के इस अधिकार की गारंटी की गयी कि वे सामूहिक रूप से मालिकों के साथ सौदेबाजी कर सकते हैं।

इस नयी व्यवस्था कार्यक्रम का जबरदस्त विरोध हुआ। बहुत से लोगों ने प्रशासन पर "सोशलिस्टिक" होने का आरोप लगाया जब कि दूसरी ओर श्रमिकों ने इसका आम स्वागत किया। इस कार्यक्रम की प्रसिद्धि और लोकप्रियता का पता इसी तथ्य से चलता है कि रूजवेल्ट चार बार राष्ट्रपति पद के लिए चुने गये एक मात्र उम्मीदवार थे।

विदेश नीति—रूजवेल्ट की विदेशनीति सतर्क और कभी-कभी अनिश्चित थी। उन्होंने संयुक्त राज्य को विश्व अदालत में सम्मिलित करने का असफल प्रयास किया। उन्होंने सोवियत रूस की सरकार को मान्यता दी, जिसे रूस में सत्तारूढ़ हुए अब १७ वर्ष बीत चुके थे। व्यापार को प्रोत्साहन देने के लिए कई विदेशी वस्तुओं पर से तटकर घटा दिये गये थे। जब यूरोप में हिटलर हमले करने लगा तो रूजवेल्ट ने लोकतंत्रीय देशों से जर्मनी से तब तक अपने व्यापार सम्बन्ध विच्छेद करने का अनुरोध किया जब तक कि वह अपने तरीके नहीं बदलता। दूसरी ओर, विश्व की आर्थिक बुराइयों को दूर करने के उद्देश्य से लंदन में हुए आर्थिक सम्मेलन में रूजवेल्ट ने अन्य राष्ट्रों के साथ चलने से इन्कार कर दिया।

संयुक्त राज्य ने यूरोप के लोकतंत्रों की भांति नेतृत्व अपने हाथ में नहीं लिया था। प्रतीत होता था कि वह अपना रास्ता अपने आप तय कर रहा है और दूसरों को भी ऐसा ही करने के लिए छोड़ रहा है।

फिलीपीन्स—संयुक्त राज्य ने पहले वायदा किया था कि वह फिलीपीन्स को तब स्वाधीनता दे देगा जबकि वे स्वशासन के लिए समर्थ हो जायंगे। इसी दर्मियान संयुक्तराज्य ने फिलीपीन्स की सामाजिक और आर्थिक स्थितियों को सुधारने का प्रयास किया। एक के बाद एक करके संयुक्त राज्य ने द्वीपों को उनकी सरकारों के ऊपर नियंत्रण के अधिकाधिक अधिकार प्रदान किये। अन्त में १९३४ में फिलीपीन्स स्वाधीनता कानून पास कर दिया गया। इस कानून में यह व्यवस्था थी कि १० वर्षों के अन्त में फिलीपीन्स द्वीपसमूह स्वाधीन हो जायंगे। दस वर्षों के दर्मियान फिलीपीन वासियों को शनैः शनैः शासन की ट्रेनिंग दी जायगी। इस कानून से दुनिया के राष्ट्रों को आश्चर्य हुआ और अधिकांश को ऐसी उम्मीद लगी कि संयुक्त राज्य इन द्वीपों को अनिश्चित काल तक अपने अधिकार में रखना चाहता है?

१. युद्ध के बाद संयुक्त राज्य का अलगाववादी दृष्टिकोण क्यों बना?
२. कांग्रेस ने कौन से विधेयक पारित किये जिन से प्रदर्शित होता था कि वह अलगाववादी हो गया है।
३. १९२० के दशकों में संयुक्त राज्य की आर्थिक स्थिति का वर्णन करो।
४. "नयी व्यवस्था" की मुख्य-मुख्य बातें क्या थीं? नयी व्यवस्था का आम उद्देश्य क्या था?
५. राष्ट्रपति रूजवेल्ट की विदेश नीति क्या थी?
६. स्वाधीनता की दिशा में फिलीपीन्स की प्रगति का विवरण दो।

"नेशनलिस्ट" चीन की एकता बनाने में असफल रहे

युद्ध के बाद, चीन में नेशनलिस्ट या कोमिंतांग पार्टी ने चीन को एक सूत्र में बाँधने और सरकार को पश्चिमी नियन्त्रणों से मुक्त करने का प्रयास किया। सरकार ने विदेशी शक्तियों से संधियाँ नये सिरे से कीं जिससे पश्चिमी राष्ट्रों को चीन में अपने बहुत से विशेषाधिकार छोड़ने पड़े। लेकिन चीन में सोवियत रूस से जबर्दस्त कम्युनिस्ट प्रभाव पड़ रहा था। कम्युनिस्ट कोमिंतांग पार्टी में अनेक प्रमुख ओहदों को प्राप्त करने में सफल हुए, और एक समय ऐसा प्रतीत होता था कि वे उस पर कब्जा जमा लेंगे। च्यांग-काई-शेक सैनिक नेता था जो कि डा०

सन यात सेन के उत्तराधिकारी के रूप में कोमिंतांग पार्टी का प्रमुख बनाया गया था। १९२६ में वह कम्युनिस्टों के खिलाफ हो गया और अपनी पार्टी में शुद्धीकरण करने लगा। वह चीन के प्रान्तों को संयुक्त करने में सफल हुआ और १९२८ में चीन लीग ग्राफ नेशन्स का एक सदस्य बन गया।

तो भी, चीन समस्याओं और दुर्भाग्य से घिरा हुआ था। बाढ़ों और अकाल के परिणामस्वरूप चीनियों की बढ़ती हुई तादाद कम्युनिस्टों के वायदों में बहकने लगी थी। कोमिंतांग पार्टी स्वयं एकताबद्ध नहीं थी। देश के विभिन्न क्षेत्रों में प्रतिद्वन्द्वी सैनिक नेताओं ने अपना शासन स्थापित करने के लिए केन्द्रीय सरकार की कमजोरियों का फायदा उठाया। दो प्रान्तों ने विद्रोह कर अपनी अलग सरकार कायम कर ली। इस दर्मियान जापान बराबर इस आपसी फूट के प्रदर्शन को बड़ी दिलचस्पी से देख रहा था।

राष्ट्रवाद और साम्राज्यवाद—१९३० के दशक की समाप्ति तक राष्ट्रवाद परस्पर दो विरोधी तरीकों से प्रकट हो रहा था। इटली, जर्मनी और जापान आक्रामक तानाशाह साम्राज्यवादी थे और अपनी शक्ति को दुनिया के बड़े हिस्से तक फैलाने की कोशिश में थे। इसके साथ-साथ उन लोगों के बीच, जिन पर कि पश्चिमी हुकूमतें शासन कर रही थीं या जो उनके प्रभाव में थे, राष्ट्रवाद की एक लहर उठ रही थी। ये लोग अपने भाग्य-निर्णायक स्वयं बनने के अधिकार की माँग कर रहे थे।

जबकि उपनिवेश अपनी मातृभूमि का विदेशी शासन दूर करने के प्रयास में थे, और जबकि संयुक्त राज्य फिलीपीन्स की स्वाधीनता की दिशा में कार्य कर रहा था, ब्रिटेन वेस्टमिंस्टर के विधान की मंजूरी दे रहा था, तानाशाह इस बात की खोज में थे कि उन्हें उपनिवेश कहाँ प्राप्त हो सकते हैं। जापान चीन और दक्षिण प्रशान्त के द्वीपों को अपने प्रसार का सम्भव क्षेत्र समझकर उनकी ओर मुखातिब हुआ। वहाँ उसे अपार दौलत और अपनी अतिरिक्त जनसंख्या को देशान्तरित करने के लिए जगह मिल सकती थी। मुसोलिनी भूमध्यसागर को "मारे नोस्ट्रम" (हमारा समुद्र) कहने लगा था, उसे वहाँ अंग्रेजों के प्रभाव को तोड़ने या पुराने रोमन साम्राज्य को पुनः स्थापित करने तक की आशा थी। एडोल्फ हिटलर, इन सब में, अपने देश के उद्देश्यों के सम्बन्ध में सर्वाधिक स्पष्ट वक्ता था। उसने माँग की कि जर्मनी के युद्धपूर्व के उपनिवेश लौटाये जायें और जर्मनों को तृतीय रिक के साथ संयुक्त किया जाय। लाखों-करोड़ों श्रोताओं के बीच, जो बड़े गौर से उसकी बातें सुनते थे, वह बार-बार चिल्लाकर कहता था कि जर्मनी को एक अधिक श्रेष्ठ जाति के रूप में अवश्य ही रहने का ज्यादा स्थान होना चाहिए।

१. चीन के नेता के रूप में डा० सन यात सेन के बाद कौन उत्तराधिकारी था?
२. किस राजनीतिक दल का उसने नेतृत्व किया?
३. चीन की राष्ट्रीय एकता के लिग कौन खड़ा हुआ?
४. अधिनायकों का साम्राज्यवाद के प्रति क्या दृष्टिकोण था?

विचार-विमर्श के लिए प्रश्न

१. इंग्लैंड और १९वीं शताब्दी की उसकी शक्ति को "चमत्कार" किस लिए कहा जाना चाहिए जैसा कि एक इतिहासकार ने उसे कहा है।

२. क्या देशों के बीच दौत्य सम्बन्धों का यह मतलब है कि वे एक-दूसरे की सरकार प्रणाली और नीतियों को मंजूरी देते हैं?

३. संयुक्त राज्य की अपेक्षा ब्रिटेन को एक साम्राज्य बनाना क्यों ज्यादा महत्त्वपूर्ण लगता था?

४. १९२० तथा १९३० के दशकों में ब्रिटिश उपनिवेशों और डोमीनियनों ने स्वाधीनता की माँग क्यों जारी रखी जबकि फ्रांसीसी उपनिवेशों का शासन बहुत-कुछ प्रथम विश्वयुद्ध से पूर्व की ही भाँति चलता रहा?

५. वेस्टमिंस्टर सन्धि को मंजूर कर क्या ब्रिटेन ने बुद्धिमत्ता की?

६. क्या कनाडा में राष्ट्रीयता की बढ़ोतरी के प्रति ब्रिटिश नीति १७७५ में अमेरिकी उपनिवेशों के प्रति उसकी नीति से अधिक बुद्धिमत्ता की थी?

७. ब्रिटेन ने जब देखा कि समग्रवादी देश युद्ध की तैयारियाँ कर रहे हैं तो क्या उसका कोई तैयारी न करना बुद्धिमत्ता थी ?

८. क्या फ्रांस अब भी जर्मनी से डरा प्रतीत होता है ? स्पष्ट करो।

९. क्या चेकोस्लोवाकिया अब भी एक शक्तिशाली लोकतन्त्र है ?

१०. क्या राष्ट्रवाद ने, जैसा कि युद्धोपरान्त की सन्धियों में मत अभिव्यक्त किया गया था, मध्य और पूर्वी यूरोप की जनता के बीच, शान्ति और समृद्धि फैलाई, जैसा कि वे चाहते थे ?

११. क्या अमेरिका द्वारा युद्धोपरान्त अपनाई गयी अलगाववाद की नीति बुद्धिमत्ता की थी ?

१२. क्या १९२० के दशक में जबकि अधिकांश कृषक खुशहाल नहीं थे, अमेरिका की आर्थिक स्थिति अच्छी थी ? अगर थी तो क्यों और नहीं थी तो क्यों ?

१३. किस प्रकार फिलीपीन्स की स्वाधीनता के प्रति संयुक्त राज्य के कार्य अन्य देशों द्वारा अपने उपनिवेशों के प्रति रखे जाने वाले दृष्टिकोण से भिन्न थे ?

१४. च्यांग की समस्याएँ इतनी बड़ी क्यों थीं ?

इतिहास के उपकरणों का प्रयोग

एक : नाम, स्थान और तिथियाँ

(क) क्या तुम इन शब्दों को स्पष्ट कर सकते हो ? आन्श्लुस—मिलीजुली सरकार—"इटली की झील"—नयी व्यवस्था—राष्ट्रमंडलीय देश—मेजीनो लाइन—वैस्टमिंस्टर विधान—इंगलैण्ड का जीवन-मार्ग—महात्मा—सहानुभूति में हड़ताल—अलगाववाद—पारस्परिक सहायता करार—कोमितांग—युद्धलिप्सु।

(ख) इन तिथियों के बारे में तुम क्या जानते हो ? १९२०, १९२१, १९३२, १९३५।

(ग) निम्नलिखित स्थान नक्शे में दिखाओ : आँग्ल-मिस्री सूडान, बेल्जियम, फिनलैण्ड, रूमानिया बम्बई, ईरान, स्वेज नहर, काहिरा, ब्रिटिश राष्ट्रमंडल, ईराक, आइरिश फ्री स्टैट, कनाडा, स्वीडन, चेकोस्लोवाकिया, नीदरलैण्ड्स, डेनमार्क, नार्वे, यूगोस्लाविया, तृतीय रिक, आयर, आक्सफोर्ड, इथिओपिया।

(घ) निम्नलिखित व्यक्तियों के बारे में तुम क्या जानते हो ?

स्टेनली बाल्डविन, एंगलबर्ट डलफस, टामस मसारिक, एडुअर्ड बिनेस, मोहनदास गांधी, बेनिटो मुसोलिनी, च्यांग काई शेक, लायड जार्ज, पंडित नेहरू, सन यातसेन, एडोल्फ हिटलर, एरेस्टेड ब्रियान, फ्रेंकलिन डी० रूजवेल्ट, ईमन डीवेलेरा, रेम्ज़े मैकडोनाल्ड, जान स्मट्स।

दो. क्या तुम अपने विचार स्पष्ट प्रकट कर सकते हो ?

१. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक पर कक्षा में लिखित या मौखिक रिपोर्ट सुनाओ :

सौन्दर्यमय आयरलैंड—गांधी की सविनय अवज्ञा की नीति—दक्षिण अफ्रीका के नीग्रो—स्वेज नहर—फिलीपीन्स के आदिवासी—दक्षिण अफ्रीका की हीरे की खानें—आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय—चीन के युद्धप्रिय सरदार।

२. मान लो कि तुम किसी समाचारपत्र के संवाददाता हो और कक्षा में किसी एक सदस्य का इन्टरव्यू ले रहे हो जो निम्नलिखित व्यक्तियों में से किसी एक का प्रतिनिधित्व कर रहा है। अपना इन्टरव्यू उन विषयों तक ही सीमित रखो जो दिये हुए हैं और उत्तर पहले से तैयार रखो—

(क) गांधी, सविनय अवज्ञा के तरीकों पर।

(ख) स्मट्स, ब्रिटेन के प्रति अपनी वफादारी पर।

(ग) च्यांग, कम्युनिटों के विरोध पर।

३. किसी एक ब्रिटिश उपनिवेश या डोमीनियन अथवा यूरोप के किसी छोटे लोकतंत्रात्मक देश पर कोई पुस्तक पढ़ो और फिर कक्षा में विवरणात्मक यात्रा वर्णन सुनाओ।

४. इस अध्याय में कई महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों का जिक्र आया है। उनमें से किसी एक का संक्षिप्त

जीवन-परिचय पढ़ो और उसके जीवन का सिंहावलोकन कक्षा में सुनाओ।

५. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक पर विस्तृत वार्ता सुनाओ।

डेनमार्क के जन हाईस्कूल—स्वीडन का दियासलाई उद्योग—एडवर्ड अष्टम का गद्दी त्याग—कनाडा या अलास्का तट से दूर सील मछली का शिकार—आज की हडसन कम्पनी—कनाडियन प्रशान्त रेल मार्ग—नार्वे, मध्यरात्रि के सूर्य का देश।
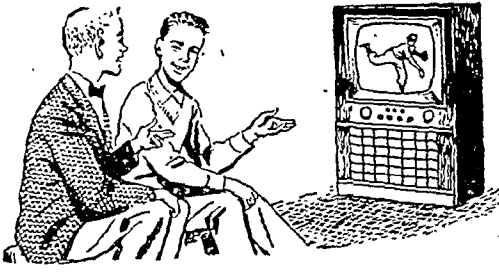
३९ प्रथम विश्वयुद्ध ने मनुष्य की संस्कृति को बदल डाला

१९१४ में जब विश्वयुद्ध शुरू हुआ, तब तक संयुक्त राज्य के बहुत से लोग न कभी मोटर पर चढ़े थे और न उन्होंने कभी वायुयान ही देखे थे। न उनके पास बिजली के रेफ्रिजरेटर थे और न कपड़ा धोने की मशीनें ही, न बिजली की इस्त्री थी, न पंखे, न रेडियो और न टेलीविजन। चलचित्र अगर थे भी तो बहुत कम और उनमें से थोड़े ही लोगों ने उन्हें देखा था। उनमें से अधिकांश अपने घरों में प्रकाश के लिए मिट्टी का तेल और खाना पकाने तथा गरमी प्रदान करने के लिए कोयले या लकड़ी के स्टोव का प्रयोग करते थे। बहुत से बालिगों को हाई स्कूल तक भी शिक्षा नहीं मिल पाती थी। बहुत थोड़े लोगों के घरों में स्नानागार और टेलीफोन थे। औरतों की पोशाकें जमीन को छूती बनती थीं और बहुत कम औरतें अपने बालों को छोटा कराने की हिम्मत कर पाती थीं। लेकिन यह सब शीघ्र ही समाप्त हो गया। प्रथम महायुद्ध के आरम्भ से लेकर द्वितीय महायुद्ध तक २५ वर्षों के बीच पाश्चात्य तथा पूर्वी दुनिया के लोगों के जीवन के तौर-तरीकों में इतना अधिक परिवर्तन हुआ कि जितना मानव के जीवन में, पहले-पहल इस नक्षत्र में रहना आरम्भ करने के बाद से अब तक कभी भी नहीं हुआ था।

विज्ञान में महत्त्वपूर्ण विकास

युद्धोत्तर काल में विज्ञान का लोगों के जीवन में बहुत बड़ा हिस्सा रहा। बहुत से देशों की सरकारों ने, विज्ञान की महत्ता को देखते हुए, वैज्ञानिक योजनाओं में आर्थिक सहायता की। दवाओं, वैज्ञानिक खेती, यातायात और संचार के साधनों, तथा स्वल्प प्राकृतिक साधनों के पूरक साधनों के अध्ययन के लिए परीक्षण और जांच शोधशालाएँ खोली गयीं। धनिकों ने करोड़ों डालर इस प्रकार के शोध कार्यों के "संस्थानों" के लिए प्रदान किये, जब कि बड़े विश्वविद्यालयों में वैज्ञानिकों ने कई दिशाओं में जांच कार्य आरम्भ किये

रेडियोधर्मी पदार्थों के प्रभाव से पौध काफी अच्छी हो जाने की आशा है।

एक्मी

और लगभग प्रत्येक बड़े निर्माण-उद्योग का अपना शोध विभाग स्थापित हुआ।

रसायन शास्त्र—बीसवीं शताब्दी का उल्लेख कभी-कभी रसायन शताब्दी के रूप में किया जाता है क्योंकि आधुनिक रसायन शास्त्र ने लोगों के जीवन में अत्यधिक परिवर्तन ला दिये हैं। इसकी सबसे महत्त्वपूर्ण देनों में एक प्लास्टिक का विकास भी है। नये कपड़े भी बने और रेयन, नायलोन तथा ओरलोन का सर्वसाधारण द्वारा प्रयोग किया जाने लगा। काँच को इतना उन्नत किया गया कि उसमें से कुछ ज्वाला के ऊपर प्रयुक्त किया जा सकता था और कुछ अन्य किस्में इस्पात से भी मजबूत होती थीं। कुछ काँच का कपड़ा भी बुना जाने लगा। रसायन शास्त्र ने कई कृत्रिम वस्तुओं की ईजाद की। बीसवीं शताब्दी की रासायनिक शोधों के परिणामों पर मध्ययुगीन कीमियागर आश्चर्य से दंग रह गये होते।
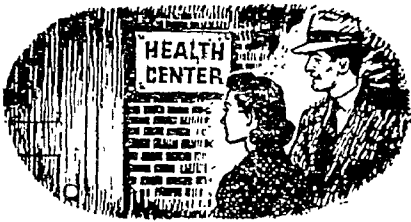
चिकित्सा विज्ञान—दवाओं के क्षेत्र में भी असाधारण प्रगति हुई। विटामिनों का पता चलाया गया और मनुष्य की कुछ बीमारियों तथा पेड़-पौधों और जानवरों की बीमारियों को दूर करने के लिए व्यापक प्रयोग में लाया जाने लगा। ग्रंथियों की कार्यप्रणाली में शोध ने कई ऐसी बीमारियों का इलाज संभव बना दिया जिन्हें पहले असाध्य रोग समझा जाता था। एक्स-रे की बढ़िया मशीनों से डाक्टर शरीर के भीतरी हिस्सों का चित्र ले सकते थे जिससे बीमारियों के निदान में उन्हें मदद मिलती थी। राजयक्ष्मा, कैंसर (नासूर) और मधुमेह के इलाज में सुधार होने से अनेकों ने जीवन लाभ किया और सुधरी हुई शल्य-चिकित्सा और कीटाणुरोधक दवाओं ने हजारों को सहायता पहुँचाई। विभिन्न किस्मों के घावों और छुआछूत के रोगों से मुकाबला करने के लिए नयी "चामत्कारिक दवाओं" को खोज निकाला गया। इनमें प्रथम "सल्फा" दवाएँ है जिनका प्रयोग १९३५ से होने लगा और इसके बाद पेनिसिलीन बनी।

अलबर्ट आइन्स्टीन—शायद बीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध का प्रकृष्ट वैज्ञानिक और गणितज्ञ जर्मनी में पैदा हुआ अलबर्ट आइन्स्टीन ही था। बहुत से अन्य वैज्ञानिकों की भाँति आइन्स्टीन प्रोफेसर था, जिसके सिद्धान्त साधारण व्यक्ति के व्यावहारिक जीवन से बहुत दूर प्रतीत होते थे। अपने सापेक्षवाद के सिद्धान्त में आइन्स्टीन ने बताया कि लम्बाई, चौड़ाई और विस्तार के अलावा एक चतुर्थ आयाम भी है। यह चतुर्थ आयाम "समय" है।

ऐटम—लगभग ई० पू० ४०० में ग्रीक दार्शनिकों ने इस सिद्धान्त को प्रतिपादित किया था कि सभी द्रव्य छोटे-छोटे कणों से, जिन्हें ऐटम (अविभाज्य) या परमाणु कहते हैं, बने हैं। बाद के विचारक समय-समय पर इस सिद्धान्त से सहमत हुए। १९ वीं शताब्दी के शुरू में एक अंग्रेज, जान डाल्टन, ने यह सिद्ध कर दिखाया कि सभी पदार्थ ऐटम से बने हैं। उसी शताब्दी के अन्त तक यह अन्वेषण किया गया कि ऐटम वास्तव में अविभाज्य नहीं है, वह विभक्त किया जा सकता है। इस पर बहुत से वैज्ञानिकों ने शोध कार्य जारी रखा, लेकिन १९४५ तक अणुशक्ति का प्रयोग नहीं किया गया था। उस समय ब्रिटिश, कनाडियन और अमेरिकी सरकारों के संयुक्त निर्देशन में एक ऐटम बम बनाया गया।

अणुशक्ति के प्रयोग का आविष्कार संभवत: बीसवीं शताब्दी की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण घटना और इतिहास की सर्वाधिक महत्त्व रखने वाली चीज है। ऐटम बम युद्ध का वह संहारक शस्त्र है, जिसका असीमित प्रयोग मानव जाति को समाप्त कर सकता है। और बाद में बनाये गये हाइड्रोजन बम की ध्वंसात्मक शक्ति कल्पना से भी परे है। अणुशक्ति के मानव कल्याण के लिए प्रयोग की संभावनाएँ भी उतनी ही सीमारहित हैं। इस दिशा में अभी

केवल शुरूआत हुई है। १९५१ में, ब्रिटेन ने अणु-शक्ति का प्रयोग पहले-पहल ८० कार्यालयों की एक इमारत को गरमी पहुँचाने में किया था। इसका उपयोग एक जहाज चलाने के लिए शक्ति पैदा करने के लिए भी हुआ। संयुक्तराज्य में अणुशक्ति का उपयोग कुछ बीमारियों के इलाज के लिए किया गया और इस दिशा में शोध कार्य बराबर जारी है।

यातायात—नये आविष्कारों और उत्पादन के साधनों से यातायात के तौर-तरीकों में भी उसी तरह क्रांति आई। युद्धोपरान्त मोटर वाहनों के बड़े पैमाने पर निर्माण ने उन्हें सस्ता किया। हेनरी फोर्ड परिवर्तनीय पुर्जों के सिद्धान्त का प्रयोग कर, कारों और ट्रकों के बड़े पैमाने पर निर्माण की दिशा में असेम्बली लाइन को लागू करने वाला प्रथम व्यक्ति था। परिणामतः अधिक कारें बहुत कम मूल्य पर मिलने लगीं।

पिक्स

एडमिरल रिचर्ड बायर्ड ने विमान से आर्कटिक और एन्टार्कटिक की खोज की। उसने पहले अज्ञात क्षेत्रों को जोड़कर भौगोलिक ज्ञान में वृद्धि की।

मोटर वाहनों के व्यापक प्रयोग ने अन्य उद्योगों को भी बदला। यकायक पेट्रोलियम और रबर की महत्ता बहुत बढ़ गयी और सब मुल्क इस कच्चे माल के स्रोतों को ढूंढने लगे। ब्रिटिश और अमेरिकी कंपनियों ने मैक्सिको, दक्षिणी अमेरिका और पूर्वी मुल्कों में तैल क्षेत्र खरीदे। इंडोनेशिया (डच ईस्ट इण्डीज) में रबर की खेती कई गुना बढ़ी और अन्त में वह दुनिया में रबर का सबसे प्रमुख स्रोत बना। मोटर वाहनों ने सुरक्षित और आरामदेह तरीकों से वाहनों को चलाने के लिए अच्छी सड़कों का होना भी आवश्यक बनाया और सड़क-निर्माण तेजी से हुआ। पर्यटकों की केबिनें, सड़कों के किनारों पर रेस्टोराँ, सर्विस स्टेशनों और अन्य प्रकार के कार्यों से मोटर वाहनों ने कई हजार लोगों के लिए रोजगार का साधन प्रदान किया।

प्रथम महायुद्ध के प्रारंभ होने तक किसी व्यक्ति ने विमान से इंगलिश चैनल पार कर लिया था। रोजर बेकन की १३वीं शताब्दी में की गई भविष्यवाणी सत्य उतर गयी थी। विमान युग शुरू हो गया था। युद्ध ने विमानों में सुधार को प्रोत्साहित किया क्योंकि वे युद्ध के साधन के रूप में प्रयुक्त होने लगे थे। युद्धोपरान्त विमान यात्रा के साधन के रूप में, अधिकाधिक महत्त्वपूर्ण बने। विश्व के मुख्य-मुख्य शहरों के बीच नियमित रूप से विमानों की उड़ानें भरी जाने लगीं। साहसिक विमान चालकों ने लम्बी यात्राओं के कीतिमान स्थापित करने के लिए अपने जीवन को खतरे में डाला। १९१९ में दो ब्रिटिश हवाबाजों ने १६ घंटा १२ मिनट में न्यूफाउण्डलैण्ड से आयरलैण्ड तक १९०० मील लम्बी उड़ान भरी थी। १९२४ में दुनिया के चारों ओर पहली उड़ान भरी गयी। दो वर्षों बाद रिचर्ड बायर्ड और क्लोइड बेनेट, नामक दो अमेरिकनों ने उत्तरी ध्रुव तक उड़ान भरी और अगले वर्ष चार्ल्स लिंडबर्ग लाँग आइलैंड, न्यूयार्क के एक हवाई अड्डे से अकेला ही पेरिस तक उड़ा। १९३१ में प्रशान्त के आरपार प्रथम उड़ान ४१ घंटा १३ मिनट में भरी गयी; जब कि एक अमेरिकी विमान-चालक, विलेपोस्ट ने, १९३३ में अकेले ही ७ दिन १८ घंटा और साढ़े अठानवे सैकण्ड में विमान से दुनिया का चक्कर लगाया। इन लोगों के अनुभवों

ने निर्माताओं को विमानों में सुधार लाने में सहायता पहुँचाई और अन्त में विमान आम प्रयोग में लाये जाने लगे।

संचार—युद्ध के तत्काल बाद समाचार पत्रों के संवाददाताओं, मनोरंजन-प्रिय लोगों और सरकारों के लिए रेडियो संचार एक सामान्य जरिया हो गया था। संयुक्त राज्य, ब्रिटेन और अन्य कई मुल्कों में करोड़ों लोग रेडियो से मिलने वाली ताजा खबरें सुनने लगे थे। तब टेलीविजन आया। १९३८ में रेडियो स्टेशन डब्लु० जी० वाइ० सेनेक्टडी, न्यूयार्क ने सर्वप्रथम अपने नियमित टेलीविजन प्रोग्राम जारी किये। रेडियो और टेलीविजन बड़ा रोजगार बन गया था, खासकर संयुक्त राज्य में।

युद्धों के दर्मियान राडार की "मैजिक आइ" का प्रयोग शत्रु के विमानों का पता लगाने के लिए किया जाने लगा था, लेकिन बाद में उसे कोहरे और अंधेरे में चलते हुए विमानों और जहाजों में प्रयुक्त किया जाने लगा। राडार की मदद से विमान चालक बता सकते थे कि कब वे पर्वतों, ऊँची इमारतों या अन्य विमानों तक पहुँच रहे हैं, चाहे वे उन्हें दिखलाई न दें। अन्य प्रयोगों के बारे में भी खोज की जा रही है।

१. वैज्ञानिक अनुसंधान के लिए किन स्रोतों से धन प्राप्त हुआ ?
२. प्रथम युद्ध के बाद के काल में रसायन शास्त्र तथा चिकित्सा शास्त्र में हुई कुछ खोजों का ब्योरा बताओ।
३. अलबर्ट आइन्स्टीन ने क्या आविष्कार किये ?
४. ऐटम बम बनाने में कौन से उपाय अपनाये गये ?
५. अणुशक्ति का प्रयोग किन शांतिकालीन कार्यों के लिए किया गया ?
६. यातायात और संचार के साधनों में क्या उन्नति हुई ?
७. वैज्ञानिक ज्ञान का ध्वंसात्मक कार्यों के लिए इतना अधिक उपयोग क्यों किया गया ?

विश्वव्यापी मंदी के बाद समृद्धि का एक काल

प्रथम विश्वयुद्ध के दर्मियान सामान्य उत्पादन बंद-सा हो गया था या धीमा पड़ गया था। लोगों की अधिकांश शक्ति लड़ाई जीतने के लिए बारूद बनाने में खर्च होती थी। जब लड़ाई बंद हो गयी तो कारखानों को शाँतिकालीन सामान बनाने के काम में बदलना पड़ा। व्यापारियों को अपने पुराने ग्राहक खोजने पड़े या नये बनाने पड़े। युद्धोपरान्त कुछ वर्षों तक व्यापार के पुनरुत्थान की गति बहुत धीमी रही। लेकिन १९२० के दशक के मध्य और अन्त में व्यापार में उन्नति हुई और दुनिया भारी समृद्धि के एक युग में प्रविष्ट होती प्रतीत हुई। लेकिन इस समृद्ध दिखाई देने वाली स्थिति की तह में अनिश्चित परिस्थितियाँ मौजूद थीं। संयुक्त-राज्य में किसान खुशहाल नहीं थे; अमेरिका में बहु-संख्यक लोग किस्त योजना पर माल खरीद रहे थे;
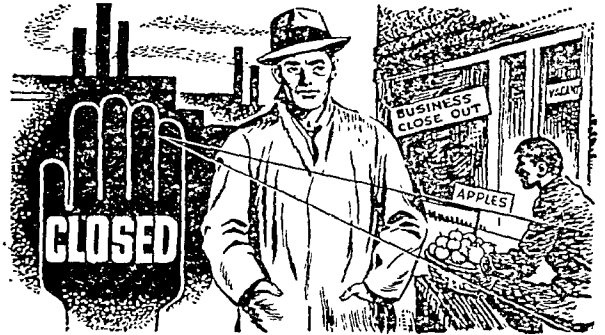
बहुसंख्यक लोग ऊँचे ब्याज की दरों पर धन उधार ले रहे थे और उन्हें ऐसा स्टाक खरीदने में लगा रहे थे जिसके बारे में वे बहुत थोड़ी जानकारी रखते थे। निर्मित वस्तुओं की कीमतें ऊँची थीं; बहुत से यूरोपीय देश ऋण लिये गये धन पर जी रहे थे; यूरोप की बहुत सी दौलत युद्ध में नष्ट हो गयी थी। ये सभी स्थितियाँ दुनिया को संकट की ओर ले जा रही थीं।

१९२९ में स्टाक मार्केट में गिरावट—यकायक अक्तूबर १९२९ में न्यूयार्क सिटी स्टाक एक्सचेंज में भाव बहुत नीचे गिर गये और धन का बड़ा नुकसान हुआ। इसके तत्काल बाद मंदी दुनिया पर छा गयी;

जिन लोगों ने इस गिरावट में धन खो दिया था उनके पास खर्च करने को धन नहीं बचा था। प्रसाधन वस्तुओं में कटौती कर दी गयी। मजदूरों को बैठकी दे दी गयी क्योंकि जो माल वे बना रहे थे, उसकी बिक्री बहुत घट गयी थी। जब लोगों का रोजगार छूट गया तो उनकी क्रय शक्ति घट गयी और इस तरह और लोगों को बैठकी मिली। किसान कम माल बेच पाते थे, खेतों में उत्पादित अतिरिक्त वस्तुओं का अम्बार लगने लगा और अनाज के दाम गिरकर नये न्यूनतम स्तर पर आ गये।

अमेरिका ही इस क्षति को वहन करने वाला अकेला राष्ट्र नहीं था। अमेरिकनों ने, जोकि दूसरे देशों को ऋण दे रहे थे, ऐसा करना बंद कर दिया। बहुत से लोगों ने अपने यूरोपीय कर्जदारों से उन्हें दिये जा चुके ऋण को लौटाने को कहा। इससे दूसरे देशों का वित्तीय संकट और बढ़ा; वहाँ बैंक फेल होने लगे। जो लोग गल्ला नहीं खरीद सकते थे या किराया नहीं दे सकते थे, उन्हें उनकी सरकारों को सहायता देनी पड़ी। इससे, बदले में, टैक्स बढ़े और सभी देशों में सरकारों के खर्चे नये स्तरों तक बढ़ गये।

इस निराशा में, बहुत सी सरकारों ने अन्यों के साथ सहयोग करना छोड़ दिया और अपने देशों को आत्म-निर्भर बनाने का प्रयास किया। ब्रिटेन के शहरों में लोग बड़े-बड़े पोस्टरों पर "ब्रिटिश माल खरीदो" का विज्ञापन करते घूमते थे। कुछ देशों ने अपनी मुद्राप्रणाली में अदल-बदल कर और विदेशी माल को बाहर रखने के लिए तटकर बढ़ा कर अपनी स्थिति सुधारने का प्रयास किया। यहां तक कि कुछ देशों ने, बगैर मजबूत पृष्ठभूमि के ही, कागजी मुद्रा छापने का सहारा लिया, लेकिन इसका परिणाम वित्तीय ढाँचे का चरमराकर समाप्त हो जाना रहा। इन परिस्थितियों में विदेशी व्यापार ठप्प था। तमाम दुनिया आधुनिक काल की सबसे भयंकर आर्थिक मंदी से तबाह थी।

इस तनावपूर्ण स्थिति में यह स्वाभाविक था कि राष्ट्रों को एक-दूसरे के प्रति संदेह पैदा हो। जिन देशों के पास उपनिवेश नहीं थे, जैसे खासकर जर्मनी, वे उनके लिए चिल्लाने लगे और दुनिया की दौलत के कुछ स्रोत प्राप्त करने की मांग करने लगे। जापान और इटली ने भी, जिनके उपनिवेशों से उन्हें महत्त्वपूर्ण आधुनिक औद्योगिक माल जैसे तेल, कोयला, रबर और धातुएँ बड़ी मात्रा में नहीं मिल पाता था, ऐसा ही किया। इन 'अभाव वाले' देशों का विश्वास था कि अगर उन्हें कच्चे माल के स्रोतों पर नियंत्रण मिल जाय तो वे खुशहाल हो जायंगे। युद्ध का खतरा बढ़ा, और राष्ट्रों ने, खास कर "अभाव वाले" राष्ट्रों ने, सेनाएँ और नौसेनाएँ बढ़ाना आरंभ कर दिया और युद्ध को उन्हें समृद्धि-शाली बनाने का एक तरीका बताते हुए वे युद्ध की बात करने लगे।

इसके साथ ही साथ हर देश में बेरोजगारों की संख्या बढ़ चली थी। गरीबी के शिकार करोड़ों असहायक लोग ऐसे नेताओं को ढूंढने लगे थे जो किन्हीं उपायों से उन्हें रोजी दे सकें ताकि वे अपनी आजीविका उपार्जित कर सकें। इस प्रकार १९३० के दशक के गुजरने के साथ-साथ क्रांति और युद्ध का भय बढ़ता चला था। यह वातावरण अधिनायकों के लिए बड़ा अनुकूल था।

१. १९२० के दशक में व्यापार की क्या स्थिति थी?
२. युद्ध किस तरह देश की अर्थव्यवस्था को उलट-पुलट कर देता है?
३. कहाँ और कब स्टाक मार्केट गिरा? उस समय स्टाक की क्या स्थिति हो गयी थी?
४. बताओ कि इस गिरावट का कीमतों रोज-गार, व्यापार, कृषि और बैंकिंग पर क्या असर पड़ा?
५. संयुक्तराज्य में स्टाक मार्केट में गिरावट का अन्य देशों पर असर क्यों पड़ा?
६. "अभाव वाले" देश शब्दों को अधिक स्पष्ट करके समझाओ। ये देश क्या चाहते थे?

कलाओं में नये तरीकों का विकास

केवल विज्ञान और उद्योग के क्षेत्र में ही नहीं अपितु, प्रथम विश्वयुद्ध के बाद, संगीत, चित्रकला तथा अन्य कलाओं में भी परिवर्तन आये और वे उतने ही बड़े परिवर्तन थे जितने विज्ञान के कारण आये थे।

मेट्रोनोम मेगजीन
अमेरिकी आर्केस्ट्रा ने नयी संगीत-पद्धति बनाई।
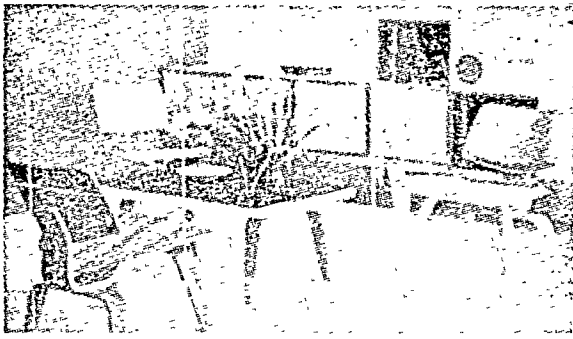
म्यूजियम आफ माडर्न आर्ट, न्यूयार्क
एमीज फर्नीचर की उपयोगिता और आराम।

एक घर 'झरता पानी', फ्रैंक लायड राइट द्वारा निर्मित।

संगीत—संगीत में, संगीतकारों ने १९ वीं शताब्दी के कृत्रिम परिष्कार को त्याग दिया और अपनी प्रेरणा के लिए बहुधा आदिम लोगों की ओर मुँह किया। जाज़ को जो इस युग की देन था और पहले-पहल लोगों द्वारा स्वीकार नहीं किया जाता था, अन्त में मान्यता प्राप्त हुई और कुछ अवसरों पर रंगमंच के कन्सर्ट में शामिल किया जाने लगा। इस प्रणाली का एक असाधारण ख्याति प्राप्त संगीतकार एक अमेरिकी, जार्ज ग्रेशविन था। सभी आधुनिक गीतकारों ने जाज नहीं लिखा। एक अन्य अमरीकी एडवर्ड मैकडोनल ने अपनी मधुर रचनाओं में हृदय के संवेदनों और भावों को व्यक्त किया। जर्मन संगीतकार रिचर्ड स्ट्रास ने इस काल में कई बेहतरीन ओपरा लिखे। जाँ सिबाल्यूज ने अपने देश फिनलैंड का संगीत लिखा। महान् रूसी गीतकार ईगर स्ट्राविस्की और दिमित्री शोस्ताकोविच प्रतिभाशाली संगीतकार थे।

चित्रकला—चित्र कला में बहुत से परिवर्तन हुए, जिन्हें सिर्फ इस कला का गंभीर अध्ययन करने वाले ही समझ सकते थे। लेकिन १८वीं और १९वीं शताब्दियों की चित्रकला तथा आधुनिक चित्रों के बीच का अन्तर सर्वसाधारण भी समझ सकता था। आधुनिक चित्रों की एक विशेषता यह थी कि उन्होंने अपनी कला को "गति" प्रदान करने की चेष्टा की। उनका उद्देश्य अपने चित्रों के दर्शकों को यह महसूस कराना होता था कि पेड़ों या घास के ऊपर से हवा बह रही है, या उन्हें यह अहसास हो रहा है कि वे वास्तव में एक सड़क पर से गुजर रहे हैं या सूर्य की गरमी अनुभव कर रहे हैं। विभिन्न चित्रकारों ने विभिन्न तरीकों से इस प्रभाव को लाने की कोशिश की। अन्य कलाओं की भाँति चित्रकला भी किसी एक देश के लोगों की विरासत तो थी नहीं। स्पेन का पावलो पिकासो, फ्रांस का आनरे मातेस, संयुक्तराज्य के ग्रांटवुड और जार्ज विलोज और अन्य देशों के बीसियों चित्रकारों की आधुनिक चित्रकला को अपनी देन रही है।

वास्तु शिल्प—विश्वयुद्ध के बाद वास्तुशिल्प की भी कई किस्में हो गयीं। कुछ वास्तुशिल्पियों ने अपनी इमारतों को क्लासिकल किस्म में ढाला। ऐसी इमारतें संयुक्तराज्य की सरकार द्वारा वाशिंग-

टन में बनाई गयीं और इसका एक विशिष्ट नमूना सुप्रीम कोर्ट की इमारत है। बहुत से नये चर्च गाथिक शैली के बने जिनमें न्यूयार्क शहर में बने हुए "सेंट जान द डिवाइन" का चर्च और लिवरपूल, इंगलैंड, का चर्च भी शामिल हैं। बहुत-सी व्यापारी इमारतें और रहने के मकान नये डिजाइनों से बनाये गये जिनमें इस्पात, कंकरीट और कांच बड़े पैमाने पर इस्तेमाल होता था। ये शानदार नयी इमारतें आड़ी और तिरछी कतारों में बनी थीं और उन्हें इस तरह उपादेय बनाया गया था कि एक बार देखने पर ही सब चीज दिखलाई दे सके। कोई जगह खाली नहीं छोड़ी गयी थी और रोशनी तथा हवा की व्यवस्था पर विशेष ध्यान दिया गया था। आस्ट्रिया, स्कैण्डिनेवियाई देशों और जर्मनी ने बहुत-सी इमारतें इसी "कामकाजी" तरीके पर बनवाईं। जर्मनी के वाल्टर ग्रोपियस और अमेरिका के फ्रैंक लायड राइट प्रमुख भवन-निर्माताओं में से थे जो इमारतों की डिजायनें इस प्रकार बनाते थे कि उनकी सर्वाधिक उपयोगिता रहे।

साहित्य—बीसवीं शताब्दि के साहित्य ने, अन्य साहित्यों की भाँति अपने युग को प्रतिबिंबित किया। १८ वीं और १९ वीं शताब्दि के साहित्यकारों ने आम तौर पर उच्च और धनी मध्यमवर्ग का ही वर्णन किया था। जब वे, चार्ल्स डिकन्स की तरह, निम्न वर्ग के बारे में लिखते थे तो यह आम तौर पर सुधार की दृष्टि से लिखा जाता था। ये लेखक सभ्य भाषा का प्रयोग करते थे। बीसवीं शताब्दी के लेखकों ने अपना वस्तु-विषय अक्सर जीवन की कुरूप और गंदगी से भरी बातों को बनाया और वे वही भाषा प्रयुक्त करते थे जो इस प्रकार का निम्नस्तर का जीवन बिताने वाले लोग बोलते थे।

इस काल के दो सर्वाधिक ख्यातिप्राप्त नाटककार आइरिश जार्ज बर्नार्ड शा और अमेरिकी ओ'नील थे। ब्रिटेन निवासी, जान गाल्सवर्दी, फ्रांसीसी, मार्सिल प्राउस्ट, जर्मनी में पैदा हुआ अमेरिकी टामस मान; नार्वे वासी सिगरिड उण्डसेट; अमेरिकी विला कैथर, भारतीय रवीन्द्रनाथ ठाकुर; और चीनी लिन युतांग उन अनेक लेखकों में थे जिनकी कृतियाँ व्यापक रूप से पढ़ी जाती थीं।

आर्ट इन्स्टीट्यूट आफ शिकागो

ग्रांट वुड अपने इस चित्र को "अमेरिकन गाथिक" क्यों कहता था?

कैसलटन चाइना

नयी प्रकार की तश्तरियों का निर्माण।

यूइंग गैलोवे
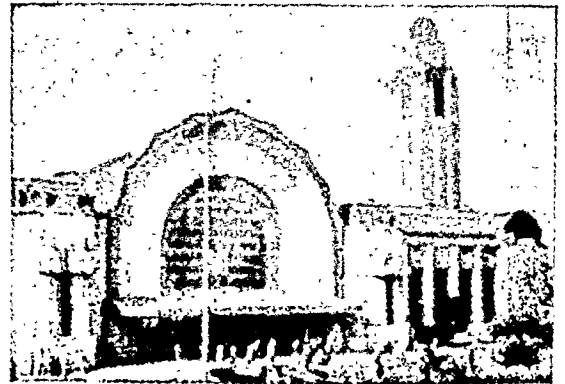
हेलसिंकी, फिनलैण्ड, का एक आधुनिक रेलवे स्टेशन।

१. बीसवीं शताब्दी के कलाकार १९ वीं सदी के कलाकारों से किस रूप में भिन्न थे ?
२. बीसवीं शताब्दी के प्रमुख गीतकारों में कुछ के नाम बताओ।
३. आधुनिक चित्रकारों ने अपने चित्रों में क्या विशेषता जोड़ने का क्या प्रयास किया ? बीसवीं शताब्दी के कुछ मुख्य-मुख्य चित्रकारों के नाम बताओ।
४. नये किस्म की भवन निर्माण कला की क्या विशेषताएँ थीं ?
५. किस रूप में बीसवीं शताब्दी का साहित्य १९ वीं शताब्दी के साहित्य से भिन्न था ? इस काल के कुछ विशिष्ट लेखकों के नाम बताओ और बताओ कि उनमें से प्रत्येक किस देश का था ?

सामान्य शिक्षा का और अधिक लोगों के बीच प्रचार हुआ

प्रथम विश्वयुद्ध के बाद शिक्षण की सुविधाएँ उल्लेखनीय अंश तक बढ़ीं। ब्रिटेन में प्राथमिक स्कूलों में सुधार हुआ और बच्चों को १४ वर्ष की उम्र तक स्कूल में जरूर पढ़ना पड़ता था। वहाँ व्यावसायिक और कालेज प्रेपरेटरी स्कूल भी उन लोगों के लिए थे जो वहाँ पढ़ना चाहें और आर्थिक दृष्टि से पढ़ने में समर्थ हों। फ्रांस में, १९२५ में, सभी बच्चों के लिए निःशुल्क प्रारंभिक पाठशालाएँ स्थापित की गयी थीं। १९३३ तक फ्रांस में माध्यमिक स्कूल भी निःशुल्क बना दिये गये, लेकिन उपस्थिति अनिवार्य नहीं थी। स्कैण्डिनेवियाई देशों में स्कूली शिक्षा पर जोर दिया जाता था और प्रारम्भिक शिक्षा अनिवार्य थी। वयस्कों के लिए पार्ट-टाइम स्कूलों में बड़ी संख्या में उपस्थिति रहती थी जिससे शिक्षा लड़कों और लड़कियों के काम पर लग जाने पर ही समाप्त न हो जाती थी अपितु बाद में भी कई वर्षों तक जारी रहती थी।

एशियाई देशों में भी शिक्षण-सुविधाओं का तेजी से प्रसार हुआ। अधिकाधिक लोगों को स्कूली शिक्षा देने का आन्दोलन चीन और भारत में कितना प्रभावशाली हुआ यह बताना कठिन है। इन दोनों देशों में करोड़ों लोग ऐसे थे जो लिखना या पढ़ना नहीं जानते थे। लेकिन जापान में निरक्षरता वस्तुतः तेजी से समाप्त कर दी गयी।

संयुक्त राज्य में हाई स्कूलों की संख्या दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ी और विविध विषयों की शिक्षा स्कूलों में दी जाने लगी। अधिकाधिक स्कूली स्नातक कालेजों में भी गये। स्कूलों और कालेजों में खेल-कूदों की सुविधाओं और कार्यक्रमों का काफी विस्तार हुआ। व्यावसायिक प्रशिक्षण भी बढ़ा क्योंकि अधिकतर प्रशिक्षण की दिशा आजीविका कमाने की ओर थी, और अधिकांश शहरों में नौकरी करने वाले लोगों के अतिरिक्त प्रशिक्षण के लिए संध्याकालीन स्कूल स्थापित किये गये।

अधिनायकों के शासन में शिक्षा—जर्मनी, रूस, इटली और जापान में बच्चों को स्वयं अपने बारे में सोचना नहीं सिखाया जाता था। उन्हें नेताओं के अनुसरण के लिए प्रशिक्षित किया जाता था। स्कूली पुस्तकें सरकार द्वारा संपादित होती थीं और समाचारपत्रों की स्वतन्त्रता के अभाव में अधिनायकवाद में लोगों के लिए यह लगभग असंभव सा था कि वे, उनकी सरकारें उन्हें जो कुछ जानकारी देना चाहती हैं, उससे अधिक कुछ जान सकें।

अन्धकार और प्रकाश—यद्यपि दुनिया ने मानव इतिहास के सबसे भयंकर युद्ध का अनुभव किया था, फिर भी युद्ध के बाद के समय ने भविष्य के लिए बड़ी आशाओं के द्वार खोल दिये। अब तक के इतिहास में शांति की सुरक्षा के लिए राष्ट्र-संघ (लीग आफ नेशन्स) सबसे बड़ी महत्त्वाकांक्षा थी और १९२० के बाद के दस वर्ष अधिकांश देशों के लिए समृद्धि के वर्ष थे। पर १९३० के बाद के दस वर्षों में भारी मंदी आई। इससे हालत डाँवाँडोल हो गयी और अधिनायकवाद को प्रोत्साहन मिला। उन्होंने आक्रामक राष्ट्रीयता और साम्राज्यवाद की भावना को बढ़ावा दिया, जिसके परिणामस्वरूप दूसरा और अधिक विनाशकारी विश्वयुद्ध हुआ।

१९३० के दशक में विश्व में जो निराशा छाई हुई थी, उसके बावजूद, सभ्यता की प्रगति होती रही। दुनिया का खाका एकदम नैराश्य का नहीं

था। यातायात और संचार में बहुत अधिक प्रगति हुई और चिकित्साविज्ञान में मानव-शरीर की देख-भाल और स्वस्थता की दिशा में बहुत-कुछ सीखा गया। रसायनशास्त्रियों ने प्रकृति के रहस्यों का पता लगाया जिससे मानव की सुविधा और स्वास्थ्य के लिए नयी वस्तुएँ उत्पन्न करना संभव हो सका। लोकतंत्रीय देशों में मजदूरों को अधिक अधिकार मिले और मशीनों ने उन्हें अधिक कड़ी मेहनत से मुक्त किया। बहुत से उपनिवेश स्वशासन और स्वाधीनता के मार्ग में बढ़ रहे थे। साहित्य, चित्र-कला, मूर्तिनिर्माण, संगीत और वास्तुशिल्प के क्षेत्रों में पुराना चोला उतारकर फेंक दिया गया था और कलाकार नये और अधिक चित्ताकर्षक रास्तों पर बढ़ रहे थे।

१. प्रथम तथा द्वितीय विश्वयुद्धों के बीच निम्न-लिखित देशों में से प्रत्येक ने शिक्षण की दिशाओं में कितनी प्रगति की या क्या परिवर्तन किये : ब्रिटेन, फ्रांस, स्कैण्डिनेवियाई देश, संयुक्त राज्य, भारत, चीन, रूस, जर्मनी और इटली ?
२. प्रथम विश्वयुद्ध के बाद से द्वितीय विश्वयुद्ध के आरम्भ तक के २५ वर्षों में मानव ने कितनी प्रगति की ?

विचार-विमर्श के लिए प्रश्न

(१) कौन ज्यादा महत्त्व का है, किसी आविष्कार के लिए सिद्धान्त निरूपित करना या एक आविष्कार करना ?

(२) आम तौर से धनी लोगों से मानवीय सम्बन्धों के अध्ययन के लिए सहायता पाने की अपेक्षा वैज्ञानिक अनुसंधानों के लिए अनुदान पा जाना क्यों आसान है ?

(३) कुछ एशियाई और यूरोपियन लोगों का विश्वास है कि अमेरिकी लोग कला के विकास में जितना समय देते हैं, मशीनों में उसकी अपेक्षा अधिक समय लगाते हैं। क्या यह सच है ?

(४) तुम व्यक्तिगत रूप से अपने राष्ट्र और अन्य राष्ट्रों के बीच सम्बन्धों को सुधारने के लिए क्या कर सकते हो ?

(५) मंदी के दौरान किसी भी देश की आर्थिक स्थिति सुधारने के लिए "आत्मनिर्भरता" की नीति क्यों बहुत अंशों तक सफल तरीका नहीं है ?

(६) क्या किस्तों में खरीदारी कभी भी उचित है ?

(७) शांति के काल में किसी देश के लिए आत्म-निर्माण अपेक्षित है या उद्योगों को दूसरे देशों से माल खरीदने की अनुमति देनी चाहिए।

(८) किसी भी देश के लिए किसी एक बड़े समुदाय का, जैसे कृषक वर्ग का खराब आर्थिक परिस्थितियों में रहना, क्यों अच्छा नहीं है ?

(९) क्या नये विज्ञानों और बड़े कारखानों के विकास का उस समय की कला, भवन-निर्माण कला और साहित्य के निर्माण से किसी प्रकार का सम्बन्ध है ?

इतिहास के उपकरणों का प्रयोग

एक. नाम, तिथियाँ और स्थान

(क) क्या तुम इन शब्दों का अर्थ स्पष्ट कर सकते हो ?

ऐटम···चतुर्थ आयाम···"उपयोगी ढाँचा," "अभाव वाले मुल्क"···सापेक्षवाद···स्टाक मार्केट···"चामत्कारिक दवाएँ"।

(ख) निम्नलिखित स्थान नकशे में दिखाओ

लाँग आइलैंड, उत्तरी ध्रुव, स्कनेक्टेडी···न्यूयार्क···दक्षिणी ध्रुव।

(ग) **निम्नलिखित व्यक्तियों के बारे में तुम क्या जानते हो ?**

रोजर बेकन···जार्ज बिलो···फ्लायड बेनेट···रिचर्ड बायर्ड···विला कैथर···जान डाल्टन···अलबर्ट आइन्स्टीन···हेनरी फोर्ड···जान गाल्सवर्दी···जार्ज ग्रेशविन···वाल्टर ग्रोपियस···लिनयुतांग···चार्ल्स लिंडबर्ग···एडवर्ड मैकडोवल···टामस मान···आनरे मातिसे··यूजीन ओ'नील···पावलो पिकासो···विली पोस्ट···मार्सिल प्राउस्ट—जार्ज बर्नार्ड शा···दिमित्री शोस्ताकोविच···जाँ सिबेल्यूस···रिचर्ड स्ट्रास···ईगर स्ट्राविंस्की···रवीन्द्रनाथ ठाकुर···सिगरिड उंडसेट···ग्रांट वुड···फ्रैंक लायड राइट।

दो. क्या तुम अपने विचार स्पष्ट रीति से प्रकट कर सकते हो कि ?

(१) निम्नलिखित संस्थानों में से किसी एक के बारे में कक्षा को बताओ : रॉकफेलर···फोर्ड··· कार्नेगी। संस्थान का उद्देश्य और उसे कितना धन दिया गया तथा उस धनराशि से उसने क्या किया, इसका ध्यान रहे।

(२) अगर तुम मिट्टी के काम में दिलचस्पी रखते हो तो विश्व की आधुनिक इमारतों में से एक का मॉडल बनाओ। उसे कक्षा को दिखलाओ।

(३) दिलचस्पी रखने वाले छात्र कक्षा में आधुनिक कविताएँ पढ़ सकते हैं या दुहरा सकते हैं। अन्य शेक्सपीयर या १९ वीं शताब्दी के प्रारम्भ के किसी कवि की छोटी कविताएँ पढ़ें। फिर कक्षा में उनकी तुलना करें।

(४) अगर तुम्हें रसायन शास्त्र या चिकित्सा विज्ञान को अपने भावी जीवन का क्षेत्र बनाने में दिलचस्पी है, तब उसकी शिक्षा और व्यक्तित्व की आवश्यकताएँ खोजो।

(५) तुम्हारी बस्ती में मुख्य कारोबार या रोजगार क्या है ? ब्लैक बोर्ड पर सूची उतारो।

तीन. निर्देशन

अपने सलाहकार निर्देशक से कहो कि वह कालेज में पढ़ते हुए आत्म-निर्भरता, छात्रवृत्ति प्राप्त करने के अवसरों आदि के बारे में कक्षा को बतायें।

चार. बुलेटिन बोर्ड के लिए

निम्नलिखित में से किसी एक के चित्र बोर्ड पर लगाने के लिए इकट्ठे करो : वास्तुशिल्प, पेन्टिंग या बीसवीं शताब्दी की मूर्तिकला। प्रत्येक चित्र के नीचे कलाकार की रचना, नाम और देश लिखो।
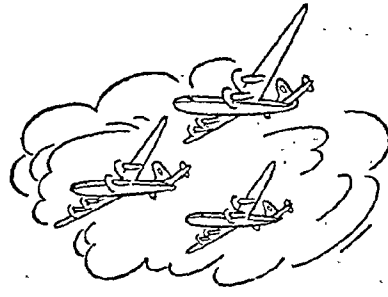
४० और भी अधिक विनाशक युद्ध ने संसार को घेर लिया

दुनिया अभी प्रथम महायुद्ध के कष्टों से नहीं उभर पाई थी कि दूसरा विश्वयुद्ध शुरू हो गया। दुनिया की घटनाओं का अध्ययन करने वाले छात्रों के लिए यह युद्ध अप्रत्याशित नहीं था। दरअसल जो घटनायें कई वर्षों से जमा होती चली आ रही थीं, उनके परिणामस्वरूप १ सितम्बर, १९३९ को प्रथम हमला शुरू हो गया।

दुनिया के लोकतंत्री देशों ने लीग आफ नेशन्स में सहयोग नहीं दिया था जबकि वुडरो विलसन को यह आशा थी कि वे सहयोग करेंगे। प्रत्येक लोकतन्त्री मुल्क सुरक्षा की ओर अपने तरीकों से और अपने हितों के आधार पर सोचता-देखता था, संयुक्त राज्य के लीग आफ नेशन्स में शामिल होने से इन्कार कर देने से वह संस्था और कमजोर पड़ गयी थी। इससे सभी की प्रतिरक्षा कमज़ोर पड़ गयी और अधिनायक यह समझने लगे कि वे बिना किसी रुकावट के एक-एक करके अपने पड़ोसियों पर हमला करने को स्वतन्त्र हैं।

बेरोकटोक हमला द्वितीय विश्वयुद्ध की ओर ले गया

जापानी युद्धलिप्सुओं, एडोल्फ हिटलर और बेनिटो मुसोलिनी के नेतृत्व में अधिनायकवाद ने राष्ट्रों के बीच नैतिकता के प्रति किसी प्रकार के आदर को एक ओर रख दिया था। उन्होंने शपथों, संधियों और अन्तर्राष्ट्रीय कानून की अवज्ञा करते हुए कमजोर राज्यों पर हमले शुरू कर दिये। स्वतन्त्र राष्ट्रों ने उन्हें रोकने में सुस्ती दिखाई।

जापान बनाम चीन—द्वितीय विश्वयुद्ध की ओर ले जाने वाली घटनाओं का क्रम १९३१ में जापान के मंचूरिया पर हमले से आरम्भ हो गया था। यह वहाँ जापानी प्रभुत्व वाले रेलमार्ग पर घटित एक दुर्घटना का परिणाम था, जहाँ कि जापानी नागरिक मारे गये थे। जापान ने इसका दोष चीन पर डाला और कहा कि वह वहाँ कानून और व्यवस्था रखने में असमर्थ है, जापान वहाँ "व्यवस्था की पुनः स्थापना" के लिए गया और इसका अन्त जापान के नियन्त्रण में वहां एक कठपुतली सरकार स्थापित करने से हुआ। इस राज्य को उसने मंचुकुओ नाम दिया। लीग आफ नेशन्स ने आक्रमण के रूप में उसकी निन्दा की, लेकिन उसके खिलाफ कोई कदम नहीं उठाया। इसके उत्तर में जापान ने लीग आफ नेशन्स से नाता तोड़ दिया।

हिटलर बनाम वर्साई की सन्धि—१९३५ में हिटलर ने महसूस किया कि जर्मनी लोकतन्त्रों की अवज्ञा करने के लिए काफी शक्तिशाली हो गया है। उसने वर्साई की सन्धि का प्रत्याख्यान कर दिया, जिससे जर्मनी के पुनः शस्त्रीकरण पर प्रतिबन्ध

वाइड वर्ल्ड
हेल सिलासी, "इथिओपिया के राजाओं का राजा, जूडा का सिंह, ईश्वर का प्रतिनिधि" अपनी वंशपरम्परा सम्राज्ञी शीबा से बताता है।

लगाया गया था और घोषणा की कि जर्मनी ने एक हवाई बेड़ा तैयार कर लिया है और अनिवार्य सैन्य प्रशिक्षण लागू किया जा चुका है।

मुसोलिनी बनाम इथिओपिया—मुसोलिनी शान्ति भंग करने वाला दूसरा अपराधी था। १९३५ में उसने अफ्रीका स्थित स्वतन्त्र राज्य इथिओपिया के विरुद्ध अभियान शुरू किया। यह अभागा देश इटली के हवाई हमलों के खिलाफ प्रतिरक्षा के साधनों से हीन था और वहाँ मूल निवासियों के गांव-के-गाँव साफ कर दिए गये थे। उसके सम्राट् हेलसिलासी का लीग आफ नेशन्स से अपील करना व्यर्थ ही गया। लीग आफ नेशन्स ने इटली के खिलाफ आर्थिक प्रतिबन्ध लगाने की कोशिश की: वे बहुत कामयाब सिद्ध नहीं हुए क्योंकि इटली गोला-बारूद का भण्डार जमा करता रहा था। इसके अलावा फ्रांस के प्रधान मन्त्री पेरी लवाल ने गुप्त रूप से इथिओपिया पर हमले पर अपनी मंजूरी दी थी। इस बार भी लीग असमर्थ सिद्ध हुई और १९३६ के ग्रीष्म तक इटली ने इथिओपिया को हड़प लिया।

राइनलैण्ड में हिटलर—दूसरा कदम हिटलर का था। उसने लोकार्नो संधियों को रद्द घोषित किया और वर्साई की संधि के अनुसार विसैन्यीकृत क्षेत्र राइनलैण्ड में अपनी सेनाएँ भेज दीं।

अधिनायक और स्पेन का गृहयुद्ध—हिटलर और मुसोलिनी एक-दूसरे के और करीब आ गये थे क्योंकि उनके सरकार के सिद्धान्त और युद्धास्त्र, दोनों, एक-दूसरे से मिलते थे। ये अस्त्र १९३६ में स्पेन में छिड़े गृहयुद्ध में प्रदर्शित किये गये। तत्काल फ्रांस और ब्रिटेन के भयभीत लोकतन्त्रों ने अपनी तटस्थता घोषित कर दी। रूस ने स्पेन की रिपब्लिक में सत्तारूढ़ लायलिस्टों को कुछ सहायता भेजी, लेकिन रूस पुरअसर मदद भेजने की हालत में नहीं था और उसकी सहायता ने लायलिस्टों के खिलाफ "साम्यवादी" हो जाने की आवाज को बुलन्द किया। संयुक्त राज्य ने दोनों पक्षों को जहाजों से युद्धास्त्र भेजे जाने की सीमा बाँध दी थी, लेकिन स्पेन के गृहयुद्ध ने उन नये और संहारक अस्त्रों के परीक्षण का काम किया जो जर्मनी और इटली ने फ्रेंको को भेजे थे। फ्रेंको रिपब्लिक पर हमला करने वाली फौजों का नेता था। गृहयुद्ध १९३९ के बसन्त तक खिचता चला गया। तब फ्रेंको ने एक फासिस्ट राज्य की स्थापना की और स्वयं उसका अधिनायक बना। स्पेन के युद्ध ने एक और रिपब्लिक को खत्म कर हिटलर और मुसोलिनी का एक और मित्र बढ़ाया तथा उन्हें अतिरिक्त प्रतिष्ठा दी।

जापान चीन में—इसी दर्मियान जापान मंचूरिया को जीत चुका था और अब चीन की मुख्यभूमि पर हमले के लिए तैयार था। जापान ऐसा करने में अपने को सुरक्षित महसूस कर रहा था, क्योंकि ब्रिटिश और फ्रांसीसी नेता व्यस्त थे और इटली के इथिओपिया में बढ़ाव और स्पेन

जर्मनी तथा इटली की फ्रैंको को मदद चुपचाप देख रहे थे। रूस अपने देश में आर्थिक और सामाजिक परिवर्तन में फँसा हुआ था और जापानी आक्रमण को चुनौती देने के लिए तैयार नहीं था, संयुक्त राज्य अलगाववादी हो गया था।

१९३७ में जापान ने बिना युद्ध घोषित किये चीन पर हमला किया। उसका उद्देश्य उस देश के बन्दरगाहों, प्रमुख शहरों, रेल मार्गों और सड़कों पर नियंत्रण प्राप्त करना था। चीनी सेनाएँ कम साधनों वाली और प्रशिक्षित थीं, लेकिन चीनी जनता ने दुश्मन के सामने बहादुरी दिखलाई। च्यांग काई शेक अपनी सेनाओं और सरकार के साथ आहिस्ता आहिस्ता अन्दरूनी क्षेत्रों की ओर पीछे हटा। उन्होंने यांत्सी नदी के ऊपर की ओर चुँकिंग में अपना हेडक्वार्टर बनाया। ब्रिटेन तथा संयुक्त राज्य से प्राप्त थोड़ी सामग्री और रूस से प्राप्त कुछ अधिक सामान ने उन्हें डट कर मुकाबला करने में ज्यादा मदद नहीं पहुँचाई। पर चीन का आकार उसके लिए अनुकूल था। देश इतना बड़ा है कि विदेशी सेनाएँ समूचे देश पर कब्जा नहीं कर सकतीं। तो भी, १९३९ तक जापान ने सारे तटवर्ती मैदान और अन्दरूनी हिस्से को जाने वाली सड़कों पर नियन्त्रण प्राप्त कर लिया था।

मैत्रियाँ—लोकतंत्री राष्ट्र बैठे हुए इन आक्रमणों की निंदा तो करते थे लेकिन उनके प्रतिकार के लिए कुछ नहीं करते थे। इससे अधिनायकों का साहस और बढ़ा। उन्होंने लोकतन्त्री देशों की सैनिक कमजोरियों और युद्ध के प्रति उनकी घृणा को देखा। १९३६ में जर्मनी और इटली के बीच इस दिशा में एक संधि हुई। यह रोमन-बर्लिन धुरी कहलाती थी। तब एक कम्युनिस्ट विरोधी संधि हुई जिसमें जापान, जर्मनी, स्पेन और हंगरी शामिल थे। इस कार्यवाही पर लोकतन्त्री राष्ट्रों का उत्तर तुष्टीकरण का था।

हिटलर बनाम आस्ट्रिया—अपने देशवासियों से अपील की हिटलर का एक तरीका यह भी था कि वह सब जर्मनों को संयुक्त करने का नारा लगाता था। उसके गुप्तचर और "पर्यटक" आसपास के देशों में इन खबरों को फैलाने के लिए जाते थे कि हिटलर ने जर्मनी के लिए कितने महान् कार्य किये हैं। उदाहरणार्थ उसने वर्साई संधि को उठा फैंका है; उसने सभी जर्मनों को रोजगार दिलाया है। ये गुप्तचर यह भी बताते थे कि अगर विदेशों में रहने वाले जर्मन अपनी पितृभूमि से संयुक्त हो जायँ तो जर्मनी और भी बहुत से बड़े काम कर सकता है। इन कार्यों के परिणामस्वरूप, जहाँ कहीं भी जर्मनों के वंशज रहते थे, उन देशों में नाजी पार्टियाँ बन गयीं।

जब हिटलर की युद्ध की मशीनरी पूरी रफ्तार से चल रही थी, तब उसने अपने पड़ोसियों पर हमला किया। आस्ट्रिया में एक बड़ी नाजी पार्टी थी। १९३४ में नाजी सरकार कायम करने के प्रयास में राष्ट्रपति की हत्या कर दी गयी थी लेकिन रिपब्लिकन सरकार का तख्ता नहीं उलट पाया था। १९३८ के बसंत तक हिटलर ने यह महसूस किया कि उसकी प्रतिष्ठा इतनी बढ़ गयी है कि वह आस्ट्रिया को ले सकता है। मार्च, १९३८ में, अपनी सेना का नेतृत्व संभालते हुए उसने विएना को प्रयाण किया। आस्ट्रिया को बिना किसी प्रतिरोध के तृतीय रिक का अंग घोषित कर दिया गया। इंगलैंड और फ्रांस ने विरोध किया लेकिन कोई सक्रिय कदम नहीं उठाया।

हिटलर बनाम चेकोस्लोवाकिया—इसके बाद हिटलर चेकोस्लोवाकिया की ओर मुड़ा, जो पूर्वी यूरोप का एकमात्र लोकतंत्री देश था। इस देश के पश्चिमी भाग में सामरिक महत्त्व के पर्वतों वाला
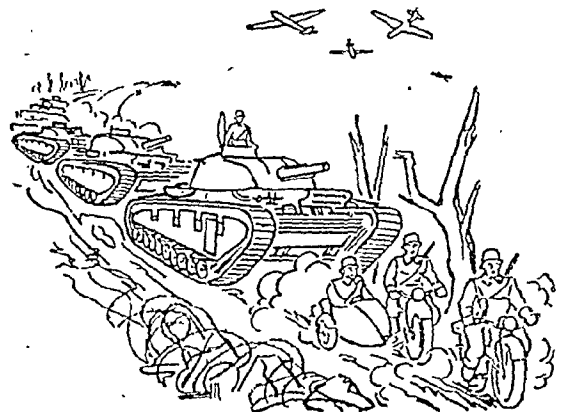
एक जिला सुडेटनलैंड था। लेकिन इस पर्वतीय जिले में लगभग ३० लाख जर्मन रह रहे थे जो चेक प्रजा थे। यहाँ दूसरी नाजी पार्टी थी। हिटलर के अनुचरों ने यहाँ असंतोष जाग्रत किया और मांग की कि उन्हें जर्मनी का एक अंग बना दिया जाय। इसका उद्देश्य चेकों के लिए पहाड़ों की प्रतिरक्षा समाप्त कर उन्हें आक्रमण के लिए खोल देना था। अन्त में ब्रिटेन और फ्रांस कुछ जागे। ब्रिटिश प्रधान मंत्री नेविल चैम्बरलेन और फ्रांस के प्रधान मंत्री एदवार दलादिया सितम्बर १९३८ में म्यूनिख में हिटलर और मुसोलिनी से मिले। युद्ध रोकने की आशा रखते हुए उन्होंने सुडेटनलैंड जर्मनी को दे दिया। हिटलर ने घोषित किया कि यह मांग उसकी आखिरी मांग होगी। अब यूरोप के लोग शान्ति से रह सकते हैं। तो भी, दूसरे वसंत में हिटलर ने शेष चेकोस्लोवाकिया को हंगरी और जर्मनी के बीच में बांट लिया। हिटलर ने पुन: ऐलान किया कि उसकी अब और अधिक क्षेत्र की मांग नहीं होगी। लेकिन थोड़े ही अर्से के बाद उसने डांजिग ले लिया और "पोलिश गलियारे" को ले लेनें की धमकी दी। उसी समय मुसोलिनी ने अलबानिया को जीत लिया।

लोकतन्त्री देशों का दृष्टिकोण—शान्तिपूर्ण पड़ोसियों पर इन हमलों के दर्मियान लोकतन्त्री देश शक्तिहीन प्रतीत होते थे। क्रियाशील होने की कुछ आवाजें उठीं। प्रेसीडैंट फ्रैंकलिन डी० रूजवेल्ट ने, १९३७ में शिकागो में एक भाषण में कहा कि, 'इस तथ्य को अवश्य ही स्वीकार किया जाना चाहिए कि राष्ट्रीय नैतिकता भी उतनी ही महत्त्वपूर्ण है जितनी कि व्यक्तिगत नैतिकता।" उन्होंने कहा कि हमलावर राष्ट्रों को संक्रामक रोगी की तरह सबसे अलग रखा जाना चाहिए। उनके इस भाषण की तीव्र आलोचना की गयी। ऐसा प्रतीत होता था कि अमेरिकी जनता अधिनायकों के खिलाफ किसी प्रकार के सख्त कदम उठाने के लिए तैयार नहीं थी। अधिनायकों के खिलाफ प्रमुख आवाज ब्रिटेन के विन्स्टन चर्चिल ने उठाई थी, जिन्होंने सैनिक तैयारी रखने का अनुरोध किया था। उनकी यह अपील भी सुनी-अनसुनी कर दी गयी। लोकतन्त्र पूरी तरह नहीं जागे और अधिनायकों ने अपने रास्ते पर बढ़ना जारी रखा।

१. राष्ट्रों के बीच सहयोगात्मक प्रयासों में क्या कमजोरियाँ नजर आईं?
२. जापान ने मंचूरिया पर क्यों हमला किया?
३. वर्साई की संधि को भंग करते हुए हिटलर ने कौन-सा कदम उठाया?
४. इटली के इथिओपिया पर हमले के बारे में बताओ।
५. हिटलर और मुसोलिनी ने स्पेन के युद्ध का किस तरह लाभ उठाया? फ्रांस और ब्रिटेन का इसके प्रति क्या रुख था? रूस और संयुक्तराज्य का क्या दृष्टिकोण रहा?
६. १९३७ में जापान ने चीन पर हमला करना क्यों सुरक्षित समझा? उसे वहाँ कितनी सफलता मिली?
७. बर्लिन-रोम धुरी क्या थी? कम्युनिस्ट-विरोधी मैत्री संधि क्या थी?
८. हिटलर ने गुप्तचरों और "पर्यटकों" को पड़ोसी देशों में क्यों भेजा?
९. किन परिस्थितियों में हिटलर ने आस्ट्रिया पर अधिकार किया?
१०. म्यूनिख-समझौता क्या था?

द्वितीय विश्व-युद्ध आरंभ

जब यह निश्चित-सा हो गया कि तानाशाहों का अगला कदम पोलैंड पर हमला करना है तो उनके आक्रमणों की कोई सीमा प्रतीत नहीं होती थी। फ्रांस और ब्रिटेन जागरूक हो चले थे और उन्होंने पोलैण्ड से एक समझौता किया कि यदि जर्मनी ने उस पर हमला किया तो वे उसकी मदद को दौड़ेंगे। उन्होंने रूस, रूमानिया, तुर्की और ग्रीस को भी इस संधि में सम्मिलित करने का प्रयास किया। यह बात-चीत चल ही रही थी कि अगस्त, १९३९ में, स्तालिन और हिटलर ने एक अनाक्रमण संधि कर दुनिया को आश्चर्य में डाल दिया। इस प्रकार, रूस के हमले से अपने आपको सुरक्षित कर हिटलर ने १ सितम्बर, १९३९ को युद्ध की घोषणा किये बगैर, पोलैंड पर धावा बोल दिया।

पोलैण्ड की पराजय—पोलैंड पर हमले के बाद, जिसका पोलों ने मुकाबला किया, ब्रिटेन और फ्रांस ने जर्मनी के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी। पोलैंड एक आधुनिक सेना के विरुद्ध युद्ध के लिए तैयार नहीं था और फ्रांस तथा ब्रिटेन के पास उसे सक्रिय सहायता पहुँचाने के कोई साधन नहीं थे। हिटलर को पोलैंड पर अधिकार कर लेने में सिर्फ चार सप्ताह लगे। रूस, हिटलर के साथ हुए समझौते के अनुसार, देश का आधा पूर्वी हिस्सा लेने के लिए सामने आया। इस प्रकार पोलैण्ड फिर बंट गया।

"नकली युद्ध"—१९३९-१९४० के शिशिर में युद्ध रुका हुआ था। तड़ित-गति-युद्ध या बिजली की-सी तेजी से लड़ाई कुछ समय के लिए रुक गयी थी। लोग जर्मनी और पश्चिमी राष्ट्रों के बीच "नकली युद्ध" की चर्चा करने लगे थे। इसी दौरान, पूर्व में रूस ने लियुआनिया, एस्थोनिया और लैटविया को अपने में मिलाकर फिनलैंड से भूमि मांगी। जब फिनलैंड ने विरोध किया तो उस पर हमला कर दिया गया और बहादुराना मुकाबले के बावजूद, उसे जमीन सौंप देनी पड़ी। फ्रांस और ब्रिटेन उम्मीद करते थे कि उन्हें अधिक नहीं लड़ना पड़ेगा और युद्ध समाप्त हो जायगा लेकिन "नकली" युद्ध का यकायक अंत हो गया और अचानक ही हिटलर ने तड़ित-गति-युद्ध पुनः आरम्भ कर दिया।

नाजी तेजी से पश्चिम की ओर बढ़े

नीदरलैण्ड्स, बेल्जियम, डेनमार्क और नार्वे पराजित—बिना किसी प्रकार की चेतावनी या शिकायत के, १९४० के वसंत में, हिटलर पश्चिम की ओर मुखातिब हुआ और उसने नीदरलैंड्स, बेल्जियम, डेनमार्क तथा नार्वे पर हमले किये। उसका बहाना यह था कि वह ब्रिटिश हमले से उनकी रक्षा कर रहा है। यह एक बहाना मात्र था क्योंकि वहाँ इस बात का कोई भी सबूत नहीं था कि ब्रिटेन का उन पर या किसी भी अन्य तटस्थ देश पर हमले का कोई इरादा है। डेनमार्क ने मुकाबला नहीं किया, लेकिन अन्य देशों ने टक्कर ली और उन्हें अत्यधिक तेजी के साथ कुचल दिया गया। बेल्जियम के राजा ने शीघ्र आत्मसमर्पण कर दिया लेकिन डच और नार्वे की सरकारों के शासक ब्रिटेन

३३५,००० ब्रिटिश और फ्रेंच सैनिक डंकर्क खाड़ी से हटाए गये। इस पीछे हटने के बाद चर्चिल ने इंग्लैंड की भावना व्यक्त करते हुए लिखा था कि "इससे पूर्व कभी भी कोई राष्ट्र अपने दुश्मनों के समक्ष इतना नंगा नहीं हुआ था।"

वाइड वर्ल्ड

भाग गये, जहाँ वे संघर्ष में सहायता के लिए कार्य करने लगे। नार्वे की व्यापारिक जहाजरानी बड़ी सहायक सिद्ध हुई।

फ्रांस पर हमला—छोटे राष्ट्रों पर कब्जा कर उन्हें अपनी प्रजा बना लेने के बाद हिटलर फ्रांस की ओर मुड़ा। फ्रांस अपनी पूर्वी सीमा पर बने हुए किलों या मेजीनो लाइन पर भरोसा लगाये हुए था लेकिन जर्मनी ने उसे बेकार सिद्ध कर दिया क्योंकि बेल्जियम के एकाएक आत्म-समर्पण कर देने से फ्रांस का उत्तरी हिस्सा अरक्षित हो गया था। इस तरीके से हिटलर ने, फ्रांस की मदद के लिए भेजी गयीं ब्रिटिश सेनाओं और फ्रांसीसी सेनाओं के बीच रुकावट खड़ी कर दी थी।

डनकर्क—ब्रिटिश सेनाओं को फ्रांसीसी तट के डनकर्क नगर में पीछे हट आने को विवश होना पड़ा। वे निराश होकर भागे। नेविल चैम्बरलेन के बाद ब्रिटेन के नये प्रधान मंत्री विन्स्टन चर्चिल ने ब्रिटिश सेनाओं को लड़ते रहने के लिए प्रेरित किया। ब्रिटिश जनता ने बहादुरी के साथ चर्चिल की बात को माना। प्रत्येक नाव, जिसमें आदमी भरे जा सकते थे, इंगलिश चैनल के पार पीछे हटती हुई ब्रिटिश सेना के बचाव के लिए, भेजी गयी। जर्मनों की जमीन तथा समुद्र पर भारी बम वर्षा के बीच लगातार पाँच दिन तक ये नावें ब्रिटेन और फ्रांस के बीच दौड़ती रहीं। डोवर जलडमरूमध्य टूटी हुई नावों से और फ्रांसीसी तट मृतकों की लाशों से पट गया था। तो भी ब्रिटेन अपनी दो-तिहाई सेना अपने घर ले आने में सफल हुआ। अंग्रेजों के लगभग सभी हथियार डनकर्क के तट पर छूट गये थे। ब्रिटिश द्वीप अरक्षित प्रतीत होता था।

फ्रांस की पराजय—फ्रांस जो अब ब्रिटिश सेनाओं की मदद के बगैर रह गया था, घबराहट में पड़ गया। चंद सप्ताहों में उसे हरा दिया गया। हिटलर को उसकी मुसोलिनी के साथ मित्रता से सहायता मिली थी। इटली अभी युद्ध में सम्मिलित नहीं हुआ था और फ्रांस को प्राणघातक चोट पहुँचने की इन्तजार में था। पर उसने ब्रिटिश तथा फ्रांसीसी सेनाओं और जहाजी बेड़ों के लिए एक खतरा बनाये रखा और उन दोनों को ही भूमध्य सागर में निष्क्रिय बना डाला। मुसोलिनी ने भी फ्रांस की लूट में अपना हिस्सा बंटाने के लिए १० जून को फ्रांस के साथ युद्ध की घोषणा कर दी। १४ जून को जर्मन पेरिस में प्रविष्ट हुए। फ्रांस ने नगर को नष्ट होने से बचाने के लिए उसे खोल दिया था। २२ जून को प्रथम महासमर के वीर सेनानी, वयोवृद्ध पेताँ ने जर्मनी के साथ एक युद्ध-विराम पर हस्ताक्षर किये। उसे जर्मनी के आधिपत्य में फ्रांस की सरकार का मुखिया बनाया गया और राजधानी विशी बनी। अब जर्मनों का समूचे उत्तरी फ्रांस पर कब्जा था। महान् फ्रांसीसी सेना, जो दुनिया की बेहतरीन सेनाओं में से एक गिनी जाती थी, अपनी अधिकांश टुकड़ियों के युद्ध में भाग लेने से पेश्तर ही, पराजित हो गयी।

ब्रिटेन के लिए युद्ध—ब्रिटेन अब अकेला रह गया था। उसके पास न शस्त्र थे और न उन्हें बनाने के साधन ही। जनशक्ति भी उसके पास पर्याप्त मात्रा में नहीं थी। लेकिन वह डटकर खड़ा था। उसने अपने बन्दरगाहों में खड़े फ्रांसीसी जहाजों को ले लिया और दक्षिणी अफ्रीका के ओरेन नामक स्थान पर

प्रतिरक्षा कारखानों और तत्सम्बन्धी उद्योगों में काम करने वाली महिलाओं का युद्ध में बड़ा योगदान रहा। इसने अमेरिका के घरेलू जीवन में परिवर्तन ला दिया और कुछ परिवर्तन स्थायी था।
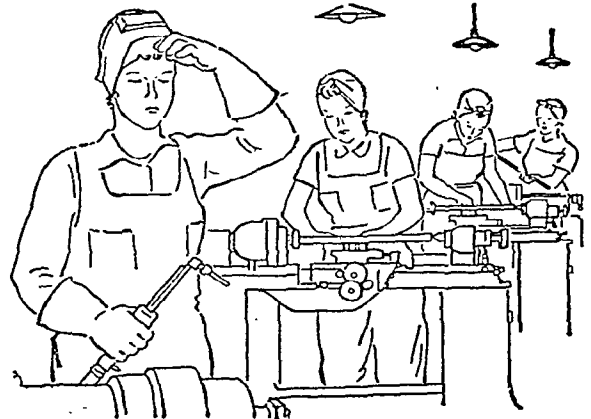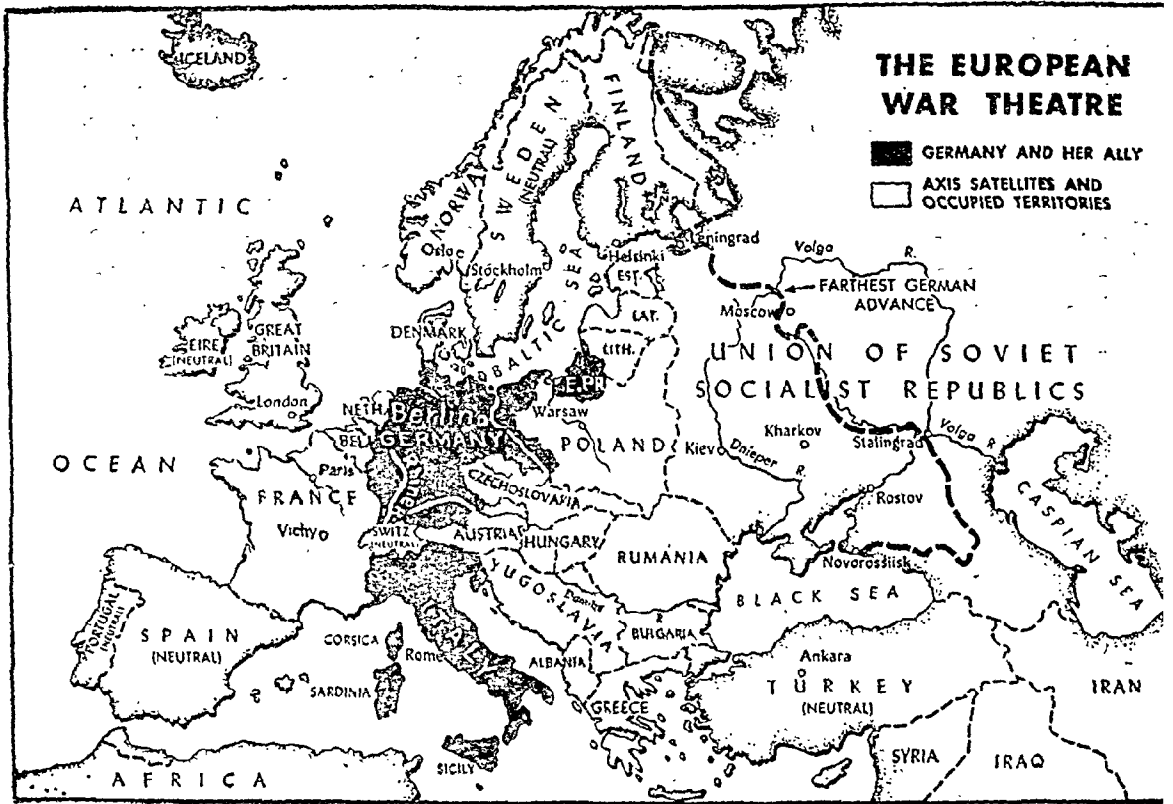
यूरोपीय युद्ध-क्षेत्र। जर्मनी और उसके साथी। धुरी राष्ट्रों के साथी और अधिकृत क्षेत्र।

उन जहाजों को उड़ा दिया जिन्होंने उसके साथ सहयोग करने से इन्कार किया। उसे जहाजों की सख्त ज़रूरत थी क्योंकि जर्मन पनडुब्बियों ने उसको बहुत भारी क्षति पहुँचाई थी। इसी दर्मियान पूर्व में जापान के बढ़ते हुए हमलों को अधिक संख्या में ब्रिटिश जहाजों की मदद के बगैर रोका नहीं जा सकता था और इटालियन पूर्वी अफ्रीका में ब्रिटिश उपनिवेशों के हिस्सों को रौंद रहे थे।

दुनिया को आशंका थी कि इस नाटक का अगला दृश्य ब्रिटेन पर हमला होगा। जब विन्स्टन चर्चिल प्रधान मंत्री बने थे तो उन्होंने अंग्रेजों से कहा था कि मेरे पास "खून, कठोर परिश्रम, आँसू और पसीना" के अलावा देने को कुछ भी नहीं है। उनकी यह चेतावनी सही निकली। १९४० के ग्रीष्म में जर्मन विमानों ने लन्दन और अन्य ब्रिटिश बंदरगाहों के शहरों में टनों बम बरसाये। छोटे से ब्रिटिश विमान बेड़े (रायल एयर फोर्स) ने जर्मनों के विमानों और विमान चालकों को भारी संख्या में मार गिराया। चर्चिल के शब्दों में, "कभी भी इतने कम लोगों ने इतने अधिक को अपना इतना अधिक ऋणी नहीं बनाया था?" जर्मन इंगलिश चैनल को पार कर इंगलैंड पर हमला करने में कभी भी सफल नहीं हुए।

हिटलर ग्रीस और उत्तरी अफ्रीका में

ब्रिटेन के लिए उसके घर ही में संकट नहीं था। इटली ने १९४० में ग्रीस पर हमला किया। ग्रीक इटालियनों के मुकाबले में कहीं तगड़े पड़ रहे थे और हिटलर को इटली की मदद के लिए आना पड़ा। हिटलर रूमानिया, हंगरी और यूगोस्लाविया को डरा कर मित्र बनाने में सफल रहा था। तब वह ग्रीस की ओर बढ़ा। ग्रीस की सहायता करने वाली ब्रिटिश सेनाओं को पीछे क्रीट में हटना पड़ा और फिर वह भी उनके हाथ से निकल गया। १९४१

के वसंत में, जर्मनों ने जनरल इर्विन रोमेल के नेतृत्व में, उत्तरी अफ्रीका में पूर्व की ओर बढ़ाव जारी रखा। ब्रिटिश जनरल वावेल को मिस्र में पीछे हटने को विवश होना पड़ा और स्वेज नहर के लिए खतरा पैदा हो गया।

युद्धकालीन शांति

तब जर्मनी की ओर से युद्ध बन्द कर दिया गया क्योंकि हिटलर अन्य योजनाएँ बना रहा था। इस युद्धबन्दी के दौरान दक्षिण अफ्रीकी सेनाओं ने इटली से इथिओपिया ले लिया और ब्रिटिश नौसेना ने भूमध्यसागर में इटालियन नौसेना को ध्वस्त कर दिया। धुरी संधि वाले राष्ट्रों के अगले कदम के मुकाबले की तैयारी के लिए ब्रिटेन ने इस युद्धबन्दी का लाभ उठाया।

१. ब्रिटेन और फ्रांस ने पोलैंड के साथ क्या समझौता किया ?
२. १६३६ में हिटलर और स्तालिन ने अनाक्रमण संधि क्यों की ?
३. पोलैंड की पराजय का वर्णन करो।
४. रूस ने अपने पड़ोसियों के खिलाफ क्या कार्रवाई की ?
५. तड़ित-गति-युद्ध का क्या मतलब है ?
६. किन-किन पश्चिमी तटस्थ राष्ट्रों पर हिटलर ने हमला किया, क्यों किया और उसके क्या परिणाम हुए ?
७. हिटलर के फ्रांस पर हमले का क्या परिणाम रहा ?
८. ब्रिटेन का प्रधानमंत्री कौन बना ?
९. डनकर्क से बचाव की कहानी सुनाओ।
१०. डनकर्क से पीछे लौटने पर ब्रिटेन की क्या स्थिति थी ?
११. फ्रांस के भाग्य-निर्णय में पेताँ का क्या हिस्सा रहा ?
१२. "ब्रिटेन के लिए लड़ाई" क्या थी ?

युद्ध का प्रसार

जर्मनी बनाम रूस—गोकि हिटलर और स्तालिन ने अनाक्रमण समझौता किया था लेकिन हिटलर स्तालिन से भयभीत था। संधि से पहले उसने बड़े कड़े शब्दों में, स्तालिन और साम्यवाद की भर्त्सना की थी। रूस उसे भूला न होगा। २२ जून, १९४१ को, बिना चेतावनी या जाहिरा कारण के, जर्मनी ने रूस पर हमला बोल दिया। हर सप्ताह रूसियों को पीछे हटने के लिए विवश होना पड़ता था, लेकिन जर्मनों को रूसी सेनाओं को विनष्ट करने में सफलता नहीं मिली। इन सेनाओं ने संघर्ष की आश्चर्यजनक शक्ति का परिचय दिया। रूस में कड़ाके की ठंड पड़ने लगी। पर जर्मन अभी तक अपने दुश्मनों को हराने में असफल रहे थे, गोकि उन्होंने उन्हें रूसी नगरों के द्वार तक धकेल दिया था।

रूस की बहुत अधिक क्षति हुई। हजारों वर्ग-मील खेती वाली जमीन रौंद दी गयी थी और हजारों की संख्या में नागरिक और सैनिक मारे गये थे। सैकड़ों नगर नष्ट हो गये और कारखाने, बाँध तथा बिजली घर ढहा दिये गये, लेकिन रूसियों को हराया नहीं जा सका।

अमेरिका से ब्रिटेन को मदद—हिटलर जानता था कि अगर ब्रिटेन को नष्ट करना है तो उसका उसके उपनिवेशों से सम्बन्ध काट देना होगा, जिनमें से सभी (आयर को छोड़कर) से युद्ध में उसे मदद आ रही थी। जर्मन पनडुब्बियों ने अतलांतक में ब्रिटेन के जहाजों को भयावह क्षति पहुँचाई थी। एक समय ऐसा प्रतीत होता था कि ब्रिटेन भूखों मार दिया जायगा। जर्मनी ने उत्तरी अफ्रीका में उस पर हमला कर भारत और आस्ट्रेलिया के लिए उसके "मर्म-मार्ग' पर हमला किया था।

इस स्थान पर अमेरिका की मदद ने बहुत बड़ा काम दिया। युद्ध के आरंभ से ही राष्ट्रपति रूजवेल्ट और अमेरिकी जनता का भारी बहुमत ब्रिटेन के उद्देश्य से सहानुभूति रखता आया था। पर अमेरिकी तटस्थता कानून यह कहता था कि अगर यह राष्ट्रपति घोषित करते हैं कि युद्ध की स्थिति विद्यमान है, तो युद्ध के किसी भी पक्ष को युद्ध-सामग्री न भेजी जाय। हिटलर द्वारा प्रतिरक्षा विहीन पोलैंड को कुचले जाने के बाद, इस कानून में संशोधन कर ऐसे राष्ट्रों को अमेरिका के पास

आने तथा सामग्री के लिए नकद धन देकर सामग्री को अपने देश ले जाने की अनुमति दे दी गयी। यह "नकद दो, माल उठाओ" वाली योजना तब तक तो चलती रही जब तक इंगलैण्ड के पास धन और माल ढोने के लिए जहाज, दोनों थे। जब यह स्पष्ट हो गया कि सिर्फ योजना ही उसकी मदद के लिए काफी नहीं है तो कांग्रेस ने "उधार-पट्टा कानून" पास किया। इसमें सात अरब डालर का गोला-बारूद बनाकर उन राष्ट्रों को "उधार" या पट्टे पर दिये जाने की व्यवस्था रखी गयी जो धुरी राष्ट्रों से लड़ रहे होंगे और जिनकी सहायता अमेरिका की सुरक्षा के लिए महत्त्वपूर्ण प्रतीत होगी। बाद में राष्ट्रपति ने आदेश दिया कि संयुक्त राज्य की नौसेना जर्मन पनडुब्बियों और हमलों का पता लगाने के लिए समुद्रों के आर-पार लगभग आधी दूरी तक गश्त लगाये।
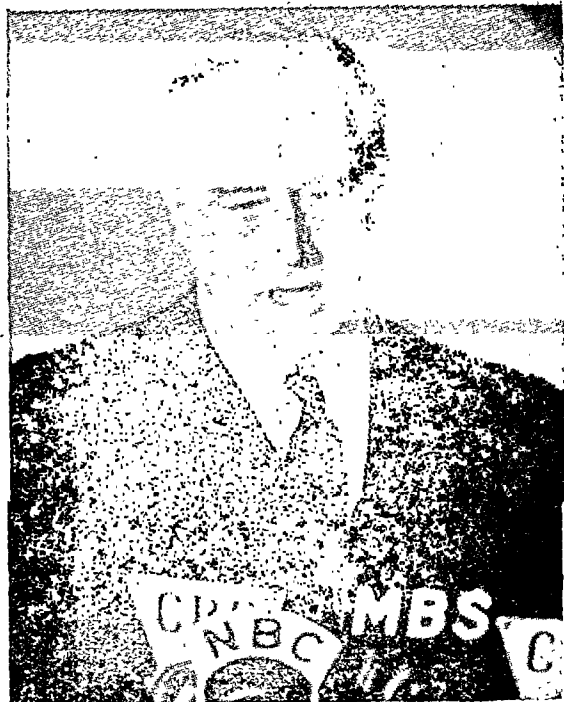
पर्ल हार्बर पर हमले ने संयुक्त राज्य को भी युद्ध में घसीटा

जर्मनी अब दूसरे साथी को भी युद्धभूमि में उतारने में सफल हुआ था। अक्तूबर, १९४१ में फासिस्ट मनोवृत्ति का हिकेडी तोजो जापान का प्रधान मंत्री बना। उसने देखा कि इस समय अन्य राष्ट्र अतलांतक में जुटे हुए हैं और इस समय एशिया पर नियन्त्रण प्राप्त करने का अच्छा मौका है। ७ अक्तूबर, १९४१ को जापान ने हवाई स्थित पर्ल हार्बर पर हमला कर दिया। इस कार्य से संयुक्त राज्य की कांग्रेस ने तत्काल युद्ध के समर्थन में मत दिया। कुछ ही दिनों बाद जर्मनी और इटली ने संयुक्त राज्य के खिलाफ युद्ध की घोषणा कर दी। कुछ ही घंटों बाद कांग्रेस ने सर्वसम्मति से इन दोनों राष्ट्रों के खिलाफ युद्ध के लिए मत देकर उनका उत्तर दिया। इस प्रकार घटनाओं का एक सिलसिला, जो यूरोप से आरंभ हुआ था, सारी दुनिया को युद्ध में घसीट लाया और यह युद्ध दुनिया के इतिहास में सर्वाधिक खर्चीला और विध्वंसक युद्ध बना।

वाइड वर्ल्ड

"पर्ल हार्बर" पर हमले के अगले दिन राष्ट्रपति रूजवेल्ट ने कांग्रेस से जापान के खिलाफ युद्ध की घोषणा की मांग की।

फिलीपीन का पतन—१९४२ का आरंभ मित्रराष्ट्रों के लिए धुंधला प्रतीत होता था। जर्मनों का उत्तरी अफ्रीका में, पूर्व में अल अलामे तक नियन्त्रण हो चला था। रूस ने रोस्तोव को पुन: प्राप्त करने के लिए प्रत्याक्रमण शुरू कर दिया था, पर जर्मन रूस में जमे हुए थे और लेनिनग्राड के द्वारों को अब भी बंद किये हुए थे। तथापि सुदूर पूर्व में दुश्मनों को ज्यादा सफलता नहीं मिली थी। जापानियों ने आसानी से फिलीपीन को घेर लिया था, वहाँ की थोड़ी सी अमेरिकी सेना, बाहर सहायता की कोई संभावना न होने से कोरेगीडोर के छोटे से किलेबंद टापू में जमा हो गयी थी। अन्त में, बहादुरी से वहाँ टक्कर लेने के बाद, जनरल जोनाथन एम० वेनराइट को ६ मई, १९४२ को आत्मसमर्पण के लिए विवश होना पड़ा। फिलीपीन अब जापानियों के हाथों में आ गया था।

जापान की सफलताएँ—ब्रिटेन, अमेरिका और डचों में से किसी के पास भी जापानियों को रोकने के लिए सेनाएँ नहीं थीं। वे आगे बढ़ते चले आ रहे थे। जापानी टिड्डी दल की तरह मलाया प्रायद्वीप में छा गये थे और उन्होंने 'पूर्व में ब्रिटेन के जिब्राल्टर' सिंगापुर पर कब्ज़ा कर लिया था। उन्होंने बर्मा को रौंद डाला और भारत के लिए खतरा बन गये थे। जावा सागर में डच, आस्ट्रेलियाई और अमेरिकी संयुक्त नौसैनिक दस्तों ने अपनी वीरता का अच्छा परिचय दिया लेकिन उन्हें पीछे हटना पड़ा। तब जापानियों ने सेलेबीज, सुमात्रा और जावा को सर कर लिया और सोलोमन्स में अपनी सेनाएँ उतारीं। अगला शिकार आस्ट्रेलिया प्रतीत होता था। आस्ट्रेलिया से जनरल डगलस मैक आर्थर, जो कोरेगीडोर से भाग निकला था, प्रत्याक्रमण कर वापस लौटने की योजना बना रहा था। उसकी योजना अब तक दुश्मनों को रोक नहीं पाई थी। उन्होंने फिलीपीन के पूर्व में वेक द्वीप और जापान के उत्तर-पूर्व में अल्यूशियन के कुछ हिस्से पर अधिकार कर लिया था। १९४२ के ग्रीष्म तक जापानी एशिया के बड़े हिस्से को और प्रशान्त द्वीपों के अधिकांश को जीत चुके थे। इन क्षेत्रों में वंग या कलई, रबर, क्विनीन और अन्य बहुमूल्य खनिज पदार्थों की अटूट सम्पत्ति भरी हुई थी।

(१) किन परिस्थितियों में हिटलर ने सोवियत रूस पर हमला किया?
(२) युद्ध का रूस पर क्या प्रभाव पड़ा?
(३) किन डोमीनियनों ने धुरी राष्ट्रों के खिलाफ युद्ध की घोषणा की?
(४) पनडुब्बियों से युद्ध का ब्रिटेन पर क्या प्रभाव पड़ा?
(५) अमेरिकी तटस्थता कानून क्या था? उसमें क्या संशोधन हुआ।
(६) उधार-पट्टा क्या था?
(७) संयुक्त राज्य ने ब्रिटेन को अन्य क्या सहायता दी?
(८) १९४१ में जापान का प्रधान मंत्री कौन था?
(९) पर्ल हार्बर पर हमले की तिथि कौन सी थी? संयुक्तराज्य ने इस हमले का क्या जवाब दिया?

मित्रराष्ट्रों का जवाबी हमला

दक्षिणी प्रशान्त में—जापान अपने प्रसार की सीमा तक पहुँच चुका था। ७ अगस्त, १९४२ को अमेरिकी फौजें दक्षिणी सोलोमन्स के ग्वाडलकनाल द्वीप में उतरीं। जनरल डगलस मैकआर्थर ने अपना दीर्घकालीन अभियान आरम्भ कर दिया था जिसका परिणाम जापानी प्रसार रूपी ज्वार को भाटे में परिणत करने वाला सिद्ध हुआ।

उत्तरी अफ्रीका में—इसी दर्मियान अमेरिकी कारखाने जादुई तरीके से युद्धसामग्री उगल रहे थे। जब उधार-पट्टा योजना के अन्तर्गत सप्लाई का स्टाक जमा हो गया तो १९४२ के अन्त में मित्र राष्ट्र जवाबी हमले में समर्थ हुए।

नवम्बर में जनरल हेराल्ड अलेक्जेण्डर और फील्ड मार्शल बर्नार्ड मोंटगुमरी ने ब्रिटेन के ८ वें सैन्य दस्ते को लेकर टैंकों की एक घमासान लड़ाई में जर्मन जनरल रोमेल को परास्त कर दिया और जर्मनों को पश्चिम की ओर खदेड़ने लगे। ७ नवम्बर को एक अमेरिकी और ब्रिटिश अन्वेषक टुकड़ी लगभग ८००. जहाजों में उत्तरी अफ्रीका में उतरी। इस साहसिक कार्य से दुश्मन असावधानी में घेर लिया गया। विशी फ्रांसीसियों के साथ एक संघर्ष के पश्चात् मित्रराष्ट्रों ने अल्जीरिया पर चढ़ाई की और ट्यूनिसिया ले लिया। फ्रांसीसी एडमिरल जाँ डारलाँ ने हिटलर का पक्ष छोड़ दिया और उसे फ्रांसीसी उत्तरी अफ्रीका का गवर्नर बना दिया गया। अब रोमेल पर पूर्व तथा पश्चिम दोनों ओर से दवाव पड़ रहा था। उसे अफ्रीका के बाहर धकेल दिया गया और मित्रराष्ट्र उसे खदेड़ते हुए, सिसली होते हुए इटली तक ले गये। मित्र-राष्ट्र पुनः यूरोप में आ गये।

यूरोप में—अब मित्रराष्ट्र हमले कर रहे थे, गोकि लड़ाइयाँ बहुत विकट होती थीं। धीरे-धीरे रूस भी जर्मनों को रूस, पोलैण्ड और बाल्कन से बाहर पीछे हटा रहा था। जुलाई १९४३ को इटली के राजा द्वारा मुसोलिनी जबरन प्रधान मन्त्री पद से हटा दिया गया था। सितम्बर में अमेरिकी और ब्रिटिश सैन्य दस्तों ने अधिकाँशतया विजित राष्ट्रों
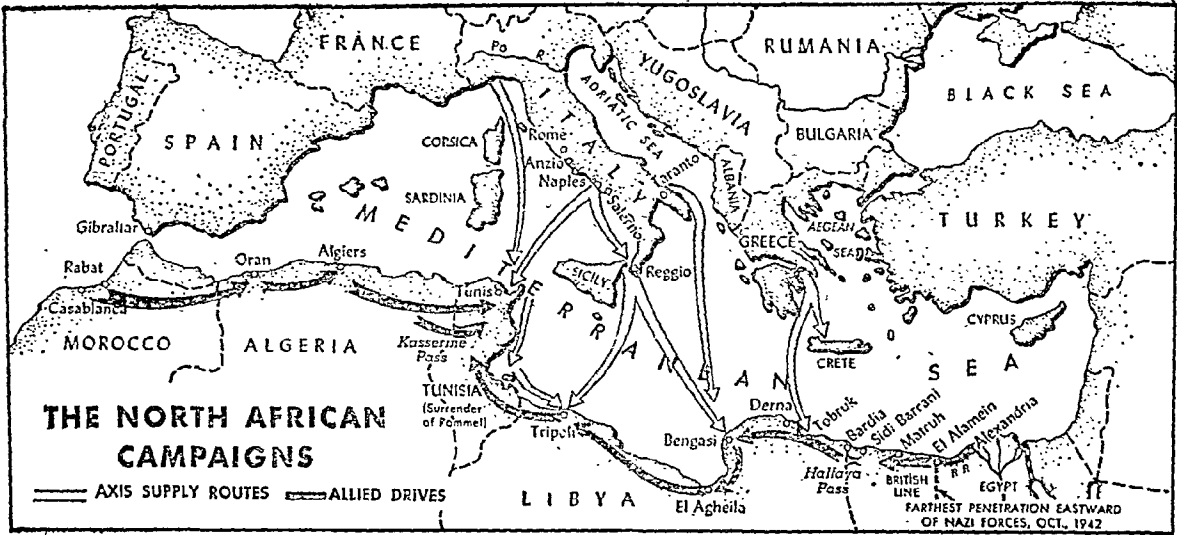
उत्तरी अफ्रीका का युद्ध। धुरी राष्ट्रों के सप्लाई मार्ग। मित्र राष्ट्रों का वढ़ाव।

के लोगों की मदद से धीरे-धीरे लड़ाइयाँ जीतते हुए इटली को घेर लिया। इटली ने बिना शर्त आत्म-समर्पण कर दिया। उसके ऐसा करने के बावजूद जर्मनी ने इटली को ले लिया और खूनी लड़ाई चलती रही। हर महीने मित्रराष्ट्र जनरल मार्क क्लार्क के नेतृत्व में आगे बढ़ते जाते थे, उनकी प्रगति की रफ्तार लगभग एक मील प्रतिदिन थी।

इस बीच ब्रिटेन स्थित हवाई दस्ते जर्मनी में अपने हमलों को बराबर बढ़ाते जाते थे। कारखाने, रेलवे स्टेशन, और विशेषकर बर्लिन का शहर हमलों का लक्ष्य रहता था और उन पर हर बार घातक प्रहार हो रहे थे।

संयुक्त कमान के अन्तर्गत—मित्रराष्ट्रों की सेना दो अमेरिकनों के प्रधान सेनापतित्व में रखी गयी थी। यूरोप में जनरल डाइट डी० आइजनहावर और एशियाई रंगमंच पर जनरल डगलस मैकआर्थर। सैन्य दस्तों का इस प्रकार एकीकरण अच्छी चीज साबित हुआ। हर मंच के लिए एक विस्तृत योजना तैयार की गयी थी, जिसमें हर राष्ट्र की सेनाएँ अपना-अपना पार्ट खेलती थीं। स्थल, जल और वायु सेनाओं को एक संयुक्त प्रयास से सम्बद्ध कर दिया गया था।

फ्रांस पर आक्रमण—ब्रिटेन से फ्रांस पर हमला करने की बड़ी-बड़ी योजनाएँ तैयार थीं। तेहरान के एक सम्मेलन में राष्ट्रपति रूजवेल्ट और प्रधानमन्त्री चर्चिल ने स्टालिन से वायदा किया था कि वे पश्चिमी यूरोप में दूसरा मोर्चा खोलेंगे। रूसी इस प्रकार का मोर्चा खोले जाने की माँग कर रहे थे और अपने समाचारपत्रों में खुले रूप से मित्रों की ढिलाई की आलोचना कर रहे थे। इस असाधारण फौजी कार्रवाई के लिए आवश्यक जनशक्ति और लड़ाई का सामान जुटाने का काम दो वर्षों से चल रहा था। जनरल आइजनहावर इस योजना का इन्चार्ज था, गोकि इसका अधिकांश विस्तार कार्य ग्रेट ब्रिटेन के जनरल मोंटगुमरी ने किया था। इन दोनों जनरलों के अलावा हजारों अन्य लोगों ने योजना का कार्य किया था, जिनमें से अधिकाँश यह नहीं जानते थे कि यह क्या होगी।

६ जुलाई, १९४४ को सुबह ही विमान दस्ते ने अधिकांश तटवर्ती प्रतिरक्षकों को सदा के लिए शांत कर दिया था। तब फ्रांस पर हमला आरम्भ हुआ, जिसके पीछे चार हजार नावें और ग्यारह हज़ार विमान थे। यह वह आक्रमण दिवस था, जिसका दीर्घ काल से इन्तजार किया जा रहा था। जब तटों से सीधा हमला किया जा रहा था, तब छतरी-सैनिक जर्मन रक्षापांतों के पीछे उतरे। किनारे पर

एक जमाव का अड्डा स्थापित कर लेने के बाद फौजें आगे बढ़ाई गयीं और फ्रंट अधिक विस्तृत हुआ। ये लड़ाइयाँ मित्रराष्ट्रों ने सेनाओं की भारी कीमत चुकाने के बाद जीतीं, लेकिन धीरे-धीरे वे पेरिस की ओर आगे बढ़ते चले गये।

ब्रिटिश और अमेरिकी दोनों ही फौजी दस्तों ने फ्रांस और जर्मनी की लड़ाई में अपना जौहर दिखाया और उनके पीछे सभी मित्रराष्ट्रों के सैनिक अपना तगड़ा साथ दे रहे थे। सर आर्थर टेडर फौजों का नम्बर दो कमाण्डर था। २१ वीं सैनिक टुकड़ी, जो ब्रिटिश और कनाडियन दस्तों की थी, फील्ड मार्शल मोंटगुमरी के मातहत थी। मार्शल सर आर्थर हेरिस और जनरल कार्ल स्पाट्ज विमान दस्तों की कमान सम्भाले हुए थे। १२ वें अमेरिकी सैन्य दस्ते का नेतृत्व जनरल ओमर एन० ब्रेडले के हाथ में था। युद्ध इन सब और अन्य भी लोगों के सहयोग से जीता गया।

इसी बीच, अगस्त १९४४ में, मित्रराष्ट्रों की दूसरी फौजी टुकड़ियाँ जनरल अलेक्जेण्डर पैच के निर्देशन में दक्षिणी फ्रांस में उतारी गयीं। फौजें तेजी से राइन नदी घाटी की ओर बढ़ीं। थोड़े ही समय में उन्होंने जर्मनों को फ्रांस के बाहर खदेड़ दिया और मित्रराष्ट्रों ने जर्मनी के खिलाफ लम्बा मोर्चा बना लिया।

१. प्रशान्त और अतलांतक युद्ध-क्षेत्रों में मित्र-राष्ट्रीय सेनाओं के सर्वोच्च कमाण्डर कौन थे?
२. अन्य किन जनरलों ने महत्त्वपूर्ण भाग लिया?
३. प्रशान्त क्षेत्र पर मित्रराष्ट्रों का पहला हमला कहाँ हुआ?
४. पश्चिम में मित्रराष्ट्रों ने पहले कहाँ हमला किया? वहाँ हमले की कहानी बताओ।
५. रोमल और एडमिरल डारलाँ कौन थे?
६. कौन-कौन क्षेत्र रूसियों ने पुनः जीते?
७. यूरोप में मित्रराष्ट्रों ने पहला हमला कहाँ किया? वहाँ लड़ाई इतनी भयानक क्यों हुई?
८. मित्र राष्ट्रों का महान् अभियान कहाँ और कब हुआ? यह असाधारण साहसिक कार्य क्यों कहा जाता है?
९. 'डी'-दिवस का क्या मतलब है, समझाओ?
१०. मित्रराष्ट्रों ने तीसरा अभियान कहां किया?

अन्त में विजय मिली

यूरोप विजय दिवस (वी०ई० डे)—गोकि आगे बहुत लड़ना बाकी था, लेकिन जर्मन सर्वत्र पराजित किये जा रहे थे। योजना के अनुसार रूसी भी आये और उन्होंने बर्लिन ले लिया जबकि पश्चिमी राष्ट्र पश्चिमी जर्मनी को सर कर रहे थे। अन्त में ८ मई—विजय दिवस—को जर्मनी ने बिना शर्त आत्म-

बातान के पतन के बाद अमेरिकी सैनिक अपने घायल साथियों को लादे हुए, कई मील पीछे हटने को विवश हो गये। बहुत से इस "बातान के मृत्यु प्रयाण" में मर गये।
वाइड वर्ल्ड
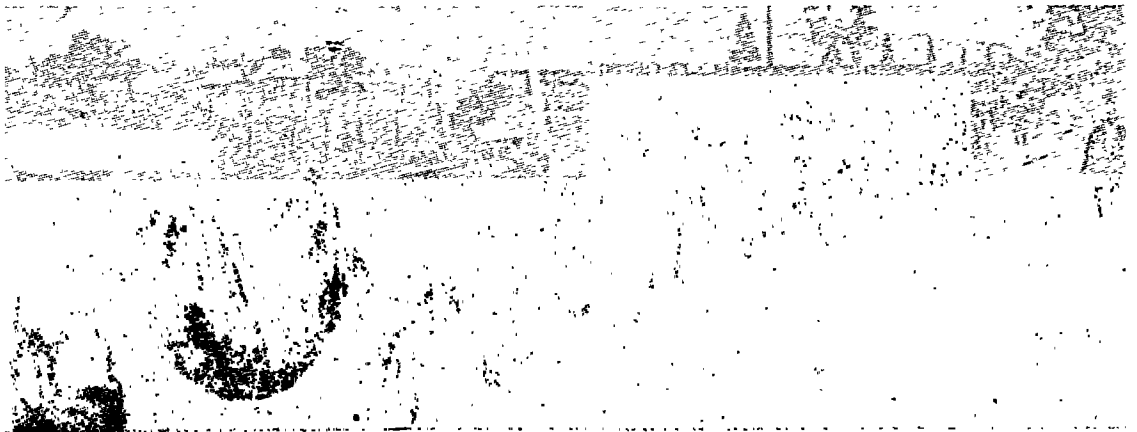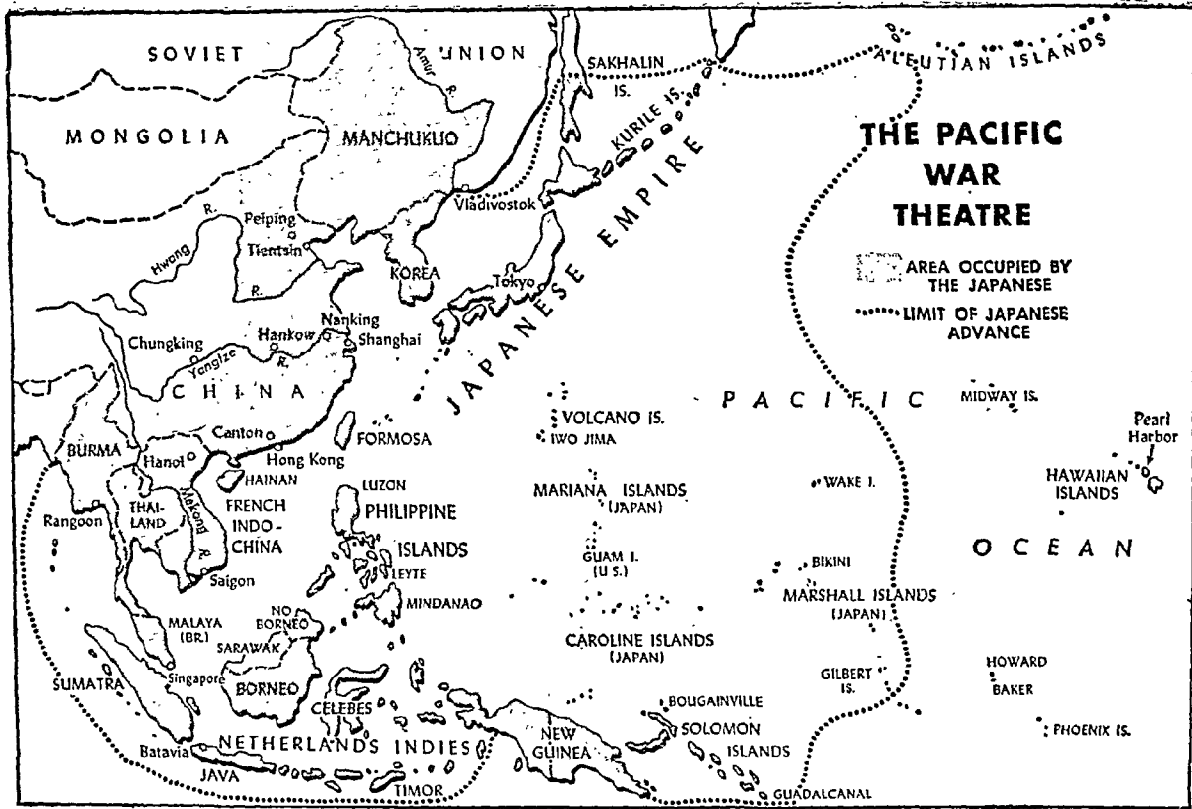
प्रशान्त युद्ध क्षेत्र। जापान द्वारा अधिकृत क्षेत्र। जापानी बढ़ाव की सीमा।

समर्पण कर दिया। बर्लिन के अन्तिम घेरे में हिटलर नष्ट हो गया। अन्तिम विजय के दो महीने पहले राष्ट्रपति रूजवेल्ट की एकाएक मृत्यु हो जाने से संयुक्त राज्य और यूरोप शोक-सागर में डूब गये थे। वे उन तत्त्वों पर अन्तिम विजय देखने के लिए नहीं रहे जिन्होंने स्वतन्त्रता को विनष्ट कर दिया होता। लेकिन वह जानते थे कि इन तत्त्वों का अन्त निकट है।

प्रशान्त में युद्ध—नाजियों पर पूर्ण विजय पा लेने के बाद मित्रराष्ट्रों की फौजों के लिए अपना समस्त ध्यान जापानियों के विरुद्ध केन्द्रित करना संभव हुआ। एडमिरल चेस्टर डब्लु० निमित्ज के आधीन नौसेना और जनरल ए०ए० वेण्डेग्रिफट के आधीन पनडुब्बियों ने बहादुरी से प्रहार किया। मार्च में भारतीय दस्ते ने मलाया ले लिया था जबकि अमेरिकी "द्वीप-द्वीप पर कूदते हुए" उत्तर की ओर बढ़ रहे थे। द्वीप-द्वीप पर कूदने का यह मतलब है कि एक द्वीप पर अधिकार कर लेने के बाद सैनिक उसके बीच के कई द्वीप छोड़ कर किसी एक द्वीप पर उतारे जाते थे और फिर वे दूसरे द्वीप को जीतते थे और इस प्रकार उन द्वीपों के जापानी सैनिकों के रसद पाने के साधन खतम हो जाते थे। इस प्रकार जरनल मैक्आर्थर के निर्देशन में फौजों ने फिलीपीन के लिए एक खूनी रास्ता निकाल लिया था। यह रास्ता ग्वाडल कानाल, रबौल, क्वोजालिन, इनिवीटोक, सिपान, पालू और लाटा का था।

अक्तूबर में एक बड़ी समुद्री लड़ाई हुई। १९४४ में, जापान यह आशा रखता था कि वह उस समय संयुक्त राज्य के प्रशान्त स्थित जंगी बेड़े को लंगड़ा कर देगा लेकिन ऐसा न हुआ और संयुक्त राज्य ने जापानी नौसेना पर ऐसा करारा प्रहार किया कि वह लड़खड़ा गयी।

ऐटम बम—इसके बाद ब्रिटिश और अमेरिकी जंगी जहाजी बेड़ों ने जापानी द्वीपों को घेर लिया। १० जुलाई, १९४५ को एक हजार विमानों का हवाई हमला टोकियो पर हुआ। ६ अगस्त को दुनिया यह समाचार सुनकर सन्नाटे में आ गयी कि प्रथम अणुबम हिरोशिमा में गिराया गया है। उसने लगभग ३ लाख ५० हजार की आबादी वाले शहर की पाँच में से तीन हिस्से जमीन को एकदम समतल बना दिया। याल्टा में, रूस जापान के विरुद्ध युद्ध घोषित करने को सहमत हुआ था, और युद्ध खत्म होने से पूर्व ऐसा करने के लिए ८ अगस्त को रूस ने युद्ध में प्रवेश किया। दूसरे दिन दूसरा अणुबम गिरा। इस बार नागासाकी लक्ष्य बना। इसके दूसरे ही दिन टोकियो ने समर्पण का प्रस्ताव रखा।

जापान विजय दिवस (वी० जे०) दिवस—२ सितम्बर को अमेरिकी जंगी जहाज यू० एस० एस० "मिस्सूरिया" में टोकियो की खाड़ी में, शर्तों पर हस्ताक्षर हुए। तब तक रूस मंचूरिया, कोरिया के कुछ हिस्से, सखालिन द्वीप का जापानी हिस्सा, और कूरील का कुछ भाग जीत चुका था। जापान का जीता हुआ द्वीपों का अधिकांश साम्राज्य अमेरिकनों के हाथों में था, जबकि फ्रांस और ब्रिटेन तथा हालैंड ने अपने हारे हुए अधिकांश उपनिवेश जीत लिए थे। ६ वर्ष पूर्व आरम्भ हुई लड़ाई अब समाप्त हो चली थी।

युद्ध का बहुत भारी व्यय—द्वितीय महायुद्ध में, इससे पहले हुए सभी युद्धों से अधिक उत्पीड़न और व्यापक विनाश हुआ था। खेतों के ध्वस्त हो जाने और युद्धकालीन आवश्यकताओं ने कृषि और औद्योगिक उत्पादन को उलट-पलट कर दिया था। खाना, कपड़ा और रहने का स्थान, इन आधारभूत आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए सामग्री के अभाव से बीमारियाँ, कष्ट और मौतों की संख्या बढ़ी। युद्ध ने कई सरकारों को बहुत ज्यादा अशक्त बना दिया था और कुछ तो पूर्णतः बरबाद हो चली थीं। कानून और व्यवस्था के अभाव में अराजकता फैली। अरबों डालर की सम्पत्ति धूल में मिल गई थी। बर्लिन का अधिकांश भाग ध्वस्त हो गया था। लन्दन के मध्य भाग को भारी क्षति पहुँची थी और टोकियो का लगभग ४० प्रतिशत भाग साफ कर दिया गया था। फ्रांस, हालैंड, पोलैण्ड, इटली, बेल्जियम और चीन के अनगिनत अन्य शहर तथा गाँव नष्ट हो गये थे।

युद्ध मानव जीवन के लिए भी बहुत मंहगा पड़ा। संयुक्त राज्य के लगभग ५ लाख ३० हजार लोग मारे गये, लापता हुए और घायल हुए। ब्रिटिश राष्ट्र मंडलीय देशों के हताहतों की संख्या १४,२४,६०० से अधिक थी। रूसी, फ्रेंच, चीनी और जर्मनों की क्षति संयुक्त राज्य की अपेक्षा कई गुनी अधिक हुई थी। लेकिन आँकड़े समूचे इतिहास के इस सबसे भयंकर युद्ध-जनित उत्पीड़न, गरीबी और भुखमरी की कहानी नहीं बता सकते।

युद्ध-जनित सर्वाधिक दर्दनाक परिणामों में एक उन असंख्य शरणार्थियों की समस्या थी जिनके

जनरल आइजनहावर ने जर्मनी में द्वितीय आर्मर्ड कैवेलरी रेजीमेंट का निरीक्षण किया। टैंकचालक मार करने का अभ्यास कर रहे हैं।
एसोशियेटेड प्रेस

पास कहीं घर नहीं था और उनमें से अनेक अपनी मातृभूमि खो चुके थे। उनमें से हजारों युद्ध के अन्तिम दिनों में और युद्ध समाप्त हो जाने के बाद में पश्चिमी यूरोप के शिविरों में रखे गये थे। बहुत से बच्चे थे जिनके माता-पिता मर गये थे या जो यह नहीं जानते थे कि वे कौन हैं या कहाँ से आये हैं। बारबार उपद्रवों के कारण कुछ लोग यूरोप से भागना चाहते थे। शनैः शनैः इनमें से अधिकांश लोग नये देशों में जाकर बस गये।

संयुक्त राष्ट्र सहायता और पुनर्वास प्रशासन (यू० एन० आर० आर० ए०)—यूरोप और चीन के भूख और शीत से मरते हुए लोगों की मदद के लिए संयुक्तराष्ट्र सहायता और पुनर्वास प्रशासन स्थापित किया गया। यह संगठन दुनिया के युद्ध-जर्जर देशों के करोड़ों लोगों को भोजन, मकान और पहनने के वस्त्र देता था। यह एक अस्थायी सहायता संगठन के रूप में बना था। १९४६ में इसके भंग होने पर प्राइवेट संगठनों ने यह काम संभाला, गोकि इसके कुछ कार्यों को अमेरिका द्वारा १९४७ में संचालित मार्शल योजना में ले लिया गया था।

युद्धापराधियों के मुकदमे—युद्ध ने अनेक राजनीतिक समस्याएँ बिना हल किये छोड़ दी थीं। युद्ध के दौरान मित्रराष्ट्रों ने नाजियों को बराबर चेतावनी दी थी कि दुनिया को युद्ध में घसीटने और इस प्रकार की पाशविक नीतियों को चलाने के लिए उनके नेतागण उत्तरदायी समझे जायंगे। नूरेम्बर्ग, जर्मनी में बीस से अधिक जर्मन नेता अन्तर्राष्ट्रीय सैनिक ट्रिब्यूनल के समक्ष विचार के लिए प्रस्तुत किये गये। यहाँ यातना, उत्पीड़न और सामूहिक हत्याकांडों की वीभत्स कहानियाँ दुहराई गयीं। इन लोगों में से ११ को "युद्धापराधी" के रूप में लटका कर मार डालने की सजा दी गयी, तीन मुक्त कर दिए गए और शेष को लम्बी अवधि की सजाएँ मिलीं। जर्मनी की नयी स्थानीय सरकारों ने अन्य कई को सजाएँ दीं।

बाद में, इसी प्रकार के मुकदमे लगभग ३० जापानी युद्धापराधियों पर भी चले। ७ को फांसी दी गयी और शेष अन्य को लम्बी अवधि की कारावास। मित्रराष्ट्रों को आशा थी कि इससे मिसाल कायम होगी जो भविष्य में लोगों को युद्ध आरंभ करने से हतोत्साहित करेगी।

छोटे राष्ट्रों से संधियाँ—विजयी राष्ट्रों द्वारा प्रत्येक विजित राष्ट्र के साथ शांति-संधियों का तैयार किया जाना प्रथागत बात है। द्वितीय विश्व-युद्ध के अन्त में मित्रराष्ट्रों ने इटली, हंगरी, बलगेरिया, रूमानिया और फिनलैण्ड के साथ शांति संधियों की शर्तों पर विचार के लिए सम्मेलन किया। चूँकि संयुक्त राज्य का फिनलैण्ड से कभी भी कोई युद्ध नहीं हुआ था, इसलिए वह उस संधि में शामिल नहीं हुआ। इटली का कुछ क्षेत्र फ्रांस और यूगोस्लाविया को मिला। ट्रीस्ट संयुक्त राष्ट्रों के अन्तर्गत एक स्वतन्त्र शहर बना। इटली पर क्षतिपूर्ति की भारी रकम लगाई गयी, जिसका अधिकांश रूस, यूगोस्लाविया और ग्रीस को मिला। इटली की स्थल, जल और वायुसेना के आकार की सीमा निर्धारित की गयी। संयुक्त राज्य, ब्रिटेन, सोवियत रूस और फ्रांस के विदेश मंत्रियों को इटली के उपनिवेशों के प्रश्न को सुलझाने का काम सौंपा गया। तदनुसार, डूडीकेनीज द्वीपसमूह ग्रीस में मिलाये गये। अन्य उपनिवेशों के बारे में उनमें मतैक्य नहीं था और यह मामला संयुक्त राष्ट्र संघ महासभा को सौंप दिया गया। महासभा ने जनवरी १९५२ तक लीबिया को स्वाधीनता देने का निश्चय किया। इटालियन सुमालीलैण्ड संयुक्त राष्ट्र संघ की न्यास-परिषद् के अन्तर्गत रखा गया और इटली को १९६० तक उसका ट्रस्टी बनाया गया। इरिट्रिया एक समय ब्रिटेन के मातहत था और फिर इथिओपिया का एक हिस्सा बना। इस प्रकार उसे लाल सागर के लिए एक प्रवेश द्वार मिला।

हंगरी और रूमानिया के कुछ क्षेत्र उनके पड़ोसियों को मिले, दोनों पर भारी हर्जाना लगाया गया, जिसका अधिकांश रूस ने वसूला। दोनों देशों की सैन्यशक्ति सीमित कर दी गयी। बल्गेरिया और फिनलैण्ड के साथ भी इसी प्रकार

की संधियां हुईं, लेकिन बल्गेरिया का कोई क्षेत्र दूसरों को नहीं दिया गया।

जापानी संधि—जर्मनी, आस्ट्रिया और जापान की बड़े राष्ट्रों के साथ शांति संधियाँ बड़े विजयी राष्ट्रों के बीच काफी वादविवाद का विषय रहीं। हर्जाने की धनराशि और उसका स्वरूप एक प्रश्न था। नयी सरकार का रूप और उसके शासनाधिकार दूसरा मसला था। पश्चिमी राष्ट्र और रूस एक दूसरे पर अविश्वास रखते थे इसलिए वे शांति संधि की शर्तों पर एकमत नहीं हो पाये। वे इन विजित देशों के अधिकारक्षेत्रों से अपनी सेनाएँ हटाने के भी इच्छुक नहीं थे। परिणाम यह हुआ कि कई वर्ष बीत जाने पर भी जर्मनी या आस्ट्रिया के साथ कोई शांतिसंधियाँ तैयार नहीं हो पायीं।

मित्रराष्ट्रों के बीच ११ महीनों तक लगातार बातचीत चलने के बाद, अन्त में ८ सितम्बर १९५१ को सॉन फ्रांसिस्को में जापान के साथ शांति संधि पर हस्ताक्षर हुए। संधि को तैयार करने वाले दल की अध्यक्षता संयुक्तराज्य के जान फास्टर डलेस ने की। ४९ राष्ट्रों ने, जो जापान के साथ युद्ध कर रहे थे, संधि पर हस्ताक्षर किये। रूस, चेकोस्लोवाकिया, पोलैण्ड और बर्मा ने हस्ताक्षर करना अस्वीकार किया। भारत ने सम्मेलन में शामिल होने से इन्कार किया क्योंकि उसे संधि पसंद नहीं आई। तो भी, भारत ने जापान के साथ पृथक् संधि की। कोई भी राष्ट्र शांति-संधि से पूर्ण रूप से संतुष्ट नहीं था क्योंकि इसमें किसी की पूरी माँगें नहीं मानी गई थीं। यह संधि कुछ नयी-सी चीज थी जिसमें जापानी जनता को सजा न देकर, "एक ऐसे देश को, जो हमारा भूतपूर्व दुश्मन रहा, शांतिपूर्ण राष्ट्रों के समूह में शामिल किया गया।"

इस संधि से जापान ने अपने साम्राज्य के उन सब देशों का दावा छोड़ दिया जिन्हें उसने अभियानों से—१८९४-९५ में चीन के साथ अपने युद्ध से लेकर तब तक—जीता था। उसने संयुक्त राष्ट्र संगठन के घोषणापत्र में निर्धारित इस व्यवस्था को स्वीकार किया कि वह अपने अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में बल-प्रयोग से काम नहीं लेगा। दूसरी ओर, संधि में कहा गया कि अपनी रक्षा के लिए जापान को सेना रखने का अधिकार है।

उसी दिन जापान और संयुक्त राज्य ने एक दूसरी संधि की जिसमें संयुक्त राज्य को अनुमति दी गयी कि जब तक जापान अपनी रक्षा में समर्थ नहीं हो जाता तब तक संयुक्त राज्य की फौजें जापान में रहेंगी। शांति संधि का स्वरूप ऐसा था कि जापान को उसकी सार्वभौम सत्ता वापस मिल जाय और संयुक्त राज्य के साथ संधि ने उसे सुरक्षा प्रदान की। पराजित राष्ट्रों में से एक के लिए युद्ध समाप्त हो चला था।

१. विजय दिवस क्या था और कब हुआ ?
२. हिटलर का क्या हुआ ?
३. "द्वीप-द्वीप कूदने" का क्या मतलब है ?
४. जापान पर विजय के लिए क्या कदम उठाये गए, संक्षेप में बताओ ?
५. ६ अगस्त, १९४५ इतिहास में क्यों महत्त्वपूर्ण दिन है ?
६. जापान ने कब और कहाँ समर्पण की शर्तों पर हस्ताक्षर किये ?
७. रूस ने जापान के विरुद्ध युद्ध में कौन सा तरीका अपनाया ?
८. युद्ध से हुए विनाश को आंकड़ों में बताओ।
९. द्वितीय विश्वयुद्ध में इतने शरणार्थी क्यों हो गये ? उनकी हिफाजत किस रूप में की गयी ?
१०. इटली, हंगरी, बल्गेरिया, रूमानिया और फिनलैण्ड के साथ संधियों में मुख्य-मुख्य शर्तें क्या थीं ?
११. युद्ध के बाद इतने वर्षों तक आस्ट्रिया और जर्मन राष्ट्रों के साथ कोई शांति संधियाँ नहीं हो पाईं, क्यों ? कारण बताओ।
१२. युद्धापराधों के लिए उत्तरदायी जर्मन और जापानी नेताओं के खिलाफ मित्रराष्ट्रों ने क्या कार्रवाई की ?
१३. जापान के साथ संधि की क्या व्यवस्थाएँ थीं और किन राष्ट्रों ने उस पर हस्ताक्षर करना अस्वीकार किया ?

११. लोकतंत्र की दिशा में बढ़ते कदम

प्रथम विश्वयुद्ध के उत्पीड़न से दुनिया के बहुत से राष्ट्र सहयोग की दृष्टि से एक-दूसरे के करीब आ गये थे। दौत्य सम्बन्ध, अन्तर्राष्ट्रीय कानून, कांग्रेसें और अन्तर्राष्ट्रीय पंच-अदालत सही दिशा की ओर समुचित कदम होते हुए भी युद्ध को रोकने में असफल रहे।

विश्व शांति के लिए मानव द्वारा अब तक किये गये प्रयासों में लीग आफ नेशन्स 'राष्ट्र संघ' बहुत महत्त्वाकांक्षी प्रयास था। गोकि यह असफल रहा लेकिन इसने विश्वशांति संगठनों के भावी प्रयासों के लिए एक ढांचा स्थापित कर दिया था।

लोकार्नो करार, पेरिस की संधियाँ और निरस्त्रीकरण सम्मेलनों ने यह प्रदर्शित किया कि मानव गंभीरतापूर्वक युद्ध रोकने के लिए प्रयत्नशील है।

जब रूस में स्तालिन के मातहत, इटली में मुसोलिनी के मातहत और जर्मनी में हिटलर के आधीन क्रूर अधिनायकवाद पनपा, स्वाधीनता और स्वतंत्रता को गहरा धक्का लगा था। जापान में राष्ट्रवाद की एक जबरदस्त भावना और एक शक्तिशाली सैनिक गुट ने उसके लोकतंत्रात्मक ढंग से सोचने में रुकावट डाली।

तानाशाहों ने स्पेन और तुर्की पर भी नियन्त्रण कर लिया था। यूरोप के देश एक दूसरे से भयभीत थे, विशेषकर सशक्त पड़ोसी राष्ट्रों से।

संयुक्त राज्य में राष्ट्रपति रूजवेल्ट की नयी व्यवस्था (न्यू डील) ने विश्वव्यापी मंदी से जनित उत्पीड़न को कम करने का प्रयास किया। नयी व्यवस्था में सार्वजनिक निर्माण और सरकारी नियमनों का एक महत्त्वाकांक्षी कार्यक्रम भी था।

विचार-विमर्श के लिए प्रश्न

(१) युद्ध के आधारभूत क्या कारण हैं?

(२) युद्ध को रोकने की अपनी असफलताओं से लोकतंत्री देशों को क्या सबक सीखना चाहिए था? द्वितीय विश्व-युद्ध के बाद से इसके क्या प्रमाण हैं कि लोकतंत्रात्मक देशों ने अपने अनुभवों से लाभ उठाया है?

(३) अधिनायक या एकतंत्र राजा इतने अधिक युद्ध के लिए क्यों उत्सुक रहते हैं? एक लोकतंत्रात्मक देश के लिए अपने पड़ोसियों पर हमला करना अधिक कठिन क्यों है?

(४) रूसी इतने उत्सुक क्यों थे कि पश्चिमी मित्रराष्ट्र यूरोप में दूसरा मोर्चा खोलें?

(५) क्या तुम सहमत हो कि "राष्ट्रीय नैति-

११. जीवन-निर्वाह की प्रगति के चरण

मानव के रहन-सहन के ढंग में, विशेषकर अमेरिका और यूरोप में, प्रथम महायुद्ध से एक आमूल परिवर्तन आ गया था। विज्ञान और टेक्नालाजी में महत्त्वपूर्ण विकास हुए और तौर-तरीके बदल गये।
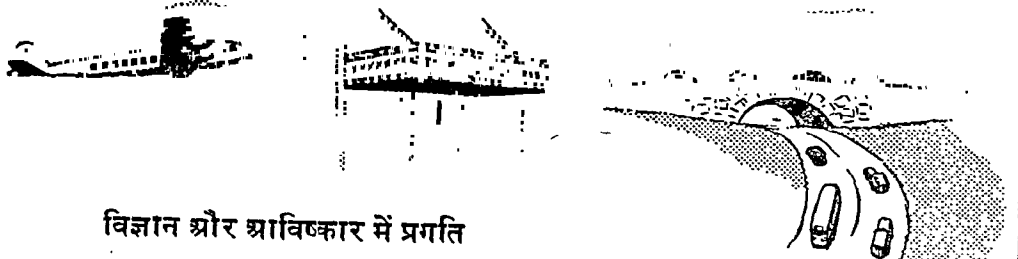
विज्ञान और आविष्कार में प्रगति

बीसवीं शताब्दी के प्रथम चतुर्थांश में रेडियो, बोलते हुए चित्र, मोटरों और बसों के व्यापक प्रयोग के साथ-साथ विमान यात्रा की शुरूआत हुई।
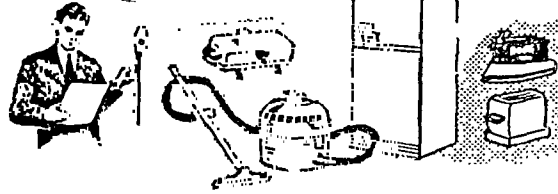
प्रथम विश्वयुद्ध के बाद के वर्षों में औद्योगिक प्रयोगशालाओं और व्यक्तिगत शोध-संस्थानों को प्रोत्साहन और सहायता मिली। परिणामस्वरूप रसायनशास्त्र, चिकित्सा विज्ञान, भौतिक शास्त्र और जीवन-यापन के अन्य क्षेत्रों में मानव का परिज्ञान बढ़ा। बिजली का अधिकाधिक उपयोग किया जाने लगा था और अन्त में बिजली ने बहुत से उद्योगों की प्रणाली ही बदल डाली।
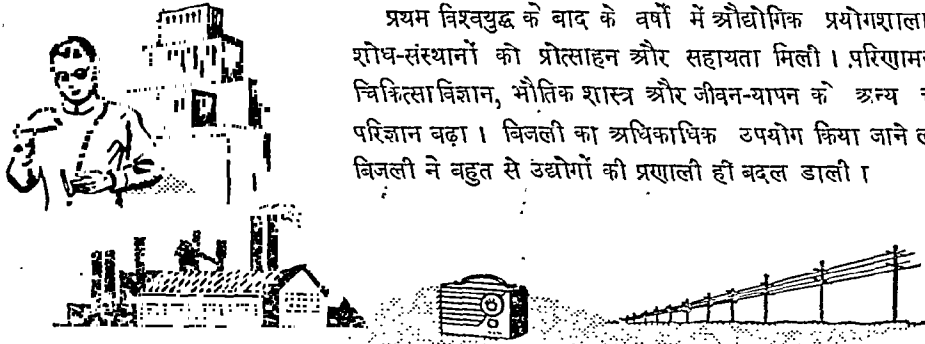
कता भी उतनी ही महत्त्वपूर्ण है जितनी कि व्यक्तिगत नैतिकता।"

(६) राष्ट्रपति रूजवेल्ट के इस कथन का क्या अभिप्राय था कि संयुक्तराज्य "लोकतन्त्र की आयुधशाला" है।

(७) यह कैसे संभव हुआ कि युद्ध के दौरान संयुक्त राज्य और सोवियत रूस मित्र थे जबकि संयुक्त राज्य सोवियत अर्थ-व्यवस्था और उसकी राजनीतिक प्रणाली का तीव्र, आलोचक है।

(८) तुम्हारी राय में युद्ध जीतने में कौन अधिक सहायक रहा—योग्य नेतृत्व या मित्रराष्ट्रों के अधिक साधनों का होना, ज्यादा जनशक्ति या मित्रराष्ट्रों के आधुनिक अस्त्र; युद्ध के लिए किसी अच्छे सिद्धान्त का होना या औद्योगिक प्रणाली का बढ़ा-चढ़ा होना?

शिक्षा में प्रगति

विज्ञान और तकनीकी ज्ञान में अभिरुचि बढ़ने से सामाजिक विज्ञानों—मनोविज्ञान, समाजशास्त्र, अर्थ शास्त्र, मानवशास्त्र तथा अन्य—के गहरे अध्ययन की ओर प्रथम बार प्रयास हुए। मानव स्वतः मानव के अध्ययन की महत्ता के प्रति सजग हो रहा था कि उसका भिन्न-भिन्न प्रकार का व्यवहार क्यों होता है और उसके चारों ओर के भौतिक जगत् का उस पर किस तरह प्रभाव पड़ता है।

अधिकाधिक युवक, विशेषकर अमेरिका और यूरोप में हाई स्कूलों और कालेजों में पढ़ाई जारी रखने लगे। एशिया के बहुत से देशों में उच्च शिक्षा के स्कूलों की स्थापना हुई।
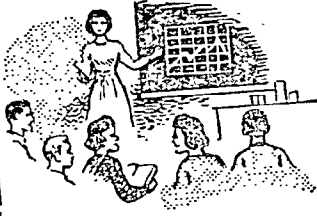
कला में प्रगति

प्रथम विश्वयुद्ध के बाद संगीत के प्रकारों में उल्लेखनीय परिवर्तन आया। यह जाज तथा अन्य प्रकार की संगीत प्रणालियों का युग था जोकि पिछली शताब्दियों के संगीताचार्यों की प्रणालियों से सर्वथा भिन्न था। चित्रकारों ने भी, अपनी कला में नयी शैली अपनाई। उन्होंने अपनी और मानव भावनाओं तथा चेतना को अभिव्यक्ति देने का प्रयास किया।
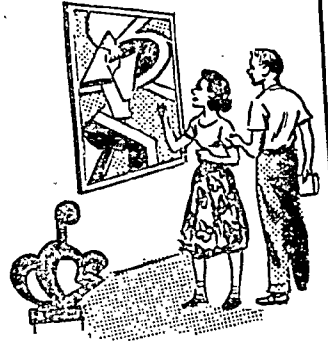
इतिहास के उपकरणों का प्रयोग

एक. नाम, तिथियाँ और स्थान

(क) निम्नलिखित शब्दों की व्याख्या करो।

लोकतन्त्र की आयुधशाला—ब्रिटेन का युद्ध—नकद दो, माल उठाओ योजना—विजय दिवस—पूर्व का जिब्राल्टर—'द्वीप-द्वीप कुदान'—उधार-पट्टा—लायलिस्ट—मेजीनो लाइन—मजाकिया युद्ध—रोम-बर्लिन धुरी—यू० एन० आर० आर० ए०—यूरोप विजय दिवस—जापान-विजय दिवस—युद्धापराधी।

(ख) इन तिथियों के बारे में तुम क्या जानते हो?

१९३१, १९३५, १९३६-१९३९, १९३७, मार्च १९३८, सितम्बर, १९३८, अगस्त, १९३९,

१ सितम्बर, १६३६, जून १६४१, ७ दिसम्बर, १६४१, ८ मई, १६४५, ५ अगस्त १६४५, २ सितम्बर, १६४५ ।

(ग) निम्नलिखित स्थान नक्शे पर दिखाओ :

अल्बानिया···अल्यूसिन द्वीप···अल्जीरिया··· आस्ट्रेलिया···बर्लिन···बलगेरिया···बर्मा···कैले··· सेलीबीज···चेकोस्लोवाकिया··· चुंकिंग···कोरेगिडोर, डांजिग···डुडीकेनीज द्वीप···डन्कर्क एल··· अलामेन एनेविटोक इरिट्रिया···एस्टोनिया···इथिओपिया फिनलैण्ड····गुडल केनाल···हवाई··· हिरोशिमा···जावा···जावा समुद्र···कुरील द्वीप··· क्वाजालीन··लैटविया··लेनिनग्राड··लेटे·· लीबिया·· लिथोनिया लन्दन··मेजीनो लाइन···मलाया प्रायद्वीप···मंचुकुओ···मास्को ··म्यूनिख···नार्वे··· ओरान···पलाऊ···पर्ल हार्बर··फिलीपीन···पोलिश गलियारा···सखालीन···राइन नदी···रूमानिया··· सेपान सखालिन···सॉन फ्राँसिस्को···सिंगापुर··· सोलोम नद्वीपसमूह···स्टालिन ग्रॉड···सुडेटनलैण्ड··· स्वेज नहर···सुमात्रा··तेहरान···ट्रीस्ट··ट्यूनीसिया विशी···वेकद्वीप ।

(घ) इन व्यक्तियों के बारे में तुम क्या जानते हो ?

सर हेराल्ड अलेक्जण्डर···ओमर ब्रे डले···नेविल चेम्बरलेन··च्यांग··काई शेक···विन्स्टन चर्चिल··· एडवर्ड डलाडियर···जॉ फ्रांसस डार्ले····जान फास्टर डलेस···डाइट डी० आइजनहावर···फ्रेंसिस्को फ्रेंको···सर आर्थर हेरिस···एडोल्फ हिटलर··· हेल सिलासी···पेरी लवाल जोनाथन वेनराइट··· डगलस मैकआर्थर···सर बर्नार्ड मोंटगुमरी··· बेनिटो मुसोलिनी··चेस्टर डब्लू निमित्ज···अलेक्जेण्डर पैच एरविन रोमेल···फ्रेंकलिन डी० रूजवेल्ट··· कार्ल स्पाज···जोसफ स्तालिन···सर आर्थर टेडर··· हिडेकी तोजो···ए० ए० वेण्डेग्रिफ्ट ।

दो. क्या तुम अपने विचार स्पष्ट प्रकट कर सकते हो ?

(१) एक नक्शा तैयार कर मित्रराष्ट्रों को और धुरीराष्ट्रों को अलग-अलग रंगों से चित्रित करो। उसे बुलेटिन बोर्ड पर लगाओ ।
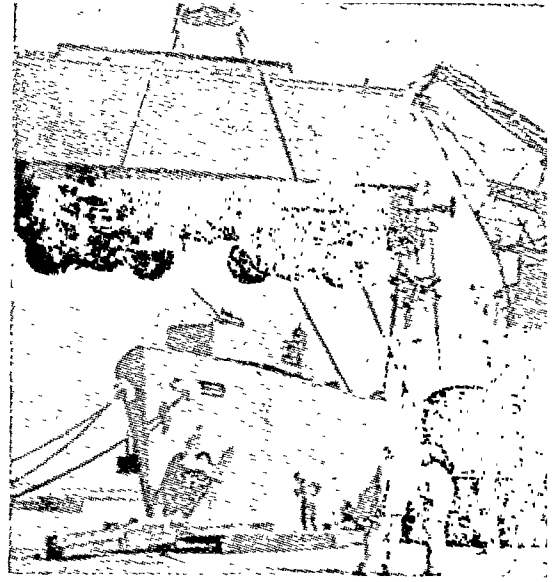
ब्लैक स्टार

उधार-पट्टा कानून के अन्तर्गत जहाजों से भेजी गयी "प्रतिरक्षा सामग्री" में भारी मशीनें भी शामिल थीं।

(२) चर्चिल, मुसोलिनी, हिटलर, रूजवेल्ट और इस अध्याय में वर्णित किसी अन्य व्यक्ति के कार्टून बनाओ, जो उसके जीवन की किन्हीं महत्त्वपूर्ण घटनाओं से सम्बन्ध रखते हों। अपने अध्यापक से उसकी जाँच करवाओ।

(३) कक्षा की जानकारी के लिए निम्नलिखित वक्तव्यों में से किसी एक पर आपस में विचार विनिमय करो :

(क) जब हिटलर ने आस्ट्रिया को लेने के लिए उसपर चढ़ाई की थी तभी उसे ब्रिटेन और फ्रांस द्वारा रोक दिया जाना चाहिए था ।

(ख) ब्रिटेन और फ्रांस ने म्यूनिख समझौते पर हस्ताक्षर कर ठीक ही किया क्योंकि उन्होंने सोचा कि इससे शान्ति कायम रह सकेगी।

(ग) संयुक्तराज्य को मंचुकुओ को मान्यता प्रदान कर देनी चाहिए थी।

(घ) नौर्मण्डी के रास्ते यूरोप पर हमला करने के पक्ष में अच्छी युक्तियाँ थीं।

(ङ) "द्वीप-द्वीप कुदान" की योजना चतुराईपूर्ण थी।

(च) युद्धापराधियों को मृत्युदण्ड देना एक खतरनाक उदाहरण था।

(४) अपनी बस्ती के किसी व्यक्ति को आमन्त्रित करो कि वह कक्षा को अपने युद्ध के अनुभव सुनाये। उसकी वार्ता समाप्त होने पर उससे प्रश्न पूछो।

(५) "हमने किस प्रकार द्वितीय युद्ध जीतने में मदद पहुँचाई" इस पर एक वादविवाद आयोजित करो। इसमें एक व्यक्ति रेल का इंजीनियर हो, एक किसान हो, एक गोला बारूद का कारखाने का कारीगर हो और एक गृहिणी हो।

तीन. ब्लैक बोर्ड पर—

द्वितीय विश्वयुद्ध में विजय प्राप्त करने के लिए संयुक्तराज्य ने जो मदद की उसकी सूची बनाओ।

चार. बुलेटिन बोर्ड के लिए :—

एक छात्र को कक्षा के लिए एक दंडग्राफ बनाने को कहो जिसमें युद्ध के प्रत्येक वर्ष में संयुक्तराज्य की आय और व्यय का लेखा हो।

पांच. खोज कार्य के लिए :—

निम्नलिखित विषयों में से किसी एक के बारे में कक्षा के लिए रिपोर्ट तैयार करो :

फ्रैंच (डच, नार्वेजियन) भूमिगत आन्दोलन, कोनवाय ड्यूटी, डी० दिवस—उधार-पट्टा—यू० बोट युद्ध—पंचमांगी कार्य—ब्रिटेन या किसी अन्य देश में राशनिंग—युद्ध-काल में विज्ञान में प्रगति।

प्रस्तुत कार्टून में, जो मुसौलिनी के पतन से कुछ दिन पूर्व एक समाचारपत्र में प्रकाशित हुआ था, एक अमरीकी सैनिक द्वारा उसका पतन चित्रित किया गया है

वाईड वर्ल्ड

मनुष्य जाति ने
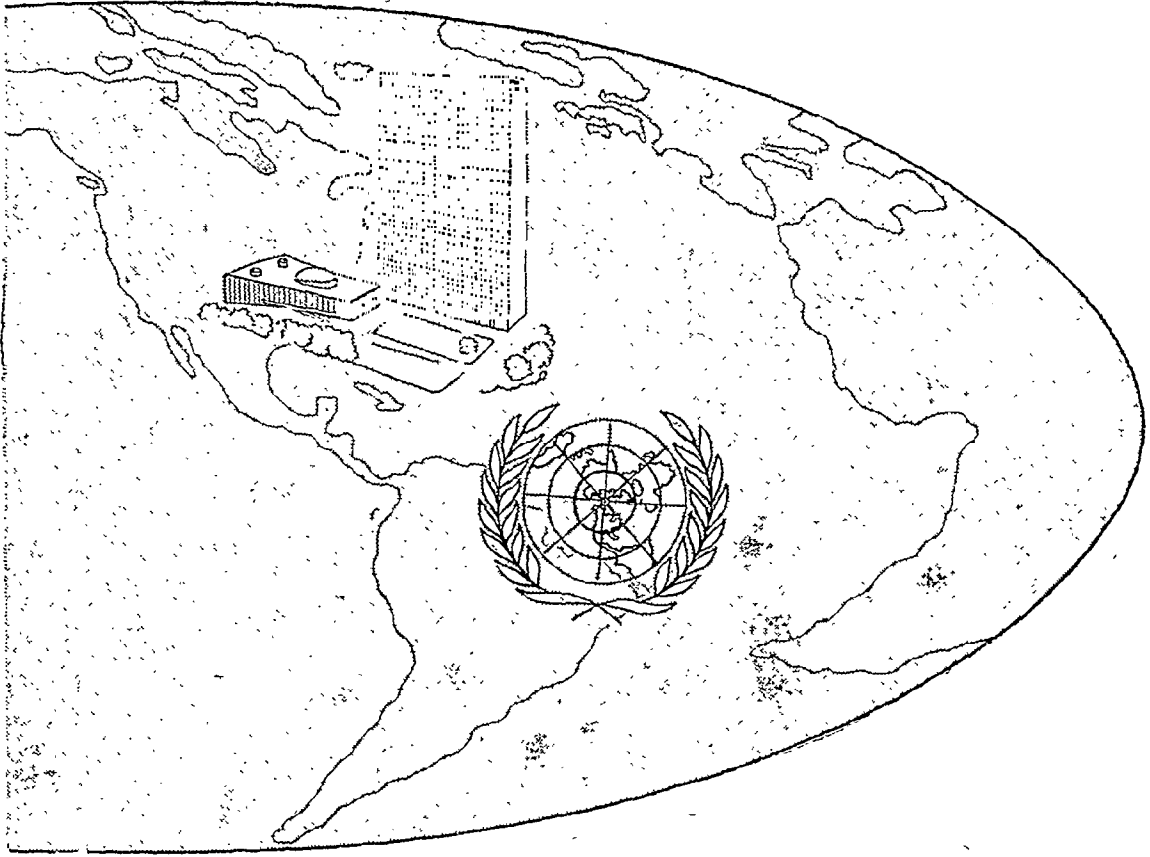
सत्य और स्वाधीनता की
खोज जारी रखी

युद्धरत दुनिया

शान्ति

की खोज में

१९३९ से पूर्व के दो दशकों में दुनिया आशावादी थी कि १९१४-१९१८ का महायुद्ध सब युद्धों को समाप्त कर देने वाला युद्ध है। व्यक्तियों और राष्ट्रों ने शांति की गारंटी के लिए विभिन्न प्रस्ताव रखे थे। लेकिन वे ऐसी शांति चाहते थे जिससे जीवन में लोकतन्त्रात्मक तरीकों के विकास को प्रोत्साहन मिले। लीग आफ नेशन्स, विश्व अदालत, निरस्त्रीकरण सम्मेलन, तटस्थता कानून, लोकार्नो करार और पेरिस की संधि उन शान्ति और लोकतंत्र के सिद्धान्तों को प्रतिपादित करने की दिशा में अपनाये गये विशेष उपाय थे।

लेकिन, कारण चाहे जो हो, मानव युद्ध से मुक्त नहीं था और दुनिया के सभी हिस्सों में लोकतन्त्र पनपा नहीं था। १९३९ के नये विस्फोटों ने शाँति को सुदृढ़ करने के और लोकतन्त्र के सभी आसारों को समाप्त कर दिया और दुनिया फिर द्वितीय महायुद्ध में कूद पड़ी। उस समय प्रश्न फ़ासिज्म बनाम स्वतन्त्रता का प्रतीत होता था। समग्रतावादी देश स्वतन्त्र राष्ट्रों को अपनी आधीनता में लाने को कृतसंकल्प थे।

जब युद्ध किया जा रहा था, स्वतंत्र राष्ट्रों के नेता संघर्ष के कारणों का गंभीर अध्ययन कर रहे थे और उन्होंने दुनिया को अधिक सुखी बनाने के प्रस्ताव भी तैयार कर लिये थे। जब युद्ध समाप्त हुआ, अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं को हल करने और आक्रमण को रोकने के लिए एक संयुक्तराष्ट्र संगठन शीघ्र स्थापित किया गया। खास समस्याओं को देखने के लिए विशेष समितियाँ भी बनाई गयीं लेकिन दुनिया के संकटों की जड़ें इतनी गहरी हो चली थीं कि उन्हें तत्काल सुलझाना संभव नहीं था।

संयुक्त राष्ट्र के अन्तर्गत द्वितीय विश्वयुद्ध के विजयी राष्ट्र इस बात पर सहमत नहीं हो पाये कि विश्व का संगठन किस प्रकार किया जाय या उनकी कठिनाइयाँ किस तरह दूर की जायँ। संदेह, ईर्ष्या और भय ने दुनिया को, दो बड़ी शक्तियों के पीछे दो खेमों के साथ मैत्री के बंधन में बांध दिया। ये दो शक्तियाँ संयुक्त राज्य अमेरिका और सोवियत रूस थीं। पश्चिमी राष्ट्र यह समझने लगे कि नया संघर्ष आक्रामक साम्यवाद का लोकतन्त्र के विरुद्ध संघर्ष है। कुछ नेताओं का विश्वास था कि इस "शीत युद्ध" को केवल सोवियत यूनियन से नेतृत्व या नीति में परिवर्तन द्वारा या स्वतन्त्र विश्व की तृतीय विश्वयुद्ध के लिए तैयारी द्वारा हल किया जा सकता है।

1900 AD

2000 AD

1910 AD

1990 AD

1920 AD

1980 AD

A World in Search of Peace

1930 AD

1970 AD

1940 AD

1950 AD

1960 AD

४१ विश्व के सामने शान्ति की स.
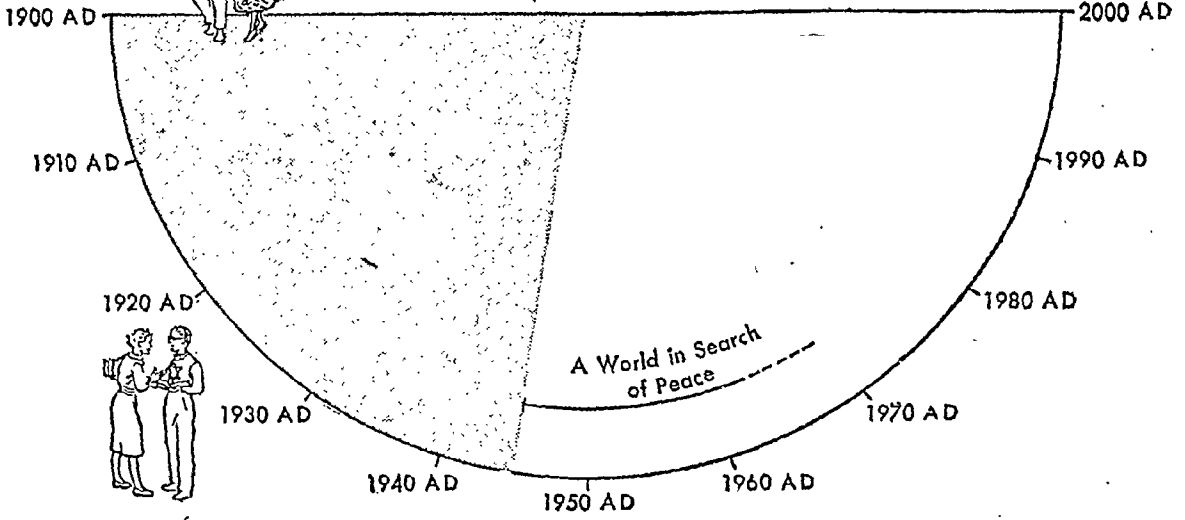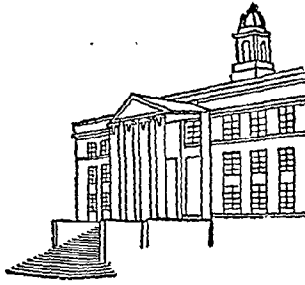
हर युद्ध के बाद कुछ समस्याएं तो खड़ी हो ही जाती हैं। युद्ध जितना ही बड़ा होता है उसके बाद उत्पन्न होने वाली समस्याएं उतनी ही बड़ी होती हैं। चूंकि दूसरा विश्वयुद्ध अभी तक लड़े गए सभी युद्धों से अधिक व्यापक था, अतः इसके बाद बहुत सारी समस्याएं खड़ी हो गईं। सभी देशों पर इस युद्ध का असर हुआ और अधिकांश जगत् में राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय संकट उत्पन्न हो गये।

शान्ति बनाए रखने की समस्या सबसे गंभीर समस्याओं में से एक थी। जिस समय दूसरा विश्व-युद्ध लड़ा जा रहा था उसी समय मित्र-राष्ट्रों ने ऐसी बुनियाद तैयार करनी शुरू कर दी जिस पर स्थायी शान्ति की स्थापना की आशा की जा सकती थी। इस आन्दोलन का नेतृत्व राष्ट्रपति फ्रेंकलिन डी० रूजवेल्ट ने संभाला। पर्ल बन्दरगाह पर बमबारी से ११ महीने पूर्व ६ जनवरी, १९४१ को अमरीकी कांग्रेस के नाम अपने संदेश में राष्ट्र-पति ने कहा कि संयुक्त राज्य चार अनिवार्य मान-वीय स्वतन्त्रताओं पर आधारित विश्व का आकांक्षी है।

अतलांतिक घोषणा-पत्र

इस युद्ध के रूस में फैल चुकने के बाद अगस्त ३-१४, १९४१ को न्यूफाउण्डलैण्ड के समुद्र तट से दूर एक क्रूजर में राष्ट्रपति रूजवेल्ट और ब्रिटिश प्रधान मंत्री चर्चिल ने बातचीत की। इन्होंने सोवि-यत संघ को सहायता देने और ग्रेट ब्रिटेन के लिए उधार-पट्टे के आधार पर सप्लाई करने के प्रश्नों पर बातचीत की। साथ ही इन दोनों व्य. प्रसिद्ध अतलांतिक घोषणा-पत्र भी तैयार . जिसमें ऐसे सामान्य सिद्धान्त शामिल कर लिए गए थे जिनके सम्बन्ध में अमरीका और ब्रिटेन दोनों देशों की यह आशा थी कि आने वाले विश्व का आधार ये सिद्धान्त ही बनेंगे। वास्तव में ये सिद्धान्त युद्ध-उद्देश्यों के ऐसे विवरण थे जिनके लिए स्वतन्त्र व्यक्ति लड़ सकते थे।

इस घोषणा-पत्र में निम्न बातें थीं :

(१) कि संयुक्त राज्य और ब्रिटेन कोई भी क्षेत्र नहीं लेंगे;

(२) सम्बन्धित देश की जनता की स्वीकृति के बिना क्षेत्र सम्बन्धी कोई भी परिवर्तन स्वीकार नहीं करेंगे;

(३) इस बात पर बल देंगे कि प्रत्येक देश की जनता को अपने ढंग की सरकार बनाने का अधिकार है।

(४) व्यापार-प्रतिबन्धों को शिथिल बनाने के लिए कार्रवाई करेंगे ताकि सभी राष्ट्र एक सी शर्तों पर कच्चा माल प्राप्त कर सकें;

(५) अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग के तौर-तरीके सोच कर सारे विश्व की आर्थिक समृद्धि को बढ़ाने का प्रयत्न करेंगे;

(६) एक ऐसा अन्तर्राष्ट्रीय समाज बनाने की कोशिश करेंगे जिसमें प्रत्येक राष्ट्र बाहरी आक्रमण से सुरक्षित हो सके;

(७) सभी राष्ट्रों के लिए समुद्रों के अबाध प्रयोग की व्यवस्था करेंगे;

...वा में शक्ति के प्रयोग के ...का समर्थन करेंगे;

(९) निःशस्त्रीकरण के कार्यक्रम का समर्थन करेंगे;

(१०) 'व्यापक सुरक्षा की कोई प्रणाली' स्थापित करने का प्रयत्न करेंगे।

संयुक्त राज्य के युद्ध में कूद जाने के पश्चात् उसने यह प्रस्ताव रखा कि धुरी-राष्ट्रों के साथ लड़ने वाले सभी राष्ट्र अतलान्तिक घोषणा-पत्र का समर्थन करें तथा मूलभूत स्वतन्त्रताओं की रक्षा के लिए अपना सहयोग देने की प्रतिज्ञा करें और पृथक रूप से कोई सन्धि न करने पर सहमत हों। उन्होंने यह सब संयुक्त राष्ट्रों के घोषणा-पत्र में स्वीकार किया जिस पर १ जनवरी, १९४२ को २६ राष्ट्रों ने हस्ताक्षर कर दिए थे। इस प्रकार अतलान्तिक घोषणापत्र धुरी राष्ट्रों से लड़ने वाले सभी राष्ट्रों के उद्देश्यों का घोषणा-पत्र बन गया।

युद्ध के बाद की योजनाएं

युद्धनीति की योजना तैयार करने के लिए राष्ट्रपति रूजवेल्ट तथा प्रधान मंत्री चर्चिल अपने अपने सलाहकारों सहित युद्ध के दौरान समय-समय पर मिलते रहे। कभी-कभी अन्य सरकारों के राष्ट्रपतियों ने भी इनसे बातचीत की। युद्ध का रुख बदल जाने पर यह तर्कसंगत लगा कि ये दोनों देश शान्ति के लिए भी योजना के निर्माण में पहल करें। संयुक्त राज्य, सोवियत संघ, चीन और ब्रिटेन के प्रतिनिधियों ने अक्तूबर १९४४ में वाशिंगटन डी० सी० में डम्बरटन ओक्स में हुई बैठक में भाग लिया। इन्होंने एक संयुक्त राष्ट्र संघ के सामान्य सिद्धान्तों को स्वीकार कर लिया।

सान फ्रांसिस्को सम्मेलन—उस समय जब कि मित्र राष्ट्र नाजियों और जापानियों के विरुद्ध सक्रिय रूप से युद्ध कर रहे थे, संयुक्त राष्ट्र के घोषणा-पत्र को पूरा करने के उद्देश्य से पचास राष्ट्रों के

संयुक्त राष्ट्र

मनुष्य के इतिहास का एक महत्त्वपूर्ण पृष्ठ: सान फ्रांसिस्को में १९४५ में संयुक्त राष्ट्र घोषणा-पत्र पर हस्ताक्षर।

प्रतिनिधियों ने सान फ्रांसिस्को में हुई बैठक में भाग लिया। इस बैठक का पहला अधिवेशन जर्मनी द्वारा शान्ति की प्रार्थना किए जाने के दो सप्ताह पहले २५ अप्रैल, १९४५ को हुआ। सान फ्रांसिस्को सम्मेलन में भाग लेने वाले प्रतिनिधि संसार की अधिकांश जनता लगभग, १,७००,०००,००० लोगों के प्रतिनिधि थे। दो महीने के परिश्रम के बाद यह घोषणा-पत्र तैयार हुआ और २६ जून, १९४५ को सम्मेलन में उपस्थित सब राष्ट्रों के प्रतिनिधियों ने इस पर हस्ताक्षर किये। इस घोषणापत्र की इतने काफी सदस्यों ने पुष्टि कर दी कि इसे २४ अक्तूबर, १९४५ को लागू कर दिया गया। इस प्रकार शान्ति के लिये एक नया विश्व संगठन स्थापित हो गया।

संयुक्त राष्ट्र संघ के लिए स्थायी भवन—संयुक्तराष्ट्र महासभा की पहली बैठक जनवरी, १९४६ में लंदन में हुई जिसमें ५१ राष्ट्रों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। सबसे पहले विश्व संगठन के लिये स्थायी भवन के प्रश्न पर विचार किया गया। अन्त में यह निश्चय हुआ कि जान डी० राक फेलर, जूनियर द्वारा दान में दिये गये ८५ लाख डालर तथा संयुक्त राज्य सरकार द्वारा दिये गये ऋण से न्यूयार्क सिटी में खरीदी गई जमीन पर भवन का निर्माण किया जाये।

(१) "चार स्वतन्त्रताएँ" कौन सी थीं ?
(२) अतलांतिक घोषणापत्र में बताये गये युद्ध उद्देश्य बताइए।
(३) संयुक्त राष्ट्रसंघ का घोषणापत्र क्या था ? कितने राष्ट्रों ने उस पर हस्ताक्षर किए ?
(४) रूज़वेल्ट और चर्चिल के बीच हुई बैठक के मुख्य उद्देश्य क्या थे ?
(५) अन्तर्राष्ट्रीय संगठन के सम्बन्ध में डम्बरटन ओक्स में कौनसी बातों पर निर्णय लिए गए ?
(६) सान फ्रांसिस्को सम्मेलन में क्या कार्रवाई हुई ?
(७) संयुक्त राष्ट्रसंघ का संगठन कब हुआ ?
(८) संयुक्त राष्ट्रसंघ के लिए स्थायी भवन की व्यवस्था कब और कैसे की गई ?

संयुक्त राष्ट्रसंघ के छः मुख्य अंग

संयुक्त राष्ट्रसंघ के उद्देश्य घोषणापत्र की प्रस्तावना में दे दिए गए हैं। विश्व की जनता के प्रति अपने संदेश में इस घोषणापत्र के निर्माताओं ने यह घोषणा की कि हम "आने वाली पीढ़ियों को युद्ध के जुल्म से" बचाने के लिए दृढ़-प्रतिज्ञ हैं। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए परिस्थितियों में सुधार लाना आवश्यक होगा जिससे कि अच्छा जीवन-स्तर बनाने या "मूलभूत मानवीय अधिकारों" को प्राप्त करने के लिए राष्ट्रों से संघर्ष न करना पड़े। अन्त में उन्होंने यह घोषणा की कि शान्ति और सुरक्षा बनाए रखने के लिए सदस्य अपनी शक्ति का संगठन करेंगे।

इन उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए छः मुख्य अंग स्थापित किए गए। ये अंग इस प्रकार थे : महासभा, सुरक्षा परिषद्, आर्थिक तथा सामाजिक परिषद्, अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय, ट्रस्टीशिप कौंसिल तथा सचिवालय।

महासभा—महासभा को अक्सर 'दुनिया की नगर सभा' के नाम से पुकारा जाता है। इस सभा में सभी सदस्य राष्ट्रों के प्रतिनिधि होते हैं जो प्रतिदिन के विषयों पर वादविवाद करते हैं और सुरक्षा परिषद् को अपनी सिफारिशें भेज देते हैं। यद्यपि महासभा को अपना मत मनवाने का अधिकार प्राप्त नहीं है फिर भी समस्याओं की जांच-पड़ताल करने तथा उन पर वादविवाद करने के लिए महासभा को पूरे अधिकार प्राप्त हैं। इस प्रकार विश्व की जनता के सामने समस्याएँ रखी जाती हैं और एक सचेत लोकमत तैयार किया जा सकता है।

महासभा की पहली सफलताओं में से एक सफलता यह थी कि इसने अन्तर्राष्ट्रीय शरणार्थी संगठन की स्थापना की जिसे युद्ध के परिणाम-स्वरूप योरुप में बेघरबार हुए १,६००,००० लोगों की देख-भाल का काम सौंपा गया। अन्तर्राष्ट्रीय शरणार्थी संगठन ने ऐसे शिविर स्थापित किए जिनमें विस्थापित व्यक्तियों की अपने स्वदेश लौट जाने या उनके लिए नये स्वदेश की व्यवस्था होने तक देखभाल की जा सकती थी।

सुरक्षा परिषद्—फिर भी घोषणापत्र के अनुसार संयुक्त राष्ट्रसंघ की मुख्य संस्था सुरक्षा परिषद् ही होनी थी, क्योंकि विश्व शान्ति की रक्षा का उत्तरदायित्व इसी को सौंपा गया था। इसके ग्यारह सदस्यों में से ये पाँच सदस्य स्थायी हैं। चीन, फ्रांस, ब्रिटेन, संयुक्त राज्य तथा सोवियत संघ। अन्य छह सदस्यों को महासभा द्वारा दो वर्षों की अवधि के लिए चुन लिया जाता है। रोजमर्रा के मामलों पर सुरक्षा परिषद् के किन्हीं सात मतों द्वारा स्वीकृति दी जा सकती है किन्तु अपेक्षाकृत अधिक महत्त्वपूर्ण मामलों में स्थायी सदस्यों में से किसी एक के निषेधाधिकार द्वारा प्रस्ताव को रोका जा सकता है। बहुत से अवसरों पर यह निषेधाधिकार एक रुकावट सिद्ध हुआ है

क्योंकि सोवियत संघ ने इस अधिकार का प्रयोग इतनी बार किया है कि परिषद् को अपनी कार्रवाई भी रोकनी पड़ी।

आर्थिक और सामाजिक परिषद्—आर्थिक और सामाजिक परिषद की स्थापना आपसी तनाव के उन कारणों को कम करने के लिए की गई थी जिनके फलस्वरूप दो या दो से अधिक राष्ट्र युद्ध के निकट आ सकते हैं। यह परिषद् बेकारी, बीमारी, भूख, गन्दे मकान, काम करने की कठिन परिस्थितियों तथा असन्तोष उत्पन्न करने वाली अन्य परिस्थितियों से, जिनसे युद्ध का आरम्भ होता है, छुटकारा पाने के लिए बनाई गई विशेष एजेंसियों के काम का समन्वय करती है। ये एजेन्सियाँ इस प्रकार हैं:—विश्व स्वास्थ्य संगठन, खाद्यान्न तथा कृषि संगठन, अन्तर्राष्ट्रीय श्रम संगठन, तथा संयुक्त राष्ट्र शिक्षा, विज्ञान और संस्कृति संगठन।
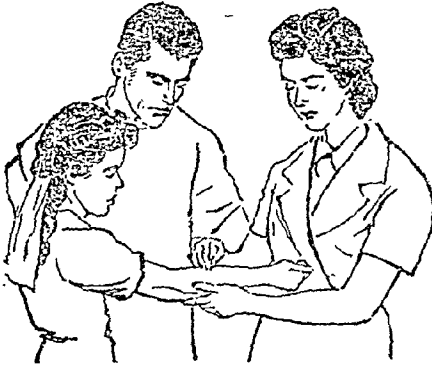
संयुक्त राष्ट्र विश्व स्वास्थ्य संगठन का रोगों के विरुद्ध तीव्र अभियान।

अन्तर्राष्ट्रीय या विश्व न्यायालय—यह वही काम करता है जो पहले विश्वयुद्ध के बाद स्थापित किया गया विश्व न्यायालय किया करता था। इस न्यायालय में महासभा तथा सुरक्षा परिषद् द्वारा निर्वाचित १५ जज होते हैं और यह न्यायालय नीदरलैण्ड्स में हेग नगर में स्थित है। संयुक्त राष्ट्रसंघ के सभी सदस्य देश अपने मामले इस न्यायालय में भेज सकते हैं। इसके अतिरिक्त यह न्यायालय संयुक्त राष्ट्रसंघ के किसी भी अंग को कानूनी विषयों पर सलाह देने का काम भी करता है।

ट्रस्टीशिप कौंसिल—पहले और दूसरे विश्वयुद्ध में पराजित देशों से प्राप्त अधिकांश औपनिवेशिक क्षेत्रों की देख-रेख करती है। इन क्षेत्रों को ट्रस्ट क्षेत्र कहते हैं। इन क्षेत्रों पर शासन करने वाले राष्ट्र क्षेत्रों की प्रगति के लिए इस कौंसिल के प्रति उत्तरदायी होते हैं। ट्रस्ट प्रणाली का उद्देश्य यह होता है कि "ट्रस्ट क्षेत्रों के निवासियों की राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक तथा शैक्षिक प्रगति और स्वशासन या स्वतन्त्रता प्रगति की दिशा में उनकी उत्तरोत्तर प्रगति में और तेजी लाई जाए।"

सचिवालय—संयुक्त राष्ट्र संघ ने एक असैनिक सेवा का निर्माण किया है जिसमें दुनिया के सभी कोनों से आए हुए कर्मचारी काम करते हैं। यह वर्ग, जिसे सचिवालय के नाम से पुकारा जाता है, अत्यन्त महत्त्वपूर्ण सेवा करता है। सचिवालय का अध्यक्ष महासचिव होता है जिसका कार्यकाल पांच वर्ष का होता है। नार्वे के ट्रिग्वेली पहले महासचिव थे। इनके बाद इनके स्थान पर १९५३ में स्वीडन के डाग हैमरशोल्ड आ गए। हैमरशोल्ड १९६१ में एक हवाई दुर्घटना में मारे गए और उनके बाद बर्मा के ऊ थांत महासचिव के पद पर आसीन हुए। इस कार्यालय के बहुत से काम होते हैं। पांच हजार से अधिक कर्मचारियों वाले इस सचिवालय के अध्यक्ष पद के कार्य को संभालने के अतिरिक्त, सचिव अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति का अध्ययन करते हैं और ऐसी बातों के सम्बन्ध में विभिन्न संस्थाओं की रिपोर्ट भेजते हैं जो उनके ध्यान में लाई जानी चाहिए। संयुक्त राष्ट्रसंघ में मतभेद रखने वाले सदस्यों के मध्य महासचिव एक निष्पक्ष व्यक्ति का काम भी कर सकते हैं।

१. संयुक्त राष्ट्रसंघ के उद्देश्य बताइए।
२. महासभा को अक्सर दुनिया की "नगर सभा" क्यों कहते हैं?
३. महासभा का सदस्य कौन होता है?
४. सुरक्षा परिषद् की मतदान प्रणाली के सम्बन्ध

में बताइए। इस प्रणाली के सफल न होने के कारण बताइए।

५. आर्थिक और सामाजिक परिषद् का क्या काम है ?

६. आर्थिक और सामाजिक परिषद् के अधीन कुछ मुख्य एजेंसियों के नाम बताइए।

७. अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय के संगठन और काम का विवरण दीजिए।

८. ट्रस्ट क्षेत्र क्या होते हैं ? ट्रस्ट प्रणाली का क्या उद्देश्य है ?

दूसरे विश्वयुद्ध के बाद समाजवाद का विस्तार

युद्ध के बाद सभी देशों के सम्मुख जो महत्त्व-पूर्ण प्रश्न थे उनमें से एक प्रश्न पूँजीवाद के भविष्य के सम्बन्ध में था। पहले और दूसरे विश्वयुद्ध के बीच योरुप के बहुत से देशों ने अपने मुख्य उद्योगों तथा परिवहन व संचार साधनों को या तो पूरी तरह विनियमित कर दिया था या उन्हें अपने अधिकार में ले लिया था। दूसरे विश्वयुद्ध के बाद इस प्रवृत्ति में और तेजी आ गई। बहुत से देशों में यह स्वीकार कर लिया गया कि सरकार देश-वासियों की सामाजिक सुरक्षा के साथ-साथ देश की आर्थिक व्यवस्था के ठीक-ठीक काम करने के बारे में जिम्मेदार है। इस सिद्धान्त के कारण राज्य अक्सर उन उद्योगों को अपने अधिकार में ले लेते थे जो जनता की इच्छा के अनुसार कार्य नहीं करते थे। समाजवाद की यह व्यवस्था विभिन्न देशों में अलग-अलग तरह की थी।

पश्चिमी योरप में—स्पेन, पुर्तगाल, जर्मनी तथा इटली को छोड़कर—लोकतंत्रीय सिद्धान्त बहुत पहले स्थापित हो चुके थे। इन लोकतंत्रीय व्यवस्था वाले देशों में विभिन्न मात्राओं में समाज-वाद का पक्ष लेने वाले दलों को जनता द्वारा निर्वाचित कर लिया जाता था और ऐसा करने के लिए सशक्त कारण भी मौजूद थे। सबसे पहली बात तो यह थी कि बहुत से उद्योग पुरानी मशीनों के कारण असन्तोषजनक ढंग से काम कर रहे थे और निजी मालिकों ने धनाभाव के कारण या तो इन मशीनों के स्थान पर आधुनिक मशीनें नहीं लगायीं या वे ऐसा करने में असमर्थ थे। कोयला उद्योग के मामले में तो यह बात विशेष रूप से लागू होती थी। दूसरी बात यह थी कि कुछ देशों को युद्ध से इतना भारी नुकसान पहुँचा था कि परिवहन की नई व्यवस्थाओं या जल शक्ति के लिए बाँध बनाने जैसी विशाल संस्थापनाओं में पूँजी लगाने के लिए राज्य को सामूहिक पूँजी लगानी होती थी। तीसरी बात यह थी कि युद्ध के बाद का संसार इतना अव्यवस्थित था कि बहुत से व्यक्ति फैक्ट्रियों या अन्य व्यापारों में अपनी निजी पूँजी लगाने का और दूसरे युद्ध से उनके नष्ट होने का जोखिम उठाने का साहस नहीं रखते थे। चौथा कारण यह था कि समाजवादी दल बहुत पहले से संयुक्त राज्य की अपेक्षा योरुप के देशों में अधिक विख्यात थे। समाजवादी विचारधारा के लोग युद्ध के लिए अक्सर पूँजीपतियों पर दोष लगाते हैं। पाँचवीं बात यह थी कि युद्ध के समय के ऊँचे करों के कारण लोकतंत्रीय देशों का विशाल धन कम हो गया था जिसके फलस्वरूप निजी उद्योगों के विकास के लिए पर्याप्त निजी पूँजी की कमी थी। इन सब कारणों से फ्रांस, ब्रिटेन, नार्वे, डेन्मार्क, बेल्जियम, नीदरलैण्ड्स, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैण्ड तथा भारतवर्ष की सरकारों ने अपने देशों के बहुत से व्यवसायों को अपने अधिकार में ले लिया।

ब्रिटेन द्वारा बहुत-सी कठिन समस्याओं का सामना

दूसरे विश्वयुद्ध के परिणामस्वरूप ब्रिटेन जन-शक्ति और सम्पत्ति के मामले में अत्यन्त कमजोर हो गया था। इस युद्ध ने ३६०,००० सशस्त्र व्यक्तियों और १४५,००० असैनिक व्यक्तियों की जान ले ली। सामान की इस कदर कमी हो गई थी कि १९४५ के एकदम बाद वाले वर्षों में जीने के लिए ब्रिटेन को खाद्यान्न, कपड़ों और ईंधन पर कड़ा राशन करना पड़ा। युद्ध के उपरान्त की अपनी घरेलू समस्याओं के अतिरिक्त ब्रिटेन ने एक ऐसे साम्राज्य का तीव्र विघटन भी देखा जो कि १९४७ तक ही धरती के पूरे स्थल क्षेत्र के एक चौथाई भाग तक फैल चुका था।

कम्बाइन

द्वितीय महायुद्ध की समाप्ति के बाद ९ वर्षों तक ब्रिटेन में ईंधन, कपड़े और खाद्यान्न का राशनिंग रहा।

ब्रिटेन का समाजवाद की ओर झुकाव

विन्स्टन चर्चिल की युद्धकालीन सरकार एक संयुक्त सरकार थी जिसमें कंजरवेटिव दल मजदूर दल और उदार दल के साथ राष्ट्र को जीवित रखने के लिए पूर्ण समन्वय के साथ काम करता था। युद्ध के दौरान सरकार ने समाजवाद की दिशा में दो महत्त्वपूर्ण कदम उठाए।

पहला कदम बटलर अधिनियम का निर्माण करना था जिसमें जनता की सभी श्रेणियों के लिए शिक्षा के बेहतर अवसरों की व्यवस्था थी। दूसरा कदम बेवरिज योजना तैयार करने का था जिसमें राज्य बीमा की व्यवस्था थी, जिसके अधीन बेकारी, सेवा-निवृत्ति और साथ ही चिकित्सा सम्बन्धी देखरेख की व्यवस्था मौजूद थी।

युद्ध की समाप्ति पर ऐसा लगा कि ब्रिटेन की जनता यह स्वीकार करती है कि उसकी विभिन्न समस्याओं का हल समाजवादी श्रमिक दल द्वारा प्रस्तुत कल्याणकारी राज्य में निहित है, जुलाई १९४५ के चुनाव में, जो कि दस वर्ष के भीतर होने वाला पहला आम चुनाव था, श्रमिक दल को जबरदस्त विजय प्राप्त हुई। यद्यपि चर्चिल को दोबारा संसद् के लिए चुन लिया गया, लेकिन अब की बार वह अल्पसंख्यक विरोधी दल के नेता बने। क्लीमेंट एटली प्रधान मंत्री बने।

श्रमिक सरकार ने सत्तारूढ़ होने पर संयुक्त सरकार से प्राप्त हुए समाजवादी विधान को लागू किया। बटलर अधिनियम से अधिकांशतः संतुष्ट सरकार ने इस अधिनियम के उपबन्धों की पूर्ति के लिए स्कूल बनाने शुरू किए। स्कूल में शिक्षा पाने की अनिवार्य आयु बढ़ाकर १६ तक कर दी गई। जो बालक १६ और १८ वर्ष के बीच की आयु का था और स्कूल छोड़ देता था, उसे अंशकालिक कक्षाओं में पढ़ना पड़ता था।

बेवरिज योजना से पूरी तरह सन्तुष्ट न होने पर सरकार ने एक ऐसी सामाजिक बीमा प्रणाली का सूत्रपात किया, जिसमें जन्म से लेकर मृत्यु तक प्रत्येक व्यक्ति की देखभाल की जाती है और उस बीमे की अदायगी सरकार द्वारा करों में से की जाती है।

साइन बोर्ड पर लिखी युक्तियों के कारण ब्रिटेन के कोयला खनिकों ने अपने उद्योग के राष्ट्रीयकरण की खुशियां मनाईं।

एक्मी फोटो
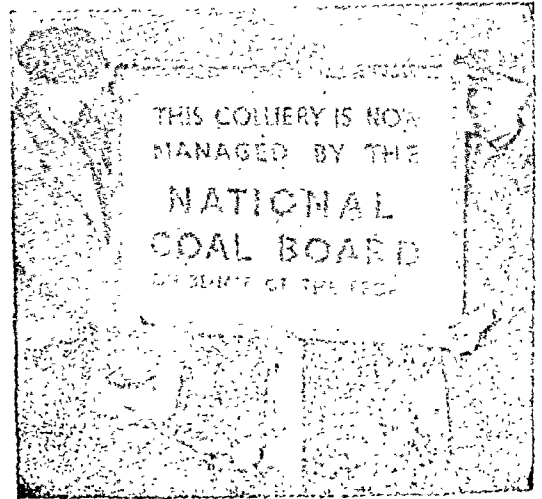
इस योजना द्वारा डाक्टर मूलतः सरकारी कर्मचारी बना दिए गए। इस सम्बन्ध में डाक्टरी पेशा करने वाले लोगों की ओर से भारी आपत्ति उठाई गई, क्योंकि उन्हें यह डर था कि इसके परिणामस्वरूप चिकित्सा सम्बन्धी प्रगति अवरुद्ध हो जायगी। फिर भी जनता की आम भावना को समझते हुए कंजरवेटिव दल ने बिना गम्भीर आलोचना किए इस व्यवस्था को पास हो जाने दिया।

श्रमिक सरकार का ब्रिटेन के मूल उद्योगों के राष्ट्रीयकरण के प्रश्न पर सबसे अधिक विरोध हुआ। बैंक आफ इंगलैंड ऐसा पहला व्यवसाय था जिसका राष्ट्रीयकरण किया गया। इसके बाद नागरिक उड्डयन, कोयला, दूरसंचार, आंशिक परिवहन, बिजली, गैस, लोहा और इस्पात उद्योगों की बारी आई। यद्यपि ब्रिटेन ने किसी सीमा तक समाजवाद स्वीकार कर लिया था लेकिन ऐसा करने का उसका तरीका लोकतंत्रात्मक था। उदाहरण के लिए कोयले की खानों के मालिकों को एक ऐसे उद्योग के लिए लगभग १० अरब डालर दिए गए जिसे आमतौर से कच्चा-पक्का उद्योग माना जाता था। समय-समय पर ऐसा प्रतीत होता था कि श्रमिक दल को उसके पद से हटा दिया जाएगा क्योंकि इसकी नीतियों ने बहुत से ऐसे शत्रुओं को जन्म दे दिया था जो बहुत ही कड़ी आलोचना करते थे। इसके अतिरिक्त, आर्थिक उद्धार की गति १९४७ के जबरदस्त बर्फानी तूफान और कोयले की भारी कमी के कारण बहुत धीमी हो गई थी। ब्रिटेन के लिए यह आवश्यक हो गया कि वह जीवित रहने के लिए दूसरे देशों से और अधिक अन्न और कच्चा माल खरीदे। इस प्रकार आयात किए गए सामान की रकम चुकाने के लिए उसको सभी विलास वस्तुओं को घरेलू बाजार से निकाल कर निर्यात बाजार में लाना पड़ा। लेकिन यह देश स्पष्टतः आर्थिक उद्धार की दिशा में था। संयुक्त राज्य से प्राय ३·७५ अरब डालर का उधार और ६२ करोड़ २० लाख डालर के नकद ऋण की सहायता से ब्रिटेन ने अपनी आर्थिक स्थिति को मजबूत बना लिया।

कंजरवेटिव दल द्वारा नियंत्रण प्राप्त करना— १९५१ में श्रमिक दल ने देश द्वारा की गई प्रगति के लिए देश के सामाजिक विधान को जिम्मेवार ठहराया। कंजरवेटिव और उदार दलों ने इस सफलता का सम्बन्ध जनता के परिश्रम और अमरीकी सहायता से स्थापित किया। स्पष्टतः अधिकांश ब्रिटेनवासियों ने बाद वाला विचार स्वीकार किया, क्योंकि १९५७ के चुनाव में विन्स्टन चर्चिल के नेतृत्व में कंजरवेटिव दल को बहुत थोड़े से मतों से विजय प्राप्त हुई।

१९५५ में चर्चिल के स्थान पर सर एन्थनी ईडन प्रधान मन्त्री बन गए। लेकिन उन्हें १९५७ में बीमारी के कारण त्यागपत्र देना पड़ा। इसके बाद ईडन के स्थान पर हेराल्ड मैकमिलन आ गए। १९५९ में कंजरवेटिव दल ने आम चुनाव में लगातार तीसरी विजय प्राप्त की और मैकमिलन मन्त्री बने रहे।

यद्यपि कंजरवेटिव दल ने राष्ट्रीयकरण की बात स्वीकार नहीं की लेकिन इसने फिर भी कल्याण राज्य की सुविधाओं में धीरे-धीरे वृद्धि कर दी। इसके अतिरिक्त, कंजरवेटिव दल के नेतृत्व काल में इस्पात और सड़क परिवहन ही ऐसे दो उद्योग थे जिनका राष्ट्रीयकरण हो चुका था और जो निजी मालिकों को वापस कर दिए गए।

साम्राज्य का प्रश्न— ब्रिटेन के तेजी से समाप्त होने वाले साम्राज्य के सम्बन्ध में श्रमिक दल के अधिकांश तथा कंजरवेटिव दल के बहुत से सदस्यों के विचारों में भिन्नता थी। चर्चिल ने कहा कि वे साम्राज्य के नाश की अध्यक्षता करने के लिए प्रधान मन्त्री नहीं बने हैं। फिर भी श्रमिक दल इस बात पर दृढ़ रहा कि यदि साम्राज्य की जनता चाहे तो पूर्ण स्वतन्त्रता प्राप्त कर सकती है और जनता तो स्पष्टतः ऐसा चाहती ही थी।

१९४७ में भारत और पाकिस्तान (जो कि हाल में ही भारत से अलग हुआ था) राष्ट्रमण्डल के अन्तर्गत दो स्वतन्त्र देश बने जो कि बाद में गण राज्य बन गए। ब्रिटेन के अन्य अधीन देशों ने भी बहुत जल्दी स्वतन्त्रता प्राप्त कर ली जिनमें से कुछ ने राष्ट्रमण्डल में रहने की इच्छा प्रकट की और कुछ उसमें से निकल गये।

१९६२ में करीबियन क्षेत्र में ब्रिटेन और उसके आठ उपनिवेशों ने १९५८ में स्थापित संघ के स्थान पर वैस्टइंडीज संघ नाम के नए संघ की स्थापना कर दी। जब मूल संघ के दो बड़े और धनी द्वीप समूह (जमायका तथा ट्रिनिडाड-टोबागो) आज़ाद हो गये, तो यह संघ विघटित हो गया। ब्रिटेन ने इस नए संघ के द्वीपसमूहों को परीक्षा की अवधि के बाद पूर्ण स्वतन्त्रता देने का वायदा किया।

इसके परिणामस्वरूप १९६२ तक एशिया और अफ्रीका के करोड़ों लोगों पर से ब्रिटेन का नियन्त्रण समाप्त हो चुका था। जो राष्ट्र राष्ट्रमण्डल में रहे वे स्वेच्छा से इसमें रहे और अब वे ब्रिटिश शासकों के प्रति निष्ठा नहीं रखते थे। ब्रिटेन ने अपनी आखिरी बस्तियों को क्रमशः स्वशासन और स्वतंत्र राष्ट्र बनाने की दिशा में प्रशिक्षण देने का प्रयत्न किया।

एलिजाबेथ द्वितीय

१९५२ में अपने पिता जार्ज षष्ठ की मृत्यु हो जाने पर एलिजाबेथ द्वितीय रानी बन गई। आधुनिक ब्रिटेन में अब रानी को सीधे राजनीतिक शक्ति प्राप्त नहीं है किन्तु उसका ब्रिटिश राष्ट्रमण्डल के सांकेतिक प्रमुख के रूप में कार्य करना आज भी महत्त्वपूर्ण समझा जाता है। अफ्रीका के पराधीन देशों में सबसे पहले स्वतन्त्रता प्राप्त करने वाले देश घाना की जनता ने १९६१ में रानी का उस समय बहुत उत्साह से स्वागत किया जब कि उन्होंने एक नए बन्दरगाह के उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता की थी।

१. युद्ध के बाद समाजवाद के विस्तार के प्रमुख कारण बताइए।
२. १९४५ में इंगलैंड का नेतृत्व किस दल ने सम्भाला ?
३. युद्धोपरान्त ब्रिटेन द्वारा कल्याण राज्य की स्थापना की दिशा में क्या कारंवाई की गई ?
४. नये शिक्षा कानूनों में क्या व्यवस्था थी ? सामाजिक बीमा प्रणाली से आप क्या समझते हैं ?
५. युद्धोत्तर ब्रिटेन के सामने साम्राज्य सम्बन्धी क्या समस्या थी ?
६. ब्रिटेन में १९५१ में कौनसा दल सत्तारूढ़ हुआ ? उसके बाद के प्रधान-मन्त्रियों के नाम बताइए।

फ्राँस में राजनीतिक अशान्ति

चार्ल्स डी गाल — जब जर्मनी की सेना ने फ्रांस का खात्मा कर दिया तो फ्रांस और फ्रांसीसी संसद् को यह निर्णय करना पड़ा कि अब वह क्या करे। संसद् के ९२८ सदस्यों में से ५६९ ने यह राय दी कि जर्मनी की शर्तें स्वीकार कर ली जाएँ और फ्रांसीसी सरकार को विशी में ले जाया जाए। वहाँ जाकर मार्शल पैतां जर्मन नियन्त्रण के अधीन अधिनायक बन गये। बहुत से फ्रांसीसियों ने इस प्रकार संघर्ष न करने पर आपत्ति उठाई और उन्होंने जनरल चार्ल्स डी गाल के नेतृत्व में फ्रांस के स्वतन्त्रता आन्दोलन की स्थापना की जिसका कार्यालय लन्दन में रखा गया। धीरे-धीरे बहुत से फ्रांसीसी फ्रांस में ही अपनी जान खतरे में डाल कर विरोधी दलों के सदस्य बन गए।

मित्र राष्ट्रों की सेनाओं द्वारा १९४४ में फ्रांस को स्वतंत्रता दिला देने पर डी गाल पेरिस चले गए। यहां उन्हें प्रतिरोध-दलों के नेताओं का सहयोग

एक समाचार सम्मेलन में भाषण करते हुए चार्ल्स डी गाल
वाईड वर्ल्ड

प्राप्त हुआ और उनकी सरकार ने पेरिस से ही १५ महीने तक फ्रांस पर शासन किया।

फ्राँस पर युद्ध के प्रभाव

डी गाल को ऐसा फ्रांस प्राप्त हुआ जिसे हालांकि कुछ अन्य योरोपीय देशों की तरह नुकसान नहीं पहुँचा था फिर भी वह पूर्णतः अस्त-व्यस्त था। अनुमान है कि २१,०००,०००,००० डालर की कीमत का या यूँ कहिए कि पहले विश्वयुद्ध से लगभग दुगना माल नष्ट हो गया। पुल, सड़कें तथा रेलमार्ग नष्ट हो चुके थे। खाद्यान्न की कमी थी और फ्रांसीसी फ्रांक की कीमत बहुत कम हो गई थी। ऐसा अनुमान लगाया गया कि इस युद्ध के दौरान १५ लाख फ्रांसीसी मारे गए थे।

आर्थिक और राजनीतिक पुनर्निर्माण—लगभग उसी समय डि गाल ने फ्रांस की बुराइयों को दूर करने के लिए उपाय किए। एक सेना तैयार की गई जिसने जर्मनी पर अन्तिम विजय पाने की लड़ाई में भाग लिया। कुछ तो इसलिए कि वहाँ की अर्थ-व्यवस्था विच्छिन्न हो गयी थी और कुछ प्रतिरोध-दलों द्वारा दबाव डाले जाने के कारण फ्रांस को कोयला खानों, गैस, बिजली, मोटर, मोटर गाड़ी, वायुयान उद्योग तथा बैंकों का राष्ट्रीयकरण करना पड़ा।

फ्रांस को एक ऐसी सरकार की आवश्यकता थी जो जनता की इच्छानुकूल होती और फ्रांस का पुनर्निर्माण कर पाती। इसलिए डीगाल की सरकार ने एक नये संविधान का मसौदा तैयार करने के लिए १९४५ में एक राष्ट्रीय सम्मेलन बुलाया। मत-दाताओं ने इस प्रकार तैयार किए गए संविधान को अस्वीकार कर दिया। अगले वर्ष दूसरे संविधान को कुल डाले गये मतों में से मुश्किल से ही बहुमत प्राप्त हुआ और मत देने के अधिकारी लोगों में से तिहाई लोग मत देने नहीं गए।

चौथा फ्रांसीसी गणराज्य—चौथे फ्रांसीसी गणराज्य के संविधान ने फ्रांस को लोकतन्त्रीय देश बना दिया। इसमें तीसरे गणराज्य की तरह संगठित सरकार का उपबंध था। इसमें मानवीय अधिकारों के फ्रांसीसी घोषणापत्र में निहित वैयक्तिक स्वतन्त्रताओं की व्यवस्थाओं की व्यवस्था ही नहीं थी, बल्कि, पहली बार, महिलाओं को भी मत देने का अधिकार दे दिया गया था। श्रमिकों के लिए सरकार द्वारा प्रस्तावित बचत प्रणाली के खिलाफ मजदूरों के आम हड़ताल में शामिल होने के कारण पेरिस में यात्रियों को असुविधा हो गई। फ्रांसीसी अपने नेताओं के प्रति असंतोष व्यक्त करने के प्रदर्शनों में बड़े तेज रहे हैं। वाईड वर्ल्ड

इसमें सामूहिक सौदेबाजी करने तथा हड़ताल करने के अधिकार दे दिए गए। इसमें कुछ समाजवादी व्यवस्थाएँ और जोड़ दी गई, जैसे नौकरी पाने का अधिकार, स्वस्थ रहने का अधिकार, आराम, खाली समय तथा शिक्षा का अधिकार। इसके अतिरिक्त इसमें यह भी कहा गया कि सार्वजनिक सेवाओं से सम्बन्धित सभी व्यवसायों का राष्ट्रीयकरण कर दिया जाना चाहिए।

आर्थिक परिस्थितियाँ—युद्ध के बाद १९४६ में सरकार ने कोयला, बिजली तथा इस्पात जैसे महत्वपूर्ण उद्योगों के लिए उत्पादन के लक्ष्य निर्धारित किए। निरन्तर हड़तालों से देश को भारी नुकसान पहुँचा। अधिकांश हड़तालें ऐसे साम्यवादियों द्वारा करवाई गई थीं जो यह अनुभव कर रहे थे कि फ्रांस में उनका प्रभाव नष्ट होता जा रहा है। कर्मचारियों ने जीवन-निर्वाह की बढ़ती हुई महंगाई की क्षतिपूर्ति के लिए बेहतर मजदूरी की माँग की। फ्रांस के किसानों को भी नुकसान पहुँचा क्योंकि फसलें घटिया दर्जे की थीं और औद्योगिक उत्पादन की लागत बहुत ऊँची थी। ब्रिटेन की तरह फ्रांस अपने आयात की अदायगी करने के लिए बाहर के देशों में अधिक माल नहीं बेच सका। इस कमी को दूर करने के लिए संयुक्त राज्य द्वारा इसे बहुत बड़े ऋण दिए गए। अन्ततः आर्थिक व्यवस्था में सुधार हुआ और इस्पात, मोटर गाड़ी और कपड़ा बनाने की फैक्टरियों में रोजगार के अवसर बढ़े। यद्यपि फ्रांस की आधी जनता आज भी अपनी रोजी खेती से कमाती है फिर भी देश की आर्थिक प्रगति अधिकतर औद्योगिक क्षेत्र में हुई है।

राजनीति—युद्ध से पहले की तरह अब भी फ्रांस में बहुत से राजनीतिक दल थे। मजबूत और सुसंगठित साम्यवादी दल से लेकर बहुत से छोटे-छोटे कंजरवेटिव दलों तक अनेक दल थे। इनमें से कोई भी दल इतना बड़ा नहीं था कि वह चुनाव जीत सकता। सरकार बनाने के लिए दो या दो से अधिक दलों को एक दूसरे के साथ संधि करनी होती थी। इस दशा के कारण "अस्थिर सरकार" की स्थिति बनी रहती थी। १९४६ से १९५८ तक चौथे गणराज्य के २५ प्रधानमन्त्री बने।

अपनी आर्थिक कठिनाइयों और कमजोर राजनीतिक प्रणाली के कारण अपने दूर-दूर तक फैले साम्राज्य के राज्यद्रोहियों से फ्रांस पीड़ित हो उठा जिससे आन्तरिक अशान्ति पैदा हो गई। इन्डो-चाइना, अल्जीरिया तथा ट्यूनीसिया में हुए विद्रोह के फलस्वरूप फ्रांस में जन-शक्ति और धन का बड़ा ह्रास हुआ जो फ्रांस के लिए सहन करना कठिन था। इसके बावजूद, इसके लिए विद्रोह को दबाना असम्भव लग रहा था। परिणाम यह हुआ कि एक के बाद दूसरे राजनीतिक संकट आते रहे। अन्ततः गृहयुद्ध को रोकने का प्रयत्न करते हुए १९५८ में राष्ट्रपति रेने कोटी ने चार्ल्स डी गाल से प्रधान-मन्त्री बनने के लिए कहा। डी गाल ने इस शर्त पर प्रधान मन्त्री बनना स्वीकार किया कि उन्हें छह महीने के लिए आपातकालीन अधिकार दे दिए जाएं। इस समय के बाद नया संविधान स्वीकार किया गया।

पांचवां गणराज्य—नये संविधान में राष्ट्रपति को चौथे गणराज्य की तुलना में अधिक अधिकार दे दिए गए। उसका निर्वाचन सात वर्षों की अवधि के लिए होता था और उसे प्रधान मन्त्री तथा मन्त्रिमण्डल के अन्य सदस्य नियुक्त करने का अधिकार प्राप्त था। उसे संसद् भंग करने तथा नये चुनाव करवाने का अधिकार भी था। संसद् का निर्माण दो सदनों से होता था एक लोक सभा, दूसरी

सीनेट। जनवरी १९५९ में डी गाल पाँचवें गणराज्य के पहले राष्ट्रपति बने।

नये संविधान में फ्रांस के समुद्रपारीय क्षेत्रों के सम्बन्ध में तीन विकल्प रखे गए थे, जिनमें से एक को छह महीने के भीतर चुनना था। ये विकल्प इस प्रकार थे: (१) ये क्षेत्र अपनी मौजूदा स्थिति कायम रख सकते थे; (२) या फ्रांस का एक प्रान्त बन सकते थे; (३) या फ्रांसीसी राष्ट्रमंडल के अन्तर्गत एक स्वतन्त्र राष्ट्र बन सकते थे। फ्रांसीसी राष्ट्रमंडल एक राजनीतिक इकाई था और नये संविधान में इसकी व्यवस्था भी मौजूद थी। फ्रांसीसी राष्ट्रमंडल में मिलने का विकल्प मानने वाले क्षेत्र आन्तरिक मामलों के सम्बन्ध में तो अपना नियंत्रण रखते थे किन्तु विदेश नीति, प्रतिरक्षा और न्याय से सम्बन्धित मामलों में राष्ट्रमंडल का नियंत्रण ही लागू होता था। अधिकांश उपनिवेशों ने फ्रांसीसी राष्ट्रमंडल का सदस्य बनने का विकल्प अपनाया।

स्पेन को मान्यता प्राप्त हुई

इस बात के बावजूद कि फ्रैंको पर हिटलर और मुसोलिनी का, जिन्होंने स्पेन के गृहयुद्ध में उसकी सहायता की थी, बड़ा ऋण था, दूसरे विश्वयुद्ध में स्पेन निष्पक्ष रहा। दूसरे विश्वयुद्ध के बाद फ्रैंको ने फासिस्ट ढंग की सरकार ही कायम रखी। इन सब कारणों से स्पेन को संयुक्त राष्ट्र संघ का सदस्य नहीं बनने दिया गया।

चूँकि साम्यवाद एक निरन्तर बढ़ता हुआ खतरा हो गया था अतः संयुक्त राज्य ने स्पेन के साथ अपने सम्बन्ध और अधिक मित्रतापूर्ण बना लिए। यह देश योरुप में सामरिक महत्त्व रखता है। १९५३ में इन दोनों राष्ट्रों ने एक सुरक्षा संधि पर हस्ताक्षर किए जिसमें संयुक्त राज्य को स्पेन में हवाई अड्डे बनाने की मंजूरी दे दी गई थी। इसके बदले में संयुक्त राज्य ने स्पेन को आर्थिक मदद दी।

१. १९४० में नाजी शक्ति से आक्रान्त होने पर फ्रांसीसी संसद् ने किस कार्रवाई के लिए मत दिया?
२. फ्रांसीसी विरोधी आन्दोलन में चार्ल्स डी गाल ने क्या भाग लिया?
३. फ्रांस की अस्थायी सरकार द्वारा क्या तरीके अपनाए गए?
४. वैयक्तिक अधिकारों, समाजवाद तथा सरकार के सम्बन्ध में चौथे गणराज्य के संविधान में क्या व्यवस्था थी?
५. १९५८ में किन परिस्थितियों में डी गाल सत्तारूढ़ हुए?
६. फ्रांसीसी राष्ट्रमंडल किसे कहते हैं?
७. स्पेन की स्थिति में सुधार कैसे हुआ?

इटली गणराज्य बन गया

चूँकि १९४३ में मित्रराष्ट्रों की सेनाओं ने इटली में रहने वाले इटलीवासियों तथा जर्मनों को प्रायद्वीप में बहुत ऊपर तक खदेड़ दिया था, अतः मुसोलिनी को त्यागपत्र देना पड़ा। वह बच कर जर्मन प्रशासित उत्तरी इटली में चला गया जहाँ उसे अप्रैल १९४५ में गिरफ्तार कर लिया गया और फासिस्ट विरोधियों द्वारा मृत्युदण्ड दे दिया गया।

प्रधान मन्त्री एलसेडी डी गैसपेरे जिसे फासिस्ट-विरोधी विश्वासों के कारण मुसोलिनी ने गिरफ्तार कर लिया था, के अधीन इटली में एक अस्थायी सरकार स्थापित कर दी गई। प्रधान मन्त्री बनने के बाद गैसपेरे ने पहला काम यह किया कि अपने भूखे देशवासियों का पेट भरने के लिए संयुक्त राष्ट्र सहायता और पुनर्वास प्रशासन से बहुत बड़ी मात्रा में माल प्राप्त किया।

एक नई सरकार—इटली में किस प्रकार की सरकार हो, यह एक महत्त्वपूर्ण प्रश्न था। मई १९४६ में इटली की जनता ने देश को गणराज्य बनाने के पक्ष में मतदान किया। ९९ वर्षों की अवधि में पहली बार इटली के लिए नया संविधान तैयार करने के उद्देश्य से इस नये गणराज्य ने १९४६ में एक संवैधानिक सम्मेलन बुलाया। यह संविधान तैयार कर लिया गया और जनवरी १९४८ में इसे लागू कर दिया गया।

संविधान में ब्रिटेन की तरह मंत्रिमण्डलीय पद्धति की सरकार बनाने की माँग की गई। सरकारी

मशीनरी की स्थापना के अतिरिक्त संविधान ने अन्य व्यवस्थाएँ भी कीं। इसने बहुत से तरीकों से रोमन कैथोलिक चर्च का पक्ष लिया। राज्य से सहायता प्राप्त सभी प्राथमिक तथा माध्यमिक स्कूलों में धार्मिक शिक्षा अनिवार्य कर दी गई। चर्च के लिए आर्थिक सहायता मंजूर की जाती थी और इटली में तलाक देने की अनुमति नहीं थी। फिर भी अधिकार सम्बन्धी एक विधेयक में धार्मिक स्वतन्त्रता की व्यवस्था कर दी गई थी।

नये संविधान के अधीन पहला चुनाव अप्रैल १९४८ में संपन्न हुआ। साम्यवाद का प्रश्न अत्यन्त महत्त्वपूर्ण था क्योंकि इटली का साम्यवादी दल रूस और लाल चीन के बाद सबसे अधिक शक्तिशाली साम्यवादी दल था। पोप ने सभी इटलीवासियों से साम्यवाद के विरुद्ध मत देने के लिए कहा। ईसाइयों के लोकतन्त्रीय दल के अध्यक्ष डी गैसपेरे ने चुनाव-पूर्व के अपने वक्तव्यों में यह तर्क दिया कि यदि इटली में साम्यवाद आ गया तो अमरीकी सहायता बन्द कर दी जाएगी। यद्यपि देश का नियन्त्रण साम्यवादियों के हाथ में नहीं आया, जैसा कि पहले खतरा था, फिर भी उनका दल शक्तिशाली बना रहा और डी गैसपेरे को प्रधान मन्त्री चुन लिया गया।

आर्थिक परिस्थितियाँ—इटली की किसी भी सरकार ने बहुत समय तक जिस गम्भीरतम समस्या का सामना किया वह देश की अस्थिर आर्थिक स्थिति थी। इटली का दक्षिणी भाग मुख्यतः कृषि-प्रधान क्षेत्र है लेकिन वहाँ की धरती खराब है।
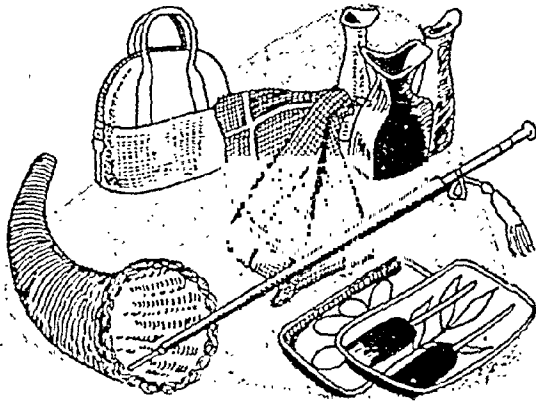
उत्तरी औद्योगिक क्षेत्र की परिस्थितियाँ फिर भी कुछ बेहतर हैं लेकिन फिर भी उत्तरी क्षेत्र दक्षिणी क्षेत्र के बेकार लोगों को खपा नहीं सकता। नये गणराज्य ने आर्थिक परिस्थितियों में सुधार लाने के लिए नाना प्रकार के तरीके अपनाए। भूमि सुधार विधेयक का परिणाम यह हुआ कि निजी स्वामित्व वाली विशाल भू-सम्पत्तियों के टुकड़े कर दिए गए। दस वर्षों से अधिक समय में दस लाख एकड़ से अधिक भूमि दक्षिणी क्षेत्रों के किसानों को बाँट दी गई। इसका कारण अंशतः संयुक्त राज्य तथा विश्व बैंक द्वारा दिए गए उदार ऋण थे जिनसे उत्तरी औद्योगिक क्षेत्र की आर्थिक परिस्थितियों में सुधार हुआ फिर भी दक्षिणी क्षेत्र के निम्न जीवन-स्तर और बेकारी की बड़ी मात्रा में केवल थोड़ा सा ही सुधार हो सका।

उपनिवेश—मुसोलिनी ने यह शिक्षा दी कि अपने सम्मान को बनाए रखने तथा अपनी फालतू जनसंख्या के रहने के स्थान की व्यवस्था करने के लिए इटली को उपनिवेश जरूर बनाने चाहिए। यद्यपि इस नये गणराज्य ने इटली के उपनिवेशों को पुनः प्राप्त करने की दिशा में काम किया फिर भी अन्ततः इन सभी उपनिवेशों को स्वतन्त्रता दे दी गई। इसके अलावा रूस के विरोध के कारण १९५५ तक इटली को संयुक्त राष्ट्र संघ का सदस्य नहीं बनने दिया गया जिसके फलस्वरूप नई सरकार के लिए यह असंभव हो गया कि वह अपने उपनिवेश पुनः प्राप्त करने के सम्बन्ध में अपना पक्ष सीधे तौर से प्रस्तुत कर सके।

१. इटलीवासियों ने किस प्रकार की सरकार अपनाने का निर्णय किया?
२. उनके १९४८ के संविधान में क्या व्यवस्थाएँ की गईं?
३. नये संविधान के अधीन पहला प्रधान मंत्री कौन था?
४. इटली में साम्यवाद की शक्ति को कम करने के लिए क्या उपाय काम में लाए गए और वे कहाँ तक सफल हुए?

५. इटली की आधारभूत आर्थिक समस्याएँ कौन-सी थीं ?

६. इटली के युद्ध-पूर्व साम्राज्य का क्या हुआ ?

नीदरलैण्ड्स, हालैंड, बेल्जियम तथा स्कैण्डिनेविया

नीदरलैण्ड्स—दूसरे विश्वयुद्ध में जितना नुकसान नीदरलैंड्स को पहुँचा, उतना किसी दूसरे मित्र देश को नहीं। अनुमान लगाया गया कि उसके अपने देश में उसे अपनी सम्पत्ति के एक-तिहाई भाग से हाथ धोना पड़ा। इसके अतिरिक्त, उसे बहुमूल्य ईस्ट इण्डीज़ (इण्डोनेशिया) को भी खोना पड़ा जहाँ अनुमानत: ४००,००० हालैण्डवासियों को काम-काज मिला हुआ था।

जैसे ही युद्ध समाप्त हुआ, रानी विलहेल्मिना और लन्दनस्थित निर्वासित सरकार को वापस नीदरलैण्ड्स बुला लिया गया। पचास वर्षों तक शासन करने के पश्चात् १९४८ में रानी विलहेल्मिना ने अपनी बेटी के पक्ष में पद त्याग कर दिया जिसे रानी जुलियाना के नाम से पुकारा गया।

डच लोग अपने देश के पुनर्निर्माण में जुट गए जिसका दसवां भाग पानी भरने से बर्बाद हो गया था। सड़कें, रेल मार्ग तथा हजारों मकान दुबारा बना दिए गए और पानी भरी भूमि को समुद्र से मुक्त कराया गया। हालैण्ड के सामने सबसे बड़ी कठिनाई यह थी कि जर्मनी और ब्रिटेन में उसका व्यापार ठप्प हो गया था और उसे अपने साम्राज्य से हाथ धोना पड़ा।

बेल्जियम—नीदरलैंड्स की तुलना में बेल्जियम को कम नुकसान पहुँचा था लेकिन नाजियों ने अपने युद्ध-कार्य के लिए बेल्जियम की बहुत सी धन-सम्पत्ति जब्त कर ली थी। बेल्जियम में अपने उपनिवेश पुन: प्राप्त करने की गति नीदरलैण्ड्स की तुलना में अधिक तेज थी। उसने कांगो स्थित अपने मालदार क्षेत्र को अभी तक नहीं छोड़ा था। फिर भी जून १९६० में बेल्जियम शासित कांगो ने स्वतन्तता प्राप्त कर ली और इस प्रकार बहुत से बेल्जियमवासियों के लिए धन सम्पत्ति का एक बहुत बड़ा स्रोत समाप्त हो गया।

स्कैण्डिनेविया के देश—यद्यपि डेन्मार्क, नार्वे तथा स्वीडन में एकतंत्रीय शासन थे लेकिन फिर भी ये देश योरुप के सबसे अधिक प्रगतिशील लोकतंत्रीय राष्ट्रों में से थे। दूसरे विश्वयुद्ध के दौरान स्वीडन तो निष्पक्ष रहने में सफल हो गया लेकिन अन्य दोनों देशों पर नाजियों ने कब्जा कर लिया और उन्हें भारी विपत्तियाँ सहन करनी पड़ीं। युद्ध के बाद ये देश उन्हीं सामान्य नीतियों को चलाते रहे जिनका पालन इन्होंने युद्ध से पहले किया था। इन सभी देशों में 'मिली-जुली आर्थिक व्यवस्था' थी जिसके अनुसार इनके कुछ उद्योग तो सरकार के अधिकार में थे, कुछ निजी स्वामित्व के और कई उद्योग सहकारी आधार पर काम कर रहे थे।

यद्यपि स्कैण्डिनेविया के देशों की धरती बहुत ही घटिया किस्म की थी और प्राकृतिक साधन भी थोड़े थे, फिर भी वहाँ की आर्थिक परिस्थितियों में भारी सुधार हुआ। इन देशों की जनता की शिक्षा का स्तर और जीवन-स्तर बहुत ऊँचा है। स्कैण्डिनेविया के सभी देश बड़ी व्यापारी जहाजरानी रखते हैं। यद्यपि युद्ध के एकदम बाद विदेशी

स्वीडन के एक-तिहाई से अधिक लोग ऐसी सहकारी संस्थाओं से सम्बन्ध रखते हैं जो अपने सदस्यों के लिए थोक भाव पर व्यापारी माल खरीदती हैं और बहुत सी वस्तुओं का उत्पादन भी करती हैं।

अमेरिकन स्वीडिश न्यूज एक्सचेंज
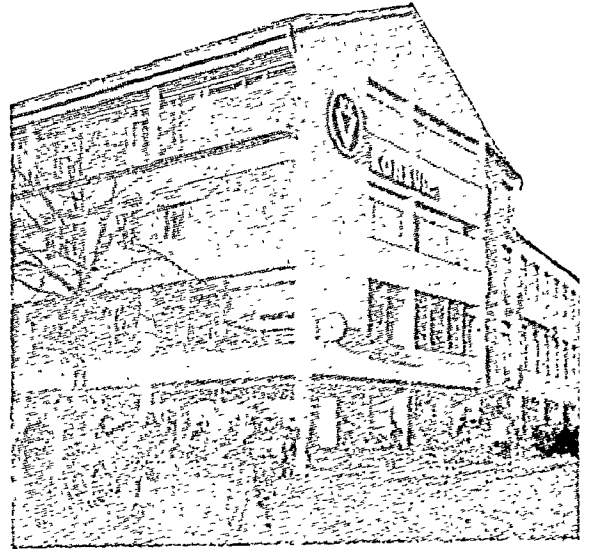
व्यापार की कमी हो गई थी फिर भी स्केण्डिनेविया के जहाज बहुत से राष्ट्रों द्वारा तैयार किए गए माल के ढोने में लग गए ।

१. नीदरलैण्ड्स को बेल्जियम की तुलना में आर्थिक स्थिरता लाने में अधिक कठिनाई क्यों हुई ?
२. १९६० में बेल्जियम की अर्थ-व्यवस्था को क्या आघात पहुँचा ?
३. स्कैन्डिनेविया के देशों की मिली-जुली आर्थिक व्यवस्था का क्या अर्थ है ?
४. स्कैन्डिनेविया के देश अपनी अधिकांश आय किस प्रकार अर्जित करते हैं ?

लौह आवरण

युद्ध के अन्त में रूस की फौजें पोलैण्ड, बल्गेरिया, रूमानिया, चेकोस्लोवाकिया, आस्ट्रिया, हंगरी तथा यूगोस्लाविया में मौजूद थीं। इन सभी देशों में साम्यवादियों ने सरकारों पर काबू कर लिया था। इन साम्यवादी देशों में दूसरे देशों के लोगों को स्वतन्त्रतापूर्वक घूमने की अनुमति नहीं थी। संयुक्त राज्य में बोलते हुए विंस्टन चर्चिल ने इस बात पर खेद प्रकट किया कि "लौह आवरण" के पीछे से समाचार प्राप्त करना कठिन है। उन स्थानों से बच कर आने वाले लोगों ने वहाँ के अत्याचारपूर्ण तौर-तरीकों के बारे में कुछ बताया। विरोधी समाचारपत्रों पर रोक थी और रेडियो खामोश कर दिए गए थे। ऐसे हजारों लोगों को, जिन्होंने सरकार का विरोध करने की हिम्मत की, गिरफ्तार कर लिया गया था। केवल साम्यवादी दल को ही स्वतन्त्र रूप से कार्य करने की अनुमति प्राप्त थी। राजनीतिक बन्दी शिविरों में स्थान नहीं रहा था। पश्चिमी जगत् रूस और उसके तौर-तरीकों से सहम गया।

चेकोस्लोवाकिया—चेकोस्लोवाकिया के सम्बन्ध में उन तरीकों का पता लगता है जो साम्यवादियों द्वारा इन देशों में काबू पाने के लिए अपनाए गए थे। चेकोस्लोवाकिया में एक सशक्त साम्यवादी दल था जिसे सोवियत रूस का समर्थन

१९५६ की सर्दियों में हंगरी से आने वाले हजारों शरणार्थियों ने आस्ट्रो-हंगरी सीमान्त क्षेत्र में प्रवेश किया। एक महीने के भीतर ही इन लोगों की संख्या १ लाख हो गई। वाईड वर्ल्ड
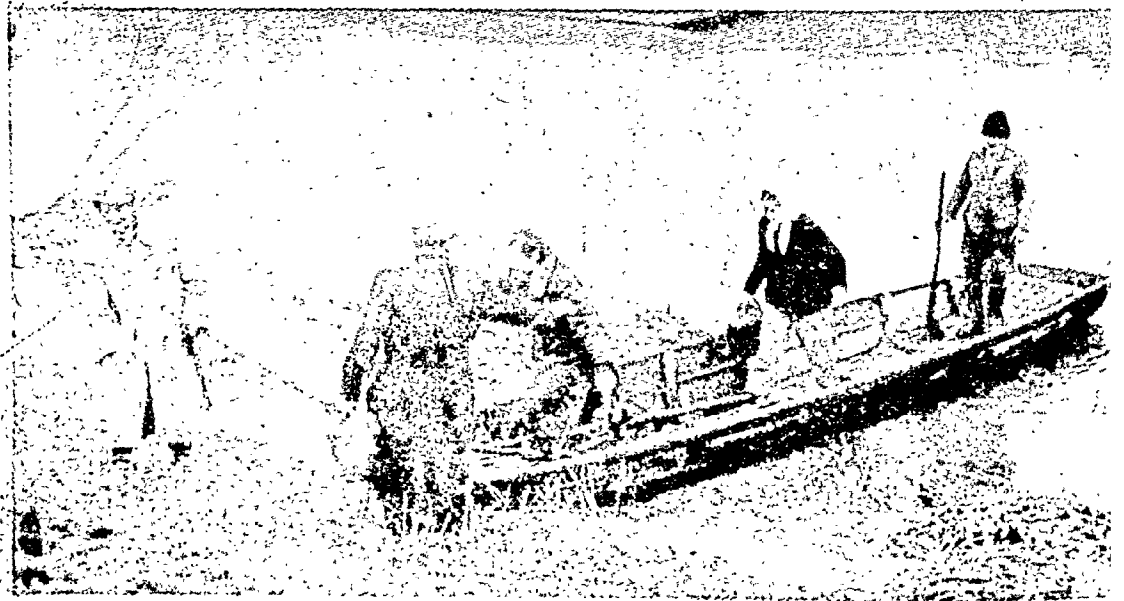
प्राप्त थां। फलस्वरूप मन्त्रिमण्डल के कुछ सदस्य साम्यवादी थे जिनमें आन्तरिक मामलों का मन्त्री भी था। इस मंत्री ने लोकतंत्रीय सिपाहियों को हटा कर उनके स्थानों पर साम्यवादी दल के शक्तिशाली सदस्यों को रख दिया। इस कार्रवाई के विरोध में मन्त्रिमण्डल के सदस्यों द्वारा त्यागपत्र दिये जाने पर साम्यवादी दल के अध्यक्ष क्लीमेन्ट गोटवाल्ड ने यह माँग की कि मन्त्रिमण्डल बनाने की इजाज़त दी जाए। साम्यवादी नेताओं द्वारा कराई गई सार्वजनिक हड़तालों तथा साम्यवादी दल द्वारा प्रदर्शित ताकत को देखकर राष्ट्रपति एडवर्ड बेनेस को उनकी माँगें मान लेनी पड़ीं। कुछ दिनों बाद, १० मार्च, १९४८ को लोकतन्त्रवादी विदेश मन्त्री तथा गणतन्त्र के पहले राष्ट्रपति के पुत्र जान मासारिक की आत्महत्या के समाचार से दुनिया चौंक गई। पश्चिमी जगत् का यह विश्वास था कि उनका कत्ल किया गया है। राष्ट्रपति बेनेस, जो बीमार थे, एक शोकाकुल और निस्तेज व्यक्ति के रूप में अपने गाँव के घर में आ गये थे। छह: महीने के बाद उनकी मृत्यु हो गई। देश में साम्यवादियों का नियंत्रण बना रहा। ये साम्यवादी चेकोस्लोवाकिया को सभी लोकतंत्रात्मक विचारों वाले अफसरों से मुक्त कराने में जुट गए। स्कूलों को साम्यवाद की शिक्षा देने के आदेश दिए गए और स्कूल के हर कमरे में स्टालिन का एक चित्र लगाया गया। बेनेस थामस मासारिक तथा उसके पुत्र जॉन मासारिक ने जिन लोकतन्त्रात्मक सिद्धान्तों का पक्ष लिया था और जिनकी रक्षा करने को उन्होंने अधिक परिश्रम किया था, वे सभी सिद्धान्त नष्ट हो गए।

हंगरी—हंगरीवासियों को यह पता लग चुका है कि रूस का पिछलग्गू बनने का क्या परिणाम होता है। दूसरे विश्वयुद्ध में नाज़ियों को हराने में सहायता देने के लिए आई रूसी फौजों ने हंगरी के अधिकांश भाग में प्रवेश कर लिया और युद्ध के अन्त में इस पर कब्जा कर लिया। यद्यपि हंगरीवासियों ने एक गणराज्य की स्थापना की थी फिर भी रूसियों ने उसे एक साम्यवादी राज्य में बदलने के काम में साम्यवादियों का समर्थन किया। पहले विश्वयुद्ध के एकदम बाद कुछ महीनों के लिए साम्यवादियों ने राज्य पर नियन्त्रण कर लिया था लेकिन साम्यवाद हंगरी वासियों के लिए एक नया अनुभव था। १९२०-४० के दौरान हंगरी में बहुत कुछ इटली की तरह फासिस्ट तानाशाही थी। भूमि के राष्ट्रीयकरण और सामूहिक फार्मों के निर्माण से किसान लोग नाराज हो गए। १९५३ में रूसी लोगों को यह खतरा हुआ कि कहीं हंगरीवासी भी वैसा ही विद्रोह न कर दें जैसा पूर्वी जर्मनी के लोग कर रहे थे। रूसियों ने हंगरी के साम्यवादियों को यह आदेश दिया कि इम्रे नाज को अपना नया प्रधान मन्त्री बनाएँ। इम्रे नाज भूमि सुधार सम्बन्धी नियम लागू करने में बहुत कठोर नहीं थे, और उन्होंने यह विश्वास दिलाया कि उनकी फैक्टरियों से जल्दी ही बहुत सी उपभोक्ता वस्तुएँ उपलब्ध हो सकेंगी। इस प्रकार की उदार नीतियों के दो वर्ष पश्चात् रूस ने यह माँग की कि नाज को बरखास्त कर दिया जाए और कट्टर साम्यवाद के रूसी सिद्धान्तों को अपनाया जाय। कट्टर साम्यवाद की पुनः प्राप्ति और कड़े रूसी नियन्त्रण के कारणों से ही १९५६ में हंगरी में विद्रोह उठ खड़ा हुआ। हंगरी वासियों से सहयोग प्राप्त करने की रूसी कोशिशें असफल रहीं और परिणाम यह हुआ कि रूसी फौजें हंगरीवासियों को बेदर्दी से कुचलने के लिए आ घुसीं। बुडापेस्ट में अक्तूबर में हज़ारों लोग मार दिए गए और १००,००० से अधिक हंगरीवासी अपना देश छोड़ कर भाग गए। संयुक्त राज्य ने लगभग २७,००० शरणार्थियों को आश्रय दिया।

संयुक्त राष्ट्र संघ ने रूस के इस हस्तक्षेप की बहुत निन्दा की और हंगरी की रक्तरंजित हार के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करने के लिए एक जांच-समिति हंगरी भेजने के सम्बन्ध में प्रस्ताव पास किया। रूस का समर्थन प्राप्त नए प्रधान मन्त्री जेनोस कादर ने संयुक्त समिति को अपने देश में आने की इजाज़त देने से इन्कार कर दिया। कादर शासन ने दो वर्ष के बाद इम्रे नाज को मृत्युदण्ड देकर स्वतन्त्र जगत् को स्तब्ध कर दिया।

पोलैण्ड—तीन बड़े राजनीतिज्ञों ने १९४५ में

में हुए याल्टा सम्मेलन में पोलैंड के भविष्य की रूपरेखा बना दी थी। परिणामतः यह व्यवस्था रूस के हितों की रक्षा की दृष्टि से की गई। ब्रिटेन और संयुक्त राज्य ने रूस को पोलैण्ड का पूर्वी अर्द्ध भाग, जिस पर १९३९ में उसका अधिकार था, अपने अधीन रखने की अनुमति दे दी। साथ ही जर्मनी का पश्चिमी क्षेत्र देकर पोलैंड की क्षतिपूर्ति कर दी गई। लन्दन-स्थित पोलैण्ड की निर्वासित सरकार को रूस ने मान्यता नहीं दी। रूस ने पोलैण्ड के रूसी क्षेत्र में लबलिन स्थित पोलैण्ड की साम्यवादी सरकार को मान्यता देने की बात कही।

लबलिन सरकार के इस आश्वासन पर कि उसमें लोकतन्त्रीय प्रतिनिधि रखे जाएंगे और स्वतन्त्र चुनावों की व्यवस्था की जाएगी, ब्रिटेन और संयुक्त राज्य ने लबलिन सरकार को मान्यता दे दी। स्टालिन ने चुनावों पर अन्तर्राष्ट्रीय नियन्त्रण को स्वीकार नहीं किया जिसका परिणाम यह हुआ कि १९४७ में देश पर साम्यवादियों का पूरा नियन्त्रण हो गया।

इस तथाकथित लोक गणराज्य में लोकमत के प्रकट करने की बहुत कम गुंजाइश थी और यह गणराज्य मूलभूत लौकिक आवश्यकताओं की पूर्ति करने में असमर्थ रहा। जून १९५६ में पुजनान के कर्मचारियों ने कामकाज की बेहतर सुविधाओं तथा अधिक खाद्यान्न के लिए हड़ताल की। प्रधान मन्त्री एडवर्ड ओकाब ने अपने राज्य का तख्ता उलटे जाने के डर से अपनी

पुज़नान में साम्यवादी शासकों के विरुद्ध पोलैण्ड के कर्मचारियों का विद्रोह। बलवे को दबाने के लिए सैन्य-दलों का प्रयोग।

सशस्त्र फौजें हड़ताल करने वालों पर काबू करने के लिए तैनात कर दीं। हड़ताल करने वाले सैकड़ों लोग घायल हो गए और हजारों को गिरफ्तार कर लिया गया। गिरफ्तार व्यक्तियों पर खुले रूप से मुकदमा चलाने की अनुमति देकर ओकाब ने उदारता दिखलाई लेकिन उसके ऐसा करने से सार्वजनिक असन्तोष को दबाया नहीं जा सका।

चूंकि रूसी आधिपत्य बना रहा अतः अक्तूबर में ओकाब प्रधान मन्त्री के पद से हट गए और उनके स्थान पर लाडीस्ला गोमुल्का प्रधान मन्त्री बन गए। जब रूस ने गोमुल्का से रूसी साम्यवाद का पूरा साथ देने की मांग की तो गोमुल्का ने निडर हो कर कहा कि पोलैण्ड भले ही साम्यवादी रहे, वह अपनी शासन-व्यवस्था जैसी उचित समझेगा, रखेगा।

१९५६ के संकट के बाद पोलैंड के अधिकांश सामूहिक फार्म टूट गए। अब पोलैण्ड ने विश्व बाजार मूल्य से बहुत घटे मूल्यों पर सोवियत संघ को कोयला बेचने से इन्कार कर दिया। पोलैण्ड की सेना के रूसी अधिकारियों को हटा कर उनके स्थान पर पोलैण्डवासियों को रखा गया और वार्सा के आर्कबिशप तथा अन्य धर्माध्यक्षों व पादरियों को जेलों से रिहा कर दिया गया। इस प्रकार पोलैण्ड कुछ सीमा तक रूसी नियन्त्रण से छुटकारा पाने में सफल हो गया।

१. युद्ध की समाप्ति पर रूस ने अपने देश से बाहर के कौन से क्षेत्र पर कब्जा किया ?
२. "लोह आवरण" से क्या तात्पर्य है ?
३. साम्यवादियों ने किस प्रकार चेकोस्लोवाकिया पर अधिकार किया ?
४. १९५६ में हंगरी में हुए विद्रोह के क्या कारण थे ?
५. हंगरी में रूसी हस्तक्षेप के सम्बन्ध में संयुक्त राष्ट्रसंघ ने क्या कार्रवाई की ?
६. साम्यवादियों ने किस प्रकार १९४७ में पोलैंड की लबलिन स्थित सरकार पर कब्जा किया ?
७. १९५६ के पश्चात् पोलैण्ड में क्या परिवर्तन लाए गए ?

शीत युद्ध का आरम्भ

युद्ध की समाप्ति से पूर्व ही पश्चिम के मित्र देशों को यह स्पष्ट हो चुका था कि युद्ध के पश्चात् एक वहुत गम्भीर समस्या साम्यवाद की होगी। यद्यपि सोवियत रूस को ब्रिटेन तथा संयुक्त राज्य दोनों देशों से पर्याप्त माली सहायता प्राप्त हुई थी फिर भी वह दूसरे राष्ट्रों की तकलीफ और गरीबी से फायदा उठा कर उन्हें साम्यवाद अपनाने के लिए मजबूर करने के अपने राजनीतिक सिद्धान्त पर दृढ़ रहा। विचारों के इस युद्ध में, इस शीत युद्ध में, दुनिया के अधिकांश राष्ट्रों ने दो नेताओं में से किसी एक का पक्ष लिया। ये दो नेता थे संयुक्त राज्य और सोवियत रूस। कभी-कभी इन दोनों देशों के बीच एक दूसरे पर किए गए दोषारोपण इतना उग्र रूप धारण कर लेते थे कि छोटे-छोटे देशों को तो खुला युद्ध होने का भय हो जाता था।

सोवियत संघ

१९५३ के आरम्भ में जोसेफ स्टालिन की मृत्यु हो गई। जोसेफ स्टालिन लगभग तीस वर्ष तक रूसी साम्यवादी दल के अधिनायक और अध्यक्ष बने रहे। इसलिए उन्होंने प्रतिद्वन्द्वी नेताओं को मैदान में आने से रोका और उन्हें निरुत्साहित किया। अतः उनकी मृत्यु के वाद शक्ति के लिए संघर्ष उठ खड़ा हुआ। रूस में मंत्रि-परिषद् के अध्यक्ष तथा दल की केन्द्रीय समिति के सचिव के दो सर्वाधिक शक्तिशाली पदों पर जोर्जी मैलेन्कोव आ गए। जल्दी ही निकिता ख़ुश्चेव ने मैलेन्कोव को सचिव का पद छोड़ने के लिए विवश कर दिया। बाद में उसे प्रधान मन्त्री का पद भी छोड़ने पर मजबूर किया गया। १९५७ तक साम्यवादी दल के नेता के रूप में ख़ुश्चेव ने अपने आपको अच्छी तरह प्रतिष्ठित कर लिया था और १९५८ में वह प्रधान मंत्री बन गए।

शक्तिशाली रूस—अपनी मृत्यु के बाद स्टालिन एक इतना बड़ा साम्राज्य छोड़ गए जिसकी आशा लेनिन ने १९१८ की साम्यवादी क्रांति के समय नहीं की थी। वाल्टिक समुद्र से लेकर प्रशान्त महासागर तक फैले हुए १५ गणराज्यों से रूस का निर्माण होता है। इसके पश्चिमी सीमान्त क्षेत्रों की रक्षा मास्को से आदेश प्राप्त करने वाले शासनों द्वारा की जाती है। सोवियत संघ की जनसंख्या में सौ से अधिक राष्ट्रीयता वाले २००,०००,००० से अधिक लोग हैं। इसके अतिरिक्त रूस की स्थिति योरुप और एशिया दोनों में होने के कारण दुनिया में सामरिक महत्त्व की स्थिति है।

सोवियत संघ को नाना प्रकार के प्राकृतिक साधन प्राप्त हैं और इस सम्बन्ध में यह प्रायः आत्म-निर्भर है। इसके खनिज साधनों में पेट्रोलियम, लोहा, मैंगनीज, तांबा, सीसा और प्लाटिनम शामिल हैं। नाना प्रकार की जलवायु के कारण रूस तरह-तरह की फसलें उपजा लेता है। रूस के वड़े जंगलों से वहुत बड़ी मात्रा में इमारती लकड़ी उपलब्ध हो जाती है। उसकी नदियां उसके व्यापार का साधन हैं। इन सब बातों को देखते हुए रूस एक अत्यन्त साधन-सम्पन्न देश है।

फिर भी लाखों रूसी किसान हमेशा से गरीब रहे हैं। आजकल कुछ सामूहिक फार्मों पर आधुनिक तरीकों से उत्पादन में वृद्धि की गई है लेकिन ख़ुश्चेव ने यह शिकायत की है कि किसान लोग देश की आवश्यकता के लिए पर्याप्त खाद्यान्न उत्पन्न नहीं करते। दूसरी ओर, रूस में उद्योगों की इतनी तेज प्रगति हुई है कि औद्योगिक उत्पादन की दृष्टि से रूस का नम्बर संयुक्त राज्य के वाद दूसरा है। ख़ुश्चेव ने अहंकारपूर्वक यह कहा है कि १० वर्षों में सोवियत संघ संयुक्त राज्य से आगे वढ़ जाएगा।

रूस में जीवन—रूसी लोगों को यह आशा थी कि स्टालिन की मृत्यु के वाद उनका जीवन अधिक सुखकर और भरा-पूरा हो जाएगा। स्टालिन के राज्य में उपभोक्ता सामग्री का उत्पादन रोक दिया गया था जब कि उत्पादक पदार्थों और हथियारों का उत्पादन किया जाता था लेकिन अव जनता एक ऊँचे जीवन-स्तर की आशा करती थी। फिर भी (१९५८ की) नई सातवर्षीय योजना में फिर से उत्पादक पदार्थों के उत्पादन पर वल दिया गया था, इस योजना में उपभोक्ता पदार्थों के उत्पादन में भी कुछ वृद्धि की गई थी।

रूसी जनता सदा से संगीत, नृत्य, चित्रकला तथा साहित्य की प्रेमी रही है। इस तरह के संकेत

वाईड वर्ल्ड

सोवियत प्रधान मन्त्री निकिता ख्रुश्चेव द्वारा संयुक्त राष्ट्र महासभा में दिए गए भाषण के एक गरमागरम भाग का चित्र—इस बार अपने वक्तव्य में ख्रुश्चेव ने संयुक्त राष्ट्र और संयुक्त राज्य पर एक और प्रहार किया।

मिलते हैं कि आधुनिक सोवियत संस्कृति पर इतना कड़ा नियंत्रण नहीं है जितना कि स्टालिन के राज्य-काल में था। १९६१ में सोवियत संघ में किसी भी अन्य देश से अधिक पुस्तकें प्रकाशित की गईं, सैंकड़ों नाट्यशालाएं और कम-से-कम ३२ संगीत नाट्य कम्पनियां काम कर रही थीं।

जहां तक शिक्षा का सम्बन्ध है, रूस में विज्ञान और गणित शास्त्र पर अधिक बल दिया गया। पूरी शिक्षा-प्रणाली पर कड़ा सरकारी पर्यवेक्षण रखा जाता है और विद्यार्थियों को बाकायदा साम्यवादी सिद्धान्तों की शिक्षा दी जाती है।

स्टालिन की निन्दा—१९५६ में ख्रुश्चेव ने आजकल 'स्टालिन विरोधी वक्तव्य' के नाम से प्रसिद्ध अपने वक्तव्य में सार्वजनिक रूप से स्टालिन की निन्दा की। उसी वक्तव्य में ख्रुश्चेव ने यह विश्वास दिलाया कि वह साम्यवादी जगत् के बाहर और भीतर पैदा होने वाले विचारों की विविधता के सम्बन्ध में अधिक सजग रहेगा।

१९५६ के वक्तव्य से अधीनस्थ देशों में बसे स्टालिन अनुयायियों को उखाड़ फैंकने की प्रवृत्ति को बहुत प्रोत्साहन मिला। पूर्वी योरुप में, जहाँ स्टालिन का सम्मान किया जाता था, दर्जनों गलियों और शहरों के नाम बदल दिये गए। १९६१ में स्टालिन का शव लेनिन के शव के समीप के सम्मानपूर्ण स्थान से हटा दिया गया। यद्यपि स्टालिन अनुयायियों का विरोध करके ख्रुश्चेव को यह आशा थी कि लोकमत उसके पक्ष में हो जाएगा फिर भी १९५६ में हंगरीवासियों के विरुद्ध किए गए बल-प्रयोग ने रूसियों तथा अधीनस्थ देशों को यह सिखा दिया था कि वे अधिक स्वतन्त्रता की आशा न करें।

बोरिस पैस्टरनाक—रूस के समसामयिक प्रमुख साहित्यकार बोरिस पैस्टरनाक के प्रति किए गए व्यवहार से भी यह पता चलता है कि रूस के भीतर से की गई कोई आलोचना सहन नहीं की जाएगी। सोवियत लेखक संघ की अनुमति के बिना पैस्टरनाक ने एक इटली कम्पनी को अपना उपन्यास "डाक्टर ज़िवागो" छापने की इजाजत दे दी। इसी बीच लेखक संघ ने सोवियत प्रणाली की परोक्ष आलोचना के कारण सोवियत संघ में प्रकाशन के लिए इस रचना को अस्वीकार कर दिया। १९५८ में इटली में प्रकाशित रचना पर पैस्टरनाक को नोबल पारितोषिक मिला। रूस में पैस्टरनाक की सार्वजनिक रूप

से भर्त्सना की गई और उसे पारितोषिक अस्वीकार करने के लिए विवश कर दिया गया। १९६० में उसकी मृत्यु हो गई।

१. शीत युद्ध के पनपने के कारण बताइए।
२. सोवियत संघ में ख्रुश्चेव की क्या स्थिति है? उन्होंने किस प्रकार यह स्थिति प्राप्त की?
३. स्टालिन के बाद के सोवियत संघ का वर्णन कीजिए।
४. रूसी जीवन का वर्णन कीजिए।
५. ख्रुश्चेव ने किस कारण स्टालिन की भर्त्सना की? इस भर्त्सना का क्या प्रभाव पड़ा?
६. बोरिस पेस्टरनाक के प्रति किए गए व्यवहार से आलोचना के प्रति नये सोवियत राज्य के दृष्टिकोण के सम्बन्ध में क्या पता चलता है?

जर्मनी

शीतयुद्ध का प्रभाव संभवतः किसी भी अन्य देश पर इतना नहीं पड़ा जितना जर्मनी पर क्योंकि जर्मनी पूर्व और पश्चिम के मध्य स्थित है। युद्ध के कारण जर्मनी धराशायी हो गया था, दूर-दूर तक विनाश का बोलबाला था, सरकार नष्ट हो चुकी थी, उसकी मुद्रा मूल्यहीन हो चुकी थी तथा सारे उद्योग ठप्प हो गए थे। याल्टा सम्मेलन में यह स्वीकार किया गया कि पूर्वी प्रशिया को सोवियत संघ और पोलैण्ड के मध्य विभाजित कर दिया जाए।

अधिकृत जर्मनी के क्षेत्र

पूर्वी जर्मनी के अन्य भाग पोलैण्ड को दिए जाने थे। इस व्यवस्था से जर्मनी का क्षेत्र १८१,००० वर्ग मील से घट कर १३८,००० वर्ग मील हो गया और उसकी जनसंख्या भी घट कर ७,००,००,००० हो गई। इन नुकसानों के अतिरिक्त सम्पत्ति के पुनर्निर्माण की खर्चीली समस्या भी मौजूद थी।

अधिकृत क्षेत्र—याल्टा सम्मेलन में यह भी निश्चय हुआ था और बाद में राष्ट्रपति ट्रूमैन, प्रधान मंत्री एटली और स्टालिन द्वारा पोट्सडैम सम्मेलन में इसकी पुष्टि भी की गई कि शान्ति सन्धियों के तैयार होने तक चार बड़ी शक्तियां—ब्रिटेन, फ्रांस, सोवियत संघ तथा संयुक्त राज्य—जर्मनी और आस्ट्रिया को अपने अधिकार में रखेंगी। इस बीच जर्मनी को निहत्था बनाया जाना था, नाजियों को उनके पदों से हटाया जाना था और जर्मनी के उद्योग नष्ट-भ्रष्ट किये जाने थे जिससे कि जर्मनी फिर कभी युद्ध के मैदान में न उतर सके तथा जर्मनी को सरकार के लोकतंत्रात्मक तरीकों का पाठ पढ़ाया जाना था।

विभाजित जर्मनी—विभाजित जर्मनी के चार क्षेत्र बना दिए गए और प्रत्येक क्षेत्र ने अपनी सरकार चलाने के लिए स्थानीय चुनावों की व्यवस्था की। अभी बहुत समय नहीं बीता था कि जर्मनी में प्रयोग में लाए जा रहे तरीकों के सम्बन्ध में पश्चिमी राष्ट्रों तथा रूस के मध्य मतभेद उत्पन्न हो गया। शान्ति सन्धि करने के प्रयत्न भी असफल हो गए। अन्ततः जब पश्चिमी राष्ट्रों को यह अनुभव हुआ कि उनके और रूस के मध्य कोई समझौता नहीं हो सकेगा तो उन्होंने अपने तीनों क्षेत्रों का विलयन करके पश्चिमी जर्मनी के लिए एक सरकार स्थापित करना उचित समझा। इस प्रकार जर्मनी को पूर्वी जर्मनी और पश्चिमी जर्मनी में बाँट दिया गया। पूर्वी जर्मनी पर तो रूस का और पश्चिमी जर्मनी पर फ्रांस, ग्रेट ब्रिटेन तथा संयुक्त राज्य का संयुक्त आधिपत्य हो गया।

जर्मनी द्वारा बिना शर्त समर्पण करने के ठीक चार वर्ष बाद सारे पश्चिमी जर्मनी के लिए ८ मई, १९४९ को एक संविधान लागू कर दिया गया।

इस संविधान में पाँच वर्षों के लिए परोक्षतः एक राष्ट्रपति के चुनाव तथा संसद् के दो सदनों की व्यवस्था की गई थी। जर्मन संघीय गणराज्य की राजधानी के लिए बोन नामक स्थान का चुनाव किया गया। इस गणराज्य के पहले चुनाव में कौनराड ऐडेनौर के अधीन क्रिश्चियन डिमोक्रेटिक (ईसाई लोकतंत्रीय) दल को सबसे अधिक मत प्राप्त हुए और ऐडेनौर को प्रधान मंत्री (चांसलर) बना दिया गया।

सोवियत संघ ने जर्मन संघीय गणराज्य की स्थापना का विरोध किया और बदले में पूर्वी जर्मनी के लिये जर्मन लोकतंत्रीय गणराज्य की स्थापना कर दी। वाल्टर डलब्रिक्ट को, जो कि एक उग्र और पक्का साम्यवादी था, इस सरकार का अध्यक्ष बना दिया गया। यद्यपि रूस ने अपनी कुछ सैनिक टुकड़ियाँ वहाँ से हटा लीं और सरकार जर्मन साम्यवादियों को सौंप दी, फिर भी पूर्वी जर्मनी में सैनिक युद्ध-कला में प्रशिक्षित एक असाधारण रूप से मजबूत पुलिस दल की व्यवस्था मौजूद थी।

विमानवहन—रूस एक ऐसा संयुक्त जर्मनी देश चाहता था जिसके माध्यम से राइन नदी तक साम्यवाद का प्रसार संभव हो सके। चाहते तो पश्चिमी राष्ट्र भी यही थे लेकिन वे ऐसा संयुक्त जर्मनी देश चाहते थे जिसमें जनता अपनी इच्छानुसार सरकार बना सके। अब पश्चिमी राष्ट्रों ने नई मुद्रा जारी करके पश्चिमी जर्मनी की आर्थिक परिस्थितियों में सुधार लाने का प्रयत्न किया। पश्चिमी राष्ट्रों के ऐसा करने पर बर्लिन में से पश्चिमी लोगों को भूखों मार कर शहर छोड़ने के लिए मजबूर करने के उद्देश्य से रूस ने बर्लिन के साथ हो रहे सारे पश्चिमी व्यापार को रोक दिया। पश्चिमी राष्ट्रों ने विमान-वहन व्यवस्था लागू की जिससे टनों माल बर्लिन के पश्चिमी अर्द्ध भाग में सप्लाई कर दिया जाता था और इस प्रकार पश्चिमी राष्ट्रों ने उस शहर में अपनी स्थिति को बनाए रखा। साम्यवादियों पर यह एक महान् भौतिक तथा नैतिक विजय थी। बाद में रूस ने व्यापार पर से अपना प्रतिबन्ध हटा लिया।
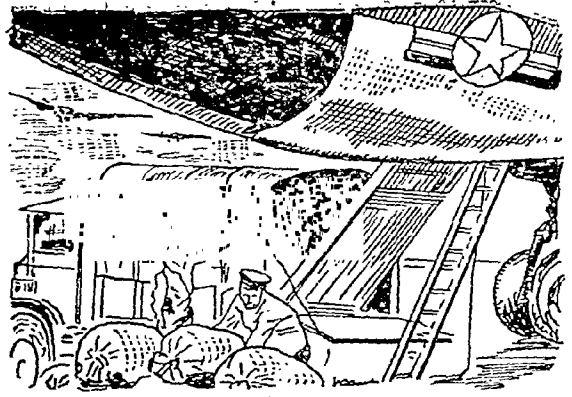
बर्लिन में विमानवहन

पश्चिमी जर्मनी के लिए प्रगति—१९५० में फ्रांस, ब्रिटेन तथा संयुक्त राज्य ने पश्चिमी जर्मनी की सुरक्षा की गारण्टी लेना स्वीकार कर लिया और उसे अपने विदेशी मामलों को स्वयं निपटाने की अनुमति दे दी। उन्होंने यह भी स्वीकार किया कि पश्चिमी जर्मनी अधिक जलयानों का निर्माण करे। साम्यवाद विरोधी देशों में बिक्री के लिए और अधिक इस्पात का उत्पादन करे तथा अपने पुलिस दल का विस्तार करे। १९५४ में पश्चिमी मित्र राष्ट्रों ने इस मामले में अपनी स्वीकृति दे दी कि जर्मनी अपनी सेना स्वयं तैयार करे और पश्चिम योरुप की सुरक्षा में हाथ बँटाए। सोवियत संघ ने उसे संयुक्त राष्ट्र का सदस्य नहीं बनने दिया लेकिन फिर भी जर्मनी को साम्यवाद विरोधी देशों की संस्थाओं में स्थान दे दिया गया। जर्मनी पर अधिकार करने तथा उसकी आर्थिक प्रणाली को व्यवस्थित करने की दिशा में सहयोग देने का बहुत मूल्य चुकाना पड़ा। पहले पाँच वर्षों में तो संयुक्त राज्य को इस सम्बन्ध में लगभग सात अरब डालर खर्च करने पड़े।

पश्चिमी जर्मनी ने अपनी आर्थिक उन्नति बहुत तेजी के साथ की। कुछ ही वर्षों में उसकी औद्योगिक माल के उत्पादन की क्षमता युद्ध-पूर्व की उत्पादन-क्षमता से भी आगे बढ़ गई। १९५० के पश्चात् १० वर्षों के भीतर ही उसके औद्योगिक उत्पादन में कुल मिलाकर १६१ प्रतिशत की वृद्धि हो गई। पश्चिमी जर्मनी किसी भी अन्य देश से अधिक मोटरगाड़ियों का उत्पादन करता था। जर्मनी की इस्पात उत्पादन क्षमता तो चौगुनी हो
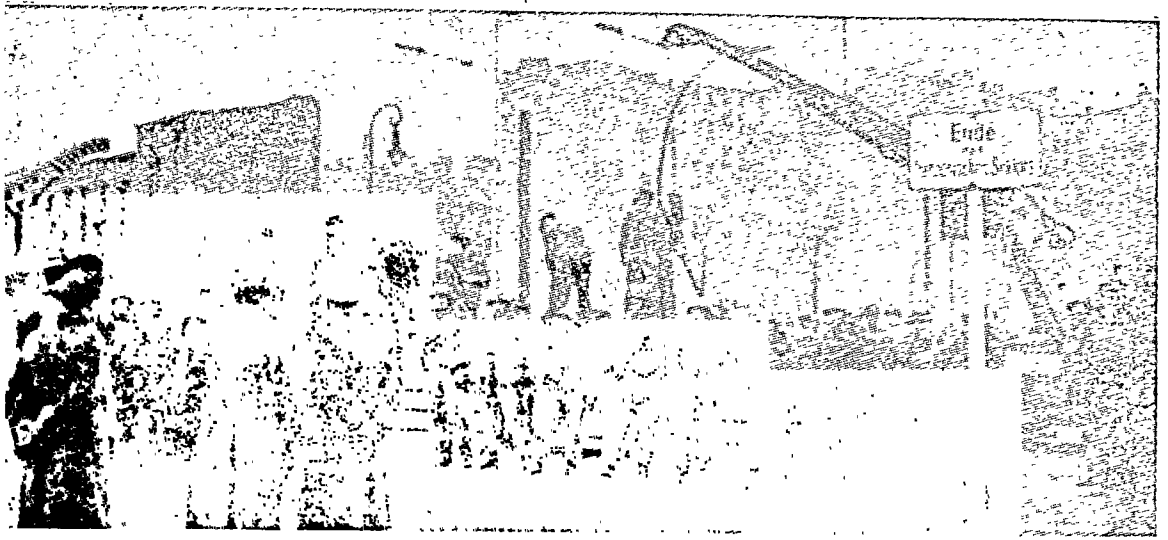
सैन्य दल की एक पंक्ति के पीछे बर्लिन की दीवार का निर्माण कार्य आगे बढ़ाने वाले पूर्वी बर्लिन के मजदूरों को देखते हुए पश्चिमी देशों के प्रेक्षक।

गई और फिर इस देश का दुनिया के विशालतम इस्पात उत्पादन राष्ट्रों में (रूस तथा संयुक्त राज्य के बाद) तीसरा स्थान हो गया। लेकिन ऐसी आर्थिक समृद्धि के दौरान भी पश्चिमी जर्मनी अपने भविष्य के सम्बन्ध में चिन्तित था। विभाजित जर्मनी में साम्यवाद की विभीषिका सदैव मंडराती रहती थी।

पूर्वी जर्मनी में आर्थिक प्रगति—१९४५ के शुरू के अन्धकारमय दिनों के बाद पूर्वी जर्मनी के लोकतन्त्रीय गणराज्य ने भी आर्थिक प्रगति की लेकिन उसकी आर्थिक प्रगति की रफ्तार पश्चिमी जर्मनी की तुलना में कहीं मंदी थी। यद्यपि लौह आवरण के पीछे पूर्वी जर्मनी का जीवन-स्तर अन्य देशों की अपेक्षा ऊँचा था लेकिन फिर भी वह पश्चिमी जर्मनी के जीवनस्तर के अनुरूप नहीं हो पाया। १९६१ में पूर्वी जर्मनी में मजदूरी की दरें पश्चिमी जर्मनी की तुलना में ७० प्रतिशत थीं।

आर्थिक प्रगति की दिशा में पूर्वी जर्मनी के पिछड़े रहने के भी कुछ कारण हैं। पूर्वी जर्मनी से निर्यात किए जाने वाले सामान का तीन-चौथाई भाग साम्यवादी देशों को भेजा जाता है जहाँ उस सामान के लिए कम कीमत मिलती है। दूसरी ओर पश्चिमी जर्मनी अपने सामान को अच्छी से अच्छी कीमत पर जहाँ चाहे बेच सकता है। पूर्वी जर्मनी के लगभग सभी उद्योग और कृषि का राष्ट्रीयकरण किया जा चुका है।

पूर्वी जर्मनी को विवश होकर अपने प्रयत्न भारी उद्योग, विशेषकर इस्पात, यूरेनियम, खनन उद्योग तथा रासायनिक उद्योग की दिशा में केन्द्रित करने पड़े हैं। पोर्सिलेन, खिलौने तथा शीशे के सामान का, जिसका उत्पादन युद्ध से पहले किया जाता था, उत्पादन अब कम-से-कम किया जाने लगा है। विलास की ये वस्तुएँ केवल देश से बाहर ही बेची जाती हैं। यही कारण है कि पूर्वी जर्मनी जीवन की आवश्यक वस्तुओं का ही उत्पादन करता है।

पूर्वी जर्मनी का जीवन—पूर्वी जर्मनी के ऐसे निवासी, जो निष्ठावान् साम्यवादी नहीं हैं, निरन्तर खतरे में रहते हैं। यदि वे किसी भी ढंग से सरकार का विरोध करें तो पुलिस बिना किसी वारण्ट के उन्हें गिरफ्तार कर सकती है और अभियोग लगाए बिना ही घण्टों तक उनसे पूछताछ कर सकती है।

बहुत से साम्यवाद-विरोधियों को लम्बी-लम्बी संजाएँ दी गई हैं।

पूर्वी जर्मनी के बहुत से निवासी भाग कर पश्चिमी जर्मनी में चले गए हैं। इस बात के बावजूद भी कि यदि इस प्रकार भागने वाले लोग पकड़े जाते तो उन्हें बहुत गम्भीर परिणाम भुगतने पड़ते, १९६० में लगभग २००,००० लोग बच कर निकल गए। पश्चिमी जर्मनी से भी कुछ साम्यवादी पूर्वी जर्मनी में आए तो अवश्य हैं लेकिन उन्हें भागना नहीं पड़ा और वैसे भी उनकी संख्या बहुत थोड़ी है।

विभाजित बर्लिन—चूंकि पूर्वी बर्लिन के हज़ारों लोग पश्चिमी बर्लिन में काम करते हैं और सीमा के आर-पार जाने के लिए बीसियों गलियां मौजूद हैं अतः बच कर निकलने का सबसे आसान मार्ग बर्लिन शहर में से हो कर रहा है। इस मार्ग को बन्द करने के लिए साम्यवादियों ने १९६१ में पूर्वी और पश्चिमी बर्लिन के बीच दीवार खड़ी कर दी और दो सेक्टरों के बीच में चार दरवाजों पर सैन्य दल स्थापित कर दिए। पूर्वी बर्लिन के लोगों का पश्चिमी बर्लिन में जाना गैर-कानूनी घोषित कर दिया गया। पश्चिमी बर्लिन के लोगों ने इस दीवार को बहुत नापसंद किया और संयुक्त राज्य, ब्रिटेन, तथा फ्राँस की सरकारों ने यह कहा कि इस प्रकार की दीवार खड़ी करना पूर्वी जर्मनी के सारे शहर में स्वतन्त्रतापूर्वक घूमने फिरने सम्बन्धी औपचारिक समझौते का अतिलंघन करना था। पश्चिमी जर्मनी की सेना को मजबूत बनाने के उद्देश्य से संयुक्त राज्य के सैन्य दल भेजे गए। इस दीवार के बावजूद भी पूर्वी जर्मनी के कुछ लोग किसी न किसी तरह बच कर पश्चिमी जर्मनी में आ गए।

विभाजित बर्लिन और विभाजित जर्मनी इस शीतयुद्ध के तनाव के मुख्य कारणों में से हैं। इस सम्बन्ध में कई बैठकें हो चुकी हैं लेकिन साम्यवादी नेता और पश्चिमी राष्ट्रों के नेता किसी समझौते पर नहीं पहुँच पाए हैं। लगता है कि सोवियत संघ साम्यवाद के अधीन संगठित जर्मनी रखने पर उतारू है और पश्चिमी राष्ट्र एक ऐसा संगठित जर्मनी चाहते हैं जो स्वतन्त्रतापूर्वक अपनी इच्छानुसार सरकार का चुनाव कर सके।

आस्ट्रिया के साथ सन्धि—१९५५ में संयुक्त राज्य, ब्रिटेन, फ्रांस तथा रूस ने आस्ट्रिया के साथ एक सन्धि पर हस्ताक्षर किए और इस प्रकार इन्होंने उस देश पर अपना आधिपत्य समाप्त कर दिया। आस्ट्रिया ने तटस्थ राष्ट्र बनना स्वीकार कर लिया और बाद में १९५५ में इसे संयुक्त राष्ट्र संघ में ले लिया गया।

१. याल्टा तथा पोट्सडैम सम्मेलनों में वर्णित आधिपत्य रखने वाले देशों के क्या उद्देश्य थे?
२. जर्मनी ने अपना कौनसा क्षेत्र खोया?
३. जर्मनी संघीय गणराज्य में से रूसी क्षेत्र बाहर क्यों रखा गया?
४. पश्चिमी जर्मनी द्वारा की गई प्रगति का विवरण बताइए।
५. पूर्वी जर्मनी के इतने सारे लोगों के भाग कर पश्चिमी जर्मनी जाने के क्या कारण थे?
६. बर्लिन के आर-पार साम्यवादियों ने दीवार क्यों बनाई? इस दीवार के निर्माण के क्या परिणाम निकले?
७. जर्मनी को एक देश के रूप में क्यों नहीं रखा गया?
८. आस्ट्रिया के सम्बन्ध में १९५५ में क्या कार्रवाई की गई?

पूर्वी जर्मनी के सम्बन्ध में

साम्यवाद की लहर को रोकने के प्रयत्न—पश्चिमी राष्ट्रों ने जल्दी ही यह अनुभव कर लिया कि सोवियत संघ चेकोस्लोवाकिया में अपनाए गए तरीकों से संसार को साम्यवादी बनाना चाहता है और जर्मनी में भी उसने इन्हीं तरीकों को अपनाने की कोशिश की थी। दूसरे शब्दों में सोवियत संघ ने अन्य देशों में साम्यवादी दल तैयार किए जिससे वे वहाँ की सरकारों पर कब्जा कर सकें। ये साम्यवादी दल मूलतः मास्को में तैयार किए सिद्धान्तों के आधार पर चलाए जाते थे। इस प्रकार न तो कोई युद्ध होगा, न रूस को किसी प्रकार का जान-माल का नुकसान होगा।

ट्रूमैन सिद्धान्त—इस योजना के अनुसार

आसपास के देशों के साम्यवादियों ने यूनान पर भी कब्ज़ा करने का प्रयत्न किया लेकिन यूनानी जनता ने इसके विरोध में संघर्ष किया। फिर भी विदेशी सहायता के बिना यूनानी लोगों की स्थिति निराशाजनक थी क्योंकि युद्ध-सामग्री खरीदने के लिए उनके पास अधिक धन नहीं था। परम्परा से चला आ रहा उसका मित्र देश ब्रिटेन भी यूनान की सहायता नहीं कर सकता था क्योंकि उसकी अपनी आर्थिक स्थिति अत्यन्त गम्भीर थी। पश्चिमी संसार के संघ से शक्तिशाली राष्ट्र के रूप में संयुक्त राज्य सहायता देने के लिए आगे आया। अतः यूनान और तुर्की (यह दूसरा देश था जिसे रूस से खतरा था) की आर्थिक व्यवस्था और सैन्य शक्ति को मज़बूत बनाने के लिए राष्ट्रपति ट्रूमैन ने कांग्रेस से ४००,०००,००० डालरों का विनियोग करने के लिए कहा। इस सहायता के कारण ये दोनों देश अपने को रूसी मण्डल से बाहर रख सके। पूर्वी योरुप में साम्यवाद की शक्ति रोकने से सम्बन्धित संयुक्त राज्य का निश्चय ट्रूमैन सिद्धान्त के नाम से प्रसिद्ध हो गया।

मार्शल योजना—दो बड़े युद्धों के कारण कमज़ोर हुए पश्चिमी योरुप के देशों को अपना भविष्य निरुत्साहपूर्ण तथा भयपूर्ण दिखाई देता था। अतः युद्ध के समस्त होने के बाद जल्दी ही इन देशों ने पश्चिमी योरुप को मज़बूत बनाने के उद्देश्य से आर्थिक, राजनीतिक तथा सैनिक समझौते करने शुरू कर दिए। अमरीका के विदेश मन्त्री जनरल मार्शल ने इन देशों को आर्थिक सहायता देने का प्रस्ताव रखा बशर्ते कि ये देश भी सहयोग दें। उनके इस प्रस्ताव को मार्शल योजना या योरुप की पुनरुज्जीवन योजना का नाम दिया गया जिसके अन्तर्गत अठारह देश एक दूसरे को वह सामान सप्लाई करते थे जो उनके यहाँ फालतू होता था। संयुक्त राज्य ने सहायता देनी थी और संयुक्त राज्य द्वारा दी जा रही सहायता पुनरुज्जीवन के लिए इस्तेमाल की जानी थी, उपभोग के लिए नहीं।

योरुप की चार-वर्षीय पुनरुज्जीवन योजना के सम्बन्ध में अमरीकी कांग्रेस ने १९४८ में एक विधेयक पास किया और पहले वर्ष में इस्तेमाल करने के लिए पांच अरब डालरों का विनियोग किया। पहले-पहल तो इस योजना को सभी देशों पर लागू करने का प्रस्ताव था लेकिन फिर भी रूस ने न केवल इस प्रस्ताव को ही अस्वीकार कर दिया बल्कि साम्यवादी शासन के अधीन देशों के इस प्रस्ताव से लाभ उठाने पर प्रतिबन्ध लगा दिया। संयुक्त राज्य के साथ सहयोग करने के लिए योरुप के अठारह देशों ने एक समझौता कर लिया। योरुप की पुनरुज्जीवन योजना के अन्तर्गत अधिकांश देशों के औद्योगिक उत्पादन में वृद्धि हो गई और उनमें से कई देशों का उत्पादन तो उनके १९३९ के उत्पादन से भी अधिक बढ़ गया। जैसे-जैसे आर्थिक परिस्थितियों में सुधार हुआ साम्यवादी दलों की संख्या और उनका आधिपत्य कम होता चला गया। यद्यपि परिस्थितियों में सुधार लाया जा चुका था लेकिन योजना अवधि के अन्तिम वर्ष १९५२ के निकट आते-आते यह स्पष्ट हो चुका था कि ये राष्ट्र अभी तक पूरी तरह आत्म-निर्भर नहीं हो सके थे।

संयुक्त राज्य की सभी विदेशी सहायता प्रायोजनाओं की देखभाल करने के उद्देश्य से संयुक्त राज्य की कांग्रेस ने लम्बे वाद-विवाद के पश्चात् परस्पर सुरक्षा संस्था नाम की एक नई संस्था स्थापित कर दी।

उत्तर अतलांतिक संधि संगठन—इस शीत-युद्ध के किसी भी समय असली युद्ध रूप धारण कर लेने का खतरा बना हुआ था और पश्चिमी योरुप ने यह अनुभव किया कि यदि वस्तुतः ऐसा हो गया तो युद्ध का मैदान भी वही बनेगा और वह भी ऐसी स्थिति में जब कि उसके पास सुरक्षा साधन नाम की कोई सुविधा नहीं है। अतः १९४८ में ब्रिटेन, फ्रांस तथा बेनेलक्स देशों (बेल्जियम, नीदरलैण्ड्स तथा लक्समबर्ग) ने साम्यवादियों के संभावित आक्रमण के विरुद्ध एक सुरक्षा संधि तैयार करने में सहयोग देने के लिए संयुक्त राज्य और कनाडा को आमन्त्रित किया। संयुक्त राज्य और कनाडा ने इस सम्बन्ध में अपना सहयोग देना स्वीकार कर लिया। नार्वे, डेन्मार्क, इटली, आइसलैण्ड तथा पुर्तगाल ने इस सन्धि को स्वीकार कर लिया और

१६४६ में यह लागू हो गई। दो वर्ष वाद यूनान और तुर्की भी इसके सदस्य बन गए और १६५५ में पश्चिमी जर्मनी ने भी इसकी सदस्यता स्वीकार कर ली। उत्तर अतलांतिक संधि संगठन नाम की इस संस्था ने यह प्रतिज्ञा की कि इस संस्था का प्रयोग न तो आक्रामक प्रवृत्ति को प्रोत्साहन देने के लिए किया जाएगा और न ही यह संस्था संयुक्त राष्ट्र संघ की सुरक्षा परिषद् से पृथक् होकर चलेगी।

चूंकि राष्ट्रों के बीच तनाव समाप्त नहीं हो पाया था अतः १६५१ में यह निश्चय किया गया कि उ० अ० सं० सं० के लिए एक अन्तर्राष्ट्रीय सेना तैयार की जाए। ड्वाइट डी० आईजनहावर को इस सेना का कमाण्डर बना दिया गया और उन्हें सदस्य देशों से सैन्य दल सप्लाई करवाने तथा सुरक्षात्मक तैयारी करवाने का दायित्व सौंपा गया। हथियारों का कुछ भाग संयुक्त राज्य द्वारा दिया गया।

आईजनहावर ने अपना मुख्यालय पेरिस में स्थापित किया और सशस्त्र सेना तैयार करनी शुरू कर दी। उनके बाद उनके स्थान पर क्रमशः जनरल मैथ्यू रिजवे, जनरल आल्फ्रेड एम० ग्रुएन्थर, जनरल लौरिस नोरस्टाड तथा जनरल लाईमैन लेम्निट्ज़र इस सुरक्षा सेना के कमाण्डर बनाए गए।

उ० अ० सं० सं० के क्रियाकलापों में भी मतभेद खड़े हो गए। जनरल डी गाल ने फ्रांसीसी धरती पर संयुक्त राज्य के परमाणु हथियारों और अस्त्र-भंडारों के लाए जाने पर रोक लगा दी। यही नहीं, उन्होंने उ० अ० सं० सं० की सैनिक शक्ति में फ्रांस के भाग को उ० अ० सं० सं० की सैन्य शक्ति के साथ मिलाने से भी इन्कार कर दिया। इन समस्याओं के बावजूद पश्चिमी योरुप पर किसी भी संभावित साम्यवादी सैनिक आक्रमण के लिए उ० अ० सं०सं० पश्चिमी योरुप की सुरक्षा का सर्वोत्तम साधन बना रहा।

रूस ने इस संस्था को आक्रामक युद्ध की तैयारी कहा और इसकी निंदा की तथा रेडियो व अन्य प्रचार माध्यमों द्वारा इस संस्था पर से जनता का विश्वास उठाने का प्रयत्न किया। पश्चिमी राष्ट्रों ने भी रेडियो और अखबारों के माध्यम से जवाबी कार्रवाई की। संयुक्त राज्य के विदेश विभाग तथा गैरसरकारी संस्थाओं ने योरुप में ऐसे रेडियो स्टेशन लगा दिए जिनका सम्बन्ध लौह आवरण के पीछे के देशों के साथ जोड़ दिया गया था जिससे कि उन्हें अमरीका तथा पश्चिमी राष्ट्रों के सम्बन्ध में सही स्थिति का ज्ञान कराया जा सके। प्रचार के इस तकनीक को 'वायस आफ अमरीका' के नाम से पुकारा जाता था।

दक्षिणपूर्वी एशिया संधि संगठन तथा मध्य पूर्वी एशिया संधि संगठन—साम्यवाद के विस्तार से स्वतन्त्र संसार की रक्षा करने के लिए दो अन्य संस्थाएँ भी स्थापित की गई जिनमें से द० पू० ए० सं० सं० अर्थात् दक्षिणपूर्वी एशिया संधि संगठन नामक एक संस्था तो १६५४ में स्थापित कर दी गई थी। इस संगठन के आठ सदस्य थे: ब्रिटेन, फ्रांस, संयुक्त राज्य, फिलीपाइन, थाईलैण्ड, न्यूज़ीलैण्ड, आस्ट्रेलिया तथा पाकिस्तान। आठों सदस्य देशों ने यह निश्चय किया कि किसी पर भी आक्रमण होने पर परस्पर सैनिक सहायता दी जाएगी तथा साथ ही तकनीकी सहायता व आर्थिक सहयोग देने का वचन भी दिया गया।

म० पू० ए० सं० सं० अर्थात् मध्यपूर्वी एशिया संधि संगठन उत्तरी अतलान्तिक संधिसंगठन व दक्षिणी पूर्वी एशिया संधि संगठन के बीच भौगोलिक सम्बन्ध जोड़ता है। इस संगठन के सदस्य देश ब्रिटेन, तुर्की, ईराक, ईरान तथा पाकिस्तान ने यह निश्चय किया कि परस्पर सैनिक सहायता दी जाएगी और इस सम्बन्ध में इन सदस्य देशों ने १६५५ में बगदाद में एक सन्धि पर हस्ताक्षर कर दिए।

रूस की प्रतिक्रिया—दूसरे विश्वयुद्ध में भंग कर दी गई साम्यवादी अन्तर्राष्ट्रीय सभा या कौमिनटर्न के स्थान पर साम्यवादी सूचना केन्द्र का संयोजन करके रूस ने शीतयुद्ध के दौरान अपनी शक्ति संगठित कर ली। दुनिया भर के साम्यवादी दलों के प्रतिनिधियों द्वारा इस साम्यवादी सूचना केन्द्र का निर्माण किया गया था।

एक शक्तिशाली साम्यवादी देश होते हुए भी यूगोस्लाविया ने साम्यवादी सूचना केन्द्र तथा रूसी
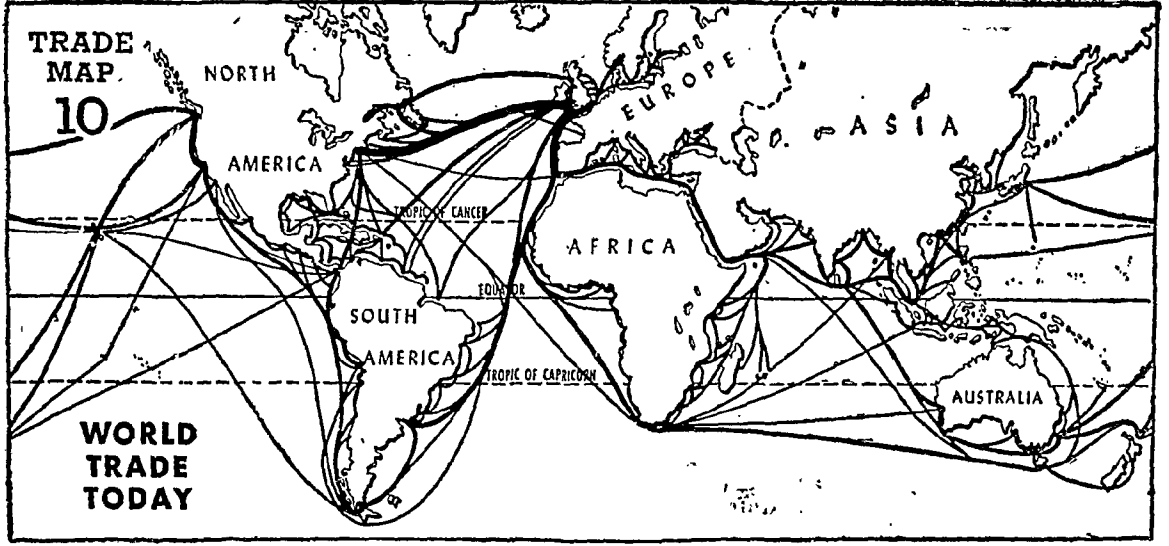
इस चित्र में चिन्हित मुख्य समुद्रीय तथा हवाई मार्गों से पता चलता है कि विभिन्न देश किस प्रकार व्यापार के माध्यम से जुड़े हुए हैं।

नियन्त्रण से अपना सम्बन्ध तोड़ लिया। यूगोस्लाविया के अधिनायक मार्शल टीटो ने रूस में साम्यवादी प्रशिक्षण प्राप्त कर रखा था लेकिन उन्होंने रूस द्वारा यूगोस्लाविया के साधन इस्तेमाल करने की कोशिश करने पर आपत्ति प्रकट की। पर १९५६ में रूसी नेताओं ने साम्यवादी सूचना केन्द्र भंग कर दिया और फिर मार्शल टीटो दोबारा रूसी नेताओं के मित्र बन गए। १९६१ में छोटे से अल्बानिया ने सभी सोवियत सैनिक मण्डलों को खदेड़ कर तथा एक रूसी पनडुब्बी अड्डे को बन्द करके ख़ुश्चेव की नीतियों से पृथक् होने की हिम्मत की।

रूस ने पश्चिम के साम्यवाद-विरोधी उपायों का जवाब कुछ-कुछ उसी प्रकार की संस्थाओं द्वारा दिया। पूर्वी योरुप में स्थापित रूस की परस्पर आर्थिक सहायता परिषद् मार्शल योजना का रूसी रूपान्तर थी। उत्तर अतलांतिक संधि संगठन के बराबर शक्तिशाली संगठन तैयार करने के लिए रूस ने अपने सभी पिछलग्गू देशों को १९५५ में संधि संगठन के अधीन इकठ्ठा कर लिया। इस संगठन को कभी-कभी वार्सा समझौता के नाम से भी पुकारा जाता था।

योरुप द्वारा और अधिक सहयोग की कोशिश

योरुप के लिए परिषद्—चूंकि अभी तक सभी राज्य अपने-अपने ढंग से चल रहे थे अतः योरुप के राज्यों में आर्थिक सहयोग प्राप्त करने का काम आसान नहीं था। राजनीतिक सहयोग प्राप्त करना भी कठिन था क्योंकि सभी देशों में राष्ट्रीयता की सशक्त भावना मौजूद थी।

दूसरे विश्वयुद्ध से पहले योरुप के कुछ राजनीतिज्ञों ने योरुपीय संयुक्त राज्य की बात कही थी लेकिन इस सम्बन्ध में कोई कार्रवाई नहीं की गई। युद्ध के बाद कुछ लोगों की बैठकें हुईं और उन्होंने यह सोचा कि पश्चिमी योरुप या तो संगठित हो जाए अन्यथा वह समाप्त हो जाएगा। विंस्टन चर्चिल भी इस आन्दोलन के एक नेता थे। जनता को यह विचार योरुप की समस्याओं के लिए एक सम्भव हल जंचा। तब भी राष्ट्र अपनी प्रभुसत्ता त्यागने के लिए राजी नहीं थे और सबसे बढ़िया जो चीज हो सकती थी, वह यह थी कि समस्याओं पर विचार करने के लिए एक योरुपीय परिषद् बनाई जाए। यह परिषद् १९४९ में स्थापित कर दी गई

लेकिन इस परिषद् को उदाहरण के तौर पर, फ्रांसीसी संसद् की तरह, कार्यवाही करने का अधिकार प्राप्त नहीं था। यह तो केवल सभाएँ बुला कर योरुप में मौजूद बुराइयों पर बातचीत कर सकती थी और बुराइयों के सम्बन्ध में क्या किया जाए, इस पर विचार कर सकती थी। इस साधारण किन्तु अत्यन्त आशाजनक आधार पर १५ राज्य एकसूत्रता में बँध गए। ये राज्य थे : ब्रिटेन, वेल्जियम, फ्रांस, नीदरलैंड्स, लक्समबर्ग, डेन्मार्क, स्वीडन, नार्वे, इटली, आयरलैंड, यूनान, तुर्की, आइसलैंड, सार तथा पश्चिमी जर्मनी।

शूमैन योजना—कुछ फ्रांसीसी राजनीतिज्ञों का यह विश्वास था कि योरुप को संगठित करने का सबसे अच्छा तरीका आर्थिक एकता और समृद्धि का तरीका था। इन्हीं सिद्धान्तों पर तैयार की गई एक योजना फ्रांसीसी विदेश मंत्री रावर्ट शूमैन द्वारा १९५० में पेरिस में हुए योरुपीय सरकारों के सम्मेलन में रखी गई। अगले वर्ष ही ५० वर्षों तक के लिए बनाई गई एक संधि पर वेल्जियम, फ्रांस, नीदरलैंड्स, इटली, लक्सम्बर्ग तथा पश्चिमी जर्मनी ने हस्ताक्षर किए और यह संधि १९५२ में लागू हो गई। शूमैन योजना के नाम से प्रसिद्ध योजना को योरुपीय कोयला तथा इस्पात कम्युनिटी के नाम से भी जाना जाता है। इन छहों देशों में कोयले और इस्पात के उत्पादन का कार्य इसी संगठन के अधीन किया जाता था और छहों देशों में कोयले और इस्पात पर किसी प्रकार का शुल्क नहीं लिया जाता था। यही वह व्यावहारिक तरीका था जिससे छहों राष्ट्र शान्ति और समृद्धि के लिए एक दूसरे को सहयोग दे रहे थे। कई लोगों को यह आशा थी कि यह योरुपीय कोयला और इस्पात कम्युनिटी योरुप के संयुक्त राज्य का बीज है।

योरुपीय साझा बाजार—१९५७ में एक कदम और उठाया गया और शूमैन योजना मानने वाले देशों ने १७ वर्षों में छहों देशों में सीमा-शुल्क दरें घटाना स्वीकार कर लिया। इस व्यापारिक समझौते को साझा बाजार या योरुपीय मार्किट कहते हैं। इस बाजार ने अपने सदस्यों के लिए इतना अच्छा काम किया कि १९६१ में ब्रिटेन, नार्वे तथा डेन्मार्क ने भी इसमें शामिल होने के लिए कहा। उसी वर्ष स्वीडन, आस्ट्रिया तथा यूनान ने इस बाजार के सहयोजित सदस्य बनने के लिए भी कहा। यही नहीं, संयुक्त राज्य तक ने अमरीकी व्यापार को बढ़ाने के उद्देश्य से साझा बाजार के साथ सहयोग करने के प्रश्न पर विचार किया।

शूमैन योजना की एक दूसरी शाखा है योरेटम जो योरुपीय साझा बाजार के छहों सदस्य राष्ट्रों द्वारा बनाया गया एक योरुपीय संगठन है। इस नई शाखा की स्थापना न्यूक्लीयर शक्ति के शान्तिपूर्ण प्रयोगों का विकास करने की दिशा में सहयोग देने के लिए की गई थी।

१. ट्रूमैन सिद्धान्त का वर्णन कीजिए।
२. योरुपीय पुनरुज्जीवन योजना का जन्म किन परिस्थितियों में हुआ?
३. परस्पर सुरक्षा संगठन का वर्णन कीजिए।
४. उत्तरी अतलांतिक संधि संगठन का जन्म किन परिस्थितियों में हुआ और कौन-कौन से देश इसके सदस्य बने?
५. उत्तरी अतलांतिक संधि संगठन में जनरल आइज़नहावर का क्या स्थान था और उनके बाद कौन-कौन व्यक्ति उनके उत्तराधिकारी बने?
६. उत्तरी अतलांतिक संधि संगठन के विरुद्ध रूस ने क्या कार्रवाई की?
७. दक्षिण पूर्वी एशिया संधि संगठन का क्या उद्देश्य है?
८. "वायस आफ अमेरिका" का क्या उद्देश्य है?
९. किन-किन साम्यवादी देशों ने सोवियत संघ का विरोध किया?
१०. योरुपीय परिषद्, शूमैन योजना, साझा बाजार तथा योरेटम से आप क्या समझते हैं?

संयुक्त राज्य संसार का नेता

नेतृत्व करने का खर्चा—पहले विश्वयुद्ध के बाद संयुक्त राज्य ने फिर से तटस्थता की नीति अपना ली थी ताकि वह योरुप की समस्याओं से अछूता रहे किन्तु वह अपने उद्देश्य में सफल नहीं

हो सका। अतः दूसरे विश्वयुद्ध के बाद संयुक्त राज्य ने संसार के लोकतंत्रीय देशों का नेतृत्व करने का दायित्व सम्भाल लिया। यह नेतृत्व केवल साम्यवाद का विरोध करने में ही नहीं था, बल्कि लोकतंत्रीय राष्ट्रों तथा संसार के अर्द्धविकसित राष्ट्रों को भौतिक और तकनीकी सहायता देने में भी था। यद्यपि युद्ध की समाप्ति पर संयुक्त राज्य के ऊपर लगभग २६० अरब डालर का ऋण था, फिर भी उसकी उदारता में कोई कमी नहीं आई। युद्ध के बाद पहले १० वर्षों के बीच संयुक्त राज्य ने ५१,३३,९२,०८,००० डालर की विदेशी सहायता दी। यह सहायता देने का कुछ विरोध भी हुआ। विरोध करने वाले कुछ लोगों का यह विचार था कि सहायता देने के मामले में संयुक्त राज्य बहुत ही उदार है। उसे चाहिए कि वह पहले अपना भारी ऋण चुकता करे। विरोधियों ने यह भी कहा कि देश का खजाना ऐसे राष्ट्रों की सहायता करने में खर्च किया जा रहा है जो अपने उद्योगों का विकास करने के बाद सयुक्त राज्य के प्रतिद्वन्द्वी बन जाएंगे। इन सब दलीलों के बावजूद भी कांग्रेस विदेशी सहायता के लिए भारी रकम देती रही।

न्यायपूर्ण व्यवहार का कार्यक्रम—१९४५ में राष्ट्रपति रूजवेल्ट की मृत्यु के बाद बने राष्ट्रपति हेरी एस० ट्रूमैन ने अपने "न्यायपूर्ण व्यवहार के कार्यक्रम" को कानूनी रूप देने का प्रयत्न किया लेकिन उन्हें इस सम्बन्ध में अधिकांशतः निराशा ही मिली। उन्होने श्रमिकों के लिए अन्यायपूर्ण विधान को हटाने का प्रयत्न भी किया लेकिन उन्हें सफलता नहीं मिली। उन्होंने अनिवार्य स्वास्थ्य बीमा कार्यक्रम की सिफारिश भी की लेकिन कांग्रेस ने उसे अस्वीकार कर दिया। उन्होंने नीग्रो लोगों की रक्षा हेतु एक नागरिक अधिकार कार्यक्रम को मंजूरी देने तथा नीग्रो लोगों को आर्थिक और सामाजिक दृष्टि से गोरे लोगों के बराबर बनाने के लिए भी कांग्रेस से कहा। राज्यों के बहुत से जिम्मेदार व्यक्तियों द्वारा इस मामले पर विचार किया गया लेकिन कांग्रेस ने इसे स्वीकार करने से इनकार कर दिया। फिर भी वह अल्प आय वाले लोगों के लिए रिहायशी मकानों के निर्माण में सहायता दिलाने से सम्बन्धित नियमों को मंजूरी दिलाने में सफल हो गये। कांग्रेस ने सामाजिक सुरक्षा सम्बन्धी सुविधाओं का लाभ उठाने के अधिकारी लोगों की संख्या में वृद्धि कर दी।

आइजनहावर की सरकार—संयुक्त राज्य में २० वर्षों तक डिमोक्रेटिक पार्टी की सरकार के पश्चात् १९५२ में अमरीकी जनता ने रिपब्लिकन पार्टी की सरकार का चुनाव किया। दोबारा चुनाव के समय राष्ट्रपति ट्रूमैन ने उम्मीदवार के रूप में खड़ा होने से इनकार कर दिया। अतः डिमोक्रेटों ने इलीनोय के भूतपूर्व गवर्नर एडलाई स्टीवेन्सन का नाम प्रस्तुत किया। रिपब्लिकन पार्टी ने योरुप के मित्र-राष्ट्र सैन्य दल के युद्धकालीन भूतपूर्व कमाण्डर-इन-चीफ ड्वाइट डी० आइजनहावर का नाम पेश किया। यह बात कि दक्षिणी क्षेत्र के बहुत से (प्रायः) डिमोक्रेट-पक्षपाती राज्यों ने अपने निर्वाचन मत आइजनहावर के पक्ष में दिए, वस्तुतः

नागरिकता अवसर मनाते हुए अलास्का वासी।
वाईड वर्ल्ड
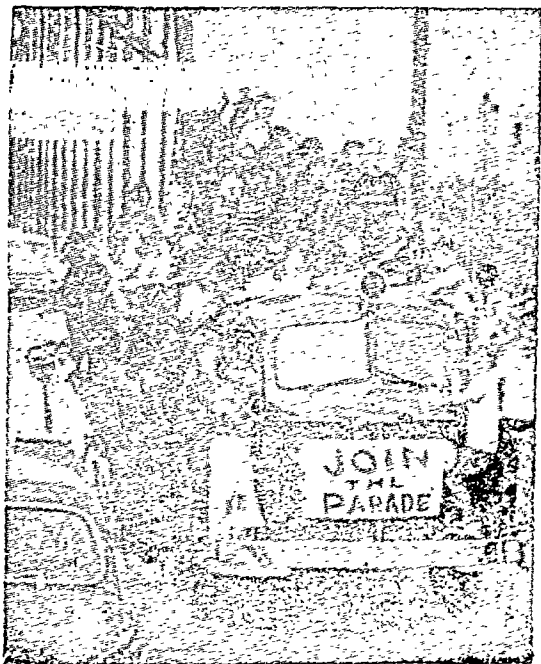
उनके प्रति सार्वजनिक विश्वास की भावना को प्रकट करती थी।

आइज़नहावर को जल्दी ही कोरिया में, जहाँ उत्तरी तथा दक्षिणी कोरियावासी तीन वर्षों से लड़ रहे थे, युद्धविराम कराने में सफलता प्राप्त हुई। बाद के वर्षों में उनकी विदेश नीति बहुत कुछ उस नीति से मिलती-जुलती थी जिसके लिए ट्रू मैन की सरकार प्रयत्नशील रही थी। स्वयं अपने देश में वे राज्य सरकारों को अपेक्षाकृत अधिक उत्तरदायित्व देने के लिए वचनबद्ध थे। इस सिलसिले में उन्होंने ज्वारजल में स्थित तैल क्षेत्रों को पुनः राज्यों को दिला दिया और जलशक्ति साधनों का विकास करने का काम भी राज्यों तथा निजी उद्योगों पर छोड़ दिया। आइज़नहावर की सरकार ने कुछ करों में कटौती कर दी, और अधिक लोगों को लाभ पहुँचाने की दृष्टि से सामाजिक सुरक्षा सम्बन्धी नियमों का और अधिक प्रसार किया, स्वास्थ्य, शिक्षा और कल्याण का एक नया विभाग स्थापित किया और सार्वजनिक परिवहन साधनों तथा शिक्षा के क्षेत्रों में जातिभेद के विरुद्ध सर्वोच्च न्यायालय द्वारा दिए निर्णय का समर्थन किया।

१९५६ में एडलाई स्टीवेनसन को सन् १९५२ की अपेक्षा अधिक मतों से हरा कर राष्ट्रपति आइज़नहावर दूसरी बार राष्ट्रपति चुन लिए गये लेकिन अब सीनेट तथा सदन दोनों स्थानों पर ही डिमोक्रेटों का बहुमत था। दूसरी बार राष्ट्रपति बनने पर कांग्रेस ने पश्चिमी एशिया के देशों की किसी भी साम्यवादी देश के आक्रमण से रक्षा करने के लिए तैयार की गई आइज़नहावर योजना को अपनी स्वीकृति दे दी। इसने नागरिक अधिकार सम्बन्धी ऐसा कानून भी बनाया जिससे नीग्रो मतदाताओं के लिए कुछ सुरक्षा मिली तथा बड़े पैमाने पर सड़कों के निर्माण के कार्यक्रम को मंजूरी दे दी गई थी।

१९५९ में अलास्का तथा हवाई नामक दो अन्य राज्य संयुक्त राज्य में मिल गए। १९१२ के

१९६० के राष्ट्रपति के चुनाव आन्दोलन की एक नई नीति—कैनेडी व निक्सन टेलीविज़न पर वाद-विवाद करते हुए। यद्यपि उम्मीदवारों ने वास्तव में किन्हीं प्रश्नों पर वाद-विवाद नहीं किया फिर भी करोड़ों मतदाताओं के सम्मुख उन्होंने अपने विचार अवश्य रखे।
वाईड वर्ल्ड

वाद ये दो ही नये राज्य संघ में शामिल हुए हैं।

डिमोक्रेटों ने पुनः शक्ति प्राप्त की। १९६० के चुनाव में आइजनहावर द्वारा समर्थित उपराष्ट्रपति रिचार्ड निक्सन का मुकाबला सीनेटर जान एफ० कैनेडी के साथ हुआ। राष्ट्रपति पद के लिए इन दोनों उम्मीदवारों ने पहली बार बड़े पैमाने पर टेलीविज़न श्रोताओं के सम्मुख कुछ मामलों पर वाद-विवाद किया। कैनेडी ने बहुत थोड़े से मतों से इस चुनाव में विजय प्राप्त की और ४३ वर्ष की छोटी उम्र में ही वे संयुक्त राज्य के राष्ट्रपति चुन लिए गए। श्री कैनेडी अब तक चुने गए राष्ट्रपतियों में सबसे कम आयु के थे। कांग्रेस के दोनों सदनों में डिमोक्रेटों का बोलबाला था।

राष्ट्रपति कैनेडी ने यह वायदा किया था कि यदि वे चुन लिये गए तो सर्वथा नये साहसपूर्ण मार्ग का निर्माण करेंगे। कांग्रेस ने उनकी एक योजना, शान्ति सेना को मंजूर कर लिया। इस योजना का उद्देश्य सहायता मांगने वाले अर्ध-विकसित देशों में प्रशिक्षित नवयुवक और नवयुवतियाँ भेजना था।

इन युवक-युवतियों को अपना जीवन उन देशों के अनुकूल बनाना था जहाँ वे रहते थे। उन्हें मौजूदा जीवन-स्तर में सुधार लाने की दिशा में भी सहायता करनी थी। १९६१ के अन्त तक ५०० से अधिक विशेष रूप से प्रशिक्षित शान्तिसैनिक टांगानिका, पाकिस्तान, घाना, चिली तथा अन्य देशों की जनता के मध्य काम कर रहे थे।

पश्चिमी लोकतन्त्रों के कई प्रेक्षक इस बात पर आश्चर्य करते थे कि राष्ट्रपति कैनेडी साम्यवादी नेताओं और विशेष रूप से ख्रुश्चेव के साथ कितने अच्छे ढग से निपट लेते थे। श्री कैनेडी ने अपने कार्य काल के आरम्भ में ही प्रधान मन्त्री ख्रुश्चेव को यह स्पष्ट कर दिया था कि सयुक्त राज्य का इरादा बर्लिन में टिकने का है। साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि संयुक्त राज्य किसी भी ऐसे साम्यवाद विरोधी देश के प्रति अपने वायदे पूरे करेगा जो साम्यवादी घुसपैठ के विरुद्ध सहायता की मांग करे पर उन्होंने यह भी कहा कि उन्हें यह आशा है कि संयुक्त राज्य तथा सोवियत संघ के बीच बहुत से ऐसे प्रश्नों के सम्बन्ध में कोई सम्मानपूर्ण समझौता हो सकेगा, जिन पर दोनों देशों में मतभेद है।

कनाडा—एक ज़बर्दस्त साथी

१९५८ के चुनाव में कनाडियन राष्ट्रवादिता की प्रबल भावना का परिचय मिला। मतदाताओं ने सास्काटचेवान के ६१ वर्षीय जान जी० डीफन बेकर के नेतृत्व में कंजरवेटिव दल को भारी संख्या में मत देकर उस दल के प्रति अपना गहरा विश्वास प्रकट किया। एक वर्ष पहले उनके दल ने मामूली बहुमत से संसद् पर नियंत्रण किया था। श्री डीफन बेकर २२ वर्षों में पहले कंजरवेटिव प्रधान मन्त्री बने थे। १९५८ में अत्यधिक बहुमत पाने से यह प्रकट होता था कि देश ने उनके पूँजी और व्यापार के लिए अमरीका पर कम से कम आश्रित रहने के वचन का समर्थन किया था। सयुक्त राज्य में व्यापारिक मन्दी से कनाडा के डूबने का भी खतरा था। डीफन बेकर को यह आशा थी कि अधिक बड़ी मंडियों में अपना माल विशेषतः कनाडा के कृषि उत्पादन, बेच सकेंगे।

इन सब बातों के बावजूद, भौगोलिक स्थिति तथा प्राकृतिक साधनों की दृष्टि से कनाडा और संयुक्त राज्य दोनों ही एक दूसरे के लिए महत्त्वपूर्ण हैं। कनाडा में यूरेनियम और कच्चे लोहे के भण्डार से दोनों की सुरक्षा के लिए कच्चे माल की व्यवस्था होगी। इन दोनों देशों ने कनाडा के आर-पार राडार संस्थानों की 'दूरस्थ जल्द चेतावनी लाइन' स्थापित कर दी है। साथ ही इन दोनों देशों ने संयुक्त सुरक्षा समिति व उत्तरी अमरीकी हवाई सुरक्षा कमान की स्थापना भी कर दी है।

जून १९५९ में राष्ट्रपति आइजनहावर व रानी एलिज़ाबेथ द्वितीय ने कनाडा और सयुक्त राज्य द्वारा मिल कर बनाए गए सेंट लारेंस नाम के नये जलमार्ग का औपचारिक तौर पर उद्घाटन किया। इस प्रकार महासागर में चलने वाले जलयान पहली बार अतलांतिक महासागर से ग्रेट लेक्स पर पहुँचे। इस नये जलमार्ग ने डेटरोयट, शिकागो तथा डुलुथ के अतिरिक्त, अन्य बहुत से कनाडा और अमरीका के नगरों को नजदीक कर दिया है। ऐसी आशा है कि इस नये मार्ग से इन देशों की

आर्थिक उन्नति में सहायता मिलेगी और साथ ही इन देशों की सुरक्षा की दृष्टि से भी यह मार्ग महत्त्वपूर्ण कार्य करेगा।

१. संयुक्त राज्य के लिए संसार का नेतृत्व करना इतना मंहगा क्यों पड़ा ?
२. 'न्यायपूर्ण व्यवहार योजना' का वर्णन कीजिए।
३. आइज़नहावर की सरकार की मुख्य उपलब्धियाँ क्या-क्या थीं ?
४. 'शान्ति सेना' से आप क्या समझते हैं ?
५. संयुक्त राज्य में संगठन की दिशा में क्या प्रगति की गई है ?
६. सोवियत संघ के प्रति राष्ट्रपति कैनेडी की क्या नीति थी ?
७. संयुक्त राज्य और कनाडा का एक दूसरे के लिए क्या महत्त्व है ?
८. 'दूरस्थ जल्द चेतावनी' से आप क्या समझते हैं ?

वाद-विवाद के लिए प्रश्न

१. अतलांतिक घोषणापत्र के सिद्धान्त किस सीमा तक लागू हो सके हैं ?

२. यदि आपको संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद् के पाँच स्थायी सदस्यों को नियुक्त करने का अधिकार दे दिया जाय तो क्या आप आजकल मौजूद पांच सदस्यों की ही नियुक्ति करेंगे ? यदि हां, तो क्यों ?

३. सुरक्षा परिषद् के स्थायी सदस्यों को निषेधाधिकार देने का क्या औचित्य है ?

४. ब्रिटेन तथा संयुक्त राज्य की दो-दल प्रणाली फ्रांस की बहु-दल प्रणाली की अपेक्षा अधिक स्थायी सरकार का निर्माण कर सकी है, ऐसा क्यों ?

५. फ्रांस, जर्मनी तथा इटली की सरकारें किन-किन बातों में संयुक्त राज्य की अपेक्षा ब्रिटेन की सरकार से अधिक मिलती-जुलती हैं ?

६. प्रथम सदन में स्वीकृत कानून के सम्बन्ध में, संयुक्त राज्य की सीनेट की तरह, संसद् के द्वितीय सदन को विचार का अधिकार देने का क्या लाभ है ?

७. युद्ध के बाद संयुक्त राज्य कांग्रेस ने इतने सारे देशों के लिए इतने धन का विनियोग क्यों किया ?

८. चेकोस्लोवाकिया पर नियन्त्रण करने के लिए बरते गये रूसी तौर-तरीकों पर नैतिक दृष्टि

'वायस आफ अमरीका' तुर्की के एक छोटे शहर में पहुंची है जहां उत्सुक ग्रामवासी इस कारण से विशेष रुचि लेते हैं क्योंकि वहां संयुक्त राज्य सूचना सेवा के दो मानीटर मौजूद हैं जो प्रसारण में सुधार लाने के सम्बन्ध में पूछताछ कर रहे हैं।

यूनाइटेड स्टेट्स डिपार्टमेण्ट आफ स्टेट

से विचार कीजिए।

९. पहले विश्वयुद्ध के बाद निःशस्त्रीकरण के सम्बन्ध में बहुत कुछ कहा गया लेकिन दूसरे विश्वयुद्ध के पश्चात् और अधिक सैन्य सामग्री के विस्तार के सम्बन्ध में काफी विचार-विमर्श हुआ। स्थितियों के इस अन्तर को स्पष्ट कीजिए।

१०. साम्यवाद के प्रसार को रोकने के सम्बन्ध में पश्चिमी राष्ट्रों के प्रयत्न कहाँ तक सफल हुए हैं।

इतिहास के उपकरणों का प्रयोग

एक. नाम, तारीखें तथा स्थान

१. निम्नलिखित से आप क्या समझते हैं ?

विमान वहन, अतलांतिक घोषणापत्र, शीतयुद्ध, साम्यवादी सूचना केन्द्र, साझा बाजार, राष्ट्रमंडल, योरोपीय परिषद्, संयुक्त राष्ट्रसंघ का घोषणा पत्र, दूरस्थ जल्द चेतावनी, डाक्टर ज़िवागो, योरेटम, योरोपीय बाजार—योरुप की पुनरुज्जीवन योजना, न्यायपूर्ण व्यवहार, पांचवाँ गणराज्य, चार स्वतन्त्रताएँ, फ्रांसीसी राष्ट्रमंडल, लौह आवरण, राजभक्त प्रतिपक्ष, मार्शल योजना, मिश्रित अर्थ-व्यवस्था. परस्पर सुरक्षा संगठन, उत्तरी अतलांतिक संधि संगठन, शान्ति सेना, अस्थायी सरकार, समाजवाद, सोवियत गुट के देश, विश्व की नगर बैठक, ट्रस्ट क्षेत्र, संयुक्त राष्ट्र महासभा, वायस आफ अमरीका, वार्सा समझौता, वेस्ट इण्डीज़ संघ।

२. नक्शे में इन स्थानों का पता लगाइये :

अलास्का, अल्बानिया, अल्जीरिया, बेल्जियम, कनाडा, चेकोस्लोवाकिया, डेन्मार्क, डम्बरटनओक्स, पूर्वी जर्मनी, यूनान, हवाई, हंगरी, इण्डोचीन, इटली, पाकिस्तान, पोलैण्ड, पुर्तगाल, सेंट-लारेंस जलमार्ग, सान फ्रांसिस्को, सास्काट्चेवान, स्कैण्डिनेविया, स्वीडन, ट्यूनीशिया, सोवियत समाजवादी गणराज्य संघ, पश्चिमी जर्मनी।

३. निम्न व्यक्तियों का परिचय दीजिए :

क्लीमेण्ट एटली, एडुवर्ड बेनेस, जौर्ज बिदौल, निकोलाई बुल्गानिन, विन्स्टन चर्चिल, चार्ल्स डी गाल, जान डीफन बेकर, एन्थनी ईडन, ड्वाइट डी० आइज़नहावर, एलिजाबेथ द्वितीय, एलसिडी डी० गैस्परे, डैग हैमरशोल्ड, निकिता एस० ख्रुश्चेव, जौन एफ० कैनेडी, त्रिग्वेली, हैरोल्ड मैकमिलन, जौर्जी मैलेन्कोव, जार्ज सी० मार्शल, जान मसारिक, बोरिस पेस्टरनाक, फ्रैन्कलिन डी० रूजवेल्ट, राबर्ट शूमां, जोसेफ स्टालिन, ऊथां, मार्शल टिटो, वाल्टर उलब्रिक्ट।

४. क्या आप अपनी बात अच्छी तरह समझा सकते हैं ?

१. प्रत्येक लड़का आजकल की दुनिया के दस महत्त्वपूर्ण आदमियों की और प्रत्येक लड़की दस महत्त्वपूर्ण स्त्रियों की एक सूची तैयार करे। फिर अपनी-अपनी सूची का औचित्य सिद्ध कीजिए।

२. इस खड में जिन देशों का ज़िक्र किया गया है उनमें से किसी एक देश की सरकार का ऐसा चार्ट तैयार कीजिए जिससे मतदाताओं और सरकार के प्रत्येक अंग के बीच का सम्बन्ध प्रकट होता है।

३. आज के योरोपीय देशों के नेताओं के चित्रों का एक एलबम तैयार कीजिए। ये चित्र समाचारपत्रों तथा पत्रिकाओं में मिल जाएँगे।

४. अपनी बस्ती के किसी ऐसे व्यक्ति को एक या एक से अधिक देशों की सरकार या जीवन-निर्वाह की परिस्थितियों के सम्बन्ध में कक्षा में बोलने के लिए कहें जो अभी हाल में योरप या एशिया होकर आया हो।

५. बुलेटिन बोर्ड के लिए

बुलेटिन बोर्ड के लिए दुनिया की महत्त्वपूर्ण सरकारी इमारतें दर्शाने वाला एक चित्र-संग्रह तैयार कीजिए। प्रत्येक चित्र पर लेबल लगाइए। इस काम का प्रारम्भ आप अमरीकी राष्ट्रीय कैपीटोल और व्हाइट हाउस से कर सकते हैं और फिर अधिक से अधिक संभव देशों की इसी प्रकार की इमारतों के चित्र लगा सकते हैं।

६. सामूहिक काम

१. निम्न विषयों में से किसी एक विषय पर

कक्षा के सामने रिपोर्ट प्रस्तुत करें :
मार्शल योजना, उत्तरी अतलांतिक संधि संगठन, योरोपीय परिषद्, परस्पर सुरक्षा संगठन, अन्तर्राष्ट्रीय साम्यवादी सूचना केन्द्र (कमिन्फार्म), अन्तर्राष्ट्रीय साम्यवादी संगठन (कमिटर्न)।

२. कक्षा को चार-चार के समूहों में बाँट दीजिए और प्रत्येक समूह को अनौपचारिक वाद-विवाद के लिए निम्नलिखित में से कोई एक कथन चुनने के लिए कहिए :

क. लोकतन्त्र अभी तक मनुष्य द्वारा निर्मित सर्वोत्तम सरकार है।
ख. ब्रिटेन में राजवंश को कायम रखना अत्यन्त महंगे ढंग का अनावश्यक व्यय है।
ग. सभी लोकतन्त्रीय राष्ट्रों को साम्यवादी देशों के साथ राजनयिक सम्बन्ध तोड़ देने चाहिए।
घ. स्वीडन को उत्तरी अतलांतिक सधि संगठन का सदस्य बन जाना चाहिए।
ङ. लौह आवरण के पीछे के लोगों को विद्रोह कर देना चाहिए।
च. किसी अधिनायकीय सरकार के समर्थन के बिना साम्यवाद अधिक दिन जीवित नही रह सकता।
छ. पश्चिमी योरुप के राष्ट्रों पर समाजवाद परिस्थितियो ने थोपा है।
ज. सामाजिक सुरक्षा की व्यवस्था में जनता सरकार पर बहुत अधिक आश्रित हो जाती है।
झ. आज की दुनिया में राष्ट्रवाद एक मजबूत ताकत है।

३. संयुक्त राष्ट्र की प्रारम्भ की सफलताओं में से एक सफलता यह थी कि उसने मानवीय अधिकारों से सम्बन्धित एक सार्वभौमिक घोषणा-पत्र स्वीकार किया। इस घोषणापत्र को पढ़ने और इसमें निर्दिष्ट अधिकारों तथा स्वतन्त्रताओं का सक्षिप्त रूप प्रस्तुत करने के लिए एक समिति निर्धारित कीजिए। इसके बाद इस समिति से कहिए कि इन स्वतन्त्रताओं तथा संयुक्त राज्य संविधान द्वारा तैयार किए गए अधिकारपत्र में बताई गई स्वतन्त्रताओं की तुलना करके रिपोर्ट प्रस्तुत करे।

४. दूसरे विश्वयुद्ध के पश्चात् ब्रिटिश साम्राज्य में से अलग होकर बने नये राष्ट्रों का एक तुलनात्मक चार्ट तैयार करने के लिए तीन सदस्यों की एक समिति बनाइए। इस चार्ट में यह विवरण दीजिए : (क) प्रत्येक राष्ट्र के अस्तित्व में आने की तारीख तथा उसका नाम (ख) सरकार की किस्म तथा मुख्य अधिकारी (ग) क्षेत्रफल तथा जनसंख्या (घ) निर्यात की जाने वाली मुख्य वस्तुएँ।

४२ लैटिन अमरीका सुव्यवस्था और समृद्धि की खोज में

जिन गृहयुद्धों तथा विद्रोहों के कारण सारी उन्नीसवीं शताब्दी के दौरान लैटिन अमरीकी देशों में खलबली मची रही वही गृहयुद्ध और विद्रोह बीसवीं शताब्दी में भी मध्य और दक्षिणी अमरीका को सताते रहे। राजनीतिक अधिकारों और संरक्षण से वंचित बहुत से वर्गों ने खुले तौर पर अपनी माँगें रखनी शुरू कीं। इन वर्गों में ऐसे कारीगर भी थे जिनके पास जमीन नहीं थी और जिन्होंने अपनी जमीन की माँग की थी।

जब कभी किसी देश की अधिकांश जनता पढ़ने लिखने में असमर्थ होती है, जैसा कि लैटिन अमरीकी देशों में हुआ, महत्त्वाकांक्षी और स्वार्थी नेताओं के लिए जनता को जिधर चाहे मोड़ लेना आसान होता है। चूंकि हाल के वर्षों में इन देशों में मतदान प्रणाली का विस्तार कर दिया गया था अतः बहुत से अनुभवहीन मतदाताओं से सरकार में गड़बड़ी और अस्थिरता बढ़ गई।

लैटिन अमरीका की कठिनाइयों में आर्थिक कठिनाइयों तथा प्राकृतिक भौगोलिक बाधाओं का महत्त्वपूर्ण हाथ रहा है। कुछ ही समय पहले तक लैटिन अमरीकी देश निर्यात के लिए किसी एक फसल या वस्तु पर बहुत अधिक आश्रित थे। परिणाम यह हुआ कि १९३० के बाद की विश्व-व्यापी मन्दी, १९४० और बाद के वर्षों के विश्व-युद्ध तथा १९५० के दशक तक चलने वाले पूर्वी-पश्चिमी शीतयुद्ध के कारण लोग इस कदर गरीब हो गए कि वे अपनी समस्याओं का हल प्राप्त करने के लिए एक के बाद दूसरे अधिनायक की आजमाइश करने को तैयार हो गए। सुधार सम्बन्धी प्रयोगों के परिणामस्वरूप कभी-कभी कुछ देशों में सुव्यवस्था और सुख-समृद्धि का उदय हुआ। अन्य मामलों में तो इन प्रयोगों ने इतनी अविच्छिन्न हिंसा तथा बार-बार होने वाले विद्रोहों को जन्म दिया कि स्थिति में सुधार होने के स्थान पर और अधिक खराबी आ गई।

लैटिन अमरीका के कुछ संकटग्रस्त स्थान

अर्जेन्टीना—दूसरे विश्वयुद्ध के कारण व्यापार में हुई गड़बड़ियों से अर्जेन्टीना के लोग डर गए थे। चूंकि अर्जेन्टीना के कृषि-पदार्थ मोटे तौर पर वही थे जो संयुक्त राज्य के थे अतः अपना माल बेचने के लिए उसे योरप और विशेषतः इटली तथा जर्मनी का सहारा लेना पड़ा था। धुरी राष्ट्रों के सम्बन्ध में अर्जेन्टीनावासियों द्वारा की गई प्रशंसा का परिणाम यह हुआ कि अर्जेन्टीना की सहायता करने के मामले में संयुक्त राज्य विमुख हो गया। अब इस देश में एक फासिस्ट नेता के मैदान में आने के लिए उपयुक्त वातावरण तैयार हो चुका था और १९४३ में हुए विद्रोह के फलस्वरूप जुआन पैरोन सत्तारूढ़ हो गया जो मंत्रिमण्डल में एक के बाद दूसरा पद प्राप्त करता रहा और अन्त में १९४८ में उसे राष्ट्रपति चुन लिया गया।

नये राष्ट्रपति ने १८५३ के उदार संविधान के स्थान पर एक नया संविधान लागू किया जिसमें प्रत्येक व्यक्ति पर राज्य का नियन्त्रण हो गया। इस नये संविधान में व्यापार को राज्य एकाधिकार में

परिवर्तित कर देने की व्यवस्था थी। वह लोकमत को अपने पक्ष में करना चाहता था और उसकी-इस इच्छा का परिणाम यह हुआ कि समाचारपत्रों पर नियन्त्रण रखा जाने लगा। जब विश्व में सम्मान-प्राप्त समाचार पत्र ला प्रेन्सा ने इस दिशा में सह-योग देने से इनकार कर दिया तब पैरोन ने इस समाचारपत्र का नियन्त्रण अपने हाथ में ले लिया।

१६५५ में पैरोन के अधिनायकवाद का विरोध फूट पड़ा और रोमन कैथोलिक चर्च ने उसकी नीतियों पर, विशेषतः शिक्षा पर नियन्त्रण करने के उसके प्रयासों पर, आपत्ति की। जनता के सभी वर्गों ने यह अनुभव किया कि पैरोन की नीतियां गंभीर समस्या को जन्म दे रहीं थीं और कीमतें बढ़ती जा रही थीं। औद्योगिक कर्मचारियों तथा किसानों ने यह महसूस किया कि उनकी आय जीवनयापन की कमरतोड़ मंहगाई को देखते हुए बहुत कम थी। राष्ट्रीय उत्थान की गति कम थी। जब सशस्त्र सेनाओं के कुछ अंश पैरोन के विरुद्ध हो गए तो वह देश से भाग गया।

एक नया संविधान तैयार किया गया और इस संविधान के अन्तर्गत १६५८ में हुए पहले चुनाव में आर्टुरो फ्रौन्डीजी राष्ट्रपति बन गए। फिर भी कुछ बड़े और छोटे संकटों के सिलसिले में निपुणता से अपना अस्तित्व बनाए रखने के पश्चात् फ्रौन्डीजी ने १६६२ के कांग्रेस चुनाव में पैरोन समर्थकों को भी स्थान दिया। परिणाम यह हुआ कि पैरोन पक्षपातियों की जबरदस्त राजनीतिक विजय के कारण कांग्रेस में फ्रौन्डीजी का बहुमत समाप्त हो गया। पैरोन के दोबारा सत्तारूढ़ हो जाने के खतरे से डरी हुई सेना ने फ्रौन्डीजी को देश से निर्वासित कर दिया और सीनेट अध्यक्ष जोसे गीदो ने राष्ट्र-पति का कार्यभार संभाल लिया!

ग्वाटेमाला—ग्वाटेमाला नामक छोटे से मध्य अमरीकी देश में भी जौर्ज डबीको कास्तान्याथा की लम्बे अर्से तक की (१६३१-१६४४) तानाशाही के दौरान में विद्रोह उठ खड़ा हुआ। डबीको एक ईमान-दार और विचारशील अधिनायक था लेकिन वह सरकारी क्षेत्र में जनता को अधिक महत्त्व देने के पक्ष में नहीं था और न ही वह जनता को अपनी राज-नीति पर आक्षेप करने की छूट देना चाहता था।

आर्थिक समस्याओं के कारण ग्वाटेमाला परे-शान हो उठा। भूमि-वितरण के लिए किए गए आन्दो-लन के सम्बन्ध में संयुक्त राज्य ने कुछ निगमों की कड़ी आलोचना की क्योंकि ये निगम वहां के काफी बड़े भूभाग के मालिक थे। इस देश द्वारा निर्यात की जाने वाली वस्तुओं की मात्रा में ७५ प्रतिशत मात्रा कौफी की थी और जब कौफी के दाम गिर गए तब ग्वाटेमाला की आर्थिक स्थिति पर बुरा प्रभाव पड़ा।

कुछ ऐसे साम्यवादी नेताओं ने, जिन्होंने किसी न किसी तरह सरकार के कुछ महत्त्वपूर्ण पद हथिया लिए थे, ग्वाटेमाला की सभी बुराइयों के लिए संयुक्त राज्य को जिम्मेदार ठहराया। १६५४ में जब यह स्पष्ट हो गया कि साम्यवादियों की शक्ति बढ़ाने के लिए रूसी हथियार भेजे जा रहे हैं, तब संयुक्त राज्य ने निकटवर्ती देश होंडुरास तथा निका-राग्वा को हथियार सप्लाई किए। इस सहायता से निर्वासित ग्वाटेमालावासियों को वापस आकर बसने तथा साम्यवाद समर्थक सरकार को उखाड़ फेंकने की दिशा में प्रोत्साहन मिला। यह पहली साम्यवादी सरकार थी जिसे उखाड़ फेंका गया।

फिर भी अशान्ति बनी रही और १६५८ में जब मिगुएल ईथेगोरास फवानतेस का चुनाव हो गया, तो उसने रिहायश की बेहतर सुविधाओं, सार्वजनिक निर्माण कार्यक्रम तथा बिजली के और अधिक प्रयोग के सम्बन्ध में योजनाएँ रखने की कोशिशें कीं। इन सब बातों के बावजूद ग्वाटेमाला के लिए साम्यवाद एक खतरा ही बना रहा।

वेनेज़ुएला—जुआन विसेंटी गोमास ने २७ वर्षों तक (१६०८ से १६३५ तक) वेनेज़ुएला पर बड़ी सख्ती से राज्य किया। फिर भी उसके अधि-नायक रहने के दौरान में तेल और खनिज लोहा भण्डार तथा विदेशी कम्पनियों द्वारा इन साधनों का विकास करने के फलस्वरूप इस देश ने उन्नति की।

गोमास की मृत्यु के बाद इस देश में अधिकांश समय तक सेना का राज्य रहा। विभिन्न अधि-नायकों का भी नियन्त्रण रहा। जब अधिनायक मार्कोस पीरेज हीमानाथ ने १६५८ में दूसरी बार

अपने पांच साल के कार्य-काल की शुरूआत की तब जनता के विद्रोह ने उसे उखाड़ फेंका। परिणामतः एक लोकतंत्रीय सरकार की स्थापना की गई और रोम्यूलो बेटानकूर को, जो १९४५ में उदार सरकार का सदस्य था, राष्ट्रपति बना दिया गया। बेटानकूर की सरकार ने बहुत से आर्थिक सुधारों का सूत्रपात किया। संयुक्त राज्य तथा विश्व बैंक की सहायता से इस सरकार ने विभिन्न उद्योगों के लिए ऋण मंजूर किए। भूमिहीन किसानों को कुछ सार्वजनिक जमीनें भी बांटी गईं।

कोलम्बिया—दूसरे विश्वयुद्ध के बाद से ही हिंसा और विद्रोह ने कोलम्बिया को हिला दिया है। उदारवादियों और कंजरवेटिवों के दोनों मुख्य दलों में बुनियादी तौर पर दलबन्दी थी जिसके कारण कोई भी दल किसी दूसरे दल का शासन सहन नहीं कर सकता था, सफलता प्राप्त करने के लिए राष्ट्रपति को दोनों दलों के उदार विचार वाले सदस्यों के समर्थन की आवश्यकता थी। चूंकि ऐसा होना असम्भव था, अतः फौजी कानून लागू करने के लिए सेना की सहायता ली गई और फिर १९५० में शक्तिशाली अधिनायकों के लिए मार्ग खुल गया। इन अधिनायकों ने व्यक्तिगत स्वतंत्रता को कुचल दिया।

१९५७ में एक असैनिक हड़ताल के रूप में हुए विद्रोह ने इस अधिनायकवाद का अन्त कर दिया। अगले १२ वर्षों तक के लिए यह समझौता हो गया कि राष्ट्रपति के पद पर, कांग्रेस तथा मंत्रिमण्डल में दोनों मुख्य दलों का बारी-बारी से अधिकार होगा।

ब्राजील—राष्ट्रपति गटूलियो वारगास, जिन्होंने १९३० से १९४५ तक एक अधिनायक के रूप में ब्राजील पर शासन किया था, १९५० में राष्ट्रपति चुने गये। १९५४ में अपनी मृत्यु होने तक उन्होंने शासन किया।

युद्ध के बाद के ब्राजील ने अपने कृषि और औद्योगिक उत्पादन में सुधार लाने की दिशा में बहुत प्रयत्न किए। साल्टे योजना को, जिसमें स्वास्थ्य, खाद्यान्न, परिवहन तथा ऊर्जा साधनों को बढ़ाने की व्यवस्था थी, १९५० में कानूनी रूप दे दिया गया।

१९५६ में जुसेलीनो कुबीचेक को पांच वर्षों की अवधि के लिए राष्ट्रपति चुन लिया गया। अप्रैल १९६० में रायो डी जेनारो के स्थान पर समुद्र तल से बहुत ऊँचाई पर बनाए गए ब्राजीला को ब्राजील की राजधानी बना दिया गया।

१९६१ में हुए राष्ट्रपति के अगले चुनाव में जैनियो क्वाड्रोस राष्ट्रपति और जोओ गूलर उपराष्ट्रपति चुने गए। जब वर्ष के समाप्त होने से पहले क्वाड्रोस ने त्यागपत्र दे दिया तो कांग्रेस द्वारा चुने गए प्रधान मंत्री को सभी अधिकार देने के उद्देश्य से संविधान को बहुत जल्दी में संशोधित कर दिया गया। ब्राजीलवासियों को यह खतरा था कि गूलर, जो अन्ततः एक संयुक्त सरकार का राष्ट्रपति बन गया था, देश को साम्यवादी गुट में मिला देगा।

क्यूबा—स्पेन-अमरीकी युद्ध के बाद क्यूबा की स्वतंत्रता को खतरा होने की स्थिति में उसके आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप करने का अधिकार संयुक्त राज्य को था। १९३४ में संयुक्त राज्य ने इस अधिकार का त्याग कर दिया।

१९५२ में मेजर जनरल फुलजेनसियो बाटिस्टा द्वारा सरकार पर नियन्त्रण प्राप्त कर लेने के बाद क्यूबा एक तानाशाही राज्य बन गया। १९५९ के शुरू में एक लोकतंत्रीय नेता का स्वांग भरने वाले फिडल कैस्ट्रो नामक वकील के नेतृत्व में हुए विद्रोह के कारण बाटिस्टा सरकार समाप्त हो गई। प्रधान मंत्री के पद पर पक्की तरह जमने के बाद कैस्ट्रो ने यह घोषणा की कि क्यूबा की आर्थिक व्यवस्था के पुनर्निर्माण के लिए एक अधिनायक का होना आवश्यक है। सैनिक और असैनिक अदालतों ने दर्जनों आदमियों को मृत्युदण्ड दे दिया। क्यूबा वासियों तथा अमरीकी लोगों की निजी सम्पत्ति अधिकार में ले ली गई और इसकी क्षतिपूर्ति के लिए भी कोई आश्वासन नहीं दिया गया।

हजारों क्यूबावासी भाग कर संयुक्त राज्य में चले गए। इस प्रकार निर्वासित क्यूबावासियों में से लगभग १२०० व्यक्तियों ने अप्रैल १९६१ में क्यूबा
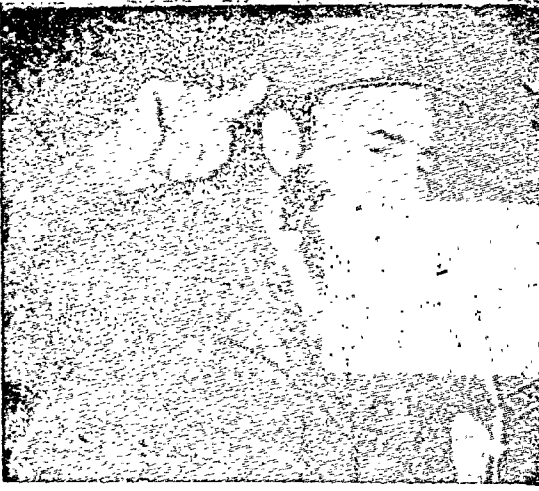
वाईड वर्ल्ड
संयुक्त राज्य पर अकसर तीव्र आक्षेप करते समय किसी बात पर बल देते हुए फिडल कैस्ट्रो।

पर कब्जा करने का प्रयत्न किया। सोवियत बन्दूकों, टैंकों तथा हवाई जहाजों की सहायता से कैस्ट्रो ने आक्रमणकारियों को पीछे धकेल दिया और इस प्रकार क्यूबा के भीतर उत्पन्न विद्रोह को दबा दिया।

दिसम्बर १९६१ में कैस्ट्रो ने यह घोषणा कर दी कि उसकी सरकार औपचारिक तौर पर साम्यवादी गुट में मिल चुकी है। इस घोषणा से पहले यह बहुत ही अच्छी तरह स्पष्ट हो चुका था कि कैस्ट्रो रूस और लाल चीन के साम्यवादी नेताओं की सलाह से काम करता है तथा अन्य लैटिन अमरीकी देशों में अपने सिद्धान्तों का प्रसार करने के प्रयासों को और अधिक बढ़ा रहा है। १९६० में संयुक्त राज्य ने क्यूबा को निर्यात की जाने वाली कुछ वस्तुओं पर प्रतिबन्ध लगा दिया और साथ ही विश्व बाजार से अधिक मूल्य पर क्यूबा की चीनी खरीदने के समझौते को रद्द कर दिया। मई १९६१ तक संयुक्त राज्य तथा आठ लैटिन अमरीकी देशों ने क्यूबा से अपने राजनयिक सम्बन्ध तोड़ लिये थे।

जनवरी १९६२ में अमरीकी राज्य संगठन के २० राष्ट्रों ने एक ऐसा प्रस्ताव स्वीकार किया जिसमें क्यूबा को "चीनी-सोवियत गुट से जुड़ा हुआ मार्क्सलेनिन राज्य" कह कर उसकी निन्दा की गई थी। यद्यपि क्यूबा को अमरीकी राज्य संगठन से बाहर रखा गया था फिर भी छः देशों ने क्यूबा की निन्दा करने से इन्कार कर दिया।

डोमिनिकन गणराज्य—एक ओर तो कैस्ट्रो का क्यूबा तानाशाही में और अधिक मजबूती से जकड़ा गया और दूसरी ओर निकटवर्ती द्वीप हिसपैनियोला पर बसे हुए डोमिनिकन गणराज्य ने जनरल रेफेल त्रूहेयो के लम्बे शासन का अन्त देखा। त्रूहेयो को अपने शासनकाल के ३१वें वर्ष में जून १९६१ में कत्ल कर दिया गया और उसका कठपुतली राष्ट्रपति जोआकिन बालागेर सरकार का अध्यक्ष बन गया।

जनवरी १९६२ में जनरल पेड्रो रोडरिगेज आछावाररिया ने अधिनायक बनने की कोशिश की। डोमिनिकन जनता के क्रोध और संयुक्त राज्य के आर्थिक दबाव की धमकी का परिणाम यह हुआ कि आछावाररिया को फौरन निकाल दिया गया। रेफेल बोन्नेली, जो बालाग्वेर के आधीन उपराष्ट्रपति रहे थे, अब राष्ट्रपति बना दिये गये।

(१) बीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में लैटिन अमरीकी देशों में असन्तोष तथा विद्रोह के कुछ कारण बताइये।
(२) दूसरे विश्वयुद्ध के दौरान में अर्जेन्टीना के लोगों का धुरी देशों के साथ सम्बन्ध इतना मित्रतापूर्ण क्यों रहा?
(३) जुआन पैरोन की कुछ नीतियों का वर्णन कीजिये और यह बताइये कि उसे क्यों उखाड़ फेंका गया?
(४) ग्वाटेमाला में १९५४ में हुए विद्रोह के सम्बन्ध में संयुक्त राज्य की चिन्ता के कारण बताइये।
(५) सरकार की अस्थिरता के बावजूद भी वेनेजुएला के उन्नति करने के क्या कारण थे?
(६) कोलम्बिया के लोगों ने किस प्रकार अपनी राजनीतिक समस्याओं का समाधान किया?

UNITED STATES
BERMUDA IS.
GULF OF MEXICO
MEXICO
BAHAMA ISLANDS
Nassau
NORTH ATLANTIC OCEAN
DOMINICAN REPUBLIC
Port-au-Prince
JAMAICA
HAITI
San Juan
PUERTO RICO
LEEWARD ISLANDS
CARIBBEAN SEA
WINDWARD ISLANDS
GUATEMALA
EL SALVADOR
Managua
San Jose
COSTA RICA
Canal Zone
Panama
PANAMA
Port of Spain
TRINIDAD
Caracas
Georgetown
GUIANA
Bogota
COLOMBIA
Quito
ECUADOR
GALAPAGOS ISLANDS
Madeira
Rio de Janeiro
PACIFIC OCEAN
SOUTH ATLANTIC OCEAN
LATIN AMERICA
Cape Horn

लैटिन अमरीका

वाईड वर्ल्ड

हुआकीपाटो, चिली में कोयला और कच्चे लोहे के उपलब्ध होने के कारण उस स्थान को इस्पात प्लाण्ट के लिए चुना गया। हाल के एक वर्ष में चिली द्वारा निर्यात किए जाने वाले माल का ८३ प्रतिशत भाग खनिज पदार्थ थे— निर्यात किए जाने वाले माल में तांबे का स्थान पहला है।

जमीन है जिसे अभी तक छेड़ा भी नहीं गया है लेकिन उसका अधिकांश भाग या तो पहुँच से बाहर है या बहुत घटिया किस्म का है। दूसरों को जमीन किराये पर देकर खेती कराने की प्रथा व्यापक रूप में प्रचलित है। किसान लोग पुराने अकुशल तथा अवैज्ञानिक तरीकों का प्रयोग करते हैं। बहुत से देशों में तो निर्यात के लिए केवल एक या दो ही फसलों पर जोर दिया गया है जैसे कौफी, रुई, चीनी या फल। संयुक्त राज्य में मन्दी आने पर ब्राजील अपनी कौफी की बिक्री कम हो जाने के कारण तथा क्यूबा अपने चीनी व्यापार के समाप्त हो जाने से चिन्तित हो सकता था।

लैटिन अमरीकी देशों ने अपनी खेती की समस्याओं को सुलझाने के लिए बहुत से तरीके अपनाए हैं। उन्होंने केवल आधुनिक वैज्ञानिक तौर-तरीकों की ही शुरुआत नहीं की है, बल्कि कुछ देशों में तो किसानों के लिए कृषि सम्बन्धी प्रशिक्षण की भी व्यवस्था की गई है। जमीनें जब्त करके तथा भूमिहीन किसानों में उन्हें बांट देने से और अधिक लोगों को कृषि में उत्साह तथा रुचि लेने का अवसर प्राप्त हुआ है। सरकार ने भी सिंचाई साधनों का निर्माण करके, दलदली जमीन का पानी खींच कर तथा जंगलों का सफाया करके और अधिक कृषियोग्य भूमि तैयार की है। प्रयोगों तथा सरकारी ऋणों द्वारा बहुत से कृषि पदार्थों के उत्पादन को प्रोत्साहन मिला है

उरुग्वे ने अपने साधनों का अध्ययन करने और सिफारिशें करने के लिए संयुक्त राष्ट्र खाद्य तथा कृषि संगठन को निमन्त्रण दिया। बीमारी और विनाशकारी कीड़ों के लिए कीटाणुनाशक दवाइयों के प्रयोग, फसलों के हेर-फेर तथा व्यापारिक खाद द्वारा उरुग्वे ने अपने कृषि उत्पादन की दिशा में प्रगति की। यहाँ परिवहन तथा प्रशीतन सुविधाओं के सुधर जाने से कृषि पदार्थों के बेचने की व्यवस्था और अधिक बेहतर हो गई। इसी प्रकार अन्य देशों ने भी अपने प्रयत्नों को विभिन्न दिशाओं में केन्द्रित कर दिया।

खेतों को आधुनिक बनाने के उद्देश्य से बहुत से देशों ने जल विद्युत्-शक्ति-संयंत्र का निर्माण किया तथा गाँवों में बिजली पहुँचाने की योजना को आगे बढ़ाया। खेती की मशीनें बनाने के लिए चिली ने फैक्टरियाँ बनाईं और फसलों को संरक्षित

करने के संयंत्र स्थापित किए। मशीनें खरीदने के लिए सरकार ने किसानों को रुपया उधार दिया और सड़क निर्माण की योजनाओं से किसानों को शहरी बाजारों से सम्बन्ध स्थापित करने में सहायता मिली।

एल साल्वाडोर तथा क्यूबा ने अपने देश के किसानों को कौफी और केला उपजाने में ही सारी शक्ति लगाने के बजाए अनाज, गेहूँ और चावल उगाने की दिशा में भी प्रोत्साहित करके इन चीजों के आयात को बहुत कम कर दिया है।

१. क्या कारण है कि लैटिन अमरीका की खेती सम्बन्धी प्रगति संयुक्त राज्य की प्रगति जैसी तेज़ नहीं रही?
२. लैटिन अमरीका में कृषि-सुधार के लिए क्या कदम उठाए गए हैं?
३. यदि कोई देश केवल एक या दो फसलों, जैसे कौफी या केलों के उत्पादन पर ही जोर देता है तो उससे क्या हानि होती है?

लैटिन अमरीकियों की सांस्कृतिक प्रगति

शिक्षा: सरकारी मामलों में तथा वेतन-भोगियों और किसानों की आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाली सरकारी नीतियों में जनता की आवाज बुलन्द करने की जबरदस्त माँग ने सरकारों को शिक्षा सम्बन्धी सुविधाओं का प्रसार करने की प्रेरणा दी है। लोकतन्त्रीय व्यवस्था के लिए पढ़ने और लिखने की योग्यता आवश्यक है। साथ ही, समझदारी से मतदान करने के लिए जनता का शिक्षित होना आवश्यक है। इसी तरह देश की सामान्य आर्थिक प्रगति के लिए भी जनता का पढ़ा लिखा होना जरूरी है। किसानों को कृषि विषयक समाचार पत्र और बुलेटिन पढ़ने चाहिए और मजदूरों को भी कम्पनी तथा संघ सम्बन्धी नीतियों से परिचित होना चाहिए। आदिवासियों (रेड इंडियनों), नीग्रो और मिले जुले वंशों के व्यक्तियों के बहुत बड़ी संख्या में अशिक्षित होने की समस्या बहुत समय से लैटिन अमरीकी देशों की प्रगति में गतिरोध उत्पन्न करती रही है। लेकिन अब इस दिशा में किए गए जोरदार प्रयत्नों से अन्ततः अशिक्षा दूर होती जा रही है।

१९३० से आरम्भ दशक में मेक्सीको की कारदानास की सरकार ने शिक्षा का प्रसार करके प्रौढ़ अशिक्षित जनता का प्रतिशत ७० से घटा

ब्राजील के राष्ट्रपति का निवास 'डान का महल' दुनिया की आधुनिकतम राजधानियों में से एक शानदार राजधानी—ब्राजिलिया का प्रतीक बन गया है। यह महल ओस्कर निमेयेर नामक ब्राजील के आर्किटेक्ट द्वारा बनवाया गया।
वैरिग एयरलाइन्स
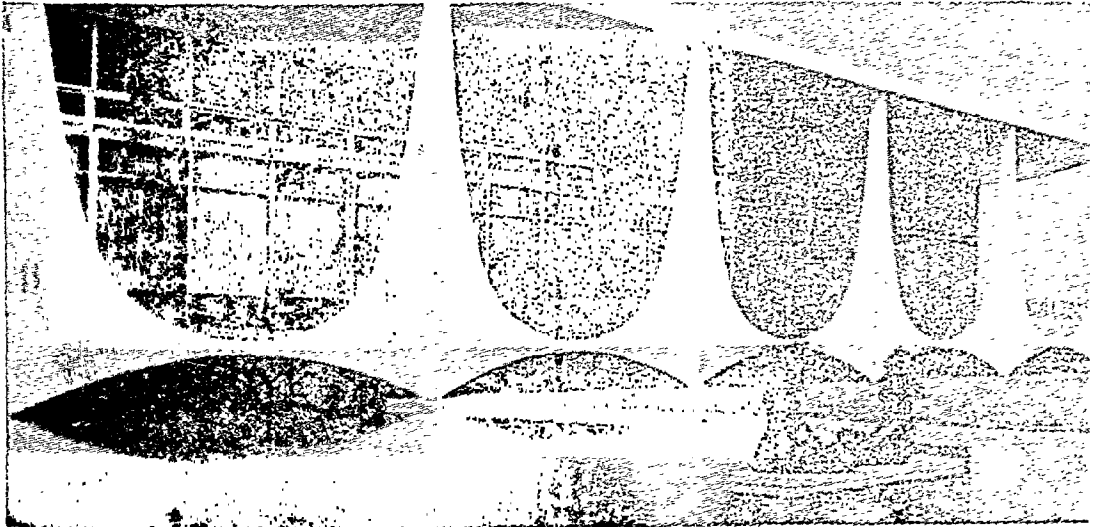
कर ४५ कर दिया। ऐसा करने के लिए यहाँ की सरकार ने स्कूलों की संख्या दुगनी और अर्हताप्राप्त अध्यापकों की संख्या चौगुनी कर दी। बहुत से अन्य देशों की तरह मेक्सीको के स्कूलों ने सामुदायिक केन्द्रों का काम भी किया जहाँ किसानों, मिस्त्रियों तथा मकान बनाने वाले लोगों के लिए प्रौढ़ शिक्षा पाठ्यक्रमों की व्यवस्था कर दी गई। वेनेजुएला ने अपने तेल उद्योग से प्राप्त होने वाली आय का कुछ भाग स्कूल बनाने और अध्यापकों को प्रशिक्षित करने पर खर्च किया। साथ ही यहाँ की सरकार ने विकासशील औद्योगिक आर्थिक व्यवस्था में उपयुक्त स्थान दिलाने के लिए अपने नौजवानों को प्रशिक्षित करने की दिशा में मार्गदर्शन हेतु चिली के परामर्शदाताओं को आमन्त्रित किया।

अशिक्षा दूर करने के मामले में अपनाए गए तरीकों की दृष्टि से लैटिन अमरीकी देशों में उरुग्वे का स्थान पहला है। इस देश ने केवल अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा ही लागू नहीं की है बल्कि उसके साथ-साथ कालिजों में निःशुल्क परीक्षा की भी व्यवस्था की है।

शिक्षा सम्बन्धी सुविधाओं की सबसे खराब स्थिति बोलिविया, पराग्वे और हैती में है। लेकिन हाल के वर्षों में तो इनसे भी अधिक पिछड़े देशों ने इस दिशा में प्रगति की है। दूसरे विश्वयुद्ध के दौरान में पेरू ने लगभग ४००० प्राथमिक स्कूल खोले और पेरू के लाखों आदिवासियों को स्पेनिश पढ़ाने का अभियान चलाया। युद्ध के बाद मेक्सीको ने रात्रि पाठशालाओं में एक करोड़ अशिक्षित व्यक्तियों को पढ़ाने के कार्यक्रम का आरम्भ किया। 'प्रत्येक व्यक्ति कम से कम एक व्यक्ति को पढ़ाए' इस नारे के अधीन लिखना और पढ़ना जानने वाले प्रत्येक प्रौढ़ व्यक्ति को किसी भी दूसरे व्यक्ति को पढ़ाने के लिए कहा गया। १९५२ में राष्ट्रीय विश्वविद्यालय, मेक्सीको नाम की नई शिक्षा संस्था के खुल जाने से शैक्षिक प्रगति का एक नया स्तर कायम हो गया।

साहित्य—आधुनिक लैटिन अमरीकी लेखकों ने अपनी कृतियों में यथार्थता का ही सहारा लिया है क्योंकि इन्होंने मध्य और दक्षिणी अमरीका में मनुष्य और प्राकृतिक शक्तियों के मध्य सतत संघर्ष की कहानियाँ लिखी हैं। कोलम्बिया का जोज रेवारा, अमेजन जंगल के अन्दर वेनेजुएला और कोलम्बिया की सीमाएँ निर्धारित करने के लिए बने आयोग का एक सदस्य था। इस कारण उसे अपने अद्वितीय उपन्यास "दी वर्टेक्स" के लिए प्रत्यक्ष पृष्ठभूमि मिल गई। चावाज फ्रेन्को जैसे इक्वेडोर के लेखकों ने अपने देश के आदिवासियों के सम्बन्ध में लिखा है।

उद्योगवाद के साथ-साथ फैक्ट्रियों, शहरों तथा वेतनभोगियों के वर्गों से उत्पन्न होने वाली समस्याओं पर बहुत से उपन्यासों तथा उपन्यासेतर पुस्तकों की रचना की गई है। उपन्यासकार अ्रेसा अरान्या ने नये शहरों, श्रमिकों और प्रबन्धकों के मध्य झगड़ों तथा निम्न वर्ग के लोगों की कठिनाइयों में से अपने उपन्यासों के कथानक चुने हैं। कोलम्बिया का इतिहासवेत्ता जर्मन आर्सिन्यागास लैटिन अमरीका के औपनिवेशिक युग के इतिहासों के लिए दूर-दूर तक प्रसिद्ध है।

कई लैटिन अमरीकी राज्यों की बहुत बड़ी जनसंख्या आदिवासियों तथा नीग्रो लोगों की है। लोकगीतों का संग्रह करके तथा नीग्रो लोगों द्वारा अन्य क्षेत्रों में प्राप्त उपलब्धियों को विस्तार से कह कर फेरनैण्डो आर्टिज फेराण्डीज़ तथा निकोलस गोयन नाम के क्यूबा के लेखकों ने उस द्वीप की संस्कृति में नीग्रो लोगों के योगदान की ओर ध्यान दिलाया है।

चित्रकला—मैक्सीको के चित्रकार डियगो रिवेरा ने काम में लगे मेक्सीकी लोगों के भित्तिचित्र बना कर अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कर ली। जोज़ ओरज़ोको नाम के मेक्सीको के दूसरे चित्रकार ने ग्वाडालाजारा विश्वविद्यालय में दीवारों पर बनाए गए अपने चित्रों में मेक्सीको के इतिहास का दिग्दर्शन कराया है। ब्राज़ील के कैण्डिडो पोर्तेनारे ने विभिन्न शैलियों का सहारा लिया क्योंकि उन्होंने अपने चित्रों में ब्राज़ील के दलित लोगों के जीवन की कठिन परिस्थितियों का चित्रण किया था।

संगीत—आज संयुक्त राज्य के लगभग सभी युवक युवतियाँ लैटिन अमरीकी संगीत की प्रशंसा करते हैं। लैटिन अमरीका के संगीतकारों ने आदिवासियों, नीग्रो तथा गोरे लोगों के लोकगीतों के रिकार्ड तैयार किए हैं। इन संगीतकारों ने अपने संगीत का स्तर ऊँचा बनाए रखने के उद्देश्य से विश्वप्रसिद्ध पुराने उस्तादों की शैलियों की नकल की है। ब्राजील के हेटर विल्लालोबोस को उनकी सिंफनियों (स्वर संगीतियों) तथा संगीत-नाट्यों के लिए सारी दुनिया से प्रशंसा मिली है। १९५८ में अखिल अमरीकी संघ ने वाशिंगटन में पहले अन्तर-अमरीकी संगीत सम्मेलन का संयोजन किया जिसमें अमरीका के ख्याति-प्राप्त संगीतकारों तथा कलाकारों की रचनाएँ प्रस्तुत की गईं।

१. लैटिन अमरीका के हाल के तीन महत्त्वपूर्ण लेखकों के नाम बताइए तथा उनकी रचनाओं के नाम भी लिखिए।
२. लैटिन अमरीका के दो प्रसिद्ध चित्रकारों का परिचय दीजिए।
३. लैटिन अमरीका के संगीतकारों ने अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त करने के लिए क्या तरीके अपनाए?

लैटिन अमरीका में अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग

बीसवीं शताब्दी में बाहरी आक्रमण से सुरक्षा के लिए परस्पर शान्ति बनाए रखने के लिए, तथा सभी देशों को और अधिक समृद्ध बनाने के उद्देश्य से सभी अमरीकी राष्ट्र एक दूसरे के अधिक निकट आ गए हैं। दोनों विश्वयुद्धों ने अमरीकी राष्ट्रों की शान्ति तथा सुरक्षा के लिए खतरा पैदा किया है। राष्ट्रसंघ तथा बाद में इसके स्थान पर सत्तारूढ़ होने वाले संयुक्त राष्ट्रसंघ नाम के दोनों विश्वशान्ति संगठनों को इन देशों का ठोस समर्थन मिला। पिछले चालीस वर्षों के दौरान लैटिन अमरीका में बार-बार होने वाली क्रान्तियों ने निकटवर्ती राज्यों में तनाव पैदा कर दिया है। अक्सर एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र पर राजद्रोहियों को प्रश्रय देने और उन्हें उकसाने का आरोप लगाता था। सीमा सम्बन्धी विवादों से मतभेद पैदा हो जाते थे। १९३० के जमाने की जबरदस्त आर्थिक मन्दी तथा युद्ध के दौरान अपने विदेशी व्यापार में गड़बड़ी होने के कारण पश्चिमी गोलार्द्ध के राष्ट्रों को अपनी आर्थिक समृद्धि के लिए एक दूसरे पर आश्रित होना पड़ा था। अतः यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि १९४८ में अमरीकी जनता ने अमरीकी राज्य संघ नाम का अपना सुरक्षा संगठन तैयार कर लिया।

लटिन अमरीका के अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के बारे में किसी प्रकार का विचार विमर्श करते समय संयुक्त राज्य के महन् कार्य को ध्यान में रखना आवश्यक है। उन्नीसवीं शताब्दी में उत्तर में स्थित इस महान् पड़ोसी देश ने मध्य तथा दक्षिणी अमरीका के सभी देशों के लिए दो बुनियादी नीतियों को जन्म दिया। इन दोनों नीतियों के नाम इस प्रकार थे: मनरो सिद्धान्त तथा अखिल-अमरीकावाद।

मनरो सिद्धान्त—यद्यपि राष्ट्रपति जेम्स मनरो ने अपने नाम से प्रसिद्ध नीति की घोषणा १८२३ में ही कर दी थी, फिर भी यह नीति बीसवीं शताब्दी से पहले पूरी तरह लागू नहीं हो सकी। उसी समय मनरो सिद्धान्त की ऐसी व्याख्या भी की गई जिसमें अमरीका की नई समस्याओं का समावेश कर दिया गया था। १८९५ से १९१२ के दौरान किए गए इन संशोधनों को अर्थापत्तियों के नाम से पुकारा

चार्ल्स पैरी वीमर फ्राम थ्री लायन्स

बुएनोस एरीस के व्यस्त बंदरगाह पर खड़े हुए बहुत से राष्ट्रों के जलयान। रोमन अमरीका के सबसे बड़े शहर में बड़े-बड़े मैदान हैं और यह एक आधुनिक राजधानी है।

गया। रूज़वेल्ट के १९०४ की अर्थापत्ति के अधीन संयुक्त राज्य को ऐसे किसी भी अमरीकी राष्ट्र के आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप करने का दावा किया गया था जो अपने यहाँ शान्ति बनाए रखने और आर्थिक व्यवस्था को ठीक-ठीक रखने में असमर्थ दिखाई देता हो। १९३० वाले दशक में रूज़वेल्ट की अर्थापत्ति के विपरीत एक और अर्थापत्ति सामने आयी। फ्रेन्कलिन डी० रूज़वेल्ट की यह धारणा थी कि एक राष्ट्र का दूसरे राष्ट्र के मामलों में हस्तक्षेप करना अच्छे पड़ोसी का काम नहीं है। १९३३ में मोन्टेवीडिया में हुई नियमित अन्तर-अमरीकी बैठक में सभी सदस्य राष्ट्रों ने 'अच्छे पड़ोसी की नीति' नाम के सिद्धान्त को अपनी स्वीकृति दे दी। इस समय तक मनरो सिद्धान्त केवल संयुक्त राज्य की एक नीति की तरह था और लैटिन अमरीकियों ने इस सिद्धान्त को अपनी नीति के रूप में स्वीकार नहीं किया था। फिर भी जैसे ही १९३५ में हिटलर और मुसोलिनी ने पुनः शस्त्रीकरण करके आक्रमण किया वैसे ही यह स्पष्ट हो गया।

आधुनिक हथियारों के कारण नई दुनिया को बाहरी देशों से खतरा बना रहेगा। बुएनोस एरीस में १९३६ में हुई विशेष अखिल अमरीकी बैठक में यह निर्णय किया गया कि किसी एक राष्ट्र की सुरक्षा को खतरा होने की स्थिति में सभी अमरीकी राष्ट्रों को एक दूसरे से सलाह करनी चाहिए। लिमा, पेरू, में १९३८ में हुए अगले नियमित अन्तर अमरीकी सम्मेलन में मनरो सिद्धान्त को स्वीकार कर लिया गया। साथ ही यह भी निर्णय किया कि यह सिद्धान्त सभी अमरीकी राष्ट्रों पर लागू होगा।

अखिल अमरीकी आन्दोलन—अखिल अमरीकी आन्दोलन भी मनरो सिद्धान्त जितना पुराना है और इन दोनों सिद्धान्तों का गहरा सम्बन्ध है। अखिल अमरीकी सिद्धान्त का मतलब यह है कि सामान्य हितों के लिए सभी अमरीकी राष्ट्र स्वेच्छा से सहयोग देंगे। साइमन बोलिवर ने तो बहुत पहले १८२६ में पनामा में हुई बैठक में यह कोशिश की थी कि उक्त आपसी सहयोग के साथ-साथ परस्पर-सुरक्षा की व्यवस्था भी की जाए। संयुक्त राज्य ने न तो इस बैठक में और न ही बाद में हुई दो अन्य बैठकों में भाग लिया। फिर भी

व्यापार के माध्यम से एक दूसरे के अधिक निकट आकर काम करने के तरीकों पर विचार-विमर्श करने के लिए संयुक्त राज्य ने १८८९ में वाशिंगटन में एक अखिल अमरीकी सम्मेलन बुलाने में पहल की। इस सम्मेलन में वाशिंगटन में अखिल अमरीकी संघ के नाम से एक स्थायी मुख्यालय और कर्मचारी वर्ग की व्यवस्था करने के अतिरिक्त कोई और विशेष उपलब्धि नहीं हुई। अखिल अमरीकी संघ का सबसे मुख्य काम बाजारों, वस्तुओं, कीमतों तथा सम्बन्धित सामाजिक और आर्थिक समाचारों की जानकारी एकत्रित करना और उसका आदान-प्रदान करना था। सदस्य राष्ट्रों ने इस मामले में आगे और विचार करने के लिए प्रत्येक पांच वर्षों में एक बार बैठक बुलाना स्वीकार कर लिया। प्रथम विश्वयुद्ध के कारण बैठकों के इस क्रम में गड़बड़ी पैदा हो गई और संयुक्त राज्य द्वारा मनरो सिद्धान्त लागू करने का परिणाम यह हुआ कि और अधिक कठोरता से लैटिन अमरीका अपने उत्तरी पड़ोसी से नाराज हो गया। अतः १९२० में हुई बैठकों के परिणाम विशेषत: संयुक्त राज्य की ऊँचे तटकरों की नीति के कारण सन्तोषपूर्ण नहीं समझे गए।

१९३० के दशक में 'अच्छे पड़ोसी की नीति' से एक अच्छी बात यह सिद्ध हुई कि संयुक्त राज्य अन्य देशों के प्रति समानता का व्यवहार रखना चाहता था। मन्दी के कारण १९३४ में स्वीकृत व्यापार-समझौता अधिनियम के अधीन संयुक्त राज्य के राष्ट्रपति को पारस्परिक व्यापार समझौते के सम्बन्ध में बातचीत करने का अधिकार दे दिया गया। इस प्रकार संयुक्त राज्य अपने तटकर कम कर सकता था और बदले में दूसरे राष्ट्रों से भी यही सुविधा प्राप्त कर सकता था। इस व्यवस्था से संयुक्त राज्य तथा क्यूबा और ब्राजील जैसे लैटिन अमरीकी देशों को लाभ पहुँचा।

दूसरा विश्वयुद्ध—अमरीकी एकता की भावना दूसरे विश्वयुद्ध के शुरू में उभर कर आई। पोलैण्ड पर हिटलर के हमले के तीन सप्ताह बाद अपनी कार्यवाही का रूप निर्धारित करने के लिए अमरीकी गणराज्यों के प्रतिनिधियों ने पनामा में हुई बैठक में भाग लिया। इन्होंने तटस्थता की एक नीति अपनाई और इस महाद्वीप के चारों ओर ३०० मील तक के समुद्र को तटस्थ क्षेत्र घोषित किया। इन्होंने युद्ध-रत राष्ट्रों को यह चेतावनी दी कि वे इस क्षेत्र में युद्ध की आग न भड़काएँ। फ्रांसीसी और डच गिनी में जर्मनी के हस्तक्षेप करने के खतरे पर विचार करने के लिए अमरीकी राष्ट्रों ने अगले वर्ष हवाना में हुई बैठक में भाग लिया। उन्होंने युद्ध-अवधि तक के लिए आवश्यकता पड़ने पर इन बस्तियों को अपने अधिकार में ले लेना स्वीकार कर लिया।

संयुक्त राज्य के पर्ल हार्बर पर १९४१ में हुआ जापानी आक्रमण इस बात की परीक्षा थी कि क्या लैटिन अमरीकी देश लिमा सम्मेलन में १९३८ में स्वीकृत समझौते के प्रति सचेत हैं। जनवरी १९४२ में रायोडीजैनारो में हुए अमरीकी सरकारों के सम्मेलन में अर्जेन्टीना और चिली के अतिरिक्त सभी देशों ने आक्रमणकारियों के साथ राजनीतिक सम्बन्ध तोड़ दिये। एकता की भावना से प्रेरित होकर रायोडीजैनारो में इकट्ठे हुए प्रतिनिधियों ने एक अन्तर-अमरीकी सुरक्षा कोष स्थापित किया। साथ ही इन्होंने एक नए अमरीकी अन्तर्राष्ट्रीय संगठन की सिफारिश की और धुरी कम्पनियों से सम्बन्ध तोड़ दिए। चूँकि अर्जेन्टीना अपने व्यापार के लिए बहुत हद तक इटली और जर्मनी पर आश्रित था, इसलिए उसने तटस्थ रहना बेहतर समझा। संयुक्त राज्य ने उधार पट्टा अधिनियम

की सुविधाओं का विस्तार लैटिन अमरीका में कर दिया और इसके बदले में सुरक्षा अड्डे स्थापित करने का अधिकार प्राप्त कर लिया। लैटिन अमरीका के पास कलई, तेल, रबड़, चीन तथा नाइट्रेट जैसी आधारभूत वस्तुओं की बहुत बड़ी मात्रा थी। लैटिन अमरीका संयुक्त राज्य के साथ इन वस्तुओं का भारी व्यापार करता था। सार्वजनिक निर्माण कार्यों तथा अपनी औद्योगिक मशीनों को बढ़ाने की दिशा में सहायता देने के लिए संयुक्त राज्य ने लैटिन अमरीका को ऋण दिये।

मैक्सीको में चैपुलटेपेक स्थान पर १९४५ के शुरू में अमरीकी गणराज्यों ने अर्जेन्टीना को धुरी राष्ट्रों के विरुद्ध युद्ध में सहयोग देने के लिए प्रेरित किया। ऐसा करने का उद्देश्य यह था कि शान्ति स्थापित करने और संयुक्त राष्ट्र संघ की योजना बनाने में सहयोग देने के लिए सभी अमरीकी राष्ट्र स्वतन्त्र हों। युद्ध के बाद के समय को ध्यान में रखते हुए इन्होंने अमरीकी लोगों के लिए एक आर्थिक घोषणा-पत्र तैयार किया। इस घोषणा-पत्र में यह कहा गया था कि वे अपना उत्पादन बढ़ाएँगे और अपना जीवन-स्तर ऊँचा उठाने के लिए एक दूसरे की सहायता करेंगे।

युद्ध के बाद सहयोग की भावना—सभी अमरीकी राष्ट्र संयुक्त राष्ट्र संघ के सदस्य बन गए। अखिल अमरीकी आन्दोलन के सम्बन्ध में संयुक्त राष्ट्र संघ के घोषणा-पत्र की यह धारणा थी कि उक्त आन्दोलन संयुक्त राष्ट्र के उद्देश्यों से मेल खाता हुआ एक प्रादेशिक संगठन है। बोगोटा, कोलम्बिया में १९४८ में हुए नवें अन्तर अमरीकी सम्मेलन में पुराने अखिल अमरीकी संघ का अमरीकी राज्य संगठन के रूप में पुनर्गठन किया गया। इस प्रकार किए गए पुनर्गठन में ऐसी व्यवस्था की गई कि इसका नेतृत्व अधिकांशतः संयुक्त राज्य के बजाए अन्य राष्ट्रों को सौंप दिया जाए। तदनुसार कोलम्बिया के अलबर्टो लेरास कामार्गो पहले महानिदेशक (डायरेक्टर जनरल) चुने गए। सभी राष्ट्रों ने यह स्वीकार किया कि किसी भी राष्ट्र पर बाहरी आक्रमण होने की स्थिति में फौरन सहायता दी जाएगी। १९५४ में काराकास में हुए दूसरे सम्मेलन में एक महत्वपूर्ण प्रस्ताव स्वीकार किया गया। इस प्रस्ताव में यह कहा गया कि साम्यवादी राजनीतिक नियंत्रण के अधीन किसी भी अमरीकी राष्ट्र के सम्बन्ध में यह समझा जाएगा कि उस पर विदेशी आक्रमण किया जा रहा है।

उसी बैठक में रोमन अमरीकी प्रतिनिधियों ने यह शिकायत की कि संयुक्त राष्ट्र उनके देशों की आर्थिक सहायतार्थ उतनी रकम नहीं खर्च कर रहा है जितनी कि योरुप तथा अमरीका में। १९५८ में उपराष्ट्रपति रिचर्ड निक्सन की लैटिन अमरीका की सद्भावना यात्रा के अवसर पर यही असन्तोष सामने आया।

संयुक्त राज्य तथा लैटिन अमरीका के आपसी सम्बन्धों को ऋण में दिए गए डालरों की तुलना में सांस्कृतिक आदान-प्रदान द्वारा अधिक बल मिला। लैटिन अमरीका से आए हुए विद्यार्थियों को संयुक्त राज्य के विश्वविद्यालयों द्वारा छात्रवृत्तियां दी जाती थीं। इसी प्रकार, संयुक्त राज्य के अध्यापकों और विद्यार्थियों को लैटिन अमरीकी कालिजों में पठन-पाठन करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता था। राष्ट्रपति ट्रूमैन के चारसूत्री कार्यक्रम के नाम से प्रसिद्ध तकनीकी सहायता कार्यक्रम के अन्तर्गत संयुक्त राज्य अपने वैज्ञानिक अनुभव और ज्ञान से इच्छुक देशों को अवगत करा देता था। राष्ट्रपति कैनेडी ने प्रगति कार्यक्रम से सम्बन्धित एक समझौता १९ लैटिन अमरीकी देशों के सम्मुख रखा। इस कार्यक्रम में प्रत्येक देश की प्रति व्यक्ति आय को बढ़ाने के लिए साझे बाजारों की स्थापना को प्रोत्साहन दिया गया था। साथ ही इसमें कुछ सामाजिक व भूमि सम्बन्धी सुधार सुझाए गए थे।

१. बीसवीं शताब्दी में लैटिन अमरीकी देशों के एक दूसरे के अधिक निकट आने के क्या कारण हैं?
२. हाल के वर्षों में मनरो सिद्धान्त की क्या-क्या नई व्याख्याएँ की गई हैं?
३. लैटिन अमरीकी लोगों ने किस प्रकार मनरो सिद्धान्त को स्वीकार किया?

४. संयुक्त राज्य की "अच्छे पड़ोसी की नीति" से आप क्या समझते हैं ?

५. अखिल अमरीकी आन्दोलन से आप क्या समझते हैं ? इसके उद्देश्य बताइये।

६. दूसरे विश्वयुद्ध के बाद कौन-कौन से अन्तर-अमरीकी सम्मेलन हुए ? यह भी बताइये कि इन सम्मेलनों में कौनसी नीतियों को अन्तिम रूप दिया गया और ये नीतियां किन समस्याओं को हल करने के लिए तैयार की गईं ?

वाद-विवाद के लिए प्रश्न

१. लटिन अमरीकी देशों में कई बार हिंसात्मक क्रांतियां हुईं लेकिन संयुक्त राज्य में नहीं। इसके क्या कारण हैं ?

२. संयुक्त राज्य विरोधी दृष्टिकोण के सम्बन्ध में जिसका परिचय अवसर लैटिन अमरीका में मिलता है, आप क्या समझते हैं ?

३. लैटिन अमरीका में बहुत बड़ी संख्या में मौजूद दुखी लोगों का जीवन-स्तर ऊँचा उठाने के लिए क्या कदम उठाए जा सकते हैं ?

४. क्या कारण है कि "अच्छे पड़ोसी की नीति" को आगे बढ़ाने के लिए संयुक्त राज्य द्वारा दिए जाने वाले ऋण या रुपयों के उपहार अपर्याप्त हैं ?

५. स्थायी सरकार और समृद्ध जनता का शिक्षा से क्या सम्बन्ध है ?

६. कनाडा के अखिल अमरीकी संघ का सदस्य न होने के क्या कारण हैं ?

७. लैटिन अमरीकी राजनीतिक एकता के निर्माण में किन तत्त्वों के कारण बाधा उत्पन्न हुई है ? क्या आपके विचार से भविष्य में ऐसी राजनीतिक एकता की संभावना है ?

८. इन विषयों पर वाद-विवाद कीजिए :

(क) संयुक्त राष्ट्र संघ के रहते हुए अमरीकी राज्य संगठन की आवश्यकता नहीं है।

(ख) छोटे-छोटे मध्य अमरीकी देशों को एक मध्य अमरीकी संघ में सम्मिलित हो जाना चाहिए।

कोलम्बिया में वयस्कों को यूनेस्को के सौजन्य से रेडियो के माध्यम से शिक्षा दी जाती है।

इतिहास के उपकरणों का प्रयोग

I. नाम, तारीखें तथा स्थान

१. क्या आप ये वाक्यांश समझा सकते हैं ? प्रगति के लिए संधि, धुरी देश, ब्राजील के श्रमिकों की महापरिषद्, अच्छे पड़ोसी की नीति, ला प्रेन्सा, उधार-पट्टा अधिनियम, मनरो सिद्धान्त, राष्ट्रीयकृत उद्योग, अमरीकी राज्य संघ, अखिल-अमरीकावाद, दि बर्टेक्स, संयुक्त राष्ट्र घोषणापत्र, संयुक्त राष्ट्र खाद्य तथा कृषि संगठन।

२. इन तारीखों का महत्त्व समझाइए

१९४८, १९५२, १९५४, १९५५.

३. नक्शे में इन देशों का पता लगाइए :

अर्जन्टीना, बोलीविया, बोगोटा, ब्राजीलिया, ब्राजील, बुएनोस एरीस, काराकास, चापुल्टेपेक, चिली, कोलम्बिया, क्यूबा, एल साल्वाडोर, ग्वाटेमाला, हैती, हवाना, लिमा, मेक्सीको, निकारग्वा, पनामा, पराग्वे, पेरु, रायो डी जैनारो, साओ पालो, सैण्टो डोमिनगो, उरुग्वे, वेनेजुएला।

४. निम्न व्यक्तियों का परिचय दीजिए :

ग्रेसा अरान्हा, जैकोबा अरबेन्ज, रैफेल वालाग्वेर, फुलजेनको बाटिस्टा, रोम्यूलो वेटानकूर, साइमन बोलिवर, रैफेल बोनेल्ली, लाजारो कार्दानास, जौर्ज डविको कास्तान्याथा, फिडल कैस्ट्रो, पेड्रो आकावाररिया, आर्टुरो फ्रौन्डीजी, माईग्वेल वाई पवानटास, रोम्यूलो गैलेगास, जुआन विसेंटी गोमास, ल्यूरेआनो गोमास, निकोलस गोयन, जोओ गूलर, मार्कस पीरेज, जीमानाथ, जुस्केलिनो कुबीचेक, रिचर्ड निक्सन, जोज ओरजोको, जुआन पैरोन,

कैण्डिडो पोर्तेनारी, जैनियो क्वाड्रोस, जोज रिवेरा, फ्रैंकलिन डी रुजवेल्ट, रैफेल त्रूहेयो, हैरी ट्रूमैन, गेटुलो वारागास, हेटर विल्लालोवास।

II. क्या आप अपनी बात अच्छी तरह समझा सकते हैं ?

१. अमरीका के नक्शे पर सभी देशों का तथा उनकी राजधानियों का पता लगाइए।
२. "हमारे जीवन में लैटिन अमरीका" इस विषय पर एक सम्पादकीय लेख लिखिए।
३. साधनों को दर्शाने वाला एक नक्शा तैयार कीजिए जिससे यह पता चल सके कि प्रत्येक अमरीकी देश कौन-कौन सी मुख्य वस्तुएँ दुनिया को दे सकता है।
४. निम्न विषयों में से प्रत्येक पर एक वार्ता का आयोजन कीजिए।
(क) केलों का (या काफी) का उत्पादन कैसे किया जाता है ?
(ख) 'प्रगति के लिए संधि' कार्यक्रम।
(ग) आधुनिक पेरु में आदिवासी लोग।
(घ) अमरीकी राज्य संगठन।
(ङ) किसी देश में केवल एक ही उत्पादन पर आधारित आर्थिक व्यवस्था खराब क्यों रहती है ?

III. बुलेटिन बोर्ड के लिए

१. लैटिन अमरीकी देशों के आधुनिक नेताओं का एक बुलेटिन बोर्ड डिसप्ले तैयार कीजिए।
२. किसी भी मुख्य समाचारपत्र को सप्ताह के प्रत्येक दिन ध्यान से पढ़िए। लैटिन अमरीका से सम्बन्धित लेखों को क्लिप लगाकर "हमारे दक्षिणी पड़ोसी" शीर्षक के अधीन एक डिसप्ले तैयार कीजिए।
३. पत्रिकाओं में से हवाई यात्राओं तथा जल-यात्राओं से सम्बन्धित विज्ञापनों और लैटिन अमरीका के ऐतिहासिक तथा सजीव स्थानों के चित्र इकट्ठे करके बुलेटिन बोर्ड के लिए एक डिसप्ले तैयार कीजिये।

IV. समवेत कार्यक्रम

१ १४ अप्रैल को अखिल अमरीकी दिवस मनाने के लिए एक समवेत कार्यक्रम तैयार कीजिए। इस सम्बन्ध में वाशिंगटन स्थित अखिल अमरीकी संघ के पास सहायक सामग्री और विचार मौजूद हैं।
२. लैटिन अमरीका के हाल के एक या उससे अधिक नेताओं का जीवन नाटक रूप में परिवर्तित कीजिए।

V. संगीत तथा चित्रकला

लैटिन अमरीका के संगीतकारों द्वारा रचित संगीत के रिकार्डों का एक कार्यक्रम तैयार करके कक्षा में पेश कीजिए। इस कार्यक्रम में संगीत या संगीतकारों के सम्बन्ध में छोटी-छोटी वर्णनात्मक टिप्पणियां भी शामिल कर लीजिए।
२. कहीं से प्रसिद्ध चित्रों का एक अलबम ले लीजिए और यह देखिए कि इन चित्रों में कौनसे चित्र लैटिन अमरीका के कलाकारों के हैं। जब आप ये चित्र कक्षा में दिखाएँ तो प्रत्येक चित्र के सम्बध में एक संक्षिप्त वार्ता भी प्रस्तुत कीजिये।
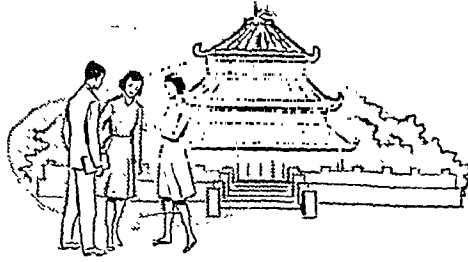
४३ सांसारिक मामलों के रंगमंच पर एशिया का आगमन

पश्चिमी योरुप में औद्योगिक क्रान्ति के समय एशिया की अधिकांश जनता जीवन के पुराने ढर्रे पर ही चलती रही और औद्योगिक तथा परिवहन के क्षेत्रों में की गई प्रगति से अछूती रही। परिणाम यह हुआ कि वह जनता पश्चिमी पूँजीवाद का दबाव सहन नहीं कर सकी, और, जैसा कि आपने देखा होगा, एशिया के बहुत बड़े क्षेत्रों ने योरोपीय राष्ट्रों की पराधीनता स्वीकार कर ली।

फिर भी दोनों विश्वयुद्धों ने एशिया की जनता में वैज्ञानिक और तकनीकी दक्षता प्राप्त करने की इच्छा जाग्रत कर दी जिससे वह स्वयं अपने भाग्य का निर्माण कर सके। फिर भी जिस युग में एशिया रह रहा था उसमें से एकदम निकल कर बीसवीं सदी की दुनिया में कदम रखना कोई आसान काम नहीं था। यह असाधारण कदम उठाने में एशिया की जनता को बहुत सी समस्याओं का सामना करना पड़ा और बहुत से महत्त्वपूर्ण निर्णय करने पड़े। सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण निर्णयों में से एक निर्णय इस बात से सम्बन्धित था कि वे लोग किस प्रकार की सरकार और किस ढंग की आर्थिक व्यवस्था रखना चाहेंगे।

मुख्य चीनी प्रदेश तथा फारमोसा द्वीप का तुलनात्मक अध्ययन

चीन का गृहयुद्ध, जिसने दूसरे विश्वयुद्ध के दौरान में जोर पकड़ लिया था, जापानियों की हार के बाद उस विशाल देश पर आफतें लाता रहा। जनरल चियांग काई-शेक ने साम्यवादियों का कट्टर विरोध किया और उन्हें अपनी सरकार में कोई स्थान नहीं लेने दिया। चियांग की चीनी राष्ट्रवादी सरकार पर उसके विरोधियों ने अयोग्यता और भ्रष्टाचार का आरोप लगाया। कीमतों में भारी वृद्धि हो गई और चीन के लाखों लोग गरीबी में गुज़र कर रहे थे। परिणाम यह हुआ कि साम्यवादियों के प्रचार का ज़बरदस्त असर हुआ।

इन दोनों गुटों के बीच समझौता कराने के उद्देश्य से संयुक्त राज्य ने जनरल जार्ज सी० मार्शल को वहाँ भेजा। जनरल मार्शल इन दोनों विरोधी दलों के बीच समझौता कराने तथा उन्हें १९३६ के संविधान को संशोधित करने के लिए राजी करने में सफल हो गए। यह सोच कर कि संयुक्त राज्य राष्ट्रवादियों को उत्तरी चीन तथा मन्चूरिया पर फिर से पूरा नियन्त्रण दिलाने की दिशा में उनकी सहायता कर रहा है, साम्यवादियों ने संविधान सम्मेलन या किसी राष्ट्रीय चुनाव में भाग लेने से इनकार कर दिया।

इसी बीच साम्यवादियों ने चीन के दूसरे भागों पर अधिकार कर लिया। १९४८ में संयुक्त राज्य ने चीन को योरोपीय पुनरुद्धार निधियों में से ४२०,०००,००० डालर की सहायता देकर राष्ट्रवादी सरकार का समर्थन करने की कोशिश की। ट्रूमैन की सरकार की यह धारणा थी कि पहले दी गई मदद कारगर नहीं हो सकी थी और चियांग की सरकार चीनी लोगों में इतनी अधिक अप्रिय हो

इस पृष्ठ पर एशिया के मानचित्र (तथा पृष्ठ ६४२ पर अफ्रीका का मानचित्र) से आपको इन महाद्वीपों की जानकारी मिलेगी। पृष्ठ ६१७ से पृष्ठ ६५६ तक के डाक-टिकट मानचित्रों से आपको उन देशों के सम्बन्ध में नजदीकी जानकारी मिलेगी जिनका इतिहास अधिकांशतः अब भी दैनिक समाचार-पत्रों में लिखा जा रहा है।

चुकी थी कि अमरीकी सहायता को और अधिक समय तक जारी नहीं रखा जा सकता था। अतः संयुक्त राज्य ने चीन को दी जाने वाली सहायता वापस लेनी शुरू कर दी। साम्यवादी नेता जनरल माओत्सेतुंग द्वारा शान्ति की कड़ी शर्तों की घोषणा करने पर चियांग ने राष्ट्रपति के पद से त्यागपत्र दे दिया। इस प्रकार साम्यवादी तो दक्षिण की ओर बढ़ते चले गए और राष्ट्रवादी लोग अपनी राजधानी कैन्टन में ले गए। अन्ततः ये राष्ट्रवादी भाग कर फारमोसा द्वीप (तैवान) चले गए जहाँ चियांग दोबारा राष्ट्रवादी चीन के राष्ट्रपति बन गए।

चीनी लोक गणराज्य—इसी बीच चीनी साम्यवादियों ने पेकिंग में लोक गणराज्य नामक एक सरकार की स्थापना कर ली। माओ, जिन्होंने १९२१ में चीनी साम्यवादी दल की स्थापना की थी, इस गणराज्य के राष्ट्रपति बन गए और चाऊ एन लाई ने प्रधान मन्त्री तथा परराष्ट्रमन्त्री का कार्यभार संभाला।

इस नए गणराज्य के सभी विरोधियों को "बांस की दीवार" के पीछे क्रूरतापूर्वक दबा दिया गया। माओ ने यह स्वीकार किया है कि १९४९-१९५४ के दौरान में ८००,००० साम्यवाद विरोधियों को दास-श्रमिक शिविरों में भेज दिया गया तथा विदेशी धर्मप्रचारकों को बन्दी बना लिया गया और देशनिकाला दे दिया गया। १९५० में इस लोक गणराज्य ने सोवियत संघ के साथ तीस वर्षों के लिए मैत्री तथा पारस्परिक सहायता की एक संधि पर हस्ताक्षर किए। १९५९ में माओ ने राष्ट्रपति पद का त्याग कर दिया और उनके स्थान पर लियो शाऊची राष्ट्रपति बन गए। फिर भी माओ साम्यवादी दल के अध्यक्ष और लाल चीन के अधिनायक बने रहे।

दुनिया में एक बड़ी शक्ति बनने के उद्देश्य से साम्यवादी चीन ने कृषि तथा औद्योगिक उत्पादन को बढ़ाने के लिए पंचवर्षीय योजनाओं की शृंखला का सूत्रपात किया। एक योजना की अवधि तो १९५७ में तथा दूसरी की १९६२ में खत्म हो गई। इन योजनाओं में उपभोक्ता पदार्थों के स्थान पर भारी उद्योगों को अधिक महत्त्व दिया गया था। इसमें कोई सन्देह नहीं कि चीनी कम्युनिस्टों ने उपभोक्ता पदार्थों के उत्पादन में वृद्धि कर ली थी फिर भी उन्हें अधिकांश उपभोक्ता पदार्थों का आयात करना पड़ता था। यद्यपि कम्युनिस्ट चीन में इस्पात का उत्पादन पहले की उच्चतम सीमा को पार कर गया था, फिर भी चीन में इस्पात का प्रति व्यक्ति उत्पादन जापान की तुलना में केवल चार प्रतिशत था।

कृषक जनता को पुनर्गठित करने का काम इन पंचवर्षीय योजनाओं का एक दुःसाध्य चरण था। पहले पहल तो सहकारी संस्थाएँ खोली गईं लेकिन १९५८ तक फार्म अर्थ-व्यवस्था इतनी ज्यादा खराब होती रही कि सामूहिक कृषि को स्थान देना पड़ा। चीनी लोग इसे कम्यून कहते हैं। पुरुषों और स्त्रियों को जबरन अपने घर छोड़ कर इन कम्यूनों में रहना पड़ा। पति-पत्नियों को अलग-अलग बैरकों में, बच्चों को राज्य-संचालित नर्सरियों में तथा बूढ़े व्यक्तियों को मकानों में बन्द कर दिया गया। थोड़े समय के बाद परिवारों को इकट्ठा कर दिया जाता था लेकिन पुरुष तथा स्त्री दोनों को या तो खेतों में या फैक्ट्रियों में प्रतिदिन कम से कम १८ घंटे काम करना पड़ता था।

चीनी किसानों के लिए ये कम्यून नई चीज़ थे क्योंकि इन लोगों के लिए परिवार का महत्त्व सदा ही सर्वोपरि रहा है। दूर-दूर तक असन्तोष फैला हुआ था। जब सामूहिक खेती से भी उत्पादन में आशातीत वृद्धि नहीं हुई तो कम्यून प्रणाली की कठोरता में कुछ ढील दे दी गई। १९६० में २०० दिनों तक पड़े सूखे से और अधिक कठिनाइयाँ उपस्थित हो गईं। व्यापक रूप से फैले अकाल को रोकने के लिए लाल चीन को विवशतावश खाद्यान्न की भारी मात्रा आयात करनी पड़ी।

चीनी गणराज्य—चीन के मुख्य प्रदेश से लगभग १०० मील दूर तैवान नामक विशाल द्वीप

पर बसी हुई राष्ट्रवादी सरकार एक गणराज्य के रूप में काम करती है। यह सरकार केवल तैवान (फारमोसा) पर ही नहीं बल्कि आस-पास के बहुत से छोटे-छोटे द्वीपों पर भी शासन करती है। १९५५ में स्वीकृत एक संधि की शर्तों के अधीन संयुक्त राज्य राष्ट्रवादी चीन तथा इसके १,००,००,००० लोगों को बाहरी आक्रमण से बचाने के लिए वचनबद्ध है।
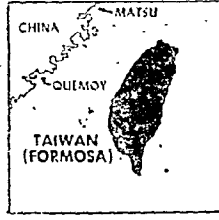
१९५८ में चीनी साम्यवादियों ने मुख्य भूमि के किनारे के निकट तथा राष्ट्रवादियों के अधिकार क्षेत्र किमाय तथा मात्सु नाम के छोटे-छोटे द्वीपों पर बाकायदा बमबारी शुरू कर दी। राष्ट्रवादियों ने डट कर मुकाबला किया और राष्ट्रपति आइजनहावर ने तोपों से लैस अमरीकी हवाई जहाजों को राष्ट्रवादियों की सहायता करने का आदेश दिया। वर्ष के अन्त में यह सब कुछ समाप्त हो गया लेकिन साम्यवादी लोग चीनी राष्ट्रवादी गणराज्य को बराबर धमकियाँ देते रहे और समय-समय पर मुख्य भूमि के साम्यवादियों तथा किमाय व मात्सु में स्थापित सेनाओं के बीच गोलियाँ चला करती थीं।

१९६० में तीसरी बार छः वर्षों के लिए चियांग काईशेक चीनी गणराज्य के राष्ट्रपति चुन लिए गए। चियांग के शासनकाल में राष्ट्रवादी चीन ने कृषि उत्पादन तथा तैयार माल के उत्पादन में बहुत प्रगति की है। खाद्यान्न तो यहाँ की अपनी आवश्यकताओं से भी अधिक पैदा होता है। यही कारण है कि राष्ट्रवादी चीन चावल, चीनी और डिब्बाबन्द अनानास का बहुत बड़ी मात्रा में निर्यात करता है। फिर भी यहाँ मशीनों का आयात जारी है और इसे अमरीकी सहायता पर भी निर्भर रहना पड़ता है।

चियांग के पास बहुत बड़ी सेना है और उनका यह विश्वास है कि एक-न-एक दिन वह मुख्य भूमि को वापस ले लेंगे। साम्यवादी चीन के पास भी विशाल सैनिक शक्ति है और उसने फारमोसा को स्वतन्त्र कराने की धमकी दी है।

चीन तथा संयुक्त राष्ट्र संघ—'दो चीन' की समस्या ने संयुक्त राष्ट्र के सदस्यों के बीच मतभेद पैदा कर दिया है। चीन संयुक्त राष्ट्र की मुख्य शक्तियों में से एक है और यह सुरक्षा परिषद् का भी स्थायी सदस्य है। सोवियत संघ अब यह चाहता है कि साम्यवादी चीन संयुक्त राष्ट्र में चीन का भी प्रतिनिधित्व करे लेकिन लाल चीन के सदस्य बनने का सबसे अधिक विरोध संयुक्त राज्य ने किया। तैवान स्थित चीनी राष्ट्रवादियों के प्रतिनिधि अब भी चीन का स्थान लेते हैं। चीनी साम्यवादियों ने शक्तिशाली अमरीका-विरोधी आन्दोलन के माध्यम से सोवियत संघ की तरह ही विरोध प्रकट किया है। चीनियों के दिमाग में यह बिठाया गया है कि संयुक्त राज्य के लोग युद्धप्रिय, लालची, पूँजीवादी तथा साम्राज्यवादी हैं।

तिब्बत

१९५१ में साम्यवादी चीन ने तिब्बत के साथ एक ऐसी सन्धि पर हस्ताक्षर किए जिसके अधीन तिब्बत लाल चीन को अपना अधिराज स्वीकार करता था। फिर भी दलाई-लामा के अधीन क्षेत्रीय स्वायत्त शासन का अधिकार तिब्बत ने अपने पास ही रखा था। चीनी लोग फिर भी यहां घुस आए और उन्होंने तिब्बत को राजनीतिक तथा धार्मिक नेतृत्व का पुनर्गठन करने के लिए विवश किया। १९५६ में और बाद में १९५९ में एक बार फिर तिब्बती जनता ने साम्यवादियों के सुधारवादी कार्यों के खिलाफ विद्रोह किया। चीनी सेना ने १९५९ की क्रान्ति को बुरी तरह कुचल दिया और दलाई लामा के स्थान पर जो भारत भाग गये, एक "कठपुतली शासक" को बिठा दिया। मध्य एशिया के हिमालय पर्वत के पीछे पुराने बसे हुए इस कृषि-प्रधान देश में भूमि सम्बन्धी सुधार लागू करना साम्यवादी कार्यक्रम का मुख्य अंग रहा है।
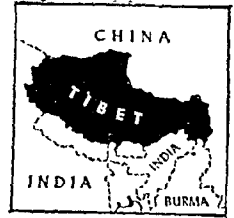
कोरिया

कोरिया ऐसा दूसरा क्षेत्र था जिसमें मतभेद और तनाव चल रहे थे। १९४५ में मास्को में हुई बैठक में भाग लेने वाले मित्र राष्ट्रों ने चतुर्राष्ट्रीय संयुक्तराष्ट्र ट्रस्टीशिप के अधीन कोरिया में एक स्वेदेशी सरकार स्थापित करने का
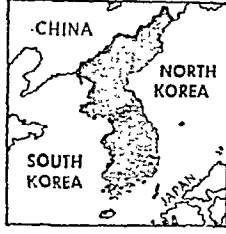
निश्चय किया। उस समय ३८ वीं अक्षांश रेखा से लेकर मंचूरिया और साइबेरिया के सीमान्त तक फैले हुए कोरिया के उत्तरी क्षेत्र के आधे भाग पर रूसी फौजों का कब्जा था। दक्षिणी क्षेत्र के आधे भाग पर अमरीकी सिपाहियों का अधिकार था। संयुक्त राष्ट्र ने कोरिया को स्वतन्त्र बनाने की समस्या पर विचार किया और राष्ट्रीय चुनावों का आयोजन करके देश को एकसूत्रता में बांधने की कोशिश की। इस सम्बन्ध में कठिनाई उस समय उपस्थित हुई जबकि रूसियों ने ३८वीं अक्षांश रेखा के उत्तर में हो रहे चुनावों पर संयुक्त राष्ट्र आयोग के पर्यवेक्षण करने की अनुमति नहीं दी। अतः सिंगमन री की दक्षिणी कोरिया की सरकार को मान्यता प्रदान कर दी गई।

इस प्रकार १९४८ में कोरिया को दो राजनीतिक राज्यों में विभाजित कर दिया गया। सोवियत ढंग का एक राज्य तो रूसी क्षेत्र में स्थापित किया गया और उसे कोरिया के लोकतंत्र गणराज्य (उत्तरी कोरिया) के नाम से पुकारा गया। दूसरा राज्य संयुक्त राष्ट्र द्वारा अमरीकी क्षेत्र में कोरिया गणराज्य (दक्षिणी कोरिया) के रूप में स्थापित किया गया।

कोरिया का युद्ध—संयुक्त राज्य ने अपनी स्थापित सेनाएँ तो वापस बुला लीं लेकिन फिर भी वह कोरियावासियों को आर्थिक मदद देता रहा। १९५० के वसन्त में री प्रशासन के प्रति असन्तोष की भावना ने जन्म लिया जिसका परिणाम यह हुआ कि दक्षिणी कोरिया के चुनावों के दौरान भीतरी गड़बड़ पैदा हो गई। रूस से बढ़ावा मिलने पर उत्तरी कोरिया के लोगों ने इन अस्थिर परिस्थितियों से लाभ उठाने का अवसर ढूँढ़ा और जून में दक्षिणी कोरिया पर आक्रमण कर दिया। इस आक्रमण से बचाव करने के लिए संयुक्त राज्य ने अपनी सेनाएँ जापान से बुला कर यहाँ भेज दीं। इसके बाद संयुक्त राष्ट्र की सुरक्षा परिषद् ने युद्ध रोकने की कार्रवाई करने के लिए अमरीकी लोगों को औपचारिक तौर पर अधिकार दे दिए। साथ ही सुरक्षा परिषद् ने इस आक्रमण का सामना करने लिए संयुक्त राष्ट्र के सभी सदस्यों से सहायता देने के लिए कहा। उस दौरान में रूसी प्रतिनिधि सुरक्षा परिषद का इसलिए बहिष्कार कर रहे थे क्योंकि परिषद् राष्ट्रवादी चीन के प्रतिनिधि के स्थान पर साम्यवादी चीन के प्रतिनिधि को मान्यता नहीं दे रही थी। यह युद्ध चार महीने से भी कम चला और आक्रमणकारियों को पीछे खदेड़ दिया गया और संयुक्त राष्ट्र की सेनाओं ने जवाबी कार्रवाई के रूप में ३८ वीं अक्षाँश रेखा को पार कर लिया।

जैसे ही ये सेनाएँ उत्तरी कोरिया और मंचूरिया की विभाजन रेखा यालू नदी की ओर बढ़ीं अचानक ही साम्यवादी चीन ने संयुक्त राष्ट्र की सेनाओं के विरुद्ध अपनी सेनाएँ भेज दीं और उन्हें पीछे खदेड़ दिया।

पश्चिमी राष्ट्र इस सम्बन्ध में चिन्तित थे कि यह युद्ध विशाल युद्ध का रूप धारण न कर ले तथा चीन को इसमें न घसीटा जाए। इसलिए जनरल मैकार्थर को मंचूरिया के साम्यवादी हवाबाजों के अड्डों पर बमबारी करने से रोक दिया गया। चूँकि मैकार्थर इस प्रकार की शर्तों पर युद्ध को और आगे बढ़ाने के लिए राजी नहीं थे अतः उन्हें अपदस्थ कर दिया गया और उनके स्थान पर जनरल मैथ्यू बी० रिजवे को नियुक्त कर दिया गया।

१९५१ में रूस के सुझाव पर संयुक्त राष्ट्र ने साम्यवादी जनरल नेम इल के साथ युद्ध-विराम सम्बन्धी बातचीत शुरू कर दी। इस सम्बन्ध में दो वर्षों तक विचार-विमर्श होता रहा और तब कहीं युद्ध-विराम स्थापित हो सका। संयुक्त राष्ट्र ने कोरिया के लोगों को कोरिया गणराज्य (दक्षिण) तथा लोकतंत्रीय गणराज्य (उत्तर) को एक

दूसरे से मिलाने के लिए शान्तिपूर्ण तरीके खोजने के लिए कहा लेकिन दोनों में से किसी ने भी एक दूसरे की प्रणाली स्वीकार नहीं करनी चाही।

शान्तिकालीन कोरिया—१९६० में सिंगमन री चौथी बार कोरिया गणराज्य (दक्षिण) के राष्ट्रपति चुन लिए गए लेकिन जब विरोधी दलों ने यह आरोप लगाया कि चुनावों में बेईमानी की गई थी तो वहाँ विशेषत: विद्यार्थियों में दंगे शुरू हो गए। सरकार विरोधी प्रदर्शन चलते रहे और इसलिए री ने अपने पद से त्यागपत्र दे दिया। परिणाम यह हुआ कि सरकार का पुनर्गठन किया गया और पोसुन युन को राष्ट्रपति चुन लिया गया। मई १९६१ में सैनिक अधिकारियों के एक वर्ग ने इस नई सरकार को उखाड़ फेंका और जुलाई १९६१ में सैनिक जुन्टा में से ही एक वर्ग ने शासन की बागडोर संभाल ली।

जब से कोरिया का विभाजन हुआ, तभी से दक्षिणी कोरिया आर्थिक सहायता के लिए संयुक्त राज्य पर आश्रित रहा है। इस बीच उत्तरी कोरिया रूस और लाल चीन की सहायता से अपने उद्योगों के विकास और उत्पादन की वृद्धि में लगा रहा, जब संयुक्त राष्ट्र ने चीनी साम्यवादियों पर अपनी सैनिक सप्लाई मजबूत करने और इस प्रकार १९५३ के युद्ध-विराम का उल्लंघन करने का आरोप लगाया तब लाल चीन ने (१९५८ में) उत्तरी कोरिया से अपनी सेनाएँ हटानी शुरू कर दीं। अभी तक उत्तरी या दक्षिणी कोरिया में से किसी को भी संयुक्त राष्ट्र का सदस्य नहीं बनाया गया है। दोनों देशों को सदस्य बनाने के सम्बन्ध में हाल में दी गई एक याचिका भी इसलिए बेकार साबित हुई क्योंकि उत्तरी कोरिया ने संयुक्त राज्य की यह बात मानने से इनकार कर दिया कि संयुक्त राष्ट्र कोरिया सम्बन्धी समस्याओं का निपटारा करने के लिए सक्षम है।

१. चीन में राष्ट्रवादी सरकार के अप्रिय होने के क्या कारण थे?
२. संयुक्त राज्य ने चीन को सहायता देनी क्यों बन्द कर दी?
३. साम्यवादियों ने चीन में अपनी सरकार स्थापित करने के उद्देश्य से विरोधियों को किस प्रकार दबाया?
४. साम्यवादी चीन के तीन नेताओं के नाम बताइए।
५. चीन की दोनों सरकारों के नाम बताइए।
६. लाल चीन की पंचवर्षीय योजनाओं का परिचय देते हुए बताइए कि ये योजनाएँ कहाँ तक सफल हो सकी हैं?
७. किमाय और मात्सु पर बमबारी होने पर संयुक्त राज्य ने क्या कार्रवाई की?
८. चीनी गणराज्य ने किस प्रकार इतनी प्रगति की? इस गणराज्य का पहला राष्ट्रपति कौन था?
९. संयुक्त राष्ट्र में चीनी प्रतिनिधित्व के प्रश्न पर संयुक्त राज्य और रूस के दृष्टिकोणों में क्या अन्तर है?

युद्ध के बाद जापान में प्रगति

जब चीन असैनिक युद्ध से त्रस्त हो रहा था और धीरे-धीरे रूस की तरफ झुक चुका था उस समय जापान अपने घर को ठीक करने में लगा हुआ था। जनरल डगलस मैकार्थर को जापान में कब्जा करने वाली सेनाओं की कमान संभालने को कहा गया क्योंकि जापान देश पूरी तरह ध्वस्त हो चुका था। उसका साम्राज्य नष्ट हो चुका था। लगभग एक करोड़ आदमी बेघरबार हो गए। जापान के उद्योग बमबारी के कारण नष्ट हो चुके थे। खाद्यान्न की इतनी कमी थी कि जापानी लोग संयुक्त राज्य के लोगों के लिए अपेक्षित कैलोरी संख्या के केवल एक-तिहाई भाग पर ही जीवित रहते थे। इसमें कोई सन्देह नहीं कि जापान का भविष्य अन्धकारमय दिखता था।

नया संविधान—अगले पाँच वर्षों में जापान ने धीरे-धीरे कुछ सफलताएँ प्राप्त कीं। मैकार्थर के मार्ग-दर्शन में एक नया संविधान तैयार किया

गया और जापान के लोगों के जीवन में भारी परिवर्तन आ गया। शिन्तो मत और राजा की पूजा पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया और जापानी जनता को पहली बार अपने राजा का चेहरा देखने की अनुमति मिली। महिलाओं को मतदान का अधिकार दे दिया गया और सामाजिक दृष्टि से उन्हें पुरुषों के समकक्ष स्थान दिया गया। जापानी संविधान में युद्ध की निन्दा की गई। जापान की आर्थिक स्थिति में भी सुधार हुआ। वहाँ की जनता की देखभाल के लिए संयुक्त राज्य ने बहुत बड़ी रकमें खर्च कीं। संयुक्त राज्य के लिए किए गए विशेष अध्ययन से यह पता चला कि १९५० तक जापान ने अपने पुनरुत्थान की दिशा में बहुत प्रगति कर ली थी।

जापान और संयुक्त राष्ट्र संघ—संयुक्त राज्य जापान को राष्ट्र परिवार का सदस्य बनाने का इच्छुक था और इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए उसे पश्चिम का सहयोग प्राप्त हुआ। फिर भी उद्देश्य प्राप्त करने के तरीकों के सम्बन्ध में पश्चिमी देशों और रूस में समझौता नहीं हो सका। संयुक्त राज्य की धारणा तो यह थी कि संधि तैयार करने में ऐसे प्रत्येक देश को हिस्सा लेने की अनुमति होनी चाहिए जिसने जापान की रक्षा की हो लेकिन रूस यह चाहता था कि यह संधि ब्रिटेन, साम्यवादी चीन, रूस तथा संयुक्त राज्य द्वारा ही की जाए। चूँकि इस सम्बन्ध में कोई समझौता नहीं हो सका, इसलिए अधिकांश राष्ट्रों का समर्थन प्राप्त करके संयुक्त राज्य ने सन्धि तैयार करने का काम शुरू कर दिया। यह कार्यभार संयुक्त राज्य के जान फौस्टर डलेस को सौंपा गया। इस संधि पर सितम्बर १९५१ को हस्ताक्षर किए गए और जापान को फिर से स्वायत्त-शासन मिल गया। इस सन्धि के अधीन जापान को राष्ट्र परिवार में स्वतन्त्रता दिला दी गई। इसके बाद पाँच वर्ष खत्म होने से पहले ही रूस ने युद्ध-स्थिति समाप्त करने से सम्बन्धित समझौते पर हस्ताक्षर कर दिए। इस प्रकार जापान के लिए संयुक्त राष्ट्र संघ की सदस्यता का मार्ग खुल गया और एक वर्ष की अवधि में ही जापान को सुरक्षा परिषद् का सदस्य बनने का गौरव प्राप्त हो गया।

प्रतिरक्षा—१९५२ में संयुक्त राज्य और जापान ने पारस्परिक प्रतिरक्षा की सन्धि पर हस्ताक्षर किए। इस संधि के अनुसार जापान अपनी सशस्त्र सेनाओं का पुनर्निर्माण कर सकता था और संयुक्त राज्य जापान में स्थापित अपने हवाई अड्डों की देख-रेख कर सकता था। १९५८ में अमरीकी स्थल सेना हटा ली गई और १९६० में एक नई सन्धि पर हस्ताक्षर हुए। कुछ जापानियों ने इस नई सन्धि पर यह आक्षेप किया कि इसकी पारस्परिक प्रतिरक्षा की शर्तें बहुत कड़ी हैं और इस प्रकार जापान को युद्ध में घसीटा जाएगा। टोकियो में विद्यार्थियों ने दंगे शुरू कर दिये। इस प्रकार टोकियो में अमरीका-विरोधी भावना इतनी उग्र हो गई कि राष्ट्रपति आइज़नहावर की प्रस्तावित यात्रा को रद्द करना पड़ा। द्वीप क्षेत्रों में अमरीकी परमाणु बम परीक्षण तथा रेडियो एक्टिव धूल गिरने के कारण भी जापान को गहरी चिन्ता है। अतः सभी राष्ट्रों से परमाणु परीक्षण बन्द करने के सम्बन्ध में अपील करने में भी जापान ने पहल की है।

आर्थिक परिस्थितियाँ—दूसरे विश्वयुद्ध के बाद आर्थिक दृष्टि से जापान पूरी तरह नष्ट हो चुका था। अपने आप को जीवित रखने के लिए उसे अपना तैयार माल हमेशा ही दूसरे देशों में बेचना पड़ता था फिर भी अमरीकी सहायता से जापान ने जल्दी ही अपनी आर्थिक शक्ति फिर से प्राप्त कर ली। फैक्ट्रियों का पुनर्निर्माण किया गया तथा उपभोक्ता पदार्थों का अधिक से अधिक मात्रा में उत्पादन होता रहा।

अब जापान के सामने निर्यात किए जाने वाले माल के लिए बाजार ढूँढ़ने की समस्या उपस्थित हो गई। संयुक्त राज्य तथा आस्ट्रेलिया के साथ प्रतिकूल व्यापार सन्तुलन की क्षतिपूर्ति करने के उद्देश्य से जापान ने अपना माल लाल चीन तथा दक्षिण-पूर्वी एशिया को बेचने की सोची। जापानी व्यापार को आगे बढ़ाने के उद्देश्य से १९५७ में प्रधान मंत्री नोबुसुके किशी ने संयुक्त राज्य तथा

प्रशान्त महासागर प्रदेश के अन्य देशों का दौरा किया।

साम्यवाद—दूसरे विश्वयुद्ध के बाद से जापान में साम्यवादने कुछ भी सफलता नहीं प्राप्त की। यद्यपि साम्यवादी लोग जापान के समाजवादी दल का समर्थन करते हैं, पर युद्ध के बाद की सरकार में अधिकांश समय तक उदार लोकतन्त्रीय दल का बोलबाला रहा। श्रमिक संघों में साम्यवादियों की शक्ति मजबूत है लेकिन रूसी नीति से तो ऐसा पता चलता है कि रूस एक ऐसे तटस्थ जापान के पक्ष में है जो न रूस का मित्र हो, न पश्चिमी राष्ट्रों का।

१. दूसरे विश्वयुद्ध के बाद जापान की परिस्थितियों का वर्णन कीजिए।
२. जापान में कब्जा करने वाली सेनाओं का सेनापति कौन था ?
३. जापान के नए संविधान में क्या-क्या व्यवस्थाएँ की गई ?
४. जापान की शान्ति संधि तैयार करने में रूस तथा पश्चिमी देशों के मध्य क्या मतभेद थे ?
५. इस संधि से क्या-क्या कार्य सम्पन्न हुआ ?
६. जापान के बहुत से लोगों ने १९६० की संधि का क्यों विरोध किया ?
७. युद्ध के बाद जापान द्वारा की गई आर्थिक प्रगति का वर्णन कीजिए।

विशाल उपमहाद्वीप

दूसरे विश्वयुद्ध के बाद एक महत्त्वपूर्ण बात यह हुई कि एशिया के लोगों में राष्ट्रवाद की भावना का उदय हुआ। अधिकांश गोरे लोग अपने को एशिया के गेहुँए तथा भूरे रंग के लोगों से ऊँचे दर्जे का आदमी समझते थे। जब जापानी लोग एशिया के औपनिवेशिक क्षेत्रों में से ब्रिटिश, फ्रांसीसी, डच तथा अमरीकी लोगों को बाहर खदेड़ने में सफल हो गए, तब एशिया में गोरे लोगों का सम्मान जाता रहा। एशिया के लोगों ने स्वतन्त्रता का दावा किया। इन दावेदारों में भारत, पाकिस्तान और श्रीलंका के लोग थे जो विस्तृत भारतीय प्रायद्वीप में, जिसे कभी-कभी विशाल उपमहाद्वीप भी कहते हैं, तथा इसके दक्षिण में स्थित द्वीप में बसे हुए हैं।

भारत का विभाजन—ब्रिटेन की नई श्रमिक सरकार ने हिन्दुस्तान के सामने दो विकल्प रखे। इन विकल्पों के अधीन भारतवर्ष या तो ब्रिटिश राष्ट्रमण्डल में डोमिनियन पद प्राप्त कर सकता था या एक स्वतन्त्र देश बन सकता था। अपने भविष्य के सम्बन्ध में भारतीय जनता एकमत नहीं हो सकी। आखिरकार अगस्त १९४७ में यह स्वीकार किया गया कि भारत दो डोमिनियनों में बाँट दिया जाए तथा इन डोमिनियनों को ब्रिटिश साम्राज्य से सम्बन्ध विच्छेद करने का अधिकार दे दिया जाए। १९४८ में अन्तिम ब्रिटिश गवर्नर-जनरल लार्ड माउन्टबेटन के चले जाने के बाद भारत और पाकिस्तान दोनों ही राष्ट्रमण्डल के सदस्य बन गए। जनवरी, १९५० में भारत ने अपने नये राष्ट्रीय संविधान को लागू किया। श्री जवाहर लाल नेहरू भारत के पहले प्रधान मंत्री बने।

वास्तव में भारत के विभाजन से झगड़ा समाप्त नहीं हुआ। इस विभाजन का परिणाम यह हुआ कि जिन लोगों ने अपने को अनुपयुक्त देश में समझा, उन्होंने अपना देश छोड़ दिया। इसके बाद पुरानी घृणा उत्तेजित हो गई और झगड़े शुरू हो गए। महात्मा गाँधी की अहिंसावादी नीति से असन्तुष्ट एक हिन्दू ने १९४८ में उनकी हत्या कर दी। गांधी जी की मृत्यु से उनके अनुयायियों और विरोधियों दोनों को गहरा धक्का पहुँचा। उनकी मृत्यु से उन दोनों गुटों पर ऐसा प्रभाव पड़ा कि कुछ शान्ति हुई और झगड़े कम हो गए।

भारतवर्ष—प्रधानमंत्री नेहरू ने पूर्व और पश्चिम के असंख्य मतभेदों के बीच एक तटस्थ मार्ग पर भारत को अग्रसर करने का प्रयत्न किया फिर भी नेहरू को देश के भीतर ही साम्यवादी दल की बढ़ती हुई शक्ति से खतरा था १९५८
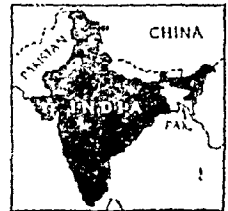
'प्रत्येक व्यक्ति एक अन्य व्यक्ति को शिक्षित करें' आन्दोलन से विश्व के उन लाखों लोगों की आवश्यकता की पूर्ति होती है जो पढ़ना सीखने के लिए अत्यन्त उत्सुक हैं। प्रस्तुत चित्र में एक गाड़ी वाला हिन्दी साक्षरता चार्ट के माध्यम से पाठ पढ़ रहा है।

में तो केरल के दक्षिण-पश्चिमी राज्य पर वस्तुतः साम्यवादियों का शासन हो गया लेकिन दो वर्ष बाद ही साम्यवादी सरकार को हटा दिया गया। भारतीयों की ओर से साम्राज्य के बचे-खुचे पराधीन क्षेत्रों पर से योरोपीय देशों का नियंत्रण समाप्त करने की माँग होती रही। फ्रांस ने चुपचाप अपने अधीन पाँचों क्षेत्रों पर से अपना नियंत्रण हटा लिया। इन पांचों क्षेत्रों में पांडीचेरी सबसे अधिक प्रसिद्ध क्षेत्र था। किन्तु पुर्तगाल अपने हठ पर अड़ा रहा और उसने चार सौ वर्षों से अधिकृत गोवा, दमण तथा दीव नामक क्षेत्रों को नहीं छोड़ा। आखिरकार १९६१ में भारत ने बल-प्रयोग द्वारा इन छोटे-छोटे तीनों पराधीन क्षेत्रों को अपने अधिकार में ले लिया। भारत की इस कार्रवाई पर पश्चिम की ओर से प्रतिकूल विचार व्यक्त किए गए। संयुक्त राष्ट्र में पुर्तगाल द्वारा प्रस्तुत की गई अपील सोवियत निषेधाधिकार के फलस्वरूप अस्वीकार कर दी गई।

बाद में भारतवर्ष खुद साम्यवादी चीन के आक्रमण का निशाना बन गया। नवम्बर १९६० में चीन को भेजे गए विरोध-पत्र में श्री नेहरू ने यह कहा कि चीनी लोगों ने पिछले अप्रेल से कम से कम ग्यारह बार दोनों देशों के बीच २००० मील लम्बे सीमा-क्षेत्र का अतिक्रमण किया है। बहुत से भारतीयों ने लाल चीन के विरुद्ध कार्रवाई करनी चाही। कुछ लोगों की धारणा यह थी कि श्री नेहरू को चाहिए कि वह रक्षामंत्री के पद से वी० के० कृष्ण मेनन को हटा दें क्योंकि श्री मेनन ने कई अवसरों पर साम्यवादी नीति का जोरदार समर्थन किया था।

भारतवर्ष विदेशी मामलों के प्रति ज्यादा चिन्तित नहीं था, इसका ध्यान अधिकतर देश की जनता में फैली जबरदस्त गरीबी की ओर था। बहुत से अन्य देशों की तरह भारत ने भी एक के बाद दूसरी पंचवर्षीय योजनाओं द्वारा अपनी स्थिति में सुधार करने का प्रयत्न किया। भारत की पहली योजना में कृषि, सिंचाई, भूमि-सुधार तथा सामुदायिक विकास पर अधिक बल दिया गया। अंशतः ब्रिटेन, संयुक्त-राज्य तथा सोवियत समाजवादी गणराज्य संघ द्वारा दिए गए उदार ऋणों से

इन योजनाओं को काफी सफलता प्राप्त हुई। दूसरी और तीसरी योजनाओं ने भी भारतीय उद्योगों का विकास किया। देश की आर्थिक स्थिति को सुधारने का काम भारत के लिए विशेष रूप से इसलिए कठिन था क्योंकि इसकी जनसंख्या बहुत तेजी से बढ़ रही थी।

पाकिस्तान—पाकिस्तान की नीति भारत से भिन्न थी। वह बगदाद समझौता और दक्षिण-पूर्वी एशिया संधि संगठन का सदस्य बन कर खुले तौर पर पश्चिमी शक्तियों का समर्थक बन गया जब कि भारत ने ऐसा कुछ नहीं किया। १९५४ में पाकिस्तान में साम्यवादी दल को अवैध घोषित कर दिया गया।
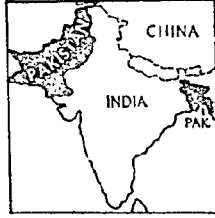
स्वतन्त्र राष्ट्र के रूप में अपना नया जीवन आरम्भ करते समय पाकिस्तान के सम्मुख बहुत सी समस्याएँ थीं। पूर्वी और पश्चिमी पाकिस्तान ८५० हवाई मील लम्बे भारतीय क्षेत्र के कारण अलग-अलग थे। घनी जनसंख्या वाले पूर्वी पाकिस्तान में देश की आधी से अधिक जनसंख्या रहती थी जबकि इसका क्षेत्रफल पाकिस्तान के कुल क्षेत्रफल का केवल १५ प्रतिशत था। देश के दोनों भागों में बहुत ज्यादा गरीबी थी, अधिकांश जनता अनपढ़ थी और उद्योग-धन्धे तो नहीं के बराबर थे।

पाकिस्तान की पहली पंचवर्षीय योजना से थोड़ा-सा ही आर्थिक सुधार हुआ क्योंकि सरकारी क्षेत्रों में भ्रष्टाचार व्याप्त था और कानून को पूरा सम्मान नहीं दिया जा रहा था। आखिरकार राष्ट्रपति इस्कन्दर मिर्जा ने पाकिस्तान के कमाण्डर-इन-चीफ अयूब खाँ के पक्ष में अपने पद से त्याग-पत्र दे दिया। अयूब खाँ ने आर्थिक व्यवस्था में जबरदस्त सुधार किए और भ्रष्ट अधिकारियों को बाहर निकाल दिया। एक गुप्त चुनाव में ९६ प्रतिशत मतदाताओं ने संवैधानिक सरकार की स्थापना के लिए कहा। अयूब खाँ को राष्ट्रपति चुन लिया गया और १९६० में एक ऐसी सरकार की स्थापना की गई जिसमें अपने देश के मामलों में जनता को अपने विचार प्रकट करने का अधिकार दे दिया गया था। अपेक्षाकृत अधिक प्रजातंत्रीय और प्रभावशाली सरकार के रहते हुए ऐसा लगा कि पाकिस्तान स्थिरता और सुख-समृद्धि के मार्ग पर अग्रसर हो रहा है।

श्रीलंका—दूसरे विश्वयुद्ध के दौरान बहुत पहले से चले आ रहे श्रीलंका नाम के ब्रिटिश उपनिवेश ने अपेक्षाकृत अधिक स्वायत्त शासन के लिए ब्रिटेन को एक याचिका दी। १९४६ में ब्रिटेन ने श्रीलंका को एक संवैधानिक सरकार की स्थापना का अधिकार दे दिया और दो वर्ष बाद श्रीलंका को ब्रिटिश राष्ट्रमण्डल में डोमिनियन पद दे दिया गया। १९६० में सिरिमावो भण्डारनायकके श्रीलंका की प्रधान मन्त्री बनीं। श्रीमती भण्डारनायके प्रधान मंत्री का पद प्राप्त करने वाली विश्व की पहली महिला थीं। श्रीलंका की मुख्य समस्याएँ आर्थिक हैं। यहाँ की आबादी घनी है और तेज़ी से बढ़ रही जनसंख्या की उदर-पूर्ति के लिए श्रीलंका चावल की आवश्यक मात्रा का उत्पादन नहीं कर पाता। साथ ही आयात किए गए चावल की कीमत अदा करने के लिए यह देश चाय, रबड़ तथा नारियल की आवश्यक मात्रा का निर्यात भी नहीं कर पाता। नये उद्योगों तथा नई फसलों का विकास करने के लिए बनाई गईं योजनाएँ भी अंशतः ही सफल हो सकी हैं।
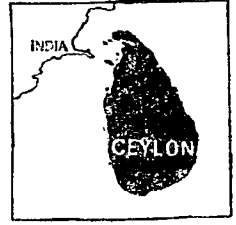
१. दूसरे विश्वयुद्ध के बाद एशिया में राष्ट्रवाद की भावना के उभरने के क्या कारण हैं!
२. भारत ने प्रायद्वीप में पुर्तगाली तथा फ्रांसीसी अधिकृत क्षेत्रों का नियन्त्रण कैसे प्राप्त किया?
३. साम्यवादी चीन के विरुद्ध भारत की क्या शिकायतें थीं?
४. भारत की सबसे मुख्य घरेलू समस्या कौन-सी है और इसने इस समस्या को हल करने के

लिए क्या प्रयत्न किए हैं ?

५. पाकिस्तान की भौगोलिक स्थिति किस प्रकार उसकी समस्याओं में वृद्धि करती है ?

६. श्रीलंका की कुछ समस्याओं का परिचय दीजिए ।

दक्षिण-पूर्वी एशिया में राष्ट्रीयता और साम्यवाद

एशिया के अन्य क्षेत्रों में साम्राज्यवाद के पंजों से मुक्त होने की मांग की गई थी, दक्षिण-पूर्वी एशिया में बर्मा, मलाया तथा सिंगापुर के ब्रिटिश अधिकृत क्षेत्र तथा फिलिपीन में संयुक्त राज्य के संरक्षित राज को अपेक्षाकृत आसानी से स्वतन्त्रता प्राप्त हो गई लेकिन फ्रांस-अधिकृत क्षेत्रों को बहुत समय तक फ्रांस के साथ भारी संघर्ष करना पड़ा तथा चीनी साम्यवादियों के आक्रमण सहन करने पड़े।

बर्मा—दूसरे विश्वयुद्ध से पहले ही बर्मा ने स्वतन्त्रता के लिए संघर्ष किया था । युद्ध के दौरान बर्मा देश पर जापानियों का अधिकार हो गया । युद्ध के समाप्त होने पर बर्मा ने अपनी मांगें फिर से प्रस्तुत कीं और जनवरी १९४८ में ब्रिटेन ने उसे स्वतन्त्रता दे दी,

लेकिन स्वतन्त्रता प्राप्त कर लेने के बाद बर्मा राष्ट्रमण्डल का सदस्य नहीं रहा ।
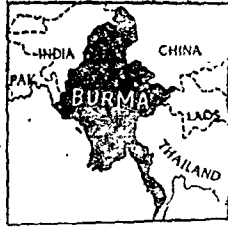
लगभग उसी समय परेशानी पैदा हो गई और देश में साम्यवादियों ने ज़ोर पकड़ लिया । देश में इस कदर गड़बड़ी फैल गई कि ऐसा प्रतीत होने लगा कि इस सबका परिणाम निश्चित रूप से यह होगा कि देश में अव्यवस्था फैल जाएगी। फिर भी धीरे-धीरे अपने देश के लिए शक्तिशाली योजनाएं लिए हुए कुछ विचारशील व्यक्तियों ने सरकार पर नियन्त्रण प्राप्त कर लिया । परिणामतः सुधार किए गए और एक स्थायी सरकार स्थापित कर दी गई।

मलाया—दूसरे विश्वयुद्ध से पहले ब्रिटेन मलय प्रायद्वीप पर बहुत से छोटे-छोटे क्षेत्रों की देखरेख करता था । यहाँ की जनसंख्या लगभग ४० प्रतिशत चीनी, ४० प्रतिशत मलय तथा शेष मुख्यतः भारतीयों की थी । युद्ध के दौरान जापानियों ने इस प्रायद्वीप पर कब्जा कर लिया और उसके बाद

साम्यवादी गुरिल्लाओं के झुण्ड के झुण्ड इस क्षेत्र में घूमने लगे। ये गुरिल्ला लोग चीनी गांवों पर रात्रि में आक्रमण करते थे और दिन में इनसे दूर रहते थे। इनकी आतंकवादी गुरिल्ला चालों के कारण साम्यवादियों को कुचलना आसान काम नहीं था । आखिरकार ब्रिटेन ने इन ग्रामवासियों को अपेक्षाकृत बड़े और सुरक्षित शहरों में बसा दिया और इस प्रकार गुरिल्ला लोगों की सप्लाई काट दी गई तथा उनके आक्रमणों की संख्या में बहुत कमी आ गई।

यद्यपि मलाया के पूर्व इतिहास या उसकी जनता की विभिन्न राष्ट्रीयताओं के आधार पर संयुक्त देश का औचित्य नहीं था, फिर भी १९५६ में मलाया को अपने घरेलू मामलों पर नियन्त्रण रखने का अधिकार सौंप दिया गया । १९५७ में मलाया राष्ट्रमण्डल के अधीन संवैधानिक राजतन्त्र बन गया और उसी वर्ष सितम्बर में संयुक्त राष्ट्र का ८२ वां सदस्य भी बन गया । नई सरकार ने क्रान्तिकारियों के साथ कोई भी समझौता करने से इनकार कर दिया और यह सरकार राष्ट्रमण्डलीय देशों की सहायता से क्रान्तिकारियों का सामना करती रही ।

१९६१ में मलाया के प्रधान मन्त्री अब्दुल रहमान ने सिंगापुर तथा सारावाक, ब्रूनेई और उत्तरी बोर्नियो नामक ब्रिटिश क्षेत्रों को शामिल करने के उद्देश्य से मलयेशिया संघ की स्थापना करने का प्रस्ताव रखा । ऐसी आशा की गई थी कि इस प्रकार का संघ इन्डोनेशिया के सुकर्णो (आगे देखिए) के विस्तारवादी उद्देश्यों को निष्फल कर देगा

सिंगापुर—शिकागो से थोड़े ही अधिक क्षेत्र वाला देश सिंगापुर १९५९ में राष्ट्रमण्डल के अधीन एक स्वशासी देश बन गया। सिंगापुर का यह द्वीप मलय प्रायद्वीप के दक्षिणी सिरे पर स्थित है और इसका ३६ वर्ग मील क्षेत्रफल का बन्दरगाह विश्व के मुख्य बन्दरगाहों में से एक है। दक्षिणी एशिया का अधिकांश व्यापार सिंगापुर के माध्यम से ही होता है। यहाँ की तीन-चौथाई से अधिक जनता चीनी है तथा मलय लोगों की संख्या कुल जनसंख्या के छठे भाग से भी कम है।
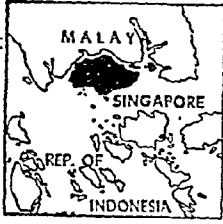
फिलिपीन गणराज्य—संयुक्त राज्य ने फिलिपीन नामक संरक्षित प्रदेश को एक स्वतन्त्र देश बनाने की योजना तैयार की। इस उद्देश्य के लिए कांग्रेस ने फिलिपीन पुनर्वास अधिनियम पास कर दिया जिसमें युद्ध के बाद समुत्थान के सहायतार्थ ५० करोड़ डालर की मंजूरी दी गई थी।

उसी दिन फिलिपीन व्यापार अधिनियम में फिलिपीन और संयुक्त राज्य के मध्य आठ वर्षों तक मुक्त व्यापार करते रहने की व्यवस्था कर दी गई। इस अवधि के समाप्त होने पर धीरे-धीरे अमरीकी तटकर लागू किये जाने थे। फिलिपीन सैनिक सहायता अधिनियम के अन्तर्गत अमरीकी प्रतिरक्षा सहायता का वचन दिया गया था।

फिलिपीन गणराज्य के पहले राष्ट्रपति मैन्युअल रोहास ए अकून्या की अपने कार्य-समय के समाप्त होने से पहले ही हृदय-रोग से मृत्यु हो गई। उनके बाद राष्ट्रपति के स्थान पर उनके उपराष्ट्रपति एल्पीडियो करीनो सत्तारूढ़ हो गए। चार वर्ष बाद हुए चुनाव में 'नेशनलिस्टा' दल द्वारा पसन्द किए गए रैमन मागासीसी के सामने करीनो को मुँह की खानी पड़ी। नये राष्ट्रपति इतने अधिक लोकप्रिय हो गए थे कि इनका दोबारा राष्ट्रपति चुना जाना पूर्ण निश्चित था, लेकिन १९५७ में हुई एक हवाई दुर्घटना में इनकी मृत्यु हो गई। अतः 'नेशनलिस्टा' दल के नये उम्मीदवार कार्लस पी गरसिया राष्ट्रपति चुन लिए गए और राष्ट्रपति बनने पर उन्होंने यह आश्वासन दिया कि वह मागासीसी की नीतियों का ही अनुसरण करेंगे।

१९६१ के चुनाव में गरसिया के विरुद्ध डायसडैडो मकापागाल खड़े हुए और उन्होंने भ्रष्टाचार का उन्मूलन करने तथा आर्थिक स्थिरता लाने का वचन दिया। इन आश्वासनों के आधार पर मकापागाल चुनाव में जीत गए।

दक्षिण पूर्वी एशिया सन्धि संगठन—दक्षिण-पूर्वी एशिया के स्वतन्त्र राष्ट्रों को साम्यवादियों के आक्रमण से बचाने के उद्देश्य से संयुक्त राज्य ने परस्पर सुरक्षा के लिए वचन-बद्ध राष्ट्रों के एक समझौते का प्रस्ताव रखा। तदनुसार १९५४ में दक्षिण-पूर्वी एशिया संधि संगठन (सीटो) स्थापित किया गया। ब्रिटेन, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैण्ड, फिलिपीन गणराज्य, थाईलैण्ड तथा पाकिस्तान इस संगठन के सदस्य बन गए। चूँकि बर्मा, भारत तथा इण्डोनेशिया जैसे देशों ने इस संगठन का सदस्य बनने से इनकार कर दिया, अतः इस संगठन का प्रभाव कम हो गया है।

इण्डोचीन में संघर्ष—एशिया के अन्य भागों में स्वतन्त्रता आन्दोलनों में बहुत से बलिदान किए जाने बाकी थे।

दूसरे विश्वयुद्ध के बाद इण्डोचीन के राज्यों के लिए फ्रांस ने एक नया संविधान मंजूर किया। इस नये संविधान में फ्रांसीसी साम्राज्य के भीतर इण्डोचीन के राज्यों का एक संघ बनाने की व्यवस्था कर दी गई थी। युद्ध के दौरान में जापान ने वियतनाम की स्वदेशी सरकार को मान्यता प्रदान की। वियतनाम इस नये संघ का एक राज्य था और इसका नेतृत्व बाओ दई कर रहे थे। वियतनाम के नेताओं की यह धारणा थी कि उनको फ्रांस द्वारा दी गई स्वतन्त्रता से अधिक स्वतन्त्रता मिलनी

चाहिए । अतः उन्होंने फ्रांसीसी योजनाओं का बलपूर्वक विरोध किया। उसी दौरान में साम्यवादियों ने होचीमिन्ह के नेतृत्व में एक प्रतिद्वन्द्वी राष्ट्रवादी सरकार की स्थापना कर दी। साम्यवादी आन्दोलन पर रोक लगाने के उद्देश्य से फ्रांसीसियों ने बाओ-दई और वियतनामियों के साथ समझौता करने का निश्चय किया। इसके अलावा, फ्रांस ने इण्डोचीन के दो अन्य राज्यों, कम्बोडिया और लाओस, को स्वशासन का अधिकार दे दिया।

सात वर्षों तक युद्ध चलता रहा। १९५४ तक साम्यवादियों ने वियतनाम के काफी बड़े क्षेत्र तथा लाओस और कम्बोडिया के कुछ भागों को बरबाद कर दिया था। अतः संयुक्त राज्य ने यह सोच कर कि कहीं सारा का सारा दक्षिण-पूर्वी एशिया साम्यवादियों के अधिकार में न चला जाय, फ्रांस को आर्थिक और माली मदद दी। इसके साथ-साथ संयुक्त राज्य ने फ्रांस से इण्डोचीन के तीन राज्यों को स्वतन्त्रता देने के लिए भी कहा। इण्डोचीन के साम्यवादी अपनी युद्ध-सामग्री लाल चीन से प्राप्त कर रहे थे।

इण्डोचीन में हो रहे युद्ध को समाप्त करने के उद्देश्य से संयुक्त राज्य, ब्रिटेन, फ्रांस, रूस तथा लाल चीन के प्रतिनिधियों ने जिनीवा, स्विट्जरलैण्ड, में १९५४ में हुई बैठक में भाग लिया। जुलाई में युद्ध-विराम सम्बन्धी समझौतों को अंतिम रूप दे दिया गया। संयुक्त राज्य ने युद्ध-विराम समझौते का पूरा सम्मान किया लेकिन ऐसे दस्तावेजों पर हस्ताक्षर करने से इनकार कर दिया जिनमें साम्यवादियों के आगे इस प्रकार घुटने टेक दिए गए थे।

उत्तरी तथा दक्षिणी वियतनाम—जिनीवा सम्मेलन से दो नये राष्ट्रों ने जन्म लिया। साम्यवादियों ने तुरन्त ही वियतनामी गणराज्य की उद्घोषणा कर दी। इस गणराज्य की राजधानी हनोई में रखी गई और होचीमिन्ह को इस गणराज्य का राष्ट्रपति
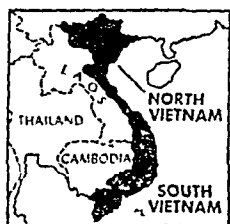
चुन लिया गया। दक्षिणी इण्डोचीन में फ्रांस-विरोधी भावना के कारण बाओ दई को अपदस्थ कर दिया गया।

नये प्रधान मन्त्री नो डिन डीम स्वतन्त्रता की लहर को आगे बढ़ाते रहे और उन्होंने दक्षिणी वियतनाम को गणराज्य घोषित कर दिया। इसकी राजधानी सैगान बनाई गई।

ये दोनों देश लगभग एक ही आकार के हैं। दक्षिणी वियतनाम का क्षेत्रफल कुछ अधिक है किन्तु इसकी जनसंख्या कम है। इन दोनों देशों के इतने सारे हित सांझे हैं कि दोनों पक्ष एक संयुक्त वियतनाम के इच्छुक हैं। उग्र साम्यवाद-विरोधी दक्षिणी वियतनाम ने इस शर्त पर जनमत कराना स्वीकार कर लिया था कि उत्तरी वियतनाम दक्षिणी क्षेत्र में साम्यवाद के प्रसार पर जोर नहीं देगा।

फिर भी वियतकांग के नाम से पुकारे जाने वाले साम्यवादी वियतनामियों ने दक्षिणी वियतनाम के विरुद्ध गुरिल्ला युद्ध जारी रखकर १९५४ की अस्थायी संधि का उल्लंघन कर दिया। दक्षिणी वियतनाम की सरकार का शुरू से ही समर्थन करने वाले संयुक्त राज्य ने राष्ट्रपति डीम को भारी मात्रा में सैनिक और आर्थिक मदद पहुंचाई। डीम इस सैनिक सहायता को तो स्वीकार करने को तैयार था पर आन्तरिक सुधार के लिए दिये गये सुझावों को वह टालता रहा। संयुक्त राज्य के प्रेक्षकों की दृष्टि में साम्यवादियों की तोड़फोड़ तथा वियतकांग के हमलों के मुकाबले में बेहतर तरीकों के रूप में आन्तरिक सुधार आवश्यक था।

उत्तरी वियतनाम को रूस तथा लाल चीन दोनों देशों से आर्थिक और जनशक्ति की सहायता प्राप्त हुई है। होचीमिन्ह के क्रूर शासन के कारण किसानों में विद्रोह उठ खड़ा हुआ और १९६१ तक लगभग ८५०,००० शरणार्थी उत्तरी वियतनाम छोड़ कर भाग गए। फिर भी साम्यवादी प्रचार के परिणामस्वरूप दक्षिणी वियतनाम के बहुत से ग्रामवासी होचीमिन्ह को वीर नेता समझते हैं और खुले तौर पर वियतकांगी गुरिल्लाओं की मदद करते हैं।

आर्थिक दृष्टि से उत्तरी वियतनाम ने दक्षिणी

वियतनाम की अपेक्षा अधिक उन्नति की है लेकिन दक्षिणी वियतनाम का मेकांग डेल्टा का दलदली प्रदेश चावल की उपज के लिए बहुत ही उपयुक्त है। वियतनामी लोगों का जीवन इसी चावल पर आश्रित है और दोनों देशों द्वारा निर्यात की जाने वाली वस्तुओं में चावल का स्थान मुख्य है।
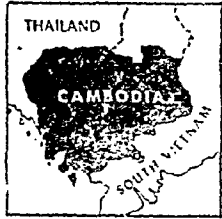
कम्बोडिया—स्वतन्त्रता प्राप्त कर लेने के पश्चात् अपनी सेना की मदद के लिए कम्बोडिया संयुक्त राज्य से प्राप्त होने वाली विदेशी सहायता पर बहुत अधिक आश्रित था। संयुक्त राज्य ने भी देश की आर्थिक स्थिति में सुधार लाने के उद्देश्य से प्रायोजनाओं के लिए आर्थिक मदद दी। इन प्रायोजनाओं में राजधानी नोम-पेन्ह से समुद्र तक की सड़क का निर्माण-कार्य भी शामिल था। साम्यवाद के भय से डरते हुए भी तटस्थ कम्बोडिया ने रूस तथा लाल चीन द्वारा दी गई सहायता को भी स्वीकार किया है।

लाओस—१९५४ के जिनीवा सम्मेलन में जिन देशों में फ्रांसीसी इन्डोचीन बँट गया था, इनमें सबसे कम विकसित देश कम्बोडिया के उत्तर में स्थित लाओस है। दक्षिणी कम्बोडिया में साम्यवादी क्षेत्र तथा पश्चिमी नीतियों के समर्थक क्षेत्रों को अलग अलग करने के उद्देश्य से लाओस को मध्यवर्ती राष्ट्र (बफर नेशन) बना दिया गया।
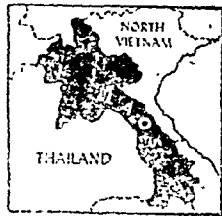
फिर भी उत्तरी वियतनाम के साम्यवादी धीरे-धीरे सीमान्त प्रदेश में घुस आए और उन्होंने लाओस के सामरिक महत्त्व के स्थानों पर कब्जा कर लिया। लाओस साम्यवादियों के हाथों में न पड़ जाए, यह सोचकर संयुक्त राज्य ने लाओस की सेना को आर्थिक मदद दी तथा उसके प्रशिक्षण की व्यवस्था की।

लाओस में विद्रोही पैथेट लाओ साम्यवादियों का नेतृत्व राजकुमार सूफानू वोंग करते हैं। यद्यपि लाल चीन ने प्रधान मन्त्री के रूप में तटस्थ राजकुमार सुवन्न फूमा को मान्यता दी फिर भी राजा सावंग वाताना राजकुमार बून ऊम की पश्चिमी नीतियों के समर्थक मंत्रिमण्डल को ही मान्यता देते रहे।

१९६१ में पड़ोसी कम्बोडिया ने लाओस की समस्याओं को सुलझाने के लिए जिनीवा में एक सम्मेलन बुलाने का प्रस्ताव रखा। थोड़े समय के लिए युद्ध-विराम हो गया और संयुक्त राज्य, रूस तथा लाल चीन ने यह मान लिया कि ये तीनों देश तीनों राजकुमारों द्वारा बनाई गई किसी भी तटस्थ सरकार को मान्यता प्रदान कर देंगे। फिर भी १९६२ में उत्तरी वियतनाम की नियमित सैनिक सहायता पाने वाली पैथेट लाओ सेना ने लाओस की शाही सेना को हरा दिया और वह लाओस में थाईलैण्ड सीमा तक घुस आई। एक तटस्थ सरकार बनाने के लिए लाओस के विभिन्न गुटों पर अमरीकी शक्ति का दबाव डालने की कोशिश के रूप में संयुक्त राज्य ने थाईलैण्ड में अपने नौसैनिक भेज दिए। आखिरकार एक ऐसी संयुक्त सरकार की स्थापना हो गई जिसमें साम्यवाद समर्थक दल, साम्यवाद विरोधी दल तथा तटस्थ दल में से प्रत्येक को निशेधाधिकार दे दिया गया।

थाईलैण्ड—१९ वीं शताब्दी में तथा २० वीं शताब्दी के प्रारम्भ में थाईलैण्ड ने अपनी स्वतन्त्रता कायम रखी लेकिन उसके पड़ोसी देश पराधीन हो गए। दूसरे विश्वयुद्ध के शुरू में थाईलैण्ड ने धुरी राष्ट्रों का पक्ष लिया और जापान को यह अनुमति दे दी कि वह ब्रिटिश और फ्रांसीसियों से युद्ध करने के लिए थाईलैण्ड का एक सामरिक अड्डे के रूप में प्रयोग कर सकता है। १९४५ के बाद थाईलैण्ड पश्चिमी राष्ट्रों का समर्थक बन गया लेकिन उसका इस स्थिति को बनाए रखना इन्डोचीन के तीन देशों में

साम्यवाद के विकास या ह्रास पर निर्भर करता था। थाईलैण्ड इन तीनों देशों से लगभग चारों ओर से घिरा हुआ है। थाईलैण्ड ने पूर्वी पड़ोसी कम्बोडिया पर यह आरोप लगाया कि वह साम्यवादियों को थाईलैंड में घुसपैठ करने के अवसर दे रहा है। इस पर १९६१ में कम्बोडिया ने थाईलैण्ड के साथ अपने सम्बन्ध तोड़ लिए।

१. दक्षिण-पूर्वी एशिया में भूतपूर्व ब्रिटिश उपनिवेशों से कौन से नए देशों का निर्माण हुआ ?
२. समूचे दक्षिण-पूर्वी एशिया में साम्यवाद के खतरे के सम्बन्ध में अपने विचार प्रकट कीजिए।
३. नए देशों पर नियंत्रण प्राप्त करने के उद्देश्य से साम्यवादियों द्वारा अपनाए गए तरीकों का वर्णन कीजिए।
४. संयुक्त राज्य ने दक्षिण-पूर्वी एशिया के इन नए देशों की किस प्रकार सहायता की ?
५. संयुक्त राज्य ने फिलिपीन के स्वतन्त्रता प्राप्त करने के बाद किस प्रकार उसका मार्ग प्रशस्त किया ?
६. दक्षिण-पूर्वी एशिया संधि संगठन के उद्देश्यों का वर्णन करते हुए इसके सदस्य देशों के नाम लिखिए।
७. इन्डोचीन में स्वतन्त्रता के लिए हुए आंदोलन का परिचय दीजिए। भूतपूर्व फ्रांसीसी इन्डोचीन में से किन देशों का निर्माण हुआ ?
८. दक्षिण-पूर्वी एशिया का ऐसा कौन-सा देश था जो कभी भी पराधीन नहीं रहा।
९. दक्षिण-पूर्वी एशिया के किन देशों पर साम्यवादियों का प्रभुत्व रहा है और उनमें से कौन से देश ऐसे हैं जो साम्यवादी नियंत्रण से मुक्त रहने के लिए संघर्ष कर रहे हैं ?

इन्डोनेशिया का द्वीप गणराज्य

दक्षिण-पूर्वी एशिया में एक और जरूरी समस्या यह थी कि डच पूर्वी हिन्द द्वीपसमूह स्वतन्त्रता की मांग कर रहा था। इस द्वीपसमूह के रबर, कलई (वंग), कुनीन तथा मसाले बहुत समय से हालैंड के लोगों के लिए आय का साधन बने हुए थे। राष्ट्रवाद की उग्र भावना से प्रेरित होकर द्वीपसमूह के मूल निवासी केवल स्वतन्त्रता की ही माँग नहीं कर रहे थे बल्कि उक्त साधनों से होने वाली समृद्धि की माँग भी कर रहे थे।

जापान ने नीदरलैंड्स पूर्वी हिन्द द्वीपसमूह में जब आत्मसमर्पण कर दिया, उसके दो दिन बाद ही अहमद सुकर्णो ने, जो बहुत समय से अपने देश के *स्वतन्त्रता आन्दोलन के नायक* रहे थे, इन्डोनेशिया गणराज्य की स्थापना की घोषणा कर दी। युद्ध भड़क उठा। यह युद्ध पहले तो उन ब्रिटिश सेनाओं के विरुद्ध हुआ जो जापानियों को खदेड़ने के लिए आई थीं और बाद में डचों के खिलाफ हुआ। भारत और आस्ट्रेलिया ने पृथक्-पृथक् संयुक्त राष्ट्र को स्थिति से अवगत कराया। नीदरलैण्ड्स ने यह दलील दी कि यह एक गृहयुद्ध है इसलिए यह संयुक्त राष्ट्र के हल करने का मामला नहीं है। इंगलैण्ड, फ्रांस और बेलजियम ने यह सोचकर कि संयुक्त राष्ट्र की कार्रवाई एक ऐसा उदाहरण बन जाएगी जो भविष्य में किसी भी समय उनके अपने साम्राज्यों के विरुद्ध इस्तेमाल की जा सकेगी, डचों के दृष्टिकोण का समर्थन किया। नीदरलैण्ड्स इस बात के लिए तैयार था कि इन्डोनेशिया को डच साम्राज्य के अधीन डोमिनियन स्तर दे दिया जाए। लेकिन संयुक्त राष्ट्र आयोग ने, जिसके बेलजियम, आस्ट्रेलिया तथा संयुक्त राज्य सदस्य थे, ऐसे बहुत से तरीकों की सिफारिश की जिनसे इन्डोनेशिया को १९५० के मध्य तक स्वतन्त्रता प्राप्त हो जाती। डचों ने शुरू की बातें तो मान लीं लेकिन पूरी स्वतन्त्रता देने में आनाकानी की। इस सब के बावजूद जनवरी १९५० में इन्डोनेशिया का गणराज्य वास्तव में स्थापित हो गया। यह गणराज्य जल्दी ही संयुक्त राष्ट्र का सदस्य भी बन गया।

सुमात्रा में विद्रोह—इन्डोनेशिया के लोगों

को जल्दी ही इस बात का ज्ञान हो गया कि स्वतन्त्रता के साथ-साथ कठिन जिम्मेदारियाँ भी आ जाती हैं। पूर्व से पश्चिम तक एक हजार मील में फैले ३००० द्वीपों में बसे हुए आठ करोड़ व्यक्तियों ने जब प्रजातन्त्र को कार्य रूप में परिणत करने की कोशिश की तो अनेक समस्याएँ आईं। १९५६ में सुमात्रा में मौजूद सैन्य दल विद्रोह करने लगे। जल्दी ही सेलेबेस तथा बोर्नियो के सैनिक नेताओं ने उनका अनुसरण किया। उनकी यह शिकायत थी कि सरकार जावा द्वीप का पक्षपात कर रही है और उन्होंने प्रत्येक द्वीप में अपेक्षाकृत अधिक स्वायत्त शासन की माँग रखी। राष्ट्रपति सुकर्ण ने सैनिक कानून लागू करने की घोषणा कर दी। उन्होंने एक ऐसी सरकार की स्थापना भी की जिसके मन्त्रिमण्डल में साम्यवादियों सहित सभी मुख्य राजनीतिक दलों के प्रतिनिधि थे।

विद्रोह चलता रहा और १९५८ में सरकार ने सुमात्रा के विद्रोहियों के विरुद्ध बल-प्रयोग किया। इसी बीच विद्रोहियों ने सरकार पर साम्यवादियों का पक्षपात करने का आरोप लगाया। स्थानीय चुनावों में साम्यवादियों की विजय होने से लोकतंत्रीय राष्ट्रों में यह खतरा पैदा हो गया कि कहीं इन्डोनेशिया साम्यवादी देश न बन जाए। इन खतरों तथा सुमात्रा में हो रहे विद्रोहों के कारण सरकार को बाहरी द्वीपों के साथ बेहतर व्यवहार करने का आश्वासन देना पड़ा। १९५९ में राष्ट्रपति सुकर्ण ने अधिनायक की शक्तियाँ प्राप्त कर लीं लेकिन उन्होंने यह वायदा किया कि १९६२ तक एक चुनी हुई संसद् का निर्माण हो जाएगा।

नीदरलैण्ड्स न्यूगिनी—सुकर्ण ने डचों के सामने नीदरलैण्ड्स न्यूगिनी की माँग रखने के साथ ही इन्डोनेशिया में राष्ट्रवाद की भावना का आह्वान किया। उन्होंने संयुक्त राष्ट्रसंघ से कहा कि वह इस मामले में विचार-विमर्श करने के

लिए नीदरलैंड्स पर दबाव डाले। जब संयुक्त राष्ट्र संघ ने ऐसा करने से इनकार कर दिया तो सुकर्ण ने डचों को इन्डोनेशिया से बाहर निकाल दिया और उनकी सम्पत्ति जब्त कर ली। इस काम को बनाये रखने के उद्देश्य से डच क्षेत्र में इन्डोनेशिया के छाताधारी उतारे गए पर उन्हें खदेड़ दिया गया।

इससे पहले न्यूगिनी परिषद् की स्थापना के रूप में स्वशासन की दिशा में पहला कदम उठाया जा चुका था। इस परिषद् ने इस क्षेत्र का नाम बदल कर पश्चिमी पपुआ रखने की प्रार्थना की।

विदेशी सहायता—१९६० में ख्रुश्चेव ने इन्डोनेशिया की राजधानी जकार्ता का दौरा किया। इसी यात्रा के दौरान उन्होंने अपने वक्तव्य में यह कहा कि जहाँ तक इन्डोनेशिया की नीदरलैण्ड्स न्यूगिनी की माँग का प्रश्न है, सोवियत रूस उसके साथ है। इससे पहले उन्होंने जकार्ता के साथ एक ऐसे समझौते पर हस्ताक्षर किए थे जिसमें और अधिक आर्थिक सहायता की व्यवस्था मौजूद थी।

बाद में १९६० में सुकर्ण ने न्यूयार्क में हुई संयुक्त राष्ट्र महासभा की बैठक में भाग लिया। उसी समय संयुक्त राज्य ने यह वायदा किया कि वह इन्डोनेशिया को दी जाने वाली सहायता में वृद्धि कर देगा।

१. यह बताइए कि इन्डोनेशिया ने स्वतन्त्रता किस प्रकार प्राप्त की।
२. इन्डोनेशिया किन क्षेत्रों को प्राप्त करने का इच्छुक था?
३. इन्डोनेशिया को आर्थिक मदद देने वाले देशों के नाम बताइए।

दक्षिण-पश्चिमी एशिया में कठिन समय

राष्ट्रवाद की भावना दक्षिण-पश्चिमी एशिया की जनता में फैल गई थी। यहाँ के बहुत से लोग तो मूलतः अरबवासी थे। इनमें से कई लोग पहले विश्वयुद्ध के बाद ब्रिटेन और फ्रांस के समादेशों (मैंडेट्स) के अधीन रहते थे। अब उन्हें अपना एक हजार वर्ष पहले का समय याद आ रहा था जब वे लोग विश्व की एक महान् शक्ति समझे जाते थे। अब वे फिर खोई हुई शक्ति प्राप्त करना चाहते थे।

लेबनान—भूमध्यसागर के पूर्वी छोर पर बसा हुआ लेबनान एक छोटा-सा राष्ट्र है। फ्रांस ने १९४६ में इस देश से अपने सिपाही हटा लिए। यहाँ के आधे लोग मुसलमान थे और शेष आधे ईसाई थे। लेबनान ने गणतन्त्रात्मक सरकार
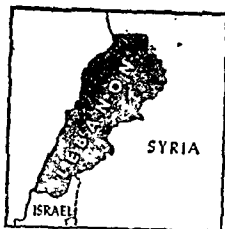
स्वीकार कर ली। यह राष्ट्र अरब लीग का सदस्य है। यह लीग अरब लोगों में एकता बनाए रखने के उद्देश्य से १९४५ में बहुत से अरब राज्यों द्वारा बनाई गई थी। फिर भी पश्चिमी एशिया की जनता की सद्भावना के लिए पूर्व और पश्चिम में प्रतियोगिता हुई जिसमें लेबनान ने प्रजातन्त्र के प्रति अपनी आस्था प्रकट की। पश्चिमी एशिया का यही एक ऐसा देश है जिसने आइजनहावर के सुरक्षा सम्बन्धी सिद्धान्त को औपचारिक तौर पर स्वीकार किया। आइजनहावर के इस सिद्धान्त के अधीन यह व्यवस्था थी कि उस क्षेत्र में जिस किसी देश को भी साम्यवादी शक्ति से खतरा हो, संयुक्त राज्य अपनी सशस्त्र सेनाएँ सहायतार्थ भेजेगा और जिन देशों को आवश्यकता होगी उन्हें आर्थिक मदद भी देगा। लेबनान में भीतरी तनाव पैदा हो गया। इस तनाव के कारण वहाँ की जनता की पश्चिम के प्रति निष्ठा की निरन्तर कठिन परीक्षा हो रही थी।

१९५८ में सरकार के विरुद्ध विद्रोह उठ खड़े हुए और ऐसा कहा जाता है कि संयुक्त अरब गणराज्य ने इन विद्रोहों को बढ़ावा दिया। ये विद्रोह देश के कई भागों में फैल गए। इस सम्बन्ध में अरब लीग और संयुक्त राष्ट्र संघ से शिकायत की गई। फिर भी यह संकट समाप्त नहीं हो सका। इसके बाद राष्ट्रपति कैमिल शामून ने संयुक्त राज्य से मदद देने के लिए कहा। उसने यह मदद इस आधार पर माँगी कि लेबनान की स्वतन्त्रता को किसी बाहरी शक्ति से खतरा पैदा हो गया था। परिणाम यह हुआ कि अमरीका के नौसैनिक आ पहुँचे और तनाव कुछ कम हुआ। कुछ ही सप्ताह में ये सैन्य-दल हटा लिए गए।

एक चुनाव हुआ और जनरल फाऊद शेबाब राष्ट्रपति चुन लिए गए। संयुक्त राज्य से प्राप्त

विद्रोहियों के साथ युद्ध करने के उपरान्त एक लेबनानी सैनिक अपनी प्यास बुझाने के लिए रुक गया है।

एक ऋण की सहायता से यह देश आर्थिक दृष्टि से फिर पश्चिमी एशिया के सबसे अधिक समृद्ध देशों में गिना जाने लगा।

सीरिया—सीरिया नाम का बड़ा देश लेबनान के उत्तर और पश्चिम में स्थित है। यह देश भी अरब लीग का सदस्य है और अपने इस छोटे पड़ोसी की तुलना में पश्चिम के प्रति कम हमदर्दी रखता है। सीरिया ने न केवल आइजनहावर

सिद्धान्त मानने से ही इन्कार किया बल्कि सोवियत संघ के साथ कच्चे माल के बदले रूसी हथियार प्राप्त करने का एक समझौता भी कर लिया। इसके अलावा संयुक्त अरब गणराज्य नामक एक नया राष्ट्र बनाने के लिए सीरिया मिस्र से जा मिला।

सीरिया वासियों का भ्रम जल्दी ही दूर हो गया। मिस्र के राष्ट्रपति गमाल अब्दुल नासिर ने सीरिया का अधिक से अधिक राजनीतिक नियन्त्रण मिस्र के नेताओं के हाथ में दे दिया। जिन भूमि मालिकों और व्यापारियों ने नासिर के भूमि सुधारों तथा राष्ट्रीयकरण के कार्य का विरोध किया, उन्होंने असन्तोष की भावना पैदा कर दी। १९६१ में एक ऐसा विद्रोह उठ खड़ा हुआ जिसे नासिर दबा

नहीं सका और इस प्रकार सीरिया इस संघ से अलग हो गया और संयुक्त अरब गणराज्य विभाजित हो गया।

जोर्डन—राष्ट्रसंघ द्वारा ब्रिटिश समादेश के रूप में निर्धारित तुर्की साम्राज्य का हिस्सा ईराक (मैसोपोटामिया) तथा ट्रांसजोर्डन नाम के स्वतन्त्र राज्यों में बदल गया। ईराक को १६३२ में ही एक स्वतन्त्र प्रभुत्व-सम्पन्न राज्य के रूप में मान्यता दे दी गई थी लेकिन ब्रिटेन ने ट्रांस जोर्डन पर से दूसरे विश्वयुद्ध के बाद ही अपना अधिकार छोड़ा और इस देश का नाम जोर्डन का हाशिम वंशीय राज्य रखा गया।
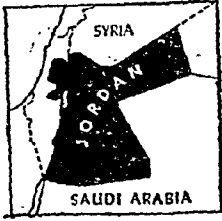
जोर्डन का नौजवान बादशाह हुसैन मिस्र के राष्ट्रपति नासिर की विस्तारवादी आकांक्षाओं से डरा हुआ था। १६५८ के वसन्त में जोर्डन ने ईराक से मिल कर अरब संघ बना लिया। जब ईराक में राष्ट्रवादियों ने वहाँ की सरकार को उखाड़ फेंका तो हुसैन को खुद अपने विरुद्ध एक सैनिक साज़िश का सामना करना पड़ा। यह साज़िश उसे अपदस्थ करने के लिए की गई थी और इसलिए उसने ब्रिटेन तथा संयुक्त राज्य से सैनिक मदद देने के लिए कहा।

अतः जब लेबनान में अमरीकी नौसैनिक बढ़ रहे थे, उसी समय जोर्डन में ब्रिटिश छाताधारी सैनिक उतर रहे थे। फिर भी परिस्थितियों में जल्दी ही सुधार हुआ और संयुक्त राज्य की महासभा में अरब प्रतिनिधियों ने यह कहा कि अमरीकी और ब्रिटिश, दोनों प्रकार के सैन्य दल वापस बुला लिए जाएँ। ब्रिटिश सैन्य दल कुछ ही सप्ताहों में वापस बुला लिए गए।

इस बीच हुसैन ने अरब संघ को बनाए रखने की कोशिश की थी लेकिन अन्ततः उसे इस संघ का विघटन स्वीकार करना पड़ा।

ईराक—ईराक में हुई राष्ट्रवादी क्रांति में बादशाह फैजल और शाही परिवार के अन्य सदस्य मारे गए थे। इस क्रांति का नेतृत्व ब्रिगेडियर अब्दुल करीम कासिम कर रहे थे। प्रधान मंत्री बन कर कासिम ने यह कोशिश की थी कि उसका देश साम्यवादी गुट तथा संयुक्त अरब गणराज्य से अलग होकर प्रगति कर सके। यद्यपि ईराक और सोवियत समाजवादी गणराज्य संघ के सम्बन्ध हाल में ही मैत्रीपूर्ण हुए हैं, फिर भी ईराक ने संयुक्त राज्य और ग्रेट ब्रिटेन की ओर फिर से मित्रता का हाथ बढ़ाया है।

ईरान—ईरान और सोवियत समाजवादी गणराज्य संघ की सीमा रेखा बहुत दूर तक मिलती है। रूस की यह बहुत पुरानी इच्छा थी कि उसे ईरान में से गुजरकर ईरान की खाड़ी में पहुँचने का मार्ग मिल जाए। १६३७ से पहले ईरान को फारस कहा जाता था। दूसरे विश्वयुद्ध के दौरान रूस की यह इच्छा और भी अधिक प्रबल हो गई जब उसने देखा कि पश्चिमी मित्र राष्ट्रों ने ईरान के मार्ग से ही बहुत सा फौजी सामान सोवियत संघ को भेजा है।

नवनिर्मित संयुक्त राष्ट्र के सामने शुरू-शुरू में १६४६ में जो समस्याएँ उपस्थित हुई उनमें से एक समस्या यह थी कि ईरान ने सोवियत रूस पर यह आरोप लगाया कि वह उसके आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप कर रहा था। दूसरे विश्वयुद्ध के दौरान ब्रिटेन, संयुक्त राज्य तथा रूस ने ईरान की अनुमति से वहाँ अपने सैन्य दल स्थापित कर रखे थे। युद्ध के बाद संयुक्त राज्य और ब्रिटेन ने समझौते के अनुसार वहाँ से अपने सैन्य दल हटा लिए लेकिन रूस ने ऐसा नहीं किया और उसकी फौजें उत्तरी प्रान्त में पूर्ववत् बनी रहीं। यही नहीं, रूस ने ईरान के सैन्य दलों को उस उत्तरी प्रान्त में घुसने भी नहीं दिया। अतः इस मामले पर

सुरक्षा परिषद् में बहस हुई और जब रूस ने यह देखा कि लोकमत उसके विरुद्ध है तो उसने भी अपने सैन्य दल वहाँ से हटा लिए।

ईरान और ब्रिटेन के मध्य एक झगड़े को निपटाने के लिए १६५१ में फिर से संयुक्त राष्ट्र संघ की सहायता लेनी पड़ी। इस कथा को समझने के लिए यह आवश्यक है कि हम फारस के इतिहास पर नजर डालें। फारस को अपने अधिकार में करने के लिए ब्रिटेन और रूस के लोगों में वरसों तक होड़ लगी रही। इसका कारण यह था कि फारस की भौगोलिक स्थिति महत्त्वपूर्ण थी तथा यह प्राकृतिक सम्पदा से सम्पन्न देश था। काफी समय बाद दोनों ने "प्रभाव-क्षेत्रों" के आधार पर फारस का विभाजन कर दिया और इस प्रकार विभाजित प्रत्येक भाग को अपने क्षेत्र के भीतर प्राकृतिक सम्पदा के खुले प्रयोग का अधिकार दे दिया गया। यह व्यवस्था १६१७ की रूसी क्रान्ति के समय खत्म हो गई जबकि रूस ने फारस से अपना अधिकार हटा लिया।

१६२० से आरंभ दशक के शुरू में रजा खां नाम के एक सैनिक नेता ने अपने आप को फारस के शाह के रूप में जमा लिया। उसने बहुत से सुधार करने की कोशिश की। एक सशक्त सेना तैयार की गई और देश की आर्थिक व्यवस्था का पुनर्गठन किया गया। सड़कों और रेलमार्गों का निर्माण किया गया। वहाँ की सरकार ने अपने देश में ब्रिटिश अधिकृत तार लाइनों तथा ब्रिटेन और जर्मनी की उन हवाई कम्पनियों को जो वहां विमान चलाती थीं, अपने अधिकार में ले लिया। अन्त में सरकार ने एंग्लो-परशियन तेल कम्पनी के अधिकार भी रद्द कर दिए। इस कम्पनी के अधिकांश भाग की मालिक ब्रिटिश सरकार थी। लम्बी लिखा-पढ़ी के बाद ब्रिटेन ने ६० साला पट्टा मंजूर कर लिया और इस पट्टे के अनुसार ईरान को तेलों से होने वाले लाभ का अधिक अंश पाने का अधिकार मिल गया।

जैसे-जैसे राष्ट्रवाद की भावना का उदय होता गया, वैसे-वैसे इस समझौते के प्रति ईरान की जनता का असन्तोष बढ़ता रहा। १६५१ में ईरान के प्रधानमंत्री मोहम्मद मोस्सादेक व्यावहारिक तौर पर वहां के अधिनायक बन गए। उन्होंने तेल के कुओं का राष्ट्रीयकरण कर दिया और ब्रिटेन के लोगों को वहाँ से हटना पड़ा। जब यह मामला संयुक्त राष्ट्र में उठाया गया तब भी मोस्सादेक अपने निश्चय से टस से मस नहीं हुआ। देश के साम्यवादियों ने भी यह सोचकर कि ऐसी परिस्थिति में उन्हें ब्रिटिश लोगों को उलझन में डालने का अवसर प्राप्त हो जाएगा, मोस्सादेक का समर्थन किया। पर ईरान के लोगों को यह मालूम नहीं था कि तेल के कुओं को कैसे काम में लाएं। परिणाम यह हुआ कि जबरदस्त बेकारी हो गई और सरकार की आय में काफी कमी आ गई। इस कमी का कारण यह था कि ईरान पैसे के लिए वहां की तेल कम्पनियों पर बहुत निर्भर रहता था। इसके बाद संकट आ गया और मुस्सादेक ने शाह का तख्ता पलटने की कोशिश की लेकिन वह ऐसा करने में सफल नहीं हो सका।

बाद में मोस्सादेक पर राजद्रोह का आरोप लगाया गया और इसी अपराध के कारण उसे तीन साल के कारावास का दण्ड दिया गया। ईरान ने अमरीका, ब्रिटेन, फ्रांस तथा डचों की आठ तेल कम्पनियों के साथ एक २५-वर्षीय करार किया। इस समझौते के अधीन विक्री किए गए तेल से होने वाले लाभ का ५० प्रतिशत भाग ईरान सरकार को दिया जाना था।

यद्यपि तेल की दृष्टि से ईरान एक समृद्ध देश है फिर भी वहां की अधिकांश जनता खेती और भेड़-पालन में लगी रहती है। १६५६ में सरकार ने वहां की जनता के लाभ के लिए तैयार किए गए सात-वर्षीय आर्थिक और सामाजिक कार्य-क्रम का सूत्रपात किया।

सोवियत संघ की ओर से उग्र विरोधों के बावजूद ईरान ने १६५६ में संयुक्त राज्य के साथ एक सुरक्षा संधि पर हस्ताक्षर किए।

सऊदी अरब—अरब प्रायद्वीप का दूसरा प्रभावशाली देश सऊदी अरब है और यह भी तेल की दृष्टि से एक अत्यन्त समृद्ध देश है। सऊदी अरब का तेल उद्योग एक अमरीकी तेल कम्पनी चलाती
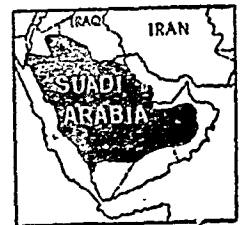
है और होने वाले लाभ का आधा भाग शाह को देती है। अरब लीग का नेतृत्व प्राप्त करने के लिए तथा उस लीग में अपना प्रभुत्व बनाए रखने के लिए दूसरे विश्वयुद्ध के समय से ही शाह इब्न सऊद और मिस्र के राष्ट्रपति नासिर में होड़ लगी रही है।

१९५७ में शाह सऊद ने संयुक्त राज्य का दौरा किया और पश्चिमी एशिया की सुरक्षा के लिए अमरीका को अपना सहयोग देने का वचन दिया। उसका सहयोग पाने का मिस्र और ईराक दोनों ने यत्न किया है। फिर भी शाह सऊद ने अपनी स्वतंत्रता कायम रखी है जिसके कारण वह किसी समस्या के उत्पन्न होने पर इन में से जिस देश के साथ चाहे सहयोग कर सकता था। आन्तरिक असन्तोष की भावना को दूर करने के लिए शाह सऊद ने १९५८ में नीति व्यवस्था सम्बन्धी अधिकार अपने भाई फैजल को दे दिए। लेकिन फैजल ने १९६१ में त्यागपत्र दे दिया और सऊद फिर से शाह बन गया।

इस बीच, पड़ोसी यमन देश संयुक्त अरब गणराज्य के साथ मिल गया और इन्होंने संयुक्त अरब राज्य की स्थापना की। यमन ने नासिर की विदेश नीति का अनुसरण किया लेकिन संयुक्त अरब गणराज्य के विघटित होने के बाद संयुक्त अरब राज्य भी समाप्त हो गया।

फिलस्तीन—संयुक्त राष्ट्र के सामने आने वाले महत्त्वपूर्ण प्रश्नों में से एक प्रश्न फिलस्तीन के भाग्य-निर्णय का था। पहले विश्वयुद्ध के बाद फिलस्तीन एक शासनादेश के रूप में ब्रिटेन को सौंप दिया गया था।

पहले विश्वयुद्ध के दौरान लार्ड बालफोर ने, जो तत्कालीन ब्रिटिश विदेश मंत्री था, बालफोर घोषणा जारी की। इस घोषणा में यह कहा गया था कि ब्रिटिश सरकार "फिलस्तीन को यहूदी लोगों का राष्ट्रीय देश बनाने" का समर्थन करेगी। पहले विश्वयुद्ध से पूर्व भी विश्व भर में फैला हुआ एक जियोनिस्ट (यहूदी) संघ मौजूद था। इस संघ का यह उद्देश्य था कि फिलस्तीन का यहूदियों का राष्ट्रीय देश बनाने की दिशा में प्रयत्न करे। अब इस बालफोर घोषणा में यहूदियों को अपनी निजी राज्य बनाने की अपनी इच्छा की पूर्ति के लक्षण दिखाई दिये।

यहूदियों, अरबों तथा ब्रिटिश सरकार ने इस घोषणा की व्याख्या एक जैसी नहीं की। यहूदियों ने तो यह समझा कि इस घोषणा से प्राचीन फिलस्तीन उन्हें अपने देश के रूप में मिल जाएगा। अरब लोगों ने यह समझा कि लार्ड बालफोर का तात्पर्य यह है कि इस घोषणा से यहूदी लोग वहां के अरब राज्यों में स्वतन्त्र रूप से प्रवास कर सकेंगे। ब्रिटिश सरकार को इस घोषणा का अर्थ स्पष्ट नहीं था।

पहले विश्वयुद्ध के बाद सोवियत रूस तथा पौलैण्ड और बाद में हिटलर के जर्मनी से आने वाले यहूदी शरणार्थियों की अभूतपूर्व संख्या फिलस्तीन में घुस आई। १९४० तक फिलस्तीन में यहूदियों की संख्या बढ़ कर ४६३,५३५ हो गई थी। अरब लोगों ने इस प्रवृत्ति को अपने लिए खतरनाक समझा और दूसरी ओर यहूदियों ने यह सिद्ध कर दिया कि एक यहूदी राज्य की वास्तव में आवश्यकता है। परिणाम यह हुआ कि यहूदियों और अरब लोगों के बीच अवसर सशस्त्र संघर्ष होते रहे।

दूसरे विश्वयुद्ध के बाद संयुक्त राष्ट्र की महासभा ने यह सिफारिश की कि फिलस्तीन को अरब लोगों और यहूदियों के मध्य बांट दिया जाए। साथ ही जेरूसलम के शहर के अन्तर्राष्ट्रीयकरण और इस पर संयुक्त राष्ट्र संघ के नियंत्रण का निश्चय भी किया गया। अरब लोगों ने इस विभाजन पर आपत्ति की और यहूदियों के खिलाफ युद्ध छेड़ दिया। आस-पास के अरब राज्य, जिन्होंने पारस्परिक हितों की रक्षा के लिए अरब लीग का निर्माण कर लिया था, फिलस्तीन में अपने अरब साथियों की सहायता के लिए युद्ध के मैदान में उतर आए।

MEDITERRANEAN SEA
SYRIA
ISRAEL
JORDAN
EGYPT

इसरायल—ब्रिटेन के लोगों ने अपने शासनादेश को छोड़ने का निर्णय किया और वहां से अपनी फौजें हटा लीं। १९४८ में यहूदियों ने इसरायल के एक नए राज्य की स्थापना की घोषणा की।
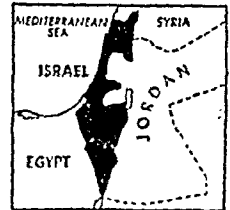
डेविड वेन-गुरियों इस नए राज्य के प्रधान-मंत्री बने। लगभग सभी गैर-अरब राष्ट्रों ने इसरायल को मान्यता प्रदान की। इसरायल बाद में १९४९ में संयुक्त राष्ट्र का सदस्य बन गया पर अरब लोगों ने और जोश के साथ आक्रमण किया क्योंकि वे भी उस क्षेत्र पर अधिकार का दावा करते थे। अत संयुक्त राष्ट्र की सुरक्षा परिषद् ने विराम संधि के आदेश दिए और काउण्ट फ़ोक बरनाडोट को मध्यस्थ नियुक्त कर दिया। लेकिन उनके प्रस्तावों को साफ तौर पर अस्वीकार कर दिया गया और लड़ाई फिर जारी हो गई। यही नहीं; १९४८ में बरनाडोट की हत्या कर दी गई और फिर अस्थायी संधि के सम्बन्ध में संयुक्त राष्ट्र के डाक्टर राल्फ बंच ने बात-चीत शुरू की। पर इसरायल और मिस्र के बीच थोड़े-थोड़े समय बाद युद्ध होता रहा, यहाँ तक कि अक्तूबर १९५६ में इसरायल की फौजें मिस्री क्षेत्र में घुस आईं। संयुक्त राष्ट्र महासभा ने एक आपातकालीन अधिवेशन में फौरन युद्ध-विराम करने का आदेश दिया।

आखिरकार कई महीनों बाद इसरायल पर संयुक्त राष्ट्र के दबाव का असर हुआ और उसने अपनी फौजें १९४९ की सीमारेखाओं से पीछे हटा लीं। सीमाओं से होने वाले आक्रमण के सम्बन्ध में इसरायल को आश्वस्त करने के लिए संयुक्त राष्ट्र संघ ने इसरायल और मिस्र के मध्य के सीमान्त क्षेत्र में रहने के उद्देश्य से एक अभियान सेना संगठित की। मिस्र को गाजा की विवादास्पद पट्टी पर अधिकार करने की अनुमति दे दी गई।

अपने अरब पड़ोसियों के कारण उत्पन्न होने वाली समस्याओं और एक विशाल सेना के रख-रखाव पर होने वाले खर्च के बावजूद भी इसरायल ने आश्चर्यजनक प्रगति की। इसके साथ-साथ वह एशिया और योरप के देशों से आने वाले यहूदियों की बहुत बड़ी संख्या को अपने यहाँ खपाता रहा।

तुर्की—मुस्तफा कमाल ने, जिन्हें कभी-कभी कमाल अतातुर्क के नाम से भी पुकारा जाता था, १९२३ में तुर्की गणराज्य की स्थापना की और वहाँ के जनजीवन को आधुनिक बना दिया। पर उनकी मृत्यु के बाद तुर्की की सरकार में निरन्तर अस्थिरता बनी रही।
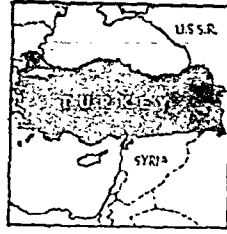
दूसरे विश्वयुद्ध के बाद संयुक्त राज्य तथा कुछ योरोपीय देशों ने तुर्की को भारी ऋण तथा तकनीकी सहायता दी। फिर भी आयात और निर्यात के पुराने फर्क में कोई कमी नहीं आई और हर साल तुर्की निर्यात की तुलना में आयात अधिक करता रहा। परिणामतः आर्थिक कठिनाइयाँ उत्पन्न हो गईं और इस कारण प्रधान मत्री मैण्डेरेज़ की सरकार की कड़ी आलोचना की गई। मैण्डेरेज़ ने इन आलोचनाओं के उत्तर के रूप में प्रेस का मुंह बन्द कर दिया और आलोचकों को जेल में डाल दिया।

१९६० में विद्यार्थियों द्वारा बार-बार किए गए दंगों के बाद सेना ने सरकार पर नियन्त्रण कर लिया। मैन्डेरेज़ तथा उसकी सरकार के दो सदस्यों को गिरफ्तार करके मौत के घाट उतार दिया गया और अन्य लोगों को लम्बी-लम्बी सजाएँ दे दी गईं। इस सैनिक वर्ग ने १७ महीने तक शासन किया और उसके बाद तुर्की में दूसरा गणराज्य स्थापित किया गया। जनरल कमाल गुरसेल को जो उक्त सैनिक वर्ग का नेता रहा था, अक्तूबर १९६१ में राष्ट्रपति चुन लिया गया और मुख्य दलों का एक मिला-जुला मन्त्रिमण्डल बन गया। अब ऐसा लगा कि तुर्की की राजनीतिक स्थिति अपेक्षाकृत अधिक स्थिर हो चली है लेकिन आर्थिक दृष्टि से इस देश का भविष्य अब भी अनिश्चित था। फिर भी तुर्की उत्तरी अतलांतिक संधि संगठन का पक्का सदस्य है।

साइप्रस—पूर्वी भू-मध्य सागर में साइप्रस के द्वीप के एक आतंकवादी दल ने ब्रिटेन से अलग होने और यूनान से मिलने की माँग रखी। ब्रिटेन ने आर्कबिशप मकारियस को देशनिकाला दे दिया क्योंकि उनके विचार से
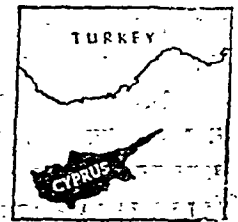
यही व्यक्ति उक्त दल का नेता था। हिंसात्मक कार्रवाइयों को समाप्त करने की बात मान लेने के बाद १९५९ में मकारियस साइप्रस लौट आया। यूनान, तुर्की और ब्रिटेन के एक सम्मेलन में साइप्रस को स्वतन्त्र करने की बात मान ली गई लेकिन साथ ही तुर्की के अल्प-संख्यक वर्ग के लिए सुरक्षात्मक उपायों की शर्त भी रखी गई। मकारियस यहाँ के पहले राष्ट्रपति बने। फिर साइप्रस संयुक्त राष्ट्र संघ का सदस्य बन गया।

केन्द्रीय संधि संगठन—ब्रिटेन, तुर्की, ईराक, ईरान तथा पाकिस्तान द्वारा परस्पर सैनिक सहायता के लिए वचनबद्ध हो जाने पर दक्षिणपूर्वी एशिया संधि संगठन और उत्तरी अतलान्तिक संधि संगठन के बीच सम्बन्ध जुड़ गया। इन लोगों ने इस संगठन का नाम पश्चिमी एशिया संधि संगठन रखा। ईराक में विद्रोह के बाद, वह इस संगठन से अलग हो गया। बाकी बचे चार सदस्यों ने अपने संगठन का नाम बदल कर केन्द्रीय संधि संगठन रख लिया।

अफ्रीकी-एशियाई सहयोग

अप्रैल १९५५ में बांडुंग सम्मेलन के बुलाने में राष्ट्रवाद की भावना का जो रूप दिखाई दिया, वह इससे पहले कहीं भी प्रकट नहीं हुआ था। एशिया और अफ्रीका के २९ स्वतन्त्र देश अपनी समस्याओं पर विचार-विनिमय करने के लिए पहली बार इकट्ठे हुए थे। यद्यपि फौरन कोई हेर-फेर करने की योजना नहीं बनाई गई, फिर भी इस सम्मेलन में उपनिवेशवाद को इतना अधिक बुरा भला कहा गया कि यदि कोई एक शताब्दी पहले का साम्राज्य-निर्माता वहाँ होता तो यह सब सुन कर भौंचक्का हो जाता। दुनिया के शोषित राष्ट्र अपने अधिकारों की मांग कर रहे थे।

१९५० में ही ब्रिटेन ने राष्ट्रमण्डल के एशियाई सदस्यों को अपनी मिली-जुली समस्याओं के लिए आपसी सहयोग का तरीका अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया था। अतः इन देशों ने कोलम्बो (श्रीलंका) में हुई बैठक में भाग लिया और कोलम्बो योजना की रूपरेखा तैयार की। इस योजना का उद्देश्य यह था कि बाढ़ नियन्त्रण प्रायोजनाओं, जल विद्युत् संयंत्रों तथा अन्य सामान्य आवश्यकताओं के लिए सभी सदस्य देश कुल साधनों में साझीदार होंगे। इस योजना का विस्तार कर दिया गया और १८ स्वतन्त्र राष्ट्र तथा ब्रिटिश उपनिवेश इसके सदस्य बन गए हैं।

१. ऐसी कौन-सी परिस्थितियाँ थीं जिनके कारण अमरीका को लेबनान में अपने नौसैनिक लाने पड़े ?
२. संयुक्त अरब गणराज्य का विघटन होने के कारण बताइए।
३. ब्रिटिश सेनाओं के जोर्डन में आने के क्या कारण थे ?
४. ईराक में हुई राष्ट्रवादी क्रान्ति के कारण बताइए।
५. संयुक्त राष्ट्र संघ ने किस प्रकार ईराक की रक्षा की ?
६. यह बताइए कि तेल के कारण ईरान में राजनीतिक समस्याएँ क्यों उत्पन्न हुई ?
७. सऊदी अरब तथा मिस्र के आपसी द्वेष के मूल कारण बताइए।
८. मिस्र तथा इसरायल के मध्य क्या समस्या थी और किस प्रकार दोनों देशों के बीच तनाव शान्त हुआ ?
९. १९६० में तुर्की में हुए विद्रोहों का विवरण बताइए।
१०. पश्चिमी एशिया संधि संगठन को केन्द्रीय संधि संगठन में क्यों बदला गया ? इन दोनों संगठनों के उद्देश्यों के बारे में बताइए।
११. बांडुंग सम्मेलन की क्या विशेषता थी ?
१२. कोलम्बो योजना के उद्देश्यों के बारे में बताइए।

वाद-विवाद के लिए प्रश्न

१. क्या कारण है कि सोवियत संघ लाल चीन को संयुक्त राष्ट्र संघ का सदस्य बनाने का समर्थन करता है ?

२. दक्षिणपूर्वी एशिया के छोटे-छोटे देशों को

एक इकट्ठे राज्य के रूप में क्या लाभ प्राप्त होते हैं?

३. ऐसी कौन-सी परिस्थितियाँ थीं जिनके कारण दक्षिणपूर्वी एशिया में साम्यवाद के प्रसार को बढ़ावा मिला?

४. क्या यह संभव है कि दक्षिण-पश्चिमी एशिया के लोग फिर से विश्व का वह नेतृत्व प्राप्त कर लें जो उन्हें वहाँ प्राचीन समय में सभ्यता के आरम्भ में प्राप्त था?

५. निम्न विषयों पर अनौपचारिक तौर पर वाद-विवाद करें:

(क) पाकिस्तान और भारत फिर से एक देश बन जाने पर आर्थिक और राजनीतिक दृष्टि से कहीं अधिक समृद्ध हो सकेंगे।

(ख) लाल चीन को संयुक्त राष्ट्र का सदस्य नहीं बनाना चाहिए।

इतिहास के उपकरणों का प्रयोग

I. नाम, तारीखें तथा स्थान:

१. क्या आप इन शब्दों को समझा सकते हैं: अरब संघ, अरब लीग, बांस का पर्दा, राष्ट्र मण्डल, केन्द्रीय संधि संगठन, सामूहिक खेती, कोलम्बो योजना, कम्यून, डोमिनियन स्तर, गुरिल्ला, आइजनहावर सिद्धान्त, उदार लोकतंत्री, शासनादेश (*मैन्डेट*), *राष्ट्रवादी चीन, पैथेट लाओ विद्रोही*, जनमत संग्रह, चीनी लोक गणराज्य, दक्षिणपूर्वी एशिया संधि संगठन, विशाल उपमहाद्वीप, संयुक्त अरब गणराज्य, वियतकांग, संयुक्त अरब राज्य।

२. नक्शे में निम्न स्थानों का पता लगाइए:

बर्मा, कलकत्ता, कम्बोडिया, श्रीलंका, दीव, फारमोसा, गाज़ा पट्टी, गोवा, भारत, इण्डोचीन, इण्डोनेशिया, ईरान, ईराक, इसरायल, जकर्ता, जोर्डन, कश्मीर, केरल, कोरिया, लाओस, लेबनान, मलाया, मन्चूरिया, मात्सु, उत्तरी वियतनाम, ओकिनावा, पाकिस्तान, पेकिंग, फिलिपीन, पाण्डीचेरी क्विमाय, सऊदी अरब, फारस, सिंगापुर, दक्षिणी *वियतनाम, सुमात्रा, सीरिया, तैवान*, थाईलैण्ड, टोकियो, तुर्की, पश्चिमी न्यूगिनी, यमन।

३. निम्न व्यक्तियों का परिचय दीजिए:

सिरिमावो भण्डारनायके, बाओ दई, बादोई, डेविड बेन गुरियों, फोक वर्नाडोट, वून ऊम, राल्फ बन्चे, शामोन, फाऊद शेवाव, चियांग काई शेक, चाऊ एन लाई, नो-डिन्ह-डीम, फैजल, कमाल गुरसेल, होची मिन्ह, हुसैन, मुस्तफा कमाल, नबुसुके किशी, लियो शाओची, माओत्से तुंग, मैण्डेरेज, वी० के० कृष्ण मेनन, इस्कन्दर मिर्जा, मोस्सादेक, गमाल अब्दुल नासिर, जवाहरलाल नेहरू, पोर्सू यूं, सिगमन री, सऊद, सवांग वताना, सुफन्नावूंग, सवन्ना फूमा, सुकर्णो।

II. क्या आप अपनी बात अच्छी तरह समझा सकते हैं?

१. भारत सरकार के सम्बन्ध में कुछ खोज करके कक्षा को यह बताइए कि भारत सरकार तथा संयुक्त राज्य की सरकार में क्या अन्तर है?

२. भारत द्वारा दक्षिणपूर्वी एशिया संधि संगठन का सदस्य न होने के कारण बताइए। *इसके बाद संगठन में शामिल होने के सम्बन्ध में* आए एक निमन्त्रण के उत्तर में एक औपचारिक नोट तैयार कीजिए।

३. कल्पना कीजिए कि आप श्रीलंका में एक छात्र हैं। अपने देश का परिचय देते हुए अपने किसी अमरीकी मित्र के लिए १००० शब्दों का एक पत्र लिखिए।

४. निम्न साम्यवादी नेताओं के जीवन परिचय के आधार पर मौखिक रूप से कक्षा को यह बताइए कि इनमें से प्रत्येक व्यक्ति साम्यवादी कैसे बना? चाऊ एन लाई, होची मिन्ह, माओत्से तुंग।

III. बुलेटिन बोर्ड के लिए:

१. कुछ नए एशियाई राष्ट्रों के सूचना कार्यालयों को एक पत्र लिखिए और उनसे कहिए कि वे अपने देश, जनता तथा मुख्य उत्पादनों से सम्बंधित एक पत्रिका भेज दें। इसके बाद एक ऐसी समिति बनाइए जो प्रत्येक सप्ताह में अलग-अलग देश से सम्बन्धित नक्शों और तस्वीरों के लिए एक साप्ताहिक बुलेटिन बोर्ड डिस्प्ले की व्यवस्था करे।

२. एशियाई राष्ट्रों के नेताओं की तस्वीरें इकट्ठी कीजिए और उनमें से प्रत्येक को कंसट्रक्शन पेपर के एक कागज पर जड़िए और फिर बुलेटिन बोर्ड डिस्प्ले के लिए उनका संक्षिप्त परिचय भी दीजिए।

IV. कक्षा-समिति के लिए कार्य :

सारी कक्षा के लिए एशिया के किसी देश या क्षेत्र की यात्रा की योजना तैयार कीजिए। अस्थाई तौर पर यात्रा का कार्यक्रम और उन स्थानों का विवरण दीजिए जहाँ आप जाना चाहते हैं। प्रत्येक सहपाठी को मार्ग का एक स्थूल नक्शा दे दीजिए। ओपेक प्रोजेक्टर पर कोई चित्र संग्रह या फिल्म दिखलाइए।

२. कश्मीर के झगड़े पर भारत और पाकिस्तान के दावे के सम्बन्ध में दोनों देशों के प्रतिनिधियों के रूप में दो-दो विद्यार्थियों के मध्य वाद-विवाद का आयोजन कीजिए।

V. नक्शों का डिस्प्ले

१. एशिया का एक विशाल स्थूल नक्शा तैयार कीजिए और उसमें दूसरे विश्वयुद्ध के बाद स्वतन्त्र हुए प्रत्येक राष्ट्र पर लेवल लगाइये तथा रंग भरिये।

२. नए एशियाई राष्ट्रों में से किसी एक को चुन कर उसका विशाल नक्शा तैयार कीजिए जिससे वहाँ की नदियों, पहाड़ों, शहरों तथा उत्पादनों का परिचय मिल सके। इस नक्शे को बुलेटिन बोर्ड के बीच में, इस तरह लगा दीजिए ताकि उस देश से सम्बन्धित ताजा कतरनें लगाने के लिए स्थान बना रहे।
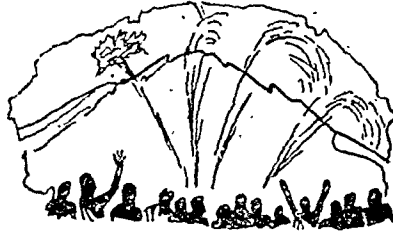
४४ अफ्रीका—स्वतन्त्रता तथा राजनीतिक एकता के मार्ग पर

दुनिया के किसी भी हिस्से में इतनी तेजी के साथ राष्ट्रवाद की भावना का उदय नहीं हुआ और न ही इस भावना को कहीं इतनी जल्दी सफलता प्राप्त हुई जितनी कि अफ्रीका में। दूसरे विश्वयुद्ध से पहले लगभग सारा महाद्वीप उपनिवेशों में बंटा हुआ था और इन उपनिवेशों पर योरपीय राष्ट्रों का अधिकार था। १९ वीं शताब्दी के आस-पास ब्रिटेन, फ्रांस, बेलजियम तथा पुर्तगाल ने अफ्रीका में अपने को पक्की तरह जमा लिया था। जब एक सितम्बर १९३९ को हिटलर ने पौलैंड पर हमला किया, उस समय भी अफ्रीकी उपनिवेशों पर उक्त देशों का ही अधिकार था। उस समय अधिकांश अफ्रीकी लोग जंगलों में कबायली जीवन या रेगिस्तानो पर खानाबदोशों का जीवन व्यतीत कर रहे थे। वे लोग युद्ध से बहुत दूर थे।

दूसरे विश्वयुद्ध की चिनगारियां सारी दुनिया में फैल गईं और अफ्रीका भी इसके प्रभावों से अछूता न रहा। उत्तरी अफ्रीका के इधर-उधर विश्वयुद्ध की कुछ जबरदस्त मुठभेड़ें हुईं। अन्य मित्र राष्ट्रों के नेताओं के साथ बातचीत करने के लिए संयुक्त-राज्य के राष्ट्रपति मोरक्को स्थित कैसा ब्लांका में हुए महत्त्वपूर्ण सम्मेलन में भाग लेने गए। इस महाद्वीप के सभी भागों में स्थित बन्दरगाहों पर मित्र राष्ट्रों के सप्लाई और जंगी जहाज रुकते थे। पूर्व के प्राकृतिक रबड़ के साधनों से वंचित हो जाने के कारण मित्र-राष्ट्रों ने रबड़ प्राप्त करने के लिए अपने लोगों को अफ्रीका के आन्तरिक क्षेत्रों में भेज दिया। परिणाम यह हुआ कि स्वतन्त्रता के बारे में कभी भी चिन्तित न होने वाले अफ्रीकी लोगों का सम्पर्क ऐसे लोगों से हो गया जो स्वतन्त्रता के लिए संघर्ष करते हुए प्राणोत्सर्ग कर रहे थे।

युद्ध के समाप्त होने पर इस महाद्वीप के सभी भागों के अफ्रीकी लोगों ने स्वतन्त्रता की मांग रखी। यह मांग उन्होंने ऐसे उपनिवेशीय राष्ट्रों के सामने रखी जो उन पर शासन कर रहे थे। राष्ट्रवाद की इस लहर का प्रसार इतनी तेजी से हुआ कि १५ वर्षों के भीतर लगभग सभी अफ्रीकी उपनिवेशों ने स्वतन्त्रता प्राप्त कर ली और वे संयुक्त राष्ट्र-संघ के सदस्य भी बन गये।

स्वतन्त्रता के इस संघर्ष में जूझने वाले अधिकांश अफ्रीकी नेताओं का जन्म बहुत पिछड़े कबायली गांवों में हुआ था। स्कूलों, समाचार पत्रों, रेडियो, रेल मार्ग या सड़क—ये सभी चीजें इनके लिए नई थीं। ये नेता सम्भवत: मिशन स्कूलों में पढ़ने के लिए अपने गांवों से चले गए। कुछ नेता योरुप या संयुक्त राज्य में स्थित कालेजों या विश्वविद्यालयों में भी पढ़े। आज ये नेतागण अपनी जनता के लिए, जिसकी बड़ी संख्या अब भी पिछड़े गांवों में रहती है, महत्त्वपूर्ण निर्णय लेते हैं। दूसरे शब्दों में यह भी कह सकते हैं कि संयुक्त राष्ट्र में उनके द्वारा दिए गए मत दुनिया भर के लोगों और सरकारों के लिए उतने ही महत्त्वपूर्ण हैं जितने ब्रिटेन, फ्रांस संयुक्त राज्य या सोवियत संघ के प्रतिनिधियों द्वारा दिए गए मत।

उत्तरी अफ्रीका में

अतलांतिक सागर से लाल सागर तक फैले हुए उत्तरी अफ्रीका पर मोरक्को, अल्जीरिया, ट्यूनीशिया, लीबिया तथा मिस्र की आबादी है। उत्तरी अफ्रीका के अधिकांश निवासी अरब लोग हैं। ये अरब लोग उन मुसलमानों के वंशज हैं जिन्होंने ७ वीं शताब्दी में इस क्षेत्र को जीत लिया था।

दूसरे विश्वयुद्ध से पहले मोरक्को पर फ्रांस और स्पेन का अधिकार था। ट्यूनीशिया एक फ्रांसीसी उपनिवेश था और अल्जीरिया राजनीतिक दृष्टि से फ्रांस का एक भाग था। लीबिया, जिसका अधिकांश भाग रेगिस्तान है, और जिसे "मिट्टी की पेटी" कहा जाता है, इटली के अधिकार में था। इटली ने १९११-१२ में तुर्की के साथ हुए युद्ध में लीबिया पर अधिकार कर लिया था। दूसरे विश्वयुद्ध के दौरान में ये सभी देश युद्ध-क्षेत्र बने हुए थे।

यद्यपि मिस्र एक ऐसा देश है जिसका हजारों वर्ष पुराना इतिहास है, फिर भी इस देश पर १८८२ से १९३६ तक ब्रिटेन का आधिपत्य रहा। १९३६ में ब्रिटेन ने मिस्र से अपनी फौजें हटा लीं, पर साथ ही मिस्र के साथ यह समझौता कर लिया कि स्वेज नहर पर १९६८ तक ब्रिटेन का अधिकार रहेगा। दूसरे विश्वयुद्ध में मिस्र तटस्थ रहा।

मिस्र—दूसरे विश्वयुद्ध के समाप्त होने पर मिस्रवासियों ने ब्रिटेन से यह मांग की कि वह नहर क्षेत्र से भी अपना अधिकार हटा ले। अभी नहर के सम्बन्ध में यह विवाद चल ही रहा था कि १९५२ में सैनिक राज्य क्रांति द्वारा मिस्र की सरकार का तख्ता पलट दिया गया। शाह फारुख को विवश होकर पद त्याग करना पड़ा और जनरल मोहम्मद नजीब ने सरकार पर अधिकार कर लिया। दो वर्षों के भीतर एक अन्य सैनिक अधिकारी गमाल अब्दुल नासिर के कारण नजीब को भी सत्ता से हटा दिया गया। १९५६ में नासिर को राष्ट्रपति चुन लिया गया। राजनीतिक दल समाप्त हो गए और नासिर वस्तुतः मिस्र का अधिनायक बन गया।

स्वेज—मिस्र में राष्ट्रवाद के उदय ने संयुक्त राष्ट्र संघ के लिए एक और समस्या खड़ी कर दी। जुलाई १९५६ में राष्ट्रपति नासिर ने स्वेज नहर पर अधिकार कर लिया और यह घोषणा कर दी कि यह नहर मिस्र की सम्पत्ति है। राष्ट्रपति नासिर ने यह कार्रवाई इसलिए की थी कि ब्रिटेन और संयुक्त राज्य ने नील नदी पर आस्वान नामक स्थान पर बांध बनाने के लिए मिस्र को ऋण देने से इनकार कर दिया था। नासिर को यह आशा थी कि नहर से प्राप्त होने वाली आय से नील नदी पर बांध बन सकेगा। चूंकि इस नहर के अधिकांश मालिक ब्रिटेन और फ्रांस के लोग थे, अतः इन दोनों देशों ने इसरायल को अपनी सीमा सम्बन्धी शिकायतों का निपटारा करने के लिए मिस्र पर हमला करने को प्रोत्साहित किया। ब्रिटेन ने जून में अपनी फौजें नहर क्षेत्र से हटाकर स्वदेश वापस बुला ली थीं। जब इसरायल और मिस्र का युद्धक्षेत्र नहर के समीप पहुँचा तब ब्रिटेन और फ्रांस ने युद्ध के दुष्परिणामों से इस नहर की रक्षा करने के अधिकार की मांग की। जब मिस्र ने ब्रिटेन और फ्रांस की यह मांग ठुकरा दी तो फ्रांस और ब्रिटेन ने मिस्र पर हमला कर दिया।

मिस्र के नहर का राष्ट्रीयकरण करने पर ब्रिटेन ने विरोध प्रकट किया और उसके इस विरोध के सम्बन्ध में संयुक्त राष्ट्र की सुरक्षा परिषद् विचार विनिमय कर रही थी। इसके बाद संयुक्त राष्ट्र संघ ने युद्ध बन्द करने की दिशा में प्रयत्न किए। संयुक्त राज्य तथा रूस ने इस आक्रमण की निन्दा करने तथा युद्ध-विराम का आग्रह करने वाले एक प्रस्ताव का समर्थन किया। मिस्र क्षेत्र को खाली करने की कार्रवाई का सर्वेक्षण करने के लिए तथा सीमा पर से होने वाले आक्रमणों से इसरायल और मिस्र की रक्षा करने के लिए संयुक्त राष्ट्र ने एक सैन्य दल का संगठन किया। संयुक्त राष्ट्र के पुलिस दल द्वारा नहर में से डूबे हुए जलयान निकाल लिए गए। मिस्र ने भी इसरायल को छोड़कर, जिसके साथ उसका, कानूनी दृष्टि से, युद्ध चल रहा था,

सभी देशों के जलयानों के लिए नहर के अबाध प्रयोग की अनुमति देना स्वीकार कर लिया।

नासिर का स्वप्न—मिस्र का राष्ट्रपति बनने से पहले ही नासिर सब अरबों को एक साम्राज्य के अधीन संगठित करने के स्वप्न लेता था। उसे यह आशा थी कि इस प्रकार का साम्राज्य साम्यवादी गुट तथा पश्चिमी राष्ट्रों के बीच दुनिया की तीसरी ताकत हो जाएगा। संयुक्त अरब गणराज्य इसी स्वप्न की पहली उपलब्धि थी और जब यह गणराज्य विघटित हो गया, तब नासिर का स्वप्न धूमिल हो गया। फिर भी उन्होंने यह घोषणा की कि मिस्र संयुक्त अरब गणराज्य के नाम से ही जाना जाएगा।

ट्यूनीशिया—७५ वर्ष तक फ्रांस के अधिकार में रहा पर फिर उसके लिए ट्यूनीशिया में उठी हुई राष्ट्रवाद की लहर को दबाना असंभव हो गया। आखिरकार उसने १९५७ में ट्यूनीशिया को स्वतन्त्र कर दिया। इसके बाद ट्यूनीशिया के लोगों ने एक गणराज्य स्थापित किया और हबीब बूरगेबा को इस गणराज्य का राष्ट्रपति चुन लिया गया। ऐसी स्थिति में उत्तरी अफ्रीका के अरबों के प्रति ट्यूनीशिया की हमदर्दी स्वाभाविक थी। इसका परिणाम यह हुआ कि फ्रांस और ट्यूनीशिया-वासियों में तनाव पैदा हो गया और अल्जीरिया की सीमा पर झगड़े शुरू हो गए। अतः वहाँ शान्ति स्थापित करने के लिए संयुक्त राष्ट्र का हस्तक्षेप करना आवश्यक था।

बूरगेबा ने स्वयं अपने आपको तथा देश को उत्तर अफ्रीकी अरब संघ के उन्नायकों के रूप में प्रस्तुत किया। यह संघ 'मगरिब' कहलाता है जिसका अर्थ है "पश्चिम"। 'मगरिब' कहलाने का कारण यह है कि इस संघ का सम्बन्ध पश्चिमी अरबों से है। अपने अरब पड़ोसियों को एक संघ के रूप में संगठित करने के नासिर के स्वप्न की ही तरह बूरगेबा का स्वप्न भी अभी तक साकार नहीं हो पाया है।

मोरक्को—फ्रांस और स्पेन दोनों ने १९५६ में मोरक्को को स्वतन्त्र कर दिया और उसी वर्ष यह संयुक्त राष्ट्र संघ का सदस्य भी बन गया। मोरक्को वासियों ने अपने यहाँ सुल्तान का पद कायम रखा जिस पर पहले तो बादशाह मोहम्मद पंचम बने रहे और १९६१ में उनकी मृत्यु हो जाने पर उनके पुत्र हसन द्वितीय बादशाह और प्रधान मन्त्री बन गए।

मोरक्को के स्वतन्त्र होने से पहले १९५० में संयुक्त राज्य ने फ्रांस के साथ एक संधि की थी। इस संधि के अधीन फ्रांस द्वारा सयुक्त राज्य को मोरक्को में बमबारी के अड्डे स्थापित करने की अनुमति दे दी गई थी। ऐसा अनुमान है कि अड्डों पर काम करने वाले अमरीकी लोग मोरक्को में प्रतिवर्ष ३,००,००,००० डालर खर्च करते थे। सरकार को सीधे ही संयुक्त राज्य से प्राप्त सहायता और अमरीकियों द्वारा खर्च की जाने वाली उक्त रकम देश के आर्थिक विकास में बहुत सहायक सिद्ध हुई। फिर भी मोरक्को ने संयुक्त राज्य से बमबारी के अपने अड्डे हटाने के लिए कहा और अमरीकी सरकार ने ऐसा करना स्वीकार भी कर लिया।

अल्जीरिया—मोरक्को और ट्यूनीशिया के स्वतन्त्रता प्राप्त कर लेने के बाद अल्जीरिया के अरबों ने भी अपने देश के लिए स्वतन्त्रता की मांग रखी। लेकिन अल्जीरिया में रहने वाले योरोपीय लोग, जिनमें से अधिकाँश फ्रांसीसी थे और जिनके परिवार पीढ़ियों से अल्जीरिया में रह रहे थे, यह चाहते थे कि अल्जीरिया पर फ्राँस का ही अधिकार बना रहे। अतः अरब

ATLANTIC
OCEAN
EUROPE
ASIA
AFRICA
Oran
Algiers
Tunis
Rabat
Casablanca
ATLAS MTS.
TUNISIA
Tripoli
MOROCCO
IFNI
Alexandria
Suez Canal
Bengasi
Cairo
SPANISH SAHARA
ALGERIA
LIBYA
EGYPT
SAUDI
ARABIA
Red Sea
SAHARA
MAURITANIA
Nouakchott
MALI
NIGER
CHAD
Khartoum
SUDAN
FR. SOMALILAND
Djibouti
Dakar
SENEGAL
GAMBIA
Bamako
Niamey
Lake Chad
Fort-Lamy
Ouagadougou
UPPER VOLTA
PORT GUINEA
GUINEA
Conakry
Freetown
SIERRA LEONE
Monrovia
LIBERIA
IVORY COAST
Abidjan
GHANA
Accra
TOGO
DAHOMEY
Lomé
Porto Novo
Lagos
NIGERIA
Addis Ababa
ETHIOPIA
SOMALIA
CAMEROUN
Yaounde
CENTRAL AFRICAN REP.
Bangui
REPUBLIC OF RWANDA
UGANDA
Kampala
KENYA
Nairobi
Mogadishu
SPANISH GUINEA
Libreville
GABON
REP. OF THE CONGO
REPUBLIC OF THE CONGO
Lake Victoria
KINGDOM OF BURUNDI
TANGANYIKA
ZANZIBAR
Dar es Salaam
Brazzaville
Leopoldville
Lake Tanganyika
Luanda
ANGOLA
Lake Nyasa
MOZAMBIQUE
FEDERATION OF RHODESIA AND NYASALAND
Salisbury
Tananarive
MALAGASY REPUBLIC
SOUTH-WEST AFRICA
Windhoek
BECHUANA LAND
Mafeking
Pretoria
Johannesburg
Lourenco Marques
SWAZILAND
REPUBLIC OF SOUTH AFRICA
Durban
BASUTOLAND
Capetown
Cape of Good Hope

उग्रतावादियों के एक वर्ग ने राष्ट्रीय मुक्ति मोर्चे का निर्माण किया जिसने अल्जीरिया वासी योरोपीय लोगों के विरुद्ध आतंकवादी तरीके अपनाए।

१९५४ में जब अरब विद्रोह दूर-दूर तक फैल गया तब फ्रांस ने अल्जीरिया में अपनी फौजें भेज दीं। १९५८ में अल्जीरिया के फ्रांसीसियों ने एक ऐसा आन्दोलन चलाया जो डी गाल के प्रधान मन्त्री बनने में सहायक सिद्ध हुआ। प्रधान मन्त्री बनने के बाद डी गाल ने पहले पहल जो काम किए उनमें से एक काम अल्जीयर्स शहर का दौरा करना था। इस यात्रा के दौरान सेना ने डी गाल का जोरदार समर्थन किया। अपने एक वक्तव्य में डी गाल ने अल्जीरिया के सभी लोगों को पूरे नागरिक अधिकार तथा मत देने के बराबर हक प्रदान कर दिए। इससे पहले अरबों को योरोपीय लोगों के समान राजनीतिक अधिकार प्राप्त नहीं थे। डी गाल ने राष्ट्रीय मुक्ति मोर्चे के साहस की प्रशंसा करते हुए कहा कि, "मैंने समझौते के लिए मार्ग खोल दिया है।"

इसके जवाब में राष्ट्रीय मुक्ति मोर्चे ने "शर्त-रहित स्वतन्त्रता" की मांग फिर से रखी और अपेक्षाकृत अधिक आतंक-कार्य आरंभ कर दिये। इसी बीच अरब लोगों ने अल्जीरिया गणराज्य में एक अस्थायी सरकार स्थापित कर दी। अधिकांश अरब राष्ट्रों तथा साम्यवादी चीन ने इस अस्थायी सरकार को मान्यता भी दे दी।

विद्रोही फ्रांसीसी अधिकारियों द्वारा स्थापित 'गुप्त सैनिक संगठन' नामक गुप्त आन्दोलन, जो ओ० ए० एस० के नाम से प्रसिद्ध है, इस बात के लिए कटिबद्ध था कि अल्जीरिया पर फ्रांस का यह अधिकार बना रहे। ओ० ए० एस० के सदस्यों ने फ्रांस और अल्जीरिया में ऐसी कार्रवाइयां कीं जिन्हें वे अपनी भाषा में "प्रति-आतंक" कहते थे। अल्जीरिया के लिए बनाई गई डी गाल योजना के अधीन सभी अल्जीरिया वासियों (अरब तथा योरोपीय) को निम्न तीन मामलों पर मत देने की स्वतन्त्रता दे दी गई थी।

१. फ्रांस से पूर्णत: पृथक् होना,

२. या फ्रांसीसी राष्ट्रमंडल के सदस्य के रूप में फ्रांस के साथ गहरा सम्बन्ध रखना,

३. या फ्रांस क साथ पूरी तरह मिल जाना।

योरोपीय लोगों को यह खतरा था कि अरब जनता, जिसकी संख्या उनसे नौगुनी थी, पूर्ण स्वतन्त्रता के पक्ष में मत देगी और फिर उन्हें अल्जीरिया से बाहर निकाल देगी। डी गाल ने इस बात पर बल दिया कि स्वतन्त्र अल्जीरिया में तटस्थता के लिए कोई स्थान नहीं होगा और योरोपीय अल्पसंख्यकों की सम्पत्ति और राजनीतिक अधिकारों की रक्षा की गारंटी मिल सकेगी। लेकिन अरब लोगों ने डी गाल के इस आग्रह को स्वीकार नहीं किया।

राष्ट्रीय मुक्ति मोर्चे तथा 'गुप्त सैनिक संगठन' के सम्बन्ध में इस प्रकार की अनिश्चितता और बढ़ते हुए आतंक के मध्य १९६२ के शुरू में फ्रांस तथा अल्जीरिया की अस्थायी सरकार के बीच बातचीत चलती रही। सात साल के महंगे और और खूनी गोरिल्ला युद्ध के बाद जब मार्च में युद्ध-विराम की घोषणा की गई तब फ्रांस या अल्जीरिया में कोई खुशी नहीं मनाई गई। गुप्त सैनिक संगठन "अल्जीरिया पर फ्रांस का अधिकार बनाए रखने" के लिए अब भी कटिबद्ध था। यद्यपि इस युद्ध-विराम द्वारा शान्ति का विश्वास दिलाया गया था लेकिन वास्तव में शान्ति हो नहीं सकी। साथ ही 'गुप्त सैनिक संगठन' भी इस शान्ति की जड़ें काटने के अपने प्रयत्नों पर अधिक जोर देता रहा।

इस प्रकार अनिश्चितता और हिंसा का वातावरण बन गया और फ्रांस और अल्जीरिया की सरकारों के सामने अल्जीरिया को स्वतन्त्रता दिलाने से सम्बन्धित विभिन्न समस्याएँ उपस्थित थीं।

लीबिया—१९४३ में इटली के पराजित हो जाने के बाद वहाँ के उत्तरी अफ्रीकी उपनिवेश मित्र राष्ट्रों के अधीन हो गए। युद्ध के बाद संयुक्त राष्ट्र ने यह सिफारिश की कि लीबिया को एक स्वतन्त्र राज्य बना दिया जाए।

१९५१ में शाह इदरीसो सेनूसी को इस नए देश

का बादशाह घोषित किया गया। इन्होंने एक नया संविधान बनाया जिसमें टिपोलीटानिया, सिरेनायका तथा फैजान नामक भूतपूर्व इतालवी उपनिवेशों को लीबिया राष्ट्र में सम्मिलित कर लिया गया था। १९५५ में लीबिया संयुक्त राष्ट्र का सदस्य भी बन गया। लीबिया ने संयुक्त राज्य तथा ब्रिटेन दोनों के साथ एक-एक संधि कर रखी है। इस संधि के अधीन संयुक्त राज्य तथा ब्रिटेन दोनों देशों को लीबिया में सैनिक अड्डे कायम रखने की अनुमति दी गई है।

अरब लीग—दूसरे विश्वयुद्ध की समाप्ति पर १९४५ में बहुत से अरब राज्यों के प्रतिनिधियों ने कैरो में हुई एक बैठक में भाग लिया। इस बैठक में इन प्रतिनिधियों ने आपसी सहयोग के एक समझौते पर हस्ताक्षर किए। १९६० तक ११ राज्य इस लीग के सदस्य बन चुके थे। राज्य इस प्रकार थे : मिस्र, सीरिया, लेबनान, ईराक, ट्यूनीशिया, मोरक्को, लीबिया, जोर्डन, यमन, सऊदी अरब तथा सूडान। फिर भी सदस्यों के बीच अविश्वास और आपसी द्वेष के कारण यह लीग अपने उद्देश्य प्राप्त करने में सफल नहीं हो सकी है।

१. बताइये कि अफ्रीका में राष्ट्रवाद की भावना उभारने में दूसरा विश्वयुद्ध किस प्रकार सहायक रहा।
२. दूसरे विश्वयुद्ध से पहले मोरक्को, अल्जीरिया ट्यूनीशिया तथा लीबिया पर किन राष्ट्रों का अधिकार था?
३. मिस्र से ब्रिटेन के हट जाने के बाद स्वेज नहर के सम्बन्ध में किए गए समझौते का वर्णन कीजिए।
४. मिस्र के शासन की बागडोर नासिर के हाथ में किस प्रकार आई?
५. यह बताइये कि मिस्रवासियों ने किस प्रकार स्वेज नहर पर अपना कब्जा जमाया?
६. अरब जगत् में नासिर ने किस रूप में काम करने की आशा की थी और अपने स्वप्न को साकार करने में वह कहाँ तक सफल हुआ?
७. मोरक्को, अल्जीरिया, ट्यूनीशिया तथा लीबिया के लोगों का वर्णन कीजिए।
८. यह बताइए कि प्रत्येक देश की सरकार किस प्रकार की है?
९. क्या कारण है कि सरकार के प्रश्न पर अल्जीरिया में खून-खराबी हुई?
१०. अल्जीरिया के सम्बन्ध में जनरल डी गाल ने क्या प्रस्ताव रखे और उनके स्वीकार न किए जाने के क्या कारण थे?
११. अरब लीग के उद्देश्यों का वर्णन कीजिए और इसके सदस्यों के नाम बताइये।

अफ्रीका के मध्य-पश्चिमी तट के देश

अफ्रीका के पश्चिमी तट का मध्यवर्ती भाग ऐसा लगता है मानो एक बहुत बड़े समोसे को चूहे कुतर रहे हों। उठे हुए इस क्षेत्र की सीमा के साथ-साथ फ्रांसीसियों, स्पेनिश, पुर्तगालियों और जर्मनों के छोटे-छोटे उपनिवेश हैं। पहले विश्वयुद्ध के अन्त में जर्मनी का उपनिवेश तोगोलैंड ब्रिटिश तथा फ्रांसीसियों में विभाजित कर दिया गया था ताकि ये लोग शासनादेश के तौर पर वहाँ शासन कर सकें। दूसरे विश्वयुद्ध के बाद तक ये सभी उपनिवेश औपनिवेशिक राष्ट्रों के अधिकार-क्षेत्र में रहे।

घाना—युद्ध के बाद स्वतन्त्रता प्राप्त करने वाला पहला अफ्रीकी उपनिवेश ब्रिटिश संरक्षित गोल्ड कोस्ट उपनिवेश था। १९५७ में गोल्ड कोस्ट की जनता ने अपना स्वतन्त्र राष्ट्र स्थापित कर दिया। इस राज्य का नाम मध्य युग के एक अफ्रीकी राज्य के नाम पर घाना रखा गया था। ब्रिटेन ने १९५१ में एक संविधान की व्यवस्था करके घाना को इस योग्य बना दिया था। इस प्रकार घाना अफ्रीकियों द्वारा शासित होने वाले ब्रिटिश राष्ट्र-मण्डल का पहला सदस्य बना। यहाँ का पहला प्रधान-मन्त्री अमरीका में शिक्षा-प्राप्त क्वामे एनक्रूमा नाम का अफ्रीकी व्यक्ति बना।

१९६० में विधान-मण्डल ने घाना को ब्रिटिश

राष्ट्रमण्डल के अधीन एक गणराज्य बनाने का प्रस्ताव पास किया। उसी वर्ष घाना संयुक्त राष्ट्र संघ का सदस्य भी बन गया।

१९५८ में स्वतन्त्र अफ्रीकी राज्यों का एक संघ बनाने की दिशा में एनक्रूमा ने सक्रिय रूप से कार्य करना प्रारम्भ कर दिया। घाना की राजधानी अकरा में अखिल अफ्रीकी जन सम्मेलन में २५ राष्ट्रों ने भाग लिया। संयुक्त राष्ट्र संघ में भी घाना ने अपने आपको नए अफ्रीकी राष्ट्रों के नेता के रूप में प्रस्तुत करना चाहा हालांकि ऐसा करने में उसे सदा सफलता नहीं मिली। जहाँ तक अन्तर्राष्ट्रीय मामलों का सम्बन्ध है, घाना ने साम्यवादियों तथा पश्चिमी गुट के बीच तटस्थता का मार्ग अपनाया।

घाना में एक ही राजनीतिक दल का बोलबाला है। इस राजनीतिक दल का अपना अखबार और अपने ही युवक, किसान तथा महिला संगठन हैं। यद्यपि घाना की आर्थिक व्यवस्था मुख्यतः कोको के निर्यात पर निर्भर है, फिर भी यह देश खुशहाल है। इसकी समृद्धि का मुख्य कारण संयुक्त राज्य और ब्रिटेन से प्राप्त होने वाली सहायता है। वोल्टा नदी पर प्रस्तावित बांध का निर्माण होने पर घाना की जनता को यह आशा है कि उस क्षेत्र में मौजूद बाक्साइट के विशाल भण्डारों से ऐलुमीनियम का उत्पादन करने के लिए आवश्यक विद्युत्-शक्ति प्राप्त हो सकेगी।

नाईजीरिया—इन नये अफ्रीकी राज्यों में सबसे अधिक घनी आबादी वाला नाईजीरिया संघ १९६० में एक गणराज्य बन गया और संयुक्त राष्ट्र संघ का सदस्य भी बन गया। ब्रिटेन ने इस देश के तीनों राज्यों या क्षेत्रों में एक-एक निर्वाचित विधान सभा स्थापित कर दी और इस प्रकार नाईजीरिया स्वतन्त्रता के लिए तैयार किया गया। अतः नाईजीरिया के लोगों को स्वायत्त शासन का अनुभव पहले से ही था। नाईजीरिया को नये अफ्रीकी राज्यों में सबसे अधिक प्रभावशाली समझा जाता है और यह देश १९६० में संयुक्त राष्ट्र संघ का सदस्य बन गया।

फिर भी बिना किसी बाहरी सहायता के नाईजीरिया न तो अपने साधनों का विकास कर सका, न अपनी जनता को शिक्षित ही कर सका। १९५८ में ब्रिटेन ने नाईजीरिया को लगभग २० लाख डालर की सहायता दी। नाईजीरिया को यह सहायता अपनी राजधानी लागोस में, जो एक मुख्य बन्दरगाह भी है, शिक्षा सम्बन्धी सुविधाओं में सुधार लाने के लिए दी गई थी। नाईजीरिया के स्वतन्त्र होने पर ब्रिटेन ने इस नये राज्य को अपने प्राकृतिक साधनों का विकास करने के लिए ३६,००,००० डालर का ऋण भी दिया। तेल, कोलम्बाइट (जेट इंजन बनाने के प्रयोग में आने वाली एक दुर्लभ धातु) कलई, सोना, चाँदी, टंग्सटन तथा महोगनी के पेड़ों के घने जंगल ही नाईजीरिया की मुख्य सम्पदा हैं। इमारती लकड़ी, मूंगफली खजूर का तेल तथा कोको यहाँ से निर्यात की जाने वाली मुख्य वस्तुएँ हैं। फिर भी यदि नाईजीरिया अपने विपुल साधनों का विकास करने के लिए अपने मिस्त्रियों को शिक्षित कर सका तो इस देश का भविष्य बहुत उज्ज्वल होगा।

अन्य ब्रिटिश प्रदेश—इस क्षेत्र के अन्य ब्रिटिश उपनिवेशों में से सिएरा लेओन नामक उपनिवेश १९६१ में स्वतन्त्र हो गया। फिर भी सिएरा लेओन ने राष्ट्रमण्डल के एक सदस्य के रूप में ब्रिटेन के साथ निकट सम्बन्ध बनाए रखा। गम्बिया के छोटे से उपनिवेश में १९६० में एक नया संविधान लागू हुआ और इस प्रकार यह उपनिवेश स्वतन्त्रता-प्राप्ति के लक्ष्य के अधिक निकट पहुँच गया।

भूतपूर्व फ्रांसीसी पश्चिमी अफ्रीका—अफ्रीका के इस क्षेत्र के नवनिर्मित पाँच राज्य भूतपूर्व फ्रांसीसी पश्चिमी अफ्रीका के अंग थे। ये पाँच राज्य हैं: मौरी-

टैनिया, सेनेगाल, गिनी, आइवरी कोस्ट तथा दाहोमी। गिनी के अतिरिक्त सभी राज्य १९६० में स्वतन्त्र हो गए और इसे छोड़ सभी राज्यों ने फ्रांसीसी राष्ट्रमण्डल का सदस्य बनना या इसके साथ रहना स्वीकार कर लिया।

गिनी ने १९५८ में एक स्वतन्त्र राष्ट्र बनने का प्रस्ताव स्वीकार किया था और तभी से इसके राष्ट्रपति सिको तूरे ने, जो मार्क्स-सिद्धान्त के विद्यार्थी थे, अपने देश को साम्यवादी राष्ट्रों का सहयोगी बना दिया है। गिनी को मिलने वाली अधिकांश आर्थिक सहायता, हथियार तथा तकनीकी सहायता साम्यवादी देशों से प्राप्त हुई है।

१९६१ में तूरे ने राष्ट्रपति एनक्रूमा तथा कीता (माली) के साथ एक सन्धि पर हस्ताक्षर किए। इन देशों को यह आशा थी कि यह संधि अखिल पश्चिमी अफ्रीकी राष्ट्र संघ की आधारशिला बना सकेगी।

तोगो तथा कामेरुन—तोगो और कामेरुन गणराज्य पहले तो राष्ट्रसंघ के शासनादेशों के रूप में और बाद में ब्रिटेन और फ्रांस के न्यास क्षेत्रों के रूप में रहे। १९६० में तोगो और कामेरुन गणराज्य दोनों ही स्वतन्त्र हो गए। ये दोनों ही देश बहुत गरीब हैं और अपनी जनता में शिक्षा का प्रसार करने तथा अपने साधनों का विकास करने के लिए इन्हें विदेशी सहायता पर अवश्य ही निर्भर रहना होगा।
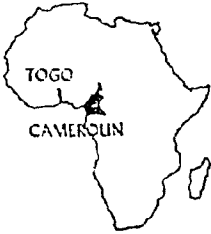
गाबोन—गाबोन कामेरुन के ठीक नीचे की तरफ पश्चिमी किनारे पर स्थित है। यह देश १९६० में गणराज्य बन गया और अब तो यह फ्रांसीसी राष्ट्रमण्डल व संयुक्त राष्ट्र संघ का सदस्य भी बन गया है। गाबोन की गिनती ऐसे थोड़े से राष्ट्रों में होती है जो आयात तो कम करते हैं और निर्यात अधिक। गाबोन बढ़िया लकड़ी, कोको तथा यूरेनियम व कुछ अन्य खनिज पदार्थों का निर्यात करता है। इस तटवर्ती क्षेत्र का योरोपीय सभ्यता से सदियों पुराना सम्बन्ध है और यह क्षेत्र आर्थिक दृष्टि से विकसित है। अन्दर का वन्यप्रदेश अभी सभ्यता से दूर है।

लिब्रवील गाबोन की राजधानी है। विदेशों में लम्बरीन का नाम अधिक परिचित है। यही वह स्थान है जहाँ डाक्टर आल्बर्ट श्वाइत्सर का प्रसिद्ध अस्पताल है। श्वाइत्सर पहले तो एक संगीतज्ञ के रूप में प्रसिद्ध हुए और बाद में इन्होंने अफ्रीका के जंगलों में आम तौर पर पाए जाने वाले उष्ण देशीय रोगों के इलाज के लिए इस अस्पताल का निर्माण व संचालन करके एक चिकित्सक के रूप में प्रसिद्धि प्राप्त की।

स्पेनी सहारा—स्पेन ने १९५८ में स्पेनी सहारा नाम का एक प्रान्त बनाया। एक उपनिवेश के रूप में यह प्रान्त आज भी मौजूद है। इस उपनिवेश की सरकार पर मैड्रिड का शासन है। स्पेनी सहारा की अधिकांश जनता मुसलिम है और ये लोग खानाबदोश हैं।

लाइबेरिया—संयुक्त राज्य से मुक्ति प्राप्त नीग्रो लोगों के शरण स्थल के रूप में 'अमरीकी उपनिवेशन संस्था' द्वारा १८२२ में लाइबेरिया की स्थापना की गई थी। १८४७ में यहाँ बसने वालों तथा इस संस्था के बीच हुए एक समझौते के अनुसार लाइबेरिया एक गणराज्य बन गया।

यद्यपि यहाँ कोई भी व्यक्ति काम कर सकता है और सम्पत्ति का मालिक हो सकता है लेकिन नागरिकता का अधिकार केवल नीग्रो लोगों को ही

मिल सकता है। लाइबेरिया की सरकार संयुक्त राज्य की सरकार के नमूने पर ढाली गई थी। दोनों देशों के बीच हमेशा से गहरे आर्थिक और राजनयिक सम्बन्ध रहे हैं। लाइबेरिया की जनता की सहायता करने और उसे सलाह देने के लिए संयुक्त राज्य हर साल कृषि, शिक्षा तथा जन-स्वास्थ्य विशेषज्ञ वहाँ भेजता है।

१. इस खण्ड में जिन नए अफ्रीकी राष्ट्रों की चर्चा की गई है, उनमें से कितने राष्ट्र ब्रिटिश राष्ट्रमण्डल के या फ्रांसीसी राष्ट्रमण्डल के सदस्य बन चुके हैं।
२. उस अफ्रीकी नेता का नाम बताइये जो अपने नेतृत्व में अफ्रीकी राष्ट्रों के संगठन की आशा रखता है।
३. ब्रिटेन ने किस प्रकार अपने अधिकांश उपनिवेशों को स्वतन्त्रता के लिए तैयार किया?
४. नए अफ्रीकी राष्ट्रों की महान् आवश्यकताओं का वर्णन कीजिए।
५. नए अफ्रीकी राष्ट्रों में सबसे अधिक जनसंख्या वाले राष्ट्र का नाम बताइये।
६. कौन सा अफ्रीकी नेता मार्क्स सिद्धान्त से प्रभावित लगता है?
७. अलबर्ट श्वाइत्सर का परिचय दीजिए।
८. लाइबेरिया की कहानी बताइये।

भीतरी भाग

दूसरे विश्वयुद्ध के बाद मध्य पश्चिमी अफ्रीका के आन्तरिक भाग तक घुसा हुआ विशाल फ्रांस अधिकृत क्षेत्र पांच नए राष्ट्रों में बट गया। ये नए राष्ट्र इस प्रकार थे: माली गणराज्य, अपर वोल्टा, नाइजर, चाड तथा केन्द्रीय अफ्रीकी गणराज्य। सूडान के आन्तरिक क्षेत्रों के साथ-साथ ये पांचों राष्ट्र अफ्रीका (उत्तरी भाग) के आधे भाग के भीतर की तरफ बसे हुए हैं।

माली—१९५९ में जब अफ्रीका से फ्रांसीसी साम्राज्य समाप्त होने लगा तब मोरिटेनिया के पूर्व तथा अल्जीरिया के दक्षिण में स्थित क्षेत्र एक स्वतन्त्र राज्य बन गया। यह स्वतन्त्र राज्य सूडानी गणराज्य के नाम से जाना जाता है। सिनेगाल तथा इस नये गणराज्य का माली संघ के साथ सम्बन्ध था। माली संघ अधिक समय तक जीवित नहीं रहा और १९६० में समाप्त हो गया। ऐसी स्थिति में सूडानी गणराज्य ने अपने लिए माली नाम चुना। परम्परा के अनुसार, माली एक मध्ययुगीन अफ्रीकी राज्य था। इसका शासक इतना अमीर था कि जब वह मक्का गया तो अपने साथ ५०० दास ले गया था और प्रत्येक दास के सिर पर सोने की एक सिल्ली रखी हुई थी।

लेकिन आधुनिक माली इतना अमीर नहीं है। सच कहें तो बिलकुल गरीब देश है। यहाँ के मुख्य उत्पादन मूंगफली, मक्का, तिल तथा कपास हैं। यद्यपि माली फ्रांसीसी राष्ट्रमण्डल का सदस्य नहीं है, फिर भी फ्रांस के साथ माली के गहरे सम्बन्ध हैं।

अपर वोल्टा, नाइजर, चाड तथा केन्द्रीय अफ्रीकी गणराज्य—इन चारों राष्ट्रों ने १९६० में स्वतन्त्रता प्राप्त कर ली। स्वतन्त्रता प्राप्त करने के बाद फ्रांसीसी राष्ट्रमण्डल के सदस्यों के रूप में इन चारों देशों ने फ्रांस के साथ गहरे सम्बन्ध बनाए रखे और ऐसा करने का पूरा औचित्य था। मुख्य कारण तो यह था कि ये देश आत्मनिर्भर नहीं थे और अपने यहाँ सड़कों, मकानों, रेडियो स्टेशन, बिजली बनाने के संयन्त्र, कृषि सम्बन्धी विकास, शिक्षा, सफाई तथा सरकारी इमारतों के लिए उन्हें पैसे की आवश्यकता थी।

इन प्रायोजनाओं के लिए आवश्यक रकम का आधा भाग फ्रांस ने दिया। फिर भी फ्रांस की यह सारी रकम बट्टे खाते में नहीं गई। इसका कुछ भाग, इन्जीनियरों और शिल्पकारों के रूप में काम करने वाले फ्रांसीसीयों को दिए गए वेतन और सामान के रूप में वापस कर दिया गया। नए देशों

में फ्रांसीसी माल भी बिकता था और जैसे-जैसे प्रत्येक देश का विकास होता जाता था वैसे-वैसे वहाँ फ्रांसीसी माल की खपत अधिक होती जाती थी।

सूडान—चाड तथा केन्द्रीय अफ्रीकी गणराज्य के पूर्व में सूडान देश है। क्षेत्रफल की दृष्टि से सूडानी क्षेत्र योरुप का लगभग चौथाई है। मिस्र और ब्रिटेन ने इस नये अफ्रीकी राष्ट्र की स्थापना के लिए उपयुक्त वातावरण तैयार किया। एंग्लो-मिस्री सूडान के रूप में नील घाटी के ऊपरी भाग पर पचास वर्षों तक इन दोनों देशों का संयुक्त शासन बना रहा। १९५१ में ब्रिटेन और मिस्र ने सूडान-वासियों को अपनी सरकार बनाने की अनुमति दे दी। साथ ही सूडान के लोगों से यह कहा गया कि वे पूर्ण स्वतन्त्रता या मिस्र के संविधान के अधीन स्वायत्त शासन में से कोई एक बात स्वीकार कर लें। सूडान ने पूर्ण स्वतन्त्रता स्वीकार की और १९५५ में एक स्वतन्त्र गणराज्य की घोषणा कर दी गई।

१९५८ में एक सैनिक क्रान्ति के फलस्वरूप जनरल इब्राहिम अब्बूद सत्तारूढ़ हो गए। १९५८ में जनरल इब्राहिम ने संविधान तथा संसद् दोनों को भंग कर दिया। उसी समय से सरकारी क्षेत्र में अब्बूद के अधिकार को अन्य सैनिक अधिकारियों ने चुनौती दी है।

सूडान और मिस्र के सम्बन्ध मित्रतापूर्ण नहीं रहे हैं। यहां तक कि इन दोनों देशों में से होकर बहने वाली नील नदी के पानी के प्रयोग के सम्बन्ध में भी दोनों देशों में विवाद खड़े हो गए। मिस्र में आस्वान नामक स्थान पर बनाए जाने वाले नये बाँध से सूडान के कुछ क्षेत्र में पानी भर जायगा। सूडान में नील नदी की एक उपनदी पर बाँध बनाने के सम्बन्ध में १९६० में योजनाएँ तैयार की गईं। यह बांध अन्तर्राष्ट्रीय पुनर्निर्माण तथा विकास बैंक की सहायता से बनाया जाना था। अन्य नये अफ्रीकी राष्ट्रों की ही तरह सूडान भी शीतयुद्ध से अलग रहने का इच्छुक है। अपने साधनों और शक्ति का प्रयोग वह अपनी जनता को सुख सुविधा पहुँचाने के लिए करना चाहता है। सूडान ने 'लौह आवरण' वाले देशों के अतिरिक्त पश्चिमी राष्ट्रों के साथ भी व्यापारिक समझौते कर रखे हैं।

१. अफ्रीका के भीतरी भाग में भूतपूर्व फ्रांसीसी क्षेत्र से कौन-कौन से नये राज्यों का जन्म हुआ?
२. 'माली' गणराज्य का नाम किस प्रकार पड़ा?
३. बताइए फ्रांस तथा नये देशों के लिए फ्रांसीसी राष्ट्रमण्डल किस प्रकार लाभकारी रहा है।
४. स्वतन्त्रता से पहले के सूडान के इतिहास पर प्रकाश डालिए।
५. सूडान और मिस्र के बीच क्या समस्या खड़ी हो गई?

काँगो नदी के काँठे में

यदि आप अफ्रीका के भीतरी भाग में स्थित गणराज्यों से दक्षिण की ओर जाएँ तो आप काँगो और इसकी उपनदियों द्वारा सिंचे हुए गर्म और नमीदार क्षेत्र में पहुँच जाएंगे। अफ्रीका के इस भाग के स्वतन्त्र होने से पहले काँगो नदी के उत्तरी क्षेत्र पर फ्रांस का अधिकार था तथा नदी का दक्षिणी क्षेत्र बेल्जियम का था।

काँगो गणराज्य (ब्राजाविल)—कांगो के कांठे में स्थित दोनों देश कांगो गणराज्य के नाम से ही जाने जाते हैं। इनमें से एक का निर्माण तो १९६० में फ्रांसीसी भूमध्य अफ्रीका स्थित मध्य कांगो में से हुआ था। इसकी राजधानी कांगो नदी के किनारे ब्राजाविल में है। यही वह स्थान है जहाँ डी गाल ने फ्रांसीसी शासन से मुक्ति पाने की प्रार्थना करने वाले सभी अफ्रीकियों को स्वतन्त्र करने का वचन दिया था। उनकी इस प्रतिज्ञा की स्मृति बनाए रखने के लिए वहाँ एक स्मारक भी खड़ा किया गया। काँगो नदी के किनारे ब्राजाविल के

भीतरी क्षेत्र में जंगल ही जंगल है जहाँ जनता अभी तक कबीलों के ढंग से रहती है। काँगो गणराज्य (ब्राजाविल) की प्रगति और विकास की बहुत गुंजायश है।

कांगो गणराज्य (लियोपोल्डविल)—दूसरे काँगो गणराज्य की राजधानी लियोपोल्डविल है जो ब्राजाविल की तरफ से नदी के सामने की ओर स्थित है। १९६० से पहले यह देश बेल्जियन काँगो था। ३० जून को यहाँ गणराज्य की स्थापना हो गई। जोसेफ कसावुबू यहाँ के राष्ट्रपति और

पेट्रिस लुमुम्बा प्रधान मन्त्री चुन लिए गए। यह देश पाँच प्रान्तों का संघ है और प्रत्येक प्रान्त की अपनी सरकार है। यहाँ की संघीय सरकार का मुख्यालय लियोपोल्डविल में है।

काँगो गणराज्य प्रारम्भ से ही समस्याओं का सामना करता रहा है। बेल्जियम सरकार ने काँगोवासियों को रोटी कमाने का ढंग तो सिखा दिया था लेकिन शासन-व्यवस्था के सम्बन्ध में काँगोवासियों को कोई पाठ नहीं पढ़ाया गया। परिणाम यह हुआ कि इस नए गणराज्य की जनता अचानक आ पड़े उत्तरदायित्व का निर्वाह करने के लिए तैयार नहीं थी। परिणामतः इस गणराज्य में खून-खराबी और उथल-पुथल हुई। काँगो की स्वतन्त्रता के प्रारम्भिक दिनों का इतिहास यही बताता है।

बेल्जियम की ओर से कठोर नियन्त्रण के अभाव में कबायलियों के पुराने वैर ने बाकायदा युद्ध का रूप धारण कर लिया। अफ्रीकी सैनिक बेल्जियम के ऐसे अधिकारियों के विरुद्ध उठ खड़े हुए जिन्होंने अफ्रीकी सेना तैयार करने और उसे प्रशिक्षित करने पर रोक लगा रखी थी। प्रधान मन्त्री लुमुम्बा ने इस सब के लिए बेल्जियम के अधिकारियों को जिम्मेवार ठहराया और उनके स्थान पर अनुभवहीन अफ्रीकी लोगों को रख लिया।

काँगो में बेल्जविरोधी दंगे शुरू हो चुके थे। बेल्जियम ने काँगो में मौजूद अपनी कौम के लोगों की रक्षा के लिए और अधिक फौजें भेजीं। ये लोग खानों, भण्डारों तथा अन्य व्यापारों को चालू रखने के लिए काँगो में ही रोक लिए गए थे। लियोपोल्डविल की सरकार को यह खतरा था कि कहीं फिर से बेल्जियम का शासन न आ जाए और इसी कारण उसने बेल्जियम के साथ अपने राजनयिक सम्बन्ध तोड़ दिए। प्रधान मंत्री लुमुम्बा ने संयुक्त राष्ट्र से इस सम्बन्ध में हस्तक्षेप करने के लिए कहा और थोड़े ही समय में दस विभिन्न राष्ट्रों से संयुक्त राष्ट्र की फौजें काँगो में आ गईं। ये फौजें स्वीडन के एक जनरल की कमान में आई थीं और इनके आने पर बेल्जियम ने धीरे-धीरे अपनी फौजें हटा लीं।

उसी समय दक्षिणपूर्वी काँगो में स्थित कटंगा के दौलतमन्द प्रान्त के राष्ट्रपति मोइस शोम्बे ने अपने प्रान्त के स्वतन्त्र हो जाने की घोषणा कर दी। साथ ही शोम्बे ने बेल्ज फौजों, अधिकारियों तथा व्यापारियों को कटंगा में बने रहने के लिए कहा। कुछ समय बाद ही कसई प्रान्त भी अलग हो गया।

काँगो गणराज्य के स्थापित होने के दो महीने बाद ही राष्ट्रपति कसावुबू ने प्रधान मंत्री लुमुम्बा को अपदस्थ करके उनके स्थान पर एक नया प्रधान मन्त्री बना दिया। फिर भी लुमुम्बा ने अपना पद त्यागने से इनकार कर दिया और इस प्रकार काँगो गणराज्य में दो सरकारें स्थापित हो गईं। बहुत जल्दी ही यह बात स्पष्ट हो गई कि लुमुम्बा को सोवियत रूस तथा साम्यवाद-समर्थक अफ्रीकी राज्यों का समर्थन प्राप्त था। कर्नल जोसेफ मोबुटू ने राष्ट्रपति तथा प्रधान मन्त्री दोनों को अपदस्थ कर दिया और सरकारी काम-काज चलाने के लिए विद्यार्थियों की एक समिति स्थापित कर दी। परिणाम यह हुआ कि लियोपोल्डविल स्थित सोवियत समाजवादी गणराज्य संघ व चेकोस्लोवाकिया के दूतावास बन्द कर दिए गए और लुमुम्बा को गिरफ्तार कर लिया गया।

बाद में १९६० में एन्टोइन गिजेन्गा ने, जो लुमुम्बा के उपप्रधान मंत्री भी रह चुके थे, स्टेनलेविल में अपनी सरकार स्थापित करके स्थिति को और गंभीर बना दिया।

१९६१ का वर्ष भी काँगो में उथल-पुथल का

रहने वाले लोग इस उपनिवेश में घुस आए। बहुत से अफ्रीकियों को अपना देश छोड़ने के लिए विवश होना पड़ा और योरोपीय लोगों ने महत्त्वपूर्ण विकास कार्य किए। आज उसी स्थान को केन्या कहते हैं। बहुत पहले १९२० से आरम्भ दशक में किकुयू कबीले के एक जादूगर के पौत्र जोमो केन्याता ने अफ्रीकियों को उनकी जमीन वापस दिलाने के सम्बन्ध में विद्रोह किया।

१९३० वाले दशक में केन्याता ने अपने उद्देश्य की प्राप्ति के लिए योरुप का दौरा किया, अध्ययन किया तथा लेख लिखे। दूसरे विश्वयुद्ध के शुरू में एक राजनीतिक दल तथा अनुयायी वर्ग बनाने के उद्देश्य से केन्याता वापस केन्या लौट आए। माऊ-माऊ नामक अनोखे सम्प्रदाय के प्रति निष्ठा रखने के परिणामस्वरूप जब १९५० के शुरू में किकुयू कबाइलियों द्वारा योरपीय उपनिवेशवासियों की हत्याएँ की गईं तब ब्रिटिश सरकार ने वहाँ आपात-कालीन स्थिति की घोषणा कर दी। केन्याता को माऊ-माऊ सम्प्रदाय को बढ़ावा देने का जिम्मेदार ठहराया गया और उन्हें सात साल की सजा दे दी गई।

केन्याता अभी बन्दीगृह में ही थे कि केन्या को अन्ततः स्वतन्त्र बनाने की योजनाओं को कार्यान्वित करने के लिए अन्य नेताओं ने आगे कदम बढ़ाया। इन नेताओं में सबसे अधिक शक्तिशाली टाम म्बोया थे जो केन्या अफ्रीकी संघ के जन-सम्पर्क अधिकारी बने। यह संघ बाद में अवैध घोषित कर दिया गया और इसके स्थान पर केन्या अफ्रीकी राष्ट्रीय संघ स्थापित किया गया। के० अ० रा० सं० के उद्देश्यों में से एक उद्देश्य यह था कि केन्याता को मुक्त कराया जाए क्योंकि यही ऐसा व्यक्ति है जो केन्या के स्वतन्त्रता प्राप्त कर लेने के पश्चात् उसके प्रधानमन्त्री पद के लिए उपयुक्त होगा। केन्याता मुक्त हो गए और यद्यपि उन्होंने के० अ० रा० सं० का अध्यक्ष बनना तो स्वीकार कर लिया लेकिन उन्हें विधान मण्डल का सदस्य नहीं बनने दिया गया।

इसी बीच ब्रिटेन ने स्वायत्त शासन की दिशा में केन्या को बहुत से अधिकार दे दिए थे। पहले से अधिक अफ्रीकियों को मत देने का अधिकार दिया गया था और मन्त्रिमण्डल में भी अफ्रीकियों को कई स्थान दे दिए गए। जन-जातियों के लिए आरक्षित किए जाने वाले स्थान समाप्त कर दिए गए। ऐसी आशा थी कि १४ फरवरी, १९६२ को हुए संविधान सम्मेलन के बाद वहाँ आम चुनाव और भीतरी स्वशासन की व्यवस्था हो जाएगी। साथ ही भीतरी स्वशासन के बाद पूर्ण स्वतन्त्रता की भी आशा की गई थी।

केन्या के ६,२००,००० अफ्रीकियों के मध्य रहने वाले ६५,००० योरोपीय लोग यह तर्क देते हैं कि देश अभी स्वतन्त्रता प्राप्त करने के योग्य नहीं है। उनके सामने हिंसात्मक कार्रवाइयों तथा खून खराबी का खतरा बना हुआ है। साथ ही उन्हें अपनी भू-सम्पत्ति के छिन जाने का भी भय था। अफ्रीकी लोगों ने यह देखा था कि कांगो के लोगों ने बिलकुल किसी तरह की तैयारी किए बिना पूर्ण स्वतन्त्रता प्राप्त कर ली थी। ऐसी स्थिति में अफ्रीकियों की दृष्टि में अपनी स्वतन्त्रता को टालने के लिए ऐसी शंकाएँ कोई सशक्त आधार नहीं थीं। केन्या अफ्रीकी राष्ट्रीय संघ और इसके प्रतिपक्षी दल के० अ० लो० स० के बीच के मतभेद सम्भवतः यह सिद्ध कर सकेंगे कि स्वतन्त्रता के मार्ग में कितने बड़े चक्कर हैं। इन दोनों दलों के परस्पर विरोध के कारण एक संविधान सम्मेलन की कार्रवाई पहले ही अवरुद्ध हो गई थी।

उगान्डा—१९५८ में ब्रिटेन ने इस अन्तर्देशीय संरक्षित राज्य को १९६२ में लोकतंत्रीय स्वतन्त्रता प्राप्त कराने के लिए प्रयत्न शुरू कर दिए थे। उगान्डा में चार प्रान्त हैं और इन चारों में सबसे अधिक शक्तिशाली प्रान्त बुगान्डा राज्य है। इंगलैंड के कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में शिक्षा प्राप्त एक अफ्रीकी द्वारा शासित बुगान्डा और इस नए राज्य के बीच के सम्बन्ध उगान्डा के विकास की दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण सिद्ध होंगे। इस नए शासक के कहने पर ही बुगान्डा की अपनी संसद् बनी है। उगान्डा के लिए किस प्रकार की सरकार सबसे अधिक उपयुक्त रहेगी—यह पता

लगाने के लिए एक आयोग की स्थापना की जा चुकी है।

तांगानिका—१६,५६५ फुट ऊँचा माउण्ट किलिमन्जारो नाम का अफ्रीका का सबसे ऊँचा पर्वत-शिखर एक अर्द्धरात्रि को आतिशबाजियों से जगमगा उठा। उसी समय तांगानिका में फहराता हुआ ब्रिटेन का झण्डा भी नीचे उतार दिया गया। पहले विश्वयुद्ध के बाद जिस दिन तांगानिका एक शासनादेश के रूप में ब्रिटेन को सौंपा गया था उसी दिन से ब्रिटेन का यह झण्डा वहाँ फहरा रहा था। ६ दिसम्बर, १६६१ को प्रातः तांगानिका में सूर्योदय के साथ-साथ उसका अपना नया झण्डा फहरा उठा। अफ्रीका के २६ वें स्वतन्त्र राष्ट्र और राष्ट्रमण्डल के सबसे नये सदस्य देश तांगानिका के जन्म की यही कहानी है। कुछ ही समय बाद तांगानिका संयुक्त राष्ट्र संघ का १०४ वां सदस्य भी बन गया।

तांगानिका के इतनी जल्दी स्वतन्त्रता प्राप्त करने का श्रेय मुख्यतः ज्यूलियस न्येरेरे नाम के अफ्रीकी व्यक्ति को है। ज्यूलियस न्येरेरे पहाड़ी कबीले के एक मुखिया का लड़का था। इस मुखिया के बच्चों की संख्या छब्बीस थी। ज्यूलियस १२ वर्ष की आयु में एक मिशन स्कूल में भर्ती हुआ। इससे पहले उसने किसी भी गोरे आदमी को नहीं देखा था। स्कूल की शिक्षा समाप्त करने के बाद ज्यूलियस एडिनबर्ग विश्वविद्यालय में अध्ययन करने लगा। अपने मूल देश में वापस आने पर ज्यूलियस ने एक राजनीतिक दल की स्थापना की और देश में जगह-जगह जाकर एकता और स्वतन्त्रता की आवाज लगाई। एक समय आया कि उसकी आकांक्षा पूरी हुई और उसका देश स्वतन्त्र हो गया। ज्यूलियस स्वतन्त्र देश का पहला प्रधान मंत्री चुना गया।

तांगानिका के इतनी जल्दी स्वतन्त्रता प्राप्त करने पर तो ब्रिटेन तक को आश्चर्य हुआ क्योंकि तांगानिका एक गरीब देश था और उसे ब्रिटेन के खजानों से सहायता की ज़रूरत थी। तेल, हीरों, तथा खनिज पदार्थों की दृष्टि से तो यह देश समृद्ध है लेकिन इन साधनों का अभी तक पूरा विकास नहीं किया जा सका है। स्थानीय तौर पर सूखा पड़ने और बाढ़ आ जाने के कारण इस देश के काफी बड़े भाग में आबादी नहीं है।

इसके अलावा तांगानिका में अलग-अलग कौमों के लोग रहते हैं। इसकी अपनी बहुत सी अफ्रीकी जनजातियों के अतिरिक्त यहाँ योरोपीय, अरब तथा भारतीय लोग भी रहते हैं। अलग-अलग राष्ट्रीयता वाले ये सभी लोग ऊपरी तौर पर मिल जुल कर रहते हैं। चुनाव की एक अनोखी पद्धति चालू करके ब्रिटेन ने इस देश को एकता के सूत्र में बाँध दिया। प्रत्येक मतदाता को तीन मत देने थे—एक एशियाई उम्मीदवार को, दूसरा अफ्रीकी उम्मीदवार को और तीसरा योरोपीय उम्मीदवार को। इस प्रकार यह नई चुनाव प्रणाली जातिगत भेदों के दूर करने में प्रवृत्त हुई।

तांगानिका के सामने बहुत सी समस्याएँ हैं। लगभग ९० प्रतिशत जनता अशिक्षित है और स्कूलों की संख्या भी कम है। इस देश में डाक्टरों, अध्यापकों तथा इंजीनियरों की बहुत कमी है। यहाँ से मुख्यतः सिसल का निर्यात किया जाता है। लेकिन इस फसल से तांगानिका को बहुत बड़ी आमदनी नहीं होती।

न्येरेरे ने १९६२ में त्यागपत्र दे दिया। उन्होंने खेती में सुधार लाने, देश में खनिज-पदार्थों का ठिकाना पता लगाने तथा उपभोक्ता उद्योग का विकास करने से सम्बधित एक कार्यक्रम का सूत्रपात किया। इस उद्देश्य के लिए न्येरेरे को ब्रिटेन के अतिरिक्त पश्चिमी जर्मनी तथा संयुक्त राज्य से भी सहायता प्राप्त हुई। स्वतन्त्र ढंग से आगे बढ़ने में स्वयं अपनी तथा बाहरी राष्ट्रों की जनता से जितना सद्भाव तांगानिका को मिला उतना अफ्रीका के किसी भी अन्य देश को नहीं मिल सका।

रुआन्डा उरुन्डी—रुआन्डा-उरुन्डी नामक दो भागों में बटा हुआ भूमध्य-वर्ती क्षेत्र तांगानिका और कांगो गणराज्य के बीच में स्थित है। ये दोनों भाग पहले तो राष्ट्र संघ के शासनादेश थे और बाद में बेल्ज प्रशासन के अधीन

संयुक्त राष्ट्र के न्यासक्षेत्र बन गए। रुआन्डा-उरुन्डी की बहुत-सी विरोधी जन-जातियों में दुनिया के सबसे लम्बे लोग, बातुत्सी के सात-फुटे योद्धा, और सबसे छोटे कद के बौने भी मिलते हैं। कांगो खो देने के बाद बेलजियम ने अपने न्यास-क्षेत्रों के रख-रखाव में अधिक रुचि नहीं ली। १९६२ में संयुक्त राष्ट्र संघ ने रुआन्डा-उरुन्डी की स्वतन्त्रता की पुष्टि की जो रुआन्डा के स्वतन्त्र गणराज्य तथा बुरुन्डी राज्य में विभाजित हो गया। कुछ प्रेक्षकों को यह खतरा था कि ये दोनों देश आपस में जन-जातीय झगड़े-फिसाद करेंगे।

जंजीबार—अफ्रीका के विभाजन के बाद जंजीबार में जो अरब साम्राज्य बचा रहा, वह केवल दो छोटे-छोटे द्वीप थे। जंजीबार और पेम्बा नाम के ये दोनों द्वीप अफ्रीका के पूर्वी तटवर्ती क्षेत्र से निकट थे। १८९० में ये दोनों द्वीप ब्रिटेन के संरक्षित राज्य घोषित किए गए। फिर भी वहां के

सुलतान ने अपने बहुत से पूर्ण अधिकार अपने पास ही रखे। फिर भी दूसरे विश्वयुद्ध के बाद जब अफ्रीका में राष्ट्रीयता की भावना ने जोर पकड़ा तो वहां के सुलतान और ब्रिटेन दोनों के ही अधिकार धीरे-धीरे कम होते चले गए। १९६१ में जंजीबार को स्वशासन का अधिकार दे दिया गया लेकिन अन्ततः इसका पूर्ण स्वतन्त्र होना निश्चित है।

जंजीबार सदियों से मुख्यतः लौंग के निर्यात से प्राप्त होने वाली आय पर निर्भर रहा है। जंजीबार की लौंग की सबसे अधिक मात्रा भारत को निर्यात की जाती थी। अब भारत अपने यहां लौंग का उत्पादन कर रहा है और यही कारण है कि जंजीबार के सामने अपने यहां के बेचने योग्य अन्य उत्पादनों के विकास की समस्या उठ खड़ी हुई है।

मालागासी गणराज्य—१९५८ में मदगासकर नामक फ्रांसीसी उपनिवेश ने अपने को स्वायत्त गणराज्य घोषित कर दिया। दो वर्ष बाद फ्रांस ने इसे पूर्ण स्वतन्त्रता दे दी लेकिन इस नए गणराज्य ने फ्रांसीसी राष्ट्र मंडल के साथ मिलकर रहने की इच्छा प्रकट की। मालागासी शब्द का सम्बन्ध पुराने कबीलों से है जो कि इन्डोनेशिया, अरब

और अफ्रीका की बासुतो जनजातियों के मिश्रण थे। मालागासी गणराज्य का मुख्य उद्योग खेती है। तम्बाकू, काफी, चावल, कोको और वैनिला यहाँ के मुख्य उत्पादन हैं।

१. अपने देश में सुधार लाने के लिए हेल सिलासी ने क्या कदम उठाए ?
२. केन्या में अफ्रीकी और योरोपीय लोगों के बीच इतने अधिक मतभेद होने के कारण बताइए।
३. ब्रिटेन ने किस प्रकार केन्या को स्वतन्त्रता प्राप्त करने के योग्य बनाया ?
४. तांगानिका की स्वतन्त्रता के महत्त्वपूर्ण समझे जाने के कारण बताइए।
५. तांगानिका के प्रधान मंत्री के रूप में ज्यूलियस न्येरेरे के सामने कौन-कौन सी समस्याएँ उत्पन्न हुईं ?
६. क्या कारण है कि सोमालिया, उगान्डा, रुआन्डा और बुरुन्डी राष्ट्रों के 'समस्यापूर्ण' होने की सम्भावना है ?
७. स्वायत्त-शासन का अधिकार मिलने पर जंजीबार के सामने कौन-सी समस्याएं उपस्थित हुईं ?
८. मदगास्कर आजकल किस नाम से प्रसिद्ध है ?

दक्षिणी अफ्रीका में

दक्षिणी अफ्रीका का आकार संयुक्त राज्य की तुलना में लगभग दो-तिहाई है। अफ्रीका का यह अधिकांश भाग एक ऊँचा पठारी मैदान है जो पशुओं के चरागाह के रूप में उपयुक्त है। दक्षिणी अफ्रीका में दुनिया की सबसे समृद्ध सोने और हीरों की कुछ खानें हैं। सोने और हीरों की खानों के

अलावा यहाँ पर विश्व का सबसे खराब रेगिस्तानी क्षेत्र है और जम्बेजी नदी पर विक्टोरिया फ़ाल नामक दुनिया का सबसे बड़ा जलप्रपात भी यहीं है।

रोडेशिया तथा न्यासा प्रदेश संघ—१९५३ में उत्तरी रोडेशिया तथा न्यासा प्रदेश नामक ब्रिटेन के संरक्षित राज्य और दक्षिणी रोडेशिया नाम का स्वशासी ब्रिटिश उपनिवेश आपस में मिल गए और रोडेशिया तथा न्यासा प्रदेश संघ की स्थापना हो गई। चूंकि बहुत से अफ्रीकी इस संघ की स्थापना के विरुद्ध थे अतः ब्रिटेन ने एक आयोग की नियुक्ति कर दी जिसने अन्ततः इस संघ से पृथक् होने का अधिकार देने की सिफारिश की। फिर भी ब्रिटिश सरकार को यह खतरा था कि इस संघ के टूट जाने के परिणामस्वरूप कुछ अर्द्ध-विकसित क्षेत्रों की जनता को गरीबी और दुःख मिलेगा।

बसूतो देश, स्वाजी देश तथा बेचुआना देश—ये तीनों ब्रिटिश हाई कमीशन क्षेत्र या तो पूरी तरह दक्षिणी अफ्रीकी गणराज्य से घिरे हुए हैं या इन तीनों की सीमाएँ उक्त गणराज्य से मिली हुई हैं। बसूतो देश तथा स्वाजीदेश दोनों ही बहुत छोटे हैं। दक्षिणी अफ्रीकी गणराज्य के उत्तर में स्थित बेचुआना देश बहुत विशाल है और इसका आकार लगभग टेक्सास जितना है। बेचुआना देश का आधे से अधिक भाग कालाहारी रेगिस्तान का जनहीन बंजर प्रदेश है। बेचुआना देश के प्रत्येक कबायली सरदार का अपने कबीले के लोगों पर पूरा नियन्त्रण रहता है।

इन तीनों क्षेत्रों की जनता अपनी सरकार से पूर्णतः सन्तुष्ट दिखाई देती है लेकिन दक्षिणी अफ्रीकी गणराज्य की यह इच्छा है कि ये तीनों क्षेत्र उसी के अधिकार में आ जाएँ। अफ्रीकी लोग तथा ब्रिटिश सरकार दोनों ही इस बात के पक्ष में नहीं हैं।

दक्षिण-पश्चिमी अफ्रीका—ब्रिटिश हाई कमीशन के उक्त तीनों क्षेत्र ही ऐसे क्षेत्र नहीं हैं जिन्हें दक्षिणी-अफ्रीकी गणराज्य प्राप्त करना चाहता है। पहले विश्वयुद्ध के बाद जर्मन अधिकृत दक्षिण-पश्चिमी अफ्रीका दक्षिणी अफ्रीकी सरकार के अधीन राष्ट्र संघ का शासनादेश बन गया। शासनादेशों वाले अन्य देशों ने इन शासनादेशों को दूसरे विश्वयुद्ध के बाद संयुक्त राष्ट्र के न्यास क्षेत्रों के रूप में स्वीकार किया। दक्षिणी अफ्रीका ने संयुक्त राष्ट्र से दक्षिण-पश्चिमी अफ्रीका को संघ में मिलाने की अनुमति मांगी। संयुक्त राष्ट्र ने दक्षिणी अफ्रीका का यह प्रार्थना ठुकरा दी और तब उसने अवज्ञापूर्वक ऐसे कानून पास किए जिनसे कि इस क्षेत्र तथा उसकी अपनी सरकार के मध्य और गहरे सम्बन्ध स्थापित हो जाएँ। परिणामतः दक्षिण-पश्चिमी अफ्रीका के प्रतिनिधियों को दक्षिणी अफ्रीका की संसद् में स्थान मिल चुका है।

एन्गोला तथा मोजाम्बिक—जब एन्गोला और मोजाम्बिक पुर्तगाल के अंग बना दिए गए तो उनके नागरिकों को भी पुर्तगाली नागरिक बना दिया गया। फिर भी नागरिकता के अधिकार केवल ऐसे योरोपीय, मुलट्टो तथा अफ्रीकियों को दिए गए थे जो पढ़ना-लिखना जानते हों और जिनका रहन-सहन गोरे लोगों के समान हो। चूंकि बहुत कम अफ्रीकी ही ऐसे थे जिन्हें पढ़ने-लिखने का अवसर मिला हो, अतः उनमें से अधिकांश को नागरिकता के अधिकार नहीं दिए गए।

एन्गोला तथा मोजाम्बिक में रहने वाले प्रत्येक अफ्रीकी को वर्ष में कम से कम छः महीने कार्य करना पड़ता था और साथ में झोंपड़ी कर भी अदा करना होता था। ऐसे कुछ व्यक्ति, जिन्हें स्थायी नौकरी नहीं मिल

सकी, सड़कें वनाने या उनकी मरम्मत करने या पुल वनाने के काम पर लग गए। अन्य लोगों को सरकार ने अकुशल मजदूरों के रूप में निजी उद्योगों में लगा दिया। इस प्रकार की वेगार के लिए वहुत ही थोड़ी मजदूरी दी जाती थी। प्रतिदिन कुछ सेण्ट ही मजदूरी के तौर पर दिए जाते थे। इस प्रकार के मजदूरों के जीवन-यापन की परिस्थितियाँ अत्यन्त खराव थीं।

१९६१ में कांगो गणराज्य की सीमा रेखा के निकट एन्गोला के अफ्रीकियों ने विद्रोह शुरू कर दिया और इस विद्रोह की चिनगारियाँ जल्दी ही देश के अन्य क्षेत्रों में फैल गई। अफ्रीकियों ने गोरे लोगों की वस्तियों के मालिकों पर आक्रमण किए। अफ्रीकियों ने उनमें से कइयों को मार दिया और उनकी इमारतों तथा फसलों में आग लगा दी। वदले में तेजी के साथ सख्त कार्रवाई की गई। पुर्तगाली हवाई जहाजों ने अफ्रीकी गाँवों पर वम वरसा दिए और इस प्रकार हजारों नर-नारी और वच्चे मौत के घाट उतार दिए गए। १२५,००० से अधिक अफ्रीकी सीमा पार करके कांगो में घुस आए। मौजूदा तनाव के रहते हुए भी एन्गोला के अफ्रीकी लोग स्वतन्त्रता की माँग करते रहे। संयुक्त राष्ट्र ने जवरदस्त सुधार लाने तथा इन जवावी कार्रवाइयों को रोकने के लिए पुर्तगाल पर दवाव डाला। अगस्त १९६१ में पुर्तगाली क्षेत्र में रहने वाले अफ्रीकियों को पुर्तगाली नागरिकता के पूरे अधिकार दे दिए गये।

जव एन्गोला में विद्रोह हो रहा था उस समय मोजाम्विक में शान्ति थी। इस प्रकार के आक्रमणों से वचाव करने के लिए पुर्तगाल ने मोजाम्विक में अपनी और अधिक सेनाएँ भेज दीं। फिर भी इस महाद्वीप में फैली हुई राष्ट्रवाद की भावना को देखते हुए वहुत से प्रेक्षकों को इस वात पर आश्चर्य है कि अपनी कठोर उपनिवेशीय नीति के रहते हुए पुर्तगाल अपने से २२ गुना वड़े क्षेत्र वाले देश पर, जहाँ अफ्रीकियों की वहुत वड़ी संख्या रहती थी, अपना अधिकार कव तक रख सकेगा।

दक्षिणी अफ्रीकी गणराज्य—दक्षिणी अफ्रीका में सवसे अधिक आवादी वाला तथा इस महाद्वीप में औद्योगिक दृष्टि से सवसे अधिक प्रगतिशील देश दक्षिणी अफ्रीका है। वहाँ गोरे लोगों के दो वर्ग हैं जिनके कारण दक्षिणी अफ्रीका में इतनी प्रगति संभव हो सकी है। ये दो वर्ग हैं वोअर्स के वंशज अफ्रीकनर्स तथा अंग्रेज लोग। अफ्रीकनर्स तथा अंग्रेजों ने मिलकर इस शक्तिशाली देश का निर्माण किया है लेकिन ऐसा करने में नीति के सम्वन्ध में दोनों वर्गों के वीच सदैव मतभेद रहे हैं।
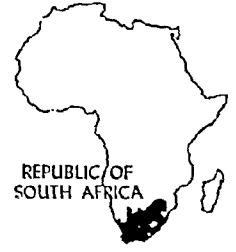
दूसरे विश्वयुद्ध के दौरान वहुत से अफ्रीकनर्स ने अपने देश के युद्ध में भाग लेने का विरोध किया। उस समय यह देश दक्षिणी अफ्रीकी संघ के नाम से प्रसिद्ध था। पुराने डच घराने के जान स्मट्स को जो व्रिटेन के जवरदस्त समर्थक थे, युद्ध के मामले में केवल थोड़े से लोगों का ही मत प्राप्त हो सका। कई अफ्रीकनर्स ने केवल युद्ध में भाग लेने का ही विरोध नहीं किया, वल्कि उन्होंने यह भी चाहा कि दक्षिणी अफ्रीका व्रिटिश राष्ट्रमण्डल से सम्वन्ध तोड़ ले। उन्होंने नाजी जर्मनी की ही तरह एक नया राज्य स्थापित करने का सुझाव दिया। इस प्रस्तावित नए राज्य का नियंत्रण अफ्रीकनर्स के हाथों में रहना था।

दक्षिणी अफ्रीका में अंग्रेजों की तुलना में अफ्रीकनर्स की संख्या सदा अधिक रही है। अधिकांश अफ्रीकनर्स तथा कुछ अंग्रेज लोग राष्ट्रवादी दल के सदस्य थे। १९४८ के चुनाव में इस दल ने सरकार पर नियंत्रण कर लिया। नए प्रधानमन्त्री डाक्टर डेनियल एफ० मिलन ने अपने मन्त्रिमण्डल में केवल अफ्रीकनर्स को ही स्थान दिया। इससे पहले ऐसा कभी नहीं हो सका था। यहाँ की जनसंख्या में योरोपीय या गोरे लोगों की संख्या लगभग २१ प्रतिशत है। इसके अतिरिक्त वहाँ ९ प्रतिशत भारतीय तथा ६७ प्रतिशत नीग्रो या अफ्रीकी लोग हैं। शेष ३ प्रतिशत लोग शुरू के डच पुरुषों तथा अफ्रीकी स्त्रियों की सन्तान हैं जिन्हें केप कलर्ड कहा जाता है।

राष्ट्रवादी दल ने जातिगत अलगाव का समर्थन किया। इस सम्बन्ध में प्रधान मन्त्री मैलन द्वारा एक नीति लागू की गई और तभी से उसके लागू करने में अधिकाधिक कड़ाई बरती जा रही है। इस नीति को जातीय पृथग्वासन (एपारथीड) कहते हैं। जातीय पृथग्वासन का अर्थ उनकी त्वचा के रंग के आधार पर जनता को पूरी तरह से अलग-अलग वर्गों में बांटना है।

इस नीति के अनुसार अफ्रीकी लोगों को नाना प्रकार के अपमान सहने पड़े। एक नियम के अनुसार गोरे लोगों, कलर्ड तथा अफ्रीकी लोगों के लिए अलग-अलग क्षेत्रों में रहना आवश्यक है। एक दूसरा अधिनियम भी है जिसके अधीन सरकार को यह अधिकार प्राप्त है कि वह विभिन्न वर्गों के लोगों के एक ही स्कूल में, यहाँ तक कि एक ही कालेज में भी भर्ती होने पर प्रतिबन्ध लगा सकती है। इसके अतिरिक्त इस अधिनियम में ऐसी व्यवस्था भी है कि गोरे लोगों को केवल गोरे अध्यापक तथा अफ्रीकी लोगों को अफ्रीकी अध्यापक ही पढ़ा सकते हैं। मत देने का अधिकार केवल योरपीय लोगों को ही दिया गया है। अफ्रीकियों को अपने साथ पासबुक रखनी पड़ती है और यदि किसी अफ्रीकी के पास पासबुक न मिले तो उसे बन्दी बनाया जा सकता है।

अफ्रीकियों ने जातीय पृथग्वासन के ऐसे तथा अन्य नियमों को बिना किसी विरोध के स्वीकार नहीं किया था। कइयों ने तो विरोधस्वरूप अपनी पासबुकें जला दीं। कइयों ने पासबुकें दिखलाने के स्थान पर घर में ही बैठे रहना बेहतर समझा। इस सम्बन्ध में हड़तालें और प्रदर्शन भी हुए।

१९६० में शार्प विल्ले नामक अफ्रीकी शहर में इन नियमों का विरोध करने के लिए एकत्र भीड़ पर पुलिस ने गोली चलाई जिससे बहुत से आदमी मारे गये तथा कई घायल हुए। सरकार को यह सन्देह था कि यह भीड़ अफ्रीकी राजनैतिक दलों के दो अफ्रीकी नेताओं द्वारा बुलाई गई है। अतः उन दोनों पर लगाए गए किसी भी आरोप को प्रमाणित किए बिना ही उन्हें जेल भेज दिया गया। दक्षिणी अफ्रीका की घटनाओं के प्रति विश्व की प्रतिक्रिया १९६० के नोबल शान्ति पुरस्कार से स्पष्ट होती है। यह पुरस्कार १९६१ में अलबर्ट लुथुली को दिया गया जो उन दो व्यक्तियों में से एक था जिन्हें शार्प विल्ले दुर्घटना के सम्बन्ध में जेल भेजा गया था। ब्रिटेन, संयुक्त राज्य तथा अन्य बहुत से देशों की सरकारों ने जातीय पृथग्वासन की इस प्रणाली पर खेद प्रकट किया और संयुक्त राष्ट्र संघ ने भी दक्षिणी अफ्रीका से इस नीति को त्यागने के लिए कहा। घाना ने दक्षिणी अफ्रीका के साथ अपने राजनयिक सम्बन्ध तोड़ दिए। १९६१ में लन्दन में हुई राष्ट्रमण्डल के प्रतिनिधियों की बैठक में प्रधान मन्त्री एच० एफ० फेअरफुर्ट की सरकार के विरुद्ध निन्दा का प्रस्ताव पास हुआ। १९६० में एक गोरे किसान ने इस प्रधान मन्त्री की हत्या की कोशिश की थी लेकिन वह सफल न हो सका था। तब दक्षिणी अफ्रीका के प्रतिनिधि इस बैठक में से विरोधस्वरूप बाहर निकल आए। बाद में गणराज्य बनने की इच्छुक दक्षिणी अफ्रीकी सरकार ने राष्ट्रमण्डल का सदस्य बने रहने के अपने प्रार्थनापत्र को वापस ले लिया।

सभी अफ्रीकनर्स ने राष्ट्रवादी दल की इन नीतियों का समर्थन नहीं किया और इन नीतियों के समर्थकों और विरोधियों के बीच संघर्ष शुरू हो हो गया। मताधिकार के बिना अफ्रीकी तथा कलर्ड अपनी बात विधिवत् ढंग से नहीं कह सकते थे। जातीय पृथग्वासन के विरुद्ध विद्रोह करने के लिए संगठित होने में उन्हें कितनी देर लगेगी? कई प्रेक्षकों का विश्वास है कि इसका समय दूर नहीं है।

१. दक्षिणी अफ्रीका के कौन से देश स्वतन्त्र नहीं हैं?
२. ब्रिटेन द्वारा रोडेशिया और न्यासादेश संघ बनाने के क्या कारण हैं?
३. पुर्तगाल की उन उपनिवेशीय नीतियों का परिचय दीजिए जिनसे एन्गोला में विद्रोह भड़क उठा? पुर्तगाली सरकार ने इस विद्रोह के सम्बन्ध में क्या कार्रवाई की?
४. जान स्मट्स, डाक्टर डेनियल एफ० मैलन, अल्बर्ट लुथुली, तथा एच० एफ० फेअरफुर्ट का परिचय दीजिए।
५. जातीय पृथग्वासन से आप क्या समझते हैं? जातीय पृथग्वासन के सम्बन्ध में अफ्रीकियों में क्या प्रतिक्रिया हुई?

६. जातीय पृथग्वासन के सम्बन्ध में संयुक्त राष्ट्र तथा अन्य राष्ट्रों की प्रतिक्रिया का वर्णन कीजिए।

७. उन परिस्थितियों का वर्णन कीजिए जिनके अधीन दक्षिणी अफ्रीका को राष्ट्रमण्डल से अलग होना पड़ा?

वाद-विवाद के लिए विषय

१. क्या कारण है कि भूतपूर्व फ्रांसीसी क्षेत्र से बने नये अफ्रीकी राष्ट्रों में से अधिकांश राष्ट्रों ने फ्रांसीसी राष्ट्रमंडल में ही रहने का निर्णय किया?

२. योरप के साम्राज्यों से मुक्त होने में अफ्रीका की जनता को अमरीकी उपनिवेशवादियों की तुलना में अधिक समय क्यों लगा?

३. अफ्रीका तथा दक्षिणी अमरीका की भौगोलिक स्थिति की तुलना कीजिए। ऐसे कौनसे भौगोलिक तत्त्व हैं जिनसे इन दोनों देशों में एकसी समस्याएँ उत्पन्न होती है?

४. क्या कारण है कि अफ्रीकी जनसंख्या में योरपीय लोगों का प्रतिशत बहुत कम है जबकि आस्ट्रेलिया और अमरीका में बाहर से आने वाले योरपीय लोग बहुसंख्या में थे?

५. पहले समय में संयुक्त राज्य के लिए अफ्रीका का क्या महत्त्व रहा है? क्या भविष्य में ऐसी संभावना है कि संयुक्त राज्य के लिए अफ्रीका का महत्त्व और अधिक बढ़ जाए?

६. अल्बर्ट लुथुली और महात्मा गांधी की तुलना कीजिए। सामाजिक अन्याय के विरुद्ध संघर्ष करने में इन दोनों व्यक्तियों द्वारा अपनाए गए तरीकों के सम्बन्ध में अपना मत प्रकट कीजिए।

७. अफ्रीकी लोगों के अफ्रीकी संयुक्त राज्य बनाने में क्या कठिनाइयाँ हैं?

८. किन परिस्थितियों में अफ्रीका के लोग जगत् के नेता बन सकते हैं?

इतिहास के उपकरणों का प्रयोग

I. नाम, तारीखें तथा स्थान :

१. क्या आप निम्न शब्दों को समझा सकते हैं :

अफ्रीकनर्स, अमरीकी उपनिवेश संस्था, जातीय पृथग्वासन, अरब लीग, राज्य क्रान्ति, राष्ट्रीय मुक्ति मोर्चा, फ्रांसीसी राष्ट्रमंडल, केन्या अफ्रीकी राष्ट्रीय संघ, किकुयू, माओ-माओ, मगरिबी मुस्लिम, राष्ट्रवाद, गुप्त सैनिक संगठन (ओ० ए० एस०), संयुक्त अरब गणराज्य।

२. क्या आप नक्शे में इन स्थानों का पता लगा सकते हैं?

अकरा, अदीस अबाबा, अल्जीयर्स, अल्जीरिया, एन्गोला, आस्वान, बसूतो देश, बेचुआ प्रदेश, ब्राजाविल, कामेरून, कासाब्लैन्का, केन्द्रीय अफ्रीकी गणराज्य, चाड, कांगो, सिरेनायका, दाहोमी, जिबूती, मिस्र, एरिट्रिया, इथोपिया, फेजान, फ्रांसीसी सोमालीदेश, गाबोन, गेम्बिया, घाना, गोल्ड कोस्ट, गिनी, आइवरी कोस्ट, कालाहारी, कसाई, कटंगा, केन्या, किलिमन्जारो, लागोस, लम्बारीन, लियोपोल्डविल, लाइबेरिया, लाइबरविल, लीबिया, माली, मौरीटेनिया, मोरक्को, मोजाम्बिक, नील, नाईजर, नाइजीरिया, न्यासादेश, पेम्बा, रोडेशिया, रूआन्डा-उरुन्डी, सहारा, सेनेगाल, शार्पविल्ले, सिएरा लेओन, सोमालिया, स्पेनी सहारा, स्टेनलेविल, सूडान, सूडानी गणराज्य, स्वेज, स्वाज़ी प्रदेश, तांगानिका, तोगो, ट्यूनीशिया, उगान्डा, अपर वोल्टा, वोल्टा, जंजीबार।

३. निम्न व्यक्तियों का परिचय दीजिए :—

इब्राहिम अब्बूद, सिरिले आडूला, हबीब बोरगिबा, फारुक, एण्टोइन गिजेन्गा, डैग हैमरशोल्ड, हसन द्वितीय, इद्रीसो सेनुस्सी, जोसेफ कसावुबू, जोमो केन्याता, पेट्रिस लुमुम्बा, अल्बर्ट लुथुली, डेनियल एफ० मैलन, जोसेफ मोबुतू, मोहम्मद नजीब, अब्दुल नासिर, क्वामे एनक्रूमा, ज्यूलिस न्येरेरे, अल्बर्ट श्वाइत्सर, हेल सिलासी, जान स्मट्स, सेकोतोरे, मोइस शोम्बे, एच० एफ० फेअरफुर्ट।

II. क्या आप अपनी बात अच्छी तरह समझा सकते हैं?

१. संयुक्त राष्ट्र सूचना कार्यालय को नये अफ्रीकी राष्ट्रों के झण्डों के चित्र भेजने के लिए लिखिए। एक या एक से अधिक झण्डों के चित्र

बना कर उनमें रंग भरिए और कक्षा को उन रंगों का महत्त्व समझाइए।

२. हाल में अफ्रीका से वापस आए किसी धर्मोपदेशक, सिपाही या यात्री के साथ साक्षात्कार करके कक्षा को अपनी रिपोर्ट दीजिए। यदि संभव हो तो अपने साक्षात्कार को टेप रिकार्ड कर लीजिए।

३. अफ्रीकी राष्ट्रों में से किसी एक राष्ट्र की तस्वीरें और समाचारपत्र की कतरनें चिपका कर एक स्क्रैप बुक तैयार कीजिए। यह सब सामग्री एक महीने में एकत्रित कर लीजिए और फिर अपने सहपाठियों के देखने या बुलेटिन बोर्ड पर लगाने के उद्देश्य से इस सामग्री को युक्तियुक्त ढंग से लगा दीजिए। सांचे में ढले हुए कागज की लुगदी का अफ्रीका की मुक्ति दर्शाने वाला एक नक्शा बनाने का तरीका बतलाइए। यह नक्शा इतना बड़ा बनना चाहिए कि इसे आपकी कतरनों के साथ डिसप्ले किया जा सके।

४. अपने अध्यापक से कहिए कि वह विद्यार्थी पत्र विनिमय केन्द्र, वासेका (मिन्नेसोता) या अन्तर्राष्ट्रीय विद्यार्थी संस्था, दिल्सबोरो (ओरेगन) को पत्र लिख कर आपके लिए एक पत्र मित्र ढूँढ़ें।

III. ब्लैकबोर्ड पर

१. १९५० के बाद जन्म लेने वाले अफ्रीकी राष्ट्रों की एक सूची तैयार करिए—नये राष्ट्रों के नामों के सामने उनकी राजधानियों के नाम लिखिए।

२. फ्रांसीसी राष्ट्रमण्डल और ब्रिटिश राष्ट्रमण्डल का तुलनात्मक विवरण प्रस्तुत कीजिए।

IV. बाहरी शोध

१. निम्नवर्ती लोगों में से किसी एक का परिचय दीजिए
   (क) दक्षिणी अफ्रीका के बुशमैन आदिवासी
   (ख) केन्या के कबीले

२. निम्नवर्ती देशों में से किसी एक का ऐतिहासिक परिचय दीजिए
   (क) इथोपिया
   (ख) लाइबेरिया

३. निम्नवर्ती अफ्रीकी समस्याओं में से किसी एक पर रिपोर्ट लिखिए :
   (क) उष्णदेशीय रोग
   (ख) जातीय पृथग्वासन नीति

४५ महान् साहसिक कार्यों में लगा हुआ मानव

संयुक्त राष्ट्र का सबसे मुख्य उद्देश्य 'अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति और सुरक्षा' बनाए रखना है। लेकिन दूसरे विश्वयुद्ध के बाद भी दुनिया में शान्ति स्थापित नहीं हुई। कोरिया, दक्षिण-पूर्वी एशिया, कांगो गणराज्य तथा अल्जीरिया में हो रहे पुराने लड़ाई-झगड़े यही सिद्ध करते हैं। साम्यवादी राष्ट्रों तथा पश्चिमी देशों के बीच चल रहा शीत युद्ध भी इसी तथ्य की पुष्टि करता है। इस सबके बावजूद भी दुनिया के सदिच्छु व्यक्तियों ने संयुक्त राष्ट्र को 'शान्ति और सुरक्षा' का साधन बनाने के लिए अथक प्रयास किया है।

इसके साथ-साथ वैज्ञानिक प्रकृति के रहस्यों का उद्घाटन करने के तरीकों की खोज में लग गए। सारी दुनिया के लोगों का जीवन सुखकर बनाने के उद्देश्य में ये वैज्ञानिक लोग रोगों के रोकने तथा उनका इलाज करने और भुखमरी मिटाने के तरीकों की खोज में जुट गए।

वैज्ञानिक ज्ञान के एक दूसरे क्षेत्र में अन्तरिक्ष के रहस्यों का भेद खोलने और प्राप्त हुई जानकारी का विश्लेषण करने में लग गए ताकि इस प्रकार प्राप्त हुई जानकारी मानव और उसके दैनिक जीवन को व्यावहारिक तौर से सुखमय बना सके।

क्या विश्व में निःशस्त्रीकरण संभव है?

रूस और पश्चिमी राष्ट्रों के बीच चल रहे शीत युद्ध के फलस्वरूप शस्त्रास्त्र के उत्पादन की होड़ लग गई और इस प्रकार दुनिया की शान्ति खतरे में पड़ गई। अतः निःशस्त्रीकरण की दिशा में कुछ उपाय करना अत्यन्त आवश्यक था लेकिन यह बताना बहुत कठिन था कि ये कब और कहाँ से शुरू किए जाएँ।

निःशस्त्रीकरण—परमाणु हथियारों के नियन्त्रण का अध्ययन करने के लिए संयुक्त राष्ट्र संघ ने पहले से ही परमाणु शक्ति आयोग की स्थापना कर दी थी। इस मामले में शुरुआत कैसे की जाए—इस प्रश्न पर रूस और संयुक्त राज्य एकमत नहीं हो सके। जहाँ तक संयुक्त राज्य का सम्बन्ध है, बर्नार्ड बैरुच ने यह सुझाव दिया कि परमाणु शक्ति से सम्बन्धित सारी सामग्री संयुक्त राष्ट्र के अधिकार में दे दी जाए। यदि कोई निरीक्षण योजना तैयार की जाती और उसे कार्यरूप में परिणत किया जाता तो संयुक्त राज्य अपने बम नष्ट करने और परमाणु शक्ति सम्बन्धी रहस्य संयुक्त राष्ट्र संघ को सौंप देने के लिए तैयार हो जाता। पश्चिमी राष्ट्रों की यह धारणा थी कि परमाणुशक्ति के नियन्त्रण के मामलों में निषेधाधिकार का प्रयोग नहीं किया जाना चाहिए।

रूस के ऐण्ड्रे ग्रोमिको ने इस पर आपत्ति उठाई। संयुक्त राज्य द्वारा अपने बम नष्ट कर देने के बाद ही ग्रोमिको निरीक्षण के प्रश्न पर विचार करना चाहते थे। उन्होंने निषेधाधिकार के प्रयोग पर भी बल दिया। इस प्रकार रूस के निषेधाधिकार के खतरे के कारण संयुक्त राष्ट्र संघ के लिए अमरीकी योजना को कार्यान्वित करना असंभव हो गया हालांकि संयुक्त राष्ट्र के अधिकांश सदस्य इस योजना के पक्ष में थे।

हथियारों की होड़ पर रोक लगाने और उससे

पैदा होने वाले खतरे को दूर करने के एक सामान्य तरीके के रूप में राष्ट्रपति आइजनहावर ने १९५५ में एक "खुला अंतरिक्ष" निरीक्षण योजना सुझाई। इस योजना के अनुसार संयुक्त राज्य तथा रूस दोनों देशों ने अपने सैनिक संस्थानों के नक्शे एक दूसरे को देने थे और एक-दूसरे के क्षेत्र की आकाशी फोटोग्राफी की अनुमति दी जानी थी। रूस ने यह योजना ठुकरा दी और उसके स्थान पर थल नियन्त्रण की एक योजना सुझाई। इस नई नियन्त्रण योजना के अनुसार सामरिक स्थलों पर से अन्तर्राष्ट्रीय प्रेक्षक सेना के जमाव का पता लगाया जा सकता था और बिना पूर्व सूचना के होने वाले आक्रमणों के सम्बन्ध में चेतावनी दी जा सकती थी।

निःशस्त्रीकरण के सामान्य कार्यक्रम की दिशा में रूस ने पहला काम यह किया कि उसने संयुक्त राज्य को अपने उत्तरी अतलांतिक संधि संगठन से सम्बन्ध-विच्छेद करने और न्यूक्लीयर परीक्षण बन्द करने के लिए कहा। संयुक्त राज्य उत्तरी अतलांतिक संधि संगठन को बाहरी आक्रमण रोकने का साधन समझता था लेकिन जब एक बार निःशस्त्रीकरण सम्बन्धी विचार-विमर्श शुरू हुआ तो उसने अस्थायी तौर पर न्यूक्लीयर परीक्षण बन्द करना भी मान लिया। १९५८ में हुए जेनेवा सम्मेलन में रूस तथा पश्चिमी राष्ट्रों के प्रतिनिधियों ने एक बार फिर इसी समस्या पर विचार किया। पर हथियारों की होड़ पर अंकुश रखने की दिशा में शुरुआत कहां से की जाए—इस सम्बन्ध में तीन वर्ष बाद भी कोई समझौता नहीं हो सका।

१९५८ में हुए विचार-विमर्श के दौरान संयुक्त राष्ट्र निःशस्त्रीकरण समिति के संयुक्त राज्य तथा रूसी सदस्य हथियारों की मात्रा और सेना में कमी करने से सम्बन्धित समझौते के निकट पहुँच गए। फिर भी रूसी सदस्य दो शर्तों पर बल देते रहे लेकिन अमरीकी सदस्य इन शर्तों को मानने के लिए तैयार नहीं थे। दोनों शर्तों में से एक शर्त तो यह थी कि संयुक्त राज्य उत्तरी अतलांतिक संधि संगठन से सम्बन्ध-विच्छेद कर ले। दूसरी शर्त न्यूक्लीयर परीक्षण बन्द करने की थी। पहले से बनी योजना में निश्चित परीक्षण पूरे कर लेने के बाद न्यूक्लीयर परीक्षणों पर रोक लगाना संयुक्त राज्य ने मान लिया लेकिन साथ ही निरीक्षण प्रणाली लागू करने की शर्त भी रखी। चूंकि उत्तरी अतलांतिक संधि संगठन सारे स्वतन्त्र देशों को संगठित रखने की दृष्टि से एक महत्त्वपूर्ण संस्था थी, अतः संयुक्त राज्य को यह पता था कि इस संगठन से सम्बन्ध-विच्छेद करने के परिणाम कितने भयंकर हो सकते हैं। इसी बीच संयुक्त राष्ट्र महासभा ने पश्चिमी राष्ट्रों द्वारा प्रस्तुत किए गए प्रस्तावों की सामान्य रूप रेखा स्वीकार कर ली। फिर भी इतनी बात तो साफ थी कि सभी सम्बन्धित राष्ट्रों के पूरे सहयोग के बिना निःशस्त्रीकरण सम्बन्धी कोई भी प्रस्ताव सफल नहीं हो सकता।

परीक्षण किए जाएँ या नहीं? असफलता के इतिहास के बावजूद भी शस्त्रों पर नियन्त्रण रखने के उद्देश्य से संयुक्त राष्ट्र में तथा इसके बाहर सतत प्रयत्न होते रहे। ब्रिटेन, संयुक्त राज्य तथा रूस के बीच न्यूक्लीयर परीक्षण रोकने के सम्बन्ध में जो बातचीत १९५८ में शुरू हुई थी वह रुक-रुक कर १९६१ के पूरे वर्ष तक जारी रही। तीनों राष्ट्रों ने यह मान लिया कि जिस अवधि में वे न्यूक्लीयर परीक्षणों पर रोक लगाने के प्रश्न पर विचार करेंगे, उसमें किसी भी राष्ट्र द्वारा कोई भी न्यूक्लीयर परीक्षण नहीं किया जाएगा। इस समझौते के बावजूद भी सोवियत संघ ने ३० न्यूक्लीयर अस्त्रों में से पहले अस्त्र का विस्फोट कर दिया। और अधिक समय तक परीक्षण बन्द रखने की अपील रूस द्वारा ठुकरा दी गई और तब यह बातचीत अनिश्चित काल के लिए स्थगित कर दी गई।

अब यह स्पष्ट हो चुका था कि जिस दौरान में परमाणु परीक्षणों पर रोक लगाने के प्रश्न पर महीनों विचार-विमर्श होता रहा उस अवधि में रूस अपेक्षाकृत बड़े और बेहतर किस्म के बम बनाने में लगा हुआ था। रूस का एक बम ५७ मेगाटन का था। अनुमान है कि यह बम हिरोशिमा को तबाह करने वाले बम से २५०० गुना अधिक शक्तिशाली था। सोवियत संघ के आस-पास के देशों ने संयुक्त राष्ट्र से प्रार्थना की कि वह रूस को अपने पूर्व निश्चित परीक्षण रद्द करने के लिए कहे लेकिन ख्रुश्चेव ने ऐसी किसी अपील की परवाह नहीं की।

संयुक्त राज्य ने यह तर्क उपस्थित किया कि आत्मरक्षा के लिए उसे भी दोबारा न्यूक्लीयर परीक्षण शुरू करने होंगे । अतः संयुक्त राज्य द्वारा "आपरेशन प्लोशेयर" नाम से प्रसिद्ध भूमिगत परीक्षण की एक नई शृंखला आरम्भ कर दी गई। जब रूस परीक्षण पर रोक लगाने से सम्बन्धित किसी भी समझौते पर राजी नहीं हुआ तो राष्ट्रपति कैनेडी ने संयुक्त राज्य द्वारा अन्तरिक्ष में परीक्षण आरम्भ किए जाने की तारीख नियत कर दी।

न्यूक्लीयर परीक्षणों के सम्बन्ध में आपत्तियाँ—न्यूक्लीयर परीक्षणों के सम्बन्ध में दो आपत्तियाँ सामने आई हैं। पहली तो यह कि धरती पर किए न्यूक्लीयर परीक्षणों की स्थिति में न्यूक्लीयर विस्फोट के बाद वायुमण्डल में उतर आने वाली रेडियो एक्टिव धूल धरती पर आती है। इस प्रकार की धूल के छिटक जाने से अंग जल जाते हैं, गंभीर रोग और यहां तक कि मृत्यु भी हो जाती है। यह रेडियो एक्टिव धूल कई वर्षों तक अक्सर आकाश से गिरती रहती है।

दूसरी आपत्ति यह है कि जो बम सफल सिद्ध हो जाते हैं उनके भण्डार बनाए जाने लगते हैं। बमों के ऐसे भण्डारों के फलस्वरूप शीत युद्ध न्यूक्लीयर युद्ध का रूप धारण कर लेते हैं।

१. संयुक्त राष्ट्र निःशस्त्रीकरण समिति द्वारा किन सुझावों पर विचार किया गया ?
२. निःशस्त्रीकरण कार्यक्रम के कार्यान्वित करने में देरी लगने के कारण बताइए।
३. न्यूक्लीयर परीक्षणों पर प्रस्तावित स्थायी प्रतिबन्ध लागू न हो सकने के कारण बताइए।
४. न्यूक्लीयर परीक्षणों को बन्द करना क्यों आवश्यक है ?

संयुक्त राष्ट्र संघ के लिए काम और उसकी कठिनाइयाँ

एक न्यूक्लीयर युद्ध की सम्भावना से लेकर कांगो के भविष्य तक की नाना प्रकार की दुनिया की समस्याओं में लगा रहने वाला संयुक्त राष्ट्र संघ स्वयं भारी संकट में होकर गुज़रा।

ट्रोइका—यद्यपि सुरक्षा परिषद् में रूस को निषेधाधिकार प्राप्त है, फिर भी ख्रुश्चेव ने इस अधिकार का विस्तार करके इसे सचिवालय पर भी लागू करने की एक योजना प्रस्तुत की। उन्होंने यह माँग की कि सचिवालय का संगठन तीन व्यक्तियों का होना चाहिए। इन तीन व्यक्तियों में से एक तो साम्यवादी गुट का, एक पश्चिमी राष्ट्रों का तथा एक तथाकथित तटस्थ देशों का प्रतिनिधि होना चाहिए। इस योजना का नामकरण तीन घोड़ों द्वारा खींची जाने वाली रूसी घोड़ा गाड़ी के नाम पर "ट्रोइका" रखा गया।

संयुक्त राज्य ने यह योजना तुरंत अस्वीकार कर दी। डैग हैमरशोल्ड की मृत्यु के बाद जल्दी ही राष्ट्रपति कैनेडी ने संयुक्त राष्ट्र महासभा में स्वयं उपस्थित होकर सदस्यों के समक्ष वक्तव्य देते हुए कहा, "ट्रोइका के तीनों घोड़ों के तीन ड्राइवर नहीं होते जो उसे तीन अलग-अलग दिशाओं में ले जाएं। तीनों घोड़ों का ड्राइवर एक ही होता है और इसी तरह संयुक्त राष्ट्र संघ का कार्य-संचालक भी एक ही व्यक्ति होना चाहिए।" यद्यपि हैमरशोल्ड की मृत्यु के बाद उनके अवशिष्ट कार्य-समय के लिए बर्मा के ऊ थाँ को कार्यकारी महासचिव बना दिया गया फिर भी ख्रुश्चेव ने यह स्पष्ट कर दिया कि ट्रोइका का विचार उन्होंने अभी त्यागा नहीं है।

भीतरी अड़चनें—संयुक्त राष्ट्र संघ के सदस्य आपस में इस बात के लिए वचन-बद्ध थे कि वे शान्ति की स्थापना के लिए संयुक्त-राष्ट्र की सेवाओं से लाभ उठाएंगे। यही देश अक्सर संयुक्त-राष्ट्र की सिफारिशों में रुकावट डालते थे। १९६२ तक सुरक्षा परिषद् के स्थायी सदस्यों द्वारा १०५ बार निषेधाधिकार का प्रयोग किया जा चुका था। इनमें से ९८ बार रूस ने इसका प्रयोग किया था। इसके अलावा, कई सदस्य राष्ट्रों ने अपने संयुक्त-राष्ट्र शुल्क की अदायगी नहीं की थी। ऐसा वे विशेषतः उस समय करते थे जब कि संयुक्त राष्ट्र

संघ द्वारा अनुमोदित कोई कार्रवाई उनको पसन्द नहीं होती थी। ऐसे प्रत्येक मामले में अदायगी रोकने के लिए संयुक्त राष्ट्र संघ कुछ नहीं कर सकता था।

कार्यों में वृद्धि—इस बात के बावजूद कि संयुक्त राष्ट्र संघ बहुत कठिनाइयों में रह कर काम करता है, यह संस्था मानवता के लिए काम करने में अधिक से अधिक दायित्व वहन करने में जुटी हुई है। उदाहरण के तौर पर, अपने एक तकनीकी सहायता कार्यक्रम के आधीन संयुक्त राष्ट्र संघ ने एक ही वर्ष में नौ देशों को २२९१ विशेषज्ञ भेजे। ये विशेषज्ञ कृषि तथा कृषि-उत्पादन में वृद्धि जैसे विषयों पर सलाह देने के लिए भेजे गए थे। दुनिया के सुख-सुविधा से वंचित बच्चों के लिए एक कोष स्थापित किया गया। नए अफ्रीकी राज्यों की सरकारों को सलाह देने के लिए एक विशेष आर्थिक आयोग की स्थापना भी की गई। अत्याचार-पूर्ण सरकारों से आने वाले शरणार्थियों की सहायता के लिए एक आयोग की नियुक्ति के अलावा कोरियाई पुनर्निर्माण एजेंसी नामक संस्था का भी निर्माण किया गया। प्रेक्षकों को दुनिया के संकट-ग्रस्त इलाकों में भेजा गया। ये प्रेक्षक इस लिए भेजे गए कि वे संकट के कारणों की खोज करें और उन कारणों को दूर करने या उन्हें खत्म या कम करने के उपायों की सिफारिश करें।

संयुक्त राष्ट्र संघ के आकार में वृद्धि—संयुक्त राष्ट्र संघ नए राष्ट्रों को अपना सदस्य बनाता रहा। सिएरा लेओन २७ सितम्बर, १९६१ को संयुक्त राष्ट्र का १०० वां सदस्य बन गया। संयुक्त अरब गणराज्य के टूट जाने के बाद सीरिया भी १०१ वां सदस्य बन गया। मंगोलिया के लोक गणराज्य, मोरीटेनिया और तांगानिका संयुक्त राष्ट्र के सदस्य बन गए। इस प्रकार १९६१ तक संयुक्त राष्ट्र संघ के सदस्यों की संख्या १०४ हो गई। दूसरे शब्दों में संयुक्त राष्ट्र संघ के सदस्यों की मूल संख्या १६ वर्षों के भीतर दुगनी हो गई।

यूनाइटेड नेशन्स

संयुक्त राष्ट्र संघ में न्यूक्लीयर अस्त्रों पर रोक लगाने सम्बन्धी विचार-विमर्श के दौरान सोमालिया और सिएरा लिओन के प्रतिनिधि परस्पर वार्तालाप कर रहे हैं।

इन नए सदस्यों के कारण संयुक्त राष्ट्र के सामने नई समस्याएँ पैदा हो गई। नए राष्ट्रों में से कई राष्ट्र आत्म-निर्भर नहीं हैं, उनकी जनसंख्या थोड़ी है और उनके यहाँ नौसैनिक या स्थल सैनिक शक्ति नहीं के बराबर है। फिर भी इन राष्ट्रों को महासभा में वोट देने का उतना ही अधिकार प्राप्त है जितना पूर्व और पश्चिम के बड़े और ताकतवर देशों को। उदाहरण के तौर पर कुल ४,००,००,००० जनसंख्या वाले अफ्रीका के छोटे-छोटे १८ राष्ट्रों के वोट पश्चिमी योरोपीय देशों के वोटों से अधिक हैं हालांकि पश्चिमी योरोपीय देशों की कुल जनसंख्या ३०,००,००,००० है। इसके अतिरिक्त, संयुक्त राष्ट्र संघ के निर्णयों को लागू करने के लिए पश्चिमी योरोपीय देशों के पास जलसेना, थलसेना तथा आर्थिक शक्ति भी है। अफ्रीकी राष्ट्रों में इन सब का अभाव है। वोट की शक्ति तथा वास्तविक शक्ति के बीच और अधिक न्यायोचित संतुलन लाने के उद्देश्य से संयुक्त राष्ट्र घोषणा-पत्र को संशोधित करने के सम्बन्ध में बहुत से प्रस्ताव सामने आए हैं। फिर भी अभी तक कोई भी संशोधन लागू नहीं किया जा सका है।

१. खुश्चेव की ट्रोइका योजना के सम्बन्ध में आप क्या जानते हैं? संयुक्त राज्य द्वारा इस योजना का विरोध क्यों किया जाता है?
२. ऐसे कुछ उदाहरण दीजिए जबकि संयुक्त राष्ट्र संघ के सदस्य कभी-कभी संयुक्त राष्ट्र के कार्य-संचालन में रुकावट उत्पन्न कर देते हैं।
३. मानवता की सेवा के लिए संयुक्त राष्ट्र द्वारा अपनाए गए विभिन्न तरीकों का परिचय दीजिए।
४. संयुक्त राष्ट्र संघ के सदस्यों की संख्या में वृद्धि के कारण संयुक्त राष्ट्र के सामने क्या कठिनाई पैदा हुई?

जनसंख्या में वृद्धि

१९६० के बाद के वर्षों में वैज्ञानिकों ने जनसंख्या में हुई जबरदस्त वृद्धि की ओर ध्यान दिया। ऐसा अनुमान है कि ईसा के समय दुनिया की जनसंख्या २०,००,००,००० से लेकर ३०,००,००,००० तक थी। १६५० तक यह संख्या बढ़कर ५०,००,००,००० हो गई और १६६० में ३,००,००,००,००० हो गई। हजारों सालों तक दुनिया की जनसंख्या ·०२ प्रतिशत वार्षिक की दर से बढ़ती रही और आज इस वृद्धि की औसत दर १·७ प्रतिशत है। यदि वृद्धि की दर यही रही तो कुछ जनसंख्या का अध्ययन करने वालों का विचार है कि बीसवीं शताब्दी के अन्त तक दुनिया की जनसंख्या ६,००,००,००,००० से अधिक हो जाएगी।

जनसंख्या में असमान वृद्धि : जनसंख्या में वृद्धि की दर विश्व के सभी भागों में एकसी नहीं रही है। पश्चिमी योरप में यह दर न्यूनतम है। संयुक्त राज्य और रूस में जनसंख्या की वृद्धि विश्व की औसत दर के अनुसार हो रही है! सबसे अधिक वृद्धि लैटिन अमरीका में तथा एशिया व अफ्रीका के भागों में हुई है। जनसंख्या में वृद्धि की दरों में असमानता से अधिक महत्त्वपूर्ण शायद यह बात है कि दुनिया की तथाकथित "अतिजनसंख्या" क दर्शन हमें असमृद्ध क्षेत्रों में ही होते हैं।

कारण : एशिया, अफ्रीका तथा लैटिन अमरीका में जनसंख्या में वृद्धि के बहुत से कारण हैं। पहली बात तो यह है कि इन क्षेत्रों में जन्मदर ऊँची है और मृत्युदर नीची। मलेरिया-प्रभावित क्षेत्रों में कीटाणुनाशक दवाइयाँ छिड़कने, शुद्ध जल की व्यवस्था करने तथा एण्टीबायोटिक दवाइयों के प्रयोग करने जैसे तरीकों द्वारा किसी भी देश की मृत्यु दर ५० प्रतिशत घटाई जा सकती है। उदाहरणतः श्रीलंका में जन्मे बालक की औसत आयु १६२१ में ३२ वर्ष होती थी, जो १९५४ में बढ़कर ६० वर्ष हो गई। फिर भी, एशिया और अफ्रीका के दूसरे भागों में तथा लैटिन अमरीका में औसत आयु को उक्त सीमा तक नहीं बढ़ाया जा सका है। फिर भी इन क्षेत्रों ने कुछ न कुछ प्रगति अवश्य की है। एशिया, अफ्रीका तथा लैटिन अमरीका में जनवृद्धि की दर ऊँची होने का एक दूसरा कारण छोटी उम्र में विवाह करने का रिवाज है। इनमें से बहुत से क्षेत्रों में तो १२ और १४ वर्ष की लड़कियों के विवाह कर दिए जाते हैं।

जनसंख्या में असाधारण वृद्धि : एक चुनौती— दुनियाँ में जहाँ-जहाँ जनसंख्या में तेजी के साथ वृद्धि हुई है, वे सभी ऐसे क्षेत्र हैं जो अपनी जनता के लिए खाने की व्यवस्था भी मुश्किल से कर सकते हैं। आज की दुनिया में आधे से अधिक लोग चावलों पर जीवित रहते हैं। भारत, लाल चीन जैसे बहुत से देशों में अन्न की भारी कमी है। कई क्षेत्र तो ऐसे हैं जहाँ कि इतनी घनी आबादी है कि वहाँ खाद्यान्न का उत्पादन भी नहीं बढ़ाया जा सकता। ऐसे क्षेत्रों में शिक्षा की सुविधाएँ भी अपर्याप्त हैं और काम-धन्धों की भी कमी है। अतः ऐसे क्षेत्रों में पैदा हुए अधिकाँश बच्चे गरीबी और अज्ञान में ही जीने की आशा कर सकते हैं।

गरीबी और अज्ञान के रहते हुए लोकतन्त्र की समृद्धि नहीं होती जबकि यही दो बातें साम्यवाद के प्रसार के लिए उपयुक्त वातावरण तैयार करती हैं। अतः बढ़ती हुई जनसंख्या दुनिया में लोकतंत्र के प्रसार के लिए खतरा है। यह एक ऐसा खतरा है जिसका सामना करने के लिए सारे स्वतन्त्र राष्ट्रों को उपलब्ध प्रौद्योगिक कौशल और सरकारी क्षेत्रों के विवेक की आवश्यकता है।

१. आज विश्व की जनसंख्या लगभग कितनी है ? जनसंख्या में वृद्धि की मौजूदा दर के हिसाब से सन् २००० में विश्व की जनसंख्या अनुमानतः कितनी हो जाएगी ?
२. दुनिया के कौन से ऐसे भाग हैं जहाँ जनसंख्या में अधिकतम वृद्धि हुई है और इसके क्या कारण हैं ?
३. स्वतन्त्र जगत् के लिए बढ़ती हुई जनसंख्या क्या चुनौती देती है ?

वैज्ञानिकों द्वारा प्रकृति के रहस्यों का उद्‌घाटन

दूसरे विश्वयुद्ध के बाद वैज्ञानिक अन्वेषण और शोध के नये विषयों की ओर प्रवृत्त हुए। राष्ट्रीय सुरक्षा की दिशा में प्रयत्न करने, चिकित्सा सम्बन्धी समस्याओं की गुत्थियों की चुनौतियों और रेडियो-एक्टिव सामग्री में शोध करने के अवसरों के कारण वैज्ञानिक प्रगति को और अधिक प्रोत्साहन मिला।

रोगों पर विजय—युद्ध से पहले ही १९३० में वैज्ञानिक नई-नई औषधियों की खोज करने में लगे हुए थे। तब से अब तक रोग-संक्रमण रोकने और नष्ट करने के लिए औषधियों का विकास किया गया है। लाल-ज्वर, वात-ज्वर तथा गर्दन-तोड़ बुखार के लिए पैंसिलीन बहुत कारगर सिद्ध हुई है। लगभग उसी दौरान ऐसे जीवाणु-नाशकों का विकास भी हुआ है जो जीवित प्राणियों में पैदा होने वाले रासायनिक द्रव्य हैं, जैसे फफूँदी। ये जीवाणुनाशक दवाइयाँ विषाणुओं के प्रभाव को दूर करने में सफल रहती हैं।

पोलियो की खतरनाक बीमारी के कारण प्रति-वर्ष बहुत बच्चे विकलांग हो जाते थे। इस खतरनाक बीमारी के विरुद्ध पहले पहल पिट्सबर्ग विश्वविद्यालय के जोनास ई० साक ने अभियान शुरू किया। १९५४ में साक ने पोलियो-नाशक टीका तैयार किया। तभी से जहाँ कहीं साक के टीके का प्रयोग किया गया। पोलियो के रोगियों की संख्या घटती रही है। १९६१ में इंग्लैंड में मुंह से निगला जाने वाला जीवित वैक्सीन बनाने का लाइसेंस दिया गया। उसी वर्ष खसरे के टीके के उत्पादन की दिशा में महत्त्वपूर्ण प्रगति हुई।

चिकित्सा संसार कठिन समस्याओं की गुत्थियों को सुलझाने में लगा हुआ है। कैन्सर, हृदय रोग तथा मस्तिष्क सम्बन्धी रोग अब भी चिकित्सा सम्बन्धी खोज के लिए खुली चुनौतियां हैं। १९५८ में कैन्सर की नई औषधि मिलने की चर्चा हुई थी। एक विचार यह था कि गले और फेफड़े के कैन्सर का सिगरेट पीने से गहरा सम्बन्ध है। कोर्टिसोन जैसी औषधियों ने रक्त के कैन्सर पर बहुत कुछ विजय पा ली थी। कुछ शोधकर्ताओं की यह धारणा थी कि यह रोग एक विषाणु के कारण होता है।

मस्तिष्क सम्बन्धी रोग सार्वजनिक स्वास्थ्य का दूसरा ऐसा क्षेत्र है जिसमें बहुत कुछ करने की गुंजाइश है। १९३० से बिजली के झटके, इन्सुलिन टीके, दिमाग की चीराफाड़ी और हाल में ही दिमागी शान्ति पहुँचाने वाली औषधियाँ इस दिशा में की गई उपलब्धियां है। अब यह स्वीकार कर लिया गया है कि दिमागी स्थिति का प्रभाव शरीर पर भी पड़ता है। मनोवैज्ञानिकों तथा मनश्चिकित्सकों की सलाह द्वारा मस्तिष्क संबन्धी रोगों का उपचार करने की दिशा में भी कुछ सफलता मिली है।

१९५७ की गर्मियों और शरद ऋतु में जब संसार में एशियन इन्फ्लुएंजा की महामारी फैल गई, तब विज्ञान और चिकित्सा शास्त्र दोनों ही इस तबाही को रोकने में लग गए। इन्फ्लुएंजा के इस विशेष किस्म के जीवाणु पर काबू पाने के लिए खास तरह की जीवाणुनाशक औषधियों का विकास किया गया। यह जीवाणु १९१८ में फैली महामारी के इन्फ्लुएंजा के जीवाणु से भिन्न था। यद्यपि १९५७ में फ्लू के शिकार हजारों व्यक्ति हुए लेकिन फिर भी मृत्यु दर अपेक्षाकृत बहुत कम थी। इस प्रकार मनुष्य के इस विश्वास को बहुत बल मिला कि मनुष्य एक न एक दिन चिकित्सा सम्बन्धी अन्य गुत्थियों को भी सुलझा सकेगा।

अन्तर्राष्ट्रीय भू-भौतिक वर्ष—१९५७ की गर्मियों में आरम्भ होकर १८ महीने तक चलने वाला अन्तर्राष्ट्रीय भू-भौतिक वर्ष एक महान् अन्तर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक प्रयास था। भूमि, समुद्र तथा वायु-मण्डल के रहस्यों को जानने के लिए ७० राष्ट्रों से आए लगभग दस हजार वैज्ञानिकों ने मिलजुल कर

प्रयत्न किए। ऐसा इस उद्देश्य से किया गया था कि भूमि, समुद्र और वायुमण्डल के रहस्यों के पता लग जाने पर इन सभी वस्तुओं पर मनुष्य का और अधिक अधिकार हो सके। अतः भूमि, समुद्र तथा हिमखण्डों की गहरी खोज की गई और भूमि के प्राकृतिक रूप के अपेक्षाकृत सही चित्रांकन की कोशिशें की गईं। इस उद्देश्य से दक्षिण ध्रुवीय महाद्वीप में ग्यारह राष्ट्रों द्वारा अनुसंधान केन्द्र स्थापित किए गए। संयुक्त राज्य ने दक्षिणी ध्रुव पर एक मौसम प्रेक्षण चौकी स्थापित कर दी। सबसे पहले डाक्टर विवियन फुश के नेतृत्व में ब्रिटेन के अभियान दल ने इस महाद्वीप को स्थल मार्ग से पार किया। राष्ट्रपति आइजनहावर ने सभी राष्ट्रों से यह कहा कि दक्षिण ध्रुवीय क्षेत्र मिलजुल कर वैज्ञानिक अनुसंधान करने का स्थान है। इस स्थान को अन्तर्राष्ट्रीय वैर का अखाड़ा नहीं बनाना चाहिए।

१ दिसम्बर, १९५९ को बारह राष्ट्रों ने इस सम्बन्ध में एक संधि पर हस्ताक्षर किए कि दक्षिण ध्रुवीय क्षेत्र का प्रयोग शान्तिपूर्ण उद्देश्यों के लिए किया जाएगा। ये बारह राष्ट्र थे: अर्जन्टीना, आस्ट्रेलिया, बेल्जियम, चिली, फ्रांस, जापान, न्यूजीलैण्ड, नार्वे, दक्षिणी अफ्रीकी संघ, ब्रिटेन, संयुक्त राज्य तथा सोवियत संघ। वैज्ञानिकों के दल अन्तर्राष्ट्रीय भू-भौतिक वर्ष में शुरू किए गए अध्ययन को और आगे बढ़ाते रहे।

परमाणु शक्ति के रचनात्मक प्रयोग—१९५३ में राष्ट्रपति आइजनहावर ने संयुक्त राष्ट्र महासभा में दिए गए अपने एक वक्तव्य में कहा कि परमाणुशक्ति के रचनात्मक प्रयोग की दिशा में अन्तर्राष्ट्रीय प्रयत्नों को बढ़ावा देने तथा उनके समन्वय करने के लिए एक अन्तर्राष्ट्रीय एजेन्सी की बहुत आवश्यकता है। पाँच वर्ष बाद संयुक्त राष्ट्र ने एक परमाणु शक्ति एजेन्सी स्थापित कर दी। इस एजेन्सी का यह काम था कि जो राष्ट्र परमाणुशक्ति का रचनात्मक प्रयोग करने की बात मान लें उन्हें परमाणुशक्ति सम्बन्धी अन्वेषणों की वैज्ञानिक जानकारी से अवगत कराया जाए। साथ ही ऐसे राष्ट्रों के लिए न्यूक्लीयर ईंधन के मिलजुल कर प्रयोग करने की व्यवस्था भी मौजूद थी।

उद्योग तथा चिकित्सा क्षेत्रों के लिए आइसोटोप के नाम से प्रसिद्ध रेडियोएक्टिव पदार्थों की व्यावहारिक उपयोगिता पाई गई। पाइपलाइनों में तेल का बहाव देखने तथा तेल चूने के स्थानों का पता लगाने के लिए कम्पनियां पाइपलाइनों में आइसोटोप डाल देती हैं। धातु के दोषों का पता लगाने के लिए इस्पात कम्पनियों ने भी आइसोटोप को उपयोगी पाया। खाद्यान्न को संरक्षित करने वाले लोग आइसोटोपों की सहायता से खाद्यान्न को सुरक्षित रख सके हैं। इस प्रकार खाद्यान्न सुरक्षित रखने के लिए प्रशीतन (रेफ्रिजरेशन) की आवश्यकता भी खत्म हो गई है। चिकित्सा के क्षेत्र में शारीरिक व्याधियों का उपचार करने में डाक्टरों ने आइसोटोपों की उपयोगिता स्वीकार की है।

१९६१ तक संयुक्त राज्य, ब्रिटेन तथा योरप में स्थापित बहुत से परमाणु शक्ति संयन्त्रों द्वारा अपने न्यूक्लीयर रिएक्टरों का प्रयोग बिजली पैदा करने के लिए किया जा रहा था। सोवियत संघ ब्रिटेन तथा संयुक्त राज्य के बहुत से व्यापारी जलयान परमाणुशक्ति द्वारा चलाए जा रहे हैं।

परमाणु-चालित पनडुब्बियाँ—१९५८ में 'नौटिलस' नामक दुनिया की पहली परमाणुशक्ति चालित पनडुब्बी उत्तरी ध्रुव से होते हुए हिमावरण के नीचे से उत्तरी ध्रुव सागर पार करने में सफल रही। इस यात्रा से एक ऐसी व्यापारिक पनडुब्बी की संभावना पर विचार शुरू हुआ जिससे प्रशान्त महासागर से अतलाँतिक महासागर की दूरी सैंकड़ों मील कम हो सके।

१९६० में, एक और परमाणुशक्ति चालित पनडुब्बी 'ट्राइटन' का निर्माण किया गया। यह पनडुब्बी पानी के नीचे ८४ दिन तक विश्व का भ्रमण करती रही। उसी वर्ष अक्तूबर मास तक संयुक्त राज्य ने अपनी जलसेना में १३ परमाणुशक्ति चालित पनडुब्बियाँ शामिल कर लीं और ऐसी ही २१ और पनडुब्बियाँ तैयार की जा रही थीं। सोवियत संघ तथा ब्रिटेन दोनों परमाणुशक्ति चालित पनडुब्बियों के निर्माण में लगे हुए हैं।

अन्तरिक्ष पर विजय—पूर्व और पश्चिम के

बीच शीतयुद्ध चलता रहा और तब रूस और संयुक्त राज्य दोनों ने अधिक तेज और ऊँचा उड़ने वाले हवाईजहाजों की इंजीनियरी पर बल दिया। १९६२ में संयुक्त राज्य के एक हवाबाज ने राकेट जहाज में ५९.६ मील ऊँचाई तक उड़ान की। हवाई जहाज में अभी तक कोई व्यक्ति इतनी ऊँचाई तक नहीं पहुँच सका था।

१९५७ की गर्मियों में सोवियत संघ ने अन्तर्महाद्वीपीय प्रक्षेपास्त्र (इन्टरकान्टिनेन्टल बालिस्टिक मिसाइल) छोड़ने की घोषणा की। चूँकि प्रक्षेपास्त्र किसी भी निशाने पर भेजा जा सकता है अतः इस प्रगति का परिणाम यह हुआ कि आक्रामक हथियारों के रूप में हवाई जहाजों का महत्त्व कम हो जाने का खतरा पैदा हो गया। एक मिसाइल-विरोधी मिसाइल तैयार करने की ओर ध्यान दिया गया।

अन्तरिक्ष में बहुत ऊँचा पहुँचने के लिए संयुक्त राज्य और रूस दोनों ही राकेट शक्ति का प्रयोग करने के योग्य थे। १९५७ की शरद ऋतु में धरती के स्तर से १००० मील ऊँची कक्षा में एक उपग्रह छोड़ कर रूस ने दुनिया को आश्चर्य में डाल दिया। रूसी लोग इस उपग्रह को स्पुतनिक कहते थे। इस स्पुतनिक ने १८,००० मील प्रति घण्टा की असाधारण गति से धरती के चारों ओर चक्कर लगाए। एक महीने बाद रूस ने कक्षा में एक दूसरा उपग्रह छोड़ा जिसका वजन आधा टन था। इस उपग्रह में एक जीवित कुत्ता और वायुमण्डल से सम्बन्धित आंकड़े इकट्ठे करने के लिए इलेक्ट्रानिक उपकरणों की व्यवस्था भी थी। यद्यपि उपग्रह के इन प्रयोगों से तत्काल कोई व्यावहारिक लाभ नहीं मिला फिर भी इतना जरूर हुआ कि प्रयोगों से संयुक्त राज्य को राकेट कार्यक्रम को आगे बढ़ाने को प्रोत्साहन मिला। १९५८ के शुरू में संयुक्त राज्य ने तीन छोटे-छोटे उपग्रह छोड़े। अगले तीन वर्षों में ही कक्षा में २० और उपग्रह आ गए। संयुक्त राज्य ने उपकरणों की पेटी छोड़ने तथा कक्षा में चक्कर लगाते हुए उपग्रह से उस पेटी को प्राप्त करने का सफल प्रयोग भी किया।

मनुष्य को अंतरिक्ष में भेजने की तैयारी में सोवियत संघ ने राकेटों के जबरदस्त प्रयोग किए। १२ अप्रैल, १९६१ को मेजर यूरी गागारिन ने पहली बार अन्तरिक्ष में उड़ान की और धरती का एक चक्कर लगाया। ४ महीने बाद मेजर घरमन टीटोव नामक एक अन्य रूसी ने धरती के १७½ चक्कर लगाए और वह लगभग २५ घण्टे तक अन्तरिक्ष में रहा।

रूसियों ने एक राकेट शुक्र ग्रह की ओर भी भेजा। दुर्भाग्य से इस उपकरण के साथ रेडियो सम्बन्ध टूट गया, लेकिन ऐसा विश्वास हुआ कि यह राकेट शुक्र ग्रह से कम से कम १००,००० मील दूर रह गया।

उसी समय संयुक्त राज्य भी अपने प्रयोगों में जुटा रहा। १ सितम्बर, १९६१ तक कक्षा में ५२ उपग्रह पहुँच चुके थे। बहुत से उपग्रहों में ऐसे वैज्ञानिक उपकरण लगे हुए थे जो वहीं से आंकड़े भेज सकते थे। अन्तरिक्ष सम्बन्धी ऐसे आंकड़ों के प्राप्त होने से मनुष्य के अन्तरिक्ष सम्बन्धी और प्राकृतिक शक्तियों के ज्ञान का विस्तार हो जायगा।

१९६१ के दौरान में संयुक्त राज्य ने अन्तरिक्ष में तीन उपग्रह सफलतापूर्वक छोड़े। इनमें से एक उपग्रह के कैप्सूल में ३७ पौंड का चिम्पैंजी हैम भेजा गया था। यह चिम्पैंजी अन्तरिक्ष से सलामत वापस आ गया। ५ मई को नेवी कमाण्डर ऐलन बी० शेपार्ड केप कैनेवरल (फ़्लोरिडा) से ३०२ मील दूर गया। यह उड़ान ११६.५ मील ऊँची और १५ मिनट की थी। इस प्रकार आकाशीय यात्रा की कठिन परिस्थितियों से मानव शरीर तथा वहाँ मौजूद कैप्सूल पर होने वाली प्रतिक्रियाओं से सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण आंकड़े प्राप्त हुए। राकेट द्वारा अन्तरिक्ष में भेजा जाने वाले दूसरा अमरीकी व्यक्ति हवाई सेना का कप्तान वर्जिल आई० ग्रिसम था।

फरवरी १९६२ में लेफ़्टीनैण्ट कर्नल ग्लैन ने ८०,४२८ मील लम्बी उड़ान भरी और धरती के चक्कर लगाये। उसी वर्ष लैफ्टीनैण्ट स्कौट कारपेण्टर नामक एक और अमरीकन ने धरती का चक्कर लगाया।

अगस्त १९६२ में २ रूसी उपग्रहों ने धरती के चक्कर लगाए और इनके चालकों (मेजर एण्ड्रीएन निकोलेव तथा लैफ्टीनैण्ट कर्नल पावेल पोपोविक) ने आपस में दृष्टि द्वारा और रेडियो द्वारा सम्बन्ध स्थापित कर लिए। इन दोनों अन्तरिक्ष

यात्रियों ने १० लाख मील से अधिक की सफल यात्रा की। यह यात्रा चन्द्रमा तक पहुंचने की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण प्रयास था।

१. १९३० के बाद चिकित्सा शास्त्र में किए गए महत्त्वपूर्ण आविष्कारों का परिचय दीजिए।
२. जोनस ई० साक ने क्या महत्त्वपूर्ण खोज की ?
३. अन्तर्राष्ट्रीय भू-भौतिक वर्ष का उद्देश्य क्या था ?
४. अन्तर्राष्ट्रीय भू-भौतिक वर्ष के अंग के रूप में कौन-से वैज्ञानिक अनुसन्धान किए गए ?
५. दक्षिण ध्रुवीय क्षेत्र के सम्बन्ध में किस प्रकार राष्ट्रों ने आपस में सहयोग किया ?
६. धरती का चक्कर लगाने वाला पहला व्यक्ति कौन था ? पहला अमरीकन कौन था ?

नासा फोटो

अपनी ऐतिहासिक उड़ान से थोड़ी देर पहले अन्तरिक्ष यात्री श्री जॉन ग्लेन अपने उड़ान कार्यक्रम का बड़े ध्यान से अवलोकन कर रहे हैं।

आने वाले कल की चुनौती

मनुष्य ने प्रागैतिहासिक पाषाण युग से लेकर पहली बार मनुष्य को अन्तरिक्ष में भेजने तक की यात्रा पूरी कर ली है। यह यात्रा सुगम यात्रा नहीं थी। समय-समय पर ऐसा लगता था कि मनुष्य अज्ञान, स्वार्थ और युद्ध की भंवर में फँस गया है। लेकिन एक के बाद दूसरी कठिनाई पर विजय पाता हुआ मनुष्य आगे बढ़ता रहा।

मार्ग में मनुष्य ने प्रकृति की ऐसी शक्तियों को भी अपने वश में किया जिन्होंने उसके जीवन को कठिन बना दिया था। रोगों पर विजय पाने तथा अपनी औसत आयु को बढ़ाने के लिए उसने विज्ञान का सहारा लिया। उसने अन्तरिक्ष पर विजय पा ली और दुनिया के बहुत से रहस्यों की परतें खोल दीं। जितना अधिक ज्ञान उसने प्राप्त किया उतनी ही अधिक समस्याएँ उसके ज्ञान को चुनौती देती हुई दिखाई दीं।

स्थायी शान्ति की समस्या की गुत्थियाँ खोलने के संघर्ष का पुरस्कार कहीं बड़ा होता है। ऐसी चुनौतियाँ बहुत कम हैं जिनके पूरा करने पर इतना बड़ा पुरस्कार मिल सके। यदि मनुष्य को प्रगति के पथ पर चलना है तो उसे युद्ध समाप्त करना होगा और तभी वह एक सुखमय संसार बनाने के लिए अपनी सारी प्रतिभा का मुक्त प्रयोग कर सकेगा।

वाद-विवाद के लिए विषय

१. युद्ध की समस्या का अधिक व्यावहारिक हल क्या है : निःशस्त्रीकरण या हथियारों पर अन्तर्राष्ट्रीय नियन्त्रण ?

२. अन्तरिक्ष में मानव-निर्मित उपग्रह छोड़ने से क्या लाभ प्राप्त होने की आशा है ?

३. परमाणुधूल के बड़े खतरे के बावजूद भी राष्ट्र वायुमण्डल में न्यूक्लीयर परीक्षण क्यों करते हैं ?

४. रेडियोएक्टिव धूल के सम्बन्ध में वैज्ञानिक एकमत क्यों नहीं हैं ?

५. परमाणु धूल से बचने के लिए सुरक्षित स्थान बनाए जाएं या नहीं—दोनों स्थितियों में अपने तर्क प्रस्तुत कीजिए।

६. क्या आपकी राय में लोकमत कभी इतना प्रबल हो जाएगा कि राष्ट्रीय नेताओं को शस्त्रों की होड़ से रुकने के लिए मजबूर कर सके।

१२. लोकतंत्र की दिशा में बढ़ते कदम

दूसरे विश्वयुद्ध ने जर्मनी और इटली के अधिनायक राज का तख्ता उलट दिया और जापान में सैनिक शासन का अन्त ला दिया। जापान के साथ की गई संधि ने पुराने शत्रु के प्रति उदारता का एक उदाहरण स्थापित किया है।

। को अपदस्थ
.न के अधीन एक
. की। जर्मनी का
का और देश के पश्चिमी
ग .य जर्मन संघीय गण-
किया गया। फिलस्तीन
.शया स्वतन्त्र हो गए।

युद्ध के पश्चात् इंग्लैंड में समाजवाद का व्यापक रूप से प्रसार हुआ। बहुत से बुनियादी उद्योग तथा बैंक आफ इंग्लैण्ड सरकारी नियन्त्रण में ले लिए गए।

दूसरे विश्वयुद्ध के बाद स्वतन्त्र ... साम्यवाद एक खतरा बन गया . से घुसपैठ तथा सैटेलाइट राष्ट्रों की सेन्हीं। सोवियत संघ ने सारी दुनिया पर टि कर रूस द्वारा शासित देशों में स्वतन् दी गई।
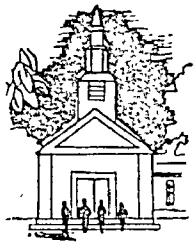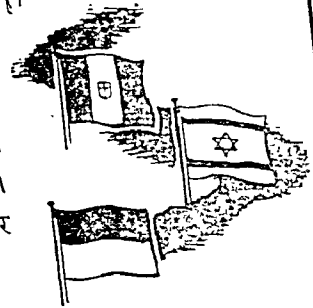
.मी लोगों को मानवीय
विश्वशान्ति की स्थापना की सद्भावना और पक्के
अधिकार दिलाने की दिशा में स्वतन्त्र .ल्ट द्वारा वर्णित चार स्वतंत्र-
इरादों का बहुत योगदान था। राष्ट्र .त्र, ट्रूमैन सिद्धान्त तथा अन्ततः
ताएँ, मार्शल योजना, अतलान्तिक सद्भाव और दृढ़ इरादों का परि-
संयुक्त राष्ट्र संघ ऐसे ही व्यक्ति
णाम है।
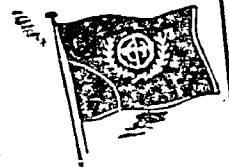
७. यदि अन्ततः कोई निःशस्त्री-करण समझौता मान लिया जाए तो ऐसे समझौते का आर्थिक, सामाजिक तथा राजनीतिक परिण... परिचय दीजिए।

इतिहास के उपकरणों का प्रयोग

I. नाम, तारीखें तथा स्थान

१. क्या आप इन शब्दों को समझा सकते हैं? जीवाणुनाशक; प्रक्षेपास्त्र, अन्तर्राष्ट्रीय भू-भौतिक वर्ष, आइसोटोप, निर्याण गद्दी, ल्यूकीमिया, औसत आयु, मेगाटन, मोरेटोरियम (परमाणु परीक्षण बन्द रखने का काल) 'नाटिलस', खुला आकाश निरीक्षण योजना, आपरेशन प्लोशेयर, उपग्रह, ट्रोइका, 'ट्राइटन'।

२. क्या आप इन तारीखों का महत्त्व जानते हैं:

१२.

धरती ... ह की प्रगति के चरण

ऊँचे सोपानों पर ... वर्षों में बहुत प्रगति की है और अब भी वह हमारी अपनी. दुनिया में संस्कृति के ... ।
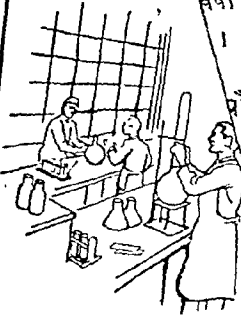
... और आविष्कार की दिशा में प्रगति

... विज्ञान ने बहुत से रोगों पर विजय पा ... री' औषधियों और चिकित्सा के नये ... आए। टेलीविजन और सिनेमास्कोप ... लिक मनोरंजन में वृद्धि कर दी। ... पदार्थों ने हमारे आधुनिक जीवन ... बना दिया।
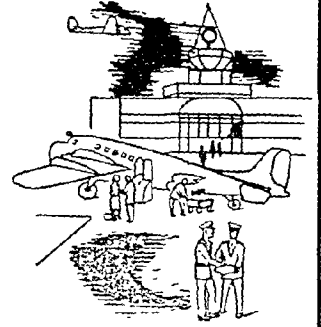
शिक्षा की दिशा में प्रगति

अमरीका तथा योरप के बहुत से ... प्रौढ़ शिक्षा का विस्तार किया गया। ... रिक संस्थाओं में तत्सम्बन्धी खोज और ... करने की दृष्टि से प्रशिक्षण प्राप्त वैज्ञा... और इंजीनियरों की आवश्यकता महसूस हु... मानवजाति की उपयोगिता के लिए बहुत से क्षेत्रों में परमाणु शक्ति के रचनात्मक प्रयोग की संभावनाएँ असीमित दीखती थीं।
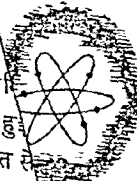
कला प्रगति

बहुत से देशों में भवननिर्माता (आर्किटेक्ट), व्यापारी तथा सरकारें अपेक्षाकृत अधिक लोगों के लिए रिहाइश की बेहतर सुविधाएँ जुटाने में बहुत अधिक रुचि लेने लगे। इन्होंने व्यापारिक इमारतों के भी ऐसे डिजाइन तैयार किए जिससे कि ये इमारतें सबसे अधिक उपयोगी और सुविधाजनक सिद्ध हों।

नाटक तथा कला के अन्य क्षेत्रों में कमाल के परिवर्तन लाए गए।
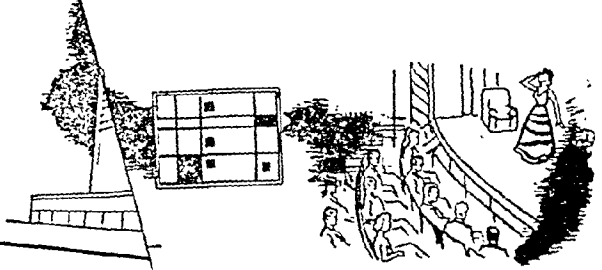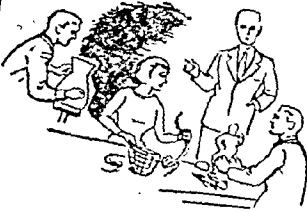
१ दिसम्बर, १९५९; १२ अप्रैल, १९६१; २७ सितम्बर १९६१; २० फरवरी १९६२।

३. नक्शे पर ये स्थान ढूँढिए :
दक्षिण ध्रुवीय क्षेत्र, केप केनेवरल, जिनीवा

४. निम्न व्यक्तियों का परिचय दीजिए :
स्कौट कारपेण्टर, विवियन फुश, यूरी गागारिन जान ... वर्जिल ग्रिसम, एण्ड्रीए ग्रोमिको, जोनास ई० सा... लन बी० शेपार्ड, घरमन टिटोव।

II. क्या आ... प अपनी बात अच्छी तरह समझा सकते हैं?

१. हि... रोशिमा में बचे हुए व्यक्तियों पर

परमाणु विकिरण के प्रभावों के सम्बन्ध में वैज्ञानिकों ने जो जानकारी प्राप्त की है, उसके सम्बन्ध में कक्षा में एक रिपोर्ट प्रस्तुत कीजिए। इस प्रकार के विकिरण से घायल हुए व्यक्तियों के उपचार करने के सम्बन्ध में वैज्ञानिकों ने क्या सीखा है?

२. यह कल्पना कीजिए कि आप एक अखबार के संवाददाता हैं और आपको दक्षिणी अफ्रीका के प्रधान मंत्री डाक्टर हेण्ड्रिक फेअरफुर्ट और कटंगा के प्रधान मंत्री मोइस शोम्बे से इस सम्बन्ध में बात करनी है कि ये दोनों व्यक्ति अपने देश के सम्बन्ध में संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा की गई सिफारिशों का विरोध क्यों करते हैं। प्रत्येक नेता के दृष्टिकोण का संक्षिप्त रूप तैयार करके अलग-अलग समाचार लिखिए।

३. भविष्य के इतिहासकार परमाणु तथा आकाश सम्बन्धी खोज करने वाले महारथियों का सम्मान करना चाहेंगे। दुनिया के इन दोनों क्षेत्रों के अनुभूत तथ्यों की ओर ले जाने वाले महारथियों की एक सूची बनाइए और प्रत्येक व्यक्ति के नाम के सामने उसके द्वारा किए गए योगदान का वर्णन कीजिए।

४. अपने दैनिक समाचार पत्र में तथा कम से कम एक समाचार पत्रिका में दुनिया की घटनाओं का, विशेषतः यूनिट १२ में निर्दिष्ट व्यक्तियों और स्थानों से सम्बन्धित घटनाओं का अध्ययन कीजिए। इस सम्बन्ध में प्रतिदिन कक्षा में दो मिनिट की रिपोर्ट दीजिए और प्रति सप्ताह एक समाचार प्रश्नावली तैयार कीजिये।

५. अपनी सरकार के स्वास्थ्य विभाग से यह पता लगाइए कि पिछले वर्ष के दौरान में आपके राज्य में कौन-से रोग आम तौर पर हुए और क्या पिछले दस वर्षों से इन रोगों में कमी होती जा रही है।

III. कक्षा समिति के लिए काम

१९४० से अपनी बस्ती की जनसंख्या की वृद्धि का अध्ययन कीजिए। बढ़ती हुई जनसंख्या की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए शिक्षा सम्बन्धी सुविधाओं, स्वास्थ्य सेवाओं, नौकरी के अवसरों तथा सार्वजनिक सुविधाओं का किस प्रकार विस्तार किया गया या उनमें किस प्रकार रद्दोबदल की गई? इस सम्बन्ध में अपने परिणामों से कक्षा को अवगत कराइए। अगले बीस वर्षों के दौरान बढ़ती हुई जनसंख्या की मांगों की पूर्ति के लिए क्या परिवर्तन किए जाएं— इस सम्बन्ध में अपनी सिफारिशें कीजिए।